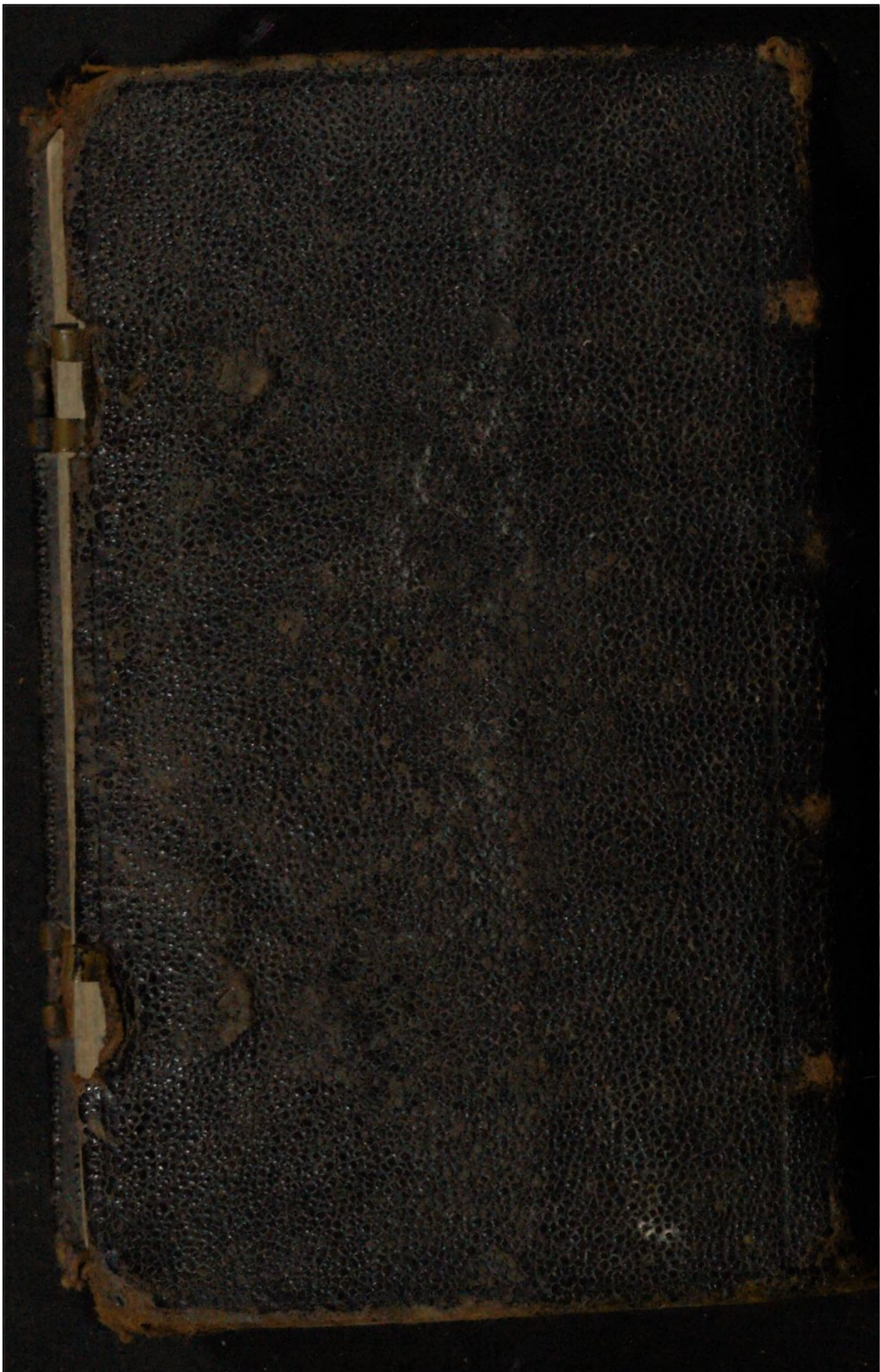






Early European Books, Copyright © 2011 ProQuest LLC.
Images reproduced by courtesy of Koninklijke Bibliotheek, Den Haag.
224 A 26





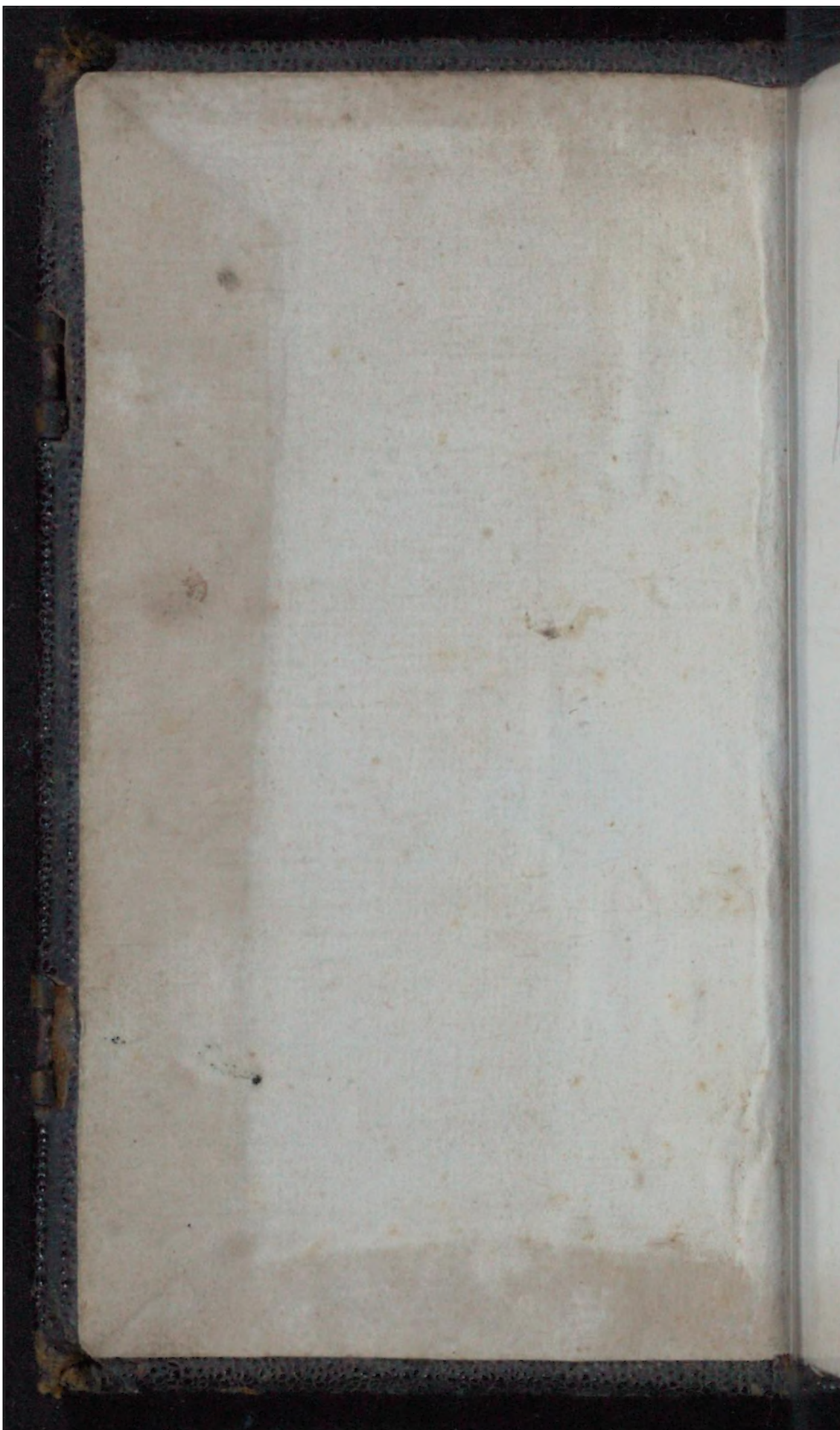
Early European Books, Copyright © 2011 ProQuest LLC.
Images reproduced by courtesy of Koninklijke Bibliotheek, Den Haag.
224 A 26



Early European Books, Copyright © 2011 ProQuest LLC.
Images reproduced by courtesy of Koninklijke Bibliotheek, Den Haag.
224 A 26



Early European Books, Copyright © 2011 ProQuest LLC.
Images reproduced by courtesy of Koninklijke Bibliotheek, Den Haag.
224 A 26



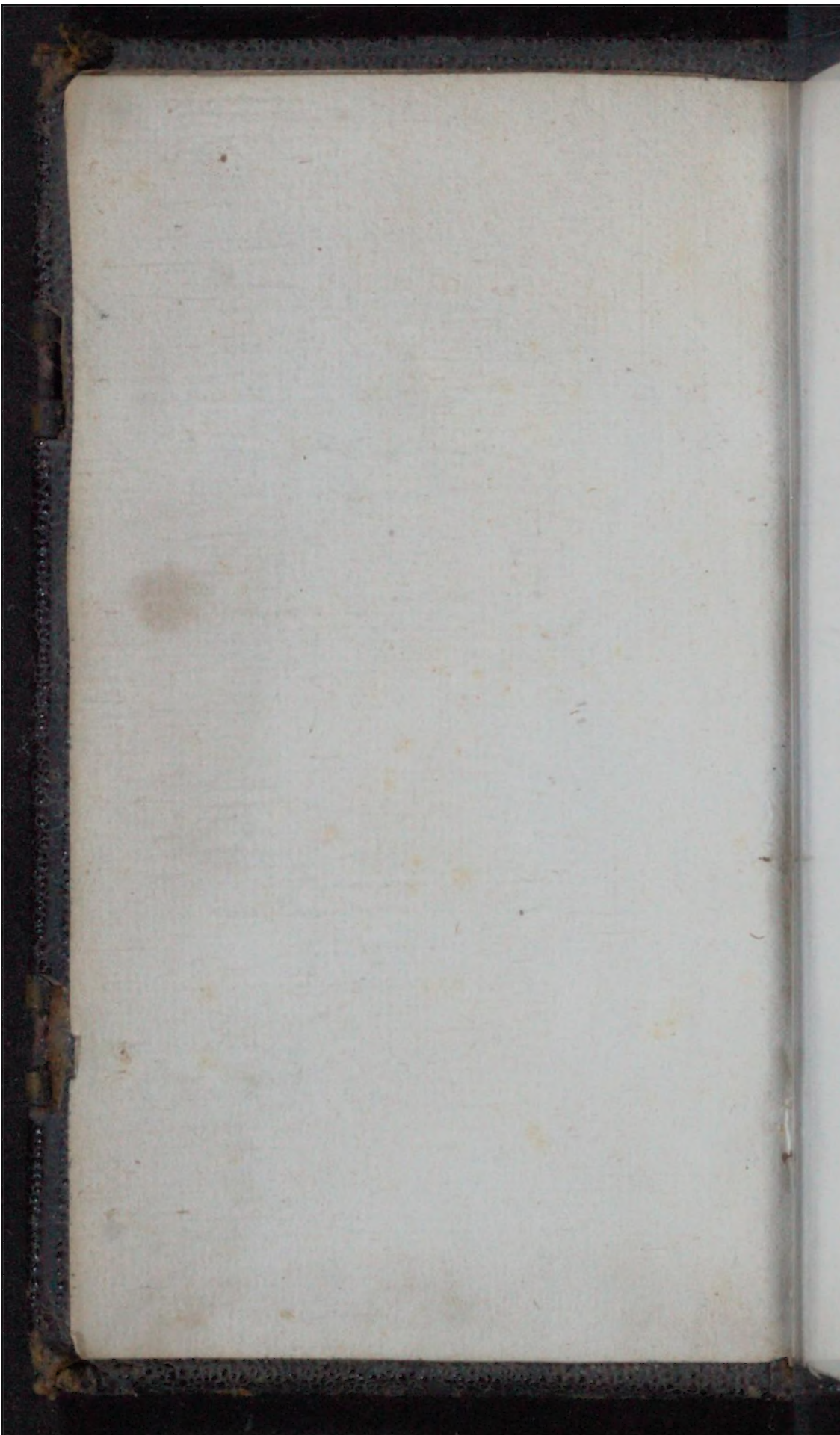
~~Elzevir~~

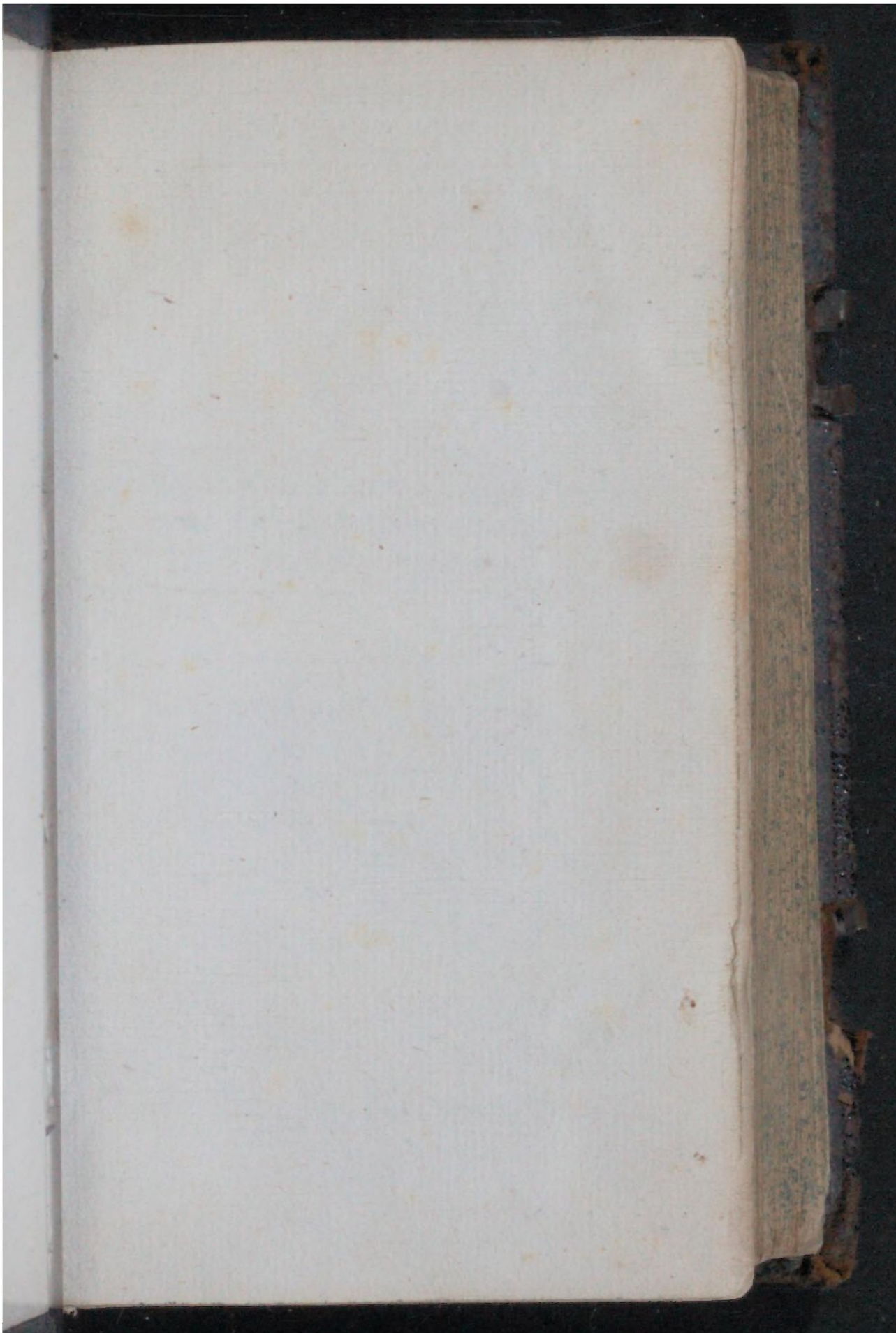
~~P. 115~~

KW

224

A 26

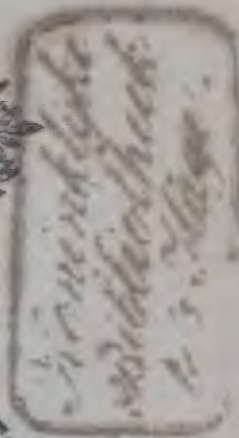




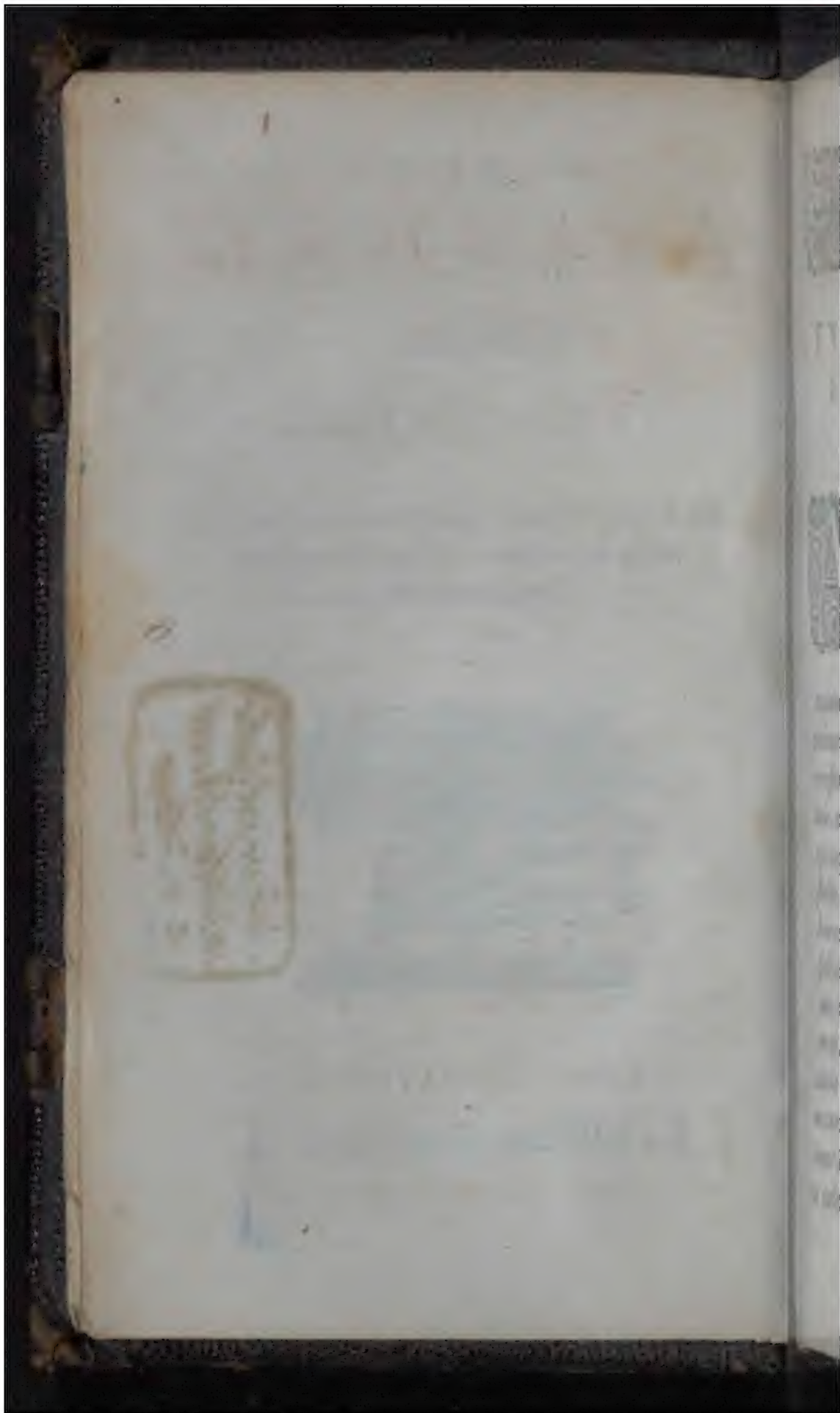
Η' ΚΑΙΝΗ'
ΔΙΑΘΗΚΗ.

Novum
Testamentum.

*Ex Regiis aliisque optimis editionibus, hac
nova expressum: cui quid accesserit,
Praefatio docebit.*



LYGD. BATAVORVM.
Ex Officina Elzeviriorum.
MDCXXXIII.





TYPOGRAPHI
LECTORIBVS
de hac editione.

Anni jam sunt aliquot,
Amice ac Christiane Lector,
ex quo *Fœdus Novum,* Grace, ex Regiis ac
ceteris editionibus, que
maxime ac præ ceteris nunc omnibus
probantur, ea fide ac religione dedimus
expressimusque, ut non elegantia edi-
tionis, non industria, concederemus iis
quas expresseramus. Exemplaribus di-
stractis ac divenditis, editionem, omni-
bus acceptam, denuo doctorum oculis
subjecimus. Ut si qua, vel minutissi-
ma, in nostro, aut in iis, quos secuti su-
mus, libris, superessent menda, cum ju-
dicio ac cura tollerentur. Quod cum
accurate ab iis factum esset, (nam ad
hanc Pandoram, non Poëticam, sed ve-
re talem ac divinam, ornamentum
* 2 quis-

quisque excogitavit, quisque symbolam ad regnos commune, lubens volens contulit. quis enim Deo ac divinis quicquam neget; memor tabernaculi sub prisco Fœdere, quod ita crevit?) ad editionem novam, his presidiiis muniti, denuo accessimus. In qua, præter cetera, & versus quos nunc vocant, accuratius notavimus. ne prætermissa quidem veterum distinctione, ab hac nostra satis aliena: quam sub finem, ne quid desit, exhibemus. E qua disces, qui qualesque fuerint, quos $\pi\tau\lambda\epsilon\varsigma$ nuncupabant, quos in sua iterum $\kappa\epsilon\Phi\acute{\alpha}\lambda\alpha\iota\alpha$, omnino aliter quam fit a nobis, olim dividebant. Qui majores ita vulgo nunc vocamus partes, quas in $\epsilon\iota\chi\epsilon\varsigma$ (an ubique satis commode, quarendum aliis relinquimus, qui utiles non curiosi volumus videri) ut investigandi labor absit, utilissime dividimus. Textum ergo habes, nunc ab omnibus receptum: in quo nihil immutatum aut corruptum damus. Qui, cum lapides ac monumenta antiquorum quidam venerentur ac religiose representent, multo magis chartas has, ab argumento $\theta\epsilon\omicron\pi\nu\delta\iota\varsigma\epsilon\varsigma$, vindicandas a mutatione ac

COR-

corruptela judicamus. & nobiscum,
quisquis ad religionem sapit. Formam
habet *Ἐπιφάνειον καὶ ὄνομα*: hoc est, ut
ille ait, *ὀλίγω τε* pariter, καὶ *φίλω*. Qua
cum ipsam quoque suppellectilem com-
mendent, in qua nihil prater usum spe-
ctant homines, vulgarem illum ac hu-
manis ministeris accommodatum;
quanto minus negligendum in divino
instrumento, cuius usum vita ista ha-
bet, fructum verum altera, qua nulla
morte finietur, ut cum Augustino lo-
quar, exhibebit? Vale, ac fave.

* 3

ΠΙ'ΝΑΣ



Π Ι Ν Α Ξ
ΠΕΡΙΕΧΟΝΤΑΣ ΕΚ ΤΗΣ

παιλαιάς Διαθήκης ωφραληφθείσας εις
τινὴν κλητὴν μαρτυρίαν, ἀλλ' ἔτι τὰς
αὐτὰς λέξεις, μᾶλλον ἢ τ' αὐτὴν
Δείξιαν ἔχουσας.

G E N E S.

1. 1 Πίστι τοῦ μὲν κρητηρίοιο τὴν αἰώνιον.
Heb. 11. 3.
1. 1 Οὐρανοὶ ἦσαν ἑκπαλαι. 2 Pet. 3. 5.
1. 27 Ἀδάμ πρῶτος ἐπλάσθη. 1 Tim. 2. 13.
2. 22 Οὐ γὰρ ἐστὶ ἀνὴρ ἐκ γυναικός. 1 Cor.
11. 3.
3. 4 Ο' ὄφις Εὐάν ἐξηπάτησεν ἐν τῇ πανθε-
ρία αὐτῆ. 2 Cor. 11. 3.
3. 6 Ἀδάμ σὺν ἡπατήρ. 1 Tim. 2. 14.
4. 4 Πίστι πλείονα θυσίαν Ἀβελ ὡφρα Κάιν
προσέφερε τῷ Θεῷ. Heb. 11. 4.
4. 8 Ἀπὸ τῆ ἀμαρτίας Ἀβελ τὸ δικαίον.
Matt 23. 35.
4. 8 Οὐ κατὰ Κάιν ἐκ τῆ πονηρίας. 1 Joan.
3. 12.

4. 8 Οὐαί

ΜΑΡΤΥΡΙΩΝ.

4. 8 Οὐαὶ αὐτοῖς, ὅτι τῇ ὁδοῦ τοῦ Καίου ἐπο-
ρεύθησαν. Judæ 12.
5. 24 Πίστις Ἐνώχ μετετέθη. Heb. 11. 5.
6. 12 Ὅτι ἅπαντες ἐξεδέχθη ἡ τοῦ Θεοῦ μακρο-
θυμία. 1 Pet. 3. 20.
6. 13 Πίστις χρηματιοδῆς Νῶε. Heb. 11. 7.
6. 22 Ὁ γόγγυον Νῶε δικαιοσύνης κήρυγμα.
2 Pet. 2. 5.
7. 4 Ὡς περὶ ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς αὐτῆς
τοῦ κατακλισμοῦ. Mat. 24. 37.
9. 6 Πάντες οἱ λαοὶ μαχαιραῖς ἐν μα-
χαίραις ἀπολένται. Mat. 26. 52.
Αποκ. 13. 10.
12. 4 Πίστις καλὸς ἄνθρωπος Ἀβραάμ. Heb. 11. 8.
14. 18 Οὐτὸ γὰρ ὁ Μελχισεδέκ. Heb. 7. 1.
16. 15 Ἀβραάμ δύο υἱοὺς ἔχεν, ἓνα ἐκ τῶν παι-
δίσκης. Gal. 4. 22.
17. 11 Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ Ἀγαθὸν πνεῦμα.
Αἰτ. 7. 8. Rom. 4. 8.
18. 10 Πίστις ἐαυτῆ Σάρρα. Heb. 11. 11.
18. 12 Ὡς Σάρρα ἐπαύθησε τῷ Ἀβραάμ.
1 Pet. 3. 6.
19. 25 Καὶ πόλις Σοδόμων καὶ Γομόρρας.
2 Pet. 2. 6.
19. 25 Ὡς Σόδομα ἐ Γόμορρα. Judæ 7.
19. 26 Μνημονεύετε τῆς γυναικὸς Λώτ. Luc.
17. 32.
19. 26 Ὁμοίως καὶ ὡς ἐγλύετο ἐν ταῖς ἡμέραις

Π Ι Ν Α Ξ

Λάτ' ἡδαιον, ἔπινον, ἠγέρραζον. Luc.

17. 27.

21. 1 Ἀβραάμ υἱὸν ἔχεν ἐκ τῆς ἐλδύθειας.

Gal. 4. 23.

22. 1 Πίστ' ἀποσεινήνοχεν Ἀβραάμ. Hebr.

11. 17.

22. 9 Ἀβραάμ ἀνετίκας τ' υἱὸν αὐτῆ ἐπὶ τὸ
θυσιαστήριον. Jac. 2. 21.

22. 16 Καθὼς ἐλάλησε πρὸς τὰς πατέρας ἡ-
μῶν. Luc. 1. 55.

25. 22 Ρεδέικκα ἐξ ἐνὸς κηρίτω ἔχασα Ἰσαάκ.

Rom. 9. 10.

25. 31 Μήπισ πόρεν ἢ βέσηλ ὡς Ἡσῶν, ὃς
ἀντὶ βρώσεως μιᾶς ἀπέδοτο τὴν πνευ-
ματικῆν. Heb. 12. 16.

27. 28 Πίστ' πρὸς μελλόντων δὲ λόγησεν. Hebr.

11. 20.

48. 15 Πίστ' Ἰακώβ δ' ἀποθνήσκων. Hebr. 11. 21.

49. 10 Ὅν ἔγραψε Μωσῆς ἐν τῷ νόμῳ. Joap.

1. 46.

50. 24 Πίστ' Ἰωσήφ τελευτῶν. Hebr. 11. 22.

Ε Χ Ο Δ.

2. 2 Πίστ' Μωσῆς γλυνηθείς. Hebr. 11. 23.

2. 11 Πίστ' Μωσῆς μέγας θυόμνησεν. Hebr.

11. 24.

2. 11 Μωσῆς ἰδὼν πῆλα ἀδικέμενον. Act.

7. 24.

3. 2 Καὶ

ΜΑΡΤΥΡΙΩΝ.

3. 2 Καὶ πληρωθέντων ἐτῶν πεσάρχοντα.
 Act. 7. 30.
12. 11 Πίστις πεποίηκε τὸ πάχος. Heb. 11. 28.
14. 22 Εἰς τὴν Μωσῆν ἐβαπτίσαντο. 1 Cor. 10. 2.
14. 22 Πίστις διέβησαν ἢ ἐρυθρὴν θαλάσσαν.
 Heb. 11. 29.
16. 15 Οἱ πατέρες ὑμῶν ἔφαθον τὸ μάννα.
 Joan. 6. 49.
16. 15 Ἄρξον ἐκ τῆς ἔρανος ἔδωκεν αὐτοῖς φα-
 γεῖν. Joan. 6. 31.
16. 15 Πάντες τὸ αὐτὸ βρῶμα πνευματικόν.
 1 Cor. 10. 3.
17. 6 Ἐπίνον γὰρ ἐκ πνευματικῆς ἀκροθάλ-
 σης πέτρας. 1 Cor. 10. 4.
19. 6 Ἐθνη ἄγιον, λαὸς εἰς ἀειποίησιν.
 1 Pet. 2. 9.
19. 12 Καὶν θηρίον δίγη τῆς ὄρας. Heb. 12. 20.
19. 16 Οὐ γὰρ παρεληλύθει. Heb. 12. 18.
24. 8 Λαληθείσης γὰρ πάσης ἐνθλήης. Heb.
 9. 19.
32. 6 Μηδὲ εἰδωλολάτρευαι γίνεσθε. 1 Cor.
 10. 7.
26. 1 Σκηνὴ καπεσκυιάθη ἢ παρόχη.
 Heb. 9. 2.

L E V I T.

12. 3 Ἐν σαββάτῳ παύσησθε ἀνθρώπων.
 Joan. 7. 22.

* 5

12. 3 Ὅτι

ΠΙΝΑΞ

12. 3 Ὅτε ἐπλήσθησαν ἡμέραι ὀκτώ. Luc.
2. 21.
12. 4 Ὅτε ἐπλήσθησαν αἱ ἡμέραι τῆς κωστα-
ρισμῆ. Luc. 2. 22.
12. 6 Καὶ τῆς δυνάμεως θυσίαν, καὶ τὸ εἰρημνόν
ἐν νόμῳ. Luc. 2. 24.
14. 4 Προσένεγκε τὸ δῶρον ὃ προσέταξε Μω-
σῆς. Matt. 8. 4. Marc. 1. 44.
16. 14 Εἰ γὰρ τὸ αἷμα ταύρων καὶ τράγων.
Heb. 9. 13.
16. 17 Καὶ πᾶν τὸ πλῆθος τῆς λαοῦ καὶ προσ-
δουχόμενον ἔξω. Luc. 1. 10.
19. 15 Μὴ ἐν προσωποληψίαις. Jac. 2. 1.
19. 17 Ἐὰν ἀμαρτήσῃ εἰς σε ὁ ἀδελφός σου.
Matt. 18. 15. Luc. 17. 3.
20. 10 Ἐν δὲ τῷ νόμῳ Μωσῆς ἡμῖν ἐνετεί-
λατο εἰς ποιῶντας λιθοβολείσθαι.
Joan. 8. 5.

N V M E R.

8. 16 Πᾶν ἄρξεν θλιβεράν μίτησαν. Luc.
2. 23.
9. 18 Πατέρες ἡμεῶν πάντες ὑπὸ τῆς νεφέλης.
1 Cor. 10. 1.
11. 7 Ἄρξεν ἐκ τῆς ἕραν ἔδωκεν αὐτοῖς φα-
γεῖν. Joan. 6. 31.
12. 7 Ὡς ἡ Μωσῆς ἐν ὅλῳ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ.
Heb. 3. 2.

14. 37 Ὡς

ΜΑΡΤΥΡΙΩΝ.

14. 37 Ὡν τὰ κῶλα ἔπισεν ἐν τῇ ἐρήμῳ.
Heb. 3. 17.
14. 36 Μηδὲ γρηύζετε, καθὼς καὶ πνεῖς αὐ-
τῶν. 1 Cor. 10. 10.
16. 1 Τῇ ἀνιλοζία τῶ Κωρὲ ἀπώλοντο. Ju-
dæ 11.
19. 3 Ὡν γὰρ εἰσφέρειται ζῶων τὸ αἷμα. Heb.
13. 11.
20. 10 Ἐπίνοι γὰρ ἐκ πνευματικῆς ἀκταθῆ-
σης πέτρας. 1 Cor. 10. 4.
21. 5 Μηδὲ ἐκπέριζώμεθα τὸ Χριστόν. 1 Cor.
10. 9.
21. 9 Καθὼς Μωσῆς ὑψώσε τὸ ὄφρυ ἐν τῇ ἐρή-
μῳ. Joan. 3. 14.
22. 23 Ὑποζύγιον ἄφωτον ἐν ἀνθρώποις φωνῆ
φθηνξάμενον. 2 Pet. 2. 16.
22. 39 Τῇ πλάτῃ τῶ Βαλαάμε μισοῦ ἔξεχού-
θησαν. 2 Pet. 2. 15. Judæ 11.
24. 14 Διδασχὼ Βαλαάμε, ὃς ἐδίδασκεν τὸν
Βαλάκ. Apoc. 2. 14.
25. 6 Μηδὲ πορνύσωμεθα, καθὼς πνεῖς αὐτῶν
ἐπόρνησαν. 1 Cor. 10. 8.
26. 64 Κατεσρώθησαν ἐν τῇ ἐρήμῳ. 1 Cor.
10. 5.
28. 8 Σάββασιν οἱ ἱερεῖς ἐν τῷ ἱερῷ τὸ σάβ-
βατον βεβηλῶσαν. Matt. 12. 5.

DE V-

Π Ι Ν Α Ξ

D E V T E R.

1. 16, 17 Μὴ ἐν αἰθσωπολησίαις ἔχητι. Jac.
2. 1. 9.
10. 17 Οὐ γάρ ἐστι αἰθσωπολησία ἡδε τῆς
Θεῶ. Rom. 2. 11. Act. 10. 34. Col.
3. 25. Eph. 6. 9.
17. 6 Ἀθετήσας ἴσ νόμον. Heb. 10. 28.
18. 1 Οὐκ οἴδατε ὅτι οἱ τῆ ἱεραὶ ἐργαζόμενοι,
ἐκ τῆ ἱερῆ ἐοδίσαν; 1 Cor. 9. 13.
24. 1 Ὅς αὐ δὲ πολύς τῆ γυναικῶ. Matt. 5.
31. 19, 7. Marc. 10. 4.

J O S U E.

2. 1 Ομοίως ἢ ἐ Γαὰβ ἡ πόρνη. Jac. 2. 25.
6. 20 Πίστῆ τῆ τέχνη ἱεραχῶ ἔπεσε. Hebr.
11. 30.
6. 20 Πίστῆ Γαὰβ ἡ πόρνη. Heb. 11. 31.

S A M V E L. I.

21. 6 Οὐκ ἀπέγνωλε πῆ ἐποίησε Δαβίδ, ὅτι
ἐπέινασεν. Matt. 12. 3. Marc. 2. 25.
Luc. 6. 4.

R E G V M I.

2. 10 Ἐξὸν εἰπεῖν μὲ παρρησίας πρὸς ὑμῶς
περὶ τῆ πατριάρχῃ Δαβίδ. Act. 2.
29. 13. 36.

10. 1 Βασί-

M A P T Y P I Ω N.

10. 1 Βασίλισσα νότα. Matt. 12. 42. Luc.
II. 31.

17. 1 Εκλείθη ο έρανος επί έτη τρία. Luc.
4. 25.

17. 1 Ηλίας άνθρωπος ω̄ ομοιοπαθής η̄-
μῖν. Jac. 5. 17.

R E G V M II.

4. 29 Μηδένα κ̄ τῶ ὀδὸν ἀσπάσηθε. Luc.
10. 4.

5. 13 Πολλοὶ λεπροὶ ἦσαν. Luc. 4. 27.

P A R A L. I.

23. 13 Καὶ ἔχ̄ ἑαυτῶ π̄ς λαμβάνει τ̄ πικρῶς
ἀλλ' ὁ καλέμενος. Heb. 5. 4.

J O B.

1. 21 Οὐδὲν εἰσιλέγκαιμεν εἰς τὸν κόσμον,
I Tim. 6. 7.

5. 17 Μακάριος ἄνθρωπος ὁς ὑπομῆναι πειρασ-
σμέν. Jac. 1. 12.

34. 19 Οὐκ ἔστι σωτηρία πολλῆς ὁ Θεός. Act.
10. 34.

P S A L M.

41. 10 Ὁ μὲν υἱὸς ἔ̄ ἄνθρωπος ὑπάγει. Matt.
26. 24. Marc. 14. 21. Luc. 22. 22.

132. 5 Δαβὶδ ἠτήσατο δοῦναι σκεῦῶματι τῶ
Θεῷ Ἰακώβ. Act. 7. 46.

P R O-

Π Ι Ν Α Ξ

P R O V E R B.

11. 31 Εἰ ὀδύνησθε μέλις σώζει. 1 Pet. 4. 18.
 17. 27 Ἐστω πᾶς ἄνθρωπος ταχὺς εἰς τὸ ἀκούσαι, βραδύς εἰς τὸ λαλῆσαι. Jac. 1. 19.
 20. 9 Ἐὰν εἴπω μὴ ὅτι ἁμαρτάνετε οὐκ ἔχητε.
 1 Joab. 1. 8.
 24. 23 Μὴ εὐφρασθῆτε πολυψάλαις. Jac. 2. 1.
 25. 6 Μὴ κατακλιθῆς εἰς τὴν ἠσθητικὴν κλισίαν.
 Luc. 14. 8.

E S A I.

8. 14 Ἰδὲ εἴτε κείταται εἰς πῶσιν καὶ ἀνάστα-
 σιν. Luc. 2. 34.
 13. 10 Εὐθέως μὲν τῆς θλίψιν τῶν ἡμερῶν ἐκεί-
 νων ὁ ἥλιος σκοιοθήσει. Matt. 24.
 29. Marc. 13. 24.
 41. 8 Ἀντελάθει Ἰσραὴλ τὸ παιδὸς αὐτοῦ.
 Luc. 1. 54.
 54. 1 Μακάριαι αἱ εἶρα. Luc. 23. 29.
 58. 7 Ἐπένασαι γὰρ καὶ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν.
 Matt. 25. 35.
 63. 2 Περὶ βιβλίου ἰμάτιον βεβαμμένον
 αἵματι. Apoc. 19. 13.

J E R E M.

2. 21 Ἄνθρωπος ὡς λαὸς οἰκθροσύνης. Matt.
 21. 33. Marc. 12. 1. Luc. 20. 9.
 18. 6 Μὴ

ΜΑΡΤΥΡΙΩΝ.

18. 6 Μὴ ἐρεῖ τὸ πλάσμα πρὸς πλάσμι;
Rom. 9. 20.

E Z E C H.

39. 2 Καὶ ὅταν τελεσθῇ τὰ χίλια ἔτη. Α-
ποκ. 20. 7.

12. 21 Πῶς ἐσιν ἐπιγγελία τῆς παρυσίας αὐτῶ;
2 Pet. 3. 4.

18. 7 Ἐπέινασα, καὶ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν.
Matt. 25. 35.

D A N I E L.

7. 10 Καὶ χιλιάδες χιλιάδων. Αποκ. 5. 11.

12. 7 Καὶ ὁ ἄγγελος ὃν εἶδον ἐστῶτα ἐπὶ τῆς
θαλάσσης. Αποκ. 10. 5.

J O E L.

3. 15 Ὁ ἥλιος σκοιοθήσει. Mat. 24. 29.
Marc. 13. 24.

M I C H.

2. 10 Οὐκ ἔχουσι αἶθε μύσσαν πόλιν. Heb.
13. 14.

4. 7 Βασιλεύσει ἐπὶ τῷ οἴκῳ Ἰακώβ. Luc.
1. 33.

I N

IN NOVI FOEDERIS

LIBROS.

BΙΒΛΕ, ΚΑΚΩΝ ΠΑΝΑΚΕΙΑ, ΠΑ-
ΝΥΣΤΑΤΗ ΔΙΑΘΗΚΗ
ΖΩΗΝ ΕΚ ΘΑΝΑΤΟΥ ΠΑΣΙ ΧΑ-
ΡΙΣΣΑΜΕΝΟΥ·

ΒΙΒΛΕ, ΦΙΛΟΝ ΔΩΡΗΜΑ ΘΕΗΓΕ-
ΝΕΟΣ ΒΑΣΙΛΗΟΣ·

ΜΟΥΣΗ, ΚΑΙ ΣΟΦΙΗ, ΚΑΙ ΧΑ-
ΡΙΣ ΟΥΡΑΝΗ,

ΖΩΗ ΕΠΙΧΘΟΝΙΩΝ, ΧΘΟΝΟΣ ΟΥ-
ΡΑΝΕ, ΠΑΣΙ ΜΕΛΟΥΣΑ

ΩΝ ΠΟΘΟΣ ΑΘΑΝΑΤΩΝ ΣΤΗ-
ΘΕΣΙΝ ΕΜΠΕΦΥΕ·

ΣΟΙ ΠΡΟΣΦΥΣ, ΣΟΦΙΗΣ ΤΗΣ ΑΝ-
ΔΡΟΜΕΗΣ ΔΕΛΑΘΟΙΜΗΝ,

ΣΥΝ ΚΑΙ ΑΡΙΣΤΟΚΛΕΟΥΣ, ΣΥΝ
ΚΑΙ ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΟΥΣ·

ΣΥΝ ΣΟΙ ΘΗΗΤΟΝ ΑΝΑΚΤΑ, ΤΟΝ
ΑΘΑΝΑΤΟΝ, ΠΡΟΣΙΔΟΙΜΙ·

ΣΩΗΣ ΤΟΝ ΘΑΝΑΤΟΝ ΣΥΝ ΣΟΙ
ΑΜΕΙΨΑΜΕΝΟΣ.

DAN. HEINSIUS.

ΤΟ



ΤΟ ΚΑΤΑ ΜΑΤΘΑΪΟΝ
ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ.

Κεφ. α'. Ι.

- 1 **Β**ΙΒΛΟΣ γενέσεως Ἰησοῦ Χρισ-
τοῦ, υἱοῦ Δαβὶδ, υἱοῦ Ἀβραάμ.
- 2 Ἀβραάμ ἐγέννησε τὸν Ἰσαάκ·
Ἰσαάκ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰακώβ· Ἰακώβ δὲ
ἐγέννησε τὸν Ἰσάκ, καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ.
- 3 Ἰσάκ δὲ ἐγέννησε τὸν Φαρές καὶ τοὺς Ζαρού-
χαι καὶ Θάμαρ· Φαρές δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐσράμ·
Ἐσράμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀράμ.
- 4 Ἀράμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀμιναδάμ· Ἀμινά-
δαμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ναασών· Ναασών δὲ
ἐγέννησε τὸν Σαλμών.
- 5 Σαλμών δὲ ἐγέννησε τὸν Βοόζ ἐκ τῆς Ραχάβ·
Βοόζ δὲ ἐγέννησε τὸν Ὠβήδ ἐκ τῆς Ρούθ· Ὠβήδ
δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰεσσαί.
- 6 Ἰεσσαί δὲ ἐγέννησε τὸν Δαβὶδ τὸν βασιλέα·
Δαβὶδ δὲ ὁ βασιλεύς ἐγέννησε τὸν Σολομῶνα ἐκ
τῆς Βαθσέβης.
- 7 Σολομῶν δὲ ἐγέννησε τὸν Βοβοάμ· Βοβοάμ
δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀβιά· Ἀβιά δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀσά.

Α 8 Ἀσά

2 ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ Cap. I.

- 8 Ἀσά ἤ ἐχθύνησε τὸν Ἰωσαφάτ· Ἰωσαφάτ
ἤ ἐχθύνησε τὸν Ἰωράμ· Ἰωράμ ἤ ἐχθύνησε τὸν
Οἴζαν.
- 9 Οἴζας ἤ ἐχθύνησε τὸν Ἰωάθαμ· Ἰωάθαμ ἤ
ἐγέννησε τὸν Ἀχαζ· Ἀχαζ ἤ ἐγέννησε τὸν Ἐζεκίαν.
- 10 Ἐζεκίας ἤ ἐχθύνησε τὸν Μανασσῆ· Μα-
νασσῆς δὲ ἐχθύνησε τὸν Ἀμὼν· Ἀμὼν δὲ
ἐχθύνησε τὸν Ἰωσίαν.
- 11 Ἰωσίας ἤ ἐχθύνησε τὸν Ἰερχοίαν ἔτι τὰς ἀδελ-
φούς αὐτῆς, ἐπὶ τῇ μεθικισίας Βαβυλῶν.
- 12 Μετὰ ἤ πλὴν μεθικισίας Βαβυλῶν,
Ἰερχοίας ἐχθύνησε τὸν Σαλαπιήλ· Σαλαπιήλ
δὲ ἐχθύνησε τὸν Ζοροβάβελ.
- 13 Ζοροβάβελ δὲ ἐχθύνησε τὸν Ἀβιέσλ·
Ἀβιέσλ ἤ ἐχθύνησε τὸν Ἐλιακίμ· Ἐλιακίμ
ἤ ἐχθύνησε τὸν Ἀζάρ.
- 14 Ἀζάρ ἤ ἐχθύνησε τὸν Σαδὰκ· Σαδὰκ ἤ ἐ-
χθύνησε τὸν Ἀχείμ· Ἀχείμ ἤ ἐγέννησε τὸν Ἐλιᾶδ.
- 15 Ἐλιᾶδ ἤ ἐχθύνησε τὸν Ἐλεάζαρ· Ἐλεάζαρ
ἤ ἐχθύνησε τὸν Ματθάν· Ματθάν ἤ ἐχθύνησε
τὸν Ἰακώβ.
- 16 Ἰακώβ ἤ ἐχθύνησε τὸν Ἰωσήφ τὸν ἀνδρα Μα-
ρίας, ἐξ ἧς ἐγεννήθη Ἰησοῦς ὁ λεγόμενος Χριστός.
- 17 Πᾶσαι οὖν αἱ γενεαὶ ἀπὸ Ἀβραάμ ἕως
Δαβὶδ, γενεαὶ δεκαπέντε· καὶ ἀπὸ Δα-
βὶδ ἕως τῆς μεθικισίας Βαβυλῶν, γενεαὶ
δεκαπέντε· καὶ ἀπὸ τῆς μεθικισίας Βαβυ-
λῶν ἕως τοῦ Χριστοῦ, γενεαὶ δεκαπέντε.

18 Τῷ Ἰησοῦ Χριστῷ ἡ γέννησις ἕτως ἰω̄.
Μητρούθειας γὰρ τῆ μητρὸς αὐτῆς Μαρίας
τῷ Ἰωσήφ, πρὶν ἢ σκελεθῆν αὐτὰς, δὴρέθη
ἐν γαστρὶ ἔχουσα ἐκ πνεύματι ἁγίου.

19 Ἰωσήφ δὲ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, δίκαιος ὢν, ἐμὴ
θέλων αὐτῷ ὡς ἀδελφμαίωσιν, ἐβλήθη
λάθρα ἀπολῦσαι αὐτῷ.

20 Ταῦτα δὲ αὐτῆς ἐνυμηθέντι, ἰδὲ, ἀγγε-
λοῦ Κυρίου κατ' ὄναρ ἐφαίνε αὐτῷ, λέγων,
Ἰωσήφ υἱὸς Δαβίδ, μὴ φοβηθῆς ὡς λα-
βεῖν Μαρίαν τὴ γυναῖκα σου· τὸ γὰρ ἐν αὐτῇ
γεννηθὲν ἐκ πνεύματος ἁγίου ἐστίν ἁγίου.

21 Τέξεται δὲ υἱόν, καὶ καλέσῃς τὸ ὄνομα αὐτῆς
ἸΗΣΟΥΣ· αὐτὸς γὰρ σώσει τὸ λαὸν αὐτῆς
ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν.

22 (Τῷτο δὲ ὅλον γέγονεν ἵνα πληρωθῆ τὸ
ῥηθὲν ὑπὸ τοῦ Κυρίου διὰ τοῦ προφήτου, λέ-
γοντι,

23 Ἰδὲ, ἡ παρθένος ἐν γαστρὶ ἔξει, ἐτεκε
υἱόν, καὶ καλέσῃς τὸ ὄνομα αὐτῆς ΕΜΜΑ-
ΝΟΥΗΛ· ὅ ἐστι μεθερμηνεύμενον, μετ'
ἡμῶν ὁ Θεός.)

24 Διεγερθεὶς δὲ ὁ Ἰωσήφ ἀπὸ τοῦ ὕπνου, ἐπαί-
σεν ὡς προσέταξεν αὐτῷ ὁ ἀγγελὸς Κυρίου,
καὶ παρέλαβε τὴν γυναῖκα αὐτοῦ.

25 Καὶ σὺκ ἐγένωσκεν αὐτῷ, ἕως ἃ ἔτεκε
τὸν υἱόν αὐτῆς τὸν πρωτότοκον, καὶ ἐκάλεσε
τὸ ὄνομα αὐτῆς ἸΗΣΟΥΣ.

Κεφ. β' 2.

1 ΤΟ Οὗ Ἰησοῦ γεννηθέντος ἐν Βηθλεὲμ τῆς Ἰουδαίας, ἐν ἡμέραις Ἡρώδης τοῦ βασιλέως, ἰδοὺ μάγιστροι ἀπὸ ἀνατολῶν περιηχόντες εἰς Ἱερουσόλυμα, λέγοντες·

2 Πῶς ἐστὶν ὁ τεχθεὶς βασιλεὺς τοῦ Ἰουδαίων; εἶδομεν γὰρ αὐτὸν ἐν ἀστέροις ἐν τῇ ἀνατολῇ, καὶ ἦλθομεν προσκυκῆσαι αὐτῷ.

3 Ἀκούσας ὁ Ἡρώδης ὁ βασιλεὺς ἐταράχθη, καὶ πάντα Ἱερουσόλυμα μετ' αὐτῶν.

4 Καὶ συναγαγὼν πάντας τὰς ἀρχιερεῖς καὶ γραμματεῖς τοῦ λαοῦ, ἐκωθένετο παρ' αὐτῶν πῶς ὁ Χριστὸς γενήσεται.

5 Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Ἐν Βηθλεὲμ τῆς Ἰουδαίας· ἔτι γὰρ γέγραπεν·

6 Καὶ σὺ Βηθλεὲμ, γῆ Ἰούδα, ὀδυνῶς ἐλαχίστη ἐν ταῖς ἡγεμόσιν Ἰούδα· ἐκ σὺ γὰρ ἐξελεύσεται ἡγεμὼν τοῦ λαοῦ, ὅστις ποιμανεῖ τὸν λαόν σου τὸν Ἰσραήλ.

7 Τότε Ἡρώδης λάθρα καλέσας τὰς μάγιστρον, ἠκρίβωσεν παρ' αὐτῶν τὸ χρόνον τοῦ φαινομένου ἀστέρου.

8 Καὶ πῖμψας αὐτοὺς εἰς Βηθλεὲμ, εἶπε· Πορεύθητε, ἀκριβῶς ἐξετάσατε ποῦ ἐστὶν το παιδίον· ἐπὰν δὲ εὕρητε, ἀπαγγείλατέ μοι, ὅπως καὶ ἐγὼ ἐλθὼν προσκυκῆσω αὐτῷ.

9 Οἱ δὲ ἀκούσας τοῦ βασιλέως, ἐπορεύθησαν. Ἐἰδὼς ὁ ἀστὴρ ἦν εἶδον ἐν τῇ ἀνατολῇ, ἀπαῆλθεν αὐτοὺς.

- αὐτὰς, ἕως ἐλθῶν ἕστη ἐπάνω ἔλω τὸ παιδίον.
- 10 Ἰδόντες δὲ τὴν ἄστέρα, ἐχάρησαν χαρὰν
μεγάλην σφόδρα.
- 11 Καὶ ἐλθόντες εἰς τὴν οἰκίαν, κῆρον τὸ παι-
δίον μετὰ Μαρίας τῆς μητρὸς αὐτοῦ. καὶ προσήτες
προσεκύνησαν αὐτῷ· καὶ ἀνοίξαντες τὰς θη-
σαυρὰς αὐτῶν, προσέωσαν αὐτῷ δῶρα,
ζεῦσον, καὶ λιβαῖον, καὶ σμόρναι.
- 12 Καὶ χρηματίσθεις καὶ ὄναρ μὴ ἀνα-
κάμψαι πρὸς Ἡρώδην, δι' ἄλλης ὁδοῦ ἀνε-
χώρησαν εἰς τὴν χώραν αὐτῶν.
- 13 Ἀναχωρησάντων δὲ αὐτῶν, ἰδὲ, ἄγγελος
Κυρίου φαίνετο καὶ ὄναρ τῷ Ἰωσήφ, λέγων·
Ἐγερθεὶς ὡρᾶ λαβε τὸ παιδίον καὶ τὴν μητέρα
αὐτοῦ, καὶ φεῦγε εἰς Αἴγυπτον· καὶ ἴσθι ἐκεῖ ἕως
αὐ εἴπω σοι· μέλλει γὰρ Ἡρώδης ζητεῖν τὸ παι-
δίον, ἵνα ἀπολέσται αὐτό.
- 14 Ὁ δὲ ἐγερθεὶς παρέλαβε τὸ παιδίον ἔτι μη-
τέρα αὐτοῦ νυκτὸς, ἵνα ἀνεχώρησεν εἰς Αἴγυπτον·
- 15 Καὶ ἔκει ἕως τῆς τελευτῆς Ἡρώδου· ἵνα
πληρωθῆ τὸ ῥηθὲν ὑπὸ τοῦ Κυρίου διὰ τοῦ προ-
φήτου, λέγοντος· Ἐξ Αἰγύπτου ἐκάλεσται τὸν
υἱόν μου.
- 16 Τότε Ἡρώδης ἰδὼν ὅτι ἐνεπαύθη ὑπὸ τῶν
μαγῶν, ἐθυμώθη λίαν· ἔδωκε δὲ ἐλάσιν ἀνεῖλε
πάντας τὰς παιδας τὰς ἐν Βηθλεὲμ ἔτι ἐν πάσι
τοῖς ὄρεοις αὐτῆς, ἀπὸ διεῖξος καὶ κατωτέρω,
καὶ τὸ ζῆλον αὐτοῦ ἠκράβωσε ὡρᾶ τῶν μαγῶν.

- 17 Τότε ἐπληρώθη τὸ ῥηθὲν ὑπὸ Ἰερεμίου ὁ
 πρῶτος, λέγων·
- 18 Φωνὴ ἐν Γαμαῖ ἠκούσθη, φιλῶος ἐκλαυθ-
 μός ἐ ὀδυρμός πολὺς, Γαχὴλ κλαίεσαι τὰ
 τέκνα αὐτῆς· κὶ σὸκ ἤτελε Ὁρακληθῶα,
 ὅτι σὸκ εἰσί.
- 19 Τελούτηται ὁ ὁ Ἡρώδης, ἰδὼν ἀγγε-
 λον Κυρίας καὶ ὄναρ φαίνε) τῷ Ἰωσήφ
 ἐν Αἰγύπτῳ,
- 20 Λέγων, Ἐγερθεὶς Ὁραλαβε τὸ παιδίον ἐ
 τὴ μητέρα αὐτῆ, ἐ παρὺς εἰς γῆν Ἰσραήλ·
 πεθήκησι γὰ οἱ ζήῆτες τὴ ψυχῶν τὸ παιδίον.
- 21 Οὗ ὁ ἔγερθεὶς παρέλαβε τὸ παιδίον ἐ
 τὴ μητέρα αὐτῆ, ἐ ἦλθεν εἰς γῆν Ἰσραήλ.
- 22 Ἀκούσας ὁ ὁ Ἀρχέλαος βασιλεύς ἐπὶ
 τῆ Ἰουδαίας ἀπὸ Ἡρώδης τὸ πατρὸς αὐτῆ,
 ἐφοβήθη ἐκεῖ ἀπελθεῖν. χρηματοδοεὶς ὁ καὶ
 ὄναρ, ἀνέχωρησεν εἰς τὰ μέρη τῆ Γαλιλαίας.
- 23 Καὶ ἔλθων κατέκνησεν εἰς πόλιν λεγομένην
 Ναζαρέτ· ὅπως πληρωθῆ τὸ ῥηθὲν διὰ τῶν
 προφητῶν, ὅτι Ναζωραῖος κληθήσεται).

Κεφ. γ'. 3.

- 1 **Ε**Ν ὁ ταῖς ἡμέραις ἐκείναις Ὁραγι-
 νε) Ἰωάννης ὁ βαπτιστῆς, κηρύσσων ἐν τῇ
 ἐρήμῳ τῆ Ἰουδαίας,
- 2 Καὶ λέγων, Μετανοεῖτε· ἤγγικε γὰ ἡ βα-
 σιλεία τῆ βασιλείων.
- 3 Οὗτος γὰρ ἐστὶν ὁ ῥηθὲς ὑπὸ Ἠσαΐα ὁ
 πρῶτος,

προφήτης, λέγει· Φωνή βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἐτοιμάσατε τὸ δὸν Κυρίου, οὐθείας ποιεῖτε ἐν τῷ πεδίῳ αὐτοῦ.

4 Αὐτὸς ἰωάννης εἶχε τὸ ἔνδυμα αὐτοῦ ἀπὸ τριῶν καμήλων, καὶ ζώνην δερματίνην περὶ τὸ σφῦν αὐτοῦ. ἢ εἰς τροφή αὐτοῦ κὶ ἀκρίδες καὶ μέλι ἄγριον.

5 Τότε ἐξεπορεύετο πρὸς αὐτὸν Ἱεροσόλυμα, καὶ πᾶσα ἡ Ἰουδαία, καὶ πᾶσα ἡ περὶχωρὸς τῆς Ἰορδάνου.

6 Καὶ ἐβαπτίζοντο ἐν τῷ Ἰορδάνῳ ὑπὸ αὐτοῦ, ἐξομολογούμενοι ἐν ἁμαρτίαις αὐτῶν.

7 Ἰδὼν δὲ πολλὰς τῶν Φαρισσαίων καὶ Σαδδουκαίων ἐρχομένους ἐπὶ τὸ βάπτισμα αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς· Γεννήματα ἔχιδνῶν, τίς ὑπέδραξεν ὑμῖν φυγεῖν ἀπὸ τῆς μελλούσης ὀργῆς;

8 Ποιήσατε οὖν καρπὸς ἀξίους τῆς μετάνοιας.

9 Καὶ μὴ δάξητε λέγαν ἐν ἑαυτοῖς· Πατέρας ἔχομεν τὸν Ἀβραάμ· λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι οὐαὶ ὁ Θεὸς ἐκ τῶν λίθων τούτων ἐγενήσεται τέκνα τῷ Ἀβραάμ.

10 Ἢδη ἰὴ καὶ ἡ ἀξίωσις πρὸς τὴν ῥίζαν τῆς δένδραν καὶ· πᾶν οὐκ δένδρον μὴ ποιεῖν καρπὸν καλόν, ἐκκόπτεται, καὶ εἰς πῦρ βάλλεται.

11 Εγὼ μὲν βαπτίζω ὑμᾶς ἐν ὕδατι εἰς μετάνοιαν· ὃ ἵνα ὀπίσω με ἐρχόμενος, ἰσχυρότερός με εἶναι, ὃ ὅτι ἐγὼ εἰμὶ ἰκανὸς τὰ ὑποδήματα

βασιάσκη. αὐτὸς ὑμᾶς βαπτίσθη ἐν πνύματι
ἁγίῳ καὶ πυρὶ.

12 Οὐ τὸ πλύνον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ Διψα-
μαρεῖ πλύνει ἄλλα αὐτοῦ, καὶ σκουᾶς τὸν
οἶτον αὐτοῦ εἰς πλύνει ἀποθήκῃ, τὸ δὲ ἄχυρον
καὶ καθαυτὴ πυρὶ ἀσβέσει.

13 Τότε ὡς ἤρξινε ὁ Ἰησοῦς ἀπὸ τῆς Γαλι-
λαίας ἐπὶ τὸ Ἰορδάνην πρὸς τὸν Ἰωάννην, ὃς
βαπτιστὴν ἦν ὑπὸ αὐτοῦ.

14 Οὗ δὲ Ἰωάννης διεκώλυεν αὐτὸν, λέγων·
Ἐγὼ χρεῖαν ἔχω ὑπὸ σοῦ βαπτισθῆναι, καὶ
σύ ἐρχῆ πρὸς με;

15 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπε πρὸς αὐτόν·
Ἄφες ἄρτι· ἔγω γὰρ πρέπει εἶναι ἡμῖν πληροῦ-
σαι πᾶσιν δικαιοσύνην. Τότε ἀφίησιν αὐτόν.

16 Καὶ βαπτισθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἀνέβη ἀπὸ τοῦ
ὕδατος· καὶ ἰδὼς, ἀνεώχθησαν αὐτῷ οἱ
ὕβρανοι, ἔειδε τὸ πνεῦμα ὃ Θεὸς καθ' ἁβάνον
ὡσεὶ περιστερῶν, καὶ ἐρχόμενον ἐπ' αὐτόν.

17 Καὶ ἰδὼς φωνὴ ἐκ τῶν ὑβρανῶν, λέγουσα· Οὗ-
τός ἐστι ὁ υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, ἐν ᾧ δούλωσα.

Κεφ. δ'. 4.

1 Τότε ὁ Ἰησοῦς ἀνήχθη εἰς πλύνει ἔρημον
ὑπὸ τῆς πνύματος, πηραδὴν ὑπὸ
τοῦ Διψαβόλου.

2 Καὶ νησάσας ἡμέρας τεσσαράκοντα καὶ
νύκτας τεσσαράκοντα, ὑστερον ἐπεινάσει.

3 Καὶ πρὸς τὸν αὐτῷ ὁ πηραδὴν εἶπεν·
Εἶ

Εἰ ἕως εἶ ἔθεισ, εἰπέ ἵνα οἱ λίθοι ἔστωι ἄρτοι
 ἡμῶν).

4 Ὁ ἵ ἀποκριθεὶς, εἶπε· γέγραπῆ· Οὐκ ἐπ'
 ἄρτων μόνων ζήσεται ἄνθρωπος, ἀλλ' ἐπὶ παντὶ
 ῥήματι ἐκπορεύομεθα διὰ στόματός Θεοῦ.

5 Τότε πῶρα λαμβάνει αὐτὸν ὁ Διάβολος
 εἰς πλὴν ἀγίαν πέλιν, καὶ ἵσησιν αὐτὸν ἐπὶ τὸ
 πτερύγιον τοῦ ἱεροῦ.

6 Καὶ λέγει αὐτῷ· Εἰ ἕως εἶ ἔθεισ, βάλε
 σεαυτὸν κάτω· γέγραπῆ γάρ· Ὅτι τοῖς ἀγγέ-
 λοις αὐτῷ ἐπιτελεῖται πάντα τὰ ῥήματα,
 καὶ ἐπὶ χερῶν ἄγγελλοῦ σου, μήποτε προσκόψῃς πῶς
 λίθον ἢ πόδα σου.

7 Ἐφί αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· πάλιν γέγραπῆ·
 Οὐκ ἐκπράσσεις Κύριον τὸ Θεόν σου.

8 Πάλιν πῶρα λαμβάνει αὐτὸν ὁ Διάβολος
 εἰς ὄρος ὑψηλὸν λίαν, καὶ δείκνυσιν
 αὐτῷ πάσας τὰς βασιλείας τοῦ κόσμου ἐπὶ
 τῆς γῆς.

9 Καὶ λέγει αὐτῷ· Ταῦτα πάντα σοι δώσω,
 εἰν πεσὼν προσκυνήσῃς μοι.

10 Τότε λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἰπαγε σατανᾶ·
 γέγραπῆ γάρ· Κύριον τὸ Θεόν σου προσκυ-
 νήσῃς, καὶ αὐτῷ μόνῳ λατρεύσῃς.

11 Τότε ἀφίησιν αὐτὸν ὁ Διάβολος· καὶ ἰδὼς,
 ἄγγελοι προσήλθον, καὶ διηκρίβον αὐτῷ.

12 Ἀκὼσας ὁ Ἰησοῦς ὅτι Ἰωάννης παρεδόθη,
 ἀνεχώρησεν εἰς πλὴν Γαλιλαίαν.

10 ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ - Cap. 4.

13 Καὶ ἔξελθὼν τὸ Ναζαρέτ, ἔλθων κατέ-
κησεν εἰς Καπερναῦμ τὴν Ὠρθοταλασσίαν,
ἐν ὁρίοις Ζαβουλὼν καὶ Νεφθαλείμ.

14 Ἴνα πληρωθῆ τὸ ρηθὲν Δὲ Ἡσαΐας τοῦ
προφήτου, λέγοντος·

15 Ἦν Ζαβουλὼν καὶ γῆ Νεφθαλείμ, ὁδὸν Γε-
λαόσης, πέραν τῆς Ἰορδάνης, Γαλιλαία τῶν ἔθνων.

16 Ὁ λαὸς ὁ κατήμενον ἐν σκοτίᾳ, εἶδε φῶς
μεγαλὴν, καὶ τοῖς κατηρμένοις ἐν σκιά καὶ σκιᾶ
θανάτου, φῶς ἀνέτειλεν αὐτοῖς.

17 Ἀπὸ τότε ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς κηρῦσθαι, καὶ λέγει·
Μετανοεῖτε· ἤγγικεν γὰρ ἡ βασιλεία τοῦ θεοῦ.

18 Περιπατῶν δὲ ὁ Ἰησοῦς ὡρθεὶς πρὸς τὴν θάλασ-
σαν τῆς Γαλιλαίας, εἶδε δύο ἀδελφούς, Σί-
μωνα τὸν λεγόμενον Πέτρον, καὶ Ἀνδρέαν τὸν
ἀδελφὸν αὐτοῦ, βάλλοντες ἀμφίβλητρον εἰς
τὴν θάλασσαν (ἦσαν γὰρ ἀλιεῖς)

19 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Δεῦτε ὀπίσω με, καὶ
ποιήσω ὑμᾶς ἀλιεῖς ἀνθρώπων·

20 Οἱ δὲ εὐθέως ἀφέντες τὰ δίκτυα, ἠκολού-
θησαν αὐτῷ.

21 Καὶ ἀποβὰς ἐκείθεν, εἶδεν ἄλλους δύο ἀ-
δελφούς, Ἰάκωβον τὸν υἱὸν Ζεβεδαίου, καὶ Ἰωάν-
νην τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τῷ πλοίῳ μετὰ Ζε-
βεδαίου υἱοῦ πατρὸς αὐτῶν, καθαρίζοντες τὰ
δίκτυα αὐτῶν· καὶ ἐκάλεσεν αὐτούς.

22 Οἱ δὲ εὐθέως ἀφέντες τὸ πλοῖον καὶ τὴν
πατέρα αὐτῶν, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

Καὶ

23 Καὶ ἐδίδασκεν ἐν ὄλῳ τῆ Γαλιλαίας ὁ Ἰησοῦς, διδάσκων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν, καὶ κηρύσσων τὸ εὐαγγέλιον τῆ βασιλείας, καὶ θεραπεύων πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν μαλακίαν ἐν τῷ λαῷ.

24 Καὶ ἀπῆλθεν ἡ ἀκρότης αὐτῆ εἰς ὄλῳ τῆ Συρίας· ἐπεσκήνεσκον αὐτῷ πάντας τὰς κακῶς ἔχοντας, πικίλας νόσους καὶ βασάνους συναρμύρας, καὶ δαιμονισμῶν, καὶ σεληνισμῶν, καὶ ὄφθαλμικῶν· καὶ ἐθεράπευσεν αὐτάς.

25 Καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοὶ ἀπὸ τῆ Γαλιλαίας καὶ Δεκαπόλεως καὶ Ἱεροσολύμων καὶ Ἰδαίας, καὶ πέραν τῆ Ἰορδάνης.

Κεφ. ε. ς.

1 Ἰδὼν ἡ τὰς ὄχλους, ἀνέστη εἰς τὸ ὄρος· καὶ καθίσαντος αὐτῆ, προσήλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτῆ·

2 Καὶ ἀνοίξας τὸ στόμα αὐτῆ, ἐδίδασκεν αὐτάς, λέγων·

3 Μακάριοι οἱ πτωχοὶ τῷ πνεύματι· ὅτι αὐτῶν ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν.

4 Μακάριοι οἱ πενθῆντες· ὅτι αὐτοὶ ὄφρα κληθήσονται.

5 Μακάριοι οἱ πεινῶντες· ὅτι αὐτοὶ κληρονομήσουσι τὸ γένος.

6 Μακάριοι οἱ πεινῶντες καὶ διψῶντες· ὅτι αὐτοὶ χορτασθήσονται.

7 Μακάριοι οἱ ἐλεηθῆντες· ὅτι αὐτοὶ ἐλεηθήσονται.

A 6

8 Μακά-

12 ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ Cap. 5.

- 8 Μακάριοι οἱ καθαροὶ τῆ καρδίας ὅτι αὐτοὶ τὸ Θεὸν ὄψοντο.
- 9 Μακάριοι οἱ εἰρηνόποιοι ὅτι αὐτοὶ υἱοὶ Θεοῦ κληθήσονται.
- 10 Μακάριοι οἱ δεδιωγμένοι ἕνεκεν δικαιοσύνης ὅτι αὐτῶν ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ.
- 11 Μακάριοι ἔστε ὅταν ἐκδικήσωσιν ὑμᾶς καὶ διώξωσι, ἔειπαι πᾶν πονηρὸν ῥῆμα κατ' ὑμῶν, ψευδομάρτυροι, ἕνεκεν ἐμοῦ.
- 12 Χαίρετε καὶ ἀγαλλιῶσθε ὅτι ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐστὶν ἐν τοῖς οὐρανοῖς ἕτι καὶ ἐδίωξαν τὸν πατέρα ὑμῶν.
- 13 Ὑμεῖς ἔστε τὸ ἅλας τῆ γῆς· ἐὰν ἡ τὸ ἅλας μωραυνθῇ, ἐν τίῃ ἀλιθίσεται; εἰς ἕδρην ἰχθύος ἐπιεῖ μὴ βληθῆναι ἔξω, καὶ καταπαλεῖσθαι ὑπὸ τοῦ ἀνθρώπου.
- 14 Ὑμεῖς ἔστε τὸ φῶς τοῦ σώματος. ἐδύναται πόλις κρυφῆναι ἐπάνω ὄρους καὶ μῦθου.
- 15 Οὐδὲ κηρύσσει λυχνον, καὶ πηξάσιν αὐτὸν ὑπὸ τὸ μῦθον, ἀλλ' ἐπὶ τὸ λυχνίαν, καὶ λάμπει πᾶσι τοῖς ἐν τῇ οἰκίᾳ.
- 16 Οὕτω λαμψάτω τὸ φῶς ὑμῶν ἔμπροσθεν τοῦ ἀνθρώπου, ἵπως ἴδωσιν ὑμῶν τὰ καλὰ ἔργα, καὶ δοξάσωσι τὸ πατέρα ὑμῶν τὸ ἐν τοῖς οὐρανοῖς.
- 17 Μὴ νομίσητε ὅτι ἦλθον καταλύσαι τὸ νόμον, ἢ τὰς παραβολὰς· οὐκ ἦλθον καταλύσαι, ἀλλὰ πληρῶσαι.

18 Ἀμὲν

- 18 Ἀμὲν γὰρ λέγω ὑμῖν, ἕως αὐτὸς παρέλθῃ ὁ ἔρανος ἐπὶ τὴν γῆν, ἰᾶται ἐν ἡμῖν μία κεραία καὶ μὴ παρέλθῃ ἀπὸ ἡμῶν, ἕως αὐτοῦ πάντες γένηται.
- 19 Ὅς ἐάν οὐκ ἴσῃ λύση μίαν τῶν σιθῶν τέτων τῶν ἐλαχίστων, καὶ διδάξῃ ἕνα τῶν ἀνθρώπων, ἐλάττωσθαι κληθήσεται ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν ἔρανων· ὅς δ' αὖ ποιήσῃ ἐπὶ διδάξῃ, ἕτω μέγας κληθήσεται ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν ἔρανων.
- 20 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι ἐάν μὴ παύσῃ ἡ δικαιοσύνη ὑμῶν παλεῖον τῶν γραμματέων καὶ φαρισαίων, καὶ μὴ εἰσέλθῃτε εἰς τὴν βασιλείαν τῶν ἔρανων.
- 21 Ἡ κέσασθε ὅτι ἐρρέθη τοῖς ἀρχαίοις· Οὐ φονεύσῃς· ὅς δ' αὖ φονεύσῃ, ἔνοχος ἔσται τῇ κρείσσει.
- 22 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι πᾶς ὁ ὀργιζόμενος ἐπὶ τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ εἰκῆ, ἔνοχος ἔσται τῇ κρείσσει· ὅς δ' αὖ εἴπῃ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ῥακά, ἔνοχος ἔσται τῷ σινεδρίῳ· ὅς δ' αὖ εἴπῃ μαρὰ, ἔνοχος ἔσται εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρός.
- 23 Ἐάν οὐκ ἀποσφύγγῃς τὸ δῶρόν σου ἐπὶ τὸ δικαιοσύνην, καὶ κεί μνησθῆς ὅτι ὁ ἀδελφός σου ἐχθρὸς ἐστίν.
- 24 Ἄφες καὶ τὸ δῶρόν σου ἐμπροσθεν τοῦ δικαιοσύνης, καὶ ἕπαγε, ὡς τὸν ἀδικάγητε τῷ ἀδελφῷ σου, καὶ τότε ἐλθὼν ἀποσφύγγῃς τὸ δῶρόν σου.
- 25 Ἴσθι συνοῶν τῷ ἀδικῶν σου ταχὺ, ἕως ὅτου εἶς ἐν τῇ ὁδοῦ μετ' αὐτοῦ· μήποτε σε ἀρπάξῃ ὁ ἀν-

ὁ ἀνὴρ κ' τῆς κρείττης, κ' ὁ κρείττος τῆς ἀδελφῆς
τῆς ὑπερέτης, κ' εἰς φυλακὴν βληθήσῃ.

26 Ἀλλὰ λέγω σοι, εἰ μὴ ἐξέλθῃς ἐκεῖθεν ἕως
αὐτῆς ἀποδώσῃ ἕνα χροῖον.

27 Ἡκέστατα ὅτι ἐρέθη τοῖς ῥαββίοις· Οὐ
μοιχοσύνη.

28 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι πῶς ὁ βλέπων γυ-
ναῖκα πρὸς τὸ ἐπιθυμῆσαι αὐτῆς, ἤδη ἐμοι-
χοσύνη αὐτῷ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ.

29 Εἰ δὲ ὁ ὀφθαλμὸς σου ὁ δεξιὸς σκανδαλίζῃ
σε, ἔξελε αὐτὸν, κ' βάλε ἀπὸ σῆς· συμφέρει
γαρ σοι ἵνα ἀπόληται ἓν τῶν μελῶν σου, κ' μὴ
ὅλον τὸ σῶμά σου βληθῇ εἰς γέενναν.

30 Καὶ εἰ ἡ δεξιὰ σου χεὶρ σκανδαλίζῃ σε,
ἔκκοψον αὐτήν, κ' βάλε ἀπὸ σῆς· συμφέρει
γαρ σοι ἵνα ἀπόληται ἓν τῶν μελῶν σου, κ' μὴ
ὅλον τὸ σῶμά σου βληθῇ εἰς γέενναν.

31 Ἐρέθη δὲ ὅτι ὅς αὐτὸν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα
αὐτῆς, ὁπῶς αὐτῇ ἀποδοῖται.

32 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι ὅς αὐτὸν ἀπολύσῃ τὴν
γυναῖκα αὐτοῦ, παρὰ τὸν λόγον πορνείας,
ποιεῖ αὐτὴν μοιχάσαντα· καὶ ὅς ἐάν ἀπολελυ-
μένῳ γαμήσῃ, μοιχᾶται.

33 Πάλιν ἠκέστατα ὅτι ἐρέθη τοῖς ῥαββίοις·
Οὐκ ἐπορεύθητε, ἀποδώσας δὲ τῆς Κυριατῆς
ἄρκους.

34 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, μὴ ὁμῶς ὅλας· μήτε
ὅτι τῆς ἑσπέρης, ὅτι ἡμεῖς ἐσμεν ὁ Θεός.

- 35 Μήτε ἐν τῇ γῆ, ὅτι ὑποπόδιόν ἐστι τῶ πο-
δῶν αὐτοῦ· μήτε εἰς Ἱερουσόλυμα, ὅτι πόλις
ἐστὶ τῆς μεγάλης βασιλείας.
- 36 Μήτε ἐν τῇ κεφαλῇ σε ὁμόσης, ὅτι ἐ-
δίωσαμ μίαν τρίχα λευκὴν ἢ μέλαιναν
ποιῆσαμ.
- 37 Ἐγὼ δὲ ὁ λόγος ὑμῶν, Ναὶ ναί, Οὐ εἶ-
πὸς ὡς οἱ ἄλλοι τῶν ῥημάτων, ἐκ τῆς πονηρίας ἐστίν.
- 38 Ἡκέσατε ὅτι ἐρέθη· Ὁφθαλμὸν ἀπὸ
ὀφθαλμοῦ, καὶ ὀδόντι ἀπὸ ὀδόντι·
- 39 Ἐγὼ ἢ λέγω ὑμῖν, μὴ ἀντιστάναι τῶ πω-
νηρῶ· ἀλλ' ὅστις σε ραπίσει ἐπὶ τὸ δεξιὸν σου
σιαγόνα, σπρέσον αὐτὸν καὶ τὴν ἄλλην·
- 40 Καὶ τῶ θέλοντί σοι κολυβίσσαι, ἐκ τῆς χειρὸς
σου λαβεῖν, ἄφες αὐτὸν ἐκ τῆς ἱμέρας.
- 41 Καὶ ὅστις σε ἀγκυρώσει μίλιον ἕν, ὑπάγε
μετ' αὐτοῦ δύο.
- 42 Τῶ αἰτῶντί σε δίδε· καὶ τὸ θέλοντά ἀπὸ
σου δανείσαι αὐτῷ, μὴ ἀποσραφῆς.
- 43 Ἡκέσατε ὅτι ἐρέθη· Ἀγαπήσεις τὸ πλη-
σίον σου, καὶ μισήσεις τὸ ἐχθρόν σου·
- 44 Ἐγὼ ἢ λέγω ὑμῖν, ἀγαπᾶτε τοὺς ἐχθροὺς
ὑμῶν, βύλογεῖτε τοὺς κολυβιστὰς ὑμῶν,
καλῶς ποιεῖτε τοὺς μισοῦντάς ὑμᾶς, καὶ πορ-
σούχεσθε ὑπὲρ τῶν ἐπηρεάζοντων ὑμᾶς καὶ
διωκόντων ὑμᾶς·
- 45 Ὅπως γάρ ηὐδοτε ἡμεῖς πατρὸς ὑμῶν ἡ ἐν
οὐρανοῖς, ὅτι τὸ ἥλιον αὐτὸ ἀνατέλλει ἐπὶ πονηροὺς
καὶ

καὶ ἀγαθὸς, καὶ βοήθη ἐπὶ δικαίαις καὶ ἀδίκαις.

46 Ἐάν γὰρ ἀγαπήσῃτε τοὺς ἀγαπῶντας ὑμᾶς, πῶς μισθὸν ἔχετε; ἔχεται οἱ τελῶνας τὸ αὐτὸ ποιεῖσι;

47 Καὶ ἴαν ἀπαύσηθε τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν μῆτιον, ἢ φθιστὸν ποιεῖτε; ἔχεται οἱ τελῶνας ἕτω ποιεῖται;

48 Ἔσεθε οὖν ὑμεῖς τέλφοι, ὡςπερ ὁ πατήρ ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς ἔθρονοις τέλφος ἐστίν.

Κεφ. 6. 6.

1 ΠΡΟΤΙΧΕΙ ΤΙΝΩ ἑλεημοσιῶν ὑμῶν μὴ πιεῖν ἑμπεδοεῖν τῷ ἀνθρώπῳ, ὡς τὸ θεαθῆναι αὐτοῖς ἐν τῇ μήτρῃ, μισθὸν οὐκ ἔχετε. ὡς τὰ παιρὶ ὑμῶν τῷ ἐν τοῖς ἔθρονοις.

2 Ὅταν εἴποις ἑλεημοσιῶν, μὴ σελπίσης ἑμπεδοεῖν (ε. ὡςπερ οἱ ὑπεκρίθη ποιεῖσιν ἐν ταῖς συναγωγαῖς καὶ ἐν ταῖς ρύμαις, ὅπως δοξαζῶσιν ὑπὸ τῷ ἀνθρώπῳ. ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἀπέχου τῷ μισθὸν αὐτῶν.

3 Σὺ δὲ ποιῆ τὴν ἑλεημοσιῶν, μὴ γνώτω ἡ δεξιερὰ (ε. τί ποιεῖ ἡ δεξιὰ (ε.

4 Ὅπως ἡ σὺ ἡ ἑλεημοσιῶν ἐν τῷ κρυπτῷ, καὶ ὁ πατήρ (ε. ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ, αὐτὸς ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ.

5 Καὶ ὅταν περὶ σὺ χη, ἔκστη ὡςπερ οἱ ὑπεκρίθη ὅτι φιλεῖ (ε. ἐν ταῖς συναγωγαῖς καὶ ἐν ταῖς ρύμαις τῷ πλουτῶν ἐσῶτες περὶ σὺ χη, ὅπως αὐ φαίνωσι τοῖς ἀνθρώποις. ἀμὲν λέγω

λέγω ὑμῖν, ὅτι ἀπέχου τὸν μισθὸν αὐτῶν.

6 Σὺ ᾧ ὅταν προσδύχη, εἰσελθε εἰς τὸ ταμιεῖον (καὶ κλείσας τὴ θύραν (καὶ προσδύξαι τῷ πατρὶ (καὶ τῷ ἐν τῷ κρυπτή. καὶ ὁ πατήρ (καὶ ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτή, ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ.

7 Προσδύχοντες δὲ μὴ βαπτολογήσητε, ὡς περ εἰ ἐθνικῶν· δοκεῖ γὰρ ὅτι ἐν τῇ πολυλογίᾳ αὐτῶν εἰσπαροῦσθε (ἐν).

8 Μὴ εἴ ὁμωθῆτε αὐτοῖς· οἶδε γὰρ ὁ πατήρ ὑμῶν ἂν χρεῖαν ἔχετε, καὶ ἔξ ὑμᾶς αἰτήσεται αὐτόν.

9 Οὕτως εἴ προσδύχετε ὑμεῖς· ΠΑΤΕΡ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς ἔθνεσιν· ἀγιασθήτω τὸ ὄνομα (καὶ).

10 Ἐλθέτω ἡ βασιλεία (καὶ). Ἐκδηλωθήτω τὸ θέλημα (καὶ), ὡς ἐν ἔθνεσιν, ἐπὶ τῆς γῆς.

11 Τὸν ἄρτον ἡμῶν ἔπιψιστον δὲς ὑμῖν σήμερον.

12 Καὶ ἄφες ἡμῖν τὰ ὀφειλήματά ἡμῶν, ὡς καὶ ἡμεῖς ἀφίεμεν τοῖς ὀφειλέταις ἡμῶν.

13 Καὶ μὴ εἰς ἐνέγκης ἡμᾶς εἰς πηρασμὸν, ἀλλὰ ῥύσθη ἡμᾶς ἀπὸ πανηροῦ· ὅτι σὺ εἶσιν ἡ βασιλεία, ἐὶ ἡ δυνάμις, ἐὶ ἡ δόξα εἰς τὰς αἰῶνας. ἀμήν.

14 Ἐὰν γὰρ ἀφῆτε τοῖς ἀνθρώποις τὰ ὀφειλήματά αὐτῶν, ἀφήσει καὶ ὑμῖν ὁ πατήρ ὑμῶν ὁ ἐθνήσων.

15 Ἐὰν δὲ μὴ ἀφῆτε τοῖς ἀνθρώποις τὰ ὀφειλήματά

αὐτῶν

το ἄρσπιάματα αὐτῶν, ἐδὲ ὁ πατὴρ ὑμῶν
ἀφῆσεν τὰ ἄρσπιάματα ὑμῶν.

26 Ὅταν δὲ νηθεύητε, μὴ γίνεσθε ὡσπερ οἱ
ὑποκριταί, στυφρωποί. ἀφανίζετε γὰρ τὰ
προσώπα αὐτῶν, ὅπως φανῶσι τοῖς ἀνθρώ-
ποις νηθεύοντες, ἀλλ' ἔγωγε ὑμῖν ὅτι ἀπέ-
χασιν τὸ μυστὸν αὐτῶν.

27 Σὺ δὲ νηθεύων ἀλλήψαλσον τὸ κεφαλῶν,
καὶ τὸ προσώπον σου νίψου.

28 Ὅπως μὴ φανῆς τοῖς ἀνθρώποις νηθεύων,
ἀλλὰ τῷ πατρί σου ἐν τῷ κρυπῶν· καὶ ὁ
πατήρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπῶν, ἀποδώσει
σοι ἐν τῷ φανερῶν.

29 Μὴ θησαυρίζετε ὑμῖν θησαυροὺς ἐπὶ τῆς
γῆς, ὅπου σὴς καὶ βροῦσις ἀφανίζει, καὶ ὅπου
κλέπτει διορύσσει καὶ κλέπτισι.

20 Θησαυρίζετε δὲ ὑμῖν θησαυροὺς ἐν οὐρανῶν,
ὅπου οὐ σὴς οὐτε βροῦσις ἀφανίζει, καὶ ὅπου
κλέπτει διορύσσει ἐδὲ κλέπτισιν.

21 Ὅπου γάρ ἐστιν ὁ θησαυρὸς ὑμῶν, ἐκεῖ
ἔσται καὶ ἡ καρδία ὑμῶν.

22 Ὁ λύχνος τοῦ σώματος ἐστὶν ὁ ὀφθαλμὸς·
εἰ οὖν οὖν ὁ ὀφθαλμὸς σου ἀπλῆς ἦ, ὅλον τὸ
σῶμά σου φωτῆν ἔσται.

23 Εἰ δὲ ὁ ὀφθαλμὸς σου πονηρὸς ἦ, ὅλον τὸ
σῶμά σου σκοτῆν ἔσται. εἰ οὖν τὸ φῶς τὸ ἐν
σοι, σκότος ἐστὶ, τὸ σκότος πόσον;

24 Οὐδεὶς δυνάσκει κυρίως δεξιῶν ἢ
γὰρ

γὺ τ' ἕνα μισήσῃ, καὶ τ' ἕτερον ἀγαπήσῃ ἢ ἐνὸς
αὐτῆς, καὶ ἕτερον καταφρονήσῃ. ἐδιδάξατε
 Θεοῦ δαδούρην καὶ μαμμωνᾶ.

- 25 Διὰ τῶν λίθων ὑμῶν, μὴ μεριμνᾶτε τῇ ψυ-
 χῇ ὑμῶν, τί φάγητε ἢ τί πίητε· μηδὲ τὰ σώ-
 ματικῶν ὑμῶν, τί ἐνδύσῃτε· ἐχὲν ἡ ψυχὴ πολλοὺς
 ἔστι τῆς σφῆς, ἢ τὸ σῶμα ἢ ἐνδύματα;
- 26 Ἐμβλέψατε εἰς τὰ πετρίνα ἢ ἔρανον, ὅτι ἔ-
 σπείρουσιν, ἐδὲ θερίζουσιν, ἐδὲ σιωάουσιν εἰς
 ἀποθήκας, ἢ ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ ἐρανεῖται τρέφει
 αὐτά. ἔχ ὑμεῖς μάλλον ἀγαθήσει αὐτῶν;
- 27 Τίς ἢ ἐξ ὑμῶν μεριμνῶν διδάσκει
 ἀδελφῶν ἐπὶ τῇ ἡλικίᾳ αὐτῶν πῆχυν ἕνα;
- 28 Καὶ ποῦ ἐνδύματα· τί μεριμνᾶτε; κατα-
 λαμάθετε τὰ κρίνα ἢ ἄρα πῶς αὐξάνει ἢ
 κοπιᾶ, ἐδὲ νέθει·
- 29 Λέγω ἢ ὑμῖν, ὅτι ἐδὲ Σολομῶν ἐν πάσῃ
 τῇ δόξῃ αὐτοῦ περιβάλετο ὡς ἐν τέττων.
- 30 Εἰ δὲ τὸν χόρτον ἢ ἄρα, σήμερον ἄνθα,
 καὶ αὔριον εἰς κλίβακον βαλλόμενον, ὁ
 Θεὸς ἕτως ἀμφιένυσσιν, ἢ πολλὰ μάλλον
 ὑμᾶς, ὀλιγάπιστοι;
- 31 Μὴ οὖν μεριμνήσητε, λέγουσιν· τί φάγω-
 μη, ἢ τί πίωμη, ἢ τί περιβαλάμεθα;
- 32 Πάντα γὰρ ταῦτα τὰ ἔθνη ἐπιζητεῖ· οἶδε
 γὰρ ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ ἐρανεῖται ὅτι ζητεῖτε
 τέττων ἀπείλων.
- 33 Ζητεῖτε ἢ πατρὸς τῆ βασιλείαν ἢ Θεοῦ,
 καὶ

καὶ τὸ διηγοσαμένω αὐτῷ, καὶ ταῦτα πάντα
 ὡς ἐστὶν ἡμεῖς ὑμῖν.

34 Μὴ εὖ μελεμνήσητε εἰς τὴν αὔριον· ἡ γὰρ
 αὔριον μελεμνήσεται ἐαυτῆς. ὁμοίον τῆ ἡ-
 μέρα ἢ κακία αὐτῆς.

Κεφ. ζ'. 7.

1 Μὴ κρινέτε, ἵνα μὴ κριθῆτε.

2 Ἐν ᾧ γὰρ κρίματι κρινέτε, κριθήσθε·
 ἔσθ' ὃ μίσητε μαρτυρεῖτε, ἀντιμεμνησθήσθ' ὑμῖν.

3 Τίς ἔβλεψεν τὸ κάρφον τὸ ἐν τῷ ὀφθαλ-
 μῷ ἢ ἀδελφῶς (ε', τ' ἔν τῷ σφ' ὀφθαλμοῦ
 δοκῶν ἢ κριτανοῖς;

4 Ἡ πῶς ἔρεῖς τῷ ἀδελφῷ (ε'· ἄφες ἐκ-
 βάλλω τὸ κάρφον ἀπὸ ἃ ὀφθαλμοῦ (ε'· καὶ
 ἰδὲ ἡ δοκὸς ἐν τῷ ὀφθαλμοῦ (ε';

5 Ὑποκρυπτε, ἐκβαλε ὡς σφ' τὸν τ' δοκὸν ἐκ ἃ
 ὀφθαλμοῦ (ε', καὶ τότε δεῖ βλέψης ἐκβαλεῖν
 τὸ κάρφον ἐκ ἃ ὀφθαλμοῦ ἢ ἀδελφῶς (ε'.

6 Μὴ δώτε τὸ ἄγιον τοῖς κυσὶ, μήδ' ἐβάλητε
 τὰς μαργαρίτας ὑμῶν ἐμπαροθεν τ' χοίρων·
 μήποτε κολαπαθήσωσιν αὐτὰς ἐν τοῖς ποσὶν
 αὐτῶν, ἔσραφέντες ῥήξωσιν ὑμῶν.

7 Αἰτεῖτε, ἔσδοθήσθ' ὑμῖν· ζητεῖτε, καὶ
 εὕρεσθε· κρείτετε, ἔσῶσθ' ὑμῖν.

8 Πᾶς γὰρ ὁ αἰτῶν λαμβάνει, καὶ ὁ ζητῶν εὕ-
 ρισκε, καὶ τῷ κρέοντι ἀνοιγήσθ'.

9 Ἡ τίς ἐστιν ἐξ ὑμῶν ἀνθρώπου, ὃν ἐὰν αἰτή-
 σῃ ὁ ὄρος αὐτῷ ἄρθρον, μὴ λίθον ἐπιβάσῃ αὐτῷ;

10 Καὶ

- 10 Καὶ ἴαν ἰχθὺν αἰτήσῃ, μὴ ὄφιν ἐπιδώσῃ αὐτῷ;
- 11 Εἰ ἔν' ὑμεῖς, πονηροὶ ὄντες, οἴδατε δόξαζεῖν ἀγαθὰ διδόναι τοῖς τέκνοις ὑμῶν, πόσω μᾶλλον ὁ πατήρ ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς, δώσῃ ἀγαθὰ τοῖς αἰτῶσιν αὐτῶν;
- 12 Πάντα ἔν' ὅσα αὐτὴ ἐθέλη ἵνα ποιῶσιν ὑμῖν οἱ ἀγγέλοι, ἕτω καὶ ὑμεῖς ποιεῖτε αὐτοῖς· ἕτω γὰρ ἔστιν ὁ νόμος καὶ οἱ ἠερφῆται.
- 13 Εἰσελθετε διὰ τῆς στενῆς πύλης· ὅτι πλατεῖα ἡ πύλη, καὶ εὐρύχωρος ἡ ὁδὸς ἡ ἀπάγουσα εἰς τὴν ἀπώλειαν, καὶ πολλοὶ εἰσιν οἱ εἰσερχόμενοι εἰς αὐτῆς.
- 14 Ὅτι στενὴ ἡ πύλη, καὶ τεθλιμμένη ἡ ὁδὸς ἡ ἀπάγουσα εἰς τὴν ζωὴν, καὶ ὀλίγοι εἰσιν οἱ εὐρεσκοῦντες αὐτῆς.
- 15 Προσέχετε ἢ ἀπὸ τῶν ψευδοπροφητῶν, εἰπενες ἔρχου ἡμεῖς ἐν ἐνδύμασι περιβάτων, ἐσωθῆν δὲ εἰσι λύκοι ἄρπαγες.
- 16 Ἀπὸ τῶν καρπῶν αὐτῶν ἐπιγινώσκετε αὐτούς· μή τι συλλέξουσιν ἀπὸ ἀκανθῶν σταφυλῶν, ἢ ἀπὸ τριβόλων σῦκα;
- 17 Οὕτω πᾶν δένδρον ἀγαθὸν καρπὸς καλὸς ποιεῖ· τὸ δὲ σαπρὸν δένδρον καρπὸς πονηρὸς ποιεῖ.
- 18 Οὐ δύναται δένδρον ἀγαθὸν καρπὸς πονηρὸς ποιεῖν, ἕδδὲ δένδρον σαπρὸν καρπὸς καλὸς ποιεῖν.

19 Πᾶν δένδρον μὴ ποιεῖν καρπὸν καλόν, ἐκ-
κρίσει, καὶ εἰς πῦρ βάλλει.

20 Ἄραγε ἀπὸ τῆς καρπῶν αὐτῶν ἐπιγνώσεται
αὐτὸς.

21 Οὐ πᾶς ὁ λέγων μοι, Κύριε Κύριε, εἰσι-
λεύσει εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν· ἀλλ' ὁ
ποιῶν τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς.

22 Πολλοὶ ἐρῶσίν μοι ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ·
Κύριε Κύριε, ἐν τῷ (αὐτῷ) ὀνόματι αὐτοῦ φησὶ-
στέον, καὶ ἐν τῷ ὀνόματι δαιμόνων ἐξεβά-
λομεν, καὶ ἐν τῷ ὀνόματι δυνάμεως πολλῆς
ἐποιήσαμεν;

23 Καὶ τότε ὁμολογήσω αὐτοῖς, ὅτι ἔδε ποτε
ἐγνωσάμεν. ἀποχρεῖτε ἀπ' ἐμοῦ οἱ ἐργα-
ζόμενοι τὴν ἀνομίαν.

24 Πᾶς ἂν ὄσκις ἀκὴρ μετὰς λόγους τέτους,
καὶ ποιῇ αὐτὰς, ὁμολογήσει αὐτῷ ἀνδρὶ Φρο-
νίμῳ, ὄσκις ἀπεθόνησε τὴν οἰκίαν αὐτῆς ἐπὶ
τῷ πέτρῳ.

25 Καὶ κατέβη ἡ βροχὴ, καὶ ἦλθον οἱ ποταμοὶ,
καὶ ἐπέπλυνον οἱ ἄνεμοι, καὶ ᾤπισαν τὴν
οἰκίαν ἐκείνην, καὶ ἔπεσε· τεταμελίωθη γὰρ
ἐπὶ τῷ πέτρῳ.

26 Καὶ πᾶς ὁ ἀκὴρ μετὰς λόγους τέτους,
καὶ μὴ ποιῶν αὐτὰς, ὁμολογήσει ἀνδρὶ μω-
ροῦ, ὄσκις ἀπεθόνησε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ ἐπὶ
τῷ ἄμμῳ.

27 Καὶ κατέβη ἡ βροχὴ, καὶ ἦλθον οἱ ποταμοὶ,
καὶ

καὶ ἐπιδύσαν οἱ ἄνεμοι, ἔπεσεν ἡ τῆ οἰκία ἐκείνη· καὶ ἐπίσεν, καὶ ἠὲ ἡ πλῆσις αὐτῆς μεγάλη.

28 Καὶ ἐγένετο ὅτε συνετέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τὰς λόγους τούτους, ἐξεπλήσασοντο οἱ ὄχλοι ἐπὶ τῆ διδασχῆ αὐτοῦ.

29 Ἦν γὰρ διδάσκων αὐτὸς ὡς ἐκ σοφῶν ἔχων, καὶ ὡς οἱ γραμματεῖς.

Κεφ. η'. 8.

1 **Κ**ΑΒΑΒΑΝΙ ἢ αὐτὰρ ἀπὸ τῶ ὄρους, ἠκηλύθησαν αὐτῶ ὄχλοι πολλοί.

2 Καὶ ἰδὲ λεπρῶς ἐλθὼν προσεκίωσεν αὐτὸν, λέγων· Κύριε, ἐάν θέλῃς, δύνασθαι με καθαρίσαι.

3 Καὶ ἐκλίνας τὴ χεῖρα, ἤψατο αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς, λέγων, θέλω, καθαρίσθη. Καὶ σὺ θέως ἐκαθαρίσθη αὐτὸς ἡ λέπρα.

4 Καὶ λέγων αὐτῶ ὁ Ἰησοῦς· Ὅρα μηδενὶ εἰπῆς· ἀλλὰ ὑπάγε, σεαυτὸν δεῖξον τοῖς ἱερεῖς, καὶ προσέφερε τὸ δῶρον ὃ προσέταξε Μωσῆς, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς.

5 Εἰσελθόντι ἢ τῶ Ἰησοῦ εἰς Καπριναῦμο, προσῆλθεν αὐτῶ ἑκατόνταρχος ὡδρακαλων αὐτόν,

6 Καὶ λέγων, Κύριε, ὁ παῖς μου βέβληται ἐν τῆ οἰκίᾳ ὡδρακαλωνικῶς, δηνῶς βασιανιζόμην.

7 Καὶ λέγων αὐτῶ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ ἐλθὼν θεραπεύσω αὐτόν.

8 Καὶ

- 8 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἐκατόνταρχος εἶπεν· Κύριε, σὺ εἰμὶ ἰσχυρὸς ἵνα με ὑπὸ τὸ σέγλιον εἰσέλθῃς· ἀλλὰ μόνον εἰπέ λόγον, καὶ ἰαθήσεται ὁ παῖς μου.
- 9 Καὶ ἰδὼν ἄνθρωπος εἶμι ὑπὸ ἕξασίαν, ἔχων ὑπὸ ἐμαυτὸν τραχὺν ἄρσεν· καὶ λέγω τέττα, πορεύθη, καὶ πορεύεται· καὶ ἄλλω, ἔρχε, καὶ ἔρχεται· ἐν τῷ δέλω μου, ποιήσον τέττα, καὶ ποιεῖ.
- 10 Ἀκούσας ὁ Ἰησοῦς, ἐθαύμασε, καὶ εἶπε τοῖς ἀκούουσιν· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐδὲ ἐν τῷ Ἰσραὴλ τοσαύτην πίστιν εὗρον.
- 11 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ ἀπὸ ἀναθλαῶν καὶ δυσμῶν ἕξασι, καὶ ἀνακληθήσονται μὲν Ἀβραάμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακώβ ἐν τῇ βασιλείᾳ πάντων ἡρανῶν·
- 12 Οἱ δὲ ἡοὶ τῆ βασιλείας ἐκβληθήσονται εἰς τὸ σιὸν καὶ τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶ ἀδύλων.
- 13 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς τῷ ἐκατόνταρχῳ· ὕπαγε, καὶ ὡς ἐπίσθουλας γρηθήτω σοι. Καὶ ἰάθη ὁ παῖς αὐτῆ ἐν τῇ ὥρᾳ ἐκείνῃ.
- 14 Καὶ ἐλθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴ οἰκίαν Πέτρος, εἶδε τὸ πνεῦμα αὐτῆ βεβλημένῳ καὶ πυρεῖσασσαν.
- 15 Καὶ ἤψατο τὸ χερὸς αὐτῆς, καὶ ἀφῆκεν αὐτῷ ὁ πυρεθῆς· καὶ ἠγέρθη, καὶ διηκόνησεν αὐτοῖς.
- 16 Οψίας δὲ γρηομένης προσώεσαν αὐτῷ δαιμονιζομένης πολλῆς· καὶ ἐξέβαλε τὰ πνεύματα

πνύματα λόφω, κὶ πάντας τὰς κραιῶς ἔχοντας
ἔφερόπισεν·

17 Ὅπως πληρωθῆ τὸ ρηθὲν διὰ Ἡσαΐα ὁ
προφήτης, λέγοντι, Ἄυτὸς ἔσθι ἀσθενείας
ἡμῶν ἔλαβε, ἔσθι νόσους ἐβάστασεν.

18 Ἰδὼν ὃ ὁ Ἰησοῦς πολλὰς ὄχλους παρὰ αὐτὸν,
ἐκέλευσεν ἀπελθεῖν εἰς τὸ πέραν.

19 Καὶ προσελθὼν εἰς γραμματεῖς, εἶπεν
αὐτοῖς· Διδάσκαλε, ἀκηλεστήσω σοὶ ὅπως ἐὰν
ἀπέρχη.

20 Καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Αἱ ἀλώπεκες
φωλεὰς ἔχουσι, κὶ τὰ πετεινὰ ὄρνεις κραι-
σικωάσας· ὃ ὃ ἄνθρωπος οὐκ ἔχει ποδὶ
ἢ κεφαλῶν κλίνη.

21 Ἐπερὶ ὃ ἔμαθητῶν αὐτοῦ εἶπεν αὐτοῖς·
Κύριε, ἐπίστεψόν μοι παρὰ τὸν ἀπελθεῖν, κὶ
θάψαί τον πατέρα μου.

22 Ὁ ὃ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ἀκηλεστή μοι, κὶ
ἄφες τὰς νεκρὰς θάψαί τὰς ἑαυτῶν νεκρὰς.

23 Καὶ ἐμβάντι αὐτοῖς εἰς τὸ πλοῖον, ἀκηλε-
στήσαν αὐτοῖς οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

24 Καὶ ἰδὼν, σφοδρὸς μέγας ἐχέουτο ἐν τῇ θα-
λάσῃ, ὥστε τὸ πλοῖον καλύπτεσθαι ὑπὸ τῶν
κυμάτων· αὐτὸς ὃ ἐνάστασεν.

25 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἤγα-
ραν αὐτὸν, λέγοντες, Κύριε, σῶσον ἡμῶς,
ἀποκλύμεθα.

26 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τί δέλοί ἐστε, ὀλιγόπιστοι;

B Τότε

- Τότε ἐγερθεὶς ἐπίληψε τοὺς ἀνέμους καὶ τῆ
 θαλάσῃ· καὶ ἐγένετο θαλάσῃ μεζάλη.
- 27 Οἱ ὃ ἄνθρωποι ἐθαύμασαν, λέγοντες, Πο-
 ζαπὸς ἐστὶν οὗτο, ὅτι καὶ οἱ ἀνέμοι καὶ ἡ θα-
 λάσσα ὑπακούουσιν αὐτῷ;
- 28 Καὶ ἐλθὼν αὐτῷ εἰς τὸ πέραν εἰς τὴν χεῖραν
 τῶν Γεργασίων, ὑπέκρινεν αὐτῷ δύο δαι-
 μονιζόμενοι, ἐκ τῶν μηνιέων ἐξερχόμενοι
 θαλασποὶ λίαν, αἵτε μὴ ἰσχύοντες ἀπαρθεῖν
 ἀπὸ τῆς ὁδοῦ ἐκείνης.
- 29 Καὶ ἰδὼς ἐκραξάου, λέγοντες, Τί ἡμῖν καὶ
 σοι, Ἰησοῦ υἱὸς τοῦ Θεοῦ; ἦλθες αἰθερῶν καὶ
 βασιλεῖσαι ἡμᾶς;
- 30 Ἦν ὃ μακρὰν ἀπὸ αὐτῶν ἀγέλη χοίρων
 ποσσῶν βοσκομένη.
- 31 Οἱ ὃ δαίμονες παρεκάλουν αὐτὸν, λέγοντες,
 εἰ ἐκβάλλεις ἡμᾶς, ἐπίτεσον ἡμῖν ἀπελ-
 θεῖν εἰς τὴν ἀγέλην τῶν χοίρων.
- 32 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, Ὑπάγετε. Οἱ ὃ ἐξελθόν-
 τες ἀπῆλθον εἰς τὴν ἀγέλην τῶν χοίρων. Καὶ ἰδὼς,
 ὤρμησε πᾶσαι ἡ ἀγέλη τῶν χοίρων καὶ ἔκρηκται
 εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ ἀπέβητον ἐν τοῖς ὕδατιν.
- 33 Οἱ ὃ βοσκοὶ ἐφυγον· ἐ ἀπελθόντες εἰς
 τὴν πόλιν, ἀπήγαγον πάντα, ἐ τὸν ὃ δαι-
 μονιζόμενον.
- 34 Καὶ ἰδὼς, πᾶσαι ἡ πόλις ἐξῆλθεν εἰς σιναῖ-
 τισι τῶν Ἰουδαίων, καὶ ἰδὼντες αὐτὸν, παρεκάλουν
 ὅπως μετὰ βῆ ἀπὸ τῶν ὄρειων αὐτῶν.

Κεφ. 9'. 9.

- 1 **Κ**αὶ ἐμβαίς εἰς τὸ πλοῖον, διεπέρασε, καὶ ἦλθεν εἰς τὴν ἰδίαν πόλιν.
- 2 Καὶ ἰδὼς, προσέφερεν αὐτῷ ᾠδαλυκὴν ἐπὶ κλίνης βεβλημένον· καὶ ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς τὴν πίσιν αὐτῶν, εἶπε τῷ ᾠδαλυκῷ· Θάρα τέκνον, ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι (ε).
- 3 Καὶ ἰδὼς, πλὴς τῶν γραμματέων εἶπον ἐν ἑαυτοῖς· Οὐτὸ βλασφημεῖ.
- 4 Καὶ ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς τὰς ἐνθυμήσεις αὐτῶν, εἶπεν, Ἰνατί ὑμεῖς ἐνθυμεῖσθε πονηρὰ ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;
- 5 Τί γάρ ἐστιν δύσκολώτερον, εἰπεῖν· Ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι· ἢ εἰπεῖν, Ἐγχευ καὶ ᾠειπάτη;
- 6 Ἰνα ἢ εἰδῆτε ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς ἀφίεναι ἁμαρτίας (τότε λέγει τῷ ᾠδαλυκῷ) Ἐγχευ αἶρόν (ε) τὴν κλίνην, καὶ ὑπάγε εἰς τὸν οἶκόν (ε).
- 7 Καὶ ἐγχευς, ἀπῆλθεν εἰς τὸ οἶκόν αὐτοῦ.
- 8 Ἰδόντες ἢ οἱ ὄχλοι ἐθαύμασαν, καὶ ἐδόξασαν τὸ Θεόν, τὸν δόντα ἐξουσίαν τοιαύτην τοῖς ἀνθρώποις.
- 9 Καὶ ᾠδάγων ὁ Ἰησοῦς ἐκείθεν, εἶδεν ἀνθρώπον καθήμενον ἐπὶ τὸ τελώνιον, Ματθαῖον λεγόμενον· καὶ λέγει αὐτῷ, Ἀκολούθη μοι. Καὶ ἀναστὰς, ἠκολούθησεν αὐτῷ.
- 10 Καὶ ἐγένετο αὐτῷ ἀνακείμενος ἐν τῇ οἰκίᾳ,

B 2

καὶ ἰδὼς.

καὶ ἰδὲ πολλοὶ τελῶνακ ἐ ἀμαρτωλοὶ ἐλθόντες,
συνανέκριντο τῷ Ἰησοῦ καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ.

11 Καὶ ἰδόντες οἱ Φαρισσαῖοι, εἶπον τοῖς μα-
θηταῖς αὐτοῦ· Διατί μετ' αὐτῶν τελωνῶν ἐ ἀμαρ-
τωλῶν ἐσθίει ὁ διδάσκαλος ὑμῶν;

12 Οὗτος Ἰησοῦς ἀπέσπασε, εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ
χρεῖσται ἔχουσιν οἱ ἰσχυροὶ ἰατρῆς, ἀλλ' οἱ κα-
κῶς ἔχοντες.

13 Πορθένοι εἰσὶν καὶ μάστιγι ἐπιτιμῶντι· ἔλεον θέλω,
καὶ ἐ θυσίαν· ἐ γὰρ ἤλθεν καλέσαι δικαίους, ἀλλ'
ἀμαρτωλούς εἰς μετένοιαν.

14 Τότε παρσέρχον αὐτῶν οἱ μαθηταὶ Ἰωάν-
νης, λέγεθῆτες, Διατί ἡμεῖς καὶ οἱ Φαρισσαῖοι τη-
σεύομεν πολλά, οἱ δὲ μαθηταὶ οὐκ ἐνεθύεσσι;

15 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Μὴ δυνάμει οἱ
ὑοὶ θυμωθῶν πενήθειν, ἐφ' ὅσον μετ' αὐτῶν
ἐσιν ὀνυμφίον; ἐλεύσονται δὲ ἡμέραι ὅταν
ἀπαρθῆ ἀπ' αὐτῶν ὀνυμφίον, καὶ τότε νη-
σεύοσθε.

16 Οὐδεὶς ἐπιβάλλει ἐπίσθημα ράκας ἀνά-
φθ ἐπὶ ἱματίῳ παλαιῷ· ἀεὶ γὰρ τὸ πλήρωμα
αὐτῶν ἀπὸ τῆς ἱματίου, καὶ χειρὸν χίσμα γίνεται.

17 Οὐδὲ βάλλουσιν οἶνον νέον εἰς ἀσκὸς πα-
λαιός· εἰ γὰρ μήγε, ρήγνυται οἱ ἀσκοὶ, καὶ ὁ
οἶνος ἐκχέεται, ἐ οἱ ἀσκοὶ ἀπολύνονται· ἀλλὰ
βάλλουσιν οἶνον νέον εἰς ἀσκὸς καινός, καὶ ἀμ-
φότερον σωθήσονται.

18 Ταῦτα αὐτῶν λαλῶν αὐτοῖς, ἰδὲ ἄρχων
ἐλθόν

ἔλθῶν προσεκύβη αὐτοῖς, λέγων, Ὅτι ἡ θυγά-
τηρ μου ἄρτι ἐτελεύτησεν· ἀλλὰ ἔλθῶν, ἐπίστευ-
τὴν χεῖρά (εἰς ἐπ' αὐτῶν, καὶ ζήσε').

19 Καὶ ἐμαρτύρησεν ὁ Ἰησοῦς ἠκολούθησεν αὐτοῖς,
καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

20 (Καὶ ἰδοὺ, γυνὴ αἰμωροῦσασα δώδεκα ἔτη,
προσελθούσα ὀπίσθεν, ἢ ψαλθὲ καταπαύει
ἢ ἰμαλὶς αὐτοῦ.)

21 Ἐλέγε γὰρ ἐν ἑαυτῇ· Ἐὰν μόνον ἄψωμαι
ἢ ἰμαλὶς αὐτοῦ, σωθήσομαι.

22 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐπιστραφείς καὶ ἰδὼν αὐτήν,
εἶπε· Θάρσθ θυγαῆρ· ἡ πίστις σε σέσωκέ σε.
(Καὶ ἐσώθη ἡ γυνὴ ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκείνης.)

23 Καὶ ἔλθῶν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν οἰκίαν ἢ ἄρ-
χιεῖ, καὶ ἰδὼν τὰς αὐλητοῦς, καὶ τὸ ὄχλον
γορυβέβητον,

24 λέγει αὐτοῖς· Ἀναχωρεῖτε· εἰ γὰρ ἀπέστατε
τὸ κροτάσιον, ἀλλὰ κατὰ δύσιν. Καὶ καλεσθέντων
αὐτοῦ.

25 Ὅτε δὲ ἐξεβλήθη ὁ ὄχλος, ἐισελθὼν ἐκρά-
τησε τὸ κροτάσιον· εἰς ἠγάθη τὸ κροτάσιον.

26 Καὶ ἐξῆλθεν ἡ φήμη αὕτη εἰς ὅλην τὴν
γῆν ἐκείνην.

27 Καὶ πρὸς ἑστηκότας ἐκείθεν πρὸς Ἰησοῦν, ἠκολού-
θησαν αὐτῷ δύο τυφλοὶ, κροτάζοντες, καὶ λέ-
γοντες, Ἐλέησον ἡμᾶς ἢ Δαβίδ.

28 Ἐλθὼν δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, προσήλθον αὐτοῖς οἱ
τυφλοὶ, καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πισθεῖτε

30 ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ Cap. 9.

ὅτι δυνάμει τῶν ποιῶσιν; Λέγουσιν αὐτῷ,
Ναὶ Κύριε.

29 Τότε ἤψατο τὰ ὀφθαλμῶν αὐτῶν, λέγων,
Κατὰ τὴν πίσιν ὑμῶν γνηθήτω ὑμῖν.

30 Καὶ ἀνέψαχθησαν αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοί· καὶ
ἐνεβριμήσατο αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγων, Ὁρᾶτε
μηδεὶς γινωσκέτω.

31 Οἱ δὲ ἐξελητόντες διεφήμισαν αὐτὸν ἐν ὅλῃ
τῇ γῆ Ἰσραὴλ.

32 Αὐτῶν δὲ ἐξερχομένων, ἰδὼς, προσώλεσκον
αὐτῷ ἀνθρώπον κωφὸν δαιμονιζόμενον·

33 Καὶ ἐκβληθέντι τῷ δαιμονίῳ, ἐλάλησεν
ὁ κωφός· καὶ ἐθαύμασαν οἱ ὄχλοι, λέγοντες,
Ὅτι ἐδέετο ἐφάνη ἕτως ἐν τῷ Ἰσραὴλ.

34 Οἱ δὲ φαρισαῖοι ἔλεγον, Ἐν τῷ ἄρχοντι τῷ
δαιμονίῳ ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια.

35 Καὶ διεῖπλεν ὁ Ἰησοῦς ἐν πόλεσι πάσαις
καὶ ἐν κώμας, διδάσκων ἐν ταῖς συναγωγαῖς
αὐτῶν, καὶ κηρύσσων τὸ εὐαγγέλιον τῆς βασι-
λείας, καὶ θεραπεύων πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν
μαλακίαν ἐν τῷ λαῷ.

36 Ἰδὼν δὲ τὸς ὄχλους, ἐσπλαγχνίσθη πρὸς
αὐτῶν, ὅτι ἦσαν ἐκλελυμένοι καὶ ἐροῦμενοί
ὡσεὶ πρόβατα μὴ ἔχοντα ποιμένα.

37 Τότε λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτῶν· Ὁ μὲν
θερισμὸς πολὺς, οἱ δὲ ἐργάται ὀλίγοι·

38 Δεήθητε οὖν τὸν κύριον τῶν θερισμῶν, ὅπως
ἐκβάλλῃ ἐργάτας εἰς τὸν θερισμὸν αὐτοῦ.

Κεφ.

Κεφ. ι'. ΙΟ.

- 1 **Κ**αὶ ἀποκαλεσάμενος τὰς δώδεκα μαθητὰς αὐτοῦ, ἔδωκεν αὐτοῖς ἐξουσίαν πνευμάτων ἀκαθάρτων, ὥστε ἐκβάλλειν αὐτὰ, καὶ θερραπύειν πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν μαλακίαν.
- 2 Τῶν ἧ δώδεκα ἀποστόλων τὰ ὀνόματα ἔσται ταῦτα· πρῶτος, Σίμων ὁ λεγόμενος Πέτρος, καὶ Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ· Ἰάκωβος ὁ υἱὸς Ζεβεδαίου, καὶ Ἰωάννης ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ·
- 3 Φίλιππος, καὶ Βαρθολομαῖος· Θωμᾶς, καὶ Ματθαῖος ὁ τελῶνης· Ἰάκωβος ὁ υἱὸς Ἀλφαίου, ἔτι Λεβθαῖος ὁ ἐπικληθεὶς Θαδδαῖος·
- 4 Σίμων ὁ Κανανίτης, καὶ Ἰούδας ὁ Ἰσκαριώτης, ὁ καὶ ᾠθεύσας αὐτόν.
- 5 Τύττος τὰς δώδεκα ἀπέστειλεν ὁ Ἰησοῦς, ᾠθεύσας αὐτοῖς, λέγων, Εἰς ὁδὸν ἐθνῶν μὴ ἀπέλθῃτε, καὶ εἰς πόλιν Σαμαρειτῶν μὴ εἰσελθῃτε·
- 6 Πορεύεσθε ἧ μᾶλλον πρὸς τὰ ἄεθρα τὰ ἀπολωλότα οἴκου Ἰσραὴλ.
- 7 Πορεύομενοι ἧ κηρύσσετε, λέγοντες, Ὅτι ἤγγικεν ἡ βασιλεία τοῦ θεοῦ.
- 8 Ἄθεν ἐν ταῖς θερραπύεισι, λεπερὸς καταρίζετε, νεκρὸς ἐγείρετε, δαιμόνια ἐκβάλλετε, δωρεᾶν ἐλάβετε, δωρεᾶν δότε.
- 9 Μὴ κλήσητε χρυσόν, μηδὲ ἄργυρον, μηδὲ χαλκὸν εἰς τὰς ζώνας ὑμῶν.

B 4

ΙΟ Μη

- 10 Μὴ πήρων εἰς ὁδὸν, μηδὲ δύο χιτῶνας,
μηδὲ ὑποδήματα, μηδὲ ῥάβδον ἄξιον ἢ
τὸ ἐργάτης τῆ τροφῆς αὐτῆς ἔστιν.
- 11 Εἰς ἡν δὲ ἂν πόλιν ἢ κώμην εἰσέλθητε,
ἐξετάσατε τίς ἐν αὐτῇ ἀξίος ἐστὶ καθεῖ
μενεταί· ἕως αὐτοῦ ἐξέλθητε.
- 12 Εἰσερχόμενοι δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, ἀσπάζεσθε
αὐτὴν.
- 13 Καὶ ἐὰν μὴ ἡ οἰκία ἀξία, ἐλθέτω ἡ εἰρήνη
ὑμῶν ἐπ' αὐτήν· ἐὰν δὲ μὴ ἡ ἀξία, ἡ εἰρήνη
ὑμῶν παρὰ ὑμᾶς ἐπιτραφήτω.
- 14 Καὶ ὅς ἐάν μὴ δέξηται ὑμᾶς, μηδὲ ἀκούσῃ
τῶν λόγων ὑμῶν, ἐξερχόμενοι τῆς οἰκίας ἢ τῆς
πόλεως ἐκείνης, ἐκκινᾶτε τὸν ἡνιοχτὸν
τῶν ποδῶν ὑμῶν.
- 15 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ἀνεκτότερον ἔσται γῆ
Σοδῶμων καὶ Γομόρρων ἐν ἡμέρᾳ κολάσεως,
ἢ τῇ πόλει ἐκείνῃ.
- 16 Ἴδὲ, ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς ὡς πρόβατα ἐν
μέσῃ λύκων· γίνεσθε ἔν φρονιμοῦς ὡς οἱ ὄφεις,
καὶ ἀκέραιοι ὡς αἱ περὶ τρυφῆς.
- 17 Προσέχετε δὲ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων· ὡς οὐκ
ἔσθιτε ὑμᾶς εἰς σκηνῶν, καὶ ἐν ταῖς συνα-
γωγαῖς αὐτῶν μασηθῆσιν ὑμᾶς·
- 18 Καὶ ἐπὶ ἡγεμόνας δὲ καὶ βασιλεῖς ἀχθή-
σατε ἕνεκεν ἐμοῦ, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς καὶ
τοῖς ἔθνεσιν.
- 19 Ὅταν δὲ ὡς οὐκ ἀδικῶσιν ὑμᾶς, μὴ μεριμνή-
σητε

σηίε πῶς ἢ τί λαλήσετε· δοθήσε) γὰρ ὑμῖν ἐν ἐκείνῃ τῇ ᾠρᾷ τί λαλήσετε.

20 Οὐ γὰρ ὑμεῖς ἐστε οἱ λαλῶντες, ἀλλὰ τὸ πνεῦμα τῆς πατρὸς ὑμῶν, τὸ λαλῶν ἐν ὑμῖν.

21 Πατριδώς) ἢ ἀδελφὸς ἀδελφὸν εἰς θάνατον, καὶ πατὴρ τέκνον· καὶ ἐπαναθήσον) τέκνα ἐπὶ θανάτους, καὶ θανάσιώ) (χρῆσιν αὐτοὺς.

22 Καὶ ἔσεσθε μισέθμοι ὑπὸ πάντων διὰ τὸ ὄνομά μου· ὁ δὲ ὑπομένει εἰς τέλος, ἔστω σωθήσε).

23 Ὅταν ἢ διώκωσιν ὑμᾶς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, φεύγετε εἰς τὴν ἄλλην· ἀμὲν γὰρ λέγω ὑμῖν, ἕως μὴ τελείητε εἰς πόλιν τῆς Ἰσραήλ, ἕως αὐτῆς ἢ ἕως οὗ ἢ ἕως ἀνθρώπου.

24 Οὐκ ἐστὶ μαθητὴς ὑπὲρ τοῦ διδάσκοντος, ἕδὲ ὀδύνη ὑπὲρ τοῦ κύριου αὐτοῦ.

25 Ἀρκετὸν πᾶσι μαθητῆ) ἢ ἵνα γένη) ὡς ὁ διδάσκων αὐτῶν. καὶ ὁ ὀδύνη) ὡς ὁ κύριος αὐτῶν. εἰ τὸν οἰκοδεσπότην Βεελζεβὺλ ἐκάλεσαν, πόσω μᾶλλον τὰς οἰκίας αὐτοῦ;

26 Μὴ ἐνφοβηθῆτε αὐτοὺς· ἕδὲν γὰρ ἐστὶ κεκαλυμμένον, ὃ ὅσκι δὲ αποκλυφθήσε), καὶ κρυπτόν, ὃ ἔγνωσθήσε).

27 Ὁ λέγω ὑμῖν ἐν τῇ σκοτίᾳ, εἴπατε ἐν τῷ φωτί· καὶ ὁ εἰς τὸ ἕσ ἀκέετε, κηρύξατε ἐπὶ τῶν δωματίων.

28 Καὶ μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ τοῦ ἀποκτείνοντος τὸ σῶμα, τὸ ἢ ψυχῶν μὴ δυναμένων ἀποκτεῖναι·

B 5 φοβήθητε

φοβήθητε ἢ μωχλον τ' οὐκ ἀρνοῦντες καὶ ψυχῶν
καὶ σώμα ἀπολίσει ἐν γένει.

29 Οὐχὶ δύο σκεδάσασα ἀσάριε πωλεῖται, καὶ
ἐν ἐξ αὐτῶν ἐπιστεῖται ἐπὶ τὴν γλῶσσαν, αὐτὸς δὲ
πατὴρ ὁ ὑμῶν;

30 Ὑμῶν δὲ καὶ αἱ τρίχες τῆς κεφαλῆς πάντα
ἠριθμηθῆναι εἰσὶ.

31 Μὴ ἔν φοβηθῆτε πολλῶν σκεδάσαν ἀφί-
φίεστε ὑμεῖς.

32 Πᾶς ἔν ὅστις ὁμολογήσῃ ἐν ἐμοὶ ἐμπεθε-
σει τὸν ἀνθρώπον, ὁμολογήσω καὶ γὰρ ἐν αὐτῷ
ἐμπεθεσει τὸν πατέρα μου, τὸν ἐν ἔθροισι.

33 Ὅστις δὲ αὐτὸν ἀρνήσῃται με ἐμπεθεσει τὸν
ἀνθρώπον, ἀρνήσομαι αὐτὸν καὶ γὰρ ἐμπεθεσει
τὸν πατέρα μου τὸν ἐν ἔθροισι.

34 Μὴ νομίσῃτε ὅτι ἦλθον βαλεῖν εἰρήνην ἐπὶ
τὴν γλῶσσαν· σὺν ἦλθον βαλεῖν εἰρήνην, ἀλλὰ
μάχαιραν.

35 Ἤλθον γὰρ διχάσαι ἄνθρωπον καὶ τὸν πατέρα
αὐτοῦ, καὶ θυγατέρα καὶ τὸν μητέρα αὐτοῦ, καὶ
νόμφιν καὶ τὸν πενήτην αὐτοῦ.

36 Καὶ ἐχθροὶ τῶν ἀνθρώπων, οἱ οἰκιακοὶ αὐτοῦ.

37 Ὁ φιλῶν πατέρα ἢ μητέρα ὑπὲρ ἐμὲ,
ἐκ ἐστὶ με ἀξιόσπ. καὶ ὁ φιλῶν υἱὸν ἢ θυγατέρα
ὑπὲρ ἐμὲ, σὺν ἐστὶ με ἀξιόσπ.

38 Καὶ ὅς ἐλαμβάνῃ τὸν σταυρὸν αὐτοῦ, καὶ
ἀκολουθεῖ ὀπίσω μου, σὺν ἐστὶ με ἀξιόσπ.

39 Ὁ δὲ ὄν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, ἀπολίσει
αὐτὴν.

αὐτῶ· κὶ ὁ ἀπολέσας τὴν ψυχὴν αὐτῆ ἕνεκεν
ἐμοῦ, σώσει αὐτῶ.

40 Ὁ δεξιόμηνος ὑμῶν, ἐμὲ δέχεσθαι· κὶ ὁ ἐμὲ
δεξιόμηνος, δέχεσθαι τὸ ἀπολείπειν αὐτῶν.

41 Ὁ δεξιόμηνος περὶ φήτων εἰς ὄνομα περ-
φήτων, μισθὸν περφήτων λήψει· καὶ ὁ δεξι-
μόμηνος δίκαιον εἰς ὄνομα δικαίων, μισθὸν δι-
καίων λήψει.

42 Καὶ ὅς ἐάν ποίση ἕνα τῶν μικρῶν τούτων πο-
τήριον ψυχῆς μόνον, εἰς ὄνομα μαθητῆ, ἀμήν
λέγω ὑμῖν, ἔμὴ ἀπολέσῃ τὸ μισθὸν αὐτοῦ.

Κεφ. ια'. ΙΙ.

1 Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐπέλεσεν ὁ Ἰησοῦς Διατάξ-
σων τοῖς δώδεκα μαθηταῖς αὐτῆ, μετέ-
βη εἰς κείθεν, εἰς διδάσκειν, κὶ κηρύσσειν ἐν ταῖς
πόλεσιν αὐτῶν.

2 Ὁ δὲ Ἰωάννης ἀκέστας ἐν ταῖς δεσμοῖς ἠρῶν τὰ
ἔργα τοῦ Χριστοῦ, πέμψας δύο τῶν μαθητῶν αὐτῆ.

3 Εἶπεν αὐτῶ· Σὺ εἶ ὁ ἐρχόμενος, ἢ ἕτερον
πεσοδοκῶμην;

4 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς·
Πορεύθητε ἀπαγγέλατε Ἰωάννη, ἃ ἀκούετε
καὶ βλέπετε.

5 Τυφλοὶ ἀναβλέπεσι, κὶ χωλοὶ περιπα-
τῶσι, λευκοὶ καθαρίζον, κὶ κωφοὶ ἀκούουσι,
νεκροὶ ἐγείρον, κὶ πτωχοὶ ἀγαθελίζον.

6 Καὶ μακαριὸς ἐστὶν ὁς ἐάν μὴ σκανδαλι-
σθῆ ἐν ἐμοί.

7 Τούτων

- 7 Τῶν ἡμερῶν ἐπορευομένων, ἦρξατο ὁ Ἰησοῦς λέγειν τοῖς ὄχλοις περὶ Ἰωάννου· Τί ἐξήλθετε εἰς τὴν ἔρημον θεάσασθαι; καὶ λαμνὴν ὑπὸ ἀνέμου σαλευόμενον;
- 8 Ἀλλὰ τί ἐξήλθετε ἰδεῖν; ἀνθρώπον ἐν μαλακῆσι ἰματίαις ἢ μφισμῶνον; ἰδὲ, οἱ τὰ μαλακὰ φοροῦντες, ἐν τοῖς οἴκοις τῶν βασιλέων εἰσὶν.
- 9 Ἀλλὰ τί ἐξήλθετε ἰδεῖν; περὶ φήτου; καὶ λέγω ὑμῖν, καὶ περὶ οὐδενός ἐστιν περὶ φήτης.
- 10 Οὐτὸ γάρ ἐστι περὶ τῶν γέγραπτον· ἰδὲ, ἐγὼ ἀποπέμψω τὸ ἄγγελόν μου πρὸς σὺν ἔμε, ὃς κατασκευάσει τὸ ὄδον ἐμοῦ ὡς εἶπεν Ἰσαΐας.
- 11 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅσα ἐγένεον ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ καὶ ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν Ἰουδαίων, μείζων αὐτῶν ἐστίν.
- 12 Ἀπὸ τῆς ἡμερῶν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστῆ ἕως ἄρτι ἡ βασιλεία τῶν Ἰουδαίων βιάζεται, καὶ βίβηται ἄρπυξοὶ αὐτῶν.
- 13 Πάντες γὰρ οἱ περὶ φήται καὶ ὀνόματι Ἰωάννου περὶ φητόσταν.
- 14 Καὶ εἰθέλετε δεῖξασθαι, αὐτὸς ἐστὶν Ἡλίας ὁ μέλλων ἔρχεσθαι.
- 15 Ὁ ἔχων ὄτα ἀκέφι, ἀκέτω.
- 16 Τίνι ἡ ὀμνίωσα τῇ γυναικὶ ταύτῃ; ὀμνία ἐστὶν πτωχοῖς ἐν ἀγοραῖς καὶ κτηνῶν, καὶ περὶ φωνῶσι τοῖς ἐταῖροις αὐτῶν.
- 17 Καὶ λέγουσιν· Ἡυλήσαμεν ὑμῖν, καὶ ὅσα ἀρχή-

ἀρχήσασθε· ἐθελώησα μὲν ὑμῖν, καὶ ἔσθε ἐκόν-
ψαθε.

- 18 Ἦλθε γὰρ Ἰωάννης μὴτε ἰδαίαν, μὴτε πίνων·
ἐ λέγουσι· Δαιμόνιον ἔχει.
- 19 Ἦλθεν ὁ υἱὸς δὲ ἀνθρώπου ἰδαίαν καὶ πίνων·
καὶ λέγουσιν· Ἰδὲ ἀνθρώπου φάσι καὶ οἰο-
πότης, τελωνῶν φίλος καὶ ἀμαρτωλῶν. καὶ
ἐδικασθήτη ἡ σοφία δὲ τῶν τέκνων αὐτῆς.
- 20 Τότε ἤρξατο διδάσκειν αὐτὸν πόλεις ἐν αἷς
ἐρχόμενος αἰ πλεῖστα διωάμενος αὐτοῦ, ὅτι ἔ-
μετενόησαν.
- 21 Οὐαὶ σοὶ Χοραζῖν, οὐαὶ σοὶ Βηθσαϊδάν,
ὅτι εἰ ἐν Τύρῳ καὶ Σιδῶνι ἐρχόμενος αἰ διωάμενος
αἰ γυμνοῦμαι ἐν ὑμῖν, πάλαι αὖ ἐν σάκκῳ καὶ
ποδοῖς μετενόησαν.
- 22 Πλὴν λέγω ὑμῖν· Τύρῳ καὶ Σιδῶνι ἀνεκτί-
τερον ἔσται ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, ἢ ὑμῖν.
- 23 Καὶ σὺ Καπερναῦμ, ἡ ἕως δὲ ἔρανοῦ
ὑψώθησαι, ἕως αὐτῆς καταβιβαθήσῃ· ὅτι εἰ
ἐν Σοδόμοις ἐρχόμενος αἰ διωάμενος αἰ γυμ-
νοῦμαι ἐν σοὶ, ἐμῆσαν ἂν μέχρι τῆς ἡμέρας.
- 24 Πλὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι γῆ Σοδόμων ἀνεκτί-
τερον ἔσται ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, ἢ σοὶ.
- 25 Ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ δύο κριταὶ οἰστῆς,
εἶπεν· Ἐξομολογήμαί σοι, πατήρ, κύριε τοῦ
ἔρανοῦ καὶ τῆς γῆς, ὅτι ἀπέκρυψας ταῦτα ἀπὸ
σοφῶν καὶ συνετῶν, καὶ ἀπεκάλυψας αὐτὰ
τοῖς ὑποπίστοις.

- 26 Ναὶ ὁ πατήρ, ὅτι ἕτως ἐγλύετο δύσδοκία
ἐμωσαθέν σε.
- 27 Πάντα μοι παρεδόθη ὑπὸ τοῦ πατρὸς μου·
καὶ ἑδείς ἐπιγνώσκει τὸ υἱόν, εἰ μὴ ὁ πατήρ·
ἑδὲ τὸν πατέρα πῶς ἐπιγνώσκει, εἰ μὴ ὁ υἱός,
καὶ ὃ ἐὰν βέλη) ὁ υἱός ἀποκαλύψαι.
- 28 Δεῦτε πρὸς με πάντες οἱ κρηπῖνες καὶ πε-
φορῆκοι, καὶ γὰρ ἀναπαύσω ὑμᾶς.
- 29 Ἄρατε τὸν ζυγὸν μου ἐφ' ὑμᾶς, καὶ μάθητε
ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι πραῖός εἰμι, καὶ ταπεινὸς τῆ καρ-
δία· καὶ σιγήσετε ἀνάπαυσιν ταῆς ψυχᾶς
ὑμῶν.
- 30 Ὁ γὰρ ζυγός μου ῥητός, καὶ τὸ φορτίον
μου ἐλαφρόν ἐστιν.

Κεφ. ιβ'. 12.

- 1 **Ε**Ν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐπορεύθη ὁ Ἰησοῦς
τοῖς σαββάσι διὰ τῶν σοφῶν· οἱ δὲ
μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπέειπασαν, καὶ ἤρξαντο τίλλειν
σαββάς, καὶ ἐδίειν.
- 2 Οἱ Ἰουδαῖοι ἰδόντες, εἶπον αὐτῷ· Ἰδοὺ,
οἱ μαθηταὶ σε ποῖσιν ὃ σὺ ἐξέειπες ποιεῖν ἐν
σαββάτω.
- 3 Οἱ εἶπεν αὐτοῖς· Οὐκ ἀνέγνωτε τί ἐποίησε
Δαβὶδ, ὅτε ἐπέειπασεν αὐτῷ, ὅτι οἱ μὲν αὐτῷ;
- 4 Πῶς εἰσηλθεν εἰς τὸ οἶκον τοῦ Θεοῦ, καὶ τὰς
ἀρτας τῆς ἑσθῆσεως ἔφαγεν, ἃς σὺ ἐξὸν ἴσθαι
αὐτῷ φαγεῖν, ἑδὲ τοῖς μετ' αὐτῷ, εἰ μὴ τοῖς
ἱερεῦσι μόνοις;

5 Η'

- 5 Ἡ σὺκ ἀνέγνωτε ἐν τῷ νόμῳ, ὅτι τοῖς σαύβασι οἱ ἱερεῖς ἐν τῷ ἱερῷ τὸ σαύβατον βεβηλῶσι, καὶ ἀναίτιοί εἰσι;
- 6 Λέγω ἡ ὑμῖν, ὅτι οἱ ἱερεῖς μείζων ἐσὶν αὐτῶν.
- 7 Εἰ ἡ ἐγνώκετε τί ἐσιν· Ἐλεον θέλω καὶ ἔψυχάν, σὺκ ἀν καὶ ἐδοκίμασε τὰς ἀναίτιας.
- 8 Κύριος γάρ ἐστι καὶ ὁ σαββάτος ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου.
- 9 Καὶ μετὰ ταῦτα ἐκεῖθεν, ἦλθεν εἰς τὴν σιναγωγὴν αὐτῶν.
- 10 Καὶ ἰδὼς, ἄνθρωπος ἐκεῖ τὴν δεξιὰν ἔχων ξηρόν, καὶ ἐπηρώτησεν αὐτὸν, λέγων· Εἰ ἔξει τοῖς σαύβασι θεράπειν; ἵνα κρατηθῶσιν αὐτοῦ.
- 11 Ὁ ἡ εἶπεν αὐτοῖς· Τίς ἐστὶ ἐξ ὑμῶν ἄνθρωπος, ὃς ἐξέδωκε τὸν ἑαυτοῦ ἑαυτοῦ ἐμπέσει τὸ νόμος τοῖς σαύβασι εἰς βότανον, ἕως κρατήσῃ αὐτὸ καὶ ἐγερεῖ;
- 12 Πόσω ἔτι ἀγαθέρα ἄνθρωπος δωρεάται; ὡς εἰ ἔξει τοῖς σαύβασι καλῶς ποιεῖν.
- 13 Τότε λέγει τῷ ἀνθρώπῳ· Ἐκτενὸν τὴν δεξιὰν σου, καὶ ἐξέτενε· καὶ ἀποκατετάθη ὑγίης, ὡς ἡ ἄλλη.
- 14 Οἱ ἡ φαρισαῖοι συμβέλιον ἔλαβον καὶ αὐτῶν ἐξεληθόντες, ὅπως αὐτὸν ἀπολέσωσιν.
- 15 Ὁ ἡ Ἰησοῦς γὰρ ἀνεχώρησεν ἐκεῖθεν· καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί, καὶ ἐθεράπειον αὐτὸς πάντας.

16 Καὶ

- 16 Καὶ ἐπελήμυσεν αὐτοῖς ἵνα μὴ φανερὰν αὐτὸν ποιήσωσιν.
- 17 Ὅπως πληρωθῆ τὸ ρηθὲν Διὰ Ἡσαΐου ὁ
προφήτης, λέγων·
- 18 Ἰδὲ, ὁ παῖς μου, ὃν ἠρέψα· ὁ ἀγαπητός μου,
εἰς ὃν σὺδύκησεν ἡ ψυχὴ μου· ἤστω τὸ πνεῦ-
μά μου ἐπ' αὐτὸν, καὶ κείσιν τοῖς ἔθνεσιν
ἀπαγγελεῖ.
- 19 Οὐκ ἐρίσῃ, ἐδὲ κραυγασῃ, ἐδὲ ἀκέσῃ ἕως
ἐν ταῖς πλατείαις τῆ φωνῆ αὐτοῦ.
- 20 Κάλαμοι σπυρίτριμφοὶ καὶ ἰσίδες, καὶ
λίνοι τυφόμενοι ἐσθῆσ· ἕως αὐτῶν ἐκβάλλῃ εἰς
τὴν θάλασσαν τὴν κελσίν.
- 21 Καὶ ἐν ταῖς ὀνόματι αὐτῶν ἔθνη ἐλπῖσσι.
- 22 Τότε προσέειπεν αὐτῶν δαιμονιζόμε-
νοι, τυφλὸς καὶ κωφός· καὶ ἕτερος προσέειπεν
αὐτὸν, ὥστε τὸν τυφλὸν καὶ κωφὸν καὶ λαλεῖν
καὶ βλέπειν.
- 23 Καὶ ἐξίσταντο πάντες οἱ ὄχλοι, καὶ ἔλεγον,
Μήτις τὸς ἐστὶν ὁ υἱὸς Δαβὶδ·
- 24 Οἱ δὲ φαρισαῖοι ἀκέσταντες, εἶπον· Οὐτὸς
ἐστὶ ἐκβάλλῃ τὰ δαιμόνια, εἰ μὴ ἐν ταῖς
Βεελζεβὺλ ἄρχοντι τῶν δαιμονίων.
- 25 Εἰδὼς δὲ ὁ Ἰησοῦς ἕως ἐνθυμήσῃς αὐτῶν,
εἶπεν αὐτοῖς· Πᾶσα βασιλεία μεμελεῖσται
καθ' ἑαυτῆς, ἐρημῶται· Ἐπᾶσα πόλις ἢ οἰ-
κία μεμελεῖσται καθ' ἑαυτῆς, ἐσαθήσει·
- 26 Καὶ εἰ ὁ σατανᾶς τὸ σατανᾶν ἐκβάλλῃ, ἐφ'
ἑαυτὸν

ἑαυτὸν ἑμερίσθη· πῶς ἔνστασήσῃ ἡ βασι-
 λεία αὐτοῦ;

27 Καὶ εἰ ἐγὼ ἐν Βεελζεβὺλ ἐκβάλλω τὰ
 δαιμόνια, οἱ υἱοὶ ὑμῶν ἐν τίνι ἐκβάλλουσιν;
 Διὰ τῆσ' αὐτοὶ ὑμῶν ἴσονται καταλή.

28 Εἰ δὲ ἐγὼ ἐν πνεύματι Θεοῦ ἐκβάλλω τὰ
 δαιμόνια, ἄρα ἔφτασεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ βασιλεία
 τοῦ Θεοῦ.

29 Ἡ πῶς διώαται τις εἰσελθεῖν εἰς τὴν οἰκίαν
 τοῦ ἰσχυροῦ, καὶ τὰ σκεύη αὐτοῦ ἀφαιρᾶσαι,
 εἰ μὴ παρῶν τὸν ἰσχυρὸν, καὶ τότε τιμω-
 ρηθήσεται αὐτοῦ ἀφαιρᾶσαι;

30 Ὁ μὴ ἂν μετ' ἐμοῦ, καὶ ἐμὲ ἔσται· καὶ ὁ μὴ
 σιμῶν μετ' ἐμοῦ, σαρπίξ ἐστί.

31 Διὰ τῆσ' λέγω ὑμῖν· Πᾶσαι ἁμαρτίαι καὶ
 βλασφημίαι ἀφεθήσονται τοῖς ἀνθρώποις· ἡ
 δὲ ἡ πνεύματι τοῦ βλασφημίας οὐκ ἀφεθή-
 σεται τοῖς ἀνθρώποις.

32 Καὶ ὅς αὐτὸν εἶπε λόγον καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἁγίον
 ἀφῆσεται αὐτῷ· ὅς δὲ αὐτὸν εἶπε καὶ
 τὸ πνεῦμα τὸ ἁγίον, οὐκ ἀφεθήσεται
 αὐτῷ ἕτε ἐν τῷ αἰῶνι, ἕτε ἐν τῷ
 μέλλοντι.

33 Ἡ παιήσατε τὸ δένδρον καλὸν, καὶ τὸ καρ-
 πὸν αὐτοῦ καλόν· ἡ παιήσατε τὸ δένδρον σα-
 πῶν, καὶ τὸ καρπὸν αὐτοῦ σαπῶν· ἐκ γὰρ τὸ
 καρπὸν τὸ δένδρον γινώσκει.

34 Γεννήματα ἐχιδνῶν, πῶς διώαθε ἀγαθὰ
 λαλεῖν,

λαλεῖν, πονηροὶ ὄντες· ἐκ γὰρ τῆς καρδίας αὐτῶν λαλεῖ.
 τῆς καρδίας τὸ σῶμα λαλεῖ.

35 Ὁ ἀγαθὸς ἀνθρώπος ἐκ τῆς ἀγαθοῦ φη-
 σωρῆς τῆς καρδίας ἐκβάλλει τὰ ἀγαθὰ· καὶ ὁ
 πονηρὸς ἀνθρώπος ἐκ τῆς πονηρῆς φησωρῆς
 ἐκβάλλει πονηρά.

36 Λέγω ὑμῖν, ὅτι πᾶν ῥῆμα ἀληθὲν, ὃ ἐὰν λα-
 λήσῃ οἱ ἄνθρωποι, διποδύσσει αὐτὸν
 λόγον ἐν ἡμέραις κρίσεως·

37 Ἐκ γὰρ τῶν λόγων ἔσται δικαιοσύνη, καὶ ἐκ τῶν
 λόγων ἔσται ἀδικαίωσις.

38 Τότε ἀπεκρίθησάν τινες τῶν γραμματέων
 καὶ Φαρισαίων, λέγοντες, Διδάσκαλε, θέλομεν
 ἀπὸ σοῦ σημεῖον ἰδεῖν.

39 Ὁ ἰσοκρίτης, εἶπεν αὐτοῖς· Γενεὰ πο-
 νηρὰ καὶ μοιχαλὶς σημεῖον ἐπιζητεῖ· καὶ ση-
 μεῖον ἔδοξεν αὐτῇ, εἰ μὴ τὸ σημεῖον Ἰωάν-
 ῆς βαπτίστης·

40 Ὡς περὶ γὰρ Ἰωάνης ἐν τῇ ἁγίᾳ ἑκείνης
 τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας· ἕτως ἔσται ὁ
 υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ καρδίᾳ τῆς γῆς τρεῖς
 ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας.

41 Ἄνδρες Νινδιῖται ἀναστήσαντες ἐν τῇ κρείσσῃ
 μετὰ τὴν γένεσιν ταύτης, καὶ κατακρινέσιν αὐτήν·
 ὅτι μελενόνησαν εἰς τὸ κήρυγμα Ἰωάνης· καὶ ἰδὲς,
 πᾶσι τοῖς Ἰωάνη ἀδελφῶν.

42 Βασίλισσα νότις ἐγερθήσεται ἐν τῇ κρείσσῃ
 μετὰ τὴν γένεσιν ταύτης, καὶ κατακρινεῖ αὐτήν·

ὅτι

ὅτι ἦλθεν ἐκ τῶν περάτων τῆς γῆς ἀκῆσαι τὴν σοφίαν Σολομῶνι. καὶ ἰδὲ, πολέιον Σολομῶνι ὧδε.

43 Ὅταν ᾗ τὸ ἀκῆσαι πνεῦμα ἐξέλθῃ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων, διέρχεται διὰ ἀνύδραν τόπων, ζητῶν ἀνάπαισιν, καὶ ἔχει δὲ δόλομα.

44 Τότε λέγει, Ἐπιπέσω εἰς τὸ οἶκόν μου, ὅθεν ἐξῆλθον. Καὶ ἔλθον, δόλομα χολάζοντα, σεσαρωμένον, καὶ κεκοσμημένον.

45 Τότε πορεύεται, καὶ ὡρᾷ λαμβάνει μεθ' ἑαυτοῦ ἐπιπέσω πνύματα πονηρότερα ἑαυτοῦ, ἐπισελθόντα καὶ θικεῖ ἐκεῖ. Ἐγίνετο παρ' ἑαυτοῦ τῶν ἀνθρώπων ἐκείνων χείρονα τῶν πρώτων. Οὕτως ἔσται καὶ τῆς γῆς ταύτης τῆς πονηροῦ.

46 Ἐπὶ αὐτῆς λαλήσονται τοῖς ὄχλοις, ἰδὲ, ἡ μήτηρ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῆς ἐσηκῆσαν ἔξω, ζητῶντες αὐτὴν λαλήσαι.

47 Εἶπε δὲ ἕως αὐτῶν. Ἰδὲ, ἡ μήτηρ σε καὶ οἱ ἀδελφοὶ σε ἔξω ἐσηκῆσαν, ζητῶντές σοι λαλήσαι.

48 Οἱ ᾗ ἀποκριθεὶς, εἶπε τῶν ἐπόντων αὐτῶν. Τίς ἐστὶν ἡ μήτηρ μου, καὶ τίνας εἰσὶν οἱ ἀδελφοὶ μου;

49 Καὶ ἐκείνας τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τὰς μαθητὰς αὐτῶν, εἶπεν. Ἰδὲ ἡ μήτηρ μου, καὶ οἱ ἀδελφοὶ μου.

50 Ὅς τις ᾗ ποιήσῃ τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου, καὶ ἐν ἐρανοῖς, αὐτὸς μου ἀδελφός, καὶ ἀδελφὴ, καὶ μήτηρ ἐστὶ.

Κεφ.

Κεφ. ιγ'. 13.

- 1 **Ε**Ν ἡ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς ἀπὸ τῆς οἰκίας, ἐκάθητο ὡς ἄρτι πρὸς τὴν θύλασσαν·
- 2 Καὶ συνεχῆστον πρὸς αὐτὸν ὄχλοι πολλοί, ὥστε αὐτοὶ εἰς τὸ πλοῖον ἐμβάντες καθῆσαν· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἐπὶ τῷ αἰγιαλῷ εἰσῆλθε.
- 3 Καὶ ἐλάλησεν αὐτοῖς πολλὰ ἐν ὡρα βολαῖς, λέγων· Ἰδοὺ, ἐξῆλθεν ὁ ἀπείρων ἔσπερος.
- 4 Καὶ ἐν ταῖς ἀπείροις αὐτῶν, αὐτὸν ἔπεισε ὡρα ἡ ὀδὸν· καὶ ἦλθε πρὸς τὴν πετρίαν, καὶ κατέφαθον αὐτὰ.
- 5 Ἄλλα ἡ ἔπεισεν ἐπὶ τὰς πετρίδας, ὅπερ οἶον εἶχε γλῶσσαν πολλὰ καὶ ὀδύνας ἐξαιτέρας, ἀλλὰ τὸ μὴ ἔχειν βάθος γῆς.
- 6 Ἡλίος ἡ ἀπολείλαυτος ἐναυμαλίωτος καὶ ἀλλὰ τὸ μὴ ἔχειν ρίζαν, ἐξηράθη.
- 7 Ἄλλα ἡ ἔπεισεν ἐπὶ τὰς ἀκάνθους, καὶ ἀνέβησαν αἱ ἀκάνθου, καὶ ἀπέπνιξαν αὐτὰ.
- 8 Ἄλλα ἡ ἔπεισεν ἐπὶ τὴν γλῶσσαν καὶ τὸ καλλὸν, καὶ ἰδοὺ καρπὸν, ὃ μὴ ἔχει τὸν ὅ ἡ ἐξήκειτα, ὃ δὲ τριάνθου.
- 9 Οἱ ἔχοντες ὦτα ἀκούετε, ἀκούετε.
- 10 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταί, εἶπον αὐτῷ· Διαβή ἐν ὡρα βολαῖς λαλεῖς αὐτοῖς;
- 11 Ὁ ἡ ἀποκρινόμενος εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι ὑμῖν δίδωμι γνώμας τὰ μυστήρια τῆς βασιλείας τῆς ὑρατῶν, ἐκείνοις ἡ δὲ δίδωμι.

12 Ὁ ἡ

12 Οὓς τις ᾄδει, δόξασε) αὐτῶν, καὶ ᾄδῃ αὐτοῦ· ὅς τις ᾄδει, καὶ οὐκ ἔχει, καὶ ᾄδει, δόξασε) ἀπ' αὐτοῦ.

13 Διὰ τῶν ἐν ᾧ βρολαῖς αὐτοῖς λαλῶ, ὅτι βλέποντες ἔβλεψασι, καὶ ἀκούοντες οὐκ ἀκούσιν, ἔδὲ σιωπῶσι.

14 Καὶ ἀναποληθεῖται ἐπ' αὐτοῖς ἡ περὶ φιλίας Ἡσαΐε, ἡ λέξασα· Ἀκοῆ ἀκούετε, καὶ ἔμὴ συνῆτε· καὶ βλέποντες βλέψετε, καὶ ἔμὴ ἰδίητε.

15 Ἐπαχύνθη γὰρ ἡ καρδία ἔλατ' ἑαυτῶν, καὶ τοῖς ὡσὶ βαρέως ἤκασαν, καὶ τὰς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν ἐκάμυσαν, μή ποτε ἴδωσι τίς ὀφθαλμοῖς, καὶ τοῖς ὡσὶν ἀκούσῃ, ἐκ τῆς καρδίας συνῶσι, καὶ ἐπιστρέψωσι, καὶ ἰάσωμαι αὐτούς.

16 Ὑμῶν ἡ μακρότητα οἱ ὀφθαλμοῖς, ὅτι βλέψασι· καὶ τὰ ὦτα ὑμῶν, ὅτι ἀκούσῃ.

17 Ἀλλὰ γὰρ λέγω ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ περὶ φῆται καὶ δόξαται ἐπιθύμησαν ἰδεῖν αὐτὸν βλέπει, καὶ ἔκ εἶδον· ἔκ ἀκούσῃ αὐτὸν ἀκούετε, καὶ οὐκ ἤκασαν.

18 Ὑμεῖς ἐν ἀκούσῃ τῶν ᾄδων τῶν ἀποστόλων.

19 Παντὸς ἀκούσῃ τὸ λόγον τῆς βασιλείας, καὶ μὴ σιωπήσῃ, ἔρχε) ὁ πονηρὸς, καὶ ἀρπύζει τὸ ἐσπαρμένον ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· ἔτις ἐσιν ὁ ᾄδων τῶν ἀποστόλων ἀπαρῆς.

20 Οὗ ἡ ἐπὶ τὰ πετρώδη ἀπαρῆς, ἔτις ἐσιν ὁ πὸν λόγον ἀκούων, καὶ οὐκ ἔχει καρδίαν λαμβάνων αὐτόν·

21 Οὐκ

- 21 Οὐκ ἔρχῃ ῥίζαν ἐν ἑαυτῷ, ἀλλὰ πρὸς και-
ρός ἐστὶ γησοφῆς ἢ φλίψεως ἢ διαμεῖδι
τὸν λόγον, ὡς οὐκ οὐκ ἀλιζέσθαι.
- 22 Οἱ ἄλλοι ἐκείνοις ἀκαίρους, ἔτις ἐστὶν ὁ
λόγον ἀκείων, καὶ ἡ μέριμνα τῶν αἰῶν τῆς
καὶ ἡ ἀπάτη τῶν πολλῶν συμπύνησθαι τὸν λόγον, καὶ
ἀκαρπῶς γίνεσθαι.
- 23 Οἱ ἄλλοι ἐπὶ τῷ γλυτῷ καὶ καλῷ σπαρῆς, ἔτις
ἐστὶν ὁ τὸν λόγον ἀκείων, καὶ σιωπῶν. ὅς δὴ καρ-
ποφορεῖ, καὶ ποιεῖ, ὁ μὲν ἐκείνον, ὁ δὲ ἐξήκοντα,
ὁ δὲ τεράκοντα.
- 24 Ἄλλω πάλιν βολὴν παρέθηκεν αὐτοῖς, λέ-
γων, Ὡς οὐκ ἔστι ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀνθρώ-
πων σπείρον καὶ καλὸν σπέρμα ἐν τῷ ἀργαῖ αὐτῶν.
- 25 Ἐν τῷ κατὰ δόξαν τῶν ἀνθρώπων, ἦλθεν
αὐτῶν ὁ ἐκείνος, καὶ ἔσπερε ζιζάνια ἀνά μέσον
τῶν σίτων, καὶ ἀπῆλθεν.
- 26 Ὅτε δὲ ἐβλάστησεν ὁ κῆρος, καὶ καρπὸν ἐποίη-
σε, τότε ἐφάνη καὶ τὰ ζιζάνια.
- 27 Προσεληθόντες δὲ οἱ δούλοι τῶν οἰκοδεσπότων,
εἶπον αὐτῷ· Κύριε, ἐχὲν καλὸν σπέρμα ἔσπε-
ρας ἐν τῷ σάργα; πόθεν ἐνέχθαι τὰ ζιζάνια;
- 28 Οἱ δὲ ἔφη αὐτοῖς· Ἐκείνος ἀνθρώπων τῶν
ἐποίησεν. Οἱ δὲ δούλοι εἶπον αὐτῷ· Θέλεις
ἐν ἀπεληθόντες συλλέξωμεν αὐτά;
- 29 Οἱ δὲ ἔφη· Οὐ· μήποτε συλλέξωμεν τὰ ζι-
ζάνια, ἀκριζώσῃτε ἅμα αὐτοῖς τὸν σίτον.
- 30 Ἄφετε συναρξάνεσθαι ἀμφότερα μέχρι
τοῦ

τοῦ θερισμοῦ· καὶ ἐν τῷ καιρῷ τῷ θερισμοῦ ἐρεῖ
τοῖς θερισταῖς· Συλλέξατε ὡσφόν τὰ ζιζάνια,
καὶ δήσατε αὐτὰ εἰς δεσμάς, ὡς τὸ
καῖα καῦσαι αὐτὰ· ἢ ἢ σῖτον συναγάγετε εἰς
τὴν ἀποθήκην μας.

31 Ἄλλω ὡραβολῶν παρέθηκεν αὐτοῖς,
λέγων, Ὁμοία ἐσὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν
καὶ κκω σινιάπειας, ὃν λαβῶν ἄνθρωπος ἔσπε-
ρεν ἐν τῷ ἀγρῷ αὐτοῦ.

32 Ὁ μικρότερον μὲν ἐστὶ πάντων τῶν σπερμά-
των· ὅταν ἢ ἀυξήθῃ, μεῖζον τῶν λαχάνων ἐστὶ·
καὶ γίνετ' ἄνδρον, ὡςτε εἰλθεῖν τὰ πετρίνα τῷ
ὕδατι, καὶ καῖα σκίωσεν ἐν τοῖς κλάδοις αὐτῆς.

33 Ἄλλω ὡραβολῶν ἐλάλησεν αὐτοῖς·
Ὁμοία ἐσὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ζύμη, ἣν
λαβῆσα γυνὴ ἐπέκρυψεν εἰς ἀλεύρεσά πα-
τρία, ἕως ἢ ἐζυμώθῃ ὅλον.

34 Ταῦτα πάντα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐν ὡρα-
βολαῖς τοῖς ὄχλοις, καὶ χωρὶς ὡραβολῆς
ὅσα ἐλάλη αὐτοῖς.

35 Ὅπως πληρωθῆ τὸ ῥηθὲν Δὲ τῷ αεροφίτῃ,
λέγησιν, Ἀνοίξω ἐν ὡραβολαῖς τὸ σῶμα
μα· ἐρδύξομαι κεκρυμμένα ἀπὸ καῖαβολῆς
κῆτος.

36 Τότε ἀφείς τὰς ὄχλους, ἦλθεν εἰς τὴν οἰ-
κίαν ὁ Ἰησοῦς· καὶ προσήλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ
αὐτοῦ, λέγοντες, Φράσον ἡμῖν τὸ ὡραβολῶν
τῶν ζιζανίων τῷ ἀγρῷ.

- 37 Ο ἵ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Οἱ ἀπεί-
ρων τὸ κελὸν ἀπέρμα, ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου·
- 38 Οἱ ἵ ἀγροὶ, ἐστὶν ὁ κόσμος· τὸ ἵ κελὸν
ἀπέρμα, ἑτοί εἰσιν οἱ υἱοὶ τῆ βασιλείας· τὰ
δὲ ζιζάνια, ἐστὶν οἱ υἱοὶ τοῦ ποιητοῦ.
- 39 Οἱ ἵ ἐχθροὶ οἱ ἀπείρας αὐτῶν, ἐστὶν ὁ ἀβύ-
βος· ὁ ἵ θερισμὸς, σωτέλεια τοῦ αἰῶνος
ἐστὶν· οἱ ἵ θεριστῆ, ἄγγελοι εἰσιν.
- 40 Ὡς περὶ ἐν συκίῃ τὰ ζιζάνια, καὶ πυρὶ
κατακαίει· ἕτως ἔσται ἐν τῇ σωτελείᾳ τοῦ
αἰῶνος τῆς.
- 41 Ἀποσελεῖ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου τὰς ἀγγέλους
αὐτοῦ, καὶ συλλέξουσιν ἐκ τῆ βασιλείας αὐτῆ
πάντα τὰ σκάνδαλα, καὶ τὰς ποιῆντας τῶν
ἀνομίῶν.
- 42 Καὶ βαλεῖσιν αὐτὰς εἰς τὴν κέμινον τοῦ
πυρός· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς
τῶν ὀδόντων.
- 43 Τότε οἱ δίκαιοι ἐκλάμψουσιν ὡς ὁ ἥλιος,
ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ πατρὸς αὐτῶν. Οἱ ἔχον
ἄτι ἀκέρῃ, ἀκέρῃ.
- 44 Πάλιν ὁμοίᾳ ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ ἔρανω
θησαυροῦ κεκρυμμένου ἐν τῷ ἀγρῷ, ὃν εὗρον
ἄνθρωποι· ἐκρυψε, καὶ ἀπὸ τῆ χάριτος αὐτοῦ
ὑπάγαγε, καὶ πάντα ὅσα ἔχει, πωλεῖ, καὶ ἀγοράζει
τὸν ἀγρὸν ἐκείνον.
- 45 Πάλιν ὁμοίᾳ ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ ἔρανω ἄν-
θρώπου ἐμπόρου, ζητῆντι καλὰς μαργαρίτας·

46 Ὃς δὲ ῥῶν ἓνα πολὺ ἕμην μαργαρίτων,
ἀπὸ πλῆθους, πέντε πρᾶξι πάντων ὅσα εἶχε, καὶ ἤρ-
ρασαν αὐτόν.

47 Πάλιν ὁμοίᾳ ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν
σαυγλή βληθείσῃ εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ ἐκ
παντὸς γένους σωμαγωγέσῃ·

48 Ἦν, ὅτε ἐπληρώθη, ἀναβιβάσαντες ἐπὶ τῆν
αἰγαλόν, καὶ κηλίσαντες, σινέλεξαν τὰ κη-
λά εἰς ἀγέϊα, τὰ δὲ σαπρὰ ἐξω ἔβαλον.

49 Οὕτως ἔσται ἐν τῇ σωτηρίᾳ τῶν αἰῶνων·
ἐξελεύσονται οἱ ἄγγελοι, καὶ ἀφοριᾶσιν τὰς πο-
νηρὰς ἐκ μέσσω τῶν δικαίων·

50 Καὶ βαλεῖσιν αὐτὰς εἰς πῦρ κείμενον·
πυρός ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς
τῶν ὀδόντων.

51 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Σωθήκατε ταῦτα
πάντα; Λέγουσιν αὐτῷ· Ναὶ Κύριε.

52 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Διὰ τῶν πάντων γραμμα-
τῶν μαθηθεῖς εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν,
ὁμοίως ἐστὶν ἀνθρώπῳ οἰκοδεσπότῃ, ὅστις ἐκ-
βάλλει ἐκ τῆς θησαυρῆ αὐτοῦ κηρὰ ἐκ παλαιά.

53 Καὶ ἐγένετο, ὅτε ἐτέλεισεν ὁ Ἰησοῦς ταῦτα πα-
ραβολὰς ταύτας, μετήρην ἐκεῖθεν.

54 Καὶ ἔλθων εἰς τὴν παλιρῶδα αὐτοῦ, ἐδι-
δασκεν αὐτὰς ἐν τῇ σωμαγωγῇ αὐτῶν· ὥστε
ἐκπλήττει αὐτὰς, καὶ λέγει· Πόθεν τέταται ἡ
σοφία αὐτῆ, καὶ αἱ δυνάμεις;

55 Οὐχ ἔτι ἐστὶν ὁ θεὸς τέκνον ἡμῶν; ἔτι ἡ
μητήρ

C

μητήρ

μητηρ αὐτῆ λέγει Μαριάμ, ἔοι ἀδελφοὶ
αὐτῆς Ἰάκωβος, καὶ Ἰωσῆς, καὶ Σίμων, καὶ Ἰούδας;

56 Καὶ αἱ ἀδελφαὶ αὐτῆ ἔχουσιν πάντες
ἡμᾶς ἔστι; πόθεν ἐν τέτρῳ ταῦτα πάντα;

57 Καὶ ἐσκανδαλίζοντο ἐν αὐτῷ. Ὁ Ἰησοῦς
εἶπεν αὐτοῖς· Οὐκ ἔστι περὶ τῆς ἀπίστεως, εἶ
μη ἐν τῇ πατρὶδι αὐτῆ, ἢ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτῆ.

58 Καὶ οὐκ ἐπίσησεν ἐκεῖ διωάμενος πολλοὺς,
ἀλλὰ πλὴν ἀπίστεον αὐτῶν.

Κεφ. 14. 14.

1 **Ε**Ν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἦκσεν Ἡρώδης ὁ
τετραρχὴς πλὴν ἀσσυρίᾳ Ἰησοῦ.

2 Καὶ εἶπε τοῖς πασι αὐτῆ· Οὗτός ἐστι
Ἰωάννης ὁ Βαπτιστής· αὐτὸς ἠγέρθη ἀπὸ τῶν
νεκρῶν, καὶ ἀλλὰ τῶν αἰδωάμενος ἐνεργῆσεν
ἐν αὐτῷ.

3 Ὁ γὰρ Ἡρώδης κραλίσσας τὸ Ἰωάννην, ἔδωκεν
αὐτὸν, καὶ ἔθετο ἐν φυλακῇ, ἀλλὰ Ἡρωδιάδα
τὴ γυναῖκα Φιλίππου ἔσδελφῆ αὐτῆ.

4 Ἐλεγε γὰρ αὐτῷ ὁ Ἰωάννης· Οὐκ ἔξεσί σοι
ἔχειν αὐτὴν.

5 Καὶ θέλων αὐτὸν ἀποκτείνειν, ἐφοβήθη τὸ
ἄστυ, ὅπως περὶ τῆς αὐτὸν εἶχον.

6 Γενεσίῳν ἡ ἀσσυρίῳν ἔσδελφῆ Ἡρώδου, ἀρχίσσασα
ἡ θυγάτηρ τῆς Ἡρωδιάδος ἐν τῷ μέσῳ· καὶ
ἤρесе τῷ Ἡρώδῃ.

7 Ὅθεν μεθ' ὅρκου ἀμολόγησεν αὐτῇ δῆνα
ἢ εἰάν αἰτήσῃ.

8 ΗΨ.

- 8 Η ἢ, προβιβαθείσα ὑπὸ τῆ μητρὸς αὐ-
τῆς, Δός μοι, φησὶν, ἄλλε ἐπὶ πίνακι τῆ κε-
φαλῇ Ἰωάννη Ἐβαπτιστοῦ.
- 9 Καὶ ἐλυπήθη ὁ βασιλεύς· ἀλλ' ἢ τὰς ὄρκους
καὶ τὰς σιωνανακμήδους, ἐκέλευσε δοθῆναι.
- 10 Καὶ πέμψας ἀπεκεφάλισε τὸ Ἰωάννη ἐν
τῇ φυλακῇ.
- 11 Καὶ ἠνέχθη ἡ κεφαλὴ αὐτῆ ἐπὶ πίνακι, ἔ-
δόθη τῷ κερρασίῳ· καὶ ἔθηκε τῇ μητρὶ αὐτῆς.
- 12 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτῆ ἤραν
τὸ σῶμα, καὶ ἔθαψαν αὐτό· καὶ ἐλθόντες
ἀπήγειλαν τῷ Ἰησοῦ.
- 13 Καὶ ἀκείσας ὁ Ἰησοῦς, ἀνεχώρησεν ἐκεῖθεν
ἐν πολιοῦ εἰς ἔρημον τόπον κατ' ἰδίαν. Καὶ
ἀκείσαστες οἱ ὄχλοι, ἠκολούθησαν αὐτῷ πεζῇ
διὰ τῶν πόλεων.
- 14 Καὶ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς, εἶδε πολὺν ὄχλον·
καὶ ἐσπλαγχνίσθη ἐπ' αὐτούς, καὶ ἑτεράπωσε
τούς ἀρρώστους αὐτῶν.
- 15 Ὅψίας ἢ ἡλιομῆνης, προσῆλθον αὐτῷ οἱ
μαθηταὶ αὐτῆ, λέγοντες, Ἐρημός ἐστιν ὁ τό-
πος, καὶ ἡ ὥρα ἤδη παρεῖληθεν· ἀπόλυσον τὰς
ὄχλους, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τὰς κώμας, ἀγο-
ράσωσιν ἑαυτοῖς βρώματα.
- 16 Ὁ ἢ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ χρειᾶν ἔχου-
σιν ἀπελθεῖν· δότε αὐτοῖς ὑμεῖς φαγεῖν.
- 17 Οἱ ἢ λέγουσιν αὐτῷ· Οὐκ ἔχομεν ἄλλε ἐκ-
ρὴ πέντε ἄρτους καὶ δύο ἰχθύας.

- 18 Ο δὲ εἶπε· Φέρετέ μοι αὐτὰς ἄδτε.
- 19 Καὶ κελύσσας τὰς ὄχλας ἀνακλιθῆναι ἐπὶ τὰς χόρτας, καὶ λαβὼν τὰς πέντε ἄρτους καὶ τὰς δύο ἰχθύας, ἀναβλέψας εἰς τὸ ὄρανον, εὐλόγησε· καὶ κλάσας, ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς τὰς ἄρτους, οἱ δὲ μαθηταὶ τοῖς ὄχλοις.
- 20 Καὶ ἔφαθον πάντες, ἔ ἐχρυσάθησαν. καὶ ἤρασαν τὸ πνεῦμα αὐτῶν καὶ κλασματικῶν δώδεκα κροφίνες πλήρεις.
- 21 Οἱ δὲ ἰδιόθιες ἦσαν ἄνδρες ὡς πεντακισχίλιοι, χωρὶς γυναικῶν ἔ παίδων.
- 22 Καὶ εὐθέως ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς τὰς μαθηταῖς αὐτῶν ἐμβῆναι εἰς τὸ πλοῖον, ἔ πρὸς ἄβυθον αὐτῶν εἰς τὸ πέραν, ἕως ἔ ἀπολύσει τὰς ὄχλας.
- 23 Καὶ ἀπολύσας τὰς ὄχλας, ἀνέβη εἰς τὸ ὄρη κατ' ἰδίαν πρὸς δεξιὰς. Οὐσίας δὲ ἤνωρθη, μόνον δὲ ἐκεῖ.
- 24 Τὸ δὲ πλοῖον ἤδη μέσον τῆς θαλάσσης ἦν, βασανίζομενον ὑπὸ τῶν κυμάτων· ἦν γὰρ ἐναντίον τοῦ ἀνέμου.
- 25 Τετάρτη δὲ φυλακῆ τῆς νυκτός ἀπῆλθε πρὸς αὐτὰς ὁ Ἰησοῦς, πρὸς πάλιν ἐπὶ τῆς θαλάσσης.
- 26 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν οἱ μαθηταὶ ἐπὶ τῆς θαλάσσης πρὸς πάλιν, ἐταράχθησαν, λέγοντες, Ὅπως φάντασμα ἐστὶ· καὶ ἀπὸ φόβου ἐκραζόντων.
- 27 Εὐθέως δὲ ἐλάλησεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγων, Θαρσείτε· ἐγὼ εἰμι· μὴ φοβεῖσθε.
- 28 Ἀποκριθεὶς δὲ αὐτῶν ὁ Πέτρος, εἶπε· Κύριε,

Κύριε,

Κύριε, εἰ σὺ εἶ, κέλευσόν με πρὸς σὲ ἔλθειν ἐπὶ τὰ ὕδατα.

29 Οἱ ἄρα εἶπεν· Ἐλθέ. Καὶ καθίσθαις ἀπὸ τοῦ πλοίου ὁ Πέτρος, περιπάτησεν ἐπὶ τὰ ὕδατα, ἔλθειν πρὸς τὸ Ἰησοῦν.

30 Βλέπων ἰδὲ τὸν ἄνεμον ἰσχυρὸν, ἐφοβήθη. καὶ δρᾷ ἀμυγᾷ καθίστατονίζεσθαι, ἐκραξέ, λέγων, Κύριε, σῶσόν με.

31 Εὐθέως ἰδὲ ὁ Ἰησοῦς ἐκλείνας τὴν χεῖρα, ἐπελάβετο αὐτοῦ, ἐλέγη αὐτῷ· Ὀλιγόπιστε, εἰς τί ἐπίστασαι;

32 Καὶ ἐμβαύτων αὐτῶν εἰς τὸ πλοῖον, ἐνόησεν ὁ ἄνεμος.

33 Οἱ ἄρα ἐν τῷ πλοίῳ, ἐλθόντες περισεκωήσαν αὐτῷ, λέγοντες, Ἀληθῶς Θεὸς υἱὸς εἶ.

34 Καὶ Ἀβραάμ υἱοὶ Σααὶ, ἦλθον εἰς τὴν γῆν Γεννησαρέτ.

35 Καὶ ἐπιγνόντες αὐτὸν οἱ ἄνδρες τῶ τόπῳ ἐκείνῳ, ἀπέστειλαν εἰς ὄλιγον τὴν πείραρον ἐκείνου, καὶ προσώεγκαν αὐτῷ πάντας τὰς κακὰς ἐχούσας.

36 Καὶ παρεκάλειν αὐτὸν, ἵνα μόνον ἄψανθαι τὰ κροσσέδρα ἱματῆς αὐτοῦ. Ἐόσοι ἠψάνθη διεσώθησαν.

Κεφ. ιε'. 15.

1 Τότε προσέρχοντ' αὐτῷ Ἰησοῦ οἱ ἀπὸ Ἱεροσολύμων γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι, λέγοντες·

C 3

2 Διακ'η

- 2 Διατί οἱ μαθηταί σε ᾠθαβαίνουσι τῶν ᾠθαδόντων τῶν πρεσβυτέρων; ἔ γὼν ἵπτον) εἰς χεῖρας αὐτῶν, ὅταν ἄρτον ἐσθίωσιν.
- 3 Ο ἡ ἀποκριθεῖς, εἶπεν αὐτοῖς· Διατί καὶ ὑμεῖς ᾠθαβαίνετε τὸ ἐνθλίω τῷ Θεῷ, ἀλλὰ τῶν ᾠθαδόντων ὑμῶν;
- 4 Ο γὼν Θεὸς ἐνεθέλω, λέγων, Τίμα τὸν πατέρα σε, καὶ τὸ μητέρα· καὶ· Ο κακοθῶν πατέρα ἢ μητέρα, θανάτω τελοῦσθαι.
- 5 Ὑμεῖς ἡ λέγετε· Ὅς αὖν εἶπη τῷ πατρὶ ἢ τῇ μητρὶ, Δῶρον ὃ ἐάν ἐξ ἐμοῦ, ἀφελήτης, καὶ ἔ μὴ ἡμῆση τὸ πατέρα αὐτῷ, ἢ τῶν μητέρων αὐτοῦ.
- 6 Καὶ ἡκυρώσατε τὸ ἐνθλίω τῷ Θεῷ ἀλλὰ τὸ ᾠθαδόντων ὑμῶν.
- 7 Ὑποκριτῶν, καλῶς περιφύτουμε τῶν ὑμῶν Ἡσυχίας, λέγων·
- 8 Εἰμί μοι ὁ λαὸς ἔτῳ τῶν σώματι αὐτῶν, καὶ τοῖς χεῖρασι με ἡμῶν· ἢ ἡ καρδίκα αὐτῶν πόρρω ἀπέχεται ἀπὸ ἐμοῦ.
- 9 Μά τι καὶ ἡ σέβονται με, διδάσκοντες διδασκαλίας, ἐνθλίματῶν ἀνθρώπων.
- 10 Καὶ περικαλεσάμεθον τὸν ὄχλον, εἶπεν αὐτοῖς· Ἀκρίε καὶ σιωπίτε.
- 11 Οὐ τὸ ἐσπερχόμενον εἰς τὸ σῶμα κηνοῖ τὸν ἀνθρώπον· ἀλλὰ τὸ ἐμποροῦμενον ἐκ τοῦ σώματι, τῷ κηνοῖ τὸν ἀνθρώπον.
- 12 Τότε περισεληθῶντες οἱ μαθηταί αὐτῷ, εἶπον αὐτῷ·

αὐτῶν· Οἶδας, ὅτι οἱ φημιστοὶ ἀκύνειες
πὴν λόγον, ἐσκανδαλίωθησαν.

15 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπε· Πᾶσα φυλεία,
ὡς ὅσα ἐφύτῳσεν ὁ πατήρ με ὁ ἐρᾶνιθ,
ἐκρηζώθησε).

14 Ἀφείε αὐτῶν· ὁδηγοί εἰσι τυφλοὶ τυφλῶν.
τυφλὸς δὲ τυφλὸν εἰάν ὁδηγῆ, ἀμφοτέρω εἰς
βόθρῳαν πεσῶν).

15 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, εἶπεν αὐτῷ·
Φράσον ἡμῖν τὴν πᾶσαν βολῆν ταύτην.

16 Οἱ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἀκμῶν καὶ ὑμεῖς
ἁσυνέτοι ἐσε;

17 Οὐπω νοεῖτε, ὅτι πᾶν τὸ εἰσποροδόμενον
εἰς τὸ σῶμα, εἰς τὴν καρδίαν χωρεῖ, καὶ εἰς
ἀφειδρῶνα ἐκβάλλε);

18 Τὰ δὲ ἐκποροδόμενα ἐκ τῆς σῶμα, ἐκ τῆς
καρδίας ἐξέρχε), καὶ κείνα κρινοῖ τὸ ἄνθρωπον.

19 Ἐκ γὰρ τῆς καρδίας ἐξέρχον) Διὰ λογισμοῖ
πονηροῖ, φόνου, μεριχῆαι, πορνείαι, κλοπαί,
ψευδομαρτυρίαι, βλασφημίαι.

20 Ταῦτά ἐστι τὰ κρινέντα τὸ ἄνθρωπον· τὸ δὲ
ἀνίπθαι χερσὶ φαγεῖν, ἢ κρινοῖ τὸ ἄνθρωπον.

21 Καὶ ἐξεληθὼν ἐκεῖθεν ὁ Ἰησοῦς, ἀνεχώρησεν
εἰς τὰ μέρη Τύρου καὶ Σιδῶν.

22 Καὶ ἰδὼν, γυνὴ Χανααναία ἀπὸ τῶν ὀρέων
ἐκείνων ἐξεληθῶσα, ἐκραύασεν, αὐτῷ λέγουσα·
Ἐλέησον με Κύριε, ἡ Δαβὶθ, ἡ θυγάτηρ
με κακῶς δαιμονιάζε).

- 23 Ο ἵδιος ἀπεκρίθη αὐτῇ λόγον, Καὶ ὡσεὶ λήθοντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἡρώτων αὐτὸν, λέγοντες, Ἀπόλυτον αὐτῷ, ὅτι κρούζει ὀπίσθεν ἡμῶν.
- 24 Ο ἵδιος ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐκ ἀπετάλην εἰς μὴ εἰς τὰ σπλάγχνα τὰ ἀπολωλότα οἴκου Ἰσραὴλ.
- 25 Ἡ δὲ ἐλθέτω ὡσεὶ κωφὴ αὐτῶν, λέγουσα· Κύριε, βοήθη μοι.
- 26 Ο ἵδιος ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐκ ἔστι καλὸν λαβεῖν τὸ ἄρτον τῶν τέκνων, καὶ βαλεῖν τοῖς κυναρίοις.
- 27 Ἡ δὲ εἶπεν· Ναὶ Κύριε· Ἐγὼ τὰ κυναρία ἐδίδη δὲ τῶν ψυχῶν τῶν πιπτόντων ἀπὸ τῆς τραπέζης τῶν κυριῶν αὐτῶν.
- 28 Τότε ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτῇ· Ὡς γνώμαι, μεγάλη σοφία ἡ πίστις· ἤρηθίτω σοὶ ὡς θέλεις. Καὶ ἰάθη ἡ τυφάτις αὐτῆς ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκείνης.
- 29 Καὶ μετὰ βᾶς ἐκείθεν ὁ Ἰησοῦς, ἦλθε πρὸς τὴν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας· καὶ ἀναβὰς εἰς τὸ ἄρτον, ἐκάθητο ἐκεῖ.
- 30 Καὶ ὡσεὶ λήθον αὐτῶν ὄχλοι πολλοὶ, ἔχοντες μεθ' ἑαυτῶν χωλὰς, τυφλὰς, κωφὰς, κυλλὰς, καὶ ἑτέρας πολλὰς· καὶ ἐβίβαν αὐτὰς πρὸς τὰς πόδας τοῦ Ἰησοῦ· καὶ ἑτέρωπύρουν αὐτὰς.
- 31 Ὡς οὖν τὰς ὄχλους θαυμάσας, βλέποντας κωφὰς λαλοῦντας, κυλλὰς ὑγιῆς, χωλὰς περιπατοῦντας, καὶ τυφλὰς βλέποντας· καὶ ἐδόξαζον τὸν Θεὸν Ἰσραὴλ.
- 32 Ο ἵδιος Ἰησοῦς ὡσεὶ καλεσάμενος τὰς μαθητάς

θηζας αὐτῶν, εἶπε· Σπλαγχνίζομαι ἐπὶ τὸ ὄχλον, ὅτι ἤδη ἡμέρας τρεῖς παρουσῶστέ μοι, καὶ ἐκ ἔχουσι λίφάωσι· Ἐδύλομαι αὐτῶν νήστεις ἔσθλω, μήποτε ἐκλυθῶσιν ἐν τῇ ὁδῷ.

33 Καὶ λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτῶν· Πόθεν ἡμῖν ἐν ἐρημίᾳ ἄρτοι τοσούτοι, ὥστε χορτάσαι ὄχλον τοσούτον;

34 Καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πόσους ἄρτους ἔχετε; Οἱ δὲ εἶπον· Ἐπτὰ, καὶ ὀλίγα ἰχθύδια.

35 Καὶ ἐκέλευσε τοῖς ὄχλοις ἀναπεσεῖν ἐπὶ τὴν γῆν.

36 Καὶ λαβὼν τὰς ἑπτὰ ἄρτους καὶ τὰς ἰχθύδας, ὕψαυσε αὐτάς, ἔκλασε, ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς αὐτῶν· οἱ δὲ μαθηταὶ τὰ ὄχλῳ.

37 Καὶ ἔφαθον πάντες, καὶ ἐχορτάσθησαν· καὶ ἦσαν τὰ περισσεύοντα κλασματῶν, ἑπτὰ σπυρίδας πλήρεις.

38 Οἱ δὲ ἰσδιόντες ἦσαν τετρακισχίλιοι ἄνδρες, χωρὶς γυναικῶν καὶ παιδῶν.

39 Καὶ ἀπολύσας τὰς ὄχλους, ἐνέβη εἰς τὸ πλοῖον, καὶ ἦλθεν εἰς τὰ ὄρια Μαγδαλά.

Κεφ. 15. 16.

1 Καὶ παροσέλθοντες οἱ Φαρισαῖοι καὶ σαδδουκαῖοι, πειράζοντες ἐπηρώτησαν αὐτὸν σημεῖον ἐκ τῶν οὐρανῶν ἐπιδείξαι αὐτοῖς.

2 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Οὐσίας γλυκομένης λέγετε, Εὐδία· πυρρᾶζι γὰρ ὁ ἔρανος.

С 5 3 Καὶ

- 3 Καὶ παροῖ, Σήμερον χιμῶν πυρράζι γδ
 συγιάζων ὁ ἔρανος. Ὑποκερταῖ, τὸ μὲν παρῶ-
 στωπον ἔ' ερανε γινώσκετε Δ' ακερίαν, τὰ δ' ἐ
 σημεῖα τ' κηρῶν ἔ' δωάαδε;
- 4 Γενεὰ πονηρὰ καὶ μοιχαλὶς σημεῖον ἐπι-
 ζήσει· καὶ σημεῖον ἔ' δοθήσει αὐτῇ, εἰ μὴ τὸ
 σημεῖον Ἰωῆα ἔ' παρφήτε. Καὶ κελαιπιπὼν
 αὐτὰς, ἀπῆλθε.
- 5 Καὶ ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτῶ εἰς τὸ πί-
 ραν, ἐπελάθοντο ἄρτους λαβεῖν.
- 6 Ὁ ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ὁρᾶτε καὶ παρσέχιν
 ἀπὸ τ' ζύμης τ' φαροσῶων καὶ σαδδουκῶων.
- 7 Οἱ ἰδ' διελογίζοντο ἐν ἑαυτοῖς, λίγηδες· Ὅτε
 ἄρτους σὺν ἐλάβορδι.
- 8 Γινῆς ἰδ' ὁ ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Τί Δ' ελο-
 γίζετε ἐν ἑαυτοῖς, ὀλιγόπιστοι, ὅτι ἄρτους σὺν
 ἐλάβετε;
- 9 Οὐπω νοεῖτε, ἔδὲ μνημονεύετε τὰς πέντε
 ἄρτους τ' πεντακισχίλων, καὶ πόσους κροφίνους
 ἐλάβετε;
- 10 Οὐδὲ τὰς ἐπὶ ἄρτους τ' πεντακισχίλων,
 καὶ πόσους στυρίδας ἐλάβετε;
- 11 Πῶς ἔ' νοεῖτε, ὅτι ἔ' παρῶ ἄρτις εἶπον ὑμῖν,
 παρσέχιν ἀπὸ τ' ζύμης τ' φαροσῶων καὶ
 σαδδουκῶων;
- 12 Τότε συνῆκαν, ὅτι σὺν εἶπε παρσέχιν
 ἀπὸ τ' ζύμης ἔ' ἄρτις, ἀλλ' ἀπὸ τ' διδαχῆς τ'
 φαροσῶων καὶ σαδδουκῶων.

- 13 Ἐλθὼν ἰὸ Ἰησοῦς εἰς τὰ μέρη Καισαρείας
 καὶ Φιλίππων, ἠρώτα τὰς μαθητὰς αὐτοῦ, λέ-
 γων, Τίνα με λέγουσιν οἱ ἄνθρωποι εἶναι; τὸν
 υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου;
- 14 Οἱ δὲ εἶπον· Οἱ μὲν, Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ·
 ἄλλοι δὲ, Ἡλίου· ἕτεροι δὲ, Ἰερεμίου, ἢ ἑνὸς τῶν
 προφητῶν.
- 15 Λέγει αὐτοῖς· Ὑμεῖς δὲ τίνα με λέγετε εἶναι;
- 16 Ἀποκριθεὶς δὲ Σίμων Πέτρος, εἶπε· Σὺ
 εἶ ὁ Χριστός, ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος.
- 17 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτῷ· Μα-
 κάρειός εἶ Σίμων βῆρ Ἰωνᾶ, ὅτι σὰρξ καὶ
 αἷμα οὐκ ἀπεκάλυψέν σοι, ἀλλ' ὁ πατήρ
 μου, ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς.
- 18 Καὶ γὰρ δέ σοι λέγω, ὅτι σὺ εἶ Πέτρος, καὶ ἐπὶ
 ταύτῃ τῇ πέτρᾳ οἰκοδομήσω μου τὴν ἐκκλη-
 σίαν· καὶ πύλαι ἄδης οὐ κατισχύουσιν αὐτῆς·
- 19 Καὶ δώσω σοι τὰς κλεῖς τῆς βασιλείας τοῦ
 οὐρανοῦ· καὶ ὅ ἐὰν δήσῃς ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσται δεδε-
 μμένον ἐν τοῖς οὐρανοῖς· καὶ ὅ ἐὰν λύσῃς ἐπὶ τῆς
 γῆς, ἔσται λελυμμένον ἐν τοῖς οὐρανοῖς.
- 20 Τότε διετείλατο τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· ἵνα
 μηδενὶ εἰπῶσιν, ὅτι αὐτός ἐστιν Ἰησοῦς ὁ Χριστός.
- 21 Ἀπὸ τότε ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς δεκνύειν τοῖς
 μαθηταῖς αὐτοῦ, ὅτι δεῖ αὐτὸν ἀπελθεῖν εἰς
 Ἱερουσόλυμα, καὶ πολλὰ παθεῖν διὰ τὸ πρεσ-
 βυτέρων καὶ ἀρχιερέων, καὶ γραμματέων, καὶ
 ἀποκριθῆναι, καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐγερθῆναι.
- 22 Καὶ

- 22 Καὶ αὐτοὶ λαβόμενοι αὐτὸν ὁ Πέτρος,
ἤρξατο ἐπιτιμᾶν αὐτῷ, λέγων· Ἰλεῶς σοι Κύ-
ριε· ἢ μὴ ἔσται σοι τῶν.
- 23 Ὁ δὲ ἰσχυρῶς, εἶπε πρὸς Πέτρον· Ὑπαγε
ὀπίσω μου Σαββαῖα, σκάνδαλον μου εἶ· ὅτι ἔ-
φρονεῖς πρὸς τὸ θεῖον, ἀλλὰ πρὸς τὸ ἀνθρώπινον.
- 24 Τότε ὁ ἰησοῦς εἶπε πρὸς μαθητῶν αὐτοῦ· Εἴ τις
θέλει ὀπίσω μου ἔλθειν, ἀπαρνησάτω ἑαυτὸν,
ἔστω ὡς τὸ ξυρτὸν αὐτοῦ, καὶ ἀκολουθήτω μοι·
- 25 Ὃς γὰρ αὐτὸν θέλη τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σώσει, ἀπο-
λέσει αὐτήν· ὃς δὲ αὐτὸν ἀπολέσῃ τὴν ψυχὴν
αὐτοῦ ἐνεκεν ἐμοῦ, σώσει αὐτήν.
- 26 Τί γὰρ ὠφελεῖ ἄνθρωπος, ἐὰν τὸ κόσμον
ἔλθῃ κερδήσει, τὴν δὲ ψυχὴν αὐτοῦ ζημιωθῇ; ἢ
τί δώσει ἄνθρωπος ἀνάγκασμα τῆς ψυχῆς
αὐτοῦ;
- 27 Μίλλε γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐρχοῦ ἐν τῇ
δόξῃ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, μετὰ τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ
καὶ τότε ἀποδώσει ἕκαστῷ κατὰ τὸ πρᾶξεν αὐτοῦ.
- 28 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, εἰσὶ ἕντες τῶν αἰσθη-
των, οἵτινες ἢ μὴ γινώσκουσιν τὰς ἡμέρας, ἕως αὐ-
τῶν ἰδοῦσι τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐν τῇ βα-
σιλείᾳ αὐτοῦ.

Κεφ. ιζ'. 17.

1 Καὶ μετ' ἡμέρας ἐξ ἑσπερας λαμβάνει ὁ ἰη-
σοῦς τὸν Πέτρον, καὶ Ἰάκωβον, καὶ Ἰωάννην
τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ καὶ ἀναφέρει αὐτοὺς εἰς
ὄρη ὑψηλὸν κατ' ἰδίαν.

2 Καὶ

- 2 Καὶ μετεμορφώθη ἔμπροσθεν αὐτῶν, καὶ ἔλαμψε τὸ πρῶτον αὐτῶν ὡς ὁ ἥλιος, καὶ ἡ ἰμάτιον αὐτῶν ἐγένετο λευκὸν ὡς τὸ φῶς.
- 3 Καὶ ἰδὼν, ᾤφθησαν αὐτοῖς Μωσῆς καὶ Ἡλίας, μετ' αὐτοῦ συλλαλοῦντες.
- 4 Ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος, εἶπε τῷ Ἰησοῦ· Κύριε, καλὸν ἐστὶν ἡμῶν ᾧδε εἶναι· εἰ θέλεις, ποιήσωμεν ᾧδε τρεῖς σκηνάς, σοὶ μίαν, καὶ Μωσῆι μίαν, καὶ μίαν Ἡλίας.
- 5 Ἐπ' αὐτῶν λαλήσας, ἰδὼν, νεφέλη φωτὴν ἠέπεσκίασεν αὐτούς· καὶ ἰδὼν, φωνὴ ἐκ τῆς νεφέλης, λέγουσα· Οὗτός ἐστι ὁ υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, ἐν ᾧ δόξα καὶ αὐτῶν ἀκούετε.
- 6 Καὶ ἀκούσαντες οἱ μαθηταί, ἔπεσον ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν, καὶ ἐφοβήθησαν σφόδρα.
- 7 Καὶ προσελθὼν ὁ Ἰησοῦς, ἥψατο αὐτῶν, καὶ εἶπεν· Ἐγέρθητε, καὶ μὴ φοβεῖσθε.
- 8 Ἐπάραντες δὲ τὰς ὀφθαλμούς, αὐτῶν, εὗρενα εἶδον, εἰ μὴ τὸ Ἰησοῦν μόνον.
- 9 Καὶ καταβαινόντων αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὄρων, ἐπέσειλατο αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Μηδενὶ εἶπητε τὸ ὄραμα, ἕως ἃς ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐκ νεκρῶν ἀναστῇ.
- 10 Καὶ ἐπρωτίστως αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτῶν, λέγοντες, Τί ἔστι οἱ γραμματεῖς λέγουσιν, ὅτι Ἡλίας δεῖ εἰσεῖν πρῶτον;
- 11 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἡλίας μὲν ἔρχεται πρῶτον, καὶ ἀπαγγεῖσθαι πάντα·

- 12 Λέγω ἡ ὑμῖν, ὅτι Ἡλίας ἤδη ἦλθε· καὶ οὐκ ἐπίγνωσαν αὐτόν· ἀλλ' ἐποίησαν ἐν αὐτῷ, ὅσα ἠτέλησαν. ἔτι καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου μέλλει πάσχειν ὑπὲρ αὐτῶν.
- 13 Τότε σιωπῶνται οἱ μαθηταί, ὅτι φοβῆται Ἰωάννης τοῦ Βαπτιστοῦ εἶπεν αὐτοῖς.
- 14 Καὶ ἐλθόντων αὐτῶν πρὸς τὸ ὄχλον, προσήλθεν αὐτῷ ἄνθρωπος, ἰσχυροπέδιων αὐτοῦ,
- 15 καὶ λέγων· Κύριε, ἐλέησόν με τὸ ὄν, ὅτι σελευιάζω, καὶ κακῶς πάσχει· πολλάκις γὰρ πίπῃ εἰς τὸ πῦρ, καὶ πολλάκις εἰς τὸ ὕδωρ.
- 16 Καὶ προσκύνει αὐτὸν ταῖς μαθηταῖς σὺ, καὶ οὐκ ἠδυνήθησεν αὐτὸν θεραπεύσαι.
- 17 Ἀποκριθεὶς ἡ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ὡς ἔχουσιν ἄπιστοι εἰς διαπραμμένην, ἕως πότε ἔσομαι μεθ' ὑμῶν; ἕως πότε ἀνέξομαι ὑμῶν; φέρετέ μοι αὐτὸν ἴδω.
- 18 Καὶ ἐπιτίμησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐξῆλθεν ἀπ' αὐτοῦ τὸ δαιμόνιον· καὶ ἔθεραπέσθη ὁ παῖς ἀπὸ τῆς ἄρας ἐκείνης.
- 19 Τότε προσελθόντες οἱ μαθηταὶ τοῦ Ἰησοῦ καὶ ἰδίαν, εἶπον· Διατί ἡμεῖς οὐκ ἠδυνήθημεν ἐκβαλεῖν αὐτό;
- 20 Ὁ ἡ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Διὰ τὸ ἄπιστον ὑμῶν. ἀλλὰ γὰρ λέγω ὑμῖν, ἐὰν ἔχητε πίστιν ὡς ἡ κόκκη σινάπης, ἐρεῖτε τῷ ὄρει· τῆτι· Μεταβήθι ἐς τὸ πύθρον ἐκεῖ, καὶ μεταβήσεται· καὶ ἔσται ἐδωκωμένη ὑμῖν.

21 Τῷ ἤ τὸ γλυκὺ ὅσον ἐμπορεύεσθαι, εἰ μὴ ἐν
 πρῶσυχῇ καὶ νηστεία.

22 Ἀνασπρεφομένων ἃ αὐτῶν ἐν τῇ Γαλι-
 λαία, εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Μέλλει ὁ υἱὸς τοῦ
 ἀνθρώπου ἀρᾶ διδάσκει εἰς χεῖρας ἀνθρώπων.

23 Καὶ ἀποκλεινῶσιν αὐτὸν, καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέ-
 ρᾳ ἐγερεθήσεται. Καὶ ἐλυπήθησαν σφόδρα.

24 Ἐλθόντων δὲ αὐτῶν εἰς Καφαρναῦμ,
 προσήλθον οἱ τὰ δίδραχμα λαμβάνοντες
 τῷ Πέτρῳ, καὶ εἶπον· Οἱ διδάσκαλοι ὑμῶν
 οὐ τελεῖ τὰ δίδραχμα;

25 Λέγει· Ναί. Καὶ ὅτε εἰσῆλθεν εἰς τὴν οἰκίαν,
 προσέφησεν αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς, λέγων, Τί σοι
 δοκεῖ, Σίμων; οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς ἀπὸ τίνων
 λαμβάνουσι τέλη, ἢ κλιῦσον; ἀπὸ τῶν υἱῶν αὐ-
 τῶν, ἢ ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων;

26 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων.
 Ἐφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἄρα γε ἐλεύθεροὶ ἐσίν
 οἱ υἱοί.

27 ἵνα ἃ μὴ σκανδαλίσωμεν αὐτούς, περὶ-
 θεῖς εἰς τὴν θάλασσαν, βάλε ἄγκυρον, καὶ τὴν
 ἀναβάντα προσῆτον ἰχθυὸν ἄρον· καὶ ἀνοίξας
 τὸ σῶμα αὐτοῦ, εὗρήσῃς στατήρα· ἐκείνον λα-
 βὼν, δὸς αὐτοῖς ἀντὶ ἐμοῦ καὶ σοῦ.

Κεφ. ιη'. 18.

ἘΝ ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ προσήλθον οἱ μαθηταὶ
 τῷ Ἰησοῦ, λέγοντες· Τίς ἄρα μείζων ἐστὶν
 ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν;

2 Καὶ

- 2 Καὶ προσκαλεσάμενος ὁ Ἰησοῦς παῖδιον, ἔσκησεν αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῶν,
- 3 Καὶ εἶπεν· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ στραφῆτε, καὶ γένησθε ὡς τὰ παῖδια, ἔμὴ εἰσελθῆτε εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ θεοῦ.
- 4 Ὅστις ἔν ταπεινώσει ἑαυτὸν ὡς τὸ παῖδιον τοῦ θεοῦ, ἕτος ἐστὶν ὁ μείζων ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ θεοῦ.
- 5 Καὶ ὅς ἐάν δεξῆται παῖδιον τοιοῦτον ἐν ἐπιτηδεύματι μου, ἐμὲ δεῖξει.
- 6 Ὅς δ' αὖ σκανδαλίση ἓνα τῶν μικρῶν τέτων, ἢ πισθύνωνται εἰς ἐμὲ, συμφέρει αὐτῷ, ἵνα κρεμασθῆ μύλον ὀνίχου ἐπὶ τὸν πτερυγίον αὐτοῦ, ἢ καὶ ποιηθῆ ἐν τῷ πελάγῳ τῆς θαλάσσης.
- 7 Οὐαὶ τῷ κόσμῳ διὰ τὸ σκανδαλῶν· ἀνάγκη γάρ ἐστιν ἐλθεῖν τὰ σκάνδαλα· πᾶσι δὲ αὐτῶν αἰσθάνεσθαι, διὰ τὸ σκάνδαλον ἔρχεσθαι.
- 8 Εἰ ἢ ἡ χεὶρ σου ἢ ὁ πῆξ σου σκανδαλίζει σε, ἐκκοψον αὐτὰ, καὶ βάλε διὰ σοῦ καλόν σοι εἶναι εἰσελθεῖν εἰς τὴν ζωὴν χωλὸν ἢ κυκλὸν ἢ δύο χεῖρας ἢ δύο πόδας ἔχοντα, βληθῆναι εἰς τὸ πῦρ τὸ αἰώνιον.
- 9 Καὶ εἰ ὁ ὀφθαλμός σου σκανδαλίζει σε, ἐξέλε αὐτὸν, καὶ βάλε διὰ σοῦ καλόν σοι εἶναι μονόφθαλμον εἰς τὴν ζωὴν εἰσελθεῖν, ἢ δύο ὀφθαλμούς ἔχοντα βληθῆναι εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρός.
- 10 Ὁρατε, μὴ καὶ φρονήσητε ἐνὸς τοῦ μικρῶν τέτων·

τέτων· λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι οἱ ἄγγελοι αὐτῶν
 ἐν ἔρανοῖς ἀλλὰ παντός βλέπουσιν τὸ πρόσω-
 πον τοῦ πατρὸς μου, ὅτι ἐν ἔρανοῖς.

11 Ἦλθε γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου σώσαι τὸ ἀπο-
 λωλός.

12 Τί ὑμῖν δοκεῖ, ἐὰν γένηται ἅνθρωπος
 ἕκαστον προσβάλλει, καὶ πλανηθῆ ἓν ἐξ αὐτῶν·
 ἔχει ἀφείας τὰ ἐννενηκονταεννέα, ἐπὶ τὰ ὄρη
 πορεύσθεις, ζητεῖ τὸ πλανώμενον;

13 Καὶ ἐὰν γένη ὄρειν αὐτὸ, ἀμὲν λέγω
 ὑμῖν, ὅτι χαίρει ἐπ' αὐτῷ μᾶλλον, ἢ ἐπὶ τοῖς
 ἐννενηκονταεννέα, τοῖς μὴ πλανημένοις.

14 Οὕτως σὸς ἐστὶ ψέλημα ἕμπεδοθεν τοῦ
 πατρὸς ὑμῶν, ὅτι ἐν ἔρανοῖς, ἵνα ἀπόλη ἓς
 τῶν μικρῶν τέτων.

15 Ἐὰν ᾖ ἀμαρτήση εἰς σέ ὁ ἀδελφός σου,
 ὑπάγε, καὶ ἔλεγξον αὐτὸν μετὰ σὺ σε αὐτῷ
 μόνον· ἐὰν σε ἀκούσῃ, κέρδιζας τὸ ἀδελ-
 φόν σου.

16 Ἐὰν ᾖ μὴ ἀκούσῃ, ὑπάγε λαβε μετὰ σὺ ἐπὶ
 ἓνα ἢ δύο· ἵνα ἐπὶ τῷ μαρτύριον δύο μαρτύρων
 ἢ τριῶν σταθῆ πάν ῥήμα.

17 Ἐὰν ᾖ ὑπὸ ἀκούσῃ αὐτῶν, εἶπε τῇ ἐκ-
 κλησίᾳ· ἐὰν ᾖ καὶ τῇ ἐκκλησίᾳ ὑπὸ ἀκούσῃ,
 ἔστω σοι ὡς πρὸς ὁ ἐθνικός καὶ ὁ τελώνης.

18 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅσα ἐὰν δήσητε ἐπὶ τῆ γῆς,
 ἔσται δεδεμμένα ἐν τῷ ἔρανο· καὶ ὅσα ἐὰν λύσητε
 ἐπὶ τῆ γῆς, ἔσται λελυμμένα ἐν τῷ ἔρανο.

19 Πάλιν

- 19 Πάλιν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐὰν δύο ὑμῶν συμφωνήσωσιν ἐπὶ τῆ γῆς περὶ παντὸς πράγματι, ἢ ἐὰν αἰτήσωσιν, κηθήσει αὐτοῖς ὡς εἰ πατήρ μου, ἢ ἐν οὐρανοῖς.
- 20 Οὐ γὰρ εἰσι δύο ἢ τρεῖς συνηγμένοι εἰς τὸ ἐμὸν ὄνομα, ἐκεῖ ἐμὶ ἐν μέσῳ αὐτῶν.
- 21 Τότε προσελθὼν αὐτῷ ὁ Πέτρος, εἶπε· Κύριε, ποσάκις ἀμαρτήσῃ εἰς ἐμὲ ὁ ἀδελφός μου, καὶ ἀφήσω αὐτῷ; ἕως ἐπὶ τῶν ἡμερῶν;
- 22 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Οὐ λέγω σοι, ἕως ἐπὶ τῶν ἡμερῶν, ἀλλ' ἕως ἐξ ἑξήκοντα ἑπτὰ ἡμερῶν.
- 23 Διὰ τῆς ἀμωγίας τῆς βασιλείας τῶν οὐρανῶν ἀνθρώπου βασιλεῖ, ὃς ἠθέλησε σωθῆναι λόγον μισθῶν δούλων αὐτοῦ.
- 24 Ἀρξάμενος ἢ αὐτῷ σιωπᾶν, προσκλήθη αὐτῷ εἰς ὀφθαλμοῦς μυρίων ταλάντων.
- 25 Μὴ ἐχθρῶσιν αὐτῷ ἀποδοῦναι, ἐκείλυσεν αὐτὸν ὁ κύριος αὐτῷ πρᾶξι, καὶ τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, ἐτα τέκνα, καὶ πάντα ὅσα εἶχε καὶ ἀποδοθῆναι.
- 26 Πεσὼν ἔν ὁ δούλος προσκυνῶν αὐτῷ, λέγων, Κύριε, μακροθύμησον ἐπ' ἐμοί, καὶ πάντα σοι ἀποδώσω.
- 27 Σωλαγκινῶσι δὲ ὁ κύριος ἔδρασε ἐκείνους, ἀπέλυσεν αὐτὸν, καὶ τὸ δάνητον ἀφῆκεν αὐτῷ.
- 28 Ἐξελθὼν ἢ ὁ δούλος ἐκείνῳ, ὄρεν ἕνα τῶν σωδάλων αὐτοῦ, ὃς ἠφῆκεν αὐτῷ ἑκατὸν δηνάρια.

θωάρα· κὶ κρατήσας αὐτὸν ἐπιγε, λέγων,
 Ἀπὸ τοῦ μισθοῦ π' ὀφείλεις.

29 Πιστὴν ἔν' ὁ σκύδαλ' αὐτῷ εἰς τὰς πό-
 δας αὐτῷ, παρεκάλει αὐτὸν, λέγων, Μακρο-
 θύμησεν ἐπ' ἐμοί, κὶ πάντ' ἀποδώσω σοι.

30 Ὁ δ' ἄρα ἤθελεν· ἀλλ' ἀπελθὼν, ἔβαλεν
 αὐτὸν εἰς φυλακὴν, ἕως ἃς ἀπέδωκε τὸ ὀφεί-
 λόμενον.

31 Ἰδοῦτες δ' οἱ σκύδαλοι αὐτῷ τὰ γυρόμηντα,
 ἐλυπήθησαν σφόδρα· Ἐλθόντες διεσάφησαν
 πρὸ κυρίου αὐτῶν πάντ' αὐτὰ γυρόμηντα.

32 Τότε προσκαλεσάμενος αὐτὸν ὁ κύριος
 αὐτῷ, λέγει αὐτῷ· Δὲλε πονηρὸν, πᾶσαν τὴν
 ὀφείλην ἐκείνην ἀφήκε σοι, ἐπεὶ παρεκάλει-
 λεσάς με·

33 Οὐκ ἐδέχθη σε ἐλέησαι τὸ σκύδαλόν σου,
 ὡς κὶ ἐγὼ σε ἠλέησα·

34 Καὶ ὀργισθεὶς ὁ κύριος αὐτῷ παρέδωκεν
 αὐτὸν τοῖς βασιλευσίν, ἕως ἃς ἀποδῶκε πᾶν τὸ
 ὀφείλομενον αὐτῷ.

35 Οὕτω ἔοι πατήρ μετ' ἐπερθεῖν ποιῆσαι
 ὑμῖν, ἵνα μὴ ἀφήτε ἕκαστος τῷ ἀδελφῷ
 αὐτῷ ἀπὸ τῶν καρδιῶν ὑμῶν τὰ ὀφειλά-
 μενα αὐτῶν.

Κεφ. ιθ'. 19.

1 Καὶ ἐχθὲς, ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τὰς λόγους
 τὰς τούτους, μετέβη ἀπὸ Γαλιλαίας, κὶ ἦλθεν
 εἰς τὴν ὄρεα τῆς Ἰσδαίας, πέραν δὲ Ἰορδάνου.

2 Καὶ

- 2 Καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί· καὶ ἔπειρα πόσον αὐτὰς ἐκεῖ.
- 3 Καὶ ἀπεσῆλθεν αὐτῷ οἱ Φαρισσαῖοι, πηραζόντες αὐτὸν, καὶ λέγοντες αὐτῷ· Εἰ ἔξεστι ἀνθρώπου ἀπολύσει τὴν γυναῖκα αὐτοῦ καὶ πᾶσαν αἰτίαν;
- 4 Οὗ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐταῖς· Οὐκ ἀνέγνωτε, ὅτι ὁ ποιήσας ἀπ' ἀρχῆς, ἄρσεν καὶ θῆλυ ἐποίησεν αὐτάς;
- 5 Καὶ εἶπεν· Ἔτι καὶ ταῦτα κατέλειψεν ἄνθρωπος τὸ πατέρα καὶ τὴν μητέρα, καὶ προσκολληθήσεται τῇ γυναικὶ αὐτοῦ· καὶ ἓξον) οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν.
- 6 Ὡςτε σὰρξ ἐπ' ἐσὶ δύο, ἀλλὰ σὰρξ μία, ὃ ἐν ὁ Θεὸς συνέζωξεν, ἄνθρωπος μὴ χωρίζεται.
- 7 Λέγουσιν αὐτῷ· Τί οὖν Μωσῆς ἐπέταξε λαῖον δεῖναι βιβλίον ἀποστασίας, καὶ ἀπολύσει αὐτὴν;
- 8 Λέγει αὐτοῖς· Ὅτι Μωσῆς πρὸς τὸ σκληροκαρδίαν ὑμῶν ἐπέταξε ὑμῖν ἀπολύσει τὴν γυναῖκα ὑμῶν ἀπ' ἀρχῆς ἢ ἐγένετο ἕτω.
- 9 Λέγω ὑμῖν, ὅτι ὅς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, εἰ μὴ ἐπὶ πορνείᾳ, καὶ γαμήσῃ ἄλλῳ, μοιχᾶται· καὶ ὁ ἀπολελυμένος γαμήσας, μοιχᾶται.
- 10 Λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Εἰ ἕτως ἐστὶν ἡ αἰτία τῆς ἀνθρώπου μὲν τῆς γυναικὸς, ἢ συμφέρει γαμήσει.

- 11 Ο ἵ ἐῖπεν αὐτοῖς· Οὐ πάντες χωρεῖσι τὸ
λόγον τῆτον, ἀλλ' οἷς δέδοκται.
- 12 Εἰσι γὰρ δύνεχοι, οἵπνες ἐκ κηλίας μητρὸς
ἐγεννήθησαν ἕτω· καὶ εἰσιν δύνεχοι, οἵπνες δὲ-
νεχίθησαν ὑπὸ τῶ ἀνθρώπων· καὶ εἰσιν δύνε-
χοι, οἵπνες δύνεχσαν ἐαυτοῖς διὰ τὸ βασιλείαν
τοῦ ἔρανῶν. Οὐ δυνάμει χωρεῖν, χωρεῖται.
- 13 Τότε προσέλεχθη αὐτῶ παροῖα, ἵνα τοῖς
χεῖρας ἐπιθεῖ αὐτοῖς, καὶ προσεύξηται· οἵ ἵ
μαθηταὶ ἐπέλημσαν αὐτοῖς.
- 14 Ο ἵ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἄφετε τὰ παροῖα, καὶ
μὴ κωλύετε αὐτὰ ἐλθεῖν πρὸς με· τῶν γὰρ
ποιῶτων ἐσιν ἡ βασιλεία τοῦ ἔρανῶν.
- 15 Καὶ ἐπιθεῖς αὐτοῖς τοῖς χεῖρας, ἐπορεύθη
ἐκεῖθεν.
- 16 Καὶ ἰδὲ, εἰς προσελθῶν, εἶπεν αὐτῶ· Δι-
δάσκαλε ἀγαθε, τί ἀγαθὸν ποιῶσα, ἵνα ἔχω
ζωὴν αἰώνιον;
- 17 Ο ἵ εἶπεν αὐτῶ· Τί με λέγεις ἀγαθόν;
ἐδεῖς ἀγαθοῖς, εἰ μὴ εἷς, ὁ Θεός. εἰ ἵ θέλεις ἐ-
σελθεῖν εἰς τὴ ζωὴν, τήρησον τοῖς ἐντολαῖς.
- 18 Λέγει αὐτῶ· Ποίας; Ο ἵ Ἰησοῦς εἶπε· Τὸ·
Οὐ φονεύσεις· Οὐ μοιχεύσεις· Οὐ κλέψεις·
Οὐ ψευδομαρτυρήσεις·
- 19 Τίμα τὸν πατέρα σου, καὶ τὴν μητέρα· καὶ
ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτὸν.
- 20 Λέγει αὐτῶ ὁ νεανίσκος· Πάντα ταῦτα
ἐφυλαξάμην ἐκ νεότητός με· τί ἐπίστευῶ;

21 Ἐφῆ

- 21 Ε΄φη αὐτῷ ὁ Ἰησῦς· Εἰ θέλεις τέλει εἶ-
ναι, ὑπάγε, πώλησον σε τὰ ὑπάρχοντά σου, ἔδωκε
πρωχθῆς· καὶ ἕξες Ἰησῶρον ἐν ἔρατά· καὶ
δεῦρο, ἀκολούθη μοι.
- 22 Ἀκούσας ἡ ὁ νεανίσκος τὸ λόγον, ἀπῆλθε
λυπέμενος· ὡς γὰρ ἔχων κτήματα πολλά.
- 23 Ὁ δὲ Ἰησῦς εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ·
Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι δυσκόλως πυλῶσι
εἰσελεύσεσθε εἰς τὴ βασιλείαν τοῦ θεοῦ.
- 24 Πάλιν δὲ λέγω ὑμῖν, δυσκοτώτερον ἐστὶ κη-
μηλον διὰ τευπήματι ραφιδῶ διελθεῖν,
ἢ πυλῶσιον εἰς τὴ βασιλείαν τοῦ θεοῦ εἰσελθεῖν.
- 25 Ἀκούσας δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἐξεπλήσθησαν
σφόδρα, λέγοντες· Τίς ἄρα δύνασθε σωθῆναι;
- 26 Εμβλέψας δὲ ὁ Ἰησῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Παρὰ
ἀνθρώποις τὸ ἀδυνατῆν ἐστὶ, ἀλλὰ ἡ θεοῦ
πάντα δυνατὰ ἐστὶ.
- 27 Τότε ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος, εἶπεν αὐτῷ·
Ἰδὲ, ἡμεῖς ἀφήκαμεν πάντα, καὶ ἠκολούθη-
σαμέν σοι· τί ἄρα ἔσται ἡμῖν;
- 28 Ὁ δὲ Ἰησῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν,
ὅτι ὑμεῖς οἱ ἀκολούθησαί μοι, ἐν τῇ πυλι-
θυσίᾳ, ὅταν κηρίση ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ
θρόνον δόξης αὐτοῦ, κηρίσεσθε καὶ ὑμεῖς ἐπὶ
δώδεκα θρόνους, κηρίοντες ἐπὶ δώδεκα φυλάς
τοῦ Ἰσραὴλ.
- 29 Καὶ πᾶς ὃς ἀφῆκεν οἰκίας, ἢ ἀδελφούς,
ἢ ἀδελφάς, ἢ πατέρας, ἢ μητέρας, ἢ γυναῖκα,
ἢ τέκνα,

ἢ τέκνα, ἢ ἀγγέλους, ἐνεκεν τοῦ ὀνόματός μου, ἐπι-
 ποιῶντα πλάσιονα λήψε), καὶ ζωὴν αἰώνιον
 κληρονομήσῃ.

30 Πολλοὶ ὅ ἐστιν) ᾤψονται, ἔχαστοι καὶ
 ἔχαστοι, ᾤψονται.

Κεφ. κ'. 10.

1 Ομοία γάρ ἐστιν ἡ βασιλεία τοῦ οὐρανοῦ ἀν-
 θρώπων οἰκοδεσπότῃ, ὅς τις ἐξῆλθεν ἀμαρτω-
 μιῶσιν ἀξέργαίς εἰς τὸ ἀμπελῶνα αὐτοῦ.

2 Συμφωνήσας ὁ κύριος τῶν ἐργαζομένων ἐκδύνα-
 ρίς πρὸς ἡμέραν, ἀπέστειλεν αὐτοὺς εἰς τὸν
 ἀμπελῶνα αὐτοῦ.

3 Καὶ ἐξεληθὼν ᾤψεται τὸ τρίτον ὄρανον, εἶδεν
 ἄλλους ἐσώτας ἐν τῇ ἀγρῷ ἀργούς.

4 Καὶ κείνοις εἶπεν· Ὑπάγετε καὶ ὑμεῖς εἰς τὸ
 ἀμπελῶνα· Ἐὖ εἰάν ᾗ δίκαιον, δώσω ὑμῖν.

5 Οἱ ὅ ἀπήλθον. Πάλιν ἐξεληθὼν ᾤψεται
 καὶ ἐνάτον ὄρανον, ἐποίησεν ὡσώτως.

6 Περὶ ὅ τὸ ἐνδέκατον ὄρανον ἐξεληθὼν, εἶδεν
 ἄλλους ἐσώτας ἀργούς, καὶ λέγει αὐτοῖς· Τί ὡδὲ
 ἐσηκάτε ὅλην τὴν ἡμέραν ἀργοί;

7 Λέγουσιν αὐτῷ· Ὅτι εἶδες ἡμεῖς ἐπιθώ-
 σατο. Λέγει αὐτοῖς· Ὑπάγετε καὶ ὑμεῖς εἰς τὸ
 ἀμπελῶνα, Ἐὖ εἰάν ᾗ δίκαιον, λήψεσθε.

8 Οψίας ὁ γουρῆς λέγει ὁ κύριος τοῦ ἀμ-
 πελῶνος τῷ ἐπιτρόπῳ αὐτοῦ· Κάλεσον τοὺς
 ἐργάτας, καὶ ἀπόδος αὐτοῖς τὸ μισθόν, ἀρχά-
 μην ἀπὸ τοῦ ἑσπέριου, ἕως τοῦ ᾤψεται.

9 Καὶ

- 9 Καὶ ἔλθόντες οἱ πρῶτοι ἐνδεκάτῳ ὥρᾳ,
ἔλαβον ἀνά δυνάμιον.
- 10 Ἐλθόντες ἡ οἱ πρῶτοι, ἐνόμισαν ὅτι καλύτερα
λήψον· καὶ ἔλαβον ἑαυτοὶ ἀνά δυνάμιον.
- 11 Λαβόντες ἡ ἐργάζον καὶ ἔσοιθ' ὁδεσπότες,
12 Λέγοντες· Ὅτι ἔτοι οἱ ἔχαθι μίαν ὥραν
ἐποίησαν, καὶ ἴσθες ἡμῖν αὐτὰς ἐποίησας, τοῖς
βαστάσασι τὸ βάρος τῆς ἡμέρας, ἑ τὸ κούσωνα.
- 13 Οἱ ἡ ἀποκριθεὶς, εἶπεν ἐνὶ αὐτῶν· Ἐταῖρε,
ἐκ ἀδικῶ σὲ· ἐγὼ δὲ θηναεὶς συνεφώνησάς μοι·
14 Ἄρον τὸ σόν, ἐύπαγε. Ἰέλω ἡ τέτω τῷ
ἐχάτω δουῶμαι ὡς καὶ σοι.
- 15 Ἡ ἑσὲ ἐξέστ' μοι ποιήσω ὅ Ἰέλω ἐν τοῖς
ἐμοῖς· ἡ ὁ ὀφθαλμός σου πονηρός ἐστιν, ὅτι ἐγὼ
ἀγαθός εἰμι·
- 16 Οὕτως ἔσονται οἱ ἔχατοι, πρῶτοι· καὶ οἱ
πρῶτοι, ἔχατοι· πολλοὶ γάρ εἰσι κλητοὶ,
ὀλίγοι δὲ ἐκλεκτοί.
- 17 Καὶ ἀναβαίνων ὁ Ἰησοῦς εἰς Ἱερουσόλυμα,
παρέλαβε τὰς δώδεκα μαθητάς κατ' ἴδιον
ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
- 18 Ἰδὲ, ἀναβαίνομεν εἰς Ἱερουσόλυμα, καὶ ὁ υἱὸς
τοῦ ἀνθρώπου ὡραδοθήσεται τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ
γραμματεῦσι, καὶ κατακρίψιν αὐτὸν θανάτῳ·
- 19 Καὶ ὡραδώσιν αὐτὸν τοῖς ἔθνεσιν εἰς
τὸ ἐμπαῖξαι ἑ μασηῶσαι καὶ στυρεῶσαι· καὶ
τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται.
- 20 Τότε ἀποστέλλει αὐτῷ ἡ μήτηρ καὶ οἱ υἱοὶ
Ζεβεδαίου,

Ζεβεδαίς, καὶ τῶν υἱῶν αὐτῆς, παροικουῦσαι, καὶ αὐτῶν πατὴρ αὐτοῦ.

21 Ὁ ἰησοῦς εἶπεν αὐτῇ· Τί θέλεις; Λέγει αὐτῷ, Εἰπέ ἵνα καρδίωσιν ἔτοι οἱ δύο υἱοί μου, εἰς ἐκ δεξιῶν σου, καὶ εἰς ἐξ ὑψώνυμων, ἐν τῇ βασιλείᾳ σου.

22 Ἀπεκρίθεις ἰησοῦς, εἶπεν· Οὐκ οἶδα τί αἰτήσῃς. δυνάσθε πίνειν τὸ ποτήριον, ὃ ἐγὼ μέλλω πίνειν, καὶ τὸ βάπτισμα, ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθῆναι; Λέγουσιν αὐτῷ· δυνάμεθα.

23 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τὸ μὲν ποτήριον μου πίετε, καὶ τὸ βάπτισμα, ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθήσεσθε· τί ἡ καρδία σου ἐκ δεξιῶν μου καὶ ἐξ ὑψώνυμων μου, σοκ ἔστιν ἐμὸν ὄνομα, ἀλλ' οἷς ἠτοίμασται ὑπὸ τοῦ πατρὸς μου.

24 Καὶ ἀκρόσαστες οἱ δέκα, ἠγωνάκηθησαν ὡς εἰς δύο ἀδελφῶν.

25 Ὁ ἰησοῦς παροικαλεσάμενος αὐτούς, εἶπεν· Οἶδαίτε, ὅτι οἱ ἀρχαῖοι τῶν ἐθνῶν καὶ κυριεύουσιν αὐτῶν, καὶ οἱ μεγάλοι κατεξουσιάζουσιν αὐτῶν.

26 Οὐχ ἕτις ἔστι ἐν ὑμῖν· ἀλλ' ὅς ἐάν θέλῃ ἐν ὑμῖν μέγας γινέσθαι, ἔστω ὑμῶν διάκονος.

27 Καὶ ὅς ἐάν θέλῃ ἐν ὑμῖν εἶναι ὡς ὅτι, ἔστω ὑμῶν δούλος.

28 Ὡς ὡς ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου σοκ ἦλθε διάκονηθῆναι, ἀλλὰ διακονῆσαι, καὶ δοῦναι τὴν ψυχὴν αὐτοῦ λύτρον ἀντὶ πολλῶν.

D

29 Καὶ

- 29 Καὶ ἐκπορεύομένων αὐτῶν ἀπὸ Ἱερουσολύμων ἀπέβησαν αὐτῶν ὄχλος πολὺς.
- 30 Καὶ ἰδὼν δύο τυφλοὶ κατήμενοι ὡραῖα ἔχοντες ἄκασαυλές ὅτι Ἰησοῦς ὡραῖα ἔκραζον λέγοντες· Ἐλέησον ἡμᾶς Κύριε, υἱὸς Δαβὶδ.
- 31 Ὁ δὲ ὄχλος ἐπιέμησεν αὐτοῖς ἵνα σιωπήσωσιν. οἱ δὲ μείζον ἐκράζον, λέγοντες· Ἐλέησον ἡμᾶς Κύριε, υἱὸς Δαβὶδ.
- 32 Καὶ ἑὸς ὁ Ἰησοῦς ἐφώνησεν αὐτούς, καὶ εἶπε· Τί θέλετε ποιήσω ὑμῖν;
- 33 Λέγουσιν αὐτῷ· Κύριε, ἵνα ἀνοιχθῶσιν ἡμῶν οἱ ὀφθαλμοί.
- 34 Σπλαγχνισθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς ἤψατο τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν· ἐδύσεως ἀνέβλεψαν αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοί, καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ.

Κεφ. κα'. 21.

- 1 Καὶ ὅτε ἦλθον εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ ἦλθον εἰς Βηθφαγή πρὸς τὸ ὄρεμα τῶν ἐλαιῶν, τότε ὁ Ἰησοῦς ἀπέστειλε δύο μαθητάς, λέγων αὐτοῖς·
- 2 Πορεύθητε εἰς τὴν κώμην, τὴν ἀπέναντι ὑμῶν καὶ εὗρετε ὄνον δεδεμένον, καὶ πῶλον μετ' αὐτῆς· λύσαντες ἀγάγετέ με.
- 3 Καὶ εἰάν τις ὑμῖν εἴπη τι, ἐρεῖτε ὅτι ὁ Κύριος αὐτῶν χρεῖαν ἔχει· εὗρετε δὲ ἀποστείλει αὐτάς.
- 4 Τὸ δὲ ὅλον γένηται, ἵνα πληρωθῇ τὰ ῥηθὲν διὰ τοῦ προφήτου, λέγοντος·

5 Εἰπάτε

5 Εἶπατε τῇ θυγατρὶ Σιών· Ἰδὲ, ὁ βασιλεὺς
σε ἔρχεται σοι πρῶς, καὶ ἐπιβεβηκὼς ἐπὶ
ὄνον, καὶ πῶλον ἕδον ὑποζυγίᾳ.

6 Πορδούφενες ἢ οἱ μαθηταί, καὶ ποιήσατε
καθὼς προσέταξεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς,

7 Ἡγάθη τὸ ὄνον καὶ τὸ πῶλον, καὶ ἐπέθηκαν
ἐπάνω αὐτῶν τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ ἐπεκα-
θισαν ἐπάνω αὐτῶν.

8 Οἱ ἄλλοι δὲ ὄχλοι ἔσρωσαν ἐαυτῶν τὰ
ἱμάτια ἐν τῇ ὁδῷ· ἄλλοι ἢ ἐκοπῆν κλάδους
ἀπὸ τῶν δένδρων, καὶ ἐσπῶννον ἐν τῇ ὁδῷ.

9 Οἱ ἄλλοι οἱ ἀσάφητες ἔοικον ἀκροβυσ-
τοι, ἐκραζον, λέγοντες· Ὡσαυτὰ τὰ ἡμέτε-
ρα· οὐλομηδύθη ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι
Κυρίου· Ὡσαυτὰ ἐν τοῖς ὑψίστοις.

10 Καὶ ἐσελήθη αὐτῶν εἰς Ἱεροσόλυμα,
ἐσείσθη πᾶσα ἡ πόλις, λέγουσα· Τίς ἐστὶν
ὁ ἔτι;

11 Οἱ ἄλλοι ἔλεγον· Οὗτός ἐστιν Ἰησοῦς ὁ
αἰσθητής, ὁ ἀπὸ Ναζαρέθ τῆς Γαλιλαίας.

Καὶ εἰσήλθεν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ ἱερόν τοῦ Θεοῦ,
καὶ ἐξέβαλε πάντας τὰς πωλῆντας καὶ ἀγορά-

12 ζοντας ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ τὰς τραπέζας τῶν κολλυ-
βιστῶν κατέσρεψε, καὶ τὰς καθέδρας τῶν πω-
λῆντων τὰς ὠρεσεράς.

13 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Γέγραπῆναι· Οὐ οἶκός μου,
οἶκος αἰσθητῆς κληθήσεται· ὑμεῖς ἄρα αὐτὸν
ἐποιήσατε σπήλαιον ληστῶν.

14 Καὶ προσήλθεν αὐτοῖς τυφλοὶ καὶ χωλοὶ ἐν τῷ ἱερῷ· καὶ ἐθεράπευσεν αὐτούς.

15 Ἰδοὺτες ὃ οἱ ἀρχιερεῖς ἔοι γραμματεῖς πᾶσαι μαθήσια αὐτοῦ ποίησε, ἔτις πῦδας κροαζοῦσας ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ λέγους, Ὡσαύτως τῶν ἡγῶν Δαβίδ, ἠγανάκησαν.

16 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ἀκούετε τί ἔπει λέγουσιν; Ὁ δὲ Ἰησοῦς λέγει αὐτοῖς· Ναί, ἐδέξατο ἀνεγνώσει, ὅτι ἐκ στόματός τοῦ ἁγίου καὶ φιλοζώντων κατατρύσῃ αἶνον;

17 Καὶ καταλιπὼν αὐτούς, ἐξῆλθεν ἔξω τῆς πόλεως εἰς Βηθανίαν· καὶ ἠυλιόθη ἐκεῖ.

18 Πρωίας ὃ ἐπανόσων εἰς τὴν πόλιν, ἐπέειπασε.

19 Καὶ ἰδὼν συκῆν μίαν ἐπὶ τῆ ὁδοῦ, ἦλθεν ἐπὶ αὐτήν, καὶ ἐδὲν ὄρεν ἐν αὐτῇ εἰ μὴ φύλλα μόνον· καὶ λέγει αὐτῇ· Μηκέτι ἐκ σοῦ καρπὸς γίνῃ εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἐξηράνθη ὡς ἄσπερ ἡ συκῆ.

20 Καὶ ἰδοὺτες οἱ μαθηταὶ, ἐθαύμασαν, λέγοντες· Πῶς ὡς ἄσπερ ἡ συκῆ ἐξηράνθη ἡ συκῆ;

21 Ἀποκριθεὶς ὃ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἐὰν ἔχητε πίστιν, καὶ μὴ δίστασῃτε, ἐ μόνον τὸ τῆ συκῆς ποιήσετε, ἀλλὰ καὶ τῶ ὄρεϊ τῷ εἰπῆτε· Ἄρθη, καὶ βλήθη εἰς τὴ θάλασσαν, γίνῃτε.

22 Καὶ πάντα ὅσα αὐτὸ αἰτήσῃτε ἐν τῇ προσηυχῇ, πιστεύοντες, λήψετε.

23 Καὶ ἐλθόντι αὐτοῖς εἰς τὸ ἱερόν, προσήλθον αὐτοῖς

κὺ τῶν ἀδελφῶν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβυ-
 τεροὶ τοῦ λαοῦ, λέγουσιν· Ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ
 ταῦτα ποιεῖς; καὶ τίς σοι ἔδωκε τὴν ἐξουσίαν
 ταύτην;

24 Ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἐρω-
 τήσω ὑμῶς καὶ γὰρ λόγον ἑνός· ὃν ἐὰν εἴπητέ μοι,
 καὶ γὰρ ὑμῖν ἐρῶ ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ·

25 Τὸ βάπτισμα Ἰωάννου πόθεν ἦν; ἐξ ὕδα-
 τος, ἢ ἐξ ἀνθρώπων; Οἱ δὲ διελογίζοντο παρ' ἑαυτοῖς,
 λέγουσιν· Ἐὰν εἴπωμεν, Ἐξ ὕδατος·
 ἔρει ἡμῖν· Διατί ἂν σὺ ἐπιστάτῃς αὐτῶ;

26 Ἐὰν δὲ εἴπωμεν, Ἐξ ἀνθρώπων· φοβούμεθα
 τὸν ὄχλον· πάντες γὰρ ἔχουσι τὸν Ἰωάννην ὡς
 προφήτην.

27 Καὶ ἀποκριθεὶς τῶν Ἰησοῦς, εἶπεν· Οὐκ
 οἶδα μὲν· Ἐφῆ αὐτοῖς καὶ αὐτός· Οὐδὲ ἐγὼ
 λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ.

28 Τί δὲ ὑμῖν δοκεῖ; Ἄνθρωπος εἶχε τέκνα·
 δύο, ἔπεμψεν αὐτὰ πρῶτον, εἶπε· Τέκνον,
 ὑπαγε, σήμερον ἐργάζου ἐν τῶν ἀμπελωνί μου.

29 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐ θέλω· ὕστερον
 δὲ μετὰ μεληθεὶς, ἀπῆλθε.

30 Καὶ πεμψάντων τῶν δευτέρων, εἶπεν ἑστώ-
 τως· Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Ἐγὼ κύριος, καὶ
 σὺ ἀπῆλθε.

31 Τίς ἐκ τῶν δύο ἐποίησε τὸ θέλημα τοῦ πα-
 τρός; Λέγουσιν αὐτῶν· Οὗτος πρῶτος· Λέγει αὐ-
 τοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι οἱ τελευταῖοι

- καὶ αἱ πόρται προάγουσιν ὑμᾶς εἰς τὴ βασι-
λείαν τοῦ Θεοῦ.
- 32 Ἦλθε γὰρ πρὸς ὑμῶν Ἰωάννης ἐν ὄψει δι-
καιοσύνης, καὶ οὐκ ἐπίσδυσαν αὐτῷ· οἱ δὲ
πελῶναι ἐκ αἱ πόρται ἐπίσδυσαν αὐτῷ· ὑμεῖς
δὲ ἰδόντες ἔμισεμιλήθητε ὑστερον, ἔπιστεύσατε
αὐτῷ.
- 33 Ἄκουε τὸ ῥαββόλω ἀκούσει. Ἀνθρωπὸς
ἦν κὼ οἰκοδομησῶν, ὅς τις ἐφύτδυσεν ἀμπε-
λῶνα, καὶ φραγμὸν αὐτῷ ἐτίθηκε, καὶ
ἔρουξεν ἐν αὐτῷ λῶνον, καὶ ἀκοδόμησε πύρ-
ρην καὶ ἐξέδωκε αὐτὸν γεωργοῖς, ἐκ ἀπεδήμησεν.
- 34 Ὅτι δὲ ἤγγισεν ὁ καιρὸς τοῦ καρπῶν, ἀπέστρε-
ψεν τὰς δούλους αὐτῆ πρὸς τὰς γεωργὰς, λαβεῖν
τὰς καρπὰς αὐτοῦ.
- 35 Καὶ λαβόντες οἱ γεωργοὶ τὰς δούλους αὐτῆ, ὃν
μὴ εἶδον, ὃι δὲ ἀπέκλιναν, ὃν δὲ ἐλιθοβόλησαν.
- 36 Πάλιν ἀπέστρεψεν ἄλλας δούλους πλείονας
τοῦ πρώτων καὶ ἐποίησαν αὐτοῖς ὡσαύτως.
- 37 Ὑστερον δὲ ἀπέστρεψε πρὸς αὐτὰς τὸ υἱὸν αὐ-
τοῦ, λέγων· Ἐντραπήσον τὸν υἱὸν μου.
- 38 Οἱ δὲ γεωργοὶ ἰδόντες τὸ υἱόν, εἶπον ἐν ἑαυτοῖς·
Οὗτός ἐστιν ὁ κληρονόμος, δεῦτε, ἀποκλείνωμεν
αὐτὸν, ἐκ αἰσχρομῶν καὶ κληρονομίαν αὐτοῦ.
- 39 Καὶ λαβόντες αὐτὸν ἐξέβαλον ἔξω τοῦ ἀμ-
πελῶνος, καὶ ἀπέκλιναν.
- 40 Ὅταν ἔνελθῃ ὁ κύριος τοῦ ἀμπελῶνος,
τί ποιήσῃ τοῖς γεωργοῖς ἐκείνοις;

41 Λέγουσιν

- 4 Πάλιν ἀπίσταν ἄλλας δόλως, λέγου·
Εἶπαίς τοῖς κληροῦσι· Ἴδὲ, τὸ ἄριστόν με
ἠτοίμασα, οἱ παῦροί με καὶ τὰ σκευά τετυ-
μμένα, ἐ πάντας ἔτοιμα· δεῦτε εἰς τὰς γάμους.
- 5 Οἱ ἃ ἀμελήσωτες, ἀπῆλθον· ὁ μὲν εἰς τὸν
ἰδιὸν ἀγρόν, ὁ ἃ εἰς τὴν ἐμπορίαν αὐτοῦ.
- 6 Οἱ δὲ λοιποὶ, κρατήσαντες τὰς δόλως
αὐτῶ, ὑβρίσταν καὶ ἀπέκτενον.
- 7 Ἀκούσας δὲ ὁ βασιλεὺς ὠργίσθη· ἐπέμ-
ψας τὰ στρατεύματα αὐτῶ, ἀπόλωσε τὰς
φονεῖς ἐκείνας, καὶ τὴν πόλιν αὐτῶ ἐνέπερασεν.
- 8 Τότε λέγει τοῖς δόλοισι αὐτοῦ· Ὁ μὲν γάμους
ἔτοιμός ἐστιν, οἱ ἃ κληροῦσι ἐκ ἦσαν ἄζιστοι.
- 9 Πορεύσθε οὖν ἰπὶ τῶν διεξόδων τῶν ὁδῶν, ἐ-
ξέρχων ἀνύρητε, καλέσατε εἰς τὰς γάμους.
- 10 Καὶ ἐξερχόμενοι οἱ δόλοισι ἐκείνοισι εἰς τὰς
ὁδούς, στυγάζων πάντας ὕσων ὄφιοι, παινη-
ρῶς τε καὶ ἀγαθῶς· καὶ ἐπαλήθη ὁ γάμους
ἀνακλειόμενος.
- 11 Εἰσελθὼν δὲ ὁ βασιλεὺς θεάσασθαι τὰς
ἀνακλειόμενας, εἶδεν ἐκεῖ ἄνθρωπον ὅσον ἐνδύ-
σασθαι ἐνδύμασι γάμους.
- 12 Καὶ λέγει αὐτῶ· Ἐταῖρε, πῶς εἰσελθὼς ὠδὲ
μὴ ἔχων ἐνδύμασι γάμους; Ὁ δὲ ἐφίμασθη.
- 13 Τότε εἶπεν ὁ βασιλεὺς τοῖς δούλοισι· Δι-
σπῆτε αὐτῶ πόδας ἐ χειρῶν, ἀρπάξτε αὐτὸν, ἐ-
κβάλετε εἰς τὸ σπῆτ· τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ
ἔσται ὁ κλωθμὸς ἐ ὁ βρυμὸς τῶν ὀδόντων.
- 14 Πολλοὶ

ΚΑΤΑ ΜΑΤΘ. ΣΙ

- 14 Πολλοὶ γάρ εἰσι κληθεῖς ὀλίγοι ἃ ἐκλεκεῖ.
- 15 Τότε πορευθέντες οἱ Φαρισαῖοι, συμβέβλιον ἔλαβον ὅπως αὐτὸν παγιδύσωσιν ἐν λόγῳ.
- 16 Καὶ ἀποστέλλουσιν αὐτὰς τὰς μαθητὰς αὐτῶν μὲν τῷ Ἡρωδῆαυῶν, λέγοντες· Διδάσκαλε, οἶδαμεν ὅτι ἀληθὴς εἶ, ἐκ τῆς ὁδοῦ τῆς Θεῶ ἐν ἀληθείᾳ διδάσκεις, ἐξ ἐμεῶ σοι περὶ ἕδονος· ἃ γὰρ βλέπεις εἰς πρόσωπον ἀνθρώπων.
- 17 Εἶπε δὲ ἑνὶ ἡμῖν, τί σοι δοκεῖ; ἔξισι δὲναι κλύωσιν Καίσαρα, ἢ ἔ;
- 18 Γινῶσθε δὲ οἴησθε τὴν πονηρίαν αὐτῶν, εἶπε· Τί με πηράζετε ὑποκριταί;
- 19 Ἐπιδείξατέ μοι τὸ νόμισμα τῆς κλύωσιν· Οἱ δὲ προσήνεκον αὐτῷ δύνάριον.
- 20 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τίνος ἡ εἰκὼν αὐτῆς καὶ ἡ ἐπιγραφή;
- 21 Λέγουσιν αὐτῷ· Καίσαρος. Τότε λέγει αὐτοῖς· Ἀπόδοτε οὖν τὰ Καίσαρος τῷ Καίσαρι, καὶ τὰ τῆς Θεῶ, τῷ Θεῷ.
- 22 Καὶ ἀκέσαντες ἐθαύμασαν· καὶ ἀφίεντες αὐτὸν ἀπῆλθον.
- 23 Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ προσῆλθον αὐτῷ σαδδουκαῖοι, οἱ λέγοντες μὴ εἶναμ ἀνάστασις· καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν,
- 24 Λέγοντες· Διδάσκαλε, Μωσῆς εἶπεν· Ἐάν τις ἀπογάνῃ μὴ ἔχων τέκνα, ἐπιγαμβρεύσῃ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, ἐκταθήσῃ ἀπὲρ μα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.

D 5 25 Ἡσυχ

- 25 Ἦσαν ἡ παρ' ἡμῖν ἐπὶ ἀδελφοί· καὶ ὁ
 ἰσθῶτος, χαμήσαις ἐτελούτησε· Ἐμὴ ἔχων
 σπέρμα, ἀφῆκε τὸ γυναικὶ αὐτῷ τῷ ἀδελ-
 φῷ αὐτοῦ.
- 26 Ομοίως καὶ ὁ δεύτερος, ἔο τρίτος, ἕως
 τῶν ἐπὶ.
- 27 Ὑπερον ἡ πάντων ἀπέθανε καὶ ἡ γυνή.
- 28 Ἐν τῇ οὐρανῷ ἀναστάσει, τὸν ἑπὶ ἔσται
 γυνή; πάντες γὰρ ἔχον αὐτήν.
- 29 Ἀποκριθεὶς ἡ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς·
 Πλανᾶσθε, μὴ εἰδότες τὰς γραφάς, μηδὲ τὸ
 δυνάμει τοῦ Θεοῦ.
- 30 Ἐν γὰρ τῇ ἀναστάσει ἔτε χαμήσαις, ἔτε ἔκ-
 χαμίζον, ἀλλ' ὡς ἄγγελοι τοῦ Θεοῦ ἐν ἔρα-
 νῷ εἰσι.
- 31 Περὶ ἡ ἀναστάσεως τῶν νεκρῶν ἅπαντες ἀνέ-
 γνώτε τὸ ῥηθὲν ὑμῖν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, λέγουσιν·
- 32 Ἐγὼ εἰμι ὁ Θεὸς Ἀβραάμ, καὶ ὁ Θεὸς
 Ἰσαὰκ, καὶ ὁ Θεὸς Ἰακώβ; ἅπαντες εἰσι ὁ Θεός,
 Θεὸς νεκρῶν, ἀλλὰ ζώντων.
- 33 Καὶ ἀκέραιες οἱ ὄχλοι, ἐξεπλήσοιτο
 ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ.
- 34 Οἱ δὲ φαρισαῖοι, ἀκέραιες ὅτι ἐφίμωσε
 τὰς σαδδουκαίους, σιωπήθησαν ἐπὶ τὸ αὐτό·
- 35 Καὶ ἐπηρώτησεν εἷς ἐξ αὐτῶν νομικὸς,
 πρᾶξων αὐτὸν, καὶ λέγων·
- 36 Διδάσκαλε, ποία ἐντολὴ μεγάλη ἐν
 τῷ νόμῳ;

- 37 Ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ἀγαπήσῃς Κύριον τὸ Θεόν σου ἐν ὅλη τῇ καρδίᾳ σου, καὶ ἐν ὅλη τῇ ψυχῇ σου, καὶ ἐν ὅλη τῇ Δυναμίει σου.
- 38 Αὕτη ἐστὶν πρώτη καὶ μεγάλη ἐντολή.
- 39 Δεύτερη δὲ ὁμοία αὐτῇ· Ἀγαπήσῃς τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτὸν.
- 40 Ἐν ταύταις ταῖς δυσὶν ἐντολαῖς ὅλον τὸ νόμον καὶ οἱ γραφῆται κρέμονται.
- 41 Σιωπηρῶν δὲ τῶν Φαρισσαίων, ἐπηρώτησεν αὐτὸς ὁ Ἰησοῦς,
- 42 Λέγων· Τί ὑμῖν δοκεῖ περὶ τῶν Χερυθῶν, τίνος υἱὸς ἐστὶ; λέγουσιν αὐτῷ, τῆς Δαβίδ.
- 43 Λέγων αὐτοῖς· Πῶς ἐν Δαβίδ ἐν πνεύματι Κύριον αὐτὸν καλεῖ; λέγων·
- 44 Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου· Κάθου ἐπε δεξιῶν μου, ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου.
- 45 Εἰ ἐν Δαβίδ καλεῖ αὐτὸν Κύριον, πῶς υἱὸς αὐτοῦ ἐστὶ;
- 46 Καὶ εὐδὲς ἐδύνατο αὐτῷ ἀποκριθῆναι λόγον· ἐδὲ ἐτόλμησέν τις ἀπὸ ἐκείνης τῆς ἡμέρας ἐπερωτῆσαι αὐτὸν ὅτι ἐπε.

Κεφ. κγ'. 23.

- 1 Τότε ὁ Ἰησοῦς ἐλάλησεν τοῖς ὄχλοις καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ,
- 2 Λέγων· Ἐπὶ τῆς Μωσέως καθέδρας ἐκάθισαν οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι·
- 3 Πάντα ἃ ἐν ὅσῃ ἂν εἴπωσιν ὑμῖν τηρεῖν, τηρεῖτε

τηρεῖτε καὶ ποιεῖτε καὶ οὐκ ἐπὶ ἔργα αὐτῶν μὴ ποιεῖτε· λέγεται γὰρ, καὶ ἔποισα.

4 Δυσμύσει γὰρ φορὰ βαρὴα καὶ δυσβάστακτα, καὶ ἐπιθήσονται ἐπὶ τὰς ὤμους τῶν ἀνθρώπων· τῷ δὲ δακτύλῳ αὐτῶν ἐθέλουσι κινήσαι αὐτά.

5 Πάντα ἃ τὰ ἔργα αὐτῶν ποιεῖσι πρὸς τὸ θεοδιδῶναι τοῖς ἀνθρώποις. πλατυώσιν ἃ τὰ φυλακίηρα αὐτῶν, καὶ μεγαλυνώσιν τὰ κράσπεδα τῶν ἱμαθίων αὐτῶν.

6 Φιλέσειτε τὴν προσκλισίαν ἐν τοῖς δείπνοις, ἐν τοῖς προσκλισηδρίας ἐν ταῖς σωμαγωγαῖς,

7 Καὶ τὰς ἀσπασμούς ἐν ταῖς ἀγοραῖς, καὶ χαλεῖσθε ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, ράββι, ράββι.

8 Ὑμεῖς ἃ μὴ κληθῆτε ράββι· εἰς γὰρ ἐστὶν ὑμῶν ὁ καθηγητής, ὁ Χριστός· πάντες δὲ ὑμεῖς, ἀδελφοί ἐστε.

9 Καὶ πατέρα μὴ καλέσητε ὑμῶν ἐπὶ τῆ γῆς· εἰς γὰρ ἐστὶν ὁ πατὴρ ὑμῶν, ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς.

10 Μηδὲ κληθῆτε καθηγηταί· εἰς γὰρ ὑμῶν ἐστὶν ὁ καθηγητής, ὁ Χριστός.

11 Ὁ ἃ μείζων ὑμῶν, ἔσται ὑμῶν Διδάσκων.

12 Ὅστις ἃ ὑψώσῃ αὐτὸν, ταπεινώσῃ· καὶ ὅστις ταπεινώσῃ αὐτὸν, ὑψώσῃ.

13 Οὐαὶ ἃ ὑμῖν γραμματεῖς ἐφ' αἰσῶσι· οὐαὶ ἃ ὑμῖν καρδιᾶ, ὅτι κλείετε τὴν βασιλείαν τοῦ οὐρανοῦ ἐμπαροῦσιν τῶν ἀνθρώπων· ὑμεῖς γὰρ ἔκ εισέρχεσθε, ἐδὲ τὰς εισερχομένους ἀφίετε εἰσελθεῖν.

14 Οὐαὶ

- 14 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι κατεδάτετε τὴν οἰκίαν τοῦ χηρῶν, καὶ τῶν ορφανῶν μακρὰν περιουσίαν. Δὲν τῶν λήψετε ὡς οὐδὲν κέρμα.
- 15 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι ἀδικεῖτε τὸν θάλασσαν καὶ τὴν θῆραν, ποιῆσαί ἐνα περιήλυτον. Ἐὐὐταν γῆνη, ποιεῖτε αὐτὸν ἕον γέννησ διπλότερον ὑμῶν.
- 16 Οὐαὶ ὑμῖν ὁδηγοὶ τυφλοὶ, οἱ λεηλοῖτες. Ὅς αὐὐ ὁμῶση ἐν τῷ ναῶ, ἔδέν ἐσιν ὅς δὲ αὐὐ ὁμῶση ἐν τῷ χρυσῷ τῷ ναῶ, ὁφείλη.
- 17 Μωροὶ καὶ τυφλοὶ. Ἦς γῶ μείζων ἐσιν, ὁ χρυσὸς, ἢ ὁ ναὸς ὁ ἀγιάζων τὸ χρυσόν;
- 18 Καὶ Ὅς ἐὰν ὁμῶση ἐν τῷ θυσιαστηρίῳ, ἔδέν ἐσιν ὅς δὲ αὐὐ ὁμῶση ἐν τῷ δῶρῳ τῷ ἐπάνω αὐτοῦ, ὁφείλη.
- 19 Μωροὶ καὶ τυφλοὶ, πῶ γῶ μείζων; τὸ δῶρον, ἢ τὸ θυσιαστήριον τὸ ἀγιάζον τὸ δῶρον;
- 20 Ὅ ἐν ὁμῶσαις ἐν τῷ θυσιαστηρίῳ, ὁμνύει ἐν αὐτῷ καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἐπάνω αὐτοῦ.
- 21 Καὶ ὁ ὁμῶσαις ἐν τῷ ναῶ, ὁμνύει ἐν αὐτῷ καὶ ἐν τῷ καθικῆντι αὐτόν.
- 22 Καὶ ὁ ὁμῶσαις ἐν τῷ ἔρανῳ, ὁμνύει ἐν τῷ θρόνῳ τῷ Θεοῦ καὶ ἐν τῷ καθημένῳ ἐπάνω αὐτοῦ.
- 23 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι ἀποδεκαθετε τὸ ἕδῶσμον καὶ τὸ αἰηθον καὶ τὸ κύμινον, καὶ ἀφήκατε τὰ βαρύτερα τῷ νόμῳ, τὴν κέρσιν καὶ τὸν ἔλεον καὶ τὸ πῖσιν ταῦτα

- ταῦτα ἔδοξεν ποιῆσαι, καὶ κείνα μὴ ἀφίεναι.
- 24 Ὁδηγοὶ τυφλοὶ, οἱ διυλίζοντες τὸ κῶνωπα
 καὶ δὲ κάμηλον καὶ ἀπίνοντες.
- 25 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι
 ὑποκρίται, ὅτι καθαρὸν ἐστε τὸ ἔξωθεν τῆς πο-
 τηρίας καὶ τῆς παροψίδος, ἔσωθεν ὅμως ἐστὶν
 ἀρπαγῆς καὶ ἀκρασίας.
- 26 Φαρισαῖοι τυφλοὶ, καθάρισον ἑαυτοὺς τὸ
 ἔκτος τῆς ποτηρίας καὶ τῆς παροψίδος, ἵνα
 ἴδῃτε καὶ τὸ ἔκτος αὐτῶν καθαρὸν.
- 27 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι
 ὑποκρίται, ὅτι παρεργάζετε τὰ φοῖς κεκο-
 νιαμένοις, οἵτινες ἔξωθεν μὲν φαίνονται ἁγνοί,
 ἔσωθεν δὲ ἔσονται ὄσων νεκρῶν καὶ πύσης
 ἀκαθαρσίας.
- 28 Οὕτως ἐγὼ ὑμεῖς ἔξωθεν μὲν φαίνεσθε τοῖς
 ἀνθρώποις δικαιοὶ, ἔσωθεν ὅμως ἐστὶν ὑπο-
 κρίσις καὶ ἀνομία.
- 29 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑπο-
 κρίται, ὅτι οἰκοδομεῖτε τὰς τάφους καὶ τὰς
 σωφητῶν, καὶ κοσμεῖτε τὰ μνημεῖα καὶ τὰς δικαίας.
- 30 Καὶ λέγετε· Εἰ ἦρθε ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς
 πατέρων ἡμῶν, ὅπως αὐτῶν ἦσαν κληρονόμοι αὐτῶν
 ἐν ταῖς αἱμασίαις τῶν σωφητῶν.
- 31 Ὡστε μαρτυρεῖτε ἑαυτοῖς, ὅτι υἱοὶ ἐστε τῶν
 Φοιδυσάντων τῶν σωφητῶν.
- 32 Καὶ ὑμεῖς πληρώσατε τὸ μέτρον τῶν πα-
 τέρων ὑμῶν.

33 Ὁφείδει

33 Ὅφεις, χυνόμενα ἐχιδνῶν, πῶς φύγητε ἀπὸ τῆς κρείσσεως τῆς γέννης;

34 Διὰ τούτου, ἰδὲ, ἐγὼ ἀποστέλλω πρὸς ὑμᾶς πρεσβυτέρους, καὶ σοφούς, καὶ γραμματεῖς· καὶ ἐξ αὐτῶν ἀποκλινεῖτε καὶ σαυρώσετε, ἔξ αὐτῶν μασηθήσετε, ἐν ταῖς συναγωγαῖς ὑμῶν, καὶ διώξετε ἀπὸ πόλεως εἰς πόλιν·

35 Ὅπως ἔλθῃ ἐφ' ὑμᾶς πᾶν αἷμα δίκαιον, ἐκχυμένον ἐπὶ τῆς γῆς ἀπὸ τοῦ αἱματίου Ἀβελ τοῦ δικαίου ἕως τοῦ αἱματίου Ζαχαρίου τοῦ βασιλέως, ὃν ἐφονεύσατε μεταξύ τοῦ ναοῦ καὶ τοῦ θυσιαστηρίου.

36 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἢ ἐξ ἑταῦτα πάντα ἐπιτίω χυεῖν ταῦτα.

37 Ἱερουσαλήμ, Ἱερουσαλήμ, ἡ ἀποκλείουσα τὰς πρεσβυτέρας, καὶ λιθοβολῶσα τὰς ἀπεσταλμένους πρὸς αὐτήν, ποσάκις ἠθέλησα ἐπισυναγαγεῖν τὰ τέκνα σου, ὃν τρόπον ἐπισυνάγει ὁρνίς τὰ νοστία ἑαυτῆς ὑπὸ τὰς πτέρυγας, καὶ σὺ ἠθέλησας;

38 Ἰδὲ, ἀφίε) ὑμῖν ὁ οἶκος ὑμῶν ἔρημος.

39 Λέγω γὰρ ὑμῖν· Οὐ μὴ με ἴδῃς ἀπ' ἄρτι, ἕως ἂν εἴπῃς· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου.

Κεφ. κολ'. 24.

1 Καὶ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς ἐπορεύετο ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ καὶ πρὸς τὸν οἶκον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ ἐπιδίδου αὐτῶν τὰς οἰκοδομὰς τοῦ ἱεροῦ.

2 Οἶ

- 2 Ο Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ βλέπετε πάντα ταῦτα; ἀλλ' ἄγω λέγω ὑμῖν, ἕ μὴ ἀφιεθῆ ᾧδε λίθῳ ἐπὶ λίθον, ὃς ἕ μὴ καταλυθῆσιν·
- 3 Καθημέριον ἡ αὐτὰ ἐπὶ τῷ ὄρει τῷ ἑλαιῶν, προσήλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ καὶ ἰδοὺν, λέγουσιν· Εἰπέ ἡμῖν, πότε ταῦτα ἔσται, καὶ ἕ τὸ σημεῖον τῆς σῆς παρουσίας, καὶ τῆς σωματικῆς αἰῶν·
- 4 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Βλέπετε μή τις ὑμῶν πλανήσῃ.
- 5 Πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματι μου, λέγοντες· Εἰγὼ εἰμι ὁ Χριστός· καὶ πολλὰς πλανήσουσιν.
- 6 Μακρόθεν ἡ ἀκὴν πολέμας, καὶ ἀκράς πολέμων. ὁρᾶτε μὴ θροῖσθε· οἷον γὰρ πάντα θροῖσθε· ἀλλ' ἔπω ἐστὶ τὸ τέλος.
- 7 Ἐγερθήσονται γὰρ ἔθνη ἐπὶ ἔθνη, ἕ βασιλεία ἐπὶ βασιλείαν· καὶ ἔσονται λιμοὶ καὶ λοιμοὶ, καὶ σεισμοὶ, καὶ τόποι.
- 8 Πάντα οἷε ταῦτα ἄρχη ᾧδίων.
- 9 Τότε ᾧραδῶσιν ὑμῶς εἰς θλίψιν, καὶ ἀποκλειῶσιν ὑμῶς· καὶ ἔσονται μισέμενοι ὑπὸ πάντων ἐθνῶν ᾧ τὸ ὄνομα μου.
- 10 Καὶ τότε σκανδαλισθήσονται πολλοὶ· καὶ ἀλλήλους ᾧραδῶσιν, καὶ μισήσουσιν ἀλλήλους.
- 11 Καὶ πολλοὶ ψευδοπροφήται ἐγερθήσονται, καὶ πλανήσουσιν πολλὰς.

12 Καὶ

- 12 Καὶ Διὰ τὸ πληθυσθῆναι τὴν ἀνομίαν, ψυγήσεται ἡ ἀγάπη τῶν πολλῶν.
- 13 Ὅτι οἱ ὑπομένοντες εἰς τέλος, ἔσονται σωθήσονται.
- 14 Καὶ κηρυχθήσεται τὸ εὐαγγέλιον τῆς βασιλείας ἐν ὅλη τῇ οἰκουμένη, εἰς μαρτύριον πᾶσι τοῖς ἔθνεσι· καὶ τότε ἔξει τὸ τέλος.
- 15 Ὅταν ἐν ἰδῆτε τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως, τὸ ρηθὲν Διὰ Δανιὴλ τὸ πνεῦμα, ἐστὶς ἐν τόπῳ ἁγίῳ· (ὁ ἀναγινώσκων νοεῖτω.)
- 16 Τότε οἱ ἐν τῇ Ἰσδαίᾳ φουγέτωσαν ἐπὶ τὰ ὄρη·
- 17 Ὅτι ἐπὶ τῶν ὄρων, μὴ καταβαινέτω ἄρα ἢ ἐκ τῆς οἰκίας αὐτοῦ.
- 18 Καὶ ὁ ἐν τῷ ἀγρῷ, μὴ ἐπιστρέψατω ὀπίσω ἄρα καὶ ἰμάτια αὐτοῦ.
- 19 Οὐαὶ ἢ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχέουσιν καὶ ταῖς πληκζέουσιν ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις.
- 20 Προσέχετε ἵνα μὴ γῆνη ἡ φυγὴ ὑμῶν χειμῶν, μηδὲ ἐν σαββάτῳ.
- 21 Ἔσται γὰρ τότε θλίψις μεγάλη, οἷα ἐγένοντο ἀπὸ ἀρχῆς κόσμου ἕως τῶν νῦν, ἐδὲ μὴ γῆνη.
- 22 Καὶ εἰ μὴ ἐκκοβώθησαν αἱ ἡμέραι ἐκείναι, οὐκ ἂν ἐσώθη πᾶσι σάρξ· διὰ τοῦτο εἰς τὰς ἐκλεκτὰς ἐκκοβώθησονται αἱ ἡμέραι ἐκείναι.
- 23 Τότε εἰάν τις ὑμῖν εἴπῃ· Ἴδὲ, ἴδὲ ὁ Χριστός, ἢ ἴδὲ· μὴ πισδύσητε.
- 24 Ἐρεθήσονται γὰρ ψευδοχριστοὶ ἔσονται ψευδοπροφῆταις

Φῆται, ἔδωκεσιν σημεῖα μεγάλα καὶ τέρατα·
ὥστε πλανήσαι, εἰ δυνάτοί, ἔτι τὰς ἐκλεκτὰς.

25 Ἴδὲ, ἀθεύρηκα ὑμῖν.

26 Ἐάν τις εἴπωσιν ὑμῖν ἰδὲ, ἐν τῇ ἐρήμῳ
ἐπί μὴ ἐξέλθῃτε. ἰδὲ, ἐν τοῖς ταμείοις· μὴ
πιστεύσῃτε.

27 Ὡς περὶ γὰρ ἡ ἀσραπή ἐξέρχεται διὰ ἀναθλῶν,
καὶ φαίνεται ἕως δυσμῶν, ἕτως ἔσται καὶ ἡ παρυσία
ἡμεῶν ἡ ἀνθρώπων.

28 Ὅπως γὰρ ἐάν τις τὸ πλῆθος, ἐκείσιν ἠσυχῆσαι
οἱ ἀστροί.

29 Εὐθὺς ὁ μὲν ἡλίος τῶν ἡμερῶν ἐκείνων
ὁ ἡλίος σκοιάσει, καὶ ἡ σελήνη ἔδωκε τὸ
φῶς αὐτῆς, καὶ οἱ ἀστέρες πεσοῦν διὰ τὸ ἔρα-
σαι, καὶ αἱ δυνάμεις τῶν ἐρασιῶν σαλευθήσονται.

30 Καὶ τότε φανήσονται τὰ σημεῖα τῆς ἡμέρας
ἀνθρώπων ἐν τῷ ἔρασι καὶ τότε κρύψονται πᾶ-
σαι αἱ φυλαὲ τῆς γῆς, καὶ ὄψονται τοὺς υἱοὺς ἀν-
θρώπων ἐρχόμενοι ἐπὶ τὰ νεφέλων ἡμεῶν ἐρασιῶν,
καὶ δυνάμει καὶ δόξης πολλῆς.

31 Καὶ τότε σείσει τὰς ἀστέρας αὐτῶν καὶ σα-
λευθήσονται τὰς μεγάλας καὶ ἐπισυναθήσονται τὰς
ἐκλεκτὰς αὐτῶν ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων, ἀπὸ
ἀκρῶν ἐρασιῶν ἕως ἀκρῶν αὐτῶν.

32 Ἀπὸ τῆς συκῆς μάθετε τὸ ἔρασι Βολλῶν.
ὅταν ἤδη ὁ κλάδος αὐτῆς γίνῃ ἀπειλός,
καὶ τὰ φύλλα ἐκφύη, γινώσκει ὅτι ἐγγύς τὸ
θῆρος.

Οὕτως

33 Οὕτω καὶ ὑμεῖς, ὅταν ἴδῃτε πάντα ταῦτα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς ἐστιν ἐπὶ θύραις.

34 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ἕ μὴ παρέλθῃ ἡ γένεσις αὕτη, ἕως ἂν πάντα ταῦτα γῆνῃ).

35 Ὁ ἔρανος καὶ ἡ γῆ παρελεύσονται· οἱ δὲ λόγοι μὲς ἕ μὴ παρέλθωσι.

36 Περὶ δὲ τῶν ἡμέρας ἐκείνης καὶ τῶν ἔρανος οἶδεν, ἕδὲ οἱ ἀγγελοὶ τῶν ἐρατῶν, εἰ μὴ ὁ πατήρ μὲς μόνος.

37 Ὡς περὶ τῆς ἡμέρας τῆς Νῶε, ἕτως ἔσται καὶ ἡ παρεσία τῆς υἱοῦ τῆς ἀνθρώπου.

38 Ὡς περὶ γὰρ ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς πρὸ τῆς κατακλυσμοῦ τρεῖς ἡμέρας ἕ πίνοντες, γαμῶντες καὶ ἐκχαμίζοντες, ἕχρι ἧς ἡμέρας εἰσηλθε Νῶε εἰς τὴν κιβωτόν·

39 καὶ ὅσα ἐγνώσαν, ἕως ἧλθεν ὁ κατακλυσμός, ἕ ἦσαν ἀπαντῶντες· ἕτως ἔσται καὶ ἡ παρεσία τῆς υἱοῦ τῆς ἀνθρώπου.

40 Τότε δύο ἔσονται ἐν τῷ ἀγρῷ· ὁ εἰς πωλοῦ λαμβάνει, καὶ ὁ εἰς ἀφίει).

41 Δύο ἀλήθεσται ἐν τῷ μύλωνι· μία πωλοῦ λαμβάνει, καὶ μία ἀφίει).

42 Γρηγορεῖτε ἕν, ὅτι ὅσα οἶδατε ποία ἔρανος ὁ κύριος ὑμῶν ἔρχεται).

43 Ἐκείνο δὲ γινώσκετε, ὅτι εἰ ἦδὲ ὁ οἰκθροσπότης, ποία φυλακῆ ὁ κλέπτῃς ἔρχεται), ἐρηγόρησεν αὐτῷ. καὶ ὅσα αὐτῷ εἶαστε διορυγῶναι πρὸς οἰκίαν αὐτοῦ.

44 Διά τῆς ἑομεῖς γινάσθε ἑτοιμοὶ ὅτι ἡ ὥρα ἔδδοκεῖται, ὁ γὰρ ὁ ἀνθρώπου ἔρχεσθαι).

45 Τίς ἄρα ἐστὶν ὁ πιστὸς δούλος ὁ φρόνιμος, ὁ καλῆς ἡσθὶν ὁ κύριος αὐτῆς ἐπὶ τῆς ἡραπείας αὐτῆς, ὁ δίδουα αὐτοῖς τὴν τροφὴν ἐν ἡμέραις

46 Μακάριος ὁ δούλος ἐπείνῃ, ὁ ἐλθὼν ὁ κύριος αὐτῆς δὲ ῥησὶ παινήσει ἑτάως.

47 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐπὶ πάνσι τοῖς ὑπάρχουσι αὐτοῦ καλῆς ἡσθὶν αὐτῶν.

48 Ἐὰν δὲ εἴπῃ ὁ κακὸς δούλος ἐκείνῃ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ. Χροίζῃ ὁ κύριός μου ἐλθεῖν.

49 Καὶ ἄρξῃ τὴν τύπτην τῆς σιωπῆς, ἐοδίζῃ δὲ ἐκ πίνῃ μὲν τῆς μεθύοντων.

50 Ἡ δὲ ὁ κύριος ὁ δούλος ἐκείνῃ ἐν ἡμέραις ἡ ἑσπεροδοκῆ, καὶ ἐν ὥραις ἡ ἑσπεροδοκῆ.

51 Καὶ διχοθμήσει αὐτῶν, καὶ τὸ μέρῃ αὐτῆς μὲν τῆς ὑποκρίσεως ἡσθὶν ἐκείνῃ ἑσθὶν ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων.

Κεφ. κε'. 25.

1 Τότε ὁμοιωθήσεται ἡ βασιλεία τῶν ἑσπεροδοκῆ δέσποιναι παρθένοις, αἵτινες λαβῶσαι τὰς λαμπάδας αὐτῶν, ἐξῆλθον εἰς ἐπιπένησιν τῆς νυμφίης.

2 Πέντε δὲ ἦσαν ἐξ αὐτῶν φρόνιμοι, καὶ πέντε μωροί.

3 Αἵτινες μωροί, λαβῶσαι τὰς λαμπάδας ἑαυτῶν, ὅσα ἔλαβον μετ' ἑαυτῶν ἔλασαν.

4 Αἱ

- 4 Αἱ δὲ Φρονίμοι ἔλαβον ἔλαιον ἐν τοῖς ἀγγείοις αὐτῶν μᾶλλον ἢ λαμπάδων αὐτῶν.
- 5 Χρονίζουσα δὲ ἦν νυμφίος, ἐνόταξαν πᾶσαι, καὶ ἐκάθιστον.
- 6 Μέσης δὲ νυκτός κραυγὴ γένηεν· Ἰδὲ, ἡ νυμφίος ἔρχεται, ἐξέρχασθε εἰς ἀπάντησιν αὐτοῦ.
- 7 Τότε ἠγέρθησαν πᾶσαι αἱ παρθένοι ἐκείναι, καὶ ἐκώσμησαν τὰς λαμπάδας αὐτῶν.
- 8 Αἱ δὲ μαρτὴ τῆς Φρονίμοις εἶπον· Δότε ἡμῖν ἐκ τῶν ἐλαίων ὑμῶν· ὅτι αἱ λαμπάδες ἡμῶν σβέννυνται.
- 9 Ἀπεκρίθησαν δὲ αἱ Φρονίμοι, λέγουσαι· Μήποτε σὺκ ἀρκείσῃ ἡμῖν καὶ ὑμῖν· προσέειπεν δὲ ἡ μάκρον ἀπὸς τὰς πωλέντας, καὶ ἀποστάσει ἑαυταῖς.
- 10 Ἀπορχομένων δὲ αὐτῶν ἀποστάσει, ἦλθεν ὁ νυμφίος· καὶ αἱ ἐτοιμασθεῖσαι ἔσονται μετ' αὐτοῦ εἰς τὴν γάμον, καὶ ἐκλείσθη ἡ θύρα.
- 11 Ὑστερον δὲ ἔρχεται καὶ αἱ λοιπαὶ παρθένοι, λέγουσαι· Κύριε, κύριε, ἀνοίξον ἡμῖν.
- 12 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, σὺκ οἶδα ὑμᾶς.
- 13 Γρηγορεῖτε ἔν, ὅτι σὺκ οἶδατε ἢ ἡμέραν ἐδὲ πλὴν ὥραν ἐν ἧ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεται.
- 14 Ὡς αὖτε γὰρ ἄνθρωπος ἀποδημῶν ἐκάλεισε τὰς ἰδίους δούλους, καὶ παρέδωκεν αὐτοῖς τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ.

15 Καὶ

- 15 Καὶ ὁ μὲν ἔδωκε πέντε τάλαντα, ὁ δὲ δύο,
ὁ δὲ ἓν ἑκάστῳ καὶ πλεονάζουσαν δυνάμει καὶ
ἀποδήμησεν εὐθέως.
- 16 Πορεύθεις δὲ ὁ πρὸς πέντε τάλαντα λαβών,
ἐργάσατο ἐπὶ αὐτοῖς, ἔποίησεν ἄλλα πέντε
τάλαντα.
- 17 Ὡσαύτως καὶ ὁ πρὸς δύο, ἐκέρδησε ἐπὶ αὐτὸς
ἄλλα δύο.
- 18 Ὁ δὲ τὸ ἐν λαβών, ἀπελθὼν ἄρουξεν ἐν τῇ
γῆ, ἔσπερσε τὸ δόγμα ἐκείνου ἐκείνου αὐτῷ.
- 19 Μετὰ δὲ χρόνον πολὺν ἔρχεται ὁ κύριος τῶν
δούλων ἐκείνων, καὶ σιωπῶν μετὰ αὐτῶν λόγον.
- 20 Καὶ προσελθὼν ὁ πρὸς πέντε τάλαντα λα-
βών, προσήνεκεν ἄλλα πέντε τάλαντα, λέγων·
Κύριε, πέντε τάλαντά μοι παρέδωκας· ἴδε,
ἄλλα πέντε τάλαντα ἐκέρδησα ἐπὶ αὐτοῖς.
- 21 Ἐφῆ δὲ αὐτῷ ὁ κύριος αὐτοῦ· Εὖ, ὁ δὲ
ἀγαθὸς καὶ πιστός· ἐπὶ ὀλίγα ἢς πιστός, ἐπὶ πολ-
λῶν σε καὶ εὐεργετήσω· εἰσελθε εἰς τὴν χαρὰν τοῦ
κυρίου σου.
- 22 Προσελθὼν δὲ καὶ ὁ πρὸς δύο τάλαντα λαβών,
εἶπε· Κύριε, δύο τάλαντά μοι παρέδωκας·
ἴδε, ἄλλα δύο τάλαντα ἐκέρδησα ἐπὶ αὐτοῖς.
- 23 Ἐφῆ αὐτῷ ὁ κύριος αὐτοῦ· Εὖ, ὁ δὲ
ἀγαθὸς καὶ πιστός· ἐπὶ ὀλίγα ἢς πιστός, ἐπὶ πολ-
λῶν σε καὶ εὐεργετήσω· εἰσελθε εἰς τὴν χαρὰν τοῦ
κυρίου σου.
- 24 Προσελθὼν δὲ καὶ ὁ πρὸς τὸ ἐν τάλαντον εἰληφώς,
εἶπε·

εἶπε· Κύριε, ἔγνωσαν σε ὅτι σκληρὸς εἶ ἀνθρώ-
 πῳ, θερίζων ὅπως σὸν ἔσπασα, καὶ σιωπῶν
 ὅθεν ἔδισκορπισας·

25 Καὶ φοβηθεῖς, ἀπελθὼν ἔκρυψα τὸ τάλαντον σου ἐν τῇ γῆ· ἴδε, ἔχης τὸ σόν.

26 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ κύριος αὐτῷ, εἶπεν αὐτῷ· Πονηρὸν δὲ ἔλε καὶ ὀκνηρὸν, ἠδὲς ὅτι θερίζω ὅπως ἔκ ἐσπασα, ἔσιωπῶ ὅθεν ἔδισκορπισας.

27 Ἐδὲ οὖν σε βαλεῖν τὸ δρογυρίον μετὰ τοῖς τραπεζῖταις· καὶ ἐλθὼν ἐγὼ ἐκομισάμην αὐτὸ ἐμὸν σὺν τόκῳ.

28 Ἄραγε οὖν ἀπ' αὐτῶν τὸ τάλαντον, καὶ δότε ταῖς ἑσθῆσι ταῖς δεκατέσσαρας.

29 (Ταῖς γὰρ ἑσθῆσι παντὶ δοθήσε, ἔσθιος δοθήσε· ἀπὸ τῶν μὴ ἔχοντων, καὶ ὁ ἔχων, δοθήσε) ἀπ' αὐτῶν.)

30 Καὶ τὸ ἀχρεῖον δὲ ἄλλον ἐμβάλλει εἰς τὸ σκοτόν τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων.

31 Ὅταν ᾗ ἔλθῃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ δόξῃ αὐτῆς, καὶ πάντες οἱ ἄγγελοι ἄγγελοι μετ' αὐτῆς, τότε καθίσει ἐπὶ θρόνον δόξης αὐτοῦ.

32 Καὶ σιωπηθήσονται ἔμπροσθεν αὐτῆς πάντες τὰ ἔθνη· καὶ ἀφορεῖ αὐτὰς ἀπ' ἀλλήλων, ὥσπερ ὁ ποιμὴν ἀφορίζει τὰ πρόβατα ἀπὸ τῶν ἐρίφων.

33 Καὶ σήσει, τὰ μὲν πρόβατα ἐκ δεξιῶν αὐτῆς, τὰ δὲ ἐρίφια ἐξ ἀωνύμων.

34 Τότε ἔρεῖ ὁ βασιλεὺς τοῖς ἐν δεξιῶν αὐτοῦ· Δεῦτε οἱ δούλοί μου ἔρχεσθε μετὰ ἐμοῦ, ἵνα κληρονομήσῃτε τὴν πόλιν μου, ἣν ἔτοιμασα ὑμῖν βασιλείαν ἀπὸ καρποῦ βολῆς καὶ ἰσχυροῦ.

35 Ἐπίνασα γὰρ, καὶ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν· ἐδίψησα, καὶ ἐπότισατέ με· ξένον ἦμην, καὶ σωτηράζετε με·

36 Γυμνὸς, καὶ ᾤπισθάνετε με· ἠδένησα, καὶ ἐπεκέψατέ με· ἐν φυλακῇ ἦμην, καὶ ἤλθετε πρὸς με.

37 Τότε ἀποκριθήσονται αὐτῷ οἱ δούλοι, λέγοντες· Κύριε, πότε σε εἶδομεν πίνοντα, καὶ ἐδίψοντα; ἢ διψῶντα, καὶ ἐπότισαμέν;

38 Πότε δὲ σε εἶδομεν ξένον, καὶ σωτηράζομεν; ἢ γυμνόν, καὶ ᾤπισθάνομεν;

39 Πότε δὲ σε εἶδομεν ἠδένον, ἢ ἐν φυλακῇ, καὶ ἤλθομεν πρὸς σε;

40 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ βασιλεὺς, ἔρεῖ αὐτοῖς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅσον ἐπαύσατε ἐν ταύταις τῷ ἀδελφῷ μου τῷ ἐλαχίστῳ, ἐμοὶ ἐποιήσατε.

41 Τότε ἔρεῖ καὶ τοῖς ἐξ ἄωνύμων· Πορεύεσθε ἀπ' ἐμῶν οἱ κληρονομοὶ εἰς τὸ πῦρ τὸ αἰώνιον, τὸ ἔτοιμασα ὑμῖν τῷ δούλῳ καὶ τοῖς ἀσεβέσιν αὐτοῦ.

42 Ἐπίνασα γὰρ, καὶ ἐκ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν· ἐδίψησα, καὶ ἐπότισατέ με·

43 Ἐξένον ἦμην, καὶ ἐσωτηράζετε με· γυμνὸς, καὶ ᾤπισθάνετε με· ἠδένου καὶ ἐν φυλακῇ.

λακῆ, καὶ σοκ ἐπισκέψασθέ με.

4 Τότε ἀποκριθήσονται αὐτῷ καὶ αὐτοὶ, λέγοντες· Κύριε, πότε σε εἶδομεν πένθινα, ἢ διψῶντα, ἢ ξένον, ἢ γυμνόν, ἢ ἀδενῆ, ἢ ἐν φυλακῆ, καὶ ἔδνηκον ἡμῶν σοι;

5 Τότε ἀποκριθήσονται αὐτοῖς, λέγων· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἐφ' ὅσον σοκ ἐποιήσατε ἐν ταῖς τῶν ἐλαχίστων, ἔσδ' ἐμοὶ ἐποιήσατε.

6 Καὶ ἀπελεύσονται ἔτσι εἰς κόλασιν αἰώνιον· οἱ δὲ δίκαιοι εἰς ζωὴν αἰώνιον.

Κεφ. κς'. 26.

1 Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς πάντας τὰς λόγους τούτους, εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ·

2 Οἰδατε ὅτι μὴ δύο ἡμέρας τὸ πᾶν γίνεσθαι, καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ᾧ ἄρα δίδωται εἰς τὸ σωθῆναι τὴν γῆν.

3 Τότε σιγήθησαν οἱ δόχμερῆες καὶ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι ἔλαβον εἰς τὸ αὐτῶν ἔλεγε δὲ ἡ λαὸς ἡ ἀπὸ τῆς ἀπύλου καὶ ἀφ᾽ ἑαυτῶν.

4 Καὶ σιωεβελούστω ἵνα τὸ Ἰησοῦν κινήσῃ δόλω, καὶ ἀποκλείνωσιν.

5 Ἐλεγον δὲ· Μὴ ἐν τῇ ἑορτῇ, ἵνα μὴ θορυβῶσιν τὴν ἐκκλησίαν.

6 Τὸ ἦ Ἰησοῦς ἦλθεν ἐν Βηθανίᾳ ἐν οἰκίᾳ Σίμωνος τοῦ λεπροῦ,

7 Προσῆλθεν αὐτῷ γυνὴ ἀλάβαστρον μέγεθος ἔχουσα βαρυπέρας, καὶ καθίστηεν ἐπὶ τῷ κεφαλῷ αὐτοῦ ἀνακμήματα.

E

8 ἰδὲν-

- 8 Ἰδόντες ὃ οἱ μαθηταὶ αὐτῷ ἠγαπήκιστον,
λέγοντες· Εἰς τί ἡ ἀπόλφα αὐτῆς;
- 9 Ἠδυνάθε γὰρ τῶν τῶν μύρον πραδύων
πολλῶν, καὶ δαδύων πτωχῶν.
- 10 Γυνὸς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Τί κήπους
παρέχετε τῇ γυναικί; ἔργον γὰρ καλὸν εἰργά-
σατο εἰς ἐμέ.
- 11 Πάντες γὰρ τὰς πτωχὰς ἔχετε μεθ' ἑαυ-
τῶν· ἐγὼ δὲ οὐ πάντες ἔχω.
- 12 Βαλῶσα γὰρ αὐτῇ τὸ μύρον τῶν ἐπὶ τῆ
σώματός μου, ὡς ἔβουλα φιάσαι με ἐποίησεν.
- 13 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐὰν κηρυχθῇ τὸ
δυσάγγελλον τῶν ἐν ὅλῳ τῷ κόσμῳ, λαληθή-
σεται ἔτι ἐπιείκειον αὐτῆς, εἰς μνημόσυνον αὐτῆς.
- 14 Τότε προσέθετο εἰς τὸ δώδεκα, ὁ λεγόμενος
Ἰούδας Ἰσκαριώτης, ὡς τὰς δόχους αὐτῆς,
- 15 εἶπε· Τί θέλετέ μοι δοῦναι, καὶ γὰρ ὑμῖν
ὡς δώσω αὐτῶν; Οἱ δὲ ἐσηκῶν αὐτῷ
τεράκοντα δηνάρια.
- 16 Καὶ ἀπὸ τότε ἐζήτητὸν δολοφονεῖν αὐτὸν
ὡς δόξα.
- 17 Τῇ ὅτε ἠρώτη τὸν ἀζύμων προσήλθοι οἱ
μαθηταὶ τῷ Ἰησοῦ, λέγοντες αὐτῷ· Πῶς θέλεις
εἰτοιμάσωμεν σοι φαγεῖν τὸ πάσχα;
- 18 Οἱ δὲ εἶπεν· Ὑπάγετε εἰς τὴν πόλιν ὡς εἶπε
δύνα, καὶ εἰπάτε αὐτῷ· Οἱ διδύσκαλοι
λέγουσιν· Οἱ κληρὸς μου ἐχθρὸς ἐστίν, ὡς σε ποιῶ
τὸ πάσχα μετὰ πάντων μαθητῶν μου.

19 Καὶ

- 19 Καὶ ἐποίησαν οἱ μαθηταὶ ὡς συνέταξεν αὐτοῖς ὁ ἰησοῦς· καὶ ἠτοίμασαν τὸ πιάχα.
- 20 Οὐσίας δὲ γλυκοῦδος ἀνέκλυτο μετὰ τῶν δώδεκα.
- 21 Καὶ ἐδιόντων αὐτῶν, εἶπεν· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι εἷς ἐξ ὑμῶν ᾧ ᾠδοῦσά με.
- 22 Καὶ λυπέμενοι σφόδρα, ἤρξαντο λέγειν αὐτῷ ἐκτετακέντων· Μήτι ἐγὼ εἰμι, Κύριε;
- 23 Οὗ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐ βιάσασθε μετ' ἐμῶ ἐν τῷ τευβλίῳ τῆς χειρός, ἕτις με ᾠδοῦσά με.
- 24 Οὐ μὲν γὰρ ἔστι ἀνθρώπου ἰσχύς, καθὼς γέγραπται· ὡς αὐτῷ· καὶ δὲ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ, δι' ἃ ὁ γὸς ἔστι ἀνθρώπου ᾠδοῦσά με· καλὸν ἴδω αὐτῷ, εἰ ὅτι ἐγλυτήθη ὁ ἀνθρώπος ἐκεῖνος.
- 25 Ἀποκριθεὶς ἡ ἰσθὰς, ὁ ᾠδοῦσά με αὐτὸν, εἶπε· Μήτι ἐγὼ εἰμι, ῥαββί; λέγει αὐτῷ· Σὺ εἶπας.
- 26 Ἐδιόντων ἡ αὐτῶν, λαβὼν ὁ ἰησοῦς τὸ ἄρτον, καὶ εὐλογήσας, ἐκλάσας, καὶ ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς, καὶ εἶπε· Δάβετε, φάγετε· τὸ ἐστὶ τὸ σῶμαί με.
- 27 Καὶ λαβὼν τὸ πότηριον, ἔδωκεν ἡσάσας, ἔδωκεν αὐτοῖς, λέγων· Πίετε ἐξ αὐτῷ πάντες·
- 28 Τὸ γὰρ ἐστὶ τὸ αἷμά με, τὸ ἔστι κληῖς ἀφθάρτου, τὸ ὡς πολλῶν ἐκχυνομένων αἵματι ἀφίστην ἐμαρτῶν.

29 Λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔτι μὴ πίω ἀπ' ἄρτου ἐκ
 τούτου ἕως ἡμετέρας ἐκείνης, ὅταν αὐτὸ πίω μεθ' ὑμῶν κα-
 νὼν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ πατρὸς μου.

30 Καὶ ὑμνησάμενοι, ἐξῆλθον εἰς τὸ ὄρος πάν-
 τῶν ἑλαίων.

31 Τότε λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πάντες ὑμεῖς
 σκανδαλιθήσατε ἐν ἐμοὶ ἐν τῇ νυκτὶ ταύ-
 τη· γάρ· Παράξω τὸ ποιμνία, καὶ
 ἀποσκορπισθήσονται ὡς πρόβατα ἄποιμνος.

32 Μετὰ τὸ ἐγερθῆναί με, ἀποξέω ὑμᾶς
 εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

33 Ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος, εἶπεν αὐτῷ· Εἰ
 καὶ πάντες σκανδαλιθήσονται ἐν σοὶ, ἐγὼ οὐδέ-
 ποτε σκανδαλιθήσομαι.

34 Ἐφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀλλὰ λέγω σοι, ὅτι
 ὃν τιώτη τῇ νυκτὶ, πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι,
 τρεῖς ἀπαρνήσῃ με.

35 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Καὶ ἄν με σκώ-
 σοι ἀποθάνειν, ἔτι μὴ σε ἀπαρνήσομαι. Ο-
 μοίως καὶ πάντες οἱ μαθηταὶ εἶπον.

36 Τότε ἔρχεται μετ' αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς εἰς χωρίον λεγο-
 μένον Γεθσημανῆ· ἔδραν τρεῖς μαθηταίς. Καθί-
 σατε αὐτῷ, ἕως ἂν ἀπέλθω ἀποσπύξωμαι ἐκεῖ.

37 Καὶ ἀπολαβὼν τὸ Πέτρον καὶ τὰς δύο
 ἄλλας Ζεβεδαῖς, ἤρξατο λυπεῖσθαι ἑαυτὸν λέγων·

38 Τότε λέγει αὐτοῖς· Περίλυπός ἐστιν ἡ ψυχή μου
 ἕως θανάτου· μένει αὐτῷ ὁ δὲ ἔρηγορεῖτε μετ' ἐμοῦ.

39 Καὶ

39 Καὶ ἀπελθὼν μικρὸν, ἔπεσεν ἐπὶ ὡσώπων αὐτῶν, προσεύχόμενος, καὶ λέγων· Πάτερ μου, εἰ δυνάστην ἐστὶ, παρελθέτω ἀπ' ἐμοῦ τὸ ποτήριον τῆς. ὡλλὼ ἔχω ὡς ἐγὼ θέλω, ἀλλ' ὡς σύ.

40 Καὶ ἔρχεται πρὸς τὰς μαθητάς, καὶ δίδασκε αὐτὰς καθύδουνας, καὶ λέγει τῷ Πέτρῳ· Οὕτως ὅτι ἰχθύσσει μίαν ἄρα γρηγορήσαι μετ' ἐμοῦ;

41 Γρηγορεῖτε καὶ προσεύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσέλθῃ εἰς πειρασμόν. τὸ γὰρ πνεῦμα πειράζει, ἡ δὲ σὰρξ ἀσθενής.

42 Πάλιν ἐκ δούτερων ἀπελθὼν προσηύξατο, λέγων· Πάτερ μου, εἰ ἔδυνάστη τῆς το ποτήριον παρελθεῖν ἀπ' ἐμοῦ ἐάν μὴ αὐτὸ πίω, χρηστήτω τὸ θέλημά σου.

43 Καὶ ἐλθὼν δίδασκε αὐτὰς πάλιν καθύδουνας· ἦσαν γὰρ αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοὶ βεβαρημένοι.

44 Καὶ ἀφίει αὐτὰς ἀπελθὼν πάλιν, προσηύξατο ἐκ τρίτου, τὸν αὐτὸν λόγον εἰπὼν.

45 Τότε ἔρχεται πρὸς τὰς μαθητάς αὐτῶν, καὶ λέγει αὐτοῖς· Καθύδουσε τὸ λοιπὸν, καὶ ἀναπαύεσθε ἰδοὺ, ἤγγικεν ἡ ἄρα, καὶ ἡμεῖς τοῦ ἀνθρώπου ὡς δαδὸς εἰς χεῖρας ἁμαρτωλῶν.

46 Ἐγείρεσθε, ἀγωνίμ' ἰδοὺ, ἤγγικεν ὁ ὡς δαδός με.

- 47 Καὶ ἐπ' αὐτῶ λαλήσας, ἰδὼς, ἰδὼς εἰς
τὸ δάδεναι ἦλθε, καὶ μετ' αὐτῶ ὄχλῳ πολλὸς
μετ' μαχαίρων καὶ ξύλων, ἀπὸ τῶ δόχμαίων καὶ
πρῆσβυτέρων τῆ λαοῦ.
- 48 Ὁ δὲ ἄρχιερεὺς αὐτὸν, ἔδωκεν αὐτοῖς
σημεῖον, λέγων· Ὁν αὐτὸν φιλήσω, αὐτὸς ἐπι-
κρατήσει αὐτόν.
- 49 Καὶ οὕτως προσελθὼν τῷ Ἰησοῦ, εἶπε·
Χαῖρε ραββί. Καὶ κατεφίλησεν αὐτόν.
- 50 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ἐταῖρε, ἐφ' ᾧ
πάρει; Τότε προσελθόντες ἐπέβαλον ἐπὶ χεῖ-
ρας ἐπὶ τὸ Ἰησοῦν, καὶ ἐκράτησαν αὐτόν.
- 51 Καὶ ἰδὼς, εἰς τὸ μετ' Ἰησοῦ, ἐκλείνας τὴ χεῖρα,
ἀπίστωσεν τὴ μάχαίρα αὐτῶ· Ἐπαύσας τὸ
δοῦλον τῶ δόχμαίου, ἀφείλεν αὐτῶ τὸ ὄφθαλμον.
- 52 Τότε λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀπόσπευσόν σε
τὴ μάχαίρα εἰς τὸ τόπον αὐτῆς· πάντες γὰρ οἱ
λαβόντες μάχαίρα, ἐν μαχαίρᾳ ἀπολῶνται.
- 53 Ἡ δοκεῖς ὅτι ἐδύναμαι ἀρῆναι τὸν ἄρχιερα
λέγοντα τὸν πατέρα μου, καὶ τὸν ἄρχιερα ἑσέ μοι
πλεῖστος ἢ δάδεναι λιγαῖνας ἀγγέλων;
- 54 Πῶς ἐν πληρωθῶσιν αἱ γραφαί, ὅτι ἔτω
δεῖ ἰηουῶ;
- 55 Ἐν ἐκείτῃ τῇ ὥρᾳ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς τοῖς
ἄρχιερεσιν· Ὡς ἐπὶ λησῶν ἐξήλθετε μετ' μαχαί-
ρων καὶ ξύλων συλλαβεῖν με. καὶ ἡμέραν
παρὸς ὑμᾶς ἐκατεζόμενοι διδάσκων ἐν τῷ
ἱερῷ, καὶ σὺν ἐκράτησατέ με.

- 56 Τῷ ᾧ ὅλον γέγονεν, ἵνα πληρωθῶσιν αἱ γραφαὶ τοῦ προφητῶν. Τότε οἱ μαθηταὶ πάντες, ἀφέντες αὐτὸν, ἔφυγον.
- 57 Οἱ ᾧ, κρατήσαντες τὸ Ἰησοῦν, ἀπήγαγον πρὸς Καϊάφαι τὸν ἀρχιερέα, ὅπως οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι συνήχθησαν.
- 58 Οἱ δὲ Πέτρος ἠκολούθη αὐτῷ ἀπὸ μακρόθεν, ἕως τοῦ αὐλῆς τοῦ ἀρχιερέως. καὶ εἰσελθὼν ἔσω, ἐκάθητο μετὰ τῶν ὑπηρετῶν, ἰδεῖν τὸ τέλος.
- 59 Οἱ ᾧ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι καὶ τὸ συνέδριον ὅλον ἐζήτησαν ψευδομαρτυρίαν κατὰ τὸ Ἰησοῦ, ὅπως αὐτὸν θανατώσωσι.
- 60 Καὶ ἔχουσόν. καὶ πολλῶν ψευδομαρτύρων προσελθόντων, ἔχουσόν. ὕστερον ᾧ προσελθόντες δύο ψευδομαρτυρες,
- 61 Εἶπον· Οὗτος ἔφη· Δυνάμει καὶ ἰσχύϊ ἐποιήσας τὸν ναὸν τοῦ Θεοῦ, καὶ διὰ τριῶν ἡμερῶν οἰκοδομήσας αὐτόν.
- 62 Καὶ ἀναστὰς ὁ ἀρχιερεὺς, εἶπεν αὐτῷ· Οὐδὲν ἀποκρίνη; τί ἔτοίμα καὶ μαρτυροῦσιν;
- 63 Οἱ ᾧ Ἰησοῦς ἐσιώπα. Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἀρχιερεὺς, εἶπεν αὐτῷ· Ἐξορκίζω σε κατὰ τὸ Θεοῦ τοῦ ζῶντος, ἵνα ἡμῖν εἴπῃς, εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστός, ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ.
- 64 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Σὺ εἶπας· πολλὰ λέγω ὑμῖν, ἀπ' ἧς οὐ ψεῦδες εἶ ὑὸν τοῦ ἀνθρώπου καὶ θεοῦ, ἀλλὰ δεξιῶν καὶ δεξιῶν καὶ δεξιῶν, καὶ ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν νεφελῶν τοῦ ἐρχομένου.

- 65 Τότε ὁ ἀρχιερεὺς διέρρηξε τὰ ἱμάτια αὐ-
τοῦ, λέγων· Ὅτι βλασφημήσῃ· τί ἐπιχρῆσαν
ἔργων μαρτύρων; ἴδε, καὶ ἠκούσατε τὴν
βλασφημίαν αὐτοῦ.
- 66 Τί ὑμῖν δοκεῖ; Οἱ ἃ ἀποκριθέντες, εἶπον·
Ἐνόχου θανάτου ἐσὶ.
- 67 Τότε ἐπέπυσαν εἰς τὸ πῶς ὤπαι αὐτοῦ,
καὶ ἐκολάφισαν αὐτόν· οἱ δὲ ἐβρόχισαν,
68 Λέγοντες· Προφήτου ἢ ἡμῶν Χριστοῦ, τίς
ἐστιν ὁ πάσης σε.
- 69 Οἱ ἃ Πέτρος ἐξῆλθεν ἐκείθεν ἐν τῇ αὐλῇ·
καὶ προσήλθεν αὐτῷ μία παιδίσκη, λέγουσα·
Καὶ σὺ ἦσθα μὲν Ἰησοῦ ἡ Γαλιλαίου.
- 70 Οἱ ἃ ἠρνήσατο ἔμπροσθεν πάντων, λέγων·
Οὐκ οἶδα τί λέγεις.
- 71 Ἐξελθόντα ἃ αὐτόν εἰς τὴν πυλῶνα, εἶδεν
αὐτὸν ἄλλη· καὶ λέγει τοῖς ἐκεῖ· Καὶ εἶπεν
αὐτῷ μὲν Ἰησοῦ ἡ Ναζωραίου.
- 72 Καὶ πάλιν ἠρνήσατο μετ' ὄρκου· Ὅτι οὐκ
οἶδα τὸν ἄνθρωπον.
- 73 Μετὰ μικρὸν ἃ προσελθόντες οἱ ἑσῶτες,
εἶπον τῷ Πέτρῳ· Ἀληθῶς καὶ σὺ ἐξ αὐτῶν εἶ·
καὶ γὰρ ἡ λαλιά σου δῆλόν σε ποιεῖ.
- 74 Τότε ἤρξατο καταναθεματίζειν, καὶ ὀμνύειν·
Ὅτι, οὐκ οἶδα τὸν ἄνθρωπον. Καὶ οὕτως
ἀλέκτωρ ἐφώνησε.
- 75 Καὶ ἐμνήσθη ὁ Πέτρος τὸ ῥήματι ἡ
Ἰησοῦ, εἰρηκτό αὐτῷ, Ὅτι πρὶν ἀλέκτωρ
φωνῆσαι,

φωνήσαι, τρεῖς ἀπαρνήσῃ με. Καὶ ἐξελθὼν
ἔξω, ἐκλαύσε πικρῶς.

Κεφ. κζ'. 27.

- 1 Πρωίαις ἡ γουρμύης, συμβέλιον ἔλαβον
πάντες οἱ δόχμερῆς καὶ οἱ πρεσβύτεροι
ἔλαβον ἡ Ἰησοῦ, ὡς ἐθανατώσῃ αὐτόν.
- 2 Καὶ δῆσαντες αὐτόν, ἀπήγαγον, καὶ παρί-
δωκαν αὐτόν Ποντίῳ Πιλάτῳ τῷ ἡγεμόνι.
- 3 Τότε ἰδὼν Ἰούδας ὁ ᾠδαδιδὲς αὐτόν, ὅτι
κατεκρίθη, μετὰ μεληθεῖς, ἀπέσπευε πρὸς
τεράκοντα δρόμια τοῖς δόχμερῆσι καὶ τοῖς
πρεσβυτέροις,
- 4 Λέγων· Ἦμαρ ἐστίν, ᾠδαδιδὲς αἵμα ἀφῶν.
Οἱ ἡ εἶπον· Τί πρὸς ἡμας, σὺ ὄψῃ.
- 5 Καὶ ῥίψας τὰ δρόμια ἐν τῷ ναῷ, ἀνα-
χώρησε· καὶ ἀπελθὼν, ἀπήγγαλε.
- 6 Οἱ ἡ δόχμερῆς λαβόντες τὰ δρόμια,
εἶπον· Οὐκ ἔξεσι βαλεῖν αὐτὰ εἰς τὸ κορυβα-
τῶν· ἐπεὶ ἡμὴ αἵματός ἐστι.
- 7 Συμβέλιον δὲ λαβόντες, ἡγόρευον ἐξ
αὐτῶν τὸν ἀγρὸν τοῦ κερκαμείως, εἰς ταφῆν
τοῖς ξένοις.
- 8 Διὸ ἐκλήθη ὁ ἀγρὸς ἐκεῖνος, ἀγρὸς αἵ-
ματός, ἕως τῆς σήμερον.
- 9 (Τότε ἐπληρώθη τὸ ῥηθὲν διὰ Ἰερεμίου ἡ
σοφία, λέγοντι· Καὶ ἔλαβον τὰ τερά-
κοντα δρόμια, ἡ ἡμὴ ἡ τελεμηθῆς, ὅτι
ἐπιμήσαντο διὰ τῶν Ἰσραήλ.

Ε 5

10 Καὶ

- 10 Καὶ ἔδωκαν αὐτὰ εἰς τὸν ἀγρὸν τῆς κερραμείας, κατὰ συνήθειαν Κυρίου.)
- 11 Ὁ Ἰησοῦς ἔστη ἔμπροσθεν τῆς ἡγεμονίας· ἔειπρωτίσεν αὐτὸν ὁ ἡγεμὼν, λέγων· Σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; Ὁ Ἰησοῦς ἔφη αὐτῷ· Σὺ λέγεις.
- 12 Καὶ ἐν ταῖς κατηγορεῖσθαι αὐτὸν ὑπὸ πάντων ἀρχιερέων καὶ τῶν πρεσβυτέρων, ἔδδεν ἀπεκρίνασθαι.
- 13 Τότε λέγει αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Οὐκ ἀκέρως ποῦσα σε κατηγορησῶσι;
- 14 Καὶ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῷ πρὸς ἐδὲ ἐν ῥήματι· ὡςτε θαυμάζει τὸν ἡγεμῶνα λίαν.
- 15 Κατὰ τὴν ἑορτὴν εἰσὼθὲς ὁ ἡγεμὼν ἀπολύει εἷς τῶν ὄχλων δέσμιον, ὃν ἤθελον.
- 16 Εἶχον ἡ τότε δέσμιον ἐπίσημον λεγόμενον Βαραββᾶν.
- 17 Σωτηρῶν ἐν αὐτῶν, εἶπεν αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Τίνα θέλετε ἀπολύσω ὑμῖν; Βαραββᾶν, ἢ Ἰησοῦν τὸν λεγόμενον Χριστόν;
- 18 Ἡδὲ γὰρ ὅτι ἀφ' ὧν παρίδωκαν αὐτόν.
- 19 Κατηγόρει ἡ αὐτῷ ἐπὶ τῆς βήμας, ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν ἡ γυνὴ αὐτῆς, λέγουσα· Μηδὲν σοι καὶ τῶν δικαίων ἐκείνων· πολλὰ γὰρ ἔπαθον σήμερον κατ' ὅτι ἀρδὸν αὐτόν.
- 20 Οἱ ἡ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι ἐπέσαν τὰς ὄχλους, ἵνα αἰτήσων τὸν Βαραββᾶν, τὸν ἐλεῖ Ἰησοῦν ἀπολέσασθαι.

21 Ἀποκριθεὶς ὁ ἡγεμῶν, εἶπεν αὐτοῖς·
Τίνα θέλετε ἀπὸ τῶν δύο ἀπολύσω ὑμῖν; Οἱ
ὅτι εἶπον, Βαραββαῖν.

22 Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Τί εἶναι ποιήσω
Ἰησοῦν, τὸ λεγόμενον Χριστὸν; Λέγουσιν αὐτῷ
πάντες· Σταυρωθήτω.

23 Οὗτος ἡγεμῶν εἶπεν· Τί γὰρ κριμὴν ἐποίησεν; Οἱ
ὅτι ἀδικασίας ἐκραζον, λέγοντες· Σταυρωθήτω.

24 Ἰδὼν ὁ Πιλάτος, ὅτι οὐδὲν ὠφελεῖ, ἀλλὰ
μᾶλλον θόρυβος γίνετο, λαβὼν ὕδωρ, ἀπε-
νίψατο τὰς χεῖρας ἀπέναντι τοῦ ὄχλου, λέγων·
Ἄθως εἰμι ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ δικαίου τούτου·
ὑμεῖς ὀφείδετε.

25 Καὶ ἀποκριθεὶς πᾶς ὁ λαὸς, εἶπε· Τὸ
αἷμα αὐτοῦ ἐφ' ἡμᾶς, καὶ ἐπὶ τὰ τέκνα ἡμῶν.

26 Τότε ἀπέλυσεν αὐτοῖς τὸν Βαραββαῖν·
τὸν δὲ Ἰησοῦν φραγελλώσας παρέδωκεν ἵνα
σταυρωθῇ.

27 Τότε οἱ εραλιῶται τοῦ ἡγεμόνος, ὡς
λαβόντες τὸν Ἰησοῦν εἰς τὸ πραιτώριον, συνή-
γαγον ἐπ' αὐτὸν ὄλῳ τῶν σπείρων.

28 Καὶ ἐκδύσαντες αὐτὸν, ἐπέδησαν αὐτῷ
χλαμύδα κερκίνην.

29 Καὶ πλέξαντες στέφανον ἐξ ἀκανθῶν,
ἐπέδησαν ἐπὶ τὸ κεφάλαιον αὐτοῦ· ἐκράμην
ἐπὶ τὸ δεξιὸν αὐτοῦ, καὶ ἡνυπέδησαντες ἐμ-
ποσθεν αὐτῷ, ἐνέπηζον αὐτῷ, λέγοντες·
Χαῖρε ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων.

30 Καὶ

- 30 Καὶ ἐμπύσαντες εἰς αὐτὸν, ἔλαβον τὸν
καλάμην, καὶ ἐτυπύον εἰς τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ.
- 31 Καὶ ὅτε ἐτίπηξαν αὐτὸν, ἐξέδυσαν αὐ-
τὸν τὴν χλαμύδα, καὶ ἐτίδυσαν αὐτὸν τὰ
ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ ἀπύμαζον αὐτὸν εἰς τὸ
σαυραῖσι.
- 32 - Ἐξερχόμενοι δὲ, ὄρεον ἀγγραπὸν Κυρη-
ναῖοι, ὀνόματι Σίριωνα· τούτων ἠγάγεδυσαν
ἵνα ἄρῃ τὸν σαυρὸν αὐτοῦ.
- 33 Καὶ ἐλθόντες εἰς τόπον λεγόμενον Γολγοθᾶ,
ὅς ἐστι λεγόμενον κρανίον τόπος.
- 34 Ἐδώκαν αὐτῷ πίνειν ὄξος μὲν γαλῆς με-
μιγμένον, καὶ γούσσινον, ὅσα ἠήτελε πίνειν.
- 35 Σταυρώσαντες δὲ αὐτὸν, διμερίσαντες
τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, βάλλοντες κλῆρον, ἵνα πλη-
ρωθῆ τὸ ῥηθὲν ὑπὸ τοῦ προφήτου· Διμερί-
σαιτε τὰ ἱμάτια μου ἐαυτοῖς, καὶ ἐπὶ τὸ ἱμ-
τισμὸν μου ἔβαλον κλῆρον.
- 36 Καὶ καθήμενοι, ἐτήραν αὐτὸν ἐκεῖ.
- 37 Καὶ ἐπέφησαν ἐπ' αὐτὸν τὴν κεφαλῆς αὐτοῦ
τὴν αἰτίαν αὐτοῦ γεγραμμένην· ΟὗΤΟΣ
ΕΣΤΙΝ ΙΗΣΟΥΣ Ο ΒΑΣΙ-
ΛΕΥΣ ΤΩΝ ΙΟΥΔΑΙΩΝ.
- 38 Τότε σαυραῖταισιν αὐτῷ δύο λησταί·
εἷς ἐκ δεξιῶν, καὶ εἷς ἐξ ἐναντιῶν.
- 39 Οἱ δὲ πρῶτοι προσδόμενοι ἐβλασφήμησαν
αὐτὸν, κενεῖτες ἐπὶ κεφαλᾶς αὐτοῦ.
- 40 Καὶ λέγοντες· Οὐ κατελύει τὸν ναὸν καὶ
ἐν

ἐν τρισὶν ἡμέραις οἰκθρομένων, σώσον σεαυτὸν·
εἰς υἱὸς εἰς τὸ Θεοῦ, καὶ βίβηθι ἀπὸ τῆς γυμνασίας.

41 Ομοίως ἢ καὶ οἱ δούλοισι, ἐμπαύζοντες
μὲν τῶν γεμνησίων καὶ περισυτῶν,
ἔλεγον·

42 Ἄλλως ἔσωσεν, ἑαυτὸν ἐδύατο σώσει. εἰς
βασιλεὺς Ἰσραὴλ εἰσι, καὶ βίβηθι ἀπὸ
τῆς γυμνασίας, καὶ πισύσομεν αὐτῷ.

43 Πέποιθεν ἐπὶ τὸ Θεὸν ῥυσαίου αὐτῶν
εἰς ἑλθεῖν αὐτὸν. εἶπε γὰρ· Ὅτι Θεὸς εἰμι υἱός.

44 Τὸ δὲ αὐτὸ καὶ οἱ λησταί, οἱ συτυρωθέντες
αὐτῷ, ἀνείδιζον αὐτῷ.

45 Ἀπὸ ἧς ἑκτῆς ὥρας σκότος ἐγένετο ἐπὶ
πάντων τῶν γῆων, ἕως ὥρας ἑνάτης.

46 Περὶ ἧς ἑνάτης ὥρας ἀνεβόησεν ὁ Ἰη-
σοῦς φωνῇ μεγάλῃ, λέγων· Ἡλί, Ἡλί, λαμβά-
σα βαχτανί; τὸ δὲ ἔστι, Θεέ μου, Θεέ μου,
ἵνα τί με ἐγκατέλιπες;

47 Τινὲς ἢ τὸ ἑκτῆς ἑσώτων ἀκρόασις, ἔλεγον·
Ὅτι Ἡλίαν φωνεῖ ἔτι.

48 Καὶ ἰσχυρῶς δραμῶν εἰς ἕξ αὐτῶν, καὶ λα-
βῶν σπόγγον, πλήσας τε ὄξους, καὶ βουτῆρας
κελάμου, ἐπότιζεν αὐτὸν.

49 Οἱ ἄλλοι ἔλεγον· Ἄφες, ἴδωμεν εἰ ἔρ-
χεται Ἡλίας σώσων αὐτὸν.

50 Ὁ δὲ Ἰησοῦς, πάλιν κραξάας φωνῇ μεγάλῃ,
ἀφῆκε τὸ πνεῦμα.

51 Καὶ ἰδοὺ τὸ καὶ πῆλοισι τῶν μαθητῶν ἐγένετο
εἰς

εις οὐνο δ' ἀνωθεν ἕως καί τω. καὶ ἡ γῆ ἐσεί-
σθη καὶ αἱ πέτρας ἐσχίσθησαν.

52 Καὶ τὰ μνημεῖα ἀνεώχθησαν· καὶ πολλὰ
σώματα τῶν κειρομηρῶν ἁγίων ἠγέρθη.

53 Καὶ ἐξεληθόντες ἐκ τῶν μνημεῖων μὲν ἔ-
ξερσιν αὐτῶν, ἐσηλθον εἰς τὴν ἀγίαν πόλιν,
ὅτι ἐνεφανίσθησαν πολλοῖς.

54 Οἱ ἡγεμόνταρχοι δὲ οἱ μετ' αὐτῶν, τη-
ροῦντες τὸ Ἰησοῦν, ἰδόντες τὸν σεισμόν καὶ τὰ
ζηλοῦμα, ἐφοβήθησαν σφόδρα, λέγοντες.
Ἀληθῶς Θεὸς ὑπὸς ἡμῶν ἔστι.

55 Ἦσαν ἡ ἐκεῖ γυναικες πολλαί, δ' ἀπὸ μα-
κρόθεν θεωροῦσαι· αἵτινες ἠκολούθησαν τῷ
Ἰησοῦ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας, ἀκολουθεῖσαι αὐτῷ.

56 Ἐν αἷς ἡ Μαρία ἡ Μαδδαλένη, καὶ
Μαρία ἡ Ἰακώβου καὶ Ἰωσήφ μητὴρ, καὶ ἡ
μητὴρ τῶν ἁγίων Ζεβεδαίου.

57 Οψίας ἡ ζηλοῦμας, ἦλθεν ἀνθρωπῶ-
πλος ἀπὸ Ἀριμαθαίας, τῆνομα Ἰω-
σήφ, ὃς καὶ αὐτὸς ἐμαρτύρησε τῷ Ἰησοῦ.

58 Οὗτος παρεστὴν τῷ Πιλάτῳ, ἠτήσας
τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ. Τότε ὁ Πιλάτος ἐκέ-
λευσεν ἀποδοθῆναι τὸ σῶμα.

59 Καὶ λαβὼν τὸ σῶμα ὁ Ἰωσήφ, ἐπέλιξεν
αὐτὸ σινδῶνι καθαρῷ.

60 Καὶ ἔθηκεν αὐτῷ ἐν τῷ καινῷ αὐτῶν μνημεῖῳ,
ὃ ἐλαθῆμην ἐν τῇ πέτρᾳ. καὶ ἔστυλιξεν
λίθον μέγαν τῇ θύρᾳ τοῦ μνημεῖου, ἀπῆλθεν.

51 Ἦν ἡ ἐκεῖ Μαρία ἡ Μαδδαλῆνῆ, καὶ ἡ ἄλλη Μαρία, καὶ τὸν ἀπέναντι τῆς τῆς.

52 . Τῇ ἡ ἐπαύριον, ἡ τις ἐστὶ μὲν πρὸ τῆς σκεδῶν, σιωπήθησαν οἱ δὲ χερεῖς καὶ οἱ φαρουχοὶ πρὸς Πιλάτον,

53 Λέγουσιν· Κύριε, ἐμνήθημεν ὅτι ἐκεῖν ὁ πλάνη εἶπεν, ἐπὶ ζῶν· Μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἐγείρομαι.

54 Κέλυσσον οὐκ ἀσφαλισθῶσιν τὸ τάφον ἕως τῆς τρίτης ἡμέρας· μήποτε ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ νυκτὸς, κλέψωσιν αὐτὸν, καὶ εἴπωσι τῷ λαῷ· Ἡ γάρ τῃ ἀπὸ τῶν νεκρῶν, καὶ ἔσται ἡ ἐσχάτη πλάνη χείρων τῆς πρώτης.

55 Εἶφη ἡ αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Ἐχετε κωστωδία· ὑπάγετε, ἀσφαλίσατε ὡς οἴδατε.

56 Οἱ ἡ πορευθέντες ἡσφαλίσαντο τὸ τάφον, σφραγίσαντες τὸ λίθον, μὲν τῆς κωστωδίας.

Κεφ. κη'. 28.

1 **Ο** Ψὲ ἡ σαββάτων, τῇ ἐπιφωσκῆσιν εἰς μέλαινα σαββάτων, ἦλθε Μαρία ἡ Μαδδαλῆνῆ, καὶ ἡ ἄλλη Μαρία, θεωρήσαντες τὸν τάφον·

2 Καὶ ἰδὲ, σέσμη ἐξήλυτο μέγας· ἀγγελοῦ Κυρίου καθάβας ἐξ οὐρανοῦ, προσελθὼν ἀπεκύλισε τὸ λίθον ἀπὸ τῆς θύρας, καὶ ἐκάθητο ἐπάνω αὐτοῦ.

3 Ἦν δὲ ἡ ἰδέα αὐτῆς ὡς ἀστραπή, καὶ τὸ ἔνδυμα αὐτῆς λευκὸν ὡς ἡ χιών.

4 Ἀπὸ

- 4 Ἀπὸ ἧς φόβου αὐτῆ ἐσείσθησαν οἱ μαθηταί, καὶ ἐχέοντο ὡσεὶ νεκροί.
- 5 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἄγγελος, εἶπε τῆς γυναίκεϊ· Μὴ φοβείσθε ὑμεῖς· οἶδα γὰρ ὅτι Ἰησοῦν τὸν ἐστραυρωμένον ζητεῖτε.
- 6 Οὐκ ἔστιν ὧδε· ἠγάθη γὰρ, καθὼς εἶπε. δεῦτε, ἴδετε τὸ τόπον ὅπου ἔκειτο ὁ Κύριος.
- 7 Καὶ ταχὺ πορεύθευσαι, εἰπάτε τοῖς μαθηταῖς αὐτῆ, ὅτι ἠγάθη ἀπὸ τῶν νεκρῶν. καὶ ἰδὲ, πορεύθη ὑμεῖς εἰς τὴν Γαλιλαίαν· ἐκεῖ αὐτὸν ὄψεσθε. ἰδὲ, εἶπον ὑμῖν.
- 8 Καὶ ἐξεληλυθῆσαι ταχὺ ἀπὸ τῶν μαθητῶν φόβου καὶ χαρᾶς μεγάλης, ἔδραμον ὑπαγεῖλαι τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ.
- 9 Ὡς ἡ ἐπορεύουσα ἀπαγγεῖλαι τοῖς μαθηταῖς αὐτῆ, καὶ ἰδὲ, ὁ Ἰησοῦς ἀπῆλθεν εἰς αὐταῖς, λέγων· Χαίρετε. Αἱ δὲ προσελθῆσαι ἐκράτησαν αὐτοῦ τὰς πόδας, καὶ προσκυνήσαν αὐτῷ.
- 10 Τότε λέγει αὐταῖς ὁ Ἰησοῦς· Μὴ φοβείσθε· ὑπάγετε, ἀπαγγεῖλαι τοῖς ἀδελφοῖς μου ἵνα ἀπέλθωσιν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, καὶ ἐκεῖ με ὄψοντο.
- 11 Πορεύουσαν δὲ αὐτῶν, ἰδὲ, πῆρς τῆς κωπῆς ἐλθόντες εἰς τὴν πόλιν, ἀπήγγελλαν τῆς δούλεσσιν ἅπαντα πρὸς τὸν Κύριον.
- 12 Καὶ συναχθέντες μετὰ τῶν πρεσβυτέρων, συμβεβλήοντες λαβούτες, δόξα ἰκανὴ ἔδωκαν τοῖς φρασηώταις.

13 Λέγον-

- 13 Αἰθίοις· Εἶπατε, Ὅτι οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ
 οὐκ ἔτι ἐλθόντες ἐκλεψάν αὐτὸν ἡμῶν κρι-
μαθῆσαν.
- 14 Καὶ ἰὼν ἀπεθῆ τῶ ἐπὶ τῷ ἡγεμόνῳ,
 ἡμεῖς πείσομεν αὐτὸν, καὶ ὑμᾶς ἀμερίμους
 ποιήσομεν.
- 15 Οἱ δὲ λαβόντες τὰ δῶρα, ἐποίησαν ὡς
 ἐδιδάχθησαν. καὶ διεφημίθη ὁ λόγος αὐτοῦ
 ἐν Ἰερουσαλὴμ μέχρι τῆς σήμερον.
- 16 Οἱ δὲ ἐνδεχομαθηταὶ ἐπορεύθησαν εἰς
 τὴν Γαλιλαίαν, εἰς τὸ ἄρξαι ἐπιτάξασθαι
 αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς.
- 17 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν, προσκυνήσαν αὐτῷ·
 οἱ δὲ ἐδίδασκαν.
- 18 Καὶ προσελθὼν ὁ Ἰησοῦς, ἐλάλησεν αὐ-
 τοῖς, λέγων· Ἐδόθη μοι πᾶσα ἐξουσία ἐν
 οὐρανῷ καὶ ἐπὶ γῆς.
- 19 Πορεύθητε οὖν μαθητεύσατε πάντες τὰ
 ἔθνη, βαπτίζοντες αὐτοὺς εἰς τὸ ὄνομα τοῦ
 πατρὸς, καὶ τοῦ υἱοῦ, καὶ τοῦ ἁγίου πνεύματος.
- 20 Διδάσκοντες αὐτοὺς τηρεῖν πάντα ὅσα
 ἐνετείλαμιν ὑμῖν καὶ ἰδοὺ, ἐγὼ μετ' ὑμῶν
 εἰμι πάσας τὰς ἡμέρας, ἕως τῆς συνελείας
 τοῦ αἰῶνος. Ἀμήν.

ΤΟ ΚΑΤΑ ΜΑΡΚΟΝ
ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ.

Κιφ. α'. 1.

1 **Α**ΡΧΗ ΤΩ ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΥ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ,
ΥΙΟΥ ΤΟΥ ΘΕΟΥ.

2 Ως γέγραπται εν τῷ πνεύματι
και φηται· Ιδὲ, ἐγὼ ἀποστέλλω τὸν
ἄγγελόν μου πρὸς σὺν, ὅς κατα-
σκευάσῃ τὴν ὁδὸν ἐμῶν ποδῶν σου.

3 Φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἐτοιμά-
σατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, ὡς εἰπάτε ἐν
τῷ βιβλίῳ αὐτοῦ.

4 Ἐγένετο Ἰωάννης βαπτίζων ἐν τῇ ἐρήμῳ,
καὶ κηρύσσων βάπτισμα μετανοίας εἰς ἅφρατον
ἁμαρτιῶν.

5 Καὶ ἐξεπορεύετο πρὸς αὐτὸν πᾶσα ἡ
Ἰουδαία χώρα, καὶ οἱ Ἱεροσολυμίται· καὶ
ἐβαπτίζοντο πάντες ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ποταμῷ
ὑπὸ αὐτοῦ, ἐξομολογούμενοι τὰς ἁμαρ-
τίας αὐτῶν.

6 Ἦν δὲ Ἰωάννης ἐνδεδμημένος τρίχας κα-
μήλας, καὶ ζώνην δερματίνην περὶ τὸ ὄσφυον
αὐτοῦ· καὶ ἰσθίον ἀκείρας καὶ μέλι ἀγρίου.

7 Καὶ ἐκήρυσσε, λέγων· Ἔρχεσθε ἰσχυρότε-
ρος μου ὀπίσω μου, ὅτι ἐγὼ εἰμὶ ἰσχυρὸς, καὶ ὑμεῖς
λύσατε τὸν ἰμάντα τῶν υποδημάτων αὐτοῦ.

8 Ἐγὼ

8 Ἐγὼ μὲν ἐβάπτισα ὑμᾶς ἐν ὕδατι· αὐτὸς
δὲ βαπτίσει ὑμᾶς ἐν πνεύματι ἁγίῳ.

9 Καὶ ἐχθὲρ ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις,
ἦλθεν Ἰησοῦς ἀπὸ Ναζαρεθ τῆς Γαλιλαίας,
καὶ ἐβαπτίσθη ὑπὸ Ἰωάννου εἰς τὸ Ἰορδάνην.

10 Καὶ δὴ θέως ἀναβαίνων ἀπὸ τοῦ ὕδατος,
εἶδε χιζομήδεις τὸς ἔρρανος, καὶ τὸ πνεῦμα
ὡς εἰ πτερὰν, καθ' ἑαυτὸν ἐπ' αὐτόν.

11 Καὶ φωνὴ ἐχθὲρ ἐκ τῶν ἔρρανων· Σὺ εἶ ὁ
υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, ἐν ᾧ εὐδόκησα.

12 Καὶ δὴ τὸ πνεῦμα αὐτὸν ἐκβάλλει εἰς
τὴν ἔρημον.

13 Καὶ ὡς ἐκεῖ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἡμέρας τεσσα-
ράκοντα, πειραζόμενος ὑπὸ τοῦ Σατανᾶ. καὶ
ὡς μὲν τῶν πειρῶν καὶ οἱ ἄγγελοι διηκόνουν αὐτῷ.

14 Μετὰ δὲ τὸ πνεῦμα εὐδοκῆσαι τὸν Ἰωάννην,
ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν Γαλιλαίαν, κη-
ρύσσων τὸ εὐαγγέλιον τῆς βασιλείας τοῦ
Θεοῦ.

15 Καὶ λέγων· Ὅτι πεπλήρωθη ὁ καιρὸς, καὶ
ἤγγικεν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ· μετενοεῖτε, καὶ
πισθεύετε ἐν τῷ εὐαγγελίῳ.

16 Περιπατῶν δὲ πρὸς τὴν θάλασσαν τῆς Γα-
λιλαίας, εἶδε Σίμωνα καὶ Ἀνδρέαν τὸ ἀδελ-
φὸν αὐτῶν βάλλοντες ἀμφίβλητρον ἐν τῇ θα-
λάσσῃ· (ἦσαν γὰρ ἀλιεῖς.)

17 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Δεῦτε ὀπίσω
με, ἵνα ποιήσω ὑμᾶς ἁλιεῖς ἀνθρώπων.

18 Καὶ

- 18 Καὶ δὴ τὸς ἀφέντες τὰ δίκτυα αὐτῶν,
ἐκχέτησαν αὐτῶν.
- 19 Καὶ προσβὰς ἐκείθεν ὀλίγον, εἶδεν Ἰάκωβον
τὸν υἱὸν Ζεβεδαίου, καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν
αὐτοῦ, καὶ αὐτοὺς ἐν τῷ πλοίῳ καθαριζόντας
τὰ δίκτυα.
- 20 Καὶ δὴ τὸς ἐκάλεσεν αὐτούς· καὶ ἀφέντες
τὸ πλοῖον αὐτῶν Ζεβεδάιον ἐν τῷ πλοίῳ
μετ' ἑταίρων, ἀπῆλθον ὀπίσω αὐτοῦ.
- 21 Καὶ εἰσπορεύοντες εἰς Καπριναεὺς· καὶ
δὴ τὸς τοῖς σὺββασιν εἰσελθὼν εἰς συναγω-
γὴν, ἐδίδασκε.
- 22 Καὶ ἐξεπλήθυνον ἐπὶ τῇ διδασκῇ αὐτοῦ·
ὥστε διδάσκων αὐτοὺς ὡς ἐξουσίαν ἔχων, καὶ
ἔχων ὡς οἱ γραμματεῖς.
- 23 Καὶ ὡς ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτῶν ἀνθρώ-
πων ἐν πνύματι ἀνατάρτω, ἐκείθεν ἐξ-
ἔειπεν·
- 24 Λέγων· Ἐὰν, τί ἡμῖν καὶ σοὶ Ἰησοῦ Ναζα-
ρεθῆ; ἢ ἦλθες ἀπολέσαι ἡμᾶς; οἶδά σε τίς εἶ,
ὁ υἱὸς τοῦ υἱοῦ τοῦ Θεοῦ.
- 25 Καὶ ἐπετίμησεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγων·
Φιμώθητε, καὶ ἐξέλθε ἐξ αὐτοῦ.
- 26 Καὶ παρατάξαι αὐτῶν τὸ πνεῦμα τὸ ἀκαθάρ-
τον, ἐκράξαν φωνῇ μεγάλῃ, ἐξῆλθεν ἐξ αὐτοῦ.
- 27 Καὶ ἐταμβήθησαν πάντες, ὡςτε συζητεῖν
παρὰ αὐτούς, λέγοντες· Τί ἐστι τῆς ἡμετέρας διδασκῆς
ἢ ἡμετέρας αὐτῆς, ὅτι καὶ ἐξουσίαν ἔχει τοῖς πνεύμασι
καθαρίσασθαι ἐπιταροῦσθαι, καὶ ὑπακούουσιν αὐτῷ;
- 28 Ἐξῆλθε

- 28 Ἐξῆλθε ἡ ἀκοή αὐτοῦ εὐθὺς εἰς ὄλιγον
 ἀπέχωρον τῆς Γαλιλαίας.
- 29 Καὶ εὐθὺς ἐκ τῆς συναγωγῆς ἐξεληθόντες,
 ἦλθον εἰς τὴν οἰκίαν Σίμωνος καὶ Ἀνδρέου,
 καὶ Ἰακώβου καὶ Ἰωάννου.
- 30 Ἦν δὲ πενθερὰ Σίμωνος κατεκείτο πυρετός-
 κρατος· καὶ εὐθὺς λέγουσιν αὐτῷ περὶ αὐτῆς.
- 31 Καὶ προσελθὼν ἤρξατο αὐτὴν κρατῆρας
 τῆς χερὸς αὐτῆς· καὶ ἀφῆκεν αὐτὴν ὁ πυρετός
 εὐθὺς· καὶ διεκόνθη αὐτοῖς.
- 32 Ὀψίας δὲ γνομένης, ὅτε ἔδυν ὁ ἥλιος,
 ἔφερον πρὸς αὐτὸν πάντας τοὺς κακῶς ἔχοντας
 καὶ τοὺς δαιμονιζομένους.
- 33 Καὶ ἡ πόλις ὅλη ἐπιστοιημένη ἦν πρὸς
 τὴν θύραν.
- 34 Καὶ ἕτεραί πύσεις πολλὰς κακῶς ἔχοντας
 ποικίλαις νόσοις· καὶ δαιμόνια πολλὰ ἐξέ-
 βαλε, καὶ ὅσα ἤφιε λαλεῖν τὰ δαιμόνια,
 ὅτι ἠὲ ᾄδων αὐτόν.
- 35 Καὶ πρὸς ἑννοχονλίαν ἀναστὰς, ἐξῆλθε· ἔ-
 ἀπῆλθεν εἰς ἔρημον τόπον, καὶ κεῖ προσήχετο.
- 36 Καὶ κηλεύοντες αὐτὸν ὁ Σίμων καὶ οἱ
 μετ' αὐτοῦ.
- 37 Καὶ ὀρέοντες αὐτόν, λέγουσιν αὐτῷ· Ὅτι
 πάντες ζητοῦσίν σε.
- 38 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἄνωθεν εἰς τοὺς ἔχοντάς
 κωμῶστέ με, ἵνα καὶ κεῖ κηρύξω· εἰς τὸ
 γὰρ ἐξελέληκα.

39 Καὶ

- 39 Καὶ ἰὼ κηρύσων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν, εἰς ὄλιγον τὴν Γαλιλαίαν, ἐτὰ δαιμόνια ἐκβάλλων.
- 40 Καὶ ἔρχεται πρὸς αὐτὸν λεωσθὸς, ὡψοκαλῶν αὐτὸν καὶ θρονοπιλῶν αὐτὸν, καὶ λέγων αὐτῷ· Ὅτι, ἐὰν θέλῃς, δύνασά με καταρίσασαι.
- 41 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπλαχνισθεὶς, ἐκλείνας τὴν χεῖρα, ἤψατο αὐτὸν, καὶ λέγει αὐτῷ· Θέλω, καταρίσθη.
- 42 Καὶ ἐπιθῆκε αὐτῷ, ὁ δὲ ἄπῃλθεν ἀπὸ αὐτοῦ ἡ λέπτα, καὶ ἐκαταρίσθη.
- 43 Καὶ ἐμβρομησάμενος αὐτῷ, ὁ δὲ ἄπῃλθεν ἐξέβαλεν αὐτόν·
- 44 Καὶ λέγει αὐτῷ· Ὅρα μηδεὶ μηδὲν εἶπης· ἀλλ' ὑπάγε, σεαυτὸν δεῖξον τῷ ἱερεῖ, καὶ προσένεγκε πρὸς τὸν καταρτισμὸν (καὶ ἂν προσέταξεν Μωσῆς, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς).
- 45 Ὁ δὲ ἐξεληθὴν ἤρξατο κηρύσσειν πολλὰ, καὶ ἀφημιζέει τὸν λόγον, ὥστε μηκέτι αὐτὸν δύνασθαι φανερωῖν εἰς πόλιν εἰσελθεῖν· ἀλλ' ἔξω ἐν ἐρήμοις τόποις ἰὼν, καὶ ἔρχοντο πρὸς αὐτὸν πανταχόθεν.

Κεφ. β'. 2.

- 1 Καὶ πάλιν εἰσηλθὴν εἰς Καπρναῦμ δι' ἡμερῶν. καὶ ἠκούσθη ὅτι εἰς οἶκόν ἐστι.
- 2 Καὶ ὁ δὲ ἄπῃλθεν σιωπήσασαν πολλοί· ὥστε μηκέτι χωρεῖν μηδὲ πρὸς τὴν θύραν. καὶ ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον.

3 Καὶ

- 3 Καὶ ἔρχον) πρὸς αὐτὸν, ὡδραλυτικὸν φέροντες αἰρόμηνον ὑπὸ τεσσάρων.
- 4 Καὶ μεθ' αὐτῶν οἱ ὄχλοι, ἀπιστεύοντες αὐτῷ Διὰ τὸ ὄχλον, ἀπιστεύοντες τὴν σέσημον ὅτι ἐκείνη, καὶ ἐξορύσσουσιν χαλῶσι τὸ κράββατον, ἐφ' ᾧ ὁ ὡδραλυτικὸς κατέκειτο.
- 5 Ἰδὼν ἡ οἰησῶν τὴν πίστιν αὐτῶν, λέγει τῷ ὡδραλυτικῷ Τέκνον, ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι (8.
- 6 Ἦσαν δὲ πνευστὶ γραμματέων ἐκεῖ κηφήνη, καὶ διδραλογίζοντες ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν.
- 7 Τί ἔτι ἔτι λαλεῖ βλασφημίας; τίς δύναται ἀφεῖναι ἁμαρτίας, εἰ μὴ εἰς ὁ Θεός;
- 8 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἐπιγνὼν ὅτι πνύσθη αὐτῶν, ὅτι ἔτι διδραλογίζοντες ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;
- 9 Τί ἐστιν δύσκολότερον, εἰπεῖν τῷ ὡδραλυτικῷ, ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι; ἢ εἰπεῖν, ἔλασον, καὶ ἄρον (8 τὸν κράββατον, καὶ ὡδραλίσει;
- 10 Ἴνα δὲ εἰδῆτε ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἀφεῖναι ἐπὶ τῆς γῆς ἁμαρτίας. (λέγει τῷ ὡδραλυτικῷ)
- 11 Σοὶ λέγω, ἔλασον, ἔλασον τὸν κράββατον (8, καὶ ὑπάγε εἰς τὸν οἶκόν σου (8.
- 12 Καὶ ἠγάπησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἄρας τὸν κράββατον,

βαθον, ἐξῆλθεν ἐναντίον πάντων· ὡς ἐξί-
στασ πάντας, καὶ δοξάζει τὸ Θεόν, λέγοντας·
Ὅτι ἐδέσθη ἔτις εἶδομαι.

13 Καὶ ἐξῆλθε πάλιν ὡρῶν τὴ θάλασσαν
καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἤρχετο πρὸς αὐτὸν, καὶ
ἐδίδασκεν αὐτὸς.

14 Καὶ ὡρῶν εἶδε Λουίον τὸν Ἰσὶν Ἀλφαί-
ου καὶ ἡμέτεροι ἐπὶ τὸ τελώνιον· καὶ λέγει αὐτῷ
Ἀκολουθή μου. Καὶ ἀπασαὶς ἠκολούθησεν
αὐτῷ.

15 Καὶ ἐχρῆτο ἐν ταῖς κατακείσασιν αὐτὸν ἐν
τῇ οἰκίᾳ αὐτῆ, καὶ πολλοὶ τελῶνας καὶ ἁμαρ-
τωλοὶ συνανέκινθησαν πρὸς αὐτὸν καὶ τοῖς μαθηταῖς
αὐτῆ· ἦσαν γὰρ πολλοὶ, καὶ ἠκολούθησεν αὐτῷ.

16 Καὶ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ φαρισαῖοι ἰδόν-
τες αὐτὸν ἐδοκίμασαν μὴ εἶναι τὸν τελωνῶν ἢ ἁμαρ-
τωλῶν, ἐλεγχοῦν τοῖς μαθηταῖς αὐτῆ· Τί οὐ
μὴ εἶναι τὸν τελωνῶν καὶ ἁμαρτωλῶν ἐδοκίμασαν καὶ πίνεις;

17 Καὶ ἀπεκρίσας ὁ Ἰησοῦς, λέγει αὐταῖς
Οὐ χρῆσαν ἔχουσιν οἱ ἰσχυρόντες ἰατρῶν, ἀλλὰ
οἱ κακῶς ἔχοντες. Ἐκεῖ ἦλθον καλεῖσθαι δικαίους
ἀλλὰ ἁμαρτωλῶς εἰς μετάνοιαν.

18 Καὶ ἦσαν οἱ μαθηταὶ Ἰωάννης καὶ οἱ τῶν
φαρισαίων ἠσέβητες· ἐρχομένων δὲ λέγουσιν
αὐτῷ· Διατί οἱ μαθηταὶ Ἰωάννης καὶ οἱ τῶν
φαρισαίων ἠσέβησαν, οἱ δὲ σοὶ μαθηταὶ
ἢ ἠσέβησαν;

19 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Μὴ δοκιμά-
τε

υιοὶ τῶν νυμφῶν, ἐν ᾧ ὁ νυμφίος μετ' αὐτῶν
ἔστι, νηστεύει; ὅσον χρόνον μεθ' ἑαυτῶν ἔχουσι
τὸν νυμφίον, ἐδώκαν τὴν νηστεύειν.

10 Ἐλεύσονται ἡμέρας ὅταν ἀπαρτῆ ἀπὸ
αὐτῶν ὁ νυμφίος, καὶ τότε νηστεύουσιν ἐν
ἐκείναις ταῖς ἡμέραις.

11 Καὶ εἰδὲς ἐπιβλήμα ῥάκας ἀγνάφας
ἐπιῤῥάπισ ἐπὶ ἰμαθίῳ παλαιῷ· εἰ δὲ μὴ, αἶρε
τὸ πλήρωμα αὐτῶ τὸ καμνὸν τῶν παλαιῶ, καὶ
χεῖρον ἴσμε γίνε).

12 Καὶ εἰδὲς βιάλλει οἶνον νέον εἰς ἀσκὸς πα-
λαιῶς· εἰ δὲ μὴ, ῥήσσει ὁ οἶνος ὁ νέος τὰς
ἀσκὸς, καὶ ὁ οἶνος ἐκχεῖται, καὶ οἱ ἀσκοὶ
ἀπολῶνται· ἀλλὰ οἶνον νέον εἰς ἀσκὸς καμνὸς
βλητέον.

13 Καὶ ἐγγύθει ὡρῶν προσέειπεν αὐτὸν ἐν
τοῖς σάββασι Διὰ τῶν σπορίμων, καὶ ἤρ-
ξαντο οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἰδοὺ ποιεῖν τίλλοντες
τὰς στάχτας.

14 Καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἔλεγον αὐτῷ· Ἰδοὺ, τί
ποιῶσιν ἐν τοῖς σάββασι ὃ σὺ ἐξεστ;

15 Καὶ αὐτὸς ἔλεγον αὐτοῖς· Οὐδέ ποτε ἀνε-
γνώριε τί ἐποίησε Δαβὶδ, ὅτε χρεῖαν ἔχει,
καὶ ἐπέινασεν αὐτὸς καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ;

16 Πῶς εἰσηλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ ἐπὶ
Ἀβιάθου τῶν ἀρχιερέων, καὶ τὰς ἀρῆς τῶν προ-
φῆσεως ἔφαγγεν, ἕως ὅτου ἐξεστ φαγεῖν εἰ μὴ
τοῖς ἱερεῦσι, καὶ ἔδωκε καὶ τοῖς σὺν αὐτῷ ἔστι;

F 27 Καὶ

27 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς· Τὸ σάββατον Διὰ τὸ
ἄνθρωπον ἐγένετο, ἔχ' ὁ ἄνθρωπος Διὰ τὸ
σάββατον.

28 Ὡςτε κύριός ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου καὶ τοῦ
σάββατου.

Κεφ. γ'. 3.

1 Καὶ εἰσήλθε πάλιν εἰς τὴν συναγωγὴν καὶ
ἰδοὺ ἐκεῖ ἄνθρωπος ἔχων κνημῖνα ἐκ
τῆς χειρὸς·

2 Καὶ παρεστήσαν αὐτὸν εἰ τοῖς σάββασι
θεραπεύσει αὐτὸν, ἵνα κατηγορήσωσιν αὐτῷ.

3 Καὶ λέγει τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ἔχοντι κνημῖνα
ἔχοντι τὴν χεῖρα· Ἐξέρχου εἰς τὸ μέσον.

4 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἐξέρχου τοῖς σάββασι
ἀγαθοποιῆσαι, ἢ κακοποιῆσαι; Ψυχῶ σω-
σαι, ἢ ἀποκτεῖναι; Οἱ δὲ ἐσιώπων.

5 Καὶ ὤφρα βλεψάμενος αὐτὸς μετ' ὀργῆς,
συλλυπέμενος ἐπὶ τῇ πωρόσει τῆς καρδίας
αὐτῶν, λέγει τῷ ἀνθρώπῳ· Ἐκτενον τὴν χεῖρά
σου, καὶ ἐξέτενε· καὶ ἀποκατεστάθη ἡ χεὶρ
αὐτῷ ὡς ἡ ἄλλη.

6 Καὶ ἐξεληλύθει οἱ Φαρισαῖοι, ὡς καὶ με-
τῶν Ἡρωδιανῶν συμβέβηκεν ἐποίησαν κατ'
αὐτῷ, ὅπως αὐτὸν ἀποκτείνωσι.

7 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀνεχώρησε μετὰ τῶν μαθητῶν
αὐτῷ πρὸς τὴν θάλασσαν καὶ πολὺ πλῆ-
θος ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας ἠκολούθησαν αὐτῷ,
καὶ ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας,

8 Καὶ

8 Καὶ ἀπὸ Ἱεροσολύμων, καὶ ἀπὸ τῆς Ἰδουμαίας, καὶ πέραν τῆς Ἰορδάνης· ἔοι παρὰ Τύρον καὶ Σιδῶνα, πολλοὶ τε πολὺ, ἀκράτους ὅσα ἐπαίει, ἦλθον πρὸς αὐτόν.

9 Καὶ εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτῶν ἵνα πολλοῦ καιροῦ προσκαρτερῇ αὐτῷ, διὰ τὸ ὄχλον, ἵνα μὴ θλίβωσιν αὐτόν.

10 Πολλοὶ γὰρ ἐθεράπευσεν ὥστε ἐπιπίπτειν αὐτῷ, ἵνα αὐτῷ ἀψωνῆ, ὅσοι εἶχον μάστιγας.

11 Καὶ τὰ πνύματα τὰ ἀκαθάρτα, ὅταν αὐτὸν ἐθεώρῃ, προσέπιπεν αὐτῷ, καὶ ἐκραζέ, λέγοντα· Οὐ σὺ εἶ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ.

12 Καὶ πολλὰ ἐπέλεγε αὐτοῖς, ἵνα μὴ αὐτὸν φανερόν ποιήσωσι.

13 Καὶ ἀναβαίνῃ εἰς τὸ ὄρος, ἔπροσκάλει τὸν Ἰησοῦν αὐτὸς· καὶ ἀπῆλθον πρὸς αὐτόν.

14 Καὶ ἐποίησε δώδεκα, ἵνα ὡς μετὰ αὐτῶν, καὶ ἵνα ἀποσέλη αὐτοὺς κηρύσσειν,

15 καὶ ἔχον ἐξουσίαν θεράπευσεν τὰς νόσους καὶ τὰς βλάβας τὰ δαιμόνια.

16 Καὶ ἐπέθηκε τῷ Σίμωνι ὄνομα Πέτρον.

17 Καὶ Ἰάκωβον τὸν υἱὸν Ζεβεδαίου, καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν τοῦ Ἰακώβου (καὶ ἐπέθηκεν αὐτοῖς ὄνομα τὰ Βοανεργῆς, ὃ ἐστὶν υἱὸς βροντῆς)

18 Καὶ Ἀνδρέαν, καὶ Φίλιππον, ἔβαρθολομαῖον, καὶ Ματθαῖον, καὶ Θωμᾶν, ἔβαρθολομαῖον, καὶ Ἰάκωβον τὸν υἱὸν Ἀλφαίου, καὶ Θαδδαῖον, καὶ Σίμωνα τὸν Καναναῖτον.

19 Καὶ ἰδὼν Ἰσακαριώτιν, ὃς καὶ παρέδωκεν αὐτόν· καὶ ἔρχον) εἰς οἶκον.

20 Καὶ συνέρχε) πάλιν ὄχλον, ὥστε μὴ δύνασθαι αὐτοὺς μήτε ἄρτον φαγεῖν.

21 Καὶ ἀκούσαντες οἱ παρ' αὐτοῦ, ἐξῆλθεν κροτήσασθαι αὐτόν· ἔλεγον γὰρ, ὅτι ἐξέστη.

22 Καὶ οἱ γραμματεῖς οἱ ἀπὸ Ἱεροσολύμων καὶ σαβῆναι, ἔλεγον· Ὅτι Βεελζεβὺλ ἔχει, καὶ ὅτι ἐν τῷ ἄρχοντι τῷ δαιμονίων ἐμβαλεῖ τὰ δαιμόνια.

23 Καὶ προσκαλεσάμενος αὐτοὺς, ἐν ᾧ ἀβουλαῖς ἔλεγον αὐτοῖς· Πῶς δύνασθαι σαβῆναι ἐμβαλεῖν;

24 Καὶ ἴαν βασιλεία ἐφ' ἑαυτῷ μεροῦθῃ, ἢ δύνασθαι θῆναι ἢ βασιλεία ἐκείνη.

25 Καὶ ἴαν οἰκία ἐφ' ἑαυτῷ μεροῦθῃ, ἢ δύνασθαι θῆναι ἢ οἰκία ἐκείνη.

26 Καὶ εἰ ὁ σαβῆναι ἀνίστη, ἐφ' ἑαυτὸν καὶ μεμέρισται, ἢ δύνασται θῆναι, ἀλλὰ πέλας ἔχει.

27 Οὐ δύνασθαι εἰσεῖς τὰς οὐκίαν τοῦ ἰχυροῦ, εἰσελθὼν εἰς τὴν οἰκίαν αὐτῆς, ἀρπάσσει, ἴαν μὴ ᾤσθων τὸ ἰχυρὸν δῆσθαι· Ἐπότε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ ἀρπάσσει.

28 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι πάντα ἀφεθήσονται ἁμαρτήματα τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων, καὶ βλασφημίαι ὅσας αὐτὸν βλασφημήσονται.

29 Ὅς δὲ αὐτὸν βλασφημήσῃ εἰς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον,

ἀγιον, ὅτι ἔχει ἀφ᾽ ἑσῶν εἰς τὸν αἰῶνα, ἀλλ᾽ ἔτι
ἔτι ἐστὶν αἰωνία κτίσεως.

- 30 Ὅτι ἐλεγον· πνεῦμα ἀκάθαρτον ἔχει.
31 Ἐρχομαι ἰσχυρῶς οἱ ἀδελφοὶ καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ
καὶ ἔξω ἐστῶτες ἀπίστησαν πρὸς αὐτὸν, φαι-
νέντες αὐτόν.
32 Καὶ ἐκάθητο ὄχλος πρὸς αὐτόν· εἶπον δὲ
αὐτῷ· Ἰδὲ, ἡ μήτηρ σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου
ἔξω ζητοῦσί σε.
33 Καὶ ἀπεκρίθη αὐτοῖς, λέγων· Τίς ἐστὶν ἡ
μήτηρ μου ἢ οἱ ἀδελφοί μου;
34 Καὶ περιβλεψάμενος κύκλω τὸς πρὸς
αὐτὸν καθήμενους, λέγει· Ἴδε ἡ μήτηρ μου καὶ
οἱ ἀδελφοί μου.
35 Ὅς γὰρ αὐτὸ ποιήσῃ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, ἔτι
ἀδελφός μου καὶ ἀδελφὴ μου καὶ μήτηρ ἐστὶ.

Κεφ. δ'. 4.

- 1 **Κ**αὶ πάλιν ἤρξατο διδάσκον πρὸς τὴν
θάλασσαν· καὶ συνήχθη πρὸς αὐτόν
ὄχλος πολὺς, ὥστε αὐτὸν ἐμβάντα εἰς τὸ
πλοῖον, καθῆσθαι ἐν τῇ θαλάσῃ· καὶ πᾶς ὁ
ὄχλος πρὸς τὴν θάλασσαν ἐπὶ τῆς γῆς ἦν.
2 Καὶ ἐδίδασκεν αὐτοὺς ἐν τῷ πλοῖον· καὶ
πολλὰ, καὶ ἐλεγε αὐτοῖς ἐν τῇ διδασκίᾳ αὐτοῦ·
3 Ἀκούετε· Ἰδὲ, ἐξῆλθεν ὁ σπείρων τοῦ σπείρου.
4 Καὶ ἐγένετο ἐν ταῖς σπείραις, ὃ μὲν ἔπεσε
πρὸς τὸ ὄδον, ἐπὶ ἦλθε τὰ πεδιῖνα τοῦ ἔρανος, καὶ
κατέφαγεν αὐτό.

F 3 5 Ἄλλο

- 5 Ἄλλο δὲ ἔπεισεν ἐπὶ τὸ πηρεῶδες, ὅπερ οὕτως
εἶχε γλῶσσο καὶ κηλίω ἐξαναίτηται, ἀλλὰ
τὸ μὴ ἔχον βάθος γῆς·
- 6 Ἡλίος δὲ ἀναλείπει τὸν εὐαγγελιστὴν, καὶ
ἀλλὰ τὸ μὴ ἔχον ρίζαν, ἐξηραίνθη.
- 7 Καὶ ἄλλο ἔπεισεν εἰς τὰς ἀκρότητας· καὶ
ἀπέβησαν αἱ ἄκαυτοι, ἐσωέπνευσαν αὐτὰ,
καὶ καρπὸν οὐκ ἔδωκε.
- 8 Καὶ ἄλλο ἔπεισεν εἰς τὸ γλῶσσο καὶ κηλίω· καὶ
ἔδιδε καρπὸν ἀναβαίνοντα καὶ ἀυξάνοντα· καὶ
ἔφερεν, ἐν τριήκοντα, καὶ ἐν ἐξήκοντα, καὶ ἐν
ἑκατόν.
- 9 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὁ ἔχων ὄψα ἀκέραια,
ἀκέραια.
- 10 Ὅτι δὲ ἐγγίθη καρὰ μέγας, ἠρώτησαν αὐτὸν
οἱ οὗτοι αὐτὸν σὺν τοῖς δώδεκα τὸ ἑρμηνεύειν.
- 11 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὑμῖν δέδοται γινῶσθαι τὸ
μυστήριον τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ· ἐκείνοις δὲ
τοῖς ἔξω, ἐν ἑρμηνεύειν ταῖς πάντα γίνεσθαι·
- 12 Ἰνα βλέποντες βλέπωσι, καὶ μὴ ἴδωσι· καὶ
ἀκούοντες ἀκούωσι, καὶ μὴ συνιῶσι· μή ποτε ἐπι-
στρέψωσι, καὶ ἀφίηται αὐτοῖς τὰ ἁμαρτήματα.
- 13 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Οὐκ οἶδατε τὸ ἑρμηνεύειν
ταύτων; καὶ πῶς πείρασται τὰς ἑρμηνεύειν
γινώσκουσι;
- 14 Ὁ σπείρει, τὸ λόγον σπείρει.
- 15 Οὗτοι δὲ εἰσιν οἱ ἑρμηνεύειν τὸ ὄν, ὅπερ σπεί-
ρει· ὁ λόγος· καὶ ὅταν ἀκέραια, οὕτως
ἔρχεται

ἔρχε) ὁ σατανᾶς, ἐ ἀίρει τὸ λόγον τὸν ἑσπαρ-
μῶνον ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν.

16 Καὶ ἔτι εἰσιν ὁμοίως οἱ ἐπὶ τὰ περὶ αὐτῶν
σπέρματοι, οἳ, ὅταν ἀκέ(ωσι τὸν λόγον, οὐ-
δέως μὲν χαρᾶς λαμβάνουσιν αὐτόν.

17 Καὶ ὅσκι ἔχουσι ῥίζαν ἐν ἑαυτοῖς, ἀλλὰ
ὡρθοκαίροί εἰσιν· εἴτε γλομομένης θλίψεως ἢ
διω(μῶς διὰ τὸ λόγον, οὐδέως σκανδαλίζον).

18 Καὶ ἔτι εἰσιν οἱ εἰς τὰς ἀκύνθους σπέρμα-
τοι, οἱ τὸν λόγον ἀκύνθους.

19 Καὶ αἱ μέριμναί εἰσι αἰῶν(θ) τέσσα, καὶ ἡ
ἀπίτη εἰσι πέντε, καὶ αἱ ὅσαι τὰ λοιπὰ ἐπι-
θυμίας ἐσποροσπόμοι συμπί(σσι τὸ λόγον,
καὶ ἀκαρπ(θ) γίνε).

20 Καὶ ἔτι εἰσιν οἱ ἐπὶ τὴν γλῶτ(θ) καλῶ
σπαρέντες, οἱ πῖνες ἀκούουσι τὸ λόγον, ἐ ὡρθο-
δέχον)· καὶ καρποφοροῦσιν, ἐν τριάκοντα, καὶ
ἐν ἑξήκοντα, καὶ ἐν ἑκατόν.

21 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς· Μήτι ὁ λόγον(θ) ἔρχε)
ἵνα ὑπο(τὸ μέσον τεθῆ, ἢ ὑπο(τὸ κλίνω, ἔχα
ἵνα ἐπὶ τὴν λυχνίαν ἐπίτεθῆ;

22 Οὐ γάρ ἐσὶ τι κρυπτόν ὃ εἴαν μὴ φανε-
ρωθῆ· ἔδὲ ἐχέμενο δὲ ἀκρυφόν, ἀλλ' ἵνα εἰς
φανερόν ἔλθῃ.

23 Εἰ τις ἐχ(θ) ὡτα ἀκύν, ἀκύντω.

24 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς· Βλέπετε τί ἀκούετε.
ἐν ᾧ μέτρω μετρεῖτε, μετρηθήσε) ὑμῖν, ἐ
καθελθήσε) ὑμῖν τοῖς ἀκούουσιν.

- 25 Ὅς γὰρ αὐτὸς ἔχη, δοθήσετ' αὐτῷ· καὶ ὅς σὸς ἔχη, ἐὸ ἔχη δοθήσετ' ἀπ' αὐτοῦ.
- 26 Καὶ ἔλεγεν· Οὕτως ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ, ὡς ἐάν τις ἄνηρ πῶρον βάλη ἐπὶ τῆς γῆς·
- 27 καὶ καρπὸς αὐτοῦ, καὶ ἐγείρητ' ἡνύκτα καὶ ἡμέραν· καὶ ὁ πῶρον βλαστῶν, καὶ μακρύνῃ, ὡς σὸς οἶδεν αὐτός.
- 28 Αὐτομάτη γὰρ ἡ γῆ καρποφορεῖ, ὡρᾷ τον χόρτον, εἴ τι σπέρμα, εἴ τι πλήρη σῖτον ἐν τῷ σπέρματι.
- 29 Ὅταν δὲ ὡρᾷ δῶ ὁ καρπὸς, σὺθέως ἀποσείλη τὸ ὄρεπαινον, ὅτι παρέστηκεν ὁ θερισμός.
- 30 Καὶ ἔλεγεν· Τίνι ὁμοιωσάμενος τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ; ἢ ἐν ποίᾳ ὡραβολῇ ὡραβάλωμεν αὐτῷ;
- 31 Ὡς κῆκος σινάπεως, ὅς, ὅταν σπαρῆ ἐπὶ τῆς γῆς, μικρότερον πάντων τῶν σπερμάτων ἐστὶ τῶν ἐπὶ τῆς γῆς.
- 32 Καὶ ὅταν σπαρῆ, ἀναβαίνει, καὶ γίνεται πάντων τῶν λαχάνων μείζων, καὶ ποιεῖ κλάδους μεγάλους, ὡς ἵε δυνάσκει ὑπὸ τῆς σκιάς αὐτῆς τὰ πετρεῖα τῶν ἔρρωντῶν καὶ τῶν σκυλῶν.
- 33 Καὶ τοιαύτης ὡραβολῆς πολλαῖς ἐλάλησεν αὐτῷς τὸ λόγον, καθὼς ἠδύνατο αὐτῶν ἀκούειν.
- 34 Χωρὶς δὲ ὡραβολῆς σὸς ἐλάλησεν αὐτοῖς· καὶ ἰδίαν δὲ τοῖς μαθηταῖς αὐτῶν ἐπέλυσε πάντα.

35 Καὶ

- 15 Καὶ λέγει αὐτοῖς ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ,
ὄψιας ἡλιομύτης· Διέλθωμεν εἰς τὸ πέραν.
- 16 Καὶ ἀφίητες τὸ ὄχλον ἐξῆλθα λαμβάνουσιν
αὐτὸν ὡς ἑὸν ἐν τῷ πλοίῳ· καὶ ἄλλα δὲ πλοιαί-
ρια ἦν μετ' αὐτοῦ.
- 17 Καὶ γίνεται λαίλαψ ἀνέμου μεγάλη· τὰ δὲ
κύματα ἐπέβαλλον εἰς τὸ πλοῖον, ὥστε αὐτὸ
ἤδη γεμίζεσθαι.
- 18 Καὶ ὡς αὐτὸς ἐπὶ τῇ πρύμνῃ ἐπὶ τὸ
προσκεφάλαιον κρατῶσάν· καὶ διεγείρουσιν
αὐτὸν, καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Διδάσκαλε, ἔ-
μέλει σοὶ ὅτι ἀπολλύμεθα;
- 19 Καὶ διεγερθεὶς ἐπέκρινε τὰς ἀνέμους, καὶ
εἶπε τῇ θαλάσῃ· Σιώπα, πεφίμωσο. Καὶ
ἐκόπασεν ὁ ἀνεμῶν, καὶ ἐγένετο θαλῶν
μεγάλη.
- 20 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς. Τί δήλοί ἐστε ἔτι; πῶς
σοὶ ἐχέει πίστις;
- 21 Καὶ ἐφοβήθησαν φόβον μέγαν, καὶ ἔλεγον
πρὸς ἀλλήλους· Τίς ἄρα ἔτος ἐστίν, ὅτι καὶ ὁ
ἀνεμῶν καὶ ἡ θαλάσσα ὑπακούουσιν αὐτῷ;

Κεφ. ε'. 5.

- 1 Καὶ ἦλθον εἰς τὸ πέραν τῆς θαλάσσης, εἰς
τὴν χώραν τῆς Γαδαρηνῶν.
- 2 Καὶ ἐξελθόντες αὐτῶν ἐκ τῶν πλοίων, ὁμοίως
ἀπώτησεν αὐτῶν ἐκ τῶν μνημείων ἀνθρώπων
ἐν πύματι ἀκαθάρτου.
- 3 Ὅς δὲ καθίστησιν εἶχεν ἐν τοῖς μνημείοις,

F 5. καὶ

καὶ ἔκρημνῆς εἰς τὴν θάλασσαν, (ἦσαν οὖν ὡς
διχάλιοι) καὶ ἐπύρηντο ἐν τῇ θαλάσῃ.

14 Οἱ δὲ βόσκοντες τὰς χοίρας ἐφυγον, ἔσπυραν
καὶ εἰς τὴν πόλιν καὶ εἰς τὰς ἀγρούς. Καὶ
ἐξῆλθον ἰδεῖν τί ἐστι τὸ γενηθὲν.

15 Καὶ ἔρχοντο πρὸς τὸ Ἰησοῦν, καὶ θεωροῦσι τὸν
δαιμονιζομένον κατῆρμιον καὶ ἰματισμένον,
καὶ σωφρονεῖντα, τὸν ἐχρημάτιον τὸν λεγεῶνα
καὶ ἐφοβήθησαν.

16 Καὶ διηγήσαντο αὐτοῖς οἱ ἰδόντες, πῶς
ἐγένετο τὰ δαιμονιζομένα, καὶ πρὸς τὰ χοίρων.

17 Καὶ ἤρξαντο ἠρώτησαι αὐτὸν ἀπελθεῖν
ἀπὸ τῶν ὄρειων αὐτῶν.

18 Καὶ ἐμβάντων αὐτῶν εἰς τὸ πλοῖον, παρε-
κάλει αὐτὸν ὁ δαιμονισθεὶς ἵνα ἦ μετ' αὐτῶν.

19 Οἱ δὲ Ἰησοῦς οὐκ ἀφῆκεν αὐτὸν, ἀλλὰ λέγει
αὐτῷ· Ὑπάγε εἰς τὸ οἶκόν σου πρὸς τὰς σὺν,
καὶ ἀνάγγειλον αὐτοῖς ὅσα σοι ὁ Κύριος
ἐποίησε, καὶ ἠλέησέ σε.

20 Καὶ ἀπῆλθε, καὶ ἤρξατο κηρύσσειν ἐν τῇ
Δεκαπόλῃ ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· καὶ
πάντες ἐθαύμαζον.

21 Καὶ ἀπερρέσαντες Ἰησοῦς ἐν τῷ πλοίῳ
παλιν εἰς τὸ πέραν, συνήχθη ὄχλος πολὺς
ἐπ' αὐτόν· καὶ ἦν πρὸς τὴν θάλασσαν.

22 Καὶ ἰδὼν, ἔρχεται εἰς τῶν ὄρμησις αὐτῶν,
ὁ ὄμοιος ἰάτρῳ· καὶ ἰδὼν αὐτόν, πίπτει πρὸς
τὰς πόδας αὐτοῦ.

23 Καὶ

- 23 Καὶ περιελάλη αὐτὸν πολλὰ, λέγων· Ὅτι τὸ θυγάτριόν μου ἰσάτως ἔχει· ἵνα ἐλθὼν ἐπιθῆς αὐτῇ ἐν χεῖρας, ὅπως σωθῆ· Ἐζήσῃ).
- 24 Καὶ ἀπῆλθε μετ' αὐτῶ· Ἐῆθλεθῆ αὐτὰ ὄχλῳ πολὺς, Ἐ σωθῆ λιβὸν αὐτόν.
- 25 (Καὶ γυνὴ τις ἔστα ἐν ῥύσῃ αἵματι· ἔτη δώδεκα,
- 26 Καὶ πολλὰ παθῆσα ὑπὸ πολλῶν ἰατρῶν, καὶ διαπανήσασα τὰ παρ' ἑαυτῆς πάντα, καὶ μηδὲν ὠφεληθεῖσα, ἀλλὰ μᾶλλον εἰς τὸ χεῖρον ἐλθῆσα.
- 27 Ἀκῆσασα περὶ τοῦ Ἰησοῦ, ἐλθῆσα ἐν ταῖς ὄχλῳ ὀπίσθεν, ἤψατο τοῦ ἱματίου αὐτοῦ.
- 28 Ἐλέγε γὰρ· Ὅτι καὶ τῶν ἱματίων αὐτοῦ ἄψωμαι, σωθήσομαι.
- 29 Καὶ δὴ θέως ἐξηραίνθη ἡ πηγὴ τοῦ αἵματι· αὐτῆς· καὶ ἔγνω τὰ σώματι ὅτι ἴα) ἀπὸ τῆς μόστιγ.
- 30 Καὶ θέως ὁ Ἰησοῦς ἐπιγνῶς ἐν ἑαυτῷ ὅτι ἐξ αὐτῶ δυνάμειν ἐξελοῦσιν, ἐπιστραφεὶς ἐν τῷ ὄχλῳ, ἔλεγε· Τίς με ἤψατο τοῦ ἱματίου;
- 31 Καὶ ἔλεγον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Βλέπεις τὸν ὄχλον σωθῆ λίβον; ἔσε, Ἐ λέγεις· Τίς με ἤψατο;
- 32 Καὶ ὡς ἐβλέπετο ἰδεῖν ὅτι τῶ ποιήσασαν·
- 33 Ἡ δὲ γυνὴ, φοβηθεῖσα Ἐ τρέμει, εἰδὼσα ὅτι γέγονεν ἐπ' αὐτῇ, ἦλθε καὶ ὡς ἐπέπεσον αὐτῷ, καὶ εἶπε αὐτῷ πάσαι ὅτι ἀλήθειαν.

4 Ὁ ἰησοῦς εἶπεν αὐτῇ· Θύρατερ, ἡ πίστις σε σεσωκέε σε· ὑπάγε εἰς εἰρωάνην, καὶ ἴσθι υἱὸς ἀπὸ τῆς μάστιγος σε.

5 Ἐπ' αὐτῆς λαλήσῃ· ἔρχοντο ἀπὸ τῆς δεξιῶν σου, λέγοντες· Ὅτι ἡ θυγάτηρ σου ἀπέθανε· πῆ ἐπὶ σκύλλης τὸν διδάσκαλον;

6 Ὁ ἰησοῦς, σθένος ἀκέραιος τὸ λόγον λαλήσας, λέγει τῷ δεξιῶν σου· Μὴ φοβῆσθαι, μόνον πίσυσε.

7 Καὶ ὅτε ἀφῆκεν εὐθένα αὐτῶν συναχθῆσαι, εἰ μὴ Πέτρον καὶ Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν Ἰακώβου.

8 Καὶ ἔρχεται εἰς τὸ οἶκον τῆς δεξιῶν σου, καὶ θεωρεῖ θόρυβον, κλαίοντας καὶ ἁλαλάζοντας πολλά.

9 Καὶ ἐισελθὼν λέγει αὐτοῖς· Τί θόρυβεῖσθε καὶ κλαίετε; τὸ παιδίον ὅτε ἀπέθανεν, ἀλλὰ καὶ θάψατε.

10 Καὶ καλεῖ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν· Ὁ δὲ, ἐμβαλὼν ἅπαντας, ὡς λαμβάνει τὸ πατέρα τοῦ παιδίου καὶ τὸν μητέρα, καὶ τὸν μετ' αὐτῶν, καὶ εἰσπορεύσας ὅπως ἔστι τὸ παιδίον ἀνακείμενον.

11 Καὶ κρατήσας τῆς χειρὸς τοῦ παιδίου, λέγει αὐτῇ· Ταλιτὰ κέμι· ὃ ἐστὶ μεθερμικωθῆναι· Τὸ κρυάσιον (σοὶ λέγω) ἔφησα.

12 Καὶ σθένος ἀνέστη τὸ κρυάσιον, καὶ ὡσεὶ πᾶσι· ἵνα γὰρ ἐτῶν δώδεκα. καὶ ἐξέστησαν ἐκείνη μετὰ αὐτῆς.

43 Καὶ

43 Καὶ διετείλατο αὐτοῖς πολλὰ ἵνα μηδεὶς γινῶ τῶτο· καὶ εἶπε δοθῆναι αὐτῇ φαγεῖν.

Κεφ. 5'. 6.

1 Καὶ ἐξῆλθεν ἐκεῖθεν, καὶ ἦλθει εἰς τὴν πατρίδα αὐτῆ· καὶ ἠκούσθησαν αὐτῆ οἱ μαθηταὶ αὐτῆ.

2 Καὶ ἤκουοντες σιββάτα ἤρξαντο ἐν τῇ συναγωγῇ διδάσκειν. Ἐ πολλοὶ ἠκούοντες ἐξεπλήροσθη, λέγοντες· Πόθεν τῶτω ταῦτα; καὶ ἵς ἡ σοφία ἡ δοθεῖσα αὐτῇ, ὅτι καὶ δυνάμεις τοιαῦται διὰ τῶν ἰσχυρῶν αὐτῆ γίνονται;

3 Οὐχ ἕτός ἐστιν ὁ τέκτων, ὁ υἱὸς Μαρίας, ἀδελφὸς ἢ Ἰακώβου καὶ Ἰωσὴ καὶ Ἰσάδα καὶ Σίμωνος; Ἐ σὺν εἰσὶν αἱ ἀδελφαὶ αὐτῆ ὡς πρὸς ἡμᾶς; Καὶ ἐσκανδαλίζονται ἐν αὐτῇ.

4 Ἐ λέγει ἢ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι σὺν εἰσὶν αἰσθητῆς ἅπασαν εἰ μὴ ἐν τῇ πατρίδι αὐτῆ, καὶ ἐν τοῖς συγγήμοις, καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ.

5 Καὶ ἐκ ἠδυνάτω ἐκεῖ ἕδεμίαν δυνάμιν ποιῆσαι, εἰ μὴ ὀλίγαις ἀρρώσταις ἐπιθεῖς τοῖς χεῖρας, ἐθεράπευσαι.

6 Καὶ ἐθαύμαζε διὰ τὴν ἀπιστίαν αὐτῶν. Καὶ ἀειῆγε τοῖς κόμας κύκλω, διδάσκων.

7 Καὶ παρακαλεῖται τὲς δώδεκα, καὶ ἤρξαντο αὐτῆς λατρεῖν δύο δύο· καὶ εἰδὼς αὐτοῖς ἐξουσίαν τῶν πνευμάτων τῶν ἀκαθάρτων.

8 Καὶ παρήγγειλεν αὐτοῖς ἵνα μηδὲν αἴρωσιν

εἰς ὄδον, εἰ μὴ ῥά ὄδον μόνον, μὴ πῆσον, μὴ ἄρτον, μὴ εἰς τὸ ζῶντιν χαλκόν.

9 Ἀλλ' ὑποδεδεμένους σπανδάλια· καὶ μὴ ἐνδύσασθε δύο χιτῶνας.

10 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς· Ὅτι εἰάν τις εἰσελθῆτε εἰς οἰκίαν, ἐκεῖ μῆνετε ἕως αὐτοῦ ἐξελθῆτε ἐκεῖθεν.

11 Καὶ ὅστις αὐτὸν μὴ δεξῶν ὑμᾶς, μηδὲ ἀκέσῳσιν ὑμῶν, ἐκπορεύομενοι ἐκεῖθεν, ἐκλινάξατε τὸ χεῖρ τὸν ὑποκατώ τῶ ποδῶν ὑμῶν, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς. ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἀνεκώτερον ἔσται Σοδόμοις ἢ Γομόρροις ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, ἢ τῇ πόλει ἐκείνῃ.

12 Καὶ ἐξεληθόντες ἐκήρυσσον ἵνα μετάνοήσωσι.

13 Καὶ δαιμόνια πολλὰ ἐξέβαλλον· καὶ ἠλφον εἰλαίᾳ πολλὰς ἀρρώστιας, καὶ ἔφεράπιδον.

14 Καὶ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἡρώδης, (Φανερόν γὰρ ἐχούσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ) καὶ ἔλεγε· Ὅτι Ἰωάννης ὁ βαπτίζων ἐκ νεκρῶν ἠγέρθη, ἐδίδου γὰρ ἐνεργῶσιν ἀδυναμίαις ἐν αὐτῷ.

15 Ἄλλοι ἔλεγον· Ὅτι Ἡλίας ἐστίν· ἄλλοι δὲ ἔλεγον· Ὅτι Ἐλισσέου ἐστίν, ἢ ὡς εἰς τὸ πνευματικῶν.

16 Ἀκούσας δὲ ὁ Ἡρώδης, εἶπεν· Ὅτι ἂν ἐγὼ ἀπεκεφάλισα Ἰωάννην, ὅτις ἐστίν, αὐτὸς ἠγέρθη ἐκ νεκρῶν.

17 Αὐτὸς γὰρ ὁ Ἡρώδης, διὰ πείρας ἐκράτισε τὸν Ἰωάννην, ἐδίδου αὐτὸν ἐν τῇ φυλακῇ,

213

Διά Ηρωδιάδα τὴ γυναῖκα Φιλίππου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὅτι αὐτὴν ἐγάμησεν.

18 Ἐλεγε γὰρ ὁ Ἰωάννης τῷ Ηρώδῃ· Ὅτι σοὶ ἐξέτισαι ἔχειν τὴν γυναῖκα τῶ ἀδελφοῦ σου.

19 Ἡ δὲ Ηρωδιάς ἐνεῖχεν αὐτὸν, καὶ ἤθελεν αὐτὸν ἀποκτεῖναι· καὶ σὸν ἡδυνάτω.

20 Ὁ γὰρ Ηρώδης ἐφοβεῖτο τὸν Ἰωάννην, εἰδὼς αὐτὸν ἀνδραγάθον καὶ ἄγιον· καὶ σιωπήσθαι αὐτόν· καὶ ἀκῶσαι αὐτόν, πολλὰ ἐποίησεν, καὶ ἡδέως αὐτῷ ἤκετο.

21 Καὶ γιορμῆς ἡμέρας διαστήσας, ὅτε Ηρώδης τοῖς γιορμαῖσι αὐτοῦ δεῖπνον ἐποίησεν τοῖς μεγιστάσι αὐτοῦ καὶ τοῖς χλιάρχοις καὶ τοῖς ἑσθῶτοις τῆς Γαλιλαίας.

22 Καὶ ἐισελθόντος τῆς θυγατρὸς αὐτῆς τῆς Ηρωδιάδος, καὶ ὀρχησαμένης, καὶ ἀρυσάσης τῷ Ηρώδῃ ἐκ τῶν σιωνακῶν, εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ υἱοῦ αὐτοῦ· Αἰτήσόν με ὅ ἐάν θέλης, καὶ δώσω σοί.

23 Καὶ ᾤμωσεν αὐτῇ· Ὅτι ὅ ἐάν με αἰτήσης, δώσω σοί, ἕως ἡμίσεος τῆς βασιλείας μου.

24 Ἡ δὲ ἐξελθούσα, εἶπε τῇ μητρὶ αὐτῆς· Τί αἰτήσομαι; Ἡ δὲ εἶπε· Τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.

25 Καὶ ἐισελθούσα δούλῳ μετ' ἀπερῆς πρὸς τὸν βασιλέα, ἠτήσθη, λέγουσα· Θέλω ἵνα μοι δῶς ἐκ αὐτῆς ἐπὶ πίνακι τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.

26 Καὶ

26 Καὶ ἀείλυτο ὁ γυρόμυθος ὁ βασιλεύς,
 διὰ τὰς ὄρκους καὶ τὰς στυγακρήμυθους οὕτως
 ἠθέλησεν αὐτῷ ἀρετῆσαι.

27 Καὶ ὁ ἴσως ἀποστόλος ὁ βασιλεύς ἀπε-
 κελάτωρα, ἐπέταξεν ἐν χιτῶνι αὐτῷ κεφα-
 λῶν αὐτοῦ.

28 Ὁ δὲ ἀπελθὼν ἀπεκεφάλισεν αὐτὸν ἐν τῇ
 φυλακῇ, καὶ ἔθηκε τὸ κεφαλῶν αὐτοῦ ἐπὶ
 πίνακι, ἔδωκεν αὐτῷ τὴν κοράσιον καὶ τὸ
 κοράσιον ἔδωκεν αὐτῷ τῇ μηρῷ αὐτῆς.

29 Καὶ ἀκόντιες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἦλθον
 καὶ ἤρξαν τὸ πλάσμα αὐτοῦ, καὶ ἔθηκαν αὐτὸ
 ἐν μνημείῳ.

30 Καὶ σιμῶν οἱ ἀπόστολοι πρὸς τὸ Ἰη-
 σῶν, καὶ ἀπήγγελλον αὐτῷ πάντα ἃ ἔσπευσαν
 καὶ ὅσα ἐποίησαν καὶ ὅσα ἐδίδαξαν.

31 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Δεῦτε ὑμεῖς αὐτοὶ καὶ
 ἴδιαν εἰς ἔρημον τόπον, ἔναπαύεσθε ὀλίγον·
 ἦσαν γὰρ οἱ ἐρχόμενοι καὶ οἱ ὑπάκουοι πολλοί·
 καὶ οὐδὲ φαγεῖν ἠύκησεν.

32 Καὶ ἀπῆλθον εἰς ἔρημον τόπον τῆς παλαιοῦ
 κατ' ἴδιαν.

33 Καὶ εἶδον αὐτὰς ὑπάκουους οἱ ὄχλοι καὶ
 ἐπέγνωσαν αὐτὸν πολλοί καὶ πείνη διὰ πάντων
 τῶν πόλεων σιωίδραμον ἐκεῖ, ἔπεσθησαν
 αὐτὰς, καὶ σκυῆλθον πρὸς αὐτόν.

34 Καὶ ἐξελθὼν εἶδεν ὁ Ἰησῶς πολὺ ὄχλον,
 καὶ ἐσπλαγχνίσθη ἐπ' αὐτοῖς, ὅτι ἦσαν ὡς
 ἀβάστατοι

πρόβατα μὴ ἔχοντα ποιμένα· καὶ ἤρξαντο διδάσκειν αὐτοὺς πολλά.

35 Καὶ ἤδη ὄρας πολλῆς ἡλιομένης, προσελθόντες αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτῷ, λέγουσιν· Ὅτι ἔρημος ἐστὶν ὁ τόπος, καὶ ἤδη ὄρα πολλή·

36 Ἀπόλυτον αὐτοὺς, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τὰς κύκλας ἀγρῶν καὶ κώμας, ἀγοράσωσιν ἑαυτοῖς ἄρτους· τί γὰρ φάγωσιν οὗτοι ἔχουσιν.

37 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Δότε αὐτοῖς ὑμεῖς φαγεῖν. Καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Ἀπελθόντες ἀγοράσωμεν δυνάμειαν ἄρτους, καὶ δώμεν αὐτοῖς φαγεῖν·

38 Ὁ ἰὴρ λέγει αὐτοῖς· Πόσους ἄρτους ἔχετε; ὑπάγει εἰς ἰδίαν. Καὶ ἰσθίνες, λέγουσι· Πέντε, καὶ δύο ἰχθύας.

39 Καὶ ἐπέταξεν αὐτοῖς ἀνακλίνειν πάντας συμπόσια συμπόσια ἐπὶ τῷ χλωρῷ χόρῳ.

40 Καὶ ἀνέπεσον πρᾶσι πρᾶσι, ἀνά ἑκατὸν καὶ ἀνά πενήτηντα.

41 Καὶ λαβὼν τὰς πέντε ἄρτους καὶ τὰς δύο ἰχθύας, ἀναβλέψας εἰς τὸ ἔρανον, εὐλόγησε, καὶ κατακλάσε τὰς ἄρτους· καὶ ἐδίδε τοῖς μαθηταῖς αὐτῷ ἵνα ὑψώσωσιν αὐτοῖς· καὶ τὰς δύο ἰχθύας ἐμέρισε πᾶσι.

42 Καὶ ἔφαθον πάντες, καὶ ἐχορτάσθησαν.

43 Καὶ ἦσαν κλασμάτων δώδεκα κοφίνων πληρέεις, καὶ ἀπὸ τῶν ἰχθύων.

44 Καὶ ἦσαν οἱ φαγόντες τὰς ἄρτους, ὡσὲς πεντακισχίλιοι ἄνδρες.

45 Καὶ

45 Καὶ δὲ θέως ἠνάγκασε τὰς μαθητὰς αὐτῆ
ἐμβῶσαι εἰς τὸ πλοῖον, καὶ προάγειν εἰς τὸ
πέραν πρὸς Βηθσαϊδὸν, ἕως αὐτὸς ἀπολύσῃ
τὸν ὄχλον.

46 Καὶ ἀποβὰς ἀνδρῶν αὐτοῖς, ἀπῆλθεν εἰς
τὸ ὄρος ὠρεζόμαθ.

47 Καὶ ὀψίας γινουμένης ἰὼ τὸ πλοῖον ἐν μέσῳ
τῆ θαλάσσης, καὶ αὐτὸς μόνος ἐπὶ τῆ γῆς.

48 Καὶ εἶδεν αὐτὸς βασιανίζουμην ἐν τῇ
ἐλαύνῃ· (ἰὼ γὰρ ὁ ἀνεμῶς ἐναντίος αὐτοῖς)
ἔπειτα πῆρτιον φυλακὴν τῆ νυκτὸς ἔρχετο
πρὸς αὐτὸς, ὡς πάλιν ἐπὶ τῆ θαλάσσης· ἔ-
ἤτελε παρελθεῖν αὐτὸς.

49 Οἱ δὲ, ἰδόντες αὐτὸν ὡς πάλιν ἐπὶ τῆς
θαλάσσης, ἔδοξαν φάντασμα εἶναι, καὶ
ἀνέκραξαν·

50 (πάντες γὰρ αὐτὸν εἶδον, ἔτι παραχρησάμενοι)
Καὶ δὲ θέως ἐλάλησε μετ' αὐτῶν, καὶ λέγει
αὐτοῖς· Θαρσείτε, ἐγώ εἰμι, μὴ φοβεῖσθε.

51 Καὶ ἀνέβη πρὸς αὐτὸς εἰς τὸ πλοῖον· καὶ
ἐκόπασεν ὁ ἀνεμῶς· καὶ λίαν ἐκ πειρασμοῦ
ἐν ἑαυτοῖς ἐξίσταντο, καὶ ἐθαύμαζον·

52 Οὐ γὰρ σιωπήσαν ἐπὶ τοῖς ἄρτοις· ἰὼ γὰρ ἡ
καρδία αὐτῶν πεπωρωμένη.

53 Καὶ διὰ περὶ σάββατος ἦλθον ἐπὶ τῆ γῆς Γε-
νησαρέτ· καὶ προσπαρμιάσθησαν.

54 Καὶ ἐξεληθόντων αὐτῶν ἐκ τοῦ πλοῖου,
δέθως ἐπιγνόησεν αὐτὸν,

- 55 Περιδραμόβεις ὄλλω τ' ἀείχρωσι ἐκεί-
νλω, ἤρξαντο ἐπὶ τοῖς κροββάτοις τὰς κρο-
κῶς ἔχοντας ἀειφέρεν, ὅπερ ἤκουον ὅτι ἐκεῖ ἐστ.
- 56 Καὶ ὅπερ αὐ εἰσεπορεύθη εἰς κάμας, ἢ
πόλεις, ἢ ἀγροὺς, ἐν ταῖς ἀγροῦσι ἰδέσθαι τὰς
ἰαδενῶνας, καὶ παρακαλεῖν αὐτὸν ἵνα καὶ τ'
κροσσίδας τ' ἰμαθίαι αὐτῶ ἀψων)· καὶ ὅσπερ
αὐ ἤπεινον αὐτῶ, ἐσώζοντο.

Κεφ. ζ. 7.

- 1 Καὶ συνήρουν) πρὸς αὐτοὺς οἱ φαρισαῖοι,
καὶ ἱουδαῖοι τ' γραμματέων, ἐλθόντες ἀπὸ
Ἱεροσολύμων·
- 2 Καὶ ἰδόντες ἰουδαῖοι τ' μαθητῶν αὐτῶ κρο-
κῶσι χερσὶ (τῶν) ἐστὶν ἀνίπτοις), ἰαδενῶνας ἀρ-
τους, ἐμίμψαντο·
- 3 (Οἱ γὰρ φαρισαῖοι καὶ πάντες οἱ ἰουδαῖοι,
ἐὰν μὴ πυμῆνίψων) τὰς χεῖρας, ἔκ ἰοδίσαι,
κροσσίδας τ' ἀειφέρεν τ' πρεσβυτέρων.
- 4 Καὶ ἀπὸ ἀγροῦς, ἐὰν μὴ βαπτίσων), ἔκ
ἰοδίσαι καὶ ἄλλα πολλὰ ἐστὶν ἃ παρέλαβον
κροσσίδας, βαπτισμὸς ποτηρίων καὶ ξέστων καὶ
χαλκίων καὶ κλιτῶν)
- 5 Ἐπῆται ἐπιρωτῶσιν αὐτὸν οἱ φαρισαῖοι ἔ-
οι γραμματεῖς· Διατί οἱ μαθηταὶ σα εἰπε-
ριπῆσαι καὶ τ' ἀειφέρεν τ' πρεσβυτέρων,
ἀλλὰ ἀνίπτοις χερσὶν ἰοδίσαι τὸν ἄρτον;
- 6 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι κροκῶσι
ἀειφῆτόσιν ἱσθίαις ἀεὶ ὑμῶν τ' ὑπο-
κροσσίδας·

κερτων' ως γέγραπ'· Οὐτ' ὁ λαὸς τοῖς
χειλεσίν με ἠμῶν, ἢ ἡ καρδία αὐτῶν πόρρω
ἀπέχῃ ἀπ' ἐμῶν.

7 Μάτθω ἡ σέβονται με, διδάσκοντες δι-
δασκαλίας, ἐνέλιματ' ἀνθρώπων.

8 Αφέντες γὰρ τ' ἐνθλιώ τ' Θεῶ, κροῦτε
τ' ὡδ' ἄδουσιν τ' ἀνθρώπων, βαπτισμὸς ἕξω
καὶ πόνησιον· καὶ ἄλλα παρόμοια τοιαῦτα
πολλὰ ποιεῖτε.

9 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς· Καλῶς ἀγέειτε τ' ἐνθ-
λιώ τ' Θεῶ, ἵνα τ' ὡδ' ἄδουσιν ὑμῶν τηρήσῃτε.

10 Μωσῆς γὰρ εἶπε· Τίμα τ' πατέρα σου καὶ
τ' μητέρα σου κ'· Ὁ κακολογῶν πατέρα ἢ
μητέρα, θανάτω τελευτᾷτω.

11 Ὑμεῖς ἡ λέγετε· Ἐὰν εἴπῃ ἄνθρωπος τῷ
πατρὶ ἢ τῇ μητρὶ· Κορβᾶν (ὅ ἐστι, δῶρον)
ὃ ἐὰν ἕξ ἐμῶν, ὠφεληθῆς.

12 Καὶ σκέπει ἀφίει αὐτὸν ἕδὲν ποιῆσαι τῷ
πατρὶ αὐτῷ ἢ τῇ μητρὶ αὐτῷ.

13 Ἀκροῦντες τὸν λόγον τ' Θεῶ τῇ ὡδ' ἄ-
δούσιν ὑμῶν, ἢ παρεδάχατε· καὶ παρόμοια
τοιαῦτα πολλὰ ποιεῖτε.

14 Καὶ προσκαλεσάμενος πάντα τ' ὄχλον,
ἔλεγε αὐτοῖς· Ἀκούετε με πάντες, ἐσυνίετε.

15 Οὐδὲν ἐστὶν ἕξωθεν τ' ἀνθρώπου εἰς πορθύ-
μνον εἰς αὐτὸν, ὃ διώα' αὐτὸν κρινᾷσαι·
ἀλλὰ τὰ ἐκ πορθύμνου ἀπ' αὐτῷ, ἐκείνα
ἐστὶ τὰ κρινῶντα τὸν ἄνθρωπον.

- 16 Εἶπες ἔχθ' ὡπε ἀκέρν, ἀκέρτω·
- 17 Καὶ ὅτε εἰσῆλθεν εἰς οἶκον ἀπὸ τοῦ ὄχλου, ἐπηρώτων αὐτοὶ οἱ μαθηταὶ αὐτῷ περὶ τῆς πωροβολῆς.
- 18 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Οὐτὼ ἐὺμεῖς ἀσυνείηται ἔστε; ἔνοεῖτε ὅτι πᾶν τὸ ἐξώθεν εἰσπορεύόμενον εἰς τὸν ἄνθρωπον, ἔδυνάται αὐτὸν κρῖνῶσαι;
- 19 Ὅτι ὅσα εἰσπορεύονται αὐτῷ εἰς τὴν καρδίαν, ἀλλ' εἰς τὴν κοιλίαν· ἐἰς τὴν ἀφροσύνην ἐκπορεύονται, καθαρῶς πάντα τὰ βρώματα.
- 20 Ἐλεγε ἡ ὁπ τὸ ἐκ τοῦ ἀνθρώπου ἐκπορεύόμενον, ἐκείνο κρῖνει τὸν ἄνθρωπον.
- 21 Ἐσώθεν γὰρ ἐκ τῆς καρδίας τῶν ἀνθρώπων οἱ ἀλαλοισμοὶ οἱ κακῶς ἐκπορεύονται, μοιχεύματα, πορνεία, φόνοι,
- 22 Κλοπαί, πλεονεξία, πονηρία, δόλοι, ἀπέλγηα, ὀφθαλμοὶ πονηροὶ, βλασφημία, ὑπερηφανία, ἀφροσύνη.
- 23 Πάντα ταῦτα τὰ πονηρὰ ἐξώθεν ἐκπορεύονται, καὶ κρῖνει τὸν ἄνθρωπον.
- 24 Καὶ ἐκείθεν ἀναστὰς ἀπῆλθεν εἰς τὰ μετόρια Τύρου καὶ Σιδῶνος· καὶ εἰσελθὼν εἰς τινα οἰκίαν, ἐδίνα ἤθελε γνῶναι· καὶ ὅτε ἠδυνήθη λαθεῖν.
- 25 Ἀκούσασαι γὰρ γυνὴ περὶ αὐτῷ, ἧς εἶχε τὸ θυγάτριον αὐτῆς πνεῦμα ἀκάθαρτον, ἔλθουσα προσέειπε πρὸς τὸς πόδας αὐτοῦ,

- 26 (Ἦν ἡ ἡ γυνὴ Ἑβραίων, Συροφοίνισσα
τῷ Ἰησοῦ) ἔκρινεν αὐτὸν ἵνα τὸ δαιμόνιον
ἐκβάλλῃ ἐκ τῆς θυγατρὸς αὐτῆς.
- 27 Ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῇ· Ἄφες ἄφροντον χορ-
θαῖν τὰ τέκνα· ὅτι ἡ γὰρ κλήρον ἐστὶ λαβεῖν τὸ
ἄρτον τῶν τέκνων, καὶ βαλεῖν τοῖς κυναεῖοις.
- 28 Ἡ ἡ ἀπεκρίθη, καὶ λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύριε·
καὶ ἡ γὰρ τὰ κυνάερα ὑποκαίτω τῶν τραπεζῶν
ἐσθίει ἀπὸ τῶν ψιχίων τῶν παιδίων.
- 29 Καὶ εἶπεν αὐτῇ· Διὰ τῶν λόγων
ὑπάγε· ἐξελέλυτε τὸ δαιμόνιον ἐκ τῆς θυ-
γατρὸς σου.
- 30 Καὶ ἀπελθῶσα εἰς τὸ οἶκον αὐτῆς, εὗρε
τὸ δαιμόνιον ἐξεληλυθὸς, ἔτι τῶν θυγατέρων
βεβλημμένων ἐπὶ τῆς κλίνης.
- 31 Καὶ πάλιν ἐξεληθὼν ἐκ τῶν ὄρεων Τύρου καὶ
Σιδῶν, ἦλθε πρὸς τὴν θάλασσαν τῆς Γαλι-
λαίας, ἀνὰ μέσον τῶν ὄρεων Δεκαπόλεως.
- 32 Καὶ φέρουσιν αὐτῷ κωφὸν μογγιλάλον· καὶ
ᾠροῦσιν αὐτὸν ἵνα ἐπιθῇ αὐτῷ τὴν
χείρα.
- 33 Καὶ ἀπολαβόμενος αὐτὸν ἀπὸ τοῦ ὄχλου
κατ' ἰδίαν, ἐβαλε τὰς δακτύλους αὐτοῦ εἰς
τὴν ὄψιν αὐτοῦ· καὶ πύσας ἤψατο τὴν γλώσ-
σιν αὐτοῦ.
- 34 Καὶ ἀναβλέψας εἰς τὸ ἄσπερον, ἐξέναξε, καὶ
λέγει αὐτῷ· Ἐφφαθά, ὅ ἐστι, Διανοίχθητι.
- 35 Καὶ οὐθέως διανοίχθησαν αὐτοῦ αἰσθηταί·
καὶ

καὶ ἐλύθη ὁ δεσμός τ' γλώσσης αὐτοῦ, καὶ ἐλάλησεν ὀρθῶς.

36 Καὶ οἱ εἰσέλαθον αὐτοῖς ἵνα μηδεὶς εἴπῃσιν ὅσον ἢ αὐτὸς αὐτοῖς οἰσεύχεται, μάλλον ὑπεριούτερον ἐκήρυξεν.

37 Καὶ ὑπερῦπερος αἰσὶν ἐξεπλήθυνον, λέγοντες· Καλῶς πάντα πεποίηκε· καὶ τὰς κωφὰς ποιεῖ ἀκούειν, καὶ τὰς ἀλάλους λαλεῖν.

Κεφ. η'. δ.

1 **Ε**Ν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις, παμπόλλοι ὄχλοι ἦν, καὶ μὴ ἔχονταν πὶ φάγωσι, προσκαλεσάμενος ὁ Ἰησοῦς τὰς μαθητὰς αὐτοῦ, λέγων αὐτοῖς·

2 Σπλαγχνίζομαι ἐπὶ τῷ ὄχλῳ· ὅτι ἤδη ἡμέρας τρεῖς προσμύμασί μοι, καὶ σὺν ἔχουσιν πὶ φάγωσι.

3 Καὶ ἐὰν ἀπολύσω αὐτὰς νήστευς εἰς οἶκον αὐτῶν, ἐκλυθήσονται ἐν τῇ ὁδῷ· ἵνα γὰρ αὐτῶν μακρόθεν ἦκασι.

4 Καὶ ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Ποθεν τέτρετες διωθήσεαι ἡμεῖς ἃς οὐδὲ χορταίσαι ἄρτων ἐπ' ἐρημίας;

5 Καὶ ἐπερώτα αὐτὸν· Πόσους ἔχετε ἄρτους; Οἱ ἃ εἶπον· Ἐπτὰ.

6 Καὶ παρεθήκε τῷ ὄχλῳ ἀναπισεῖν ἐπὶ τῇ γῆς· καὶ λαβάν τὰς ἑπτὰ ἄρτους, συζαρευσάσας ἐκλασε, καὶ ἐδίδοξεν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἵνα ᾤψασθωσι· καὶ παρέθηκεν τῷ ὄχλῳ.

7 Καὶ

- 7 Καὶ εἶχον ἰχθύδια ὀλίγα· καὶ βύλογίπτας,
εἶπε πᾶσι θείναι καὶ αὐτά.
- 8 Ἐφαίον ἤ, καὶ ἐχορβάθησαν· καὶ ἦσαν πωλο-
σδύματτα κλασμαίων, ἐπὶ ἀστυρίδας.
- 9 Ἦσαν ἡ οἱ φαρήνιες, ὡς περὶ κικίλιαι
καὶ ἀπέλυσεν αὐτάς.
- 10 Καὶ δὴθέως ἐμβαὰ εἰς τὸ πλοῖον μετ' ἑμ-
θαίων αὐτῶ, ἦλθεν εἰς τὰ μέρη Δαλμανυτά.
- 11 Καὶ ἐξῆλθον οἱ φαρισάοι, καὶ ἤρξαντο
συζητεῖν αὐτῶ, ζητῶντες παρ' αὐτῶ σημεῖον
ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, πηράζοντες αὐτόν.
- 12 Καὶ ἀνασθενάξας τῶ πνύματι αὐτοῦ,
λέγει· Τί ἡ γηρεὰ αὐτῆ σημεῖον ἐπιζητεῖς;
ἀμὲν λέγω ὑμῖν, εἰ δοθήσει τῇ γηρεᾷ ταύτῃ
σημεῖον.
- 13 Καὶ ἀφείς αὐτάς, ἐμβαὰ πάλιν εἰς τὸ
πλοῖον, ἀπῆλθεν εἰς τὸ πέραν.
- 14 Καὶ ἐπελάθοντο λαβεῖν ἄρτους, καὶ εἰ μὴ ἕνα
ἄρτον οὐκ εἶχον μεθ' ἐωπῶν ἐν τῶ πλοῖῳ.
- 15 Καὶ διεσέλατο αὐτοῖς, λέγων· Ὁρατε,
βλέπετε ἀπὸ τῆς ζύμης τοῦ φαρισάοι καὶ τῆς
ζύμης Ἡρώδα.
- 16 Καὶ διελογίζοντο πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες·
Ὅτι ἄρτους οὐκ ἔχομεν.
- 17 Καὶ γινῶσθε ὁ Ἰησοῦς, λέγει αὐτοῖς· Τί διε-
λογίζεσθε ὅτι ἄρτους οὐκ ἔχετε; ἔγω νοεῖτε,
ἐδὲ σιωπετε; ἐπι πεπωρωμένῳ ἔχετε τὴ καρ-
δίαν ὑμῶν;

- 18 Οφθαλμοὺς ἔχουσιν ἔ βλέπει; καὶ ὠταὶ ἔχου-
τες οὐκ ἀκούετε; καὶ ἔ μνημονεύετε;
- 19 Ὅτε τὰς πέντε ἄρτους ἐκλασα εἰς τὰς πεν-
τεκισχιλίας, πόσους κοφίνους πλήρεις κλασ-
μάτων ἤρατε; Λέγουσιν αὐτῷ· Δώδεκα.
- 20 Ὅτε ἔ τὰς ἐπέτα εἰς τὰς τετρακισχιλίας,
πόσων σφυριδῶν πληρώματα κλασμάτων
ἤρατε; Οἱ ἔ εἶπον· Ἐπέτα.
- 21 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς· Πῶς ἔ στείλετε;
- 22 Καὶ ἔρχε ἔ εἰς Βηθσαϊδάν· καὶ φέροντι
αὐτῷ τυφλόν, καὶ ὠρῶσθαλοῦσιν αὐτὸν ἵνα
αὐτῷ ἄψη.
- 23 Καὶ ἐπιλαβόμενος τὸ χεῖρὸς ἔ τυφλοῦ,
ἐξήγαγε αὐτὸν ἐξω τῆς κόμης· καὶ πύσας εἰς
τὰ ὄμματα αὐτῷ, ἐπιθεῖς τὰς χεῖρας αὐτῷ,
ἐπηρώτω αὐτὸν εἶπ· βλέπε.
- 24 Καὶ ἀναβλέψας, ἔλεγε· Βλέπω τὰς ἀν-
θρώπους ὡς δένδρα ὡς περὶ ἔντας.
- 25 Εἶτα πάλιν ἐπέθηκε τὰς χεῖρας ἐπὶ τὰς
ὀφθαλμοὺς αὐτῷ, καὶ ἐποίησεν αὐτὸν ἀνα-
βλέψαι· καὶ ἔδοξα ἔσθαι, καὶ ἐνέβλεψε
τηλαγωγῶς ἄπαντας.
- 26 Καὶ ἀπέστειλεν αὐτὸν εἰς τὸ οἶκον αὐτοῦ,
λέγων· Μηδὲ εἰς τὴν κόμην εἰσελθῆς, μηδὲ
εἶπῃς ἑνὶ ἐν τῇ κόμῃ.
- 27 Καὶ ἐξῆλθεν ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐ-
τοῦ εἰς τὰς κόμας Καισαρείας τῆς Φι-
λίππας· καὶ ἐν τῇ ὁδῷ ἐπηρώτω τὰς μα-
θητάς

ἤρξας αὐτῶ, λέγων αὐτοῖς· Τίνα με λέγετε
οἱ ἄνθρωποι εἶναι;

28 Οἱ ᾧ ἀπεκρίθησαν· Ἰωάννην τὸ Βαπτιστῆν
καὶ ἄλλοι, Ἡλίαν· ἄλλοι ᾧ εἶνα τὸ πνευματικῶν.

29 Καὶ αὐτὸς λέγει αὐτοῖς· Ὑμεῖς ᾧ εἶνα με
λέγετε εἶναι; Ἀποκριθεὶς ᾧ ὁ Πέτρος, λέγει
αὐτῷ· Σὺ εἶ ὁ Χριστός.

30 Καὶ ἐπέμνησεν αὐτοῖς εἶνα μηδενὶ λέσωσιν
παρὰ αὐτοῦ.

31 Καὶ ἤρξατο διδάσκειν αὐτούς, ὅτι δεῖ τὸν
υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου πολλὰ παθεῖν, εἰς ἀποδοκιμα-
σθῆναι ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων καὶ ἀρχιερέων καὶ
γραμματέων, καὶ ἀποκτανθῆναι, καὶ με-
τεῖς ἡμέρας ἀναστῆναι.

32 Καὶ παρήρσια τὸν λόγον ἐλάλη. Καὶ
προσλαβόμενος αὐτὸν ὁ Πέτρος, ἤρξατο
ἐπιμῆσαι αὐτῷ.

33 Ὁ ᾧ ἐπιγραφείς, καὶ ἰδὼν τὰς μαθητῶν
αὐτοῦ, ἐπέμνησε τῷ Πέτρῳ, λέγων· Ὑπαγε
ὀπίσω με σατανᾶ· ὅτι εἰ φρονεῖς τὰ τοῦ Θεοῦ,
ἀλλὰ τὰ τῶν ἀνθρώπων.

34 Καὶ προσκαλεσάμενος τὸ ὄχλον συνειπὶς
μαθηταῖς αὐτῶ, εἶπεν αὐτοῖς· Ὅστις θέλει
ὀπίσω με εἰλθεῖν, ἀπαρνησάτω ἑαυτὸν, καὶ
ἕρσεται τὸ σταυρὸν αὐτῶ, καὶ ἀκολουθήσει με.

35 Ὅς γὰρ ἀνέλθῃ τὸ ψυχικῶν αὐτῶ σῶσαι, ἀπο-
λέσθαι αὐτῶ· ὅς δ' αὖ ἀπόλεσθῃ τὸ ψυχικῶν αὐτῶ
ἐνεκεν ἑμῶ εἰς διασῆσαι αὐτήν.

- 36 Τί, δ' ἄφελός ἐστι ἀνθρώπων, ἵαν κερδέτη τὸ
κέρσμεν ἄλλον, καὶ ζημιωθῆ τὴ ψυχῆ αὐτῶ;
37 ἢ ἢ δώσῃ ἀνθρώπου ἀντίπαλαγμα τῆς
ψυχῆς αὐτοῦ;
38 Ὅς, δ' αὖ ἐπαρχιωθῆ με καὶ τὸς ἐμὲς λό-
γους ἐν τῇ ζῆσει ταύτῃ τῇ μοιχαλίδι καὶ
ἁμαρτωλῶ, καὶ ὁ υἱὸς ὁ αὐτῶ ἀνθρώπου ἐπαρχιω-
θῆσῃ αὐτὸν ὅταν ἔλθῃ ἐν τῇ δόξει ὁ πατρὸς
αὐτοῦ μετὰ τῶν ἀγγέλων τῶν ἁγίων.

Κεφ. 9. 9.

- 1 **Κ**αὶ ἔλεγον αὐτοῖς· Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι
εἰσὶ ἄνθρωποι οἳ οὐκ ἔσονται ἐν τῇ βασιλείᾳ
τοῦ Θεοῦ ἐληλυθῆσαν ἐν δυνάμει.
2 Καὶ μετὰ ἡμέρας ἕξ ἀπέβη λαμβάνει ὁ
Ἰησοῦς τὸν Πέτρον καὶ τὸν Ἰακώβον καὶ τὸν
Ἰωάννην, καὶ ἀναφέρει αὐτοὺς εἰς ὄρη ἄψηλον
καὶ ἰδίαν μόνην· καὶ μετὰ μετὰ ἡμέρας ἐπι-
καλεῖται αὐτοὺς.
3 Καὶ πὰ ἰμάτια αὐτῶ ἐξήρτισεν εἰς λαβάνην,
λαβάνην ὡς χιῶν, οἷα γραφὸς ἐπὶ τῆ
γῆς ἐδυνάμην λαβάναι.
4 Καὶ ἔφη αὐτοῖς Ἡλίας καὶ Μωσῆς καὶ
ἦσαν συλλαβῆτες τὰ Ἰησοῦ.
5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος, λέγει τῷ Ἰησοῦ·
Γαββὶ, καλὸν ἐστὶν ἡμῶς ὡς εἶναι καὶ ποιῆ-
σαι σκηνὰς τρεῖς, σοὶ μίαν, καὶ Μωσῆ
μίαν, καὶ Ἡλία μίαν.

6 Οὐ

- 6 Οὐ γὰρ ἤδὲ κ' ἐλαλήσῃ ἦσαν γὰρ ἔκφοβοι.
- 7 Καὶ ἐχθρόν τι φέλη ἐπισκιάζουσα αὐτοῖς·
Ἐ ἦλθε φωνὴ ἐκ τ' νεφέλης, λέγουσα· Οὐτίς
ἔστιν ὁ υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, αὐτὸς ἀκούετε.
- 8 Καὶ ἐξάπινα πῶριβλεψάροισι, σὸκίτι
κίθωνα εἶδον, ἀλλὰ τὸ Ἰησοῦς μόνον μεθ' ἑαυτῶν.
- 9 Καὶ ἁβαυόντων οὐκ αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὄψεσ,
διεπέλαθ αὐτοῖς ἵνα μηδέτι διηγήσων· ὡ
εἶδον, εἰ μὴ ὅταν ὁ υἱὸς τῶν ἀνθρώπων ἐκ νεκρῶν
ἀναστῇ.
- 10 Καὶ τὸ λόγον ἐκράτησαν πρὸς ἑαυτοῦς,
συζητῶντες τί ἐστὶ τὸ ἐκ νεκρῶν ἀναστῆναι.
- 11 Καὶ ἐπηρώτων αὐτὸν, λέγοντες· Ὅτι λέγουσιν
οἱ γραμματεῖς, ὅτι Ἡλίου δεῖ εἰσελθεῖν πρῶτον·
- 12 Ὁ δ' ἔδποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἡλίας
μὲν ἐλθὼν πρῶτον, ἀποκριθεὶς πάντων· καὶ
πῶς γέγραπ' ἐπὶ τῷ υἱὸν τῶν ἀνθρώπων, ἵνα
πολλὰ πάσῃ, καὶ ἐξεδενωθῇ.
- 13 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν ὅτι καὶ Ἡλίας ἐλήλυθε,
καὶ ἐποίησαν αὐτῷ ὅσα ἠτέλησαν, καθὼς
γέγραπ' ἐπ' αὐτόν.
- 14 Καὶ ἐλθὼν πρὸς τὰς μαθητάς, εἶδεν ὄχλον
πολυὸν πρὸς αὐτὸς, καὶ γραμματεῖς συζη-
τῶντες αὐτοῖς.
- 15 Καὶ οὐδέως πᾶσι ὄχλῳ ἰδὼν αὐτὸν ἐξε-
ταμβήθη, ἔπειστέχνοντες ἠσπάζοντο αὐτόν.
- 16 Καὶ ἐπηρώτησε τὰς γραμματεῖς· Τί
συζητεῖτε πρὸς αὐτὸς;

G 3

17 Καὶ

- 17 Καὶ ἀποκριθεὶς εἰς ἓκ τῶν ὄχλων, εἶπε·
Διδάσκαλε, ἡὲν ἔχει τὸ υἱόν μου παρὰ σὲ, ἔχοντα
πνεῦμα ἄλαλον·
- 18 Καὶ ὅτε αὐτὸν κατελάβη, ῥήσας αὐτὸν·
καὶ ἀφείζει, καὶ τείζει τὰς ὀδόντας αὐτοῦ, καὶ
ξηραίνει· καὶ εἶπον τοῖς μαθηταῖς σε ἵνα
αὐτὸ ἐκβάλωσι, καὶ ὅτε ἴχυσαν.
- 19 Ο ἰδὼν δὲ ἀποκριθεὶς αὐτοῖς, λέγει· Ὡς ἡμεῖς
ἀπιστοῦμεν, ἕως ποῦτε παρὰ ὑμᾶς ἔσομεν; ἕως
ποῦτε ἀνέξομεν ὑμῶν; φέρετε αὐτὸν παρὰ με-
- 20 Καὶ ἡὲν ἔχον αὐτὸν παρὰ αὐτόν, καὶ ἰδὼν
αὐτόν, ὡς ἔως τὸ πνεῦμα ἰσπαράραξεν αὐτόν·
καὶ πτωρὸν ἐπὶ τῆ γῆς, ἐκυλίσθη ἀφείζων.
- 21 Καὶ ἐπηρώτησε τὸν πατέρα αὐτοῦ· Πότε
ἔσονται ἡμεῖς ὡς τὸ γένηται αὐτοῖς; Ο δὲ
εἶπε· Παιδίόθεν.
- 22 Καὶ πολλὰ κίς αὐτόν καὶ εἰς πῦρ ἔβαλε
καὶ εἰς ὕδατα, ἵνα ἀπολέσῃ αὐτόν. ἀλλ'
εἶπὸν δυνάστω, βοηθήσων ἡμῖν, ἀσπλαγχνιοὶ εἰς
ἡμᾶς.
- 23 Ο ἰδὼν δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Τὸ εἰ δυνάστω
πιστεῦσα, πάντα δυνατὰ τῷ πιστεύοντι.
- 24 Καὶ ὡς κραξάσας ὁ πατήρ τῶν παιδίων,
μὲν δακρύων ἔλασε· Πιστεύω Κύριε· βοήθη με
τῇ ἀπιστίᾳ.
- 25 Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐπιστωτὴρ ἔχον ὄχλον,
ἐπέμνησε τῷ πνεύματι καὶ τῷ ἀκατέργω, λέγων
αὐτοῖς· Τὸ πνεῦμα τὸ ἄλαλον καὶ κωφόν, ἐγώ
σι

σοι ἐπιβάσων· Ἐξέλθε ἐξ αὐτοῦ, καὶ μηκέτι
εἰσελθῆς εἰς αὐτόν.

6 Καὶ κράξαν, καὶ πολλὰ σπαραξάντων αὐτόν,
ἐξῆλθε· καὶ ἐβόηον ὡσεὶ νεκρὸς, ὥστε πολλὰς
λέγειν ὅτι ἀπέθανεν.

7 Ὁ δὲ Ἰησοῦς κρατήσας αὐτόν τῷ χερσὶ
ἤγαγεν αὐτόν· καὶ ἀνέστη.

8 Καὶ εἰσελθόντα αὐτόν εἰς οἶκον οἱ μαθη-
ταὶ αὐτοῦ ἐπηρώτων αὐτόν κατ' ἰδίαν· Ὅτι
ἡμεῖς ὅσον ἠδυνήθημεν ἐμβαλεῖν αὐτόν;

9 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τὸ ἄλλο ἐν ἐδενὶ
διώκει· ἐξέλθειν εἰ μὴ ἐν περιστάσει ἐνηθεία.

10 Καὶ ἐκεῖθεν ἐξελθόντες παρεπορεύοντο εἰς
τὴν Γαλιλαίαν· καὶ ὅσον ἤτελεν τις ἵνα γνῶ.

11 Ἐδίδασκε γὰρ τὰς μαθητάς αὐτοῦ, ἐλέγχε
αὐτοῖς· Ὅτι ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὡς Ἰακώβος εἰς
χεῖρας ἀνθρώπων, ἐδοκίμευσεν αὐτόν· καὶ
δοκίμασθε, τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσει.

12 Οἱ δὲ ἠγνόουν τὸ ῥῆμα, καὶ ἐφοβούντο αὐ-
τόν ἐπερωτῆσαι.

13 Καὶ ἦλθεν εἰς Καπρναῦμ· ἐν τῇ οἰκίᾳ
Ἰησοῦ, ἐπηρώτα αὐτὸς· Τί ἐν τῇ ὁδοῦ
πρὸς ἑαυτὸς διελογίζεσθε;

14 Οἱ δὲ ἐσιώπων· πρὸς ἀλλήλους γὰρ διελέχ-
θησαν ἐν τῇ ὁδοῦ, τίς μείζων·

15 Καὶ κατ' ἑκάστης ἐφώνησε τὰς δώδεκα, καὶ
λέγει αὐτοῖς· Εἴ τις θέλει ἄρξασθαι εἰναι, ἔσται
πάντων ἑχθρὸς, καὶ πάντων ἀτάκτων.

- 36 Καὶ λαβὼν παιδίον, ἔστησεν αὐτὸ ἐν μέσσοις αὐτῶν· καὶ ἐκασταλοῦσά μιν αὐτὸ, εἶπε αὐτοῖς·
- 37 Ὅς ἐὰν ἐν τῷ τοιοῦτῳ παιδίῳ δέξηται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐμὲ δέχεται· Ἐὼς ἐὰν ἐμὲ δέξηται, σὸς ἐμὲ δέχεται, ἀλλὰ τὸν δόξασέ μου·
- 38 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰουδαῖος, λέγων· Διδάσκαλε, εἰδοὺ μὲ ἵνα ἐν τῷ ὀνόματί σου ἐκβάλλωμαι δαιμόνια, ὡς σὸς ἀγγελᾷ ἡμῖν· Ἐκωλύσαί μοι αὐτοὶ, ὅτι σὸς ἀγγελᾷ ἡμῖν.
- 39 Ὁ Ἰησοῦς εἶπε· Μὴ κωλύετε αὐτόν· ἔδεις γάρ ἐστιν ὡς ποιήσῃ δυνάμει ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, καὶ δυνήσεται καὶ καταλογησάτω με·
- 40 Ὅς γὰρ ἐκ ἐστὶ καθ' ἡμῶν, ὑπερῶν ἡμῶν ἐστιν·
- 41 Ὅς γὰρ αὐτὸς ποίησεν ὑμᾶς ποτήριον ὕδατος ἐν τῷ ὀνόματί μου, ὅτι Χρῆσθ' ἐστὶ ἀμύλω λίθῳ ὑμῖν, καὶ μὴ ἀπολέσῃ τὸ μισθὸν αὐτοῦ.
- 42 Καὶ ὡς αὐτὸς σκανδαλίση ἕνα τῶν μικρῶν τῶν πτωχῶν εἰς ἐμὲ, καλὸν ἐστὶν αὐτῷ μάλλον εἶναι ὡσεὶ λίθῳ μυλικῶς ὡσεὶ τῷ τρέφῃ αὐτοῦ, καὶ βέβληται εἰς τὴν θάλασσαν.
- 43 Καὶ ἐὰν σκανδαλίση σε ἡ χεὶρ σου, ἀπόχεψον αὐτήν· καλὸν σοι εἶναι κυλλὸν εἰς τὴν ζωὴν εἰσελθεῖν, ἢ ἔχεις δύο χεῖρας ἔχειν, ἀπιλθεῖν εἰς τὸ γένναν, εἰς τὸ πῦρ τὸ ἀσβεστον·
- 44 Ὅπως ὁ σκάλῃς αὐτῶν ἐτελοῦσα, καὶ τὸ πῦρ ἐσβέννεται.
- 45 Καὶ ἐὰν ὁ πᾶς σκανδαλίση σε, ἀπόχεψον αὐτόν· καλὸν ἐστὶ σοι εἰσελθεῖν εἰς τὴν ζωὴν

ζωὴν χαλόν, ἢ τὰς δύο πόδας ἔχοντα βλη-
θῶμαι εἰς τὸ γένναν, εἰς τὸ πῦρ τὸ ἀσβεστον·

46 Ὅπως ὁ σκώληξ αὐτῶν ἐτελεύτησεν, καὶ τὸ
πῦρ ἐσβέννυ).

47 Καὶ ἐὰν ὁ ὀφθαλμός σου σκανδαλίξῃ σε, ἔκ-
βαλε αὐτόν. καλὸν σοι ἐστὶ μόνόφθαλμον εἰσ-
ελθεῖν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, ἢ δύο ὀφθαλ-
μοὺς ἔχοντα βληθῶμαι εἰς τὸ γένναν ἢ πῦρος.

48 Ὅπως ὁ σκώληξ αὐτῶν ἐτελεύτησεν, καὶ τὸ
πῦρ ἐσβέννυ).

49 Πᾶς γὰρ πύρρ ἀλιθῆσε)· ἔκ παῖσαι θυσία
ἀλλὶ ἀλιθῆσε).

50 Καλὸν τὸ ἄλας· ἐὰν ᾗ τὸ ἄλας ἀνάλογον
γῆν), εὐ πῆνι αὐτὸ δρῦτύσει; ἔχει εὐ εἰαυτοῖς
ἄλας, καὶ εἰρῶσῶν εὐ ἀκλήλοισ.

Κεφ. ι'. 10.

1 **Κ**αὶ εἰθὲν ἀναστὰς ἔρχε) εἰς τὰ ὄρια τῆς
Ἰερουσαλῆμ, διὰ τὸ πέραν τοῦ Ἰορδάνου· καὶ
συμπεροδύον) πάλιν ὄχλοι πρὸς αὐτόν· καὶ
ὡς εἰώθη, πάλιν ἐδίδασκεν αὐτούς.

2 Καὶ προσελθόντες οἱ φαρισαῖοι, ἐπηρώ-
τησαν αὐτόν, εἰ ἔξεστιν ἀνδρὶ γυναικὴ ἀπο-
λῦσαι· πρὸς αὐτόν.

3 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Τί ὑμῖν
ἀνεμίλατο Μωσῆς;

4 Οἱ δὲ εἶπον· Μωσῆς ἐπέγραψε βιβλίον
ἀποτασίης γυναικῶν, καὶ ἀπολύσαι.

5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς·

G 5

Πρὸς

- Πρὸς τὴν σαλτηροκαρδίαν ὑμεῶν ἔγραψεν ὑμῖν
 πλὴν ἐν ἑλλήνων ταύτην·
- 6 Ἀπὸ τῆς δόξης κτίσεως, ἄρσεν κὶ θῆλυ ἐποίη-
 σεν αὐτὰς ὁ Θεός.
- 7 Ἐτίκειν τέτρα καὶ ἀλείψεν ἄνθρωπον τὸν
 πατέρα αὐτῆς κὶ τὴν μητέρα, κὶ προσκολλη-
 θήσεται πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ.
- 8 Καὶ ἔσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν· ὡς εἶ-
 πεν ἡ ἐκείνη εἰσι δύο, ἀλλὰ μία σὰρξ.
- 9 Ὁ οὖν ὁ Θεὸς συνέζωξεν, ἄνθρωπον
 μὴ χωρίζεται.
- 10 Καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ πάλιν οἱ μαθηταὶ αὐτῆς
 ὡς εἶπε αὐτῆς ἐπηρώτησαν αὐτόν.
- 11 Καὶ λέγει αὐτοῖς· ὅς ἐάν τις ἀπολύσῃ τὴν
 γυναῖκα αὐτῆς, ἐξαμύνησθαι ἀλλήλους, μοιχῶνται
 ἐπ' αὐτῆν.
- 12 Καὶ ἐάν τις ἀπολύσῃ τὸν ἄνδρα αὐτῆς,
 κὶ μοιχηθῆται ἀλλήλους, μοιχῶνται.
- 13 Καὶ προσέφηκεν αὐτοῖς παροῦσα, ἵνα ἀψῆ
 αὐτῶν· οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπέμειναν τοῖς προσ-
 φέρονσιν.
- 14 Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ἠγωνίσθη, καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
 Ἄφετε τὰ παροῦσα ἔρχεσθαι πρὸς με, καὶ μὴ
 καλύψετε αὐτά· τῶν γὰρ τοιούτων ἐστὶν ἡ βασι-
 λεία τοῦ Θεοῦ.
- 15 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅς ἐάν τις δεῖξῃ τὴν βα-
 σιλείαν τοῦ Θεοῦ ὡς παροῦσαν, ἢ μὴ εἰσέλθῃ
 εἰς αὐτήν.

16 Καὶ

16 Καὶ ἐναγκαλισάμενος αὐτά, ἔθετο ἐπ' αὐτά, ἠύλογος αὐτά.

17 Καὶ ἐκπορευομένης αὐτῆς εἰς ὁδὸν, πρῶτα δραμῶν εἰς τὴν θηρυπητήρας αὐτὸν, ἐπηρώτησεν αὐτὸν· Διδάσκαλε ἀγαθὲ, τί ποιήσω ἵνα ζωῶ αἰώνιον κληρονομήσω;

18 Ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Τί με λέγεις ἀγαθόν, ἐδείς ἀγαθός, εἰ μὴ εἷς, ὁ Θεός.

19 Τὰς ἐντολὰς οἶδας· Μὴ μοιχεύῃς· Μὴ φονεύῃς· Μὴ κλέψῃς· Μὴ ψευδομαρτυρήσῃς· Μὴ ἀποσερήσῃς· Τίμα τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα.

20 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ· Διδάσκαλε, ταῦτα πάντως ἐφυλαξάμην ἐκ νεότητός μου.

21 Ὁ Ἰησοῦς ἐμβλέψας αὐτῷ, ἠγάπησεν αὐτὸν, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἐν σοὶ ὑστερεῖ ὕπαγε, ὅσα ἔχεις πάλησον, καὶ δός τοῖς πτωχοῖς· καὶ ἕξθις θησαυρὸν ἐν ἔρραβῳ καὶ δεύρο, ἀκροθέτη μοι, ἀρχὴς τὸν θησαυρὸν.

22 Ὁ δὲ, συγνάσας ἐπὶ τῷ λόγῳ, ἀπῆλθε λυπέμενος· ἰὼν γὰρ ἔχων κτήματα πολλά.

23 Καὶ περιβλεψάμενος ὁ Ἰησοῦς λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Πῶς δύσκολός ἐστι τὸ κτήμα ἔχειν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν;

24 Οἱ δὲ μαθηταὶ ἐθαμβήθησαν ἐπὶ τοῖς λόγοις αὐτοῦ. Ὁ Ἰησοῦς πάλιν ἀποκριθεὶς, λέγει αὐτοῖς· Τέκνα, πῶς δύσκολόν ἐστι τὸς πεποιθότας

δοῦς ἐπὶ ταῖς χεῖρας, εἰς τὴν βασιλείαν
 τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν;

25 Εὐκροπότερόν ἐστι κήμηλον ἀπὸ τῆς τευ-
 μαλιᾶς ἢ ῥαφίδου διελθεῖν, ἢ πολλοῖσι εἰς
 τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν.

26 Οἱ δὲ ἀπεκρίθησαν ἐξ ἐπολέσασοντο, λέγοντες
 πρὸς ἑαυτοὺς· Καὶ τίς δύναται σαθεῖν;

27 Ἐμβλέψας δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγει· Παροῦ-
 σαι ἄνθρωποι ἀδυνατοῦν, ἀλλ' ἐὰν ᾖ ἡ θέλησις τοῦ Θεοῦ·
 πάντα γὰρ δυνατὰ ἐστὶν ᾧ Θεῷ.

28 Καὶ ἤρξατο ὁ Πέτρος λέγειν αὐτῷ· Ἰδὲ, ἡ-
 μεῖς ἀφήκαμεν πάντα, ἕνηκαθετήσεμε δὲ σοι.

29 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἀμὲν λέγω
 ὑμῖν, ἂν τις ἐστὶν ὅς ἀφήκει οἰκίαν, ἢ ἀδελφοὺς
 ἢ ἀδελφάς, ἢ πατέρα ἢ μητέρα, ἢ γυναῖκα
 ἢ τέκνα, ἢ ἀγροὺς, ἕνεκεν ἐμοῦ καὶ τοῦ εὐαγγελίου,

30 Ἐὰν μὴ λάβῃ ἑαυτὸν ἀπολασίστα νυνὶ ἐν
 τῷ κρημνῷ τούτῳ, οἰκίας, καὶ ἀδελφοὺς καὶ
 ἀδελφάς, καὶ μητέρας καὶ τέκνα, καὶ ἀγροὺς,
 μή διαρῆμα, καὶ ἐν τῷ αἰῶνι τῷ ἐρχομένῳ
 ζῶναι αἰώνιον.

31 Πολλοὶ δὲ ἴσονται πρὸς τοὺς ἑαυτοὺς καὶ οἱ
 ἑαυτοὺς, πρὸς τοὺς.

32 Ἦσαν δὲ ἐν τῇ ὁδοῦ ἀναβαίνοντες εἰς Ἱερο-
 σόλυμα· ἐκ δὲ πρὸς αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς, καὶ
 ἔθαμβήθη, καὶ ἀπελάθη ἑφοβήθη. Καὶ
 ᾤρα λαβὼν πάλιν τὰς δώδεκα, ἤρξατο
 αὐτοῖς λέγειν τὰ μέλλοντα αὐτῷ συμβαίνειν·

33 Ὅτι

- 33 Ὅπιδ' ἀναβαίνομεν εἰς Ἱερουσόλυμα,
 καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὡραδοθήσεται τοῖς ἀρ-
 χειούσι καὶ τοῖς γραμματεῦσι, ἑκατάκλιτον
 αὐτὸν θανάτω, καὶ ὡραδώσιν αὐτὸν
 τοῖς ἔθνεσι.
- 34 Καὶ ἐμπιέξουσιν αὐτὸν, καὶ ματιώσονται
 αὐτὸν, καὶ ἐμπλύσονται αὐτὸν, καὶ ἀποκλειύσονται
 αὐτὸν· καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται).
- 35 Καὶ παρορεῖσιν αὐτὸν Ἰακώβος ἑταίρου
 Ἰωάννου οἱ υἱοὶ Ζεβεδαίου, λέγοντες· Διδάσκαλε,
 θέλομεν ἵνα ὡς ἐὰν αἰτήσωμεν ποιήσῃς ἡμῖν.
- 36 Οἱ ἔειπον αὐτοῖς· Τί θέλετε ποιήσωμεν
 ὑμῖν;
- 37 Οἱ ἔειπον αὐτοῖς· Δός ἡμῖν ἵνα εἰς ἐκ
 δεξιῶν σε καὶ εἰς εἰς ἄνωμων σε καθίσωμεν
 ἐν τῇ δόξῃ σε.
- 38 Οἱ ἔειπεν αὐτοῖς· Οὐκ οἶδά τις τί
 αἰτεῖτε. δυνάστε πιεῖν τὸ ποτήριον ὃ ἐγὼ
 πίνω, καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι,
 βαπτισθῆναι;
- 39 Οἱ ἔειπον αὐτοῖς· Δυνάμεθα. Οἱ ἔειπεν
 αὐτοῖς· Τὸ μὲν ποτήριον ὃ ἐγὼ πίνω,
 πίετε· καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι,
 βαπτισθήσεσθε·
- 40 Τὸ ἔτι καθίσωμεν ἐκ δεξιῶν με καὶ εἰς ἄνωμων
 με, ἐκ ἐστὶν ἐμὸν δένον, ἀλλ' οἷς ἠθέλωμασθα.
- 41 Καὶ ἀπέστειλε τοὺς δέκα, ἠρξάμεθα ἀνακλιεῖν
 περὶ Ἰακώβου καὶ Ἰωάννου.

42 Οἱ ἔ

42 Ο ἰησοῦς περκαλιεσαίμεν αὐτῆς,
λέγει αὐτοῖς· Οἶδατε ὅτι οἱ δοκῦντες ἀρχὴν ἔ-
χουσιν, καὶ ἀκυροῦσιν αὐτῶν· Ἐ οἱ μεγά-
λοι αὐτῶν, καὶ ἐξουσιάζουσιν αὐτῶν.

43 Οὐχ ἔτι ἔστι ἐν ὑμῖν· ἀλλ' ὅς ἐστιν θέλη
θουέας μέγας ἐν ὑμῖν, ἐστιν ἀφ' ἑαυτοῦ ὑμῶν.

44 Καὶ ὅς αὐθελῆ ὑμῶν θουέας περκαλιε-
σαίμεν, ἐστιν πάντων δὲ λ.

45 Καὶ γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἦλθε ἀφ-
κοινηθῆναι, ἀλλὰ ἀφκοινηθῆσαι, καὶ δέναι τὴν
ψυχὴν αὐτῆς λύττειν ἀπὸ πολλῶν.

46 Καὶ ἔρχοντες εἰς Ἱερουσαλήμ· Ἐ ἐκπεροδοῦμεν
αὐτῆς ἀπὸ Ἱερουσαλήμ, Ἐ τῶν μαθητῶν αὐτῆς, καὶ
ὄχλος ἰκανῶν, υἱὸς Τιμαίου Βαρθολομαίου ὁ τυ-
φλὸς ἐκάθητο πρὸς τὸ ὄδον περκαλιεσαίων.

47 Καὶ ἀκούσας ὅτι ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖος ἐστίν,
ἤρξατο κράζειν, καὶ λέγει· Οἶδατε ὅτι ὁ υἱὸς
Δαβὶδ, ἐλέησόν με.

48 Καὶ ἐπεὶ αὐτῶν πολλοὶ ἵνα σιωπήσῃ· ὁ ἰη-
σοῦς πολλῶν μαθητῶν ἐκράζειν· ἢ Δαβὶδ, ἐλέησόν με.

49 Καὶ σὺς ὁ ἰησοῦς, εἶπεν αὐτὸν φωνηθῆναι·
Ἐ φωνῆσαι τὸν τυφλὸν, λέγοντες αὐτῷ· Θάρσος,
ἔλαθαι· φωνεῖ σε.

50 Οἱ ἰησοῦς ἀποβαλὼν τὸ ἱμάτιον αὐτῆς, ἀνα-
στὰς ἦλθε πρὸς τὸν ἰησοῦν.

51 Καὶ ἀποκλειθεὶς, λέγει αὐτῷ ὁ ἰησοῦς· Τί
θέλεις ποιῆσαι σοι; ὁ δὲ τυφλὸς εἶπεν αὐτῷ·
Γαββονί, ἵνα ἀναβλέψω.

52 Οἱ ἰησοῦς

2 Ο ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ὑπάγε· ἡ πίστις σου σέσωκέ σε. Καὶ δὴθέως ἀνέβλεψε, καὶ ἠκολούθη τῷ ἰησοῦ ἐν τῇ ὁδῷ.

Κεφ. ια'. ΙΙ.

1 Καὶ ὅτε ἐξίζουσιν εἰς Γερουσαλήμ, εἰς Βηθφαγή καὶ Βηθανίαν πρὸς τὸ ἄρουρον τῶν ἐλαιῶν, ἀποστέλλει δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ,

2 καὶ λέγει αὐτοῖς· Ὑπάγετε εἰς τὴν κώμην τὴν κατέναντι ὑμῶν· ἐκεῖθεν εἰσπορεύσθε εἰς αὐτὴν, εὐρήσετε πῶλον δεδεμένον, ἐφ' ᾧ ἔδεις ἀνθρώπων κεκλιμένον· λύσαντες αὐτὸν ἀγάγετε.

3 καὶ εἰπὼς ὑμῖν εἶπη· Τί ποιεῖτε τῶνδε; εἶπατε· Ὅτι ὁ κύριος αὐτῶν ἔχει καὶ δὴθέως αὐτὸν ἀποστέλλει αὐτοῖς.

4 ἀπῆλθον ἡμεῖς καὶ εὗρον τὸν πῶλον δεδεμένον πρὸς τὴν θύραν ἔξω ἐπὶ τῷ ἀμφοδῷ καὶ λύομεν αὐτόν·

5 καὶ ἄλλοι τῶν ἐκείνησιν ἐλεγον αὐτοῖς· Τί ποιεῖτε λύοντες τὸν πῶλον;

6 οἱ δὲ εἶπον αὐτοῖς κατὰ τὸ ἐνελεῖλαι τὸ ἰησοῦς· καὶ ἀφῆκαν αὐτούς.

7 καὶ ἤγαγον τὸν πῶλον πρὸς τὸν ἰησοῦν, καὶ ἐπέβαλον αὐτῷ τὰ ἰμάτια αὐτῶν· καὶ ἐκάλουν αὐτὸν ἐπ' αὐτῷ.

8 Πολλοὶ δὲ τὰ ἰμάτια αὐτῶν ἔσρωσαν εἰς τὴν ὁδόν· ἄλλοι δὲ σιβάδας ἔκρενον ἐκ τῶν δένδρων, καὶ ἔσρώννον εἰς τὴν ὁδόν.

9 καὶ

- 9 Καὶ οἱ ἠεράρητες ἔοι ἀγγελῶν ἔκρο-
ζον, λέγοντες· Ωπυνά, δὴ λογηθήσεται ἡ ἐρχο-
μή σου ἐν ὀνόματι Κυρίου.
- 10 Εὐλογημένη ἡ ἐρχομή βασιλεία σου ὀνό-
ματι Κυρίου, ἡ πατρὸς ἡμῶν Δαβὶδ·
Ωπυνά ἐν τοῖς ὑψίστοις.
- 11 Καὶ ἐπέστειλεν εἰς Ἱεροσόλυμα ὁ Ἰησοῦς, καὶ
εἰς τὸ ἱερόν· καὶ πᾶσι βλάσφημοι πάντα,
ὀψίας ἡδὴ ἔσσης τῶ ὥρας, ἐξῆλθεν εἰς Βηθανίαν
μὲν τῶν δώδεκα.
- 12 Καὶ τῇ ἑπταήμερον ἐξελητόντων αὐτῶν ἀπὸ
Βηθανίας, ἐπέευσεν.
- 13 Καὶ ἰδοὺ σικκῶ μακρόθεν ἔχουσαν φύλλοι,
ἦλθεν εἰς αὐτὴν δὴ ἔστη ἐν αὐτῇ· καὶ ἔλθων ἐπὶ
αὐτῶν, ἔδεν εὐρεῖν εἰ μὴ φύλλοι· ἔρχομαι
καὶ σὺν ὑμῖν.
- 14 Καὶ ἀποκράθεις ὁ Ἰησοῦς, εἶπε αὐτῇ· Μη-
κίπ ἐκ σου εἰς τὸ αἰῶνα ἔδεις καρπὸν φέρει.
καὶ ἤκουσαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.
- 15 Καὶ ἔρχων εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ ἐπιστῶν ὁ
Ἰησοῦς εἰς τὸ ἱερόν, ἤρξατο ἐκβάλλειν τὰς πω-
λέωντας καὶ ἀγοράζοντας ἐν τῷ ἱερῷ· καὶ λέ-
γων· τὰς τῶν κτηνῶν, καὶ τὰς κατὰ τὰς
πωλέωντων· ὡς ἔσται ἡ ἐπιπέψα.
- 16 Καὶ ὅτε ἤφειν ἵνα πῖς διενέγκῃ σικκῶ
ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ.
- 17 Καὶ ἐδιδάσκει λέγων αὐτοῖς· Οὐ γάρ [ρα] πῖς·
Ὅτι οἶκος μου, οἶκος προσεύχης κληθήσεται
πάντες

πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν ; ὑμεῖς ᾗ ἐποιήσατε αὐτὸν
σπήλαιον λησῶν.

18 Καὶ ἤκουσαν οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ δόξιοι-
ροί, καὶ ἐζήτην πῶς αὐτὸν ἀπολέ(ε)σαι· ἐφο-
βῆντο γὰρ αὐτὸν, ὅτι πᾶς ὁ ὄχλος ἐξεπλήθυνε
ἐπὶ τῇ διδασχῇ αὐτοῦ.

9 Καὶ ὅτε ὄψε ἐρχόμεν, ἐξεπορεύετο ἔξω τῆ
πόλεως.

20 Καὶ περὶ ᾧ ἄρα πορεύομενοι, εἶδον τινὰ
συκκῶ ἐξηραμμένῳ ἐκρίζων.

21 Καὶ ἀναμνηθεῖς ὁ Πέτρος, λέγει αὐτῷ·
Γαββί, ἴδε, ἡ συκῆ ἡὲ κατηράσθη, ἐξήρανε ᾗ.

22 Καὶ ἀπεκρίθη Ἰησοῦς, λέγει αὐτοῖς· Ἐχέτε
πίσιν Θεοῦ.

23 Ἀλλὰ γὰρ λέγω ὑμῖν, ὅτι ὅς ἂν εἴπῃ τῷ
ὄρει τούτῳ· Ἀρτήθη, καὶ βλήθη εἰς τὴ θάλασ-
σαν· ἔ μὴ ἀσχεθῆ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ,
ἀλλὰ πίστευση, ὅτι ἂ λέγει γίνε(σ)ται· ἔσται αὐτῷ
ὅ ἂν εἴπῃ.

24 Διὰ τούτο λέγω ὑμῖν, πάντα ὅσα ἂν προσ-
ευχόμενοι αἰτεῖσθε, πιστεύετε ὅτι λαμβά-
νετε· καὶ ἔσται ὑμῖν.

25 Καὶ ὅταν σήκητε προσευχόμενοι, ἀφίετε εἰπὶ
ἐχέτε κατὰ ἴανος· ἵνα καὶ ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς
ἐθνεοῖς ἀφῆ ὑμῖν τὰ ᾧρα πλάματα ὑμῶν.

26 Εἰ ᾗ ὑμεῖς σὺν ἀφίετε, εἰδὲ ὁ πατὴρ ὑμῶν
ὁ ἐν τοῖς ἐθνεοῖς ἀφῆ τὰ ᾧρα πλάματα
ὑμῶν.

27 Καὶ

27 Καὶ ἔρχον) πάλιν εἰς Ἱεροσόλυμα· καὶ ἐν
 τῷ ἱερῷ ἀπειθαυῶντο· αὐτῶς ἔρχον) πρὸς
 αὐτὸν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ
 πρεσβύτεροι.

28 Καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα
 ποιεῖς; καὶ τίς σοι ἔξουσίαν ταῦτα ἰδῶκεν
 ἵνα ταῦτα ποιῆς;

29 Ὁ ὅς Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς·
 Ἐπερωτήσω ὑμᾶς καὶ γὰρ ἓνα λόγον· καὶ ἀπο-
 κριθῆτέ μοι, καὶ ἐρῶ ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ
 ταῦτα ποίω.

30 Τὸ βάπτισμα Ἰωάννου ἐξ ἔργου ἢ ἢ ἐξ
 ἀνθρώπων; ἀποκριθῆτέ μοι.

31 Καὶ ἐλογίζοντο πρὸς ἑαυτούς, λέγοντες·
 Ἐὰν εἴπωμεν· ἐξ ἔργου, ἐρεῖ· Διατί ἐν σοὶ
 ἐπιστεύσαμεν αὐτῷ;

32 Ἀλλ' ἰὰν εἴπωμεν· Ἐξ ἀνθρώπων· ἐφο-
 βῆντο τὸ λαόν· ἅπαντες γὰρ εἶχον τὸ Ἰωάννου,
 ὅτι ὄντως προφήτης ἦν.

33 Καὶ ἀποκριθέντες, λέγουσιν τῷ Ἰησοῦ· Οὐκ οἶδα-
 μεν· Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, λέγει αὐτοῖς· Οὐ-
 δὲ ἰγὼ λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποίω.

Κεφ. 13. 12.

1 Καὶ ἦρξατο αὐτοῖς ἐν βηθσαβουλαῖς λέγειν·
 Ἀμπελῶνα ἐφύτυσεν ἄνθρωπος, καὶ
 περιέθηκε φραγμὸν, ἐώρυσεν ὑπολαλίον, καὶ
 οικοδόμησε πύργον, καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωρ-
 γοῖς· καὶ ἀπεδήμησε.

2 Καὶ

- 2 Καὶ ἀπέσφηλε πρὸς τὰς γεωργὰς τὴν κομρῶν
 δῶλον, ἵνα πρὸς τὸν γεωργῶν λάβῃ ἀπὸ τοῦ
 καρπῶν τῶν ἀμπελῶν.
- 3 Οἱ δὲ, λαβόντες αὐτὸν, ἔδωκαν, καὶ ἀπέ-
 σφλαν κενόν.
- 4 Καὶ πάλιν ἀπέσφηλε πρὸς αὐτὰς ἄλλον
 δῶλον· καὶ κείνον λιθοβολήσαντες ἐκεφα-
 λαίωσαν, καὶ ἀπέσφλαν ἡπιωμαρμόν.
- 5 Καὶ πάλιν ἄλλον ἀπέσφηλε· καὶ κείνον
 ἀπέκταναν· καὶ πολλὰς ἄλλας, τὰς μὲν δέ-
 ροῖτες, τὰς δὲ ἀποκλείνοντες.
- 6 Ἐπὶ ἔν ἑνα υἱὸν ἔχων ἀγαπητὸν αὐτοῦ,
 ἀπέσφηλε καὶ αὐτὸν πρὸς αὐτὰς ἔχασον, λέγων·
 Ὅτι εὐτε ἀπήσαν τὸν υἱὸν μου.
- 7 Ἐκεῖνοι δὲ οἱ γεωργοὶ εἶπον πρὸς ἑαυτὰς·
 Ὅτι ἔτις ἐστὶν ὁ κληρονόμος· δεῦτε, ἀποκλεί-
 νωμεν αὐτὸν, καὶ ἡμῶν ἔσται ἡ κληρονομία.
- 8 Καὶ λαβόντες αὐτὸν, ἀπέκταναν, ἐξέβω-
 λον ἔξω τῶν ἀμπελῶν.
- 9 Τί ἔν ποιήσῃ ὁ κύριος τῶν ἀμπελῶν;
 Ἐλύσει καὶ ἀπολέσει τὰς γεωργὰς, καὶ δώσει
 τὸν ἀμπελῶνα ἄλλοις.
- 10 Οὐδὲ τὸ γεφύριον ταύτιον ἀνέγνωσι; Λίθον
 ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοὶ, ἐστὶν
 ἐξηνήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας.
- 11 Παρὰ Κυρίου ἐγλύετο αὕτη· καὶ ἔστι θα-
 μαση εἰς ὀφθαλμοῖς ἡμῶν;
- 12 Καὶ ἐζήτησεν αὐτὸν κραλῆσαι· ἐξέφοβήθησαν
 τὸν

- τὸν ὄχλον ἔγνωσαν γὰρ ὅτι παρὸς αὐτοὺς τῶν
 φαρισαίων εἶπε· Ἐαφέντες αὐτὸν ἀπῆλθον.
- 13 Καὶ τότε ἐλθοῦσι παρὸς αὐτὸν πῖνας τῶν φα-
 ρισαίων καὶ τῶν Ἡρωδιανῶν, ἵνα αὐτὸν
 ἀρδύσασιν λόγῳ.
- 14 Οἱ ἰελθόντες λέγουσιν αὐτῷ· Διδάσκαλε,
 οἶδαμεν ὅτι ἀληθὴς εἶ, καὶ ἐμὲλξοι παρὸς
 ἐδδαίῳ· ἐ γὰρ βλέπεις εἰς τὸ πρῶτον ἀνθρώ-
 πων, ἀλλ' ἐπὶ ἀληθείας τὸ ὄδον τοῦ Θεοῦ δι-
 δάσκεις· Ἐξέσι κλύσον Καίσαρα δέναι, ἢ ὁ
 δῶμεν, ἢ μὴ δῶμεν;
- 15 Οἱ δὲ, εἰδὼς αὐτῶν τὸ ὑπόκριτον, εἶπεν
 αὐτοῖς· Τί με πειράζετε; φέρετέ μοι δυνά-
 ροι, ἵνα ἴδω.
- 16 Οἱ ἰωύτηκαν. Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τίνος
 ἢ εἰκὼν αὐτῆς ἢ ἐπιγραφή; Οἱ δὲ εἶπον
 αὐτῷ· Καίσαρος.
- 17 Καὶ τότε λαθεῖς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς·
 Ἀπόδοτε τὰ Καίσαρος τοῦ Καίσαρι· καὶ τὰ
 τοῦ Θεοῦ, τῷ Θεῷ. Καὶ ἐθαύμασαν ἐπὶ αὐτῷ.
- 18 Καὶ ἔρχοντο Σαδδουκαῖοι παρὸς αὐτὸν, οἱ
 πῖνες λέγουσιν ἀνάστασιν μὴ εἶναι· καὶ ἐπηρώ-
 τησαν αὐτὸν, λέγοντες·
- 19 Διδάσκαλε· Μωσῆς ἔγραψεν ἡμῖν, ὅτι
 εἰς τὸν Θεὸν ἀδελφὸς ἀποταίη, καὶ κατελίπη
 γυναῖκα, καὶ τέκνα μὴ ἀφῆ, ἵνα λάβῃ ὁ
 ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ ἰξανα-
 στήσῃ ἀπὲρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.

20 Ἐπὶ αὐτῶν ἀδελφοὶ ἦσαν· καὶ ὁ πρῶτος
ἔλαβε γυναῖκα, καὶ ἀποθνήσκων σὺν ἀφῆκε
σπέρμα.

21 Καὶ ὁ δεύτερος ἔλαβεν αὐτὴν, ἔαπέ-
θανε, καὶ ἐδὲ αὐτὸς ἀφῆκε σπέρμα· καὶ ὁ τρί-
τος αὐτῆς.

22 Καὶ ἔλαβον αὐτὴν οἱ ἐπὶ, καὶ σὺν ἀφῆ-
καν σπέρμα· ἐκάστη πάντων ἀπέθανε καὶ ἡ
γυνή.

23 Ἐν τῇ ἔν ἀναστάσει, ὅταν ἀναστῶσι, τίνας
αὐτῶν ἔσται γυνή; οἱ γὰρ ἐπὶ ἔχον αὐτὴν
γυναῖκα.

24 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς·
Οὐδέ τι τῶν τούτων πλανᾶσθε, μὴ εἰδότες τὰς γρα-
φάς, μηδὲ τὴν δυνάμιν τοῦ Θεοῦ;

25 Ὅταν γὰρ ἐκ νεκρῶν ἀναστῶσιν, ἔτε γα-
μήσιν, ἔτε γαμίσιον; ἀλλ' εἰσὶν ὡς ἄγγελοι
οἱ ἐν τοῖς ἔθροισι.

26 Περὶ τῶν νεκρῶν, ὅτι ἐγείρον, σὺν ἀνέγνωτε
ἐν τῇ βίβλῳ Μωσέως, ἐπὶ τῷ βύσσῳ ὡς εἶπεν
αὐτῷ ὁ Θεός, λέγων· Ἐγὼ ὁ Θεός Ἀβραάμ,
καὶ ὁ Θεός Ἰσαάκ, καὶ ὁ Θεός Ἰακώβ;

27 Οὐκ ἔστιν ὁ Θεός νεκρῶν, ἀλλὰ Θεός ζών-
των· ὑμεῖς ἔν πολὺ πλανᾶσθε.

28 Καὶ προσελθὼν εἰς τὸν γαμιμασίον, ἀκρό-
σας αὐτῶν συζητήτων, εἰδὼς ὅτι χαλῶς
αὐτοῖς ἀπεκρίθη, ἐπηρώτησεν αὐτόν· Ποία
ἐστὶ πρώτη πιεζὼν ἐν ἑσθή;

- 29 Ο Ἰησοῦς ἀπεκρίθη αὐτῷ· Ὅτι περὶ πάντων τῶν ἐθνῶν· Ἄκουε Ἰσραὴλ, Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν, Κύριος εἷς ἐστίν·
- 30 Καὶ ἀγαπήσῃς Κύριον τὸν Θεόν σου ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς δυνάμεώς σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ἰσχύος σου· αὕτη ἐστὶν ἐπιτολή πρώτη.
- 31 Καὶ δεύτερον ὁμοίαν αὕτη· Ἀγαπήσῃς τὸ πλησίον σου ὡς σεαυτὸν· μείζων τούτων ἀλλήλων ἐπιτολή οὐκ ἔστι.
- 32 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ γραμματεὺς· Καλῶς, διδάσκαλε, ἐπὶ ἀληθείας εἶπας, ὅτι εἷς ἐστὶν Θεός, ἔστιν ἕνα ἄλλο πλὴν αὐτοῦ.
- 33 Καὶ τὰ ἀγαπᾶν αὐτὸν ἐξ ὅλης τῆς καρδίας, ἔστι ἐξ ὅλης τῆς σωείσεως, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ἰσχύος, καὶ τὰ ἀγαπᾶν τὸ πλησίον ὡς ἑαυτὸν, πλεονέκτον ἐστὶ πάντων τῶν ὁλοκαυτωμάτων καὶ τῶν ἡμετέριων.
- 34 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἰδὼν αὐτὸν ὅτι νομιμαστὴς ἀπεκρίθη, εἶπεν αὐτῷ· Οὐ μακρὰν εἶ δὲ πρὸς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ. Καὶ ἄλλοις ἐπέταλλε· μα αὐτὸν ἐπερωτήσασθε.
- 35 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπε, διδάσκων ἐν τῷ ἱερῷ· Πῶς λέγουσιν οἱ γραμματεῖς, ὅτι ὁ Χριστὸς υἱὸς ἐστὶ Δαβὶδ;
- 36 Αὐτὸς γὰρ Δαβὶδ εἶπεν ἐν τῷ πνεύματι καὶ τῷ ἁγίῳ· Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου· Κάθεσθαι δεξιάν μου, ἕως αὐτοῦ ἡμετέρας ἰσχύος

ἔχθρὸς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου.

37 Αὐτὸς οὐκ Δαβὶδ λέγει αὐτὸν κύριον· ἔ-
ποίησεν ἕως αὐτῆς ἑσθίαι; Καὶ ὁ πολὺς ὄχλος
ἤκουεν αὐτῆς ἡδέως.

38 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς ἐν τῇ διδασκαλίᾳ αὐτοῦ·
Βλέπετε ἀπὸ τῶν γραμματέων τῶν θελότων
ἐν ἑσθίαις περιπατεῖν, καὶ ἁσπασμὸς ἐν ταῖς
ἀγροφαῖς,

39 Καὶ περιθρονηθείας ἐν ταῖς συναγω-
γαῖς, ἔ περιθροκλισίας ἐν τοῖς δείπνοις·

40 Οἱ κηλοδίωνες τὰς οἰκίας τῶν χηρῶν, καὶ
περφάσθαι μακροὺς περιζυχομένοι· ἔτοι λή-
ψον) περιουσιότερον κέρμα.

41 Καὶ κηθίσας ὁ Ἰησοῦς κητέναντα ἔγα-
ζοφυλακίαι, ἔθεώρη πῶς ὁ ὄχλος βάλλει
καλαθὸν εἰς τὸ γαζοφυλάκιον. καὶ πολλοὶ
πολλοὶ ἔβαλλον πολλά.

42 Καὶ ἔλθῃσα μία χήρα πτωχὴ ἔβαλε
λεπτὰ δύο, ὅ ἐστι κηδράντης.

43 Καὶ περισηκασάμενος τὰς μαθηταῖς
αὐτοῦ λέγει αὐτοῖς· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι
ἡ χήρα αὕτη ἢ πτωχὴ περιουσιότερον πάντων βέ-
βληκε ἔβαλον εἰς τὸ γαζοφυλάκιον.

44 Πάντες γὰρ ἐκ τῆς περιουσιότητος αὐτοῖς
ἔβαλον· αὕτη δὲ ἐκ τῆς ὑπερήσεως αὐτῆς
πάντα ὅσα εἶχεν ἔβαλεν, ὅλον τὸν βίον
αὐτῆς.

Κεφ.

Κεφ. ιγ'. 13.

- 1 **Κ**αὶ ἐκ πορεύσεως αὐτῶ ἐκ τῆς ἱερῆ, λέγει αὐτοῖς εἰς τὸ μαθητῶν αὐτῶ· Διδάσκαλε, ἴδε πόσα ποιήσοι. Ἐ πόσα καὶ οἰκοδομήσει.
- 2 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Βλέπετε ταῦτα· οὐκ ἔστι μεγάλας οἰκοδομὰς· ἐμὴ ἀφαιρῆ λίθος ἐπὶ λίθου, ὃς ἔμὴ καταλυθῆ.
- 3 Καὶ κατηρώμενος αὐτῶ εἰς τὸ ὄρος τὸ ἑλαιῶν κατέβαινε τῆς ἱερῆ, ἐπηρώτων αὐτὸν καὶ ἰδοὺσα Πέτρος καὶ Ἰάκωβος καὶ Ἰωάννης καὶ Ἀνδρέας.
- 4 Εἰπὲν ἡμῖν πότε ταῦτα ἔσται, καὶ ἵκεν τὸ σημεῖον ὅταν μέλλῃ πάντα ταῦτα σιωπῆσαι.
- 5 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς αὐτοῖς, ἤρξατο λέγειν· Βλέπετε μή τις ὑμῶν πλανηθῆ.
- 6 Πολλοὶ γὰρ ἐλθούσιν ἐπὶ τῶ ὀνόματί μου, λέγοντες· Ὅτι ἐγὼ εἰμι· καὶ πολλὰς πλανήσουσιν.
- 7 Ὅταν δὲ ἀκούσῃτε πολέμους καὶ ἀκοῆς πολέμων, μὴ θροεῖσθε· δεῖ γὰρ γινέσθαι· ἀλλ' ἔπι τοῦ τέλους.
- 8 Ἐγερθήσονται γὰρ ἔθνη ἐπὶ ἔθνη, καὶ βασιλεία ἐπὶ βασιλείαν· καὶ ἔσονται σεισμοὶ καὶ ταραχῆς, καὶ ἔσονται λιμοὶ καὶ παραχαί.
- 9 Ἀρχαὶ ὠδίνων ταῦτα. βλέπετε δὲ ὑμεῖς ἑαυτὰς· ὡς δὲ δούλου γὰρ ὑμῶς εἰς σωτηρίαν καὶ εἰς συναγωγὰς· δαρήσεσθε, καὶ ἐπὶ ἡγεμόνων καὶ βασιλέων σταθήσεσθε ἕνεκεν ἑμῶν, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς.

10 Καὶ

10 Καὶ εἰς πάντα τὰ ἔθνη δεῖ πορευθῆναι τὸ εὐαγγέλιον.

11 Ὅταν ᾗ ἀγάθωσιν ὑμῶς ὡς οὐκ ἐπιδοκίμαστοι
μὴ περιμενεῖτε τί λαλήσητε, μηδὲ μελε-
τᾶτε· ἀλλ' ὅταν δοθῇ ὑμῖν ἐν ἐκείνῃ τῇ ᾠρᾷ,
τῷ ῥῶμα λαλεῖτε· ἔγχείτε ὑμεῖς οἱ λαλοῦντες,
ἀλλὰ τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον.

12 Παραδώσῃ ἁδελφὸς ἁδελφὸν εἰς θάνατον,
καὶ πατήρ τέκνον· καὶ ἐπαναστήσονται τέκνα
ἐπὶ γονεῖς, καὶ θανατώσονται αὐτούς.

13 Καὶ ἔσεσθε μισοῦμενοι ὑπὸ πάντων διὰ
τὸ ὄνομα μου· ὁ δὲ ὑπομένει εἰς τέλος,
ἐπιθήσει τὸ σῶμα.

14 Ὅταν ᾗ ἴδητε τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως
τὸ ῥηθὲν ὑπὸ Δαυιδ ὅτι πορευθήτω, ἕως ὅπου
ἔδει, (ὁ ἀναγιγνώσκων νοείτω) τότε οἱ ἐν τῇ
Ἰουδαίᾳ φυγέτωσαν εἰς τὰ ὄρη·

15 Ὅσοι ἐπὶ τῆς δώματος, μὴ καταβάτω εἰς
τὴν οἰκίαν, μηδὲ εἰσελθέτω ἄρα ἢ ἐκ τῆς
οἰκίας αὐτοῦ.

16 Καὶ ὁ εἰς τὸ ἄρον ἄνθρωπος ἐπιστρέψατω εἰς
τὰ ὀπίσω, ἄρα τὸ ἰμάτιον αὐτοῦ.

17 Οὐκ ᾗ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχέουσιν καὶ ταῖς
θηλαζούσιν ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις.

18 Προσδύχεσθε ἵνα μὴ γίνῃ ἡ φυγὴ ὑμῶν
χρημάτων.

19 Ἔσονται γὰρ αἱ ἡμέραι ἐκείναι θλίψεις,
οἷα ἔγέννηται ποικίλη ἀπὸ δόξης κλίσεως ἧς

Ἡ ἔκτισεν

- ἔκλισεν ὁ Θεὸς, ἕως ἔτι νῦν, καὶ ἔτι μὴ γνῶν).
 20 Καὶ εἰ μὴ Κύριος ἐκολόβωσε ταῖς ἡμέρας,
 ὅσα αὐτῷ ἐσώθη πάντες σάρξ· ἀλλὰ διὰ τὰς
 ἐκλεκτὰς ἕως ἐξαλέξασθαι, ἐκολόβωσε ταῖς ἡμέρας.
 21 Καὶ τότε εἰς ὑμῖν εἶπη· Ἴδὲ, ὡς οὗτος ὁ
 Χριστὸς· ἢ Ἴδὲ ἐκεῖ· μὴ πισύσητε.
 22 Ἐγερθήσονται γὰρ ψευδοχριστοὶ ἐν ψευδοπρο-
 φησίᾳ· καὶ δώσουσι σημεῖα καὶ τέρατα, ὡς τὰ
 ἀποστατανῶν, ἐιδωτάτων, καὶ τὰς ἐκλεκτὰς.
 23 Ὑμεῖς δὲ βλέπετε· Ἴδὲ, ὡς εἰρηκεῖ ὑμῖν
 πάντα.
 24 Ἀλλ' ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις, μὲν πῶς
 θλίψιν ἐκείνῳ, ὃ ἡλιθιοσκοκοθήσει, ἐν ἡ-
 σελωῖν ἔδωκε τὸ φέγγος αὐτῆς.
 25 Καὶ οἱ ἀστέρες ἔσταν ἔσον) ἐκπίπτουσαι, ἐν
 αἰδυνάμεις αἰ ἐν ταῖς ἔρατοῖς σελουθήσονται).
 26 Καὶ τότε ὄψονται τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον
 ἐν νεφέλαις μὲν δυνάμεως πολλῆς καὶ δόξης.
 27 Καὶ τότε ἀποσελεῖ τὰς ἀγγέλους αὐτῶν, καὶ
 ἐπισυναγάξει τὰς ἐκλεκτὰς αὐτῶν ἐκ τῶν τεσσά-
 ρων ἀνέμων, ἀπ' ἀκρῶν γῆς ἕως ἀκρῶν ἔρατον.
 28 Ἀπὸ τῆς συκῆς μάρτυρετε τὸ ἄρξασθαι ὅταν
 αὐτῆς ἡδη ὁ κλάδος ἀπαλὸς γνῶν), καὶ ἐκφύ-
 τὰ φύλλα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς τὸ τέλος ἐστίν.
 29 Οὕτως καὶ ὑμεῖς, ὅταν ταῦτα ἴδητε γινό-
 μενα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς ἐστιν ἐπὶ θύραις.
 30 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔτι μὴ παρέλθῃ ἡ
 γνῶσις αὐτῆ, μέχρις ἔτι πάντα ταῦτα γνῶν).

- 31 Οὐρανός κὴ γῆ παρελεύσονται· οἱ δὲ λόγοι μὴ ἐμὴ παρέλθωσι.
- 32 Περὶ τῆς ἡμέρας ἐκείνης ἔτι ὥρας οὐδεὶς οἶδεν, ἐδὲ οἱ ἄγγελοι οἱ ἐν οὐρανῷ, ἐδὲ ὁ υἱὸς τοῦ πατρὸς.
- 33 Βλέπετε, ἀρρηνεῖτε κὴ προσέχετε· ἐκ οἴδατε γὰρ πότε ὁ καιρὸς ἐστίν.
- 34 Ὡς ἄνθρωπος ἀπόδημος· ἀφείς τιῶν οἰκίαν αὐτῆ, καὶ δὲς τοῖς δούλοις αὐτῆς τιῶν ἐξουσίαν, καὶ ἐκάστη τὸ ἔργον αὐτῆ, καὶ τῶν θυρωρῶν ἐνεέλατο ἵνα γρηγορῇ.
- 35 Γρηγορεῖτε ἔν, (ὅσα οἴδατε γὰρ πότε ὁ κύριος τῆς οἰκίας ἔρχεται), ὄψε, ἢ μεσονυκτίας, ἢ ἀλεκτοροφωνίας, ἢ παροῦσι)
- 36 Μὴ ἐλθὼν ἐξαίφνης, σύρει ὑμᾶς καθύδουνας·
- 37 Ἄ γὰρ ὑμῖν λέγω, πᾶσι λέγω· Γρηγορεῖτε.

Κεφ. ιδ'. 14.

- 1 Ἦν δὲ τὸ πᾶχος ἔτι ἄζυμα μετ' δύο ἡμέρας. ἔζητήσαν οἱ ἀρχιερεῖς ἔτι οἱ γραμματεῖς πῶς αὐτὸν ἐν δόλῳ κραλήσαντες ἀποκλείνωσιν.
- 2 Ἐλέγον δὲ· Μὴ ἐν τῇ ἑορτῇ, μήποτε θόρυβος ἔσται τοῦ λαοῦ.
- 3 Καὶ ὄντος αὐτῆ ἐν Βηθανίᾳ ἐν τῇ οἰκίᾳ Σίμωνος τοῦ λεπεθῆ, κατὰ κρήνην αὐτῆ, ἦλθε γυνὴ ἔχουσα ἀλάβασρον μύρου, νάρδος πισικῆς πολυτελέος· ἔστυψεν αὐτὴ τὸ ἀλάβασρον, κατέχευεν αὐτῆ ἐπὶ τὴν κεφαλῆς.

Η 2 4 Ησαν

4 Ἦσαν δὲ λίτες ἰσραηλιῖταις ὡς ἐσθλῆς,
 ἔλεθρονες; εἰς τί ἡ ἀπώλεια αὐτῆ ἔμυρα
 γέρονεν;

5 Ἠδύατο γὰρ τῶν περὶ αὐτῶν ἐπιπαινεσι-
 κησίων δόξαριων, καὶ δοθῆναι τοῖς πτωχοῖς.
 Καὶ ἐνεβεβημῶντο αὐτῇ.

6 Οἱ ἰησοῦς εἶπεν· Ἄφες αὐτήν. Ἡ αὐτῆ κή-
 πος παρέχεις; καλὸν ἔργον ἐργάσατο εἰς ἐμέ·

7 Πάντοτε γὰρ τὰς πτωχὰς ἔχεις μετ' ἐαυ-
 τῶν, καὶ ὅταν θέλῃτε, δωάσατε αὐτὰς ὅτι
 ποιῶσαι· ἐμε δὲ ἔκ παντοῦτε ἔχεις.

8 Οἱ εἶχεν αὐτή, ἐποίησε· ὡς ἐλάβε μυ-
 εῖσαι μετὰ τὸ σῶμα εἰς τὸ ἐνταφιασμένον.

9 Ἀλλὸ λέγω ὑμῖν, ὅπως αὐτὴ κηρυχθῆ τὸ
 εὐαγγέλιον ἐξ εἰς ὅλον τὸ κῆσμον, ἔδ' ἐποί-
 ησεν αὐτή, λαλήθησε εἰς μνημόσυνον αὐτῆ.

10 Καὶ οἱ ἰσραὴλ οἱ σκαριώτης, εἰς τῶν δώδε-
 κα, ἀπῆλθε ὡς τὰς δεξιερῆς, ἵνα ὡρα-
 δῶ αὐτὸν αὐτοῖς.

11 Οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐχάρησαν· καὶ ἐπηγάει αὐτὸν
 αὐτῶν δεξιερῆς δεξιῶν. ἔζητή πῶς εὐκρίτως
 αὐτὸν ὡραδῶ.

12 Καὶ τῇ περὶ τῆς ἡμέρας τῆς ἀζύμων, ὅτε τὸ
 πάχος ἔθνον, λέγουσιν αὐτῶ οἱ μαθηταὶ
 αὐτοῦ· Πῶς θέλεις ἀπελθόντες ἐτοιμασώμεθα ἵνα
 φάγῃς τὸ πάχος;

13 Καὶ ἀπετάθη δὲ οἱ μαθητῶν αὐτοῦ, καὶ
 λέγει αὐτοῖς· Ἰπάγετε εἰς τὴν πόλιν, καὶ
 ἀπαντήσατε

ἀπαντήσά ὑμῖν ἄνθρωπος κροτάμιον ὕδατος
βασαζών· ἀκηλευθήσατε αὐτῷ.

14 Καὶ ὅτε ἐὰν εἰσέλθῃ, εἶπατε τῷ οἰκο-
δεσπότῃ· Ὅτι ὁ διδασκαλὸς λέγει· Πῶς ἐστὶ
τὸ κροτάμιον ὅτε τὸ πᾶχος μὲν τῶ μαθητῶν
μεσ φάγω;

15 Καὶ αὐτὸς ὑμῖν δείξῃ ἀνάγειον μέγα ἐσρω-
μῆρον, ἐτοιμὸν· ἐκεῖ ἐτοιμάσατε ἡμῖν.

16 Καὶ ἐξῆλθον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἔηλθον
εἰς τὴ πόλιν, ἔδωρον κατὰς εἶπεν αὐτοῖς· καὶ
ἠτοίμασαν τὸ πᾶχος.

17 Καὶ ὀψίας γηνομένης ἔρχετο μὲν τῶ δώδεκα.

18 Καὶ ἀνακείμενων αὐτῶν, ἔεπαθόντων, εἶπεν
ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι εἷς ἐξ ὑμῶν
ἐσθραδώσῃ με, ὁ ἐσθίων μετ' ἐμοῦ.

19 Οἱ δὲ ἤρξαντο λυπεῖσθαι, καὶ λέγειν αὐτῷ εἷς
κατ' εἷς· Μὴ π' ἐγώ; καὶ ἄλλοι· Μὴ π' ἐγώ;

20 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Εἷς ἐκ τῶ δώδε-
κα, ὁ ἐμβαπτίματος μετ' ἐμοῦ εἰς τὸ τετυβλίον.

21 Οὐ μὲν ἕως ἄνθρωπος ὑπάγα, κατὰς γέ-
γραπτόν ἐστὶ αὐτοῦ· καὶ ἡ τῶ ἀνθρώπου ἐκείνου
δι' ἃ ὁ ἕως ἄνθρωπος ἐσθραδίδο· καλὸν μὲν
αὐτῷ, εἰ ὅτε ἐγλυνήθῃ ὁ ἀνθρωπος ἐκεῖνος.

22 Καὶ ἐσθίοντων αὐτῶν, λαβὼν ὁ Ἰησοῦς ἄρ-
τον, σύλογησας ἐκλασε· καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς, καὶ
εἶπε· Λάβετε, φάγετε· τῶτό ἐστι τὸ σῶμα μου.

23 Καὶ λαβὼν τὸ πῶχος, συλαρησας
ἔδωκεν αὐτοῖς· καὶ ἔπιον ἐξ αὐτοῦ πᾶντες.

Η 3

24 Καὶ

24 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τὸ τόπος τὸ αἶμαί μου
τὸ τῆς κοινῆς Δυστήκης, τὸ ὡς πολλῶν
ἐκχυρόμενον.

25 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐκεῖ ἐ μὴ πῖω ἐν
ζῆνῃ μαζὸς τ' ἀμπέλου, ἕως τ' ἡμέρας ἐκείνης,
ὅταν αὐτὸ πῖνω καινὸν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.

26 Καὶ ὑμνησάμενοι ἐξῆλθον εἰς τὸ ὄρεον τῶν
ἐλαιῶν.

27 Καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι πάντες σκαυ-
δαλιωθήσεσθε ἐν ἐμοί ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ· ὅτι
γέγραπ'· Παράξω τ' ποιμένα, καὶ Δυσκορ-
πιθήσε' πρὸς σέβαστα.

28 Ἀλλὰ μὴ τὸ ἐγερθῆναι με, παράξω ὑμᾶς
εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

29 Ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῶν· Καὶ εἰ πάντες
σκαυδαλιωθήσεσθε, ἀλλ' ἐγὼ οὐκ ἐγώ.

30 Καὶ λέγει αὐτῶν ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν λέγω σοι,
ὅτι σήμερον ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ, πρὶν ἢ δὲ
ἀλέκθρα φωνῆσαι, τρεῖς ἀπαρνήσονται με.

31 Ὁ Ἰησοῦς ἐκ πελοσῶν ἔλεγε μαζῶν· Ἐάν με
δέη σιωποῦναι σοι, ἐ μὴ σε ἀπαρνήσονται.
Ὡσαύτως ἡ καὶ πάντες ἔλεγον.

32 Καὶ ἔρχον' εἰς χωρίον ἐ τὸ ὄνομα Γεθση-
μαθῆ· καὶ λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Καθί-
σατε ὧδε ἕως ἡσπέρου ἔσται.

33 Καὶ ὡς λαμβάνει τὸ Πέτρον ἐ τὸν Ἰά-
κωβον καὶ Ἰωάννην μεθ' ἐαυτῶν· καὶ ἤρξαντο
ἐπιταμβεῖσθαι καὶ ἀδουρνῆναι.

34 Καὶ

- 34 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Περὶλυπὸς ἐστὶν ἡ ψυχὴ
μαῖως θανάτου· μένετε ὡδὲ, καὶ ζηρηθῆτε.
- 35 Καὶ ἀπελθὼν μικρὸν, ἐπισεν ἐπὶ τῆ γῆς· καὶ
προσηύχετο ἵνα, εἰ δυνατὸν ἐστὶ, παρέλθῃ ἀπὸ
αὐτῶν ἡ ὥρα.
- 36 Καὶ ἔλαβεν Ἀββᾶ ὁ πατὴρ, πάντα δυνατὰ
σοι· παρένεγκε τὸ ποτήριον ἀπὸ ἐμοῦ τούτο,
ἀλλ' ἐγὼ θέλω, ἀλλὰ τί σύ.
- 37 Καὶ ἔρχεται καὶ δὲξάμενος αὐτὸς καθύδουνας·
καὶ λέγει τῷ Πέτρω· Σίμων, καθύδουνας; ὅσα
ἴχθυας μίαν ὥραν ζηρηθῆσαι;
- 38 Γρηγορεῖτε καὶ προσεύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσελ-
θῆτε εἰς πειρασμόν. τὸ μὲν πνεῦμα θέλει, ἡ
δὲ σαρκὶς ἀσθενεῖς.
- 39 Καὶ πάλιν ἀπελθὼν προσήύξατο, τὸ αὐτὸν
λόγον εἰπὼν.
- 40 Καὶ ὑποσπέρψας ὄρεν αὐτὸς πάλιν κα-
θύδουνας, (ἦσαν γὰρ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν βε-
βαρημένοι) καὶ ἐκῆρσαν τί αὐτῶν ἀποκριθῶσι.
- 41 Καὶ ἔρχεται τὸ τρίτον, καὶ λέγει αὐτοῖς· Καθύ-
δετε τὸ λοιπὸν καὶ ἀναπαύεσθε· ἀπέχθη ἡλθεν
ἡ ὥρα· ἰδοὺ, ὁ Θεοῦ υἱὸς ἔρχεται εἰς
ταὶ χεῖρας τοῦ ἀμαρτωλοῦ,
- 42 Ἐξείρεσθε, ἄσωτον· ἰδοὺ, ὁ Θεοῦ υἱὸς με-
τήγικε.
- 43 Καὶ ὁθέως, ἐπ' αὐτῶν λαλεῖ ἡ ψαλ-
μὴς· Ἰδοὺ, εἰς ἂν τῶν δώδεκα, καὶ μετ' αὐτῶν
ὄχλος πολὺς μετ' μαχαρῶν ἐξύλων, ὡς

τῶν δὲ χειρῶν καὶ τῶν γραμματίων καὶ τῶν
πρῆσβυτέρων.

44 Διδώκει ὁ ἰσχυρὸς αὐτὸν σύσσημον
αὐτοῖς, λέγων· Ὅτι αὐτὸς ἐστὶ
κρατῆσαι αὐτὸν, καὶ ἀπαγαγεῖ ἀσφαλῶς.

45 Καὶ ἔλθων, εὐθέως προσελθὼν αὐτῷ, λέγει·
Ῥαββί, Ῥαββί. καὶ κατεφίλησεν αὐτόν.

46 Οἱ δὲ ἐπίβαλον ἐπ' αὐτὸν ἐκ τῆς χειρὸς αὐ-
τῶν, καὶ ἐκράτησαν αὐτόν.

47 Εἷς δὲ ἵς τῶν παρεστηκότων ἀσπασάμενος
τὸν μάκαρον, ἔποισε τὸ δάκρυον ἐκ τῆς χειρὸς,
καὶ ἀφείλεν αὐτοῦ τὸ ὄμμα.

48 Καὶ δόκοντες οἱ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς·
Ὡς ἐπὶ ληστῶν ἐξήλθετε μετὰ μακρῶν καὶ ξύ-
λων συλλαβεῖν με;

49 Καθ' ἡμέραν ἤμενοι πρὸς ὑμᾶς ἐν τῷ ἱερῷ
διδάσκων, καὶ οὐκ ἐκράτησατέ με. ἀλλ' ἵνα
πληρωθῶσιν αἱ γραφαί.

50 Καὶ ἀφέντες αὐτὸν πάντες ἔφυγον.

51 Καὶ εἷς ἵς νεανίσκος ἠκολούθη αὐτῷ,
περιβεβλημένος σινδόνα ἐπὶ γυμνοῦ· καὶ
κραῖεν αὐτὸν οἱ νεανίσκοι.

52 Ὁ δὲ καταλιπὼν τὴν σινδόνα, γυμνὸς ἔφυγεν
ἀπ' αὐτῶν.

53 Καὶ ἀπήγαγον τὸν Ἰησοῦν πρὸς τὸν δὲ χειρεῖα,
καὶ σπείρον αὐτῷ πάντας οἱ δὲ χειρεῖς καὶ οἱ
πρῆσβυτέρους καὶ οἱ γραμματεῖς.

54 Καὶ ὁ Πίτρος δὲ μακρόθεν ἠκολούθησεν
αὐτῷ

αὐτῶν ἕως ἔστω εἰς πλὴν αὐτῶν ἔδραμεν
 καὶ ἡ συγκατήμω μὲν τῶν ἰσραηλιτῶν, καὶ
 ἡ ἡμετέρα ἰσραηλιτῶν πρὸς φῶς.

55 Οἱ δὲ ἄρχιερεῖς καὶ ὅλον τὸ συνέδριον ἐζήτησαν
 καὶ τὸν Ἰησοῦ μαρτυρεῖν, εἰς τὸ θανάτωσαι
 αὐτόν, καὶ ἔχουσιν ὄρατον.

56 Πολλοὶ γὰρ ἐψευδομαρτύρουν κατ' αὐτῶν
 καὶ ἴσταν αὐτῶν μαρτυρεῖν ὅτι ἦσαν.

57 Καὶ Ἰανὴς ἀναστάντες, ἐψευδομαρτύρουν
 κατ' αὐτοῦ, λέγοντες·

58 Ὅτι ἡμεῖς ἠκούσαμεν αὐτῶν λέγοντες· Ὅτι ἐξῆλθον
 καὶ ἀλύτῳ τῷ ναὸν τῶν ἱερῶν καὶ ἠεροποιήθησαν ἑξήκοντα
 τριῶν ἡμερῶν ἄλλον ἠεροποιήθησαν οἰκοδομήσαν.

59 Καὶ ἐδὲ ἕτως ἴση ἡ μαρτυρία αὐτῶν.

60 Καὶ ἀναστὰς ὁ ἄρχιερός εἰς τὸ μέσον,
 ἐπηρώτησε τὸν Ἰησοῦν, λέγων· Οὐκ ἀποκρίνη
 ἐδὲν; ἢ ἐτόίσε κατὰ μαρτυρεῖσιν;

61 Ὁ δὲ ἐσιώπησεν, καὶ ἐδὲν ἀπεκρίνατο. Πάλιν
 ὁ ἄρχιερός ἐπηρώτησεν αὐτόν, καὶ λέγει αὐτῷ·
 Σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ ἁγίου Ἰωάννου;

62 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἐγὼ εἰμι. καὶ ὄψεσθε τὸ
 υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου κατὰ δεξιῶν τῆς δυνά-
 μεως, καὶ ἐρχόμενον μετὰ τῶν νεφελῶν ἔρχεσθαι.

63 Ὁ δὲ ἄρχιερός, ἀφροῦξας τὰς χιτῶνας
 αὐτῶν, λέγει· Τί ἐπιχρεῖσαι ἔχομεν μαρτύρων;

64 Ἡκούσατε τῆς βλασφημίας· τί ὑμῖν
 φαίνεται; Οἱ δὲ πάντες κατέκριναν αὐτόν εἶναι
 ἔνοχον θανάτου.

Η 5

65 Καὶ

65 Καὶ ἤρξατο πῖνος ἐμπύειν αὐτῶν, ἔπει-
καλύπτειν τὸ πρῶτον αὐτῶν, καὶ κηλαφίζειν
αὐτὸν, ἔλεβεν αὐτῶν Προφήτουσον. Ἐοίονη-
ρέ) ραπίσμασιν αὐτὸν ἔβαλλον.

66 Καὶ ὄνθη) Πέτρος ἐν τῇ αὐτῇ κῆτω,
ἔρχε) μία τῶν παιδικῶν τῶν δούλων.

67 Καὶ ἰδῶσα τὸ Πέτρον θερμομόνον, ἐμ-
βλέψασα αὐτῶν, λέγει· Καὶ σὺ μὲν τῶν Ναζα-
ρενοῦ Ἰησοῦ ἦσθα.

68 Ὁ δὲ ἠνήσατο, λέγων· Οὐκ οἶδα, ἐδὲ ἐπί-
στάμεν πὸς λέγεις. Καὶ ἐξῆλθεν ἔξω εἰς τὸ
πρῶτον· καὶ ἀλέκτωρ ἐφώνησε.

69 Καὶ ἡ παιδικὴ ἰδῶσα αὐτὸν πάλιν, ἤρξατο
λέγειν τοῖς παρρησῆσιν· Ὅτι ἔτος ἐξ αὐτῶν ἐστιν.

70 Ὁ δὲ πάλιν ἠνείθε· Καὶ μὲν μικρὸν πάλιν αἱ
παρρησῆσες ἔλεγον τῶν Πέτρῳ· Ἀληθῶς ἐξ αὐτῶν
εἶ· Ἐγὼ Γαλιλαῖος εἶ, ἔη λαλιά σου ὁμοιάζει.

71 Ὁ δὲ ἤρξατο ἀναθεματίζειν ἐομύειν· Ὅτι
οὐκ οἶδα τὸν ἄνθρωπον τῶν οὐ λέγεις.

72 Καὶ ἐκ δούλων ἀλέκτωρ ἐφώνησε. καὶ
ἀνεμνήσθη ὁ Πέτρος τῶν ῥημάτων ἃ εἶπεν αὐτῶν
ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι περὶ ἀλέκτωρα φωνῆσαι δὲς,
ἂν περιήσῃ με τρεῖς. Καὶ ἐπιβαλὼν, ἔκλαιε.

Κεφ. 14. 15.

1 Καὶ εὐθέως ἐπὶ τὸ πρῶτον συμβόλιον ποιή-
σαι τις οἱ δούλους μὲν τῶν παρρησῆσιν καὶ
γραμματέων, ἔδλον τὸ συνέδριον, δήσαι τις τῶν
Ἰησοῦ ἀπήνεγκαν, ἔπαρέδωκαν τῶν Πιλάτου.

2 Καὶ

2 Καὶ ἐπηρώτησεν αὐτὸν ὁ Πιλάτῳ· Σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ· Σὺ λέγεις.

3 Καὶ κατηγόρησεν αὐτῷ οἱ ἀρχιερεῖς πολλά.

4 Οἱ δὲ Πιλάτῳ πάλιν ἐπηρώτησεν αὐτὸν, λέγων· Οὐκ ἀποκρίνη ἕδέν; ἴδε πόσα ἔκατα μαρτυροῦσιν.

5 Οἱ δὲ Ἰησοῦς σῶκέτι ἕδέν ἀπεκρίθη, ὥστε θαυμάζειν τὸν Πιλάτον.

6 Κατὰ δὲ ἑορτῶν ἀπέλυεν αὐτοῖς ἕνα δέσμιον, ὃν ᾤκοντο ἡγεῖντο.

7 Ἦν δὲ ὁ λεηθόμενος Βαραββᾶς μὲν τῶν συστσιαστῶν δεδεμμένος, οἱ ἴνες ἐν τῇ ἐπίσφι φόνον πεποιήκωσαν.

8 Καὶ ἀναδοήσας ὁ ὄχλῳ, ἤρξατο αἰτεῖσθαι, καθὼς αἰεὶ ἐποίει αὐτοῖς.

9 Οἱ δὲ Πιλάτος ἀπεκρίθη αὐτοῖς, λέγων· Θέλετε, ἀπολύσω ὑμῖν τὴν βασιλέα τῶν Ἰουδαίων.

10 (Ἐγίνωσκε γὰρ ὅτι διὰ φόνον ᾤκοντο δεδεμμένω αὐτὸν οἱ ἀρχιερεῖς)

11 Οἱ δὲ ἀρχιερεῖς ἀνέσφωσαν τὸ ὄχλον ἵνα μάλλον τὴν Βαραββᾶν ἀπολύσῃ αὐτοῖς.

12 Οἱ δὲ Πιλάτος ἀποκριθεὶς, πάλιν εἶπεν αὐτοῖς· Τί ἔν θέλετε ποιήσω ὃν λέγετε βασιλέα τῶν Ἰουδαίων;

13 Οἱ δὲ πάλιν ἔκραξαν· Σαούρωσον αὐτόν.

14 Οἱ δὲ Πιλάτῳ ἔλεγον αὐτοῖς· Τί γὰρ κακὸν ἐποίησεν; Οἱ δὲ ὡς οὐκ ἔμελλεν ἔκραξαν· Σαούρωσον αὐτόν.

15 Οἱ δὲ

- 15 Ο Ἰησοῦς βεβλήμενος τῶν ὄχλων τὸ ἱκετὸν ποιῆσαι, ἀπέλυσεν αὐτοῖς τὸ Βαραβοῦαν, ἔπαρέδωκε τὸ Ἰησοῦν Φρασεδάστῃ, ἵνα σταυρωθῇ.
- 16 Οἱ δὲ στρατιῶται ἀπήγαγον αὐτὸν εἰς τὴν αὐλῆς, ὃ ἐστὶν περικλιμακίον· ἔσκηλασαν ὅλην τὴν σπείραν.
- 17 Καὶ ἐκέντησαν αὐτὸν πορφύραν, ἔθηκεσαν αὐτῷ πλέξαντες ἀκάνθινον στέφανον.
- 18 Καὶ ἤρξαντο ἀπαγγέλλειν αὐτὸν· Χαίρε βασιλεῦ τῶν Ἰουδαίων.
- 19 Καὶ ἐστύπτεν αὐτὸν τὸ κεφαλῶν καλῶμα, καὶ ἐκέντησαν αὐτὸν, καὶ πέντες τὰ χεῖρα ἑρωστικώσεν αὐτὸν.
- 20 Καὶ ὅτε ἐκέντησαν αὐτὸν, ἐξέδυσαν αὐτὸν τὸ πορφύραν, καὶ ἐκέντησαν αὐτὸν τὰ ἱμάτια τὰ ἴδια· ἔξάρασαν αὐτὸν ἵνα σταυρώσασιν αὐτὸν.
- 21 Καὶ ἀγαρῶσιν ὧδραστὸν πια Σίμωνα Κυρηνάιον, (ἐρχόμενον ἀπ' ἀγροῦ, τὸ πατέρα Ἀλεξάνδρου ἔραφου) ἵνα ἄρῃ τὸ σταυρὸν αὐτοῦ.
- 22 Καὶ φέρουσιν αὐτὸν ἐπὶ Γολγοθᾶ τόπον· ὃ ἐστὶν μετρημένον ὄμιον, κρηνὴς τόπος.
- 23 Καὶ ἐδίδον αὐτῷ πιεῖν ἐσμυρτισμῶν οἶνον, ὃ οὐκ ἔλαβε.
- 24 Καὶ σταυρώσασιν αὐτὸν, διμερίζον τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, βάλλοντες κλῆρον ἐπ' αὐτὰ, ἕως ἡ ἀρχῆς.
- 25 Ἦν δὲ ὥρα τρίτη, καὶ ἐσταύρωσαν αὐτὸν.
- 26 Καὶ ἦν ἐπιγραφή τῆς αἰτίας αὐτοῦ ἐπιγεγραμμένη· Ο ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΤΩΝ ΙΟΥΔΑΙΩΝ.

27 Καὶ

- 27 Καὶ πρὸς αὐτῶν σαυροῦσι δύο ληστῆς· ἓνα ἐκ δεξιῶν, καὶ ἓνα ἐξ ἐναντιῶν αὐτοῦ.
- 28 Καὶ ἐπληρώθη ἡ γραφή ἡ λέγουσα· Καὶ μὴ ἀνόμων ἐλογιάθη.
- 29 Καὶ οἱ ὄχλοι προσδύοντες ἐβλασφήμουν αὐτὸν, κινῶντες τοὺς κεφαλὰς αὐτῶν, καὶ λέγοντες· Οὐαί, ὁ κραυγῶν τὸ ναὸν, ἔστυ τρεῖς ἡμέρας οἰκοδομῶν.
- 30 Σῶσον σεαυτὸν, ἔκ τῃ βασιλείᾳ τοῦ σαυροῦ.
- 31 Ομοίως δὲ καὶ οἱ ἀρχιερεῖς ἐμπνέοντες πρὸς ἀλλήλους μὴ τῶν γραμματέων, ἔλεγον· Ἄλλως ἔσωσεν, ἑαυτὸν ἐξ ἑωυτοῦ σῶσαι.
- 32 Ὁ Χριστὸς ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰσραὴλ καὶ τῆς βασιλείας αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ σαυροῦ, ἵνα ἰδῶμεν καὶ πιστεύσωμεν. Καὶ οἱ συνεστρωμένοι αὐτῷ ἀνείδιζον αὐτόν.
- 33 Γενομένης δὲ ὥρας ἑκτης, σκότος ἐγένετο ἐφ' ὅλην τὴν γῆν ἕως ὥρας ἐνάτης.
- 34 Καὶ τῆς ὥρας τῆς ἐνάτης ἐβόησεν ὁ Ἰησοῦς φωνῇ μεγάλῃ, λέγων· Ἐλωὶ Ἐλωὶ, λαμβανέτω βασιλείαν ἡ· ὅ ἐστι μετ' ἐμῶν οὐρανῶν. Ὁ Θεὸς μου, ὁ Θεὸς μου, τί με ἐγκατέλιπες;
- 35 Καὶ ἄνθρωποι τῶν παρεστηκότων ἀκούσαντες, ἔλεγον· Ἴδὲ, Ἡλίου φανεῖ.
- 36 Δραμῶν δὲ εἷς, καὶ γεμισσας ἀπόχρον ὄξος, ᾤδεν τὸν καλῶν, ἐπότιζεν αὐτὸν, λέγων· Ἄφει· ἰδὼμεν εἰ ἔρχεται Ἡλίας κατελεῖν αὐτόν.
- 37 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀφείσεν φωνῇ μεγάλῃ, ἐξέπνυσε.

- 38 Καὶ τὸ κράτισμα ἔναξ ἐχίδνη εἰς
 δύο, ἀπὸ ἀναγενέως κάρτω.
- 39 Ἰδὼν ἡ ὀκεντυρίαν ὁ παρεστηκὼς ἐξ ἐναντίας
 αὐτῆ, ὅτι ἔπεις κρώξας ἐξέπνύσεν, εἶπεν·
 Ἀληθῶς ὁ ἄνθρωπος ἔτος υἱὸς κυρίου Θεοῦ.
- 40 Ἦσαν ἡ ἐβραῖαι δὲ ἀπὸ μακρόθεν θεωροῦσαι· ἐν
 αἷς κυρίου Μαρία ἡ Μαβδαληνή, Μαρία ἡ
 Ἰακώβου μικροῦ, Ἰωσή μητρί, Σαλώμη·
- 41 Αἱ καὶ ὅτε κυρίου ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ, ἠγγέλθην
 αὐτῶν, καὶ διακόνην αὐτῶν· καὶ ἄλλαι πολλαὶ ἀ-
 σιωπῶν βαῖσι αὐτῶν εἰς Ἱεροσόλυμα.
- 42 Καὶ ἤδη ὀψίας ἡσυχίας, (ἐπεὶ κυρίου πα-
 ρουσκεῖν, ὅ ἐστι παρὰ βραχίονα)
- 43 Ἦλθεν Ἰωσήφ ὁ ἀπὸ Ἀρμαθαίας, συχί-
 μων βαλευθῆς, ὃς καὶ αὐτὸς κυρίου παρὰ δεξιῶν
 τῆ βασιλείου Θεοῦ, ἐλμήσας εἰσήλθε παρὰ
 Πιλάτου καὶ ἠτήσατο τὸ σῶμα τῆ Ἰησοῦ.
- 44 Ὁ ἡ Πιλάτος ἐθαύμασεν εἰ ἤδη τέθνηκε·
 καὶ παρὰ κλησάμενος τὸν κεντυρίωνα, ἐπρω-
 τήσεν αὐτὸν εἰ πάλαι ἀπέθανε.
- 45 Καὶ γινῶν ἀπὸ τῶν κεντυρίωνων, ἐδώρησάτο
 τὸ σῶμα τῶ Ἰωσήφ.
- 46 Καὶ ἀφοράσας σινδόνα, καὶ καθελὼν αὐτὸν
 ἐνέειλθε τῇ σινδόνι· καὶ κατέθηκε αὐτὸν
 ἐν μνημείῳ ὃ κυρίου λαλαβημῆρον ἐκ πέτρας·
 ἔκρυψε κέλυσε λίθον ἐπὶ τῆ θύραν τῆ μνημείου.
- 47 Ἦ ἡ Μαρία ἡ Μαβδαληνὴ καὶ Μαρία
 Ἰωσή ἐθεώρην ποδὸ πίθε).

Κεφ.

Κεφ. 15. 16.

1 Καὶ Δευτέρου σαββάτου, Μαρία ἡ Μαγδαλινη καὶ Μαρία ἡ Ἰακώβε καὶ Σαλώμη ἠγήρασαν δρώματα ἵνα ἐλθῶσι αἰλέψωσιν αὐτόν.

2 Καὶ λίαν παρὰ τὴν ἑξῆς σαββάτων ἔρχοντο ἐπὶ τὸ μνημεῖον, ἀναλείλων τὸ ἥλιον.

3 Καὶ ἔλεγον πρὸς ἑαυτάς· Τίς ἀποκυλίσσει ἡμῖν τὸ λίθον ἐκ τῆς θύρας τοῦ μνημεῖου;

4 Καὶ ἀναβλέψασα θεωροῦσιν ὅτι ἀποκυλίσαι ὁ λίθος· ἡ γὰρ μέγας σφόδρα.

5 Καὶ εἰσελθῶσι εἰς τὸ μνημεῖον, εἶδον νεανίσκον καθήμενον ἐν τοῖς δεξιοῖς, περιβεβλημένον ὁλόκληρον καὶ ἐξεταμβήθησαν.

6 Ὁ δὲ λέγει αὐταῖς· Μὴ ἐκταμβεῖσθε· Ἰησοῦς ἐν ζῆσει τὸ Ναζαρεθὸν τὸ ἐστυρωμένον ἠγέρθη· ἴσατε ὅτι ἔστιν ὡς ἴδε, ὁ τόπος ὅπου ἔθηκαν αὐτόν.

7 Ἀλλ' ἐπάγγε, εἰπατε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, καὶ τῷ Πέτρῳ, ὅτι παρὰ ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν· ἐκεῖ αὐτὸν ὄψεσθε, καθὼς εἶπεν ὑμῖν.

8 Καὶ ἐξελθῶσι ταχὺ, ἔφυγον ἀπὸ τοῦ μνημεῖου. εἶχε δὲ αὐτὰς τρόμος καὶ ἔκστασις· καὶ εἰδὲν εἰδὲν εἶπον· ἐφοβήθησαν γάρ.

9 Ἀναστὰς δὲ παρὰ τῆς σαββάτου, ἐφάνη πρῶτον Μαρίᾳ τῇ Μαγδαλινῇ, ἀφ' ἧς ἐκβεβλήκει πάντα δαιμόνια.

10 Ἐκείνη προσελθούσα ἀπήγγελε τοῖς μετ' αὐτῆς

αὐτοῦ γλυμοῦσι, πιθῶσι καὶ κλαίουσιν·

11 Καὶ κείνοι, ἀκούσαντες ὅτι ζῆ, ἐξήγαγον αὐτῆς, ἠπίστησαν.

12 Μετὰ δὲ ταῦτα δύναν ἐξ αὐτῶν ἀπειπίθῃσιν ἐφανερῶς ἐν ἑτέρῃ μορφῇ, προσομοῦσι εἰς ἄρρον.

13 Καὶ κείνοι ἀπελθόντες ἀπήγγειλαν τοῖς λοιποῖς· ἔδδ' ἐκείνοις ἐπίστυσαν.

14 Ὑστερον, ἀνακῆμοις αὐτοῖς τοῖς ἐνδεκα ἐφανερῶς, καὶ ἀνείδισεν τὴν ἀπίσταν αὐτῶν, καὶ σκληροκαρδίαν· ὅτι τοῖς θεασαμένοις αὐτὴν ἐγγεμεμένον ἔσεν ἐπίστυσαν.

15 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Παροδηγῆτε εἰς τὸ κῆσμον ἅπαντα, κηρύξατε τὸ εὐαγγέλιον παντὶ τῇ κτίσει.

16 Ὁ πισύσας καὶ βαπτισθεὶς, σωθήσεται· ὁ δὲ ἀπισήσας, κἀκελεθήσεται.

17 Σημεῖα δὲ τοῖς πισύσασιν ταῦτα ὡρακῆσθῆσθαι· Ἐν τῷ οἴκῳ μὲν δαιμόνια ἐκβαλῆσθαι, γλώσσαις λαλήσασθαι κηρυχθεῖσθαι.

18 Ὁ φῶς ἀρῶσι· κἀν πανάσῃ μόνον πίωσιν, ἔμῃ αὐτῆς βλάψῃ ἐπὶ ἀρρώστους χεῖρας ἐπιθήσασθαι, καὶ καλῶς ἔξασθαι.

19 Ὁ μὲν Κύριος μετ' αὐτῶν λαλήσασθαι αὐτοῖς, ἀνελήφθη εἰς τὸ ἔρανον, ἐκθάσεν ἐκ θεξιῶν ἑσθῆος.

20 Ἐκεῖνοι δὲ ἐξελθόντες ἐκήρυξαν πανταχῶς, ἔκκειον τε κηρυχθέντων, ἐκ τῆς λόγῃς βεβαιῶντων· ἀλλὰ τὸ ἐπακηλῃσθέντων σημεῖων.

ΤΟ

ΤΟ' ΚΑΤΑ' ΛΟΥΚΑΝ
ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ.

Κεφ. α'. Ι.

- 1 **Ε**ΠΕΙΔΗ ΠΕΡ πολλοί ἐπι-
χείρησαν ἀνατίξασθαι διήγησιν
πρὸς τὸ πωληροφορηθῆναι ἐν
ἡμῖν πρᾶγματων,
- 2 Καθὼς παρέδωκεν ἡμῖν οἱ ἀπ' ἀρχῆς αὐ-
τόπται καὶ ὑποπρῆται γινόμενοι τῷ λόγῳ·
- 3 Ἐδίδε κάμοι, παρηκολούθησθαι ἀνώθεν
πᾶσιν ἀκροῶν, καθεξῆς σοι γράψαι, κρά-
πτε Θεόφιλε·
- 4 Ἴνα ἐπιγνῶς πρὸς ὧν κατηχήτης λόγων
τῶ ἀσφάλειαν.
- 5 Ἐρχέσθαι ἐν ταῖς ἡμέραις Ἡρώδης τῆ βασι-
λεύουσης τῆ Ἰουδαίας, ἱεροῦσιν ὀνόματι Ζα-
χαρίας, ἐξ ἐφημερίας Ἀβιά· καὶ ἡ γυνὴ
αὐτῆς ἐκ τῶν θυγατέρων Ἀαρῶν, ἐ τὸ ὄνομα
αὐτῆς Ἐλισάβετ.
- 6 Ἦσαν ἡ δίκαιοι ἀμφοτέρω ἐνώπιον τῶ
Θεοῦ, ποσούμενοι ἐν πάσας ταῖς ἐντολαῖς
καὶ δικαιώμασι τῶ Κυρίου ἀμειμπτοι.
- 7 Καὶ ὅσα ἔω αὐτοῖς τέκνον, κατόπι ἡ Ἐλι-
σαῖβετ ἔω σείσθαι, ἐ ἀμφοτέρω προσεβηκό-
τες ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῶν ἦσαν.
- 8 Ἐρχέσθαι ἡ ἐν τῶ ἱεροσολύταιν αὐτὸν ἐν τῇ
πᾶσι τῶ ἐφημερίας αὐτῆ ἐναντι τῶ Θεοῦ,

Καπε

- 9 Κατὰ τὸ ἔθνος τῆς Ἰσραήλ, ἔλαχε ἔθνη
 μιᾶσιν, εἰσελθὼν εἰς τὴν γαῖαν τῆς Κυρίας.
- 10 Καὶ πᾶν τὸ πλῆθος τῆς λαοῦ ἐξ ἄλλων
 χόρμαιον ἐξωτῆ ἄρα τῆς θυμαμάου.
- 11 Ὡφθη ἡ αὐτῶν ἄγγελος Κυρίας, ἐπὶ τὸν
 δεξιῶν τῆς θυμαμάου τῆς θυμαμάου.
- 12 Καὶ ἐπαρόχη Ζαχαρίας ἰδὼν, καὶ φόβος
 ἐπέπεσεν ἐπ' αὐτόν.
- 13 Εἶπε ἡ πρὸς αὐτὸν ὁ ἄγγελος· Μὴ φοβῆ
 Ζαχαρία· διότι εἰσηκούθη ἡ δέησις σου· καὶ ἡ
 γυνὴ σου Ἐλισάβετ γενήσεται υἱόν σοι, καὶ καλέ-
 σης τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰωάννην.
- 14 Καὶ ἔσται χαρὰ σοὶ καὶ ἀγαλλίασις, καὶ πολλοὶ
 ἐπὶ τῆς γενήσεως αὐτοῦ χαρήσονται.
- 15 Ἔσται γὰρ μέγας ἐνώπιον τῆς Κυρίας· καὶ οἶνον
 καὶ σίκερα οὐ μὴ πίη· καὶ πνεύματι ἁγίῳ
 πλησθήσεται ἐπὶ ἐκ κοιλίας μητρὸς αὐτοῦ.
- 16 Καὶ πολλοὶ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐπιστρέψουσιν ἐπὶ
 Κύριον τὸν Θεὸν αὐτῶν.
- 17 Καὶ αὐτοὺς ἀποστείλει ἐνώπιον αὐτοῦ ἐν
 πνεύματι καὶ δυνάμει Ἡλίας, ἐπιστρέψουσιν καρ-
 διας πατέρων ἐπὶ τέκνα, καὶ ἀπάρθουσιν ἐν φρο-
 νήσει δικαίων, ἐτοιμάσουσιν Κυρία λαὸν κα-
 τεσκευασμένον.
- 18 Καὶ εἶπε Ζαχαρίας πρὸς τὸν ἄγγελον· Καὶ
 πῶς γινώσκω τῶν τούτων; ἐγὼ γάρ εἰμι πρεσβύτης, καὶ
 ἡ γυνὴ μου ἀστεροειδὴς ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῆς.
- 19 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἄγγελος, εἶπε αὐτῷ·
 Ἐγώ

Ἐγὼ εἰμι Γαβριήλ ὁ περιεσηκώς ἐνώπιον
 τοῦ Θεοῦ· καὶ ἀπεστάλω λαλήσαι πρὸς σε, καὶ
 ἀγγελίσασθαί σοι ταῦτα.

20 Καὶ ἰδὼν ἔση σιωπῶν, καὶ μὴ διωάμην
 λαλήσαι, ἀρχίης ἡμέρας ἧν ἦ ταῦτα· ἀπὸ
 ὧν εὐκ ἐπίσθουσας τοῖς λόγοις μου, οἱ τινες
 πωληρωθήσονται εἰς τὸν καιρὸν αὐτῶν.

21 Καὶ ἰὼν ὁ λαὸς προσδοκῶν τὸ Ζαχαρίαν καὶ
 ἔθαύμαζον ἐν τῇ χρονίζῃ αὐτὸν ἐν τῇ γαστρί.

22 Ἐξελθὼν δὲ εὐκ ἠδυνάσθη λαλήσαι αὐτοῖς· ἔ
 πίγνωσαν ὅτι ὁ πλάσιαν εἰράκεν ἐν τῇ γαστρί. ἔ
 αὐτὸς δὲ διαιδύων αὐτοῖς καὶ διέμμε καφός.

23 Καὶ ἐρχόμενος ὡς ἐπλήσθησαν αἱ ἡμέραι τῆς
 λήτρυγίας αὐτῆς, ἀπῆλθεν εἰς τὸ οἶκον αὐτῆς.

24 Μετὰ δὲ ταύτας τρεῖς ἡμέρας συνέλαβεν
 Ἐλισάβετ ἡ γυνὴ αὐτοῦ καὶ ἐδέκρυβεν
 ἐαυτῷ μίωας πέντε, λέγουσα·

25 Ὅτι ἔγωγε πεποίηκεν ὁ Κύριος ἐν ἡμέραις
 αἷς ἐπέιδεν ἀφελεῖν τὸ ὄνομα μου ἐν ἀνθρώποις.

26 Ἐν δὲ τῇ μὲν τῷ ἕκτῳ ἀπεστάλη ὁ ἄγγελος
 Γαβριήλ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ εἰς πόλιν τὴν Γαλι-
 λαίας ἣ ὄνομα Ναζαρέθ,

27 Πρὸς παρθένοι μεμνησθευμένην αὐτῆς ὄ
 ὄνομα Ἰωσήφ, ἐξ οἴκου Δαβίδ· καὶ τὸ ὄνομα
 τῆς παρθένου Μαριάμ.

28 Καὶ εἰσελθὼν ὁ ἄγγελος πρὸς αὐτὴν, εἶπε·
 Χαῖρε κεχαρισμένη· ὁ Κύριος μετὰ σοῦ·
 εὐλογημένη σὺ ἐν γυναιξίν.

29 Ἡ δὲ

- 29 Ἡ δὲ ἰδῶσα διατρεφάχθη ἐπὶ τῷ λόγῳ αὐτῆς·
 ἔδειλογίζετο πῶς πὸς εἶη ὁ ἀσπασμὸς ἕτης.
- 30 Καὶ εἶπεν ὁ ἄγγελος αὐτῇ· Μὴ φοβῆ
 Μαριάμ· ὄρες γὰρ χάριν ὠρῶα τῷ Θεῷ.
- 31 Καὶ ἰδὼς, συλλήψη ἐν γαστρὶ καὶ τίξη υἱόν·
 ἔκαλίσας τὸ ὄνομα αὐτῆς Ἰησοῦν.
- 32 Οὐτὸς ἔσται μέγας, ἔσὼς υἱὸς υἱῶν κλη-
 θήσε) καὶ δώσει αὐτῷ Κύριος ὁ Θεὸς τὸ
 πρῶτον Δαβὶδ τῷ πατρὸς αὐτῆς·
- 33 Καὶ βασιλεύσει ἐπὶ τῷ οἴκῳ Ἰακώβ ἕως τῶν
 αἰῶνας, ἔσὼ τῆ βασιλείας αὐτῆς ἕκ ἑσται τέλος.
- 34 Εἶπε δὲ Μαριάμ πρὸς τὸν ἄγγελον· Πῶς
 ἔσται τῶτο, ἐπεὶ ἀνδρὰ ἔγνωσκω;
- 35 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἄγγελος εἶπεν αὐτῇ·
 Πνεῦμα ἅγιον ἐπιλεύσει) ἐπί σοι, ἔσὼ δυνάμεις
 υἱῶν ἐπισκιάσει σοι· διὸ καὶ τὸ γυνάμνον
 ἅγιον, κληθήσε) υἱὸς Θεῶ.
- 36 Καὶ ἰδὼς, Ἐλισάβετ ἡ συγγενὴς σου, καὶ αὐτῇ
 συνήληφθα υἱόν ἐν γήρα αὐτῆς· καὶ ἔστος μὲν
 ἐκ) ἐστὶν αὐτῇ τῇ καλεσθῆναι σείρα.
- 37 Ὅτι ὅσα ἀδυνατήσας ὠρῶα τῷ Θεῷ πᾶν
 ῥῆμα.
- 38 Εἶπε δὲ Μαριάμ· Ἰδὼς ἡδέλη Κυρία· γί-
 νοιθε) μοι καὶ τὸ ῥῆμά σου. Καὶ ἀπῆλθεν ἀπὸ
 αὐτῆς ὁ ἄγγελος.
- 39 Ἀναστῶσα δὲ Μαριάμ ἐν ταῖς ἡμέραις
 ταύταις, ἐπορεύθη εἰς τὸ ὄρφλιον μετὰ σωδοῆς,
 εἰς πόλιν Ἰούδα.

40 Καὶ

40 Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ οἶκον Ζαχαρίου, καὶ ἠσπάσατο τὴν Ἐλισάβετ.

41 Καὶ ἐχρῆσθε ὡς ἤκουσεν ἡ Ἐλισάβετ τὸν ἀσπασμὸν τῆς Μαρίας, ἐσκίρτησε τὸ βρέφος ἐν τῇ κοιλίᾳ αὐτῆς· καὶ ἐπλήσθη πνεύματος ἁγίου ἡ Ἐλισάβετ.

42 Καὶ ἀνεφώνησε φωνῇ μεγάλῃ, καὶ εἶπεν· Εὐλογημένη σὺ ἐν γυναιξί, ἔδουλογημένῃ ὁ καρπὸς τῆς κοιλίας σου.

43 Καὶ πόθεν μοι τῆτο, ἵνα ἔλθῃ ἡ μήτηρ σου Κυρίως πρὸς με;

44 Ἰδὲ γὰρ, ὡς ἐχρῆσθε ἡ φωνὴ σου ἀσπασμῶν σου εἰς τὰ ὦτά μου. ἐσκίρτησεν ἐν ἀγαλλιάσει τὸ βρέφος ἐν τῇ κοιλίᾳ μου.

45 Καὶ μακαρία ἡ πισεύουσα· ὅτι ἔσται τελείωσις τοῖς λελαλημένοις αὐτῇ ὡς καὶ Κυρίως.

46 Καὶ εἶπε Μαριάμ· Μεγαλιώτης ἡ ψυχὴ μου τὸ Κύριον·

47 Καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτήρῳ μου·

48 Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσίν σου δέλης αὐτῆς· Ἰδὲ γὰρ, ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσίν με πᾶσαι αἱ γενεαί·

49 Ὅτι ἐποίησέν μοι μεγαλεῖα ὀδυατῶν, καὶ ἄγιοι τὸ ὄνομα αὐτῆς·

50 Καὶ τὸ ἔλεος αὐτῆς εἰς γενεὰς γενεῶν τοῖς φοβουμένοις αὐτήν·

51 Ἐπίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτῆς·

τῆς·

- αὐτῆ· δισκορπίσει ὑπερηφάνους ἀγνοίας
καρδίας αὐτῶν.
- 52 Κατέειλε δυνάμεις ἀπὸ φρόνων, καὶ ὑψώσε
πειρημένους·
- 53 Πηνώνους ἐπέωλησεν ἀγαθῶν, καὶ πλερίστους
ἐξ ἀπίστηλες κεινούς·
- 54 Ἀντιλάβετο Ἰσραὴλ πικρὸς αὐτοῦ, μνη-
στῶναι ἐλέους,
- 55 (Καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν,
τῷ Ἀβραάμ, καὶ τῷ Ἀσέρμαχί αὐτοῦ) εἰς τὸν
αἰῶνα.
- 56 Ἐμίση ἡ Μαριὰμ συνὴ αὐτῇ ὡς εἰ μιλῶντας
τρῆεις· καὶ ὑπέσπευεν εἰς τὸ οἶκον αὐτῆς.
- 57 Τῇ ἣ Ἐλισάβετ ἐπλήσθη ὁ χροῖος τοῦ
τεκεῖν αὐτῷ· καὶ ἐγέννησεν υἱόν.
- 58 Καὶ ἤκουσαν οἱ πειλίκοι καὶ οἱ συζητοῦντες
αὐτῆς, ὅτι ἐμεγάλυνε Κύριος τὸ ἔλεος
αὐτῆς μετ' αὐτῆς· καὶ συνέχαιρον αὐτῇ.
- 59 Καὶ ἐγένετο, ἐν τῇ ὁδῷ ἡμέρας ἤλθον πει-
τεμεῖν τὸ πικρὸν· καὶ ἐκάλει αὐτὸ ἐπὶ τῷ
ὀνόματι τῷ πατρὸς αὐτοῦ, Ζαχαρίαν.
- 60 Καὶ ἀποκριθεῖσα ἡ μήτηρ αὐτῆς, εἶπεν·
Οὐχί· ἀλλὰ κληθήσεται Ἰωάννης.
- 61 Καὶ εἶπεν πρὸς αὐτῷ· Ὅτι ἀδελφοὶ ἐσιν ἐν
τῇ συζητοίᾳ σοὺς καλεῖ τῷ ὀνόματι τέτατον.
- 62 Ἐνένδον ἡ τῷ πατρὶ αὐτῆς, τὸ ἵκανόν ἦλοι
καλεῖσθαι αὐτόν.
- 63 Καὶ αἰτήσας πικρὸν ἐγραψέ, λέγων.
Ἰωάννης

Ἰωάννης ἐπὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Καὶ ἐθαύμα-
σαν πάντες·

54 Ανεώχθη ἡ τὸ σῶμα αὐτοῦ ὡς χαρῆμα, καὶ
ἡ γλῶσσα αὐτοῦ· καὶ ἐλάλησεν ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ.

55 Καὶ ἐχρῆστο ἐπὶ πάντας φόβου τὰς πε-
ρικοιῶνας αὐτοῦ· καὶ ἐν ὅλη τῇ ὄρεινῃ τῆ Ἰσ-
δαίας διελαλεῖτο πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα.

56 Καὶ ἔθεντο πάντες οἱ ἀκέσταις ἐν τῇ καρ-
δίᾳ αὐτῶν, λέγοντες· Τί ἄρα τὸ παῖδιον τοῦτο
ἔσται; Καὶ χεῖρ Κυρίου ἦν μετ' αὐτοῦ.

57 Καὶ Ζαχαρίας ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἐπλήσθη
πνύματι ἁγίῳ· καὶ παρεφῆτ' αὐτῷ, λέγων·

58 Εὐλογητός Κύριος ὁ Θεὸς ὁ Ἰσραὴλ,
ὅτι ἐπισκέψατο καὶ ἐποίησε λύτρωσιν τῷ
λαῷ αὐτοῦ.

59 Καὶ ἤχηρε κέρας σωτηρίας ἡμῖν, ἐν τῷ
οἴκῳ Δαβὶδ, ὁ παῖδος αὐτοῦ·

70 Καθὼς ἐλάλησε διὰ στόματι τοῦ ἁγίου
τῶν ἀπ' αἰῶν τοῦ παρεφῆτῶν αὐτοῦ,

71 Σωτηρίαν ἐξ ἐχθρῶν ἡμῶν, καὶ ἐκ χειρὸς
πάντων τῶν μισῶντων ἡμῶν.

72 Ποιῆσαι ἐλεῶ μετὰ τῶν πατέρων ἡμῶν, καὶ
μνηστῆρα διαθήκης ἁγίας αὐτοῦ·

73 Ὅμοιον ὃν ὤμοσεν πρὸς Ἀβραάμ τὸ πατεῖρα
ἡμῶν, ὅτι δουλεύω ἡμῖν,

74 Ἀφόβως, ἐκ χειρὸς τῶν ἐχθρῶν ἡμῶν ῥυθίν-
ται, λατρεύειν αὐτῷ,

75 Ἐν ὁσιότητι καὶ δικαιοσύνῃ ἐνάπιον
αὐτοῦ,

αὐτῷ, πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς ἡμῶν.

76 Καὶ σὺ παρθένον, ἀσφάτητος ὑψίστου κλη-
θήσῃ· ἀσπορόβουτη γὰρ ἀπὸ ἀσπορώπια Κυ-
ρίου, ἐτοιμασία οὐδὲς αὐτῷ.

77 Τῷ δὲνομα γινώσκει σωτηρίας τῷ λαῷ αὐ-
τῷ, ἐν ἀφίεσι ἀμαρτιῶν αὐτῶν.

78 Διὰ ἀσπλάγγνα ἐλίκεσθε Θεῷ ἡμῶν, ἐν οἷς
ἐπισκέψατο ἡμᾶς, ἀναβλή ἐξ ὑψους.

79 Ἐπιφάνια τῆς ἐν σκοτίᾳ καὶ σκιᾷ θανάτου
καθημερίοις, ἔκλυσε φῶς τὰς πόδας ἡμῶν
εἰς ὁδὸν εἰρήνης.

80 Τὸ ἔκλυσε φῶς ἡμῶν ἐκ ἐρηλίκου τοῦ πνεύ-
ματος καὶ ἡμῶν ἐν ταῖς ἐρήμοις ἕως ἡμέρας
ἀναδείξεως αὐτῷ ἀπὸ τῆς Ἰσραήλ.

Κεφ. β'. 2.

1 Ἐγένετο ἡ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, ἐξ-
ἦλθε δόγμα ἀπὸ τοῦ Καίσαρος Αὐγού-
στου, ἀπογράψασθαι πᾶσαν τὴν οἰκουμένην.

2 (Αὕτη ἡ ἀπογραφή ἀσφάτητος, ἐγένετο ἡγε-
μονίου τοῦ Σεβαστοῦ Κυρίου)

3 Καὶ ἐπορεύοντο πάντες ἀπογράφεσθαι,
εἰς τὴν ἰδίαν πόλιν.

4 Ἀνέβη ἡ καὶ Ἰωσήφ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας,
ἐκ πόλεως Ναζαρέθ, εἰς τὴν Ἰερουσαλήμ, εἰς
πόλιν Δαβὶδ ἧς καλεῖται Βηθλεὲμ, (ἀπὸ
τὸ εἶναι αὐτὸν ἐξ οἴκου καὶ πατρῆος Δαβὶδ)

5 Ἀπογράψασθαι σὺν Μαριὰμ τῇ με-
μνηθεῖς θυγατρὶ αὐτοῦ γυναικί, ἕστη ἐγκύου.

6 Ἐγένετο

6 Ἐρχέσθε ἵνα ἐν τῷ εἶναυ αὐτῶς οὐκ εἶ, ἐπλή-
θισται αἱ ἡμέραι ἔπεκειν αὐτῶ.

7 Καὶ ἔλεκε τὸ ἕδον αὐτῶ τὸ πρῶτον, ἔεισαρ-
ζάνωσεν αὐτῶ, καὶ ἀνέκλιεν αὐτῶ ἐν τῇ φάτνῃ·
διότι ἐκ τῶ αὐτοῖς τόπος ἐν τῷ καθαλύματι.

8 Καὶ ποιμένες ἦσαν ἐν τῇ χώρῃ τῇ αὐ-
τῇ ἀγραυλῆνες, καὶ φυλάσοντες φυλακὰς
τῶ νυκτὸς ἐπὶ τῶ ποιμένῃ αὐτῶν.

9 Καὶ ἰδὼς ἄγγελος Κυρίου ἐπέστη αὐτοῖς,
καὶ δόξα Κυρίου περιέλαμψεν αὐτούς· καὶ
ἐφοβήθησαν φόβον μέγαν.

10 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ ἄγγελος· Μὴ φοβεῖ-
σθε· ἰδὼς γὰρ, διαγγελίζομαι ὑμῖν χαρὰν με-
γάλην, ἥ τις ἔσται παντὶ τῷ λαῷ·

11 Ὅτι ἐτέχθη ὑμῖν σήμερον σωτήρ, ὅς ἐστι
Χριστὸς Κύριος ἐν πόλει Δαβὶδ.

12 Καὶ τῆτο ὑμῖν τὸ σημεῖον· Εὐρήσειε βρέφος
ἑσαρζαναμῶνον, κείμῃον ἐν τῇ φάτνῃ.

13 Καὶ ἐξαίφνης ἐρχέσθε σὺν τῷ ἀγγέλῳ
πλήθος στρατιῶν ἑβραίων, αἰνάντων τὸ Θεόν,
καὶ λεγιόντων,

14 Δόξα ἐν ὑψίστοις Θεῷ, ἔπι γῆς εἰρήνη,
ἐν ἀνθρώποις εὐδοκία.

15 Καὶ ἐρχέσθε, ὡς ἀπῆλθον ἀπὸ αὐτῶν εἰς τὸ
ἑβραϊκὸν οἱ ἄγγελοι, καὶ οἱ ἄνθρωποι οἱ ποιμέ-
νες εἶπον πρὸς ἀλλήλους· Διέλθωμεν δὴ ἕως
Βηθλεέμ, καὶ ἰδῶμεν τὸ ῥῆμα τῆτο τὸ γεγε-
νός, ὃ ὁ Κύριος ἐγνώρισεν ἡμῖν.

16 Καὶ ἦλθον ἀπόδυσαντες, ἔ ἀνδρον τῶν τε
Μαριάμ καὶ τὸ Ἰωσήφ, καὶ τὸ βρέφους κεί-
νον ἐν τῇ φάτῃ.

17 Ἰδόντες ἡ διαγνώρισαν ὡς ἔ ρήματα ἔ
λαληθέντων αὐτοῖς ὡς ἔ παροῦστος ἔστι.

18 Καὶ πάντες οἱ ἀκούσαντες ἐθαύμασαν
ὡς ἔ λαληθέντων ὑπὸ τῶν ποιμένων ὡς
αὐτοῖς.

19 Ἡ ἡ Μαριάμ πάντα σιωπῆρὰ τὰ ρήματα
ταῦτα, συμβάλλουσα ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς.

20 Καὶ ἐπέσπευσαν οἱ ποιμένες, δοξάζοντες
ἔ αἰνεῖν τὸ Θεὸν ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἤκουσαν καὶ
εἶδον, κατὰ ἔλαληθη ὡς αὐτοῖς.

21 Καὶ ὅτε ἐπλήσθησαν ἡμέρας ὀκτὼ ἔ πε-
λειμεῖν τὸ παροῦστος, καὶ ἐκλήθη τὸ ὄνομα
αὐτοῦ Ἰησοῦς, τὸ κληθῆν ὑπὸ τῶν ἀγγέλων ὡς
ἔ συλληφθῆναι αὐτὸν ἐν τῇ κοιλίᾳ.

22 Καὶ ὅτε ἐπλήσθησαν καὶ ἡμέρας ἔ κατὰ-
ρισμῶ αὐτῆς καὶ τὸ νόμον Μωσέως, ἀνήγα-
γον αὐτὸν εἰς Ἱεροσόλυμα, ὡς ἔστησεν τὰ
Κυρία,

23 (Κατὰ ἔ γέγραπται ἐν νόμῳ Κυρία· Ὅτι
πάν ἄρσεν ἀγαθοῦ μῆτρων, ἄγον τὰ
Κυρία κληθῆσται)

24 Καὶ ἔ δῆνα ἡσίου, καὶ τὸ εἰρηρῶν ἐν
νόμῳ Κυρία, ζεῦγος τρυφῶν, ἡ δὲ
μεσοῦς ἀπεστραῖν.

25 Καὶ ἰδὲ, ἡ ἀνθρώπων ἐν Ἱερουσαλήμ ὡ
ὄνομα

ὄνομα Συμεών· καὶ ὁ ἄνθρωπος ἔτ' ὁ δίκαιος
καὶ δούλος, προσδεχόμενος πνεύματα
καὶ Ἰσραὴλ· καὶ πνεῦμα ἅγιον ἔπ' αὐτόν.

26 Καὶ ἔπ' αὐτὸν κεχρηματισμένον ὑπὸ τοῦ
πνεύματος ἁγίου, μὴ ἰδεῖν θάνατον πρὶν
ἢ ἰδεῖ τὸ Χεῖρὸν Κυρίου.

27 Καὶ ἦλθεν ἐν τῷ πνεύματι εἰς τὸ ἱερόν·
καὶ ἐν τῷ εἰσαγαγεῖν τὰς ρηεῖς τὸ παιδίον
Ἰησοῦν, ἔποιησεν αὐτὸς καὶ τὸ εἰδισμένον
τοῦ νόμου περὶ αὐτοῦ·

28 Καὶ αὐτὸς ἐδέξατο αὐτὸ εἰς τὰς ἀγκύ-
λας αὐτοῦ, ἔδύλογησε τὸ Θεόν, καὶ εἶπε·

29 Νυνὶ ἀπολύεις τὸ δούλον σου δεσποῦσα, καὶ
τὸ ῥῆμά σου, ἐν εἰρήνῃ·

30 Ὅτι οἶδον οἱ ὀφθαλμοί μου τὸ σωτήριόν σου,

31 ὃ ἠτοίμασας καὶ πρὸς ὅσων πάντων τῶν
λαῶν·

32 Φῶς εἰς ἀποκάλυψιν ἐθνῶν, καὶ δόξαν
λαῶν σου Ἰσραὴλ.

33 Καὶ ἔπ' αὐτὸν Ἰωσήφ καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ θαυμά-
ζοντες ἐπὶ τοῖς λαλοῦμένοις περὶ αὐτοῦ.

34 Καὶ δύλογησεν αὐτὸς Συμεών, ἔειπε
πρὸς Μαριάμ τὴν μητέρα αὐτοῦ· Ἰδὲ, ἔτ' ἔτι
κείται εἰς πλάσιν ἔσονται ἀνάστασις πολλῶν ἐν τῷ
Ἰσραὴλ, καὶ εἰς σημεῖον ἀντιλεγόμενον·

35 (Καὶ σὺ ἡ αὐτῆς τὴν ψυχὴν διελύσει)
ρομφαία) ὅπως αὐτὴ ἀποκαλυφθῶσιν ἐν
πολλῶν καρδιῶν ἀφ' ἁπολογισμοῦ.

36 Καὶ ἦν Ἄννα παρθένος, θυγάτηρ Φα-
ναήλ, ἐκ φυλῆς Ἀσήρ· αὕτη παρθενηκῆσα
ἐν ἡμέραις πολλαῖς, ζήσασα ἔτη μὲν ἀνδρὸς
ἐπὶ δὲ τὴν παρθενίαν αὐτῆς.

37 Καὶ αὕτη χήρα ὡς ἐτῶν ὀγδοήκοντα τετ-
σάρων, ἣ σὺν ἀφίσταθ' ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ, νηστίας
καὶ δεήσεσιν λατρεύουσα νύκτα ἔν ἡμέραν.

38 Καὶ αὕτη αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐπιστάσα ἀνηρω-
λογεῖτο τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐλάλη πρὸς αὐτὸν
πᾶσι τοῖς παροδευομένοις λύσεσιν ἐν Ἱε-
ρουσαλὴμ.

39 Καὶ ὡς ἐτέλεσαν ἅπαντα τὰ κατὰ τὸν νόμον
Κυρίου, ὑπέστρεψαν εἰς τὴν Γαλιλαίαν,
εἰς τὴν πόλιν αὐτῶν Ναζαρέθ.

40 Τὸ δὲ παιδίον ἠύξανε, καὶ ἐκραταῖστο κινῆ-
ματι, πλερέμενον σοφίας· καὶ χάρις Θεοῦ
ἦν ἐπ' αὐτό.

41 Καὶ ἐπορεύοντο οἱ γονεῖς αὐτοῦ κατ' ἔθος
εἰς Ἱερουσαλὴμ τῇ ἑορτῇ τοῦ πάσχα.

42 Καὶ ὅτε ἐλήλυθε τῶν δώδεκα ἀναδάντων
αὐτῶν εἰς Ἱεροσόλυμα κατὰ τὸ ἔθος τῆς ἑορτῆς·

43 Καὶ πελώσαντων τὰς ἡμέρας, ἐν τῷ
ὑπεστρέφειν αὐτοῦ, ὑπέμεινε Ἰησοῦς ὁ παῖς
ἐν Ἱερουσαλὴμ· καὶ σὺν ἔγνω Ἰωσήφ ὁ πατήρ
αὐτοῦ.

44 Νομίσαντες δὲ αὐτὸν ἐν τῇ σινοδίᾳ εἶναι,
ἤλθον ἡμέρας ὀδύνη· καὶ ἀνεζήτησαν αὐτὸν ἐν τοῖς
συνεμένοις ἔν ἐν τοῖς γνωστοῖς.

45 Καὶ

45 Καὶ μετ' αὐτὸν οὐκ ἔβησαν εἰς
 Γερασσαλήμ, ζητῶντες αὐτόν.

46 Καὶ ἐξῆλθεν, μετ' ἡμέρας τρεῖς οὖρον αὐτὸν
 ἐν τῷ ἱερῷ καθεζόμενον ἐν μέσῳ τῶν διδασκά-
 λων, ἔακόντων αὐτῶν, ἔεπερωτῶντα αὐτὸς.

47 Ἐξίσταντο ἡ πάντες οἱ ἀκούοντες αὐτῶν, ἐπὶ
 τῇ σιωπῇ καὶ ταῖς ἀποκρίσεσιν αὐτοῦ.

48 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν ἐξεπλάγησαν· καὶ πρὸς
 αὐτὸν ἡ μήτηρ αὐτῶν εἶπε· Τέκνον, τί ἐποίη-
 σας ἡμῖν ὕψως; ἰδὲ ὁ πατήρ σε καὶ ἡ ἀδελ-
 φή σου ἐζητῶντές σε.

49 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸς· Τί ὅτι ἐζητεῖτέ με;
 οὐκ ἦδ' ἔστιν ὅτι ἐν τοῖς βιβλίοις μου δεῖ εἶναί με;

50 Καὶ αὐτοὶ οὐκ ἠκούσαν τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλη-
 σεν αὐτοῖς.

51 Καὶ κατέβη μετ' αὐτῶν, ἔειπεν εἰς Να-
 ζαρέθ· καὶ ὡς ὑποτασσόμενος αὐτοῖς. Καὶ ἡ
 μήτηρ αὐτῶν διεήρησεν πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα
 ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς.

52 Καὶ Ἰησοῦς παρέκοπτε σοφίᾳ καὶ ἡλικίᾳ, καὶ
 χάριτι ὡς Θεοῦ καὶ ἀνθρώπων.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Ε**Ν ἑτῇ τῇ πεντηκονταετηρίᾳ τῆς ἡγεμονίας Τι-
 βερίου Καίσαρος, ἡγεμονεύοντες Ποπίου
 Πιλάτου τῆς Ἰουδαίας, καὶ τετραρχῶντες τῆς Γαλι-
 λαίας Ηρώδης, Φιλίππου ἡ ἀδελφοῦ αὐτῶν
 τετραρχῶντος τῆς Ἰταραίας ἐ Τραχανίπιδος χώ-
 ρας, ἔ Λυσανίου τῆς Ἀβιλλωνῆς τετραρχῶντος,

1 3

2 Ε' π'

- 2 Ἐπ' ἀρχιερέων Ἄννα ἔκαιάφα, ἐλθέτω
ῥῆμα Θεῶ ἐπὶ Ἰωάννου τ' Ἐ Ζαχαρίου υἱόν,
ἐν τῇ ἐρήμῳ.
- 3 Καὶ ἦλθεν εἰς πᾶσαν τὴν ἄσπετον τὴν Ἰορ-
δάνην, κηρύσσων βάπτισμα μετάνοίας εἰς
ἄφεσιν ἁμαρτιῶν.
- 4 Ὡς γέγραπται ἐν βίβλῳ λόγων Ἠσαΐου ἔ-
ωσφῆτα, λέγων· Φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ
ἐρήμῳ· Ἐτοιμάσατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, ὡς
ποιεῖτε τὰς τρίβους αὐτοῦ.
- 5 Πᾶσα φάραγξ πληρωθήσεται, καὶ πᾶν ὄρος
ἔβενος ταπεινωθήσεται· καὶ ἔσται τὰ σκολιὰ εἰς
ὀρθότητα, καὶ αἱ τραχεῖαι εἰς ὁδοὺς λείας.
- 6 Καὶ ὄψεται πᾶσα σὰρξ τὸ σωτήριον τοῦ Θεοῦ.
- 7 Ἐλέγη οὖν τοῖς ἐκπορευομένοις ὄχλοις
βαπτισθῆναι ὑπὸ αὐτοῦ· Γεννήματα ἐχιδνῶν,
ὡς ὑπέδειξεν ὑμῖν φυγεῖν ἀπὸ τῆς μελλούσης
ὀργῆς·
- 8 Ποιήσατε οὖν καρπὸς ἀξίους τῆς μετάνοίας·
καὶ μὴ ἀρξήθε λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· Πατέρες
ἔχομεν τὸν Ἀβραάμ· λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι δυνά-
ται ὁ Θεὸς ἐκ τῶν λίθων τέτων ἐγεῖραι τέκνα
τῷ Ἀβραάμ.
- 9 Ἡ δὲ καὶ ἡ ἀξίονα σαρξ τὴν ῥίζαν τῶν δένδρων
κέετα. πᾶν οὖν δένδρον μὴ ποιεῖν καρπὸν
καλόν, ἐκκόπτεται, καὶ εἰς πῦρ βάλλεται.
- 10 Καὶ ἐπρωτῶτον αὐτὸν οἱ ὄχλοι, λέγοντες·
Τί οὖν ποιήσομεν;

II Ἀπο-

- 11 Ἀποκριθεὶς ᾧ, λέγει αὐτοῖς· Ὁ ἔχων δύο χιτῶνας, μετὰδότεν τῷ μὴ ἔχοντι· καὶ ὁ ἔχων βρώμαρα, ὁμοίως ποιεῖτω.
- 12 Ἦλθον ᾧ καὶ τελῶνας βαπτισθῆναι· ἔειπον πρὸς αὐτὸν· Διδάσκαλε, τί ποιήσομαι;
- 13 Ὁ ᾧ εἶπε πρὸς αὐτούς· Μηδὲν πλεον ἔχειν τὸ ἀγατεῖν ὑμῖν, πρῶτον.
- 14 Ἐπηρώτων ᾧ αὐτὸν ἔπραξιμένοι, λέγοντες· Καὶ ἡμεῖς τί ποιήσομαι; καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Μηδένα ἀφείσητε, μηδὲ συκοφαντήσητε· καὶ δροκείετε τοῖς ὄψωνίοις ὑμῶν.
- 15 Προσδοκῶντι ᾧ τὸ λαῶν, ἔδηλοποιήσων πάντων ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν πρὸς τὸ Ἰωάννην, μήποτε αὐτὸς εἴη ὁ Χριστός,
- 16 Ἀπεκρίνατο ὁ Ἰωάννης, ἀπαισι λέγων· Ἐγὼ μὲν ὕδατι βαπτίζω ὑμᾶς· ἔρχεται ᾧ ὁ ἰχυρότερός μου, ἔσται ἐμὲ ἰκανὸς λῦσαι τὸ ἰμάτιον τὸ ὑποδημαίταιν αὐτοῦ· αὐτὸς ὑμᾶς βαπτίσει ἐν πνεύματι ἁγίῳ καὶ πυρὶ.
- 17 Οὐ τὸ πλῆρον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἀφαιρησὶ τὴν ἄλωνα αὐτοῦ· καὶ σιμῶσιν τὸ σῆτον εἰς τὸ ἀποθήκην αὐτοῦ, τὸ ᾧ ἄχυρον κατακαύσει πυρὶ ἀσφύσει.
- 18 Πολλὰ μὲν οὕτως καὶ ἕτερα πρὸς πολλῶν συνηελίζετο τὸ λαόν.
- 19 Ὁ ᾧ Ἡρώδης ὁ τετράρχης, ἐλεγχομένου ὑπὸ αὐτοῦ πρὸς Ἡρωδιάδην τῆς γυναικὸς Φιλίππου τῶ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ πρὸς

πάντων ὧν ἐποίησε πονηρῶν ὁ Ἡραΐδης,

20 Προσέθηκε καὶ τὸτο ἐπὶ πᾶσι, καὶ κατ-
έκλεσε τὸ Ἰωάννην ἐν τῇ φυλακῇ.

21 Ἐχρήσατο ἢ ἐν τῷ βαπτισθῆναι ἀπαντα
τὸ λαόν, καὶ Ἰησοῦ βαπτισθῆναι Ἐπεσοδ-
χοῦντες, ἀνεωχθῆναι τὸ ἕρσιον.

22 Καὶ καθάδωμαι τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον σω-
ματικῶς εἶδῃ, ὡσεὶ περιστερῶν, ἐπ' αὐτόν· καὶ
Φωνῆ ἐξ ἕρανθ ἤκουσεν, λέγουσαν· Σὺ εἶ ὁ
ἦός μου ὁ ἀγαπητός, ἐν σοὶ ἠὲ δέχησα.

23 Καὶ αὐτὸς ἰὼ ὁ Ἰησοῦς ὡσεὶ ἐπὶ τριάντην
ἀρῆμενος, ὡς (ὡς ἰνομιζέτω) ἦος Ἰωσήφ, Ἔ Ηλι,

24 Τῷ Ματθαίῳ, Ἔ Λουί, τῷ Μελχί, Ἔ
Ἰαννᾶ, Ἔ Ἰωσήφ,

25 Τῷ Ματθαίῳ, Ἔ Αἰμῶς, Ἔ Ναῦμ, τῷ
Ἐσλί, Ἔ Ναχαί,

26 Τῷ Μααθ, Ἔ Ματθαίῳ, Ἔ Σιμεὶ, τῷ
Ἰωσήφ, Ἔ Ἰσδα,

27 Τῷ Ἰωαννᾶ, Ἔ Γησᾶ, Ἔ Ζοροβάβελ, Ἔ
Σαλαθιήλ, Ἔ Νηρι,

28 Τῷ Μελχί, τῷ Ἀδδῆ, Ἔ Κωσάμ, τῷ
Ἐλμωδάμ, Ἔ Ηρ,

29 Τῷ Ἰωσή, Ἔ Ελιίζερ, τῷ Ἰωρέμ, Ἔ Ματ-
θαίῳ, τῷ Λουί,

30 Τῷ Συμεὼν, Ἔ Ἰσδα, Ἔ Ἰωσήφ, τῷ Ἰω-
νᾶν, Ἔ Ἐλιακείμ,

31 Τῷ Μιλεᾶ, Ἔ Μαίναϊ, τῷ Ματθαίῳ,
Ἔ Ναθαν, τῷ Δαβίδ,

32 Τῷ

- 32 Τῶ Ἰεσού, τῷ Ὠσὴδ, τῷ Βοόζ, τῷ Σκλ-
μῶν, τῷ Ναασῶν,
- 33 Τῷ Ἀμναδάω, τῷ Ἀράμ, τῷ Ἐσρών, τῷ
Φαρίσ, τῷ Ἰάδα,
- 34 Τῷ Ἰακώω, τῷ Ἰσαάκ, τῷ Ἀβραάμ, τῷ
Θάρα, τῷ Ναχώρ,
- 35 Τῷ Σαρέχ, τῷ Ραζαί, τῷ Φαλίκ, τῷ
Ἐβέρ, τῷ Σαλά,
- 36 Τῷ Καϊνῶ, τῷ Ἀρφαξάδ, τῷ Σήμ, τῷ
Νῶε, τῷ Λάμεχ,
- 37 Τῷ Μαθθσαία, τῷ Ἐνώχ, τῷ Ἰαρέδ, τῷ
Μαλελεήλ, τῷ Καϊνῶ,
- 38 Τῷ Ἐνώε, τῷ Σήθ, τῷ Ἀδάμ, τῷ Θεῷ.

Κεφ. δ'. 4.

- 1 Ἰησοῦς ἦν πνύματι Θεῷ ἀγίῳ πλήρῃς ὑπέσπρε-
ψεν ἀπὸ τῷ Ἰορδάνῃ· καὶ ἦγετο ἐν τῷ πνύ-
ματι εἰς τὴν ἔρημον,
- 2 Ἡμέρας τεσσαράκοντα παραζόμενος
ὑπὸ τῷ Δαβόλα· καὶ σὺν ἔφαγεν ἕδεν ἐν ταῖς
ἡμέραις ἐκείναις· καὶ σιωπῆλεοδῆτων αὐτῶν,
ὑσερον ἐπέινασε.
- 3 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Δαβόλος· Εἰ υἱὸς εἶ τῷ
Θεῷ, εἰπέ τῷ λίθῳ ἵνα γήνηται ἄρτος.
- 4 Καὶ ἀπεκρίθη Ἰησοῦς πρὸς αὐτὸν, λέγων·
Γέγραπῃ, ὅτι σὺν ἐπ' ἄρτω μόνῳ ζήσεται ὁ
ἄνθρωπος, ἀλλ' ἐπὶ παντὶ ῥήματι Θεῷ.
- 5 Καὶ ἀναγαγὼν αὐτὸν ὁ Δαβόλος εἰς
ὄρη ὑψηλὸν, ἔδειξεν αὐτῷ πάντας τὰς

15 βαπτ-

βασιλείας τῆς οὐρανῆς ἐν στιγμή χρόνου.

6 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Διδάσκαλος· Σοὶ δώσω
τὴν ἐξουσίαν ταύτην ἅπαντων, καὶ τὸ δοῦναι
αὐτῶν ἔπι ἐμοὶ ὡς ἐὰν θέλω, ἐγὼ ἐὰν θέλω,
δίδωμι αὐτήν.

7 Σὺ οὖν ἐὰν προσκυνήσῃς ἐνώπιόν μου,
ἔσται σοὶ πάντα.

8 Καὶ ἀποκριθεὶς αὐτῷ, εἶπεν ὁ Ἰησοῦς·
Ἵπαγε ὀπίσω μου Σαταναῖ· γέγραπτόν γάρ·
Προσκυνήσῃς Κύριον τὸ Θεόν (καὶ, καὶ αὐτῷ
μόνῳ λατρεύσῃς).

9 Καὶ ἤγαγεν αὐτὸν εἰς Ἱερουσαλήμ, ἐπέστη-
σεν αὐτὸν ἐπὶ τὸ πτερύγιον τοῦ ἱεροῦ· καὶ εἶπεν
αὐτῷ· Εἰ ὁ υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, βάλε σεαυτὸν
ἐντεῦθεν κάτω·

10 Γέγραπται γάρ· Ὅτι τοῖς ἀγγέλοις αὐτῷ
ἐπιτελεῖται πάντα τὰ ῥηθῆναι σου.

11 Καὶ ὅτι ἐπὶ χερῶν δεξιῶν σου, μήποτε
προσκύψῃς πρὸς λίθον τὸ πόδι σου.

12 Καὶ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι
εἴρη· Οὐκ ἐκπράσσει Κύριον τὸ Θεόν (καὶ).

13 Καὶ σπειλέσας πάντα πρῶτον ὁ Διδά-
σκαλος, ἀπέστη ἀπ' αὐτῶν ἄχρι καιρῶ.

14 Καὶ ὑπέστρεψεν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῇ δυνάμει τοῦ
πνεύματος εἰς τὴν Γαλιλαίαν· καὶ φήμην ἐξῆλ-
θε καθ' ὅλης τῆς περιχώρου περὶ αὐτῶ.

15 Καὶ αὐτὸς ἐδίδασκεν ἐν ταῖς συναγωγαῖς
αὐτῶν, δοξαζόμενος ὑπὸ πάντων.

16 Καὶ

16 Καὶ ἦλθεν εἰς τὸ Ναζαρέθ, ἔτι δὲ τετραμηνίῳ· καὶ εἰσήλθε καὶ τὸ εἶωθός αὐτοῦ, ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, εἰς τὴν συναγωγὴν καὶ ἀνέστη ἀναγνῶναι.

17 Καὶ ἐπεδόθη αὐτῷ βιβλίον· ἠρᾷς δὲ ἄρῳ φήσας· καὶ ἀναπύξας τὸ βιβλίον, εὗρε τὸν τόπον ἔτι δὲ γεγραμμένον·

18 Πνεῦμα Κυρίου ἐπ' ἐμέ, ἕνεκεν ἔχριστέ με· διὰ χεῖρας ἁγίας ἀπέσταλέ με, ἰάσασθαι τὰς σπιλοτεσιμότητας τῆς καρδίας, κηρύξαι αἰχμαλώτοις ἄφεσιν, ἐν τυφλοῖς ἀνάβλεψαι, ἀποσῆλαι τὴν ἀστυχίαν ἐν ὀφθαλμοῖς·

19 κηρύξαι ἐν ἰσραὴλ Κυρίου δεκτὸν.

20 Καὶ πύξας τὸ βιβλίον, ἀποδὸς τῷ ἱερῆτι, ἐκάθισεν· καὶ πάντων ἐν τῇ συναγωγῇ οἱ ὀφθαλμοὶ ἦσαν ἀτενίζοντες αὐτῷ.

21 Ἡ ἔξωθεν λέγειν πρὸς αὐτόν· Ὅτι σήμερον πεπλήρωται ἡ γραφή αὕτη ἐν τοῖς ὤσιν ὑμῶν.

22 Καὶ πάντες ἐμαρτύρουν αὐτῷ, καὶ ἐθαύμαζον ἐπὶ τοῖς λόγοις τῆς χειρὸς, ταῖς ἐκπορεύουσις ἐκ τῆς στόματός αὐτοῦ, καὶ ἐλεγον· Οὐχ ἔτις ἐστὶν ὁ υἱὸς Ἰωσήφ;

23 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτόν· Πάντως ἐρεῖτέ μοι τί τὸ ἄρῳ βολὴν ταύτην· Ἰατρὲ, θεράπευσον σαυτὸν· ὅσα ἠκέστα μὲν γινόμενα ἐν τῇ Καπερναῶν, ποίησον καὶ ἄδε ἐν τῇ πατρίδι σου.

24 Εἶπε δὲ· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔδεις ἄρῳ φήσας

φήσας

φῆτις δεκθῆς ἐπι εὐ τῆ πατρῴδι αὐτῆ.

25 Ἐπ' ἀληθείας ἃ λέγω ὑμῖν, πολλὰ καὶ χῆραι ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις Ἡλίας ἐν τῷ Ἰσραὴλ, ὅτε ἐκλείοθη ὁ ἔβρωτος ἐπὶ ἔτη τρία ἔ μιλῶνας ἕξ, ὡς ἐν Ἰσραὴλ λιμὸς μέγας ἐπὶ πάντων τῶ γῆ.

26 Καὶ πρὸς ἑδαιμίαν αὐτῶν ἐπέμψθη Ἡλίας εἰ μὴ εἰς Σάρεπτα τ' Σιδῶν, πρὸς γυναῖκα χήραν.

27 Καὶ πολλοὶ λεπροὶ ἦσαν ἐπὶ Ἐλισαίᾳ τ' πρὸ φῆτις εὐ τῷ Ἰσραὴλ· καὶ ἑδεις αὐτῶν ἐκαθεμείοθη, εἰ μὴ Νεεμὴν ὁ Σύρος.

28 Καὶ ἐπαλήθευσαν πάντες θυμῶ εὐ τῆ σιναγωγῆ, ἀκούσας ταῦτα.

29 Καὶ ἀναστάντες ἐξ ἑσθαλοὶ αὐτὸν ἕξω τῆς πόλεως· καὶ ἤγαγον αὐτὸν ἕως τ' ὄφρου τ' ὄρους, ἐφ' ᾧ ἡ πόλις αὐτῶν ᾠκοδομήθη εἰς τὸ καθ' ἡμερῶν αὐτόν.

30 Αὐτὸς ἃ διελθὼν Διδά μίσα αὐτῶν, ἐπορεύθη.

31 Καὶ κατήλθεν εἰς Καπερναῦμ πόλιν τ' Γαλιλαίας· καὶ ἔω διδάσκων αὐτὸς εὐ τοῖς σάββασι.

32 Καὶ ἐξεπαλήθευσεν ἐπὶ τῆ διδαχῆ αὐτῆ· ὅτι εὐ ἐξουσία ἔω ὁ λόγος αὐτῆ.

33 Καὶ εὐ τῆ σιναγωγῆ ἔω ἀνὴρ πνεῦμα δαιμονίου ἀκαθάρτου, καὶ ἀνέκοιξε φωνῆ μεγάλη.

34 Λέγων· Ἐὰ, πῆ μῖν καὶ σοὶ Ἰησοῦ Ναζα-
ρηνεύς

ρῶν; ἤλθετε ἀπολέσαι ἡμᾶς; οἶδά σε τίς εἶ·
ὁ ἄγιος Θεός.

35 Καὶ ἐπέμνησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Φι-
μώθητι, καὶ ἐξέλθε ἐξ αὐτῶ. Καὶ ρίψαν αὐ-
τὸν τὸ δαιμόνιον εἰς τὸ μέσον, ἐξῆλθεν ἀπὸ
αὐτῶ, μηδὲν βλάψαν αὐτόν.

36 Καὶ ἐγένετο θάμβος ἐπὶ πάντας· καὶ συνε-
λάλουν πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες· Τίς ὁ λόγος
ἕστ' ὅτι ἐξουσία καὶ δυνάμις ἐπιβάσκει τοῖς
ἀκαθάρτοις πνεύμασι, ἃ ἐξέρχονται;

37 Καὶ ἐξεπορεύετο ἦχος πρὸς αὐτῶ εἰς
πάντα τόπον τῆς περιχώρου.

38 Ἀναστὰς ἡ δὲ συναγωγῆς, εἰσήλθεν εἰς
τὴν οἰκίαν Σίμωνος ἢ πεντηράου ἡ Σίμωνος
καὶ συνεχομένη πυρετῷ μεγάλῳ· ἐρώτησαν
αὐτὸν πρὸς αὐτῆς.

39 Καὶ ἐπιστὰς ἐπάνω αὐτῆς, ἐπέμνησε τῷ
πυρετῷ· καὶ ἀφῆκεν αὐτῷ. ὡδραχῆμα ἡ
ἀναστασία διηγήθη αὐτοῖς.

40 Διώνειον ἡ δὲ ἡλίας, πάντες ὅσοι εἶχον
ἀδενδύνας νόσοις παικίλαις, ἤγαγον αὐτὰς
πρὸς αὐτόν· ὃ ἡ ἐνὶ ἐκάστῳ αὐτῶν ταῖς χεῖρας
ἐπιθεῖς, ἐθεράπευσεν αὐτὰς.

41 Ἐξήρχετο ἡ καὶ δαιμόνια ἀπὸ πολλῶν,
κραζούσα καὶ λέγουσα· Ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ
υἱὸς Θεοῦ. Καὶ ἐπιτιμῶν αὐτὴν εἶπεν αὐτῇ λα-
λεῖν, ὅτι ἠδύσαν τὸν Χριστὸν αὐτὸν εἶναι.

42 Γενομένης δὲ ἡμέρας ἐξελθὼν ἐπορεύθη
εἰς

εἰς ἔρημον τόπον, καὶ οἱ ὄχλοι ἐζήτην αὐτὸν,
 ἔπειθ' ἦλθον ἕως αὐτῶ· καὶ καλεῖχον αὐτὸν ἵνα μὴ
 πορεύσθαι ἀπ' αὐτῶν.

43 Οὗτος εἶπε πρὸς αὐτούς· Ὅτι ἐπιπέ-
 ραις πόλεσιν διαγγελλίσασθαι με δεῖ τὴ βα-
 σιλείαν τῆ Θεῶ· ὅτι εἰς τὸ ἀπέσταλμαι.

44 Καὶ ἠὲ κηρύσων ἐν ταῖς συναγωγαῖς
 τῆ Γαλιλαίας.

Κεφ. ε'. 5.

1 Ἐξήνευ ἡ ἐν τῷ τῷ ὄχλον ἐπικεῖσθαι αὐ-
 τῷ τῷ ἀκρόν τῷ λόγον τῷ Θεῶ, ἔπειθ' αὐτὸς ἠὲ
 ἐστὼς πρὸς τὴν λίμνην Γεννησαρέτ·

2 Καὶ εἶδε δύο πλοῖα ἐστῶτα πρὸς τὴν
 λίμνην· οἱ δὲ ἄλιεῖς ἀποδάντες ἀπ' αὐτῶν
 ἀπέπλωσαν τὰ δίκτυα.

3 Ἐμῶς δὲ εἰς ἓν τῶν πλοίων ὁ ἠὲ τῷ Σίμων-
 νῳ, ἠρώτησεν αὐτὸν ἀπὸ τῆ γῆς ἐπαναγα-
 γεῖν ὀλίγον· καὶ καλίσσας ἐδίδασκεν ἐκ τῶ
 πλοῖος τὸς ὄχλους.

4 Ὡς δὲ ἐπαύσατο λαλῶν, εἶπε πρὸς τὸν Σί-
 μωνα· Ἐπανάγαγε εἰς τὸ βάθος, καὶ χαλά-
 σατε τὰ δίκτυα ὑμῶν εἰς ἄβυσσον.

5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Σίμων, εἶπεν αὐτῷ·
 Ἐπιστάτα, δι' ὅλης τῆ νυκτὸς κηπιάσασθαι,
 ἐδὲν ἐλάδομ· ἐπὶ δὲ τῷ ῥήματι σου χα-
 λάσω τὸ δίκτυον.

6 Καὶ τῶ ποιήσασθαι, συνέκλεσαν ἰχθύων
 πλῆθος πολὺ. διεῖρήνην δὲ τὸ δίκτυον αὐτῶ.

7 Καὶ

7 Καὶ κατένευσαν τοῖς μέτροις τοῖς ἐν τῷ ἐπέρω πολοῖα, ἃ ἐλθόντες συλλαβέσθαι αὐτοῖς· καὶ ἦλθον, ἔεπλησαν ἀμφοτέρω τὰ πολοῖα, ὥστε βυθίζεσθαι αὐτά.

8 Ἰδὼν ᾧ Σίμων Πέτρος προσέειπε τοῖς ἑταίροις ἃ Ἰησοῦς, λέγων· Ἐξέλθε ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι ἀνὴρ ἀμαρτωλὸς εἰμι, Κύριε·

9 Θάμβος γὰρ παρέλαβεν αὐτὸν καὶ πάντας τὸς σὺν αὐτῷ, ἐπὶ τῇ ἄρῃ τῶν ἰχθύων ἢ σπιλάθου·

10 Οὐρανόθεν ᾧ καὶ Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην, υἱὸς Ζεβεδαίου, οἱ ἦσαν κειρωνοὶ τῷ Σίμωνι. Καὶ εἶπε πρὸς τὸν Σίμονα ὁ Ἰησοῦς· Μὴ φοβῆ· ἀπὸ νῦν ἀνθρώπος ἔσσι Ζωρῶν.

11 Καὶ κατακαθίηεν τὰ πολοῖα ἐπὶ τῷ γλῶ, ἀφέντες ἅπαντα, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

12 Καὶ ἐρχόμενος ἐν τῷ εἶναί αὐτὸν ἐν μιᾷ τῶν πόλεων, καὶ ἰδὼς ἀνὴρ πλήρης λέπρας· ἔιδὼν τὸν Ἰησοῦν, πεσὼν ἐπὶ προσώπον, ἐδέηθη αὐτῷ, λέγων· Κύριε, ἐὰν θέλῃς, θύνασαι με καθαρίσαι.

13 Καὶ ἐκείνας τὰ χεῖρας, ἥψατο αὐτῷ, εἰπὼν· Θέλω, καθαρίσθη. Καὶ οὐδέως ἡ λέπρα ἀπῆλθεν ἀπ' αὐτῷ.

14 Καὶ αὐτὸς παρήγγειλεν αὐτῷ μηδενὶ εἰπεῖν· ἀλλὰ ἀπελθὼν δεῖξον σεαυτὸν τῷ ἱερεῖ, ἔωρασένεγκε πρὸς τὸν καθαρισμὸν ἕως ὅσον ἔπαυσε Μωσῆς, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς.

15 Διήγε-

- 15 Διήρχετο ἡ μάχαι οὗ λόγου· ὡσεὶ αὐτῶν ἔσωθήσαντο ὄχλοι πολλοὶ ἀκέραι, ἔθερα πείθεσθαι ὑπὸ αὐτῶν ἀπὸ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν.
- 16 Αὐτοὶ ἡντιμὴν ὑποχωρῶν ἐν ταῖς ἐρήμοις, καὶ περὶ θυρόθεν.
- 17 Καὶ ἐχρήσατο ἐν μιᾷ τῶν ἡμερῶν, καὶ αὐτοὶ ἡντιμὴν διδάσκον καὶ ἦσαν καθηήμεροι Φαρισαῖοι καὶ νομοδιδάσκαλοι, οἳ ἦσαν ἐληλυθότες ἐκ πείσης κώμης τῆς Γαλιλαίας καὶ Ἰσθαίας καὶ Ἰερουσαλήμ, καὶ δυνάμεις Κυρίου ἡντιμὴν εἰς τὸ ἰαθεῖν αὐτούς.
- 18 Καὶ ἰδὼν αὐτοὺς φέροντες ἐπὶ κλίνης ἀνθρώπον ὃς ἡντιμὴν ὄρα λελυμένον· καὶ ἐζήτησεν αὐτὸν εἰσενεγκεῖν, καὶ θέσται ἐνώπιον αὐτῶν.
- 19 Καὶ μὴ δορῶντες ἀλλὰ ποίας εἰσεινεγκωσιν αὐτὸν, ἀλλὰ τὸ ὄχλον, ἀναδάντες ἐπὶ τὸ δώμα, ἀλλὰ τῶν κερῶν κατήκταν αὐτὸν σὺν τῇ κλινιδίῳ εἰς τὸ μέσον ἐμπροσθεν τοῦ Ἰησοῦ.
- 20 Καὶ ἰδὼν τὴν πίστιν αὐτῶν, εἶπεν αὐτῶν· Ἄνθρωπε, ἀφίενταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου.
- 21 Καὶ ἤρξαντο ἀφαιολογίζεσθαι οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι, λέγοντες· Τίς ἐστιν ὁστος ὃς λαλεῖ βλασφημίας; τίς δύναται ἀφίεναι ἁμαρτίας εἰ μὴ μόνον ὁ Θεός;
- 22 Ἐπιγινῶσ ἡ ὁ Ἰησοῦς τὰς ἀφαιολογισμὰς αὐτῶν, ἀποκριθεὶς εἶπε πρὸς αὐτούς· Τί ἀφαιολογίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;
- 23 Τί ἐστιν ὁσπῶτερον, εἶπεν· Ἀφίενταί

σοι αὐτὴν ἀμαρτίαν ὧς ἢ εἶπεν· Ἐξήραυ καὶ
 περὶ πάντας·

- 24 Ἴνα ἡ εἰδῆτε ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀν-
 θρώπου ἐπὶ τῆς γῆς ἀφιέναι ἀμαρτίας, (εἶπε ταῦτ
 ὡς ἄρα λευμῶν) Σοὶ λέγω, ἔξήραυ, ἔξ ἄρας
 τὸ κλινίδιον ὧς, πορεύσῃς εἰς τὸ οἶκόν σου ὧς.
- 25 Καὶ ὡς ἄρα ἔξῃμα ἀναστὰς ἐνώπιον αὐ-
 τῶν, ἄρας εἶπεν ὅτι κατέκλιτο, ἀπῆλθεν εἰς τὸ
 εἶκον αὐτῶν, δοξάζων τὸ Θεόν.
- 26 Καὶ ἔκστασις ἔλαβεν ἅπαντας, καὶ ἐδόξα-
 ζον τὸ Θεόν· καὶ ἐπολήθησαν φόβος, λέγοντες·
 Ὅτι εἶδομεν ὡς ἄρα δόξα σήμερον.
- 27 Καὶ μετὰ ταῦτα ἐξῆλθε, καὶ ἐφεάσατο τε-
 λωνίῳ ὀνόματι Λαδίῳ, καὶ ἡμίμον ἐπὶ τὸ τε-
 λώνιον, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Αἰχμάλωτός μου·
- 28 Καὶ καὶ ἀλιπῶν ἅπαντα, ἀναστὰς ἠγο-
 λῆσεν αὐτῶν.
- 29 Καὶ ἐποίησε δοχλὸν μεγάλην ὁ Λαδῖς αὐτῷ
 ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτῶν· ἔην ὄχλος τελωνῶν πολὺς,
 καὶ ἄλλων οἱ ἦσαν μετ' αὐτῶν καὶ αἰκείμοι.
- 30 Καὶ ἐβόηζον οἱ γραμματεῖς αὐτῶν ἔτι οἱ φα-
 ρισαῖοι πρὸς τὸς μαθητὰς αὐτῶν, λέγοντες· Δια-
 τί μετὰ τελωνῶν ἔσονται ἀμαρτωλῶν ἐσθίεις καὶ πίνεις;
- 31 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπε πρὸς αὐ-
 τῶν· Οὐ χρειᾶν ἔχουσιν οἱ υἱοὶ τοῦ νομοῦ ἰατρῶν,
 ἀλλ' οἱ κακῶς ἐχούσι.
- 32 Οὐκ ἐλήλυθα καλέσαι δικαίους, ἀλλὰ
 ἀμαρτωλὸς εἰς μετάνοιαν.

33 Οἱ ᾧ εἶπον πρὸς αὐτόν· Διὰ τί οἱ μαθη-
ταὶ Ἰωάννη νησδύσσι πυκνὰ, καὶ δεήσας
ποιῶν), ὁμοίως καὶ οἱ τῶ φαρισαίων· οἱ ᾧ σοὶ
ἐοδύσσι καὶ πίνουσιν;

34 Οἱ ᾧ εἶπε πρὸς αὐτούς· Μὴ δυνάσθε τὰς
ἡγὰς εἶναι νυμφῶνος, ἐν ᾧ ὁ νυμφίος μετ' αὐ-
τῶν ἐστὶ, ποιῆσατε νησδύειν;

35 Ἐλθόντων ᾧ ἡμέρας καὶ ὅταν ἀπαρθῆ ἀπ'
αὐτῶν ὁ νυμφίος, τότε νησδύσασιν ἐν ἐκεί-
ναις ταῖς ἡμέραις·

36 Ἐλεγε ᾧ καὶ ᾧ Ἰερουσαλὴμ πρὸς αὐτούς·
Ὅτι ἐδείς ἐπίβλημα ἰματίου καμνῶ ἐπιθάλλ-
ει ἐπὶ ἱμάτιον παλαιόν· εἰ ᾧ μήγε, καὶ τὸ
καμνὸν ᾧ ᾧ, καὶ τῶ παλαιῶ εἰ συμφωνεῖ ἐπί-
βλημα τὸ ἀπὸ εἰ καμνῶ.

37 Καὶ ἐδείς βάλλει οἶνον νέον εἰς ἀσκὸς πα-
λαιός· εἰ ᾧ μήγε, ᾧ ᾧ ὁ νέος οἶνος τὰς ἀσκὸς,
εἰ αὐτὸς ἐκχυθήσει), καὶ οἱ ἀσκοὶ ἀπολθῶν).

38 Ἀλλὰ οἶνον νέον εἰς ἀσκὸς καμνῶς βληθῶν·
καὶ ἀμφοτέροι σωτηρῶν).

39 Καὶ ἐδείς πῶν παλαιόν, ᾧ ᾧ ἡ γέλη
νέον· λέγει γάρ· Ὁ παλαιὸς χρηστότερός ἐστιν.

Κεφ. 5. 6.

1 Ἐρχέσθαι ᾧ ἐν σαββάτω δεύτερο πρῶτον
ἀφ' ἀπορεύσει αὐτὸν ἀφ' ᾧ ἀπολείμων· εἰ
ἐπὶ πλὸν οἱ μαθηταὶ αὐτῶ τὰς σάββας, καὶ
ᾧ ᾧ, ψάλλοντες ταῖς χερσίν.

2 Τινὲς ᾧ τῶ φαρισαίων εἶπαν αὐτοῖς· Τί
ποιεῖτε

ποιεῖτε ὃ ὅσα ἔξεσι ποιεῖν ἐν ταῖς σαβοῖαις;

3 Καὶ ἀποκριθεὶς πρὸς αὐτὸς εἶπεν ὁ Ἰησοῦς·
Οὐδὲ τῷτο ἀνέγνωτε ὃ ἐποίησε Δαβὶδ, ὁπότε
ἐπέινασεν αὐτὸς καὶ οἱ μετ' αὐτῷ ὄντες;

4 Ὡς εἰσῆλθεν εἰς τὸ οἶκον τοῦ Θεοῦ, καὶ τὰς
ἄρτας τῆς προθέσεως ἔλαβε, καὶ ἔφαγε, ἔ-
ἔδωκε καὶ τοῖς μετ' αὐτῷ· ἔς ὅσα ἔξεσι φα-
γεῖν εἰ μὴ μόνον τὰς ἰσραήλ;

5 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς· Ὅτι κύριός ἐστιν ὁ υἱὸς
τοῦ ἀνθρώπου καὶ τοῦ σαβοῦατος.

6 Ἐγγύθετε καὶ ἐν ἑτέρῳ σαβοῦατῷ εἰσελθεῖν
αὐτὸν εἰς τὸ σιναγωγὴν, καὶ διδάσκειν· καὶ
ὡς ἐκεῖ ἀνθρώπων, ἔτι ἡ χεὶρ αὐτῷ ἡ δεξιὰ
ὡς ἔρημα.

7 Παρέλιπον δὲ αὐτὸν οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ
Φαρισαῖοι εἰ ἐν τῷ σαβοῦατῷ ἑρπεκῶν
ἵνα ὄρωσι κητηρεῖαν αὐτῷ.

8 Αὐτὸς δὲ ἤδεν τὰς ἀφρολογισμὰς αὐτῶν· ἔειπε
τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ἔρημῳ ἔχοντι τὴν χεῖρα· Ἐγ-
γύρα, καὶ σῆθι εἰς τὸ μέσον· Ὁ δὲ ἀναστὰς ἔστη.

9 Εἶπεν ἔτι ὁ Ἰησοῦς πρὸς αὐτὸς· Ἐπερωλήσω
ὑμᾶς λέγει· ἔξεσι τοῖς σαβοῦασι ἀγαθοποιῆσαι,
ἢ κηκοποιῆσαι; Ψυχῶν σωσαι, ἢ ἀπολέσαι;

10 Καὶ περιβλεψάμενος πάντας αὐτὸς, εἶ-
πε τῷ ἀνθρώπῳ· Ἐκτενον τὴν χεῖρά σου. Ὁ δὲ
ἐποίησεν ἕτω· καὶ ἀποκατετάθη ἡ χεὶρ αὐτῷ
ὕγιος ὡς ἡ ἄλλη.

11 Αὐτοὶ δὲ ἐπλήσθησαν ἀνοίας· ἔδειλάκον
πρὸς

πρὸς ἀλλήλους, τί αὐτὸ ποιήσαντες τῷ Ἰησοῦ.

12 Ἐξήντη ὃ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις, ἐξῆλθον εἰς τὸ ὄρος πρὸς οὐζαζ. Ἐὼς Ἀβινυκπερύων ἐν τῇ πρὸς οὐχῇ τοῦ Θεοῦ.

13 Καὶ ὅτε ἐξήντη ἡμέρα, πρὸς φάνησε τὰς μαθηταῖς αὐτοῦ καὶ ἐκλεξάμενος ἀπὸ αὐτῶν δώδεκα, ἔς καὶ ἀποστόλους ἀνόμασε.

14 (Σίμωνα, ὃν καὶ ἀνόμασε Πέτρον, ἔσ Ἀνδρέαν τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ, Γάκωβον καὶ Γωάννην, Φίλιππον καὶ Βαρθολομαῖον.

15 Ματθαῖον ἔσ Θωμᾶν, Γάκωβον τὸν ἑσ Ἀλφαιῦ, ἔσ Σίμωνα τὸν καλεῖσθαι Ζηλωτῆν.

16 Ἰσδαν Γακώβ, ἔσ Ἰσδαν Ἰσκαριώτην, ὃς καὶ ἐξήντη πρὸς δότις.)

17 Καὶ κατέβησεν μετὰ αὐτῶν, ἔσ ἐπὶ τόπος πεδινῶν καὶ ὄχλος μαθητῶν αὐτοῦ, ἔσ πολλὸς ἔσ λαὸς ἀπὸ παύσης τῆς Ἰσδαίας καὶ Ἰερουσαλήμ, ἔσ τῶν ἑσ Γαλιλαίας Τύρος ἔσ Σιδωνίων, οἳ ἦλθον ἀκῆσθαι αὐτοῦ, ἔσ ἰαθῆσθαι ἀπὸ τῶν νόσων αὐτῶν.

18 Καὶ οἱ ὄχλος μαθητῶν ἀπὸ πνύματων ἀκαθάρτων καὶ ἰσθεραπεύοντο.

19 Καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἐζήτητὸ ἀπὸ αὐτοῦ ὅτι δώσῃσ παρὰ αὐτοῦ ἐξήρχετο, ἔσ ἰάτο πάντας.

20 Καὶ αὐτὸς ἐπάρας τὰς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ εἰς τὰς μαθητάς αὐτοῦ, ἔλεγε· Μακάριοι οἱ πτωχοί ὅτι ὑμετέρας ἐστὶ ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ.

21 Μακάριοι οἱ πέναντες νῦν ὅτι χρῆσθησθε

Μακά-

Μακάριοι οἱ κλαίοντες νῦν· ὅτι γελάσετε·

22 Μακάριοι ἐστὲ ὅταν μισήσωσιν ὑμᾶς οἱ ἄνθρωποι, καὶ ὅταν ἀφορέωσιν ὑμᾶς, καὶ ὀνειδίωσιν, καὶ ἐκβάλωσι τὸ ὄνομα ὑμῶν ὡς πονηρὸν, ἕνεκα τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ ἀνθρώπου.

23 Χαίrete ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ καὶ σκιρτήσατε· ἰδοὺ γὰρ, ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐν τῷ ἔργῳ· καὶ ταῦτα γὰρ ἐποίησιν τοῖς ψευδοπροφήταις οἱ πατέρες αὐτῶν.

24 Πλὴν καὶ ὑμῖν τοῖς πλυσίτοις· ὅτι ἀπέχετε πλὴν τοῦ ἔργου ὑμῶν.

25 Οὐαὶ ὑμῖν οἱ ἐμπεπλησμένοι· ὅτι πενθήσετε. Οὐαὶ ὑμῖν οἱ γελῶντες νῦν· ὅτι πενθήσετε καὶ κλαύσετε.

26 Οὐαὶ ὑμῖν ὅταν καλῶς ὑμᾶς εἴπωσι πάντες οἱ ἄνθρωποι· καὶ ταῦτα γὰρ ἐποίησιν τοῖς ψευδοπροφήταις οἱ πατέρες αὐτῶν.

27 Ἀλλ' ὑμῖν λέγω τοῖς ἀκούουσιν· Ἀγαπήτε τὸν ἐχθρὸν ὑμῶν· καλῶς ποιεῖτε τοῖς μισήσασιν ὑμᾶς.

28 Εὐλογεῖτε τὸν καταραμένον ὑμῖν· καὶ προσεύχετε ὑπὲρ τοῦ ἐπηρεάζοντος ὑμᾶς.

29 Τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον, παρέχε καὶ τὸ ἄλλω· καὶ ἀπὸ τοῦ αἵροντός σε τὸ ἴματιον, ἐπὶ τὴν χετῆνα μὴ καλύψης.

30 Παντὶ ᾧ τὰ αἰτῆνί σε, δίδε· καὶ ἀπὸ τοῦ αἵροντός σε τὰ σά, μὴ ἀπάτη.

31 Καὶ χαρῶς θέlete ἵνα ποιῶσιν ὑμῖν οἱ ἄνθρωποι,

ἀνθρώποι, καὶ ὑμεῖς ποιεῖτε αὐτοῖς ὁμοίως.

32 Καὶ εἰ ἀγαπᾶτε τὰς ἀγαπῶντας ὑμᾶς, ποῖα ὑμῖν χάρις ἐστὶ; καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ τὰς ἀγαπῶντας αὐτὰς ἀγαπῶσι.

33 Καὶ εἰ ἀγαθοποιῶντε τὰς ἀγαθοποιῶντας ὑμᾶς, ποῖα ὑμῖν χάρις ἐστὶ; καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ τὸ αὐτὸ ποιοῦσι.

34 Καὶ εἰ ἀδανείζητε παρ' ὧν ἐλπίζετε ἀπολαβεῖν, ποῖα ὑμῖν χάρις ἐστὶ; καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἁμαρτωλοῖς δανείζουσιν, ἵνα ἀπλάβωσι πάλιν ἴσα.

35 Πλὴν ἀγαπᾶτε τὰς ἐχθρὰς ὑμῶν, καὶ ἀγαθοποιεῖτε, καὶ δανείζητε μηδὲν ἀπιλπίζουσι· καὶ ἔσται ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς, καὶ ἔσθε υἱοὶ τοῦ ἁγίου· ὅτι αὐτὸς χρηστὸς ἐστὶν ἐπὶ τὰς ἀγαθήσους καὶ πονηράς.

36 Γίνεσθε οὐκ οἰκλήροντες, καθὼς καὶ ὁ πατὴρ ὑμῶν οἰκλήρων ἐστὶ.

37 Καὶ μὴ κερῖτε, καὶ ἔ μὴ κερῆντε· μὴ καταδικάζετε, καὶ ἔ μὴ καταδικαδῆντε· ἀπολύετε, καὶ ἀπολυθήσεσθε.

38 Διδότε, καὶ δοθήσεται ὑμῖν· μέτρον καλόν, πεπισμῶν καὶ σισαλόμενον ἔπιπερχυόμενον δώσκειν εἰς τὸ κάλυπον ὑμῶν· τὸ γὰρ αὐτὸ μέτρον ὃ μετρεῖτε, ἀνικεμήρησθε ὑμῖν.

39 Εἶπεν ὁ Ἰησοῦς αὐτοῖς· Μήτις δύναται τυφλὸς τυφλὸν ὁδηγεῖν; ἐχὲ ἀμφοτέροι εἰς βόθυνον πρῶν;

- 40 Οὐκ ἔστι μαθητὴς ὑπὲρ τὸ διδάσκαλον αὐτοῦ· κατηρτισμένος ἢ πᾶς ἔσται ὡς ὁ διδάσκαλος αὐτοῦ.
- 41 Τί ἢ βλέπεις τὸ κάρφον τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ ἢ ἀδελφοῦ σου· τὴν ἢ δεικνὸν τὴν ἐν τῷ ἰδίῳ ὀφθαλμῷ ἢ κρινοῦν;
- 42 Ἡ πῶς διώσεται λέγειν τῷ ἀδελφῷ σου· Ἀδελφε, ἄφες ἐκβάλλω τὸ κάρφον τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου· αὐτὸς ἢ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου δεικνὸν ἢ βλέπων; Ὑποκριτὰ, ἐκβαλε πρῶτον τὴν δεικνὸν ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου· καὶ τότε ἀβλέψεις ἐκβαλεῖν τὸ κάρφον τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ ἢ ἀδελφοῦ σου.
- 43 Οὐ γὰρ ἔστι δένδρον καλόν, ποιῶν καρπὸν σαπρὸν· ἐδὲ δένδρον σαπρὸν, ποιῶν καρπὸν καλόν.
- 44 Ἐκαστον γὰρ δένδρον ἐκ τοῦ ἰδίου καρποῦ γινώσκει· ἢ γὰρ ἐξ ἀκαθῶν συλλέγεται σῦκα, ἐδὲ ἐκ βάτου τραγῶσι φαφυλίω.
- 45 Ὁ ἀγαθὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ ἀγαθοῦ θησαυροῦ τῆς καρδίας αὐτοῦ προφέρει τὸ ἀγαθόν· ὁ πονηρὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ πονηροῦ θησαυροῦ τῆς καρδίας αὐτοῦ προφέρει τὸ πονηρόν· ἐκ γὰρ τοῦ πηλοῦ μαίεται τῆς καρδίας λαλεῖ τὸ σῶμα αὐτοῦ.
- 46 Τί δέ με καλεῖτε Κύριε, Κύριε· καὶ ἢ ποιῆτε ὅσα λέγω;
- 47 Πᾶς ὁ ἐρχόμενος πρὸς με, καὶ ἀκούων με τῶν

τῶν λόγων, καὶ ποιοῦν αὐτὰς, ὑποδείξω ὑμῖν
τί τι ἐστὶν ὄμρι.

48 Ὁ μριός ἐστι ἀνθρώπου οἰκοδομησέν τι οἰκίαν,
ὡς ἴσκαψε καὶ ἐβάθυνε καὶ ἔθηκε θεμελίον
ἐπὶ τῷ πέτρῳ· ὡλημύρας ἢ γλυκομήνης,
ἠροσέρηξεν ὁ ποταμός τῇ οἰκίᾳ ἐκείνῃ, καὶ
ὅσα ἰχθυοσὶ σαλευσάμεν αὐτῷ· τεθεμελίωθη γὰρ
ἐπὶ τῷ πέτρῳ.

49 Οἱ δὲ ἀκέραιος καὶ μὴ ποιήσας, ὄμριός ἐστιν
ἀνθρώπου οἰκοδομησέν τι οἰκίαν ἐπὶ τῷ γλῶ
χωρὶς θεμελίῳ· ἢ ἠροσέρηξεν ὁ ποταμός· ἐ
ὄθως ἐπέσει, καὶ ἐχλύσεται τὸ ῥῆγμα τῆ οἰκίας
ἐκείνης μέγα.

Κεφ. ζ'. 7.

1 Ἐπεὶ δὲ ἐπλήρωσε πάντα τὰ ῥήματα
αὐτῷ εἰς τὰς ἀγκὰς τοῦ λαοῦ, εἰσηλθεν εἰς
Καπὸρνάου.

2 Ἐκαθὲν ἀρχὴ δὲ πνεύματος ἁγίου κακῶς
ἔχων, ἠμελλε τελούων, ὡς ἰὼ αὐτῷ ἐν ἡμέρας.

3 Ἀκέραιος ἢ ἠροσέρηξεν Ἰησοῦς, ἀπέστρεψε πρὸς
αὐτὸν πρεσβυτέρους τῆ Ἰουδαίας, ἐρωτῶν αὐ
τὸν, ὡπως ἐλθὼν ἀφωσώσῃ τὸ δῶλον αὐτοῦ.

4 Οἱ δὲ ἠροσέρηξον πρὸς τὸ Ἰησοῦν, πα
ρευκαίλυν αὐτὸν ἀπεδοαίως, λέγοντες, ὡπ ἀξίός
ἐστὶν ὡ παρὶξέ τῶν.

5 Ἀγαπᾷ γὰρ τὸ ἔθνος ἡμῶν, ἐ τῆ σινα
γωγῇ αὐτὸς ὡκοδομησέν ἡμῖν.

6 Οἱ δὲ Ἰησοῦς ἐπεροσέρηξεν αὐτοῖς. ἦδη ἢ
αὐτῷ

αὐτῷ ἔμακρὰν ἀπέχρησεν διὰ τὴν οἰκίαν.
ἔπεμψε πρὸς αὐτὸν ὁ ἑκατὸν ἄρχων φίλος,
λέγων αὐτῷ· Κύριε, μὴ σκύνῃς· ἔγώ εἰμι
ἱκανὸς ἵνα ὑπὸ τῷ σέγλιω μου εἰσέλθῃς·

7 Διὸ ἔδὲ ἑμαυτὸν ἠξίωσα πρὸς σε εἰλθεῖν·
ἀλλὰ ἐπεὶ λόγῳ, καὶ ἰαθήσῃ ὁ πᾶς μου.

8 Καὶ γὰρ ἐγὼ ἄνθρωπος εἰμι ὑπὸ ἐξουσίαν
παιδοκόμου, ἔχων ὑπὸ ἑμαυτὸν στρατιώτας·
καὶ λέγω τέτῳ· Προσθῆκί, καὶ πρόσθῃ· καὶ
ἄλλῳ· Ἐρχε, καὶ ἔρχε· καὶ τῷ δούλω μου
Ποίησον τῷτ, καὶ ποιεί.

9 Ἀκούσας ὅτι ταῦτα ὁ Ἰησοῦς, ἐθαύμασεν
αὐτὸν καὶ εὐφραίνετο, τῷ ἀκροαθῆναι αὐτῷ
ὄχλῳ εἶπε· Λέγω ὑμῖν, ἔδὲ ἐν τῷ Ἰσραὴλ
ποσαῦτῳ πῖστιν δοῦρον.

10 Καὶ ὑποσπείσαντες οἱ πεμφθέντες εἰς τὸν
οἶκον, δοῦρον τῷ ἀσθενεῖ δούλον ὑκαίνοντα.

11 Καὶ ἐλθόντες ἐν τῇ ἐξῆς, ἐπορεύθη εἰς
πόλιν καλεσμένην Ναῖν· καὶ συνεπορεύοντο
αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτῷ ἱκανοί, καὶ ὄχλος
πολύς.

12 Ὡς ὅτε ἤγγισεν τῇ πύλῃ τῆς πόλεως, εἶδεν ἕξ
κομίζοντες πεδνηκῶς, ἕως μεγιστοῦς τῇ μητρὶ
αὐτοῦ· καὶ αὐτὴ χήρα. Ἐὸς ὄχλος τῆς πόλεως
ἱκανὸς ἕως αὐτῆς.

13 Καὶ ἰδὼν αὐτῶν ὁ Κύριος, ἐσπλαγχνί-
σθη ἐπ' αὐτῆς, καὶ εἶπεν αὐτῇ· Μὴ κλαῖε.

14 Καὶ πρὸς ἐλθὼν ἠψάθη τὸ σπέρμα, (οἱ δὲ
Κ βασι-

βασταζούτες ἔσησαν) καὶ εἶπε· Νεανίσκος, σοὶ λέγω, ἐγάρφη.

15 Καὶ ἀνεκρίθισεν ὁ νεκρὸς, καὶ ἤρξατο λαλεῖν. καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς τῆς μηντῆς αὐτοῦ.

16 Ἐλάβε ἡ φόβος ἅπαντες, καὶ ἐδόξαζον τὸν Θεὸν, λέγοντες· Ὅτι αἰσθητὴς μέγας ἐγγύς ἐστι ἡμῶν, καὶ ὅτι ἐπισκέψατο ὁ Θεὸς τὸν λαόν αὐτοῦ.

17 Καὶ ἐξῆλθεν ὁ λόγος ἐστὶ ἐν ἅλῃ τῆς Ἰουδαίας περὶ αὐτῶν, εἰς πᾶσιν τῆς περιχώρου.

18 Καὶ ἀπήγειλαν Ἰωάννη οἱ μαθηταὶ αὐτῶν περὶ πάντων τέτατον. Καὶ προσκαλεσάμενον δύο πρὸς τὸ μαθητῶν αὐτῶν ὁ Ἰωάννης,

19 Ἐπιμύσει πρὸς τὸ Ἰησοῦν, λέγων· Σὺ εἶ ὁ ἐρχόμενος, ἢ ἄλλον προσδοκῶμεν;

20 Παραγγύμενοι ἡμῶν πρὸς αὐτοῖς οἱ ἀνδρες, εἶπε· Ἰωάννης ὁ βαπτιστὴς ἀπέστειλεν ἡμῶν πρὸς σὺν, λέγων· Σὺ εἶ ὁ ἐρχόμενος, ἢ ἄλλον προσδοκῶμεν;

21 Ἐν αὐτῇ ἡ τῆς ὥρας ἐπελάπισε πολλὰς ἀπὸ νόσων καὶ μαστιῶν καὶ πνύματων πονηρῶν καὶ τυφλοῖς πολλοῖς ἐχαρίσατο τὰ βλέπειν.

22 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Προσθίνετε ἀπαγγείλατε Ἰωάννη ἃ εἶδετε καὶ ἠκούσατε· ὅτι τυφλοὶ ἀναβλέπουσιν, χωλοὶ περιπατοῦσιν, λεπτοὶ καθαρίζονται, κωφοὶ ἀκούουσιν, νεκροὶ ἐγείρονται, πτωχοὶ ἀγαθὰ λαμβάνουσιν.

23 Καὶ

- 23 Καὶ μακρὸς ἐστὶ ὁσ ἐὰν μὴ σκαυδαλι-
δῆ ἐν ἔργῳ.
- 24 Ἀπελθόντων ἡ τῶν ἀγγέλων Ἰωάννου, ἤρξατο
λέγειν πρὸς τὰς ὄχλους περὶ Ἰωάννου· Τί ἐξ-
εληλύθατε εἰς τὴν ἔρημον θεάσασθε; καὶ λα-
μνον ὑπὸ ἀνέμῳ σκαυδύμενοι;
- 25 Ἀλλὰ τί ἐξεληλύθατε ἰδεῖν; ἄνθρωπον ἐν
μαλακῆς ἰματίοις ἢ μεφιστόματον; ἰδὲ, οἱ ἐν
ἰματισμῷ ἐνδόξῳ καὶ τρυφῇ ὑπάρχοντες, ἐν
τοῖς βασιλείοις εἰσὶν.
- 26 Ἀλλὰ τί ἐξεληλύθατε ἰδεῖν; περὶ τί;
- 27 Οὕτως ἐστὶ περὶ ἡ γέγραπται· ἰδὲ, ἐγὼ ἔπα-
ρέλω τῷ ἀγγέλῳ μου πρὸ προσώπου σου, ὃς
κατασκιάσει τὴν ὁδὸν σου ἕμπεροῦν σου.
- 28 Λέγω ὑμῖν, μείζων ἐν ἡσθητοῖς γυναι-
κῶν περὶ Ἰωάννου τῷ βαπτιστῆς ἕδεις ἐστὶ·
ὁ ἢ μικρότερος ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ,
μείζων αὐτοῦ ἐστὶ.
- 29 Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀκέσας καὶ οἱ τελῶνας,
ἐδουλοῦσάν τὸν Θεὸν, βαπτισθέντες τὸ βά-
πτισμα Ἰωάννου.
- 30 Οἱ ἡ φαρισαιοὶ καὶ οἱ νομικοὶ τῷ βαλῶν
τοῦ Θεοῦ ἠθέτησαν εἰς ἰαυλῆς, μὴ βαπτισθέντες
ὑπὸ αὐτοῦ.
- 31 Εἶπε ἡ ὁ Κύριος· Τίτι ἐν ὀργισίῳ τὰς ἀν-
θρώπους τῷ ἡσθητῆς ταύτης; ἔτι εἰσὶν ὄμοιοι;
- 32 Ὅμοιοὶ εἰσι παιδοῖς τοῖς ἐν ἀργεῖ κατη-
κῆταις.

μύροις, καὶ αρωματισμοῖς ἀλλήλοις, καὶ λέξασιν· Ἡὐλήσατε μοι ὑμῖν, καὶ ἔσθε ἀρχήσασθε· ἐθρήνησατε μοι ὑμῖν, καὶ ἔσθε ἐκλαύσατε.

33 Ἐλήλυθε γὰρ Ἰωάννης ὁ βαπτιστῆς μήτε ἄρτον ἐσθίαν, μήτε οἶνον πίνων· ἔλεγε δὲ· Δαιμόνιον ἔχει.

34 Ἐλήλυθεν ὁ υἱὸς δὲ ἀνθρώπου ἐσθίαν καὶ πίνων· καὶ λέγετε· Ἰδὲ, ἄνθρωπος φάσι καὶ οἰνοπότης, τελωνῶν φίλος καὶ ἁμαρτωλῶν.

35 Καὶ ἐδικαιώθη ἡ σοφία ἀπὸ τῶν τέκνων αὐτῆς πάντων.

36 Ἡρώτα δὲ τις αὐτὸν τῶν φαρισαίων ἵνα φάγη μετ' αὐτῶ· καὶ ἐσελθὼν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ φαρισαίου, ἀνεκλίθη.

37 Καὶ ἰδὲ, γυνὴ ἐν τῇ πόλει ἥτις ἦν ἁμαρτωλὸς, ἐπιγνῶσα ὅτι ἀνάκειτο ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ φαρισαίου, κρημίσασα ἀλάβαστρον μύρου·

38 Καὶ ἔστρεψε τὰς πόδας αὐτῆς ὀπίσω, κλαίουσα, ἤρξατο βρέχειν τὰς πόδας αὐτῆς τοῖς δάκρυσι· καὶ ταῖς θριξί τ' κεφαλῆς αὐτῆς ἐξέμασσε, καὶ κατεφίλη τὰς πόδας αὐτῆς, καὶ ἤλεψε τὰ μύρω.

39 Ἰδὼν δὲ ὁ φαρισαῖος ὁ καλέσας αὐτὸν, εἶπεν ἐν ἑαυτῷ, λέγων· Οὐτός, εἰ μὴ αρωματιστής, ἐγίνωσκεν αὐτὴν καὶ περὶ αὐτῆς ἡ γυνὴ ἥτις ἄπιστος αὐτῶ· ὅτι ἁμαρτωλὸς ἐστίν.

40 Καὶ ἀπεκρίθεις ὁ Ἰησοῦς, εἶπε πρὸς αὐτὸν· Σίμων, ἔχουσι τι εἰπεῖν. Ὁ δὲ φησὶ· Διδάσκαλε, εἰπέ.

41 Δύο

41 Δύο χρεωφλέτται ἦσαν δανείσῃ τινι· ὁ εἷς ὠφλε δυνάμει πεντακόντια, ὁ δὲ ἕτερος πνιτήκοντα.

42 Μὴ ἔχόντων ἃ αὐτῶν ἀποδῶναι, ἀμφοτέροις ἐχαρίσατο. Τίς οὐκ αὐτῶν, εἶπε, πλεῖον αὐτὸν ἀγαπήσει;

43 Ἀποκριθεὶς ὁ Σίμων, εἶπεν· Ὑπολαμβάνω ὅτι ἃ τὸ πλεῖον ἐχαρίσατο. Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ὁρθῶς ἔκελευας.

44 Καὶ εραφεὶς πρὸς τὴν γυναῖκα, τῷ Σίμωνι ἔφη· Βλέπεις ταύτην τὴν γυναῖκα; εἰσῆλθὸν σε εἰς τὴν οἰκίαν, ὕδωρ ἐπὶ τὰς πόδας μου ὡς ἔδωκας· αὕτη δὲ τοῖς δούκρυσιν ἔβρεξε μου τὰς πόδας, καὶ ταῖς ἡρξί τὴν κεφαλῆς αὐτῆς ἐξέμαξε.

45 Φίλημαί μοι ὡς ἔδωκας· αὕτη δὲ, ἀφ' ἧς εἰσῆλθον, ἐδέλιπε καὶ φιλοῦσά μου τὰς πόδας.

46 Ἐλαίῳ τὴν κεφαλῆν μου ὡς ἠλψας· αὕτη δὲ μύρω ἠλψέ μου τὰς πόδας.

47 Οὐ χάριν, λέγω σοι, ἀφῆων ἢ ἀμαρτίας αὐτῆς ἀποκαί· ὅτι ἠγάπησε πολὺ· ἢ δὲ ὀλίγην ἀφίε, ὀλίγην ἀγαπᾷ.

48 Εἶπε δὲ αὐτῇ· Ἀφῆωνταί σε ἀμαρτίας.

49 Καὶ ἤρξαντο οἱ σιωννακαίμαχοι λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· Τίς ἕτός ἐστιν ὃς ἐ ἀμαρτίας ἀφίησιν;

50 Εἶπε δὲ πρὸς τὴν γυναῖκα· Ἡ πίστις σε σέσωκέ σε· πορεύε εἰς ἐριζώην.

Κεφ. η'. 8.

1 Καὶ ἰχθύετο ἐν τῇ καφεζῆς, καὶ αὐτὸς δι-
 ἰώδουε κτὴ πόλιν κτὴ κώμην, κηρύσσων κτὴ
 διαγγελιζόμενος τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ· ὅτι
 εἰ δώδεκα σιὸν αὐτῷ.

2 Καὶ γυναῖκες ἴνες αἱ ἦσαν τετραπολύ-
 ρμοίαι ἀπὸ πνυμάτων πονηρῶν ἔαδειφῶν·
 Μαρία ἡ καλεσθεῖσα Μαθθαλίω, ἀφ' ἧς
 δαιμόνια ἐπέειξεληλύθη,

3 Καὶ Ἰωάννα γυνὴ Χεζαῖ ἐπιτροπῆς Ἡρώ-
 δα, ἔ Σαβίνα, καὶ ἕτεραί πολλαί, αἱ πνες
 διηκόνει αὐτῷ ἀπὸ τῶν ὑπαρχόντων αὐταῖς.

4 Σωσιπῆρος ὁ ὄχλος πολλοῦ, κτὴ τὴ πό-
 λιν ἐπιπορεύομένων πρὸς αὐτὸν, εἶπε ἀφ'
 ὧν ἀβολῆς·

5 Ἐξῆλθεν ὁ ἀπείρων τῶν ἀπείρων τῶν ἀπείρων
 αὐτῶν καὶ ἐν τῷ ἀπείρῳ αὐτὸν, ὁ ῥῆς ἐπέσει
 ὧν ἀβολῆς τῶν ὀδῶν, κτὴ καλεσθεῖς τῆς, κτὴ τῆς πέτρας
 τῶν ἔργων κατέφαγεν αὐτό.

6 Καὶ ἕτερον ἐπέσει ἐπὶ τῶν πύργων, κτὴ φῦς
 ἐξηράνη, ἀφ' ἧς τὸ μὴ ἔχειν ἰκμάδα.

7 Καὶ ἕτερον ἐπέσει ἐν μέσῳ τῶν ἀκαθῶν,
 κτὴ συμφυεῖσαι αἱ ἀκαθῶν ἀπέπνυξαν αὐτό.

8 Καὶ ἕτερον ἐπέσει ἐπὶ τῶν γῆν τῶν ἀσάθων ἔ φῦς
 ἐποίησε καρπὸν ἐκαθῶν ἀκαθῶν· Ταῦτα
 λέγειν ἐφάνη· Ὁ ἔχων ἄπῳ ἀκέρῳ, ἀκέρῳ.

9 Ἐπηρεῶται ὁ αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ,
 λέγοντες, τίς εἶν ἡ ὧν ἀβολῆς αὐτῆ.

10 Ὁ ὅς

δοθήσε) αὐτῶ· κὶ ὅς αὐ μὴ ἔχη, κὶ ὁ δοκεῖ
ἔχειν, δοθήσε) ἀπ' αὐτοῦ.

19 Παρεγγύοντο) πρὸς αὐτὸν ἡ μήτηρ κὶ οἱ
ἀδελφοὶ αὐτῶ, κὶ οὐκ ἠδυνάμην συνιπεῖν
αὐτῶ ἀφ' τὸν ὄχλον·

20 Καὶ ἀπηγγέλη αὐτῶ, λεγόντων· Ἡ μήτηρ
σε καὶ οἱ ἀδελφοὶ σε ἐζητοῦσιν ἵνα, ἰδεῖν σε
θέλωσιν.

21 Ο) ὁ ἀποκριθεὶς, εἶπε πρὸς αὐτῶ· Μή-
τηρ μου κὶ ἀδελφοί μου, εἴ τοί εἰσιν οἱ τ' λόγον
ἔ) Θεοῦ ἀκούοντες, κὶ ποιουῦντες αὐτῶν.

22 Καὶ ἐχρῆστο εὐ μιᾶ τ' ἡμερῶν, κὶ αὐτὸς
ἐπέβη εἰς πλοῖον, ἔ) οἱ μαθηταὶ αὐτῶ· καὶ
εἶπε πρὸς αὐτῶ· Διέλθωμεν εἰς τὸ πέραν τ'
λίμνης. Καὶ ἀνήχησαν.

23 Πλείοντων) αὐτῶν ἀφύπνωσε) κὶ κατέβη
λαίλαψ ἀνέμου εἰς τὸν λίμνην. καὶ συν-
επληροῦντο, καὶ ἐκινδυνώσαν.

24 Προσελθόντες) διήλθον αὐτῶν, λέγοντες·
Ἐπιστάτω) ἐπιστάτω, ἀπολύμεθα. Ο) ὁ ἐπι-
θεὶς ἐπέμνησε τῶ ἀνέμῳ κὶ τῶ κλύδωνι ἔ)
ὑδάτι)· κὶ ἐπαύσαντο ἔ) ἐχρῆστο χαλῶν.

25 Εἶπε) αὐτοῖς· Πῶ) εἰσιν ἡ πίσις ὑμῶν; Φο-
βηθέντες) ἐθαύμασαν, λέγοντες πρὸς ἀλλήλους·
Τίς) ἄρα) εἶς) εἰσιν, ὅτι καὶ τοῖς ἀνέμοις ἐπι-
πέσσει) κὶ τῶ ὑδάτι, ἔ) ὡς ἀκούσιν αὐτῶ;

26 Καὶ κατέπλυσαν εἰς τ' χῶρον τῶν Γα-
δαρῶν, ἧς) εἰσιν ἀνηπίρσι) τ' Γαλιλαίας.

27 Εἶελ-

- 27 Ἐξελθόντι ἃ αὐτῷ ἐπὶ τὴν γλῶσσαν, ὑπελά-
 τησεν αὐτῷ ἀνὴρ ἕως ἐκ τῆς πόλεως, ὃς εἶχε
 δαιμόνια ἐκ χρόνων ἰκανῶν, καὶ ἰμάτιον ἐκ
 ἐνεδιδύσκετο, καὶ ἐν οἰκίᾳ σὺν ἑμμένον, ἀλλ'
 ἐν τοῖς μνήμασιν.
- 28 Ἰδὼν ἃ τὸ Ἰησοῦν, ἐὼς ἀνακραζάσας, προσέπε-
 σεν αὐτῷ, καὶ φωνῇ μεγάλη εἶπε· Τί ἐμοὶ
 καὶ σοὶ, Ἰησοῦ υἱοῦ τοῦ Θεοῦ τοῦ ὑψίστου; δέο-
 μά σου μή με βασανίσῃς.
- 29 Παρήγγειλε γὰρ τῷ πνεύματι τῷ ἀκαθάρ-
 τῳ ἐξελθεῖν ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου· πολλοὶς γὰρ χρό-
 νοῖς στυγηρπάκῃ αὐτόν· ἐὼς ἐδεσμεῖτο ἀλύσει
 καὶ πέδαις φυλασσόμενον· ἐὼς ἀφ' ἁρτίστων τὰ
 δεσμά, ἠλαύνετο ὑπὸ τοῦ δαίμονος εἰς τὰς
 ἐρήμους.
- 30 Ἐπηρώτησε δὲ αὐτόν ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Τί
 σοὶ εἰν ὄνομα; ὃς ἃ εἶπε· Λεγεών· ὅτι δαι-
 μόνια πολλὰ εἰσῆλθεν εἰς αὐτόν.
- 31 Καὶ παρεκάλει αὐτὸν ἵνα μὴ ἐπιτάξῃ αὐ-
 τοῖς εἰς τὴν ἄβυσσον ἀπελθεῖν.
- 32 Ἦν ἃ ἐκεῖ ἀγάλη χοίρων ἰκανῶν βοσκο-
 μένων ἐν τῷ ὄρει· καὶ παρεκάλει αὐτὸν ἵνα
 ἐπιτρέψῃ αὐτοῖς εἰς ἐκεῖνας εἰσελθεῖν. Καὶ
 ἐπέτρεψεν αὐτοῖς.
- 33 Ἐξελθόντα ἃ τὰ δαιμόνια ἀπὸ τοῦ ἀνθρώ-
 που, εἰσῆλθεν εἰς τὰς χοίρας· καὶ ἄρμησεν ἢ
 ἀγάλη καὶ τοῦ κρημνοῦ εἰς τὴν λίμνην· καὶ
 ἀπεπνίγη.

- 34 Ἰδόντες δὲ οἱ βόσκοι τὸ γαλλιμαῖον,
ἔφυγον καὶ ἀπελθόντες ἀπήγειλαν εἰς τὴν
πόλιν καὶ εἰς τὰς ἀγρὰς.
- 35 Ἐξῆλθεν ἢ ἰδεῖν τὸ γαλιμαῖον· ἔηλθεν πρὸς
τὸ Ἰησοῦν, καὶ δύρον κατήμιον τὸ ἄνθρωπον,
ἀφ' ἧς τὰ δαιμόνια ἐξεληλύθη, ἰματισμὸν
καὶ σωφρονεῖται πρὸς τὰς πόδας τοῦ Ἰησοῦ καὶ
ἐφοβήθησαν.
- 36 Ἀπήγειλαν ἢ αὐτοῖς καὶ οἱ ἰδόντες, πῶς
ἰσώθη ὁ δαιμονιοθεύς.
- 37 Καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν ἅπαντες τὸ πλῆθος τὸ
περικύκλιον τῶν Γαδαλιμαίων, ἀπελθεῖν ἀπὸ
αὐτῶν, ὅτι φόβον μεγάλον συνείχοντο αὐτοῖς
διὲς ἔμβασι εἰς τὸ πλοῖον, ὑπεσπέψεν.
- 38 Ἐδέετο ἢ αὐτῶν ὁ ἀνὴρ ἀφ' ἧς ἐξεληλύθη
τὰ δαιμόνια, εἶναι σὺν αὐτῷ· ἀπέλυσε δὲ
αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς, λέγων·
- 39 Ὑποσπεψέεις τὸν οἶκόν σου, καὶ διηγῶ ὅσα
ἐποίησέν σοι ὁ Θεός. Καὶ ἀπῆλθε, καθ' ὅλιον τὸ
πόλιν κηρύσσων ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς.
- 40 Ἐγγύετο δὲ ἐν τῷ ὑποσπέψαι τὸ Ἰησοῦν,
ἀπεδέξατο αὐτὸν ὁ ὄχλος· ἦσαν γὰρ πάντες
προσδοκῶντες αὐτόν.
- 41 Καὶ ἰδὼν, ἦλθεν ἀνὴρ ὃν ὄνομα Ἰάφετος, καὶ
αὐτὸς ἀρχὸν τῆς συναγωγῆς ἐπαῖχε· καὶ πεσὼν
πρὸς τὰς πόδας τοῦ Ἰησοῦ, παρεκάλει αὐτὸν
εἰσελθεῖν εἰς τὸν οἶκόν αὐτοῦ.
- 42 Ὅτι θυγάτηρ μνηστοχρῆς ἦν αὐτῷ ὡς ἐταῖ
δώδενκα,

δώδεκα, καὶ αὕτη ἀπέθνησκεν. (Ἐν ᾧ τῷ ὑπάρχον αὐτὸν οἱ ὄχλοι σινέπνιζον αὐτόν.)

43 Καὶ γυνὴ ἔστα ἐν ῥύσει αἱμάτων ἀπὸ ἐτῶν δώδεκα, ἧς εἰς ἰατρὰς ὡροσυναλώσασα ὅλον τὸ βίον, ἐκίχυσεν ὑπὸ ἑδενὸς θεραπευθῆναι.

44 Προσελθῆσα ὀπίσθεν, ἥψατο τὸ κρησπέδος τῆς ἱματίου αὐτῆς· καὶ ὡραζομένη ἐστὴ ἡ ῥύσις τῆς αἱματὸς αὐτῆς.

45 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· Τίς ὁ ἀψάμνος μεις Ἀρναμνῶν ᾧ πάντων, εἶπεν ὁ Πέτρος καὶ οἱ μετ' αὐτῶν· Ἐπιστάτα, οἱ ὄχλοι σινέχουσέ σε καὶ ἀποθλίβουσ, καὶ λέγεις· Τίς ὁ ἀψάμνος μεις;

46 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἡψάθ' με τις· ἐγὼ γὰρ ἐγνων δυνάμειν ἐξελεῖσθαι ἀπ' ἐμοῦ.

47 Ἰδῶσα δὲ ἡ γυνὴ ὅτι ἔσκέλαθε, τρέμυσσα ἦλθε, ἔπεσσεύεσα αὐτῆ, δι' ἣν αἰτίαν ἥψατο αὐτῆ ἀπήγειλεν αὐτῆ ἐνώπιον παντὸς τοῦ λαοῦ, καὶ ὡς ἴαθη ὡραζομένη.

48 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· Θάρσ' θυγατερ, ἡ πίστις σου σέσωκέ σε· πορεύε εἰς εἰρήνην.)

49 Ἐπ' αὐτῆ λαλοῦντων, ἔρχεται ἡς τῶν δούλων τῶν δούλων αὐτῆς, λέγων αὐτῆ· Ὅτι τέθνηκεν ἡ θυγάτηρ σου· μὴ σκεύηκε τὸ διδάσκαλον.

50 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀκέσας ἀπεκρίθη αὐτῆ, λέγων· Μὴ φοβῆ· μόνον πίσυσε, ἔσωθήσε).

51 Εἰσελθὼν δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, εὐκ ἀφῆκεν εἰσελεῖν ἑδενά, εἰ μὴ Πέτρον καὶ Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην,

Ἰωάννου, καὶ τὸν πατέρα τῆς παιδὸς καὶ τὴν μητέρα.

52 Ἐκλαίον ἢ πάντες καὶ ἐκόπτοντο αὐτῷ.
Ὁ ὃς εἶπε· Μὴ κλαίετε· οὐκ ἀπέθανεν, ἀλλὰ καὶ ζῶσθι.

53 Καὶ κατέβλεπον αὐτῷ, εἰδότες ὅτι ἀπέθανεν.

54 Αὐτὸς ὃς ἐκβαλὼν ἔξω πάντας, ἔκραήσας τῷ χρωστῷ αὐτῷ, ἐφώνησε, λέγων· Ἡ παῖς, ἐξείρα.

55 Καὶ ἐπέσρεψε τὸ πνεῦμα αὐτῆς, καὶ ἀνέστη ὡς ἄρτος ζῆμα· καὶ διέταξεν αὐτῇ δεξιὰν φαγεῖν.

56 Καὶ ἐξέστησαν οἱ Ἰουδαῖοι αὐτῆς· ὁ ὃς παρήγγηλεν αὐτοῖς μηδενὶ εἰπεῖν τὸ γηγιός.

Κεφ. 9. 9.

1 ΣΥΓΓΑΛΙΣΤΑΙΜΟΝ ὃς τὰς δώδεκα μαθηταὶ αὐτῷ, ἔδωκεν αὐτοῖς δύναμιν ἔξιςθαι ἐπὶ πάντα τὰ δαιμόνια, καὶ νόσους θεραπεύειν.

2 Καὶ ἀπέστειλεν αὐτὰς κηρύσσεν τῷ βασιλείῳ τοῦ Θεοῦ, καὶ ἰάσθαι τὰς ἀσθενεῖας.

3 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὰς· Μηδὲν αἰρεῖτε εἰς τὸ ὄδιον, μήτε ῥάβδους, μήτε πήραν, μήτε ἄρτον, μήτε δερμάτιον· μήτε αἰὰ δύο χιτῶνας ἔχητε.

4 Καὶ εἰς ἡν αὐτῶν οἰκίαν εἰσελθῆτε, ἐκεῖ μῦθετε, καὶ ἐκεῖθεν ἐξέρχεσθε.

5 Καὶ ὅσοι αὐτῶν μὴ δεξῶν ὑμᾶς, ἐξερχόμενοι ἀπὸ τῆς πόλεως ἐκείνης, ἔτι κρηιορῶν ἀπὸ τῶν ποδῶν ὑμῶν ἀποκιάσατε, εἰς μαρτύριον ἐπ' αὐτὰς.

6 Ἐξερ-

6 Ἐξερχόμενοι δὲ διήρχοντο καὶ τὰς κώμας,
ἀγγελιζόμενοι καὶ θεραπεύοντες πανταχοῦ.

7 Ἦκεσε ἡ Ἡρώδης ὁ τετραρχῆς τὰ γινόμενα
ὑπὸ αὐτῶ πάντα καὶ διηπόρει, ἀφ' ἧς τὸ λέγει αὐτῷ
ὑπὸ πινων, ὅτι Ἰωάννης ἐγήγερθε ἐκ νεκρῶν.

8 Ὑπὸ πινων δὲ, ὅτι Ἡλίας ἐφάνη ἄλλων ἡ,
ὅτι παρθένος εἰς τὸ δόχαιον ἀνέστη.

9 Καὶ εἶπεν ὁ Ἡρώδης Ἰωάννην ἐγὼ ἀπεκε-
φάλισα· τίς δέ ἐστιν ἔτι τοῦτο καὶ ἐγὼ ἀκῶ
τοιαῦτα; Καὶ ἐζήτησεν εἶδέν αὐτόν.

10 Καὶ ὑποσπέψαντες οἱ ἀπόστολοι διηγή-
σαντο αὐτῷ ὅσα ἐποίησαν, καὶ παρελάβων
αὐτὸς, ὑπεχώρησε κατ' ἰδίαν εἰς τόπον ἔρη-
μον πόλεως καλαμῆς Βηθσαϊδά.

11 Οἱ δὲ ὄχλοι γινόντες, ἠκολούθησαν αὐτῷ,
καὶ διεάμνητο αὐτὸς, ἐλάλησεν αὐτοῖς περὶ τοῦ
βασιλείας τοῦ Θεοῦ, καὶ τὰς χρείαν ἔχοντας
θεραπείας ἰᾶτο.

12 Ἡ δὲ ἡμέρα ἤρξατο κλίνην· παρεσπλῆθόντες
δὲ οἱ δώδεκα, εἶπεν αὐτῷ· Ἀπόλυσον τὸν
ὄχλον, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τὰς κώμας
καὶ τὰς ἀγροὺς, καθαλύσωσι, καὶ σῶσιν ἐπι-
σισμὸν ὅτι ὡδὲ ἐν ἐρήμῳ τόπῳ ἐσμεν.

13 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸς· Δότε αὐτοῖς ὑμεῖς
φαγεῖν. Οἱ δὲ εἶπεν· Οὐκ εἰσὶν ἡμῖν πλεῖον
ἢ πέντε ἄρτοι καὶ δύο ἰχθύες, εἰ μὴ τι πορῶ-
σάντες ἡμεῖς ἀναρροσώμεθα εἰς πάντα τὸν λαόν
τῆτον βρώμαθα.

14 Ἦσαν

- 14 Ἦσαν γὰρ ὡσεὶ ἀνδρες πεντακισχίλιοι· εἶπε
ἢ πρὸς τὰς μαθητὰς αὐτῶ· Κατακλίνας
αὐτὰς κλισίας ἀνὰ πενήτησι.
- 15 Καὶ ἐποίησαν ἕτω· Ἐνέκλιναν ἅπαντας.
- 16 Λαβὼν ἢ τὰς πέντε ἄρτους καὶ τὰς δύο
ἰχθύας, ἀναστέψας εἰς τὸ ἕρανόν, εὐλόγησεν
αὐτὰς· καὶ κατέκλασε, ἐ-είδεν τοῖς μαθη-
ταῖς, ὡρραβήσασθαι τὰ ὄχλα.
- 17 Καὶ ἔφαθον, καὶ ἰχθυήσασθαι πάντες· Ἐ-
ἤρθη τὸ πνεῦμα αὐτοῖς κλασμάτων,
καὶ οἱ δώδεκα.
- 18 Καὶ ἐβόησεν ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν πρὸς ἀχρ-
μαρον καὶ ἀμαρτίας· σιωπῶσιν αὐτῷ οἱ μαθη-
ταί· καὶ ἐπρώτησεν αὐτὰς, λέγων· Τίνα με
λίγασθιν οἱ ὄχλοι εἶναι;
- 19 Οἱ ἢ ἀπεκρίθητες, εἶπον· Ἰωάννου τὸ
βαπτισμῶν· ἄλλοι ἢ Ἡλίου· ἄλλοι ἢ ὅτι πρὸς
Φήτης ἢ τῶν δρχαίων ἀνέστη.
- 20 Εἶπε ἢ αὐτοῖς· Ὑμεῖς ἢ τίνα με λίγασθαι εἶ-
ναι; Ἀπεκρίθεις ἢ ὁ Πέτρος, εἶπε· Τὸν
Χριστὸν τὸ Θεῶν.
- 21 Οἱ ἢ ἐπιμήσασα αὐτοῖς, παρήχθη με-
θεν εἰπεῖν τῷ·
- 22 Εἰπὼν· Ὅτι δεῖ τὸ υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου πολλὰ
παθεῖν, ἐλπίδοκιμασθῆναι ἀπὸ τῶν πρεσβυ-
τέρων καὶ δρχαίων καὶ γραμματέων, καὶ ἀπο-
κλειθῆναι, ἐ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐγερθῆναι.
- 23 Ἐλεγε ἢ πρὸς πάντας· Εἴ τις θέλη ὀπίσω
με

μα ἐλθεῖν, ἀπαρηγοῦσάτω ἑαυτὸν, καὶ ἀράτω τὸ
 σαυρὸν αὐτοῦ καθ' ἡμέραν, ὥστε ἀκροαθεῖται μοι.

24 Ὅς γὰρ αὐτὸν ἦλθον τὸ ψυχλὸν αὐτῶν σωσάμενος,
 ἀπολέσει αὐτὸν ὡς οἱ αὐτὸν ἀπολέσει τὸ ψυχλὸν
 αὐτῶν ἕνεκεν ἐμοῦ, ἵνα σώσῃ αὐτὸν.

25 Τί γὰρ ὠφελεῖ ὁ ἄνθρωπος κερδήσας τὰ κτή-
 σματα ὀλοῦν, ἑαυτοῦ δὲ ἀπολέσας, ἢ ζημιωθείς;

26 Ὅς γὰρ αὐτὸν ἐπαχθιωθῆ με καὶ τὰς ἐμοῦς λό-
 γας, τῶτον ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπαχθιωθήσε-
 ται, ὅταν ἔλθῃ ἐν τῇ δόξῃ αὐτῶν ὥστε πα-
 τέρους, καὶ τὰ ἁγίων ἀγγέλων.

27 Λέγω ὑμῖν ἀληθῶς, εἰσέλθοντες εἰς τὴν πόλιν
 αὐτῶν, οἱ ἔτι μὴ γινώσκοντες θανάτου, ἕως αὐ-
 τοῦ ἰδοῦσι τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

28 Ἐρχέσθε ὑμεῖς τὰς λόγους τούτους ὡσεὶ ἡμέραν
 ὀκτώ, ὥστε πᾶσι λαλοῦν τὸ Πέτρον καὶ Ἰωάννην
 καὶ Ἰάκωβον, ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος προσεύξασθαι.

29 Καὶ ἐρχέσθε ἐν ταῖς προσεύχαις αὐτῶν
 τὸ εἶδόντες ἑσώπια αὐτῶν ἕτερον, καὶ ὁ ἰμα-
 τισμὸς αὐτῶν λευκὸς ἕξασφράπτων.

30 Καὶ ἰδὼν, ἄνδρες δύο συνελάλησαν αὐτοῖς,
 οἱ πινεὶς ἦσαν Μωσῆς καὶ Ἡλίας.

31 Οἱ ὀφθέντες ἐν δόξῃ, ἔλεγον τὸ ἕξοδον αὐ-
 τῶν, ἡμεῖς τε πληρῶν ἐν Ἱερουσαλήμ.

32 Ὁ δὲ Πέτρος καὶ οἱ σὺν αὐτοῖς ἦσαν βε-
 βαρημένοι ὑπνοῦ. ἀφ' ἑκτατηρησάντων δὲ εἶδον
 τὴν δόξαν αὐτῶν, καὶ τὰς δύο ἀνδρας τὰς συνε-
 σῶτας αὐτῶν.

- 33 Καὶ ἐρχόμενοι ἐν τῇ Διαχωρίζεσθαι αὐτοὺς ἀπ' αὐτῶν, εἶπεν ὁ Πέτρος πρὸς τὸ Ἰησοῦν. Ἐπιστάται, καλὸν ἐστὶν ἡμῶς ὡς εἶπαι· καὶ ποιῆσαι ἡμῶν σκῆμας τέτταρας, μίαν σοῦ, καὶ Μωσῆ μίαν, καὶ μίαν Ἡλίας· μὴ εἰδώς ὁ λόγος.
- 34 Ταῦτα δὲ αὐτῶν λέγοντι, ἐρχόμενοι νεφέλη, καὶ ἐπεσκίασεν αὐτούς· ἐφοβήθησαν δὲ ἐν τῇ ἐκείνης εἰσελθεῖν εἰς τὴν νεφέλην.
- 35 Καὶ φωνὴ ἐρχόμενοι ἐκ τῆς νεφέλης, λέγουσα. Οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, αὐτῶν ἀκούετε.
- 36 Καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ φωνῇ, ἔρριψεν ὁ Ἰησοῦς μίαν· καὶ αὐτοὶ ἐσίγησαν, καὶ ἔδειξεν ἀπήγειλαν ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις ἐδὲν ὧν ἐωρῶκασιν.
- 37 Ἐρχόμενοι δὲ ἐν τῇ ἑξῆς ἡμέρᾳ, κατέλαθοντων αὐτῶν ἀπὸ τῆς ὄρας, σκυλεύτησεν αὐτῶν ὄχλος πολὺς.
- 38 Καὶ ἰδὼς, ἀνὴρ ἀπὸ τῆς ὄρας ἀνεβόησεν, λέγων· Διδάσκαλε, δέομαί σε, ἐπίβλεψον ἐπὶ τὸν υἱόν μου, ὅτι μνησθῆναι ἐστὶ μοι.
- 39 Καὶ ἰδὼς, πνεῦμα λαμβάνει αὐτὸν, καὶ ἐξαίφνης κρᾶζει, καὶ σπαρασσεί αὐτὸν μετ' ἀφροῦ, καὶ μόγις ἀποχωρεῖ ἀπ' αὐτῶν, σιωπῆσει αὐτὸν.
- 40 Καὶ ἐδεδήλωεν τῶν μαθητῶν σείνα ἐκβάλλωσιν αὐτὰ, καὶ ὅσα ἠδυνήθησαν.
- 41 Ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ὁ γὰρ ἀπίστος· Ἐδιδραμευμένη, ἕως πότε ἔσομαι πρὸς ὑμᾶς, καὶ ἀνέξομαι ὑμῶν; Προσάξατε ὡς εἶπαι τὸ υἱόν μου.

42 Ἐπὶ ᾧ προσερχομένων αὐτῷ, ἔρρηξεν αὐτὸν τὸ δαιμόνιον, καὶ σπασσάραξεν· ἐπέλημψε ᾧ ὁ Ἰησοῦς τὰ πνεύματα τὰ ἀκαθάρτα, καὶ ἰάσατο τὰ παῖδα· καὶ ἀπέδωκεν αὐτὸν τῷ πατρὶ αὐτῷ.

43 Ἐξεπολήσοντο ᾧ πάντες ἐπὶ τῇ μεγαλο-
ότητι αὐτοῦ Θεοῦ. πάντων ᾧ θαυμαζόντων ἐπὶ
πάντων οἷς ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, εἶπε πρὸς τὰς
μαθητάς αὐτῷ.

44 Θίθετε ὑμεῖς εἰς τὰ ὦτα ὑμῶν τὰς λόγους
τάτας· ὁ γὰρ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου μέλλει πολλὰ
διδόσθαι εἰς χεῖρας ἀνθρώπων.

45 Οἱ ᾧ ἠγνόουν τὸ ῥῆμα ταῦτο, καὶ ὡς ἄφρα-
κεκαλυμμένον ἀπ' αὐτῶν, ἵνα μὴ αἰσθῶνται
αὐτό· ἐφοβήθη ἐρωτήσαι αὐτὸν περὶ τοῦ
ῥήματος ταύτου.

46 Εἰσηλθε ᾧ ἀφλογισμὸς ἐν αὐτοῖς, τὸ
ὅτι αὐτὸς εἶη μείζων αὐτῶν.

47 Οἱ ᾧ Ἰησοῦς ἰδὼν τὸ ἀφλογισμὸν τῆ καρ-
δίας αὐτῶν, ἐπιλαβόμενος παιδίον, ἔθηκεν
αὐτὸ παρ' ἑαυτοῦ.

48 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅς ἐὰν δέξηται ταῦτο
τὸ παιδίον ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐμὲ δέξει·
καὶ ὅς ἐὰν ἐμὲ δέξηται, δέχεται τὸ ἀποστείλαν-
τά με· ὁ γὰρ μικρότερος ἐν πάντιν ὑμῖν
ὑπάρχων, ἔστιν ἕσται μέγας.

49 Ἀποκριθεὶς ᾧ Ἰωάννης, εἶπεν· Ἐπιστάτα,
εἶδομέναι ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου ἐκβάλλοντα
τὰ

- πέ δαιμόνια· κὶ ἐκάλυσα μὲν αὐτὸν ὅτι οὐκ ἀγγλῆθῃ μεθ' ἡμῶν.
- 50 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς· Μὴ κωλύεις· ὅς γὰρ ἐκ ἐστὶ καθ' ἡμῶν, ὑπὲρ ἡμῶν ἐστίν.
- 51 Ἐγγίθη δὲ ἐν τῷ συμπληροῦσθαι τῶν ἡμέρας τ' ἀναλήψεως αὐτοῦ, κὶ αὐτὸς τὸ πρῶτον πον αὐτοῦ ἐσήλαξε ἔξ παραδούρου εἰς Γερουσαλήμ.
- 52 Καὶ ἀπέστειλε ἀγγέλους πρὸς πρῶτον αὐτοῦ· καὶ παραδόντες ἐσήλθον εἰς κώμην Σαμαρεθῶν, ὥστε ἐτοιμασθαι αὐτῷ.
- 53 Καὶ οὐκ ἐδέξαντο αὐτὸν, ὅτι τὸ πρῶτον πον αὐτοῦ κωλύοντες εἰς Γερουσαλήμ.
- 54 Ἰδόντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ Ἰάκωβος κὶ Ἰωάννης, εἶπον· Κύριε, θέλεις εἵπωμεν πῦρ καταβλέψαι ἀπὸ τοῦ θρόνου, κὶ ἀναλαῖσθαι αὐτὸς, ὡς ἔχει Ἡλίας ἐποίησε;
- 55 Στεφάνους δὲ ἐπετίμησεν αὐτοῖς, κὶ εἶπε· Οὐκ οἶδατε οὐκ πνεύματα ἐστε ὑμεῖς·
- 56 Ὁ γὰρ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἦλθε ψυχὰς ἀνθρώπων διδοῦναι, ἀλλὰ σῶσαι. Καὶ ἐπαραδύθησαν εἰς ἑτέραν κώμην.
- 57 Ἐγγίθη δὲ παραδούρου αὐτῶν, ἐν τῇ ἰδὲ εἶπε πρὸς αὐτόν· Ἀγγλῆθῃ σοι ὅτι ἐκ αὐτοῦ ἀπέρχη, Κύριε.
- 58 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Αἱ ἀλώπεκες φωνεῖς ἔχετε, κὶ τὰ πετρεῖα τοῦ θρόνου, κατασκλιμώσθε· ὁ γὰρ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἔχει πῦρ τίω κεφαλῆν κλίην.

59 Εἶπε

- 59 Εἶπε ἡ πρὸς ἑπὶρον Ἀγγελῶν μοι. Οἷ
εἶπε Κύριε, ἐπίτρεψόν μοι ἀπελθόντι πρῶ-
τον θάψαι τὸ πατέρα μου.
- 60 Εἶπε ἡ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἄφες τὰς νεκρὰς
θάψαι τὰς ἑαυτῶν νεκρὰς· σὺ δὲ ἀπελθὼν
ἀρχήσεις τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.
- 61 Εἶπε δὲ καὶ ἑπερῶ· Ἀγγελῶν ἴστω σοί,
Κύριε· πρῶτον ἡ ἐπίτρεψόν μοι ἀποῤῥῆσαι
τοῖς εἰς τὸν οἶκόν μου.
- 62 Εἶπε ἡ πρὸς αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς· Οὐδεὶς ἐπι-
βαλὼν τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ ἄροτρον, καὶ
βλέπων εἰς τὰ ὀπίσω, ὀρθεὶός ἐστιν εἰς τὴν
βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

Κεφ. ι'. 10.

- 1 Μετὰ ἡ ταῦτα ἀνέδραξεν ὁ Κύριος καὶ
ἑτέρας ἐδοδομήκοντο, ἑ ἀπέστειλεν αὐτὰς
εἰς δύο πρῶτον πρὸς αὐτὰς, εἰς πῦσαν πό-
λιν καὶ τόπον ἃ ἔμελλεν αὐτὸς ἔρχεσθαι.
- 2 Ἐλέγητο ἑ πρὸς αὐτὰς· Οἷ μὴ θελομεὶς
πολύς, οἷ δὲ ἐργάται ὀλίγοι· δεήθητε οὖν τοῦ
Κυρίου τοῦ θελομενοῦ, ὅπως ἐκβάλλῃ ἐργάτας
εἰς τὸν θελομενὸν αὐτοῦ.
- 3 Ὑπήγαγε ἑ ἰδὲ, ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμῶς ὡς
ἄρναις ἐν μέσῳ λύκων.
- 4 Μὴ βαστάξετε βαλάντιον, μὴ πήραν, μηδὲ
ὑποδήματα· ἑ μηδὲνα καὶ τὸ ὄδον ἀσπάσησθε.
- 5 Εἰς τὴν αὐτὴν οἰκίαν εἰσέρχησθε, πρῶτον
λέγετε· Εἰρήμην τῷ οἴκῳ τῷ τούτῳ.

6 Καὶ

- 6 Καὶ ἴαν μὴ ἢ ἐκεῖ ὁ υἱὸς εἰρῆνης, ἐπι-
ναπαύσεται ἐπ' αὐτὸν ἢ εἰρῆνὴ ὑμῶν· εἰ ᾗ
μήγε, ἐφ' ὑμᾶς ἀνακάμψῃ.
- 7 Ἐν αὐτῇ ᾗ τῇ οἰκίᾳ μὴ εἴτε, ἰδιότιες ἔσονται
τε παρ' αὐτῷ· ἀξιὸς γὰρ ὁ ἐργάτης ἔμισθῶ
αὐτῷ ἐστὶ. Μὴ μετὰ βαίνετε ἐξ οἰκίας εἰς οἰκίαν.
- 8 Καὶ εἰς κωὸν δὲ αὐτὴν πόλιν εἰσέρχουθε, ἔδε-
χων ὑμᾶς, ἰδίετε τὰ πνευματικὰ ὑμῶν.
- 9 Καὶ περιπατεῖτε τὴν ἐν αὐτῇ ἀδελφεῖς,
καὶ λέγετε αὐτοῖς· Ἡγγικεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ βασι-
λεία τοῦ Θεοῦ.
- 10 Εἰς κωὸν δὲ αὐτὴν πόλιν εἰσέρχουθε, καὶ μὴ
δέχων ὑμᾶς, ἐξελθόντες εἰς τὰς πόλεις
αὐτῆς, εἰπάτε·
- 11 Καὶ ἔκρινον ἔκρινον ἡμῶν ἐκ τῆς
πόλεως ὑμῶν, ἀπομασώμεθα ὑμῶν· πλὴν
τὸ γινώσκετε, ὅτι Ἡγγικεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ βασι-
λεία τοῦ Θεοῦ.
- 12 Λέγω ὑμῖν, ὅτι Σοδόμοις ἐν τῇ ἡμέρᾳ
ἐκείνῃ ἀνεκτότερον ἔσται, ἢ τῇ πόλει ἐκείνῃ.
- 13 Οὐκ ἔστι σοι Χορραζὶν, ἐὰν σοι Βηθσαϊδά·
ὅτι εἰ ἐν Τύρῳ ἔσονται ἐργάζονται ἀδελφοί
καὶ ἀδελφαὶ ἐν ὑμῖν, πάλαι αὐτὴ ἐν σάκκῳ
καὶ ἀποδοῦναι καὶ ἡμεῖς μετενόησαν.
- 14 Πλὴν Τύρῳ καὶ Σιδῶνι ἀνεκτότερον ἔσται ἐν
τῇ κρίσει ἢ ὑμῖν.
- 15 Καὶ σὺ Καπερναὺμ ἢ ἕως τοῦ ἔρανος ὑψα-
θεῖσαι, ἕως ἄρα καθαροῦ ἀδάκρυτου.

16 Οἱ ἀκούοντες ὑμῶν, ἐμὲ ἀκούει· καὶ ὁ ἀδελφῶν ὑμῶν, ἐμὲ ἀδελφεῖ· ὁ δὲ ἐμὲ ἀδελφῶν, ἀδελφεῖ τὸ δῶκεν εἰλαυθῆ με.

17 Ἐπίσπεσαν δὲ οἱ ἐβδομήκοντα μετὰ χαρῶν, λέγοντες· Κύριε, καὶ τὰ δαιμόνια ὑποτάσσεται ἡμῖν ἐν τῷ ὀνόματί σου.

18 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ἐξουσίαν ἔσται ὑμῶν, ὡς ἀσραπίων, ἐκ τοῦ ἔρανος πισόντων.

19 Ἴδὲ, δίδωμι ὑμῖν τὴν ἐξουσίαν ταῦτα παλεῖν ἐπάνω ὄφρων καὶ σκορπίων, καὶ ἐπὶ πάντων τῶν δυνάμεων τοῦ ἐχθροῦ· καὶ οὐδὲν ὑμῶν ἐμὴ ἀδικήσεται.

20 Πλὴν ἐν τούτοις μὴ χαίrete ὅτι τὰ πνεύματα ὑμῶν ὑποτάσσεται· χαίrete δὲ μᾶλλον ὅτι τὸ ὄνομα σου ὑμῶν ἐγράφη ἐν τοῖς ἔρανοῖς.

21 Ἐν αὐτῇ τῇ ᾠρᾷ ἠγαλιάσατο τὰ πνεύματα ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν· Ἐξομολογῶμαι σοὶ πατέρ, Κύριε, τοῦ ἔρανος καὶ τῆς γῆς, ὅτι ἀπέκρυψας ταῦτα ἀπὸ σοφῶν καὶ συνεπίων, καὶ ἀπεκάλυψας αὐτὰ νηπίοις· ναὶ ὁ πατήρ, ὅτι ἕτως ἐγένετο δύσκολα ἔμπροσθέν σου.

22 Πάντα παρεδόθη μοι ὑπὸ τοῦ πατρὸς μου· καὶ οὐδὲν γινώσκω τίς ἐστὶν ὁ υἱός, εἰ μὴ ὁ πατήρ· καὶ τίς ἐστὶν ὁ πατήρ, εἰ μὴ ὁ υἱός, καὶ ὡς ἐὰν βέληται ὁ υἱός ἀποκαλύψαι.

23 Καὶ στραφεὶς πρὸς τοὺς μαθητάς, κατ' ἰδίαν εἶπε· Μακάριοι οἱ ὀφθαλμοὶ οἱ βλέποντες ἃ βλέπει.

24 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ θεωροῦνται καὶ βασι-

βασιλεῖς ἠθέλησαν ἰδεῖν αὐτοὺς βλέπετε, καὶ
 ἴσατε εἶδον. Ἐὰν ἴσασιν αὐτὸ ἀκούετε, ἔτι ἢ κέουσι.

25 Καὶ ἰδὼν, νομίζων ὡς ἀνέστη, ἐκπρόσθρον
 αὐτὸν, καὶ λέγων· Διδάσκαλε, τί ποιήσας ζωὴν
 αἰώνιον κληρονομήσω;

26 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτόν. Ἐν τῷ νόμῳ τί γέ-
 γραπτόν; πῶς ἀναγινώσκεις;

27 Ὁ δὲ διποκρινθεὶς, εἶπεν· Ἀγαπήσας Κύ-
 ριον τὸ Θεόν σου ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ
 ὅλης τῆς ψυχῆς σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ἰσχύος σου, καὶ
 ἐξ ὅλης τῆς διανοίας σου· καὶ τὸν πλησίον
 σου ὡς σεαυτόν.

28 Εἶπε δὲ αὐτῷ· Ὅρθῶς ἀπεκρίθης· τὸ εὖ-
 ποιῆν, καὶ ζῆσθ.

29 Ὁ δὲ, θέλων διαμαρτυρῆσαι ἑαυτὸν, εἶπε πρὸς
 τὸν Ἰησοῦν· Καὶ τίς ἐστὶ μετὰ πλησίον;

30 Ἰπολαβὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἀνθρώπος ὡς
 κατέβαινεν ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ εἰς Ἱεριχά, καὶ
 ληστῆς πρὸς αὐτὸν ἐπέπεσον· οἱ καὶ ἐκδύσαντες αὐτόν,
 καὶ πληγὰς ἐπιθέντες, ἀπῆλθον, ἀφέντες
 ἡμιθανῆ τυγχάνοντα.

31 Κατὰ συγκυρίαν δὲ ἱερέως τις κατέ-
 βαινε ἐν τῇ ὁδῷ ἐκείνῃ· καὶ ἰδὼν αὐτόν, ἀντι-
 παρῆλθεν.

32 Ὀμοίως δὲ καὶ λευίτης, ἡμιθανῆ καὶ τὸν
 τύπον, ἐλθὼν καὶ ἰδὼν, ἀντιπαρῆλθεν.

33 Σαμαρεῖτης δὲ τις ὁδοῦων, ἦλθε κατὰ
 αὐτόν, καὶ ἰδὼν αὐτόν, ἠσπλαγχνίσθη.

34 Καὶ

34 Καὶ προσελθὼν κατέδησε τὰ τρυφώματα
αὐτῶν, ἐπιχέων ἔλαιον καὶ οἶνον· ἐπιβιβάσας
ἢ αὐτὸν ἐπὶ τὸ ἴδιον κτῆνωσθε, ἢ ζαχάρου αὐτὸν
εἰς πανδοχεῖον, καὶ ἐπεμελήθη αὐτοῦ.

35 Καὶ ἐπὶ τὸ αὐρεὸν ἐξεληθῶν, ἐμβαλὼν δὲ οὐ
δύναρα ἔδωκε τῷ πανδοχεῖ, ἃ εἶπεν αὐτῷ.
Ἐπεμελήθη αὐτῶν· ἃ οὐκ αὐτὸν προσδιπαρή-
σης, ἐβῶεν τῷ ἐπανέρχομαι με, ἀποδώσω σοι.

36 Τίς οὐκ ἐστὶν τῶν τριῶν δοκεῖ σοι πλεη-
ροῦς γενητέων· ἃ ἐμπεισόντες εἰς τὰς λησείας;

37 Ὁ ἢ εἶπεν· Ὁ ποιήσας τὸ ἔλεος μετ'
αὐτῶν· εἶπεν οὐκ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Πορεύεσθε,
καὶ σὺ ποιεῖ ὁμοίως.

38 Ἐλήθη ἢ ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτῶν, ἃ αὐτὸς
εἰσηλθεν εἰς κάμινον Ἰνῆ· γυνὴ δὲ τις ὀνόματι
Μάρθα ὑποδέξατο αὐτὸν εἰς τὸ εἶχον αὐτῆς.

39 Καὶ τῆς δὲ ἑωὶ ἀδελφῆς καλεσμένης Μαρία,
ἢ καὶ τῶν ἁγίων· ἃ αὐτῶν τὰς πόδας ἃ
Ἰησοῦς, ἢ καὶ τὸν λόγον αὐτοῦ.

40 Ἡ ἢ Μάρθα ὑποδέξατο αὐτὸν ὡς πολλὴν ἀσχ-
κησίαν· ἐπιστῶσα ἢ εἶπε· Κύριε, ἃ μέλη σοι
ὅτι ἢ ἀδελφῆ με μόνον με κατέλιπε ἀσκη-
τεῖν; εἶπε ἢ αὐτῇ ἵνα μνηστειωσῶν ἀλάβη.

41 Ἀποκριθεὶς δὲ εἶπεν αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μάρθα
Μάρθα, μεριμνῶς καὶ τυρβάλλῃ ὡς πολλά.

42 Ἐπὸς δὲ ἐστὶν ἡρέα. Μαρία δὲ τῶν ἀγα-
θῶν μεριμνῶν ἐξελέξατο, ἢ τις ὅσα ἀφαιρε-
θῆσιν ἢ ἀπ' αὐτῆς.

Κεφ.

Κεφ. ια'. 11.

- 1 **Κ**αὶ ἐρχόμενος ἐν ταῖς εἰρημαῖς αὐτὸν ἐν τῷ πᾶσι πρὸς αὐτοὺς ὡς ἐπαύσατο, εἶπε ἕως τῶν μαθητῶν αὐτῶν πρὸς αὐτοὺς· Κύριε, διδάξον ἡμᾶς πρὸς ὅλην τὴν γῆν, καθὼς καὶ Ἰωάννης ἐδίδου ἡμῖν τὰς μαθητείας αὐτῶν·
- 2 Εἶπε ἡ αὐτοῖς· Ὅταν πρὸς ὅλην τὴν γῆν ΠΑΤΕΡ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς, ἀγαθήτω τὸ ὄνομα (καὶ ἐλθέτω ἡ βασιλεία (καὶ γνηθήτω τὸ θέλημα (καὶ ὡς ἐν οὐρανοῖς, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς.
- 3 Τὸν ἄρτον ἡμῶν τὸ ἐπιπέσοι δίδου ἡμῖν τὸ καθ' ἡμέραν.
- 4 Καὶ ἄφες ἡμῖν τὰς ἀμαρτίας ἡμῶν· καὶ ὅτι αὐτοὶ ἀφίενται παντὶ ὀφείλοντι ἡμῖν. καὶ μὴ εἰσενέγκης ἡμῖν εἰς πειρασμόν, ἀλλὰ ῥύσασθαι ἡμᾶς ἀπὸ τοῦ πονηροῦ.
- 5 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Τίς ἐξ ὑμῶν ἐξέφίλον, καὶ πορεύσει πρὸς αὐτὸν μισοφυλίαν, καὶ εἶπη αὐτῷ· Φίλε, χεῖρά μου τρέψαι ἄρτους·
- 6 Ἐπεὶ δὲ φίλον με παρεχόμενος ἐξ ὁδοῦ πρὸς με, καὶ σὺκ ἔχω ὁ ὄψαθίστω αὐτῷ·
- 7 Καὶ κείνου ἔστω δάκρυα εἶπη· Μὴ μοι κόπος παρέχε· ἤδη ἡ ψυχή μου κίε κλάσαι, καὶ τὰ πόδια μου μετ' ἐμῶν εἰς τὴν κλίμακα εἰσὶν· ἢ διώμασιν ἀναστὰς δέναι σοι.
- 8 Λέγω ὑμῖν, εἰ καὶ ἔδωκε αὐτῷ ἀναστὰς.

2/9

Διὰ τὸ εἶναι αὐτῷ φίλον· Διὰ γὰρ τὸ ἀναίδεον αὐτῷ ἐγερθεὶς δώσῃ αὐτῷ ὅσαυτ' ἠθέλησεν.

9 Καὶ γὰρ ὑμῖν λέγω· Αἰτεῖτε, καὶ δοθήσεται ὑμῖν· Ζητεῖτε, καὶ δύσθησέτε· κρῆετε, ἔσται ἀνοιγήσεται ὑμῖν.

10 Πᾶς γὰρ ὁ αἰτῶν λαμβάνει· καὶ ὁ ζητῶν δύσθησεται· καὶ τὸ κρῆον ἄνοιγήσεται.

11 Τίνα ἢ ὑμῶν τὸ πατέρα αἰτήσῃ ὁ υἱὸς ἄρτον, μὴ λίθον ἐπιδώσῃ αὐτῷ; εἰ ἔστι ἰχθυῶν, μὴ ἀπὸ ἰχθύος ὄφιν ἐπιδώσῃ αὐτῷ;

12 ἢ ἔσται αἰτήσῃ ἄνθρωπον, μὴ ἐπιδώσῃ αὐτῷ σκorpion;

13 Εἰ οὖν ὑμεῖς πονηροὶ ὑπάρχοντες, οἴδατε ἀγαθὰ δοῦναι τοῖς τέκνοις ὑμῶν, πόσω μᾶλλον ὁ πατήρ ὁ ἐξ οὐρανοῦ, δώσῃ πνεῦμα ἅγιον τοῖς αἰτῶσιν αὐτόν.

14 Καὶ ἡ ἐκβάλλων δαιμόνιον, ἔσται αὐτὸ ἡ κωφότης· ἐλήνευθ δὲ τὸ δαιμόνιον ἐξελητόν, ἐλάλησεν ὁ κωφός· καὶ ἐθαύμασαν οἱ ὄχλοι.

15 Τινὲς ἢ ἐξ αὐτῶν εἶπον· Ἐν Βεελζεβὺλ ἄρχοντι τῷ δαιμονίων ἐκβάλλει ταῦτα δαιμόνια.

16 Ἐπεροὶ δὲ πρᾶξις, σημεῖον παρ' αὐτοῦ ἐζητήσαν ἐξ οὐρανοῦ.

17 Αὐτὸς δὲ εἰδὼς αὐτῶν τὰ δαιμόνια, εἶπεν αὐτοῖς· Πᾶσα βασιλεία ἐφ' ἑαυτῷ δαμιωθεῖσα ἐρημίζεται, καὶ οἶκος ἐπὶ οἶκον, πίπτει.

18 Εἰ ἢ καὶ ὁ σατανᾶς ἐφ' ἑαυτὸν δαμιωθεῖται,

L πῶς

- πῶς τῶν ἡμετέρων ἢ βασιλεία αὐτῶν; ὅτι λέγετε
 ἐν Βαβυλῶνι ἐκβάλλει μετὰ δαιμόνια.
- 19 Εἰ ἢ ἐγὼ ἐν Βαβυλῶνι ἐκβάλλω τὰ δαι
 μόνια, οἱ υἱοὶ ὑμῶν ἐν Ἰερουσαλὴμ ἐκβάλλουσιν; Δι
 τὸ τοῦτο κελιά ὑμῶν αὐτοὶ ἔσονται.
- 20 Εἰ ἢ ἐν δεκτικῷ Θεοῦ ἐκβάλλω τὰ δαι
 μόνια, ἄρα ἔφησεν ἐφ' ὑμῶν ἡ βασιλεία
 τοῦ Θεοῦ.
- 21 Ὅταν ὁ ἰσχυρὸς καὶ ἡνωτῆρ^{ος} φυ
 λάσῃ τὸν ἰακώβον αὐλῶν, ἐν εἰρήνῃ ἔσονται
 ὑπάρχοντα αὐτῶν.
- 22 Ἐπιὼν ἢ ὁ ἰσχυρότερος αὐτῶν ἐπιλήθων
 κήσῃ αὐτοὺς, ἢ πικρῶν αὐτῶν αἰρήσεται
 ἐπιποιδῆς, καὶ τὰ σκῦλα αὐτῶν ἀφαιρήσονται.
- 23 Ὁ μὴ ὢν μετ' ἐμῶν, κατ' ἐμῶν ἔσται καὶ ὁ με
 τ' ἐμῶν, σκορπίζηται.
- 24 Ὅταν τὸ ἀκρότατον πνεῦμα ἐξέλθῃ ἀπὸ
 τοῦ ἀνθρώπου, διέρχεται δι' ἀνδρῶν τόπων, ζη
 τῶν ἀνάπαισιν καὶ μὴ δύσκειν, λέγει ἢ πο
 στέψω εἰς τὸ οἶκόν μου ὅθεν ἐξῆλθον.
- 25 Καὶ ἔλθον δύσκειν σεσραμμένον καὶ κα
 κρομημένον.
- 26 Τότε πορεύσεται ἡ ὄψις λαμβάνει ἐπι
 ἕτερα πινύματα πονηρότερα ἰακώβον. Ἐἰσελ
 θόντα καὶ τικεῖ σκεῖ καὶ γίνεται τὰ ἔχματα
 ἀνθρώπων σκεῖνε χείρονα τῶν ὀφθαλμῶν.
- 27 Ἐρχόμενος ἢ ἐν τῷ λέγει αὐτὸν πῶς
 ἐπ' ἡμετέρας γυνὴ φαίνεται ἐν τῷ ὄχλῳ, εἶπε
 αὐτῷ

αὐτῶν· Μακροβία ἡ κριλία ἡ βασιλεύσασά σε,
καὶ μαρσι ἕς ἐθήλασας.

28 Αὐτὸς ἦ εἶπε· Μενῶν γε μακαίριοι οἱ ἀ-
κρόντες τ' λόγον τ' Θεῶν, ἔφυλάσσοντες αὐτῶν.

29 Τῶν ἡ ὄχλων ἐπαθροισομένην ἤρξατο λέ-
γειν. Ἡ γυνὴ αὐτῆ πονηρὰ ἐστὶ σημεῖον ἐπι-
ζητεῖ, καὶ σημεῖον ἔδοθησέ τ' αὐτῇ, εἰ μὴ τὸ
σημεῖον Ἰωάνη τ' ἀπεφάνη.

30 Καθὼς γὰρ ἐγίνετο Ἰωάνης σημεῖον τοῖς Νι-
νυταῖσι, ἔτιωσ ἔσται ἔο γὼς τ' ἀνθρώπων τῆ
γυνεῶ τούτῃ.

31 Βασίλισσα νότις ἐμερῆσε ἐν τῇ κρείσσει
μὲν τ' ἀνδρῶν τ' γυνεῶς τούτης, καὶ κατὰ κρε-
νὴ αὐτῆς· ὅπ ἦλθεν ἐκ τ' περσέτων τ' γῆς
ἀκρόσση τ' σοφίαν Σολομῶνι· καὶ ἰδὲ,
πλεῖον Σολομῶνι ᾤδε.

32 Ἄνδρες Νινυῖ ἀναστήσαν ἐν τῇ κρείσσει
μὲν τ' γυνεῶς τούτης, καὶ κατὰ κρενὴσιν αὐ-
τῶν· ὅπ μείνονησαν εἰς τὸ κήρυγμα Ἰωάνη·
ἔ ἰδὲ, πλεῖον Ἰωάνη ᾤδε.

33 Οὐδεὶς ἦ λύχνου ἀψακ, εἰς κρυπτεῖν πῆνησσι,
ἔδὲ ὑπὸ τ' μύθλον, ἀλλὰ ἐπὶ τ' λυχνίαν, ἵνα
οἱ εἰσποροδόμενοι, τὸ φέγγος βλέπωσιν·

34 Ὁ λύχνος τ' σώματός ἐστιν ὁ ὀφθαλμός·
ὅταν οὐκ ὁ ὀφθαλμός (καὶ ἀπλῆς ἦ, καὶ ὅλον
τὸ σῶμα) (καὶ φωτίζόν ἐστιν· ἐπάν ἡ πονηρὸς ἦ,
καὶ τὸ σῶμα) (καὶ σκοτίζόν.

35 Σκόπε εἴ μὴ τὸ φῶς τὸ ἐν σοὶ, σκότος ἐστίν.

- 36 Εἰ οὐκ τὸ σῶμα σὺ ὅλον φωτίζον, μὴ ἔχῃ τι μέρος σκοτεινόν, ἔσται φωτίζον ὅλον, ὡς ὅταν ὁ λύχνος τῆ ἀσραπῆ φωτίζη σε.
- 37 Ἐν ᾧ τῷ λαλήσῃ, ἠρώται αὐτὸν Φαρισσαῖος ἕως ὅπως δόξησῃ παρ' αὐτῶν. εἰσελθὼν εἰ ἀνέπεσεν.
- 38 Ὁ δὲ Φαρισσαῖος ἰδὼν ἐθαύμασεν ὅτι ἐπερωτῶν ἐβαπτίσθη αὐτὸν ὁ δόξας.
- 39 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος πρὸς αὐτὸν· Νυνὺ ὑμεῖς οἱ Φαρισσαῖοι τὸ ἔξωθεν ἔπιπτετε καὶ ἔπιπτετε κατὰ ἐσωθεν ὑμῶν γέμει ἀρπαγῆς καὶ πανησίας.
- 40 Ἄφρονες, ἔχ' ὁ ποιήσας τὸ ἔξωθεν, καὶ τὸ ἐσωθεν ἐποίησε;
- 41 Πλὴν τὰ ἐνόντα δότε ἐλεημοσύνας καὶ ἰδὲ, πάντα κατὰ ὑμῖν ἐστίν.
- 42 Ἀλλ' ἐὰν ὑμῖν τοῖς Φαρισσαῖοις, ὅτι δότε δέκα ἄντα τὸ ἰδύοσμον καὶ τὸ πῆσανον καὶ πῶν λάχανον, καὶ παρεύχεσθε ἑκείσιν καὶ τὴν ἀγάπην τοῦ Θεοῦ, ταῦτα ἔδδ' ποιῆσαι, καὶ κείνα μὴ ἀφίεναι.
- 43 Οὐαὶ ὑμῖν τοῖς Φαρισσαῖοις, ὅτι ἀγαπᾶτε τὸν ὄρθρον καὶ τὴν σιναγωγὴν καὶ τὰς ἀσπασμὸς ἐν ταῖς ἀγοραῖς.
- 44 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ Φαρισσαῖοι ὑπεκκερταῖ, ὅτι ἐστὶ ὡς τὰ μημεῖα τὰ ἀόδηλα, καὶ οἱ ἀνθρώποι οἱ φεκαίοντες ἰπᾶτω ὅσα οἰδοῦσι.

- 45 Ἀποκριθεὶς δὲ ἵς τῶν νομικῶν λέγει αὐτοῖς·
Διδάσκαλε, ταῦτα λέγων καὶ ἡμᾶς ὑβρίζεις.
- 46 Οἷ ἔειπε· Καὶ ὑμῖν τοῖς νομικοῖς ἐὰν ὅτι
φορρίζετε τὰς ἀνθρώπους φορτία δυσβία-
σαστα, ἔαυτοὶ ἐνὶ τῶν διακλύλων ὑμῶν ἐ-
πεσφάυετε τοῖς φορτίοις.
- 47 Οὐαὶ ὑμῖν, ὅτι οἰκοδομεῖτε τὰ μνημεῖα
τῶν περσφητῶν, οἱ δὲ πατέρες ὑμῶν ἀπέ-
κλειναν αὐτὰς.
- 48 Ἄρα μαρτυρεῖτε ἔσ συνδοδοκεῖτε τοῖς ἔρσοις
τῶν πατέρων ὑμῶν ὅτι αὐτοὶ μὲν ἀπέκλειναν αὐ-
τὰς, ὑμεῖς ἔσ οἰκοδομεῖτε αὐτὰς τὰ μνημεῖα.
- 49 Διὰ τῶν καὶ ἡ σοφία τῶν Θεῶν εἶπεν· Ἀπο-
σελῶ εἰς αὐτὰς περσφήσας, καὶ ἀποσάλας, καὶ
εἰς αὐτῶν ἀποκλεινῶσι ἔσ ἐκδιώξασιν·
- 50 Ἰνα ἐκζητηθῆ τὸ αἷμα πάντων τῶν περ-
σφητῶν, τὸ ἐκχυμώμνον ἀπὸ καρταβολῆς
κῆσμος, ἀπὸ τῶν γνεῶς ταύτης,
- 51 Ἀπὸ τῶν αἰμῶν τῶν Ἀβελέως τῶν αἰμῶν τῶν
Ζαχαρίας, τῶν ἀπολομῶν μετὰ ξὺ τῶν θυσιαση-
εἰς καὶ τῶν οἰκῶν καὶ λέγω ὑμῖν, ἐκζητηθήσεται
ἀπὸ τῶν γνεῶς ταύτης.
- 52 Οὐαὶ ὑμῖν τοῖς νομικοῖς, ὅτι ἤρατε πτω-
κλειδα τῶν γνάσσεως· αὐτοὶ σὸκ εἰσῆλθετε, καὶ
τὰς εἰσερχομῶνς ἐκωλύσατε.
- 53 Λέγει ἡ καὶ αὐτὰ ταῦτα περὶ αὐτὰς, ἤρ-
ξαντο οἱ γραμματεῖς ἔσ οἱ φαρισαιοὶ δὲ φηῶς
ἐνέχον, ἔσ ἀποστομακίζον αὐτὸν περὶ πωλφόνων·

54 Ἐνεδράκοντες αὐτὸν, ἔζηῶντες θηρεῦσαι ἰε
 ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτῶν, ἵνα καὶ κηροῦσιν αὐτῶν.

Κεφ. 1β. 12.

1 Ἐν οἷς ἐπισυναχθεῶν τῷ μεριάδῳ τῷ
 ὄχλῳ, ὥστε καὶ παλεῖν ἀλλήλους, ἤρξατο
 λέγειν πρὸς τοὺς μαθητῶν αὐτοῦ. Πρῶτος
 κωροῦσεν ἑαυτοῖς δὲ τῷ ζύμῳ τῷ φαρι-
 σαίων, ἡπερ ἐστὶν ὑπόκρισις.

2 Οὐδὲν δὲ συγκαταλυμῶν ἐστι ὁ ἐκ δόλο-
 καλυφθῆσαι, καὶ κρυπτεῖν, ὁ ἐγνωσθήσει).

3 Αὐτὸν ἀνίστα ἐν τῇ σκοτίᾳ εἰπάτε, ἐν τῷ φωτὶ
 ἀκωροῦσεν, καὶ ὁ πρὸς τὸ ἔσ ἐλαλήσει ἐν
 τοῖς ταμείοις, κηροῦσεν ἐπὶ τῷ δωματίων.

4 Λέγω ὑμῖν τοῖς φίλοις μου· Μὴ φοβηθῆτε
 δὲ τὸ δακρυζόντων τὸ σῶμα, ἔτι μᾶλλον ταῦτα
 μὴ ἔχόντων κωροῦσεν πειρήσεια.

5 Ὑποδείξω ὑμῖν πῶς φοβηθῆτε· φοβηθήσε
 τῷ μᾶλλον τὸ δακρυζόντων, ἐξ ἧσιν ἔχοντες ἐμβαλεῖν
 εἰς τὸ γέννησεν· καὶ λέγω ὑμῖν, τέτιν φοβηθήσε.

6 Οὐχὶ πῖντε σπυρίδιον πωλεῖται ἀσπυρίδιον
 δόλο, καὶ ἐν ἐξ αὐτῶν οὐκ ἐστὶν ἐπιλελησμένον
 ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ;

7 Ἀλλὰ ἐὰν τείχῃς τῷ κεφαλῆς ὑμῶν πᾶσαι
 ἡρεῖται, μὴ ἐν φοβηθῆτε πολλῶν σπυ-
 ριδίων ἀφείρετε.

8 Λέγω ὑμῖν· Πῶς ὁσ ἀνὸ ὁμολογήσει ἐν ἑμῶν
 ἐμ κωροῦσεν τῷ ἀνθρώπων, ἔτι ὁ ὅσος τῷ ἀνθρώπων
 ὁμολογήσει ἐν αὐτῷ ἐμ κωροῦσεν τῷ ἀγγέλων τοῦ
 Θεοῦ.

9 Ο' ἵ

9 Ο ἃ δὲνησάμενος με ἐνώπιον τῶ ἀνθρώπων,
ἀπαρνηθήσε) ἐνώπιον τῶ ἀγγέλων ἔ) Θεῶ.

10 Καὶ πᾶς ὁς ἐρεῖ λόγον εἰς τὸ υἱὸν ἔ) ἀνθρώ-
πων, ἀφεθήσε) αὐτῷ· τῷ ἃ εἰς τὸ ἄγιον πνεῦ-
μα βλασφημήσαν) ἐστὶν ἀφεθήσε).

11 Ὅταν ἃ πρὸς φέρωσιν ὑμᾶς ἐπὶ τὰς σωμα-
τικὰς καὶ τὰς δόξαις καὶ τὰς ἐξουσίαις, μή μι-
σημιᾶτε πῶς ἢ ἢ ἀπολογήσῃτε, ἢ ἢ εἴπητε·

12 Τὸ ἃ ἄγιον πνεῦμα διδάξει ὑμᾶς ἐν αὐ-
τῇ τῇ ᾠρᾷ, ἢ δεῖ εἰπεῖν.

13 Εἶπε δέ) αὐτῷ ἐκ τῶ ὄχλου· Διδάσκου-
λε, εἰπέ τῷ ἀδελφῷ) με μείζονα) μετῶ
ἐμῶ τῷ κληρονομίαν.

14 Ο ἃ εἶπεν αὐτῷ· Ἄνθρωπε, τίς με κληρονομήσει
δικαιῶ) ἢ μείζονα) ἐφῶ ὑμῶς;

15 Εἶπε ἃ πρὸς αὐτῶς· Ὄρατε καὶ φυλάσσετε
ἀπὸ τῶ πλεονεξίας· ὅτι σὺ ἐν τῷ πειρασμῷ)
πνι) ζῶν) αὐτῶ ἐσιν ἐκ τῶ ὑπαρχόντων αὐτῶ.

16 Εἶπε ἃ πρὸς βολῶ) πρὸς αὐτῶς, λέγων·
Ἄνθρωπε πνὸς πλεονεξίας) ἀφῶρησεν ἢ χώρα.

17 Καὶ διελογίζετο ἐν ἑαυτῷ, λέγων· Τί ποιή-
σω; ὅτι σὺ ἐχω πᾶ) σιμᾶξω τῶς καρπῶς) με.

18 Καὶ εἶπε· Τῶ) ποιήσω· κληρονομήσω) με τῶ
ἀποθήκας, ἔ) μείζονας οἰκοδομήσω· ἔ) σιμᾶξω
ἐκεῖ πάντα τὰ γηνήματα) με, ἔ) τὰ ἀγαθὰ) με·

19 Καὶ ἐρῶ τῇ ψυχῇ) με· Ψυχῆ, ἔχ) πολλὰ)
ἀγαθὰ κείμενα εἰς ἔτη πολλά· ἀναπαύε),
Φάγε, πίε, ἀφῶρησε).

L. 4

20 Εἶπε

- 20 Εἶπε δὲ αὐτὰ ὁ Θεός· Ἄφροι, ταύτη τῆ
 νυκτὶ τῆ ψυχῆ (εὐαπορήσει δὲ σὺ· αὐτὸ δὲ
 ἠτοίμασται, τί ἐστίν;
- 21 Οὕτως ὁ ἴησους εἶπεν ἑαυτῷ, καὶ μὴ εἰς
 Θεὸν πλεῖστον.
- 22 Εἶπε ἢ πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτῶν· Διὰ τῶν
 ὑμῶν λέγω, μὴ μεριμνᾶτε τῆ ψυχῇ ὑμῶν,
 τί φάγητε· μηδὲ τῷ σώματι, τί ἐνδύσασθε.
- 23 Ἡ ψυχὴ πλεῖστον ἐστὶ τῷ τροφῆς, καὶ τὸ σώ-
 μα, ἢ ἐνδύματι.
- 24 Κατανοήσατε τοὺς κῆρυκας, ὅτι ἔσπευσαν
 εἰς τὸν οὐρανόν· οἷς οὐκ ἐστὶ ταμεῖον, εἰδὲ
 ἀποθήκη, ἃ ὁ Θεὸς τρέφει αὐτὰς· πόσῳ μᾶλ-
 λον ὑμεῖς διαφέρετε τῷ πτερυγῶν;
- 25 Τίς ἢ ἐξ ὑμῶν μεριμνῶν δύναται προσθεῖ-
 ναι ἐπὶ τῆ ἡλικίας αὐτῶν πῆχυον ἓνα;
- 26 Εἰ οὖν ἔτε ἐλάχιστοι διώκεσθε, τί πλεῖστον
 λοιπῶν μεριμνᾶτε;
- 27 Κατανοήσατε τὰ κελύφα, πῶς αὐξάνει· ἔ-
 κρηται, εἰδὲ νήθει· λέγω ἢ ὑμῶν, εἰδὲ Σολομῶν ἐν
 πείσῃ τῆ δόξῃ αὐτῶν πλεῖστον ὡς ἐν τῆ ἡλικίᾳ.
- 28 Εἰ ἢ τῷ χόρτον ἐν τῇ ἀγρῇ σήμερον ὄντα,
 καὶ αὐριοὶ εἰς κλίβανον βαλλόμενοι, ὁ Θεὸς
 ἔτις ἀμφιένυσσι, πόσῳ μᾶλλον ὑμῶν,
 ὀλιγόπιστοι;
- 29 Καὶ ὑμεῖς μὴ ζητεῖτε τὴ φάγη, ἢ τὴ πίψα·
 καὶ μὴ μεριμνᾶτε.
- 30 Ταῦτα γὰρ πάντα, τὰ ἔθνη ἔσονται ἐπιζη-
 τή·

τεῖ ὑμῶν ἃ ὁ πατήρ οἶδεν ὅτι ζητεῖτε τῶν.

31 Πλὴν ζητεῖτε τὴ βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, καὶ ταῦτα πάντα προσεθήσε^ν ὑμῖν.

32 Μὴ φοβῆ^{σθε}, τὸ μικρὸν ποίμνιον ὃ ἐξεδόκησεν ὁ πατήρ ὑμῶν δοῦναι ὑμῖν τὴ βασιλείαν.

33 Πωλήσατε τὰ ὑπερπερὶ ὑμῶν, καὶ δοῦτε ἐλεημοσύνην. Ποιήσατε ἑαυτοῖς βαλάντια μὴ παλαιά, μωρα, ἡσυχαστὸν ἀνεκλήπτρον ἐν τοῖς ἔσχατοις· ὅπως κλέπτῃς ἄνθρωπος ἐξέλθῃ, εἰδὲ σὺς ἀφ᾽ ἑαυτοῦ.

34 Ὅπως γὰρ ἐστὶν ὁ ἡσυχαστὸς ὑμῶν, ἐκεῖ καὶ ἡ καρδία ὑμῶν ἐστίν.

35 Ἐξαισώθητε ὑμῶν ἀπὸ τῶν φύλων τοῦ κόσμου, καὶ οἱ λύχνοι καὶ ἡμίμοι.

36 Καὶ ὑμεῖς ὅμοιοι ἀνθρώποις προσδεχόμενοι τὸ κύριον ἑαυτῶν, πότε ἀναλύσῃ ἐκ τῶν γάμων· ἵνα ἐλθῶν καὶ κρῖσῃ, οὐδέ τις ἀνοίξῃσιν αὐτοῦ.

37 Μακάριοι οἱ ὄφθοι ἐκεῖνοι ὅς ἐλθὼν ὁ κύριος εὐρήσῃ τὸν ἄνθρωπον. ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ὁ πᾶσι τῶν ἀνακλινέων αὐτοῦ, καὶ παρελθόντων ἀφ᾽ αὐτοῦ.

38 Καὶ εἰὰν ἔλθῃ ἐν τῇ δευτέρᾳ φυλακῇ, ἐν τῇ τρίτῃ φυλακῇ ἔλθῃ, καὶ εὐρήσῃ τὸν μακάριοι εἰσὶν οἱ ὄφθοι ἐκεῖνοι.

39 Τὸ ἄνθρωπος γινώσκεις, ὅτι εἰ ἡδὲ ὁ οἰκοδεσπότης ποῖα ἄρα ὁ κλέπτῃς ἔρχε^{ται}, ἐρησῇσιν αὐτὸν, ἐπεὶ ἂν ἀφ᾽ ἑαυτοῦ διορυγῶν τὸν οἶκον αὐτοῦ.

L 5 40 Καὶ

- 40 Καὶ ὑμεῖς ἂν γίνεσθε ἱταῖμοι· ὅτι ἡ ὥρα ἔδοκῆτε, ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεται·
- 41 Εἶπε ἢ αὐτῷ ὁ Πέτρος, Κύριε, ὡς πρὸς ἡμῶς τὴν ὄψωβόλιον ταύτην λέγεις, ἢ καὶ πρὸς πάντας;
- 42 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Τίς ἄρα ἐστὶν ὁ πιστὸς οἰκοδόμος καὶ Φρόνιμος, ὃν κτίσῃσθαι ὁ κύριος ἐπὶ τῆς σκευῆς αὐτοῦ, ἢ διδόναι ἐν κτηρῶν τὸ σιτομέτριον;
- 43 Μακάριος ὁ δούλος ἐκεῖνος, ὃς ἐλθὼν ὁ κύριος αὐτὸν εὖρήσῃ ποιῆσαι ἕτως.
- 44 Ἀληθῶς λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐπὶ πάνσι τοῖς ὑπαρχουσιν αὐτὸν κτίσῃσθαι αὐτὸν.
- 45 Ἐάν τις εἴπῃ ὁ δούλος ἐκεῖνος ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· Χρονίζεῖ ὁ κύριός μου ἔρχεσθαι (ἢ ἄρξῃ) τυπῆσαι τὰς παύδας καὶ τὰς παιδίσκας ἐσθίον τε καὶ πίνον τε καὶ μεθύσκεσθαι·
- 46 Ἡξέτω ὁ κύριος ἢ δούλος ἐκεῖνος ἐν ἡμέρᾳ ἢ ἔσθωσδοκῆ, καὶ ἐν ὥρᾳ ἢ ἔπιψῆσθαι καὶ διχοτομήσθαι αὐτὸν, καὶ τὸ μέρος αὐτοῦ μετὰ τῶν ἀπίστων ἦσθαι.
- 47 Ἐκεῖνος ἢ ὁ δούλος ὁ γινῶσθαι τὸ θέλημα τοῦ κυρίου ἰαυῖσθαι, καὶ μὴ ἱταῖμάσθαι, μηδὲ ποιῆσθαι πρὸς τὸ θέλημα αὐτοῦ, ἀρῆσθαι πολλῶσθαι·
- 48 Ὁ δὲ μὴ γινῶσθαι, ποιῆσθαι ἢ ἀξία τωλήσθαι, ἀρῆσθαι ὀλίγας. παιπὴ ἢ ἡ ἐδόθη πολὺ, πολὺ ζήτησθαι περὶ αὐτοῦ καὶ ἡ παρέθεντο πολὺ, ἀεισὸσθαι αὐτῶσθαι αὐτοῦ.

- 49 Πῦρ ἤλθον βαλεῖν εἰς τὴ γῆν, καὶ τί θέλω
εἰ ἤδη ἀνήφθη;
- 50 Βάπτισμα δὲ ἔχω βαπτισθῆναι, καὶ πῶς
συνέχομαι ἕως ἔτελεισθῆ;
- 51 Δοκεῖτε ὅτι εἰρήνην παρρηγοῦμαι δέναν ἐν
τῇ γῆ; ἔχῃ, λέγω ὑμῖν, ἀλλ' ἡ Διαμερισμὸν.
- 52 Ἔσονται γὰρ δύο εἰς ἓν οἶκον ἐν Δια-
μεμερισμῶνι τρεῖς ἐπὶ δύο, ἔτι δύο ἐπὶ τρεῖσι.
- 53 Διαμερισθήσεται πατὴρ ἐφ' ἑαυτὸν, καὶ υἱὸς ἐπὶ
πατέρα· μήτηρ ἐπὶ θυγατέρα, καὶ θυγάτηρ ἐπὶ
μητέρα· πενθερός ἐπὶ τὴν νόμφον αὐτῆς, καὶ
νόμφη ἐπὶ τὸν πενθερόν αὐτῆς.
- 54 Ἐλάθη δὲ καὶ πῶς ὄχλοις· ὅτι ἐν ἰδίῃ τῇ
νεφέλῃ ἀνατέλλουσιν ἀπὸ θυγατρῶν, οὕτως
λέγετε· Ὁμβροὶ ἔρχονται· ἔτι γὰρ ἔπω.
- 55 Καὶ ὅταν νότον πλέουσα, λέγετε· Ὅτι καύ-
σονται ἔσται· καὶ γὰρ ἔτι.
- 56 Ὑποκρίται, τὸ πρῶτον πονεῖ τῆ γῆς καὶ τῆ
ἐρανοῦ οἰδαὶ δοκιμαζέσθαι· τὸ δὲ κρυφόν τῶ-
ν πῶς ἔδοκιμαζέσθε;
- 57 Τίς καὶ ἐφ' ἑαυτῶν ἔκρινε τὸ δόγμα;
- 58 Ὡς γὰρ ὑπάτης μετ' ἑαυτῶν ἀντιδικεῖτε ἐπὶ
ἄρχοντι, ἐν τῇ ὁδοῖ δὲ ἐρρασίαν ἀπηλάχθητε
ἀπ' αὐτῶν· μήποτε καὶ αὐτῶν σε πρὸς τὸ κρη-
τῶν, καὶ ὁ κρητὴς σε πρὸς τὸν πρῶτον ἀκέραιον,
καὶ ὁ πρῶτος σε βάλῃ εἰς φυλακὴν.
- 59 Λέγω σοι, ἔτι μὴ ἐξέλθῃς ἐκεῖθεν ἕως ἔτι καὶ
τὸ ἔρχεσθαι λεπτῶν ἀποδώσῃς.

Κεφ.

Κεφ. ιγ'. 13.

- 1 ΠΑρῆσαν δὲ ἄλλοι ἐν αὐτῶν τῶν κηρῶν ἀπ-
αργίλλοις αὐτῶν πρὸς τὸν Γαλιλαίων, ὃν
τὸ αἶμα Πιλάτος ἔμιξε μετὰ τὸν ἑσπέρων αὐτῶν.
- 2 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς·
Δοκεῖτε ὅτι οἱ Γαλιλαῖοι ἔσονται ἁμαρτωλοὶ
πρὸ πάντων τῶν Γαλιλαίων ἐχθρόν, ὅτι
τοιαῦτα πεπόνησιν ;
- 3 Οὐχί, λέγω ὑμῖν· ἀλλ' ἐὰν μὴ μετανοῆτε,
πάντες ὡσαύτως ἀπολείθε.
- 4 Ἡ ἐκεῖνοι οἱ δὲ καὶ κηρὸν ἔκλειον ἐφ' ἧς ἐπέσει ὁ
πῦρ ἐν τῶν Σιλωὰμ, ἔσονται ἀπὸ κείνου αὐτοῖς,
δοκεῖτε ὅτι ἔσονται ὀφθαλμοὶ ἐχθρόν πρὸ πάν-
των ἀνθρώπων τῶν κηρικῶν ἐν Ἱερουσαλήμ.
- 5 Οὐχί, λέγω ὑμῖν· ἀλλ' ἐὰν μὴ μετανοῆτε,
πάντες ὁμοίως ἀπολείθε.
- 6 Ἐλεγε ἡ ταύτην τὴν ἄβυθον, Συκίῳ
εἶχε ἐν τῶν ἀμπελῶνι αὐτῆς πεφυθισμένην
καὶ ἦλθε καρπὸν ζητῶν ἐν αὐτῇ, ἔσχε δὲ οὐδέν.
- 7 Εἶπε ἡ πρὸς τὴν ἀμπεληρῶν, Ἰδοὺ, τρία ἔτη
ἐργασάμην ζητῶν καρπὸν ἐν τῇ συκῇ ταύτῃ, καὶ
ἔσχε οὐδέν· ἐκκοψέτω αὐτήν· ἵνα καὶ καὶ
ἄλλο κηρῶν ;
- 8 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς λέγει αὐτῶν, Κύριε,
ἄφες αὐτήν καὶ τὸν ἔτος· ἕως ὅτε σκάψω
πρὸς αὐτήν, καὶ βάλω κηρῶν.
- 9 Καὶ ἂν μὴ ποιήσῃ καρπὸν· εἰ ἡ μήγε, εἰς τὸ
μῆλλον ἐκκοψέτω αὐτήν.

10 ΗΉ

- Ο Ἦν ἡ διδασκαλίαν ἐν μιᾷ τῶν συναγωγῶν ἐν τοῖς σαββάσι.
- 11 Καὶ ἰδὼν, γυνὴ ἡ πνεῦμα ἔχουσα ἀθεο-
νείας ἕτη δέκα καὶ ὀκτώ· ἣ ἡ σκυλίαισα, καὶ
μὴ δυναμένη ἀνακύψαι εἰς τὸ παλιεῖς.
- 12 Ἰδὼν ἡ αὐτὴ ὁ Ἰησοῦς, παρεφώνησε, καὶ εἶ-
πεν αὐτῇ· Γύναι, ἀπολέλυται τὸ ἀθεονείας σου.
- 13 Καὶ ἐπέθηκεν αὐτῇ τὰς χεῖρας· καὶ ἠδρα-
χθῆμα ἀναρτήθη, καὶ ἐδόξαζε τὸ Θεόν.
- 14 Ἀποκριθεὶς ἡ ὀρχισυνάγωγος, ἀγα-
νακλιῶν ὅτι τῶν σαββάτων ἐτεροπύθεν ὁ Ἰη-
σοῦς, ἔλεγε τῶν ὄχλων· Εἰς ἡμέραν εἰσὶν ἐν αἷς
δεῖ ἐργάζεσθαι ἐν ταύταις οὐκ ἐργόμοι θε-
ραπείασι, καὶ μὴ τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων.
- 15 Ἀπεκρίθη οὐκ αὐτῷ ὁ Κύριος, καὶ εἶπεν·
Ἰπποκρίτα, ἕκαστος ὑμῶν τῶν σαββάτων ἐ-
λύει τὸν βέν αὐτῆς ἢ τὸν ὄνον ἀπὸ τῆς φάτνης,
καὶ ἀπαγαγὼν πόλιν;
- 16 Ταύτῃ ἡ θυγατέρα Ἀβραάμ ἔστιν, ἡ
ἔδηξεν ὁ σατανᾶς ἰδὼν δέκα καὶ ὀκτὼ ἔτη, ὅση
ἔδηξεν ἡ θυγατέρα ἀπὸ τῶν δεσμῶν τούτων τῇ ἡμέρᾳ
τῶν σαββάτων;
- 17 Καὶ ταῦτα λέγοντες αὐτῆς, καὶ ἠγαθόν
πάντες οἱ ἀντικείμενοι αὐτῇ· καὶ πᾶς ὁ
ὄχλος ἔχαρεν ἐπὶ πᾶσι τοῖς ἐνδόξοις τοῖς
γινόμενοις ὑπὸ αὐτοῦ.
- 18 Ἐλεγε δὲ· Τίνι ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν
Θεῶν; καὶ τίνι ὁμοιωσάμενος αὐτῷ;

19 Ὁμοία

- 19 Ὁμοία ἐστὶ κη̅ και σινάπεις, ὃ λαβὼν ἄν-
θρωπος ἔβαλεν εἰς κῆπον ἑαυτοῦ κ̅ κ̅ ἠύξησε,
καὶ ἐγένετο εἰς δένδρον μέγα, καὶ τὰ πετάνια ἔ-
βραυν̅ καὶ ἐσπένθησαν ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ.
- 20 Καὶ πάλιν εἶπε· Τίνι ὁμοιώσω τὴν βα-
σιλείαν τοῦ Θεοῦ;
- 21 Ὁμοία ἐστὶ ζύμη ἣν λαβῶσα γυνὴ ἐνέκρυψεν
εἰς ἀλσύρεα σάτα τρία, ἕως ἃ̅ ἐξυμώθη ὅλος.
- 22 Καὶ διεπορεύετο κ̅ πόλις ἑκώμας δι-
δάσκων, καὶ πορείαν ποιῶμεν εἰς Ἱερου-
σαλήμ·
- 23 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν, Κύριε, εἰ ὀλίγοι οἱ
σωζόμενοι; Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτὸν·
- 24 Ἀγωνίζεσθε εἰσελθεῖν διὰ τῆς πυλῆς·
ὅτι πολλοὶ, λέγω ὑμῖν, ζητήσουσιν εἰσελθεῖν,
καὶ οὐκ ἰσχύσουσιν.
- 25 Ἄρ' ἔαυθ' ἐγενήθη ὁ οἰκοδεσπότης, καὶ ἀπο-
κλείσθη τῆς θύρας, καὶ ἄρξασθε ἔξω ἑστάναι, καὶ
καρῶν τὴν θύραν, λέγοντες· Κύριε, Κύριε,
ἄνοιξον ἡμῖν· καὶ ἀποκριθεὶς ἐρεῖ ὑμῖν, ὅτι
οἶδα ὑμᾶς, πόθεν ἐστέ.
- 26 Τότε ἄρξασθε λέγειν· Ἐφάγομεν ἐν ἀπίαν-
σιν, καὶ ἐπίομεν, καὶ ἐν ταῖς παλατίαις ἡμῶν
ἐδίδαξας.
- 27 Καὶ ἐρεῖ· Λέγω ὑμῖν, οὐκ οἶδα ὑμᾶς πό-
θεν ἐστέ· ἀπόστητε ἀπ' ἐμοῦ πάντες οἱ ἐργάται
τῆς ἀδικίας.
- 28 Ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν
ὀδόντων,

ὀδόντων, ὅταν ὀψήσθε Ἀβραάμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ
 Ἰακώβ, καὶ πάντες τὰς παροφθίας ἐν τῇ βα-
 σιλείᾳ τοῦ Θεοῦ, ὑμεῖς ἢ ἐκβαλλομένους ἔξω.

29 Καὶ ἤξουσιν ἀπὸ ἀναθλαῖν καὶ δυσμῶν, καὶ
 ἀπὸ βορρῆ καὶ νότου· καὶ ἀνακληθήσονται ἐν τῇ
 βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.

30 Καὶ ἰδοὺ, εἰσὶν ἔρχασι οἱ ἔσονται παροῦτοι,
 καὶ εἰσὶ παροῦτοι οἱ ἔσονται ἔρχασι.

31 Ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ παροήλθον Ἰανες Φα-
 ρισαῖοι, λίθους αὐτῶν. Ἐξέλθε, καὶ προσύς
 ἐντεῦθεν ὅτι Ἡρώδης θέλει σε ἀποκτείνειν.

32 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Προσύθεντες εἰπάτε τῇ
 ἀλώπεκι ταύτῃ· ἰδοὺ, ἐκβάλλω δαιμόνια,
 καὶ ἰάσασθε ἐπιελῶν σήμερον καὶ αὔριον, καὶ τῇ
 τρίτῃ τελήσεται.

33 Πλὴν δεῖ με σήμερον καὶ αὔριον καὶ τῇ ἔχο-
 μῆν προσύεσθαι ὅτι σὺ ἐνδεὴς παροήτιον
 ἀπολέσθαι ἔξω Ἰερουσαλήμ.

34 Ἰερουσαλήμ, Ἰερουσαλήμ, ἡ ἀποκτείνουσα
 τὰς παροφθίας, καὶ λιθοβολῶσα τὰς ἀπειθαλ-
 μίας παρὸς αὐτίκῃ, ποσάκις ἠθέλησθε ἐπι-
 σιωπᾶσαι τὰ τέκνα σου, ὃν τρόπον ὄρνις πτεῖν
 ἐσωτῆς νοστίαν ὑπὸ ἰσὶ πτέρυγας, καὶ σὺ
 ἠθέλησάτε;

35 ἰδοὺ, ἀφίεθαι ὑμῖν ὁ οἶκος ὑμῶν ἔρημος.
 ἀμελῶ ἢ λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔτι με ἰδοῦτε ἕως αὐ-
 τῆς ἡμέρας ὅτε εἴπητε, Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος
 ἐν ὀνόματι Κυρίου.

Κιφ.

Κεφ. ιδ'. 14.

- 1 Καὶ ἐλθὼν ἐν τῷ ἑλθεῖν αὐτὸν εἰς οἶκόν
 Ἰησοῦ τῶν δούλων τῶν Φαρισαίων σαδ-
 βάτα φαγεῖν ἄρτον, καὶ αὐτοὶ ἦσαν ᾠδω-
 τήριμοι αὐτόν.
- 2 Καὶ ἰδὼν αἰθροπὸς ἕως ἡμερῶν ὑδροπικρῶς ἐμ-
 πνεύσει αὐτῶν.
- 3 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπε πρὸς τὰς
 νομικὰς καὶ Φαρισαίους, λέγων· Εἰ ἔξεσι τὰ
 σαδδάτα θεραπεύειν;
- 4 Οἱ δὲ ἠσύχαται. Καὶ ἐπιλαοῦσθ ἰά-
 σαθ αὐτόν, καὶ ἀπέλυσε.
- 5 Καὶ ἀποκριθεὶς πρὸς αὐτὰς, εἶπε· Τί-
 νου ὑμῶν ὄνειδος ἢ βῆς εἰς Φριαρὶμπισεῖν,
 ἔσθι δούλω ἀνασπάσει αὐτόν ἐν τῇ ἡμέρᾳ
 τῆς σαδδάτας;
- 6 Καὶ ἔσθι ἰχθυῶν ἀναπακρίθηναι αὐτῷ
 πρὸς ταῦτα.
- 7 Ἐλεγε δὲ πρὸς τὰς κειλημῶνας ᾠδωσο-
 λῶν, ἐπέχων πῶς ἕως πρεσβυτερίας ἐξελέ-
 γοντο, λέγων πρὸς αὐτὰς·
- 8 Ὅταν κληθῆς ὑπὸ Ἰησοῦ εἰς γάμους, μὴ
 κατακλιθῆς εἰς τὴν πρεσβυτερίαν· μήποτε
 ἐνιμώτερός σου ἢ κειλημῶν ὑπὸ αὐτῶν;
- 9 Καὶ ἐλθὼν ὁ σέθεν αὐτόν καλίσσεως, ἐρεῖ
 σοι· Δὸς τέτρωτόπον καὶ τότε ἄρξῃ μετ' αἰ-
 σχμῆς τὸ ἔχασθαι τόπον κατέχῃν.
- 10 Ἀλλ' ὅταν κληθῆς, παρδύθει ἀνάπισσι εἰς
 τὸν

ἔχων τόπον ἵνα ὅταν ἔλθῃ ὁ κεκληκώς σὺ,
εἴπῃ σοι· Φίλε, παρσανάθητι ἀνώτερον· τότε
ἴσται σοι δόξα ἐνώπιον ἧ συνανακειμένων σοι.

11 Ὅτι πᾶς ὁ ὑψῶν ἑαυτὸν, ταπεινώσεται·
καὶ ὁ ταπεινῶν ἑαυτὸν, ὑψώσεται.

12 Ἐλεγε ἡ ἐκ τῶν κεκληκῶν αὐτὸν· Ὅταν ποιῆς
ἀριστον ἢ δεῖπνον, μὴ φωνῆ τὸς φίλους (καὶ μη-
δὲ τὸς ἀδελφούς (καὶ μηδὲ τὸς συγγενεῖς (καὶ
μηδὲ γείτονας πωλοσίους· μήποτε ἐκ αὐτοῖ σὲ
ἀντικαλίσωσι, καὶ χύνηται σοι ἀνὰ πόδωμα.

13 Ἀλλ' ὅταν ποιῆς δοχλῶ, κἀλέη πτωχούς,
ἀναπήρους, χωλούς, τυφλούς.

14 Καὶ μακάριός ἐστι ὅτι ὅσα ἔχουσιν ἀν-
ταποδῶνά σοι· ἀνὰ πόδωμά σου ἐν
τῇ ἀναστάσει τῶ δικαίων.

15 Ἀκέσας δὲ τις τῶ σιωνικειμένων ταῦ-
τα, εἶπεν αὐτῶ· Μακάριός ἐστι ὃς φάγεται
ἀρῶν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.

16 Ὁ ἡ εἶπεν αὐτῶ· Ἄνθρωπος τις ἐποίησε
δεῖπνον μέγα, καὶ ἐκάλεσε πολλούς.

17 Καὶ ἀπέστειλε τὸ δούλον αὐτοῦ τῇ ἄρᾳ τοῦ
δεῖπνου εἰπεῖν τοῖς κεκληκῶσι· Ἐρχεσθε,
ὅτι ἤδη ἕτοιμά ἐστι πάντα.

18 Καὶ ἤρξατο δὲ πρὸ μιᾶς παραίτησθαι πάν-
τες. Ὁ οὖτος εἶπεν αὐτῶ· Ἄρξον ἠγρόσα-
σα, καὶ ἔχω ἀνάγκην ἐξελθεῖν καὶ ἰδεῖν αὐτόν.
ἔρωτά σε, ἔχε με παρητημένον.

19 Καὶ ἔπερθε εἶπε· Ζεύγη βοῶν ἠγρόσατα
πέντε,

- πίντι, κὶ πορεύομαι δοκιμάσαι αὐτὰ ἐρω-
τῶ σε, ἔχε με παρηγημένον.
- 10 Καὶ ἔπειθ' εἶπε Γιωάννα ἔγημα, καὶ
Διά τῶν ἑδυνάματι ἐλθεῖν.
- 21 Καὶ ὁ ἀρχαγγέλου ὁ δὲ λέγει ἐκείνῳ
ἀπήγγελε τῷ κυρίῳ αὐτῷ ταῦτα. Τότε ὁ
γενοὺς ὁ οἰκοδεσπότης εἶπε τῷ δούλῳ αὐτῷ·
Ἐξέλθε ταχέως εἰς τὰς παλάσιαις κὶ ρύμας
τῆ πόλεως, ἔ τὰς πλωχὰς καὶ ἀναπήρας κὶ
χρῆστας ἔ τὸ φλὰς εἰσαγαγε αὐτοὺς.
- 22 Καὶ εἶπεν ὁ δὲ λέγει· Κύριε, γένηται αἰς
ἐπίταξας, κὶ ἐπὶ τὸ πᾶν ἔστι.
- 23 Καὶ εἶπεν ὁ κύριος πρὸς τὸ δούλον· Ἐξέλ-
θε εἰς τὰς ὁδοὺς κὶ φραγμῆς, ἔ ἀνάγκαστε
εἰσελθεῖν, ἵνα γεμισθῇ ὁ οἶκός μου.
- 24 Λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι ἔδεις τῶ ἀνδρῶν ἐκείνων
τῶ κεικλημένων γούπεταί μου ἔ δέιπνος.
- 25 Συνοπορεύοιτο ἢ αὐτῶ ὄχλοι πολλοί· κὶ
εραφεῖς εἶπε πρὸς αὐτούς·
- 26 Εἶπες ἔρχεσθαι πρὸς με, κὶ ἔ μισεῖ τὸ πατέρα
ἐαυτοῦ κὶ τὸ μητέρα, ἔ τὸ γυναικα κὶ τὰ τέκνα,
ἔ τὰς ἀδελφὰς κὶ τὰς ἀδελφὰς, ἐπὶ ἢ κὶ τὸ
ἐαυτοῦ ψυχλῶ, ἔ δυνάταί με εἶναι μαθητῆς.
- 27 Καὶ ὁ ὄστις ἔ βασιλεύς τῶ σκουρον αὐτῷ, ἔ ἔρχεσθαι
ὀπίσω μου, ἔ δυνάταί με εἶναι μαθητῆς.
- 28 Τίς γὰρ ἐξ ὑμῶν, θέλων πύργον οἰκοδομη-
σαι, ἔχι πρῶτον καθίσας ψηφίσαι τὸ δα-
πάνην, εἰ ἔχι τὰ πρὸς ἀπερισπῆναι

29 ἵνα

- 29 ἵνα μήποτε θνήσκει αὐτὸ θεμέλιον, ἕ μη ἰχυρόν) ἐκτελέσῃ, πάντες οἱ θεωροῦντες ἀρξάνται ἐμπαιξέειν αὐτῷ,
- 30 Λέγοντες· Ὅτι ἂν ἄνθρωπος ἤρξασθαι οἰκοδομῆεν, καὶ στήσῃ ἰχυσὴν ἐκτελέσῃ.
- 31 Ἡ δὲ πρὸς βασιλεῦς παραλόγιμος συμβουλίαν ἰτέρῳ βασιλεῖ εἰς πόλεμον, ἕχῃ κακίστην παροτρύνει βυβλύεται εἰς θανάτῳ ἐστὶ ἐν δόγμα χελιάσῃ ἀπανήσεται τῷ μὲν εἰς σὴν χελιάσῃ ἐρχομένων ἐπ' αὐτόν;
- 32 Εἰ δὲ μήγε, ἐπὶ αὐτῷ πόρῳ ὄντος, προσδοίαν δόξῃ εἰλας, ἐρωτῆσαι τὰ πρὸς εἰρήνῃ.
- 33 Οὕτως οὖν, πᾶς ἐξ ὑμῶν ὃς στήσῃ δόξα τέσσεται πᾶσι τοῖς ἑαυτῷ ὑπάρχουσιν, ἕ διώκεται με εἶνα κακῆς.
- 34 Καλὸν τὸ ἄλλας· ἕαν δὲ τὸ ἄλλας μωρανθῇ, ἐν πῆν δόξῃ)· Οὐτε εἰς γλῶ, ἕτε εἰς κηπίαν δὲ τῷ ἐπὶ· ἕξω βάλλουσιν αὐτό. Ὁ ἕχον ἄπο ἀκέρῃ, ἀκέρῃ.

Κεφ. εἰ. 15.

- 1 Ἡ δὲ σὺν δὲ ἐρχίζοντες αὐτῷ πάντες οἱ τελῶναι καὶ οἱ ἁμαρτωλοὶ, ἀκέρῃ αὐτῷ.
- 2 Καὶ διερχόμενον εἰς φαρισαῖοι καὶ οἱ γραμματεῖς, λέγοντες· Ὅτι ἕτος ἁμαρτωλῶς παροτρύνει, καὶ σιωποῖ αὐτοῖς.
- 3 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὰς ἕ πρὸς ἁπολλῷ τῷ πᾶσι, λέγων·
- 4 Τίς ἄνθρωπος ἐξ ὑμῶν ἕχον ἐγκαθῆναι πρὸς βασιλῆα,

βαβα, ἔδουλέσας ἐν ἑξ αὐτῶν, ἔκαστα αἰτίαι
 πρὸς ἐννεηκονταετία ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ πορεύ-
 σαι ἐπὶ τὸ δόλωλός, ἕως ὄρη αὐτό;

5 Καὶ ὄρων ἐπέβησαν ἐπὶ τὰς ἄμους ἑα-
 τῆ χαίρων;

6 Καὶ ἔλθων εἰς τὸ οἶκον, συγκαλεῖ τὰς φίλους
 καὶ τὰς γείτονας; λέγων αὐτοῖς· Συγχαρήτε
 μοι, ὅτι ὄρον τὸ πρὸς αὐτὸν τὸ δόλωλός.

7 Λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔτω χαρὰ ἔσται ἐν τῷ ἔρα-
 νῷ ἐπὶ ἐνὶ ἁμαρτωλῷ μελινοῦνι, ἢ ἐπὶ ἐν-
 νεηκονταετία δικαίοις, οἵτινες ἔχρησαν ἔχ-
 σαι μελινοίας.

8 Ἡ πῖς γυνὴ, δραχμὰς ἔχουσα δέκα, ἐὰν
 δούλεση δραχμὴν μίαν, ἔχῃ ἅπτη λύχινον,
 καὶ σαροῖ τὴν οἰκίαν, καὶ ζητεῖ ἐπιμελῶς,
 ἕως ὅτε ὄρη.

9 Καὶ ὄρῃσιν συγκαλεῖται τὰς φίλους καὶ
 τὰς γείτονας; λέγουσα· Συγχαρήτε μοι, ὅτι
 ὄρον τὴν δραχμὴν μὴ ἀπώλεσα.

10 Οὕτω, λέγω ὑμῖν, χαρὰ γίνεται ἐνώπιον
 τῶν ἀγγέλων τοῦ Θεοῦ ἐπὶ ἐνὶ ἁμαρτωλῷ με-
 λινοῦνι.

11 Εἶπε δὲ Ἀβραάμ ἵς εἶχε δύο υἱάς.

12 Καὶ εἶπεν ὁ νεώτερος αὐτῶν τῷ πατρὶ,
 Πάτερ, δός μοι τὸ ἐπιβάλλον μέρος τῆς
 ἐσίας. Καὶ διείλεν αὐτοῖς τὸ βίον.

13 Καὶ μετ' ἔ πολλὰς ἡμέρας συναγαγὼν
 ἅπαντα ὁ νεώτερος υἱὸς ἀπεδήμησεν εἰς
 χώραν

χώραν μακράν· ἔκει δισκόρησεν τὸ ἔσιον αὐτῶν, ζῶν ἀσώτως.

14 Δαπανήσας ἡ αὐτῶν πάντα, ἐγένετο λιμὸς ἰσχυρὸς καὶ τὸ χωρὸν ἐκείνῳ· καὶ αὐτὸς ἤρξατο ὑπερεῖδεν.

15 Καὶ προσύθετο ἐκολλήθη ἐνὶ τῷ πολιτῶν τῷ χωρῶν ἐκείνης· καὶ ἔπεμψεν αὐτὸν εἰς τὰς ἀγροὺς αὐτῶν βοσκήν χοίρων.

16 Καὶ ἐπεθύμη γαμίσει πλὴν κηλίας αὐτῶν ἀπὸ τῶν κεραλίων ἃν ἦσαν οἱ χοῖροι· ἔδεδεῖς ἐδίδεν αὐτῶν.

17 Εἰς ἑαυτὸν ἡ ἐλθὼν, εἶπε· Πόσοι μισοῖσι τὸν πατέρα μου ὡς οὐκ ἐστὶν ἄρτων, ἐγὼ ἡ λιμῶν ἀπόλυτον.

18 Ἀναστὰς προσύσσωμαι πρὸς τὸν πατέρα μου· καὶ ἐρῶ αὐτῶν, Πάτερ, ἡμαρτὸν εἰς τὸν ἔρανον, καὶ ἐνώπιόν σου·

19 Καὶ σκέπει μὲν ἀξιῶ κληθῆναι υἱὸς σου· ποιήσον με ὡς ἓνα τῶν μισθίων σου.

20 Καὶ ἀναστὰς ἦλθεν πρὸς τὸν πατέρα αὐτοῦ. Ἐπὶ ἡ αὐτῶν μακρὰν ἀπέχοντι, εἶδεν αὐτὸν ὁ πατήρ αὐτῶν, καὶ ἐσπλαγχνίσθη· καὶ δραμῶν ἐπέπεσεν ἐπὶ τὸν τραχὺλον αὐτῶν, ἔκλειψεν αὐτόν.

21 Εἶπε ἡ αὐτῶν ὁ υἱὸς, Πάτερ, ἡμαρτὸν εἰς τὸν ἔρανον καὶ ἐνώπιόν σου, καὶ σκέπει μὲν ἀξιῶ κληθῆναι υἱὸς σου.

22 Εἶπε ἡ ὁ πατήρ πρὸς τὸν δούλον αὐτῶν·
Ἐξέ-

- Ἐξενέγκασθε τὸν σιλικὸν τὸν περὶ τὸν πόδα, ἕως ἐνδύ-
σαι αὐτὸν, καὶ δότε δακτύλιον εἰς τὴν χεῖρα
αὐτοῦ, καὶ ὑποδήματα εἰς τὰς πόδας.
- 23 Καὶ ἐνέγκασθε τὸν μόχον τὸν σιλικὸν τὸν Ἰου-
δαίου· ἕως φασγάνου ὑφραίνω.
- 24 Ὅτι ἔτι ὁ υἱὸς μου νεκρὸς ἔσται, ἕως ἀνέξη-
σιν καὶ ἀπολωλὸς ἔσται, καὶ ὑρέθη. Καὶ ἤρ-
ξαντο ὑφραίνεσθαι.
- 25 Ἦν δὲ ὁ υἱὸς αὐτοῦ ὁ πρεσβύτερος ὡς
ἀρχὴ καὶ ὡς ἐρχόμενος ἤγειρε τὴν οἰκίαν, ἤκουσε
συμφωνίας καὶ χορῶν.
- 26 Καὶ προσκαλεσάμενος ἔτα τὸν πατέρα
ἐπισημαίνετο πᾶσι ταῦτα.
- 27 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ὅτι ὁ ἀδελφός σου
ἤκουσε καὶ ἔθυσεν ὁ πατήρ σου τὸν μόχον τὸν σιλικὸν,
ὅτι ὑμᾶς ἀπέλασεν.
- 28 Ὡς γὰρ δὲ ἤκουσε, καὶ ἔτα ἤγειρε εἰσελθεῖν
ὁ οὐκὸς πατὴρ αὐτοῦ ἐξελθὼν παρεκκλήσας
αὐτόν.
- 29 Ὁ δὲ ἀπεκρίθη εἶπεν τῷ πατρί, Ἰδὲ,
ποσῶντα ἔτη δευλόωσαι, ἕως ἐδέσθη ὡς ἔλαβεν
σε παρῆλθον, καὶ ἐμοὶ ἐδέσθη ἕως ἔδωκας ἐρι-
φον, ἵνα μὴ τὸ φίλον μου ὑφραίνω.
- 30 Ὅτι δὲ ὁ υἱὸς σου ἔτα ὁ καὶ φασγάνου σου
τὸν βίον μου πορνῶν, ἤλθεν, ἔθυσας αὐτῷ τὸν
μόχον τὸν σιλικὸν.
- 31 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Τέκνον, σὺ πάντοτε
μετ' ἐμοῦ εἶ, καὶ πάντοτε τὰ ἐμοῦ, σὺ εἶπες.

2 Εὐφραυνῶμαι ἢ καὶ χαρυνῶμαι ἔσθι, ὅτι ὁ ἀδελφός σου ἐστὶ νεκρὸς κυ̅, καὶ ἀνέζητε καὶ ἀπολαλάς κυ̅, ἔδύρεθη.

Κεφ 15. 16.

1 Ἐλέγε ἢ καὶ πρὸς τὰς μαθητάς αὐτῶ, ἀνθρώπος τις κυ̅ πλῆσιον, ὃς εἶχεν οἰκονόμον· καὶ ἐστὶ διεβλήθη αὐτῷ ὡς ἀφροσύνην τὰ ὑπάρχοντα αὐτῶ.

2 Καὶ φανήσας αὐτὸν, εἶπεν αὐτῷ· Τί τῶτο ἀκῶα πρὸς σὺ; ἀπὸδὲ τὸ λόγον τῆ οἰκονομίας σου. ἔ γὰρ διωθήσῃ ἐπὶ οἰκονομεῖν.

3 Εἶπε ἢ ἐν ἑαυτῷ ὁ οἰκονόμος· Τί ποιήσω, ὅτι ὁ κύριός μου ἀφαιρεῖ τὴν οἰκονομίαν ἀπ' ἐμοῦ; σκιάπειν ὅπου ἰχύω, ἐπαίειν ἀχύνομαι,

4 Ἐγὼν ἢ ποιήσω, ἵνα ὅταν με ἀφαιρῶ τὴν οἰκονομίαν, δέξωνταί με εἰς τὰς οἰκίας αὐτῶν.

5 Καὶ προσκαλεσάμενος ἕνα ἕκαστον τῶν ὀφειλῶν τῶ κυρίου ἑαυτῶ, ἔλεγε τῷ πρῶτῷ· Πόσον ὀφείλεις τῷ κυρίῳ μου;

6 Ὁ ἢ εἶπεν· Ἐκάθην βάττας ἐλαίας. Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Δέξαι σου τὸ γράμμα, ἔκαθίστας ταχέως γράψον πωλήσοντα.

7 Ἐπῆτα ἑτέρῳ εἶπε· Σὺ ἢ πόσον ὀφείλεις; Ὁ ἢ εἶπεν· Ἐκάθην κέρτας σίτας. Καὶ λέγει αὐτῷ· Δέξαι σου τὸ γράμμα, ἔ γράψον ὀγδοήκοντα.

8 Καὶ ἐπήνεσεν ὁ κύριος τὴν οἰκονόμον τῆ ἀδικίας, ὅτι φρονίμως ἐποίησεν. ὅτι οἱ υἱοὶ τῶ αἰῶντος.

αἰῶντος.

αἰῶν. ὁ τὸς φρονιμώτεροι ὑπὲρ τὸς ὑμῶν
 ἔφωθες εἰς τὸ γινώσκαι τιμὴν ἑαυτῶν εἰσι.

9 Καὶ γὰρ ὑμῖν λέγω· Ποιήσατε ἑαυτοῖς φι-
 λης ἐκ τῆς μαμωνᾶ καὶ ἀδικίας. ἵνα ὅταν
 ἐκλίπητε, δέξωνται ὑμᾶς εἰς τοὺς αἰωνίους
 σκηνάς.

10 Ὁ πλοῦτος ἐν ἐλαχίστῳ, καὶ ἐν πολλῷ πλοῦτος
 ἐστὶ· καὶ ὁ ἐν ἐλαχίστῳ ἀδικῶν, καὶ ἐν πολλῷ
 ἀδικῶς ἐστίν.

11 Εἰ οὖν ἐν τῷ ἀδικῷ μαμωνᾶ πιστὸν ὅσον
 ἐγνώσθητε, τὸ ἀληθινὸν τίς ὑμῖν πισύσθη;

12 Καὶ εἰ ἐν τῷ ἀλλοτριῷ πιστὸν ὅσον ἐγνώ-
 σθητε, τὸ ὑμέτερον τίς ὑμῖν δώσθη;

13 Οὐδεὶς οἰκέτης δύναται δυοὶ κυρτοῖς δε-
 λούειν. ἢ γὰρ τὸ ἓνα μισήσθη, καὶ τὸ ἕτερον ἀγαπή-
 σθη· ἢ ἐνὸς ἀντιθέσει. Ἐπεὶ οὖν ἡ καρδία
 οὐ δύναται Θεῷ δελούειν καὶ μαμωνᾶ.

14 Ἦκουσον ἡ ταῦτα πάντα καὶ οἱ φαρισαιοὶ,
 φιλάργυροι ὑπάρχοντες· καὶ ἐξεμυκθήθησαν
 αὐτόν.

15 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς ἐστε οἱ διχομή-
 τες ἑαυτοῖς ἐνώπιον τοῦ ἀνθρώπου· ὁ δὲ Θεὸς με-
 νάσθη τὴν καρδίαν ὑμῶν· ὅτι τὸ ἐν ἀνθρώποις
 ὑψηλόν, βδελύγμα ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἐστίν.

16 Ὁ νόμος καὶ οἱ προφῆται ἕως Ἰωάννου
 διὰ τὸ τότε ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ διαγγελλίσει,
 καὶ πᾶς εἰς αὐτὴν βιάσει.

17 Εὐαγγελῆται δὲ ἐστὶ τὸ ἔρανον καὶ τὸ γέλο
 περιελ-

περιλθεῖν, ἢ ἔτι νόμος μίαν κεραίαν ποιεῖν.

8 Πᾶς ὁ δόλοῦν ἢ γυναικὸς αὐτῆς κα-
μεῶν ἐτέρων, μοιχός ἐστι· ἕκαστος ὁ δόλοῦ
ρῶν δὲ ἀνδρὸς γαμῶν, μοιχός ἐστι.

9 Ἀνθρωπὸς δὲ τις ἦν πλάσιος, καὶ ἐνε-
διδύσκετο περὶ θύρας καὶ βύσσον, εὐφραϊνέ-
μενος καὶ ἡμέραν λαμπερῶς.

10 Πταχὸς δὲ τις ἦν ὀνόματι Λάζαρος, ὃς
ἐβίβλητο ὡς τὸ πύλωμα αὐτῆς ἠλωκωμένος.

11 Καὶ ἐπιθυμῶν χρῆσθαι διὰ τὸ ψυχῶν τῶν
πιπτόντων διὰ τὸ τραπεζῆς ἔσεσθαι. ἀλλὰ
ἕοικώς ἐρχόμενος ἀπέληχον τὰ ἔλκη αὐτῆς.

12 Ἐγένετο ἡ ἀπεθανεῖν τὸ πτωχόν, καὶ ἀπενε-
χθῆναι αὐτὸν ὑπὸ τὸ ἀγέλαν εἰς τὸ κόλπον τοῦ
Ἀβραάμ· ἀπέθανε ἡ καὶ ὁ πλάσιος, καὶ ἐβίβη.

13 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς ὀφθαλμοῦς
αὐτῆς, ὑπάρχων ἐν βασιλείᾳ, ὅρα τὸ Ἀ-
βραάμ διὰ μακρόθεν, καὶ Λάζαρον ἐν τοῖς
κώλοις αὐτῆς.

14 Καὶ αὐτὸς φωνήσας εἶπε· Πάτερ Ἀβραάμ
ἐλέησόν με, καὶ πέμψον Λάζαρον, ἵνα βάψῃ
τὸ ἄκρον τοῦ δακτύλου αὐτοῦ ὕδατι, ἕκασ-
ταψύξῃ τὸ γλῶσσάν μου· ὅτι ὀδυῶμαι ἐν
τῇ φλογὶ ταύτῃ.

15 Εἶπε ἡ Ἀβραάμ· Τέκνον, μνήσθητι ὅτι
ἀπέλαδες σὺ τὰ ἀγαθὰ ἅσα ἐν τῇ ζωῇ σου,
καὶ Λάζαρος ὁμοίως τὰ κακὰ· νῦν ἡ ὁδὸς
ὡρακαλεῖται, σὺ ἡ ὀδυῶσαι.

M

26 Καὶ

- 26 Καὶ ἐπὶ πᾶσι τέττοις, μετὰ ξὺ ἡμῶν ἐδμα
 χίσμα μέγα ἐσήρικ), ὅπως οἱ θέλοντες Δια
 βιώσῃ ἐντυῆν ὡς ὑμεῖς, μὴ διώων)
 μηδὲ οἱ ἐκείθεν ὡς ἡμεῖς Διαπιρᾶσιν.
- 27 Εἶπε δὲ· Ἐρωτῶ οὖν σε πάτερ, ἵνα πέμ
 ψῃς αὐτὸν εἰς τὸ οἶκον τῶ πατρὸς μου·
- 28 Ἐχω γὰρ πέντε ἀδελφὰς, ὅπως Διαμαρ
 τύρηται αὐτοῖς, ἵνα μὴ καὶ αὐτοὶ ἐλθῶσιν εἰ
 τὸ τόπον τέτον τῶ βασιλεῦς.
- 29 Λέγει αὐτῷ Ἀδραάμ· Ἐχες (εἰ Μωσῆας
 τὸς ἀποφύλας· ἀκασάτωσαν αὐτῷ.
- 30 Οὗ εἶπεν· Οὐχί, πάτερ Ἀδραάμ· ἀλλ'
 ἐὰν τις ἀπὸ νεκρῶν πορεύῃ ὡς αὐτὸς
 μέλανοῦσεν).
- 31 Εἶπε ἡ αὐτῷ· Εἰ Μωσῆας καὶ τῶ ἀποφύ
 λων ἐκ ἀκασῶσιν, ἔδὲ ἐὰν τις ἐκ νεκρῶν ἀνα
 σῆ, πεισθήσονται).

Κεφ. ιζ'. 17.

- 1 Εἶπε ἡ ὡς τὸς μαθηταῖς· Ἀνένδεκτον ἐ
 μὴ ἐλθεῖν εἰς σκανδαλα· καὶ ἡ δὲ εἰρῆ
 2 Λυσίπελοι αὐτῷ εἰ μὴ λυσιπείθους ὡς
 και) ὡς τὸ πάχλοι αὐτῷ, καὶ ἔρριπται εἰ
 τὸ ἡύλασαν, ἢ εἰς σκανδαλίση ἵνα τὸ μ
 κρῶν τέτοι.
- 3 Προσίχεται ἐαυτοῖς. Ἐὰν ἡ ἀμαρτία εἰς
 ὁ ἀδελφός (εἰς, ἐπιήμησαν αὐτῷ· καὶ ἐὰν μ
 τανοῆση, ἄφες αὐτῷ.
- 4 Καὶ ἐὰν ἐπιβίαις τῶ ἡμέρας ἀμαρτία εἰ

σέ, καὶ ἐπὶ αἰκίς τῆς ἡμέρας ἐπιστρέψῃ ἐπὶ σε, λέ-
γων· Μείλωσθε ἀφ᾽ ἡμῶν αὐτῶν.

5 Καὶ εἶπον οἱ ἀπόστολοι τῷ Κυρίῳ· Πρό-
σθε ἡμῖν πίστιν.

6 Εἶπε ὁ Κύριος· Εἰ εἶχάτε πίστιν ὡς κρο-
κὴν σινάπης, ἐλέγετε αὐτῇ συκαμίνῳ ταῦ-
τη· Ἐκκερῶθήη, καὶ φυτεύθήη ἐν τῇ θα-
λάσσῃ· ἔτι πῶς κεν αὐτὴ ὑμῖν.

7 Τίς ὃ ἐξ ὑμῶν δούλον ἔχων δούτου ἀνθρώπου, ἢ
ποιμαῖνον, ὃς εἰσελθόντι ἐκ τῆς ἀγροῦς ἐρεῖ
δούλῳ· Παρελθὼν ἀνάπεσται;

8 Ἀλλ' ἐχέει ἐρεῖ αὐτῷ· Ἐτοίμασον ἡ δέπνῃσται,
καὶ περιζωσάμενος· Διὰ τὴν ἡμέραν, ἕως φάσγαν
ἔπιω· καὶ μετὰ ταῦτα φάγεσται καὶ πίεσται σὺ;

9 Μὴ χάριν ἔχη τῷ δούλῳ εἰπεῖν ὅτι ἐποίη-
σε τὰς διαταγὰς σου; ἢ δακτύλου.

10 Οὕτως ἔσθε ὑμεῖς, ὅταν ποιήσῃτε πάντα τὰ δια-
ταχθέντα ὑμῖν, λέγετε· Ὅτι δούλοι ἀχρεῖοί ἐ-
σμῶν· ὅτι ὁ ἀφείλομεν ποιῆσαι, πεποιήκαμεν.

11 Καὶ ἐλθέτω ἡμεῖς ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτὸν εἰς
Ἱερουσαλήμ, καὶ αὐτὸς διήρχετο διὰ μέσων
Σαμαρείας καὶ Γαλιλαίας.

12 Καὶ ἐστραχημένους αὐτῶν εἰς ἕνα κώμῳ,
ἀπώπτησαν αὐτῷ δέκα λεπτοὶ ἄνδρες, οἱ
ἔσησαν πόρρωθεν.

13 Καὶ αὐτοὶ ἦσαν φωνίῳ, λέγοντες· Ἰησοῦς
ἐπιστάται, ἐλέησον ἡμᾶς.

14 Καὶ ἰδὼν εἶπεν αὐτοῖς· Πορεύθεντες ἐπι-
M 2

ἀκούετε

δείξατε ἑαυτοὺς τοῖς ἱερεῦσι. Καὶ ἐλήθευε ἐν ταῖς ὑπάρχειν αὐτῶν, ἐκαταλείθησαν.

15 Εἰς ἣ ἐξ αὐτῶν, ἰδὼν ὅτι ἰάθη, ὑπέσπευσε μὲν Φαρισαῖος μεγάλης δοξάζων τὸ Θεόν.

16 Καὶ ἐπισθενεπὶ πρόσωπον παρὰ τὰς πόδας αὐτοῦ, εὐχαριστῶν αὐτῷ. Ἐ αὐτοῦ ἦν Σαμαρείτης.

17 Ἀποκριθεὶς ἡ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Οὐχὶ οἱ δέησε ἐκαταλείθησαν; οἱ ἡ ἐννεα πῶς;

18 Οὐχ εὐρέθησαν ὑποσπεύσαστες δέναυ δοξάζων τῷ Θεῷ, εἰ μὴ ὁ ἀλλοθροῦς ἔτθ.

19 Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἀναστὰς πορεύε· ἡ πίστις ἡ σέκωκέ σε.

20 Ἐπρωληθεὶς ἡ ὑπὸ τῷ Φαρισαίων πότε ἔρχεται ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ, ἀπεκρίθη αὐτοῖς, καὶ εἶπεν· Οὐκ ἔρχεται ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ μὲν ὡς φησὶν ἡ κηρῶν.

21 Οὐδὲ ἔρχεται ἡ ἰδοὺ ὡς δε, ἡ, ἰδοὺ ἐκεῖ· ἰδοὺ ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ ἐν τῶν ὑμῶν ἐστιν.

22 Εἶπε ἡ πρὸς τὸν μαθητῶν· Ἐλθούσιντα ἡμέραν, ὅτε ἐπιθυμήσειε μίαν τῶν ἡμερῶν τοῦ Θεοῦ ἡ ἀνθρώπων ἰδεῖν καὶ σὺν ὁψοθε.

23 Καὶ ἔρχεται ὑμῶν· ἰδοὺ ὡς δε, ἡ, ἰδοὺ ἐκεῖ μὴ ἀπίληθε, μηδὲ διώξηθε.

24 Ὡς ὡς ἡ ἀσραπή ἡ ἀσράπισσε ἐν τῷ ἔρανον, εἰς τὸ ἔρανον λάμπη· ἔτι ἔσται ἡ ὁ Θεοῦ ἀνθρώπων ἐν τῇ ἡμέρᾳ αὐτῆ.

25 Πρῶτοι ἡ δεῖ αὐτὸν πολλὰ σταθεῖν, καὶ ἀποδοκιμασοῦναι ἀπὸ τῶν ἡγεῖας ταύτης.

- 26 Καὶ καθὼς ἐγγύεθ ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς Νῶε,
 ἕως ἔσται ἔν ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.
- 27 Ἦδιον, ἐπινον, ἐράμενον, ἐξεραμίζοντο, ἀγχο-
 ῖς ἡμέρας εἰσηλθε Νῶε εἰς τὸ κιβωτόν· καὶ ἦλ-
 θεν ὁ κατακλυσμὸς, καὶ ἀπώλεσεν ἅπαντας.
- 28 Ὁμοίως καὶ ὡς ἐγγύεθ ἐν ταῖς ἡμέραις
 Λώτ· Ἦδιον, ἐπινον, ἐράμενον, ἐπώλεον, ἐφύ-
 τόνον, ἀγχοδόμενον·
- 29 Ἡ δὲ ἡμέρα ἐξῆλθε Λώτ ἀπὸ Σοδόμων,
 ἔορεξε πῦρ καὶ θείον ἀπὸ οὐρανοῦ, καὶ ἀπώλεσεν
 ἅπαντας·
- 30 Καθὼς ταῦτα ἔσται ἡ ἡμέρα ὁ υἱὸς τοῦ ἀν-
 θρώπου ἀποκαλύψει·
- 31 Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὅς ἔσται ἐπὶ τῆς δώμα-
 τος, καὶ τὰ σκόλη αὐτῆς ἐν τῇ οἰκίᾳ, μὴ κα-
 ταβάτω ἄρα αὐτῆ· καὶ ὁ ἐν τῷ ἀγροῦ, ὁμοίως
 μὴ ἐπιστρέψάτω εἰς τὰ ὀπίσω.
- 32 Μνημονεύετε τῆς γυναικὸς Λώτ.
- 33 Ὅς ἐὰν ζητήσῃ τὴν ψυχὴν αὐτῆς σώσασθαι,
 ἀπολέσθαι αὐτή· καὶ ὅς ἐὰν ἀπολέσῃ αὐτήν,
 ζωογονήσθαι αὐτήν.
- 34 Λέγω ὑμῖν, ταύτη τῇ νυκτὶ ἔσονται δύο ἐπὶ
 κλίνης μιᾶς· ὁ εἷς ὠραληφθήσεται, καὶ ὁ
 ἕτερος ἀφεθήσεται·
- 35 Δύο ἔσονται ἀλήθευσται ἐπὶ τὸ αὐτό· ἡ μία
 ὠραληφθήσεται, καὶ ἡ ἕτερα ἀφεθήσεται·
- 36 Δύο ἔσονται ἐν τῷ ἀγρῷ· ὁ εἷς ὠραλη-
 φθήσεται, καὶ ὁ ἕτερος ἀφεθήσεται·

37 Καὶ ἀποκρίντες λέγουσιν αὐτῷ· Πῶς Κύριε; Ὁ ὃ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅπως τὸ σῶμα, ἐκεῖ συναχθήσονται οἱ ἄετοί.

Κεφ. ιη'. 18.

1 Ἐλεγε ὃ ἐπὶ ῥαββόλλω αὐτοῖς πρὸς τὸ δεῖν πᾶντοτε πρὸς δόξα, καὶ μὴ ἐκκηκεῖν·

2 Λέγων· Κερίης ἡς ἡ ἐν ἡνι πόλι τῷ Θεὸν μὴ φοβῶμαι, καὶ ἄνθρωπον μὴ ἐντρέπομαι·

3 Χήρα δὲ ἡς ἡ ἐν τῇ πόλι ἐκείνη· καὶ ἤρχετο πρὸς αὐτὸν, λέγουσα· Ἐκδικησόν με ἀπὸ τῷ ἀνδικῆς μου.

4 Καὶ ὅτε ἠτέλησεν ἐπὶ χρόνον· μετὰ ὃ ταῦτα εἶπεν ἐν ἑαυτῷ· Εἰ καὶ τῷ Θεὸν ἐ φοβῶμαι, Ἐ ἄνθρωπον ὅτε ἐντρέπομαι·

5 Διὰ γε τὸ περιέχην μοι κήπον τῷ χήρα τῷ τῷ, ἐκδικήσω αὐτῷ· ἵνα μὴ εἰς τίλλω ἐρχομένη ἐπωπιάζη με.

6 Εἶπε ὃ ὁ Κύριος· Ἀκέραιε ἡ ὁ κερτῆς τῷ ἀδικίας λέγει·

7 Ὁ ὃ Θεὸς ἐ μὴ ποιήσῃ τῷ ἐκδικησῶν τῷ ἐκκλητῶν αὐτῷ τῷ βοῶντων πρὸς αὐτὸν ἡμέρας καὶ νυκτῶς, Ἐ μεγαροθυμῶν ἐπὶ αὐτοῖς;

8 Λέγω ὑμῖν ὅτι ποιήσῃ τῷ ἐκδικησῶν αὐτῶν ἐν τῷ τῷ. πολλῶν ὁ ἡὸς τῷ ἀνθρώπων ἐλθῶν εἶρα εὐρήσῃ τῷ πῖσιν ἐπὶ τῷ γῆς;

9 Εἶπε ὃ καὶ πρὸς ἡνας τῶς πεποιθότας ἐφ' ἑαυτοῖς ὅτι εἰσὶ δικαιοί, Ἐ ἐξουθενῶν τῶς λαοῖς, τῷ ῥαββόλλω ταύτῳ·

10 Ἀνθρω-

- 10 Ἄνθρωποι δύο ἀνέβησαν εἰς Θίερον πρεσβύ-
 ξαζ· ὁ εἷς Φαρισαῖος, ἔ ὁ ἕτερος τελώνης·
- 11 Ὁ Φαρισαῖος σταθεὶς πρὸς ἑαυτὸν ταῦτα
 παρησύχετο· Ὁ Θεὸς δὲ χαριστῶ σοι, ὅτι σὺ
 εἰμι ὡσπερ οἱ λοιποὶ τῶ ἀνθρώπων, ἀρπαγες,
 ἀδελφι, μοιχοί, ἢ κ' ὡς ἔτ' ὁ τελώνης.
- 12 Νηστύω δὲς ἔ σταθεώατε, ἀποδίδκατῶ
 πάντα ὅσα κτῶμα.
- 13 Καὶ ὁ τελώνης μακρόθεν ἐστὺς σὺκ ἤθελεν
 εἶδε τῆς ὀφθαλμῆς εἰς τὸ ἔριων ἐπ' ἄρα·
 ἀλλ' ἔτυπλεν εἰς τὸ σῆθ' αὐτῆ, λέγων· Ὁ
 Θεὸς ἐλάσθη μοι τῶ ἀμαρτωλῶ.
- 14 Λέγω ὑμῖν, κατέβη ἔτος δεδίκασμῶμος εἰς τὸ
 οἶκον αὐτῆ, ἢ ἐκεῖνος· ὅτι πᾶς ὁ ὑψῶν ἑαυτὸν,
 ταπεινώθησε· ὁ δὲ ταπεινῶν ἑαυτῶ, ὑψώθησε·
- 15 Προσέφερον ἡ αὐτῶ ἔ τῶ βρέφη, ἵνα αὐτῶ ἀ-
 πλη· ἰδύτες ἡ οἱ μαθηταὶ ἐπέκμησαν αὐτῶς.
- 16 Ὁ ἡσῶς προσκαλεσάμενος αὐτῶ, εἶπεν· Ἄ-
 φείε τῶ παρδία ἔρχεσθ' πρὸς με, ἔ μὴ κωλύετε
 αὐτῶ· τῶ γὰρ τοῦτων ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶ Θεῶ.
- 17 Ἀμῶ λέγω ὑμῖν, ὅς ἐάν μὴ δέξηται τὸ
 βασιλείαν τῶ Θεῶ ὡς παρδῶν, ἔ μὴ εἰσέλθῃ
 εἰς αὐτῶ.
- 18 Καὶ ἐπηρώτησέ τις αὐτὸν ἄρχων, λέγων·
 Διδάσκαι ἀγαθῆ, τί ποιήσας ζωτῶ αἰώ-
 νιον κληρονομήσω;
- 19 Εἶπε ἡ αὐτῶ ὁ ἡσῶς· Τί με λέγεις ἀγα-
 θόν; εἰδεις ἀγαθῆ, εἰ μὴ εἷς, ὁ Θεός.

- 20 Τὰς εἰθλάς οἶδας· Μὴ μοιχούσης· Μὴ φοιδύσης· Μὴ κλέψης· Μὴ ψεύδομαρτυρήσης· Τίμα τὸ πατέρα σου ἔτι μητέρα σου.
- 21 Ὁ ἰησοῦς εἶπε· Ταῦτα πάντα ἐφυλαξάμεν ἐκ νεότητός μας.
- 22 Ἀκούσας ἡ ταῦτα ὁ ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἐπιέν σοι λείπῃ· πάντα ὅσα ἔχης πώλησον, καὶ δάξασθε πτωχοὺς, ἔξες ἡσυχαστὸν ἐν ἑραῶν καὶ δεῦρο, ἀγγελῆσθε μοι.
- 23 Ὁ ἰησοῦς, ἀκούσας ταῦτα, ἀπέλυτο ἐξελθὼν ἰεὺς γὰρ πλάσσει σφόδρα.
- 24 Ἰδὼν ἡ αὐτὸν ὁ ἰησοῦς ἀπέλυτον ἡρώδηρον, εἶπε· Πῶς δυσκόλως οἱ τὰ χρήματα ἔχοντες εἰσελεύσονται εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.
- 25 Εὐκοπώτερον γὰρ ἐστὶ κήμηλον δάξαι τετραμαλῆς ῥαφίδος εἰσελθεῖν, ἢ πλάσιον εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν.
- 26 Εἶπον ἡ οἱ ἀκούσαντες· Καὶ τίς δύναται σωθῆναι;
- 27 Ὁ ἰησοῦς εἶπε· Τὰ ἀδύνατα ἔστιν ἀνθρώποις, δύνατα ἔστιν ἡ τοῦ Θεοῦ.
- 28 Εἶπε ἡ ὁ Πέτρος· Ἰδὲ, ἡμεῖς ἀφήκαμεν πάντα, καὶ ἠκολούθησάμεν σοι.
- 29 Ὁ ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ὅτις ἐστὶν ὅς ἀφήκεν οἰκίαν, ἡ γονεῖς, ἡ ἀδελφούς, ἡ γυναικὰ, ἡ τέκνα, ἐνεκεν τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ;
- 30 Ὅς ἐμὴ ἀπολάβῃ πολλὰ πλοῦσιονα ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς ζωῆς, ἔτι ἐν ταῖς αἰῶνι ταῖς ἐρχομένης ζῆναι αἰάνιον.

31 Παραλαβὼν ἡ τὸς δώδεκα, εἶπε πρὸς αὐτούς· Ἰδοὺ, ἀναβαίνομεν εἰς Ἱεροσόλυμα, ἵνα τελεσθῆσθε πάντα τὰ γεγραμμένα διὰ τῶν προφητῶν, περὶ ἡμῶν τῶν ἀνθρώπων.

32 Παραδοθήσεσθε γὰρ τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἐμπαυχθήσεται, ἵνα ὑβρισθῆσθε, καὶ ἐμπίλυσθῆσθε·

33 καὶ μαστιγώσασθαι τις ἀποκτενεῖσιν αὐτόν· καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ ἀναστήσεσθε.

34 καὶ αὐτοὶ ἔδδον τῶν σιμῶν· καὶ ἰὼν τὸ ῥῆμα τῆτο κεκρυμμένον ἀπὸ αὐτῶν, καὶ ὅσα ἐξίνωσκον τὰ λεγόμενα.

35 Ἐγγύθησθε ἡ ἐν τῷ ἐξίξιν αὐτόν εἰς Ἱεριχὼν, τυφλὸς τις ἐκάθητο πρὸς τὸ ὄδον πρὸς Ἱεριχὼν.

36 Ἀκούσας ἡ ὄχλος διὰ πορεύομενος, ἐπαιθάνετο πῆ εἴη τῆτο.

37 Ἀπήγγειλαν ἡ αὐτῷ, ὅτι Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖος παρερχέσθαι.

38 καὶ ἐβόησεν, λέγων· Ἰησοῦς υἱὸς Δαβὶδ, ἐλέησόν με.

39 καὶ οἱ προάρονοι ἐπελίμων αὐτῷ ἵνα σιωπήσῃ· αὐτὸς ἡ πολλὰ μῆλλον ἔκραζεν· Ὑιὸς Δαβὶδ, ἐλέησόν με.

40 Στάθεις ἡ ὁ Ἰησοῦς ἐκέλευσεν αὐτὸν ἀχθῆναι πρὸς αὐτόν· ἐξίστασθαι ἡ αὐτὸς ἐπηρώτησεν αὐτόν·

41 λέγων· τί σοι θέλεις ποιῆσαι; Ὁ ἡ εἶπε· Κύριε, ἵνα ἀναβλέψω.

42 καὶ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· ἀναβλέψον· ἡ πίστις σου σέσωκέ σε.

43 Καὶ ὡραζομένη αὐτοὺς, καὶ ἠκολούθησεν αὐτοῖς δοξάζων τὸ Θεόν· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἰδὼν, ἔδωκεν αὐτοῖς τὴν Θεοῦ.

Κεφ. ιθ'. 19.

1 Καὶ εἰσελθὼν διήρχετο τὸ Γεριχῶν.

2 Καὶ ἰδὼν, ἀνὴρ ὀνόματι καλεῖσθαι Ζακχαῖον· καὶ αὐτὸς ἰὼν δούλου αὐτοῦ, καὶ ἔστ' ἰὼν πολλοῖσι.

3 Καὶ ἐζήτησεν ἰδεῖν τὸ Ἰησοῦν ὡς ἐστ'· ἔκ' ἐκ ἡδύνατο δὲ τὸ ὄχλος, ὅτι τῆ ἡλικία μικρὸς ἰὼν.

4 Καὶ προσδραμὼν ἐμπροσθεν, ἀνέβη ἐπὶ συκωμωραΐαν, ἵνα ἴδῃ αὐτὸν· ὅτι δι' ἐκείνης ἡμέρας διήρχετο.

5 Καὶ ὡς ἦλθεν ἐπὶ τὸ τόπον, ἀναβλέψας ὁ Ἰησοῦς εἶδεν αὐτὸν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτόν· Ζακχαῖε, ἀπόστρας κατέβηθι· σήμερον γὰρ ἐν τῷ οἴκῳ σου δεῖ με μένειν.

6 Καὶ ἀπόστρας κατέβη, καὶ ὑπεδέξατο αὐτὸν χερῶν.

7 Καὶ ἰδόντες ἅπαντες διετόχουζον, λέγοντες· Οὗτος ὡραζομένη ἀμαρτωλοῦ ἀνδρὶ εἰσῆλθε καὶ καταλύσασθαι.

8 Στάθεις ἢ Ζακχαῖον εἶπε πρὸς τὸ Κορίθειον ἰδὼν, τὸ ἡμίση τὸ ὑπαρχόντων με, Κύριε, διδώμι τοῖς πτωχοῖς· καὶ εἰ πνός ἔεισεν κεφάληται, δὲ διδώμι τετραπλῆν.

9 Εἶπε ἢ πρὸς αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι σήμερον σωτηρία τῷ οἴκῳ τούτῳ ἐγένετο, καὶ ὅτι καὶ αὐτὸς υἱὸς Ἀβραάμ ἐστιν.

10 Ἦλθε

- ο Ηλθε γδ ο υιός τῆ ἀνθρώπου ζητῆσαι καὶ σῶσαι τὸ ἀπολωλός.
- 1 Ἀκούοντων ἡ αὐτῶν ζῴτων, προθεῖς εἶπε τῷ στρατολάτῃ, Διὰ τὸ ἐργός αὐτὸν εἶναι ἱερασταλήμ, καὶ δοκεῖν αὐτῷ ὅτι τῷ στρατηγῷ μέλει ἢ βασιλεία τῆ Θεοῦ ἀναφαίνεσθαι.
- 2 Εἶπεν οὖν· Ἀνθρώπος ἕως οὐρανοῦ ἐπορεύθη εἰς χώραν μακρὰν, λαθεῖν ἐαυτῆ βασιλείαν, καὶ ὑποσέψασθαι.
- 3 Καλέσας ἡ δέκα δούλους ἐαυτῷ, ἔδωκεν αὐτοῖς δέκα μνᾶς, καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Πραγματεύσατε ἕως ἔρχομαι.
- 4 Οἱ ἡ παλίται αὐτῷ ἐμίσησαν αὐτὸν, καὶ ἀπέστησαν πρὸς αὐτὸν ὀπίσω αὐτῷ, λέγοντες· Οὐ θέλομεν τῷτον βασιλεύσαι ἐφ' ἡμᾶς.
- 5 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἔπαυεσθαι αὐτὸν λαβόντα τὴν βασιλείαν, καὶ εἶπε φωνηθῆναι αὐτῷ τὰς δέκα τῶν δούλων, οἷς ἔδωκε τὸ ἀργύριον ἵνα γνῶντες ἡ διεπραγματεύσασθαι.
- 6 Παρεγένετο ἡ ὁ πρῶτος, λέγων· Κύριε, ἡ μνᾶ ἡ ἐσφραγίσασθαι δέκα μνᾶς.
- 7 Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Εὖ ἄρα τὸ δόξα ὅτι ἐν ἐλαχίστῳ πιστὸς ἐγένεθαι, ἵασι ἐξουσίαν ἔχων ἐπίγειον δέκα πόλεων.
- 8 Καὶ ἦλθεν ὁ δεύτερος, λέγων· Κύριε, ἡ μνᾶ ἡ ἐποίησε πέντε μνᾶς.
- 9 Εἶπε ἡ καὶ τρίτος· Καὶ σὺ γίγναι ἐπάνω πέντε πόλεων.

20 Καὶ

20 Καὶ ἔπειρα ἦλθε, λέγων· Κύριε, ἰδοὺ ἡ μὲν ἄσπετος, ἡ δὲ εἶχον δ' ἀποκρίματι ἐν σκεδαρίῳ.

21 Ἐφοβήμην (ἀρσε, ὅτι ἄνθρωπος αὐστηρὸς εἶ· αἴρας ὁ ἀκρόθικας, καὶ θερίζεις ὁ σὺν ἑσπερας.

22 Λέγει ἡ αὐτῷ· Ἐκ δ' ἰσχυρῶς σε κρινῶ σε, πονηρὸν δὲ λαὸν ἡδὲς ὅτι ἐγὼ ἄνθρωπος αὐστηρὸς εἰμι, αἴρων ὁ σὺν ἔθικα, καὶ θερίζων ὁ σὺν ἑσπερα.

23 Καὶ διὰ τὸ σὺν ἑδωκας τὸ δρόμον μου ἐπὶ τῷ τράπεζαν, καὶ ἐγὼ ἐλθὼν σὺν τῷ καιῶν ἔπραξα αὐτό;

24 Καὶ τοῖς παρεστῶσιν εἶπεν· Ἄραγε ἀπ' αὐτῶν ἔμνην, καὶ οὐτε τῶν δέκα μναῖς ἔχοντε.

25 Καὶ εἶπον αὐτῷ· Κύριε, ἔχοντες δέκα μναῖς.

26 Λέγει ἡ τοῖς ὑμῖν, ὅτι παντὶ τῶν ἔχοντε δόξα· ἀπὸ οὗ δὲ ἔμνην ἔχοντες, καὶ ὁ ἔχων, δόξα ἔσται ἀπ' αὐτοῦ.

27 Πλὴν τὰς ἔχοντες με ἐκείνας, τὰς μὴ θελήσαντας με βασιλεῦσαι ἐπ' αὐτὰς, ἀγαθά εἰδότες, καὶ κατασφάζατε ἑμῶν ἑσπερας.

28 Καὶ εἰπὼν ταῦτα, ἐπορεύετο ἑμῶν ἑσπερας· ἀναβαίνων εἰς Ἱεροσόλυμα.

29 Καὶ ἐρχόμενος ἤγγισεν εἰς Βηθφαγή ἐν Βηθανίαν, ὡς τὸ ὄρα τὸ καλὸν Ελαιῶν, ἀπέστειλε δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ,

30 εἰπὼν· Ὑπάγετε εἰς τὸ καλὸν Ελαιῶν ἐν ἡ ἑσπερας ἐσπερας ἑσπερας πῶλον δεδεμένον, ἐφ' ὃν ἐδὲς πῶλον ἀνθρώπων ἐκείσε· λύσαντες αὐτὸν ἀγαθή.

31 Καὶ

- 31 Καὶ ἐαυτοῖς ὑμῶν ἐρωτᾷ· Διὰ τί λύετε;
 Οὕτως ἐρεῖτε αὐτῷ· Ὅτι ὁ Κύριος αὐτοῦ
 χρεῖαν ἔχει.
- 32 Ἀπελθόντες ἢ οἱ ἀπεσταλμένοι, οὕτως κα-
 θὼς εἶπεν αὐτοῖς.
- 33 Λυόντων ἢ αὐτῶν τὸ πῶλον, εἶπον οἱ κύριοι
 αὐτῶν πρὸς αὐτούς· Τί λύετε τὸν πῶλον;
- 34 Οἱ ἢ εἶπον· Ὁ Κύριος αὐτῶν χρεῖαν ἔχει.
- 35 Καὶ ἤγαγον αὐτὸν πρὸς τὸν Ἰησοῦν. Καὶ
 ἐπιρρίψαντες ἑαυτῶν τὰ ἱμάτια ἐπὶ τὸ πῶ-
 λον, ἐπεβίβασαν τὸν Ἰησοῦν.
- 36 Πορευομένης δὲ αὐτῶν, ὑπεερώνησαν τὰ
 ἱμάτια αὐτῶν ἐν τῇ ὁδῷ.
- 37 Ἐΐζιζοντες ἢ αὐτῶν ἤδη πρὸς τὴν καβαβάσθ
 ἔδρασαν τὸ Ἐλαιῶν, ἠρξάμενοι ἄπαν τὸ πλῆθος
 τῶν μαθητῶν χαίροντες αἰνεῖν τὸ Θεὸν φωνῇ
 μεγάλῃ πρὸς πιασῶν ὧν εἶδον δυνάμεων,
- 38 Λέγοντες· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος βα-
 σιλεύς ἐν ὀνόματι Κυρίου· εἰρήνη ἐν ἔθρῳ,
 καὶ δόξα ἐν ὑψίστοις.
- 39 Καὶ τινες τῶν φαρισαίων ἀπὸ τῆς ὄχλης
 εἶπον πρὸς αὐτόν· Διδάσκαλε, ἐπιτίμησον
 τοῖς μαθηταῖς σου.
- 40 Καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Λέγω ὑμῖν ὅτι
 ἐὰν ἔτοιμιώσῃτε, οἱ λίθοι κεκραῖξον).
- 41 Καὶ ὡς ἤχησεν, ἰδὼν τὴν πόλιν, ἔκλαι-
 σεν ἐπ' αὐτῇ,
- 42 Λέγων· Ὅτι εἰ ἔγνωσ ἔσθ, καὶ γε ἐν τῇ
 ἡμέρᾳ

- ἡμέρα σ'ε ταύτη, τὰ πρὸς ἐιρμύλυ σ'ε· νυκ
 θ'ε ἐκρύβη ἀπὸ ὀφθαλμῶν σ'ε·
- 43 Ὅπ ἤξουσιν ἡμέραι ἐπί σε, ἐ πειβαλῶ-
 σιν οἱ ἐχθροί σ'ε χάρακί σοι, κ' ὀφθαλμοκλώ-
 (ρασί σε, καὶ πωίξασί σε πάλ' ἔτιν·
- 44 Καὶ ἰδαφιδάσι σε, κ' τὰ τέκνα σ'ε ἐν σοί·
 καὶ σ'ε ἀφίσκουν ἐν σοί λίθιν ἐπὶ λίθω· ἀνθ'
 ἂν σ'ε ἔγνωσ τ' καμρὸν τ' ἐπισκοπῆς σ'ε·
45. Καὶ εἰσελθὼν εἰς τὸ ἱερὸν, ἤρξατο ἐμβαλέειν
 τὰς πωλοῦντας ἐν αὐτῷ κ' ἀγροαζοῦσας,
- 46 Λέγων αὐτοῖς· Γέρε κ'· Ὁ οἶκός μου,
 οἶκος πρὸς δουλκῆς ἐστίν· ὑμεῖς ἃ αὐτὸν ἐποιή-
 σατε ἀγῆλαμοι ληστῶν.
- 47 Καὶ ἰωὶ διδάσκων τὸ κατ' ἡμέραν ἐν τῷ
 ἱερῷ, οἱ ἃ δ'ρχιερεῖς κ' οἱ γραμματεῖς ἐζήτην
 αὐτὸν ἀπολέσαι, ἔ οἱ πρὸ τοῦ ἔ λαοῦ·
48. Καὶ ἔχ' ὄρακοι τὸ τί ποιήσωσιν· ὁ λαὸς
 γ' ἀπ' αὐτοῦ ἐξικρέμαθ' αὐτοῦ ἀκῶν.

Κεφ. κ'. 20.

- 1 **Κ**αὶ ἐχ' ἴστο ἐν μιῷ τ' ἡμερῶν ἐκείνων, δι-
 δάσκων ἔ αὐτῷ τ' λαοὶ ἐν τῷ ἱερῷ, κ' ἃ
 διαφιλιζοῦσας, ἐπίσησαν οἱ δ'ρχιερεῖς κ' οἱ
 γραμματεῖς σὺν τοῖς πρεσβυτέροις,
- 2 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, λέγοντις· Εἶπε
 ἡμῖν ἐν ποία ἐξουσία ταῦτα ποιεῖς, ἢ τίς ἐστίν
 ὁ ὄν σοι τὴν ἐξουσίαν ταύτην;
- 3 Ἀπακριθῆς ἃ εἶπε πρὸς αὐτῆς· Ἐρωτήσω
 ὑμῶς καὶ γ' ἓνα λόγον· καὶ εἶπατέ μοι·

4 Τὸ

4 Τὸ βάπτισμα Ἰωάννη ἐξ ὕδατος ἢ ἐξ ἀνθρώπων;

5 Οἱ ἃ σωιολογίῳ πρὸς ἑαυτοὺς, λέγοντες· Ὅτι ἐὰν εἴπωμεν· Ἐξ ὕδατος ἐρεῖ· Διὰ τί οὐδὲν ἐπέστυπατε αὐτῷ;

6 Ἐὰν δὲ εἴπωμεν· Ἐξ ἀνθρώπων, πᾶς ὁ λαὸς κενὸν ἀποκρίσθη ἡμῶν· πεπεσμένος γάρ ἐστιν Ἰωάννην περὶ τὴν εἶνα.

7 Καὶ ἀπεκρίθησαν μὴ εἰδέναι πόθεν.

8 Καὶ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποίω.

9 Ἡρξάθη ἃ πρὸς τὸ λαὸν λέγειν τὸ ὕδατος βαπτισμῶν ταύτων· Ἀνθρώπος ἕως ἐφύττουσεν ἀμπελῶνα, καὶ ἐξέδοθε αὐτὸν γεωργαῖς· καὶ ἀπεδήμησε χρόνος ἰκανός.

10 Καὶ ἐν καιρῷ ἀπέστρεψε πρὸς τοὺς γεωργούς δ᾽ ἄλλον, ἵνα ἀπὸ τοῦ καρποῦ τοῦ ἀμπελῶνος δώσιν αὐτῷ, οἱ δὲ γεωργοὶ δέεισαν αὐτὸν, ἐξ ἀπέστρεψαν κενόν.

11 Καὶ πρὸς ἄλλο πέμψαμ ἕτερον δ᾽ ἄλλον· οἱ δὲ καὶ κείνον δέεισαν καὶ ἀπμάρτυρες ἐξ ἀπέστρεψαν κενόν.

12 Καὶ πρὸς ἄλλο πέμψαμ τρίτον· οἱ ἃ καὶ τῆτον τραυματίστας ἐξέβαλον.

13 Εἶπε δὲ ὁ κύριος τοῦ ἀμπελῶνος· Τί ποιήσω; πέμψω τὸ ἕν μου τὸ ἀγαπητόν· ἴσως τῆτον ἰδόντες ἐντραπήσονται.

14 Ἰδόντες ἃ αὐτὸν οἱ γεωργοὶ, διελογίζοντο πρὸς

πρὸς ἑαυτὰς, λέγοντες· Οὗτός ἐστιν ὁ κληρο-
νόμος· δεῦτε, ἀπακλείνωμεν αὐτὸν, ἵνα ἡμεῖς
ῥῆσθῃ ἡ κληρονομία.

15 Καὶ ἐμβαλόντες αὐτὸν ἔξω ἔ ἀμπελῶ-
ν, ἀπέκτεναν. Τί οὖν ποιήσῃ αὐτοῖς ὁ κύ-
ριος ἔ ἀμπελῶν;

16 Ἐλθῦτε ἢ ἀπολίσει τὰς μαργαρυδάς τε-
τακτες, ἢ δώσει τὰ ἀμπελῶνα ἄλλοις. Ἀκούου-
τες ἢ εἶπον· Μὴ ῥῆσοις.

17 Οἱ ἔμβλεψας αὐτοῖς, εἶπε· Τί ἐστὶ τὸ
μαραμμένον τῶν λίθων ὃν ἀπέδοκίμασαν οἱ
οἰκοδομοὺς, ἔτος ἐβλήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας;

18 Πᾶς ὁ πιστὸς ἐπ' ἐκείνον τὸν λίθον, σωθήσεται·
ἄλλοις ἔφ' ὃν οὐκ αὐτὸς ἐπίσθη, λικμήσει αὐτὸν.

19 Καὶ ἐζήτησαν οἱ δούλῳι οἱ γραμμα-
τεῖς ἐπιβαλεῖν ἐπ' αὐτὸν τὰς χεῖρας ἐν αὐτῇ
τῇ ὥρᾳ ἔ ἐφοδῆθησαν τὸ λαόν· ἔτασαν ἦ ὅτι
πρὸς αὐτὰς τὸ ὄραβολὸν ταύτην εἶπε.

20 Καὶ ὄραβησαν αὐτοὺς ἀπέστειλαν ἔκαστε-
τας, ἔποκρομῶνας ἑαυτὰς δικασίνας εἶναι· ἵνα
ἐπιλάβωσι αὐτὸν λόγῳ, εἰς τὸ ὄραδέναι
αὐτὸν τῇ δούρῃ ἢ τῇ ἐξουσία ἔ ἡγεμῶν.

21 Καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν, λέγοντες· Δι-
δάσκεις, οἰδαμεν ὅτι ὀρθῶς λέγεις καὶ δι-
δάσκεις, ἢ ἔ λαμβάνεις πρὸς ὅποιον, ἀλλ' ἐπ'
ἀληθείας τί ὁδοὶ ἔ Θεὸς διδάσκεις.

22 Ἐξέσει ἡμῖν Καίσαρι φόροι δέναι, ἢ ἔ;

23 Κατανοήσας ἢ αὐτῶν τὸ πανουργίαν, εἶπε
πρὸς αὐτὰς· Τί με πρῶξίτε; 24 Ἐπι-

- 24 Ἐπιδείξατέ μοι δηνάριον· ἵνα ἴδω τί ἐστιν ἐπιγραφή· Ἀποκριθέντες ἡ εἶπον· Καίσαρος.
- 25 Ὁ ἡ εἶπεν αὐτοῖς· Ἀπόδοτε τοίνυν τὰ Καίσαρος· Καίσαρι, καὶ τὰ Θεοῦ τῷ Θεῷ.
- 26 Καὶ οὕτως ἔλαβον ἐπιλαβέσθαι αὐτῶν ῥήματα· ἐναντίον τοῦ λαοῦ· καὶ ἡμιμέσαντες ἐπὶ τῇ ἀποκρισὶ αὐτῶν, ἐσίγησαν.
- 27 Προσεληθόντες δὲ ἄλλοι οὐκ ἠδυνάστευον (οἱ ἀντιλέγοντες ἀνάστασιν μὴ εἶναι) ἐπηρώτησαν αὐτῶν,
- 28 λέγοντες· Διδάσκαλε, Μωσῆς ἐγραψεν ἡμῖν· Ἐάν τις ἀδελφὸς ἀποθανῆ ἔχων γυναῖκα, καὶ ἕτερον ἄτεκνον ἀποθανῆ, ἵνα λάβῃ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα, καὶ ἐξαναστήσῃ σπέρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.
- 29 Ἐπιταύτω ἀδελφοὶ ἦσαν· καὶ ὁ πρεσβύτερος λαβὼν γυναῖκα, ἀπέθανεν ἄτεκνον.
- 30 Καὶ ἔλαβεν ὁ δεύτερος τὴν γυναῖκα, καὶ ἕτερον ἀπέθανεν ἄτεκνον.
- 31 Καὶ ὁ τρίτος ἔλαβεν αὐτήν· ὡσαύτως ἡ εἰς οἱ ἐπὶ τῶν τῶν καὶ ἐλίπον τέκνα, καὶ ἀπέθανον.
- 2 Ἰσραὴλ ἡ πάντων ἀπέθανεν καὶ ἡ γυνή.
- 3 Ἐν τῇ οὐκ ἀναστάσει, τίνων αὐτῶν γίνεσθαι γυνή; οἱ γὰρ ἐπὶ τῶν ἔχον αὐτῶν γυναῖκα.
- 4 Καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οἱ υἱοὶ τοῦ Θεοῦ αἰῶν τῶν τέτταρα γαμοῦσι καὶ ἐκ[καμείσκον].
- 5 Οἱ δὲ κατὰ ξιωθέντες τοῦ αἰῶνος ἐκείνης τυχεῖν καὶ τῆς ἀναστάσεως τῶν ἐκ νεκρῶν, ἕτεροι γαμοῦσι, ἕτεροι ἐκκαμείσκον.

36 Οὕτως

- 36 Ούτε γὰρ ἀποθανεῖν ἐπιδύναμις Ἰσαάκ ἔλαβεν
εἰπὶ ἑστέ υἱοὶ εἰσι θεοῦ, τὸ ἀναστῆναι υἱοὶ ὄντες.
- 37 Ὅτι ἡ εἰρήνη οἰνεκρῶν, ἔκ Μωσῆς ἐκλήνυσεν
ἐπὶ τὸ βῆμα, ὡς λέγει Κύριον τὸ Θεὸν Ἀβραάμ,
καὶ τὸν Θεὸν Ἰσαάκ, καὶ τὸν Θεὸν Ἰακώβ.
- 38 Θεὸς δὲ σὺν ἑστὶ νεκρῶν, ἀλλὰ ζώντων
πάντες γὰρ αὐτῷ ζῶσιν.
- 39 Ἀποκρυσθέντες δὲ πνεῖς τῶν γραμματέων
εἶπον· Διδάσκαλε, καλῶς εἶπες.
- 40 Οὐκ ἐπὶ ἡ ἐτόλμων ἐπερωτᾶν αὐτὸν ἐδέν·
- 41 Εἶπε ἡ αὐτοῦ· Πῶς λέγετε τὸ Χρι-
στὸν υἱὸν Δαβιδ εἶναι.
- 42 Καὶ αὐτὸς Δαβιδ λέγει ἐν βίβλῳ Ψαλ-
μῶν· Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου· Κάθε
ἐν δεξιῶν μου,
- 43 Ἔως αὐτῶν ἴω τὰς ἐχθράς σου ὑποπόδιον τῶν
ποδῶν σου·
- 44 Δαβιδ οὕτως Κύριον αὐτὸν καλεῖ, καὶ
πῶς υἱὸς αὐτοῦ εἶναι;
- 45 Ἀκούσας δὲ παύσας τὸ λαῶν, εἶπε τοῖς
μαθηταῖς αὐτοῦ·
- 46 Προσέχετε δὲ τῶν γραμματέων τῶν φερόν-
των ὄψιν παλῆν ἐν σοφαῖς, καὶ φιλέντων
ἡσασμὸς ἐν ταῖς ἀγροαῖς, καὶ περὶ θεο-
μετρίας ἐν ταῖς σωμαγωγαῖς, καὶ περὶ κλι-
σῆς ἐν τοῖς δέντροις.
- 47 Οἱ κρατεροὶ ἐν οἰκίᾳ τῶν χρησίων, ἔσονται
ἐλασώτερον κείμην·

Κεφ.

Κεφ. κα'. 21.

- 1 **Α**ναβλέψας ἡ εἶδε τὰς βάλλουσας εἰς δώρα αὐτῶν εἰς τὸ γαζοφυλάκιον πωλοσίσας.
- 2 Εἶδε δὲ καὶ πικρὰ χόρην πενήτην βιάσασαν ἐκεῖ δύο λεπτά.
- 3 Καὶ εἶπεν· Ἀληθῶς λέγω ὑμῖν, ὅτι ἡ χόρην ἢ πτωχὴ αὕτη πλεῖον πάντων ἔβαλεν·
- 4 Ἀπειλὴς γὰρ ἔτοιξεν Ἐπειροσίου τοῦ αὐτοῦ ἔβαλον εἰς τὰ δώρα Ἐθεῖ· αὕτη ἡ ἔκ Ἐυσερήματος αὐτὸ ἀπειλῆς τὸ βίον ὀνειχεν ἔβαλε.
- 5 Καὶ πικρὰν λεγόντων πρὸς Ἐθεῖ, ὅτι λίθοις κελοῖς καὶ ἀναθήμασι κεκόσμη), εἶπε·
- 6 Ταῦτα ἂν θεωρεῖτε, ἐλεύσονται ἡμέραι ἐν αἷς σὺν ἀφεθήσει λίθου ἐπὶ λίθου ὃς ἐκαταλυθήσεται·
- 7 Ἐπηρώτησαν ἡ αὐτὸν, λέγοντες· Διδάσκω-λε, πότε ἔν ταῦτα ἔσται; καὶ τί τὸ σημεῖον ὅταν μέλλῃ ταῦτα γίνεσθαι;
- 8 Ὁ δὲ εἶπε· Βλέπετε μὴ πλανηθῆτε· πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, λέγοντες· Ὅτι ἐγὼ εἰμι καὶ ὁ κρηρὸς ἤχηκε. μὴ οὖν προσθῆτε ὀπίσω αὐτῶν.
- 9 Ὅταν δὲ ἀκούσητε πολέμους καὶ ἀκαταστασίας, μὴ πθηθῆτε· δεῖ γὰρ ταῦτα γινέσθαι πρῶτον· ἀλλ' ὅσον δὴ ἔσται τὸ τέλος.
- 10 Τότε ἔλεγον αὐτοῖς· Ἐγερθήσει ἔθνος ἐπὶ ἔθνος, καὶ βασιλεία ἐπὶ βασιλείαν·
- 11 Σφισμὸί τε μεγάλοι καὶ πόδες καὶ λιμοὶ καὶ

- καὶ λοιμοὶ ἔσονται, φόβητε ἅτις σημεῖα ὑπὸ
 οὐρανοῦ μεγάλα ἔσονται.
- 12 Πρὸς τὸν αὐτὸν ἀπαύλιον ἐπιβαλῶσιν ἰσχυροὶ
 ἐν χεῖρας αὐτῶν, καὶ διαξέσονται, ὡς δούλῳ
 εἰς στυγερὰς καὶ φυλακὰς, ἀγροῦς ἐπὶ
 βασιλεῖς ἐν ἡγεμονίαις, ἕσονται ὄνοματός μου.
- 13 Ἀποβήσονται δὲ ὑμῖν εἰς μαρτύριον.
- 14 Θίθετε οὖν εἰς τὰς καρδίας ὑμῶν, μὴ σφρα-
 γμιλεῖσθαι ἀπολογηθῆναι.
- 15 Ἐγὼ γὰρ ὄψω ὑμῖν τὸ μαρτύριον καὶ σοφίαν, ἣν ἄ-
 δυνάστοι ἀντήπειν ἔδὲ ἀνίστασθαι πάντες οἱ
 ἀνθρώποι ὑμῖν.
- 16 Παραδοθήσεσθε δὲ ὑπὸ γυναικῶν ἐν ἀδελφοῖς
 ἐν συγγενῶν ἐφίλων ἐναντιώσεσθαι ἐξ ὑμῶν.
- 17 Καὶ ἔσεσθε μισοῦμενοι ὑπὸ πάντων ἀφ' ἃς
 τὸ ὄνοματός μου.
- 18 Καὶ ἥξει ἐκ τῆς κεφαλῆς ὑμῶν ἡ μὴ ἀπόλη.
- 19 Ἐν τῇ ὑπομονῇ ὑμῶν κτήσεσθε τὰς ψυχὰς
 ὑμῶν.
- 20 Ὅταν δὲ ἴδῃτε κυκλωθῆναι ὑπὸ στρα-
 τῶν τὴν Ἱερουσαλήμ, τότε γινώτε ὅτι ἤχι-
 κεν ἡ ἐρήμωσις αὐτῆς.
- 21 Τότε οἱ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, φυγέτωσαν εἰς τὰ
 ὄρη, ἃ οἱ ἐν μέσῳ αὐτῆς, ἐκχωρεῖτωσαν, καὶ οἱ ἐν
 ταῖς χώραις, μὴ εἰσέρχονται εἰς αὐτὴν.
- 22 Ὅτι ἡμέραν ἐκδικήσεως αὐταῖς εἰσι, τοῦ
 πληρωθῆναι πάντα τὰ γεγραμμένα.
- 23 Οὐαὶ δὲ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχέουσας ἐν ταῖς θηλα-
 ζέουσας

ξέσσης ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις ἔσται γὰρ ἀνάγκη
 καὶ μετὰ τὴν ἐπί τ' γῆς, ἔσθ' ὁρῆ ἐν τῷ λαῷ τούτῳ.

24 Καὶ περὶ τῆς ἐπιβολῆς μαχαιρῶν, καὶ αἰχμη-
 λῶν καὶ ἰσθίων) εἰς πάντα τὰ ἔθνη· καὶ ἱερουσα-
 λὴμ ἔσται περὶ ἑμῶν ὑπὸ ἔθνων, αἰχρὶ πλη-
 ρωθῶσι καὶ οἱ ἔθνη.

25 Καὶ ἔσται σημεῖα ἐν ἡλίῳ καὶ σελήνῃ καὶ
 ἀστροῖς· καὶ ἐπὶ τ' γῆς σεισμοὶ ἔθνων ἐν ἀπο-
 κείῃ, ἢ χύσις θαλάσσης καὶ σαύλα·

26 Ἀποψύχονται ἄνθρωποι ἀπὸ φόβου καὶ
 προσδοκίας τῆς ἐπιβολῆς τῆς οἰκουμένης· αἱ
 γὰρ δυνάμεις τῆς οὐρανόθεν σαλευθήσονται).

27 Καὶ ὅτε ὄψον) τὸ ἔθνος τῶν ἀνθρώπων ἐρχόμε-
 νοι ἐν νεφέλῃ μετ' οὐρανόθεν καὶ δόξης πολλῆς.

28 Ἀρχαρίτων) τῶν τέτων γίνεσθαι, ἀνακύψατε ἔ-
 πίστευτε ἐπὶ κεφαλὰς ὑμῶν· διότι ἐρχίξεται ἡ
 ἀπολύτρωσις ὑμῶν.

29 Καὶ εἶπε ὁ Ἰησοῦς αὐτοῖς· Ἴδτε τὴν
 οὐρανὸν καὶ πάντα τὰ δένδρα.

30 Ὅταν οὐρανόθεν ἦδη, βλέποιτες ἅψ' ἑ-
 αυτῶν γινώσκετε ὅτι ἦδη ἐγγύς τὸ τέλος ἐστίν·

31 Οὕτως ἔσθ' ὑμεῖς, ὅταν ἴδητε ταῦτα γινόμενα,
 γινώσκετε ὅτι ἐγγύς ἐστὶ ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ.

32 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔσθ' ἢ μὴ παρέλθῃ ἡ
 γενεὰ αὕτη, ἕως αὐτῶν πάντα ταῦτα γίνεσθαι).

33 Ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελεύσονται), οἱ δὲ
 λόγοι μου ἔσθ' ἢ μὴ παρέλθωσι.

34 Προσέχετε) ἵνα ἑαυτοῖς μήποτε βαρυνθῶσιν
 ὑμῶν

ὑμῶν αἱ καρδίαι ἐν κραυγαῖς καὶ κλαυθμοῖς καὶ μετάνοιαις βιαίαις, καὶ αἰφνιδίως ἑφ' ὑμᾶς ἐπιτεῖ ἡ ἡμέρα ἐκείνη.

35 Ὡς παγὶς γὰρ ἐπιλεύσει ἐπὶ πάντας τὰς καρτημύδας ἐπὶ πᾶσαν πᾶσιν τὴν γῆν.

36 Ἀρρυσνείτε ἐν, ἐν παντὶ καρτῶν δρόμοις, ἵνα καρταξιώγητε ἐκφυγεῖν ταῦτα πάντα τὰ μέλλοντα γενεᾶς, καὶ σαθρῶν ἐμπαροθεν τῷ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.

37 Ἦν δὲ καὶ ἡμέρας ἐν ταῖς ἱερῶν διδασκαλίαις αὐτοῦ ἐν ταῖς ἱερῶν ἐκκλησίαις ἐκκλήθη εἰς τὸ ἄρθρον τὸ καλέμνον Ἐλαιῶν.

38 Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἠρμήζετο παρὰ αὐτὸν ἐν ταῖς ἱερῶν ἀκρόασι.

Κεφ. κβ'. 22.

1 Ἦν δὲ καὶ ἡ ἑορτὴ τῶν ἀζύμων, ἡ λεγόμενη πάσχα.

2 Καὶ ἐζήτησαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς, τὸ πῶς ἀνέλωσιν αὐτὸν ἐφοβούντο γὰρ τὸ λαόν.

3 Εἰσῆλθε δὲ ὁ σατανᾶς εἰς Ἰάδαν τὸν ἐπικαλέμνον Ἰσκαριώτην, ὄντα ἐκ τῶν ἀριθμῶν τῶν δώδεκα.

4 Καὶ ἀπελθὼν συνελάλησε τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ τοῖς γραμματεῖσι τὸ πῶς αὐτὸν ᾤχεσθαι αὐτοῖς.

5 Καὶ ἐξάρησαν καὶ συνήθεντο αὐτῷ ἀρτήριον δέναι.

6 Καὶ ἐξωμολόγησε καὶ ἐζήτητὸν δικασθῆναι τῷ ᾤχεσθαι αὐτὸν αὐτοῖς ἄτερ ὄχλου.

7 Ἦν δὲ

7 Ἦλθε δὲ ἡ ἡμέρα τῶν ἀζύμων, ἐν ἣ ἔδεδε
 θύεσθαι τὸ πάχος.

8 Καὶ ἀπίσθη Πέτρον καὶ Ἰωάννην, εἰπὼν·
 Ποροῦθέντες ἐτοιμάσατε ἡμῖν τὸ πάχος, ἵνα
 φάγωμεν.

9 Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Πῶς θέλεις ἐτοιμάσαιμεν;

10 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἴδε, εἰσελθόντων ὑμῶν
 εἰς τὴν πόλιν, σιωπήσατε ὑμῖν ἄνθρωποι κα-
 ρέμιον ὑδάτι βασιλεύων· ἀκούσθησατε
 αὐτῷ εἰς τὴν οἰκίαν ἢ ἐκπορεύεσθε.

11 Καὶ ἐρεῖτε τῷ οἰκοδεσπότῃ τῆς οἰκίας· Λέγει
 σοι ὁ δίδάσκαλος· Πῶς ἐστὶ τὸ κατὰ νόμον
 ὅπως τὸ πάχος μετὰ τῶν μαθητῶν μεσφάγωμεν.

12 Καὶ κείνοι ὑμῖν δείξουσιν ἀνάγειον μέγα ἐρω-
 μέλιον· ἐκεῖ ἐτοιμάσατε.

13 Ἀπελθόντες δὲ ὄρθρον καθὼς εἴρηκεν αὐτοῖς·
 καὶ ἠτοίμασαν τὸ πάχος.

14 Καὶ ὅτε ἐληλύθει ἡ ὥρα, ἀνέπεσε, καὶ οἱ
 δώδεκα ἀπίστοι σὺν αὐτῷ.

15 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Ἐπιθυμία ἐπιθυ-
 μησατέων τὸ πάχος φαγεῖν μεθ' ὑμῶν πρὸ
 ἢ με παιθεῖν.

16 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι ἐκέπη ἔμὴ φάγωμεν ἐξ αὐτοῦ,
 ἕως ὅτε πληρωθῇ ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.

17 Καὶ δεξιὰ μὲν ποιήσειον, ὄψα φάγησας
 εἶπε· Λάβετε τῶν, ἃ ἀφαιρέσατε ἐαυτοῖς·

18 Λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι ἔμὴ πῖω ἀπὸ τῆς γενήματος
 τῶν ἀμπέλων ἕως ὅτε ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ ἔλθῃ.

19 Καὶ

- 19 Καὶ λαβὰν ἄρτον, ὀχλαρήσας ἱκλασά-
 κη ἔδωκεν αὐτοῖς, λέγων· Τὸ τό ἐσι τὸ σῶμα
 μου, τὸ ἕωερ ὑμῶν διδοῦμαι· τὸ ἔθ ποιῆτε εἰς
 τὴν ἐμὴν ἀνάμνησιν.
- 20 *Ωσώτως ἔ τὸ ποτήριον, μετ' τὸ δὲ πῆσαι,
 λίσαν· Τὸ τὸ ποτήριον, ἡ κρηνη Διφ. ἡ κρη ἐν
 τῷ αἵματι μου, τὸ ἕωερ ὑμῶν ἐκχωῦμαι.
- 21 Πλὴν ἰδὲ, ἡ χεὶρ ἔ τὸ ἔθ διδοῦμαι με-
 μετ' ἐμοῦ ἐπὶ τῆς τραπέζης.
- 22 Καὶ ὁ μὲν ἕως ἔ ἀνθρώπων προσέειπεν ἡ τὸ
 ὀχλαρήσας· πλὴν καὶ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ
 δι' ἔ τὸ ἔθ διδοῦμαι).
- 23 Καὶ αὐτοὶ ἤρξαντο συζητεῖν πρὸς ἑαυτοὺς, τὸ
 πῶς ἄρα εἴη ἐξ αὐτῶν ὁ τὸ ἔθ μέλων πρῶτος.
- 24 Ἐχρῆστο ἡ καὶ φιλονεικία ἐν αὐτοῖς, τὸ
 πῶς αὐτῶν δοκεῖ εἶναι μείζων.
- 25 Οἱ ἔ εἶπεν αὐτοῖς· Οἱ βασιλεῖς ἔ ἐθνῶν
 κυριεύουσιν αὐτῶν ἡ οἱ ἐξουσιάζοντες αὐτῶν
 ἐσθλάται καλῶν).
- 26 Ὑμεῖς ἡ ἔχ ἔ τως· ἀλλ' ὁ μείζων ἐν ὑμῖν, ἔ ἐν-
 δωῶς ὁ νεώτερος· ἔ ὁ ἡ ἔθ μῦθος, ὡς ὁ διακονῶν.
- 27 Τίς γὰρ μείζων; ὁ ἀνακείμην, ἡ ὁ Διφ.
 κρητῶν; ἔχι ὁ ἀνακείμην; ἐγὼ δὲ εἶμι ἐν μέ-
 σα ὑμῶν ὡς ὁ Διφ. κρητῶν.
- 28 Ὑμεῖς δὲ ἔστε οἱ Διφ. κρητῶν μετ'
 ἐμοῦ ἐν τοῖς πρῶτοις μου.
- 29 Καὶ γὰρ Διφ. κρητῶν ὑμῖν, κατὰ τὸ εἶθ ἔθ μου
 ὁ πατήρ μου, βασιλείαν·

30 ἵνα ἰδοῦντες καὶ πίνῃτε ἐπὶ τῆς τραπέζης μεθ' ἐν τῇ βασιλείᾳ μου καὶ καθίσηθε ἐπὶ θρόνων, κείμενοι ἐν δώδεκα φυλάσιν Ἰσραὴλ.

31 Εἶπε ὁ Κύριος· Σίμων, Σίμων, ἰδὲ, ὁ σατανᾶς ἐξηπάτησέν σε, ὡς τὸ σίτον.

32 Ἐγὼ δὲ ἐδεήθην πατρὸς σου, ἵνα μὴ ἐκλείπῃ ἡ πίστις σου, καὶ σύ πατε ἐπιστρέψας, στήριξον τοὺς ἀδελφούς σου.

33 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Κύριε, μετ' ἐμοῦ ἔτοιμός εἰμι καὶ εἰς φυλακὴν καὶ εἰς θάνατον προθύμως.

34 Ὁ δὲ εἶπε· Λέγω σοι Πέτρε, ἔμὴ φωνήσῃ σήμερον ἀλέκτωρ πρὶν ἢ τοῖς ἀπειρήσῃ μὴ εἰδέναι με.

35 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτε ἀπέστειλα ὑμᾶς ἄτερ βαλανίου καὶ πηρέως καὶ υποδημάτων, μὴ ἴνῃ ὑπερησάτε; Οἱ δὲ εἶπεν· Οὐδενός.

36 Εἶπεν ἔτι αὐτοῖς· Ἀλλὰ νῦν, ἔχων βαλάντιον, ἀράτω, ὁμοίως ἔπληραν· ἔο μὴ ἔχων, πωλησάτω τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, ἔο ἀγορασάτω μάχαιραν·

37 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι ἐπιτεῖται τὸ ζεζευμένον δεῖτελεσθῆναι ἐν ἐμοί, τὸ καὶ μετ' ἀνόμων ἐλογίσθη. Καὶ γὰρ τὰ πατρὸς ἐμῆ τέλει ἔχη.

38 Οἱ δὲ εἶπον· Κύριε, ἰδὲ μάχαιραν ἠδὲ δύο. Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἰκανόν ἐστι.

39 Καὶ ἐξελθὼν ἐπορεύθη εἰς τὸ ἔθνος εἰς τὸ ἔθνος πάντων Ἑλλαιῶν· ἠκολούθησαν δὲ αὐτῷ καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

40 Γενόμενος δὲ ἐπὶ τῶν τόπων, εἶπεν αὐτοῖς·

N Προσ-

- Προσδύχεσθε μὴ εἰσελθεῖν εἰς πηρασμόν.
- 41 Καὶ αὐτὸς ἀπεσπάσθη ἀπ' αὐτῶν ὡσεὶ λίθος βολῶν, καὶ θίξας τὰ γόνατα προσεύχετο.
- 42 Λέγων· Πάτερ, εἰ βέλῃ παρενεγκεῖν τὸ ποτήριον τῆτο ἀπ' ἐμοῦ· ὡλλῶ μὴ τὸ θέλημα μέμα, ἀλλὰ τὸ σὸν θέλω.
- 43 Ὡφθη ἢ αὐτῷ ἄγγελος ἀπ' ἑρανεῦ εὐαγγύων αὐτόν.
- 44 Καὶ γυρόμενος εὐαγγυία, ἐκλειέσερον προσεύχετο, ἐγγύετο δὲ ὁ ἰδρῶς αὐτῆ ὡσεὶ θρόμβοι αἵματι καὶ βαίνοντες ἐπὶ τὸ γλυῦ.
- 45 Καὶ ἀναστὰς δὲ τὸ προσδύχῃς, ἐλθὼν πρὸς τὰς μαθηταῖς αὐτῆ, εὐρεν αὐτῆς κριμαμύμας δὲ τὸ τῆς λύπης.
- 46 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τί κηθδύδετε; ἀναστάντες προσδύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσελθῆτε εἰς πηρασμόν.
- 47 Ἐπὶ αὐτῆ λαλῆντες, ἰδὲ ὄχλος, καὶ ὁ λευγέρμος Ἰσδάς, εἰς τὸ δῶδεκα, προσήρχετο αὐτῶν, καὶ ἤχησε τῷ Ἰησοῦ φιλήσασα αὐτόν.
- 48 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ἰσδά, φιλήματι τὸν ἴον εἶ ἀνθρώπος ὡραδίδως;
- 49 Ἰδόντες ἢ οἱ πρὸ αὐτῶν τὸ ἐσόμνον, εἶπον αὐτῷ· Κύριε, εἰ παλάξομεν εὐαγγυία;
- 50 Καὶ ἐπάταξεν εἰς τὴν εἶξ αὐτῶν τὸ δῆλον εἶ δῶδεκα, καὶ ἀφείλεν αὐτῆ τὸ εἶς τὸ δεξιόν.
- 51 Ἀποκριθεὶς ἢ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἐἴτε εἰς τῆ-
78. Καὶ ἀψάμμος εἶ ὡπὶς αὐτῆ, ἰάσατο αὐτόν.
- 52 Εἶπε ἢ ὁ Ἰησοῦς πρὸς τὰς ὡραγυμομύμας
ἐπ'

ἐπ' αὐτὸν δόχμερές κὶ σρατηγὸς ἔϊερέε, καὶ
 πρεσβυτέρους· ὧς ἐπὶ λησιῶ ἐξεληλύθατε
 μὲν μαχαρῶν καὶ ξύλων;

3 Καθ' ἡμέραν ὄνθου μεθ' ὑμῶν ἐν τῷ
 ἱερῷ, ὅσα ἐξετείνετε τὰς χεῖρας ἐπ' ἐμέ· ἀλλ'
 αὐτὴ ὑμῶν ἐστὶν ἡ ὥρα, ἧ ἐξέστια ἔσκοτεις.

4 Συλλαβόντες ἡ αὐτὸν ἠγάραν, καὶ εἰσήγα-
 ρον αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον ἔδόχμερέως. Ο' δὲ
 Πέτρος ἠκολούθη μακρόθεν.

5 Αἰψάντων δὲ πῦρ ἐν μέσῳ τ' αὐλῆς, καὶ
 συγκαθισάντων αὐτῶν, ἐκάθητο ὁ Πέτρος
 ἐν μέσῳ αὐτῶν.

6 Ἰδῶσα δὲ αὐτὸν παιδίσκε πτε κατήμνηεν
 πρὸς τὸ φῶς, καὶ ἀτενίσασα αὐτῷ, εἶπε·
 Καὶ εἶπες σὺ αὐτῷ ῶ.

7 Ο' δὲ ἠρήσατο αὐτὸν, λέγων· Γνώμη, ὅσα
 οἶδα αὐτῶν.

8 Καὶ μὲν βραχὺ ἔπερθε ἰδὼν αὐτὸν, ἔφη·
 Καὶ σὺ ἐξ αὐτῶν εἶ. Ο' δὲ Πέτρος εἶπεν·
 Ἄνθρωπε, ὅσα εἰμί.

9 Καὶ διαστάσης ὡσεὶ ὥρας μιᾶς, ἀπῆλ-
 θεν διιχυρίζετο, λέγων· Ἐπ' ἀληθείας καὶ
 εἶπος μετ' αὐτῶν ῶ. Ἐ γὰρ Γαλιλαῖός ἐστιν.

10 Εἶπε δὲ ὁ Πέτρος· Ἄνθρωπε, ὅσα οἶδα ὁ
 λέγεις. Καὶ πρὸς αὐτὸν ἐλάλησεν αὐ-
 τοῦ, ἐφώνησεν ὁ ἀλέκτωρ.

11 Καὶ σραφείσ ὁ Κύριος ἐνέβλεψε τῷ
 Πέτρῳ· καὶ ὑπεμνήθη ὁ Πέτρος ἔλογε ἔ

Κυρίε, ὡς εἶπεν αὐτῷ· Ὅτι περὶ ἀλέκτρα
φωηῶσαι, ἀπαρνῆσαι με τρίς.

62 Καὶ ἐξελθὼν ἔξω ὁ Πέτρος ἐκλαυσεν πικρῶς.

63 Καὶ οἱ ἄνδρες οἱ σωμαργοῖς τῷ Ἰησοῦ, ἐνέ-
παζον αὐτῷ, δέροντες·

64 Καὶ ὤσεικαλύψαυτες αὐτὸν, ἐτυπζον αὐ-
τῷ τὸ πρῶτωπον· καὶ ἐπηρώτων αὐτὸν, λέ-
γοῖτες· Προφήτης ὅστις ἐσὶν ὁ πάντας σε.

65 Καὶ ἕτερα πολλὰ βλασφημῶντες ἔλεγον
εἰς αὐτόν.

66 Καὶ ὡς ἐβλήθη ἡμέρα, συνήχθη τὸ πρῶτον
τέλειον ἔλαβον, ἄρχιερεῖς τε καὶ γραμματεῖς,
καὶ ἀνήγαγον αὐτὸν εἰς τὸ σινάδριον ἑαυτῶν,

67 λέγοντες· Εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστός; εἰπέ ἡμῖν. Εἶπε
ἰς αὐτοῖς· Ἐὰν ὑμῖν εἶπω, ἔμὴ πιστεύσητε·

68 Ἐὰν ᾗ καὶ ἐρωτήσω, ἔμὴ ἀποκριθῆτέ μοι,
ἢ ἀπολύσητε.

69 Ἀπὸ τῆς νῦν εἶπα ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου καθή-
μενον ἐκ δεξιῶν τοῦ θronoῦ τοῦ Θεοῦ.

70 Εἶπον ἡ πάντες· Σὺ εἶ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ; Ὁ
ᾗ πρὸς αὐτὰς ἔφη· Ὑμεῖς λέγετέ ὅτι ἐγὼ εἰμι.

71 Οἱ ᾗ εἶπον· Τί ἐπὶ χρεῖαν ἔχομεν μαρτυρίας
αὐτοῦ γὰρ ἠκούσαμεν ἀπὸ τοῦ ὄμου αὐτοῦ.

Κεφ. κγ'. 23.

1 **Κ**αὶ ἀναστὴν ἅπαν τὸ πλῆθος αὐτῶν,
ἤγαγον αὐτὸν ἐπὶ τῷ Πιλάτον.

2 Ἐβέναντο δὲ καὶ ἠγορεύειν αὐτῷ, λέγοντες·
Τὸν δόξομεν ἀφαιρέσειν τὸ ἔθνος, καὶ
κωλύσειν

κωλύοντα Καισαρι Φόρως δίδοναι, λέγοντες
 ἑαυτὸν Χρυσὸν βασιλέα εἶναι.

3 Ὁ δὲ Πιλάτος ἐπηρώτησεν αὐτὸν, λέγον-
 των· Σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῆ Ἰουδαίας; Ὁ δὲ ἀπο-
 κριθεὶς αὐτῷ ἔφη· Σὺ λέγεις.

4 Ὁ δὲ Πιλάτος εἶπε πρὸς τοὺς δόχμους
 καὶ τοὺς ὄχλους· Οὐδὲν εὐρίσκω αἴτιον ἐν τῷ
 ἀνθρώπῳ τούτῳ.

5 Οἱ δὲ ἐπίχμου, λέγοντες· Ὅτι ἀτασείν τον
 λαὸν, διδάσκων καθ' ὅλης τῆ Ἰουδαίας, δεξά-
 μην δὲ ἀπὸ τῆ Γαλιλαίας ἕως ἄδῃ.

6 Πιλάτος δὲ ἀκούσας Γαλιλαίου, ἐπ-
 ηρώτησεν εἰ ὁ ἀνθρώπος Γαλιλαῖός ἐστι.

7 Καὶ ἐπιγνὼς ὅτι ἐκ τῆ ἑξουσίας Ἡρώδης ἐστίν,
 ἀνέπεμψεν αὐτὸν πρὸς Ἡρώδην, ὄντα ἐ αὐ-
 τὸν ἐν Ἱεροσολύμοις ἐν ταῖς ταῖς ἡμέραις.

8 Ὁ δὲ Ἡρώδης, ἰδὼν τὸ Ἰησοῦν ἐχάριεν λίαν·
 ἰαὶ γὰρ θέλων ἐξ ἱκανῶ ἰδεῖν αὐτὸν, ἀπέ-
 ἀκύνεν πολλὰ πρὸς αὐτῷ· ἔκ ἤλπιζεν σημεῖον
 ἰδεῖν ὑπὸ αὐτῷ γινόμενον.

9 Ἐπηρώτη δὲ αὐτὸν ἐν λόγοις ἱκανοῖς·
 αὐτὸς δὲ ἐδὲν ἀπεκρίνατο αὐτῷ.

10 Εἰσηκόσων δὲ οἱ δόχμους καὶ οἱ γραμ-
 ματεῖς ἐτόνωσεν κατήσθηντες αὐτοῦ.

11 Ἐξεθενήσας δὲ αὐτὸν Ἡρώδης σὺν τοῖς στρατιώ-
 ματι αὐτῷ, ἔειμπαζας, πρὸς αὐτὸν αὐτὸν ἐ-
 στήλα λαμπρῶν, ἀνέπεμψεν αὐτὸν ἰαὶ Πιλάτῳ

12 Ἐγγύοντα δὲ φίλοι ὁ, τε Πιλάτος καὶ ὁ
 N 3 Ἡρώδης

- Ἡρώδης ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ μετ' ἀλλήλων
 παροῦπῆρχον γὰρ ἐχθρὰ ὄντες πρὸς ἐαυτοὺς
- 13 Πιλᾶτος δὲ, συγκαλεσάμενος τὰς δὲ-
 χειρεῖς καὶ τὰς ἀρχοντας καὶ τὸν λαόν,
- 14 Εἶπε πρὸς αὐτούς· Προσίνεματέ μοι τὸ
 ἄνθρωπον τῆτον, ὡς ἀποστέφοντα τὸ λαόν, καὶ
 ἰδὲ, ἐγὼ ἐνώπιον ὑμῶν ἀνακρίνας, ἐδὲν δὲ-
 ρον ἐν ταῖς ἀνθρώπων τέτῳ αἵτιον, ὧν καὶ ἠθρο-
 ρεῖτε κατ' αὐτοῦ.
- 15 Ἀλλ' ἐδὲ Ἡρώδης· ἀνέπεμψα γὰρ ὑμᾶς
 πρὸς αὐτὸν, καὶ ἰδὲ, ἐδὲν ἀξιὸν θανάτου ἐστὶ
 πεπερασμένον αὐτῷ.
- 16 Παιδύσας οὖν αὐτὸν ἀπολύσω.
- 17 Ἀνάγκην δ' εἶχεν ἀπολύειν αὐτοῖς καὶ ἑορτὴν ἕνεκα.
- 18 Ἀνίστασαν δ' ἐκεῖνοι λέγοντες· Αἰετὸν
 τῆτον, ἀπολύσον δὲ ἡμῖν τὸ Βαράβδαν.
- 19 Ὅς τις ἐστὶν ἀφ' ἑστέσιν ἵνα γλυκομήλω ἐν τῇ
 πόλει καὶ φόνον βεβλημένον εἰς φυλακίαν.
- 20 Πάλιν οὖν ὁ Πιλᾶτος παροσφώνησε, θέ-
 λων ἀπολύσαι τὸν Ἰησοῦν.
- 21 Οἱ δὲ ἐπεφώνον, λέγοντες· Στυρώσω, καὶ
 σταύρωσον αὐτόν.
- 22 Ὁ δ' ἔτιον εἶπε πρὸς αὐτούς· Τί γὰρ κακὸν
 ἐποίησεν ἔσθ; ἐδὲν αἵτιον θανάτου δὲ-
 ρον ἐν αὐτῷ· παιδύσας ἔν αὐτὸν ἀπολύσω.
- 23 Οἱ δὲ ἐπέκρινον φωναῖς μεγάλαις, αἰτέ-
 μνοι αὐτὸν σταυρωθῆναι· καὶ κρείχον αἱ
 φωναὶ αὐτῶν καὶ τῶν δὲχειρέων.

24 Οἱ

24 Ο ἰ Πιλάτῳ ἐπέκεινε θύεας τὸ αἵ-
τημα αὐτῶν.

25 Ἀπέλυσε ἰ αὐτοῖς τὸ Δάσασιν ἐ Φόνον
βεβλημένον εἰς τὸ φυλακίον, ὃν ἠτένθη· τὸ ἰ
Ἰησοῦν παρέδωκε τῷ θελήματι αὐτῶν.

26 Καὶ ὡς ἀπήλασεν αὐτὸν, ἐπιλαβόμενοι Σίμων-
νός Ἰανος Κυρηνάος ἰ ἐρχομένων ἀπ' ἀρχῆς, ἐπέ-
θησαν αὐτῷ τὸ στυρόν, φέρειν ὀπίσθεν ἰ Ἰησοῦν.

27 Ἦθηλάθη ἰ αὐτῷ πολὺ πλῆθος ἰ λαῶν κἰ
γυναικῶν· αἱ ἰ ἐκόπτοντο κἰ ἐθρήνην αὐτόν.

28 Στραφεῖς ἰ πρὸς αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς, εἶπε· Θυ-
ραλίερες Ἰερουσαλήμ, μὴ κλαίετε ἐπ' ἐμὲ, πλὴν
ἐφ' ἑαυτοῖς κλαίετε, κἰ ἐπὶ ταῖς τέκνα ὑμῶν·

29 Ὅτι ἰδὲ, ἔρχον ἰ ἡμέρας ἐν αἷς ἐρῶσι· Μα-
κρόταται αἱ σείραται, κἰ κοιλίαται αἱ σῶν ἐθύνθη-
σαν, κἰ μαστοὶ οἱ σῶν ἐθήλασαν.

30 Τότε ἀρξόνται λέγειν τοῖς ὄρεσι· Πέσετε
ἐφ' ἡμᾶς· ἐ τοῖς βουνοῖς· Καλύψατε ἡμᾶς.

31 Ὅτι ἐς ἐν τῷ ὑψηλῷ ξύλω ταῦτα ποιῶσιν,
ἐν τῷ ξηρῷ τὴ θύη ἰ;

32 Ἦθηνθη ἰ κἰ ἔτεροι δύο κακῆργιστῶν αὐ-
τῷ ἀναρεθίωται.

33 Καὶ ὅτε ἀπῆλθον ἐπὶ τὸ τόπον τὸ καλέμενον
Κρανίον, ἐκεῖ ἐσταύρωσαν αὐτόν ἐ τὰς κακῆρ-
γας· ὃν μὲν ἐκ δεξιῶν, ὃν ἰ ἐξ ἀριστερῶν.

34 Ο ἰ Ἰησοῦς ἔλεγε· Πάτερ, ἄφες αὐτοῖς·
ἰ γὰρ οἶδασι τί ποιῶσι. Διαμεριζόμενοι ἰ
τὰ ἰμάτια αὐτῶν, ἰ ὅσαλον κληῖρον.

- 35 Καὶ εἰσήκεν ὁ λαὸς τῶν Ἰουδαίων· ἐξεμυκίσθησαν ἡ καὶ οἱ ἀρχιερεῖς σὺν αὐτοῖς, λέγοντες· Ἄλλως ἴσως, σῶσαί τε αὐτὸν, εἰ ὕψος ἔστιν ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ ἐκλεκτός.
- 36 Ἐνέπαιζον ἡ αὐτῷ καὶ οἱ Σαδδουκαῖοι, ἀποσπαραχθέντες ὡς ἄνθρωποι ἀποσπαραχθέντες αὐτῷ.
- 37 Καὶ λέγουσιν· Εἰ σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων, σῶσον σεαυτὸν.
- 38 Ἦν ἡ καὶ ἐπιγραφὴ γεγραμμένη ἐπὶ αὐτῷ ἑβραϊστικῶς καὶ ἑλληνικῶς καὶ ἰουδαϊκῶς· Οὗτός ἐστιν ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων.
- 39 Εἷς ἡ καὶ κρεμασθέντων κακέρων ἐβλάσφημον αὐτὸν, λέγων· Εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστὸς σῶσον σεαυτὸν καὶ ἡμᾶς.
- 40 Ἀποκριθεὶς ἡ ὁ ἔπερσεν ἐπιλήμματα αὐτῷ, λέγων· Οὐδὲ φοβῆσθε σὺν τῷ Θεῷ, ὅτι ἐν τῷ αὐτῷ κείμενον εἶ.
- 41 Καὶ ἡμεῖς μὴ δισσώμεθα· ἀξία γὰρ ὡν ἐπελάμβανεν λαμβάνομεν· ὅτι ἡ καὶ ἔδεν ἀποπῆν ἐπελάμβανεν.
- 42 Καὶ ἔλεγε τῷ Ἰησοῦ· Μνήσθητί με, Κύριε, ὅταν ἔλθῃς ἐν τῇ βασιλείᾳ σου.
- 43 Καὶ εἰπὼν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν λέγω σοι, σήμερον μετ' ἐμοῦ ἔσθι ἐν τῷ ἑβραϊκῷ.
- 44 Ἦν ἡ ὡσεὶ ὥρα ἐκλήθη σιότος ἐγγύς ἐφ' ὅλβω τῷ γλυκῷ, ἕως ὥρας ἐνάτης.
- 45 Καὶ ἐσκοτίσθη ὁ ἥλιος, ἐξήραθη τὸ καὶ ἀπίστασμα ἑνὰ ἕμιστον. 46 Καὶ

46 Καὶ φωνήσας φωνῇ μεγάλῃ ὁ Ἰησοῦς εἶπε·
 Πάτερ, εἰς χεῖράς σου ὡς ᾤθεῖς παραστήσωμαι τὸ
 πνεῦμά μου. Καὶ ταῦτα εἰπὼν ἐξέπνυσεν.

47 Ἰδὼν ᾧ ὁ ἐκείνου ταρχεὺ τὸ γυμῶμα, ἐδό-
 ξασε τὸ Θεόν, λέγων· Οὕτως ὁ ἀνθρώπου
 ἔτι δειγμῶ ἰω.

48 Καὶ πάντες οἱ συμπαραγυμῶμοι ὄχλοι
 ἐπὶ τὸ θεωρεῖαν ταῦτα, θεωρῶντες τὰ γυμ-
 ῶμα, τυπλοντες ἑαυτῶν τὰ σῆθη ἐπέσπερον.

49 Εἰσῆλθον ᾧ πάντες οἱ γνωστοὶ αὐτοῦ μα-
 κρόθεν, καὶ γυναῖκες αἱ συνακαλοῦσθῆσαι αὐτῷ
 ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας, ὁρῶσαι ταῦτα.

50 Καὶ ἰδὼς, ἀνὴρ ὀνόματι Ἰωσήφ, βελοῦτης
 ὑπάρχων, ἀνὴρ ἀγαθὸς καὶ δειγμῶ,

51 (οὗτος ἔστι ἰω συγκαταπεθεμῶ τῆ
 βελη ἐτῆ πρῶξ αὐτῶν) ἀπὸ Ἀριμαθαίας
 πόλεως τῆς Ἰουδαίας, ὃς ἐπεσεδέχετο καὶ αὐ-
 τὸς τὴ βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

52 Οὗτος ἐπεσελθὼν τῷ Πιλάτῳ, ἠτήσατο
 τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.

53 Καὶ προσελθὼν αὐτὸ ἐπέλιξεν αὐτὸ σιν-
 δνι, καὶ ἔθηκεν αὐτὸ ἐν μνήματι λαξούτῳ, ᾧ
 ἔστι ἰω ἐδέπω ἐδεῖς κειμῶ.

54 Καὶ ἡμέρα ἰω ὡς ἤρασκον, καὶ σαββα-
 ζον ἐπέφωσκε.

55 Καὶ ἀκαλοῦσθῆσαι ᾧ ἐ γυναῖκες, αἵτινες
 ἦσαν συνακαλοῦσαι αὐτῷ ἐκ τῆς Γαλιλαίας,
 ἐθεάσαντο τὸ μνημεῖον, καὶ ὡς ἐπέθη τὸ σῶμα
 αὐτοῦ.

N 5 56 Καὶ

56 Ὑποσρέψασμι ἡ θείματα δρώματα ἐ μύ-
ρα ἐ τὸ μὲ σαΐδοαθιήσυχασιν κττ ἐ ἐνθλίν·

Κεφ κδ. 24.

- 1 **Τ**ῆ ἡ ἡ μιά τ σαΐδοάτων, ὄρθρε βαθίθ·
ἦλθον ἐπὶ τὸ μνημα, φέρουσι ἂ ἡτοίμα-
σαν δρώματα· καὶ ἴνας σὺ αὐταῖς.
- 2 Εὐρον ἡ τ λίθον δὲ πεκευλισμῶν δὲ τὸ τ
μνημεῖς·
- 3 Καὶ εἰσελθῶσι ἐχ δῦρον τὸ σῶμα τ
Κυρίε Ἰησῦ.
- 4 Καὶ ἐχρῆθ ἐν τῷ Διαπορήσθαι αὐταῖς
ᾤει τάττε, κὲ ἰδῶ, δύο ἄνδρες ἐπέστησαν αὐ-
ταῖς ἐν ἐσθῆσι (ἐν ἄσρα πῖσσης·
- 5 Εμφόσων ἡ γλυομῶν αὐτῶν, ἐκλινα-
σῶν τὸ πρῶσωπον εἰς τὸ γλῶ, εἶποι πρὸς αὐ-
ταῖς· Τί ζητεῖτε τ ζῶντα μττ τ νεκρῶν ;
- 6 Οὐκ ἔστιν ᾧδε, ἀλλ' ἡ γέρη. μνησθῆτε ὡς
ἐλάλησεν ὑμῖν, ἐπ' ἂν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ,
- 7 Λέγων· Ὅπ δει τ ἡοι τ ἀνθρώπε πρῶτα
δεθῆναί εἰς χεῖρας ἀνθρώπων ἀμαρτωλῶν, ἐ
σαυρωθῆναι· κὲ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀνασῆναι.
- 8 Καὶ ἐμνησθῆσαν τ ῥημάτων αὐτῶν.
- 9 Καὶ ὑποσρέψασμι δὲ τ μνημεῖς ἀπή-
γλαν θῶνται πάντα τοῖς ἐνδεκα ἐ πᾶσι τοῖς
λοιποῖς.
- 10 Ἦσαν δὲ ἡ Ματθαλιῶν Μαρία ἐ Ἰωάν-
να κὲ Μαρία Ἰακώβου, ἐ αἱ λοιπαί, σὺ αὐ-
ταῖς. αἱ ἔλεγον πρὸς τὸς ἀποστόλους ταῦτα.

11 Καὶ

- 11 Καὶ ἐφάνησαν ἐνάπιον αὐτῶν ὡσεὶ λή-
 ρῳ τὰ ῥήματα αὐτῶν, καὶ ἠπίσθην αὐταῖς.
- 12 Οἱ δὲ Πέτρος ἀναστὰς ἔδραμνεν ἐπὶ τὸ μνη-
 μεῖον· καὶ ᾠδρακύψας βλέπων τὰ ὀθόνια κεί-
 μημα μόνον· καὶ ἀπῆλθε, πρὸς ἑαυτὸν θαυ-
 μάζων τὸ γεγονός.
- 13 Καὶ ἰδὲ δύο ἐξ αὐτῶν ἦσαν προσδύοιμοι ἐν
 αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ εἰς κώμην ἀπέχουσαν σαδίας
 ἐξήκοντα ἀπὸ Ἱερουσαλήμ, ἧ ὄνομα Ἐμμαῦς.
- 14 Καὶ αὐτοὶ ᾠμίλυν πρὸς ἀλλήλους ὡς
 πάντων τῶν συμβεβηκότων τέτων.
- 15 Καὶ ἐχθίεθον τῷ ὀμιλεῖν αὐτὰς ἐ συζητεῖν,
 καὶ αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς ἐπίστατος συνεπορεύεθον αὐτοῖς.
- 16 Οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν ἐκράϊνοντο ἵνα μὴ
 ἐπιγνώσιν αὐτόν.
- 17 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτούς· Τίνες οἱ λόγοι ἔστωι
 ἕως ἀντιθέσθαι πρὸς ἀλλήλους ὡς παύσαντες,
 καὶ ἐσὲ σκυθρωποί;
- 18 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ εἰς αὐτοὺς ὄνομα Κλεόπας,
 εἶπε πρὸς αὐτόν· Σὺ μόνον παροικεῖς ἐν
 Ἱερουσαλήμ, καὶ οὐκ ἔγνωσ τὰ γεγονότα ἐν
 αὐτῇ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις;
- 19 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ποῖα; Οἱ δὲ εἶπον αὐ-
 τῷ· Τὰ ὡς Ἰησοῦς ἦ Ναζωραῖος, ὃς ἐχθίετο
 ἀνὴρ σοφῆτης, δυνατός ἐν ἔργῳ καὶ λόγῳ,
 ἐναντίον τοῦ Θεοῦ καὶ πάντων τοῦ λαοῦ.
- 20 Ὅπως τε παρέδωκεν αὐτὸν οἱ δούλοισι,
 καὶ οἱ ἄρχοντες ἡμῶν εἰς κείμενον θανάτου, καὶ
 ἐσαύρωσαν αὐτόν·
- 21 Ἡμεῖς

- 21 Ἡμεῖς ἧ ἠλπίζομεν ὅτι αὐτός ἐστι ὁ μίλλον λυτῆρα τῆ Ἰσραήλ· ἀλλὰ γε σὺ πᾶσι τέτοις, τρίτῃ ταύτῃ ἡμέραν ἀρχή σήμερον ἀφ' ἧ ταῦτα ἐχρῆτο.
- 22 Ἀλλὰ καὶ γυναῖκες ἄλλες ἐξ ἡμῶν ἐξέστησαν ἡμῶς, θηρομάχαι ὄρηται ἐπὶ τὸ μνημεῖον·
- 23 Καὶ μὴ δόξασαί τὸ σῶμα αὐτῆς, ἦλθον, λέγουσα καὶ ὀπισθίαν ἀγγέλου ἰωρακείας, οἱ λέγουσι αὐτὸν ζῆν.
- 24 Καὶ ἀπῆλθον ἄλλες τῶ σὺν ἡμῖν ἐπὶ τὸ μνημεῖον, καὶ ὄρον ἔτα κατὰς ἑαί γυναῖκες εἶπον· αὐτὸν ἧ σὸν εἶδον.
- 25 Καὶ αὐτὸς εἶπε πρὸς αὐτάς· Ὡ ἀνόητοι ἑ βραδείς τῆ καρδία ἑ πιστεύει ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἐλάλησαν οἱ πρὸφῆται.
- 26 Οὐχὲ ταῦτα ἔδῃ παθεῖν τῆ Χειρὸν, καὶ εἰσελθεῖν εἰς τῆ δόξαν αὐτῆς;
- 27 Καὶ δόξα ἄμην τῶ ἀπὸ Μωσέως καὶ ἀπὸ πάντων τῶ πρὸφῆτῶν, διηρημύσσει αὐτοῖς ἐν πάσαις ταῖς γενεαῖς ταῖς ὄντι αὐτῆς.
- 28 Καὶ ἦλθον εἰς τῆ κόμην ἑ ἐπορεύοντο ἑ αὐτὸς πρὸς ποιεῖτο πρῶτον πρὸς ἑαυτῆς.
- 29 Καὶ παρεδιόσαντο αὐτὸν, λέγοντες· Μένοι μεθ' ἡμῶν, ὅτι πρὸς ἑσπέραν ἐστὶ, καὶ κέκλικεν ἡ ἡμέρα. Καὶ εἰσῆλθε ἑ μένειν σὺν αὐτοῖς.
- 30 Καὶ ἐχρῆτο ἐν ταῖς καὶ κλιθῆναι αὐτὸν μετ' αὐτῶν, λαβὼν τῆ ἄρτον δὺ λόγους, καὶ κλάσας ἐπέδιδε αὐτοῖς.

31 Αὐτῶν ἃ διωκόμενοι οἱ ὀφθαλμοί, καὶ ἐπίγνωσαν αὐτὸν καὶ αὐτὸς ἀφαιρέσθη ἀπ' αὐτῶν.

32 Καὶ εἶπεν πρὸς ἀλλήλους· Οὐχὶ ἡ καρδία ἡμῶν κωμωδῆν ἔω ἐν ἡμῖν, ὡς ἐλάλη ἡμῖν ἐν τῇ ὁδῷ, ἕως διωκόμενοι ἡμῖν ὡς θραφάς;

33 Καὶ ἀναστάντες αὐτῇ τῇ ὥρᾳ, ἐπέβησαν εἰς Ἱερουσαλὴμ, καὶ εὗρον συνηθηροισμένους τὰς ἐνδοχὰς καὶ τὰς σὺν αὐτοῖς.

34 Λέγοντας· Ὅτι ἠγάθη ὁ Κύριος οὕτως, καὶ ἔφη Σίμωνι.

35 Καὶ αὐτοὶ ἐξηγῶντες αὐτῷ ἐν τῇ ὁδῷ· ἕως ἐγνώθη αὐτοῖς ἐν τῇ κλάσῃ τῶν ἄρτων.

36 Ταῦτα ἃ αὐτὸς λαλῶντων, αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς ἔφη ἐν μίσθῳ αὐτῶν, καὶ λέγει αὐτοῖς· Εἰρήνῃ ὑμῖν.

37 Πτοηθέντες ἃ καὶ ἐμφοδοὶ θηρόμενοι ἰδοὺ κεν πνεύματι θεωρεῖν.

38 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τί τῶν ἰσχυρῶν ἐστὲ, καὶ ἀγαθὰ ἀγαροισμοὶ ἀναδοκίμου ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;

39 Ἰδὲτε οὖν χεῖράς μου ἕως τὰς πόδας μου ὅτι αὐτὸς ἐγὼ εἰμι· ψηλαφήσατέ μου καὶ ἰδέτε ὅτι πνεύματι σάρκα ἔστιν ἕως ἕως ἐμὲ θεωρεῖτε ἔχοντα.

40 Καὶ τῶντο εἰπὼν ἐπέδραξεν αὐτοῖς ὡς χεῖρας καὶ τὰς πόδας.

41 Ἐπὶ ἃ ἀπιστήτων αὐτῶν ἀπὸ τῆς χαρῆς, καὶ θαυμαζόντων, εἶπεν αὐτοῖς· Ἔχετε ἡ βρώσιμον ἐν ἡμέρᾳ;

42 Οἱ

- 42 Οἱ ᾧ ἐπέδωκαν αὐτῷ ἰχθῦς ὀπίθ' ἑ-
 ρῶ, καὶ ἀπὸ μελισσῶν κηρία.
- 43 Καὶ λαβῶν, ἐνώπιον αὐτῶν ἔφαθον.
- 44 Εἶπε ᾧ αὐτοῖς· Οὗτοι οἱ λόγοι ἕως ἐλάλησα
 πρὸς ὑμᾶς ἐπὶ ἅν σιωπῶ ὑμῖν, ὅτι δεῖ πληρωθῆ-
 ναι πάντα τὰ γεγραμμένα ἐν τῷ νόμῳ Μω-
 σέως, καὶ προφῆταις, καὶ ψαλμοῖς πρὸς ἐμεῦ.
- 45 Τότε διῶοιζεν αὐτῶν τ' ἄντι, καὶ συνιέναι
 ἑαὶ γραφάς.
- 46 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι ἔτι γεγραπτόν, καὶ
 ἔτιως ἴδῃ παθεῖν τὸ Χριστόν, καὶ ἀναστῆναι ἐκ
 νεκρῶν τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ,
- 47 Καὶ κηρυχθῆναι ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ
 ἐν ἅσιν καὶ ἀφεσὶν ἁμαρτιῶν ἐν πάντα τοῖς
 ἔθνεσιν, ἀρχαὶ μὲν ἀπὸ Ἱερουσαλήμ.
- 48 Ὑμεῖς δὲ ἐσεὶ μαρτυρεῖτε τῶντων.
- 49 Καὶ ἰδὼν, ἐγὼ ἀποσέλω τὸ ἐπισημεῖον τῷ
 πατρὶός μου ἐφ' ὑμᾶς· ὑμεῖς δὲ καθίστατε ἐν
 τῇ πόλει Ἱερουσαλήμ ἕως ἃ ἐκδύσηθε διώμα-
 ρην ἐξ ὑψους.
- 50 Ἐξήγαγε ᾧ αὐτὸς ἔξω ἕως εἰς Βηθανίαν· καὶ
 ἐπάρας ἑαὶ χεῖρας αὐτοῦ, εὐλόγησεν αὐτὸν.
- 51 Καὶ ἰχθύεθ' ἐν τῷ εὐλογεῖν αὐτὸν αὐτὸς,
 δέσση ἀπ' αὐτῶν, καὶ ἀνεφέρειθ' εἰς τὸ ἔρανον.
- 52 Καὶ αὐτοὶ προσκυνησάμενοι αὐτόν, ἐπέστρε-
 ψαν εἰς Ἱερουσαλήμ μετ' ἁρῶν μεγάλων.
- 53 Καὶ ἦσαν ἀθεοπαῖδες ἐν τῷ Ἰσραὴλ, αἰετῶν
 καὶ εὐλογεῖτες τὸ Θεόν. Ἀμήν.

ΤΟ ΚΑΤΑ ΙΩΑΝΝΗΝ
ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ.

Κεφ. α'. Ι.

1 **Ἐ**Ν ἀρχῇ ἦν ὁ λόγος, καὶ ὁ λόγος ἦν πρὸς τὸ Θεόν, ἐκ Θεοῦ ἦν ὁ λόγος.

2 Οὗτος ἦν ἐν ἀρχῇ πρὸς τὸ Θεόν.

3 Πάντα δι' αὐτοῦ ἐγένετο· καὶ χωρὶς αὐτοῦ ἐγένετο ἕτερον ὃ γέγονεν.

4 Ἐν αὐτῷ ζωὴ ἦν, καὶ ἡ ζωὴ ἦν τὸ φῶς τοῦ ἀνθρώπων.

5 Καὶ τὸ φῶς ἐν τῇ σκοτίᾳ φαίνει, καὶ ἡ σκοτία αὐτὸ οὐ κατέλαβεν.

6 Ἐγένετο ἄνθρωπος ἀπεσταλμένος παρὰ Θεοῦ, ὄνομα αὐτοῦ Ἰωάννης.

7 Οὗτος ἦλθεν εἰς μαρτυρίαν, ἵνα μαρτυρήσῃ περὶ τοῦ φωτός, ἵνα πάντες πιστεύσωσι δι' αὐτοῦ.

8 Οὐκ ἦν ἐκεῖνος τὸ φῶς, ἀλλ' ἵνα μαρτυρήσῃ περὶ τοῦ φωτός.

9 Ἦν τὸ φῶς τὸ ἀληθινόν, ὃ φωτίζει πάντα τὸν ἄνθρωπον ἐρχόμενον εἰς τὸ κόσμον.

10 Ἐν τῷ κόσμῳ ἦν, καὶ ὁ κόσμος δι' αὐτοῦ ἐγένετο· καὶ ὁ κόσμος αὐτὸν οὐκ ἔγνω.

11 Εἰς τὰ ἴδια ἦλθε, καὶ οἱ ἴδιοι αὐτὸν οὐ παρέλαβον.

12 Ὅσοι

- 12 Ὅσοι ἤ ἔλαβον αὐτὸν, ἔδωκεν αὐτοῖς
ἐξουσίαν τέκνα Θεῶν γενέσθαι, τοῖς πιστεύουσιν
εἰς τὸ ὄνομα αὐτοῦ·
- 13 Οἱ οὖν ἐξ αἰμάτων, ἔδδ' ἐκ θελήματι Θε-
σαρκῆς, ἔδδ' ἐκ θελήματι Θεοῦ ἀνδρῶς, ἀλλ' ἐκ
Θεῶν ἐγενήθησαν.
- 14 Καὶ ὁ λόγος σαρκὸς ἐγένετο· καὶ ἐσκήνωσεν
ἐν ἡμῖν, (καὶ ἐθεασάμεθα πλὴν δόξαν αὐτοῦ,
δόξαν ὡς μονογενοῦς πατρὸς) πλήρης
χάρου καὶ ἀληθείας.
- 15 Ἰωάννης μαρτυρεῖ περὶ αὐτοῦ, ἔκ κέκραγε,
λέγων· Οὐβρὸς λαῶν ἐῖπον· Ὁπίσω με ἐρχόμε-
νος, ἔμπροσθέν μου γέγονεν· ὅτι πρῶτος με λαῶν.
- 16 Καὶ ἐκ τῶ πληρώματος αὐτοῦ ἡμεῖς πάν-
τες ἐλάβομεν, καὶ χάριν ἀπὸ χάριτος·
- 17 Ὅτι ὁ νόμος διὰ Μωσέως ἐδόθη· ἡ χάρις
καὶ ἡ ἀλήθεια διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐγένετο.
- 18 Θεοὶ οὐδεὶς ἰώρακε πώποτε· ὁ μονογενοῦς υἱός, ὁ
ὢν εἰς τὸ κόλπον τοῦ πατρὸς, ἰκεῖνος ἐξηγήσατο.
- 19 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία τοῦ Ἰωάννου, ὅτε
ἀπέστειλαν οἱ Ἰουδαῖοι ἐξ Ἱεροσολύμων ἱερεῖς
καὶ λαιμοὺς, ἵνα ἐρωτήσωσιν αὐτόν· Σὺ τίς εἶ;
- 20 Καὶ ἀπελόγησε, καὶ οὐκ ἠρνήσατο· ἔωμθ-
λόγησεν· Ὅτι οὐκ εἰμὶ ἐγὼ ὁ Χριστός.
- 21 Καὶ ἠρώτησαν αὐτόν· Τί οὖν; Ἡλίας εἶ-
σύ; Καὶ λέγει· Οὐκ εἰμὶ. Ὁ Ἐλισσῆς εἶ-
σύ; Καὶ ἀπεκρίθη· Οὐ.
- 22 Εἶπον οὖν αὐτῷ· Τίς εἶ; ἵνα ἀποκρισὶν δῶμεν
τοῖς

τοῖς πέμψασιν ἡμῶς· τί λέγεις πρὸς αὐτούς;

23 Ἐφ' ἧς ἔγωγε φωνή βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ·
Εὐφύναιε ἢ ὄδον Κυρίου καθὼς εἶπεν Ἡσαΐας
ὁ παροφθής.

24 Καὶ οἱ ἀπεσταλμένοι, ἦσαν ἐκ τῶν Φαρισαίων·

25 Καὶ ἠρώτησαν αὐτόν, καὶ εἶπον αὐτῷ· Τί
οὐκ ἔβαπτίζεις, εἰ σὺ οὐκ εἶ ὁ Χριστός, ἢ τε
Ἡλίας, ἢ τε ὁ παροφθής;

26 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰωάννης, λέγων· Ἐγὼ
βαπτίζω ἐν ὕδατι· μέσθ' ἡμεῶν ἔστηκεν
ὃν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε·

27 Αὐτός ἐστιν ὁ ὀπίσω μου ἐρχόμενος, ὃς ἔμ-
προσθεν μου γέγονεν· ἢ ἐγὼ οὐκ εἶμι ἄξιός
ἵνα λύσω αὐτῷ τὸ ἰμάντα ἢ ὑποδήματός.

28 Ταῦτα ἐν Βηθαβαρᾷ ἐγένετο πέραν τῆς
Ἰορδάνης, ὅπου Ἰωάννης βαπτίζων.

29 Τῇ ἐπαύριον βλέπων ὁ Ἰωάννης τὸ Ἰησοῦν
ἐρχόμενον πρὸς αὐτόν, ἔλεγε· Ἴδε ὁ ἄμυνός
ἐστι Θεοῦ ὁ αἴρων τὰ ἁμαρτίαν τῆς κόσμου.

30 Οὗτός ἐστι πρὸς ἃ ἔγωγε εἶπον· Ὁπίσω μου
ἔρχεται ἄνθρωπος, ὃς ἔμπροσθεν μου γέγονεν· ὅτι
πρὸς τὸς μου ἴσως.

31 Καὶ γὰρ οὐκ ᾔδειν αὐτόν· ἀλλ' ἵνα φανε-
ρωθῇ τῷ Ἰσραὴλ, διὰ τὸ ἦλθεν ἐγὼ ἐν
τῷ ὕδατι βαπτίζων.

32 Καὶ ἐμαρτύρησεν Ἰωάννης, λέγων· Ὅτι τε-
τέαμα τὸ πνεῦμα καθαροῦ ὡσεὶ πρὸς τε-
ραρὸν ἐξ οὐρανοῦ, ἔμεινεν ἐπ' αὐτόν.

33 Καὶ γὰρ

- 33 Καὶ ὅτε ἤδεν αὐτόν· ἀλλ' ὁ πέμψας με βαπτίζεν ἐν ὕδατι, ἐκείνός μοι εἶπεν· Ἐφ' οὗ αὐτὸς ἴδης τὸ πνεῦμα καθάβαϊνοι καὶ ῥόμοι ἐπ' αὐτὸν, ὅτι ἐστὶν ὁ βαπτίζων ἐν πνεύματι ἁγίῳ.
- 34 Καὶ ἠώρακα, καὶ μεμαρτύρηκα ὅτι ἐτός ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ.
- 35 Τῇ ἐπιώρῳ παλιν εἰσηκὼς ὁ Ἰωάννης, καὶ ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δύο.
- 36 Καὶ ἐμβλέψας τῷ Ἰησοῦ περιπαῖσιντι, λέγει· Ἴδε ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ.
- 37 Καὶ ἤκουσαν αὐτοῦ οἱ δύο μαθηταὶ λαλῶντες, καὶ ἠκολούθησαν τῷ Ἰησοῦ.
- 38 Στραφεῖς δὲ ὁ Ἰησοῦς, καὶ θαυμάζων αὐτοὺς ἀκολούθησας, λέγει αὐτοῖς·
- 39 Τί ζητεῖτε; Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Ῥαββί (ὃ λέγει ἑρμηνεύεται δόκτορας) πῶς μὲν;
- 40 Λέγει αὐτοῖς· Ἐρχεσθε καὶ ἴδετε. Ἦλθον ἑεῖδον πῶς μὲν· καὶ παρ' αὐτῷ ἔμεναν τῆς ἡμέρας ἐκείνης. ὥρα δὲ ἦν ὡς δεκάτη.
- 41 Ἦν Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς Σίμων· Πέτρος, εἷς ἐκ τῶν δύο πῶν ἀκουσάντων τῶν Ἰωάννη, καὶ ἀκολούθησαν αὐτῷ.
- 42 Εὐρίππας δὲ τὸν ἀδελφὸν τῆς Ἰδίου Σίμωνα, καὶ λέγει αὐτῷ· Εὐρέκα μετὰ τῆς Μεσσίας, ὃ ἐστὶ μετ' ἑρμηνεύεται ὁ Χριστός.
- 43 Καὶ ἠκολούθη αὐτὸν πρὸς τὸν Ἰησοῦν. Ἐμβλέψας δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, εἶπε· Σὺ εἶ Σίμων ὁ υἱὸς Ἰωάννη· σὺ κληθήσῃ Κηφᾶς· ὃ ἑρμηνεύεται Πέτρος.
- 44 Τῇ

- 44 Τῇ ἐπιώρῳ ἠθέλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐξελθεῖν εἰς τὴν Γαλιλαίαν· καὶ σύρεισκέ Φίλιπποι, καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἀκολουθετέ μοι.
- 45 Ἦν δὲ ὁ Φίλιππος ἀπὸ Βηθσαϊδά, ἐκ τῆς πόλεως Αἰνιδίς καὶ Πέτρης.
- 46 Εὐρίσκε Φίλιππος τὸν Ναθαναήλ, καὶ λέγει αὐτοῖς· Οὐκ ἔγνωσθε Μωσῆς ἐν ταῖς νόμοις καὶ οἱ προφῆται, σύρεισκέ μοι Ἰησοῦν τὸν υἱὸν τοῦ Ἰωσήφ τὸν ἀπὸ Ναζαρέθ.
- 47 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ναθαναήλ· Ἐκ Ναζαρέθ διώαται πᾶσατος εἶναι; λέγει αὐτοῖς Φίλιππος· Ἔρχε καὶ ἴδε.
- 48 Εἶδεν ὁ Ἰησοῦς τὸν Ναθαναήλ ἐρχόμενον πρὸς αὐτὸν, καὶ λέγει πρὸς αὐτὸν· Ἰδε ἀληθῶς Ἰσραηλίτης ἐν ᾧ δόξα σου ἐστίν.
- 49 Λέγει αὐτοῖς Ναθαναήλ· Πόθεν με γινώσκες; ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Πρὸ τοῦ σε Φίλιπποι φανῆσαι, ὅτι ἐγὼ ὑπὸ τῆς συκῆς, εἶδόν σε.
- 50 ἀπεκρίθη Ναθαναήλ, καὶ λέγει αὐτοῖς· Ῥαββί, σὺ εἶ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τοῦ Ἰσραήλ.
- 51 ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι εἶπόν σοι· Εἶδόν σε ὑπὸ τῆς συκῆς, πιστεύεις; μείζω τούτων ὄψομαι.
- 52 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· Ἀπ' ἄρτι ὄψεσθε τὸν θρανὸν ἀνεωχθῆναι, καὶ τὰς ἀγγέλους τοῦ Θεοῦ ἀναβαίνοντας καὶ κατεβαίνοντας ἐπὶ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου.

Κεφ.

- 1 **Κ**αὶ τῆ ἡμέρα τῆ τρίτῃ γάμοι ἐγένετο ἐν Κανᾷ τῆ Γαλιλαίας· καὶ ἦν ἡ μήτηρ τοῦ Ἰησοῦ ἐκεῖ.
- 2 Ἐκλήθη δὲ καὶ ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ εἰς τὸν γάμον.
- 3 Καὶ ὑστερήσαντο οἶνον, λέγει ἡ μήτηρ τοῦ Ἰησοῦ πρὸς αὐτήν· Οἶνον οὐκ ἔχουσι.
- 4 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Τί ἐμοὶ καὶ σοὶ γύναι· ἔγωγε καὶ ἡ ἄρα με.
- 5 Λέγει ἡ μήτηρ αὐτῆ τοῖς ἀφικηνοῖς· Ὁ, τι αὐτὴ λέγει ὑμῖν ποιήσατε.
- 6 Ἦσαν γὰρ ἐκεῖ ὑδρίαὶ λίθιναι ἕξ, κείμεναι καὶ τῆ καθαρισμῶν τῶ ἰουδαίων, χωρησασαὶ ἀνά μιτρηθεὶς δύο ἢ τρεῖς.
- 7 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Γεμίσατε ταῖς ὑδρίας ὕδατι. Καὶ ἐγένεσαν αὐταῖς ἕως αἴω.
- 8 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἀντλήσατε νῦν, καὶ φέρετε τὰ δοχεύκια κλίω. Καὶ ἤνεκον.
- 9 Ὡς γὰρ ἐγένετο ὁ δοχεύκιον τὸ ὕδωρ οἶνον γεννημένον, (καὶ οὐκ ἔδει πόθεν ἐστίν· οἱ γὰρ ἀφικηνοὶ ἠδῆσαν οἱ ἠντληκότες τὸ ὕδωρ) φανερὸν τὸ νυμφίον ὁ δοχεύκιον.
- 10 Καὶ λέγει αὐτῇ· Παις ἄνθρωπε· ποσὸν τῆ καλὸν οἶνον πίθησι, καὶ ὅταν μεθυσῶσι, τότε τῆ ἐλάσσω σὺ πλήρηκα τῆ καλὸν οἶνον ἕως ἄρτι.
- 11 Ταῦτῳ ἐποίησε τὸ δοχεύκιον τῆ σημείων ὁ Ἰησοῦς ἐν Κανᾷ τῆ Γαλιλαίας, ἐφανερώσας τὴν

τίω δόξαν αὐτῷ· καὶ ἐπίστυσαν εἰς αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

12 Μετὰ τῷτο κατέβη εἰς Καπρναῦμ, αὐτὸς ἔη μήτηρ αὐτῷ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῷ καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτῷ· καὶ ἐκεῖ ἔμειναν ἕ πολλαὶ ἡμέραι.

13 Καὶ ἔρχυς ἰὼ τὸ πύργα τῷ Ἰσδαίω, καὶ ἀνέβη εἰς Ἱεροσόλυμα ὁ Ἰησοῦς.

14 Καὶ οὖρον ἐν τῷ ἱερῷ τὰς πωλῆντας βόας καὶ ἀρῶβατα καὶ ἀείστραῖς, καὶ τὰς κερματιστὰς κατημάρας.

15 Καὶ παίησας φραγέλιον ἐκ χοινίω, πάντας ἐξέβαλεν ἐκ τῷ ἱερῷ, τὰ τε ἀρῶβατα καὶ τὰς βόας· καὶ τῷ κηλυβιστῶν ἐξέχευ τὸ κέρμα, καὶ ἰαὶς τρεπέζας ἀνέστρεψε.

16 Καὶ τοῖς ἰαὶς ἀείστραῖς πωλῆσιν εἶπεν· Ἀρῶβε ταῦτε ἐν τῷ ἱερῷ· μὴ ποιεῖτε τὸ οἶκον τῷ πατρός μου οἶκον ἐμπορίας.

17 Ἐμνήσθησαν ἡ οἱ μαθηταὶ αὐτῷ, ὅτι γεγραμμένον ἰσίν· Ὁ ζῆλος τῷ οἴκου σου κατέφαγέ με.

18 Ἀπεκρίθησαν ἔν οἱ Ἰσδαῖοι, καὶ εἶπον αὐτῷ· Τί σημεῖον ἀφῆκνύς ἡμῖν, ὅτι ταῦτε ποιεῖς;

19 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Λύσατε τὸ ναὸν τῷτον, καὶ ἐν τρεῖσιν ἡμέραις ἐγερῶ αὐτόν.

20 Εἶπον ἔν οἱ Ἰσδαῖοι· Τεσσαράκοντα καὶ ἕξ ἔτεσιν ἀκροδομήθη ὁ ναὸς τῷτο, καὶ σὺ ἐν τρεῖσιν ἡμέραις ἐγερῆς αὐτόν;

21 Ἐκεῖ-

21 Εκείν[Ⓞ] ἡ ἔλεγε [Ⓞ] εἰς τὸ ναὸν τὸ σάμα[Ⓞ] αὐτῶν.

22 Ὅτε οὖν ἤλθε ἐκ νεκρῶν, ἐμνήσθησαν αἱ μαθηταὶ αὐτῶν ὅτι τῶν ἔλεγον αὐτοῖς καὶ ἐπίσδυσαν τῇ γραφῇ, ἔτα λόγῳ ᾧ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς.

23 Ὡς ἡ [Ⓞ] ἐν Ἱεροσολύμοις ἐν ταῖς πύλαις ἐν τῇ ἑσπέρῃ, πολλοὶ ἐπίσδυσαν εἰς τὸ ὄνομα αὐτῶν, θεωρῶντες αὐτῶν τὰ σημεῖα ἃ ἐποίησεν.

24 Αὐτὸς ἡ ὁ Ἰησοῦς σὺν ἐπίσδυσεν ἑαυτὸν αὐτοῖς, ἀλλὰ τὸ αὐτὸν γινώσκεν πάντας·

25 Καὶ ὅτι ἔχρειαν εἶχεν ἵνα πῶς μαρτυρησῆναι εἰς τὸν ἀνθρώπου· αὐτὸς γὰρ ἐγίνωσκε πῶς ἐν ταῖς ἀνθρώπων.

Κεφ. γ'. 3.

1 Ἦν ἡ ἀνθρώπος ἐκ τῶν Φαρισσαίων· Νικόδημο[Ⓞ] ὄνομα αὐτοῦ, ἀρχιερεὶς τῶν Ἰουδαίων.

2 Οὗτ[Ⓞ] ἤλθε πρὸς τὸν Ἰησοῦν νυκτός, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ραββί, οἶδα μὲν ὅτι ἀπὸ Θεοῦ ἐλήλυθας διδάσκαλ[Ⓞ]· οὐδεὶς γὰρ ταῦτα τὰ σημεῖα δύναται ποιεῖν ἢ σὺ ποιεῖς ἐὰν μὴ ἡ ὁ Θεὸς μετ' αὐτῶν.

3 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω σοι, ἐὰν μὴ ἴης γεννηθῆ ἄνωθεν, οὐ δύναται ἰδεῖν τὴ βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

4 Λέγει πρὸς αὐτὸν ὁ Νικόδημο[Ⓞ]· Πῶς δύναται ἄνθρωπο[Ⓞ] γεννηθῆσαι γέραν ὄντι μὴ δύναται εἰς τὴν κελίαν τῶ μητρὸς αὐτῶν

αὐτῷ δέυτερον εἰσελθεῖν καὶ ἡγνηθῶμαι;

5 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω σοι, εἰάν μή τις ἡγνηθῆ ἔξ ὕδατος καὶ πνεύματος, ἔδυνα) εἰσελθεῖν εἰς τὴ βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

6 Τὸ ἡγνηθῆναι ἐκ τῆ σαρκὸς, σαφές ἐστὶ· Ἐτὸ ἡγνηθῆναι ἐκ τοῦ πνεύματος, πνεύμα ἐστὶ.

7 Μὴ θαυμάσης ὅτι εἶπόν σοι· Δεῖ ὑμᾶς ἡγνηθῶμαι ἀνωθεν.

8 Τὸ πνεῦμα ὅπως θέλει πνεῖ· καὶ τὸ φωνῶ αὐτῷ ἀκέρως, ἀλλ' ὅσον οἶδας πόθεν ἔρχεται) καὶ ποῦ ὑπάγει· ἕτως ἐστὶ πᾶς ὁ ἡγνηθῆς ἐκ τοῦ πνεύματος.

9 Ἀπεκρίθη Νικόδημος) καὶ εἶπεν αὐτῷ· Πῶς δύναται ταῦτα ἡγεῖσθαι;

10 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς) ἔειπεν αὐτῷ· Σὺ εἶ ὁ διδάσκαλος τοῦ Ἰσραὴλ, ἔταῦτα ἔγινώσκεις;

11 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω σοι, ὅτι οὐκ οἶδα μὲν λαλῆσαι, ἔδ' ἔωράκα μὲν μαρτυρῆσαι) καὶ τίνα μαρτυρίαν ἡμεῶν ἔλαμβάνεις.

12 Εἰ) ἐπίστα εἶπον ὑμῖν, ἔε πιστεύετε πῶς, εἰάν εἶπω ὑμῖν τὰ ἐπερράνια, πιστεύσετε;

13 Καὶ ἕδεις ἀναβέβηκεν εἰς τὸ ἔρανον εἰ μή ὁ ἐκ τοῦ ἔρανος) καὶ τοῦ οὐρανοῦ, ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὁ ὢν ἐν τῷ ἔρανο).

14 Καὶ καθὼς Μωσῆς ὑψώσε τὸ ὄφιν ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἕτως ὑψωθῆναι δεῖ τὸ υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου.

15 Ἴνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν, μὴ ἀπόληται, ἀλλ' ἔχη ζωὴν αἰώνιον.

16 Οὕτω

15 Οὕτω γὰρ ἠγάπησεν ὁ Θεὸς τὸ κρῖσμα, ἵνα τὸν υἱὸν αὐτοῦ τὸν μονογενῆ ἔδωκεν, ἵνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν μὴ ἀπόλη, ἀλλ' ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον.

17 Οὐ γὰρ ἀπέστειλε ὁ Θεὸς τὸν υἱὸν αὐτοῦ εἰς τὸ κρῖσμα, ἵνα κείνη τὸ κρῖμα, ἀλλ' ἵνα σωθῇ ὁ κρῖμα δι' αὐτοῦ.

18 Ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν, ἔχει, ὃ μὴ πιστεύων, ἤδη κέχει, ὅτι μὴ πεπίστευκεν εἰς τὸ ὄνομα τοῦ μονογενοῦς υἱοῦ τοῦ Θεοῦ.

19 Αὕτη δὲ ἔστιν ἡ κρίσις, ὅτι τὸ φῶς ἐλήλυθεν εἰς τὸ κρῖμα, καὶ ἠγάπησαν οἱ ἀνθρώποι μᾶλλον τὸ σκότος ἢ τὸ φῶς· ἵνα γὰρ ποιῶσι αὐτῶν τὰ ἔργα.

20 Πᾶς γὰρ ὁ φαῦλα σκέπασαν, μισεῖ τὸ φῶς· καὶ σὺ ἔρχεαι πρὸς τὸ φῶς, ἵνα μὴ ἐλεγχθῇ τὰ ἔργα αὐτοῦ.

21 Ὁ δὲ ποιῶν τὴν ἀλήθειαν, ἔρχεαι πρὸς τὸ φῶς, ἵνα φανερωθῇ αὐτῷ τὰ ἔργα, ὅτι ἐν Θεῷ ἔστιν ἔργα τῆς ἀληθείας.

22 Μετὰ ταῦτα ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ εἰς τὴν Ἰερουσαλήμ· καὶ ἐκεῖ διήκει βραβύχαις μετ' αὐτῶν καὶ ἐβάπτιζεν.

23 Ἦν δὲ καὶ Ἰωάννης βαπτίζων ἐν Αἰνῶν, ἐγγὺς τῆς Σαλείμ, ὅπου ὕδωρα πολλὰ ἵνα ἐκεῖ καὶ παρεγίνοντο καὶ ἐβαπτίζοντο.

24 Οὕτω γὰρ ἵνα βεβλημένον εἰς τὴν φυλακὴν ὁ Ἰωάννης.

25 Ἐξήκει

25 Ἐγένετο ἔν ζήτησις ἐκ τῶ μαθητῶν Ἰωάν-
 18 μῃ Ἰουδαίων περὶ καθαρισμοῦ·

26 Καὶ ἦλθοι πρὸς τὸ Ἰωάννου καὶ εἶπον αὐ-
 τῷ· Γαββι, ὃς ἰὼ μῃ σὺ πέραν τῆ Ἰορδάνου,
 ὡ σὺ μαμαριύρηκας, ἴδε, ἔτι τῷ βαπτίζεις, ἔ-
 πάντες ἔρχοι πρὸς αὐτοῖ.

27 Ἀπεκρίθη Ἰωάννης ἔ εἶπεν· Οὐ δύναται
 ἀνθρώπῳ λαμβάνειν ἕδον ἐὰν μὴ ἢ δεδο-
 μέριον αὐτῷ ἐκ τῆ ἔραου.

28 Αὐτοῖ ὑμεῖς μοι μαρτυρεῖτε ὅτι εἶπον·
 Οὐκ εἰμι ἐγὼ ὁ Χριστός, ἀλλ' ὅτι ἀπεσταλ-
 μένῳ εἰμι ἔμπροσθεν αὐτοῦ.

29 Ὁ ἔχων τὸ νυμφίον, νυμφίῳ ἐστίν· ὁ δὲ
 φίλῳ τῷ νυμφίῳ ὁ ἑστηκὼς ἔ ἀκέων αὐτῷ,
 χαρὰ χαρὰ διὰ τὸ φωνῆναι τῷ νυμφίῳ, αὐτῷ
 οὐκ ἢ χαρὰ ἢ ἐμὴ πετωλῶν).

30 Ἐκεῖνοι δὲ αὐξάνει, ἐμὴ ἢ ἐλατῆσθαι.

31 Ὁ ἀνωγει ἐρχόμενος, ἐπάνω πάντων ἐστίν·
 ὁ ὡ ἐκ τῆ γῆς, ἐκ τῆ γῆς ἐστίν, καὶ ἐκ τῆ γῆς
 λαλεῖ. ὁ ἐκ τῆ ἔραου ἐρχόμενος, ἐπάνω
 πάντων ἐστίν.

32 Καὶ ὁ ἐώρακε καὶ ἤκουσε, τῷτο μαρτυρεῖ·
 ἔ τῷ μαρτυρίῳ αὐτῷ ἕδεις λαμβάνει.

33 Ὁ λαβὼν αὐτῷ τὸ μαρτυρίῳ ἐσφρα-
 γισσε ὅτι ὁ Θεὸς ἀληθῆς ἐστίν.

34 Ὁν γὰρ ἀπέστειλεν ὁ Θεός, τὰ ῥήματα τῷ
 Θεῷ λαλεῖ· ἔ γὰρ ἐκ μέτρου δίδωσιν ὁ Θεός
 τὸ πνεῦμα.

○

35 Ὁ πα-

35 Ο πατήρ ἀγαπᾷ τὸν υἱόν, καὶ πάντα δέ-
δωκεν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ.

36 Ο πιστεύων εἰς τὸν υἱόν, ἔχει ζωὴν αἰώνιον·
ὃς ἂν ἀπέθῃεν πρὸς αὐτόν, σὸν ὄψεται ζωὴν, ἀλλ'
ἢ ὄρα τὸ Θεοῦ μὲν ἐπ' αὐτόν.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Ω**ς οὖν ἔγνω ὁ Κύριος ὅτι ἤκουσαν οἱ
Φαρισαῖοι ὅτι Ἰησοῦς πλείονας μαθη-
ταῖς ποιεῖ καὶ βαπτίζει ἢ Ἰωάννης,

2 (Καίτοιγε Ἰησοῦς αὐτὸς σὸν ἐβάπτισεν,
ἀλλ' οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ)

3 Ἀφῆκε τὸ Ἰσραὴλ, καὶ ἀπῆλθε πάλιν εἰς
τὴν Γαλιλαίαν.

4 Ἐδὲξ αὐτὸν διέρχεσθαι διὰ τῆς Σαμαρείας.

5 Ἐρχεται οὖν εἰς πόλιν τῆς Σαμαρείας λε-
γομένην Σιχαρ, πλησίον τῆς χειρὸς ὃ ἔδωκεν
Ἰακώβ Ἰωσήφ πρὸς αὐτόν.

6 Ἦν δὲ ἐκεῖ πηγὴ τῆς Ἰακώβ· ὃ οὖν Ἰησοῦς
κίχθησθαι ἐκ τῆς ὁδοπορίας, ἐκαθίσθη
ἐκεῖ ἐπὶ τῇ πηγῇ. ὥρα γὰρ ὡσεὶ ἕκτη.

7 Ἐρχετο γυνὴ ἐκ τῆς Σαμαρείας ἀντλήσασθαι
ὕδωρ. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Δός μοι πιεῖν.

8 (Οἱ γὰρ μαθηταὶ αὐτοῦ ἀπεληλύθησαν εἰς
τὴν πόλιν, ἵνα προφᾶς ἀγοράσωσι.)

9 Λέγει οὖν αὐτῇ ἡ γυνὴ ἡ Σαμαρείτις·
Πῶς σὺ Ἰσραῖλ ὢν παρ' ἐμοῦ πιεῖν αἰτεῖς
ὔδατος γυναικὸς Σαμαρείτιδος; ἔ γάρ συγ-
χρῶνται Ἰσραῖτιοὶ Σαμαρείταις.

10 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς ἔειπεν αὐτῇ· Εἰ ἠδὲς
τὸ δαρεαὺν εἶθε, καὶ πῶς ἐστὶν ὁ λέγων σοι· Δός
μοι πιεῖν· σὺ αὖ ἤτησας αὐτὸν, καὶ ἔδωκεν
αὐτοῖσι ὕδωρ ζῶν.

11 Λέγει αὐτῷ ἡ γυνὴ· Κύριε, ἔτε ἀντλη-
μα ἔχης, καὶ τὸ φρέαρ ἐστὶ βαθύ· πόθεν οὖν
ἔχης τὸ ὕδωρ τὸ ζῶν;

12 Μὴ σὺ μείζων εἶ τοῦ πατρὸς ἡμῶν Ἰακώβ,
ὃς ἔδωκεν ἡμῖν τὸ φρέαρ, καὶ αὐτὸς ἐξ αὐτοῦ
ἔπιε, ἔει ἡοὶ αὐτὸς, καὶ τὰ ἡρέμματα αὐτοῦ;

13 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῇ· Πᾶς ὁ
πίπων ἐκ τοῦ ὕδατος τούτου, διψήσει πάλιν.

14 Ὅς δ' αὖ πῖν ἐκ τοῦ ὕδατος ἃ ἐγὼ δώσω
αὐτῷ, ἔμὴ διψήσει εἰς τὸ αἰῶνα· ἀλλὰ τὸ
ὕδωρ ὃ δώσω αὐτῷ, γινήσκει ἐν αὐτῷ πηγὴ
ὑδατος ἀλλομφοῦς εἰς ζωὴν αἰώνιον.

15 Λέγει πρὸς αὐτὸν ἡ γυνὴ· Κύριε, δός μοι
τούτο τὸ ὕδωρ, ἵνα μὴ διψῶ, μηδὲ ἐρχομαι
εἰς ταῦτα ἀντλεῖν.

16 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ὑπάρχει, φώνησον τὸ
ἄνδρα τούτον, καὶ ἔλθε εἰς ταῦτα.

17 Ἀπεκρίθη ἡ γυνὴ καὶ εἶπεν· Οὐκ ἔχω ἄν-
δρα. Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Καλῶς εἶπας·
Ὅτι ἄνδρα σοὶ ἔχω.

18 Πέντε γὰρ ἄνδρας ἔχεις· καὶ νῦν ὃν ἔχης, οὕτως
ἴσθαι ἔσθαι ἀνὴρ. τῶν ἀληθῆς εἰρηκας.

19 Λέγει αὐτῷ ἡ γυνὴ· Κύριε, θεωρῶ ὅτι
προφήτης εἶ σὺ.

- 20 Οἱ πατέρες ἡμῶν ἐν τῷ τῷ ὄρφῳ ἔκρυπτον· καὶ ὑμεῖς λέγετε ὅτι ἐν Ἱεροσολύμοις εἰσὶν ὁ τόπος ὅπου δεῖ κρυπθῆναι.
- 21 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Γύναι, πίσυρὰς ἐστίν μοι ὅτι ἔρχεται ἡ ὥρα, ὅτε ἔτε ἐν τῷ ὄρφῳ τῷ τῷ ἔτε ἐν Ἱεροσολύμοις κρυπθήσῃς τῷ πατρὶ.
- 22 Ὑμεῖς κρυπθῆτε ὅσα οἴδατε· ἡμεῖς κρυπθῆμεν ὅσα οἴδαμεν· ὅτι ἡ σωτηρία ἐκ τῷ Ἰσραὴλ ἐστίν.
- 23 Ἀλλ' ἔρχεται ἡ ὥρα, ἐν ἣν εἰσὶν, ὅτε οἱ ἀληθινοὶ κρυπθήσονται κρυπθῆσονται τῷ πατρὶ ἐν πνεύματι καὶ ἀληθείᾳ· καὶ γὰρ ὁ πατήρ ποιῶν ζητεῖ τοὺς κρυπθῆσοντας αὐτόν.
- 24 Πνεῦμα ὁ Θεὸς καὶ τὸς κρυπθῆσοντας αὐτῶν ἐν πνεύματι καὶ ἀληθείᾳ δεῖ κρυπθῆναι.
- 25 Λέγει αὐτῇ ἡ γυνὴ· Οἶδα ὅτι Μεσσίας ἔρχεται, ὁ λεγόμενος Χριστός· ὅταν ἔλθῃ ἐκεῖνος, ἀναγγελεῖ ἡμῖν πάντα.
- 26 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ εἰμι, ὁ λαλῶν σοι.
- 27 Καὶ ἐπὶ τῷ τῷ ἦλθεν οἱ μαθηταὶ αὐτῶν, καὶ ἐθαύμασαν ὅτι μὴ γινώσκουσιν ἐλάλει· ἐδίδου μὲν τοι εἶπε· Τί ζητεῖς; ἢ, τί λαλεῖς μετ' αὐτῆς;
- 28 Ἀφῆκεν ἐν τῷ ὕδατι αὐτῆς ἡ γυνὴ, καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν πόλιν, καὶ λέγει τοῖς ἀνθρώποις·
- 29 Δεῦτε, ἴδετε ἄνθρωπον ὃς εἶπέ μοι πάντα ὅσα ἐποίησα· μήτι ἄνθρωπος ἐστίν ὁ Χριστός;
- 30 Ἐξῆλθεν οὖν ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἤρχοντο πρὸς αὐτόν.

- 31 Ἐν ᾧ τὰ μαθητὰν ἠρώτων αὐτὸν εἰ μαθη-
ται, λέγοντες· Ῥαββί, Φάρι.
- 32 Ὁ ᾧ εἶπεν αὐτοῖς· Ἐγὼ βρωσὴν ἔχω φα-
γεῖν ἢ ὑμεῖς οὐκ οἴδατε.
- 33 Ἐλέγον ἔν οι μαθηταὶ πρὸς ἀλλήλους·
Μή τις ἠνάγκην αὐτῷ φαγεῖν;
- 34 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐμὸν βρωμαῖόν ἐστιν,
ἵνα ποιῶ τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου, καὶ
τελώσω αὐτῷ τὸ ἔργον.
- 35 Οὐχ ὑμεῖς λέγετε ὅτι ἐπὶ τετραμυῶνόν ἐστι,
(ὁ θερισμὸς ἔρχεται); Ἰδὲ, λέγω ὑμῖν, ἐπάρατε
τὰς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, καὶ θεάσατε τὰς χώρας
ὅτι λευκαὶ εἰσι πρὸς θερισμὸν ἤδη.
- 36 Καὶ ὁ θερίζων, μισθὸν λαμβάνει, καὶ
συνάξει καρπὸν εἰς ζωὴν αἰώνιον· ἵνα καὶ ὁ
σπείρων ὁμοῦ χαίρη, ὁ θερίζων.
- 37 Ἐγὼ δὲ τὸν λόγον ἐστὶν ὁ ἀληθινός, ὅτι
ἄλλοι εἰσι ὁ σπείρων, ὁ θερίζων.
- 38 Ἐγὼ ἀπέστειλα ὑμᾶς θερίζειν ὅ ἐχ ὑμεῖς
κεκοπιάκατε· ἄλλοι κεκοπιάκατε, καὶ ὑμεῖς
εἰς τὸ κῆπον αὐτῶν εἰσεληλύθατε.
- 39 Ἐκ τῆ πόλεως ἐκείνης πολλοὶ ἐπίστυ-
σαν εἰς αὐτὸν τῶν Σαμαρειῶν, διὰ τὸ λόγον τῶν
γυναικῶν, μαρτυρίας· Ὅτι εἶπε μοι πάντα
ὅσα ἐποίησα.
- 40 Ὡς ἔν ἤλθον πρὸς αὐτὸν οἱ Σαμαρεῖται,
ἠρώτων αὐτὸν μένειν παρ' αὐτοῖς· ὁ ἔμεινεν
ἐκεῖ δύο ἡμέρας.

- 41 Καὶ πολλὰ πλείους ἐπίστανον διὰ τὸν λόγον αὐτῶν.
- 42 Τῇ πεντηκοντῆ ἡμέρῃ· ὅπ σκέπη διὰ τὸ σίω λαλιὰν πρὸς αὐτοὺς· αὐτοὶ γὰρ ἀκηκράμην, καὶ οἶδαμην ὅτι ἕτις ἐστὶ ἀληθῶς ὁ πατήρ τοῦ Θεοῦ, ὁ Χριστός.
- 43 Μετὰ τὴν ἡμέραν δύο ἡμέρας ἐξῆλθεν ἐκεῖθεν, καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν.
- 44 Αὐτοὶς γὰρ ὁ Ἰησοῦς ἐμαρτύρησεν ὅτι πατήρ ἐστὶν ἐν τῇ ἰδίᾳ πατρὶδι πρὸς τὸν πατέρα.
- 45 Ὅτε ἐν ἤλθεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, ἐδίδξαντο αὐτὸν οἱ Γαλιλαῖοι, πάντα ἐρωτησάντες αὐτὸν ἐποίησεν ἐν ἱεροσολύμοις ἐν τῇ ἑορτῇ· καὶ αὐτοὶ γὰρ ἤλθον εἰς τὴν ἑορτήν.
- 46 Ἦλθεν ἐν τῷ Ἰησοῦς πάλιν εἰς τὴν Καιᾶν τῆς Γαλιλαίας, ὅπου ἐποίησεν τὸ ὕδωρ οἶνου. Καὶ ἦν παρὰ βασιλικῆς, καὶ ὁ υἱὸς ἠοθεν ἐν Καπερναῶν.
- 47 Οὐτόν· ἀκούσας ὅτι Ἰησοῦς ἦκεν ἐκ τῆς Ἰδαίας εἰς τὴν Γαλιλαίαν, ἀπῆλθε πρὸς αὐτὸν, καὶ ἠρώτη αὐτὸν ἵνα κληθεῖ καὶ ἰάσῃται αὐτῶν τὸ υἱόν· ἡμελλε γὰρ ἀποθνήσκειν.
- 48 Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς πρὸς αὐτόν· Ἐὰν μὴ σημεῖα καὶ τέρατα ἴδῃτε, οὐ μὴ πιστεύσητε.
- 49 Λέγει πρὸς αὐτόν ὁ βασιλικός· Κύριε, κληθεῖσθε πρὸς ἀποθνήσκειν τὸ παιδίον μου.
- 50 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Πορεύου· ὁ υἱὸς ζῆ. Καὶ ἐπίστανεν ὁ ἀνθρώπος τὸν λόγον· καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰησοῦς· καὶ ἐπορεύθη.

- 51 Ἦδη δὲ αὐτῆ καὶ θαύνοισιν, οἱ δὲλοι αὐτῆ ἀπώθησαν αὐτῆ, καὶ ἀπήχθησαν, λίγνοιες· Ὅτι ὁ παῖς ζ' ζη'.
- 52 Ἐπίτεθ' ἔν παρ' αὐτῶν τ' ἄραν ἐν ἡ κρηψότερον ἔχε· καὶ εἶπον αὐτῆ· Ὅτι χθές ἄραν ἐδοξίμην ἀφῆκεν αὐτῶν ὁ πυρεθς.
- 53 Ἐγὼ οὖν ὁ πατήρ ὅτι ἐν ἐκείνῃ τῇ ἄρα ἐν ἡ εἶπον αὐτῆ ὁ Ἰησῦς. Ὅτι ὁ υἱός ζ' ζη'. καὶ ἐπίστυσεν αὐτὸς ἐ ἡ οἰκία αὐτῆ ὅλη.
- 54 Τῶν παλιν δόύτεροι σημεῖοι ἐποίησεν ὁ Ἰησῦς, ἐλθὼν ἐκ τ' Ἰουδαίας εἰς πλὴν Γαλιλαίας.

Κεφ. ε'. ς.

- 1 Μετὰ ταῦτα πλὴν ἑορτῆ τ' Ἰουδαίων, ἐ ἀνέβη ὁ Ἰησῦς εἰς Ἱεροσόλυμα.
- 2 Ἐστὶ ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις ἐπὶ τῇ πρυβαλικῇ κολυμβήθρῃ, ἡ ἐπιλεγεμένη Εἰσραϊεῖ Βηθεσδαί, πέντε σταδία ἔχουσα.
- 3 Ἐν ταύταις κατέκειτο πλὴν πολλὸν τ' ἀδενείων, τυφλῶν, χωλῶν, ξηρῶν, ἐκδεχόμενων τ' τ' ὑδαίνου κίνησιν.
- 4 Ἄγγελος γὰρ καὶ κηροὶ κρητέοαται ἐν τῇ κολυμβήθρῃ, ἐ ἐλάττωσε τὸ ὑδωρ· ὅ ἐν πρυπτιοῦ ἐμοδῶς μετ' τ' παραχρῆν τ' ὑδαίος, ὕγιης ἐγίνετο, ἢ δὴ ποτε κατέκειτο νοσήματι.
- 5 Ἦν δὲ τις ἀνθρωπος ἐκεῖ τριάκοντα ὅκλιον ἔτη ἔχων ἐν τῇ ἀδενείῃ.
- 6 Τῶν ἰδῶν ὁ Ἰησῦς κατέκειμενον, καὶ

γινῆς ὅτι πολὺν ἤδη χρόνον ἔχθ'· λέγει αὐτῷ·
Θείης ὑγιῆς γνοῖσθ'·

7 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ἀσθενῶν· Κύριε, ἀν-
θρωπον ἔκ ἐχω, ἵνα, ὅταν παραχθῆ τὸ ὕδωρ,
βάλλῃ με εἰς τὸ κλυμδοῦναι· ἐν ᾧ ἢ ἔρχομαι
ἐγὼ, ἀλλ' ὡς πρὸς ἐμεῦ καθ' ὅσον αἰτέ.

8 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐρχομαι, ἄρα, ἔραρον τὸ κλυδο-
βαθὸν (σ, κ) φειπάτῃ.

9 Καὶ δὴ θῆκας ἐγγύθ' ὑγιῆς ὁ ἀνθρωπ'· ἔ-
ηρε τὸ κλυδοβαθὸν αὐτῷ, κ) φειπάτῃ. ἰὼ ἢ
σαδοβαθὸν ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ.

10 Ἐλέγην ἔν οι Ἰσδαῖοι τῷ περὶ ἀπολυμῆν·
Σαδοβαθὸν ἔστιν, ἐκ ἐξέσει σοι ἄρα τὸ κλυδοβαθὸν.

11 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς· Ὁ ποιήσας με ὑγιῆ,
ἐκεῖνός μοι εἶπεν· Ἄραρον τὸ κλυδοβαθὸν (σ,
κ) φειπάτῃ.

12 Ἠρώτησαν ἔν αὐτῷ· Τίς ἐστιν ὁ ἀνθρωπος ὁ
εἰπὼν σοι Ἄραρον τὸ κλυδοβαθὸν σ, φειπάτῃ;

13 Ὁ ἢ ἰαθεὶς σὺν ἡδὲ πῆς ἐστιν· ὁ γὰρ Ἰησοῦς
ἐξέτισσει ὄχλον οὐτ' ἐν τῷ τόπῳ.

14 Μετὰ ταῦτα δὲ εὗρεν αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ
ἱερῷ, ἔειπεν αὐτῷ· Ἴδε, ὑγιῆς γέγραπας· μηκέτι
ἀμαρτάνῃσθε, ἵνα μὴ χειρὸν ἔσσι γίνηται.

15 Ἀπῆλθεν ὁ ἀνθρωπος, κ) ἀνήγγελε τοῖς Ἰσ-
δαῖοις ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ ποιήσας αὐτὸν ὑγιῆ.

16 Καὶ διὰ τῆτο ἰδῶκεν τὸ Ἰησοῦν οἱ Ἰσ-
δαῖοι, ἔ ἐζήτην αὐτὸν ἀποκρίσασθαι, ὅτι ταῦτα
ἔπειθ' ἐν σαδοβάτῳ.

17 Ὁ ἢ

17 Ο ἢ Ἰησοῦς ἀπεκρίνατο αὐτοῖς· Οὐ πατήρ
 με ἕως ἄρτι ἐργάζει, καὶ γὰρ ἐργάζομαι.

18 Διὰ τὸτο ἐν μαῶλοι ἐζητήσιν αὐτὸν οἱ Ἰου-
 δαῖοι ἀποκρίσασθαι, ὅτι ἔμνηστον ἔλπει τὸ σαῶ-
 βαῖον, ἀλλὰ καὶ πατέρα ἴδιον ἔλεγε τὸ Θεόν,
 ἴσον ἑαυτὸν ποιῶν τῷ Θεῷ.

19 Ἀπεκρίνατο δὲ ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἔδυναται ὁ υἱὸς
 ποιῆν ἅφ' ἑαυτοῦ ἔσθην, ἐὰν μὴ ἴδω βλίπτῃ τὸ
 πατέρα ποιῶντα· ἃ γὰρ αὐτὸς ἐκεῖνος ποιῆ,
 τῶτα καὶ ὁ υἱὸς ὁμοίως ποιεῖ.

20 Οὐ γὰρ πατήρ φιλεῖ τὸ υἱόν, καὶ πάντα δείκνυ-
 σιν αὐτῷ ἃ αὐτὸς ποιεῖ· καὶ μείζονα τούτων
 δείξει αὐτῷ ἔργα, ἵνα ὑμεῖς θωμάσητε.

21 Ὡς περὶ γὰρ ὁ πατήρ ἐγείρει τὰς νεκρὰς καὶ
 ζωοποιεῖ, ἕτω καὶ ὁ υἱὸς ἕως θανάτου ζωοποιεῖ.

22 Οὐδὲ γὰρ ὁ πατήρ κρίνει ἔσθην, ἀλλὰ τὸ
 κρίσιν πᾶσι δέδωκε τῷ υἱῷ.

23 Ἴνα πάντες πνεύσιν τὸ υἱόν, καθὼς πνεύσιν
 τὸ πατέρα. ἢ μὴ πνεύσιν τὸ υἱόν, ἔπνευσε τὸ πα-
 τέρα τὸ πνεύμα αὐτόν.

24 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ὁ τὸ λόγον με
 ἀκούων, ἔστις ὢν τῷ πνεύματι με, ἔχει
 ζωὴν αἰώνιον· ἔστις κρῖνον σὸς ἔργου). ἀλλὰ
 μετὰ τοῦτο ἐκείνους θανάτου εἰς τὸ ζῆν.

25 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔρχεται ὥρα, καὶ
 νῦν ἐστίν, ὅτε οἱ νεκροὶ ἀκούσονται τὸ φωνῆς τοῦ
 υἱοῦ τοῦ Θεοῦ· ἔσθι ἀκούσασθαι ζήσονται).

Ο 5 26 Ὡς περὶ

- 26 Ὡς περ γὰρ ὁ πατὴρ ἔχει ζωὴν ἐν ἑαυτῷ, ἕτως ἔδωκεν ἔτι καὶ ζωὴν ἔχειν ἐν ἑαυτῷ.
- 27 Καὶ ἕξασίαν ἔδωκεν αὐτῷ ἐκ κρίσεως ποιῆν, ὅτι υἱὸς ἀνθρώπου ἐστίν.
- 28 Μὴ θαυμάζετε τῆς· ὅτι ἔρχεται ἄρα ἐν ἡμῖν πάντες οἱ ἐν τοῖς μνημαείοις ἀπέσονται τῆ φωνῆς αὐτῆς.
- 29 Καὶ οὐκ ἀπορούσονται οἱ τὰ ἀγαθὰ ποιήσασθαι, εἰς ἀνάστασιν ζωῆς· οἱ δὲ τὰ φαῦλα πρᾶξιαι, εἰς ἀνάστασιν κρίσεως.
- 30 Οὐ δύναμαι ἐγὼ ποιῆν ἄπ' ἑμαυτοῦ ἕδεν κατὰ ἑκείνους, κρίνω· κἢ ἡ κρίσις ἡ ἐμὴ δικαία ἐστίν· ὅτι ἐζηῶ τὸ θέλημα τὸ ἐμὸν, ἀλλὰ τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς με πατρὸς.
- 31 Ἐὰν ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ ἑμαυτοῦ, ἡ μαρτυρία μου οὐκ ἐστὶ ἀληθής.
- 32 Ἄλλοι ἐστὶν ὁ μαρτυρῶν περὶ ἐμοῦ, καὶ οἶδα ὅτι ἀληθής ἐστιν ἡ μαρτυρία μου μαρτυροῦν περὶ ἐμοῦ.
- 33 Ὑμεῖς ἀπιστοῦσατε πρὸς Ἰωάννην, ὃς μαρτυροῦν τῇ ἀληθείᾳ.
- 34 Ἐγὼ δὲ οὐκ ἔχω ἀνθρώπου τὴ μαρτυρίαν λαμβάνω· ἀλλὰ ταῦτα λέγω ἵνα ὑμεῖς σωθῆτε.
- 35 Ἐκεῖνος ἦν ὁ λύχνος ὁ κηρόμυλον καὶ φάει· ὑμεῖς δὲ ἠηγήσατε ἀγαλλιασθῆναι πρὸς ἄραον ἐν τῷ φωτὶ αὐτῆς.
- 36 Ἐγὼ δὲ ἔχω τὴ μαρτυρίαν μείζω τοῦ Ἰωάννου· ταῖς ἡμέραις αἱ ἔδωκε μοι ὁ πατὴρ ἵνα τελείωσω αὐτὰς,

αὐτὰ, αὐτὰ τε ἔργα ἃ ἐγὼ ποιῶ, μαρτυρεῖ
 πρὸς ἐμεῖς ὅτι ὁ πατήρ με ἀπέστειλε.

37 Καὶ ὁ πέμψας με πατήρ, αὐτὸς με μαρ-
 τύρηκε πρὸς ἐμεῖς ἕτε φωνῆ αὐτοῦ ἀκηθῆ-
 τε πῶποτε, ἕτε εἶδῃ αὐτοῦ ἐωρακήσῃτε.

38 Καὶ τὸ λόγον αὐτοῦ ἐκ ἔχῃτε μνῆσθαι ἐν ὑμῖν ὅτι
 ὁ ἀπέστειλεν σκεῖνος, τῆσται ὑμεῖς ἔπισθῆτε.

39 Ἐρωτῆσατε τὰς γραφὰς, ὅτι ὑμεῖς δοκεῖτε
 ὅτι αὐταῖς ζωὴν αἰώνιον ἔχῃν· καὶ σκεῖναί ἐ-
 στι αἱ μαρτυρίαι πρὸς ἐμεῖς.

40 Καὶ ἔθέλετε εἰλθεῖν πρὸς με, ἵνα ζωὴν
 ἔχητε.

41 Δόξα ὡς ἀνθρώπων ἔλαμδάνω·

42 Ἀλλ' ἔγνωκα ὑμῶς ὅτι τὸ ἀγαπῆναι τὸ θεῖον
 ὅσα ἔχῃτε ἐν ἑαυτοῖς.

43 Ἐγὼ ἐλήλυθα ἐν τῷ ὀνόματι τῷ πατρὸς
 με, ἔ ἐλαμδάνετε με· ἐὰν ἄλλῃ ἐλθῇ ἐν
 τῷ ὀνόματι τῷ ἰδίῳ, σκεῖνον λήψετε.

44 Πῶς δύνασθε ὑμεῖς πισθεῖσαι, ὁδοῦσαν ὡς
 ἀλλήλων λαμδάνοντες, καὶ πῶς δόξαν πῶς
 ὡς τῷ μόνῳ θεῷ ἔζητῆτε;

45 Μὴ δοκεῖτε ὅτι ἐγὼ κατήγγειλα ὑμῶν
 πρὸς τὸν πατέρα· ἐστὶ ὁ κατήγγειλῶν ὑμῶν, Μω-
 σῆς, εἰς ὃν ὑμεῖς ἠλπίκατε·

46 Εἰ γὰρ ἐπισθῆτε Μωσῆ, ἐπισθῆτε αὐ-
 τῷ· πρὸς γὰρ ἐμεῖς σκεῖνον ἔργα ποιῶν.

47 Εἰ ἢ τοῖς σκεῖναις γραμμασιν ἔπισθῆ-
 τε, πῶς τοῖς ἐμοῖς ῥήμασιν πισθῆσῆτε;

Καφ.

Κιφ. ς. 6.

- 1 **Μ**ετὰ ταῦτα ἀπῆλθε ὁ Ἰησοῦς πέραν τῆς
 θαλάσσης τῆς Γαλιλαίας τῆς Τυβεριάδος.
- 2 Καὶ ἠκολούθη αὐτῷ ὄχλος πολὺς, ὅτι
 εὐώρων αὐτῷ τὰ σημεῖα ἃ ἐποίεῖ ἐπὶ τῷ ἁδοι-
 γάντων.
- 3 Ἀνῆλθε ἢ εἰς τὸ ὄρος ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐκεῖ
 ἐκάθητο μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτῶν,
- 4 Ἦν ἢ ἐγγὺς τὸ πᾶχος, ἡ ἰορδὴν τῆς Ἰσδαίων.
- 5 Ἐπάρας οὖν ὁ Ἰησοῦς τὰς ὀφθαλμὰς, καὶ
 θεασάμενος ὅτι πολὺς ὄχλος ἔρχετο πρὸς
 αὐτὸν, λέγει πρὸς τὸν Φίλιππον· Ποῦτοι ἀγ-
 ραίσουμεν ἄρτους, ἵνα φάγωσιν οὗτοι;
- 6 (Τὸτο ἢ ἔλεγε πρὸς αὐτὸν· αὐτὸς γὰρ
 ἠδὲ τί ἐμελλε ποιεῖν)
- 7 Ἀπεκρίθη αὐτῷ Φίλιππος· Διακοσίων
 δινάρων ἄρτοι σὺν δρακμαῖς αὐτοῖς, ἵνα
 ἕκαστος αὐτῶν βραχὺ τι λάβῃ.
- 8 Λέγει αὐτῷ εἰς ἕκ τῶν μαθητῶν αὐτῶν, Ἀν-
 δρέας ὁ ἀδελφὸς Σίμωνος Πέτρος·
- 9 Ἔστι πεδῶριον ἐν ᾧδε ὃ ἔχει πέντε ἄρτους
 κριθίνους καὶ δύο ὀψάρια· ἀλλὰ ταῦτα τί ἔστι
 εἰς τοσούτους;
- 10 Εἶπε ἢ ὁ Ἰησοῦς· Ποιήσατε τὰς ἀνθρώπων
 ἀναπισεῖν. Ἦν ἢ χεῖρ πολὺς ἐν τῷ τόπῳ.
 Ἀνέπιστοι εἰν οἱ ἄνθρωποι τῷ δόκῳ ὡσεὶ πι-
 τακιόλιαι.
- 11 Ἐλαβὸς ἢ τὰς ἄρτους ὁ Ἰησοῦς, καὶ εὐχαρι-
 στήσας

θήσας δίδωκε τοῖς μαθηταῖς, οἱ ᾧ μαθη-
ται τοῖς ἀνακρίμασι· ὁμοίως κὲ ἐκ τῷ ὄψα-
ραίων ὅσον ἤθελον.

12 Ὡς ᾧ ἐνεπλήσθησαν λέγα τοῖς μαθηταῖς
αὐτῶ· Σιωπάζετε τὰ πρὸς δύσιν αὐτῶ κλά-
σματα, ἵνα μὴ ἴε ἀπόλη.

13 Σιωπήσαν οὖν, καὶ ἐγένεσαν δώδεκα
καφίνες κλασμάτων ἐκ τῷ πέντε ἄρτων τῷ
κεραδίαν, ἃ ἐπερίσσευσε τοῖς βεδρωκόσιν.

14 Οἱ γὰρ ἄνθρωποι ἰδόντες ὃ ἐποίησε σημεῖον
ὁ Ἰησοῦς, ἔλεγον· Ὅτι ἐστὶς ἐστὶν ἀληθῶς ὁ προ-
φήτης ὁ ἐρχόμενος εἰς τὸ κόσμον.

15 Ἰησοῦς γὰρ γινῶσκει ὅτι μέλλουσιν ἔρχεσθαι, ἑ ἀρ-
πάξιν αὐτὸν ἵνα ποιήσωσιν αὐτὸν βασιλέα,
ἀνεχώρησε πάλιν εἰς τὸ ὄρη αὐτὸς μόνος.

16 Ὡς ᾧ ὄψια ἐχλύετο, κατέβησαν οἱ μαθη-
ται αὐτῶ ἐπὶ τὴ θάλασσαν.

17 Καὶ ἐμβάντες εἰς τὸ πλοῖον, ἤρχοντο πέραν
τῆ θαλάσσης εἰς Καπερναῦμ. καὶ σκοτία ἦδη
ἐγενήθη, ἑ ὅτι ἐληλύθη πρὸς αὐτῶς ὁ Ἰησοῦς.

18 Ἦτε θάλασσα, ἀνέμω μεγάλη πνέον-
τος, διηγείρετο.

19 Ἐληλακότες γὰρ ὡς περὶ εἰκοσιπέντε ἢ
αἰσάνοντο, θεωροῦσι τὸ Ἰησοῦν πρὸςπαλίνοντα
ἐπὶ τῆ θαλάσσης, ἑ ἐξῆς τῶ πλοῖου κινόμενον·
καὶ ἐφοβήθησαν.

0 Ὁ ᾧ λέγα αὐτοῖς· Ἐγὼ εἰμι, μὴ φοβεῖσθε.

1 Ἦθελον οὖν λαθεῖν αὐτὸν εἰς τὸ πλοῖον·

καὶ

καὶ δέξας τὸ πλοῖον ἐβίβη ἐπὶ τῆ γῆς εἰς
 ἡὲ ἰωάννην.

22 Τῆ ἐπιώρου ὁ ὄχλος ὁ ἑσηκὼς πέραν τῆ
 θαλάσσης, ἰδὼν ὅτι πλοῖάρου ἀλλὰ εἶπε ἡὲ
 εἰ μὴ ἐν, εἰκο εἰς ὁ εἰκοησαν οἱ μα-
 ρηται αὐτῆ, ἔ ὅτι εἰ σωτηρήτε τοῖς μαρ-
 ηταις αὐτῆ ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ πλοῖάρου, ἀλλὰ
 μόνοι οἱ μαρηται αὐτῆ ἀπῆλθον.

23 Ἀλλὰ ἡ ἦλθε πλοῖάρου ἐκ Τίβεριάδου
 εἰκο εἰς τὸ πῦ ὅτι εἰφαρον τῆ ἄρτων, δὲρα-
 ερησῶν εἰς Κυρία.

24 Ὅτε οὐ εἶδεν ὁ ὄχλος ὅτι Ἰησοῦς εἶπε ἐπι
 εἰκο, εἰκο οἱ μαρηται αὐτῆ, εἰκοησαν καὶ
 αὐτῆ εἰς τὰ πλοῖα, ἔ ἦλθον εἰς Καπερναῦμα,
 ζητεῖτες τῆ Ἰησοῦν.

25 Καὶ δὲροντες αὐτὸν πέραν τῆ θαλάσσης,
 εἰπον αὐτῆ· Ραβοῖ, ποτε εἰκο γῆρας;

26 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς εἰκο εἰκο· Ἀλλὰ
 ἀμῶ λέγω ὑμῖν, ζητεῖτε με εἰκο ὅτι εἰκοτε
 σημεῖα, ἀλλὰ ὅτι εἰφαγετε ἐν τῆ ἄρτων, καὶ
 εἰκοησαν.

27 Ἐργάζεσθε μὴ τῆ βρωσιν τῆ ἀποκρυμῶν,
 ἀλλὰ τῆ βρωσιν τῆ μῆστω εἰς ζωὴν αἰώνιον,
 ἡὲ ὁ ἦς εἰκο ἀνθρώπων ὑμῖν δώσῆ· τῆτον γὰρ ὁ
 πατήρ εἰκοφραγεσιν, ὁ Θεός.

28 Εἰπον οὐ εἰκο αὐτὸν. Τί ποιῶμεν εἰκο
 ἐργάζομεθα τὰ ἐργα εἰκο Θεῶ;

29 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς εἰκο εἰκο αὐτοῖς· Τῆτον

ἔστι τὸ ἔργον τοῦ Θεοῦ, ἵνα πισθούσῃτε εἰς ὃν ἀπέ-
στειλεν τὸν υἱόν.

30 Εἶπον οὖν αὐτῷ· Τί οὖν ποιεῖς σὺ σημεῖον,
ἵνα ἰδῶμεν ἐπισθούσμεν σοι; τί ἐργάζῃ;

31 Οἱ πατέρες ἡμῶν τὸ μάννα ἔφαγον ἐν τῇ
ἐρήμῳ, καθὼς ἐστὶ γεγραμμένον· Ἄρτον ἐκ τοῦ
οὐρανοῦ ἔδωκεν αὐτοῖς φαγεῖν.

32 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν ἀμὲν
λέγω ὑμῖν· Οὐ Μωσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὸ ἄρτον
ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· ἀλλ' ὁ πατήρ μου δίδωσιν ὑμῖν
τὸ ἄρτον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ τὸ ἀληθινόν.

33 Ὁ γὰρ ἄρτος τοῦ Θεοῦ ἐστὶν ὁ καταβαίνων ἐκ
τοῦ οὐρανοῦ, ἕως ζωῆς διδόνς τὰ κόσμῳ.

34 Εἶπον οὖν πρὸς αὐτόν· Κύριε, πάντοτε
δός ἡμῖν τὸ ἄρτον τῆτον·

35 Εἶπε ἡ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ εἰμι ὁ ἄρτος τῆ
ζωῆς· ὁ ἐρχόμενος πρὸς με, ἔμὴ πανάσῃ· καὶ
ὁ πισθούων εἰς ἐμέ, ἔμὴ διψήσῃ πώποτε.

36 Ἀλλ' εἶπον ὑμῖν ὅτι καὶ ἐωράκατέ με, καὶ ἔ-
πισθούετε.

37 Πάντο δίδωσί μοι ὁ πατήρ, πρὸς ἐμέ ἥξει·
καὶ τὸ ἐρχόμενον πρὸς με ἔμὴ ἐκβάλω ἔξω.

38 Ὅτι καταβέβηκα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, ἔρχομαι ἵνα
ποιῶ τὸ θέλημα τοῦ ἐμῶν, ἀλλὰ τὸ θέλημα τοῦ
πέμψαντός με.

39 Τῆτον δέ ἐστι τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με
πατρός, ἵνα πᾶν ὃ δέδωκέ μοι, μὴ ἀπολέσω
ἐξ αὐτοῦ, ἀλλὰ ἀναστήσω αὐτὸ ἐν τῇ ἰσχύϊ
ἡμέρα.

40 Τῆτον

- 40 Τῷ δὲ ἐπὶ τὸ θέλημα ἔπεμψαυτός με, ἵνα πᾶς ὁ θεωρῶν τὸ υἱόν, καὶ πισθῶνι εἰς αὐτόν, ἔχη ζωὴν αἰώνιον· Ἐ ἀναστήσω αὐτόν ἐγὼ τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.
- 41 Εὐχόμενοι ἔν οι Ἰουδαῖοι πρὸς αὐτὸν, ὅτι εἶπεν· Ἐγὼ εἰμι ὁ ἀέρος ὁ καθαῖος ἐκ τοῦ οὐρανοῦ.
- 42 Καὶ ἔλεγον· Οὐχ ὅτις ἐστὶν Ἰησοῦς ὁ υἱὸς Ἰωσήφ, ἃ ἡμεῖς οἶδα μὲν τὸ πατέρα καὶ πλὴν μητέρα; Πᾶς ἔν λέγει ἕτερον· Ὅτι ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καθαῖοίθηκα;
- 43 Ἀπεκρίθη ἔν ο Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Μὴ γρηγορεῖτε μετ' ἀλλήλων.
- 44 Οὐδεὶς δύναται ἐλθεῖν πρὸς με, ἐὰν μὴ ὁ πατὴρ ὁ πέμψας με ἐκλύσῃ αὐτόν, καὶ ἐγὼ ἀναστήσω αὐτόν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.
- 45 Ἔστι γε γραμμῶν ἐν τοῖς προφήταις· Καὶ ἔσονται πάντες διδασκῶνι ἔθ Θεῶν· Πᾶς ἔν ὁ ἀκείσας πρὸς τὸν πατέρα, καὶ υἱόν, ἔρχεσθαι πρὸς με.
- 46 Οὐχ ὅτι τὸ πατέρα πὶς ἐώρακεν, ἐἰ μὴ ὁ ὢν πρὸς τὸν Θεόν· ἕτερον ἐώρακε τὸ πατέρα.
- 47 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὁ πισθῶν εἰς ἐμὲ, ἔχη ζωὴν αἰώνιον.
- 48 Ἐγὼ εἰμι ὁ ἀρτὸς τῆς ζωῆς.
- 49 Οἱ πατέρες ὑμῶν ἔφαγον τὸ μῆνιν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἀπέθανον.
- 50 Οὗτός ἐστιν ὁ ἀρτὸς ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καθαῖαν, ἵνα πὶς ἐξ αὐτοῦ φάσῃ καὶ μὴ ἀποθάνῃ.
- 51 Ἐγὼ

- 51 Ἐγὼ εἰμι ὁ ἄρτος ὁ ζῶν, ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ κατεβαίς· ἐὰν τις φάγη ἐκ τούτου ἄρτου (ζήσεται) εἰς τὸ αἰῶνα· καὶ ὁ ἄρτος ὃν ἐγὼ δώσω, ἡ σὰρξ μου ἐστίν, ἣν ἐγὼ δώσω ὑπὲρ τῆς κτήσεως ζωῆς.
- 52 Ἐμαίχοντο δὲ πρὸς ἀλλήλους οἱ Ἰουδαῖοι, λέγοντες· Πῶς δύναται εἶπαι ἡμῖν δεῖναι πικρὰ σάρκα φαγεῖν;
- 53 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ φάγητε τὴν σάρκα τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου, καὶ πίνητε αὐτοῦ τὸ αἷμα, οὐκ ἔχετε ζωὴν ἐν ἑαυτοῖς.
- 54 Ὁ τρώγων μου τὴν σάρκα, καὶ πίνων μου τὸ αἷμα, ἐσχάτως ζωὴν αἰώνιον· καὶ ἐγὼ ἀναστήσω αὐτὸν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.
- 55 Ἡ δὲ σὰρξ μου ἀληθῶς ἐστὶ βρωσίς, καὶ τὸ αἷμά μου ἀληθῶς ἐστὶ πόσις.
- 56 Ὁ τρώγων μου τὴν σάρκα, καὶ πίνων μου τὸ αἷμα, ἐν ἐμοὶ μένει, καὶ ἐγὼ ἐν αὐτῷ.
- 57 Καθὼς ἀπέστειλέ με ὁ ζῶν πατήρ, καὶ ἐγὼ ζῶ διὰ τὸν πατέρα· καὶ ὁ τρώγων μου, καὶ κέσει (ζήσεται) δι' ἐμέ.
- 58 Οὕτως ἐστὶ ὁ ἄρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ κατεβαίς· ὃ καθὼς ἔφαθον οἱ πατέρες ὑμῶν τὸ μάννα, καὶ ἀπέθανον, ὁ τρώγων τούτον τὸν ἄρτον, (ζήσεται) εἰς τὸ αἰῶνα.
- 59 Ταῦτα εἶπεν ἐν σιναγωγῇ διδάσκων ἐν Καπριναῖοις.

- 60 Πολλοὶ οὖν ἀκήσαντες ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, εἶπον· Σκληρὸς ἐστὶν ὁ λόγος· τίς δύναται αὐτῷ ἀκάνει;
- 61 Εἰδὼς ἡ ἰησοῦς ἐν ἑαυτῷ ὅτι ῥηθίζονται παρὰ τούτους οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς· Τούτο ὑμεῖς σκαυδαλίζετε;
- 62 Ἐάν οὖν θεωρῆτε τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἀταβάνοντα ὅπως ἐγὼ τὸ πρῶτον;
- 63 Τὸ πνεῦμα ἐστὶ τὸ ζωοποιῶν, ἡ σαρκὶς οὐκ ὠφελεῖ ἕθεν. τὰ ῥήματα αὐτοῦ ἐγὼ λαλῶ ὑμῖν, πνεῦμα ἐστὶ καὶ ζωὴ ἐστὶν.
- 64 Ἀλλ' εἰσὶν ἐξ ὑμῶν πῆρες οἱ ἐπιστεύσαντες. ἠδὲ γὰρ ἐξ ἀρχῆς ὁ ἰησοῦς πῆρες εἰσὶν οἱ μὴ πιστεύσαντες, καὶ ἴσιν ὁ πατήρ ἀδύνατον αὐτῶν.
- 65 Καὶ ἔλεγεν· Διὰ τούτων εἶρηκα ὑμῖν ὅτι ἕδεις δύναται ἔλθειν παρὸς με εἰὰν μὴ ἡ θεοδουλοῦμαι αὐτῷ ἐκ τῶν πεπεσέντων μου.
- 66 Ἐκ τούτων πολλοὶ ἀπῆλθον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ σκέπεται μετ' αὐτοῦ παρὰ πάντας.
- 67 Εἶπεν οὖν ὁ ἰησοῦς τοῖς δαίδακται· Μὴ καὶ ὑμεῖς θέλετε ὑπαίχθαι;
- 68 Ἀπεκρίθη οὖν αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, πρὸς τίνα ἀπελευσόμεθα; ῥήματα ζωῆς αἰωνίου ἔχεις.
- 69 Καὶ ἡμεῖς πεπιστεύκαμεν καὶ ἐγνωκαμεν ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος.
- 70 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ ἰησοῦς· Οὐκ ἐγὼ ὑμᾶς

ὑμᾶς τὰς δώδεκα ἐξελεξάμεν, καὶ ἐξ ὑμῶν
εἷς ἀπόστολος ἔσται·

71 Ἐλεγε ᾧ τῷ Ἰσδαὺ Σίμων Ἰσκαριώ-
ταν· ἔστω γὰρ ἡμεῖς αὐτὸν πρὸς ἀποδοῦναι
εἰς ἃν ἐκ τῶν δώδεκα.

Κεφ. ζ'. 7.

1 **Κ**αὶ ὡς περὶ τὸ Ἰησοῦς μετὰ ταῦτα ἐν τῇ
Γαλιλαίᾳ· ὁ γὰρ ἤθελεν ἐν τῇ Ἰσθαίᾳ
ὡς περὶ εἶναι, ὅτι ἐζήτησεν αὐτὸν οἱ Ἰσθαῖοι
ἀποκτεῖναι.

2 Ἦν ᾧ ἐξ ἧς ἡ ἰορὴ τῶν Ἰσθαίων ἡ σκίνοπη λίαν.

3 Εἶπον οὖν πρὸς αὐτὸν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ·
Μετὰ ὅσην ἐκτεῖναι, εἰ ὑπάγε εἰς τὴν Ἰσθαίαν,
ἵνα καὶ οἱ μαθηταὶ ἡμεῖς ἰσθῶν ἔργα ἡμεῖς
ἐκτεῖναι.

4 Οὐδεὶς γὰρ ἐν κρυψίᾳ πρὸς ποιῆσαι, καὶ ζητεῖ
αὐτὸς ἐν παρρησίᾳ εἶναι· εἰ ταῦτα ποιῆσιν,
φανέρωσιν ταῦτα τῶν κρυπτῶν.

5 Οὐδὲ γὰρ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν.

6 Λέγει οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὁ κτηρὸς ὁ ἐμὸς
ἔγω πάρεστιν· ὁ δὲ κτηρὸς ὁ ὑμέτερος πάν-
τοτε ἐστὶν ἐτοιμὸς.

7 Οὐ δυνάσκει ὁ κτηρὸς μιθεῖν ὑμᾶς· ἐμὸς
δὲ μιθεῖ, ὅτι ἐγὼ μαρτυρῶ πρὸς αὐτόν, ὅτι τὰ
ἔργα αὐτοῦ πονηρὰ ἔσονται.

8 Ὑμεῖς ἀνάβητε εἰς τὴν ἰορτὴν ταύτην· ἐγὼ
ἔγω ἀναβάναι εἰς τὴν ἰορτὴν ταύτην, ὅτι ὁ
κτηρὸς ὁ ἐμὸς ἔγω πετλήσω.

9 Ταῦτα

- 9 Ταῦτα ἢ εἰπὼν αὐτοῖς, ἐμῆνεν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ.
- 10 Ὡς ἢ ἀνέβησαν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, τότε καὶ αὐτὸς ἀνέβη εἰς τὴν Ἱερουσόλῃμ, ἔφανερώς, ἀλλ' ὡς ἐν κρυπτῷ.
- 11 Οἱ οὖν Ἰουδαῖοι ἐζήτησαν αὐτὸν ἐν τῇ Ἱερουσίῃ, καὶ ἔλεγον· Πῶς ἐστὶν ἐκείνῳ;
- 12 Καὶ ῥηγυσμὸς πολὺς ᾤκει αὐτῷ ἰσχυρῶς ἐν τοῖς ὄχλοις. οἱ μὲν ἔλεγον, ὅτι ἀγαθὸς ἐστὶν ἄλλοι ἢ ἔλεγον· Οὐ· ἀλλὰ πλανᾷ τὸ ὄχλον.
- 13 Οὐδεὶς μὲντοι παρρησίᾳ ἐλάλησεν ᾤκει αὐτῷ, ἀλλὰ τὸ φόβον τῶν Ἰουδαίων.
- 14 Ἦδη ἢ τῆς ἑορτῆς μεσότητος, ἀνέβη ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ ἱερόν, καὶ ἐδίδασκεν.
- 15 Καὶ ἐθαύμαζον οἱ Ἰουδαῖοι, λέγοντες· Πῶς ἔσται ῥηγάμματα οὗτοῦ, μὴ μεμαθηκώς;
- 16 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπε· Ἦ ἐμὴ διδασχὴ ἐστὶν ἐμὴ, ἀλλὰ τὸ πέμψαντός με.
- 17 Ἐάν τις θέλῃ τὸ θέλημα αὐτοῦ ποιεῖν, γνώσει ᾤκει τὴν διδασχὴν, πότερον ἐκ τῶν Θεῶν ἐστὶν, ἢ ἐγὼ ἀπ' ἐμαυτοῦ λαλῶ.
- 18 Ὁ ἀφ' ἐαυτοῦ λαλῶν τὸ δόξαν τῆς ἰδίας ζητεῖ· ὁ ἢ ζητῶν τὸ δόξαν τῶν πέμψαντός αὐτὸν, ἔσται ἀληθὴς ἐστὶ, καὶ ἀδικία ἐν αὐτῷ ἔκ ἐστι.
- 19 Οὐ Μωσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὸ νόμον, ἔ ἐδὲ ἐξ ὑμῶν ποιεῖ τὸ νόμον; τί με ζητεῖτε ἀπακλῆιναι;
- 20 Ἀπεκρίθη ὁ ὄχλος καὶ εἶπε· Δαιμόνιοι ἔχῃς· τίς σε ζητεῖ ἀπακλῆιναι;

21 Ἀπι-

- 21 Ἀπεβλήθη ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ἐν ἔργῳ ἐποίησα, καὶ πάσαις θαυμάζετε.
- 22 Διὰ τοῦτο Μωσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὸ περὶ τῆς
 μηνι, (ὅτι ἔκ τῆς Μωσέως ἐστίν, ἀλλ' ἐκ τῆς πα-
 τέρων) καὶ ἐν σαββάτῳ περὶ ἐμὲ γίνεται ἄνθρωπον.
- 23 Εἰ περὶ τομῆς λαμβάνῃ ἀνθρώπου ἐν
 σαββάτῳ, ἵνα μὴ λυθῇ ὁ νόμος Μωσέως,
 ἐμὴ χαίλατε ὅτι ὅλον ἀνθρώπον ὑγιῆ ἐποίησα
 ἐν σαββάτῳ;
- 24 Μὴ κρίνετε κατ' ὄψιν, ἀλλὰ τὴν δικαίαν
 κρίσιν κρίνατε.
- 25 Ἐλεγον οὖν οὗτοι ἐκ τῆς Ἱεροσολυμιτῶν·
 Οὐχ ἕτερος ἐστὶν ὃς ζητῶσιν ἀποκτεῖναι;
- 26 Καὶ ἰδὲ, παρήρσια λαλεῖ, καὶ ἕδεν αὐτῷ
 λέγουσι· μή ποτε ἀληθῶς ἐγνωσαν οἱ ἀρχόντες
 ὅτι ἕτερος ἐστὶν ἀληθῶς ὁ Χριστός;
- 27 Ἀλλὰ τῶν οἰδαμένων πόθεν ἐστὶν ὁ ὃς Χρι-
 στός ὅταν ἔρχῃ, ἕδεις γινώσκῃ πόθεν ἐστὶν.
- 28 Ἐκραζέει οὖν ἐν τῷ ἱερῷ διδάσκων ὁ Ἰη-
 σοῦς, καὶ λέγων· Καί με οἰδαίτε, καὶ οἰδατε πόθεν
 εἰμὶ καὶ ἀπ' ἐμαυτοῦ ὅτι ἐλήλυθα, ἀλλ' ἐστὶν
 ἀληθινὸς ὁ πῖμψας με, ὃν ὑμεῖς ὅτι οἰδαίτε.
- 29 Ἐγὼ ὃ οἶδα αὐτὸν, ὅτι παρ' αὐτῶ εἰμι,
 καὶ κεῖτός με ἀπίστῃσεν.
- 30 Ἐζήτην οὖν αὐτὸν πιάσαι· καὶ ἕδεις ἐπ-
 ἔβαλεν ἐπ' αὐτὸν τὴν χεῖρα, ὅτι ἔπει ἐλη-
 λυθῆν ἄρα αὐτοῦ.
- 31 Πολλοὶ ὃ ἐκ τῶ ὄχλου ἐπίστῃσαν εἰς αὐτὸν,
 καὶ

- κἄλλεγον Ὅτι ὁ Χριστὸς ὅταν ἔλθῃ, μὴ ἔτι
 τα σημεῖα τέτιν ποιήσῃ ὡς ἔτι ἐποίησεν;
- 32 Ἦκουσαν οἱ Φαρισσαῖοι ἔτι ὄχλος ῥηγίζον-
 τῶν περὶ αὐτῶν ταῦτα· καὶ ἀπέστειλαν οἱ Φα-
 ρισσαῖοι καὶ οἱ ἀρχιερεῖς ὑπερέτας, ἵνα πιά-
 ζωσιν αὐτόν.
- 33 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐπὶ μικρὸν
 χρόνον μετ' ὑμῶν εἰμι, καὶ ἀπάγω αὐτὸς τὸ
 πέμψαντά με.
- 34 Ζητήστέ με, καὶ ἔχ' ἀρήσετε· καὶ ὅπως εἰμι
 ἐγὼ, ὑμεῖς ἔδωκάθε ἐλθεῖν.
- 35 Εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς ἑαυτούς· Πῶς
 ἔτι μίλλῃ πορεύεσθαι, ὅτι ἡμεῖς ἔχ' ἀρήσει-
 μη αὐτόν; μὴ εἰς τὴν Ἀβυssaρὰν τὴν Ἐκλίωσαν
 μίλλῃ πορεύεσθαι, ἢ διδάσκειν τὸς Ἐκλίωσας;
- 36 Τίς ἐστιν ἔτι ὁ λόγος ὃν εἶπε· Ζητήστέ
 με, καὶ ἔχ' ἀρήσετε· καὶ ὅπως εἰμι ἐγὼ, ὑμεῖς ἔ-
 δωκάθε ἐλθεῖν;
- 37 Ἐν τῇ ἑκάτῃ ἡμέρᾳ τῇ μεγάλῃ τῆς ἑορτῆς
 εἰσηκὸς ὁ Ἰησοῦς, ἔκραξε, λέγων· Ἐάν τις
 διψᾷ, ἐρχέστω πρὸς με, καὶ πινέτω.
- 38 Ὁ πισύων εἰς ἐμὲ, καθὼς εἶπεν ἡ ρα-
 φη, ποταμοὶ ἐκ τῆς κρηλίας αὐτῶν ῥύσσονται
 ὑδάτι ζῶντι.
- 39 (Τῆτο δὲ εἶπε περὶ τῆς πνύματι· ἢ
 ἑμελλον λαμβάνειν οἱ πισύοντες εἰς αὐτόν·
 ἔπει γὰρ τὸ πνεῦμα ἄγιον, ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἐδίδαξε
 ἐδοξάσθη)

- 40 Πολλοὶ οὖν ἐκ τῶν ὄχλων ἀκρόασις τῶν λόγων, ἔλεγον· Οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ προφήτης.
- 41 Ἄλλοι ἔλεγον· Οὗτός ἐστιν ὁ Χριστός· ἄλλοι δὲ ἔλεγον· Μὴ γὰρ ἐκ τῆς Γαλιλαίας ὁ Χριστός ἔρχεται;
- 42 Οὐχὶ ἡ γραφὴ εἶπεν, ὅτι ἐκ τῆς σπέρματος Δαβὶδ, καὶ ἀπὸ Βεθλεὲμ τῆς κώμης ὅπου Ἰωὴ Δαβὶδ, ὁ Χριστός ἔρχεται;
- 43 Σχίσμα ἔν ἐν τῷ ὄχλῳ ἐγένετο δι' αὐτόν.
- 44 Τινὲς ὃ ἤθελον ἐξ αὐτῶν πιάσαι αὐτόν· ἀλλ' ἐδὴς ἐπέβαλεν ἐπ' αὐτόν τὰς χεῖρας.
- 45 Ἦλθον ἔν οἱ ὑπερέται πρὸς τὰς δόρυς· καὶ φαρισαῖοι· καὶ εἶπον αὐτοῖς ἐκεῖνοι· Διὰ τί σὺκ ἠγάγετε αὐτόν;
- 46 Ἀπεκρίθησαν οἱ ὑπερέται· Οὐδέποτε ἔτις ἐλάλησεν ἀνθρώπου ὡς ἔτις ὁ ἀνθρώπου.
- 47 Ἀπεκρίθησαν ἔν αὐτοῖς οἱ φαρισαῖοι· Μὴ καὶ ὑμεῖς πεπλανήσθε;
- 48 Μὴ τις ἐκ τῶν δόρυντων ἐπίστυσει εἰς αὐτόν, ἢ ἐκ τῶν φαρισαίων;
- 49 Ἀλλ' ὁ ὄχλος ἔτις ὁ μὴ γινώσκων τὸν νόμον, ἐπικαίρατοί ἐσι.
- ο Λέγει Νικόδημος πρὸς αὐτὸς, ὁ ἐλθὼν νυκτὸς πρὸς αὐτόν, εἰς ἃν ἐξ αὐτῶν·
- ι Μὴ ὁ νόμος ἡμῶν κείνη τὸν ἀνθρώπου, ἐὰν μὴ ἀκρόση παρ' αὐτοῦ πρῶτον, καὶ γὰρ ἡ ποιῆ;

52 Ἀπεκρί-

52 Ἀπεκρίθησαν κὶ εἶπον αὐτῷ· Μὴ καὶ σὺ ἐκ τῆς Γαλιλαίας εἶ; ἐβόησαν κὶ ἰδοὺ ὅτι
 παροφήτης ἐκ τῆς Γαλιλαίας σὺν ἐστὶν ἡμεῖς.

53 Καὶ ἐπορεύθη ἕκαστος εἰς τὸ οἶκόν αὐτοῦ.

Κεφ. η'. 8.

1 Ἰησοῦς ἦ ἐπορεύθη εἰς τὸ ὄρος τῆς Ἐλαιῶν.

2 Ὄρθρῃ δὲ πάλιν παρεγένετο εἰς τὸ ἱερόν,
 κὶ πᾶς ὁ λαὸς ἤρχετο πρὸς αὐτόν· κὶ καθίσαι
 ἐδίδασκεν αὐτούς.

3 Ἄγασιν οἱ γραμματεῖς κὶ οἱ Φαρισαῖοι
 πρὸς αὐτὸν γινώσκοντες ἐν μοιχείᾳ κατέλημ-
 μῆν· κὶ σήσαντες αὐτῷ ἐν μίσει,

4 λέγουσιν αὐτῷ· Διδάσκαλε, αὐτὴ ἡ γυνὴ
 κατέληφθη ἐπιουσίᾳ φάρσιν μοιχοῦ ἡμίση.

5 Ἐν δὲ τῷ νόμῳ Μωσῆς ἡμῖν ἐνετείλατο
 εἰς τοιαύτας λιθοβολεῖσθαι· σὺ δὲ ἄν λέγῃς;

6 Τῷ δὲ ἔλεγον πειράζοντες αὐτόν, ἵνα ἔχῃ
 κατηγορεῖν αὐτοῦ. Ὁ δὲ Ἰησοῦς κἀπεκύ-
 ψας, τῷ δακτύλῳ ἔγραφεν εἰς τὸ γῆλον.

7 Ὡς δὲ ἐπέμνην ἐρωτῶντες αὐτόν, ἀνακύ-
 ψας εἶπε πρὸς αὐτούς· Ὁ ἀναμάρτητος
 ὑμῶν, πρῶτον τὸ λίθον ἐπι αὐτῇ βαλέτω.

8 Καὶ πάλιν κἀπεκύψας, ἔγραφεν εἰς
 τὸ γῆλον.

9 Οἱ δὲ ἀκούοντες ἐκ τῆς συνθήσεως ἐλιθό-
 ληθοι, ἐξήρχοντο εἰς καθ' εἷς, ἀρξάμενος δὲ
 τὸ πρῶτον ἐβουλόνατο εἰς τὸν ἑχάτων· ἐκαλελείφθη
 μόνος ὁ Ἰησοῦς, κὶ ἡ γυνὴ ἐν μέσῳ ἐστῆσα.

10 Ἄνα-

10 Ανακύψας ἢ ὁ Ἰησοῦς, καὶ μηδένα φασά-
 μιν· πάλιν τὸ γυναικὸς, εἶπεν αὐτῇ. Ἡ
 γυνὴ, πῶς ἔστιν οὗτοι οἱ κητήρες σοί, καὶ
 οὐδεὶς πεκατέκρινεν;

11 Ἡ ἢ εἶπεν· Οὐδεὶς, Κύριε. Εἶπε ἢ αὐτῇ ὁ
 Ἰησοῦς· Οὐδὲ ἐγὼ σε κατέκρινω. πορεύου, καὶ
 μηκέτι ἀμαρτάνεις.

2 Πάλιν ἔτι ὁ Ἰησοῦς αὐτοῖς ἐλάλησε, λέγων·
 Ἐγὼ εἰμι τὸ φῶς τῆς ζωῆς· ὁ ἀκούων τῶν ἐμῶν
 οὐ μὴ πατήσῃ ἐν τῇ σκοτίᾳ, ἀλλ' ἐξῆ τὸ
 φῶς τῆς ζωῆς.

3 Εἶπον ἔτι αὐτῷ οἱ Φαρισαῖοι· Σὺ ποῦ
 σεαυτοῦ μαρτυρεῖς ἢ μαρτυρεῖς σοὶ σὺκ ἔστιν
 ἀληθής.

4 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Καὶ
 ἐγὼ μαρτυρῶ ποῦ ἐμαυτοῦ, ἀληθής ἐστιν ἢ
 μαρτυρεῖα μου· ὅτι οἶδα πόθεν ἦλθον, καὶ πῶς
 ὑπάγω· ὑμεῖς δὲ σὺκ οἴδατε πόθεν ἔρχομαι,
 καὶ πῶς ὑπάγω.

5 Ὑμεῖς κτὲρ τὴν σάρκα κρίνετε, ἐγὼ οὐ κρίνω
 οὐδένα.

6 Καὶ ἐὰν κρίνω δι' ἐγὼ, ἢ κρίσις ἢ ἐμὴ
 ἀληθής ἐστιν· ὅτι μόνον σὺκ εἰμὶ, ἀλλ' ἐγὼ καὶ
 ὁ πατήρ με πατήρ.

7 Καὶ ἐν τῷ ὀνόματι ἢ τοῦ ὑμετέρου γέγραπται,
 ὅτι δύο ἀνθρώπων ἢ μαρτυρεῖα ἀληθής ἐστιν.

8 Ἐγὼ εἰμι ὁ μαρτυρῶν ποῦ ἐμαυτοῦ, καὶ
 μαρτυρεῖ ποῦ ἐμὸν ὁ πατήρ με πατήρ.

P

19 Ἐλεγον

- 19 Ἐλεγεν αὐτῷ αὐτὰς· Πῶς ἴσθι ὁ πατήρ σου;
 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐτε ἐγὼ οἶδατε, ἔτι
 τὸ πατέρα μου· εἰ ἐμὲ ἤδατε, καὶ τὸ πατέρα
 μου ἤδατε αὐτόν.
- 20 Ταῦτα πρὸς ῥήματα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐν
 τῷ γαζοφυλακίῳ, διδασκῶν ἐν τῷ ἱερῷ· καὶ
 οὐδεὶς ἐπίστανεν αὐτόν, ὅτι ἔπω ἐληλύθη ἡ
 ὥρα αὐτοῦ.
- 21 Εἶπεν αὐτῶν πάλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ
 ὑπάγω, καὶ ζητήσατέ με, καὶ ἐν τῇ ἀμαρ-
 τίᾳ ὑμῶν ἀποθανεῖσθε· ὅτι ἐγὼ ὑπάγω, ὑμεῖς
 οὐ δύνασθε ἐλθεῖν.
- 22 Ἐλεγον ἔν οἱ Ἰσραῆλι· Μὴν ἀπακλιενεῖ ἐμ-
 οὐς, ὅτι λέγει· Ὅτι ἐγὼ ὑπάγω, ὑμεῖς οὐ δύ-
 νασθε ἐλθεῖν;
- 23 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς ἐὰν τὸ κῆρυξ ἐστὶ,
 ἐγὼ ἐὰν τὸ αὐτὸ εἶμι· ὑμεῖς ἐὰν θεσμός τις
 ἐστὶ, ἐγὼ σίκα εἶμι ἐὰν θεσμός τις.
- 24 Εἶπον ἔν ὑμῖν ὅτι ἀποθανεῖσθε ἐν ταῖς
 ἀμαρτίαις ὑμῶν· ἐὰν γὰρ μὴ πιστεύσῃτε ὅτι ἐγὼ
 εἶμι, ἀποθανεῖσθε ἐν ταῖς ἀμαρτίαις ὑμῶν.
- 25 Ἐλεγεν ἔν αὐτῷ· Σὺ τίς εἶ; Καὶ εἶπεν αὐ-
 τοῖς ὁ Ἰησοῦς· Τὸν ἀρχαῖον ὅτι καὶ λαλοῦμί
 26 Πολλὰ ἔγω φεῖ ὑμῶν λαλοῦν καὶ κερῆναι
 ἀλλ' ὁ πέμψας με ἀληθῆς ἐστὶ· καὶ γὰρ ἂν ἤκουσθε
 παρ' αὐτοῦ, πάντες λίθη εἰς τὸ κῆρυξ.
- 27 Οὐκ ἔγνωσαν ὅτι τὸν πατέρα αὐτοῦ
 ἔλεγον.

28 Εἶπ

28 Εἶπεν ἔν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὅταν ὑψώσῃτε τὸ υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου, τότε γνώσεσθε ὅτι ἐγὼ εἰμι, καὶ ἀπ' ἐμαυτοῦ ποιῶ ἑδὲν, ἀλλὰ κατὰ τὴν ἐξουσίαν ἣν ἔδωκεν ὁ πατήρ μου, ταῦτα λαλῶ.

29 Καὶ ὁ πέμψας με, μετ' ἐμοῦ ἐστίν. ὅτι ἡ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ φωνή με μόνον ὁ πατήρ, ὅτι ἐγὼ καὶ ὁ πατήρ αὐτῶν ποιῶ πάντα.

30 Ταῦτα αὐτῶν λαλῶντων πολλοὶ ἐπίστανσαν εἰς αὐτόν.

31 Ἐλθὼν ἔν ὁ Ἰησοῦς πρὸς τὴν πεντηκόντην αὐτῶν Ἰουδαίων· Ἐὰν ὑμεῖς μείνητε ἐν τῷ λόγῳ τῶ ἐμοῦ, ἀληθῶς μαρτυρηθήσεται ὑμῖν ὅτι ἐγὼ εἰμι.

32 Καὶ γνώσεσθε τὴν ἀλήθειαν, καὶ ἡ ἀλήθεια ἐλευθερώσεται ὑμᾶς.

33 Ἀπεκρίθησαν αὐτῶν Σπέρμα Ἀβραάμ ἐσώθη, καὶ ἑδὲν διὰ τὴν ἐλευθερίαν πᾶσι· πῶς σὺ λέγεις· Ὅτι ἐλευθεροὶ γινώσκουσθε;

34 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀλλὰ ἡ ἀλήθεια λέγω ὑμῖν, ὅτι πᾶς ὁ ποιῶν τὴν ἀμαρτίαν, ὁ δούλος ἐστὶ τῆς ἀμαρτίας.

35 Ὁ δὲ ὄντως υἱὸς τοῦ ἀβραάμ ἐστὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ εἰς τὸ αἰῶνα· ὁ υἱὸς τοῦ ἀβραάμ ἐστὶ τὸν αἰῶνα.

36 Ἐὰν ἔν ὁ υἱὸς ὑμῶν ἐλευθερώσῃ, ὄντως ἐλευθεροὶ ἔσεσθε.

37 Οἶδα ὅτι σπέρμα Ἀβραάμ ἐστε· ἀλλὰ ζητεῖτέ με ἀποκτεῖναι, ὅτι ὁ λόγος ὁ ἐμὸς ἐχρῆται ἐν ὑμῖν.

38 Ἐγὼ δὲ ἐάρακα τὸν πατέρα μου, λαλῶ,

καὶ ὑμεῖς ἐν ὁμιλίᾳ καὶ ᾠδῇ τῷ πατρὶ
ὑμῶν, ποιεῖτε.

39 Ἀπεκλήθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· Οὗ πατὴρ
ἡμῶν Ἀβραάμ ἐστι. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς·
Εἰ τέκνα εἰσθε Ἀβραάμ ἢτε, τὰ ἔργα εἰς Ἀ-
βραάμ ἐποιεῖτε αὐτόν.

40 Νῦν ἢ ζητεῖτέ με ἀποκτείνουσι, ἀνθρώπου
ὅς ἔα ἀλήθειαν ὑμῖν λελάληκα, ὡς ἠκούσατε
ᾠδῇ εἰς Θεόν· τὸ Αβραάμ σὺν ἐποίησεν.

41 Ὑμεῖς ποιεῖτε τὰ ἔργα εἰς πατρὸς ὑμῶν.
Εἶπον ἔτι αὐτῷ· Ἡμεῖς ἐκ πορνείας ἐγεννη-
θήμεθα· ἕνα πατέρα ἔχομεν, τὸν Θεόν.

42 Εἶπεν ἔτι αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ ὁ Θεὸς πα-
τήρ ὑμῶν ὡς, ἠγαπήτε αὐτὸν ἐμὲ ἔγωγε ἔγωγε
εἰς Θεὸν ἐξῆλθον καὶ ἤκου· ἐδὲ γὰρ ἀπ' ἐμαυτοῦ
ἐλάλησα, ἀλλ' ἐκεῖνός με ἀπίστευσε.

43 Διατὴν λαλίαν τὴν ἐμὴν ἐγινώσκετε,
ὅτι ἐδύνασθε ἀκούειν τὸ λόγον τὸν ἐμόν.

44 Ὑμεῖς ἐκ πατρὸς εἰς ἀβόλησιν, καὶ ἐκ
ἐπιθυμίας εἰς πατρὸς ὑμῶν θέλετε ποιεῖν.
ἐκεῖνος ἀνθρώπου ὡς ἀπ' ἀρχῆς, ἐ ἐν
τῇ ἀληθείᾳ ἐχέσθηκεν· ὅτι σὺν ἐστὶν ἀλήθεια
ἐν αὐτῷ. ὅταν λαλήσῃ τὸ ψεῦδος, ἐκ τῶν ἰδίων
λαλεῖ· ὅτι ψύσεως ἐστὶ, καὶ ὁ πατὴρ αὐτοῦ.

45 Ἐγὼ ἢ ὅτι ἔα ἀλήθειαν λέγω, ἐπιστεύετε μοι.

46 Τίς ἐξ ὑμῶν ἐλέγχε με ᾧ αἰμαρτίας; εἰ ἢ
ἀλήθειαν λέγω, ἀλλ' ὑμεῖς ἐπιστεύετε μοι;

47 Ὅν ἐκ Θεοῦ, τὰ ῥήματα Θεοῦ ἀκούετε

ἀλλ'

Δὲ τὸτο ὑμεῖς οὐκ ἀκούετε, ὅτι ἐκ τοῦ Θεοῦ οὐκ ἐστέ.

48 Ἀπεκρίθησαν ἔν οι Ἰουδαῖοι, καὶ εἶπον αὐτῷ· Οὐ καλῶς λέγεις ἡμεῖς, ὅτι Σαμαρείτης εἶ σύ, καὶ δαιμόνιον ἔχεις;

49 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· Ἐγὼ δαιμόνιον οὐκ ἔχω, ἀλλὰ πρῶτον πατέρα μου, καὶ ὑμεῖς ἀπιοῦστέ με.

50 Ἐγὼ δὲ ἐζητῶ πῶς δοῦσαν μου· ἐστὶν ὁ ζητῶν καὶ κριτῶν.

51 Ἀλλὰ ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, εἰάν τις τὸ λόγον τὸ ἐμὸν τηρήσῃ, θανάτου ἐ μὴ θεωρήσῃ εἰς τὸν αἰῶνα.

52 Εἶπον ἔν αὐτῷ οι Ἰουδαῖοι· Νῦν ἐγνώκαμεν ὅτι δαιμόνιον ἔχεις. Ἀβραάμ ἀπέθανε καὶ οι πατρῷοι, καὶ σὺ λέγεις· Εἰάν τις τὸ λόγον μου τηρήσῃ, ἐ μὴ γούσῃ θανάτου εἰς τὸν αἰῶνα.

53 Μὴ σὺ μέζων εἶ τοῦ πατρὸς ἡμῶν Ἀβραάμ, ὅσπερ ἀπέθανε; καὶ οι πατρῷοι ἀπέθανον. τίνα σεαυτῷ σὺ πειθεῖς;

54 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· Εἰάν ἐγὼ δοῦξά ζωῆς αὐτὸν, ἢ δόξα μου ἐδέν ἐστιν· ἐστὶν ὁ πατήρ μου ὁ δοῦξάων με, ὃν ὑμεῖς λέγετε ὅτι Θεὸς ὑμῶν ἐστι.

55 Καὶ οὐκ ἐγνώκατε αὐτὸν· ἐγὼ ὃ οἶδα αὐτὸν· καὶ εἰάν εἶπω ὅτι οὐκ οἶδα αὐτὸν, ἔσομαι ὁμοιωθὺς ὑμῶν, ψεύστης· ἀλλ' οἶδα αὐτὸν, καὶ τὸν λόγον αὐτοῦ τηρῶ.

56 Ἀβραάμ ὁ πατήρ ὑμῶν ἠγαλλιάσατο

ἵνα ἴδῃ τ' ἡμέραν τ' ἡμέραν, καὶ εἶδε, καὶ ἔλαλη.

57 Εἶπον ἔν οι Ἰουδαῖοι πρὸς αὐτὸν· Πεντή-
κηστρα ἔτη ἔπωλεθες, καὶ Ἀβραάμ ἐλάσκαας;

58 Εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω
ὑμῖν, πρὶν Ἀβραάμ γενέσθαι, ἐγὼ εἰμι.

59 Ἦσαν ἔν λίθας ἵνα βάλωσιν ἐπ' αὐτὸν.
Ἰησοῦς ᾗ ἐκρύβη, καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τῆς ἱερῆς, διελ-
θὼν διὰ μέσσω αὐτῶν· καὶ παρήγαγε ἕτως.

Κεφ. 9. 9.

1 Καὶ πρὸς ἄλλων εἶδεν ἄνθρωποι τυφλοὺς ἐκ
Ἰουδαίας.

2 Καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, λέ-
γοντες· Γαββι, τίς ἡμαρτιεν, ἕτερον ἢ οἱ ἄλλοι
αὐτοῦ, ἵνα τυφλὸς γενήσθαι;

3 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐτε ἕτερον ἡμαρτιεν,
ἕτερον οἱ ἄλλοι αὐτοῦ· ἀλλ' ἵνα φανερωθῇ τὰ
ἔργα τοῦ Θεοῦ ἐν αὐτοῖς.

4 Ἐμὶ δεῖ ἐργάζεσθαι ἔργα τοῦ πνεύματος
μὴ ἕως ἡμέρας ἐστὶν ἔρχεσθαι νύξ, ὅτε οὐδεὶς δύ-
ναται ἐργάζεσθαι.

5 Ὅταν εὖ τὰ κόσμῳ ᾖ, φῶς εἰμι τοῦ κόσμου.

6 Ταῦτα εἰπὼν, ἐπίπυσε χαμαὶ, καὶ ἐποίησε
πηλοὺς ἐκ τῆς πύσματος, καὶ ἐπέχρισε τὰ πηλοὺς
ἐπὶ τὰς ὀφθαλμοὺς τοῦ τυφλοῦ.

7 Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ὑπαγε, νίψαις τὴν
κελομβήθραν τοῦ Σιλωάμ (ὃ ἐρμηνεύεται),
ἀπεσαλευθήσεται. Ἀπῆλθεν ἔν καὶ ἐνίψατο, καὶ
ἔλαθε βλέπων.

Οἱ ἔν γείτονες καὶ οἱ θεωροῦντες αὐτὸν τὸ
καρτέρον ὅτι τυφλὸς ἦν, ἔλεγον· Οὐχ ἕτός
ἔστιν ὁ κατήμα καὶ αροσμητῶν;

9 Ἄλλοι ἔλεγον· Ὅτι ἕτός ἐστιν· ἄλλοι δέ· Ὅτι
ὄμοιος αὐτῷ ἐστιν. Ἐκεῖνοι ἔλεγον· Ὅτι
ἐγὼ εἶμι.

10 Ἐλεγον ἔν αὐτῷ· Πῶς ἀνεψήχησάν σοι
οἱ ὀφθαλμοί;

11 Ἀπεκρίθη ἐκεῖνοι καὶ εἶπεν· Ἄνθρωπος
λεγόμενος Ἰησοῦς, πηλὸν ἐποίησε, καὶ ἐπ-
έχρισέ με τὰς ὀφθαλμούς, ἔειπέ μοι· Ὑπάγε
εἰς τὴν κυλμβήθραν τῆς Σιλωάμ, καὶ νίψαι.

12 Ἀπλητῶν ἡ καὶ νιψάμενος, ἀνέβλεψα.
Εἶπεν ἔν αὐτῷ· Πῶς ἐστιν ἐκεῖνος; Δέχθη·
Οὐκ οἶδω.

13 Ἄγασιν αὐτὸν πρὸς τὰς φαρισαίους, τὸν
ποτε τυφλόν.

14 Ἦν ἡ σάδοα τὸν ὅτε τὸν πηλὸν ἐποίησεν ὁ
Ἰησοῦς, καὶ ἀνέψαξεν αὐτὸς τὰς ὀφθαλμούς.

15 Πάλιν ἔν ἡρώτων αὐτὸν καὶ οἱ φαρισαῖοι
πῶς ἀνέβλεψεν. Οἱ δὲ εἶπιν αὐτοῖς· Πηλὸν
ἐπέθηκεν ἐπὶ τὰς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἐνιψά-
μενος, καὶ βλέπω.

16 Ἐλεγον ἔν ἐν τῇ φαρισαίων ἱερείς· Οὗτος
ὁ ἄνθρωπος ὅτι ἐκ ἐκ τῶν θεῶν, ὅτι τὸ
σάδοα ἐν ἑτηρεῖ. Ἄλλοι ἔλεγον· Πῶς δύναται
ἄνθρωπος ἀμαρτωλὸς τοιαῦτα σημεῖα
ποιεῖν; Καὶ χρισμα ἦν ἐν αὐτοῖς.

- 17 Λέγεις πρὸ τυφλῶν πάλιν· Σὺ πῶς λέγεις
 ὡσαύτως αὐτῶν, ὅτι ἔχουσιν ὄφθαλμοὺς; Ὁ
 θεὸς εἶπεν· Ὅτι ὡσαύτως ἐστίν.
- 18 Οὐκ ἐπίστυσαν ἔτι οἱ Ἰουδαῖοι ὡσαύτως αὐτῶν
 ὅτι τυφλὸς ἦν καὶ ἀνέβλεψεν, ἕως ὅτου ἐφώ-
 νησεν τὰς ῥηθεῖς αὐτῶν ἕνεκα ἀναβλέψαντος.
- 19 Καὶ ἠρώτησαν αὐτὰς, λέγοντες· Οὗτός ἐστι
 ὁ υἱὸς ὑμῶν, ὃν ὑμεῖς λέγετε ὅτι τυφλὸς ἐγενή-
 ηται; πῶς ἔτι ἄρα βλέπει;
- 20 Ἀπεκρίθησαν αὐτοῖς οἱ ῥηθεῖς αὐτῶν καὶ
 εἶπεν· Οἶδα μὲν ὅτι ἕτις ἐστι ὁ υἱὸς ἡμῶν, καὶ
 ὅτι τυφλὸς ἐγενήθη.
- 21 Πῶς ἔτι νῦν βλέπει ὅσα οἶδα μὲν, ἢ πῶς ἤνοι-
 ξεν αὐτῶν τὰς ὄφθαλμοὺς, ἡμεῖς ὅσα οἶδα
 μὲν· αὐτὸς ἡλικίαν ἔχει, αὐτὸν ἐρωτήσατε·
 καὶ τότε ὡσαύτως αὐτῶν λαλήσει.
- 22 Ταῦτα εἶπεν οἱ ῥηθεῖς αὐτῶν, ὅτι ἐφοβήθη
 τὰς Ἰουδαίους· ἵνα γὰρ σιωπῆτε· ἵνα οἱ Ἰουδαῖοι,
 ἵνα ἐὰν τις αὐτὸν ὁμολογήσῃ Χριστὸν, λησ-
 ται αἰωνῶν· (ἵνα γὰρ).
- 23 Διὰ τούτου οἱ ῥηθεῖς αὐτῶν εἶπεν· Ὅτι ἡλι-
 κίαν ἔχει, αὐτὸν ἐρωτήσατε.
- 24 Ἐφώνησαν ἔτι ἐκ δούτερος τῆς ἀνθρώπου ὃς
 ἦν τυφλός, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Δὸς δέξαί μοι
 τοῦ θεοῦ· ἡμεῖς οἶδα μὲν ὅτι ὁ ἀνθρώπου ἔστι
 ἁμαρτωλὸς ἐστίν.
- 25 Ἀπεκρίθη δὲ ἰκεῖνος· Ἐε εἶπεν· Εἰ ἁμαρ-
 τωλὸς ἐστίν, ὅσα οἶδα· ἐπεὶ οἶδα, ἔτι τυφλὸς εἶμι,
 ἄρα βλέπω.

26 Εἶπεν

26 Εἶπον ἡ αὐτῷ πάλιν· Τί ἐποίησέ σοι;
πῶς ἰώοιξέ σε τὰς ὀφθαλμούς;

27 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς· Εἶπον ὑμῖν ἤδη, καὶ ἔκ
ἠκέσατε· τί πάλιν θέλετε ἀκέειν; μή καὶ ὑμεῖς
θέλετε αὐτῷ μαθηταὶ γινῆσθαι;

28 Ἐλοιδόρησαν ἔτι αὐτὸν, καὶ εἶπον· Σὺ εἶ
μαθητὴς ἐκείνου· ἡμεῖς ἡ δὲ Μωσῆως ἐστὶ μὲν
μαθηταί.

29 Ἡμεῖς οἴδαμεν ὅτι Μωσῆς λελάληκεν ὁ
Θεός· τὸν ἡ σὺ οἴδαμεν ποῦ ἐστίν.

30 Ἀπεκρίθη ὁ ἀνὴρ πρὸς αὐτοῖς·
Ἐν ᾧ τὰτα θαυμάσι ἐστίν, ὅτι ὑμεῖς σὺ οἴ-
δατε ποῦ ἐστίν, καὶ ἀνέωξέ με τὰς ὀφθαλμούς.

31 Οἴδαμεν ἡ ἐπι ἀμαρτωλῶν ὁ Θεὸς σὺ
ἀκείν· ἀλλ' ἐὰν ἴς θεοσεβῆς ἡ, καὶ τὸ θέλημα
αὐτῷ ποιῆ, τότε ἀκείν.

32 Ἐκ τῷ αἰῶνι πρὸς σὺ ἠκέσθη ὅτι ἰώοιξέ τις
ὀφθαλμούς τυφλοῦ γεννητοῦ ἀφ' οὐρα.

33 Εἰ μὴ ἰώ ἔστω ὁ Θεὸς, σὺ ἠδὲ αὐτῷ
πειεῖν ἔδεν.

34 Ἀπεκρίθησαν ἔτι εἶπον αὐτῷ· Ἐν ἀμαρ-
τίας σὺ ἐγεννήθησ ὁ Θεός, καὶ σὺ διδάσκεις
ἡμᾶς; Καὶ ἐξέβαλον αὐτὸν ἔξω.

35 ἠέκουσεν ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐξέβαλον αὐτὸν ἔξω·
καὶ ὄρων αὐτὸν, εἶπεν αὐτῷ· Σὺ πιστεύεις εἰς
τὸν ἡ Θεόν;

36 Ἀπεκρίθη αὐτῷ καὶ εἶπε· Τίς ἐστίν, Κύ-
ριε, ἵνα πιστεύω εἰς αὐτόν;

37 Εἶπε ἡ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Καὶ ἰσχυραὶ αὐ-
τῶν, καὶ ὁ λαλῶν μετ' αὐτῶν, ἐκείνός ἐστιν.

38 Ὁ ἡ ἔφη· Πιστεύω, Κύριε· καὶ προσκύ-
νησάν αὐτῷ.

39 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· Εἰς κρίμα ἐγὼ εἰς τὸ
κῆρυγμα τῆς ἡλθον· ἵνα οἱ μὴ βλέποντες
βλέπωσι, καὶ οἱ βλέποντες τυφλοὶ γένωνται.

40 Καὶ ἤκουσαν ἐκ τῶν φαρισσαίων ταῦτα οἱ
ὄντες μετ' αὐτῶν, καὶ εἶπον αὐτῷ· Μὴ ἐν ἡμῶν
τυφλοὶ ἐσμεν;

41 Εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ τυφλοὶ ἦτε, ἔκ
αὐτῶν εἶχτε ἁμαρτίαν ἣν ἡ λέγετε· Ὅτι βλέπο-
μεν ἢ ἐν ἁμαρτίαις ὑμῶν μέγας.

Κεφ. ι'. 10.

1 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὁ μὴ εἰσερχόμενος
διὰ τῆς θύρας εἰς τὸ αὐλὴν τῶν προβάτων,
ἀλλὰ ἀναθεῖναι ἀλλοτρίων, ἐκείθεν κλέ-
πτῆς ἐστὶ καὶ ληστής.

2 Ὁ ἡ εἰσερχόμενος διὰ τῆς θύρας, ποιμὴν
ἐστὶ τῶν προβάτων.

3 Τῷ οὖν θύρατος ἀνοίξει, καὶ τὰ πρόβατα τῆς
φωνῆς αὐτῶν ἀκούσει· καὶ τὰ ἴδια πρόβατα κα-
λέσει κατ' ὄνομα, καὶ ἐξάξει αὐτὰ.

4 Καὶ ὅταν τὰ ἴδια πρόβατα ἐκβάλῃ, ἔμ-
προσθεῖ αὐτῶν παράσιτον· καὶ τὰ πρόβατα αὐ-
τῷ ἀκούσθαι, ὅτι οἶδασιν τὴν φωνὴν αὐτῶν.

5 Ἄλλοτρίων ἡ ἢ μὴ ἀκούσθησιν, ἀλλὰ
φύξονται ἀπ' αὐτῶν· ὅτι ἐκ οἶδασιν τὴν ἄλλο-
τρίων τῆς φωνῆς.

6 Ταύ-

6 Ταύτην ἡ παροιμίαν εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰη-
σοῦς. ἐκεῖνοι δὲ οὐκ ἔγνωσαν τίνα αὐτὸς εἶπε
αὐτοῖς.

7 Εἶπεν οὖν πάλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν
ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐγὼ εἰμι ἡ θύρα τῶν προ-
βάτων.

8 Πάντες ὅσοι ποτὲ ἐμὲ ἤλθον, κλέψονται καὶ
λησθήσονται· ἀλλ' ὅσοι ἤκουσαν αὐτῶν τὰς προφητείας.

9 Ἐγὼ εἰμι ἡ θύρα· δι' ἐμὲ εἰάν τις εἰσελθῆ-
σαι θέσῃ, καὶ εἰσελεύσεται, καὶ ἐξελεύσεται, καὶ
τομὴν εὖρήσῃ.

10 Ὁ κλέπτης οὐκ ἔρχεται εἰ μὴ ἵνα κλέψῃ
καὶ θύσῃ καὶ ἀπολέσῃ· ἐγὼ ἤλθον ἵνα ζωὴν
ἔχωσι, καὶ ζωὴν αἰώνιον ἔχωσιν.

11 Ἐγὼ εἰμι ὁ ποιμὴν ὁ καλός. ὁ ποιμὴν
ὁ καλὸς τὴν ψυχὴν αὐτῶν πύθησιν ὑπὲρ τῶν
προβάτων.

12 Ὁ μισθωτὸς δὲ, ὃς ἐκ τῶν προβάτων, ἔκ τῶν εἰσὶ
τῶν προβάτων ἰδία, θεωρεῖ τὸ λύκον ἐρχόμενον,
καὶ ἀφίησιν τὰς προβάτας, καὶ φεύγει· ὁ λύκος οὖν
ἀρπάξῃ αὐτὰς, καὶ σκορπίξῃ τὰς προβάτας.

13 Ὁ ἡμισθωτὸς φεύγει, ὅτι μισθωτὸς ἐστίν,
καὶ ἔμελλε αὐτῷ ἀπὸ τῶν προβάτων.

14 Ἐγὼ εἰμι ὁ ποιμὴν ὁ καλός, καὶ γινώσκω
τὰς ἐμέας, καὶ γινώσκω με ὑπὸ τῶν ἐμῶν.

15 Καθὼς γινώσκῃ με ὁ πατήρ, καθὼς γινώ-
σκω τὸν πατέρα, καὶ τὴν ψυχὴν μου πύθημι
ὑπὲρ τῶν προβάτων.

- 16 Καὶ ἄλλα πολλὰ ἔχει ἃ σὺ ἴσθι ἐκ τῆς αὐλῆς ταύτης· καὶ κείνῳ με δεῖ ἀγαγεῖν· ἢ τῆς Φωνῆς μου ἀκούσῃ· ἢ ἀκούσεται μία ποιμήν, εἰς ποιμῆν.
- 17 Διὰ τοῦτο ὁ πατήρ με ἀγαπᾷ, ὅτι ἐγὼ τίθημι τὴν ψυχὴν μου ἵνα πάλιν λάβω αὐτήν.
- 18 Οὐδεὶς αἶψά μου ἀπ' ἐμαυτοῦ· ἀλλ' ἐγὼ τίθημι αὐτήν ἀπ' ἐμαυτοῦ. ἐξουσίαν ἔχω θεῶν αὐτήν, καὶ ἐξουσίαν ἔχω πάλιν λαβεῖν αὐτήν. ταύτην τὴν ἐντολήν ἔλαβον ἀπὸ τοῦ πατρὸς μου.
- 19 Σχίσμα οὐκ ἔτι πάλιν ἐγένετο ἐν τοῖς Ἰουδαίοις διὰ τὰς λόγους ταύτας.
- 20 Ἐλεγον δὲ πολλοὶ ἐξ αὐτῶν· Δαιμόνιοι ἔστε καὶ μαγεῖτε· τί αὐτῷ ἀκούετε;
- 21 Ἄλλοι ἐλεγον· Ταῦτα τὰ ῥήματα ἃ σὺ ἴσθαι δαιμονιζόμενος· μὴ δαιμόνιοι δυνάστητε τοφλῶν ὀφθαλμοὺς ἀνοίξαι;
- 22 Ἐγένετο δὲ τὰ ἱερῶν ἐν ταῖς Ἱεροσολύμοις, καὶ χρεώσθη.
- 23 Καὶ ᾤδεν πάντες ὁ Ἰησοῦς ἐν ταῖς Ἱερῶν ἐν τῇ τοῦ Σολομῶντος.
- 24 Ἐκόκλωσαν ἐν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ ἐλεγον αὐτῷ· Ἔως ποτε τὴν ψυχὴν ἡμεῶν αἶψά εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ἐπὶ ἡμῶν παρόρκοις.
- 25 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἶποι ὑμῖν ἔτι πιστεύετε· τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ ποιῶ ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ πατρὸς μου, ταῦτα μαρτυρεῖ ὡς εἰμι ἐγώ.

- 26 Ἀλλ' ὑμεῖς ἂ πιστεύετε· ἔ γάρ ἐστε ἐκ τῶν
 ὀφθαλμῶν τῶν ἰμῶν, καὶ οὐκ εἴπατε ὑμῖν.
- 27 Τὰ ὀφθαλμοὶ τὰ ἰμάτια τῶν Φαρισαίων καὶ ἡμεῖς,
 καὶ γὰρ γινώσκω αὐτὰ, ἔ ἀπολατῶσιν μοι.
- 28 Καὶ γὰρ ζῶν ἀιώνιον δίδωμι αὐτοῖς, καὶ ἔ
 μὴ ἀπίσταν) εἰς τὸν αἰῶνα, ἔ ἔχ' ἀρπαγῆς ἕως
 αὐτῶν ἐκ τῶν χειρῶν μου.
- 29 Ὁ πατήρ μου ὃς δίδωκε μοι μέζον πάν-
 των ἐστὶ καὶ ἔδωκε δυνάμει) ἀρπαγῆς ἐκ τῶν χει-
 ρῶν τοῦ πατρὸς μου.
- 30 Ἐγὼ καὶ ὁ πατήρ ἐν ἑσώμῳ.
- 31 Ἐπάστασαν οὖν πάλιν λίθους οἱ Ἰουδαῖοι,
 ἵνα λιθώσωσιν αὐτόν.
- 32 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πολλὰ καλὰ
 ἔργα ἐδίδαξα ὑμῖν ἐκ τοῦ πατρὸς μου· ἀλλὰ ποῖαν
 αὐτῶν ἔργον λιθώσετε με;
- 33 Ἀπεκρίθησαν αὐτῶν οἱ Ἰουδαῖοι, λέγοντες·
 Περὶ καλῶν ἔργων ἔ λιθώσομεν σε, ἀλλὰ οὐδέ
 βλασφημίας, ἔ ὅτι σὺ ἄνθρωπος εἶ· ὡς ποῖεις
 σταυρῶν Θεόν.
- 34 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ ἐστὶν κρίσις με-
 ρήριον ἐν τῶν νόμων ὑμῶν· Ἐγὼ εἶπα, θεοὶ ἐστε;
- 35 Εἰ σκέψασθε εἶπε θεὸς, καὶ ἔσθε ὁ λόγος τοῦ
 Θεοῦ ἐληλυθὸς, καὶ ἔ δύναμις) λυτῶσιν ἡ γραφή·
- 36 Ὅτι ὁ πατήρ ἠγάπησεν καὶ ἀπέστειλεν εἰς τὸν
 κόσμον, ὑμεῖς λέγετε· Ὅτι βλασφημῶμεν, ὅτι
 εἶπα, ἕως τοῦ Θεοῦ ἔμεν;
- 37 Ἐἰ ἔ ποιῶ τὰ ἔργα τοῦ πατρὸς μου, μὴ πι-
 στεύετε μοι·

38 Εἰ ἢ παιῶν, καὶ ἐμοὶ μὴ πιστεύετε, πῶς
ἔρχομαι πιστεύσατε· ἵνα γινώτε ἔτι πιστεύσητε
ὅτι ἐν ἐμοὶ ὁ πατήρ, καὶ γὰρ ἐν αὐτῷ.

39 Ἐζήτησεν ἔτι πάλιν αὐτοὶ πιάσαι· ἔειπεν
ἔκ τ' ἑξῆς αὐτῶν.

40 Καὶ ἀπῆλθε πάλιν πέραν τῆς Ἰορδάνης εἰς
τὸ τόπον ὅπου ἦν Ἰωάννης τὸ ὄψοιτον βαπτίζων· καὶ ἔμεινεν ἐκεῖ.

41 Καὶ πολλοὶ ἤλθον πρὸς αὐτὸν, καὶ ἔλεγον· Ὅτι
Ἰωάννης μὲν σημεῖον ἐποίησεν ἡμῖν· πάντες ἢ
ὅσα εἶπεν Ἰωάννης περὶ τούτου, ἀληθῆ ἦν.

42 Καὶ ἐπίστευσαν πολλοὶ ἐκεῖ εἰς αὐτόν.

Κεφ. ια'. II.

1 Ἦν δὲ τις ἀδελφεὸς Λάζαρου ἀπὸ Βηθα-
νίας, ἐκ τῆς πόλεως Μαρίας, ἡ Μάρθας
καὶ ἀδελφῆς αὐτῆς.

2 (Ἦν ἡ Μαρία ἡ ἀλείψασα τὰ πόδια αὐτοῦ ταῖς ἡμι-
ξιν αὐτῆς· ἧς ὁ ἀδελφὸς Λάζαρος ἡδυνεῖ.)

3 Ἀπέστειλαν ἔτι καὶ ἀδελφῶν πρὸς αὐτόν,
λέγοντες· Κύριε, ἴδε, ὃν φιλεῖς, ἀδυνεῖ.

4 Ἀκούσας ἢ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· Αὕτη ἡ ἀδελφεὰ
σου ἔστι πρὸς θάνατον, ἀλλ' ἵνα γινώσκῃς ὅτι
Θεὸς εἰμι, ἵνα δοξασθῇ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ δι' αὐτῆς.

5 Ἠγάπησεν ἢ ὁ Ἰησοῦς καὶ Μάρθαν καὶ τὴν
ἀδελφὴν αὐτῆς ἔτι Λάζαρον.

6 Ὡς ἔτι ἤκουσεν ὅτι ἀδυνεῖ, τότε μὲν ἔμεινεν
ἐν αὐτῷ τόπῳ δύο ἡμέρας.

7 Ἐπέτα

7 Ἐπῆτε μὲν τὸτο λέγει τοῖς μαθηταῖς·
Ἄγωμεν εἰς τὴν Ἰερουσαλήμ πάλιν.

8 Λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταί· Γαβῶοι, νῦν
ἐζητήεν σε λιθάσει οἱ Ἰερουσαῖοι, καὶ πάλιν ἕως
ἀγῶς σκεῖ;

9 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐχὶ δώδεκά ἐστιν
ἡμέρας τῆς ἡμέρας; εἰάν τις περιπατῆ ἐν τῇ ἡμέ-
ρα, ἐπεσοκόπις· ὅτι τὸ φῶς τῆς ἡμέρας τέ-
τα βλέπει·

10 Ἐάν τις περιπατῆ ἐν τῇ νυκτὶ, πεσο-
κόπις· ὅτι τὸ φῶς οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ.

11 Ταῦτα εἶπε καὶ μὲν τὸτο λέγει αὐτοῖς· Λά-
ζαρος ὁ φίλος ἡμῶν κεκοίμητος· ἀλλὰ πο-
ρεύομαι ἵνα ἐξυπνίσω αὐτόν.

12 Εἶπον οὖν οἱ μαθηταὶ αὐτῷ· Κύριε, εἰ
κεκοίμητος, σωθήσεται.

13 Εἰρήκης δὲ ὁ Ἰησοῦς εὖ τὸ θάνατον αὐ-
τῷ· σκεῖνοι γὰρ ἔδοξαν ὅτι εὖ τὸ θάνατον τῆς ἡμέρας
ὑπνε λέγει.

14 Τότε ἐνείπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς παρρησίαν·
Λάζαρος ἀπέθανε·

15 Καὶ χαίρω δι' ὑμῶν (ἵνα πιστεύσητε) ὅτι
σὺ ἡμῶν σκεῖ· ἀλλ' ἄγωμεν πρὸς αὐτόν.

16 Εἶπεν οὖν Θωμᾶς, ὁ λεγόμενος Δίδυ-
μος τοῖς συμμαθηταῖς· Ἄγωμεν καὶ ἡμεῖς,
ἵνα δοθῶμεν μαρτυρίαν μετ' αὐτῷ.

17 Ἐλθὼν ἔνθα ὁ Ἰησοῦς εὖρεν αὐτὸν τέσσαρας
ἡμέρας ἤδη ἔχοντα ἐν ταῖς μνημείοις.

- 18 (Ἦν δὲ ἡ Βηθανία ἐγγὺς τῆς Ἱεροσολύμων,
ὡς ἀπὸ Σαδδαίου δεκαπέντε)
- 19 Καὶ πολλοὶ ἐκ τῆς Ἰουδαίας ἐληλύθησαν πρὸς
αὐτὸν ὡς καὶ Μάρθαν καὶ Μαρίαν, ἵνα ἀνα-
μνησθῶσιν αὐτὸν ὡς καὶ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν.
- 20 Ἡ οὖν Μάρθα ὡς ἤκουσεν ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἐξ-
ερχεται ἐκωλύθησεν αὐτὴν· Μαρία δὲ ἐκ τῆς οἴ-
κου ἐκαθίσεν.
- 21 Εἶπεν γὰρ ἡ Μάρθα πρὸς τὸν Ἰησοῦν· Κύριε,
εἰ ἦς ὡδε, ὁ ἀδελφός μου ὅτι ἀνέπιθνε.
- 22 Ἀλλὰ καὶ νῦν οἶδα ὅτι ὅσα αὐτῷ αἰτήσῃ τὸ
Θεόν, δώσει σοι ὁ Θεός.
- 23 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἀναστήσεται ὁ ἀδελ-
φός σου.
- 24 Λέγει αὐτῷ Μάρθα· Οἶδα ὅτι ἀναστήσει
ἐν τῇ ἀναστάσει ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.
- 25 Εἶπεν αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ εἰμι ἡ ἀνάστα-
σις καὶ ἡ ζωὴ· ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ, καὶ ἀπο-
θάνη, ζήσει).
- 26 Καὶ πάντες ὁ ζῶν καὶ πιστεύων εἰς ἐμὲ, ἔμνη-
σθη εἰς τὸ αἰῶνα. Πιστεύεις τούτου;
- 27 Λέγει αὐτῷ· Ναί, Κύριε· ἐγὼ πιστεύω ὅτι
ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ὁ εἰς τὸν οὐ-
ρανὸν ἐρχόμενος.
- 28 Καὶ ταῦτα εἰπὼσα ἀπῆλθε καὶ ἐφώνησε
Μαρίαν τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς λέγουσα, εἰπῶσα.
Ὁ δὲ ἀκούσας αὐτῆς ἐφώνησεν αὐτῇ.
- 29 Εκείνη ὡς ἤκουσεν, ἐγείρεται ταχὺ, καὶ ἔρχεται
πρὸς αὐτόν.

30 (Οὐπω ἤ εληλύθη ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν κώμην· ἀλλ' ἔτι ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ἐπαύνησεν αὐτὸς ἡ Μάρθα)

31 Οἱ οὖν Ἰεζαῖοι οἱ ὄντες μετ' αὐτῆς ἐν τῇ οἰκίᾳ καὶ τῶν ἄλλων ἀδελφοὶ αὐτῆς, ἰδόντες τὴν Μαρθάν ὅτι ταχέως ἀνέστη καὶ ἐξῆλθεν, ἠκολούθησαν αὐτῇ, λέγοντες· Ὅπου ἐπάγη εἰς τὸ μνημεῖον ἵνα κλαύσῃ ἐκεῖ.

32 Ἡ οὖν Μάρθα ὡς ἦλθεν ὅπου ἔκειτο ὁ Ἰησοῦς, ἰδῶσα αὐτὸν, ἔειπεν εἰς τὰς πόδας αὐτοῦ, λέγουσα αὐτῷ· Κύριε, εἰ ἦς ὡδε, οὐκ αὐτὸ ἀπέθανέ με ὁ ἀδελφός.

33 Ἰησοῦς ἔτι, ὡς εἶδεν αὐτὴν κλαίειν, ἐπέσειν ἐπ' αὐτὴν λέγων· Ἰεζαῖος κλαίωντος, σιβεβριμῶσα τῷ πνεύματι καὶ ἐπέροξεν ἑαυτῆς·

34 Καὶ εἶπε· Πῶς πεθεῖκαί με αὐτὸν; Λέγουσιν αὐτῷ· Κύριε, ἔρχε ἐἴδω.

35 Ἐδάκρυσεν ὁ Ἰησοῦς.

36 Ἐλέησεν ἔτι οἱ Ἰεζαῖοι· Ἴδε πῶς ἐφίλη αὐτὸν.

37 Τινὲς ἰδόντες αὐτῶν εἶπον· Οὐκ ἠδύνατο ἔσθαι, ὁ ἀνεῖξας τὰς ὀφθαλμὰς ἑστὸς τυφλῶν, ποιῆσαι ἵνα καὶ ἔτι μὴ ἀποθάνῃ;

38 Ἰησοῦς οὖν πάλιν ἐμὸς ἀδελφὸς ἐν ἑαυτῷ ἔρχετο εἰς τὸ μνημεῖον. Ἦν δὲ σπήλαιον, ἐν ᾧ λίθος ἐπέκειτο ἐπ' αὐτῷ.

39 Λέγει ὁ Ἰησοῦς· Ἀπάγε τὸν λίθον. Λέγει αὐτῷ ἡ ἀδελφὴ· Ὁ κύριός ἐστιν ἡ Μάρθα· Κύριε, ἢ δὴ ὅστις περὶ τῆς γαστρίδος.

40 Λέγει

- 40 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ εἶπόν σοι ὅτι ἐὰν πιστεύσῃς, ὁψεί τ' δοῦναι ἔσθαι Θεῷ;
- 41 Ἦσαν ἐν τῷ λίθῳ ἔτι ὁ πεθηκώς κείμενος· Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἤρας τὰς ὀφθαλμούς αὐτοῦ, καὶ εἶπε· Πάτερ, ἄκουσόν σοι ὅτι ἤκουσάς με.
- 42 Ἐγὼ δὲ ἤθελον ὅτι πάντες με ἀκούσῃς. ἀλλὰ διὰ τὸ ὄχλον τὸ περιεσῶτε εἶπον, ἵνα πιστεύσωσιν ὅπου με ἀπέστειλῃς.
- 43 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, Φωνῇ μεγάλῃ ἐκρῶνται· Λέξασθε, δεῦρο ἕξω.
- 44 Καὶ ἐξῆλθεν ὁ πεθηκώς, δεδεμένος τὰς πόδας καὶ τὰς χεῖρας κερταῖς· καὶ ἡ ὄψις αὐτοῦ σαρδαρία περιεδέδετο. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Λύσατε αὐτὸν, καὶ ἀφέτε τὸν ἄχρον.
- 45 Πολλοὶ ἐν αὐτῷ Ἰουδαίῳι οἱ ἐλθόντες πρὸς τὸν Μαρίαν, καὶ θεασάμενοι ἃ ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν.
- 46 Τινὲς δὲ ἐξ αὐτῶν ἀπῆλθον πρὸς τὰς Φαρισαίους, καὶ εἶπον αὐτοῖς ἃ ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς.
- 47 Συνήγαγον ἐν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι συνέδριον, καὶ ἔλεγον· Τί ποιῶμεν; ὅτι ἔτι ὁ ἄνθρωπος πολλὰ σημεῖα ποιεῖ.
- 48 Ἐὰν ἀφώμεν αὐτὸν ἔτι, πάντες πιστεύσωσιν εἰς αὐτόν· καὶ ἐλεύσονται οἱ Ῥωμαῖοι, καὶ ὀρθώσουσιν ἡμᾶν καὶ τὸ τόπον ἐπὶ τὸ ἔθνος.
- 49 Εἰς δὲ πρὸς αὐτῶν Καϊάφας, ἀρχιερεὺς ὢν ἐν αὐτοῖς ἐκείναις, εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς οὐκ οἴδατε ἅδεν.

50 Οὐδὲ ἀφλογίζεσθε ὅτι συμφέρει ἡμῖν
ἵνα εἰς ἀνθρώπων ὀπίσθαι ἴπαρ ἔλασ, ἔ
μὴ ὅλον τὸ ἔθνος ὀπίσθαι.

51 Τὸτο ἡ ἀφ' ἰαυλῶ ἐκ εἰπι' ἀλλὰ δὲ χερσὶς
ὦν ἔ σὺ αὐτῶ ἐκείνη, περὶ φήτουσιν ὅτι ἔ-
μελλει ὁ Ἰησοῦς ἀποθῆσκει ἴπαρ ἔ ἔθνος.

52 Καὶ ἔχ ἴπαρ ἔ ἔθνος μόνον, ἀλλ' ἵνα καὶ
τὰ τέκνα ἔ Θεῶ τὰ δισκοροπισμῶνα σω-
αζαίγη εἰς ἔν.

53 Ἀπ' ἐκείνης οὐ τὴ ἡμέρας σωτῆρα εὐλο-
σαντο ἵνα ἀποκλείνωσιν αὐτόν.

54 Ἰησοῦς ἔν ἐκ ἔπι παρήσια πῶτε πῶτε ἐν Θεῶ
Ἰουδαίοις, ἀλλὰ ἀπῆλθεν ἐκείθεν εἰς τὴ χῆραν
ἔζυς τὴ ἔρημη, εἰς ἔ Φρασίμη λεγρομῶνα πό-
λιν καὶ κεί διέτειθε μὴ τὴ μαθητῶν αὐτῶ.

55 Ἦν ἡ ἔζυς τὸ πάχος τὴ Ἰουδαίων καὶ ἀν-
ἔβησαν πολλοὶ εἰς Ἰεροσόλυμα ἐκ τὴ χῆρας
πῶτῶ ἔ πάχος, ἵνα ἀγνίσωσιν ἰαυλῶς.

56 Ἐζήτην ἔν τὴ Ἰησοῦς, ἔ ἔλεθον μετ' ἀλλή-
λων ἐν τῶ ἱερῶ ἔσηκότες. Τί δοκεῖ ὑμῖν, ὅτι
ἔ μὴ ἔλθῃ εἰς τὴ ἔορτή;

57 Διδάσκον ἡ καὶ οἱ δὲ χερσὶς ἔ οἱ φαρι-
σαῖοι ἐν ἔθλῶ, ἵνα ἔάν ἔς γρά πῶ ἔπι, μη-
τύση, ὅπως πῶσωσιν αὐτόν.

Κεφ. 13. 12.

1 Ο' ἔν Ἰησοῦς πῶτῶ ἔξ ἡμερῶν ἔ πάχος ἔλ-
θῃ εἰς Βηθανίαν, ὅπως ἔω Λάζαρος ὁ
πεθνηκῶς, ὅν ἔχρεν ἐκ νεκρῶν.

2 Ἐποίη-

- 2 Ἐποίησαν οὖν αὐτῷ δεῖπνον ἐκεῖ, καὶ ἡ Μάρθα διηκόνει· ὃ δὲ Λάζαρος εἶς τῶν σιωννακιδίων αὐτῷ.
- 3 Ἡ οὖν Μαρία, λαβῶσα λίτραν μύρου γάρου πισικῆς πολυτίμου, ἤλψε τὰς πόδας τοῦ Ἰησοῦ, καὶ ἐξέμαξε τὰς θριξίνας αὐτῆς τὰς πόδας αὐτοῦ· ἡ δὲ οἰκία ἐπληρώθη ἐκ τῆς ὀσμῆς τοῦ μύρου.
- 4 Λέγει οὖν εἰς ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, Ἰούδας Σίμωνος Ἰσακαριώτης, ὁ μέλλων αὐτὸν πωροδοῦναι.
- 5 Διακί τούτο τὸ μύρον ἔσται ἐπὶ τῆς τριακοσίων δηναρίων, καὶ ἐδόθη πτωχοῖς.
- 6 Εἶπε δὲ τούτο, ἐχὸν οὖν οὐκ εἶπε τῶν πτωχῶν ἕμελεν αὐτῷ, ἀλλ' ὅτι κλέπτης ἦν, καὶ τὸ γλωσσόμαχον εἶχε, καὶ τὰ βαλλόμενα ἐσάστειεν.
- 7 Εἶπεν ἔνθα ὁ Ἰησοῦς· Ἄφες αὐτήν· εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ ἀναφιασμοῦ μετετήρηκεν αὐτό.
- 8 Τὰς πτωχὰς γὰρ πάντοτε ἔχετε μεθ' ἑαυτῶν, ἐμὲ δὲ πάντοτε ἔχετε.
- 9 Ἐγὼ γὰρ οὐκ ἔχω ὄχλος πολὺς ἐκ τῶν Ἰουδαίων ὅτι ἐκεῖ ἐστὶ καὶ ἦλθον ἕως εἰς τὸν Ἰησοῦν μύριοι, ἀλλ' ἵνα ἐκ τῶν Λαζάρων ἰδῶσιν, ὃν ἤγαγον ἐκ νεκρῶν.
- 10 Ἐδοξάσθη οὖν οἱ ἀρχιερεῖς ἵνα καὶ τὸν Λάζαρον ἀποκλείωσιν.
- 11 Ὅτι πολλοὶ οὖν αὐτὸν ἐπίστησαν τῶν Ἰουδαίων, καὶ ἐπίστειον εἰς τὸν Ἰησοῦν.
- 12 Τῇ ἐπιούριον ὄχλος πολὺς ὁ ἐλθὼν εἰς τὴν ἑορτήν.

ἀκράσιες ὅτι ἔρχε^ς) ὁ Ἰησοῦς εἰς Ἱεροσόλυμα,

13 Ἐλαβον τὰ βάλια τῶν Φοινίκων, καὶ ἐξῆλθον εἰς ὑπάλλησιν αὐτῶν, καὶ ἔκραζον. Ὡπανία, δὺλογηδύ^ς ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου, ὁ βασιλεύς τῆς Ἰσραήλ.

14 Εὐρῶν ἡ ὁ Ἰησοῦς ὀνόμαζον, ἐνάδισεν ἐπ' αὐτὸ, καθὼς ἐστὶ γεγραμμένον·

15 Μὴ φοβῶ^{μαι} θύραις Σιών· ἰδοὺ, ὁ βασιλεύς (εἰς ἔρχε^ς), κατήμυ^ς ἐπὶ πόλιν ὄντα.

16 Ταῦτα ἡ σὺκ ἔγνωσαν οἱ μαθηταὶ αὐτῶν τὸ πρῶτον· ἀλλ' ὅτι ἐδοξάσθη ὁ Ἰησοῦς, τότε ἐμνήσθησαν ὅτι ταῦτα ἡ ἐπ' αὐτῶν γεγραμμένα, ἐταῦτα ἐποίησαν αὐτῶν.

17 Ἐμαρτύρησεν ὁ ὄχλος ὁ ὢν μετ' αὐτῶν, ὅτι τῶν Λάζαρον ἐφώνησεν ἐκ τῶν μνημείων καὶ ἤχησεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.

18 Διὰ τῶν καὶ ὑπώλησεν αὐτῶν ὁ ὄχλος· ὅτι ἤκουσε τῶν αὐτῶν πεποιηκέναι τὸ σημεῖον.

19 Οἱ οὖν φαρισαῖοι εἶπεν πρὸς ἑαυτούς· Θεωρεῖτε ὅτι σὺκ ἀφελῆτε ἕδεν; ἰδοὺ, ὁ κήσμε^ς ὀπίσω αὐτῶν ἀπῆλθεν.

20 Ἦσαν δὲ ἕντες ἔθνη ἐκ τῶν ἀναθανιάντων ἵνα προσκυνήσωσιν ἐν τῇ ἑορτῇ.

21 Οὗτοι οὖν προσῆλθον Φίλιππον τῶν ἀπὸ Βηθσαῖδά τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἠρώτων αὐτὸν, λέγοντες· Κύριε, θέλωμεν τῶν Ἰησοῦν ἰδεῖν.

22 Ἐρχε^ς) Φίλιππος ἐλέσθαι τῶν Ανδρέα. Ἐπαλιν Ανδρέας καὶ Φίλιππος λέγουσι τῶν Ἰησοῦ.

23 Οὗ

- 23 Ο Ἰησοῦς ἀπεκρίνατο αὐτοῖς, λέγων· Ἐλήλυθεν ἡ ὥρα ἵνα δοξασθῇ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου.
- 24 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, εἰ μὴ ὁ κρέκωσθε σίτες πεσών εἰς τὴν γῆν ἀποθάνη, αὐτὸς μέγας κέρδι· εἰ μὴ δὲ ἀποθάνη, πολὺν καρπὸν φέρει.
- 25 Ο Φιλῶν τὴν ψυχὴν αὐτῆς, ἀπολέσθαι αὐτή· καὶ ὁ μισθὸν τὴν ψυχῆς αὐτῆς ἐν τῷ κόσμῳ τέτατον, εἰς ζωὴν αἰώνιον φυλάξῃ αὐτήν.
- 26 Εἰ μὴ ἐμοὶ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ τις, ἐμοὶ ἀσθενεῖται· καὶ ὅπου ἐμὶ ἐγὼ, ἐκεῖ ἔσται ὁ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ ὁ ἐμός· ἔσται ἔτι ἐμοὶ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ, πρὸς τὸν ὁ πατήρ.
- 27 Νῦν ἡ ψυχὴ μου τεταράχθη, καὶ τί εἶπαι Πάτερ, σῶσόν με ἐκ τῆς ὥρας ταύτης, ἀλλὰ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ ἦλθεν εἰς τὴν ὥραν ταύτην.
- 28 Πάτερ, δοξάσθαι σε τὸ ὄνομα· ἦλθεν ἐν φωνῇ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἐδόξασαι, καὶ πάλιν δοξάσθαι.
- 29 Ο ἐν ὄχλῳ ὁ ἐστὼς καὶ ἀκέστας, ἔλεγε βροντῶν γέρονται. Ἄλλοι ἔλεγον· Ἀγγέλῳ αὐτῷ λελάληκεν.
- 30 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν· Οὐ δεῖ ἐμὴ αὐτῆς ἢ φωνῆς γέρονται, ἀλλὰ δεῖ ὑμῶν.
- 31 Νῦν κείσθαι ἐπὶ τοῦ κόσμου τέτατον· νῦν ὁ ἀρχὴν τοῦ κόσμου τέτατον ἐκόληθησιν ἔξω.
- 32 Καὶ γὰρ, εἰ μὴ ὑψωθῶ ἐκ τῆς γῆς, πᾶσις ἐλκύσται πρὸς ἐμαυτὸν.
- 33 (Τὸ δὲ ἔλεγε, σημεῖον ποίῃ θανάτου ἠμελλεν ἀποθνήσκειν)

- 34 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ὄχλος· Ἡμεῖς ἠκούσαμεν ἐκ τοῦ νόμου ὅτι ὁ Χριστὸς μόνος εἰς τὸ αἰῶνα· καὶ πῶς σὺ λέγεις, ὅτι δεῖ ὑψωθῆναι τὸ υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου; τίς ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου;
- 35 Εἶπεν ἔν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐπὶ μικρὸν χρόνον τὸ φῶς μεθ' ὑμῶν ἐστὶ· ἀπειπαλεῖτε εἰς τὸ φῶς ἕξετε, ἵνα μὴ σκοτία ὑμῶν καταλάβῃ· καὶ ὁ περὶ παλῶν ἐν τῇ σκοτίᾳ οὐκ οἶδε πῶς ὑψαθήσεται.
- 36 Ἐως τὸ φῶς ἔχετε, πισθεύετε εἰς τὸ φῶς, ἵνα ἡμεῖς φωτὸς γένησθε. Ταῦτα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἀπελθὼν ἐκρύβη ἀπ' αὐτῶν.
- 37 Τούτων τε καὶ αὐτῶν σημεῖα πεποιηθέντα ἐμπεσόντων αὐτῶν, οὐκ ἐπίστυον εἰς αὐτόν·
- 38 ἵνα ὁ λόγος Ἡσαΐας τοῦ προφήτου πληρωθῆ, ὃν εἶπε· Κύριε, τίς ἐπίστυσε τῇ ἀκοῇ ἡμῶν, καὶ ὁ βραχίον Κυρίου τίς ἀπειγαλύθη;
- 39 Διὰ τούτου οὐκ ἠδύνατο πισθεύειν, ὅτι πάλιν εἶπεν Ἡσαΐας·
- 40 Τετύφλωκεν αὐτῶν τὰς ὀφθαλμούς, καὶ περιώρωκεν αὐτῶν τὴν καρδίαν· ἵνα μὴ ἴδωσι τοῖς ὀφθαλμοῖς, ἐνοήσωσι τῇ καρδίᾳ, καὶ ἐπιστραφῶσι, καὶ ἰάσωμαι αὐτούς.
- 41 Ταῦτα εἶπεν Ἡσαΐας ὅτε εἶδε τὸ δόξαν αὐτοῦ καὶ ἐλάλησεν ἀπὸ αὐτοῦ.
- 42 Ὅμως μόντοι καὶ ἐκ τῶν δούλων πολλοὶ ἐπίστυον εἰς αὐτόν· ἀλλὰ διὰ τὰς φερασίας ἐχώματόν, ἵνα μὴ δόξασιν ἄγωγε γίνονται.

43 Ηγά-

43 Ἡγάπησαν γὰρ τὴν δόξαν τῶν ἀνθρώπων
μᾶλλον ἢ τὴν δόξαν τοῦ Θεοῦ.

44 Ἰησοῦς ἰδὼν ταῦτα εἶπεν· Οἱ πισδύοντες ἐμὲ,
καὶ πισδύοντες ἐμὲ, ἀλλ' εἰς τὸ πέμψαι με.

45 Καὶ ὁ θεωρῶν ἐμὲ, θεωρεῖ τὸ πέμψαι με.

46 Ἐγὼ φῶς εἰς τὸ κόσμον ἐλήλυθα, ἵνα πᾶς
ὁ πισδύων ἐμὲ ἐν τῇ σκοτίᾳ μὴ μείνη.

47 Καὶ ἐὰν τις με ἀκούσῃ τῶν ῥημάτων καὶ μὴ
πισδύσῃ, ἐγὼ οὐ κρινῶ αὐτόν. Οὐ γὰρ ἦλθον
ἵνα κρινῶ τὸν κόσμον, ἀλλ' ἵνα σώσω τὸν
κόσμον.

48 Οἱ ἀφετῶν ἐμὲ καὶ μὴ λαμβάνων τὰ ῥή-
ματα μου, ἐγὼ οὐ κρινῶ αὐτόν· ὁ λόγος ὃν
ἐλάλησα, ἐκεῖνος κρινεῖ αὐτόν ἐν τῇ
ἑσχάτῃ ἡμέρᾳ.

49 Ὅτι ἐγὼ ἐξ ἑμαυτοῦ οὐκ ἐλάλησα· ἀλλ' ὁ
πέμψας με πατήρ, αὐτὸς με ἐν θλήν ἔδωκε
τί εἶπω καὶ τί λαλήσω.

50 Καὶ οἶδα ὅτι ἡ ἐπιτολή αὐτοῦ ζωὴ αἰώνιος
ἐστίν· ἃ ἔν λαλῶ ἐγώ, καθὼς εἶρηκέ με ὁ πα-
τήρ, ἔτω λαλῶ.

Κεφ. ιγ'. 13.

1 Πρὸς τὴν τρίτην τοῦ πάχα, εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς
ὅτι ἐλήλυθεν αὐτὸς ἡ ὥρα ἵνα μετὰ βῆ ἐκ
τοῦ κόσμου τούτου πρὸς τὸν πατέρα, ἀγαπήσας
τὰς ἰδίους τὰς ἐν τῷ κόσμῳ, εἰς τέλος ἠγά-
πησεν αὐτάς.

2 Καὶ ἔλειπεν ἡ νομμία, (τοῦ ἀββόλου
ἡ δὴ

ἤδη βεβλήκατος εἰς τὴν καρδίαν Ἰσάδα Σίμωνος Ἰσκαριώτου, ἵνα αὐτὸν πωλῆται.)

3 Εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι πάντα δέδωκεν αὐτῷ ὁ πατὴρ εἰς χεῖρας, καὶ ὅτι ἀπὸ Θεοῦ ἐξῆλθε, καὶ πρὸς τὸ Θεὸν ὑπάγει.

4 Ἐγείρεται ἔκ τῃ δεξιᾷ, καὶ κήρῃσι τὰ ἱμάτια· καὶ λαβὼν λέντιον, διέζωσεν ἑαυτὸν.

5 Εἶτα βάλλει ὕδωρ εἰς τὴν πετῆραν, καὶ ἤρξατο νίπτειν τὰς πόδας τῶν μαθητῶν, καὶ ἐκμάσσει τὰ λεντία ὡς ἡμεῖς διέζωσμεν.

6 Ἐρχέται ἐν σπῆσι Σίμωνα Πέτρον· καὶ λέγει αὐτῷ ἐκείνος· Κύριε, σὺ με νίπτεις τὰς πόδας;

7 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ὅ ἐγὼ ποιῶ σὺ σὺ οἶδας ἄρα, γνώση ἢ μὴ ταῦτα.

8 Λέγει αὐτῷ Πέτρος· Οὐ μὴ νίψῃς τὰς πόδας μου εἰς τὸ αἶμα. Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐὰν μὴ νίψω σε, σὺκ ἔχῃς μέρος μετ' ἐμοῦ.

9 Λέγει αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, μὴ τὰς πόδας μου μόνον, ἀλλὰ καὶ χεῖρας καὶ κεφαλῆν.

10 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὁ λελασμένος ἔχρειαν ἔχει ἢ τὰς πόδας νίψασθαι, ἀλλ' ἔστι καθαρός ὅλος· καὶ ὑμεῖς καθαροὶ ἐσθε, ἀλλ' ἔχει πάντες.

11 Ἡ δὲ γὰρ τὸ πωλῆσαι αὐτὸν· ἀπὸ τῆς εἰρήνης· Οὐχὶ πάντες καθαροὶ ἐσθε.

12 Ὅτε οὐκ ἐνεψέ τὰς πόδας αὐτῶν, καὶ ἔλαβε τὰ ἱμάτια αὐτῶν, ἀναπεσὼν πάλιν, εἶπεν αὐτοῖς· Γινώσκετε τί πεποίηκα ὑμῖν;

Q 13 Ὑμεῖς

- 13 Ὑμεῖς φωνεῖτέ με· Ὁ διδάσκαλ^{ος}· ἔο κύρι^{ος}· καὶ καλῶς λέγετε· ἐγὼ γάρ.
- 14 Εἰ εἰς ἐγὼ ἐπέψα ὑμῶν τὰς πόδας, ὁ κύρι^{ος} καὶ ὁ διδάσκαλ^{ος}, καὶ ὑμεῖς ὀφείλετε ἀλλήλων νίπτειν τὰς πόδας.
- 15 Ὑπόδημα γὰρ ἔδωκα ὑμῖν, ἵνα καθὼς ἐγὼ ἐποίησα ὑμῖν, καὶ ὑμεῖς ποιῆτε.
- 16 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅσα ἐστὶ ὄψα μείζων ἢ κυρίως αὐτῶ, ἔσθ' ἀπόστολος μείζων ἢ πέμψασ^{ας} αὐτὴν.
- 17 Εἰ ταῦτα οἴδατε, μακάριοι ἐστε ἵνα ποιῆτε αὐτά.
- 18 Οὐ φεῖ πάντων ὑμῶν λέγω· ἐγὼ οἶδα ἔς ἐξελξαίμεν· ἀλλ' ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῆ· Ὁ τρώγων μετ' ἐμοῦ τὸν ἄρτον ἐπήρειν ἐπ' ἐμὲ πλὴν πύργου αὐτοῦ.
- 19 Ἀπ' ἄρτι λέγω ὑμῖν περὶ ἡμῶν, ἵνα ὅταν ἦν, πιστεύσητε ὅτι ἐγὼ εἰμι.
- 20 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· Ὁ λαμβάνων ἐαυτὸν ἵνα πέμψω, ἐμὲ λαμβάνει· ὁ δὲ ἐμὲ λαμβάνων, λαμβάνει τὸν πέμψασ^α με.
- 21 Ταῦτα εἰπὼν ὁ Ἰησοῦς ἐταράχθη τὴν πύργον, ἔμαρτύρησε, καὶ εἶπεν· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν ὅτι εἷς ἐξ ὑμῶν ᾧ παραδώσ^α με.
- 22 Ἐβλεποὶ ἔν εἰς ἀλλήλους οἱ μαθηταί, δὲ πρὸ μὲν φεῖ πῶν λέγει.
- 23 Ἦν ἡ ἀνακείμενος εἰς τὸ μαθητῶν αὐτῶ ἐν τῷ κήλπαι Ἰησοῦ, ὃν ἠγάπη ὁ Ἰησοῦς.

24 Νούη ἐν τέτρω Σίμων Πέτρῳ πύξας ἕως
καὶ εἰς ὧρει εἴληψα.

25 Ἐπιπιστῶν δὲ ἐκέειν ἐπὶ τὸ πῆξον
Ἰησοῦ, λέγων αὐτῷ· Κύριε, ἕως ἔστι;

26 Ἀποκρίνεθ' ὁ Ἰησοῦς· Ἐκεῖνός ἐστιν ὃ ἐγὼ
βάψας ὑψωμίον ἐπίδωσα. Καὶ ἐμβάψας ὑψω-
μίον, δίδωσι τὴν ἕδρα Σίμωνος Ἰσκαριώτη.

27 Καὶ μετὰ τὸ ψωμίον τότε εἰσηλθεν εἰς ἐκεί-
νον ὁ Σαζανᾶς. Λέγων ἐν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὁ
ποιεῖς, παίησον πέτραι.

28 Τῷ τῷ ἕδεις ἐγνω πῶν ἀνακήμερῶν αὐτοῦ
· ἔειπεν αὐτῷ.

29 Τις γὰρ ἐδόκεν, ἐπεὶ τὸ γλωσσόκομον
εἶχεν ὁ Ἰούδας, ὅτι λέγων αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀγ-
ρασον ὡν χρεῖαι ἐχομεν εἰς τὴν ἱορτήν· ἢ τοῖς
πρωχοῖς ἵνα τί θῶ.

30 Λαβὼν ἐν τῷ ψωμίον ἐκέειν, ὁμοίως
ἐξῆλθεν· ἡ δὲ νύξ.

31 Ὅτε ἐν ἐξῆλθε, λέγων ὁ Ἰησοῦς· Νῦν ἐδοξάσθη
ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου, ἔστι ὁ Θεὸς ἐδοξάσθη ἐν αὐτῷ.

32 Εἰ ὁ Θεὸς ἐδοξάσθη ἐν αὐτῷ, καὶ ὁ Θεὸς
δοξάσθη αὐτῷ ἐν ἑαυτῷ, ἔστι ὁμοίως δοξάσθη αὐτῷ.

33 Τεκνία, ἔλε μικρὸν μεθ' ὑμῶν εἰμι. Ζητήστέ με
ἔκχαρως εἴ ποτε ἴσθαι αἰοῖς· Ὅτι ὅπου ὑπάσσω
ἐγὼ, ὑμεῖς ἐδύνασθε ἐλθεῖν· ἔστι ὑμῖν λέγειν ἄρα.

34 Ἐν ἑλλῶ κατὰ δίδωμι ὑμῖν, ἵνα ἀγαπήτε
ἀλλήλους· κατὰ ἡγάπησα ὑμᾶς, ἵνα ἔστι ὑμεῖς
ἀγαπήτε ἀλλήλους.

- 35 Ἐν τέτταρτάῳ ἡμέρῃ πάντες ὅτι ἐμοὶ μαθη-
ταὶ ἔστε, ἐὰν ἀγάπῃ ἔχητε ἐν ἀλλήλοις.
- 36 Λέγει αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, πῶς
ὑπάγῃς; Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅπως
ὑπάγω, ἔδυνασά μοι νῦν ἀκροθῆσαι,
ἕστεροι δὲ ἀκροθῆσάς μοι.
- 37 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Κύριε, ἀγαπῶ
δύναμά σοι ἀκροθῆσαι ἄρκι; Ἐψυχῶ με
ὑπὲρ σε θήσω.
- 38 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τὴν ψυχῶν σε
ὑπὲρ ἐμοῦ θήσῃς; Ἀλλὰ ἀλλῶ λέγω σοι, ἔ-
μὴ ἀλέκτωρ φωνήσῃ ἕως ἃ ἀπαρνήσῃ με τρεῖς.

Κεφ. ιδ'. 14.

- 1 **Μ**ὴ παρασείσω ὑμῶν ἡ καρδία· πι-
σθεύετε εἰς τὸ Θεόν, καὶ εἰς ἐμὲ πισθεύετε.
- 2 Ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ πατρὸς μου πολλὰ
εἰσὶν εἰ δὲ μὴ, εἶπον αὐτοῖς ὑμῖν· πορεύομαι
ἐτοιμάσασθαι τόπον ὑμῖν.
- 3 Καὶ ἐὰν πορεύω, καὶ ἐτοιμάσω ὑμῖν τό-
πον, πάλιν ἔρχομαι ἐπὶ ἡμεῖς καὶ ἔσονται ὑμεῖς
πρὸς ἐμοὺ ἵνα ὅπως εἶμι ἐγὼ καὶ ὑμεῖς ἕτε.
- 4 Καὶ ὅπως ἐγὼ ὑπάγω οἶδάτε, καὶ τὸ ὅδον οἶ-
δατε.
- 5 Λέγει αὐτῷ Θωμᾶς· Κύριε, ἔκ οἶδα ὅπου πῶς
ὑπάγῃς καὶ πῶς δυνάμεθα τὸ ὄδον εἰδέναι;
- 6 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ εἶμι ἡ ὁδὸς, καὶ
ἡ ἀλήθεια, καὶ ἡ ζωὴ. Ἐδοκίμασον ἵνα πισ-
τέωσιν ἵνα μὴ δὲ ἐμῶν.

7 Εἰ

7 Εἰ ἐγνώκατέ με, ἔτ' πατέρα με ἐγνώκατε
αὐτὸν καὶ ἀπ' αὐτοῦ γινώσκετε αὐτὸν, ἔτι ἰσχυ-
ρατε αὐτόν.

8 Λέγει αὐτῷ Φίλιππος· Κύριε, δεῖξον
ἡμῖν τὸν πατέρα, καὶ δοκεῖ ἡμῖν.

9 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τοσούτοι χρόνοι μεθ'
ὑμῶν εἰμι, καὶ οὐκ ἐγνώκας με; Φίλιππε, ὁ
ἐωρακώς ἐμὲ, ἐώρακε τὸν πατέρα καὶ πᾶς
σὺ λέγεις· Δεῖξον ἡμῖν τὸν πατέρα;

10 Οὐ πιστεύεις ὅτι ἐγὼ εὐ τῷ πατρὶ, καὶ ὁ πα-
τὴρ εὐ ἐμοὶ ἐστίν; τὰ ῥήματα ἃ ἐγὼ λαλῶ ὑμῖν,
ἀπ' ἐμαυτοῦ ἢ λαλῶ· ὁ ὅτι πατὴρ ὁ εὐ ἐμοὶ
μάρτυρ, αὐτὸς ποιεῖ τὰ ἔργα.

11 Πισθεύετε μοι ὅτι ἐγὼ εὐ τῷ πατρὶ, καὶ ὁ
πατὴρ εὐ ἐμοὶ ἐστίν· εἰ σὺ ἐμὲ, ἀλλὰ τὰ ἔργα
αὐτὰ πισθεύετε μοι.

12 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὁ πισθῶν εἰς
ἐμὲ, τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ ποιῶ, καὶ κείνῳ ποιήσῃ,
καὶ μείζονα τούτων ποιήσῃ· ὅτι ἐγὼ παρὰ τὸν
πατέρα με πορεύομαι.

13 Καὶ ὁ, ἡ αὐτὴ αἰτήσῃ εὐ τῷ ὀνόματί μου, τὸ εὖ
ποιήσω· ἵνα δεξαθῇ ὁ πατὴρ εὐ τῷ υἱῷ.

14 Ἐάν τις αἰτήσῃ εὐ τῷ ὀνόματί μου, ἐγὼ
ποιήσω.

15 Ἐὰν ἀγαπήτε με, εἰς ἐντολὰς εἰς ἐμοὶς
τηρήσατε.

16 Καὶ ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν πατέρα, ἔτι ἄλλον πνευμα-
τικὸν δώσῃ ὑμῖν, ἵνα μὴ μεθ' ὑμῶν εἰς τὸν
αἰῶνα·

Q 3

17 Τὸ

- 17 Τὸ πνεῦμα τῆ ἀληθείας, ὃ ὁ κόσμος ἔδυνα-
τα λαθεῖν, ὅτι ἐθεωρεῖ αὐτὸ, ἐδὲ γνώσκει
αὐτὸ· ὑμεῖς ὅμως γινώσκετε αὐτὸ, ὅτι παρ' ὑμῶν
ἐστίν, καὶ ἐν ὑμῖν ἔστι.
- 18 Οὐκ ἀφήσω ὑμᾶς ὀρφανούς· ἐρχομαι πρὸς
ὑμᾶς.
- 19 Ἐπὶ μικρὸν, καὶ ὁ κόσμος με σοκῆ ἐπιθεωρεῖ·
ὑμεῖς δὲ θεωρεῖτέ με· ὅτι ἐγὼ ζῶ, καὶ ὑμεῖς
ζήσετε.
- 20 Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ γνώσεθε ὑμεῖς ὅτι
ἐγὼ ἐν τῷ πατρὶ μου, καὶ ὑμεῖς ἐν ἐμοί, καὶ ἐγὼ
ἐν ὑμῖν.
- 21 Ὁ ἐγὼ ζωὴ ἐν ἑαυτῷ μου, καὶ τῶν αὐτῶν,
ἐκείνός ἐστι ὁ ἀγαπῶν με· ὃς ἀγαπῶν με, ἀ-
γαπήσεται ὑπὸ τοῦ πατρὸς μου· ἔγωγε ἀγα-
πήσω αὐτὸν, καὶ ἐμφανίσω αὐτὸν ἐμαυτῷ.
- 22 Λέγει αὐτῷ Ἰσάκας· (ὅς ὁ Ἰσκαριώτης)
Κύριε, πὴ γέγραπεν ὅτι ἡμῖν μέλλεις ἐμφανίζε-
σαι αὐτὸν, καὶ ἐγὼ τὸ κῆρμα;
- 23 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἐάν τις
ἀγαπᾷ με, τὸ λόγον μου τηρήσει· καὶ ὁ πατήρ
μου ἀγαπήσει αὐτὸν, καὶ πρὸς αὐτὸν ἐλεύσο-
μεθα, καὶ μεθ' αὐτοῦ ποιήσομεθα.
- 24 Ὁ μὴ ἀγαπῶν με, τὰς λόγους μου ἔτιθε-
ται· καὶ ὁ λόγος ὃν ἀκούετε, σοκῆ ἐστὶν ἐμῶς, ἀλλὰ
τὸ πέμψαντός με πατρὸς.
- 25 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν παρ' ὑμῶν μόνων·
- 26 Ὁς ἀπέκλεισε τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον, ὃ
πέμψεν

πίμψς ὁ πατήρ ἐν τῷ ὀνόματι μου, ἐκείνη
 ὑμῶς διδάξῃ πάντα, καὶ ὑπομνήσῃ ὑμῶς
 πάντα ἃ εἶπον ὑμῖν.

27 Εἰρήνην ἀφίημι ὑμῖν, εἰρήνην ἣ ἐμεῖον
 δίδωμι ὑμῖν· ἡ κατὰ τὸν κόσμον δίδωσι,
 ἐγὼ δίδωμι ὑμῖν. μὴ ταρτασέσθω ὑμῶν ἡ
 καρδία, μηδὲ θλιβάτω.

28 Ἡκούσατε ὅτι ἐγὼ εἶπον ὑμῖν· Ὑπάγω καὶ
 ἐρχομαι πρὸς ὑμῶς. Εἰ ἤραπά τέ με, ἐχάρητε
 αὐτῷ ὅτι εἶπον, πορεύομαι πρὸς τὸν πατέρα,
 ὅτι ὁ πατήρ μου μεῖζων μου ἐστίν.

29 Καὶ νῦν εἰρηκεῖ ὑμῖν πρὸς ἡμᾶς· ἵνα
 ὅταν ἴκη, πιστεύσητε.

30 Οὐκ ἐπιπολλῶ λαλήσω μεθ' ὑμῶν· ἐρχέμεθα
 ὁ θεὸς μετὰ τῶν ἀρχόντων, ἔτι ἐμεῖο ἐκείνη ἔσθ' ἐν.

31 Ἀλλ' ἵνα γινώσκῃς τὸν κόσμον ὅτι ἀγαπᾷ τὸν πα-
 τέρα, ἔκατὰ τὴν ἐνείλατον μοι ὁ πατήρ, ἔγωγε
 ποῖα, ἐγείρεσθε, ἀγωνίαν ἐντεύξην.

Κεφ. ιε'. 15.

1 **Ε**Γὼ εἰμι ἡ ἀμπελὶς ἡ ἀληθινή, καὶ ὁ πα-
 τὴρ μου ὁ γεωργὸς ἐστίν.

2 Πᾶν κλήμα ἐν ἐμοὶ μὴ φέρον καρπὸν,
 αὐτὸ αὐτὸ καὶ πᾶν τὸ καρπὸν φέρον, κατὰ τὴν
 αὐτὸ, ἵνα πλείονα καρπὸν φέρῃ.

3 Ἢ δὴ ὑμεῖς κατὰ τὸν λόγον ὅν
 λελάληκα ὑμῖν.

4 Μείνατε ἐν ἐμοὶ, καὶ γὰρ ἐν ὑμῖν· κατὰ τὸ
 κλήμα ἐσθ' ἐν ἐμοὶ καρπὸν φέρει ἀφ' ἑαυτοῦ,

Q 4 ἐαυτῷ

ἕαν μὴ μένη ἐν τῇ ἀμπέλῳ· ἕτως ἕδὲ ὑμεῖς, ἕαν μὴ ἐν ἐμοὶ μένητε.

5 Ἐγὼ εἰμι ἡ ἀμπέλῳ, ὑμεῖς τὰ κλήματα· ὁ ῥῆθρον ἐν ἐμοὶ, καὶ ἐγὼ ἐν αὐτῷ, ἕτῳ Φέρει καρπὸν πολὺν· ὅτι χωρὶς ἐμοῦ ἕ δουάσθε ποιῆν ἕδέν.

6 Ἐάν μὴ τις μένη ἐν ἐμοὶ, ἐβλήθη ἕξω ὡς τὸ κλῆμα, καὶ ἐξηρανθή· καὶ συναῖσσει αὐτῶ, καὶ εἰς πῦρ βάλλῃσσι, καὶ κηῖται.

7 Ἐάν μείνητε ἐν ἐμοὶ, ἕ τὰ ῥήματα μου ἐν ὑμῖν μένη, ὁ ἕαν θέλητε αἰτήσεσθε, ἕ ἡγήσῃ ὑμῖν.

8 Ἐν τῷ ἕδῳ ἕαθή ὁ πατήρ μου, ἕνα καρπὸν πολὺν Φέρητε· καὶ ἡγήσεσθε ἐμοὶ μαθηταί.

9 Καθὼς ἡγάπησέ μου ὁ πατήρ, καὶ ἐγάπησά ὑμῶς· μένητε ἐν τῇ ἀγάπῃ τῇ ἐμῇ.

10 Ἐάν τις ἐνθέλας μου τηρήσῃ, ἡρεῖται ἐν τῇ ἀγάπῃ μου· καθὼς ἐγὼ ἐνθέλας ἕ πατρός μου τηρήσῃ, καὶ ῥῆθρον αὐτῷ ἐν τῇ ἀγάπῃ.

11 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἕνα ἡ χαρὰ ἡ ἐμὴ ἐν ὑμῖν μένη, καὶ ἡ χαρὰ ὑμῶν πληρωθῇ.

12 Αὐτῇ ἐστὶν ἡ ἐνθέλη ἡ ἐμὴ, ἕνα ἀγαπήσῃτε ἀλλήλους, καθὼς ἡγάπησα ὑμῶς.

13 Μείζονα ταύτης ἀγάπῃ ἕδεις ἕχῃ, ἕνα πῖς ἕ ψυχῶν αὐτῷ ἕ ὑπὲρ ἕ φίλων αὐτῷ.

14 Ὑμεῖς φίλοι μου ἐσῃ, ἕαν ποιῆτε ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν.

15 Οὐκέτι ὑμῶς λέγω ἕθλῃ· ὅτι ὁ ἕθλῳ ἕσκι οἶδε ἕ ποιῆ αὐτῷ ὁ κύριῳ· ὑμῶς εἰε εἰρηκα

- 25 Ἀλλ' ἵνα πληρωθῇ ὁ λόγος ὁ γραμμένος ἐν τῷ νόμῳ αὐτῶν· Ὅτι ἐμίσησάν με ὀφθαλμοί.
- 26 Ὅταν ᾗ ἔλθῃ ὁ πνεῦμα τῆς ἀληθείας, (τὸ πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὃ πνεῦμα τῆς πατρὸς ἐκπορεύεται) ἐκεῖνον μαρτυρήσει ὅτι ἔμεινεν.
- 27 Καὶ ὑμεῖς οὖν μαρτυρεῖτε, ὅτι ἀπ' ἀρχῆς μετ' ἐμοῦ ἐστέ.

Κεφ. 15. 16.

- 1 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν, ἵνα μὴ σκανδαλιθῆτε.
- 2 Ἀποσιωπήσας ποιήσατε ὑμᾶς· ἀλλ' ἔρχεται ἡ ὥρα, ἵνα πᾶς ὁ ἀποκλείνας ὑμᾶς, ὁδὸν λατρείου πρὸς φέρειν τῷ Θεῷ.
- 3 Καὶ ταῦτα ποιήσατε ὑμῖν, ὅτι ἔσκι ἔγνωσαν τὸν πατέρα ἔδεδέμεν.
- 4 Ἀλλὰ ταῦτα λελάληκα ὑμῖν, ἵνα ὅταν ἔλθῃ ἡ ὥρα, μνημονεύητε αὐτῶν, ὅτι ἐγὼ εἶπον ὑμῖν. Ταῦτα ᾗ ὑμῖν ἐξ ἀρχῆς ἔσκι εἶπον, ὅτι μετ' ὑμῶν ἦμην.
- 5 Νυνὶ ᾗ ὑπάρχω πρὸς τὴν πέμψασάν με, καὶ ἔδειξεν ἐξ ὑμῶν ἐρωτᾶ με· Πᾶς ὑπάρχει;
- 6 Ἀλλ' ὅτι ταῦτα λελάληκα ὑμῖν, ἡ λύπη πεπληρώσεν ὑμῶν τὴν καρδίαν.
- 7 Ἀλλ' ἐγὼ τὴν ἀλήθειαν λέγω ὑμῖν, συμφέρει ὑμῖν ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω· ἐάν γὰρ μὴ ἀπέλθω, ὁ πνεῦμα τῆς ἀληθείας ὃ ἐκπορεύεται πρὸς ὑμᾶς· ἐάν ᾗ πορεύω, πέμψω αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς.
- 8 Καὶ

- 8 Καὶ ἔλθων ἐκεῖνον, ἐλέγξεν τὸν κόσμον
 περὶ ἁμαρτίας καὶ περὶ δικαιοσύνης καὶ περὶ
 κρίσεως.
- 9 Περὶ ἁμαρτίας μὲν, ὅτι ἔπισθῶσιν εἰς ἐμέ.
- 10 Περὶ δικαιοσύνης δέ, ὅτι πατὴρ τὸν πατέρα
 μου ὑπάγω, καὶ σὺ ἐπιθεωρεῖτέ με.
- 11 Περὶ δὲ κρίσεως, ὅτι ὁ κόσμος τὸν κόσμον
 τῶν τέττα κίκερ).
- 12 Ἐπὶ πολλὰ ἔγω λέγων ὑμῖν, ἀλλ' ἔδύνασθε
 βασιλεύειν αὐτῶν.
- 13 Ὅταν οὖν ἐέλθῃ ἐκεῖνον, τὸ πνεῦμα τῆς
 ἀληθείας, ὁδηγήσει ὑμῶς εἰς πάντα τὴν ἀλή-
 θειαν· ἐγὼ δὲ λαλήσας ἀφ' ἐαυτοῦ, ἀλλ' ὅτι μὴ ἄ-
 κροτη λαλήσας, ἔτι ἐρχόμενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν.
- 14 Ἐκεῖνον ἐμὲ δοξάσας, ὅτι ἐκ τῶν ἐμῶν λή-
 ψας), καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν.
- 15 Πάντα ὅσα ἔχει ὁ πατήρ, ἐμὰ ἐστὶ· διὰ τὸ
 εἶπον ὅτι ἐκ τῶν ἐμῶν λήψας), καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν.
- 16 Μικρὸν, καὶ ἔπιθεωρεῖτέ με· καὶ πάλιν μικρὸν,
 ἔσφραξέ με, ὅτι εἶπα ὑπάγω πατὴρ τὸν πατέρα.
- 17 Εἶπον οὖν ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ πρὸς ἀλλή-
 λους· Τί ἐστὶ τὸ ὅ λέγει ὑμῖν· Μικρὸν, καὶ ἔ-
 πιθεωρεῖτέ με· καὶ πάλιν μικρὸν, ἔσφραξέ με·
 καὶ ὅτι ἐγὼ ὑπάγω πατὴρ τὸν πατέρα;
- 18 Ἐλέγξαν οὖν· Τὸ ὅτι ἐστὶν ὁ λέγων, τὸ μι-
 κρὸν; σὺ οὐκ οἶδάμεν τί λαλεῖ.
- 19 Ἐγὼ οὖν ὁ Ἰησοῦς οὐκ ἤθελον αὐτοὺς ἐρωτᾶν,
 καὶ εἶπον αὐτοῖς· Περὶ τούτων ζητεῖτε μετ'
 ἀλλήλων

ἀλλήλων ὅτι εἶπον· Μικρὸν, καὶ ἔθρωστέ με·
καὶ πάλιν μικρὸν, καὶ ὄψεσθε με·;

20· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι κλαύσετε καὶ
θρηνήσετε ὑμεῖς, ὃ ἡ χάρις χαρήσεται ὑμῖν·
καὶ ἡ λύπη ὑμῶν εἰς χαρὰν
μετετρέψεται.

21· Ἡ γυνὴ ὅταν πικρὰ λύπη ἔχῃ, ὅτι ἦλθεν
ἡ ὥρα αὐτῆς· ὅταν ἡ χυμὴ ᾖ τοῦ πεδίου, ἐκ
ἐπισημοῦ τῆς θλίψεως, ἀλλὰ τὴν χαρὰν, ὅτι
ἐχρημάτισεν ἡ ἀνθρωπότης εἰς τὸν κόσμον.

22· Καὶ ὑμεῖς ἐν λύπῃ μὲν ἔχετε, πάλιν
ἡ ὄψομαι ὑμᾶς, ἡ χάρις χαρήσεται ὑμῶν ἡ καρδία,
καὶ τὴν χαρὰν ὑμῶν ἔδειξαι ἀφ' ὑμῶν.

23· Καὶ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐμὲ σὺ ἐρωτήσεται
ἐδὲν. Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ὅσα αὐτῆ
τήσῃς τὴν πατέρα ἐν τῷ ὀνόματί μου, δώσῃ ὑμῖν.

24· Ἔως ἄρτι σὺ ἠτήσας ἐδὲν ἐν τῷ ὀνόματί
μου· αἰτεῖτε, καὶ λήψεσθε, ἵνα ἡ χάρις ὑμῶν ἡ
πεπληρωμένη.

25· Ταῦτα ἐν παροιμίαις λαλάληκα ὑμῖν·
ἀλλὰ ἔρχεται ὥρα ὅτε σὺ ἐπὶ ἐν παροιμίαις
λαλήσῃς ὑμῖν, ἀλλὰ παρήσῃς πρὸς τὸν πατέρα
ἀναγγελεῖ ὑμῖν.

26· Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐν τῷ ὀνόματί μου αἰ-
τήσῃς· ἐγὼ λέγω ὑμῖν ὅτι ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν
πατέρα πρὸς ὑμῶν·

27· Αὐτὸς γὰρ ὁ πατὴρ φιλεῖ ὑμᾶς, ὅτι ὑμεῖς
ἐμὲ πεφιλήκατε, καὶ πεπισθύκατε ὅτι ἐγὼ πα-
τρὸς εἰμι ἡ ἐξῆλθον.

28· Ἐξῆλ-

28 Ἐξῆλθεν ὁ Ἰησοῦς πατρὸς, καὶ ἐλήλυθε εἰς τὸ κήσμον· πάλιν ἀφίημι τὸ κήσμον, καὶ πορεύομαι πρὸς τὸν πατέρα.

29 Λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Ἴδε, νῦν παρήρσια λαλοῦν, καὶ πυροποιεῖσθαι ἐδεμίαν λέξασ.

30 Νῦν οἴδαμεν ὅτι αἶδας πάντα, καὶ ἐχρῆσθαι ἐχρῆσθαι ἵνα ἴς σε ἐρωτᾷ. ἐν τέτῳ πιστεύομεν ὅτι ἀπὸ Θεοῦ ἐξῆλθες.

31 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἄρα πιστεύετε;

32 Ἴδὲ, ἐρχεῖ ὥρα, ἢ νῦν ἐλήλυθεν, ἵνα σκορπιθῆτε ἐκαστὸς εἰς τὰ ἴδια, καὶ ἐμὲ μόνον ἀφῆτε, καὶ ἐκ εἰμι μόνον, ὅτι ὁ πατὴρ μετ' ἐμῶ ἐστίν.

33 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα ἐν ἐμοὶ εἰρήνῃ ἔχητε. ἐν τῷ κήσμῳ θλίψιν ἔξετε· ἀλλὰ θαρσεῖτε, ἐγὼ νενίκηκα τὸν κήσμον.

Κεφ. ιζ. 17.

1 Ταῦτα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐπέηρε πρὸς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ εἰς τὸ ἔργον, καὶ εἶπε· Πάτερ, ἐλήλυθεν ἡ ὥρα, δόξασόν σου τὸν υἱόν, ἵνα καὶ ὁ υἱός σου δοξάσῃ σε·

2 Καθὼς ἔδωκας αὐτῷ ἐξουσίαν πάσης σαρκῆς, ἵνα πᾶν ὃ δέδωκας αὐτῷ, δώσῃ αὐτοῖς ζωὴν αἰώνιον.

3 Ἄυτη δὲ ἐστὶν ἡ αἰώνιος ζωὴ, ἵνα γνώσκωσιν σε τὸν μόνον ἀληθινὸν Θεόν, καὶ ὃν ἀπέστειλας Ἰησοῦν Χριστόν.

4 Ἐγώ

- 4 Ἐγὼ σε ἐδόξασα ἐπὶ τῆ γῆς· τὸ ἔργον ἐτελείωσα ὃ δέδωκός μοι ἵνα ποιήσω.
- 5 Καὶ νῦν δόξατόν μοι σὺ πάτερ ὡραίσταυτῶ τῆ δόξης ἣ εἶχον παρὰ σοῦ τὸ κήρυγμα εἶναι, ὡραίστα σοί.
- 6 Ἐφανέρωτά σοι τὸ ὄνομα τοῖς ἀνθρώποις ἕως δέδωκός μοι ἐκ σοῦ κήρυγμα σοὶ ἦσαν, ἔτι μοι αὐτὰς δέδωκας, καὶ τὸ λόγον σε τεληρήκασι.
- 7 Νῦν ἔγνωκαν ὅτι παῖδά σου δέδωκός μοι, ὡραίστα σοὶ ἐστίν·
- 8 Ὅτι παρὰ ῥήματά σου δέδωκός μοι, δέδωκας αὐτοῖς· καὶ αὐτοὶ ἔλαβον, καὶ ἔγνωσαν ἀληθῶς ὅτι ὡραίστα σοὶ ἐξήλθοι, καὶ ἐπίστῳσαν ὅτι σὺ με ἀπέστῳλας.
- 9 Ἐγὼ παρὰ αὐτῶν ἐρωτῶ ἔτι παρὰ σοῦ κήρυγμα ἐρωτῶ, ἀλλὰ παρὰ σοῦ δέδωκός μοι ὅτι σοὶ ἐπι.
- 10 Καὶ παρὰ ἐμοὶ παῖδά σου ἐστίν, καὶ παρὰ ἐμοὶ καὶ δέδοξα τῷ σου αὐτοῖς.
- 11 Καὶ σοὶ ἐπι ἐμὶ ἐν τῷ κήρῳ, ἔτι σοὶ ἐν τῷ κόσμῳ ἐστίν, καὶ ἐγὼ παρὰ σοῦ ἐρχομαι. Πάτερ ἄγε, τήρησον αὐτὰς ἐν τῷ ὀνόματί σου, ἕως δέδωκός μοι, ἵνα ᾧσιν ἐν κατὰ ἡμεῖς.
- 12 Ὅτι ἡμεῖς μετὰ αὐτῶν ἐν τῷ κόσμῳ, ἐγὼ ἐτήρησον αὐτὰς ἐν τῷ ὀνόματί σου ἕως δέδωκός μοι· φύλαξαι, καὶ ἄδεις ἐξ αὐτῶν ἀπώλετο ἐμὴ ἡ ἀπόστολος· ἵνα ἡ γραφή πληρωθῇ.
- 13 Νῦν ἔτι παρὰ σοῦ ἐρχομαι, ἔτι ζωτα λαλῶ ἐν τῷ κόσμῳ, ἵνα ἔχωσι τὸ χάριτι τὸ ἐμὸν πεπληρωμένον ἐν αὐτοῖς.
- 14 Ἐγὼ

- 14 Ἐγὼ δέδωκα αὐτοῖς τὸ λόγον σου, καὶ ὁ κόσμος ἐμίσησεν αὐτὰς, ὅτι σὺ εἶσιν ἐκ τοῦ κόσμου, καὶ ἡγὼ σὺ εἶμι ἐκ τοῦ κόσμου.
- 15 Οὐκ ἔρωτώ ἵνα ἀρῆς αὐτὰς ἐκ τοῦ κόσμου, ἀλλ' ἵνα τηρήσῃς αὐτὰς ἐκ τοῦ πονηροῦ.
- 16 Ἐκ τοῦ κόσμου σὺ εἶσι, καὶ ἡγὼ ἐκ τοῦ κόσμου σὺ εἶμι.
- 17 Ἀγίασον αὐτὰς ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου. ὁ λόγος ὁ σὺς ἀληθὴς ἐστίν.
- 18 Καθὼς ἐμὲ ἀπίστῃλας εἰς τὸν κόσμον, καὶ ἡ ἀπίστῃλα αὐτὰς εἰς τὸν κόσμον.
- 19 Καὶ ὑπερ αὐτῶν ἐγὼ ἀγαῶμαι ἐμαυτὸν, ἵνα καὶ αὐτοὶ ᾧσιν ἡγιασμένοι ἐν ἀληθείᾳ.
- 20 Οὐ παρὲς τούτων ἢ ἔρωτώ μόνον, ἀλλὰ καὶ παρὲς τῆς πιστευσήσαντος ἀπὸ τοῦ λόγου αὐτοῦ εἰς ἐμέ.
- 21 Ἴνα πάντες εἰ ᾧσι, καθὼς σὺ πᾶτερ ἐν ἐμοί, καὶ ἡγὼ ἐν σοί, ἵνα καὶ αὐτοὶ ἐν ἡμῖν εἰ ᾧσι ἵνα ὁ κόσμος πιστεύσῃ ὅτι σὺ με ἀπίστῃλας.
- 22 Καὶ ἐγὼ ἢ δόξαν ἡμῶν δέδωκας μοι, δέδωκα αὐτοῖς ἵνα ᾧσιν ἐν, καθὼς ἡμεῖς ἐν ἐσθρῷ.
- 23 Ἐγὼ ἐν αὐτοῖς, καὶ σὺ ἐν ἐμοί, ἵνα ᾧσι τελεσθῶμεν εἰς ἐν, καὶ ἵνα γινώσκῃ ὁ κόσμος ὅτι σὺ με ἀπίστῃλας, ἢ ἡγάπησας αὐτὰς, καθὼς ἐμὲ ἡγάπησας.
- 24 Πάτερ, ἃς δέδωκας μοι, θέλω ἵνα ὅπως ἐμὲ ἐγὼ, καὶ ἄλλοι ᾧσι μετ' ἐμῶν ἵνα θεωρῶσι ἢ δόξαν τὴν ἐμὴν ἡμῶν δέδωκας μοι, ὅτι ἡγάπησάς με παρὰ πολλῶν κόσμου.

25 Πάτερ

- 25 Πάτερ δέχομαι, ἔο κ' ἔσθης σε ἐκείνω, ἵνα δὲ σε ἔγνω, ἔσθαι ἔνωται ὅτι σὺ με ἀπίστ' ἔλας.
- 26 Καὶ ἐγνώρισται αὐτοῖς τὸ ὄνομα Ἰησῆ, καὶ γνωρίσθη· ἵνα ἡ ἀρχαὴ καὶ ἡ γάπησός με, ἐν αὐτοῖς ἦ, καὶ γὰρ ἐν αὐτοῖς.

Κεφ. ιη'. 18.

- 1 Ταῦτα εἰπὼν ὁ Ἰησῆς ἐξῆλθε σὺν τοῖς μαθηταῖς αὐτῶ πέραν τῆς χιμαρῆος τῶν Κεδρών, ὅπου κῆπη ἦν, εἰς ὃν εἰσῆλθεν αὐτὸς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.
- 2 Ἦδὲ ἢ καὶ Ἰσάδας ὁ πῶδραδιδὲς αὐτὸν, τὸν τόπον ὅπου ποικιλίαι σιμῆχθη ὁ Ἰησῆς ἐκεῖ μετ' τῶν μαθητῶν αὐτῶ.
- 3 Οὐκ ἴσάδας λαβὼν τὴν σπειραν, καὶ ἐκ τῆς δόχουρίαν καὶ φαρισσαίων ὑπερηβείας, ἐρχετο ἐκεῖ μετ' Φανῶν ἑλαμπάδων καὶ ὄπλων.
- 4 Ἰησῆς ἔν ἰσάδας πάντα τὰ ἐρχόμενα ἐπ' αὐτὸν, ἐξελθὼν εἶπεν αὐτοῖς· Τίνα ζητεῖτε;
- 5 Ἀπεκρίθησαν αὐτῶ· Ἰησῆν τὸν Ναζωραῖον. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησῆς· Εἰ γὰρ εἰμι. Εἰσήκη δὲ καὶ Ἰσάδας ὁ πῶδραδιδὲς αὐτὸν, μετ' αὐτῶν.
- 6 Ὡς ἔν εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι ἐγὼ εἰμι, ἀπῆλθον εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ ἔπεσον χαμαί.
- 7 Πάλιν ἔν αὐτῶς ἐπηρώτησε· Τίνα ζητεῖτε; Οἱ ἢ εἶπον· Ἰησῆν τὸν Ναζωραῖον.
- 8 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησῆς· Εἶπον ὑμῖν ὅτι ἐγὼ εἰμι. εἰ ἔν ἐμὲ ζητεῖτε, ἀφείετέ με ὑπάγειν.

9 Ἰνα

- 9 ἵνα πληρωθῆ ὁ λόγος ὃν εἶπεν· Ὅτι ἕως
δεδωκός μοι, εἰς ἀπάλεισα ἐξ αὐτῶν ὕδεια.
- 10 Σίμων ἐν Πέτρῳ ἔχον μάχαιραν, εἰλ-
κυσεν αὐτῷ, καὶ εἶπε· ἦ ἔδουλεύεις δού-
λον, καὶ ἀπέκρυψεν αὐτῷ τὸ ὄπιον τὸ δεξιόν. ἠὲ
ἦ ὄνομα τῷ δούλῳ Μάλχῳ.
- 11 Εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς τῷ Πέτρῳ· Βάλει τὴν
μάχαιράν σου εἰς τὴν θήκην. τὸ πολέμιον ὁ δέ-
δωκέ μοι ὁ πατήρ, καὶ μὴ πῖω αὐτό;
- 12 Ἦ ἔν ἀπείρα ἐὶς ὁ χιλιάρχος (καὶ οἱ ὑποφύλακτοι)
Ἰσδαίων σωέλαιον τῷ Ἰησοῦ, καὶ ἔδθησαν αὐτῷ.
- 13 Καὶ ἀπήγαγεν αὐτὸν πρὸς Ἄνναν πρεσ-
βυτον. ἠὲ ἦ πενήτηρος ἔστι Καϊάφας, ὁ ἠὲ δούλευ-
σας ἔστι ἐνιαυτῶς ἐκείνης.
- 14 Ἦ ἔστι Καϊάφας ὁ συμβουλεύσας τοῖς
Ἰσδαίοις ὅτι συμφέρει ἓνα ἄνθρωπον ἀπολέ-
σθαι ὑπὲρ ἔστι λαῶν.
- 15 Ἦ ἠκολούθη ἦ τῷ Ἰησοῦ Σίμων Πέτρῳ, καὶ
ὁ ἄλλῳ μαθητῆς. ὁ ἦ μαθητῆς ἐκείνῳ ἠὲ
γνωστὸς τῷ δούλευσιν, καὶ σωφιστήριε τῷ Ἰησοῦ
εἰς τὴν αὐλήν ἔστι δούλευσας.
- 16 Ὁ ἦ Πέτρῳ εἰσηκὼς πρὸς τῆς θυρᾶς ἔξω.
ἔξῃ ληθεν ἔν ὁ μαθητῆς ὁ ἄλλῳ ὁς ἠὲ γνωστὸς
τῷ δούλευσιν, καὶ εἶπε τῇ θυρῶν, καὶ εἰσηγαγε
τῷ Πέτρῳ.
- 17 Λέγει ἔν ἡ παροῦσα ἡ θυρῶν τῷ Πέτρῳ·
Μὴ καὶ σὺ ἐκ τῶν μαθητῶν εἶ ἔστι ἄνθρωπος τέ-
τος; Λέγει ἐκείνῳ· Οὐκ εἰμὶ.

- 18 Εἰσηκόντη ἢ οἱ δέλοι καὶ οἱ ὑπηρέται ἀν-
θρακικὰν πιπιοκότες, ὅτι ψύχθησαν, καὶ
ἐθερμάνοντο· ἡ δὲ μετ' αὐτῶν ὁ Πέτρος ἐστὼς
καὶ θερμοπόδιον.
- 19 Ὁ δὲ ἀρχιερεὺς ἤρώτησε τὸν Ἰησοῦν ἀεὶ τῶν
μαθητῶν αὐτοῦ καὶ ἀεὶ τῆς διδασκαλίας αὐτοῦ.
- 20 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ πάντοτε ἐδίδαξα
ἐν τῇ συναγωγῇ ἢ ἐν τῷ ἱερῷ, ὅπου πάντα
ἔθι οἱ Ἰουδαῖοι συναρχοῦν, καὶ ἐν κρυπτοῖς ἐλά-
λησα ἑδὲν.
- 21 Τί μοι ἐπιρωτᾷς; ἐπράτησον τὰς ἀκηκό-
τους, τί ἐλάλησα αὐτοῖς· ἴδε, ἕτοιμοὶ οἶδασιν ἅ
εἶπον ἐγώ.
- 22 Ταῦτα ἢ αὐτῷ ἐπὶ ἠέθη, εἰς τὸ ὑπερε-
πῶν παρισηκῶς ἔδωκε ῥάπισμα τῷ Ἰησοῦ,
εἰπὼν· Οὕτως ἀποκρίθη τῷ ἀρχιερεῖ·
- 23 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ κακῶς
ἐλάλησα, μαρτύρησον ἀεὶ τῷ κακῷ· εἰ δὲ
καλῶς, ἵ μοι δοῖς;
- 24 Ἀπέστειλεν ἕν αὐτῶν ὁ ἄντις δεδευμένον
πρὸς Καϊάφην τὸν ἀρχιερέα.
- 25 Ἦν δὲ Σίμων Πέτρος ἐστὼς καὶ θερμοπόδιος.
εἶπον ἕν αὐτῶν· Μὴ καὶ σὺ ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ
εἶ; Ἠγήσατο εἰπεῖν, καὶ εἶπεν· Οὐκ εἰμὶ.
- 26 Λέγει εἰς ἐκ τῶν δούλων τοῦ ἀρχιερέως, συζη-
τήσας αὐτῷ ἀπέκρυψε Πέτρον τὸ ὄνομα· Οὐκ εἶδῶ
σε εἶδον ἐν τῷ κήπῳ μετ' αὐτοῦ;

27 Πάλιν

- 27 Πάλιν οὖν ἠνεήσατο ὁ Πίλατος, ἔδύλεως ἀλέκτωρ ἐφώνησεν.
- 28 Ἄγασιν οὖν τὸ Ἰησοῦν ἀπὸ τοῦ Καϊάφα εἰς τὸ πραιτώριον. ἡ δὲ ὑπεροχὴ καὶ αὐτοὶ οὐκ εἰσῆλθον εἰς τὸ πραιτώριον, ἵνα μὴ μιανθῶσιν, ἀλλ' ἵνα φάγωσι τὸ πάχος.
- 29 Ἐξῆλθεν ἔνθα ὁ Πιλάτος πρὸς αὐτούς, ἔειπε· Τίνα κατηγορίαν φέρετε κατὰ τὸν ἀνθρώπου τούτου;
- 30 Ἀπεκρίθησαν ἔειπον αὐτῷ· Εἰ μὴ ἡμεῖς ἔστος κατηγοροῦντες, οὐκ αὐτοὶ παρεδώκαμεν αὐτόν.
- 31 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Λάθετε αὐτὸν ὑμεῖς, καὶ κατὰ τὸ νόμον ὑμῶν κρίνατε αὐτόν. Εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· Ἡμῖν οὐκ ἐξεῖσι ἀποκτεῖναι ἕδνεα.
- 32 ἵνα ὁ λόγος τοῦ Ἰησοῦ πληρωθῆι, ὃν εἶπε, σημαίνων ποῖα θανάτω ἡμελλεν ἀποθνήσκειν.
- 33 Εἰσῆλθεν ἔνθα εἰς τὸ πραιτώριον πάλιν ὁ Πιλάτος, ἔεφώνησε τὸ Ἰησοῦν· καὶ εἶπεν αὐτῷ· Σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων;
- 34 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀφ' ἐαυτοῦ σὺ τῶν λέγεις, ἢ ἄλλοι σοι εἶπον ὡς ἐμῆ;
- 35 Ἀπεκρίθη ὁ Πιλάτος· Μήτις ἐγὼ Ἰουδαῖός εἰμι; τὸ ἔθνος τὸ σὸν καὶ οἱ ἄρχιερεῖς παρέδωκάν σε ἐμεῖ· τί ἐποίησας;
- 36 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ οὐκ ἐστὶν ἐκ τῶν κόσμων τούτων· εἰς οὐκ ἐστὶν ἐκ τῶν κόσμων τούτων ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ, οἱ ὑπερέχοντες αὐτῶν οἱ ἐμεῖ ἠγωνίζονται ἵνα μὴ ὑποταχθῶ τοῖς Ἰουδαίοις·

νω δὲ ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ οὐκ ἔστιν ἐν τῷ κόσμῳ.

37 Εἶπει αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Οὐκ εἶ βασιλεύς εἶ σύ; Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Σὺ λέγεις ὅτι βασιλεύς εἰμι ἐγώ. ἐγὼ εἰς τὸ τοῦτο γεγέννημαι, καὶ εἰς τὸ τοῦτο ἐλήλυθα εἰς τὸν κόσμον, ἵνα μαρτυρήσω τῇ ἀληθείᾳ. Πᾶς ὁ ἀνὴρ ἐκ τῆς ἀληθείας, ἀκούσῃ μου τῆς φωνῆς.

38 Λέγει αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Τί ἐστι ἀλήθεια; Καὶ τὸ τοῦτο εἰπὼν, πάλιν ἐξῆλθε πρὸς τοὺς Ἰουδαίους, καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἐγὼ οὐδεμίαν αἰτίαν δεύω ἐν αὐτῷ.

39 Ἐπεὶ ἡ συνήθεια ὑμῶν ἵνα ἕνα ὑμῶν ἀπολύσω ἐν τῷ πάχῳ· βάλειτε ἔν ὑμῶν ἀπολύσω τὴν βασιλείαν τῆς Ἰουδαίας;

40 Ἐκράζουσιν ἔν πάλιν πάντες, λέγοντες· Μὴ τὸν, ἀλλὰ τὸν Βαρθολομαῖον· ἰαὶ ἡ βαρβαρὸς ληστής.

Κεφ. 18. 19.

1 Τότε ἔν ἔλαθιν ὁ Πιλάτος τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἐμαστρώσει.

2 Καὶ οἱ στρατιῶται πλέξαντες στέφανον ἐξ ἀκανθῶν, ἐπέθηκαν αὐτῷ τὴν κεφαλὴν, καὶ ἰμάτιον πορφυρῶν περιβαλεῖν αὐτόν.

3 Καὶ ἔλεγον· Χαῖρε ὁ βασιλεύς τῆς Ἰουδαίας, ἔδοξεν αὐτῷ ραπίσματος.

4 Εξῆλθεν ἔν πάλιν ἔξω ὁ Πιλάτος, ἔλεγει αὐτοῖς· Ἴδε, ἀγὼ ὑμῶν αὐτὸν ἔξω, ἵνα γνῶτε ὅτι ἐν αὐτῷ οὐδεμίαν αἰτίαν δεύω.

5 Εξῆλ-

5 Ἐξῆλθεν ἔτι ὁ Ἰησοῦς ἔξω, φορῶν τὸ ἀγκύ-
βινον τὸ φανόν, καὶ τὸ πορφυρὸν ἱμάτιον. Καὶ
λέγει αὐτοῖς· Ἴδε ὁ ἀνθρώπος.

6 Ὅτε ἔν εἶδον αὐτὸν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ ἱε-
ρέται, ἐκράυζασαν, λέγοντες· Στυφύρωσον,
σταύρωσον. Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Λάθε-
τε αὐτὸν ὑμεῖς, ἐσταύρωσαίτε· ἐγὼ γὰρ ἔχω
δύνασιν ἐν αὐτῷ αἰπῶν.

7 Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· Ἡμεῖς νό-
μον ἔχομεν, καὶ κατὰ τὸν νόμον ἡμῶν ὀφείλει ἀπο-
θανεῖν, ὅτι ἐαυτὸν υἱὸν τοῦ Θεοῦ ἐποίησεν.

8 Ὅτε ἔν ἤκουσεν ὁ Πιλάτος τὸν λό-
γον, μάλλον ἐφοβήθη.

9 Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ πραιτώριον πάλιν, ἐ-
λέγει τῷ Ἰησοῦ· Πόθεν εἶ σὺ; Ὁ Ἰησοῦς ἀπο-
κρίσιν οὐκ ἔδωκεν αὐτῷ.

10 Λέγει ἔν αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Ἐμοὶ εἰ λα-
λεῖς, οὐκ οἶδας ὅτι ἐξουσίαν ἔχω σταυρῶσαί
σε, καὶ ἐξουσίαν ἔχω ἀπολύσει σε;

11 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ εἶχες ἐξουσίαν
ἐδεδεμένον κατ' ἐμῶν, εἰ μὴ ἵνα σοὶ δεδομένον
ἦν ἀναθῆναι. Διὰ τῆτο ὁ ἄρχιερεὺς με σοὶ μεί-
ζονα ἀμαρτίαν ἔχει.

12 Ἐκ τῆτο ἐζήτητὶ ὁ Πιλάτος ἀπολύσει
αὐτὸν· οἱ Ἰουδαῖοι ἐκράζον, λέγοντες· Ἐὰν
τῆτον ἀπολύσης, οὐκ εἶ φίλος τοῦ Καίσα-
ρος. πᾶς ὁ βασιλεὺς αὐτὸν ποιῶν, ἀντιλέγει
τῷ Καίσαρι.

13 Ὁ οὐκ

- 13 Ο οὖν Πιλάτῳ ἀπέσπευ τῆτον τὸ λό-
 γον, ἤγαγεν ἔξω τὸ Ἰησοῦν, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ τῷ
 βήματι· εἰς τόπον λεγόμενον Λιθόστρωτον,
 Ἐβραϊστὶ ἢ Γαββθατῆ.
- 14 Ἦν ἡ ᾠδὸσκηλὴ τῷ πάχῳ, ὥρα δὲ
 ὡσεὶ ἕκτη· καὶ λέγει τοῖς Ἰουδαίοις· Ἴδὲ ὁ βα-
 σιλεύς ὑμῶν.
- 15 Οἱ ἡ ἐκρωχασαν· ἄρον, ἄρον, σαύρωσον
 αὐτόν. Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Τὸν βασιλέα
 ὑμῶν σαύρωσω; Ἀπεκρίθησαν οἱ δόχαιρέις·
 Οὐκ ἔχομεν βασιλέα εἰ μὴ Καίσαρα.
- 16 Τότε ἔν παρέδωκεν αὐτὸν αὐτοῖς ἵνα σταυ-
 ρωθῆ. παρέλαβον ἡ τὸ Ἰησοῦν καὶ ἀπήγαγον.
- 17 Καὶ βασίζων τὸ σταυρὸν αὐτῷ ἐξῆλθεν
 εἰς τὸ λεγόμενον Κροανὶς τόπον, ὃς λέγεται
 Ἐβραϊστὶ Γολγοθῆ.
- 18 Ὅπῃ αὐτὸν ἐσαύρωσαν, ἐ μίλλ' αὐτῷ ἄλλας
 δύο, ἐντύθηεν ἐ ἐντύθηεν, μίσσον ἡ τὸ Ἰησοῦν.
- 19 Ἐγραψῆ ἡ καὶ πύλον ὁ Πιλάτῳ, ἐ ἔφη-
 κεν ἐπὶ τῷ σταυρῷ. Ἰησοῦς ἡ γεγραμμένον· ἸΗ-
 ΣΟΥΣ Ο΄ΝΑΖΩΡΑΙΟΣ Ο΄ΒΑ-
 ΣΙΛΕΥΣ ΤῶΝ ΙΟΥΔΑΙΩΝ.
- 20 Τῆτον ἔν τῷ πύλον πολλοὶ ἀνέγνωσαν τῷ
 Ἰουδαίων· ὅτι ἐγγὺς λαὸ τῷ πόλεως ὁ τόπος
 ὅπῃ ἐσαύρωθη ὁ Ἰησοῦς. καὶ Ἰησοῦς γεγραμμένον
 Ἐβραϊστὶ, Ἐκλίωιστὶ, Γωμαιστὶ.
- 21 Ἐλεγον οὖν τῷ Πιλάτῳ οἱ δόχαιρέις τῷ
 Ἰουδαίων· Μὴ γράφει· Ὁ βασιλεύς τῷ Ἰου-
 δαίων·

δαίων· ἀλλ' ὅτι ἐκείνῳ εἶπε· Βασιλεῦς εἶμι
 τῶν Ἰσδαίων.

22 Ἀπεκρίθη ὁ Πιλάτος· Ὁ γέγραφα, γέ-
 γραφα.

23 Οἱ δὲν ἐραζῶνται, ὅτε ἐσαύρωσαν τὸ Ἰησοῦν,
 ἔλαβον τὰ ἱμάτια αὐτοῦ (ὅ ἐποίησαν τέσ-
 σαρα μέρη, ἐκάστω ἐραζῶντι μέρῳ) καὶ τὸ
 χιτῶνα· ἡ δὲ ὁ χιτῶν ἀράφος, ἐκ τῆ ἀνώ-
 θεν ὕφαντος δι' ὄλκω.

24 Εἶπον δὲν πρὸς ἀλλήλους· Μὴ κρίσωμεν αὐ-
 τόν, ἀλλὰ λάχωμεν πρὸς αὐτῷ, τίνῳ ἔσται.
 ἵνα ἡ γραφή πληρωθῆ ἢ λέγασαι· Διεμερί-
 σουνθὸ τὰ ἱμάτιά μου ἐαυτοῖς, καὶ ἐπὶ τὸ ἱμα-
 τισμόν μου ἕδαλον κλῆρον. Οἱ μὲν δὲν ἐρα-
 ζῶνται ταῦτα ἐποίησαν.

25 Εἰσήκουν δὲ πρὸς τὴν σαυρῶν τῶν Ἰησοῦν ἡ μή-
 τηρ αὐτοῦ ὅ ἡ ἀδελφὴ τῆ μητρός αὐτοῦ, Μαρία
 ἡ δὲ Κλωπᾶ, καὶ Μαρία ἡ Μαβδαλῆνῃ.

26 Ἰησοῦς δὲν ἰδὼν τὴν μητέρα, καὶ τὸ μαθητὴν
 παρεστῶτα ὃν ἠγάπη, λέγει τῇ μητρὶ αὐτοῦ·
 Γύναι, ἰδὲ ὁ υἱός σου.

27 Εἶπε λέγει τὸν μαθητὴν· Ἴδὲ ἡ μήτηρ σου.
 Καὶ ἀπ' ἐκείνης τῆς ὥρας ἔλαβεν αὐτὴν ὁ
 μαθητὴς εἰς τὰ ἴδια.

28 Μετὰ τούτο εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι πάντα ἤδη
 τετέλεσται, ἵνα τελεσθῆ ἡ γραφή, λέγει·
 Διψῶ.

29 Σκεῖνος δὲν ἕκαστο ὄξος μετόν. οἱ δὲ, πλῆ-
 καντες

- συντες σπόγγον ὄξος, καὶ ὑσώπων ἀποθνήσκοντες,
 περιώρεσαν αὐτῷ τὰ σώματα.
- 30 Ὅτε οὖν ἔλαθε τὸ ὄξος, ὁ Ἰησοῦς, εἶπε·
 Τετέλεσται· καὶ κλινὰς τὸ κεφαλῶν, παρέδω-
 κε τὸ πνεῦμα.
- 31 Οἱ ἔν Ἰουδαῖοι, ἵνα μὴ μείνη ἐπὶ τῆς σαυρῆ
 τὰ σώματα ἐν τῷ σαββάτῳ, ἐπεὶ ὡρα-
 σκευήτων, (ὡς γὰρ μεγάλη ἡ ἡμέρα ἐκείνη τῆς
 σαββάτου) ἠρώτησαν τὸν Πιλάτον ἵνα κατεα-
 γῶσιν αὐτῶν τὰ σκέλη, ἔδωκέν αὐτοῖς.
- 32 Ἦλθον οὖν οἱ στρατιῶται, καὶ τῆς μὲν ὡραίας
 κατέαξαν τὰ σκέλη, ἔδωκε δὲ ἄλλας τῆς συσαυ-
 ραζενίᾳ αὐτῶν.
- 33 Ἐπὶ ἧ τὸ Ἰησοῦς ἐνελθόντες, ὡς εἶδον αὐτῶν ἡδη
 πεθνηκότας, ἐκατέαξαν αὐτῶν τὰ σκέλη.
- 34 Ἀλλ' εἰς τὸν στρατιωτῶν λόγῳ αὐτῶν τὸ πάλιν
 εἶναι ἐνεῦξεν, καὶ ὁ δὲ εὐθὺς ἐξῆλθεν αἷμα ἔκ ὑδάτος.
- 35 Καὶ ὁ ἰωρακῶς μαρτυροῦντος, καὶ ἀληθι-
 νῆ αὐτῶν ἐστὶν ἡ μαρτυρία· καὶ κείνῳ οἰδεῖν
 ὅτι ἀληθῆ λέγει, ἵνα ὑμεῖς πισδύσητε.
- 36 Ἐχέτω γὰρ ταῦτα ἵνα ἡ γραφή πληρω-
 θῆ· Ὅταν ἐσωτεροῦσθε αὐτῶν.
- 37 Καὶ πάλιν ἑτέρα γραφή λέγει· Ὅψαν
 εἰς ὃν ἐξεκέντησαν.
- 38 Μετὰ ἧ ταῦτα ἠρώτησε τὸν Πιλάτον ὁ Ἰω-
 σήφ ὁ δὲ ἀπὸ Ἀρμαθαίας, (ὁ μαθητὴς τῆς
 Ἰησοῦς, κεκρυμμένῳ ἧ ἀπὸ τὸ φόβον τῶν Ἰου-
 δαίων) ἵνα ἄρῃ τὸ σῶμα τῆς Ἰησοῦς· ἔειπε τῆς
 οὐκ ἔστιν ὁ Πι-

ὁ Πιλάτος. ἦλθεν ἐν κ' ἡμερῶν τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.

39 Ἦλθε ἰδοὺ καὶ Νικάνορ (ὁ ἐλθὼν πρὸς τὸ Ἰησοῦν νυκτὸς τοῦ πρῶτου) φέρων μίγμυρα σμύρνης καὶ ἀλόης ὡσεὶ λίτρας ἐκατόν.

40 Ἐλάβον οὖν τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ, καὶ ἔθηκαν αὐτὸ ὀθονίοις μετὰ τῶν ἀρωμάτων, καθὼς ἐθελοῦσιν ἐπὶ τοῖς Ἰουδαίοις ἐπιταφιάζειν.

41 Ἦν δὲ ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ἐσαυρώθη κηπὸν, καὶ ἐν τῷ κήπῳ μνημεῖον κρητὸν, ἐν ᾧ εἰδέναι οὐδεὶς ἐπέφη.

42 Ἐκεῖθεν ἀφ' ἧς τῆς ἀνατολῆς Ἰουδαίων, ὅπου ἐστὶν ἡμεῖς τὸ μνημεῖον, ἔθηκαν τὸ Ἰησοῦν.

Κεφ. κ'. 20.

1 Τῆς δὲ μετὰ τῶν σαββάτων Μαθαία ἡ Μαγδαλινα ἔρχεται πρὸς σκολίαν ἐπιθήσει, εἰς τὸ μνημεῖον· καὶ βλέπει τὸ λίθον ἠεμῆμου ἐκ τῆς μνημεῖου.

2 Τρέχουσα δὲ ἔρχεται πρὸς Σίμωνα Πέτρον, καὶ πρὸς τὸν ἄλλον μαθητὴν ὃν ἐφίλει ὁ Ἰησοῦς· καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἦσαν τὸ Κύριον ἐκ τῆς μνημεῖου, καὶ οὐκ οἶδα μὲν πῶς ἔθηκαν αὐτόν.

3 Ἐξῆλθεν οὖν ὁ Πέτρος καὶ ὁ ἄλλος μαθητής, καὶ ἦρχοντο εἰς τὸ μνημεῖον.

4 Ἐτρεχον δὲ οἱ δύο οὗτοι, καὶ ὁ ἄλλος μαθητής πρὸς τὸν Πέτρον, καὶ ἦλθε πρὸς τὸν Πέτρον εἰς τὸ μνημεῖον.

5 Καὶ ἀνακύψας βλέπει κείμενα τὰ ὀθόνια· καὶ μὲντοι εἰσῆλθεν.

R 6 Ἐρχε-

- 6 Ἐρχεται οὖν Σίμων Πίτρος ἡ ἀκολουθῶν αὐτῷ, καὶ εἰσήλθεν εἰς τὸ μνημεῖον, ὅθεν ἔβη ταὶ ὀθονία κείδρα,
- 7 Καὶ τὸ σκεδάριον ὃ ἦν ἐπὶ τῆ κεφαλῆς αὐτῆ, ἔμεινεν ὀθονίαν κείδρον, ἀλλὰ χωρὶς ἐντετυλιγμένον εἰς ἓνα τόπον.
- 8 Τότε ἐν εἰσήλθε καὶ ὁ ἄλλος μαθητὴς ὁ ἐλθὼν πρῶτος εἰς τὸ μνημεῖον, καὶ εἶδε, ὅτι ἐπίτρυπεν.
- 9 Οὐδέπω γὰρ ἠδύσαν τίνα γραφῶν, ὅτι δεῖ αὐτὸν ἐκτεκρῆν ἀναστῆναι.
- 10 Ἀπῆλθον ἔτι πάλιν πρὸς ἐαυτοὺς οἱ μαθηταί.
- 11 Μαρία ἡ εἰσηκὴ πρὸς τὸ μνημεῖον κλαίουσα ἔξω ὡς ἐν ἐκλαμο, παρέκυσεν εἰς τὸ μνημεῖον.
- 12 Καὶ θεωρεῖ δύο ἄγγελους ἐν λόκοις, καθεζομένους, ἓνα πρὸς τῆ κεφαλῆ, καὶ ἓνα πρὸς τοὺς πόσιν, ὅπως ἐκείτο τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.
- 13 Καὶ λέγουσιν αὐτῇ ἐκεῖνοι· Γύναι, τί κλαίεις; λέγει αὐτοῖς· Ὅτι ἤραον τὸ κύριόν μου, καὶ οὐκ εἶδα πῶς ἔθηκαν αὐτόν.
- 14 Καὶ ταῦτα εἰπύουσα, ἐστράφη εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ θεωρεῖ τὸ Ἰησοῦ ἐνώπιον· καὶ οὐκ ᾔδει ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἐστίν.
- 15 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Γύναι, τί κλαίεις; τίνα ζητεῖς; Εἰκένη, δοκῶσα ὅτι ὀκηπερός ἐστίν, λέγει αὐτῷ· Κύριε, εἰ σὺ ἐδάσκασας αὐτόν, εἰπέ μοι πῶς αὐτὸν ἔθηκαν· καὶ γὰρ αὐτὸν δρῶ.
- 16 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μαρία. Στραφεῖσα ἐκεῖνη λέγει αὐτῷ· Ῥαββουθι, ὃ λέγεται, διδάσκαλε.

17 Λέγει

17 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μὴ με ἀπὸ τῆς ἕπο-
 ρῆς ἀναθεῖσθαι, ὡς τὸ πατέρα μου· πορεύε-
 ῖς ὡς τὰς ἀδελφάς μου, καὶ εἰπὲ αὐτοῖς·
 Αναθαίνω ὡς τὸ πατέρα μου ἔπατέρα
 ὑμῶν, καὶ Θεὸν μου ἔθεόν ὑμῶν.

18 Ἔρχεται Μαρία ἡ Μαβδαλλεύη ἀπα-
 γέλλουσα τοῖς μαθηταῖς ὅτι ἐώρακε τὸ Κύ-
 ριον, καὶ τούτω εἶπεν αὐτῇ.

19 Οὕτως ἔν ὄψιαις τῆς ἡμέρας ἐκείνης τῆς μετὰ
 τῆς σαββάτων, καὶ τῆς ἡμετέρας κενόσμων, ὅτε
 ἦσαν οἱ μαθηταὶ σωματῶν Δύο τῶν Φοβῶν τῶν
 Ἰουδαίων, ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἔστη εἰς τὸ μέσον,
 ἔλεγει αὐτοῖς· Εἰρήνῃ ὑμῖν.

20 Καὶ τῶν εἰπόντων, ἰδὼν αὐτοῖς τὰς χεῖρας
 καὶ τὸ πλῆθος αὐτῆς. Ἐχάρησαν οὖν οἱ μα-
 θηταὶ ἰδοῦντες τὸ Κύριον.

21 Εἶπεν ἔν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς πάλιν· Εἰρήνῃ
 ὑμῖν· καθὼς ἀπέσταλκέ με ὁ πατήρ, καὶ γὰρ
 πέμπω ὑμᾶς.

22 Καὶ τῶν εἰπόντων, ἐνεφύση, καὶ λέγει αὐ-
 τοῖς· Λάθετε πνεῦμα ἅγιον.

23 Ἄν πταν ἀφῆτε τὰς ἁμαρτίας, ἀφίενται
 αὐτοῖς· ἂν ἴνων κρατῆτε, κεκρατίτω).

24 Θωμαῶς δὲ, εἰς ἐν τῶν δώδεκα, ὁ λεγόμε-
 νος, Δίδυμος, ὅτι ἦν μετ' αὐτῶν ὅτε ἦλθεν
 ὁ Ἰησοῦς.

25 Ἐλεγον οὖν αὐτῷ οἱ ἄλλοι μαθηταὶ·
 Ἐώρακα μὲν τὸ Κύριον. Οἱ δὲ εἶπεν αὐτοῖς·

R 1

Ε'αθ

Εὰν μὴ ἴδω ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶ τὸ τύπον τῆς ἤλων, καὶ βάλω τὸ δάκτυλόν μου εἰς τὸν τύπον τῆς ἤλων, ἔβαλα τὴν χεῖρά μου εἰς τὸ πλῆθυν αὐτῶ, ἢ μὴ πισύσω.

26 Καὶ μετ' ἡμέρας ὀκτὼ πάλιν ἦσαν ἔσω οἱ μαθηταὶ αὐτῶ, καὶ Θωμαῶς μετ' αὐτῶν· ἔρχεται ὁ Ἰησοῦς τῶν θυρῶν κακλυσμένων, ἔειπεν εἰς τὸ μέσον, καὶ εἶπεν· Εἰρήνῃ ὑμῖν.

27 Εἶπε λέγει τῶν Θωμαῶ· Φέρε τὸ δάκτυλόν σου ἄδω, καὶ ἴδω τὰς χεῖράς μου· ἔφερε τὴν χεῖρά σου, ἔβαλε εἰς τὸ πλῆθυν μου· ἔμην γίνεσθαι ἀπίστου, ἀλλὰ πιστός.

28 Καὶ ἀπεκρίθη ὁ Θωμαῶς, ἔειπεν αὐτῶ· Ὁ Κύριός μου καὶ ὁ Θεός μου.

29 Λέγει αὐτῶ ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι εἰσραγίαις μου, Θωμαῶ, πεπίσθου καὶ μαθηταὶ οἱ μὴ ἰδόντες, καὶ πισύσωσιν.

30 Πολλὰ μὲν οὕτως καὶ ἄλλα σημεῖα ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς ἐνώπιον τῶν μαθητῶν αὐτῶ, ἃ ὅσα ἔτι γεγραμμένα ἐν τῇ βιβλίῳ τούτῳ.

31 Ταῦτα ἡ γέγραπται, ἵνα πισύσητε, ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἐστὶν ὁ Χριστός ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, καὶ ἵνα πισύσητε ζωὴν ἔχητε ἐν τῷ ὀνόματι αὐτῶ.

Κεφ. κα'. 21.

1 Μετὰ ταῦτα ἐφανερώσεν ἑαυτὸν πάλιν ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς ἐπὶ τῇ Σαλαμίνῃ τῆς Τυβεριάδος· ἐφανερώσεν ἡ ἕκτις·

2 Ἦσαν ὁμοῦ Σίμων Πέτρος, ἔθωμαῶς ὁ λεγόμενος

λιθάριον Δίδυμον, κὶ Ναθαναὴλ ὁ ἀπὸ
Κανᾶ τῆ Γαλιλαίας, ἔοι δὲ Ζεβεδαῖς, καὶ
ἄλλοι ἐκ τῶ μαθητῶν αὐτοῦ δύο.

Λέγει αὐτοῖς Σίμων Πέτρος· Ὑπάγω
ἀλιεύει· Λέγουσιν αὐτῷ· Ἐρχόμεθα κὶ ἡμεῖς
σὺ σοι. Ἐξῆλθον, ἔ ανέβησαν εἰς τὸ πλοῖον
δύο, κὶ οὐ εὐκείνη τῇ νυκτὶ ἐπίασαν οὐδέν.

4 Πρωίας ἣ ἤδη γηυομένης ἔση ὁ Ἰησοῦς εἰς
τὸ αἰγιαλόν· ἔ μύητοι ἠδύσαν οἱ μαθηταὶ ὅτι
Ἰησοῦς ἐστὶ.

5 Λέγει οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Παιδῖα, μή τι
ωροσφάγιον ἔχετε; Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ· Οὐ.

6 Ὁ ἣ εἶπεν αὐτοῖς· Βάλῃτε εἰς τὰ δεξιά
μέρη δὲ πλοῖος τὸ δίκτυον, ἔ οὐρήσετε. Ἐθα-
λον οὖν, κὶ ὅτε ἐπὶ αὐτὸ ἐλκῦσαν ἰχθυσαν ἀπὸ
δὲ πλοῖου τῶ ἰχθύων.

7 Λέγει οὖν ὁ μαθητὴς ἐκεῖν· ὃν ἠγάπη
ὁ Ἰησοῦς, τῷ Πέτρῳ· Ὁ Κύριός ἐστι. Σίμων
οὖν Πέτρος, ἀπέσας ὅτι ὁ Κύριός ἐστι, τὸ
ἐπιπνύτιον διεζώσατο, (ὡν γὰρ γυμνός) καὶ
ἔβαλεν ἑαυτὸν εἰς τὴ θάλασσαν.

8 Οἱ ἣ ἄλλοι μαθηταὶ τῷ πλοιαρίῳ ἤλ-
θον, (ἔ γὰρ ἦσαν μακρὰν ἀπὸ τῆ γῆς, ἀπὸ ὡς
ἀπὸ πηγῶν Δαμοσίων) σύροντες τὸ δίκτυον
τῶ ἰχθύων.

9 Ὡς οὖν ἀπέβησαν εἰς τὴ γλῶ, βλέπεσαν
ἀνθρακίαν κέμηλον, καὶ ὄψαρον ἐπικέ-
μημον, κὶ ἄρτον.

R 3

IO Λέγει

- 10 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐνέγκασθε δύο ἴσθηθ' ὄψαριον ἅν ἐπιβάστατε ὑμεῖς.
- 11 Ἀνέβη Σίμων Πέτρος, καὶ εἴλκυσε τὸ δίχτυον ἐπὶ τῆς γῆς, μετὸν ἰχθύον μεγάλην ἔχοντ' ἰχθυοῦσ' αἰσίων· καὶ τὸσάτων ὕψων ὅσον ἐσχίσθη τὸ δίχτυον.
- 12 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Δεῦτε, ἀρρήσασθε. Οὐδεὶς ἔτόλμα τῶν μαθητῶν ἐξελάσσει αὐτὸν, Σὺ τίς εἶ; εἰδότες ὅτι ὁ Κύριός ἐστιν.
- 13 Ἐρχοῦν ὁ Ἰησοῦς, καὶ λαμβάνει τὸ ἄρτον, καὶ δίδωσιν αὐτοῖς, καὶ τὸ ὄψαριον ὀμβρίας.
- 14 Τῆτο ἤδη τρίτον ἐφανερώθη ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ἐγερθεὶς ἐκ νεκρῶν.
- 15 Ὅτε ἐν ἠρήσῃσιν, λέγει τῷ Σίμωνι Πέτρῳ ὁ Ἰησοῦς· Σίμων Ἰωνᾶ, ἀγαπᾶς με πῶς; Λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύριε· σὺ οἶδας ὅτι φιλῶ σε. Λέγει αὐτῷ· Βόσκει τὰ θρόνα μου.
- 16 Λέγει αὐτῷ πάλιν δεύτερον· Σίμων Ἰωνᾶ, ἀγαπᾶς με; Λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύριε· σὺ οἶδας ὅτι φιλῶ σε. Λέγει αὐτῷ· Ποίμηνε τὰ πρόβατά μου.
- 17 Λέγει αὐτῷ τὸ τρίτον· Σίμων Ἰωνᾶ, φιλεῖς με; Ἐλυπήθη ὁ Πέτρος ὅτι εἶπεν αὐτῷ τὸ τρίτον· Φιλεῖς με; καὶ εἶπεν αὐτῷ· Κύριε, σὺ πάντα οἶδας· σὺ γινώσκεις ὅτι φιλῶ σε. Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Βόσκει τὰ πρόβατά μου.
- 18 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω σοι, ὅτε ἦς νεώτερος, ἐξάνηκας σεαυτὸν, καὶ ᾤκει πᾶσι ὅπως ἤθελεις·
- ὅταν

ὅταν ἡ γραφήσῃς, ἐκτενείς τὰς χεῖρας σου, καὶ ἄλλο σε ζώσῃ, καὶ οἴσῃ ὅπως θέλῃς.

19 Τὸτο ἡ εἶπε, σημερινῶν ποιῶ θανάτω δοξάσῃ τὸ Θεόν. Καὶ τὸτο εἰπὼν, λέγει αὐτῷ· Ἀχλασθή μοι.

20 Ἐπιγραφείς ἡ ὁ Πέτρος βλέπει τὸ μαθητῶν ὃν ἠγάπα ὁ Ἰησοῦς, ἀχλασθῆναι, ὃς καὶ ἀνέπεσεν ἐν τῷ δείπνῳ ἐπὶ τὸ σῆθαι αὐτῷ, καὶ εἶπε· Κύριε, τίς ἐσὶν ὁ ὄψοι δίδῃς σε;

21 Τὸτον ἰδὼν ὁ Πέτρος λέγει τῷ Ἰησοῦ· Κύριε, εἴτω ἡ τί;

22 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐὰν αὐτὸν θέλω μὴ εἶναι ἕως ἔρχομαι, τί πῶς σε; σὺ ἀχλασθή μοι.

23 Ἐξῆλθεν ἔν ὁ λόγος εἴτω εἰς τὰς ἀδελφούς, ὅτι ὁ μαθητῆς ἐκείνῳ ἐκ δόποθνήσκει καὶ ὅσκι εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς ὅτι ὅσκι δόποθνήσκει· ἀλλ'· Ἐὰν αὐτὸν θέλω μὴ εἶναι ἕως ἔρχομαι, τί πῶς σε;

24 Οὕτως ἐσὶν ὁ μαθητῆς ὁ μαρτυρῶν πῶς ἐστίνων, καὶ γραφῆσται ταῦτα· καὶ οἴδαμεν ὅτι ἀληθής ἐσὶν ἡ μαρτυρία αὐτῷ.

25 Ἔστι ἡ ἑτέρα πολλὰ ὅσα ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, ἅπναι ἐὰν γραφῆσται καθ' ἓν, εἰδὲ αὐτὸν οἴματι τὸ κῆσμον χωρῆσται τὰ γραφόμενα βιβλία. Ἀμὲν.

ΠΡΑΞΕΙΣ ΤΩΝ ΑΓΙΩΝ
ΑΠΟΣΤΟΛΩΝ.

Κεφ. α'. Ι.

1 **Τ**ΟΝ μὲν πρῶτον λόγον ἐποίη-
σάντων πάλαι πάντων, ὡς Θεόφι-
λος, ὡς ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς ποιεῖν τε
καὶ διδάσκειν.

2 Ἀρχὴ ἧς ἡμέρας ἐντελέμεθα τοῖς ἀπο-
στόλοις διὰ πνεύματος ἁγίου, ὅς ἐξελέξα-
το, ἀνελήφθη.

3 Οἷς ἐπαρέστη ἐαυτοῦ ζῶντα μὲν τὸ πει-
θεῖν αὐτὸν, ἐν πολλοῖς τεκμηρίοις, δι' ἡμερῶν
πενήκοντα ὅταν ὁ μὲν αὐτοῖς, ἐλέγων
πρὸς αὐτοὺς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

4 Καὶ συναλιζόμενος παρεμήλει αὐτοῖς διὰ
Ἱεροσολύμων μὴ χωρίζεσθαι, ἀλλὰ δεξιμήν
τὴν ἐπιχειρήσαντα πατέρος, ἡμῶν ἡμεῖς τε.

5 Ὅτι Ἰωάννης μὲν ἐβάπτισεν ὕδατι, ὑμεῖς
ἰσχυροθήσεσθε ἐν πνεύματι ἁγίῳ καὶ μὲν
πολλὰς ταύτας ἡμέρας.

6 Οἱ μὲν ἔν συνεληθόντες, ἐπηρεάζοντο αὐτὸν,
λέγοντες· Κύριε, εἰ ἐν ταῖς χρόνῳ τέτρω ἀπο-
στασίας τὴν βασιλείαν τῶν Ἰσραήλ;

7 Εἶπε ἰσχυρὸς αὐτὸς· Οὐχ ὑμῶν ἐστὶ γνώ-
ναι χρόνος ἢ καιρὸς ὅς ὁ πατήρ ἐξεῖρε ἐν τῇ
ιδίᾳ ἐξουσίᾳ.

8 Ἀλλὰ

- 8 Ἀλλὰ λήψατε δυνάμιν ἐπελθόντες ἡ
ἀγία πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς· καὶ ἔσεσθε μοι
μάστορες ἐν τε Ἱερουσαλήμ ἔν τῃ παλαιᾷ τῇ Ἰε-
ρουσαλήμ, καὶ Σαμαρεία, ἔως ἐσχάτης γῆς.
- 9 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, βλέπόντων αὐτῶν
ἐπήρθη, καὶ νεφέλη ὑπέλαβεν αὐτὸν ἀπὸ τῶ
ὄψεσθαι αὐτῶν.
- 10 Καὶ ὡς ἀπενίζοντες ἦσαν εἰς τὸ ἕρανόν, πο-
ροδύμους αὐτῶν, καὶ ἰδὲ, ἄνδρες δύο περὶ στή-
κοντες αὐτοῖς ἐν ἑσθίῃ λαύκῃ.
- 11 Οἱ καὶ εἶπον· Ἄνδρες Γαλιλαῖοι, τί ἐση-
κασθε ἐμβλέποντες εἰς τὸ ἕρανόν; εἶπεν ὁ Ἰη-
σοῦς ὁ ἀναληφθεὶς ἀφ' ὑμῶν εἰς τὸ ἕρανόν,
ἕτις ἐλεύσεται ὁν τρέπον ἐξεάσασθε αὐτὸν
ποροδύμουν εἰς τὸ ἕρανόν.
- 12 Τότε ὑπέστρεψαν εἰς Ἱερουσαλήμ ἀπὸ
ὄρους ἑκαταμύου Ἐλαιῶν, ὅ ἐστιν ἐγγὺς
Ἱερουσαλήμ, σαβοῦντας ἔχον ὁδόν.
- 13 Καὶ ὅτι εἰσηλθόν, ἀνέβησαν εἰς τὸ ὑπε-
ραῖον, εἶ ἦσαν καταμένοντες, ὅτε Πέτρος καὶ
Ἰακώβος, ἔτι Ἰωάννης, ἔτι Ἀνδρέας, Φίλιπ-
πος καὶ Θωμᾶς, Βαρτολομαῖος ἔτι Ματ-
θαῖος, Ἰακώβος Ἀλφαῖος καὶ Σίμων ὁ Ζη-
λωτὴς, καὶ Ἰούδας Ἰακώβου.
- 14 Οὗτοι πάντες ἦσαν παρθενογενεῖς ὁμο-
θυμοῦσιν τῇ παρθενογενεῖ καὶ τῇ δεήσει, σὺν
γυναϊκί, καὶ Μαρίᾳ τῇ μητρὶ Ἰησοῦ, καὶ
σὺν τοῖς ἀδελφοῖς αὐτῶν.

R 5

15 Καὶ

- 15 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις ἀναστὰς
 Πίπτος ἐν μέσῳ τῶν μαθητῶν, εἶπεν· (ὡς
 τε ὄχλος ὀνομαζομένων ἐπὶ τὸ αὐτὸ ὡς ἐπαθὲν
 εἴχουσι)
- 16 Ἄνδρες ἀδελφοί, ἔδει πληρωθῆναι τὴν
 γραφὴν ταύτην ἧς ᾤεσθε τὸ πνεῦμα
 τὸ ἅγιον λέγει σήμερον Δαβὶδ, ὅτι Ἰσ-
 δα ἔσθ' ἡμεῖς ὁδηγῶν τὰς συλλογὰς τῶν
 Ἰσραήλ·
- 17 Ὅτι κληρονομηθῆναι ἡμῶν, καὶ
 ἔλαχε τὸ κληρονομήσει Δαβὶδ τῆς
 αὐτῆς.
- 18 Οὐτὸν μὲν οὖν ἐκέντησε χωρίον ἐκ τῶν
 μισθῶν τῆς ἀδικίας, καὶ πρὸς τὸν
 Ἰσραὴλ ἐλάκησε μέσσω· καὶ ἐξέχευεν πάντα τὰ
 ἀσπλάγχιστα αὐτοῦ.
- 19 Καὶ γνωστὸν ἐγένετο πᾶσι τοῖς καθ' ἑαυτοὺς
 Ἰερουσαλήμ, ὥστε κληθῆναι τὸ χωρίον ἐκεῖ-
 νο τῆ ἰδίᾳ Δαβὶδ αὐτῶν, Ἀκροδαμῶν
 τετίσι, χωρίον αἰμαθῶν.
- 20 Γέγραπται γὰρ ἐν βιβλίῳ ψαλμῶν Γενη-
 θήτω ἡ ἑπαυλις αὐτῆ ἔρημος, ἕ μὴ ἔστω ὁ
 καθ' ἑαυτοῦ ἐν αὐτῇ. Καὶ τὸν ἐπισκεπτοῦν
 αὐτῆ λαοὶ ἕτεροι.
- 21 Δεῖ οὖν τῶν συνεληθόντων ἡμῶν ἀνδρῶν ἐν
 παντὶ χρόνῳ, ἐν ᾧ εἰσῆλθε καὶ ἐξῆλθεν ἐφ'
 ἡμᾶς ὁ Κύριος Ἰησοῦς,
- 22 Ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς βαπτισμοῦ Ἰωάν-
 νου ἕως τῆς ἡμέρας ἧς ἀνελήφθη ἀφ' ἡμῶν,
 μᾶς-

μάρτυρα τῆ ἀναστάσεως αὐτῆς γινώσκουσι
ἡμῖν εἶνα τέτων.

23 Καὶ ἔστησαν δύο, Ἰωσήφ τῆ καλέμνον
Βαρσαβάν, ὃς ἐπεκλήθη Ἰούδας, καὶ
Ματθίαν.

24 Καὶ πρεσβυτέρων εἶπον· Σὺ Κύριε καρ-
διογνώστη πάντων, ἀνάσξου ἐκ τέτων τῶ
δύο εἶνα ὃν ἐξελέξω,

25 Λαοὶν τῆ κληρον τῆ Διακονίας ταύτης ἐ
ἀποστολῆς, ἐξ ἧς παρέβη Ἰούδας, πορευθῆναι
εἰς τὸ τόπον τῆ ἰδίου.

26 Καὶ ἔδωκεν κλήρας αὐτῶν, καὶ ἔπεισεν ὁ
κληρῶ ἐπὶ Ματθίαν, ἐ συγκατεψηφίσθη
μετὰ τῶ ἑνδεκα ἀποστόλων.

Κεφ. β'. 2.

1 Καὶ ἐν τῷ συμπληροῦσθαι τῶν ἡμερῶν τῶ
Πεντηκοστῆς, ἦσαν ἀπαύθιες ὁμοθυμαδὸν
ἐπὶ τὸ αὐτό.

2 Καὶ ἐχρῆσθε ἄφρων ἐκ τῶ ἔραυθῆ ἦχθη
ὡς περ φερομένης προῆς βιαίας, καὶ ἐπλήρω-
σει ὅλον τὸ οἶκον ἔ ἦσεν καθήμενοι.

3 Καὶ ἠφθῆσαν αὐταῖς ἀφμερῶν ἰδμεναι
γλώσσαι ὡς πυρός, ἐκάδοσέ τε ἐφ' εἶνα
ἔχισεν αὐτῶν.

4 Καὶ ἐπλήροσθησαν ἀπαύθιες πνεύματι
ἀγίῳ, καὶ ἠρξασθε λαλεῖν ἐτέραις γλώσ-
σαις, καθὼς τὸ πνεῦμα ἐδίδω αὐτοῖς διπο-
φθεῖσθαι.

5 ἦσεν

- 5 Ἦσαν ᾗ ἐν Γερουσαλήμ καθεκόντες Ἰουδαῖοι, ἄνδρες σύλαβεῖς, ἀπὸ παντὸς ἔθνους ᾗ ὑπὸ τ᾽ ἔρατόν.
- 6 Γειομόνης ᾗ τ᾽ Φωνῆς Τρώτης, σιωπῆλθε τὸ πλῆθος, καὶ σιωσχύθη· ὅτι ἤκουον εἰς ἕκαστος τῆ ἰδίᾳ Δαδλέκλω λαλέντων αὐτῶν.
- 7 Εξίσαντο ᾗ πάντες καὶ ἐθαύμαζον, λέγοντες πρὸς ἀλλήλους· Οὐκ ἰδὲ πάντες ἔτι εἰσὶ οἱ λαλέντες Γαλιλαῖοι;
- 8 Καὶ πῶς ἡμεῖς ἀκούομεν ἕκαστος τῆ ἰδίᾳ Δαδλέκλω ἡμῶν ἐν ἧ ἐχθνήτηρμ;
- 9 Πάρθοι καὶ Μηδοὶ ἔ Ελαμίται, καὶ οἱ καθεκόντες τῶν Μισσοποταμίαν, Ἰουδαίαν τε καὶ Καππαδοκίαν, Πόντον καὶ τ᾽ Ἀσίαν,
- 10 Φρυγίαν τε καὶ Παμφυλίαν, Αἴγυπτον, καὶ τὰ μέρη τ᾽ Λιβύης τ᾽ καὶ Κυρηνάϊν, καὶ οἱ ἐπισημῆντες Ρωμαῖοι, Ἰουδαῖοί τε καὶ κροσῆλυτοι,
- 11 Κρήτες καὶ Ἀραβες, ἀκούομεν λαλέντων αὐτῶν ταῖς ἡμετέραις γλώσσαις τὰ μαγαλεῖα τ᾽ Θεῶ.
- 12 Εξίσαντο ᾗ πάντες καὶ διηπόρον, ἀλλοτὸ πρὸς ἄλλοι λέγοντες· Τί αὐτῶν γέλοισιν εἶναι;
- 13 Ἐπεροὶ ᾗ χλοδάζοντες ἔλεγον· Ὅτι γλώσσας μεμισταυρόοι εἰσὶ.
- 14 Στάθεῖς ᾗ Πέτρος σιωπῆλ τοῖς ἑνδεκά, ἐπήρε τ᾽ Φωνῆν αὐτῶ, καὶ ἀπιφθέγγετο αὐτοῖς· Ἄνδρες Ἰουδαῖοι, καὶ οἱ καθεκόντες Γερουσαλήμ ἀπὸ παν-

ἀπαντες, τῆτο ὑμῖν γνωστὸν ἔστω, καὶ συνπί-
 στωθε τὰ ρήματά μου.

15 Οὐ γὰρ, ὡς ὑμεῖς ὑπολαμβάνετε, ἔτοι-
 μεθύσασι· ἔτι γὰρ ἄρα τρίτη τῆμέρας·

16 Ἀλλὰ τῆτό ἐστι τὸ ἐρημνίον ἀπὸ τῆς
 Φήτης Γωήλ·

17 Καὶ ἔσται ἐν ταῖς ἐχάταις ἡμέραις, (λέγει ὁ
 Θεός) ἐκχεῶ ἀπὸ τῆς πνύματός μου ἐπὶ πᾶ-
 σαν σάρκα· καὶ περφηθήσονται οἱ υἱοὶ ὑμῶν
 καὶ αἱ θυγατέρες ὑμῶν, καὶ οἱ νεανίσκοι ὑμῶν
 ὀρώσας ὄψον), καὶ οἱ πρεσβύτεροι ὑμῶν
 ἐνύπνια ἐνύπνιαθήσονται).

18 Καὶ γὰρ ἐπὶ τὰς δάλας μου καὶ ἐπὶ ταῖς δά-
 λαις μου ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐκχεῶ
 ἀπὸ τῆς πνύματός μου, καὶ περφηθήσονται.

19 Καὶ δώσω τέρατα ἐν τῇ ἔραναί ἄνω, καὶ
 σημεῖα ἐπὶ τῆ γῆς καὶ τῶ αἵμα καὶ πῦρ καὶ
 ἀτμίδια καπνοῦ.

20 Ὁ ἥλιος μετὰσραφήσει) εἰς σκοτό, καὶ
 ἡ σελήνη εἰς αἷμα, πρὶν ἢ ἔλθεῖν τῆ ἡμέραν
 Κυρίου τῆς μεγάλης καὶ ἐπιφανῆς.

21 Καὶ ἔσται, πᾶς ὃς ἀν' ἐπικαλέσει) τὸ ὄνο-
 μα Κυρίου, σωθήσει).

22 Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, ἀκούσατε τὰς λόγους
 τῆς τῆς· Ἰησοῦ τῆ Ναζωραίου, ἀνδρα ἀπὸ τῆ
 Θεῦ ἀποδεδεδεγμένον εἰς ὑμᾶς δινώμεσι καὶ
 τέρασι καὶ σημείοις οἷς ἐποίησε δι' αὐτοῦ ὁ Θεός
 ἐν μέσῳ ὑμῶν, καθὼς καὶ αὐτοὶ οἴδατε,

23 Τῆτον

- 23 Τῷτοι τῇ ἁρσιμῶν βελῆ κὲ παρηνῶσφ
 Ἐ Θεῖ ἐκδύθι λαδόντες, Διφ χράων ἀνόμων
 παρσηξάντες ἀνείλετε.
- 24 Οὐ ὁ Θεὸς ἀνέστησε, λύσας τὰς ἀσλίνας Ἐ
 θανάτω, κατόπιν ὅσκι ἰω δυνάτων κρηίει ἄσ
 αὐτὸν ἰω' αὐτῆ.
- 25 Δαβὶδ γὰρ λέγει εἰς αὐτὸν· Προωρῶ μὲν τὸ
 Κύριον ἐνώπιόν μου Διφ παντός, ὅπιν ἐκ δὲ-
 ξίωι μου εἰσιν, ἵνα μὴ σαλεύθω.
- 26 Διὰ τῶν δὲ φροίνθη ἡ καρδία μου, καὶ
 ἡ καρδιά μου ἡ γλώσσα μου· ἐπὶ ἡ καὶ ἡ σάρξ
 μου κατεσκηνώσφ ἐπὶ ἐλπίδι,
- 27 Ὅπιν ὅσκι ἐγκαταλείψφ τὴ ψυχὴ μου εἰς
 ἄδω, ἐδὲ δάψφ τὸ ὄσιον Ἐ εἶδιν Διφ φθορῶν.
- 28 Ἐ γνώρισάφ μου ὁδὸς ζωῆς· πληρώσφ μου
 δὲ φροσῶνς μὲ Ἐ παρσῶπφ Ἐ.
- 29 Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐξὸν εἰπεῖν μὲ παρ-
 ρησίφ παρὸς ὑμᾶς πῶι Ἐ πατεράρχφ Δα-
 βὶδ, ὅπιν καὶ ἐπελύθη Ἐ ἐπέφφ, καὶ τὸ
 μῆμφ αὐτῆ εἰσιν ἐν ἡμῶν ἄσφ τὴ ἡμέρας
 τῶν φφ.
- 30 Προφῆτης οὐκ ἰπαρχαν, καὶ εἶδῶς ὅπιν ὁρ-
 κφ ἁμφσιν αὐτῶ ὁ Θεὸς, ἐκ κερσῆ τῆς
 ὁτφύθφ αὐτῆ τὸ καὶ σάρκα ἀναστήσφ τὸν
 Χριστὸν, κατῆσφ ἐπὶ Ἐ φρόνφ αὐτῆ,
- 31 Προϊδῶν ἐλάλησε πῶι τὴ ἀναστάσιφ Ἐ
 Χριστῆ, ὅπιν Ἐ κατελείφθη ἡ ψυχὴ αὐτῆ εἰς
 ἄδω, ἐδὲ ἡ σάρξ αὐτῆ εἶδιν Διφ φθορῶν.

32. Τῷτιν

- 32 Τῶτον τ' Ἰησοῦν ἀνέστησεν ὁ Θεός, ἔπει-
τες ἡμεῖς ἐσμὲν μάρτυρες.
- 33 Τῇ δεξιᾷ ἔν τ' Θεῷ ὑψωθεῖς, πῶς τε
ἐπαγγελίᾳ τ' ἀγίας πνεύματι λαβὼν
ᾧ τ' πατρὸς, ἐξέχευε τὸ ὄνομα ὑμεῖς
βλέπετε καὶ ἀκούετε·
- 34 Οὐ γὰρ Δαβὶδ ἀνέβη εἰς τὰς οὐρανούς· λέγει
δὲ αὐτός· Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου·
Κάθου ἐκ δεξιῶν μου,
- 35 ἕως ἂν θῶ τὰς ἐχθρὰς σου ὑποπόδιον τῶν
ποδῶν σου.
- 36 Ἀσφαλῶς ἔν γνωσκέτω πᾶς οἶκος Ἰσρα-
ὴλ, ὅτι Κύριον ἐ χειρὸν αὐτὸν ὁ Θεὸς ἐποίη-
σεν, τῶτον τ' Ἰησοῦν ὃν ὑμεῖς ἐσαυρώσατε.
- 37 Ἀκούσαντες ἡ κριτενύγησαν τῇ καρδίᾳ,
εἶπόν τε πρὸς τ' Πέτρον καὶ τὰς λοιπὰς ἀπο-
στόλους· Τί ποιήσομεν, ἀνδρες ἀδελφοί;
- 38 Πέτρος ἡ ἔφη πρὸς αὐτούς· Μειλιτοήσατε,
ἐ βαπτισθήτω ἕκαστος ὑμῶν ἐπὶ τῷ ὀνόματι
Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν· καὶ
λήψεθε τ' δωρεὰν τ' ἀγίας πνεύματι·
- 39 Ὑμῖν γὰρ ἐστιν ἡ ἐπαγγελία καὶ τοῖς τέκνοις
ὑμῶν, καὶ πᾶσι τοῖς εἰς μακροῖν ὄρασι ἀν-
θρωποκαλίῃ· Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν.
- 40 Ἐτέροις τε λόγοις πλείοσι διεμαρτύρησε,
ἐ παρεστάλη, λέγων· Σώζητε ἀπὸ τ' χειρὸς
τ' σκολιᾶς τῆς τῆς.
- 41 Οἱ μὲν ἔν ἀσμελῶς ἀποδεξάμενοι τὸν
λόγον

λόγον αὐτῆ, ἐβαπτίσθησαν· ἔωσθησαν
τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ψυχῶν ὡς ἐκτεράλιαι.

42 Ἦσαν δὲ καρτεροὶ ἐν τῇ διδασκίᾳ τῶν
ἀποστόλων καὶ τῇ κηρυξίᾳ καὶ τῇ κλάσει τῶν
ἄρτων καὶ ταῖς προσευχαῖς.

43 Ἐρχέτο δὲ πάση ψυχῇ φόβος· πολλά τε
τέρα καὶ σημεῖα ἐγένοντο ἐν αὐτοῖς.

44 Πάντες δὲ οἱ πιστεύοντες ἦσαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ,
καὶ εἶχον ἅπαντα κοινά.

45 Καὶ τὰ κτήματα καὶ τὰς ὑπαρξίας ἐπίπρα-
σκον, καὶ διμερίζον αὐτὰ πᾶσι, καθότι αὐ-
τοῖς χρεία εἶχε.

46 Καθ' ἡμέραν τε καρτεροὶ ὄμο-
θυμοὶ ἐν τῷ ἱερῷ, κλιόντες τε κατ' οἶκον
ἄρτον, μετελάμβανον τροφῆς ἐν ἡλικίᾳ σφί
καὶ ἀφιλότητι καρδίας,

47 Αἰετοὶ τὸ Θεόν, καὶ ἐχόντες χάριον πρὸς
ὅλον τὸ λαόν. Ὁ δὲ Κύριος ἔωσθη τὴν
σωτηρίαν καθ' ἡμέραν τῇ ἐκκλησίᾳ.

Κεφ. γ'. 3.

1 Ἐπὶ τὸ αὐτὸ δὲ Πέτρος ἐ Γεωργίου ἀνέβαι-
νον εἰς τὸ ἱερὸν ἐπὶ τῷ ὄρει τῶν προσευ-
χῶν τῶν ἐν ἡμέρᾳ.

2 Καὶ τις ἀνὴρ χωλὸς ἐκ κηλίας μητρὸς
αὐτῆς ὑπαρχών, ἐβαστάζον· ὃν ἐπέθεν καθ'
ἡμέραν πρὸς τὸ ἱερὸν τῶν ἱερῶν τῶν λεγομένων
Πορταῖαν, τῶν αὐτῶν ἐλεημοσυῶν πρὸς τῶν
ἐπιπορευομένων εἰς τὸ ἱερὸν.

3 Ὅς

3 Ος ἰδὼν Πέτρον ἐἰωάννη μέλλοντος εἰσιέναι εἰς τὸ ἱερόν, ἠρώτα ἐλεημοσύνην λαβεῖν.

4 Ἀπένιζας δὲ Πέτρος εἰς αὐτὸν σὺ τῆ Ἰωάννη, εἶπε· Βλέψον εἰς ἡμᾶς.

5 Ὁ ᾧ ἐπέειχεν αὐτοῖς, προσδοκῶν τι παρ' αὐτῶν λαβεῖν.

6 Εἶπε ὁ Πέτρος· Ἀργύριον καὶ χρυσίον ἔχ ὑπάρχει μοι· ὃ ᾧ ἔχω, τῷ σοι δίδωμι· Ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Ναζωραίου ἔχραυ καὶ ᾤειπάτη.

7 Καὶ πιάζας αὐτὸν τῆ δεξιαῖς χερῶν ἤχετο ᾤειπάτη καὶ ἐσεριώθησαν αὐτῷ αἰβάσις καὶ τὰ σφυρά.

8 Καὶ ἐξαλλόμενος ἔστη, ἔπειπάτη καὶ εἰσήλθε σὺ αὐτοῖς εἰς τὸ ἱερόν, ᾤειπατῶν καὶ ἀλλόμην, ἔαινῶν τὸν Θεόν.

9 Καὶ εἶδεν αὐτὸν πᾶς ὁ λαὸς ᾤειπατῶν καὶ αἰνῶν τὸν Θεόν·

10 Ἐπεγίνωσκόν τε αὐτὸν ὅτι ἔτι ἦν ὁ πρὸς τὸ ἐλεημοσύνην καὶ τῆ μὲν ἐπὶ τῆ Ἰουδαία πύλη τοῦ ἱεροῦ καὶ ἐπληρώθησαν τῆ μὲν καὶ ἐκστρώσεως ἐπὶ τῷ συμβεβηκότι αὐτῷ.

11 Κρατῶν καὶ Ἰακώβου καὶ τῶν Πέτρον καὶ Ἰωάννη, σὺ ἰδραμοῦ πρὸς αὐτῶν πᾶς ὁ λαὸς ἐπὶ τῆ σοῦ τῆ καλεμένη Σολομῶνι, ἔκταμοι.

12 Ἰδὼν ὁ Πέτρος ἀπεκρίνατο πρὸς τὸν λαόν· Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, τί θαυμάζει ἐπὶ τέτω, ἢ ἡμῶν

- ἢ ἡμῖν τί ἀτενίζετε, ὡς ἰδίᾳ διωάμεθ' ἢ εὐσεβείᾳ πεποιηκῶσι ἔπειπαιεῖν αὐτόν;
- 13 Ὁ Θεὸς Ἀβραάμ κ' Ἰσαὰκ κ' Ἰακώβ, ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν ἐδόξασε τὸ πνεῦμα αὐτοῦ Ἰησοῦν, ὅτι ὑμεῖς παρεδωκάτε, καὶ ἠρήσασθε αὐτόν κ' ἀθέστωπον Πιλάτῃ, κρίναντες αὐτὸν ὡς ἀπολύειν.
- 14 Ὑμεῖς ἢ τὸ ἅγιον κ' δικαίον ἠτήσασθε, ἢ ἠτήσασθε αὐδρα φοιτῆα χαροδύωα ὑμῖν.
- 15 Τὸν ἢ ἀρχηγὸν τῆς ζωῆς ἀπειλείνατε, ὅτι ὁ Θεὸς ἠγάγειν ἐκ νεκρῶν, ἢ ἡμεῖς μαρτυροῦμεν ἐστίν.
- 16 Καὶ ἐπὶ τῇ πίστ' ἔβουλόμην αὐτῷ, τῷ-
τοι, ὅτι θεωρεῖτε κ' οἰδαίτε, ἐστρέψατε τὸ ὄνομα
αὐτοῦ· ἢ ἡ πίστις ἢ δι' αὐτῷ ἔδωκεν αὐτῷ τὸ
ὀλοκληρεῖν ταύτῃ ἀπειανὴ πάλιν ὑμῶν.
- 17 Καὶ νῦν, ἀδελφοί, οἶδα ὅτι κ' ἀγνοίαν
ἐπράξατε, ὡσπερ εἰσὶ ἀρχόντες ὑμῶν.
- 18 Ὁ ἢ Θεὸς ἀπεκατήχευε διὰ τὸ μαρτυροῦν
πάντων τῶν ἀσεβητῶν αὐτῷ, παθεῖν τὴν
Χριστόν, ἐπλήρωσεν ἔτι.
- 19 Μετανοήσατε ἔν καὶ ἐπιστρέψατε, εἰς τὸ
ἐξαλεφθῆναι ὑμῶν τὰς ἀμαρτίας· ὅπως αὐτῷ
ἔλθῃσι χαροὶ ἀναψύξεως διὰ τὸ ἀποστῆναι ἔξ
Κυρίου,
- 20 Καὶ ἀποστείλη τὸ ἀποκακουργήματα ὑμῶν
Ἰησοῦν Χριστόν,
- 21 Ὅτι δεῖ ἕσθαι μὴ δεῖσθαι ἀλλ' ἀρετῶν
ἀποκατα-

ἀποκαθάρσεως πάντων αὐτὸν ἐλάλησεν ὁ Θεὸς
 διὰ τῶν ἁγίων αὐτοῦ ἀποφη-
 τῶν ἀπ' αἰῶνος·

22 Μωσῆς μὲν γὰρ πρὸς τὰς πατέρας εἶπεν·
 Ὁ πᾶσι φησὶ ὑμῖν ἀναστήσει Κύριος ὁ Θεὸς
 ὑμῶν ἐκ τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν, ὡς ἐμὲ· αὐτὸς ἀκέ-
 σασθε καὶ πάντες ὅσα αὐτὸν λαλήση πρὸς ὑμᾶς·

23 Ἐγὼ δὲ, πᾶσα ψυχὴ, ἥτις αὐτὸν ἀκέσῃ ἢ
 ἀποφήσει ἐκείνῃ, ἐξολοθρεύσεται ἐκ τοῦ
 λαοῦ.

24 Καὶ πάντες ὅσοι ἀποφήσονται διὰ Σαμεθὴν ἢ
 τῶν κλητῶν, ὅσοι ἐλάλησαν, ἢ ἀποκηθήσει-
 λανταὶ ἐν ἡμέραις ταύταις.

25 Ὑμεῖς ἐσευχῆτε τὸν ἀποφητῶν καὶ τὴν ἀκητή-
 ῃς διέτετο ὁ Θεὸς πρὸς τὰς πατέρας ὑμῶν,
 λέγων πρὸς Ἀβραάμ· Καὶ τὸ ἀπέριμαίτε
 ἐν ὀλοθρήσει πᾶσα αἰὶν καὶ τῆς γῆς.

26 Ὑμῖν προσέειπεν ὁ Θεὸς ἀναστήσας τὸ πνεῦμα
 αὐτοῦ Ἰησοῦν, ἀπέστειλεν αὐτὸν εὐλογεῖν
 ὑμᾶς, ἐν τῷ ἀποφῆσαι ἐκείνῃ διὰ τῶν ποιη-
 τῶν ὑμῶν.

Κεφ. δ'. 4.

1 Ἀλλήλων ἡ ἀγαπᾶν πρὸς τὸν λαόν, ἐπέση-
 σαν αὐτοῖς οἱ ἱερεῖς ἢ ὁ στρατηγὸς ἢ ἱερῶ
 καὶ οἱ σαδδουκαῖοι,

2 Διαπονήθησαν διὰ τὸ διδάσκειν αὐτοὺς τὸν
 λαόν, καὶ κατέλαβον ἐν τῷ Ἰησοῦ πᾶν ἀνά-
 στασι πᾶν ἐκ κερῶν.

3 Καὶ

- 3 Καὶ ἐπέβαλον αὐτοῖς τὰς χεῖρας, καὶ ἔθεντο
εἰς τήρησιν εἰς τὸ αὐτοῦ. ἡ δὲ ἰσχυρία ἤδη.
- 4 Πολλοὶ ὅμως ἀκροαίνονται τὸ λόγον ἐπίστυ-
σαι· καὶ ἐχρητήθη ὁ δόρυ μὲς τῶν ἀνδρῶν ὡσεὶ χη-
λιάδες πίστε.
- 5 Ἐχρητήθη δὲ ἐπὶ τὸ αὐτοῦ συναγωγῆς αὐ-
τῶν τὰς ἀρχοντας καὶ πρεσβυτέρους καὶ
γραμματεῖς εἰς Ἱερουσαλήμ.
- 6 Καὶ Ἄναν τὸν δόρυ καὶ Καϊάφαι καὶ
Γωαινίω καὶ Ἀλέξανδροι, καὶ ὅσοι ἦσαν ἐκ
τῆς δόρυ καὶ ἱεροῦ.
- 7 Καὶ σήσωτες αὐτὰς ἐν τῷ μίση, ἐπιση-
μάνοιτο· Ἐν ποίᾳ δυνάμει ἢ ἐν ποίᾳ ὀνόματι
ἐποιήσατε τῆτο ὑμεῖς;
- 8 Τότε Πέτρος ὁ πρῶτος πρὸς αὐτὰς· Ἄρχοντες τοῦ λαοῦ, καὶ
πρεσβύτεροι Ἰσραὴλ,
- 9 Εἰ ἡμεῖς σήμερον ἀνακρινόμεθα ἐπὶ δόρυ-
μασίᾳ ἀνθρώπων ἀδελφεῖς, ἐν ποίᾳ ἔθετε σέσωσαι;
- 10 Γνωστὸν ἔστω πᾶσι ὑμῖν καὶ παντὶ τῷ λαῷ
Ἰσραὴλ, ὅτι ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ
Ναζωραίου, ὃν ὑμεῖς ἐσαυρώσατε, ὃν ὁ Θεὸς
ἤχησεν ἐκ νεκρῶν, ἐν τῷ ἔθνη παρήστηκεν
ἐνώπιον ὑμῶν ὑγιῖς.
- 11 Οὗτός ἐστι ὁ λίθος ὁ ἐξ ἔθνη καὶ ὑπὲρ
ὑμῶν τὸ οἰκοδομηθήσεται, ὃ ἡρόδοτος εἰς κε-
φαλὴν γωνίας.
- 12 Καὶ ὅσα ἔστιν ἐν ἄλλῳ ἔδαφι ἢ σωτηρία· ἔπε
ῤ

ἧδ' ὀνόμαί ἐστιν ἕτερον ὑπὸ τ' ἕρμανόν τὸ δεδο-
 μένον ἐν ἀνθρώποις, ἐν ᾧ θεὸς σωθῆναι ἡμᾶς.

13 Θεωρῶντες ἢ τ' ἔξ Πέτρου παύρησίαν καὶ
 Ἰωάννου, καὶ καταλαβόμενοι ὅτι ἄνθρωποι
 ἀγράμματοι εἰσι ἐιδιώτη, ἐθαύμαζον, ἐπ-
 εγίνωσκόν τε αὐτὰς ὅτι σὺ τῷ Ἰησοῦ ἦσαν·

14 Τὸν ἢ ἄνθρωπον βλέποντες σὺν αὐτοῖς ἐσῶτα
 τ' ἑτεροπύμων, ἐδὲν εἶχον ἀντιπεῖν.

15 Κελύσαντες ἢ αὐτὰς ἔξω ἔστωσαν ἀ-
 πελθεῖν, σὺνέβαλον πρὸς ἀλλήλους,

16 Λέγοντες· Τί ποιήσομεν τοῖς ἀνθρώποις
 τέτοις; ὅτι μὲν ἧδ' γνωστὸν σημεῖον γέγονε δι'
 αὐτῶν, πᾶσι τοῖς κεραικῶσιν ἱερουσαλήμα
 φανερόν, ἔ' δυνάμεθα δρῆσαι αὐτῶν·

17 Ἀλλ' ἵνα μὴ ἐπὶ πλείον Διγενεσηθῆ εἰς τ'
 λαόν, ἀπέλη ἀπέλησώμεθα αὐτοῖς μηκέτι
 λαλεῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματι τέτω μηδενὶ ἀν-
 θρώπων.

18 Καὶ καλέσαντες αὐτὰς, παρήγειλαν αὐ-
 τοῖς τὸ κητόλα μὴ φθέγεσθαι μηδὲ διδάσκεν
 ἐπὶ τῷ ὀνόματι ἔξ Ἰησοῦ.

19 Οἱ ἢ Πέτρος ἔξ Ἰωάννης διακριθέντες πρὸς
 αὐτὰς, εἶπον· Εἰ δὴνομὸν ἐστιν ἐνώπιον ἔξ Θεῶν,
 ὑμῶν ἀκέρην μᾶλλον ἢ ἔξ Θεῶν, κείνατε·

20 Οὐδυνάμεθα ἧδ' ἡμεῖς, ἂ εἶδομεν καὶ
 ἠκέρουμεν, μὴ λαλεῖν.

21 Οἱ ἢ πρῶτα πᾶσι ἀπέλυσαν αὐ-
 τὰς, μηδὲν δύναντες τὸ, πῶς κηλάσαν·
 αὐτὰς,

- αὐτὸς, ἀφ' ἧς λαόν· ὅτι πάντες εἰδόξαζον τὸ
 Θεὸν ἐπὶ τῷ γερουσίῳ·
- 22 Ἐπὶ τῶν γὰρ ἦν πλεονόντων τεσσαράκοντα ὁ αἰθρα-
 πος ἐφ' ὃν ἐξεργάσθη τὸ σημεῖον τῆς ἰατρικῆς.
- 23 Ἀπολυθέντες ἡ ἤλθον πρὸς τὰς ἰδίους, καὶ
 ἀπήγγειλαν ὅσα πρὸς αὐτὸς οἱ ἀρχιερεῖς καὶ
 οἱ πρεσβύτεροι εἶπον.
- 24 Οἱ ἡ ἀκροαταί, ὁμοθυμαδὸν ἤρξαντο Φαρισαῖοι
 πρὸς τὸ Θεόν, καὶ εἶπον· Δέσποτα, σὺ ὁ Θεὸς
 ὁ ποιῶν τὸν ἔρανον καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν,
 καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς·
- 25 Οὗ ἀφ' ἧς ἐμαρτύρησεν Δαβίδ· ὁ παῖς σου
 εἶπεν· ἵνα πᾶσι ἐφρουράξω ἔθνη, καὶ λαοὶ ἐμε-
 λέτησαν κενά·
- 26 Παρέστησαν οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, καὶ οἱ ἀρ-
 χιεῖς συνήχθησαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ καὶ ὁ Κυρίως
 καὶ ὁ Χερσὺς αὐτοῦ.
- 27 Συνήχθησαν γὰρ ἐπ' ἀληθείας ἐπὶ τὸ ἄξιον
 παιδά σου Ἰησοῦν, ὃν ἔχουσας, Ἡρώδης τε καὶ
 Πόντιος Πιλάτος συνῆθησαν ἐλαοῖς Ἰσραὴλ.
- 28 Ποίησον ὅσα ἡ χεὶρ σου καὶ ἡ βελὴ σου
 ἐπαράσῃ τῷ λαῷ σου.
- 29 Καὶ τὸν Κύριον ἐπιθεῖ ἐπὶ τὰς ἀπέλας
 αὐτῶν, καὶ δὲ τοῖς δέλοις σου μὴ παρήκεις
 πάσης λαλεῖν τὸν λόγον σου.
- 30 Ἐν τῷ τῷ χεῖρα σου ἐκλείνθησε εἰς ἴασην, καὶ
 σημεῖα ἐτεράρα γίνεσθαι ἀφ' ἧς ὀνόματι σου
 οὐκ ἔστι παῖς σου Ἰησοῦ.

31 Καὶ δεηθέντων αὐτῶν ἐσαλεύθη ὁ τίπτε
ἐν ᾧ ἦσαν σπηγμαῖοι· καὶ ἐπλήσθησαν ἀ-
παντες πισύματι Θεοῦ ἁγίου, καὶ ἐλάλησαν τὸ λόγον
Θεοῦ μετὰ παρρησίας.

32 Τῶν ὁπλήθους τῶν πισύσαντων ἡ καρ-
διά καὶ ἡ ψυχὴ μία· καὶ ἐδίε εἰς τι τῶν ὑπαρ-
χόντων αὐτῶν ἐλεγκυίδιον εἶναι, ἀλλ' ἡ αὐ-
τοῖς ἀπαντὰ κηρία.

33 Καὶ μεγάλη δυνάμει ἀπεδίδεν τὸ μαρ-
τύριον οἱ ἀπόστολοι τῆ ἀναστάσεως Θεοῦ Κυρίου
Ἰησοῦ, χάρις τε μεγάλη ἡ ἐπὶ πάντας αὐτοὺς.

34 Οὐδὲ γὰρ εὐδής τις ὑπῆρχεν ἐν αὐτοῖς ὅσοι
γὰ κλήτους χωρῶν ἢ οἰκιῶν ὑπῆρχον, πω-
λῶντες ἐφερον τὰς περιουσίας τῶν περιουσιῶν

35 καὶ ἐτίθεν ὡς τὰς πόδας τῶν ἀποστόλων
διεδίδου τῆ ἐκείτω κηρία ἀντὶς χρεία εἶχεν.

36 Ἰωσῆς δὲ, ὁ ἐπικληθεὶς Βαρνάβας ὑπὸ τῶν
ἀποστόλων, (ὁ ἐστὶ μετερμυδύμορον, ὅς
ὡς ἀκλήσεως) λούιτης, Κύπριος τῶν ἡμερῶν,

37 ὑπάρχον αὐτῶν ἀρχῆς, πωλῶντας ἡμέτερον
τὸ κηρία, καὶ ἔθηκε ὡς τὰς πόδας τῶν
ἀποστόλων.

Κεφ. ε'. 5.

1 Ἀνὴρ δὲ τις Ἀναίας ὀνόματι, σὺ Σαπ-
φείρη τῆ γυναικὶ αὐτῆς ἐπώλησε κηρία·

2 καὶ εὐσοφίσαιτο ἀπὸ τῆς περιουσίας, σὺ δὲ
ἐτὶ γυναικὸς αὐτῆς· καὶ ἐπέκασ μετὰ τῶν
ὡς τὰς πόδας τῶν ἀποστόλων ἔθηκεν.

3 Εἶπε

- 3 Εἶπε ἡ Πέτρος· Αἰωνία, ἀλλά ἐπλήρωσον ὁ Σατανᾶς τὴν καρδίαν σου, ψεύσασθαι σε τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον, καὶ νοσήσῃς ἀπὸ τῆς πμῆς τῶν χειρῶν;
- 4 Οὐχὶ μόνον, σοὶ ἔδραμε, καὶ πρᾶξεν ἐν τῇ σῇ ἐξουσίᾳ ἡ ἀρχὴ; τί ὅτι ἔθες ἐν τῇ καρδίᾳ σου τὸ πρᾶξαι τῶτο; ὅτι ἐψύσω ἀνθρώποις, ἀλλὰ τὸ Θεῷ.
- 5 Ἀκούων ἡ Αἰωνίας τὰς λόγους ταύτας, πιπυρῶν ἐξέψυξε· καὶ ἐβόησεν φόβῳ μέγασ ἐπὶ πάντας τὰς ἀκούοντας ταῦτα.
- 6 Ἀναστάτες ἡ οἱ νεώτεροι σιωπήσαν αὐτὸν, καὶ ἐξενέγκαντες ἔθαψαν.
- 7 Ἐβόησεν ἡ ὡς ἁρῶν τριῶν ἀλάσημα, καὶ ἡ γῆ αὐτῆ μὴ εἶδῃα τὸ γέροντος εἰσηλθεῖν.
- 8 Ἀπεκρίθη ἡ αὐτῇ ὁ Πέτρος· Εἰπέ μοι, εἰ ποτέ τις τὸ χεῖρον ἀπέδουθε;
- 9 Ἡ ἡ εἶπε· Ναί, ποτέ τις. Ὁ ἡ Πέτρος εἶπε πρὸς αὐτὴν· Τί ὅτι σιωπήσῃς ὑμῖν πρᾶξις τὸ πνεῦμα κυρίου; ἰδὲ οἱ πόδες τῆς ἡψάντων τῆ ἀνδρα σου, ἐπὶ τῇ θύρᾳ, καὶ ἐξοίσου σε.
- 10 Ἐπίσε ἡ ἀρχαρχὴμα πρὸς τὰς πόδας αὐτῆ, καὶ ἐξέψυξε. εἰσελθόντες ἡ οἱ νεανίσκοι ὄρον αὐτὴν νεκρῶν, καὶ ἐξενέγκαντες ἔθαψαν πρὸς τῆ ἀνδρα αὐτῆς.
- 11 Καὶ ἐβόησεν φόβῳ μέγασ ἐφ' ὅλην τὴν ἐκκλησίαν, ἐπὶ πάντας τὰς ἀκούοντας ταῦτα.

- 12 Διὰ τῶν χερῶν τῶν ἀποστόλων ἐγένετο σημεῖον
 ἔτερον ἐν τῷ λαῷ πολλά· (ἔησαν ὁμοθυ-
 μαδὸν ἅπαντες ἐν τῇ σοφίᾳ Σολομῶνι).
- 13 Τῶν δὲ λοιπῶν ἔδειξεν ἰσχυρὰ καὶ αὐ-
 τοῖς, ἀλλ' ἐμεγαλυνεν αὐτὸς ὁ λαός.
- 14 Μᾶλλον δὲ προσέτιθεν τοῖς δούλοις τῶν Κυ-
 εῖα πλῆθη ἀνδρῶν τε ἔγωγαῖων)
- 15 Ὅστε καὶ τὰς πλάγιαι ἐκφέρου τὰς ἀσθε-
 νείας, ἔπιθεν ἐπὶ κλινῶν καὶ κραβάτων, ἵνα
 ἐρχομένη Πέτρος καὶ ἡ σκιὰ ἐπισκιάσῃ τὴν
 αὐτῶν.
- 16 Συνήρχετο δὲ καὶ τὸ πλῆθος τῶν πέριξ πό-
 λεων εἰς Ἱερουσαλήμ, φέροντες ἀσθενεῖς καὶ
 ὀχλημένους ὑπὸ πνιθυμάτων ἀκαθάρτων· οἱ
 πινεσ ἔτερον πύοντο ἅπαντες.
- 17 Ἀναστὰς δὲ ὁ ἀρχιερός καὶ πάντες οἱ σὺν
 αὐτῷ, (ἡ ἔστα αἵρεσις τῶν σαυδουκισμῶν) ἐπλή-
 θησαν ζήλῳ·
- 18 Καὶ ἐπέβαλον τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ τὰς
 ἀποστόλους, ἔθεντο αὐτὸς ἐν τῇ δημόσιᾳ.
- 19 Ἄγγελος δὲ Κυεῖα ἀφ' ἑνὸς νυκτὸς ἤνοιξε τὰς
 θύρας τῆς φυλακῆς· ἐξασαγῶν τε αὐτὸς, εἶπε·
- 20 Πορεύεσθε, καὶ σταθέντες λαλεῖτε ἐν τῷ ἱερῷ
 τῷ λαῷ πάντα τὰ ῥήματα τῆς ζωῆς ταύτης.
- 21 Ἀκούοντες δὲ ἐπέστησαν ὑπὸ τῷ ὄρθρῳ εἰς τὸ
 ἱερόν, καὶ ἐδίδασκον. Παραχρυσόμυθος δὲ ὁ ἀρ-
 χιερός καὶ οἱ σὺν αὐτῷ, συνεκάλυσαν τὸ
 σινδόνιον καὶ πῶσαν τὴν γερουσίαν τῶν ἡγῶν

S Ἱερουσαλ.

Ἰσραήλ· κὶ ἀπέστειλαν εἰς τὸ δεσμωντήριον,
ἀγχιθῶσαι αὐτὰς.

22 Οἱ ᾧ ὑπαρέταί· ὡς παραχρησάμενοι ἐχού-
ρον αὐτὰς ἐν τῇ φυλακῇ· ἀνασπείψαστες δὲ
ἀπήγαγον,

23 Λέγουσιν· Ὅτι τὸ μὲν δεσμωντήριον ὄρο-
μην κεκλησάμενον ἐν πάσῃ ἀτφαλείᾳ, ἔτι τὰς
Φύλακας ἔσω ἐσῶτες πρὸ τῶν θυρῶν ἀνοιξάν-
τες ᾧ, ἔσω ἐδέξατο ὄρομην.

24 Ὡς ᾧ ἤκουσαν τὰς λόγους τὰς οὗτοι, ἰσ-
ραὴλ· ἔο σρατηγὸς δὲ ἱερῶ κὶ οἱ δόχαιοί, δι-
ηπόρην πρὸς αὐτῶν, πᾶν χυνοῖτο τὸ.

25 Παραχρησάμενοι δὲ πῶς ἀπήγαγον αὐ-
τοῖς, λέγων· Ὅτι ἰδὲ, οἱ ἀνδρες ἐς ἕτερον ἐν
τῇ φυλακῇ, εἰσὶν ἐν τῷ ἱερῷ ἐσῶτες, καὶ δι-
δάσκουσιν τὸ λαόν.

26 Τότε ἀπελθὼν ὁ σρατηγὸς σὺν τοῖς ὑπα-
ρέταις, ἤραχον αὐτὰς, ἐ μὲν βίας. (ἐφοῦσεν ἔ-
ως τὸ λαόν ἵνα μὴ λιπαθῶσι)

27 Ἀραγῶσιν ᾧ αὐτὰς ἔστησαν ἐν τῷ σινεδρίῳ·
κὶ ἐπηρώτησεν αὐτὰς ὁ δόχαιος,

28 Λέγων· Οὐ παραχρησάμενοι παρηγάμενοι
ὑμῶν μὴ διδάσκον ἐπὶ τῷ νόμῳ τὰς, καὶ
ἰδὲ, πεπληρώκατε τὴν ἱερουσαλήμ τὴν διδα-
χὴν ὑμῶν, κὶ βέλοσθε ἐπιγαγεῖν ἐφ' ἡμῶς
τὸ αἷμα τῶν ἀνθρώπων τὰς.

29 Ἀποκριθεὶς ᾧ ὁ Πέτρος· κὶ οἱ ἀπόστολοι, εἶ-
πον· Πρωτεύειν δεῖ Θεοῦ μᾶλλον ἢ ἀνθρώπων.

- 30 Ο Θεός τῶν πατέρων ἡμῶν ἤρξατο ἰκ-
σῆν, ὃν ὑμεῖς διεχέρισσατε κρεμάσαντες
ἐπὶ ξύλων.
- 31 Τῆτον ὁ Θεός δόξαζόν κὶ σωτήρα ὑψώσε
τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ, δένον μετόνοιαν τῆ Ἰσραήλ
κὶ ἀφείη ἀμαρτιῶν.
- 32 Καὶ ἡμεῖς ἐσώθημεν αὐτῷ μαρτύρες τῶ ῥημά-
των τέτων, ἔ τὸ πνεῦμα ἢ τὸ ἄγιον, ὃ ἐδά-
κεν ὁ Θεός τοῖς πῆταρχῆσιν αὐτῶ.
- 33 Οἱ ἢ, ἀκράσαντες διεπίοντο, κὶ ἐδοκίμο-
ντο ἀνελεῖν αὐτούς.
- 34 Ἀναστὰς δὲ τις ἐν τῶ συνεδρίῳ Φαρι-
σαῖο, ὀνόματι Γαμαλιήλ, νομοδιδάσκα-
λο, πῆμι παυτὶ τῶ λαῶ, ἐκέλευσεν ἔξω
βραχὺ ἢ τῶς ἀποστόλους ποιῆσαι.
- 35 Εἶπέ τε πρὸς αὐτούς ἄνδρες Ἰσραηλι-
ται, προσέχετε ἑαυτοῖς ἐπὶ τοῖς ἀνθρώποις
τέτοις, ἢ μὲλλετε πρᾶσθιν.
- 36 Πρὸ ἧδ τέτων τῶ ἡμερῶν ἀνέστη Θουδᾶς,
λέγων εἶνά τινα ἑαυτὸν, ὃ πρὸσθηκλήθη
δοθμός ἀνδρῶν ὡσεὶ τέτρακοσίαν ὡς ἀνιρί-
θη, ἔ πάντες ὅσοι ἐπέειποντο αὐτῶ, διελύ-
θησαν, κὶ ἐχλύοντο εἰς ἕδεν.
- 37 Μετὰ τῆτον ἀνέστη Ἰσθᾶς ὁ Γαλιλαῖο,
ἐν ταῖς ἡμέραις τῶ ἀπογραφῆς, κὶ ἀπέστησε
λαὸν ἰκανὸν ὀπίσω αὐτοῦ κἀκείνο ἀπώλε-
το, κὶ πάντες ὅσοι ἐπέειποντο αὐτῶ, διεσκορ-
πίσθησαν.

- 38 Καὶ τὰ νῦν λέγω ὑμῖν, ἀπίστετε ἀπὸ πῶν ἀνθρώπων τέτων, καὶ ἐάσατε αὐτούς· ὅτι ἐαυτοὶ ἢ ἐξ ἀνθρώπων ἢ βεβλή αὐτῆ ἢ πῆρζον τέτω, καὶ ἀλυθήσει·
- 39 Εἰ ἢ ἐκ Θεῶ ἐσιν, ἐ δυνάσθε καὶ ἀλυτῶται αὐτὸ, μήποτε καὶ θεομάχοι οὐρεθῆτε.
- 40 Ἐπέειπθον δὲ αὐτῶ· καὶ προσκαλισσάμενοι τὸς ἀπὸ τῶν ἑβραίων, δέισαιες παρῆγειλαν μὴ λαλεῖν ἐπὶ τῶ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ, καὶ ἀπέλυσαν αὐτούς.
- 41 Οἱ μὲν ἔν ἐπορεύοντο χεῖροντες ἀπὸ προσώπου τοῦ συνεδρίου, ὅτι ἔσπερ τοῦ ὀνόματι τοῦ αὐτῶ κατηξιώθησαν ἀμαρτωλῶν.
- 42 Πᾶσάν τε ἡμέραν ἐν τῶ ἱερῶ ἐκατὶ οἴκῳ εὐκ ἐπαύοντο διδάσκοντες ἐ δὲ ἀγγελίζοντο τοῖς Ἰησοῦν τὸ Χριστόν.

Κεφ. 6.

- 1 Ἐν ἢ ταῖς ἡμέραις ταύταις τῶν ἡλιθίων τῶ μαθητῶν, ἐχλύετο γρηγορησμός τοῦ ἑλληνιστῶν πρὸς τὸς ἑβραίους, ὅτι παρεστραθεντο ἐν τῇ ἀγορῇ τῇ καθημερινῇ αὐτῶν χῆρα αὐτῶν.
- 2 Προσκαλισσάμενοι ἢ οἱ δώδεκα τὸ τῶν μαθητῶν, εἶπον· Οὐκ ἔσπειν ἐσθῆ ἡμεῖς καὶ λαλεῖν αὐτοῖς τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ, ἀφῆκεν τε ἀπέζαις.
- 3 Ἐπισκέψασθε ἐν, ἀδελφοί, ἀνδρας ἐξ ὑμῶν μαρτυρομένους ἐπὶ τῶ, πλήρεις πίστεως καὶ

καὶ τῆς ἀγίας καὶ σοφίας, εἰς καὶ ἀσκήσαντο
ἐπὶ τῆς χρείας ταύτης.

4 Ἡμεῖς δὲ τῆς πρῆσβυτητῆς καὶ τῆς ἀρετῆς
λόγῳ ἀποκαρτεγήσομεν.

5 Καὶ ἔρεται ὁ λόγος ἐνώπιον πάντων τῶν
πλήθους· καὶ ἐξελέξαντο Στέφανον, ἄνδρα
πλήρη πίστεως καὶ δυνάμεως ἁγίας, καὶ Φίλιπ-
πον, καὶ Πρόχρον, καὶ Νικάνορα, καὶ Τιμαωνα, καὶ
Παρμενῖαν, καὶ Νικόλαον προσήλυτον Ἀντιόχεια.

6 Οὓς ἐπίσταν ἐνώπιον τῶν ἀποστόλων· καὶ πρῆ-
σβυτοὶ ἐπέθηκαν αὐτοῖς τὰς χεῖρας.

7 Καὶ ὁ λόγος τῶν Θεῶν ἠύξανει, καὶ ἐπλη-
θύνετο ὁ δόξαντος τῶν μαθητῶν ἐν Ἱερουσαλήμ
σφόδρα· πολὺς τε ὄχλος τῶν Ἰσραὴλ ἐπί-
στευον τῆς πίστεως.

8 Στέφανος δὲ πλήρης πίστεως καὶ δυνάμεως
ἐποίει τέρατα καὶ σημεῖα μεγάλα ἐν τῷ λαῷ.

9 Ἀνίστηνται δὲ ἱερεῖς τῶν ἐκ τῆς σιναγωγῆς τῆς
λεγομένης Λιβερτίνων, καὶ Κυρηναίων, καὶ Ἀ-
λεξανδρέων, καὶ τῶν ἀπὸ Κιλικίας καὶ Ἀσίας,
συζητῶντες τῷ Στεφάνῳ.

10 Καὶ σὺν ἰσχύον ἀντιλέγων τῆς σοφίας καὶ
τῶν δυνάμεων ἐλάλει.

11 Τότε ἐπέβαλον ἄνδρας λέγοντας ὅτι ἀκη-
κῆμεν αὐτὸν λαλεῖν ῥήματα βλάσφημα
εἰς Μωσῆν καὶ τὸν Θεόν.

12 Συνεκίνησαν τε τὸ λαὸν ἐκ τῆς πρεσβυ-
τέρους καὶ τῆς γραμματέων· καὶ ἐπιστάτες

- συνήρπασαν αὐτὸν, καὶ ἤγαγον εἰς τὸ συνέδριον.
- 13 Ἐσημαίνετε μαρτυρίας ψευδεῖς, λέγοντες· Ὁ ἄνθρωπος ἔτος ἔπαυσε ῥήματα βλάβημι λαλῶν καὶ ἔτιπε ἔτι ἀγίους τέτα καὶ ἔτι νόμους.
- 14 Ἀκηκόαμεν γὰρ αὐτὸν λέγοντα· ὅτι Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖος ἔτος κατελύσε τὸν τόπον τῆς ἡμετέρας ἀπαθείας καὶ ἐπετίμασεν ἡμῖν Μωϋσῆος.
- 15 Καὶ ἀπειθήσαντες εἰς αὐτὸν ἄπειθε οἱ κερδαζόμενοι ἐν τῷ συνέδριῳ, εἶδον τὸ πρῶτον αὐτὸν ὡσεὶ πρῶτον ἀγγέλου.

Κεφ. ζ. 7.

- 1 **Εἶπε** δὲ ὁ ἀρχιερεὺς· Εἰ ἄρα ταῦτα ἔτις ἔχει;
- 2 Ὁ δὲ εἶπε· Ἄδελφοί καὶ πατέρες, ἀκούσατε· Ὁ Θεὸς τὸ δόξης ἠφῆσεν τῷ πατρὶ ἡμῶν Ἀβραάμ ὅτι ἐν τῇ Μισσοποταμίᾳ, σπείνη κατεκλήσθη αὐτὸν ἐν Χαρράν·
- 3 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν· Ἐξέλθε ἐκ τῆς γῆς σου καὶ ἐκ τῆς συγγενείας σου, καὶ δεῦρο εἰς γῆν ἣν ἀποσοὶ δείξω.
- 4 Τότε ἐξελθὼν ἐκ γῆς Χαλδαίας, κατεκλήσθη ἐν Χαρράν. Κατέστη, μὲν τὸ ἀποφανεῖν τὸν πατέρα αὐτοῦ, μετὰ κλήσθη αὐτὸν εἰς τὴν γῆν ταύτην εἰς ἣν ὑμεῖς νῦν κατεκλήσθητε.
- 5 Καὶ ἐκείθεν αὐτὸν κληρονομίαν ἐν αὐτῇ, ἐδὲ βῆμα ποδῶν· καὶ ἐπηγγείλατο αὐτῷ δεῖνα εἰς κατεκλήσθη αὐτῷ, καὶ τὰ σπέρματι αὐτοῦ μετὰ αὐτὸν, ὅτι ἦν αὐτῷ τέκνον.

6 Ἐλά-

- 6 Ἐλάλησε ἡ ἕψως ὁ Θεός· Ὅπως τὸ σπέρμα αὐτῆς πύροικαν ἐν γῆ ἀλλοτριῆς, καὶ δαλώσῃσιν αὐτὸ ἐκκακώσῃσιν ἐτη τετρακῆσιν.
- 7 Καὶ τὸ ἔειπεν, ὡς ἐὰν δαλώσῃσιν, κερναί ἐγώ, εἶπεν ὁ Θεός. καὶ μὴ ταῦτα ἐξελεύσονται, καὶ λατρεύσῃσιν μοι ἐν πᾶσι τῶν τόπων.
- 8 Καὶ ἔδωκεν αὐτῶν Διὰ τῆς κλίμας τῆς τομῆς· καὶ ἕψως ἐγλήνησε τὸ Ἰσαὰκ καὶ τῆς ἐπιτεμνῶν αὐτὸν τῆς ἡμέρας τῆς ὀγδοῆς· καὶ ὁ Ἰσαὰκ τὸ Ἰακώβ, καὶ ὁ Ἰακώβ τὸς δώδεκα πατριάρχας.
- 9 Καὶ οἱ πατριάρχαι ζηλώσῃσιν, τὸ Ἰωσήφ ἀπέδδονθῆς Αἴγυπτον· ἐλὼ ὁ Θεὸς μετ' αὐτῆς.
- 10 Καὶ ἐξείλετο αὐτὸν ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτῆς, καὶ ἔδωκεν αὐτῶν χάριν καὶ σοφίαν ἐναντίον Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου, καὶ κατέστησεν αὐτὸν ἡγέμενον ἐπ' Αἴγυπτον καὶ ὅλον τὸν οἶκον αὐτοῦ.
- 11 Ἦλθε ἡ λιμὸς ἐφ' ὅλην τὴν γῆν Αἰγύπτου ἐκ Χαναάν, καὶ θλίψις μεγάλη καὶ ἕχθροσκοπον χορῶσιν· οἱ πατέρες ἡμῶν.
- 12 Ἀκούσας ἡ Ἰακώβ ὅτι οἶσιν ἐν Αἰγύπτῳ, ἐξαπέστειλε τὸς πατέρας ἡμῶν ἰωσήφον.
- 13 Καὶ ἐν τῶν δεύτερῳ ἀνεγνωρίσθη Ἰωσήφ τοῖς ἀδελφοῖς αὐτῆς, καὶ φανερὸν ἐγένετο τῶν Φαραὼ τὸ γινῆσθαι τὸ Ἰωσήφ.
- 14 Ἀποστείλας ἡ Ἰωσήφ μετ' ἐκκαλέσασθαι τὸν πατέρα αὐτῆς Ἰακώβ, καὶ πᾶσαν τὴν συγγένειαν αὐτῆς, ἐν ψυχῆς ἐβδόμησθαι πεντε.

- 15 Κατέβη ἡ Ἰακώβ εἰς Αἴγυπτον, ἔπει-
 λούθησεν αὐτὸς ἔοι πατέρες ἡμῶν.
- 16 Καὶ μετετέθησαν εἰς Συχέμοι, καὶ ἐπέθησαν
 ἐν ταῖς μνήμασι ὃ ἀνήσατο Ἀβραάμ ἡμῶν
 ἄργυροις ὡς ἔειπεν ἡμῶν Εἰμὸρ ὁ Συχέμο.
- 17 Καθὼς ἡ ἡγήζεν ὁ γένος τὸ ἐπαγγελίας
 ἧς ἄμυσεν ὁ Θεὸς ταῖς Ἀβραάμ, ἠύξησεν ὁ
 λαὸς καὶ ἐπληθύνθη ἐν Αἴγυπτῳ,
- 18 Ἄχρως ἔαυεση βασιλεὺς ἐπερὶ ὃς ὄνομα
 ἦν Ἰασήφ.
- 19 Οὗτος ἠγαθοσοφιστάμενος τὸ γένος
 ἡμῶν, ἐκάκωσε τὰς πατέρας ἡμῶν, ἵνα ποιῆ
 ἐκτετατατὰ βείβη αὐτῶν, εἰς τὸ μὴ ζωογονεῖσθαι.
- 20 Ἐν ᾧ ἡμέρᾳ ἐβλήθη Μωσῆς, καὶ ἡμεῖς ἄ-
 σκῆσθαι ταῖς Θεαῖς, ὃς ἀνετέταφον μὲν ὡς τρεῖς ἐν
 ταῖς οἰκῇ τῶν πατρῶν αὐτοῦ.
- 21 Ἐκτετέτατα ἡ αὐτὸν, ἀνέλετο αὐτὸν ἡ θυ-
 γατήρ Φαραὼ, καὶ ἀνετέταφον αὐτὸν ἐαυτῇ
 εἰς γόν.
- 22 Καὶ ἐπαυδάθη Μωσῆς πύση σοφία Αἴ-
 γυπτίων ἡμῶν ἡ δυνατὸς ἐν λόγοις καὶ ἐν ἔργοις.
- 23 Ὡς ἡ ἐπληρῆτο αὐτῶν πρὸς αὐτὸν ἡμεῖς
 γένος, ἀνέβη ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ
 ἐπισκέψασθαι τὰς ἀδελφούς αὐτῶν τὰς ἡμέρας
 Ἰσραήλ.
- 24 Καὶ ἰδὼν ἵνα ἀδικέμενον ἡμῶν, καὶ
 ἐποίησεν ἐκδίκησιν ταῖς κατὰ πονεμέμενα, πα-
 τῆρας τὸν Αἴγυπτιον.

25 Ἐνό-

- 25 Ενόμιζε ἡ σωτηρία τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν
ὅτι ὁ Θεὸς διὰ χάριτος αὐτῶν δίδωσιν αὐτοῖς
σωτηρίαν· οἱ δὲ ἐσώθησαν.
- 26 Τῇ ἡμέρᾳ ἐπιβίβησεν αὐτοῖς μαθη-
ταῖς, καὶ ἐλάλησεν αὐτοῖς εἰς εἰρήνην, εἰ-
πὼν· ἄνδρες, ἀδελφοί ἐστὺν ὑμεῖς· ἵνα τί ἀδι-
κεῖτε ἀλλήλους;
- 27 Ὁ ὃς ἀδικῶν ἔσται πηλοῦς, ἀπώστει αὐτὸν
εἰπὼν· Τίς σε κατέστησεν ἀρχοντα καὶ δικαστὴν
ἐφ' ἡμᾶς;
- 28 Μὴ ἀνελεῖν με σὺ θέλεις, ὃν τρόπον ἀνεῖλες
χρῆς τὸν Αἰγύπτιον;
- 29 Ἐφυγε ἡ Μωσῆς ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ, καὶ
ἐχθρὸς παρέοικε ἐν γῆ Μαδιάμ, ἔρχόμε-
νος ἕως δύο.
- 30 Καὶ πληρώθησαν ἑπτὰ πεσάρκοντα,
ἔφυγεν αὐτὸς ἐν τῇ ἐρήμῳ τῶν ὄρων Σινᾶ ἀγέ-
λα Κυρίε ἐν Φλογί πρὸς βῆτα.
- 31 Ὁ ὃς Μωσῆς ἰδὼν, ἐθαύμαζε τὸ ὄραμα
πεσάρκοντα δὲ αὐτῶν κατένοησεν, ἐχθρὸς
φωνή Κυρίε πρὸς αὐτόν·
- 32 Ἐγὼ ὁ Θεὸς τῶν πατέρων σου, ὁ Θεὸς Ἀ-
βραάμ, καὶ ὁ Θεὸς Ἰσαάκ, καὶ ὁ Θεὸς Ἰακώβ.
Ἐντρομεῖς ἡ γυνὴ Μωσῆς σὺν ἐπίλμα
κατένοησεν.
- 33 Εἶπε ἡ αὐτῶν ὁ Κύριος· Λύσον τὸ ὑπό-
δημα τῶν ποδῶν σου· ὁ γὰρ τόπος ἐν ᾧ ἐστὶς
γῆ ἁγία ἐστίν.

- 34 Ἰδὼν εἶδον τὴν κήκωσιν τῆ λαῶμα τῆ ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ τῆ σκηνῶν αὐτῶν ἠέκαστα, καὶ κατέβλεψεν ἐξελθεῖν αὐτὸς ἐκ τῆ δεύρο, δάποσε λαοὶ σε εἰς Αἴγυπτον.
- 35 Τῆτον τὸ Μωϋσέω ὃν ἠρνήσαντο, εἰπόντες· Τίς σε κρατέησεν ἄρχοντα καὶ δικαστή; τῆτον ὁ Θεὸς ἄρχοντα καὶ λυτρωτὴν ἀπίστην ἐν χειρὶ ἀγγέλου τῆ ὀφθαλμοῦ αὐτοῦ ἐν τῇ βάρῃ.
- 36 Οὗτῳ ἐξήγαγον αὐτὸς, ποιήσας τέρατα καὶ σημεῖα ἐν γῆ Αἰγύπτῳ, ἐν ἐρυθρῇ θαλάσῃ, καὶ ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἕτη τρισαρχόντων.
- 37 Οὗτος ἐστὶν ὁ Μωϋσῆς ὁ εἰπὼν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ· Προφήτην ὑμῖν ἀναστήσει Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ἐκ τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν ὡς ἐμεῖ αὐτὸ ἀκέσεσθε.
- 38 Οὗτος ἐστὶν ὁ γερμανός ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ τῆ ἀγγέλου τῆ λαλοῦντος αὐτοῦ ἐν τῷ ὄρει Σινῶ, καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν, ὃς ἐδέξατο λόγια ζῶντα, δῆνα ἡμῖν.
- 39 Ὡς οὐκ ἠθέλησαν ὑπάκουσαι ἡμεῖς οἱ πατέρες ἡμῶν, ἀλλ' ἀπώσαντο, καὶ ἐσπράφησαν ταῖς καρδίαις αὐτῶν εἰς Αἴγυπτον.
- 40 Εἰπόντες τῷ Ααρῶν· Ποίησον ἡμῖν θεὸς οἱ ὡσεπορεύσονται ἡμῶν· ὁ γὰρ Μωϋσῆς ἕτος ὃς ἐξήγαγον ἡμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτῳ, οὐκ οἶδαμεν τίς γένηται αὐτοῦ.
- 41 Καὶ ἐμαρχοποίησαν ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἀπήγαγον θυσίαν τῷ εἰδῶλω, καὶ σφραγίσ-

διφραίνοντο ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χρόνῶν αὐτῶν.

42 Ἐφρεψε ἡ ὁ Θεὸς, καὶ παρέδωκεν αὐτὸς λατρεύειν τῇ σραβιᾷ τῶν ἔργων· κατὰ τὴν γεγραμμένην ἐν βιβλίῳ τῶν προφητῶν· Μὴ σφάγια καὶ θυσίας προσκυνῆτε μοι ἐπὶ τῆς ἐρήμου, οἰκοδομήσατε οἰκὸν Ἰσραὴλ·

43 Καὶ ἀνελάθετε τὸ σκηνώσιον τῶν Μολόχ, καὶ τὸ ἄστρον τῶν θεῶν ὑμῶν· Βεμφάν, τὴν τύπην ἧς ἐποίησατε προσκυνεῖν αὐτοῖς· καὶ μεθυσθεὶς ὑμεῖς ἐπέκρινε Βαβυλῶν.

44 Ἡ σκηνὴ τῶν μαρτυριῶν αὐτῶν ἐν τοῖς παύρασιν ἡμῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, κατὰ τὴν διαθήκην ἡ λαλῶν τῷ Μωσῇ, ποιήσατε αὐτὴν κατὰ τὸν τύπον ὃν ἐωράκατε.

45 Ἦν δὲ εἰσηζομένη διαδοξάμενοι οἱ πατέρες ἡμῶν ἐπὶ Ἰησοῦ ἐν τῇ κατασχέσει τῶν Ἰουδαίων, ὡς ἔλασεν ὁ Θεὸς ἀπὸ προσώπου τῶν πατέρων ἡμῶν, ἕως τῶν ἡμερῶν Δαβὶδ·

46 Ὅς δὲ ἔλασεν ἐνώπιον τῶν θεῶν, ἐκήτησατο δὲ οὐρανὸς καὶ τὸ θεῖον Ἰακώβ.

47 Σολομῶν δὲ ἀνοδομήσεν αὐτὴν οἰκὸν.

48 Ἀλλ' ἔχ' οὐψιστος ἐν χρηστοῖς ταῖς καλοῖς, κατὰ τὴν ὁ προφήτης λέγει·

49 Ὁ ἔργον μοι ἴδοντες, ἡ ἡ γῆ ὑποπόδιον τῶν ποδῶν μου. Ποῖον οἰκὸν οἰκοδομήσατε μοι, λέγει Κύριος· ἢ πῶς τόπος τῶν κατοικησάντων μου;

50 Οὐχὲν χεῖρ μου ἐποίησε ταῦτα πάντα;

51 Σκληροὶ ἄνθρωποι, καὶ ἀπειθήνοισι τῇ καρδίᾳ

καρδία ἐ τῶν ἁγίων, ὑμεῖς αἰ τῶν πνεύματι
καὶ τῶν ἁγίων ἀντιπίπτετε, ὡς οἱ πατέρες ὑμῶν
καὶ ὑμεῖς.

52 Τίνα τῶν προφητῶν ἔσθι εἰδὼσαν οἱ πα-
τέρες ὑμῶν; ἐ ἀπέκρίσαν τὰς προφητείας
λαλοῦντες ὡς ἐ ἐλπίσεως ἔ δόξα, ἔ τῶν
ὑμεῖς ἀποδοῦναι καὶ φοβεῖς γελῶντες.

53 Οἱπνις ἐλάοις τῶν νόμων εἰς Δαβὶδ καὶ
ἐξέλεον, καὶ ἔσθι ἐφυλάξαις.

54 Ἀκούοις ἡ ζωῆται, διεψίοντο ταῖς καρδίαις
αὐτῶν, καὶ ἔβουλον τὰς ὁδόντας ἐπ' αὐτόν.

55 Ὑπάρχων ἡ πλήρης πνεύματι ἁγίῳ,
ἀπεινάς εἰς τῶν ἔρανον, εἶδε δόξαν Θεῶ, καὶ
Ἰησοῦν ἐστῶντα ἐκ δεξιῶν ἔ Θεῶ.

56 Καὶ εἶπεν· Ἰδοὺ, φερω τὰς ἔρανας ἀνα-
γνώσκεις, καὶ τῶν ἡοῖ ἔ ἀνθρώπων ἐκ δεξιῶν ἐστῶ-
ντα ἔ Θεῶ.

57 Κραξαῖς ἡ φωνῆ μεγάλη, σπείροντα τὰ
ἄντα αὐτῶν, καὶ ἔρημωσαν ὁμοθυμαδὸν ἐπ'
αὐτόν.

58 Καὶ ἐβαλόντες ἐξω τῶν πόλεως, ἐλιθο-
βόλουν καὶ οἱ μαρτυροὶ ἀπέστην τὰ ἱμάτια
αὐτῶν ὡς τὰς πόδας νεανίας καλεσθῆναι
Σαῦλα.

59 Καὶ ἐλιθοβόλουν τῶν Στέφανον, ἐπιηλά-
μνον καὶ λέγοντα· Κύριε Ἰησοῦ, δεῖξαι τὸ
πνεῦμά μου.

60 Θεῶς ἡ τὰ γένετα, ἐκραξε φωνῆ μεγάλη·
Κύριε,

Κύριε, μὴ γένησιν αὐτοῖς τὸ ἁμαρτάναι ταύ-
των. Καὶ τὸ εἶπεν, κοιμήθη.

Κεφ. η'. 8.

- 1 Σαῦλος ἦν ἡ σαρδουκαῖν τῆ ἀπειρέσι ἀν-
τῆ. Ἐγένετο ἡ ἐκείνη τῆ ἡμέρα διαίμας
μέγας ἐπὶ τὴ ἐκκλησίᾳ τῇ ἐν Ἱεροσολύμοις·
πίπτες τε διασπάρασαν καὶ ἐπὶ χόρας τῆ Ἰε-
δαίας καὶ Σαμαρείας, πολλὰ τῶν δόξων.
- 2 Συνεχόμεται ἡ τὴ Στέφανον ἄνδρες δούλα-
βείς, ἐποίησαν ἕθροπον μέγαν ἐπ' αὐτῶν.
- 3 Σαῦλος ἦν ἐλυμάνετο τὴ ἐκκλησίαν, καὶ
τὰς οἰκὰς ἐπαγορεύοντο, σύρων τε ἄνδρας
καὶ γυναῖκας, παρεδίδον εἰς φυλακὴν.
- 4 Οἱ μὲν οὖν διασπαρέντες διήλθον, δια-
μαρτυροῦντες τὸ λόγον.
- 5 Φίλιππος ἦν κατελθὼν εἰς πόλιν τῆ Σα-
μαρείας. ἐκήρυσεν αὐτοῖς τὸ Χριστόν.
- 6 Προσέχον τε οἱ ὄχλοι τοῖς λεηθμοῖς ὑπὸ
τῶν Φιλιπποῦ ὁμοθυμαδὸν, ἐν τῷ ἀκέρῳ αὐ-
τῶν καὶ βλέπον τὰ σημεῖα καὶ ἰσχύς.
- 7 Πολλῶν γὰρ τῶν ἐχθρῶν πνεύματα ἀκήρῳτα ἔσθον,
βοῶντα μεγάλη φωνή, ἐξήρχετο πολλοὶ ἡ πα-
ραλελυμένοι ἐχθροὶ ἕτεραπείθησαν.
- 8 Καὶ ἐγένετο χαρὰ μεγάλη ἐν τῇ πόλει
ἐκείνη.
- 9 Ἀγὴρ δὲ τις ὀνόματι Σίμων, περιπατήσας
ἐν τῇ πόλει μαγείων ἐξέστην τὸ ἔθνος τῆ
Σαμαρείας, λέγων εἰς αὐτὸν μέγαν.

10. 51

- 10 Ὡς ἔθετόν τινι πάντες ἀπὸ μικρῶ ἕως μεγάλου, λέγοντες· Οὗτός ἐστιν ἡ δυνάμις τοῦ Θεοῦ ἡ μεγάλη.
- 11 Προτείχον ἢ αὐτῶ, ἀπὸ τὸ ἰκανὸν χρόνον ταῖς μαγείαις ἐξέστακέναι αὐτῆς.
- 12 Ὅτε ἢ ἐπίστυσαν τῷ Φιλίππῳ διαχρησίζοντες τοῖς ἔργοις τῆ βασιλείας τοῦ Θεοῦ, καὶ τῷ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐβαπτίζοντο ἄνδρες τε καὶ γυναῖκες.
- 13 Ὁ ἢ Σίμων καὶ αὐτὸς ἐπίστυσε, ἐβαπτίσθη καὶ ἑσκαρτερῶν τῷ Φιλίππῳ· ἑσκαρτερῶν τε σημεῖα ἐδυνάμει μεγάλας γινόμεναι, ἐξίστατο.
- 14 Ἀκούσας ἢ οἱ ἐν Ἱεροσολύμοις ἀποστόλοι· ὅτι δέδεκτο ἢ ἡ Σαμαρεία τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ, ἀπέστειλαν πρὸς αὐτὸς τὸ Πέτρον καὶ Ἰωάννην.
- 15 Οἵτινες κἀναβάντες πρὸς αὐτοὺς πρὸς τὸ ἔλεος αὐτῶν, ὅπως λάβωσι πνεῦμα ἅγιον.
- 16 (Οὐπω γὰρ ἐπὶ ἕδρῃ αὐτῶν ἐπιπεπλήρωτος, μόνον ἢ βεβαπισμένοι ἑσκαρτερῶν εἰς τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ)
- 17 Τότε ἐπέθετο τὰς χεῖρας ἐπὶ αὐτοὺς, καὶ ἔλαμβανον πνεῦμα ἅγιον.
- 18 Θεασάμενος ἢ ὁ Σίμων ὅτι ἐπίστυσε τῶν χειρῶν τῶν ἀποστόλων δέδοκτο τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον, πρὸς τὸ ἐπιτελεῖν αὐτοῖς τὸ ἔλεος.
- 19 Λέγων· Δότε καὶ μοι τὸ ἐξέσταν τῶν ἔργων.

ἵνα ἢ ἐὰν ἐπιθῶ τὰς χεῖρας, λαμβάνη πνεῦμα ἅγιον.

20 Πέτρος ὁ ἦ εἶπε πρὸς αὐτόν· Τὸ δόγματόν σου σώσει εἴη εἰς ἀπόλυσιν, ὅτι τὴν ὄψιν σου ἔχει ὁ Θεὸς ἐν νόμοις αἰσθητῶν κτισμάτων.

21 Οὐκ ἔστι σοι μετὰ ἐδὲ κλήρο σου τὴν λόγον τέτρωτῆ γὰρ καρδία σου ὅτι ἐστὶν εὐθὺς ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

22 Μετανόησον ἐν λόπῳ τῆς κακίας σου ταύτης, καὶ δεήθητι τοῦ Θεοῦ, ἐν ἧς ἀφεθήσεται σοι ἡ ἐπίνοια τῆς καρδίας σου.

23 Εἰς γὰρ πολλὴν πικρίαν καὶ σπλάγχθον ἀδικίας ὄρω σε ὄντα.

24 Ἀποκλιθεὶς δὲ ὁ Σίμων εἶπε· Δεήθητε ὑμεῖς ὑπὲρ ἐμοῦ πρὸς τὸ Κύριον, ὅπως μηδὲν ἐπέλθῃ ἐπ' ἐμὲ ἂν εἰρήνηται.

25 Οἱ μὲν οὖν, ἀφ' ἑμαυτοῦ καὶ λαλήσαντες τὸν λόγον τοῦ Κυρίου, ὑπέσχεσαν εἰς Ἱερουσαλήμ, πολλὰς τε κόμας τῶν Σαμαριτανῶν ἐψηφίσαντες.

26 Ἄγγελος δὲ Κυρίου ἐλάλησε πρὸς Φίλιππον, λέγων· Ἀνάστη καὶ πορεύου καὶ μεσημβρίαν, ἐπὶ τὴν ὁδὸν τὴν καβαθαίνουσαν εἰς Ἱερουσαλήμ εἰς Γάζαν· αὕτη ἐστὶν ἔρημος.

27 Καὶ ἀνοίξας ἐπορεύθη καὶ ἰδὼν, ἀνὴρ Αἰθιοπίας εὐνοῦχος, βασιλεὺς βασιλείας Αἰθιοπῶν, ὃς ἦν ἐπὶ πάσης τῆς γῆς αὐτῆς, ὃς ἐληλύθει πρὸς σκηνήσαν εἰς Ἱερουσαλήμ.

- 28 Ἦν τε ὑπερέφω, καὶ καθήμενον ἐπὶ τῷ ἄρματι αὐτῆ, καὶ ἀνεγίνωσκε τὸ περὶ τῆς Ἡσαΐου.
- 29 Εἶπε δὲ τὸ πνεῦμα τῷ Φιλίππῳ· Πρόσελθε, καὶ κηλήθηκα τῷ ἄρματι τούτῳ.
- 30 Προσδραμών δὲ ὁ Φίλιππος ἤκτισεν αὐτῆ ἀναγινώσκοντι τὸ περὶ τῆς Ἡσαΐου, καὶ εἶπεν· Ἀπόγε γνώσκεις τὸ ἀναγινώσκεις;
- 31 Ὁ δὲ εἶπε· Πῶς γὰρ αὐτὸ δυναίμην, εἰ μὴ τις ὁδηγήσῃ με; Παρακάλειστέ με τὸ Φίλιππος ἀναβάνα καρδίαν σου αὐτῆ.
- 32 Ἡ δὲ φειοχή τῆς γραφῆς αὐτῆ ἀνεγίνωσκεν, αὐτῆ· Ὅς περὶ αὐτῆ ἐπὶ σφραγίδι ἤχηται καὶ ὡς ἀμνὸς ἐναντίον τοῦ κείροντος αὐτὴν ἄφρονος, ὅπως σὺ ἀπολύγῃ τὸ σῶμα αὐτῆ.
- 33 Ἐν τῇ πεπρωμένῃ αὐτῆ ἡ κρείσσις αὐτῆ ἤρθη· τίς δὲ γινώσκει αὐτῆ τίς ὁδηγήσῃ; ὅτι αἰρηται δὲ τῆς γῆς ἡ ζωὴ αὐτῆ.
- 34 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ δυνάστης τῷ Φιλίππῳ, εἶπε· Δίόμοσός ἐστι, ἀλλὰ τίς ὁ περὶ τῆς λέξεως τούτης; ἀλλὰ εὐαγγέλιον, ἢ ἀλλὰ ἐπέρος ἑνός;
- 35 Ἀνοίξας δὲ ὁ Φίλιππος τὸ σῶμα αὐτῆ. Ἐδὲξάμενον δὲ τῆς γραφῆς ταύτης, ἐκλήθη αὐτῆ τὸ ἱερεῖον.
- 36 Ὡς δὲ ἐπαρούσης καὶ τῆς ὁδοῦ, ἤλθον ἐπὶ τὴν ὁδὸν καὶ φησὶν ὁ δυνάστης· Ἰδοὺ ὁδὸς· τί κωλύει με βαπτισθῆναι;
- 37 Εἶπε δὲ ὁ Φίλιππος· Εἰ τις ὄψις ἐξ ὅλης τῆς καρ-

καρδίας, ἔξεστιν. Ἀποκριθεὶς ἡ εἶπε· Πισθῶν
τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ εἶπα τὸ Ἰησοῦν Χριστόν.

38 Καὶ ἐκέλευσε εὐλογῆσαι τὸ ὕδωρ· καὶ κατέ-
βησαν ἀμφότεροι εἰς τὸ ὕδωρ, ὅ,τε Φίλιπ-
πος καὶ ὁ δυνᾶχος· καὶ ἐβάπτισεν αὐτόν.

39 Ὅτε ἡ ἀνάστασις ἐκ τοῦ ὕδατος, πνεῦμα
Κυρίου ἤρπασε τὸν Φίλιππον, καὶ οὐκ εἶδεν
αὐτόν· ὅ,τι ἐπὶ ὁ δυνᾶχος ἐπορεύθη γὰρ πρὸς
ὁδὸν αὐτοῦ χαίρων.

40 Φίλιππος ἡ δούρεται εἰς Ἀζωθὸν· ἔ διε-
χόμενος εὐαγγελίζετο τοῖς πόλεις πάσας, ἕως
τοῦ ἐλθεῖν αὐτόν εἰς Καισάρεα.

Κεφ. 9. 9.

1 Ὁ Ἰσάουλ ἐπὶ ἐμπνέων ἀπηλῆς καὶ φό-
βος εἰς τοὺς μαθητάς· ὁ Κύριος, ἀπο-
ελθὼν πρὸς δόξα καὶ δόξης,

2 Ἡγήσατο πρὸς αὐτὸν ἐπιστολὰς εἰς Δα-
μασκὸν ὡς τοῖς στυματωγαῖς, ὅπως εἰάν ἴ-
τας δούρεται τὸ ὄνομα τοῦ ἀνδραγαθῆ ἔ γυναικάς,
δοδομένων ἀγάγῃ εἰς Ἱερουσαλήμ.

3 Ἐν τῷ πρὸς πορεύεσθαι, ἐχούσης αὐτοὺς ἐξέλθῃ
τῇ Δαμασκῷ· καὶ ἐξαίφνης ἀπέστραψεν
αὐτοὺς φῶς ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ·

4 Καὶ πτωτὸν ἐπὶ τὸ γῆ, ἤκουσε φωνῆ λέξ-
σαν αὐτῷ· Σαῦλ Σαῦλ, τί με διώκεις;

5 Εἶπε δέ· Τίς εἶ, Κύριε; Ὁ Ἰσάουλ
εἶπεν· Εἰγὼ εἰμι Ἰησοῦς ὃν σὺ διώκεις· σκληρόν
σοι πρὸς κείτῃ λακκίζῃ.

6 Τρέμα

- 6 Τρέμων τε κὶ Σεμεδῶν εἶπε· Κύριε, τί με
 θέλεις ποιῆσαι; Καὶ ὁ Κύριος ὤρεθ' αὐτὸν·
 Αἰτάση τις εἰσελθεῖ εἰς τὴν πόλιν, καὶ λαλήση-
 σεταί σοι ἢ σε δεῖ ποιεῖν.
- 7 Οἱ δὲ ἄνδρες εἰσινωδοῦσιν αὐτῷ, εἰση-
 κέσται σὺν σοὶ, ἀκούσιν μὲν τῆς Φωνῆς, μηδέ-
 να δὲ θεωρήσιν.
- 8 Ἡ γάρ ηἱ δὲ ὁ Σαῦλος ἀπὸ τῆς γῆς ἀντιοχείων
 ἦ τ' ὀφθαλμῶν αὐτοῦ, ἐδέξατο εὐλοπεῖ· χρο-
 γωγῆδες δὲ αὐτὸν εἰσήγαγον εἰς Δαμασκόν.
- 9 Καὶ ἡμεῖρας τρεῖς μὴ βλέπων καὶ οὐκ
 ἔφαθον, ἐδὲ ἔπειν.
- 10 Ἦν δὲ τις μαθητὴς ἐν Δαμασκῷ ὀνόματι
 Ανανίας, καὶ εἶπε ὡς αὐτὸν ὁ Κύριος ἐν ὄρα-
 ματι· Ανανία. Οἱ δὲ εἶπεν· Ἰδὲ ἐγώ, Κύριε.
- 11 Οἱ δὲ Κύριος ὡς αὐτὸν· Ανασῆς πο-
 ρούθηκε ἐπὶ τὴν ῥύμην τὴν καλεσθεῖσαν, Εὐ-
 θεῖαν, καὶ ζήτησον ἐν οἰκίᾳ Ἰσάδα Σαῦλου
 ὀνόματι, Ταρσία· ἰδὲ γὰρ ὡς σδίχεται.
- 12 Καὶ εἶδεν ἐν ὄραματι ἄνδρα ὀνόματι
 Ανανίαν ἐπεληθῆναι, καὶ ἐπιθέντα αὐτῷ χεῖ-
 ρα, ὅπως ἀναστήσῃ.
- 13 Ἀπεκλήθη δὲ ὁ Ανανίας· Κύριε, ἀκήκουσα
 ἀπὸ πολλῶν πρὸς τὸν ἄνδρὸς τῆς ταύτης, ὅστε κακῶς
 ἐποίησε τοῖς ἁγίοις (καὶ ἐν Ἱερουσαλήμ).
- 14 Καὶ ὡς ἔχει ἐξουσίαν ὡς τὸν ἄρχιε-
 ρεῶν, δήσασθαι πάντας τὰς ἐπικληθῆσθαι τὸ
 ὄνοματι (καὶ).

15 Εἶπε

- 15 Εἶπε ἃ πρὸς αὐτὸν ὁ Κύριος· Παρούς, ὅτι σκεῦος ἐκλογῆς μοι εἰν ἔσθαι, ἃ βασιλεύσει τὸ ὄνομα μου ἐν ὅπιοι ἐθνῶν, ἃ βασιλείων, ἃ ἄντι Ἰσραήλ.
- 16 Ἐγὼ γὰρ ὑποδείξω αὐτῷ ὅσα δεῖ αὐτὸν ὑπερβαίνειν ἃ ὀνόματός μου παθεῖν.
- 17 Ἀπῆλθε ἃ Ἀνανίας καὶ εἰσηλθεν εἰς τὴν οἰκίαν καὶ ἐπιθεῖς ἐπ' αὐτὸν τὰς χεῖρας, εἶπε· Σαῦλ ἀδελφε, ὁ Κύριος ἀπέστειλέ με (Ἰησοῦς ὁ ὀφθεις σοι ἐν τῇ ὁδῷ ἢ ἤρχα) ὅπως ἀναβλέψῃς, καὶ πληροῦσθαι πνεύματι ἁγίῳ.
- 18 Καὶ οὐδέως ἀπέπεσον ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ ὡσεὶ λεπίδες, ἀνέβλεψέ τε ὡς ἀρχεῖμα καὶ ἀτασθαλίας ἐδοκίμασθη.
- 19 Καὶ λαβὼν τροφὴν ἐσίχυσεν. Ἐγένετο ἃ ὁ Σαῦλος μετὰ τῶν ἐν Δαμασκῷ μαθητῶν ἡμέρας πέντε.
- 20 Καὶ οὐδέως ἐν ταῖς συναγωγαῖς ἐκήρυκε τὸ Χριστὸν, ὅτι ἔτις ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ.
- 21 Ἐξίστασθαι ἃ πάντες οἱ ἀκρόνεις, ἃ ἔλεγον· Οὐχ ἔτις ἐστὶν ὁ παρεθήσας ἐν Ἱερουσαλὴμ τὰς ἐπικατακλῆμας τὸ ὄνομα τοῦτο καὶ ὡς εἰς τὸ εἰληλύθη ἵνα δεδεδῆκται αὐτὸς ἀνάγει ἐπὶ τὰς δεξιερεις;
- 22 Σαῦλος δὲ μάλλον ἐδυνάμην, καὶ συνίχων τὰς Ἰουδαίους τὰς καθηκόντας ἐν Δαμασκῷ, συμβιβάζων ὅτι ἔτις ἐστὶν ὁ Χριστός.

- 23 Ως ἡ ἐπιπλοῦν ἡμέρας ἰκαναί, σωσιδου-
λοῦσαντο οἱ Ἰσθαῖοι ἀνελεῖν αὐτόν.
- 24 Ἐγνώσθη ἡ τῷ Σαύλῳ ἡ ἐπιπλοῦν αὐ-
τῶν. παρεῖλεν τε εἰς πύλας ἡμέρας τε καὶ
νυκτὸς, ὅπως αὐτὸν ἀπέλωσι.
- 25 Λαβόντες δὲ αὐτὸν οἱ μαθηταὶ νυκτὸς
κατήκταν αὐτὸν ἐν τείχεσσι, χαλάσαντες ἐν
αυροῦν.
- 26 Παραχρῆμα δὲ ἡ ὁ Σαῦλ εἰς Ἱερου-
σαλήμ, ἐπέσταν κατήκταν τοῖς μαθηταῖς·
καὶ πάντες ἐφοβῶντο αὐτὸν, μὴ πεισύντες
ὅτι ἐστὶ μαθητῆς.
- 27 Βαρνάβας δὲ ἐπιλαβόμενος αὐτόν, ἤγα-
γε πρὸς τὸς ἀποστόλους, καὶ διηγήσατο αὐτοῖς
πῶς ἐν τῇ ἰδιῷ εἶδε τὸ Κύριον, καὶ ὅτι ἐλά-
λησεν αὐτῷ, καὶ πῶς ἐν Δαμασκῷ, ἐπαρήρ-
σιάσατο ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ.
- 28 Καὶ ἔω μετ' αὐτῶν εἰσπορεύομενος καὶ
ἐκπορεύομενος ἐν Ἱερουσαλήμ, καὶ παρ-
ρησιαζόμενος ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.
- 29 Ἐλάλη τε ἐσωσιζήθη πρὸς τὸς Ἐκκλησι-
αῖς· οἱ δὲ ἐπιχείρουν αὐτὸν ἀνελεῖν.
- 30 Ἐπιγινόντες δὲ οἱ ἀδελφοὶ κατήγαγον αὐ-
τὸν εἰς Καισάρειαν, καὶ ἐξαπέστειλαν αὐτὸν εἰς
Ταρσόν.
- 31 Αἱ μὲν οὖν ἐκκλησίαι καθ' ὅλης τῆς Ἰου-
δαίας καὶ Γαλιλαίας καὶ Σαμαρείας εἶχον
εἰρήνην, οἰκοδομώμεναι καὶ πορεύομεναι τῷ
φύσει

Φόβω τῶ Κυρίου, καὶ τῆ ᾠδῆ κλήσῃ τῶ ἀγίω
πνεύματι ἐπολιθύνοντο.

32 Ἐρχόμενος δὲ Πέτρος διερχόμενος διὰ πάν-
των, καλεσθεὶς ἔσπευσε πρὸς τοὺς ἀγίους τοὺς καρδι-
κῶντας Λύδαν.

33 Εὗρε δὲ ἐκεῖ ἀνθρώπον ἰσχυρὰ Αἰνέα διό-
ματι, ἐξ ἐτῶν ἀκλιῶν καὶ ἀκείμενον ἐπὶ κρα-
βάτῳ, ὃς ἦν ᾠδῆ λελυμημένος.

34 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Πέτρος· Αἰνέα, ἰάταί
σε Ἰησοῦς ὁ Χριστός· ἀνάστητι, καὶ στήσον σεαυ-
τὸν. Καὶ οὐδέως ἀνέστη.

35 Καὶ εἶδον αὐτὸν πάντες οἱ καρδικῶντες
Λύδαν καὶ τὸν Σάρανα, οἵτινες ἐπέσπευσαν ἐπὶ
τῷ Κυρίῳ.

36 Ἐν Ἰόππῃ δὲ τις ἦν μαθητῆς ἰσχυρὰ
Ταβιθά, ἣ διεκρινόμην λέγεσθαι Δορκάσ·
αὕτη ἦν πλήρης ἀγαθῶν ἔργων καὶ ἐλεημο-
σιῶν ὧν ἐποίει.

37 Ἐρχόμενος δὲ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἀσθε-
νήσασα αὐτὴν ἀπεθανε· λέξαντες δὲ αὐ-
τὴν ἔθηκαν ἐν ὑπερώῳ.

38 Ἐξῆς δὲ ἔσσης Λύδης τῆ Ἰόππῃ, οἱ μα-
θηταὶ ἀκέσαντες ὅτι Πέτρος ἐστὶν ἐν αὐτῇ,
ἀπέστειλαν δύο ἀνδρας πρὸς αὐτὸν, ᾠδῆ-
καλεῖντες μὴ ἀκλιῶσαι διελθεῖν ἕως αὐτῶν.

39 Ἀναστὰς δὲ Πέτρος σωῆλθεν αὐτοῖς· ὃν
ᾠδῆ ἀνθρώπον ἀνήγαγον εἰς τὸ ὑπερώϊον· καὶ
σπαρέψασα αὐτὴ πᾶσαι αἱ χῆραι κλαίονσαι,
καὶ

καὶ ἐπιδεδυμέναι χιτῶνας καὶ ἰμάτια ὅσα
ἐποίησεν αὐτῶν ἔστι ἡ Δορκίς.

40 Ἐκβαλὼν ἡ ἕξω πάντας ὁ Πέτρος, θύει
τὴν θύραν προσκύξας καὶ ἐπιτρέψας ὡρᾶς
τὸ σῶμα, εἶπε· Ταβίθα, ἀνάστηθι. Ἡ δὲ
ἤνοιξε τὰς ὀφθαλμούς αὐτῆς· καὶ ἰδῶσα τὸ
Πέτρον, ἀνεκράτησε.

41 Δύς ἡ αὐτῆ χειρᾶ, ἀνέστησεν αὐτὴν· φωνήσας ἡ τὰς ἀγίας καὶ τὰς χήρας, παρέστησεν
αὐτὴν ζῶσαν.

42 Γνωστὸν ἡ ἐγένετο καθ' ὅλης τῆς Ἰσραήλ· καὶ
πολλοὶ ἐπίστυσαν ἐπὶ τῷ Κυρίῳ.

43 Ἐγένετο ἡ ἡμέρας ἰκανὰς μείναι αὐτὸν ἐν
Ἰσραὴλ ὡρᾶ πνι Σίμωνι βυρζεῖ.

Κεφ. ι. 10.

1 Ἀνὴρ δὲ τις ἦν ἐν Καισαρείᾳ ὀνόματι
Κορνήλιος, ἐκαθ' ἑαρχίας ἐκ ἀσείρης τῆς
καλιμαθῆς Ἰπυλικῆς,

2 Εὐσεβοῦς καὶ φοβούμενος τὸ Θεόν, σὺν
παντὶ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, ποιῶν τε ἐλεημοσύνας
πολλὰς τῷ λαῷ, καὶ δούλων τῶ Θεῷ
δραπανῶς,

3 Εἶδεν ἐν ὄραματι φανερῶς, ὡς εἰ ὄραν ἐν-
τάτῳ τῆς ἡμέρας, ἀγγελὸν τῶ Θεῷ ἐσελθόντα
ὡρᾶς αὐτὸν, ἔειπόντα αὐτῷ· Κορνήλιε.

4 Οὗτος ἀπεκρίθη αὐτῷ, καὶ ἔμφορος ἡμῶν
μῦθος, εἶπε· Τί ἐστὶ Κύριε; Εἶπε ἡ αὐτῷ·
Αἱ προσεύχαι σου καὶ αἱ ἐλεημοσύναι σου
ἀντίση-

ἀπέστειλαν εἰς μνημόστυμον εὐάπιον Ἰ Θεῷ.

5 Καὶ νῦν πέμψον εἰς Ἰσραὴλ ἄνδρας, ἑμε-
 τῶν πέμψω Σίμωνα ὃς ἐπικαλεῖται Πέτρον.

6 Οὗτος ἐξ ἐβραίων ἀπὸ τῆς Σίμωνι βου-
 σεί, ὃ ἐστὶν οἰκία ἀπὸ τῆς γέλασσαν· ὅτι
 λαλήσῃ σοι πῶς δεῖ ποιεῖν.

7 Ὡς ἡ ἀπήλθεν ὁ ἀγγελὸς ὁ λαλῶν τῷ
 Κορινητίῳ, φωνήσας δύο τῶν οἰκείων αὐτοῦ, καὶ
 στρατιάτην οὐσεῖν τῶν περὶ τὸν αὐτὸν,

8 Καὶ ἐξηγησάμενος αὐτοῖς ἅπαντα, ἀπ-
 ἔστηλθεν αὐτὸς εἰς τὸ Ἰσραὴλ.

9 Τῇ ἡμέρᾳ ἐπαύριον ὁδοιπορούντων ἐκείνων, καὶ
 τῇ πολλῇ ἐκμίζόντων, ἀνέβη Πέτρος ἐπὶ τὸ
 δῶμα προσεύξασθαι, ὡς ἔωρα ἐκτίω.

10 Ἐβλήθη ἡ πύλη τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἤτελε γλύσαι-
 σθαι· ἀπὸ τῆς οὐρανοῦ ἐκείνων, ἐπέπι-
 σεν ἐπ' αὐτὸν ἕκαστος·

11 Καὶ θεωρεῖ τὸ ἔρανον ἀνεωσμήμον, ἑκατα-
 βαῖνον ἐπ' αὐτὸν σκευὸς ἕως ὀφθάλμου μεγα-
 λῆ, τέσσαρσιν ἀρχαῖς δεδεμημένον, καὶ κατιέ-
 μημον ἐπὶ τῆ γῆς·

12 Ἐν ᾧ ὑπῆρχε πάντα τὰ τετραπόδα τῆ
 γῆς, ἑ τὰ θηρία, καὶ τὰ ἑρπετὰ, καὶ τὰ πτε-
 ρηία Ἰ εἰς τὸν οὐρανόν.

13 Καὶ ἐβλήθη φωνὴ πρὸς αὐτόν· Ἄνασθαι,
 Πέτρε, ἴσθαι καὶ φάσαι.

14 Ὁ δὲ Πέτρος εἶπε· Κύριε, ὅτι
 ἕδὲ ποτε ἔφαθον πᾶν κριτὸν ἢ ἀκαθάρτον.

15 Καὶ

- 15 Καὶ φανῆ παλιν ἐκ δούτερον πρὸς αὐτόν·
 Ἄ ὁ Θεὸς ἐκαθάρισε, σὺ μὴ κρῖνε.
- 16 Τῷτο ἡ ἐγγύς ἐπὶ τρεῖς· καὶ παλιν ἀνε-
 λήφθη τὸ σκεῦος εἰς τὸ ἔρανον.
- 17 Ὡς ἡ ἐν ἑαυτῷ διηπόρε ὁ Πέτρος πὶ αὐ-
 εῖη τὸ ὄραμα ὁ εἶδε, καὶ ἰδὲ, οἱ ἄνδρες οἱ
 ἀπίσταλμοὶ ἀπὸ τῆς Κορινθίας, διαρατή-
 σαυλὶς τῆς οἰκίας Σίμωνος, ἐπέστησαν ἐπὶ τὴν
 πυλῶνα·
- 18 Καὶ φωνήσαντες ἐπιωθάνοντες εἰ Σίμων ὁ
 ἐπικαλέμενος Πέτρος ἐνθάδε ξενίζεις·
- 19 Τῷ δὲ Πέτρος ἐνθυμηθεὶς πρὸς τὸ ἔρα-
 μαίον, εἶπεν αὐτῷ τὸ πνεῦμα· Ἰδὲ, ἄνδρες
 τρεῖς ζητεῖσίν σε·
- 20 Ἀλλὰ ἀναστὰς κατέβηθι, ἐπαρῶς σου
 αὐτοῖς, μηδὲν διακρινόμενος· διότι ἐγὼ
 ἀπέσταλκα αὐτούς.
- 21 Καταβὰς ἡ Πέτρος πρὸς τὰς ἀνδρας τὰς
 ἀπισταλμούς ἀπὸ τῆς Κορινθίας πρὸς αὐτόν,
 εἶπεν· Ἰδὲ, ἐγὼ εἰμι ὃν ζητεῖτε· τίς ἡ αἰτία
 οὗτω πείρεσθε;
- 22 Οἱ ἡ εἶπον, Κορινθίον ἐκαθ' ἑαρχης,
 ἀνὴρ δίκαιος καὶ φοβούμενος τὸ Θεόν, μαρ-
 τυρομήνος περὶ ὅλων τῶν ἔθνων τῶν Ἰσθαίων,
 ἐξημαρτοῦσθαι ὑπὸ ἀγγέλου ἁγίου μετὰ πύμ-
 ψαδαί σε εἰς τὸ οἶκον αὐτῶ, καὶ ἀκῆσαι ῥή-
 ματα πολλὰ σοῦ.
- 23 Εἰσκαλισάμενος ἔν αὐτῶς ἐξένισε. Τῇ ἡ
 ἐπικύ-

ἑπαύριον ὁ Πέτρος ἐξῆλθε σὺν αὐτοῖς, καὶ πινε
 τῶν ἀδελφῶν τῶν δὲ τῆς Ἰόππης συνήλθον αὐτῶν.

24 Καὶ τῇ ἑπαύριον ἐσηλθον εἰς τὴν Καισαρίαν· ὁ δὲ Κορνήλιος ὁ ἑσθλοδοκῶν αὐτῶν, συγκαλισάμενος τῶν συγγενῶν αὐτοῦ καὶ τοὺς ἀναγκάστους φίλους.

25 Ὡς δὲ ἐγγύστερ εἰσελθεῖν τῷ Πέτρῳ, συναυπῆσας αὐτῶν ὁ Κορνήλιος, πρὸν ἐπὶ τῶν ποδῶν, προσεκκύνησεν.

26 Ὁ δὲ Πέτρος αὐτὸν ἤρξατο, λέγων· Ἀνάστηθι· καὶ γὰρ αὐτὸς ἄνθρωπος εἰμι.

27 Καὶ συνομιλῶν αὐτῶν, ἐσηλθε, καὶ δείξασκεν αὐτοῖς τὰς ποταμίας.

28 Ἐφη τε πρὸς αὐτούς· Ὑμεῖς ἐπίστασθε ὡς ἀθέμιτον ἐστὶν ἀνδρὶ ἰσθαίειν καὶ λατρεύειν ἢ προσκυνεῖν ἄλλοφύλων· καὶ ἐμοὶ ὁ Θεὸς ἐδίδαξε μηδὲν κακῶν ἢ ἀκαθάρτων λέγειν ἄνθρωπον.

29 Διὸ ἐάναντι κλήτης ἦλθον μετὰ περιφθείας, πυνθάνομαι ἔν τινι λόγῳ μετεπέμψατέ με.

30 Καὶ ὁ Κορνήλιος εἶφη· Ἀπὸ τετάρτης ἡμέρας μέχρι ταύτης τῆς ὥρας ἡμεῖς νηστῶντες, καὶ τὴν ἐνάτην ὥραν προσεσχόμενος ἐν τῷ οἴκῳ μου· καὶ ἰδοὺ, ἀπὸ νῦν ἐστὶν ἐνάπιόν μου ἐν ἰδοῦντι λαμπρῶν.

31 Καὶ φησι· Κορνήλιε, ἐσηκέαθη σε ἡ προσοχή, καὶ αἰ ἐληρησύναι σου ἐμνήσθησαν ἐνάπιον τῷ Θεῷ.

32 Πέμψον οὖν εἰς Ἰόππιν, καὶ μετὰ καλε-

σιν Σίμωνα, ὃς ἐπικαλεῖται Πέτρος· ἔτος
 ξενίζε) ἐν οἰκίᾳ Σίμωνος βυρσέως ᾧ ᾤοντο
 θαλάσσιον ὄντα ᾧ ᾤοντο ἄγγελος λαλήσῃ σοι.

33 Ἐξαυτῆς ἔν ἐπιμύσῃ αὐτῶν σὺ τε καὶ ἄλλοι
 ἐποίησατε ᾧ ᾤοντο ἄγγελος. νῦν οὖν πάντες
 ἡμεῖς ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ πύρεσμεν, ἀκούσῃ
 πάντα τὰ ᾤοντο ἄγγελος σοι καὶ τοῦ Θεοῦ.

34 Ἀνοίξας ὁ Πέτρος τὸ στόμα, εἶπεν· Ἐπὶ
 ἀληθείας καὶ ἀλαμύνομα ὅτι ἐκ ἐστὶ ᾤοντο
 ἡμεῖς ὁ Θεός·

35 Ἀλλ' ἐν παντὶ ἐθνῶν ὁ φοβούμενος αὐτὸν, καὶ
 ἐργαζόμενος δικαιοσύνην, δεκτὸς αὐτῷ ἐστὶ.

36 Τὸν λόγον ὃν ἀπίστευε τοῖς ἡμέτεροις Ἰσραήλ,
 διακηρύσσοντες εἰρήνην διὰ Ἰησοῦ Χρισ-
 τοῦ ἔτος ἐπὶ πάντων Κύριου.

37 Ὑμεῖς οἴδατε τὸ ᾤοντο ἄγγελος κατ' ὅλης
 τῆς Ἰουδαίας, ἐξ ᾤοντο ἄγγελος διὰ τῆς Γαλιλαίας,
 καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐκήρυξεν Ἰωάννης·

38 Ἰησοῦν τὸν διὰ Ναζαρέθ, ὃς ἔχρισεν αὐτὸν
 ὁ Θεός πνεύματι ἁγίῳ καὶ δυνάμει, ὃς διήλθεν
 ὄρεσιν καὶ ᾤοντο ἄγγελος πάντας τὰς θαλάσσι-
 ον ἀποστόλους καὶ τοῦ ᾤοντο ἄγγελος, ὅτι ὁ Θεός
 ἔμελλεν αὐτῷ.

39 Καὶ ἡμεῖς ἐσμὲν μαρτυροῦντες πάντα ὃν ἐποίη-
 σεν ἐν τῇ χώρα τῆς Ἰουδαίας καὶ ἐν Ἱερουσα-
 λήμ· ὃν ἀπέστειλον κηρυττοῦντες ἐπὶ ζύλου.

40 Τῷ ἔτος ὁ Θεός ἤγαγεν τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ, καὶ
 ἔδωκεν αὐτὸν ἐμφανῶς ᾤοντο ἄγγελος.

41 Οὐ παντὶ τῷ λαῷ, ἀλλὰ μάρτυσι τοῖς
 παροκρηθροθημένοις ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, ἡμῖν, οἵ-
 πνες συνεφάρμακον καὶ συνεπίομα αὐτῷ μετὰ
 τὸ ἀναστῆναι αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.

42 Καὶ παρήγγειλεν ἡμῖν κηρύξαι τὸν λαόν, ἵνα
 ἀφ' ἡμαρτύρουσθαι ὅτι αὐτὸς ἐστὶν ὁ ὠρισμένος
 ὑπὸ τοῦ Θεοῦ κρατὴς ζώντων καὶ νεκρῶν.

43 Τῷ τῶ πάντες οἱ παροφῆται μαρτυροῦσιν,
 ἀφ' ἑσιν ἀμαρτιῶν λαθεῖν ἀφ' ἑ ὀνόματι
 αὐτῷ πάντα τὰ πιστεύοντα εἰς αὐτόν.

44 Ἐπὶ λαλῶντος τοῦ Πέτρου τὰ ῥήματα ταῦ-
 τα, ἐπέπεσε τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπὶ πάντας
 τὰς ἀκρότους τὸ λόγον.

45 Καὶ ἐξέστησαν οἱ ἐκ περιθρημῆς πιστοὶ ὅσοι
 συνῆλθον τῷ Πέτρῳ, ὅτι ἐπὶ τὰ ἔθνη ἡ δω-
 ρεῖα τοῦ ἁγίου πνεύματος ἐκκέχυται.

46 Ἦκουον γὰρ αὐτὸν λαλῶντων γλώσσαις, ἑ με-
 γαλυνόντων τὸ Θεόν. Τότε ἀπεκρίθη ὁ Πέτρος·

47 Μὴ τὸ ὕδωρ κωλύσαι διώαται τις τοῦ
 μὴ βαπτισθῆναι τῶν τῶν, οἵτινες τὸ πνεῦμα
 τὸ ἅγιον ἔλαβον καθὼς καὶ ἡμεῖς;

48 Προσέταξέ τε αὐτὰς βαπτισθῆναι ἐν τῷ
 ὀνόματι τοῦ Κυρίου. Τότε ἠρώτησαν αὐτὸν
 ἐπιμείναι ἡμέρας τινάς.

Κεφ. ια'. ΙΙ.

1 Ἦκουσαν ὅτι οἱ ἀπόστολοι καὶ οἱ ἀδελφοὶ οἱ
 ὄντες ἐπὶ τῆ Ἰερουσαλῆμ, ὅτι καὶ τὰ ἔθνη ἐδέ-
 ξαντο τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ.

Τ 2

2 Καὶ

- 2 Καὶ ὅτε ἀνέβη Πέτρος εἰς Ἱεροσόλυμας,
διεκρίνοντο πρὸς αὐτὸν οἱ ἐκ τῆς Καινοτομίας,
- 3 Λέγοντες· Ὅτι πρὸς ἀνδρας ἀκροβυστίας
ἔχοντας εἰσήλθες, καὶ συνέφαγες αὐτοῖς.
- 4 Ἀρξάμενος ὁ Πέτρος, ἐξήχησε αὐτοῖς
καθεξῆς, λέγων·
- 5 Ἐγὼ ἤμην ἐν πόλει Ἰόππῃ πρὸς δουχόμε-
νον· καὶ εἶδον ἐν ἐκστάσει ὄραμα, καὶ βαῖνον
σκευῶς ἡ ὡς ὀφθαλμῶν μεγάλων, τέσσαρσιν ὄρα-
μαῖς καὶ διεμύριον ἐκ τοῦ ἔρανος, καὶ ἦλθεν
ἄχρως ἐμοῦ.
- 6 Εἰς αὐτὸ ἀπενίστασθε κατενόηον· καὶ εἶδον τὰ τε-
τράποδα τῆς γῆς, καὶ τὰ θηρία, καὶ τὰ ἱεπετὰ,
καὶ τὰ πετεινά τῶν ἔρανων.
- 7 Ἦκουσα ἢ φωνῆς λεγούσης μοι· Ἀναστὰς
Πέτρε, θύσον καὶ Φάγε.
- 8 Εἶπον δὲ Μηδαμῶς Κύριε· ὅτι πᾶν κρι-
νὸν ἢ ἀκαθάρτον ἔδωκε εἰσήλθῃ εἰς τὸ εὐ-
μαμα.
- 9 Ἀπεκρίθη δὲ μοι φωνὴ ἐκ δυνάτεω ἐν τῷ
ἔρανος· Ἄ ὁ Θεὸς ἐκαθάρισε, σὺ μὴ κρίνε.
- 10 Τῶν ὃ ἐγένετο ἐπὶ τούτοις· καὶ πάλιν ἀνε-
παύσατο ἅπαντα εἰς τὸ ἔρανον.
- 11 Καὶ ἰδὼν, ἐξ αὐτῆς τρεῖς ἀνδρες ἐπέστησαν
ἐπὶ τῷ οἰκίῳ ἐν ἡ ἡμῶν, ἀπισταλμῶροι ἀπὸ
Καισαρείας πρὸς με.
- 12 Εἶπε δὲ μοι τὸ πνεῦμα συνελθεῖν αὐτοῖς,
μηδὲν ἀφαιρέσασθαι. ἦλθον ὃ σὺν ἐμοῖ καὶ

εἰ ἐξ ἀδελφοὶ ἔσται, καὶ εἰσελθόντων εἰς τὸ οἶκον
ἔσται ἀνδρός.

13 Ἀπήγειλέ τε ἡμῖν πῶς εἶδε τὸ ἄγγελον ἐν
τῷ οἴκῳ αὐτῶν σταθῆναι καὶ εἰπόντα αὐτῶν. Ἀ-
πόστειλον εἰς Ἰόππην ἄνδρας, καὶ μετὰ πεμψαὶ
Σίμωνα τὸν ἐπικαλέσμενον Πέτρον.

14 Ὅς λαλήσῃς ῥήματα παρὰ σε ἐν οἷς σταθί-
σῃ σὺ καὶ πᾶς ὁ οἶκός σου.

15 Ἐν ᾗ τῶν ἀρχαίων με λαλεῖν, ἐπέπεσε τὸ
πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπ' αὐτῶν, ὡς περ καὶ ἐφ'
ἡμᾶς ἐν δόξῃ.

16 Ἐμνήσθη ἡ ἔσθ' ῥήματα Κυρίου, ὡς ἔλεγε
Ἰωάννης μὴ ἐβάπτισεν ὕδατι, ὑμεῖς ἡ βαπτί-
σθησθε ἐν πνεύματι ἁγίῳ.

17 Εἰ ἔστιν ἰσχυρὰ δωρεὰν ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς
ὡς ἔημῖν, πιστεύσατε ἐπὶ τὸ Κύριον Ἰησοῦν
Χριστὸν, ἐγὼ ἡ πῖς ἡμῶν δυνατὸς κωλύσται τὸν
Θεόν;

18 Ἀκούσαντες ἡ ταῦτα ἠσύχατον, ἔειδξαν
τὸ Θεόν, λέγοντες· Ἄρα γε καὶ τοῖς ἔθνεσιν ὁ
Θεὸς πῶς μετένοιαν ἔδωκεν εἰς ζωὴν.

19 Οἱ μὲν οὖν Ἀφασαρέντες ἀπὸ τῆς Φλί-
ψεως τὸ γηγορήσας ἐπὶ Στεφάνῳ, διήλθον
ἕως Φοινίκης καὶ Κύπρου καὶ Ἀντιοχείας,
μηδεὶ λαλῶντες τὸν λόγον εἰ μὴ μόνον Ἰου-
δαίοις.

20 Ἦσαν δὲ ἄνθρωποι ἐξ αὐτῶν ἄνδρες Κύπριοι καὶ
Κυρηνάιοι, οἵτινες εἰσελθόντες εἰς Ἀντιόχειαν,

Τ 3 ἐλάλουν

ἐλάλουν πρὸς τὰς Ἐκκλησιαστικὰς, διαχειλιζόμενοι τὸ Κύριον Ἰησοῦν.

21 Καὶ ἡ χεὶρ Κυρίου μετ' αὐτῶν· πολὺς τε ὄμιλος πισύσας ἐπέσπειρεν ἐπὶ τὸ Κύριον.

22 Ἡ κέσθη δὲ ὁ λόγος εἰς τὰ ἄνω τὴν Ἐκκλησίαν καὶ ἐν Ἱεροσολύμοις πρὸς αὐτῶν καὶ ἐξαπέστειλαν Βαρνάβαν διελθεῖν ἕως Ἀντιοχείας.

23 Ὁς ὡραζομένης ἐἶδεν τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ, ἐχαίρει, καὶ παρεκάλει πάντας τῆν ἀσθεσίαν καὶ καρδίαν προσευχεῖν τῷ Κυρίῳ.

24 Ὅτι ἡ χάρις αὐτοῦ ἀγαθὸς καὶ πλῆρης πνεύματος ἁγίου καὶ πίστεως. Καὶ ἐπείσθη ὄχλος ἰκανὸς τῷ Κυρίῳ.

25 Ἐξῆλθε δὲ εἰς Ταρσὸν ὁ Βαρνάβας ἀναζητήσασθαι Σαῦλον· καὶ εὗρον αὐτὸν ἤγαγον αὐτὸν εἰς Ἀντιόχειαν.

26 Ἐχρῆστο δὲ αὐτὸς ἐνιαυτὸν ὅλον συναχθῆναι ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ, καὶ διδάσκειν ὄχλον ἰσχυρόν, χρηματίζων τε πρὸς τοὺς ἐν Ἀντιοχείᾳ τὰς μαθητῆς Χερσηνοὺς.

27 Ἐν ταύταις δὲ ταῖς ἡμέραις κατήλθοι διπλὸν Ἱεροσολύμων ἀσθεσίαν εἰς Ἀντιόχειαν.

28 Ἀναστὰς δὲ εἰς ἐξ αὐτῶν ὀνόματι Ἀγαθοῦ, ἐσημῶνε Διάκονον πνεύματος, λιμὸν μέγαν κείνου ἐσεσθῆναι ὅλην τὴν οἰκονομίαν ὅσῃς καὶ ἐχρῆστο ἐπὶ Κλαυδίου Καίσαρος,

29 Τῶν δὲ μαθητῶν, καθὼς ἠνυπορεῖτο πρὸς αὐτοὺς ἐλάσθη αὐτῶν εἰς Ἀσσυρίαν πύμψασθαι

πέμψαι τοῖς καθ' ἑαυτοῖσιν ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ ἀδελφοῖς.

30 Ὅτι καὶ ἐποίησεν, ἀποστείλας πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους Δαβὶδ καὶ πρὸς Βαρνάβαν καὶ Σαῦλον.

Κεφ. ιβ'. 12.

1 **Κ**ατ' ἐκείνον ἡμερὸν ἐπέσκαλεν Ἡρώδης ὁ βασιλεὺς τὰς χεῖρας κακῶσιν πινυαὶς τὸ ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας.

2 Ἀνεῖλε ἡμερῶν Ἰακώβον τὸν ἀδελφὸν Ἰωάννου μαρτυροῦ.

3 Καὶ ἰδὼν ὅτι ὄρετόν ἐστι τοῖς Ἰουδαίοις, προσέτετο συλλαβεῖν καὶ Πέτρον· (ἦσαν δὲ ἡμέρας τρεῖς Ἀζύμων)

4 Ὅτι καὶ πιάσας ἔτετο εἰς φυλακὴν, ἡμερῶν τεσσαρῶν τετραδίοις στρατιῶν φυλάσσειν αὐτόν· βεβλήμενος μὲν τὸ πάχος ἀναγαγεῖν αὐτὸν τῷ λαῷ.

5 Ὅτι μὲν οὖν Πέτρος ἐτηρεῖτο ἐν τῇ φυλακῇ· προσευχὴν δὲ ἔποιε ἐκλεινὴς γινόμενῃ ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας πρὸς τὸ θεῖον ὑπὲρ αὐτοῦ.

6 Ὅτι ἡμελλεν αὐτὸν ἀπαγαγεῖν ὁ Ἡρώδης, τῆνυ καὶ ἐκείνη ἡμέρα ὁ Πέτρος κρημώμενος μετὰ δύο στρατιῶν, δεδεμμένος ἀλύσει δυνεῖ, φύλακίς τε πρὸς τὸν θύρας ἐτήρει τὸν φυλακὴν.

7 Καὶ ἰδὼν, ἀγγελοῦ Κυρίου ἐπέση, καὶ φῶς ἔλαμψεν ἐν τῷ οἰκήματι· παύσας ἡμερῶν πάλιν ἔβη Πέτρος, ἤγαγεν αὐτόν, λέγων·

Ανάστα ἐν τάχει. Καὶ ἐξέπισσι αὐτῷ ἐκ
ἀλύσεως ἐκ τῶν χερῶν.

8 Εἶπέ τε ὁ ἄγγελος πρὸς αὐτόν· Περίζω-
σαι, καὶ ἐπάδησαι τὰ σκευάτιά σου. Ἐποίησε
ἡ ἄνω. Καὶ λέγει αὐτῷ· Περιβαλεῖς τὸ ἱμά-
τιόν σου, καὶ ἀποθέσθαι σου.

9 Καὶ ἐξελθὼν ἠκολούθη αὐτῷ, καὶ ὅσα ἤδεν ὅτι
ἀληθῆς ἐστὶ τὸ γινόμενον διὰ τοῦ ἄγγελου· ἐδόκει
εἰς ὄραμα βλέπειν.

10 Διεληθόντες ἡ πόλις τὴν φυλακὴν ἐδοξί-
σθη, ἦλθον ἐπὶ τὸ πύλινον τὸ σιδηρεῖον, τὸ φέρε-
σθαι εἰς τὴν πόλιν, ἣτις αὐτομάτη ἠνοίχθη αὐ-
τοῖς· ἔξελθόντες προσήλθον ῥώμῳ μίαν· καὶ
ὡς ἴσως ἀπίστη ὁ ἄγγελος ἀπὸ αὐτοῦ.

11 Καὶ ὁ Πέτρος γινόμενος ἐν ἑαυτῷ, εἶπε·
Νυνὼ οἶδα ἀληθῶς ὅτι ἐξαπίσθη Κύριος τῷ
ἄγγελῳ αὐτοῦ, καὶ ἐξείλετο με ἐκ χειρὸς Ἡρώ-
δου, καὶ πάσης τῆς ἀσεβείας τοῦ λαοῦ τῶν
Ἰουδαίων.

12 Συναδῶν τε ἦλθεν ἐπὶ τὴν οἰκίαν Μαρίας
τῆς μητρὸς Ἰωάννου, τοῦ ἐπικαλεσθέντος Μάρκου,
ὅστις ἦσαν ἱκανοὶ συναηθροισμένοι καὶ προσ-
κόμοιοι.

13 Κρῆσαι δὲ τῷ Πέτρῳ τὸ ἵματιον τοῦ πύλινου,
προσῆλθε παρὸς αὐτὸν ὑπακῶσαι, ἀνάμεικτον ῥόδον.

14 Καὶ ἐπιγῆσαι τὸ φωνίον τῷ Πέτρῳ, διὰ τῆς
χαρῆς ὅσα ἠνοίξε τὸ πύλινον, εἰσδραμεῖσαι ἡ
ἀπήγειλεν ἐστῆναι τὸν Πέτρον πρὸς τοὺς πύλινους.

15 Οἱ δὲ πρὸς αὐτὸν εἶπον· Μαίνη. Ἡ δὲ δειχουρίζου ἕτως ἔχον. Οἱ δὲ ἔλεγον· Οἱ ἄγγελοι αὐτῶ ἐσιν.

16 Ὁ δὲ Πέτρος ἐπέμμε κροῶν ἀνοίξαι τις δὲ εἶδον αὐτὸν, καὶ ἐξέστησαν.

17 Καθασείρας δὲ αὐτοῖς τῆ χειρὶ σιγαῶν, διηγήσατο αὐτοῖς πῶς ὁ Κύριος αὐτὸν ἐξήγαγον ἐκ τῆ φυλακῆς· εἶπε δὲ· Ἀπαχθείλασε Ἰακώβω ἐ τοῖς ἀδελφοῖς ταῦτα. Καὶ ἐξελθὼν ἐπορεύθη εἰς ἕτερον τόπον.

18 Γενομένης δὲ ἡμέρας ἡ τέρτατος ἡμέρας ὀλίγου ἐν τοῖς στρατιώταις, πῶς ὁ Πέτρος ἐγλύου.

19 Ἡρώδης δὲ ἐπιζητήσας αὐτὸν, ἐ μὴ δούρων, ἀνακρίνας τὰς φύλακας, ἐκέλευεν ἀπαχθῆναι καὶ κατελθὼν ἀπὸ τῆ Ἰερουσαλῆμ εἰς πῶν Καισαρείαν, διέτριβεν.

20 Ἦν δὲ ὁ Ἡρώδης θυμωματῶν Τυρίοις καὶ Σιδωνίοις· ὁμοθυμαδὸν δὲ παρήσαν πρὸς αὐτὸν, ἐ πείσαντες Βλάστον τὸ ἐπὶ τῆ κροῶνος τῆ βασιλείας, ἡτῆντο εἰρήνῃ. Διὰ τὸ τρέφειν αὐτῶν τὸ χῶρον ἀπὸ τῆ βασιλικῆς.

21 Τακτῆ δὲ ἡμέρα ὁ Ἡρώδης ἐνδυσάμενος ἐδῆσε βασιλικῶν, ἐ καθίσας ἐπὶ τῆ βήματῶ, ἐδημηγόρη πρὸς αὐτῶ.

22 Ὁ δὲ δῆμος ἐπεφώνη· Θεῶ φωνῆ, ἐ σὺ ἀνθρώπων.

23 Παραχρησῆμα δὲ ἐπαύταξεν αὐτὸν ἄγγελος

Τ 5 Κυρίως,

- Κυρίῳ, ἀνθ' ὧν ὅσα ἔδωκε ἡ δόξα τῷ Θεῷ.
 καὶ ἡ δόξα ἡ σκωληκώδης ἐξέψυξεν.
 24 Ὁ δὲ λόγος τοῦ Θεοῦ ἠρέμα ἐπολιθύνετο.
 25 Βαρνάβας δὲ καὶ Σαῦλος ὑπέστρεψαν εἰς
 Ἱερουσαλήμ, πληρώσαντες τὴν διακονίαν,
 συμπαραλαβόντες καὶ Ἰωάννην τὸν ἐπικλη-
 θέντα Μάρκον.

Κεφ. ιγ'. 13.

- 1 Ἦσαν δὲ πινες ἐν Ἀντιοχείᾳ καὶ ἄλλοι
 ἐκκλησιαῶνες (ὡς φησὶ) ἑθνησκαλοὶ, οἱ τε
 Βαρνάβας καὶ Συμεὼν ὁ καλεσθεὶς Νίγηρ, ἔ-
 λυκιώτης ὁ Κυρκουαῖος, Μανασσῆς τῆς Ἡρώ-
 δος ἡ τετραρχουσα ὑπὸ Σαῦλον.
 2 Λέγουσιν οὖν αὐτῶν τῶν Κυρίῳ καὶ ἡ-
 σιδούων, εἶπε τὸ πνεῦμα τὸ ἄγιον Ἀφορεί-
 σατε δὴ μοι ἵνα τε Βαρνάβαν καὶ τὸν Σαῦλον
 εἰς τὸ ἔργον ὁ προσκεκλήμεθα αὐτοῖς.
 3 Τότε νησούσαντες ἑθνησκαλοὶ, καὶ
 ἐπιθέντες τὰς χεῖρας αὐτοῖς, ἀπέλυσαν.
 4 Οὗτοι μὲν οὖν ἐκπεμφθέντες ὑπὸ τοῦ πνεύ-
 ματος ἁγίου, κατήλθον εἰς τὴν Σελεύκειαν,
 ἐκεῖθεν τε ἀπέπλευσαν εἰς τὴν Κύπρον.
 5 Καὶ ἡ δόξα ἐν Σαλαμῖνι, κατήγγελλον
 τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ ἐν ταῖς συναγωγαῖς τῶν Ἰου-
 δαίων· εἶχον δὲ καὶ Ἰωάννην ὑποπρέτιον.
 6 Διελθόντες δὲ τὴν νῆσον ἄρξαι Πάφου, δι-
 ῶν πινκα μάρτυρα ψευδοπροφήτην Ἰσδαίου, ὃ
 ὄνομα Βαρησοῦς,

7 Ὅς ἰω̄ σὺ τῷ ἀνθυπάτῳ Σεργίῳ Παύ-
 λῳ, ἀνδρὶ σωειτῷ, ἔτῳ παροκαλεσάμε-
 νῳ Βαρνάβαν κὶ Σαῦλον, ἐπιζήτητεν ἀκῶ-
 σαι τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ.

8 Ἀντίσταθ ἢ αὐτοῖς Ἐλύμας ὁ μάγος, (ἔτω
 γὰρ μετρημῶσι) τὸ ὄνομα αὐτῶ) ζητῶν
 ἀφαιρεῖσθαι τὸ ἀνθύπατον ἀπὸ τῆς πίστεως.

9 Σαῦλον ἢ (ὁ κὶ Παῦλον) πλοῦσις
 πλούμαθ ἁγίος, ἔατενίσσας εἰς αὐτὸν,

10 Εἶπεν ὁ πλοῦσις πάντος δόλου κὶ πείσης
 βλασφημίας, ἢ ἀφροσύνη, ἐχθρὸς πάσης δι-
 καιοσύνης, ἢ πώση ἀφαιρέσειν τὰς ὁδοὺς
 Κυρίου τὰς δόξαις;

11 Καὶ νῦν ἰδὲ, χεῖρ τοῦ Κυρίου ἐπὶ σε· ἔστη
 τυφλὸς, μὴ βλέπων τὸ ἥλιον ἄχρι κατῶ.
 Παραχρησῆμα ἢ ἐπέπεσεν ἐπ' αὐτὸν ἀχλὺς κὶ
 σκότος· ἔπειθ' ἠρώτων ἐζήτητὶ χεραγωγίης.

12 Τότε ἰδὼν ὁ ἀνθύπατος τὸ γεγονός, ἐπίστυ-
 σεν, ἐκ πλοῦσις ἐπὶ τῇ διδασκῆ τοῦ Κυρίου.

13 Ἀναχθέντες δὲ ἀπὸ τῆς Πάφου οἱ πρὸς τὸ
 Παῦλον, ἦλθον εἰς Πέργην τὴν Παμφυλίας.
 Ἰωάννης ἢ ἀποχωρήσας ἀπ' αὐτῶν, ἐπέσρε-
 ψεν εἰς Ἱεροσόλυμα.

14 Αὐτοὶ δὲ διελθόντες ἀπὸ τῆς Πέργου, παρε-
 ἤλθον εἰς Ἀντιόχεια τὴν Πισιδίας, κὶ εἰσ-
 ἐλθόντες εἰς τὴν συναγωγὴν τῆς ἡμέρας τοῦ
 σαββάτου, ἐκάθισαν.

15 Μετὰ δὲ τὴν ἀνάγνωσιν τοῦ νόμου κὶ τοῦ
 ψαλμοῦ-

προφητῶν, ἀπέστλαν οἱ ἀρχιεπισκοπῶντες
 πρὸς αὐτούς, λέγοντες· Ἄνδρες ἀδελφοί, εἰ ἐστὶ
 λόγος ἐν ὑμῖν ἀποκλήσεως πρὸς τὸ λαόν,
 λέγετε.

16 Ἀναστὰς ὁ Παῦλος, καὶ καθίσας τῇ
 χειρὶ, εἶπεν· Ἄνδρες Ἰσραηλίται, ἔοι φοβέ-
 μμοι τὸ Θεόν, ἀκούσατε·

17 Ὁ Θεὸς ἔλαβεν τέτατον Ἰσραὴλ ἐξελέξατο
 τὸν πατέρα ἡμῶν, ἔτι τὸν λαόν ὑψώσεν ἐν τῇ
 παροικίᾳ ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ μετὰ βραχίονα
 ὑψηλοῦ ἐξήγαγεν αὐτούς ἐξ αὐτῆς·

18 Καὶ ὡς περὶ ἀραβικῶν ἐτῶν ἐτροπο-
 φόρησεν αὐτούς ἐν τῇ ἐρήμῳ.

19 Καὶ καθελὼν ἔειπεν ἐπ' αὐτῶν ἐν γῇ Χαναάν,
 κατέκληροδότησεν αὐτοῖς τὴν γῆν αὐτῶν.

20 Καὶ μετὰ ταῦτα ὡς ἔπειτα περὶ ἀραβικῶν καὶ
 πενήτητων ἔδωκε κληῖαν ἕως Σαμυὴλ τοῦ
 προφήτου.

21 Καὶ ἐκείθεν ἠτήσαντο βασιλέα, καὶ ἔδωκεν
 αὐτοῖς ὁ Θεὸς τὸν Σαδδὸκὸν Κίς, ἄνδρα ἐκ
 φυλῆς Βενιαμίν, ἔτη περὶ ἀραβικῶν.

22 Καὶ μετὰ τὴν ἡγήσασα αὐτὸν ἠγάγεον αὐτοῖς τὸν
 Δαβὶδ εἰς βασιλέα· ὃς καὶ εἶπε μαρτυρήσας·
 Εὐρον Δαβὶδ τὸν Ἰεσοῦν, ἄνδρα καὶ τὴν καρ-
 δίαν μου, ὃς ποιήσῃ πάντα τὰ θελήματά μου.

23 Τέτατον ὁ Θεὸς διὰ τὸν ἀπέρμαλον κατ'
 ἐπαγγελίαν ἠγάγεον τὸν Ἰσραὴλ σωτῆρα Ἰησοῦν,

24 Προκηρύξασθαι Ἰωάννην πρὸς πρῶτον
 τῆς

τ' ἐσὸς αὐτῶ βαπτισμα μετανόιας παντὶ
τῷ λαῷ Ἰσραήλ.

25 Ὡς ᾧ ἐπλήρης ὁ Ἰωάννης τὸ δρόμον, ἔλεγε·
Τίνα με ὑπονοεῖτε εἶναι; ὅτι ἐγὼ εἰμὶ ἐγὼ, ἀλλ'
ἰδὲ, ἔρχεσθε μετ' ἐμὲ, ἵνα ὅτι ἐγὼ εἰμὶ ἄξιος τὸ
ὑπόδημα τῶ ποδῶν λῦσαι.

26 Ἄνδρες ἀδελφοὶ υἱοὶ γένεσ Αβραάμ, καὶ
οἱ ἐν ὑμῖν φοβέμενοι τὸ Θεόν, ὑμῖν ὁ λόγος
τῆς σωτηρίας ταύτης ἀπεστάλη.

27 Οἱ γὰρ καθικέντες ἐν Ἱερουσαλήμ, καὶ οἱ
ἀρχιερεῖς αὐτῶν, τῶτον ἀγνοήσαντες, καὶ Ἰωάν-
νην τὸν ἁγίου τῶν ἁγίων καὶ πάντων σαββατῶν
ἀναγνωσκουμένης, κριταίως, ἐπλήρωσαν.

28 Καὶ μηδεμίαν αἰτίαν θανάτου εὐρόντες,
ἠτήσαντο Πιλάτον ἀναρεθῆναι αὐτόν.

29 Ὡς δὲ ἐτέλεσαν ἅπαντα τὰ ὡσαύτως
γεγραμμένα, κατελόντες διπλῶς ἐξύλασθησαν
εἰς μνημεῖον.

30 Ὁ δὲ Θεὸς ἤγειρεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.

31 Ὡς ἄφθι ἐπὶ ἡμέρας πλείους τοῖς συναγα-
γασίν αὐτῷ διπλῶ τῆ Γαλιλαίας εἰς Ἱερουσα-
λήμ, οἱ πίνες εἰσι μαρτυρεῖς αὐτῷ πρὸς τὸ λαόν.

32 Καὶ ἡμεῖς ὑμᾶς διαγγελίζομεθα τὸ πρὸς
τὸς πατέρας ἐπαγγελίαν γενομένην, ὅτι ἰσχυ-
ρῶς ὁ Θεὸς ἐκπεπλήρωκε ἡμῖν τέκνοις αὐτῶν
ἡμῖν, ἀναστήσας Ἰησοῦν·

33 Ὡς καὶ ἐν τῷ ψαλμῷ τῷ δευτέρῳ γεγραπτόν·
Τίος με εἶσὺ, ἐγὼ σήμερον γεχόνηκά σε.

34 Ὅτι

- 34 Ὅπ ἡ ἀνέστησεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν, μετέπει μελλουσα ὑποσπρέφειν εἰς Δαφθοράν, ἕτως εἴρηκεν. Ὅπ δώσω ὑμῖν τὰ ὅσα Δαβὶδ τὸ πιστά.
- 35 Διὸ καὶ ἐν ἑτέρῳ λέγει· Οὐ δώσας τὸ ὅσιον (καὶ ἰδεῖν Δαφθοράν).
- 36 Δαβὶδ μὴ γὰρ ἰδίᾳ γλυκῆ ὑποσπρέφει (καὶ τῆ Ἐπιβουλή, ἐκοιμήθη, καὶ ἀπεσπρέφει πατέρα αὐτοῦ, ἔειδε Δαφθοράν).
- 37 Ὅν ἡ ὁ Θεὸς ἤγαγεν, ὅσκι εἶδε Δαφθοράν.
- 38 Γνωστὸν ἔστι ὑμῖν, ἄνδρες ἀδελφοί, ὅτι διὰ τέτρα ὑμῖν ἄφισις ἀμαρτιῶν καὶ (γάλα).
- 39 Καὶ διὰ πάντων ἂν ὅσκι ἠδωκῆθητε ἐν τῷ νόμῳ Μωσέως δικηματούχου, ἐν τέτρα πᾶς ὁ πιστῶν δικηματούχου.
- 40 Βλέπετε ἔν μὴ ἐπέλθῃ ἐφ' ὑμᾶς τὸ ἐρημόν ἐν τοῖς ἀσπρήταις.
- 41 Ἴδετε οἱ καὶ ἀφρονῆται, καὶ γαυμάσατε καὶ ἀφανίσθητε ὅπ ἔργον ἐγὼ ἐργάζομαι ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν, ἔργον ὃ ἔ μὴ πιστῶσῃτε ἐαυτοῖς ἐκδικηθήται ὑμῖν.
- 42 Ἐξιόντων ἡ ἐκ τῆ σωμαγωγῆς τῆ Ἰσρααίαν, παρεκάλειν τὰ ἔσθη εἰς τὸ μεσπέζου σαῖσθαλα λαλητούχου αὐτοῖς τὰ ῥήματα ταῦτα.
- 43 Λυθείσης ἡ τῆ σωμαγωγῆς, ἠκολούθησαν πολλοὶ τῆ Ἰσρααίαν καὶ τῆ σεβομύων ἀσπρηλῶν τῷ Παύλῳ ἐ τῷ Βαρνάβῳ οἵπνις ἀσπρηλάλῃντες αὐτοῖς, ἐπέσθη αὐτοῖς ἐπιρῆμῃ τῆ χάριτι τῆ Θεοῦ.

- 44 Ταῖς ἑρχομένοις σαδοάτω σχεδὸν πᾶσα ἡ πόλις σιωπήθη ἀκούσασα τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ.
- 45 Ἰδόντες ἃ οἱ Ἰουδαῖοι τὰς ὄχλους, ἐπλήθησαν ζήλου, καὶ ἀντέλεγον τοῖς ὑπὸ τοῦ Παύλου λεγομένοις, ἀντιλέγοντες καὶ βλασφημῶντες.
- 46 Παρήσιασάμενοι ἃ ὁ Παῦλος εἶπε ἔτι Βαρνάβας, εἶπον· Ὑμῖν ἡ ἀναγκασθὴν ἰσχυρὸν λαληθῆναι τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ· ἐπεὶ δὲ ἃ ἀπαθεῖσθε αὐτὸν, καὶ σὺ ἀξίως κρίνετε ἑαυτὸς τὸ αἰώνιον ζωῆς, ἰδὲ, σπεύομεθα εἰς τὰ ἔθνη·
- 47 Οὕτω γὰρ ἐντέταλται ἡμῖν ὁ Κύριος· Τέθεικά σε εἰς φῶς ἐθνῶν, ἵνα εἰπάς σε εἰς νωπηλίαν ἕως ἑσχάτου τῆς γῆς.
- 48 Ἀκούοντα ἃ τὰ ἔθνη ἔχουσιν, καὶ ἐδόξαζον τὸ λόγον τοῦ Κυρίου· καὶ ἐπίστυσαν ὅσοι ἦσαν τεύχευοι εἰς ζωὴν αἰώνιον.
- 49 Διεφέρετο δὲ ὁ λόγος τοῦ Κυρίου δι' ὅλης τῆς χώρας.
- 50 Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι παρώτρυναν τοὺς σεβομένους γυναῖκας καὶ τοὺς δούλους, καὶ τὰς πρῶτας τῆς πόλεως, ἵνα ἐπήλασαν διωγμὸν ἐπὶ τὸν Παῦλον καὶ τὸν Βαρνάβαν, καὶ ἐξέβαλον αὐτὰς ἀπὸ τῆς πόλεως αὐτῶν.
- 51 Οἱ δὲ ἐκλιναζάμενοι τὸ κνηριότιον τῶν ποδῶν αὐτῶν ἐπ' αὐτὰς, ἤλθον εἰς Ἰκόνιον.
- 52 Οἱ δὲ μετῆται ἐπληρέθησαν χαρῆς καὶ πνύμενοι ἀγίας.

Κιφ.

Κεφ. ιδ'. 14.

- 1 **Ε**γένετο δὲ ἐν Ἰκονίᾳ, καὶ τὸ αὐτὸ εἰσελθεῖν αὐτοὺς εἰς τὴν συναγωγὴν τῶν Ἰουδαίων, ἐλαλήσαντο ἕως ὥστε πισθεύσαι Ἰουδαίων τε καὶ Ἑλλήνων πολὺ πλῆθος.
- 2 Οἱ δὲ ἀπεθῆντες Ἰουδαῖοι ἐπήχεσαν ἐκείκωτον εἰς ψυχὰς τῶν ἔθνων καὶ τῶν ἀδελφῶν.
- 3 Ἰκανὸν μὲν οὖν χρόνον διέτριψαν παρήσιαζόμενοι ἐπὶ τῷ Κυρίῳ τῷ μαρτυρῶντι τὰ λόγια τῆς χάριτος αὐτοῦ, ἐδιδόντες σημεῖα καὶ τέρατα γίνεται διὰ τῆς χάριτος αὐτῶν.
- 4 Ἐγένετο δὲ τὸ πλῆθος τῆς πόλεως καὶ οἱ μὲν ἦσαν σὺν τοῖς Ἰουδαίοις, οἱ δὲ σὺν τοῖς ἀποστόλοις.
- 5 Ὡς δὲ ἐγένετο ὄρεσις τῶν ἔθνων τε καὶ Ἰουδαίων σὺν τοῖς ἀρχαῖσι αὐτῶν, ὑβρίσθη καὶ λιθοβολήθη αὐτοὺς,
- 6 Σωιδόντες κατέφυγον εἰς τὴν πόλιν τῆς Λυκαονίας, Λύστραν ἐδέρπον, ἐτὶ θεῖον ἄλογον.
- 7 Καὶ κεῖ ἦσαν οἱ κηρυττοὶ.
- 8 Καί τις ἀνὴρ ἐν Λύστραις ἀδωμάθη τοῖς ποσὶν ἐκείνη, χωλὸς ἐκ κοιλίας μητρὸς αὐτοῦ ὑπαρχῶν, ὃς ἐδέχθη θεοῦ ἐπιπάτη.
- 9 Οὗτος ἤκουσε τῶν Παύλου λαλῶν, ὃς ἀπενίστασεν αὐτὸν, καὶ ἰδὼν ὅτι πίστιν ἔχει τῶν σωθῶντων,
- 10 Εἶπε μεγάλη τῆ φωνῆ· Ἀνάστηθι ἐπὶ τοὺς πόδας σου ὁ θεός. Καὶ ἤκουσε καὶ ἠεὶ πατή.

11, Οἱ

- 11 Οἱ ὅχλοι ἰδαίτες ὁ ἐπαίησεν ὁ Παῦλος, ἐπῆραν τὴν φωνὴν αὐτῶν, Λυκαονιστὶ λέγοντες· Οἱ τοὶ ὁμοιωθέντες ἀνθρώποις κατέβησαν πρὸς ἡμᾶς.
- 12 Ἐκάλειν τε τὸν μὲν Βαρνάβαν, Δία· τὸ δὲ Παῦλον, Ἐρμῆν· ἐπεὶ δὴ αὐτὸς ἰὼ ὁ ἡγούμενος τῶν λόγων.
- 13 Οἱ δὲ ἱερούς τῶν Διὸς τῶν ὄντων αὐτῶν πάλαι αὐτῶν ταύρας καὶ σέμματα ἐπὶ τῆς πύλωνος ἐπέκεινται, σὺν τοῖς ὄχλοις ἤθελε θύειν.
- 14 Ἀκούσαντες δὲ οἱ ἀπίστοι Βαρνάβαν καὶ Παῦλον, ἀπαρρήξαστες τὰ ἱμάτια αὐτῶν εἰσεπήδησαν εἰς τὸ ὄχλον, κρᾶζόντες,
- 15 Καὶ λέγοντες· Ἄνδρες, τί ταῦτα ποιεῖτε; καὶ ἡμεῖς ὁμοιωθεῖς ἐσμὲν ὑμῖν ἄνθρωποι, ἀγγελίζομενοι ὑμᾶς ἀπὸ τῶν ματαίων ἐπιστρέφειν ἐπὶ τὸν Θεὸν τὸ ζῶντα, ὃς ἐποίησε τὸ ἔρανον καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς·
- 16 ὃς ἐν ταῖς παρωχημέναις χυδαῖς εἶασε πάντα τὰ ἔθνη παρῶντα ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν.
- 17 Καὶ τοι γε σὺν ἀμάρτυρον ἑαυτὸν ἀφῆκεν, ἀγαθοποιῶν, ἐργάσθην ἡμῖν ὑετός διδῶς καὶ χαρὰς καρποφόρος, ἐμπιπλῶν τσοφῆς καὶ ἀφροσύνης τοῖς καρδίαις ἡμῶν.
- 18 Καὶ ταῦτα λέγοντες, μέλις κατέπαυσαν τὸς ὄχλους τῶν μὴ θύειν αὐτοῖς.
- 19 Ἐπῆλθον δὲ ἀπὸ Ἀντιοχείας καὶ Ἰκονίου, Ἰεσσαῖοι,

- Ἰουδαῖοι, καὶ πείσωντες τὰς ὄχλους, καὶ λιθά-
σαντες τὸν Παῦλον, ἵσχυροὶ ἐξω τὴ πόλιος, νο-
μίσαντες αὐτὸν τεθιάναμ.
- 20 Κυκλωσάιντων ἢ αὐτὸν τῶ μαθητῶν, ἀνα-
στὰς εἰσῆλθεν εἰς τὴ πόλιν· καὶ τῇ ἐπιπέδῳ
ἐξῆλθε σὺ τῷ Βαριάδα εἰς Δέρβιν.
- 21 Εὐαγγελιστὰ ἄνθρωποι τε τὴ πόλιν ἐκείνου, καὶ
μαθητῶν πάντες ἰκανοὶς, ἐπέσπεσαν εἰς τὴν
λύτραν καὶ ἰκόνιον καὶ Ἀντιόχῳ.
- 22 Ἐπιστηρίζοντες εἰς ψυχὰς τῶ μαθητῶν,
ὡς καλεῖντες ἐμμενόν τῇ πίστι, ἔοπι διὰ
πολλῶν θλίψεων δεῖ ἡμᾶς εἰσελθεῖν εἰς τὴ
βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.
- 23 Χρότονήσαντες δὲ αὐτοῖς πρεσβυτέρους
καὶ ἐκκλησίαν, ἀρεσούξῃ ἄνθρωποι μνηστῶν
παρέθεντο αὐτὰς τῷ Κυρίῳ εἰς ὃν πεπι-
στύκσαν.
- 24 Καὶ διελθόντες τὴν Πισιδίαν, ἦλθον εἰς
Παμφυλίαν.
- 25 Καὶ λαλήσαντες ἐν Πέργῃ τὴ λόγον, καλ-
ίβησαν εἰς Ἀπιάλειαν·
- 26 Καὶ εἶπεν ἀπέπλωπῳ εἰς Ἀντιόχῳ ὅτι
ἦσαν ὡς ἀδελφοὶ τῇ χάριτι τοῦ Θεοῦ εἰς
τὸ ἔργον ὃ ἐπέτελλον.
- 27 Παραχρησάμενοι ἢ καὶ σιωπαζαγῆτες τὴ ἐκ-
κλησίαν, ἀνήγαγον ὅσα ἐποίησεν ὁ Θεὸς μετὰ
αὐτῶν, καὶ ὅτι ἠνοιξε τοῖς ἔθνεσι θύραν πίστεως.
- 28 Δι᾽ τρεῖσιν ἢ ἐκεῖ χρόνον ἐκ ὀλίγον σὺ τοῖς
μαθηταῖς. Κ ε φ.

Κιφ. ιε'. 15.

1 **Κ**αί τινες καταλήγοντες ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας,
ἐδίδασκον τὰς ἀδελφάς· ὅτι εἰὰ μὴ
πειθέμεθα τῷ ἔθῳ Μωϋσέως, ἐδιώαθε
σωθῆναι.

2 Γενομένης ἔνστασεως ἔς συζητήσεως ὅτι
ὀλίγης τῷ Παύλῳ καὶ τῷ Βαρνάβῳ πρὸς αὐ-
τὰς, ἔταξαν ἀναβαίνειν Παῦλον καὶ Βαρνά-
βαν καὶ τινὰς ἄλλους ἐξ αὐτῶν πρὸς τὰς
ἀποστόλους καὶ πρεσβυτέρους εἰς Ἱερουσαλήμ,
ὡς εἰς ζήτησιν τούτων.

3 Οἱ μὲν ἔνθετοι ἐπεμφθέντες ὑπὸ τῆς ἐκκλη-
σίας, ἀνήρχοντο τὸ Φοινικίῳ καὶ Συμαρίαν,
ἐκδιηγέμενοι τὴν ἐπιστροφὴν τῶν ἔθνων· καὶ
ἐποίουν χαρὰν μεγάλῃ πᾶσι τοῖς ἀδελφοῖς.

4 Παραχρῆστοί μὲν οὖν εἰς Ἱερουσαλήμ, ἀπε-
δέχθησαν ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας καὶ τῶν ἀποστόλων
καὶ τῶν πρεσβυτέρων, ἀνήγειλαν τὸ ὅσα ὁ
Θεὸς ἐποίησε μετ' αὐτῶν.

5 Ἐξάνεστησαν δὲ τινες τῶν ἀπὸ τῆς αἰρέσεως τῆς
Φαρισαίων πεπισθυότες, λέγοντες· Ὅτι δεῖ
πειθέμεν αὐτὰς, ὡς ἔθῳ τῶν πατέρων τε τηρεῖν τὴν
νόμον Μωϋσέως.

6 Σιωπήθησαν ἡ οἱ ἀπόστολοι ἔτι οἱ πρεσβυ-
τεροὶ ἰδεῖν ὡς εἰς λόγον τούτων.

7 Πολλῆς δὲ συζητήσεως γενομένης, ἀνα-
στὰς Πέτρος εἶπε πρὸς αὐτὰς· Ἄνδρες ἀδελ-
φοί, ὑμεῖς ἐπίστασθε ὅτι ἀφ' ἡμερῶν ἀρχαίων ὁ
Θεὸς

Θεὸς ἐν ἡμῖν ἐξελέξατο Δαφ. Ἐπειδὴ με-
 ἀκῦσαι τὰ ἔθνη τὸ λόγον Ἐ διαγγέλιον, καὶ
 πιστεῦσαι.

8 Καὶ ὁ καρδιογνώστης Θεὸς ἐμαρτύρησεν
 αὐτοῖς, δὲς αὐτοῖς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον, κα-
 θὼς καὶ ἡμῖν.

9 Καὶ ἔθεν διέκρινε μετὰ ἡμῶν τοὺς ἐκ αὐτῶν,
 τῇ πίστει καταλείψας τοὺς καρδίας αὐτῶν.

10 Νῦν ἔν τι προέζετε τὸ Θεὸν, ἐπιθένομα ζυγὸν
 ἐπὶ τὸ τεράχλιον τῶ μαθητῶν, ὅτι ἔτε οἱ πι-
 τέρες ἡμῶν ἔτε ἡμεῖς ἰσχύσαμεν βασιλεύει;

11 Ἀλλὰ Δαφ. τὸ χάριτος Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ
 πιστεύομεν σωθῆναι, καθ' ὃν τρόπον καὶ κείνοι.

12 Εἰσήκουσε δὲ πᾶν τὸ πλῆθος, καὶ ἤκουον
 Βαρνάβαν καὶ Παύλον ἐξηγουμένων ὅσα ἐποίη-
 σεν ὁ Θεὸς σημεῖα καὶ τέρατα ἐν τοῖς ἔθνεσιν
 δι' αὐτῶν.

13 Μετὰ ἧ τὸ σιγήσαι αὐτὰς, ἀπεκρίθη Ἰάκω-
 βος, λέγων· Ἄνδρες ἀδελφοί, ἀκούσατέ με·

14 Συμεὼν ἐξηγήσατο καθὼς ᾤραται ὁ Θεὸς
 ἐπισκέψασθαι λαθεῖν ἐξ ἔθνων λαὸν ἐπὶ τῷ
 ὀνόματι αὐτοῦ.

15 Καὶ τάτοι συμφωνῶσιν οἱ λόγοι τῶ ᾤρα-
 τῶν καθὼς γέγραπται.

16 Μετὰ ταῦτα ἀναστρέψασθε ἀνοικοδομησῶ
 τὸ σκηνώμα Δαβὶδ τὸ πεπλωμένον, καὶ τὰ κλι-
 σεκαμμένα αὐτῆς ἀνοικοδομησῶ, καὶ ἀνοε-
 γίσσω αὐτῶν.

- 17 Ὅπως αὐτὸ ἐκζητήσωσιν οἱ κατὰλοιποὶ τῶν ἀνθρώπων τὸ Κύριον, καὶ πάντα τὰ ἔθνη ἐφ' ἧς ἐπιπέληται τὸ ὄνομα μετ' αὐτῆς· λέγει Κύριος ὁ ποιῶν ταῦτα πάντα.
- 18 Γνωστὸν ἀπ' αἰῶνος ἐστὶ τῷ Θεῷ πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ.
- 19 Διὸ ἐγὼ κερῖνω μὴ παρενοχλεῖν τοῖς ἀπὸ τῶν ἔθνων ἐπιτρέφεσθαι ἐπὶ τῷ Θεῷ.
- 20 Ἀλλὰ ἐπιστείλαμ αὐτοῖς τὸ ἀπίχεσθαι ἀπὸ τῶν ἀλισγημάτων τῶν εἰδώλων καὶ τῆς πορνείας καὶ τῆς πικρῆς καὶ τῆς αἰματικῆς.
- 21 Μωσῆς γὰρ ἐκ γυναιῶν δευαίων καὶ πόλιν τῆς κηρύσσοντας αὐτὸν ἔχει, ἐν ταῖς σωμαγωγαῖς καὶ πᾶν σάδοσθαι ἀναγνωσκόμενον.
- 22 Τότε ἔδωκε τοῖς ἀποστόλοις καὶ τοῖς πρεσβυτέροις σὺν ὅλῃ τῇ ἐκκλησίᾳ, ἐκλεξαμένους ἀνδρας ἐξ αὐτῶν πέμψαι εἰς Ἀντιόχειαν σὺν τῷ Παύλῳ καὶ Βαρνάβῳ· Ἰεδοῦν τὸ ἐπιγελάμενον Βαρσαβᾶν, καὶ Σίλαν, ἀνδρας ἠγαμέμνους ἐν τοῖς ἀδελφοῖς.
- 23 Γράψαντες ἀπὸ χάρους αὐτῶν ταῦτα· Οἱ ἀπόστολοι καὶ οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ ἀδελφοί, τοῖς καὶ τῷ Ἀντιόχειαν καὶ Συρίαν καὶ Κιλικίαν ἀδελφοῖς τοῖς ἐξ ἔθνων, χαίρειν.
- 24 Ἐπεὶ δὴ ἠκούσαμεν ὅτι τινὲς ἐξ ἡμῶν ἐξεληθόντες ἐπέταξαν ὑμῶς λόγους, ἀνασκοιῶζοντες ἐπὶ ψυχαῖς ὑμῶν, λέγοντες ὡς ἐπιτέρευατε, καὶ τηρεῖν τὸ νόμον, οἷς ἐδιδασκόμεθα.

25 Ἐδδξεν

- 25 Ἐδόξε ἡμῖν ἡγομένους ὁμοθρομαδὸν, ἐκ-
λεξαμένους ἀνδρας πέμψαι πρὸς ὑμᾶς, σιω-
ποῦντας ἀγαπητοῖς ἡμῶν Βαρνάβαν καὶ Παύλου,
- 26 Αἰθρώποις ὡς ἀδεδωκῶσι ἐν ψυχαῖς
αὐτῶν ὑπερ ἢ ὀνόματι καὶ Κυρίου ἡμῶν
Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 27 Ἀπετάληκα μὲν ἐν Ἰούδα καὶ Σίλων, καὶ αὐ-
τοὺς ἀφ' ἑλπίδος ἀπαγγέλλοντας τὰ αὐτά.
- 28 Ἐδόξε γὰρ τὰ ἁγία πνεῦμα καὶ ἡμῖν, μη-
δὲν πλεον ἐπιθέσθαι ὑμῖν βάρους πηλοῦ τῶν
ἐπιτάξεως τούτων·
- 29 Ἀπέχεσθαι εἰδωλοθύτων καὶ αἵματι καὶ
πνικτῶ καὶ πορνείας· ἐξ ὧν ἀφ' ἑσθ' ἑσθ' ἑσθ' ἑσθ'
αὐτοὺς, ὡς πρὸς ἄξετε. Ἐῤῥωσθε.
- 30 Οἱ μὲν ἐν ἀπολυθέντες ἦλθοι εἰς Ἀντιό-
χεια, καὶ συναγαγόντες τὸ πλῆθος, ἐπέδω-
καν τῷ ἐπιστολίῳ.
- 31 Ἀναγινόντες ἃ, ἐχάρησαν ἐπὶ τῇ ὡς ἀκλήσει.
- 32 Ἰούδας ἢ καὶ Σίλας, καὶ αὐτοὶ ἀεθροῦνται ὄντες,
ἀφ' ἑλπίδος πολλῶν παρεκάλεισαν τοὺς ἀδελ-
φοὺς, καὶ ἐπέστησαν.
- 33 Ποιήσαντες ἃ χρόνον, ἀπελύθησαν μετ' ἐπι-
στάτης ἀπὸ τῶν ἀδελφῶν πρὸς τοὺς ἀποστόλους.
- 34 Ἐδόξε ἢ τὰ Σίλας ἐπιμείναι αὐτοῦ.
- 35 Παῦλος δὲ καὶ Βαρνάβας διέτριβον ἐν
Ἀντιοχείᾳ, διδάσκοντες καὶ διαγγελλίζοντες
μετ' ἐπιπέπων πολλῶν τὸ λόγον τοῦ Κυρίου.
- 36 Μετὰ δὲ ἡμέρας εἶπε Παῦλος πρὸς
Βαρνά-

Βαρνάβαν· Ἐπιστρέψαυτες δὲ ἐπισκεψάμεθα
τὰς ἀδελφὰς ἡμῶν καὶ πᾶσαν πόλιν, ἐν αἷς
ἠγαθήλαρον τὸ λόγον τοῦ Κυρίου, πῶς ἔχουσιν.

37 Βαρνάβας ἡ ἰβηλοῦσα ἔσμεν ὡραλα-
βεῖν τὸ Ἰωάννην τὸ καλέμενον Μάρκον·

38 Παῦλος ἡ ἡζίας, τὸ ἀποστάτα ἀπὸ αὐτῶν
ἀπὸ Παμφυλίας, καὶ μὴ συναχθῶντα αὐτοῖς
εἰς τὸ ἔργον, μὴ συμωραλαβεῖν τῆτον.

39 Ἐγχεῖτε ἐν παροξυσμῶς, ὥστε ἀποχω-
θῶντα αὐτὰς ἀπὸ ἀλλήλων· τὸν τε Βαρνά-
βαν ὡραλαβόντα τὸ Μάρκον ἐκπλεῦσται εἰς
Κύπρον·

40 Παῦλος ἡ ἐπιλεξάμενος Σίλαν ἐξῆλθε,
ὡραλοθεῖς τῆ χάριτι τοῦ Θεοῦ ὑπὸ τῶν
ἀδελφῶν.

41 Διήρχετο ἡ Συρίαν καὶ Κιλικίαν, ἐπι-
σηρῶντα εἰς ἐκκλησίας.

Κεφ. 15. 16.

1 **Κ**Ατῶντησε ἡ εἰς Δέρβλου καὶ Λύτρον· καὶ
ἰδὼς, μαθητὴς ἡς ἡ ἐκεῖ ὀνόματι Τιμό-
θεος, ἡὸς γυναικὸς πιντοῦ Ἰσθαίας πιαῖς,
πατρός ἡ Ἐλλῶτος·

2 Ὅς ἐμαρτυρεῖτο ὑπὸ τῶ ἐν Λύτροις ἐ Ἰσθαία
ἀδελφῶν.

3 Τῆτον ἡφέλησεν ὁ Παῦλος σὺν αὐτῶ ἐξε-
θῆν καὶ λαβὼν ὡραῖετάρου αὐτὸν, ἀφῶ τὰς Ἰσ-
θαίας τὰς ὄντας ἐν τοῖς τόποις ἐκείνοις· ἡδῶ-
σαν ἡ ἀπαντες τὸ πατέρα αὐτῶ ὅτι Ἐλλῶ
ὑπῆρχε.

- 4 Ως ἡ διεπορεύοντο εἰς πόλεις, παρεδίδοσαν αὐτοῖς φυλάσσειν τὰ δόγματα τὰ κεκελημένα ὑπὸ τοῦ ἀποστόλου ἐν τῷ πρεσβυτέρων ἐν Ἱερουσαλήμ.
- 5 Αἱ μὲν εἰ ἐκκλησίαι ἐστρεψάντο τῇ πίστι καὶ ἐπερίσσειον τῷ θάρσει καθ' ἡμέραν.
- 6 Διελθόντες ἡ τὴν Φρυγίαν καὶ τὴν Γαλακίαν χώρην, κωλυθέντες ὑπὸ τοῦ ἁγίου πνεύματος λαλήσωμεν τὸ λόγον ἐν τῇ Ἀσίᾳ,
- 7 Ἐλθόντες καὶ τὴν Μυσίαν, ἐπέεραζον καὶ τὴν Βιθυνίαν πορεύεσθαι καὶ ὅτι εἶασιν αὐτοὺς τὸ πνεῦμα.
- 8 Παρελθόντες ἡ τὴν Μυσίαν, κατέβησαν εἰς Τρωάδα.
- 9 Καὶ ὄραμα εἶδον ἡ νυκτὸς ὄψθη τῷ Παύλῳ Ἄνθρωπος ἰσὺς Μακεδῶν ἐστῶς, ὠτρυνόμενος αὐτὸν, καὶ λέγων· Διαβάς εἰς Μακεδονίαν βοήθησον ἡμῖν.
- 10 Ως ἡ τὸ ὄραμα εἶδεν, ὄψεως ἐζητήσωμεν ἡμῶν ἐξελθεῖν εἰς τὴν Μακεδονίαν, συμβουλεύοντες ὅτι προσκέκληται ἡμῶς ὁ Κύριος διαφηλίσασθαι αὐτούς.
- 11 Ἀναχθέντες οὖν ἀπὸ τῆς Τρωάδος, ὄψηδρομήσωμεν εἰς Σαμοθράκην, τῇ τε ἐπίστασι εἰς Νεάπολιν·
- 12 Ἐκεῖθεν τε εἰς Φιλίππους, ἡ τις ἐστὶ πόλις ἐστὶν ἐν τῇ μετρίᾳ τῆς Μακεδονίας πόλις, κολώνια. ἡ μὲν ἡμεῖς ἐν ταύτῃ τῇ πόλει διατριβήσομεν ἡμέρας ἑτάς.

- 13 Τῇ τε ἡμέρᾳ τῆς σαββάτων ἐξήλθομεν ἐξ αὐτῆς πόλεως ἠδὲ πόλεον, ἔτι ἐνομιζοῦτο ὡρθοκυχή εἶναι· Ἐκατίπαιτες ἐλαλῶμεν ταῖς σινελθούσαις γυναῖξιν.
- 14 Καί τις γυνὴ ὀνόματι Λυδία, παρφυρόπωλις πόλεως Θυαλείρων, σεσομνή τῷ Θεῷ, ἤκεν ἧς ὁ Κύριος διώοιξε τὴν καρδίαν, ὡρσεύην ταῖς λαλῶμενοις ὑπὸ τοῦ Παύλου.
- 15 Ὡς δὲ ἐβαπτίσθη, καὶ ὁ οἶκος αὐτῆς, παρεκάλεσε λέγεσθαι. Εἰ κεκλήκαί με πισυῶν τῷ Κυρίῳ εἶναι, εἰσελθόντες εἰς τὸν οἶκόν μου, μένατε. Καὶ παρεβιάσατο ἡμεῖς.
- 16 Ἐγνώετο δὲ προσομνήτων ἡμῶν εἰς ὡρθοκυχίαν, πεμδίσκων ἡμῶν ἐχουσαν πνεῦμα Πύθωνος, ἀπαντήσασθαι ἡμῖν, ἡτις ἐργασίαν πολλὴν παρέιχε τοῖς κυρίοις αὐτῆς, μαυνομνήτων.
- 17 Αὕτη καὶ ἀποκαθάρσασα τῷ Παύλῳ καὶ ἡμῖν, ἐκράζε λέγεσθαι· Οὗτοι οἱ ἄνθρωποι, δόλοι τοῦ Θεοῦ ὑψίστου εἰσιν, οἵτινες καὶ ἀγγάλλουσι ὑμῖν ὁδὸν σωτηρίας.
- 18 Τῷ δὲ ἐποίησεν ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας. Διὰ πονηθεῖς δὲ ὁ Παῦλος, ἐπιτρέψασθαι πνεύματι εἶπε Παραγέλλω σοι ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐξελθεῖν ἀπὸ αὐτῆς. Καὶ ἐξῆλθεν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ.
- 19 Ἰδόντες δὲ οἱ κύριοι αὐτῆς ὅτι ἐξῆλθεν ἡ ἐλπὶς τῆς ἐργασίας αὐτῶν, ἐπιλαβόμενοι τὸν Παῦλον καὶ τὸν Σίλαν, εἰλκυσαν εἰς τὴν ἀγορὴν ἐπὶ τὰς ἀρχοντας.

V

20 Καὶ

- 20 Καὶ προσελαλήθει αὐτὸς τοῖς ἐρασιφίλοις,
εἶπον· Οὗτοι οἱ ἄνθρωποι ἐκταράσσουσιν
ἡμῶν τὴ πόλιν, ἰσθαῖοι ὑπάρχοντες·
- 21 Καὶ κηλαζέλλουσιν ἔφη αὐτὸς ἐξέστη ἡμεῖς
ὡδὲ δεχέσθαι, ἐδὲ ποιεῖν, Γ' ὡμῶν ἐσσι.
- 22 Καὶ συνεπέση ὁ ὄχλος καὶ αὐτῶν καὶ οἱ
πρατηροὶ περιβήξαντες αὐτῶν τὰ ἱμάτια,
ἐκέλευον ῥαεθίζην.
- 23 Πολλὰς τε ἐπιτέλλει αὐτοῖς πωληταῖς, ἕσθα-
λοι εἰς φυλακὴν, ὡδὲ ἀφείλαιντες τὴν δε-
σμοφύλακιν ἀσφαλῶς τηρεῖν αὐτὸς.
- 24 Ὅς ὡδὲ ἀφείλαιν τικαύτιν εἰληφῶς,
ἕσθαλει αὐτὸς εἰς τὴν ἑσωτέρην φυλακὴν, ἐ-
τὸς πόδας αὐτῶν ἠτφαλίσατο εἰς τὸ ξύλον.
- 25 Κατὰ δὲ τὸ μεσονύκτιον Παῦλος καὶ Σίλας
προσδύχοντο ὑμνεῖν τὸ Θεόν· ἐπηκροῶντε
εἰς αὐτῶν οἱ δέσμοιοι.
- 26 Ἄφην δὲ σέσμος ἐχέειτο μέγας, ὥστε στα-
λθθῆναι τὰ θεμέλια τῆ δεσμοθηλείας· ἀνεβ-
χθησάντε ὡδὲ χεῖμα ἀγύρας πάσαι, κα-
πάντων τὰ δεσμοὶ ἀνέστη.
- 27 Ἐξυπέθη δὲ ἡρόμνος ὁ δεσμοφύλαξ
καὶ ἰδὼν ἀνεοργήσας εἰς τῆρας τὴ φυλακῆς
σπασάμενος μάχουσαν, ἕμελλεν ἑαυτὸ
ἀναρῆναι, νομίζων ἐκπεφευγῆσθαι τὸς δεσμοίς.
- 28 Ἐφώνησε δὲ φωνῆ μεγάλη ὁ Παῦλος, λέ-
γων· Μηδὲν πράξῃς σεαυτὸν κακόν· ἅπαντες
ζαίρ ἐσμεν ἐνθάδε.

- 29 Αἰτήσας ἡ Φῶται εἰσεπήδησε, καὶ ἔντρομος
 γυμνός, ὡσεύπεσε τῷ Παύλῳ καὶ τῷ Σίλα.
- 30 Καὶ ὡραζαζῶν αὐτῆς ἕξω, ἔφη· Κύριοι,
 τί με δεῖ ποιεῖν ἵνα σωθῶ;
- 31 Οἱ ἡ εἶπον· Πίσυουσεν ἐπὶ τῷ Κυρίῳ Ἰησοῦν
 Χριστῶν, καὶ σωθήσῃ σύ καὶ ὁ οἶκός σου.
- 32 Καὶ ἐλάλησαν αὐτῷ τὸ λόγον τῷ Κυρίῳ,
 καὶ πᾶσι τοῖς ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ.
- 33 Καὶ ὡρῶ λαβῶν αὐτῆς ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ
 τῆς νυκτός, ἔλασεν ἀπὸ τῶν τοληῶν· καὶ ἔβαπτε
 αὐτῆς καὶ οἱ αὐτῆς πάντες ὡρῶ χροῖμα.
- 34 Ἀναζαζῶν τε αὐτῆς εἰς τὸ οἶκον αὐτῆς, πα-
 ρέθηκε τῶν ἀπέζων, καὶ ἡγαλλιάσατο στανοικῆ
 πεπισδύκῶς τῷ Θεῷ.
- 35 Ἡμέρας ἡ γυμνότης ἀπέσῆλῶν οἱ στρατη-
 γοῖ τῆς ῥαδοδῶχας, λέγοντες· Ἀπόλυσαν τῆς
 ἀνθρώπους ἐκείνας.
- 36 Ἀπήγειλε δὲ ὁ δεσμοφύλαξ τῆς λόγους
 τῆς ὡρῆς τῷ Παύλῳ· Ὅτι ἀπεσάλῆσαν
 οἱ στρατηγοῖ, ἵνα ἀπολυθῆτε. νῦν ἔν ἐξελθόν-
 τες, περδύεθε ἐν εἰρήνῃ.
- 37 Ὁ δὲ Παῦλος ἔφη ὡρῆς αὐτῆς· Δεί-
 ραντες ἡμῶς δημοσία, ἀκατακρίτους, ἀν-
 θρώπους ἑαυμάτους ὑπάρχοντες, ἔβαλον εἰς
 φυλακῶν, καὶ νῦν λάθρα ἡμῶς ἐκβάλλουσιν;
 Οὐ γάρ· ἀλλὰ ἐλθόντες αὐτοὶ ἡμῶς ἕξαζα-
 ζέτωσαν.
- 38 Ἀνήγειλαν ἡ τοῖς στρατηγοῖς οἱ ῥαδοδῶχοι
 V 2 τῶν

τὰ ῥήματα ταῦτα· καὶ ἐφοβήθησαν ἀκέσων-
39 πτες ὅτι Ῥωμαῖοί εἰσι.

Καὶ ἐλθόντες παρεκάλεισαν αὐτὰς, καὶ
ἐξαγαγόντες ἠρώτων ἐξελθεῖν τὴ πόλεως.

40 Ἐξελθόντες δὲ ἐκ τῆς φυλακῆς εἰσήλθον εἰς
τὴ Λυδίαν· καὶ ἰδόντες τὰς ἀδελφὰς, παρ-
εκάλεσαν αὐτὰς καὶ ἐξῆλθον.

Κεφ. ιζ'. 17.

1 **Δ** Ἰουδαῖοι καὶ οἱ ἄλλοι Ἰουδαῖοι καὶ Ἀπολ-
λωνία, ἦλθον εἰς Θεσσαλονίκην, ὅπου
ἦν ἡ συναγωγή τῶν Ἰουδαίων.

2 Καὶ ὡς ἐπέειπεν τῷ Παύλῳ εἰσήλθε πρὸς
αὐτὰς, καὶ ἐπὶ σάββατον τρεῖς διαλέγετο αὐ-
τοῖς ἀπὸ τῶν γραφῶν,

3 Διανοίγων καὶ παρακαλεῖν ὅτι τὸ Χρι-
στὸν ἔδει παθεῖν καὶ ἀναστῆναι ἐκ νεκρῶν, ὅτι
εἰς τὸν οὗτος ἐστὶν ὁ Χριστὸς Ἰησοῦς, ὃν ἐγὼ κηρύττω
ὑμῖν.

4 Καὶ πρὸς ἕξ αὐτῶν ἐπέειπεν, ὅτι πρὸς
ἐκκλησίαν τῶν Παύλου καὶ τῶν Σίλα, τῶν τε
σεβομῶν Ἑλλήνων πολὺ πλῆθος, γυναι-
κῶν τε τῶν ἁγίων ὅσον ὀλίγα.

5 Σηλάσιοι δὲ οἱ ἀπὸ τῶν Ἰουδαίων, καὶ
παρακαλεῖν οἱ ἀπὸ τῶν Ἰουδαίων ἰκανὸν ἄνδρα
πονηρὸν, ὅστις ὀχλοποιήσας, ἐθροῦβεν τὴν
πόλιν· ἐπιστάντες τε τῇ οἰκίᾳ Ἰάσονος, ἐζή-
τησαν αὐτὰς ἀγαγεῖν εἰς τὴν δῆμον.

6 Μὴ ὑπάρκοντες δὲ αὐτὰς, ἔσμεν τῷ Ἰάσονα

καὶ

καὶ Ἰννας ἀδελφὸς ἐπὶ τῆς πολιτάρχας,
βοῶντες· Ὅποιοὶ οἰκονομοῦν ἀναστατώσαν-
τες, ἔτοι· καὶ εὐταδε πύρρσιν,

7 Οὐς ὑποδέδεκ) Ἰάσαν· εἰ τοι πάντες
ἀπέναντι τῷ δογματῶν Καίσαρος πράττεις,
βασιλέα λέγωντες ἕτερον εἶναι, Ἰησοῦν.

8 Ἐπάρραξαν ἡ τὸ ὄχλον εἰς τῆς πολιτάρχας
ἀκρόν τας ταῦται·

9 Καὶ λαβόντες τὸ ἰσχυρὸν τῷ Ἰάσαν
καὶ τῶν λοιπῶν, ἀπέλυσαν αὐτῆς.

10 Οἱ δὲ ἀδελφοὶ εὐθέως ἀφῆλθον τῷ
ἐπεμψαν τὸν τε Παῦλον καὶ τὸ Σίλαν εἰς Βε-
ροϊαν· οἵπινες τῷ ἀρχιερέσιν, εἰς τὸ σιναγω-
γῶν τῷ Ἰσθαίων ἀπήεσαν.

11 Οὗτοι ἡ ἦσαν ἀκρόντεροι τῷ ἐν Θεσσα-
λονίκη, οἵπινες ἐδέξαντο τὸ λόγον μὲν πάσης
προθυμίας, τὸ κατ' ἡμέραν ἀνακρίνοντες
ταῖς γραφαῖς, εἰ ἔχουσι ταῦτα ἔτι.

12 Πολλοὶ μὲν οὐκ ἐξ αὐτῶν ἐπίστυσαν, καὶ
τῷ Ἑκκλησιῶν γυναικῶν τῷ ἀκρόντων, καὶ
ἀνδρῶν ὅσων ὀλίγοι.

13 Ὡς ἡ ἔγνωσαν οἱ ἀπὸ τῷ Θεσσαλονίκης Ἰσ-
θαῖοι, ὅτι καὶ ἐν τῇ Βεροῖα κατῆλθεν ὑπὸ τῷ
Παύλῳ ὁ λόγος τῷ Θεῷ, ἦλθον κακῆσι σα-
λεύοντες τῆς ὄχλους.

14 Εὐθέως ἡ τότε τῷ Παῦλον ἐξάπεψαν οἱ
ἀδελφοὶ προθύεσθαι ὡς ἐπὶ τὴν θάλασσαν·
ὑπερέμμενον ἡ ὅ, τε Σίλας καὶ ὁ Τιμόθεος ἐκεί.

15 Οἱ ᾧ κεραισάντες τὸ Παῦλον, ἤγαγον αὐτὸν
εἰς Ἀθῆναι· καὶ λαβόντες ἐντολίαν πρὸς τὸ
Σίλων καὶ Τιμόθεον, ἵνα ὡς ταχιστα ἔλθωσι
πρὸς αὐτὸν, ἐξήεσαν.

16 Ἐν ᾗ ταῖς Ἀθήναις ἐκδεχόμενος αὐτὸς τὸ
Παῦλον, περιωξύνει τὸ πνεῦμα αὐτῆ ἐν αὐ-
τῷ, θεωρῶν ἐν κλειδίῳ λον εἶσαν τὸ πόλιν.

17 Διελέγετο μὲν ἔν ἐν τῇ συναγωγῇ τοῖς
Ἰουδαίοις ἔ τοῖς σέβομύοις, καὶ ἐν τῇ ἀγορᾷ καὶ
παῖσαν ἡμέραν πρὸς τὰς ὠρὰς ταχέοντα.

18 Τινὲς δὲ τῶ Ἐπικυρείων ἔ Στωϊκῶν Φι-
λοσόφωι στωϊκοὶ αὐτῷ καὶ ἱτες ἔλεγον·
Τί αὐτὸν θέλοι ὁ σερμολόγος ἔ τὸ λέγειν;
Οἱ δὲ· Ἐναν δαιμονίων δοκεῖ κατακαλεῖσθαι
εἶναι· ὅτι τὸ Ἰησοῦν καὶ τὸ ἀνάστασιν αὐτοῦ
ὁμολογεῖς.

19 Ἐπιλαβόμενοι τε αὐτῆ, ἐπὶ τὸ Ἄρφοι
πάρον ἤγαγον, λέγοντες· Δυναμίτω γνῶναι
ἡς ἡ καμὴ αὐτῆ ἡ ὑπὸ σὲ λαλεμένη διδασχία

20 Ξερίζοντα γάρ ἵνα εἰσφέρῃς εἰς τὰς ἀγορὰς
ἡμῶν. βελομετα οὐκ γνῶναι τί αὐτὸν θέλο
ταῦτα εἶναι.

21 (Ἀθῆναιοι ᾧ πάντες ἔ οἱ ἐπιδημῶντες
ξένοι εἰς ἔδὲν ἔπερον ὁμολογῶν ἡ λέγειν τί κα
ἀκέφῃ καμνόπρον)

22 Σπαθεῖς ᾧ ὁ Παῦλος ἐν μέσῳ τῶ Ἀρείων
πάγῃ, ἔφη. Ἄνδρες Ἀθῆναιοι, καὶ πάντα ὡ
δοσι δαιμονιστέρας ὑμῶν θεωρῶ.

23 Διερχόμενοι γὰρ καὶ ἀναθεωρῶν τὰ σκότα-
σματά υμῶν, δῖρον καὶ βωμὸν ἐν ᾧ ἐπερέ-
γραπτό· Ἀγνώστω Θεῷ. Οἱ γὰρ ἀγνοῦντες
ὁμιλεῖτε, τὸ ἐγὼ καὶ ἡμεῖς λέγω ὑμῖν.

24 Ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας τὸ κῶσμον καὶ πάντα τὰ
ἐν αὐτῷ, ἔστι καὶ ἄρχὸν ἐκ γῆς Κύριος ὑπάρ-
χων, ὅστις ἐν χρηστοῖς ναοῖς κατοικεῖ·

25 Οὐδὲ ὑπὸ χερῶν ἀνθρώπων θεωρεῖται,
ἀπροσέμομος ἰνός, αὐτὸς διδὼς πᾶσι ζωὴν
καὶ πνοὴν καὶ πάντα.

26 Ἐποίησέ τε ἐξ ἑνὸς αἵματος πάντας
ἀνθρώπων κατοικεῖν ἐπὶ πάντῳ τῷ οὐρανῷ καὶ
τῇ γῆτι, ὁρίσας ἁετὸς ἡμετέρας καὶ ἁετὸς
ὁροθεσίας τῆς κατοικίας αὐτῶν·

27 Ζῆτε τὸ Κύριον, εἰ ἄρα γε ψηλαφήσατε
αὐτὸν καὶ δύροιεν· καὶ τοι γὰρ ἔμακρὰν ἀπὸ
ἐνὸς ἐκείνου ἡμῶν ὑπάρχοντα.

28 Ἐν αὐτῷ γὰρ ζῶμεν, ἐκινέμεθα, καὶ ἐσμεν·
ὡς καὶ ἴνες τῆς καθ' ὑμᾶς ποιητῶν εἰρήνευσι·
Τὸ γὰρ καὶ γὰρ ἐσμεν.

29 Γέννηται γὰρ ὑπάρχοντες τῷ Θεῷ, ὅστις ὁφεί-
λομεν νοκίσειν χρυσῶν ἢ ἀργύρου ἢ λίθου,
καρτάματα τέχνης ἐκ ἐπινοήσεως ἀνθρώπου,
τὸ θεῖον εἶνα ὁμοῖον.

30 Τὰς μὲν γὰρ χεῖρας τῆς ἀγνοίας ὑπερῶν
ὁ Θεός, τινῶν τῶν ἀγαθῶν τοῖς ἀνθρώποις
πᾶσι πάντα ἔχοντα ἀνοεῖν.

31 Διότι ἔστηεν ἡμέραν ἐν ἧ ἡμέρᾳ κείνῃ
V 4 πλὴν

τινὸν οἰκηθῆναι ἐν δικημοσιωῇ, ἐν ἀνδρὶ ᾧ
ἦσαν, πίπιν ἠδ' ὄραχων πᾶσιν, ἀναστήσας
αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.

32 Ἀκαστωίτες δὲ ἀνάστασιν νεκρῶν, οἱ μὲν
ἐχλεύαζον· οἱ δ' εἶπον· Ἀκαστόμαθ' ἔσπι-
λιν φεῖτε.

33 Καὶ ἔτις ὁ Παῦλος ἐξῆλθεν ἐκ μέγα
αὐτῶν.

34 Τινὲς δ' ἄνδρες κηληθέντες αὐτῷ, ἐπίστυ-
σαν· ἐν οἷς ἔστι Διονύσιος ὁ Ἀρεοπαγίτης, κη
γνηθ' ὀνόματι Δάμαρις, ἔτεροι σὺν αὐτοῖς.

Κεφ. ιη'. 18.

1 **Μ**ετὰ δ' ταῦτα χωρεθεὶς ὁ Παῦλος ἐκ
τῶν Ἀθηνῶν, ἦλθεν εἰς Κόρινθον,

2 Καὶ εὐρώνθη Ἰσθαῖον ὀνόματι Ἀκύλαν,
Ποιητὸν τῷ γένει, φροσφάτως ἐληλυθότα
ἀπὸ τῆς Ἰταλίας, κη Πρίσκιλλαν γυναικα
αὐτοῦ, (ἀπὸ τῶν ἀγαθηχάνων Κλαύδιον χω-
ρεῖσθ' πάλαι τις Ἰσθαῖος ἐκ τῆς Γόμφης)
φροσῆλθεν αὐτοῖς·

3 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁμοτεχνηθῶν εἶνα, ἔμενε παρ' αὐ-
τοῖς, ἔειράζετο ἦσαν γρ σκηνοποιοὶ τῆς τέχνης.

4 Διελέγετο δ' ἐν τῇ συναγωγῇ κη πᾶν σαβ-
βαθρον, ἐπέθετε Ἰσθαῖος ἔστι Ἐπίκουρος.

5 Ὡς δὲ κατῆλθον ἀπὸ τῆς Μακεδονίας ὁ, τε
Σίλας κη ὁ Τιμόθεος, συνείχετο τῷ πνύ-
ματι ὁ Παῦλος, ἀμαρτυροῦμεν τοῖς
Ἰσθαῖοις τὸν Χριστὸν Ἰησοῦν.

6 Αἰκ-

- 6 Αντιζωσομένων ἢ αὐτῶν ἐβλασφημούντων, ἐκίναξάμενοι τὰ ἱμάτια, εἶπε πρὸς αὐτούς· Τὸ αἷμα ὑμῶν ἐπὶ τῆ κεφαλῇ ὑμῶν· καθαρὸς ἐῶ, ἀπὸ ἔτι νῦν εἰς τὰ ἔθνη πορεύσομαι.
- 7 Καὶ μετὰ βίας ἐκείθεν, ἦλθεν εἰς οἰκίαν πλὴν οὐκ ὀνόματι Ἰσραὴ, σεβομένη τὸ Θεόν, ἧ ἡ οἰκία ἡ σινομορθοῦσα τῆ σιναγωγῆ.
- 8 Κεῖσε δὲ ὁ ἀρχισυναγωγὸς ἐπίστυσε τὸν Κυρίω συνὸλῳ τῶ οἴκῳ αὐτοῦ· ἔ πολλοὶ δὲ Κορινθίων ἀκούσαντες ἐπίστυον, καὶ ἐβαπτίζοντο.
- 9 Εἶπε ἢ ὁ Κύριος δι' ὄραματι ἐν νυκτὶ τῷ Παύλῳ· Μὴ φοβῆ, ἀλλὰ λάλη, καὶ μὴ σιωπῆσης·
- 10 Διότι ἐγὼ εἶμι μετ' σέ, καὶ ἄδεις ἐπιθήσεται σοι ἔ κακῶσά σε· διότι λαὸς ἐστὶ μοι πολὺς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ.
- 11 Ἐκέλευσε τε ἐνιαυτὸν καὶ μετὰ ἐξ, διδάσκων ἐν αὐτοῖς τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ.
- 12 Γαλλίων δὲ ἀνθυπαύσωντος τῆ Ἀχαΐας, καὶ ἐπίσημο ὁμοθυμαδὸν οἱ Ἰουδαῖοι τῷ Παύλῳ, καὶ ἤγαγον αὐτὸν ἐπὶ τὸ βῆμα, λέγοντες·
- 13 Ὅπως ἔτι τὸ νόμον ἔτι ἀναπέσει τῶ ἀνθρώπῳ σεῖσαζ τὸ Θεόν.
- 14 Μίλλοι δὲ ἢ Παύλος ἀνοίξαν τὸ στόμα, εἶπεν ὁ Γαλλίων πρὸς τῶ Ἰουδαίους· Εἰ μὴ ἐν ἡ ἀδικημά τι ἢ ῥαδιέργηται πονηρὸν, ὡ Ἰουδαῖοι, καὶ λόγον αὐ ἠνεχόμενοι ὑμῶν·

- 15 Εἰς τὸ ζήτημα εἰ περὶ λόγους καὶ ὀνομασίαν
καὶ νόμους ἔκαθεν ὑμῶν, ὄψεσθε αὐτοὶ κερτῆς
γὰρ ἐγὼ τέτων ἐβέλομαι εἶναι.
- 16 Καὶ ἀπήλασεν αὐτὰς ἀπὸ τοῦ βήματος.
- 17 Ἐπιλαβόμενοι δὲ πάντες οἱ Ἕλληες Σω-
θένειον τὸ δόχσιον ἀγωγῆν, ἔτυπον ἑμπεσοῦν
τοῦ βήματος καὶ ἐδὲν τέτων τῆς Γαλιανῆς
ἔμελεν.
- 18 Ὁ δὲ Παῦλος ἔπαιθε μείνας ἡμέρας
ἰκανὰς, τοῖς ἀδελφοῖς ἀποτάξαμενος, ἐξ-
ἔωλεν εἰς τὴν Συρίαν. Ἐσυνῆκε αὐτῷ Πρίσκιλλος
καὶ Ἀκύλας, κληρονομοὶ τῆς κεφαλῆς ἐν Κε-
ρειαῖς· εἶχε γὰρ οὗχλῶν.
- 19 Κατήλυσε δὲ εἰς Ἐφέσον, καὶ κείνης κατή-
ἔλιπεν αὐτῷ, αὐτὸς δὲ εἰσελθὼν εἰς τὴν σω-
αγωγῆν, διελέχθη τοῖς Ἰουδαίοις.
- 20 Ἐρωτῶντων δὲ αὐτῶν ἐπὶ πλεονάζοντι χρόνῳ
μείνας παρ' αὐτοῖς, ὅσα ἐπέμεινεν·
- 21 Ἀλλ' ἀπετάξατο αὐτοῖς, εἰπὼν· Δεῖ με
πάντως τὴν ἑορτὴν τῆς ἐρχομένης ποιῆσαι εἰς
Ἱερουσόλυμα· πάλιν δὲ ἀνακλιθῆναι πρὸς
ὑμῶν, ἵνα Θεὸς θέλωντος, καὶ ἀνήχηται ἀπὸ
τῆς Ἐφέσου.
- 22 Καὶ κατελθὼν εἰς Καισάρειαν, ἀναβὰς, ἐ-
ἠσπασάμενος πρὸς ἐκκλησίαν, κατέβη
εἰς Ἀντιόχειαν.
- 23 Καὶ ποιήσας χρόνον ἑνιαῖον, ἐξῆλθεν διερχόμε-
νος καθεξῆς πρὸς Γαλιανὴν χώραν καὶ
Φρυγίαν,

Φρυγίαν, ἐπιστηρίζων πάντας τὰς μαθητάς.

24 Ἰσθαῖος δὲ τις Ἀποκλῶς ὀνόματι, Ἀλεξανδρούς τῷ γένει, ἀνὴρ λόγιος, κατέστησεν εἰς Ἐφέσον, δυνατὸς ὢν ἐν ταῖς γραφαῖς.

25 Οὗτος ἦν καὶ ἡγεμὸν τῶν ὁδῶν τοῦ Κυρίου καὶ ζέων τῷ πνεύματι, ἐλάλη καὶ ἐδίδασκεν ἀκριβῶς τὰ περὶ τοῦ Κυρίου, ἐπιστάμενος μόνον τὸ βάπτισμα Ἰωάννου.

26 Οὗτος τε ἤρξατο παρρησιάζεσθαι ἐν τῇ σωμαγωγῇ. Ἀκασαίης ἢ αὐτῷ Ἀκύλας καὶ Πρίσκιλλα προσελάβοντο αὐτόν, καὶ ἀκριβέστερον αὐτῷ ἐξέτερον τὸ θεῖον ὄδον.

27 Βαλομήδης ἢ αὐτῷ διελθεῖν εἰς τὴν Ἀρχαίαν, ὡς προσεψάμενοι οἱ ἀδελφοὶ ἔγραψαν τοῖς μαθηταῖς ἀποδέξασθαι αὐτόν. ὃς τῷ Ἰσθαῖο μόνον, σωεβάλετο πολὺ τοῖς πεπιστευκόσι διὰ τὴν χάριν.

28 Εὐτόμως γὰρ τοῖς Ἰσθαίοις διὰ κατὰ ἐξουσίαν δημοσίαν, ἐπιδικνύς διὰ τῶν γραφῶν, εἶναι τὸ Χριστὸν Ἰησοῦν.

Κεφ. ιθ'. 19.

1 Ἐγένετο ἢ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις ἔρχεται ἐν Κορίνθου, Παῦλον διελθόντα πρὸς ἀνωτεροῦς μέρη, εἰσελθεῖν εἰς Ἐφέσον καὶ εὐρύνοντας τὰς μαθητάς.

2 Εἶπε πρὸς αὐτούς· Εἰ πνεῦμα ἅγιον ἐλάβετε πνεύματα; Οἱ ἢ εἶπον πρὸς αὐτόν· Ἀλλ' ἔδὲ εἰ πνεῦμα ἅγιόν ἐστιν, ἠκούσαμεν.

3 Εἶπέ

- 3 Εἶπε τε πρὸς αὐτούς· Εἰς τί ἐν ἑορτήθη-
τε; Οἱ ᾗ εἶποι· Εἰς τὸ Ἰωάννη βαπτισμα.
- 4 Εἶπε ᾗ Παῦλος· Ἰωάννης μὲν ἐβάπτισε
βαπτισμα μετάνοιας, τὰ λαλῶν, εἰς τὸν
ἐρχόμενον μετ' αὐτοῦ ἵνα πισθύσωσι, τυτίειν,
εἰς τὸν Χριστὸν Ἰησοῦν.
- 5 Ἀκούοντες οὖν ἐβαπτίσθησαν εἰς τὸ ὄνομα
ᾗ Κυρίου Ἰησοῦ.
- 6 Καὶ ἐπιθέντι αὐτοῖς ᾗ Παύλῳ τὰ χεῖ-
ρας, ἦλθε τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπ' αὐτούς·
ἐλάλησεν τε γλώσσαις, ἔψαλλεν ᾗ ψαλμοῖς.
- 7 Ἦσαν ᾗ οἱ πάντες ἄνδρες ὡς εἰ δεκάδύο.
- 8 Εἰσελθὼν ᾗ εἰς τὴν συναγωγὴν, ἐπαρήρ-
σιάζετο, ἐπὶ μὲν τὰς τρεῖς ἡμέρας λέγων ᾗ
κῆρυγμα τὸ ᾗ τῆ βασιλείας ᾗ Θεοῦ.
- 9 Ὡς δὲ πινες ἐσκληρώοντο κῆ ἠπέειπεν, κα-
κολογῶντες πλὴν ὁδὸν ἐνώπιον ᾗ πλῆθους,
ἀποστὰς ἀπ' αὐτῶν, ἀφώρισε τὰς μαθητάς,
καθ' ἡμέραν λέγων ᾗ ἐν τῇ σχολῇ τυ-
ράννης πινός,
- 10 Τῷ ᾗ ἐγένετο ἐπὶ ἔτη δύο· ὥστε πάντας
τὰς καθεκθῆντας τὴν Ἀσίαν ἐκῆσθη τὸ λόγον ᾗ
Κυρίου Ἰησοῦ· Ἰουδαίους τε κῆ Ἑλλήνας,
- 11 Δυναμὸς τε ᾗ τὰς τυχούσας ἐποίησεν ὁ Θεὸς
ᾗ τῶν χιρῶν Παύλου.
- 12 Ὡς τε κῆ ἐπὶ τὰς ἀσθενοῦσας ἐπιφέρουσαι
ἀπὸ ᾗ χρωτὸς αὐτῶν σκεδάματα ἢ σμικίνθια
κῆ ἀπαλλάσσουσαι ἀπ' αὐτῶν τὰς νόσους,
τὰ τῶν

τὰ τε πνύματα τὰ πονηρὰ ἐξέρχονται ἀπ' αὐτῶν.

13 Ἐπεχείρησαν δὲ πινες ἀπὸ τῶν περιηγησάντων Ἰσθαίων ἐξορκιστῶν ὀνομάζειν ἐπὶ τὰς ἐχθρὰς τὰ πνύματα τὰ πονηρὰ τὸ ὄνομα Ἰ̅ Κυρίῃς Ἰησοῦ, λέγοντες· Ὁρκίζομεν ὑμᾶς τὸ Ἰησοῦν ὃν ὁ Παῦλος κηρύσσει.

14 Ἦσαν δὲ πινες υἱοὶ Σκιδῶ Ἰσθαίῃς ἀρχιερέως ἐπιθῆ, οἱ τῶν ποιητῶν.

15 Ἀποκριθὲν ἡ τὸ πνεῦμα τὸ πονηρὸν, εἶπε· Τὸν Ἰησοῦν γινώσκω, ἔ τὸ Παῦλον ἐπίσταμαι· ὑμεῖς ἡ πινες ἐστέ;

16 Καὶ ἐφαλλόμενος ἐπ' αὐτὰς ὁ ἄνθρωπος ἐν ᾧ ἦν τὸ πνεῦμα τὸ πονηρὸν, καὶ κατὰκυριεύσας αὐτῶν, ἴχυσε κατ' αὐτῶν, ὥστε γυμνὰς καὶ τετραμαχισμῶδες ἐκφυγεῖν ἐκ τοῦ οἴκου ἐκείνου.

17 Τῶν ἡ ἐχθρῶν γινώσκων πᾶσιν Ἰσθαίοις τε καὶ Ἑλλήσι τοῖς κατὰκῆσι τὸ Ἐφέσον· ἔ ἐπέπεσε φόβος ἐπὶ πάντας αὐτὰς, καὶ ἐμεγαλύνετο τὸ ὄνομα Ἰ̅ Κυρίῃς Ἰησοῦ.

18 Πολλοὶ τε τῶν πεπιστωθέντων ἤρχοντο, ἐξομολογῆμοι ἔ ἀναγέλλοντες τὰς πράξεις αὐτῶν.

19 Ἰκανοὶ δὲ τὸ τὰ πείρα πρᾶξάντων, σιωνεῖκαυτες τὰς βίβλους, κατέκρημον ἐνώπιον πάντων· καὶ σιωνεψήφισαν τὰς τιμὰς αὐτῶν, καὶ δῖρον δόρυεις μυριάδας πέντε. !

20 Οὕτω

- 20 Οὕτω κ' ἐκράτῃ ὁ λόγος τῷ Κυρίῳ
κ' ἤρξαντο καὶ ἰσχυρῶς.
- 21 Ὡς ἡ ἐπιπλοῦρη ταῦτα, ἔθετο ὁ Παῦλος
ἐν τῷ πνεύματι, διαλθὼν εἰς Μακεδονίαν καὶ
Ἀχαΐαν, πορεύσασθαι εἰς Ἱερουσαλὴμ, εἰπὼν·
Ὅτι μὲν τὸ χρέος με ἐπέκει, δεῖ με καὶ Ῥώ-
μην ἰδεῖν.
- 22 Ἀποστείλας ἡ εἰς τὴν Μακεδονίαν δύο τῶν
Ἀφρονέντων αὐτοῦ, Τιμόθεον καὶ Ἐραστον,
αὐτὸς ἐπέχε χρόνον εἰς τὴν Ἀσίαν.
- 23 Ἐρχόμενος ἡ κ' εἰς τὴν ἡμετέραν ἐκείνην πόλιν
ὅσα ὀλίγα εἶπε τῆς ἰδέας.
- 24 Δημήτριος γάρ τις ὀνόματι, ἀργυροκό-
πος, ποιῶν ναῖας ἀργυρῆς Ἀρτέμιδος, περ-
εἶχε τοῖς τεχνίταις ἐργασίαν ὅσα ὀλίγη.
- 25 Οὓς συναθροίσασθαι, ἔτι τὰς εἰς ταῦτα
ἐργασίας, εἶπεν ἄνδρες, ἐπίστασθε ὅτι ἐκ
πρώτης τῆς ἐργασίας ἡ εἰς πορταὶς ἡμῶν ἐστίν.
- 26 Καὶ θεωρεῖτε ἔτι ἀκούετε ὅτι εἰς μόνον Ἐφέσον,
ἀλλὰ σχεδὸν πάσης τῆς Ἀσίας ὁ Παῦλος εἶδος
πέιστας μετέστησεν ἰκανὸν ὄχλον, λέγων ὅτι ἔκ
εἰσὶ θεοὶ οἱ ἀπὸ χερῶν χειρῶν γινόμενοι.
- 27 Οὐ μόνον δὲ τῶν κινδυνούσων ἡμῖν τὸ μέ-
ρος εἰς ἀπελεγμὸν ἐλθεῖν, ἀλλὰ καὶ τὸ τῆς
μεγάλης θεᾶς Ἀρτέμιδος ἱερὸν εἰς ἄδεν λο-
γισθῆναι, μίλλαν τε καὶ καταρῆσθαι τῆς με-
γαλοφροσύνης αὐτῆς, ἡ ὅλη ἡ Ἀσία καὶ ἡ οἰκου-
μένη σέβει).

28 Ἀκόνταιες ἢ, καὶ γλυκοῦμοι πολήρης θυμῶ,
ἐκράζον λέγοντες· Μεγάλη ἡ Ἄρτεμις Ἐφεσίων.

29 Καὶ ἐπλήθη ἡ πόλις ὅλη συγκύσεως· ὠρ-
μησάν τε ὁμοθυμαδὸν εἰς τὸ θεῖον, σωμαρ-
πάσαιες Γάϊον καὶ Ἀρίσταρχον Μακεδόνας,
σωεκδήμους τῷ Παύλῳ.

30 Τῷ ἢ Παύλῳ βελομήδῳ εἰσελθεῖν εἰς τὸ
δῆμον, ὅτι εἶον αὐτὸν οἱ μαθηταί.

31 Τινὲς ἢ καὶ τῷ Ἀσπαρχῶν ὄντες αὐτῷ φίλοι,
πέμψαντες πρὸς αὐτὸν, παρεκάλων μὴ δύν-
αμι εἰσαυτὸν εἰς τὸ θεῖον.

32 Ἄλλοι μὲν οὐκ ἄλλο ἠέκραζον· ἡ γὰρ ἡ
ἐκκλησία συγκεχυμένη, καὶ οἱ πλείους ὅτι
ἠδύσαν τὸν θεὸν ἐνεκεν σωεληλύθησαν.

33 Ἐκ τῷ ἢ ὄχλῳ πρεσβύευσαν Ἀλέξανδρον,
πρεσβυτέρου αὐτὸν τῷ Ἰσδαίων· ὃ ἢ Ἀλέξαν-
δρον καίσεϊρας τῷ χεῖρα, ἠήτελεν διπολο-
γεῖσθαι τῷ δήμῳ.

34 Ἐπιγινόντων ἢ ὅτι Ἰσδαῖός ἐστι, φωνὴ ἐγέρθη
μία ἐκ πάντων, ὡς ἐπὶ ὄρας δύο κραζόν-
των· Μεγάλη ἡ Ἄρτεμις Ἐφεσίων.

35 Καίσεϊρας ἢ ὁ γραμματεὺς τῷ ὄχλῳ,
φησὶν· Ἄνδρες Ἐφεσιοί, τίς γάρ ἐστιν ἄνθρωπος
ὃς ἔγνωσεν τῷ Ἐφεσίων πόλιν νεωκόρον εἶναι
τῷ μεγάλης θεᾶς Ἀρτέμιδος, ἢ τῷ Διοπέδῳ;

36 Ἀνακίρρηται ἐν ὄντων τέτων, δέον ἐστὶν
ὑμᾶς καίσεϊρα μὲν ὑπαρχῆν, καὶ μηδὲν
πρεσβετεῖς πρὸς αὐτὸν·

37 Ἡ γὰρ

- 37 Ἡ γὰρ ἡγεγὼ τὰς ἀνδρας τέτυες, ἔτε ἱερο-
σύλας, ἔτε βλασφημῆσαι τὸ θεῶν ὑμῶν.
- 38 Εἰ μὲν ἐν Δημήτριος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ τεχνί-
ται πρὸς ἵνα λόγον ἔχουσιν, ἀγροαῖοι ἄγροί, καὶ ἀνθρώποι εἰσιν, ἐγκαλείτωσαν ἀλλήλους.
- 39 Εἰ δὲ πρὸς ἐπίρων ἐπιζητεῖτε, ἐν τῇ ἐν-
νόμῳ ἐκκλησίᾳ ἐπιλυθήσε).
- 40 Καὶ γὰρ κινδυνώσασθε ἐγκαλείσθαι γά-
σεως πρὸς τὸ σήμερον, μηδεὶος αἰτίας ὑπάρ-
χοντος πρὸς ἔδωκόμεθα δόξασθαι λόγον τὸ
συνοφῆς ταύτης. Καὶ ταῦτα εἰπὼν, ἀπ-
έλυσε τὴν ἐκκλησίαν.

Κεφ. κ'. 20.

- 1 Μετὰ τὸ παύσαισθαι τὸ θόρυβον πρὸς-
καλεσάμενος ὁ Παῦλος τὰς μαθη-
ταὶ καὶ ἀποστασάμενος, ἐξῆλθε πορεύσασθαι
εἰς τὴν Μακεδονίαν.
- 2 Διεληθὼν ἡ μέρη ἰκίνας, ἐπὶ ἄρα καλέσας
αὐτὸς λόγον πολλῶν, ἦλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα.
- 3 Ποιήσας τε μιλῶνας τεῖς, ἡσομένης αὐ-
τῷ ἐπιβουλής ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων μέλλοντι ἀν-
άγειν εἰς τὴν Συρίαν, ἐβόησε γνάμη τὸ ὑπο-
σπέρειν ἀπὸ Μακεδονίας.
- 4 Συνέπιθε ἡ αὐτῷ ἄγροί τῆς Ἀσίας Σάπα-
τρος Βερραῖος Θεσσαλονικίων ἡ, Ἀρίσταρ-
χος καὶ Σεκένδος ἡ Γάιος Δερβῆος καὶ
Τιμόθεος Ἀσιακῶν ἡ, Τυχικός ἡ Τρόφιμος.
- 5 Οὗτοι πρὸς ἐληθόντες ἔμενον ἡμέρας ἐν Τρωάδι.
- 6 Ἡμεῖς

6 Ἡμεῖς ᾧ ἐξεπολύσαμεν μετ' ἡμῶν ἡμέρας
 τῶ ἀζύμων ἀπὸ Φιλίππων, καὶ ἤλθομεν πρὸς
 αὐτοὺς εἰς τὴν Τρωάδα ἄχρις ἡμερῶν πέντε,
 ἔδιδετο ψαμὸν ἡμέρας ἐπ' αὐτόν.

7 Ἐν τῇ τῆ μιᾷ τῶ σαββάτων, σινησμένων τῶ
 μαθητῶν ἔκλασεν ἄρτον, ὁ Παῦλος δι-
 ελέγετο αὐτοῖς, μέλλων ἐξίεναι τῆ ἐπιπέριον·
 παρέτῆνέ τε τὸν λόγον μέχρι μεσονυκτίου.

8 Ἦσαν ᾧ λαμπροὶς ἱκαναὶ ἐν τῷ ὑπε-
 ρώῳ ἔῃσαν σινησμένοι.

9 Καθημέριον δὲ τις νεανίας ὀνόματι Εὐ-
 τυχιον ἐπὶ τῷ θυρίδιον, καὶ ἀφερόμενον
 ὑπὸ βαθεῖ, ἀλαζμονίης ἔκλασεν ἐπὶ
 πλείον, κατενεχθεὶς ἀπὸ τῶ ὑπὸ, ἔπεσεν ἀπὸ
 τῶ τριπέριον καὶ ἤρθη νεκρός.

10 Καθὰς ᾧ ὁ Παῦλος ἐπέπεσεν αὐτῷ, ἔ-
 συμπεριλαβὼν εἶπε· Μὴ θυροδοῖσθε· ἡ γὰρ
 ψυχὴ αὐτοῦ ἐν αὐτῷ ἐστιν.

11 Ἀναδοὺς ᾧ, καὶ κλάσας ἄρτον ἐκ γούσά-
 μων, ἐφ' ἱκανόν τε ὁμιλήσας ἄχρις αὐ-
 γῆς, ἔτις ἐξῆλθεν.

12 Ἦσαν ᾧ τῶ παῖδα ζῶντα, καὶ παρεκλή-
 θισαν ἔμετρίως.

13 Ἡμεῖς δὲ παρελθόντες ἐπὶ τὸ πλοῖον,
 ἀνήχθημεν εἰς τὸ Ἄσπον, ἐκείθεν μέλλοντες
 ἀναλαμβάνειν τὸν Παῦλον· ἔτις γὰρ καὶ ἀφ-
 τελασμένοι, μέλλων αὐτὸς πεζοῦν.

14 Ὡς ᾧ σιπέδαλον ἡμῶν εἰς τὸ Ἄσπον, ἀνα-
 λαβόντες

- λαβόντες αὐτὸν ἤλθομεν εἰς Μιτυλήναι.
- 15 Καὶ εἶπεν ἀποπολύσωντες, τῇ ἐπιέσει κατ-
 εὐχήσαμεν ἀντικρὺ Χίω· τῇ δὲ ἑτέρῃ παρ-
 εβάλομεν εἰς Σάμον· καὶ μέναιτες ἐν Τρω-
 γυλῖαι, τῇ ἐχομένη ἤλθομεν εἰς Μιλήθην.
- 16 Ἐκρινε γὰρ ὁ Παῦλος ὡς ἔδει πλεῖστον τῶν Ἐφε-
 σσων, ὅπως μὴ γένηται αὐτῶν χειροπέδησι ἐν
 τῇ Ἀσίᾳ· ἔσσωδε γὰρ, εἰ δύνασθαι αὐτῶν, τὴν
 ἡμέραν τῆς Πεντηκωστῆς ἔλθωμεν εἰς Ἱεροσόλυμα.
- 17 Ἀπὸ δὲ τῶν Μιλήτων πέμψας εἰς Ἐφέσον,
 μετὰ καλέσας τοὺς πρεσβυτέρους τῆς ἐκκλησίας.
- 18 Ὡς δὲ παρεγένοντο πρὸς αὐτὸν, εἶπεν αὐτοῖς·
 Ὑμεῖς ἐπίσταντες, ἀπὸ παλαιῆς ἡμέρας ἀφ'
 ἧς ἐπέβλεψεν εἰς τὴν Ἀσίαν, πῶς μετ' ὑμῶν τὸν
 πάντα χρόνον ἐχρῶμεν.
- 19 Δαδύων τῶ Κυρίου μετὰ πίστεως ταπεινο-
 φροσύνης, ἐ πολλῶν δακρύων ἐ πηρασμῶν, τῶν
 συμδαιῶν μοι ἐν ταῖς ἐπιβλαῖσι τῶν Ἰουδαίων.
- 20 Ὡς ἔδεν ὑπερηλάμεν τῶν συμφερόντων,
 ἔμην ἀναστρεφόμενοι καὶ διδάξασθαι ὑμᾶς δη-
 μοσίᾳ καὶ κατ' οἴκους·
- 21 Διαμαρτυροῦμεν τοῖς Ἰουδαίοις τε ἐ Ἐλλάσι
 καὶ εἰς τὸ Θεὸν μετένοισαν, καὶ πίστιν πάλιν εἰς τὸν
 Κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστόν.
- 22 Καὶ νῦν ἰδὲ, ἐγὼ δεδεδυμένος τῶν πινύ-
 ματι, πορεύομαι εἰς Ἱερουσαλήμ, καὶ ἐν αὐ-
 τῇ συναγωγῇ μου μὴ εἰδώς·
- 23 Πλὴν ὅτι τὸ πνεῦμα τὸ ἄγιον κατὰ πόλιν
 ἀγ-

Διαμαρτύρη), λέγον' ὅτι δεσμά με ἐθλίψας
 μύρασιν.

24 Ἀλλ' ἐδενὸς λόγον ποιῶμαι, ἐδὲ ἔχω πτω-
 ψυχλὴ με ἡμίαν ἐμαυτῷ, ὡς τελῶσαι τῆ
 δρόμον με μετ' χαρᾶς, καὶ τῆ Διακονίαν ἡ
 ἔλαβον ἀπὸ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ, Διαμαρτύ-
 ρησά τὸ διαγγέλιον τῆ χάριτος τοῦ Θεοῦ.

25 Καὶ νῦν ἰδὲ, ἐγὼ οἶδα ὅτι σπουδὴ ὄψασθε
 τὸ πρῶτον με ὑμεῖς πάντες, ἐν οἷς διήλθον
 κηρύσσων τῆ βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

26 Διὸ μαρτύρομαι ὑμῖν ἐν τῇ σήμερον ἡμέρᾳ
 ὅτι κατὰρὸς ἐγὼ ἀπὸ τοῦ αἵματος πάντων.

27 Οὐ γὰρ ὑπεσφάμην τὸ μὴ ἀναγγείλαι
 ὑμῖν πᾶσιν πτω βελῶ τοῦ Θεοῦ.

28 Προσέχετε ἑνὲαυτοῖς, καὶ παντὶ τῷ ποιμνίῳ,
 ἐν ᾧ ὑμεῖς τὸ πνεῦμα τὸ ἄγιον ἔχετε ἐπισκό-
 πους, ποιμαίνον τὴν ἐκκλησίαν τοῦ Θεοῦ, ἡν πε-
 ρεποιήσατε ἀπὸ τοῦ ἰδίου αἵματος.

29 Ἐγὼ γὰρ οἶδα τῆτο, ὅτι εἰσελεύσονται μετ' ἡ
 ἀφιξίν με λύκοι βαρεῖς εἰς ὑμεῖς μὴ φεδο-
 μῆροι τοῦ ποιμνίος.

30 Καὶ ἐξ ὑμῶν αὐτῶν ἀναστήσονται ἄνδρες
 λαλοῦντες διεσραμμένα, ἀποσπᾶν τὰς μα-
 θηταῖς ὀπίσω αὐτῶν.

31 Διὸ γρηγορεῖτε, μνημονεύοντες ὅτι τρεῖς ἡμέρας
 νύκτα ἐ ἡμέραν ἐκ ἐπαινώσάμην μετ' δακρύων
 ταυτῶν ἐνάεικασον.

32 Καὶ νῦν ἀπὸ τῆς ἐπιθυμίας ὑμῶν, ἀδελφοί,
 τῶν

τῷ Θεῷ καὶ τῷ λόγῳ τῷ χριστῷ αὐτῷ, τῷ
 δυνάμει ἐπιχοδομήσασα ἔδεναι ὑμῖν κλη-
 ρονομίαν ἐν τοῖς ἡγιασμένοις πασίν.

33 Ἀγγελος ἢ χρυσίς ἢ ἰματισμῷ ἐδένει
 ἐπιθύμησα.

34 Αὐτοὶ δὲ γνώσκουσιν ὅτι ταῦς χρείας μετ' ἐμοῦ
 εἴσι μετ' ἐμῷ ὑπερέτησαν αἱ χεῖρες αὐτῶν.

35 Πάντα ὑπέδειξα ὑμῖν ὅτι ἔγωγε ἠπιῶντας δεῖ
 ἀντιλαμβάνεσθαι τὸ ἀδινένιον, μνημονεύον τε
 τῶν λόγων τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ, ὅτι αὐτὸς εἶπε· Μα-
 κάριον ἐστὶν δίδομαι μάλλον ἢ λαμβάνειν.

36 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, δεῖξαι τὰ ἡγιασμένα αὐτῷ,
 σὺν πάσιν αὐτοῖς προσήυξατο.

37 Ἰκανὸς δὲ ἐγένετο κλαυθμὸς πάντων· καὶ
 ἐπιπιάσαντες ἐπὶ τῷ τράχηλον τοῦ Παύλου κατε-
 φίλαν αὐτόν·

38 Ὁ δυνάμιοι μάλιστα ἐπὶ τῷ λόγῳ ᾧ εἰ-
 ρήκη, ὅτι ἔκειτο μέλλουσι τὸ σῶσωπον αὐτῷ
 θεωρεῖν· ἀσέπεμπον δὲ αὐτόν εἰς τὸ πλοῖον.

Κεφ. κα'. 21.

1 Ὅσους δὲ ἐγένετο ἀναχθῆναι ἡμᾶς ἀποστα-
 σέντας ἀπ' αὐτῶν, ὑδρομήσαντες
 ἤλθομεν εἰς τὸ Κῶν, τῆ δὲ ἐξῆς εἰς τὸ Ρόδον,
 καὶ κείθεν εἰς Πάραρον·

2 Καὶ ὑπόντες πλοῖον Ἀραπερῶν εἰς Φοινί-
 κην, ἐπιβάντες ἀνήχθημεν.

3 Ἀναφανέντες δὲ τὸ Κύπρον, καὶ κατελιπόντες
 αὐτὴν διώνυμον, ἐπλέομεν εἰς Συρίαν, καὶ
 κατέβη-

κατήχηθημεν εἰς Τύρον· ἐκείσε γὰρ ἰὼ τὸ
 πλοῖον ἀποφοριζόμενον εἰς γόμον.

4 Καὶ ἀνδρόνες τὸς μαθητὰς, ἐπεμείνα-
 μεν αὐτοῖς ἡμέρας ἐπτά· οἵτινες τῷ Παύλῳ
 ἔλεγον· ἀλλὰ εἰ πνύματα, μὴ ἀναβαίνην εἰς
 Ἱερουσαλήμ.

5 Ὅτε ἡ ἐγγύεθε ἡμᾶς ἐξαρτίσθη τὰς ἡμέ-
 ρας, ἐξεληθόντες ἐπορεύομεθα, περὶ πεμπόν-
 των ἡμᾶς πάντων συνὴ γυναικῶν καὶ τέκνοις,
 ἕως ἔξω εἰς πόλεως· ἐγένετο τὰ γόνατα ἐπὶ τῷ
 αἰγιαλῶν, περὶ στυζάμεθα.

6 Καὶ ἀσπασάμενοι ἀλλήλους, ἐπέδημεν εἰς
 τὸ πλοῖον. ἐκείνοι δὲ ὑπέσπευσαν εἰς τὰ ἴδια.

7 Ἡμεῖς δὲ εἰς τὸ πλοῖον ἀναβάντες, ἀπὸ Τύ-
 ρου κατήχησαμεν εἰς Πύλεμαθῶν· καὶ
 ἀσπασάμενοι τὸς ἀδελφοὺς ἐμείναμεν ἡμέ-
 ρων μίαν παρ' αὐτοῖς.

8 Τῇ δὲ ἐπαύριον ἐξεληθόντες οἱ περὶ τὸ Παῦ-
 λον, ἦλθον εἰς Καισάρειαν· καὶ εἰσεληθόντες
 εἰς τὸ οἶκον Φιλίππου εἰς ὁμοφυλοῦς, (εἰς ὄν-
 τος ἐκ τῶν ἐπτά) ἐμείναμεν παρ' αὐτῶν.

9 Τότε δὲ ἦσαν θυγατέρες παρθένοι τέσ-
 σαρες περὶ φησίδου.

10 Ἐπιμυρόντων δὲ ἡμῶν ἡμέρας πλείους,
 κατήλθε ἡμεῖς ἀπὸ τῆς Ἰερουσαλῆμ περὶ φη-
 τῆς Ἰσθαίας ἀνο-
 ματικῆ Ἀγαθῆ.

11 Καὶ ἐλθὼν πρὸς ἡμᾶς, ἐώρας τὸ ζώνιον εἰς
 Παύλῳ, δῆσαι τε αὐτοῖς τὰς χεῖρας καὶ τὸς
 πόδας,

- πόδας, εἶπε· Τὰδε λέγει τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον·
 Τὸν ἄνδρα, ὃ ἐστὶν ἡ ζώνη αὐτή, ἔτω δήσασιν
 ἐν Ἱερουσαλήμοι Ἰουδαῖοι, καὶ ᾠρθώσασιν
 εἰς χεῖρας ἔθνων.
- 12 Ὡς ἡ ἀκρόασις ταῦτα, παρεκλήθημεν
 ἡμεῖς τε καὶ οἱ στυπιοὶ· Ἐμὴ ἀναδοῖνεν αὐ-
 τὸν εἰς Ἱερουσαλήμ.
- 13 Ἀπεκρίθη δὲ ὁ Παῦλος· Τί ποιεῖτε,
 κλαίοντες καὶ σιωπῶντες μετ' ἡμῶν;
 ἐγὼ γὰρ ἔμνηον δεδιῶμαι, ἀλλὰ καὶ ἀποθανεῖν
 εἰς Ἱερουσαλήμ ἐτοιμῶς ἔχω· ἵνα ἐπὶ ὀνόμα-
 τος τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.
- 14 Μὴ πεφοβῆσθε αὐτὸν, ἡσυχάσαμεν, εἰ-
 πόντες· Τὸ θέλημα τοῦ Κυρίου ἠκούσατε.
- 15 Μετὰ ἡμέρας ταύτας ἀποσκευασά-
 μενοι ἀπεβάνομεν εἰς Ἱερουσαλήμ.
- 16 Σιωπήσαντες καὶ ἡ μαθητῶν ἀπὸ Καισα-
 ρείας σὺν ἡμῖν, ἀγῶνες παρ' ᾧ ξενιστῶν,
 Μνάσιωνί Ἰωνί Κυπρίῳ, ἀρχαίῳ μαθητῇ.
- 17 Γενομένων δὲ ἡμῶν εἰς Ἱεροσόλυμον,
 ἀσπρόως ἐδέξαντο ἡμῶς οἱ ἀδελφοί.
- 18 Τῇ ἡμέρᾳ ἐπίσημῃ εἰσήλθε ὁ Παῦλος
 πρὸς Ἰάκωβον· πάντες τε παρεγένοντο οἱ
 πρεσβύτεροι.
- 19 Καὶ ἀπαγγελάμενος αὐτοῖς, ἐξηγεῖτο καθ' ἑ-
 ἓν ἕκαστον ὧν ἐποίησεν ὁ Θεὸς ἐν τοῖς ἔθνεσι
 διὰ τὴν ἀσκησίαν αὐτοῦ.
- 20 Οἱ ἄκροασις ἐδόξαζον τὸν Κύριον· εἶπόν
 τε

τε αὐτῶ· Θεωρεῖς ἀδελφεῖ, πόσαι μυριά-
δεις εἰσὶν Ἰσδαίων ἃ πεπισδύκωται· καὶ πά-
ντες ζηλωταὶ τῶ νόμου ὑπάρχουσι.

21 Κατηχήθησαν ἡμεῖς σὺν τῷ πάλῳ, ὅτι διποτασίαν
διδάσκουσι ἀπὸ Μωσέως τὰς καὶ τὰ ἔθνη πάν-
τας Ἰσδαίους, λέγων μὴ περιτέμνην αὐτὸς τὰ
τέκνα, μηδὲ τοῖς ἕθεσι περιπαλεῖν.

22 Τί οὖν ἐστὶ πάντως δεῖ πλεῖστον σωελ-
θεῖν· ἀκούσον ἡμεῖς ὅτι ἐλήλυθας.

23 Τὸ ἐν ποίησον ὅ σοι λέγουσιν· Εἰσὶν ἡμῖν
ἄνδρες τέσσαρες δύχλω ἔχοντες ἐφ' ἑαυτῶν.

24 Τύτους περιελαβὼν, ἀγνισθῆτε σὺν αὐ-
τοῖς, καὶ δαπάνησον ἐπ' αὐτοῖς, ἵνα ἐυζήσωσιν
τὸ κεφαλῶν· καὶ γνώσι πάντες ὅτι ἂν κατη-
χῶν ἡμεῖς ἐδέν ἐστιν, ἀλλὰ σοιχεῖς καὶ αὐ-
τὸς τὸν νόμον φυλάσσων.

25 Περὶ ἧ τῶν πεπισδύκωτων ἔθνων ἡμεῖς
ἐπεείλαμεν, κρίναντες μηδὲν τιεῖστον τηρεῖν
αὐτὸς, εἰ μὴ φυλάσσει αὐτὸς τὸ, τε εἰδω-
λόθυτον, καὶ τὸ αἷμα, καὶ πικρὸν, καὶ πορνείαν.

26 Τότε ὁ Παῦλος περιελαβὼν τὸς ἀν-
δρας, τῇ ἐχθρῆ ἡμέρᾳ σὺν αὐτοῖς ἀγνι-
σθεῖς εἰσήεις τὸ ἱερόν, ἀφ' ἡμέλων τὴν ἐκ-
πολήρωσιν τῶν ἡμερῶν τοῦ ἀγνισμοῦ, ἕως ἔ-
περὶ σὺνέχθη ὑπὲρ ἐνὸς ἑκάστου αὐτῶν ἡ
περὶ φορῶν.

27 Ὡς ἡμεῖς ἐπέπλεον ἡμερῶν σωτελεῖσθαι,
οἱ δὲ ἀπὸ τῆς Ἀσίας Ἰσδαῖοι θεασάμενοι αὐτὸν
ἐν

ἐν τῷ ἱερῷ, σιμῶμεν πάντα τὸ ὄχλοι, καὶ
ἐπιβάλοιν ἐπὶ χεῖρας ἐπ' αὐτόν·

28 Κορνήλιος· Ἄνδρες Ἰσραηλίται, βοηθή-
τε· ἕτις ἐστὶ ὁ ἀνθρώπου ὁ καὶ τῆ λαῶν καὶ τῆ
νόμος ἔστι τύπος τέτρα πάντα καὶ δι-
δασκων ἐπὶ τε καὶ Ἐκλίνας εἰσήγαγναι εἰς τὸ
ἱερόν, καὶ κενερίωκε τὸ ἅγιον τόποι τῆτον.

29 (Ἦσαν γὰρ περιωρακῆτες Τρόφιμον τὸ
Ἐφέσιοι ἐν τῇ πόλει σιμῶ αὐτῷ, οἱ ἐνόμιζον
ὅτι εἰς τὸ ἱερόν εἰσήγαγναι ὁ Παῦλος)

30 Ἐκινήθη τε ἡ πόλις ὅλη, ἔειχθη σιω-
δρομὴ τῆ λαῶν· καὶ ἐπιλαβόμενοι τῆ Παύλου,
εἴλχον αὐτόν ἔξω τῆ ἱερῶ· καὶ οὐδέως ἐκλεί-
σθησαν αἱ θύραι.

31 Ζητούντων δὲ αὐτόν ἀποκρίσιναι, ἀνέστη Φά-
σις τῷ χιλιάρχῳ τῆ ἀσείρης ὅτι ὅλη συσκέχου-
ται ἱερουσαλήμ.

32 Ὅς ἐξ αὐτῆς ἀφ' Ἰερουσαλὸν φραγιάταις καὶ
ἐκαστοῖς ἀρχαῖς, κατεδράμην ἐπ' αὐτούς. Οἱ
δὲ ἰδόντες τὸν χιλίαρχον καὶ τὰς φραγιάταις,
ἐπαύσαντο τύπτοντες τὸν Παῦλον.

33 Τότε ἐβόησεν ὁ χιλίαρχος ἐπιλάβειν αὐ-
τῶν, καὶ ἐκέλευσε δεῖξιναι ἀλύσει δυνάτι· ἔ-
πισημάνει τις αὐτῶν εἴη, καὶ τί ἐστι πεποιηκῶς.

34 Ἄλλοι δὲ ἄλλοι ἐβόων ἐν τῷ ὄχλῳ· μὴ
δυναμῶν δὲ γινῶναι τὸ ἀσφαλὲς εἶναι τὸ
θύρῳσον, ἐκέλευσεν ἄγεσθαι αὐτὸν εἰς πῦν
παριμβολίῳ.

35 Ὅτι

35 Ὅτε ἡ ἐχθρότης ἐπὶ τὰς ἀναδοθμῶς, συν-
 ἔβη βασιλεύσασαι αὐτὴν ὑπὸ τῶν ἑβραίων
 Διὰ τὸ βίαιον ἔθνος·

36 Ἡ ἐχθρότης γὰρ τὸ πλῆθος ἔλαβεν κρᾶζον·
 Αἶρε αὐτήν.

37 Μέλλωντες εἰσέλασθε εἰς τὸ παρεμβολικὸν ὁ
 Παῦλος, λέγει τῷ χιλιάρχῳ· Εἰ ἔστι μοι ἐι-
 πεῖν ἡ ἀπὸς σε; Ὁ δὲ εἶπεν· Ἐκλίνας ἐπιγνώσκεις;

38 Οὐκ ἄρα σὺ εἶ ὁ Αἰγύπτιος ὁ ἀπὸ τέτων τῶν
 ἡμερῶν ἀναστατώσεις ἐξαγορῶν εἰς τὸ ἔρη-
 μον τὰς τετρακιχλίους ἀνδράς τῶν σικελίων;

39 Εἶπε δὲ ὁ Παῦλος· Ἐγὼ ἀνθρώπος μὲν
 εἰμι Ἰσθαίου Ταρσοῦς, τῆς Κιλικίας ὅπου
 ἀσκήμα πόλεως πολίτης. δέομαι δὲ ὑμῶν ἐπι-
 τρεῖσθαι μοι λαλῆσαι ἀπὸς τὸ λαόν.

40 Ἐπιτρέψατο δὲ αὐτῷ, ὁ Παῦλος ἐστὼς
 ἐπὶ τῶν ἀναδοθμῶν κατίσθη τῇ χειρὶ τῷ
 λαῷ· πολλῆς δὲ σιγῆς γλυκομένης, ἀποσεφώ-
 νησεν τῇ ἑβραϊκῇ διὰ λέκτρα λέγων·

Κεφ. κβ'. 22.

1 Ἄνδρες ἀδελφοὶ καὶ πατέρες, ἀκούσατέ
 με τὸ ἀπὸς ὑμᾶς ἰὺν διπλολογίας·

2 (Ἀκούσατες δὲ ὅτι τῇ ἑβραϊκῇ διὰ λέκτρα
 ἀποσεφώνη αὐτοῖς, μέλλοντες παρέχειν ἵσυ-
 χίαν· καὶ φησιν)

3 Ἐγὼ μὲν εἰμι ἀνὴρ Ἰσθαίου, γλυκομένης
 ἐν Ταρσοῦ τῆς Κιλικίας, ἀναπηραμένης
 δὲ ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἀπὸ τῶν πόδας

X Γαμα-

Γαμαλιήλ, πιποδοδμήθη κη ἀπερίστοιαν
 ἔ πατρῶος νόμου, ζηλωτής ὑπάρχων ἔ
 Θεῶ, καθώς πάντες ὑμεῖς ἐστε σήμερον·

4 Ὅς ταύτην τ' ὁδὸν ἐδίωξα ἄχρι θανάτου,
 δεσμύων κη ὡδραδιδῶς εἰς φυλακῆς ἀν-
 δρας τε κη γυναῖκας,

5 Ὡς κη ὁ ἀρχιερός μαρτυρεῖ μοι, ἔ πᾶν τὸ
 πρεῖστυτέρον παρ' αἰν κη ἐπιστάτας δεξιά-
 μνηθη πρὸς τῶς ἀδελφῶς, εἰς Δαμασκὸν
 ἐπορεύομεν, ἄξων κη τῶς ἐκείσε ὄντας, δε-
 δεμῶς εἰς Ἰερουσαλήμ, ἵνα τιμωρηθῶσιν.

6 Ἐχθρόθη δὲ μοι πορεύομεν ἔ ἐρχίζοντι τῇ
 Δαμασκῷ πρὸς μεσημβρίαν, ἐξαίφνης ἐκ ἔ
 ἔραυθ πρὸς ἀσπράψα φῶς ἱκανὸν πρὸς ἐμέ·

7 Ἐπίσυν τε εἰς τὸ ἔδαφθη, κη ἤκουσα φωνῆς
 λεγούσης μοι· Σαῦλ, Σαῦλ, τί με διώκεις;

8 Ἐγὼ ἔ ἀπεκρίθην· Τίς εἶ Κύριε; Εἶπέ τε
 πρὸς με· Ἐγὼ εἰμι Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖθη, ὃν
 σὺ διώκεις.

9 Οἱ ἔ σὺν ἐμοὶ ὄντες τὸ μὲν φῶς ἐτεά-
 σανθη, κη ἔμφοδοὶ ἐχθρόνθη· τ' ἔ φωνῶν ὅσα
 ἔκασαν ἔ λαλῶνθός μοι.

10 Εἶπον δὲ· Τί ποιήσω Κύριε; Ὁ ἔ Κε-
 ριθη εἶπε πρὸς με· Ἀναστῶς πορεύε εἰς Δα-
 μασκὸν· καθεῖ σοι λαληθήσε) πρὸς πάν-
 των αἰν τέτακταί σοι ποιῆσαι.

11 Ὡς ἔ ἐκ ἐνέδολεπον, ἀπὸ τ' δόξης ἔ φωτῶς
 ἐκείνου, χροαγαλῆμνος ὑπὸ τ' σιωπῶν μοι,
 ἔλθον εἰς Δαμασκὸν·

12 Αἴνα-

- 12 Ανανίας δέ τις, ἀνὴρ δυσσεύς καὶ τὸ νό-
μον, μαρτυρέμενος ὑπὸ πάντων τῶν κατὰ
κέντρων Ἰερουσαλῶν,
- 13 Ἐλθὼν πρὸς με καὶ ἐπιστάς εἶπέ μοι· Σαῦλ
ἀδελφε, ἀνάβλεψον. Καὶ γὰρ αὐτῇ τῇ ὥρᾳ
ἀνέβλεψα εἰς αὐτόν.
- 14 Ὁ δὲ εἶπε· Ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν πρε-
σχέρισά σε γυναικὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ, καὶ
ιδεῖν τὸ δίκαιον, ἵνα ἀκούσῃ φωνὴ ἐν τῷ στό-
ματι σου αὐτοῦ.
- 15 Ὅτι ἔση μέρτυς αὐτῷ πρὸς πάντας ἀν-
θρώπους ὡς ἐώρακας καὶ ἤκουσας.
- 16 Καὶ νῦν τί μέλλεις; ἀναστὰς βάπτισαι, καὶ
ἀπόλασθαι τὰς ἁμαρτίας σου, ἐπικαλεσά-
μενος τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου.
- 17 Ἐχάρηθ' δέ μοι ὑποσρέψασθαι εἰς Ἱερουσα-
λήμ, καὶ πρὸς ἀρχιερεῖς με ἐν τῷ ἱερῷ, γητέ-
σαι με ἐν ἐκστάσει.
- 18 Καὶ ιδεῖν αὐτὸν λέγοντά μοι· Σπεῦσον, καὶ
ἔξελθε ἐν τάχει ἐξ Ἱερουσαλήμ· διότι ἐπι-
δέξονται σου τὸ μαρτυρεῖν πρὸς ἐμὲ.
- 19 Καὶ γὰρ εἶπον· Κύριε, αὐτοὶ ἐπίσαντες ὅτι
ἐγὼ ἤμην φυλακίζων καὶ δέρων καὶ τὰς σι-
αγωγὰς τὰς πειθύνοντας ἐπὶ σε.
- 20 Καὶ ὅτε ἐξεχῆτο τὸ αἷμα Στεφάνου τῷ
μάρτυρός σου, καὶ αὐτὸς ἤμην ἐφεισῶς, καὶ
σιωδουδικῶν τῇ ἀναιρέσει αὐτοῦ, καὶ φυλάσ-
σαν τὰ ἱμάτια τῶν ἀναιρέντων αὐτόν·

X 2

21 Καὶ

τὰς δόχλους κὴ ὅλον τὸ σινεδριον αὐτῶν· Ἐ
 κείθεν γὰρ τὸ Παῦλον, ἔειπεν εἰς αὐτὸς.

Κεφ. κγ'. 23.

1 **Α**' Τενίστας ἢ ὁ Παῦλος τῷ σινεδρίῳ,
 εἶπεν· Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐγὼ πίστη συνή-
 δησὶ ἀγαθῇ πεπολίτομαι τῷ Θεῷ ἀρε-
 ταιότης τῆς ἡμέρας.

2 Ὁ δὲ δόχλος Ἀνανίας ἐπέταξε τοῖς
 παρεστώσιν αὐτῷ τύπην αὐτὸς τὸ σῶμα.

3 Τότε ὁ Παῦλος πρὸς αὐτὸν εἶπε· Τύπην
 σε μέλλει ὁ Θεὸς, τοῖχε κεινομαδίε· καὶ σὺ
 καθὴ κείνων με κτὶ τὸ νόμον, κὴ τῶν ἰσχυρομένων
 κελούης με τύπεις;

4 Οἱ ἢ παρεστώτες εἶπον· Τὸν δόχλος ἔ-
 θεῖς λοιδορεῖς;

5 Ἐφη τὸ ὁ Παῦλος· Οὐκ ἤδην, ἀδελφοί,
 ὅτι ἐστὶν δόχλος· γέγραπτον γάρ· Ἀρχόντες
 εἰσὶ λαῶν (καὶ σὺ ἐρεῖς κακῶς).

6 Γινῆς ἢ ὁ Παῦλος ὅτι τὸ ἐν μέρος ἐπὶ σαρ-
 δεικῶν, τὸ ἢ ἕτερον Φαρισσαίων, ἐκραξεν
 ἐν τῷ σινεδρίῳ· Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐγὼ φαρι-
 σαῖός εἰμι, υἱὸς Φαρισσαίων· ὡς εἰ ἐλπιδὸς κὴ
 ἀναστάσεως νεκρῶν ἐγὼ κείνομαι.

7 Τῷτο ἢ αὐτὸς λαλήσασθαι, ἐξήρθε εἰς
 τὸ Φαρισσαίων κὴ τὸ σαρδεικῶν· Ἐ ἐχρίθη
 τὸ πλῆθος.

8 Σαρδεικαῖοι μὲν γὰρ λέγουσι μὴ εἶναι
 ἀνάστασιν, μηδὲ ἀγγελον, μήτε πνεῦμα·

X 3 Φαρι-

Φαρισαῖοι δὲ ὁμολογῶσι τὰ ἀμφότερα.

9 Ἐγένετο ἡ κραυγὴ μεγάλη. καὶ ἀναστάντες οἱ γραμματεῖς ἔμειραν τὸ Φαρισαῖον διμαρχοῦν, λέγοντες· Οὐδὲν κακὸν εὐελοκομῶν ἐν τῷ ἀνθρώπῳ τέτω· εἰ ἢ πνεῦμα ἐλάλησεν αὐτῷ, ἢ ἄγγελος, μὴ θεομαχῶν.

10 Πολλῆς δὲ ῥησομένης γένεως, ἐβλάθη θείος ὁ χιλιάρχος μὴ ἀφασαδῆ ὁ Παῦλος ὑπὸ αὐτῶν, ἐκέλευσε τὸ σπᾶτόν του κραδαῖν ἀρπάσσει αὐτὸν ἐκ μέσων αὐτῶν, ἀγῆν τε εἰς τὸ παρεμβολίον.

11 Τῇ δὲ ἐπίστασιν νυκτὶ ἐπιστὰς αὐτῷ ὁ Κύριος εἶπε· Θάρσει Παῦλε· ὡς γὰρ διμαρτύρω τὰ θεῖα ἐμῶς εἰς Ἱερουσαλήμ, ἔτι σε δεῖ καὶ εἰς Ρώμην μαρτυρῆσαι.

12 Γειτομένης ἡμέρας, ποιήσαντες Ἰουδαῖοι συστροφίαν, ἀνεθεμάτισαν ἐαυτοῖς, λέγοντες μήτε φαγεῖν μήτε πιεῖν ἕως ἂν ἀποκλείνωσι τὸ Παῦλον.

13 Ἦσαν δὲ πλείους τεσσαράκοντα οἱ ταῦτιν τὴν συνωμοσίαν πεποιηότες.

14 Οἵτινες προσελθόντες τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ τοῖς πρεσβυτέροις, εἶπον· Ἀναθεμάτι ἀνεθεμάτισαμεν ἐαυτοῖς, μηδένος γούσασθαι ἕως ἂν ἀποκλείνωμεν τὸ Παῦλον.

15 Νῦν οὖν ὑμεῖς ἐμφανίσαιτε τῷ χιλιάρχῳ σὺν τῷ συνεδρίῳ ὅπως αὔριον αὐτὸν κραδαίνω πρὸς ὑμᾶς, ὡς μέλλοντες ἀφαινεῖν αὐτὸν ἐκ οὐ-

ἀκρετότερον τὰ ὧρα αὐτῶν ἡμεῖς δὲ, ὡς ἔ-
 ἰργίσαμεν αὐτὸν, ἔτοιμοί ἐσμὲν ἔπειτα αὐτῶν.

16 Ἀκρίστος ἢ ὁ υἱὸς τῆς ἀδελφῆς Παύλου τινὸς
 ἐνέδραν, ὡς ἀφ' ἑαυτοῦ ἐπέσειλθεν εἰς τὸ
 παρεμβολῆσαι, ἀπήγαγεν τὸν Παύλον.

17 Προσκαλεσάμενος ἢ ὁ Παῦλος εἶτα τὸν
 ἐκαστὸν ἑαυτῶν, ἔφη· Τὸν νεανίαν τῆτον ἀπα-
 γαγεὶς πρὸς τὸν χιλιάρχον· ἔχει γὰρ ἡ ἀπαγα-
 γείλας αὐτοῦ.

18 Ὁ μὲν ἐν ἑαυτῶν αὐτὸν ἤγαγε πρὸς
 τὸν χιλιάρχον, καὶ φησιν· Ὁ δεσμιὸς Παῦλος
 προσκαλεσάμενός με ἠρώτησε τῆτον τὸν νεα-
 νίαν ἀγαγεῖν πρὸς σέ, ἔχοντά τι λαλήσει σοι.

19 Ἐπιλατόμενος ἢ τὸν χιλιάρχον αὐτῶν ὁ χιλιάρ-
 χος, ἐπειρώτησεν κατ' ἰδίαν, ἐπισημάνει
 τί ἐστιν ὃ ἔχεις ἀπαγαγεῖν μοι;

20 Εἶπε δὲ· Ὅτι οἱ Ἰουδαῖοι συνέθεντο ἔρω-
 τῆσαι σε ὅπως αὐρίον εἰς τὸ συνέδριον κατὰ γά-
 γης τῆς Παύλου, ὡς μέλλοντες ἡ ἀκρετότερον
 συμβῆναι αὐτῶν.

21 Σὺ ἐν μὴ πρόσθης αὐτοῖς ἐνεδρῶσαι γὰρ αὐ-
 τὸν ἐξ αὐτῶν ἀτόρες πλείους τεσσεράκοντα
 οἵτινες ἀνεπέμαψαν ἑαυτοῖς μήτε φαγεῖν μή-
 τε πιεῖν ἕως ἂν ἀνέλωσιν αὐτὸν· οὐ γὰρ ἔτοιμοί
 εἰσι, ὡς δεχόμενοι τὸ ἀπὸ σὲ ἐπαγγελίαν.

22 Ὁ μὲν οὖν χιλιάρχος ἀπέλυσε τὸν νεα-
 νίαν, ὡς ἀφ' ἑαυτοῦ μηδεὶ ἐκλαλήσει ὅτι
 ταῦτα ἐνεφάνισται πρὸς με.

- 23 Καὶ ἀποκαλεισάμενος δύο πιάς τῆς ἐκ-
 τῶν ἄρχων, εἶπεν· Ἐτοιμάσατε στρατιώτας Δα-
 κησίους, ὅπως πορεύωσιν ἕως Καισαρείας,
 καὶ ἵππεις ἑξοδμήκοντα, καὶ δεξιολόβους Δα-
 κησίους, ἀπὸ τρίτης ὥρας τῆς νυκτός·
- 24 Κτήνητε ὡδρασησάμενος, ἵνα ἐπιβιβάσωντες τὸν
 Παῦλον διασώσωσι πρὸς Φήλικα τῆς ἡμετέρας.
- 25 Γράψας ἐπιτολῶν διεπέχεσαν τὸ τύπον
 τῶτον·
- 26 Κλαύδιος Λυσίας τῷ κρητίστῳ ἡγεμόνι
 Φήλικι χαίρειν.
- 27 Τὸν ἄνδρα τῶτον συλληφθέντα ὑπὸ τῶν Ἰσ-
 δαίων, καὶ μέλλοντα ἀναιρεῖσθαι ὑπὸ αὐτῶν,
 ἐπιστάς σου τῷ στρατόματι ἐξέλομην αὐ-
 τὸν, μαθὼν ὅτι Ῥωμαῖός ἐστι.
- 28 Βελόμην δὲ ἢ γνῶναι τὴν αἰτίαν δι' ἣν
 ἐνεκάλει αὐτῷ, κατήγαγον αὐτὸν εἰς τὸ
 στωέθριον αὐτῶν.
- 29 Οἱ δὲ οὐδὲν ἐγκαλέσμενοι πρὸς ζήτημά τινος
 τῶν νόμων αὐτῶν, μηδὲν ἢ ἀξιὸν θανάτου ἢ
 δισμῶν ἐκλήμα ἔχοντα.
- 30 Μηνυθείσης δὲ μοι ἐπιβεληῆς εἰς τὸν ἄνδρα
 μέλλον ἔσεσθαι ὑπὸ τῶν Ἰσδαίων, ἐξαυτίης ἐπεμ-
 ψα πρὸς σε ὡδραφείλας καὶ τοῖς κατηγ-
 ροῖς λέγειν τὰ πρὸς αὐτὸν ἐπὶ σοῦ. Ἐῤῥώσο.
- 31 Οἱ μὲν οὖν στρατεύματα καὶ τὸ διατεταγμέ-
 νον αὐτοῖς, ἀναλαβόντες τὸν Παῦλον, ἤγαγον
 αὐτὸν τῆς νυκτός εἰς τὴν Ἀντιπατερίδα.

32 Τῆς ἑπιπέριον ἐάσωτες τὴν ἰππέην πο-
ρῶσθαι σὺν αὐτῷ, ὑπέσφρασαν εἰς τὴν
παρεμβολὴν.

33 Οἵτινες εἰσελθόντες εἰς τὴν Καισάρειαν, καὶ
ἀναδόντες τὴν ἐπιστολὴν τῶν ἡγεμόνων, παρέστη-
σαν καὶ τῷ Παύλῳ αὐτῶν.

34 Ἀναγνὼς δὲ ὁ ἡγεμὼν, καὶ ἐπερωτήσας ἐκ
ποιᾶς ἐπαρχίας εἶσι, καὶ πυθόμενος ὅτι διὰ
Κιλικίας·

35 Διακῆσομαι (εἶπε, ἔφη, ὅταν εἰ οἱ κατήγοροί
(εἰς ὡδραχόων). Ἐκέλευσέ τε αὐτὸν σὺν τῷ
πραιποσίτῳ Ἡρώδῃ φυλάσσειν.

Κεφ. κδ'. 24.

1 Μετὰ δὲ πέντε ἡμέρας κατέβη ὁ ἀρχιερεὺς
Ἀνανίας μετὰ τῶν πρεσβυτέρων, καὶ ῥήτο-
ρῶν Τερτύλλου πρὸς, οἵτινες ἐνεφάνισαν τῷ
ἡγεμόνι καὶ τῷ Παύλῳ.

2 Κληθέντων δὲ αὐτῶν, ἤρξατο κατηγορεῖν ὁ
Τερτύλλος, λέγων·

3 Πολλὰς εἰρώνης τυχεύοντες διὰ τοῦτο, ἐκα-
θίσταμεν τῶν γενεῶν τῶν ἐθνῶν τὰς διὰ τὴν
σῆς σωτηρίας, πάντῃ τε ἐπιπλοῦντες διὰ τὸ ἐχθ-
ρῆσαι, κράτιστε Φηλιεῦ, μετὰ πάσης εὐχαριστίας.

4 Ἴνα δὲ μὴ ἐπιπλοῦν σε ἐγκόπιον, πα-
ρακαλῶ ἀκούσῃ σε ἡμῶν σπουδῆως τῆς σῆς
ἐπιφάνειας.

5 Εὐρόντες γὰρ τὸ ἄτορα τῶν λοιμῶν, καὶ κι-
νῶντες πάντας τοὺς Ἰουδαίους τοὺς καὶ τὸ

οικαμήνῳ, ἀποδοτέῳ τε τῷ Ναζω-
ραίων αἵρέσεως,

6 Ὅς κὶ τὸ ἱερόν ἐπέερασε βεβηλώσαι, ὃν ἔ-
σκερήσαμεν, κὶ κτῆ τὸ ἡμέτερον νόμον ἠτε-
λήσαμεν κείνῳ.

7 Παρελθὼν δὲ Λυσίας ὁ χιλιάρχῳ, μὲν
πολλῆς βίας ἐν τῷ χρωῶν ἡμῶν ἀπήγαγε·

8 Κελύουσας τὰς κλητήρας αὐτῶν ἔρχεσθαι
ἐπί σε· παρ' ἐδωθήκη αὐτὸς ἀνακρίνας
πρὸ πάντων τούτων ἐπιγνώσασθαι ὡς ἡμεῖς
κλιτήραμεν αὐτῶν.

9 Σωθέντι δὲ κὶ οἱ Ἰεσσαῖοι, φάσκοντες
ταῦτα ἔπως ἔχῃν.

10 Ἀπεκρίθη δὲ ὁ Παῦλῳ, ἰδύσασθαι αὐ-
τῷ τὸ ἡμέτερον λέγειν· Ἐκ πολλῶν ἐτῶν ὄντα
σε κριτὴν τῶ ἔθνει τούτῳ ἐπιστάμεν, ὁ βου-
λόμενος τὰ πρὸ ἐμαυτοῦ ἀπολογῆσθαι·

11 Δωαμήνῳ ἔσθι γινώσκω ὅτι ἐπλείεις εἰσὶ
μοι ἡμέρας ἢ δεκάδυο, ἀφ' ἧς ἀνέβην ἀποσ-
κωήσων ἐν Ἱερουσαλήμ.

12 Καὶ ἔτε ἐν τῷ ἱερῷ δῆρόν με πρὸς πικρὸν
ἀφελήσασθαι, ἢ ἐπισύστασιν ποιῆσαι ὄχλου,
ἔτε ἐν ταῖς συναγωγαῖς, ἔτε κτῆ τὸ πόλιν·

13 Οὐτε ἀφελήσασθαι δύναμαι πρὸς ὧν ἵν
κλιτήρασίν με.

14 Ομολεῶν δὲ τούτοις σοι, ὅτι κτῆ τὸ ἴδιον βού-
λομαι λέγειν αἵρεσιν, ἔγω λατρεύω τῷ πα-
τρὶ ὁ Θεός, πιστεύων πάνσι τοῖς κτῆ τὸ νό-
μον

μην κὶ ἐν τοῖς παροφθαλμοῖς γεγραμμένοις·

15 Ἐλπίδα ἔχον εἰς τὸ Θεόν, ἡμῶν κὶ αὐτοῖ ἔτοι
παροσδέχον), ἀνάστασιν μέλλειν ἐνεσθαι τε-
κρῶν, δικαίαν τε κὶ ἀδίκων.

16 Ἐν τέτρῳ δὲ αὐτὸς ἄσκησεν, ἀπερόσκοπον
σωείδην ἔχον παρὰ τὸ Θεόν κὶ τὰς ἀνθρώ-
πων Διαπαντός·

17 Δι' ἐπιπῶν ἢ πλεονόντων παρεχρόμιον ἐλεη-
μοσύνας ποιήσων εἰς τὸ ἔθνος μου κὶ παροσ-
φοράς.

18 Ἐν οἷς ὄρον με ἠγνισμῶν ἐν τῷ ἱερῷ,
ἔμψυχον ὄχλον, ἔδὲ μὲν ἰουδαίους, πῖτες δὲ ἀπὸ τῆ
Ἀσίας ἰουδαῖοι.

19 Οὓς εἶδὼς ἐπὶ σὺ παρεῖναι, κὶ καθήκον
εἶπεν ἔχον παρὰ με.

20 Ἡ αὐτοῖ ἔτοι εἰπάτωσαν εἰ πὲρ ὄρον ἐν
ἐμοὶ ἀδίκημα, πάντες με ἐπὶ τῷ συνεδρίῳ,

21 Ἡ δὲ πρὸς μίαν ταύτης φωνῆς, ἧς ἐκράξα
εἰσὼς ἐν αὐτοῖς· Ὅτι πρὸς ἀναστάσεως τεκρῶν
ἐγὼ κείνομαι σήμερον ὑφ' ὑμῶν.

22 Ἀκούσας δὲ ταῦτα ὁ Φηλιξ ἀνεβίβασεν
αὐτὰς, ἀκροβύστερον εἰδὼς τὰ πρὸς τὸ ἔθνος,
εἰπὼν· Ὅταν Λυσίας ὁ χιλιάρχος καθύμῃ,
ἀναγγέλλομαι τὰ καθ' ὑμᾶς.

23 Διαβουλεύσας τε τῷ ἐκατοντάρχῃ τερτί-
ουδαι τὸ Παῦλον, ἔχον τε ἀνεσθαι, κὶ μηδέν
καλύψαι τῶν ἰδίων αὐτῷ ἐπαρῆσθαι, ἢ παροσ-
φάσαι αὐτὸν.

24 Μετὰ

24 Μετὰ ἧ ἡμέρας πύας ἀρχαρχοῦμενος ὁ Φῆλιξ σὺν Δρασίβη τῇ γυναικὶ αὐτῆ ἔση Ἰσθαία, μετεπέμψατο τὸν Παῦλον, καὶ ἤκουσεν αὐτὸν ὡς εἶπεν εἰς Χριστὸν πίστεως.

25 Διαλεγεμένων ἡ αὐτῆ ὡς εἶπεν διηγουμένης καὶ ἑκκαλείας ἔειπεν κρίματι ἔειπεν μέλλοντι ἔσεσθαι, ἐμφοδοῦ ἀρχοῦμενος ὁ Φῆλιξ ἀπεκρίθη· Τὸ ἴνυ ἔχον ποροῦς· κηρὸν ἡ μετὰ λαδὸν μετὰ καλίστομαί σε·

26 Ἄμω ἡ καὶ ἐλπίζων ὅτι χρηματὰ δοθήσεται αὐτῷ ὑπὸ τοῦ Παύλου, ὅπως λύσῃ αὐτόν· διὸ καὶ πυκνότερον αὐτὸν μετεπέμψατο, ὡμίλη αὐτῷ.

27 Διαίτας ἡ πληρωθείσης ἔλαβε ἀφ' ὧν ὁ Φῆλιξ Πόρκιον Φῆστον γέλων τε χαιρέτας κατὰ γέλωτος Ἰσθαίοις ὁ Φῆλιξ, κατέλιπε τὸν Παῦλον δεδεμένον.

Κεφ. κε'. 25.

1 Φῆστον σὺν ἐπίσθας τῇ ἐπαρχίᾳ, μετὰ πρεῖς ἡμέρας ἀνέειχεν εἰς Ἱεροσόλυμον ἀπὸ Καισαρείας.

2 Ἐνεφάνισεν δὲ αὐτῷ ὁ ἀρχιερεὺς καὶ οἱ ἑσφῶτοι τῶν Ἰσθαίων καὶ τὸν Παῦλον, καὶ παρεκάλειν αὐτόν,

3 Αἰτέμενοι χαιρὸν κατὰ αὐτῆ, ὅπως μεταπέμψῃται αὐτόν εἰς Ἱερουσαλήμ· σὺν ὄφρα παισὶνες ἀνελεῖν αὐτόν καὶ τὸ ὄδον.

4 Ὁ μὲν σὺν Φῆστον ἀπεκρίθη τρεῖς τὸν Παῦλον

Παῦλον ἐν Καισαρείᾳ, ἐαυτὸν ᾗ μέλλεν ἐν
πέχῃ ἐκπορεύεσθαι.

5 Οἱ οὖν διώκται ἐν ὑμῖν, φησὶ, συγκατα-
βάντες, εἴπερ ἐστὶν ἐν τῷ ἀνδρὶ τέττω, κατηγο-
ρεύτωσαν αὐτῷ.

6 Διατείψας ᾗ ἐν αὐτοῖς ἡμέρας πλείους
ἢ δέκα, κατὰ οἶκον εἰς Καισαρείαν, τῇ ἐπαύ-
ριον καθίσας ἐπὶ τῷ βήματι, ἐκέλευσε τὸν
Παῦλον ἀχθῆναι.

7 Παραχρῆμα δὲ αὐτῷ, παρείστησαν οἱ
ἀπὸ Ἱεροσολύμων καταβεβηκότες Ἰουδαῖοι,
πολλὰ καὶ βαρῆα αἰπάματα φέρυτες καὶ τὸν
Παῦλον, ἀσκήσουσιν ἀποδείξαι.

8 Ἀπολογησάμενος αὐτῷ, ὅπως εἰς τὸ νό-
μον τῶν Ἰουδαίων, ἔτε εἰς τὸ ἱερόν, ἔτε εἰς Καί-
σαρᾶ πῆμαρτον.

9 Ὁ Φῆς δὲ ᾗ τοῖς Ἰουδαίοις θέλων χάριν
καταθέσθαι, ἀποκριθεὶς τῷ Παύλῳ εἶπε·
Θέλεις εἰς Ἱεροσόλυμα ἀναστῆναι, ἐκεῖ παρὶ
τέττων κολιθεῖν ἐπ' ἐμῶ;

10 Εἶπε ᾗ ὁ Παῦλος· Ἐπὶ τῷ βήματι Καίσα-
ρος ἐγὼ εἰμι, ἔμε δεῖ κολιθεῖν· Ἰουδαῖος
ἔδεν ἠδίκησα, ὡς καὶ σὺ κράστιον ἐπιγνώσκεις.

11 Εἰ μὲν ἄδικῶς, ἔξιον θανάτου πέπραχάμι,
ἔσθ' ὄφρα ἵκωμαι τὸ ἀποθανεῖν· εἰ δὲ ἔδεν ἐστὶν
ὧν ἔτοι κατηγορήσιν με, ἔδειξέ με διώταται
αὐτοῖς χαρίσεσθαι. Καίσαρος ἐπικαλέωμαι.

12 Τότε ὁ Φῆς· συναλήθως μὲν τῷ συμ-
βλήθαι,

βαλίᾳ, ἀπεκρίθη· Καίσαρα ἐπικέκλησται·
ἐπὶ Καίσαρα πορεύσῃ.

13 Ἡμερῶν ἢ Δεκαημοῦν Ἰανῶν, Ἀγρίπ-
πας ὁ βασιλεύς κὶ Βερνίκη καλῶτάσων εἰς
Καισάρειαν, ἀπασιμόμοι τὸ Φῆσιν.

14 Ὡς ἢ πλείους ἡμέρας διέτριβον ἐκεῖ, ὁ
Φῆσεν τῷ βασιλεῖ ἀνεθεῖναι τὴν κῆρ τὸ Παῦ-
λον, λέγων· Ἀγὴρ ἴσῃ καὶ ἀλεξάνδρου
ὑπὸ Φήλικου δέσμιου,

15 Περὶ δὲ, ἡμοῦν με εἰς Ἱεροσόλυμα,
ἐπιφάνισαν οἱ ἀρχιερεῖς κὶ οἱ πρεσβύτεροι τὸ
Ἰουδαίων, αἰτήμοιοι κατ' αὐτὸ δίκην.

16 Πρὸς δὲ ἀπεκρίθην, ὅτι οὐκ ἔστιν ἔθος Ῥω-
μαίοις χαρίζεσθαι ἴνα ἀνθρώπον εἰς ἀπί-
λθαν, πρὶν ἢ ὁ κατήγορος κῆρ ἀπόσπον
ἔχῃ τὰς κατηγορίας, τόπον τε ἀπολογίας λά-
βοι καὶ τὸ ἐγκλήματι.

17 Συναλεθόντων ἐν αὐτῶν ἐνθάδε, ἀναθο-
λῶν μηδεμίαν ποιησάμεν, τῇ ἐξῆς κατ-
ίσας ἐπὶ τὸ βήματι, ἐκέλευσα ἀχθῶναι
τὸ ἀνδρα.

18 Περὶ δὲ παύσας οἱ κατήγοροι ἐδεμίαν
αἰτίαν ἐπέφερον ἢ ὑπενόον ἐγώ·

19 Ζητήματι δὲ ἴνα καὶ τὸ ἴδιον δεισιδα-
μονίας εἶχον πρὸς αὐτὸν, κὶ καὶ πῶς Ἰησοῦ
πεθνηκότῃ, ἢ ἔφασκεν ὁ Παῦλος ζῆν.

20 Ἀπορέμεν ἢ ἐγὼ εἰς τὴν καὶ τὰς
ζήτησιν, ἔλεγον εἰ βέλτοις πορεύεσθαι εἰς
Ἱερου-

Ἱερουσαλήμ, καὶ κεί κρινέσθαι ὡς τῶν.

21 Τῷ δὲ Παύλῳ ἐπιβαλεσαμένους τηρηθῆναι αὐτὸν εἰς τὴν Σέδαση Διάγνωσιν, ἐκίλευσα τηρεῖσθαι αὐτὸν, ἕως ἃ πέμψω αὐτὸν ὡς Καίσαρα.

22 Ἀρρίππας δὲ ὡς τὸ Φῆσον ἔφη· Ἐβελόμην καὶ αὐτὸς δὲ ἀνθρώπος ἀκῆσαι. Ὁ δὲ Αὔρον, φησὶν, ἀκῆσαι αὐτῷ.

23 Τῇ οὖν ἐπαύρῳ ἐλθόντων δὲ Ἀρρίππα καὶ τῆ Βερνίκης μετὰ πολλῆς Φαιλασίας, καὶ ἐσελθόντων εἰς τὸ ἀκροατήριον σὺν τε τοῖς ἡγεταῖς, καὶ ἀνδράσι τοῖς κατ' ἐξοχὴν ἔσι τῆ πόλεως, καὶ κελύσαντων δὲ Φήσας, ἤχη ὁ Παῦλος.

24 Καὶ φησὶν ὁ Φῆσας· Ἀρρίππα βασιλεῦ, καὶ πάντες οἱ συμπαιρόντες ἡμεῖν ἄνδρες, θεωρεῖτε τῶν ὡς ἔστι πᾶν τὸ πλῆθος τῆ Ἰουδαίου ἐντυχόν μου ἐν τε Ἱεροσολύμοις ἔστι ἐνθάδε, ἐπισκοπῶντες μὴ δεῖν ζῆν αὐτὸν μηκέτι.

25 Ἐγὼ δὲ καθάλαβόμην μηδὲν ἄξιον γινάσκειν αὐτὸν πεπραχέναι, καὶ αὐτῷ δὲ τῶν ἐπιβαλεσαμένους τῆ Σέδασον, ἕκριναι πέμψαι αὐτὸν.

26 Περὶ δὲ ἀσφαλὲς πὶ γράψαι τῶν κυρίως ἔχω. διὸ παρήγαγον αὐτὸν ἐφ' ὑμῶν, καὶ μάλιστα ἐπὶ σῷ βασιλεῦ Ἀρρίππα, ὅπως τῆ ἀνακρίσεως γνομένης ἔχω πὶ γράψαι.

27 Ἄλλοθεν

27 Ἄλογον γάρ μοι δοκεῖ, πέμποντά με δεσμίον, μὴ εἶναι κατ' αὐτῆς αἰτίας σημαῖναι.

Κεφ. κς'. 26.

1 ἈΓεῖπώσας ἡ αὐτῶς τὸ Παῦλον ἔφη· Ἐπιτρέπεταί σοι ὑπὲρ σταυρῶν λέγειν. Τότε ὁ Παῦλος ἀπελογεῖτο, κλείνας τὴν χεῖρα·

2 Περὶ πάντων αὐτῷ ἐγκαλῶμαι ὑπὸ Ἰουδαίων, βασιλεῦς Ἀγρίππα, ἡγεμονίᾳ ἐμαυτοῦ μακρόχρονον μέλλων ἀπολογεῖσθαι ἐπὶ σὺ σήμερον·

3 Μάλιστα γνώσκω ὅτι σε πάντων τῶν κατὰ Ἰουδαίους ἐστὶν τε ἐζητημάτων. διὰ δέομαι ἑμε, μακροχρόνως ἀκῆσθί με.

4 Τὴν μὲν οὖν βίωσίν με τὸ ἐκ νεότητός, καὶ ἀπὸ δόξης γυρομῆν ἐν ταῖς ἐθνεῖς με ἐν Ἱεροσολύμοις, ἴσασι πάντες οἱ Ἰουδαῖοι·

5 Προγενώσκοντές με ἀνώθεν, (εἰάν τίλωσι μαρτυρεῖν) ὅτι κατὰ τὸ ἀκροατοῦσά τινα αἴρουν τὴν ἡμετέρας Ἰησοῦς ἐξήσασα Φαρισαῖός·

6 Καὶ νῦν ἐπ' ἐλπίδι τῆς αὐτῶς τῶν πατέρων ἐπαγγελίας γυρομῆν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, ἐσηκῶ κρονομῶ·

7 Εἰς ταῦτ' ἡ δωδεκάφυλοι ἡμῶν ἐν ἐπιτελείᾳ νύκτα εἰς ἡμέραν λατρεῦον ἐλπίζον καλαωτήσασα. αὐτοῖς ἡς ἐλπίδος ἐγκαλῶμαι, βασιλεῦς Ἀγρίππα, ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων.

8 Τί; ἀπίστον κρινεται παρ' ὑμῖν εἰ ὁ Θεὸς νεκρῶς ἐγείνηται;

9 Ἐγὼ μὲν εἶν' ἰδοῦσα ἐμαυτῷ αὐτῶς τὸ ὄνομα

μςβ

μα Ἰησοῦ ὁ Ναζωραῖος δεῖν πολλά ἐναντία
πρᾶξαι.

10 Οὐκ ἐποίησα ἐν Ἱεροσολύμοις· ἔ πολλὰς
τῶ ἀγίων ἐγὼ φυλακῆς κατέκλεισα, πλὴν
ὡρᾶ τῶ δρχιερίων ἐξέστειλάν λαθῶν ἀνακρι-
μένων τε αὐτῶν κατέκλεισα ψῆφον.

11 Καὶ κῆ πάσας τὰς συναγωγὰς πολλάκις
πρωτῶν αὐτῶν, ἠνάγκασον βλασφημεῖν,
ὡς οὐκ ἐπίμνησάντων αὐτοῖς, ἐδίωκον
ἕως ἔς εἰς τὰς ἕξω πόλεις.

12 Ἐν οἷς ἔ πορεύομαι εἰς τὸ Δαμασκὸν μετ᾽
ἐξέστειλάν καὶ ἐπιτροπῆς τῶ ὡρᾶ τῶ δρχιερίων,

13 Ἡμέρας μείσης, κῆ πλὴν ὁδὸν εἶδον, βα-
σιλεῦ, ἐρανόθεν ὑπὲρ πλὴν λαμπρότητα ὡ
ἠλίς, ὡς ἐλάμψαν με φῶς καὶ τὰς σὺ ἐμοῖ
πορεύομαι.

14 Πάντων ἡ κατὰπεσόντων ἡμῶν εἰς τὸ γλῶ,
ἡκαστα φωνῶν λαλῶσαν πρὸς με, καὶ λέγουσαν
τῆ Ἐθραϊδὶ Δαλέκλω· Σαῦλ, Σαῦλ, τί με
διώκεις; σκληρὰν σοι πρὸς κέντρα λακτίζεις.

15 Ἐγὼ ἡ εἶπον· Τίς εἶ Κύριε; Οὐ ἡ εἶπον·
Ἐγὼ εἶμι Ἰησοῦς ὁν σὺ διώκεις.

16 Ἀλλὰ ἀνάστηθι, καὶ στήθι ἐπὶ τὰς πόδας
ὡς· εἰς τὸ γλῶ φθῶ σοι, ὡς ἡ ἀποσταθῶ
σε ὑπὲρ πλὴν καὶ μέρου ὡν τε εἶδες, ὡν τε
ὁφθίσουσί σοι.

17 Ἐξαιρέματός σε ἔκ τῶ λαῶ καὶ τῶ ἔθνω, εἰς
ὧς νῦν σε ἀποπέλλω,

- 18 Ανοίξαυ ὀφθαλμούς αὐτῶν, ἵ ἐπιπέψαυ
 δὲ πὸ σκοτίας εἰς Φῶς, καὶ τὴ ἐξουσίας Ἰου-
 λιαῦ ἐπὶ τὸ Θεόν, ἵ λαοῦσιν αὐτὸς ἀφείσθαι
 ἀμαρτιῶν, καὶ κληροῦ ἐν τοῖς ἡγιασμένοις,
 πίστι τῇ εἰς ἐμέ.
- 19 Ὅθεν, βασιλεῦ Ἀγρίππα, ἐπεὶ ἐβου-
 λην ἀπέστῆς τῇ ἐραυίῃ ὀπτασία·
- 20 Ἀλλὰ τοῖς ἐν Δαμασκῷ ᾤσῃτον καὶ Ἰε-
 ρουσολύμοις, εἰς πᾶσαν τε τὴ χώραν τὴ Ἰου-
 δαίας, καὶ τοῖς ἔθνεσιν, ἀπήχελλον μετὰσεῖν,
 καὶ ἐπιπέφην ἐπὶ τὸ Θεόν, ἀξία τὴ μετάνοίας
 ἔργα πρῶσοσῆας.
- 21 Ἐνεκα τούτων με οἱ Ἰουδαῖοι συλαβοῦδροι
 ἐν τῷ ἱερῷ, ἐπερῶντο ἀφ' ἡμεῶν.
- 22 Ἐπιπερίας οὐκ ἔτυχον τὸ ἔργον τὸ Θεῶ,
 ἀλλὰ τὴ ἡμέρας ταύτης ἔσηκα, μαρτυρέμε-
 νοῦ μικρῶ τε καὶ μεγάλῳ, ἐδόν ἐκ τῶς λέγουσ-
 ῶν τε οἱ ᾤσῃται ἐλάλησασ μελλόντων γέ-
 νεσ, καὶ Μωσῆς·
- 23 Εἰ παθητὸς ὁ Χριστὸς, εἰ ᾤσῃται ἐξ
 ἀναστάσεως νεκρῶν Φῶς μέλλει καὶ ἐλάλησασ
 τῶ λαῷ καὶ τοῖς ἔθνεσι.
- 24 Ταῦτα ἡ αὐτὸς ἀπολογουδρῶς, ὁ Φῆς τῶ
 μεγάλῃ τῇ Φωνῇ ἔφη· Μακρῇ Παῦλς· τὰ
 πολλά σε γράμματῶ εἰς μακρῆσαν ᾤσῃται ἐπέ-
 σῃ.
- 25 Ὁ δὲ· Οὐ μᾶτομα, φησὶ, κρῶπτε Φῆ-
 σε, ἀλλὰ ἀληθείας καὶ σωφροσύνης ἔματῶ
 ἀποφῆγῃμα.

26 Ἐπίσταται γὰρ ὡς τῶν ὀ βασιλεύς, ὡς ὃν καὶ παρρησιαζόμενος λαλῶ· λαοφάνει γὰρ αὐτὸν ἡ τῶν ἐπίσημοι ἐδέν· ἐγὰρ εἰσιν ἐν γυνίαι πεπερασμένον τῆτο.

27 Πιστός βασιλεὺς Ἀγρίππα τοῖς ἀσφίταις οἶδα ὅτι πιστός.

28 Ὁ ἦ Ἀγρίππας πρὸς τὸ Παῦλον ἔφη· Ἐν ὀλίγω με πείθεις Χριστιανὸν γυνέαι.

29 Ὁ ἦ Παῦλος εἶπεν· Εὐξαίμιον αὐτῶ Θεῶ, καὶ ἐν ὀλίγω εἰ ἐν πολλῶ ἐμόνον σε, ἀλλὰ καὶ πάντας τῶς ἀκρόντας με σήμερον, γυνέαι τοῖς τῶς ὀποῖος καὶ γὼ εἰμι, παρ-εκτός τῶ δεσμῶν τῶτων.

30 Καὶ ταῦτα εἰπὼν αὐτῶ, ἀνέστη ὁ βασιλεύς εἰ ὁ ἡγεμῶν, ἢ τε Βερνίκη, καὶ οἱ συγκατήρητοι αὐτοῖς.

31 Καὶ ἀναχωρήσαντες ἐλάλουν πρὸς ἀλλή-λους, λέγοντες· Ὅτι ἐδέν θανάτος ἀξίον ἢ δεσμῶν πρὸς ὁ ἄνθρωπος εἶτος.

32 Ἀγρίππας ἦ ταῦ Φήσας ἔφη· Ἀπολελύ-σθαι ἐδύνάτω ὁ ἄνθρωπος εἶτος εἰ μὴ ἐπεκέ-κλητο Καίσαρος.

Κεφ. κζ. 27.

1 **Ω**ς ἡ ἐκείνη εἰ ἀποπλεῖν ἡμῶς εἰς τὴν Ἰταλίαν, παρεδίδεν τὸν τε Παῦλον καὶ πνας ἑτέρως δεσμῶν ἐκαθ' ἑαυτῶν, ὀνό-ματι Ἰαλίας, ἀπείρης Σεβαστῆς.

2 Ἐπιβάντες εἰς πλοῖον Ἀδραμυτίνων, μέλλον-

μέλλοντες πλεῖν τῶν κτ̄ τ̄ Ἀσίαν τόπους,
ἀνιχθημένων, ὅτι σὺ ἡμεῖν Ἀριστάρχου Μα-
κεδόνος Θεσσαλονικέως.

3 Τῇ τε ἐπέροι κατήχθημεν εἰς Σιδῶνα. Φι-
λαυφρώπως τε ὁ Ἰέλιος τῷ Παύλῳ χρησα-
μενος, ἐπέτερεψε πρὸς φίλους προσθέντα
ἐπιμελείας τυχεῖν.

4 Καὶ εἶπεν ἀναχθέντες ὑπερὸς πλοῦτον τ̄
Κύπρον, ἀφ' οὗ τῶν ἀνέμων εἶναι ἐναντίας.

5 Τό, τε πειλαγὸς τὸ κτ̄ τ̄ Κιλικίαν καὶ
Παμφυλίαν ἀφ' ὑπερὸς πλοῦτον, κατήχθημεν
εἰς Μύρα τ̄ Λυκίας.

6 Καὶ εἶπεν δὴρὸν ὁ ἐκαστοῦτος πλοῦτον
Ἀλεξασδρίνοι πλοῦτον εἰς τ̄ Ἰταλίαν, εὐεβί-
βασεν ἡμεῖς εἰς αὐτό.

7 Ἐν ἰκαθῶν ἡμέραις βορρὸν πλοῦτοντες,
καὶ μόλις χυόμενοι κτ̄ τ̄ Κνίδον, μὴ πρὸς πλοῦτον
τῶν ἡμεῖς ἀνέμων, ὑπερὸς πλοῦτον τῶν
Κρήτων κτ̄ Σαλιμώνων.

8 Μόλις τε ὄψαλε χυόμενοι αὐτῶν, ἤλθο-
μεν εἰς τόπον ἕνα καλεόμενον Καλῆς λιμέ-
νας, ἧ ἔστιν ἡ πόλις Λασαία.

9 Ἰηανὲς ἡ γέρων ἀφ' ἡμεῖς, καὶ ὅτι
ἤδη ἐπισφαλῆς ἔστι πλοῦτος, ἀφ' οὗ καὶ τῶν
νεκείων ἤδη παρεληλυθέναι, παρεῖναι ὁ
Παῦλος,

10 Λέγων αὐτοῖς ἄνδρες, θεωρῶ ὅτι μετ'
ὑβρίων καὶ πολλῆς ζημίας ἔμεινον ἔσονται
καὶ

καὶ τῶν πλοίων, ἀλλὰ καὶ τῶν ψυχῶν ἡμῶν μέλ-
 λει ἴσασθαι τὸν πλοῖον.

11 Οὗτος ἔκτισεν ἀρχὴν τῶν κυβερνητῶν καὶ τῶν
 ναυκλήρων ἐπέειπε μάλλον ἢ τοῖς ὑπὸ τῶν
 Παύλου λεηθέρμοις.

12 Αἰσούθητε ἡμεῖς λιμνῶν ὑπεράρχοντες πρὸς
 τὴν Ἰσραηλῆσιν, οἱ πλοῖα ἐγένετο βαλῶν
 ἀναχθῆναι καὶ κείθεν, εἴπως δύναντο κολιαν-
 τήσαντες εἰς Φοίνικα τὴν Ἰσραηλῆσιν, λιμνῶν
 τῆς Κρήτης βλέποντες καὶ Λίβα καὶ κατὰ
 Χῶρον.

13 Ὑποπνύσαντες ἡμεῖς Νότα, δόξαντες τῆς
 ἀσθενείας κεκρατηκέναι, ἄραγες ἄσπον
 παρελέγημεν τῆς Κρήτης.

14 Μείλις πολὺ ἡμεῖς ἐβαλε καὶ αὐτῆς ἀνεμῶν
 τυφωκῆς, ὁ καλέμενος Εὐροκλύδων.

15 Συναρπιασθέντες ἡμεῖς πλοῖα, ἔμην δυ-
 ναμῶν ἀντοφθαλμεῖν τῶν ἀνέμων, ἐπιδόντες
 ἐφερόμεθα.

16 Νησίον δὲ ἡμεῖς ὑποδραμῶνες καλέμενον
 Κλαυδῶν, μέλις ἰχύσαμεν ἀεικρατεῖς
 ἡμεῖς τῆς σκάφης.

17 Ἦν ἄραγες, βοηθείαις ἐχρῶμεν, ὑποζων-
 νώτες τὸ πλοῖον. Φοβέμεθα τε μὴ εἰς τὴν
 Σύρην ἐκπέσωσι, χαλάσαντες τὸ σκεῦος,
 ἕτως ἐφείροντες.

18 Σφοδρῶς ἡμεῖς χιμαζομένων ἡμῶν, τῆ ἐξῆς
 ἐκδοκῶν ἐποιεῖν.

- 19 Καὶ τῇ τρίτῃ αὐτόχρηστος ἔπεμψε τὸ πλοῖον ἐν ἑσπέρῳ.
- 20 Μήτε γὰρ ἡλίος, μήτε ἄστρον ἐπιφανήσῃ ἐπὶ πλείονας ἡμέρας, χιμῶνός τε σὺν ὀλίγῃ ἐπιχειρήσῃ, λοιπὸν πείθεσθαι δεῖ πάντας ἐλπίσας ἑσθ' ὑμῶν.
- 21 Πολλῆς γὰρ ἀσκήσεως ὑπαρχούσης, τότε συνέειπεν ὁ Παῦλος ἐν μέσῳ αὐτῶν, εἰπὼν· Ἐγὼ δὲ μὴ ἄνθρωποι, ἀλλ' ἄνδρες, περὶ ταρχήσαντος μοι, μὴ ἀγνοήσατε ὅτι τῆς Κρήτης, κερδῆσαί τε τὸ ὕδωρ τῆς τῆς καὶ τῆς ζήμιας.
- 22 Καὶ ταῦτα παραινόμενος εὐθυμῶν· διὰ τὴν βολὴν γὰρ ψυχῆς ἐδεμίῃα ἔσται ἐξ ὑμῶν, πλοῖον ἑσθ' ὑμῶν.
- 23 Παρέστη γάρ μοι τῇ νυκτὶ ταύτῃ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ εἰμὶ, ὃς καὶ λατρεύω,
- 24 λέγων· Μὴ φοβῆσθαι Παῦλε· Καίσαρ ἰστέον δέ σε ὡς εἴπω· καὶ ἰδὲ, κεχάριστά σοι ὁ Θεὸς πάντας τὰς πλείονας μετ' σέ.
- 25 Διὸ εὐθυμῆτε ἄνδρες· πιστεύω γὰρ τῷ Θεῷ ὅτι ἔτι ἔσται καθ' ὃν τρόπον λελάληται μοι.
- 26 Εἰς νῆσον δὲ ἵνα δεῖ ὑμῶς ἐπιπέσειν.
- 27 Ὡς δὲ περὶ ταρχήσαντος καὶ δεκάτης νυκτὸς ἐγγύεσθε, ἀφ' ἑσπέρῳ ἡμῶν ἐν τῇ Ἀδρία, καὶ μέσον τῆς νυκτὸς ὑπενόησαν οἱ ναῦται πρὸς τὴν ἵνα αὐτοῖς χώραν.
- 28 Καὶ βολίσαιτες, εὐρον ὀρεγίαν εἰρησίου βραχίονος ἢ ἀφ' ἑσπέρῳ, καὶ πάλιν βολίσαιτες, εὐρον ὀρεγίαν δεκάπεντε.

- 29 Φοβόμενοι τε μήπως εἰς τραχεῖς τόπους ἐκπέσωσιν, ἐκ πρύμνης ῥίψαντες ἀγκύρας τέσσαρας, κύχοντο ἡμέραν ἡμέραν.
- 30 Τῶν δὲ ναυτῶν ζητήτων φυγεῖν ἐκ τῶν πλοίων, ἔχαλασάντων τὸ σκάφω εἰς τὴν θάλασσαν, ἠεφάσθη αἰς ἐκ τῶν φέρας μελλόντων ἀγκύρας ἐκλείψην.
- 31 Εἶπεν ὁ Παῦλος τῷ ἐκατοντάρχῃ ἔτι τῶν στρατιωτῶν· Ἐὰν μὴ ἔτοι μείνωσιν ἐν τῷ πλοίῳ, ὑμεῖς σωθῆσθε ἔδωκατε.
- 32 Τότε οἱ στρατιῶται ἀπέκρουσαν τὰ χονία τὸ σκάφης, καὶ εἶασαν αὐτὴν ἐκπεσεῖν.
- 33 Ἄχρι δὲ ἔμελλεν ἡμέρα γίνεσθαι, παρεκάλεσε ὁ Παῦλος ἅπαντας μετὰ λαβεῖν τροφῆς, λέγων· Τεσσαρεσκαιδεκάτῃ σήμερον ἡμέραν ἠεσδοκῶντες, ἀσπίδι ἀφειλείτε, μηδὲν ἠεσλαδομένοι.
- 34 Διὸ ἠρξαμεθα ὑμᾶς ἠεσλαβεῖν τροφῆς· τῆτο γὰρ πρὸς τὴν ὑμετέρας σωτηρίας ὑπάρχει. ἔδειξεν γὰρ ὑμῶν θείων ἐκ τῆς κεφαλῆς πεσεῖται.
- 35 Εἰπὼν δὲ ταῦτα, καὶ λαβὼν ἄρτον, εὐχαρίστησε τῷ Θεῷ ἐνώπιον πάντων, καὶ κλάσας ἤρξατο ἐσθίην.
- 36 Εὐθυμοὶ δὲ ἡνόμενοι πάντες, καὶ αὐτοὶ ἠεσελάβοντο τροφῆς.
- 37 Ἦν δὲ ἐν τῷ πλοίῳ αἱ πᾶσαι ψυχαί, ἀσκήσια ἐδοδμηθησάντων.

38 Κορε-

38 Κοριδαίντες ἢ τροφῆς, ἐκέφιζον τὸ πλοῖον,
ἐμβαλλόμενοι τὸ σῖτον εἰς τὴ θάλασσαν.

39 Ὅτε ἡμέρα ἐχθρῆ, τὸ γινῶσκει ἐπιγί-
νωσκον· καὶ ποιοῦντες ἵνα κατενόηεν ἕχοντα αἰ-
γιαλόν, εἰς ὃν ἐβελύσαντο, εἰς διώαντον, ἐξῶ-
σεν τὸ πλοῖον.

40 Καὶ τοὺς ἀγκύρας ἀφελόντες εἴωθον εἰς τὴν
θάλασσαν, ἅμα ἀνέντες τοὺς ζυγκήριαις τῶν
πηδαλίων· καὶ ἐπάραυτες τὸ δροτέμνονα τῆ
πνεύσει, καλεῖχον εἰς τὸ αἰγιαλόν.

41 Περιπλέοντες ἢ εἰς τύπον διθάλασον,
ἐπὶ κέλευθον τὸ ναῦν· καὶ ἡ μὲν πρῶτα ἐρέισαζα
ἐμφανὴν ἀσάλαστον, ἢ ἢ πρὸς μετὰ ἐλύετο ὑπὸ
τῆ βίας τῶν κυμάτων.

42 Τῶν ἢ σρακωτῶν βελλὴ ἐχθρῆ ἵνα τὰς
δεσμῶνας ἀποκλείνωσι, μή τις ἐκχυλμβή-
σας ἀφύξει.

43 Ὁ ἢ ἐκατόνταρχος, βελλόμενος ἀφῶσεν
τὸ Παῦλον, ἐκάλυσεν αὐτὸς τὸ βελλόμενος,
ἐκέλευσέ τε τὰς δυναμίδας χυλμβῶν,
ἀπορρίψαντας πρῶτα ἐπὶ τὴν γινῶσκει ἐξείναι.

44 Καὶ τὰς λοιπὰς, ἃς μὲν ἐπὶ σιναίον,
ἃς ἢ ἐπὶ πρῶτον τῶν ἀπὸ τῶν πλοίων. Ἐ ἔτι
ἐχθρῆ πάντας ἀφῶσεν ἐπὶ τὴν γινῶσκει.

Κεφ. κη'. 28.

1 Καὶ ἀφῶσεντες, τότε ἐπέγνωσαν ὅτι Με-
λίτη ἡ νῆος καλεῖται.

2 Οἱ ἢ βάρβαροι πνεύσει ἢ τὸ τυχεῖον φι-
λαηρωπίας

λαυθραπίαις ἡμῖν. ἀνάψαντες γὰρ πυρρὰν,
 παροσελάβοντο πάντας ἡμᾶς. Διὰ τὸ ὑετὸν τὸ
 ἐφροσῶται, καὶ διὰ τὸ ψύχου.

3 \ Συμπρέψαντο δὲ ὁ Παῦλος Φρυγῶναν
 πλῆθος, καὶ ἐπιθέντο ἐπὶ τὴν πυρρὰν,
 ἐχθρὰ ἐκ τῆς θέρμης ἐξελεῖσθαι κατῆψε τὸ
 χθρὸς αὐτοῦ.

4 Ὡς ἡ εἶδον οἱ βάρβαροι κρημνίζοντες τὸ
 θηρίον ἐκ τῆς χθρὸς αὐτῆς, ἔλεγον πρὸς ἀλλή-
 λους· Πάντως φονεύς ἐστιν ὁ ἄνθρωπος ὅστις,
 οἷον διὰ σωθέντος ἐκ τῆς θυλαίωσης ἢ δίκῃ ζῆου
 ὅσον εἶαζεν.

5 Ὁ μὲν γὰρ, ἀποκινάξας τὸ θηρίον εἰς τὸ
 πῦρ, ἐπαθεν ἐδὲν κακόν·

6 Οἱ δὲ παροσεδόκων αὐτὸν μέλλεν πύμπραξ,
 ἢ καὶ ἀπίπλην ἀφνω νεκρόν. Ἐπὶ πολὺ δὲ αὐ-
 τῶν παροσεδοκάντων, καὶ θεωρέων μηδὲν ἄτε-
 πον εἰς αὐτὸν κινόμενον, μεταβαλλόμενοι
 ἔλεγον Θεὸν αὐτὸν εἶναι.

7 Ἐν δὲ ταῖς ὡρῆς τὸ τόπον ἐκεῖνον ὑπεῖχε
 χροῖα τῶν παρότων τῆς νήσου, ἀνόματι Ποταλίας,
 ὅς ἀναδεξάμενοι ἡμᾶς, τρεῖς ἡμέρας φι-
 λοφρότως ἐξένισεν.

8 Ἐχθρὸς δὲ τὸ πάρερα ὁ Ποταλίας πυρετοῖς
 καὶ δυσεντερίαι συνεχόμενον καὶ ἀκακίᾳ
 πρὸς ὃν ὁ Παῦλος εἰσελθὼν καὶ παροσε-
 ξάμενος, ἐπιθεῖς ἐκείνους αὐτῶν, ἰάσατο
 αὐτόν.

- 9 Τέτρασιν ἡμεράσιν, καὶ οἱ λοιποὶ οἱ ἔχοντες ἀδελφείας ἐν τῇ πόλει, προσήρχοντο καὶ ἔφερον δούλους.
- 10 Οἱ καὶ πολλάς πρῆξας ἐπέμψαν ἡμᾶς, καὶ ἀναγκαστοὺς ἐπέθεντο τὰ πρὸς τὴν χρείαν.
- 11 Μετὰ ἧς τρεῖς μῶνας ἀνήχθημεν ἐν πολίᾳ, ᾧ ᾤδα κερχίμακόν ἐστιν ἐν τῇ πόλει, Ἀλεξανδρίαν, ᾧ ᾤδα σήμω Διοσκύροις.
- 12 Καὶ κατὰ χθόντες εἰς Συρακῆσας, ἐπιμεῖναί μιν ἡμέρας τρεῖς.
- 13 Ὅτεν προσελθόντες κατὰ τὴν πόλιν εἰς Γόργον, καὶ μετὰ μίαν ἡμέραν ἐπιχουομένης νότῃ, ὁ δούτεράιοι ἤλθομεν εἰς Ποπόλιν.
- 14 Οὗ δύροντες ἀδελφῶν, παρεκλήθημεν ἐπ' αὐτοῖς ἐπιμεῖναι ἡμέρας ἐπ' ἑ. καὶ ἔτιως εἰς τὴν Γώμην ἤλθομεν.
- 15 Καί κειθεν οἱ ἀδελφοὶ ἀκέραιες τὰ πρὸς ἡμῶν, ἐξῆλθον εἰς ἀπάντησιν ἡμῖν ἄχρῃς Ἀπίος Φόρξ καὶ Τριῶν ταβερνῶν· ἔς ἰδὼν δὲ Παῦλον, εὐχαρισήσας τῷ Θεῷ, ἔλαβε τὰς χεῖρας.
- 16 Ὅτε ἤλθομεν εἰς Γώμην, ὁ ἐκατόνταρχος παρέδωκε τὰς δεσμίας τῷ στρατοπέδῳ ἀρχῇ· τῷ δὲ Παύλῳ ἐπετρέσθη μὲν κατὰ ἑαυτὸν, σὺν τῷ φυλάσσοντι αὐτὸν στρατιώτῃ.
- 17 Ἐρχόμενοι δὲ μετὰ ἡμέρας τρεῖς συγκαλέσαμεθα τὸν Παῦλον τὰς ὄντας τῆς Ἰουδαίας πρεσβυτέρους· σπειρόμενοι δὲ αὐτῶν, ἔλεγε πρὸς αὐτούς·
- Ἄνδρες

Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐγὼ ἔδην εὐαγγέλιον ποιήσας
 τῷ λαῷ ἢ τοῖς ἔθνεσι τοῖς πατράοις, δέσμιος
 ἐξ Ἱεροσολύμων παρεδόθην εἰς τὰς χεῖρας
 τῶν Ῥωμαίων·

18 Οἱ πῆνες ἀνακρίναντές με ἐπέβλητο δόπο-
 λῦσθαι, ἀλλ' ἐπὶ τὸ μηδὲμίαν αἰτίαν θανάτου
 ὑπάρχειν ἐν ἐμοί·

19 Ἀντιλεθόντων ἡ τῶν Ἰουδαίων, ἠναγκάσθην
 ἐπιδικασθῆναι Καίσαρι· ἔχων ὡς ἔβουλας
 με ἔχων ἡ κοληθῆσθαι.

20 Διὰ ταῦτ' ἐγὼ οὐκ αἰτίαν παρεκάλεισθε
 ὑμᾶς ἰδεῖν ἢ προσλαλήσθαι· ἕνεκεν γὰρ τῆ
 ἐλπίδος τῆς Ἰσραὴλ τὴν ἄλυσιν ταῦτ' ἐ-
 πείκειν.

21 Οἱ δὲ πρὸς αὐτὸν εἶπον· Ἰμεῖς ἔτε τραύμα-
 ματα ποιεῖς σὺ ἐδέξάμεθα δὲ τῆς Ἰουδαίας·
 ἔτε τῶν ἀφ' ἡμετέρων ἡμεῖς ἀδελφῶν ἀπήλα-
 λεν ἢ ἐλάλησέ τι πρὸς σὺ πονηρόν.

22 Ἀξιῶμεν ἡ τῶν ἀφ' ἡμετέρων ἀκούσθαι ἂν φρονεῖς·
 ποιεῖς μὲν γὰρ τῆς αἰρέσεως ταύτης γνωστὸν ἐστὶν
 ἡμῖν ὅτι πανταχοῦ ἀντιλέγεται.

23 Ταξάμενοι ἡ αὐτῶν ἡμεῖς, ἤκουον πρὸς
 αὐτὸν εἰς τὴν ξενίαν πλείονες· οἷς ἐξεπέτετο ἀφ' ἡ-
 μαρτυροῦμενος τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ, πείθων τε
 αὐτοὺς πρὸς τὸν Ἰησοῦν, δὲ τὸν νόμον Μω-
 σέως ἐπὶ τῶν περὶ τῶν ἀφ' ἡμετέρων ἐσπίρας.

24 Καὶ οἱ μὲν ἐπέβησαν τοῖς λεγομένοις, οἱ
 δὲ ἠπίεσαν.

- 25 Ἀσύμφωνοι δὲ ὄντες πρὸς ἀλλήλους, ἀπελύοντο, εἰπόντι· Ἐ Πάυλος ῥῆμα ἐστίν, ὅτι καλῶς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐλάλησεν. Διὰ Ἡσαΐας ἔρεφθητε πρὸς τὰς πατέρας ἡμῶν.
- 26 Λέγον· Πορεύθητε πρὸς τὸ λαὸν τῆτον, ἔειπέ· Ἀκηθὴ ἀκέσει, καὶ ἔμὴ σιωπῆτε· καὶ βλέποντες βλέψατε, καὶ ἔμὴ ἴδητε.
- 27 Ἐπαχύνθη γὰρ ἡ καρδιά ἡ λαῶν τῶντων· καὶ τοῖς ὡσὶ βαρέως ἤκασαν, καὶ τὰς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν ἐκάλυψαν· μήποτε ἴδωσι τοῖς ὀφθαλμοῖς, καὶ τοῖς ὡσὶν ἀκέσωσι, καὶ τῇ καρδίᾳ σιωπῶσι, καὶ ἐπιστρέψωσι, καὶ ἰάσωμαι αὐτούς.
- 28 Γνωστὸν ἔν ἐστὼ ὑμῖν ὅτι τοῖς ἔθνεσιν ἀπεστάλη τὸ σωτήριον ἔθι Θεοῦ, αὐτοῖς ἔκαστοι.
- 29 Καὶ ταῦτοι αὐτῷ εἰπόντι, ἀπῆλθεν οἱ Ἰουδαῖοι, πολλὰ ἔχοντες ἐν ἑαυτοῖς συζητήσιν.
- 30 Ἐμῆνε δὲ ὁ Παῦλος διαπίαν ὄλιον ἐν ἰδίᾳ κιοτάματι· καὶ ἀπεδέχετο πάντας τὰς εἰσπορευομένους πρὸς αὐτόν.
- 31 Κηρύσσων τὴ βασιλείαν ἔθι Θεοῦ, καὶ διδάσκων τὰ ὡσεὶ ἔθι Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ στήσεως παύρησις, ἀκωλύτως.

Τ Ε Λ Ο Σ .

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟ-

στόλου ἢ πρὸς Ῥωμαίους ἐπιστολή.

Κεφ. α'. Ι.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ δὲ λέγει Ἰησοῦ Χρι-
 2 **σ**τοῦ, κλητὸς ἀπόστολος, ἀφωρι-
 3 **σ**τημένον εἰς εὐαγγέλιον Θεοῦ,

(Ὁ ὁμοεπηχέειλαθε ἀπὸ τῶν
 4 ὁμοεπηχέων αὐτῶ ἐν γραφαῖς ἀγίαις)

3 Περὶ τοῦ ἡμεῶν αὐτῶ, (τοῦ ἡμεῶν ἐκ ἀποστο-
 4 λῆς Δαβὶδ καὶ σαύρα)

4 Τῶ ὁμοεπηχέων ἡμεῶ Θεοῦ ἐν δυνάμει, καὶ
 5 πνεύματι ἁγίῳ, ἐξ ἀναστάσεως νεκρῶν)
 6 Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.

5 (Διὸ ἐλάδομεν χάριν ἐκ ἀποστολῆς εἰς
 6 ὑμῶν πείσεως ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν, ὑπὲρ
 7 τοῦ ὀνόματος αὐτῶ.)

6 Ἐνοήσατε ἐκ ὑμῶν, κλητῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ)

7 Πᾶσι τοῖς ἔσιν ἐν Ῥώμῃ, ἀγαπητοῖς Θεοῦ,
 8 κλητοῖς ἀγίοις. Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ
 9 Θεοῦ πατρὸς ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

8 Πρῶτον μὲν εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μετὰ
 9 Ἰησοῦ Χριστοῦ ὑπὲρ πάντων ὑμῶν, ὅτι ἡ πίστις
 10 ὑμῶν καθαροῦ ἐστὶν ἐν ὅλῳ τῷ κόσμῳ.

9 Μάρτυρες γὰρ με ἐσὶν ὁ Θεὸς, ὃν λατρεύω ἐν
 10 τῷ πνεύματι καὶ μετὰ τῆς εὐαγγελίας τοῦ ἡμεῶν αὐ-
 11 τῶ, ὡς ἀδιαλείπτως μνείαν ὑμῶν ποιῶμαι.

Υ 3 ΙΟ Πάν-

- 10 Πάντες ἐπὶ τῷ πνεύματι μετὰ δόξῃ με δεόμενοι,
εἴ πως ἤδη ποτὲ δωροδοκῆσαμεν ἐν τῷ θελήματι τοῦ Θεοῦ, ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς.
- 11 Ἐπιποθῶ γὰρ ἰδεῖν ὑμᾶς, ἵνα πειρασθῶ
χαρίσασθαι ὑμῖν πνευματικῶς, εἰς τὸ στερεώ-
σαι ὑμᾶς.
- 12 Τὸ δὲ ἐστὶν συμπαρακληθῆναι ἐν ὑμῖν
ἀλλήλοις ἐν ἀγάπῃ πίστεως, ὑμῶν τε καὶ ἐμεῦ.
- 13 Οὐ θέλω ἢ ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί, ὅτι
πολλὰκις ἐπιθέμενος ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς, (καὶ
ἐκωλύθη ἄχρι τοῦ δεῦρο) ἵνα καρπὸν ἴσασθε
ἃ ἐν ὑμῖν, καθὼς ἐστὶ ἐν ταῖς λοιπαῖς ἐθνεσίν.
- 14 Ἐλπίστε τε καὶ βαρβάρους, σοφοῖς τε καὶ
ἀνοήτοις ὀφθαλμῶν ἐμεῖ.
- 15 Οὕτως τε καὶ ἐμὲ πείρασμα καὶ ὑμῖν τοῖς
ἐν Ῥώμῃ διακελεύομαι.
- 16 Οὐ γὰρ ἐπιμαχόμενος τὸ διαγέλιον τοῦ
Χριστοῦ διώκω, γὰρ Θεὸς ἐστὶν εἰς σωτηρίαν
παντὸς τοῦ πιστεύοντος, Ἰουδαίων τε ἑθνῶν καὶ
Ἑλλήνων.
- 17 Διακηροσυνῶν γὰρ Θεὸς ἐν αὐτῷ ἀποκαλύ-
πτεται ἐκ πίστεως εἰς πίσιν· καθὼς γέγραπται·
Ὁ ὃς δίκαιος ἐκ πίστεως ζήσεται).
- 18 Ἀποκαλύπτεται γὰρ ὁργὴ Θεοῦ ἀπ' ἔρανος
ἐπὶ πᾶσιν ἀσεβῶν καὶ ἀδικῶν ἀνθρώπων ἅ-
ντ' ἀλήθειαν ἐν ἀδικίᾳ καλεχόντων.
- 19 Διότι τὸ γνωστὸν τοῦ Θεοῦ, φανερόν ἐστι ἐν
αὐτοῖς· ὃ γὰρ Θεὸς αὐτοῖς ἐφανερώσατο.

- 20 Τὰ γὰρ ἄσρατα αὐτῆ ἀπὸ κίσεως κῆσμε,
τοῖς ποιήμασι νοῦμνα καθορθῶται, ἢ τε
αἰδοῖτο αὐτῆ δυνάμεις ἐθειότης· εἰς τὸ εἶναι
αὐτῆς ἀναπολογήτης·
- 21 Διότι γνόντες τὸ Θεὸν, ἔχως Θεὸν ἐδόξα-
σαν, ἢ ὑπερέβησαν· ἀλλ' ἐμεγαλιώθησαν ἐν
τοῖς ἀφρολογισμοῖς αὐτῶν, καὶ ἐσκοπίθη ἢ
ἀσυνείητο αὐτῶν καρδία.
- 22 Φάσκοιτες εἶναι σοφοί, ἐμωρύνθησαν·
- 23 Καὶ ἠλλαξαν τὸ δόξαν τῆ ἀφάρτης Θεῶ
ἐν ὁμοιωμάτι ἐκόντων φθαρτῶ ἀνθρώπων, καὶ
πετηνῶν ἐτετραπόδων καὶ ἐρπετῶν.
- 24 Διὸ ἐπαρέδωκεν αὐτῆς ὁ Θεὸς ἐν ταῖς
ἐπιθυμίαις τῶν καρδιῶν αὐτῶν εἰς ἀκαταρ-
σίαν, τῆ ἀπειθέσθαι τὰ σώματα αὐτῶν
ἐν ἑαυτοῖς·
- 25 Οἷπνες μετήλλαξαν τὸ ἀλήθειαν τῆ Θεῶ
ἐν τῷ ψεύδει, καὶ ἐσεβάσθησαν ἐλάτρευσιν
τῆ κίσεως ὡς τὸ κίσεσθαι, ὅς ἐστιν ὀλογοῦς
εἰς τὰς αἰῶνας· ἀμείνω.
- 26 Διὰ τῆ παρεδωκεν αὐτῆς ὁ Θεὸς εἰς πᾶ-
ση ἀπείρας· αἷ τε γὰρ θήλησιν αὐτῶν μετήλ-
λαξαν τὸ φυσικῶν χρῆσιν εἰς τὸ ὡς φύσει·
- 27 Ὁμοίως τε καὶ οἱ ἄρσενες ἀφέντες τὸ
φυσικῶν χρῆσιν τῆ θηλείας, ἐξεκώθησαν
ἐν τῆ ὀρέξει αὐτῶν εἰς ἀλλήλους, ἄρσενες
ἐν ἄρσεσι καὶ ἀχημοσιώλι καταεργαζό-
μενοι, καὶ τὸ ἀνημιότιον καὶ ἔδωκε τὸ πλά-

- της αὐτῶν ἐν ἑαυτοῖς ἀπολαμβάνοντες.
 28 Καὶ καθὼς ὅτι ἐδοκίμασαν τὸ Θεὸν ἔχειν ἐν ἐπιγνώσει, παρέδωκεν αὐτὰς ὁ Θεὸς εἰς ἀδόκιμον ἔθνος, ποιεῖν τὰ μὴ κατήκοντα.
 29 Πεπληρωμένους πάσης ἀδικίας, πορνείας, πονηρίας, πλεονεξίας, κακίας· μετὰς φθόνου, φόβου, ἐριδῶν, δόλου, κακοηθείας.
 30 Ψιθυριστὰς, καταλάλους, θεοσυγείας, ὑβριστὰς, ὑπερηφάνους, ἀλαζόνας, ἐφιδυρεῖς κακῶν, θνητοῖσι ἀπεθεῖς,
 31 Ἀσυνεῖτες, ἀσυνήετες, ἀσέβητες, ἀσπόνδους, ἀνελεήμονας.
 32 Οἵτινες τὸ δικαίωμα τοῦ Θεοῦ ἐπιγινόντες, (ὅτι οἱ τὰ τοιαῦτα πράσσοντες ἀξιοί θανάτου εἰσὶν) ἐμῆνον αὐτὰ ποιῆσαι, ἀλλὰ καὶ συνιδούδοκῶσι τοῖς πράσσουσιν.

Κεφ. β'. 2.

- 1 Δ Ἰὸ ἀναπολόγητον εἶ ὃ ἄνθρωπε πᾶς ὁ κελῖων. ἐν ᾧ ἦν κρινῆς τὸ ἔτερον, σκωτῶν κατὰ κρινῆς, τὴν ἦν αὐτὰ πράσσει ὁ κελῖων.
 2 Οἶδα μὲν ὅτι τὸ κελῖμα τοῦ Θεοῦ ἐστὶ κατὰ ἀλήθειαν ἐπὶ τὰς τὰ τοιαῦτα πράσσοντας.
 3 Λογίζη ὅτι τὸ ὃ ἄνθρωπε ὁ κελῖων τὰς τὰ τοιαῦτα πράσσοντας, καὶ ποιῶν αὐτὰ, ὅτι σὺ ἐκφύβησθαι τὸ κελῖμα τοῦ Θεοῦ;
 4 Ἡ δὲ πλῆθος τὸ χρηστότητος αὐτῶν ἐστὶ ἀνοχῆς καὶ τὸ μακροθυμίας κατὰ φρονεῖς, ἀγνοῶν ὅτι τὸ χρηστὸν τοῦ Θεοῦ εἰς μετάνοιαν σε ἀγαθῆς
 5 Κατὰ

- 5 Κατὰ τὴν ἰσκληρότητα (καὶ κατὰ ἀμετανόη-
 τιν καρδίαν, ἡπιστευρίζεις σεαυτῷ ὀργὴν ἐν
 ἡμέραι ὀργῆς καὶ ἀποκαλύψεως δικαιοκρα-
 σίας Ἐθιῶν.
- 6 Ὅς ἀποδώσῃ ἕκαστῳ κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ·
- 7 Τοῖς μὲν κατὰ ὑπομονὴν, ἔργα ἀγαθῆ
 δόξαι καὶ πμὴν ἔ ἀφταρσίαν ζητῶσι, ζωὴν
 αἰώνιον·
- 8 Τοῖς δὲ ἐξ ἐριθείας, ἔ ἀπέθεσι μὲν τῇ ἀλη-
 θείᾳ, πητομύοις δὲ τῇ ἀδικίᾳ, θυμῶς καὶ ὀργῇ.
- 9 Ὀλίγαις ἔ στενοχωρεῖα ἐπὶ πᾶσαι ψυχῆς
 ἀνθρώπων ἔ κατεργαζομύοι τὸ κακόν, Ἰε-
 ρδαίᾳ τε κωρεῶτον καὶ Ἐλλῶνι,
- 10 Δόξα δὲ καὶ πμὴ καὶ εἰρήνη παντὶ τῷ
 ἐργαζομύῳ τὸ ἀγαθόν, Ἰεραδαίῳ τε κωρεῶτον
 ἔ Ἐλλῶνι.
- 11 Οὐ γάρ ἐστι κωρεῶτων ποληψία κωρεῶ τῷ Θεῷ.
- 12 Ὅσοι γὰρ ἀνόμως ἡμαρῶν, ἀνόμως καὶ
 ἀπολένται· καὶ ὅσοι ἐν νόμῳ ἡμαρῶν, ἀφ'
 νόμου κωρησῶν),
- 13 (Οὐ γὰρ οἱ ἀκροαταὶ ἔ νόμου δίκαιοι
 κωρεῶ τῷ Θεῷ· ἀλλ' οἱ ποιηταὶ ἔ νόμου δι-
 κωρησῶν).)
- 14 Ὅταν γὰρ ἔθνη τὰ μὴ νόμου ἔχοντα, φύσῃ τῷ
 ἔ νόμου ποιῇ, ἔτοι νόμου μὴ ἔχοντες, ἐαυ-
 τοῖς ἐσι νόμου·
- 15 Οἵτινες ἐνδείκνυται τὸ ἔργον ἔ νόμου γραπτόν
 ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν, συμμαρτυρήσῃς
 Ἐ 5 αὐτῶν

- αὐτῶν τῆ σωφροσύνης, καὶ μετὰ τὴν ἀλλήλων τῶν
 λογισμῶν καὶ ἠθρῶν, ἢ ἐ ἀπολοῦμαι)
- 16 Ἐν ἡμέρᾳ ὅτε κερταί ὁ Θεὸς τὰ κρυπτά τῶν
 ἀνθρώπων, καὶ τὸ διαγγέλιόν μου, διὰ Ἰησοῦ
 Χριστοῦ.
- 17 Ἰδὲ, σὺ ἰσθαῖς ἐπινομάζει, ἐ ἐπανα-
 παύῃ τὸ νόμον, καὶ καυχᾶσαι ἐν Θεῷ,
- 18 Καὶ γνώσκεις τὸ θέλημα, ἐ δοκιμάζεις τὰ
 διαφέροντα, καὶ ἠχέρῃς ἐν τῷ νόμῳ
- 19 Πίποιθις τε σεαυτὸν ὁδηγὸν εἶναι τυφλῶν,
 φῶς τῶν ἐν σκότει,
- 20 Παιδευτὴν ἀφροῦν, διδάσκαλον νη-
 πίων, ἔχοντα τὸ μέγιστον τῆ γνώσεως καὶ τῆ
 ἀληθείας ἐν τῷ νόμῳ.
- 21 Ὁ οὐκ διδάσκει ἕτερον, σεαυτὸν ἐ διδά-
 σκεις; ὁ κηρύσσων μὴ κλέπειν, κλέπει;
- 22 Ὁ λέγων μὴ μοιχεύειν, μοιχεύεις; ὁ βδελ-
 λυσοῦντα τὰ εἰδῶλα, ἱεροσυλεῖς;
- 23 Ὁς ἐν νόμῳ καυχᾶσαι, διὰ τῆ ᾠδῆς
 σεως τῷ νόμῳ τὸ Θεὸν ἀπμαζεις;
- 24 Τὸ γὰρ ἴσθαι τὸ Θεὸν δι' ὑμῶν βλασφη-
 μεῖται ἐν τοῖς ἔθνεσι, κατὰ τὴν γέγραπτον.
- 25 Περιθνή μὲν γὰρ ὠφελῆς, εἴαν νόμον
 πρᾶσις· εἴαν ὅ ᾠδῆς τῆς νόμου ἦς, ἢ περι-
 τομή (καὶ ἀκροβυστία γένηται).
- 26 Εἴαν οὐκ ἢ ἀκροβυστία τὰ δικημώματα τῶν
 νόμου φυλάσις, ἔχι ἢ ἀκροβυστία αὐτῶν εἰς
 περιθνή λογιστῆς;

27 Καὶ

- 27 Καὶ κρινεῖ ἡ ἐν φύσεως ἀκροβυστία τὸ νόμον τελευτᾶσαι, σὲ δὲ διὰ ζυγαμίας καὶ φειθμῆς ὡς ἀβάπτου νόμου;
- 28 Οὐ γὰρ ὁ ἐν ταῖς φανεραῖς, Ἰσδαῖός ἐστιν· ἐδὲ ἢ ἐν ταῖς φανεραῖς, ἐν στερῆσι, φειθμῆ·
- 29 Ἀλλ' ὁ ἐν ταῖς κρυπτῶν Ἰσδαῖός, καὶ φειθμῆ καρδίας, ἐν πιδύματι, ἐ ζυγαμίας· ἢ ὁ ἐπαμύνη σὸν ἐξ ἀνθρώπων, ἀλλ' ἐν τῷ Θεῷ.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 Τί οὖν τὸ φεισὸν τῷ Ἰσδαίῳ, ἢ τίς ἢ ὠφέλεια τῷ φειθμῆς;
- 2 Πολὺ καὶ πάντα τρόπον. Πρῶτον μὲν γὰρ ὅτι ἐπιστήθησαν τὰ λόγια τῷ Θεῷ.
- 3 Τί γὰρ, εἰ ἠπίσησάν ἴνες; μὴ ἢ ἀπισία αὐτῶν τῷ πίστιν τῷ Θεῷ καθ' ἑαυτοῦ;
- 4 Μὴ γυνοῖτο γινέσθω ἢ ὁ Θεὸς ἀληθής, πᾶς ἢ ἀνθρώπου ψύτης· κατὰ τὸν γέροντα· ὅπως αὐτὸν δικαιοθῆς ἐν τοῖς λόγοις (καὶ τὴν νικήσῃς ἐν ταῖς κρίνεσθαι σε).
- 5 Εἰ ἢ ἡ ἀδικία ἡμῶν Θεῷ δικαιοσύνη σιωπῆσαι, τί ἐρεῖ μὲν; μὴ ἀδικῶ ὁ Θεὸς ὁ ἐπιφέρων τὸ ὄργον; (καὶ ἀνθρώπον λέγω).
- 6 Μὴ γυνοῖτο ἐπεὶ πᾶς κρινεῖ ὁ Θεὸς τὸ κῆρμα;
- 7 Εἰ γὰρ ἡ ἀλήθεια τῷ Θεῷ ἐν ταῖς ἐμοῖς ψύσματος ἐπερίστυσεν εἰς τὸ δοῦν αὐτῷ, τί ἐπεκρίνω ὡς ἀμαρτωλὸς κρινόμενος;

8 Καὶ

- 8 Καὶ μετ' ἡμᾶς βλασφημώμεθα, Ἐκαθὺς
 φασὶ ἴνες ἡμεῖς λέγειν ὅτι ποιήσωμεν ἕα κακὰ
 ἵνα ἔλθῃ τὰ ἀγαθὰ, ὧν τὸ κρῖμα ἐνδοκίμῳ ἐστίν.
- 9 Τί οὖν; παροργίζομεθα; Οὐ πάντως· παρορ-
 γηπατοίμεθα γὰρ Ἰουδαίους τε ἔτι Ἑλλήνας πάν-
 τας ὑφ' ἀμαρτίαν εἶναι.
- 10 Καθὼς γέγραπται· Ὅτι ὄρα ἐστὶ δικαιοσύνη
 ἐδὲ εἷς.
- 11 Οὐκ ἐστὶν ὁ συνιῶν, ἕκ ἐστὶν ὁ ἐκζητῶν τὸ Θεόν.
- 12 Πάντες ἐξέκλιναν, ἅμα ἠχρεώθησαν ὅσα
 ἐστὶν ποιῶν χρηστότητα, ὅσα ἐστὶν ἕως ἐνός.
- 13 Τάφῳ ἀνεφύγησαν ὁ λάρυγγος αὐτῶν·
 ταῖς γλώσσαις αὐτῶν ἐδολιξάν· ἰὸς ἀσπί-
 δων ὑπὸ τὰ χεῖλη αὐτῶν.
- 14 Ὡν τὸ στόμα ἀρεῆς καὶ πικρίας γέμει.
- 15 Ὄξεϊς οἱ πόδες αὐτῶν ἐκχέου αἷμα.
- 16 Σιγήθημα καὶ ταλαιπωρία ἐν ταῖς
 ὁδοῖς αὐτῶν.
- 17 Καὶ ὁδοὶ ἐπιλήθης ὅσα ἐγνώσαν.
- 18 Οὐκ ἐστὶ φόβος Θεοῦ ἀπέναντι τῶν ὀφθαλ-
 μῶν αὐτῶν.
- 19 Οἶδαμεν ἢ ὅτι ὅσα ὁ νόμος λέγει, τοῖς ἐν
 τῷ νόμῳ λαλεῖ· ἵνα πᾶν στόμα φραγῆ, καὶ
 ὑπόδικτος γίνηται πῶς ὁ νόμος τῷ Θεῷ.
- 20 Διότι ἐξ ἔργων νόμος ἐδικαιώθησε πᾶ-
 σα σὰρξ ἐνώπιον αὐτοῦ· ἀλλ' ὅτι νόμος ἐπί-
 γνωστὸς ἀμαρτίας.
- 21 Νυνὶ δὲ χωρὶς νόμου δικαιοσύνη Θεοῦ
 πρὸς

πεφανέρωται, μαρτυρημένη ὑπὸ τῶν νόμων καὶ
τῶν προφητῶν.

22 Δικαιοσύνη οὕτως Θεὸς διὰ πίστεως Ἰησοῦ
Χριστοῦ, εἰς πάντας ἐπὶ πάντας τὰς πι-
στύοντας· ὃ γὰρ ἐστὶ δωρεὰ.

23 Πάντες γὰρ ἡμαρτῶν καὶ ὑπερβνται τῷ
δούλῳ τοῦ Θεοῦ.

24 Δικαιοσύνη δὲ δωρεὰν τῆ αὐτῆ χάριτι, διὰ
τῆ ἀπελυτρώσεως τῆ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

25 Ὁν προέθετο ὁ Θεὸς ἰλαστήριον διὰ τῆ
πίστεως ἐν τῷ αὐτῆ αἵματι, εἰς ἐνδοξίαν τῆ
δικαιοσύνης αὐτῆ, διὰ τῆ πάρεσιν τῶν προ-
περηγνόντων ἀμαρτημάτων.

26 Ἐν τῆ ἀνοχῇ τοῦ Θεοῦ, πρὸς ἐνδοξίαν τῆ δι-
καιουσύνης αὐτῆ, ἐν τῷ νῦν καιρῷ· εἰς τὸ
εἶναι αὐτὸν δικαίον, καὶ δικαιῆναι τῶ ἐν πί-
στεως Ἰησοῦ.

27 Πᾶσιν οὐκ ἡ καύχησις· ἐξεκλείσθη. Διὰ
ποῖον νόμον; τῶ ἔργων; Οὐχί· ἀλλὰ διὰ νόμον
πίστεως.

28 Λογίζομεθα οὐκ, πίστι δικαιοσύνη ἀν-
θρώπων, χωρὶς ἔργων νόμων.

29 Ἡ ἰσθαίαν ὁ Θεὸς μόνον; ἔχι ἢ καὶ ἐθνῶν;
Ναὶ καὶ ἐθνῶν.

30 Ἐπίπερ εἰς ὁ Θεὸς, ὃς δικαιοσύνη προέ-
μην ἐκ πίστεως, ἐ ἀκροβυσσίαν διὰ τῆ πίστεως.

31 Νόμον οὐκ κατὰ ἔργων διὰ τῆ πίστεως;
Μὴ γνοίτε· ἀλλὰ νόμον ἰσθῶν.

Κεφ.

Κεφ. δ'. 4.

- 1 **Τ**ί οὐκ ἐρεῖ μὲν Ἀδρακάμ τὴν πατέρα ἡμῶν
διηκέναι καὶ σάρα;
- 2 Εἰ γὰρ Ἀδρακάμ ἐξ ἔργων ἐδικμηθή, ἔχθ
καύχημα, ἀλλ' ἔσπερος τὸ Θεόν.
- 3 Τί γὰρ ἡ γραφή λέγει; Ἐπίσδουσε δὲ
Ἀδρακάμ τῷ Θεῷ, καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δι-
κημοσύνην.
- 4 Τῷ ᾧ ἐργαζομένη ὁ μισθὸς ἔλογίζεται
καὶ χάριν, ἀλλὰ καὶ τὸ ὀφείλημα.
- 5 Τῷ ᾧ μὴ ἐργαζομένη, πισδύνη ἢ ἐπὶ τῷ
δικμηθῆναι τὸ ἀσπῆ, λογίζεται ἡ πίστις αὐ-
τῷ εἰς δικημοσύνην.
- 6 Κατὰ πρὸς καὶ Δαβὶδ λέγει τὸ μακαρομέν
ἐν ἀνθρώποις, ᾧ ὁ Θεὸς λογίζεται δικημοσύ-
νην χωρὶς ἔργων.
- 7 Μακάριοι οὖν ἀφῆτησαν αἰ ἀνομίαν, καὶ
οὖν ἐπικαλύφτησαν αἰ ἀμαρτίαν.
- 8 Μακάριοι οὖν ἀνὴρ ᾧ ἔσ μὴ λογίστηται Κύ-
ριοι ἀμαρτίαν.
- 9 Ὁ μακαροσμός οὐκ ἔσ, ἐπὶ τῷ
πειθῆναι, ἢ καὶ ἐπὶ τῷ ἀκροβυστίαν; Λέγει
μὲν γὰρ ὅτι ἐλογίσθη τῷ Ἀδρακάμ ἡ πίστις εἰς
δικημοσύνην.
- 10 Πᾶς οὐκ ἐλογίσθη; ἐν πειθῆναι ἢ ἐν
ἐν ἀκροβυστίαν; Οὐκ ἐν πειθῆναι, ἀλλ' ἐν
ἀκροβυστίαν.
- 11 Καὶ σημεῖον ἔλαβε πειθῆναι, σφραγῆσαι
τὸ δι-

τῆ δικαιοσύνης τῆ πίστεως τῆ ἐν τῇ ἀκροβυσ-
σίᾳ· εἰς τὸ εἶναι αὐτὸν πατέρα πάντων τῶν πι-
σδύοντων δι' ἀκροβυστίας, εἰς τὸ λογιθῆναι
καὶ αὐτοῖς τῆ δικαιοσύνης·

12 Καὶ πατέρα θεομηΐης, τοῖς ὅσοι ἐκ
θεομηΐης μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς σοιχοῦσι τοῖς
ἔχουσιν τῆ ἐν τῇ ἀκροβυστίᾳ πίστεως τῆ πατρὸς
ἡμῶν Ἀβραάμ.

13 Οὐ γὰρ ἀνόμος ἡ ἐπαγγελία τῷ Ἀβραάμ,
ἢ τῷ σπέρματι αὐτοῦ, τὸ κληρονόμον αὐτοῦ εἶ-
ναι τῆ κτῆσεως, ἀλλὰ διὰ δικαιοσύνης πίστεως.

14 Εἰ γὰρ οἱ ἐκ νόμου, κληρονόμοι, κεκένω
ἡ πίστις, καὶ κατήρηται ἡ ἐπαγγελία·

15 Ὁ γὰρ νόμος ὀργὴν καλεργάζεται· ἔτι γὰρ
ὅσοι ἐσιν ὁ νόμος, ἐστὶν ἡ ἁρμολογία.

16 Διὰ τὸ εἶναι πίστεως, ἵνα καὶ χάρις, εἰς τὸ
εἶναι βεβαίαν τῆ ἐπαγγελίας παντὶ τῷ σπέρ-
ματι, ἔτι τῷ ἐκ τῆ νόμου μόνον, ἀλλὰ καὶ τῷ ἐκ
πίστεως Ἀβραάμ· οὗτος ἐστὶν πατήρ πάντων ἡμῶν,

17 (Καθὼς γέγραπται)· Ὅτι πατέρα πολλῶν
ἐθνῶν τέθεικά σε) κατέναντι ἔπις ὄψεσθε, θεοὶ
τῆ ζωοποιεῖν τὰς νεκρὰς, καὶ καλεῖν
τὰ μὴ ὄντα ὡς ὄντα·

18 Ὅς παρ' ἐλπίδα ἐπ' ἐλπίδι ἐπίσδυσεν, εἰς
τὸ γνῆσαι αὐτὸν πατέρα πολλῶν ἐθνῶν, καὶ
τὸ εἰρημῶν· Οὕτως ἐστὶν τὸ σπέρμα (ε).

19 Καὶ μὴ ἀσθενήσας τῇ πίστει, ἔκαλεν ὁ
τὸ ἑαυτοῦ σῶμα ἤδη νεκρωμῶν ἐκαλεῖν
ταύτην.

ταύτης περὶ ὑπάρχων, καὶ τῶν ἐκφρασιῶν τῶν
μήτρων Σάρρας.

20 Εἰς ἣν τὸ ἐπισημασμένον ἔστι Θεὸς ἔδεικται
τῇ ἀπιστίᾳ, ἀλλ' ἐνεδυναμώθη τῇ πίστι, ὅθεν
δόξαν τῷ Θεῷ.

21 Καὶ πληροφορηθεὶς ὅτι ἡ ἐπισημασμένη, δυνα-
μικός ἐστι καὶ ποιῆσαι.

22 Διὸ καὶ ἐλογιάθη αὐτῶν εἰς δικαιοσύνην.

23 Οὐκ ἐγράφη δὲ δι' αὐτὸν μόνον, ὅτι ἐλο-
γιάθη αὐτῶν.

24 Ἀλλὰ καὶ δι' ἡμᾶς, οἷς μέλλει λογιζέσθαι,
τοῖς πιστεύουσιν ἐπὶ τῷ ἐγγράμματι Ἰησοῦν τὸ
Κύριον ἡμῶν ἐκ νεκρῶν.

25 Ὅς παρεδόθη ἡμεῖς τὰ ἔργα τῶν ἡμεῶν,
καὶ ἠγέρθη ἡμεῖς τὸ δικαίωμα ἡμῶν.

Κεφ. ε'. 5.

1 **Δ**ικαιωθέντες οὐκ ἐκ πίστεως, ἐρρωμένοι
ἐχόμενοι πρὸς τὸν Θεὸν ἡμεῖς ἔσμεν ἡμῶν
Ἰησοῦ Χριστοῦ.

2 Διὸ ἔσμεν τὸ πρῶτον ἐχόμενοι τῇ πί-
στει εἰς τὸ χάριτι ταύτῃ ἐν ἣ ἐσημασμένον, καὶ
καυχόμεθα ἐπ' ἐλπίδι τῆς δόξης τοῦ Θεοῦ.

3 Οὐ μόνον ἡμεῖς, ἀλλὰ καὶ καυχόμεθα ἐν ταῖς
θλίψεσι εἰδότες ὅτι ἡ θλίψις ὑπομονὴν
καταργάζεται.

4 Ἡ δὲ ὑπομονὴ δοκιμὴν, ἡ δὲ δοκιμὴ
ἐλπίδα.

5 Ἡ δὲ ἐλπίς ἐκκαυχώμεθα ὅτι ἡ ἀγάπη τοῦ
Θεοῦ

Θεῶς ἐκκέχυται ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν Διὰ
πλούσιον ἀγίον ἔδωκεν ἡμῖν.

6 Ἐπεὶ γὰρ Χριστὸς ὄντων ἡμῶν ἀδικούντων, καὶ
καμρόν ὑπερ ἀσεβούντων ἀπέθανε.

7 Μόλις γὰρ ὑπερ δικαίως τις ἀποθανεῖ-
ται ὑπερ γὰρ ἔαγαθῆ τέχνη τις καὶ πολὺν
ἀποθανεῖν.

8 Σωίτησι ἧ ἔαυτῶν ἀγάπῃ εἰς ἡμᾶς ὁ
Θεὸς, ὅτι ἐπὶ ἀμαρτωλῶν ὄντων ἡμῶν Χρι-
στὸς ὑπερ ἡμῶν ἀπέθανε.

9 Πολλῶν οὐ μᾶλλον, δικαιοφέντες νῦν ἐν
τῷ αἵματι αὐτοῦ, σωτησόμεθα δι' αὐτοῦ ἀπὸ
τῆ ὀργῆς.

10 Εἰ γὰρ ἐχθροὶ ὄντες κατηλλάγημεν τῷ Θεῷ
Διὰ ἔθανάτου ἔχθη αὐτοῦ, πολλῶν μᾶλλον
καὶ ἀκαθάρτους σωτησόμεθα ἐν τῇ ζωῇ αὐτοῦ.

11 Οὐ μόνον ἧ, ἀλλὰ καὶ καυχώμενοι ἐν τῷ
Θεῷ Διὰ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, δι'
ἧ νῦν ἔκαὶ ἀκαθάρτων ἐλάσομεν.

12 Διὰ τῆτο ὥσπερ δι' ἐνὸς ἀνθρώπου ἡ
ἀμαρτία εἰς τὸ κόσμον ἐσηλθε, καὶ Διὰ τὴν
ἀμαρτίαν ὁ θάνατος, καὶ ἔτις εἰς πάντας
ἀνθρώπους ὁ θάνατος διήλθεν, ἐφ' ᾧ πάντες
ἡμαρτον.

13 Ἄλλο γὰρ νόμος ἀμαρτία καὶ ἐν κόσμῳ ἀ-
μαρτία ἧ ὅσα ἐλογεῖται μὴ ὄντος νόμου.

14 Ἀλλ' εἰσαπέλυσεν ὁ θάνατος ἀπὸ Ἀδάμα
μέχρι Μωσέως, ἧ ἐπὶ τοῖς μὴ ἀμαρτήσασθαι
ἐπὶ

ἐπὶ τῷ ὁμοιώματι τῷ ᾠραδοῦσις Ἀδάμ,
ὅς ἐστι τύπος τοῦ μείλιον.

15 Ἀλλ' ἔχ' ὡς τὸ παράπλωμα, ἔτω καὶ τὸ
χάρισμα. εἰ γὰρ τῷ ἑνὸς ᾠραπλώματι οἱ
πολλοὶ ἀπέθανον, πολλῶν μείλιον ἢ χάρις τοῦ
Θεοῦ καὶ ἡ δωρεὰ ἐν χάριτι τῇ ἑνὸς ἀνθρώπου
Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς τοὺς πολλοὺς ἐπερίσσει.

16 Καὶ ἔχ' ὡς δι' ἑνὸς ἀμαρτήτων, τὴν
δωρεάν· τὸ μὲν γὰρ κέλημα ἐξ ἑνὸς εἰς κατὰ-
κερμα· τὸ δὲ χάρισμα ἐν πολλῶν ᾠρα-
πλώματων εἰς δικαίωμα.

17 Εἰ γὰρ τῷ ἑνὸς ᾠραπλώματι ὁ θάνα-
τος ἰσοκίλυσε διὰ τοῦ ἑνὸς, πολλῶν μείλιον
οἱ δὲ δωρεάν τῆς χάριτος καὶ τῆς δωρεᾶς τῆς δι-
καιοσύνης λαμβάνουσι, ἐν ζωῇ βασιλεύ-
ουσι διὰ τοῦ ἑνὸς Ἰησοῦ Χριστοῦ.

18 Ἄρα οὐκ ὡς δι' ἑνὸς ᾠραπλώματος, εἰς
πάντας ἀνθρώπους, εἰς κατὰκερμα· ἔτω καὶ
δι' ἑνὸς δικαίωμα, εἰς πάντας ἀνθρώπους,
εἰς δικαίωσιν ζωῆς.

19 Ὅτι περὶ γὰρ διὰ τῆς ᾠρακτοῦς τοῦ ἑνὸς ἀν-
θρώπου ἀμαρτωλοὶ κατεστύθησαν εἰ πολλοί,
ἔτω καὶ διὰ τῆς ἰσακτοῦς τοῦ ἑνὸς δικαίωμα κα-
τεστύθησονται οἱ πολλοί.

20 Νόμος δὲ παρεσέληθεν ἵνα παλινοῦσθαι τὸ
ᾠραπλωμα. ἔδ' ἵνα παλινοῦσθαι ἢ ἀμαρτία,
ὑπερπερίσσει ἢ χάρις.

21 ἵνα ὡς περὶ ἰσοκίλυσεν ἢ ἀμαρτία ἐν
τῷ

τῶ θανάτῳ, ἕτω καὶ ἡ χάρις βασιλεύσῃ
 διὰ δικαιοσύνης εἰς ζωὴν αἰώνιον, διὰ
 Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.

Κεφ. 5. 6.

- 1 **Τ**ὶ οὖν ἐρῶμεν; ἐπιμνησόμεθα τῇ ἀμαρτίᾳ,
 ἵνα ἡ χάρις πλεονάσῃ;
- 2 Μὴ γλοῖθ' οἵτινες ἀπεθάνομεν τῇ ἀμαρ-
 τίᾳ, πῶς ἐπιζησομεθα ἐν αὐτῇ;
- 3 Ἡ ἀγνοεῖτε ὅτι ὅσοι ἐδοκίμασθημεν εἰς Χρι-
 στὸν Ἰησοῦν, εἰς τὸ θάνατον αὐτοῦ ἐδοκίμασθημεν;
- 4 Σωθεῖσθαι ἐν αὐτῷ διὰ τοῦ βαπτί-
 σματος εἰς τὸ θάνατον ἵνα ὡς περὶ ἡμετέρας Χρι-
 στὸς ἐκ νεκρῶν διὰ τὸ δόξης τοῦ πατρὸς, ἕτω
 ἔῃμε ἐν καμνότητι ζωῆς ὡς περὶ αἰήτων.
- 5 Εἰ γὰρ σύμφυτοι γεγόναμεν τῷ ὀμιώ-
 ματι τοῦ θανάτου αὐτοῦ, ἀλλὰ καὶ τὸ ἀναστῆ-
 σθαι ἐσόμεθα.
- 6 Τὸτο γνώσκοντες, ὅτι ὁ παλαιὸς ἡμῶν
 ἄνθρωπος συνεσκαυρώθη, ἵνα καθαιρεθῇ τὸ
 σῶμα τῆς ἀμαρτίας, ἵνα μὴ ἐπιδεδούλη ἡμεῖς
 τῇ ἀμαρτίᾳ.
- 7 Ὁ γὰρ ἀποθανὼν δεδικαιώθη διὰ τῆς
 ἀμαρτίας.
- 8 Εἰ ἡ ἀπεθάνομεν σὺν Χριστῷ, πισύομεθα
 ὅτι καὶ συζήσομεθα αὐτῷ.
- 9 Εἰδότες ὅτι Χριστὸς ἐγεθῆς ἐκ νεκρῶν,
 ὅτι ἐκ δευτέρου ἐζήσθη, ἵνα ὡς περὶ αὐτοῦ
 ἐκ νεκρῶν.

10 Ὁ γὰρ

- 10 Ὅ γὰρ ἀπίθανοι, τῇ ἀμαρτίᾳ ἀπίθανοι ἐφ-
 ἀπαξ· ὃ ἢ ζῆ, ζῆ τῷ Θεῷ.
- 11 Οὕτω καὶ ὑμεῖς λογίζεσθε, ἑαυτὰς νεκρὰς
 μὴ εἶναι τῇ ἀμαρτίᾳ, ζῶντας ἢ τῷ Θεῷ ἐν
 Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ὑμῶν.
- 12 Μὴ εἴη βασιλεύειτω ἡ ἀμαρτία ἐν τῷ θνη-
 τῷ ὑμῶν σώματι, εἰς τὸ ὑπακῆν αὐτῇ ἐν
 ταῖς ἐπιθυμίαις αὐτοῦ.
- 13 Μὴ δὲ παρεστάνετε τὰ μέλη ὑμῶν ὅπως
 ἀδικίας τῇ ἀμαρτίᾳ· ἀλλὰ ὡφραθήσατε
 ἑαυτὰς τῷ Θεῷ ὡς ἐκ νεκρῶν ζῶντες, καὶ τὰ
 μέλη ὑμῶν ὅπως δικαιοσύνης τῷ Θεῷ.
- 14 Ἀμαρτία γὰρ ὑμῶν ἔκ κυριότητός· ἔχαιρ
 ἔσε ὑπὸ νόμον, ἀλλ' ὑπὸ χάριν.
- 15 Τί εἶ; ἀμαρτήσουμι, ὅτι ἔσκη ἔσκη ὑπὸ
 νόμον, ἀλλ' ὑπὸ χάριν; Μὴ ἤνοιξ.
- 16 Οὐκ οἴδατε ὅτι ὧ παρεστάνετε ἑαυτὰς δέ-
 λος εἰς ὑπακοῆν, δέλοισι ἔσε ὧ ὑπακῆσι,
 ἢτοι ἀμαρτίας εἰς θάνατον, ἢ ὑπακοῆς εἰς
 δικαιοσύνην;
- 17 Χάρις δὲ τῷ Θεῷ ὅτι ἦτε δέλοισι τῆ ἀμαρ-
 τίας, ὑπακῆσατε ἢ ἐκ καρδίας εἰς ὃν παρ-
 εδόθη τύποι διδασκῆς.
- 18 Ἐλευθερωθέντες δὲ ἀπὸ τῆ ἀμαρτίας, ἐδου-
 λώθητε τῇ δικαιοσύνῃ.
- 19 Ἀνθρώπων λέγω, διὰ τὸ ἀσθενῆσαι τὸ σαρ-
 κὸς ὑμῶν, ὥστε γὰρ παρεστάνετε τὰ μέλη
 ὑμῶν δέλα τῇ ἀκαταξία καὶ τῇ ἀνομία εἰς
 τὴν

τιὰ ἀνομίαν· ἐπιτιμῶν ὡς ἔσθλα τὰ μέ-
 λη ὑμῶν δεῖλα τῇ δικαιοσυνῇ εἰς ἀγασμόν.

20 Ὅτε γὰρ δελοῖ ἦτε τῆ ἀμαρτίας, ἐλδύθεροι
 ἦτε τῇ δικαιοσυνῇ.

21 Τίνα ἐν καρπῶν εἶχέτε τότε, ἐφ' οἷς νυν
 ἐπαγχευέσθε; τὸ γὰρ τέλει ἐκείνων, θά-
 ναίει.

22 Νυνὶ δὲ ἐλδύθερωθέντες ἀπὸ τῆ ἀμαρτίας,
 δελωθέντες δὲ τῷ Θεῷ, εἶχέτε τὴν καρπὸν ὑμῶν
 εἰς ἀγασμόν· τὸ δὲ τέλει, ζωὴ αἰώνιον.

23 Τὰ γὰρ ὄψονια τῆ ἀμαρτίας, θάναίει· τὸ
 δὲ χάρισμα τοῦ Θεοῦ, ζωὴ αἰώνιον ἐν Χριστῷ
 Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.

Κεφ. ζ' 7.

1 Ἡ ἀγνοεῖτε ἀδελφοί (γιώσκεσι γὰρ νό-
 μων λαλῶν) ὅτι ὁ νόμος κυριεύει τοῦ ἀν-
 θρώπου ἐφ' ὅσον χρόνον ζῆ;

2 Ἡ γὰρ ὑπανδρῶν γυνὴ τῷ ζῶντι ἀνδρὶ δε-
 δεῖ νόμου· εἰ δὲ ἀποθάνῃ ὁ ἀνὴρ, κατήρ-
 γη δὲ ἀπὸ τοῦ ἀνδρός.

3 Ἄρα ἐν ζῶντι τοῦ ἀνδρός μοιχαλὶς χρημα-
 τιστῆ, εἰ δὲ γυνὴ ἀνδρὶ ἐτέρῳ· εἰ δὲ ἀποθάνῃ ὁ
 ἀνὴρ, ἐλδύθερα ἐστὶν ἀπὸ τοῦ νόμου· ὅτι μὴ εἶναι
 αὐτὴ μοιχαλίδα, γυναικὶ ἀνδρὶ ἐτέρῳ.

4 Ὡστε, ἀδελφοί μου, καὶ ὑμεῖς ἐταπεινώθητε
 τῷ νόμῳ διὰ τὸ σῶμαίει τοῦ Χριστοῦ· εἰς τὸ
 θμεῖσθε ὑμᾶς ἐτέρῳ τῷ ἐκ νεκρῶν ἐγεθέντι,
 ἵνα καρποφορήσωμεν τῷ Θεῷ.

5 Ὅτε

- 5 Ὅτι γὰρ ἡμεῖς ἐν τῇ σαρκί, τὰ παθήματα
τῆ ἀμαρτανῶν καὶ Διὰ τὸ νόμον ἐνηργεῖτε ἐν
τοῖς μέλεσιν ἡμῶν, εἰς τὸ καρποφορῆσαι τῷ
θανάτῳ·
- 6 Νυνὶ δὲ κατηγορήθημεν ἀπὸ τοῦ νόμου, ἀπο-
θανοῦσθαι ἐν αὐτῷ κατηρόμεθα· ὥστε δευδύνη
ἡμεῖς ἐν κακότητι πνύμεθα, καὶ ἐπαλαιό-
τητι γράμματα·
- 7 Τί ἐν ἐμοῖς; Ὁ νόμος ἀμαρτανῶν; Μὴ
γινώσκω· ἀλλὰ τὴ ἀμαρτανῶν σὺν ἔργων εἰ μὴ
Διὰ νόμον. τί πῶς γὰρ ἐπιθυμῶν σὺν ἡδονῇ εἰ
μὴ ὁ νόμος ἐλέγη· Οὐκ ἐπιθυμῶς.
- 8 Ἀφορμῶν δὲ λαβῶσθε ἠ ἀμαρτανῶν, Διὰ τὴ
ἐντολῆς κατηργάσατε ἐν ἐμοῖς πᾶσαν ἐπιθυ-
μῶν· χωρὶς γὰρ νόμου ἀμαρτανῶν νεκροῖ·
- 9 Ἐγὼ δὲ ἐζῶν χωρὶς νόμου ποτέ· ἐλθέσης δὲ
τῆ ἐντολῆς, ἠ ἀμαρτανῶν ἀνέζησεν·
- 10 Ἐγὼ δὲ ἀπέθανον· καὶ δόρεθη μοι ἠ ἐντολῆ
ἠ εἰς ζωὴν, αὐτῇ εἰς θάνατον·
- 11 Ἡ γὰρ ἀμαρτανῶν ἀφορμῶν λαβῶσθε Διὰ τὴ
ἐντολῆς, ἐξηπάτησέ με, ἐ δὲ αὐτῇ ἀπέκλιθην·
- 12 Ὡστε ὁ μὴ νόμος ἁγίος καὶ ἠ ἐντολῆ
ἀγία καὶ δικαία καὶ ἀγαθή·
- 13 Τὸ ἐν ἀγαθῶν, ἐμοῖς γέγονε θάνατος; Μὴ
γινώσκω· ἀλλὰ ἠ ἀμαρτανῶν, ἵνα φανῇ ἀμαρ-
τανῶν, Διὰ τὸ ἀγαθῶν μοι κατεργαζομένη θά-
νατος, ἵνα γινῇ καὶ ὑπερβολῶς ἀμαρ-
τανῶν ἠ ἀμαρτανῶν Διὰ τῆς ἐντολῆς.

14 Οἶδα-

- 14 Οἶδα γὰρ ὅτι ὁ νόμος πνευματικός
ἐστίν· ἐγὼ δὲ σαρκικός εἰμι, πεπερασμένος ὑπὸ
τῆς ἁμαρτίας.
- 15 Ὁ γὰρ κατεργάζομαι, ἐγνώσκω· ἐγὼ δὲ
θέλω, τὸ εὖ πράσσω, ἀλλ' ὁ μισῶ, τὸ εὖ ποιεῖν.
- 16 Εἰ ἢ ὁ ἐθέλω, τὸ εὖ ποιεῖν, σύμφημι τῷ
νόμῳ ὅτι καλός.
- 17 Νυνὶ ἢ σὸκ' ἐπὶ ἐγὼ κατεργάζομαι αὐτὸ,
ἀλλ' ἡ οἰκῶσα ἐν ἐμοὶ ἁμαρτία.
- 18 Οἶδα γὰρ ὅτι ἐκ οἰκῆς ἐν ἐμοὶ (τὰ πτῖσιν ἐν τῇ
σαρκί μου) ἀγαθόν· τὸ γὰρ θέλω ἐργάζομαι
καλόν, τὸ ἢ κατεργάζομαι τὸ καλόν, ἐγὼ οὐκ εἶσκω.
- 19 Οὐ γὰρ ὁ θέλω, ποιεῖν ἀγαθόν· ἀλλ' ὁ ἐθέ-
λω κακόν, τὸ εὖ πράσσω.
- 20 Εἰ ἢ ὁ ἐθέλω ἐγὼ τὸ εὖ ποιεῖν, σὸκ' ἐπὶ ἐγὼ
κατεργάζομαι αὐτὸ, ἀλλ' ἡ οἰκῶσα ἐν ἐμοὶ
ἁμαρτία.
- 21 Εὐρίσκω ἄρα τὸ νόμον τῷ θελοντι ἐμοὶ
ποιεῖν τὸ καλόν, ὅτι ἐμοὶ τὸ κακόν ἐργάζομαι.
- 22 Συνοδοῦμαι γὰρ τῷ νόμῳ τῆς Θεῆς καὶ τῆς ἔσσης
ἀνθρώπων.
- 23 Βλέπω ἢ ἕτερον νόμον ἐν τοῖς μέλεσί μου
ἀντιπαραδεδόμενον τῷ νόμῳ τῆς νοῦς μου, καὶ ἀιχ-
μαλωτίζοντά με τῷ νόμῳ τῆς ἁμαρτίας τῷ
όντι ἐν τοῖς μέλεσί μου.
- 24 Ταλαίπωρος ἐγὼ ἄνθρωπος· τίς με
ρύσει ἐκ σώματος τῆς θανάτου τούτου;
- 25 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ τῆς
Κυρίας

Κυρία ἡμῶν. Ἄρα οὐκ αὐτὸς ἐγὼ τὰ μὲν
 τοῖ δαδύω νόμῳ Θεῷ, τῆ δὲ σαρκί, νόμῳ
 ἀμαρτίας.

Κεφ. η'. 8.

1 Οὐδὲν ἄρα νῦν κατὰ κριμα τοῖς ἐν Χρι-
 στῷ Ἰησοῦ, μὴ καὶ σάρκα φειπατῶσι,
 ἀλλὰ καὶ πνεῦμα.

2 Οὐ γὰρ νόμῳ εἶ πνύματι εἶ ζωῆς ἐν
 Χριστῷ Ἰησοῦ, ἠλδύθέρωσί με ἀπὸ εἶ νόμου εἶ
 ἀμαρτίας καὶ εἶ θανάτου.

3 Τὸ γὰρ ἀδύνατον εἶ νόμου ἐν ᾧ ἠδύθέρωσί Διὰ
 τὴ σαρκός, ὁ Θεὸς εἶ ἑαυτῶ ἡοὶ πύμας ἐν
 ὀργιάματι σαρκός ἀμαρτίας, καὶ φει ἀμαρ-
 τίας, κατέκρινε εἶ ἀμαρτίαν ἐν τῆ σαρκί.

4 Ἴνα τὸ δικαίωμα εἶ νόμου πληρωθῆ ἐν
 ἡμῖν τοῖς μὴ καὶ σάρκα φειπατῶσι, ἀλλὰ
 καὶ πνεῦμα.

5 Οἱ γὰρ καὶ σάρκα ὄντες τὰ εἶ σαρκός φρο-
 νῶσι, οἱ ἡ καὶ πνεῦμα, τὰ εἶ πνύματι.

6 Τὸ γὰρ φρόνημα εἶ σαρκός, θάνατο· τὸ
 δὲ φρόνημα εἶ πνύματι, ζωὴ καὶ ἀρλή.

7 Διὸ π τὸ φρόνημα εἶ σαρκός, ἔχτρα εἰς
 Θεόν. τὰ γὰρ νόμου εἶ Θεῷ ἔχ ὑποτάσσει·
 ἔδὲ γὰρ δυνάει.

8 Οἱ ἡ ἐν σαρκί ὄντες, Θεῷ ἀρῶσι εἶ δυνάει.

9 Ὑμεῖς ἡ ἐκ ἐσὲ ἐν σαρκί, ἀλλ' ἐν πνύματι,
 εἰ φει πνεῦμα Θεῷ οἰκεῖ ἐν ὑμῖν. εἰ δὲ καὶ
 πνεῦμα Χριστῷ ἔκ ἐχ, ἔτ· ἔκ ἐσιν αὐτῷ.

10 Εἰ

- 10 Εἰ ἢ Χριστὸς ἐν ὑμῖν, τὸ μὲν σῶμα νεκρὸν δι' ἁμαρτίαν· τὸ ἢ πνεῦμα, ζωὴ διὰ δικαιοσύνην.
- 11 Εἰ δὲ τὸ πνεῦμα ἔργειρα Ἰησοῦ ἐν νεκρῶν οἰκῆ ἐν ὑμῖν, ὁ ἐξείρας τὸ Χριστὸν ἐκ νεκρῶν, ζωοποιήσῃ καὶ τὰ θνητὰ σώματα ὑμῶν, διὰ ἃ ἐνοικῆσιν αὐτῷ πνεύματι ἐν ὑμῖν.
- 12 Ἄρα ἔν, ἀδελφοί, ὀφλέταί ἐσ μὲν ἐν τῇ σαρκί, ἔκ τῆ σαρκὶ ζῆν.
- 13 Εἰ γὰρ κτῆ σαρκὶ ζῆτε, μέλλετε ἀποθνήσκειν· εἰ ἢ πνεύματι ζῆτε πρὸς τὸ σῶμα ἔμνατα ἔτε, ζήσεσθε.
- 14 Ὅσοι γὰρ πνεύματι Θεῷ ἄγονται, ἔτι εἰσιν υἱοὶ Θεοῦ.
- 15 Οὐ γὰρ ἐλάβετε πνεῦμα δουλείας πάλιν εἰς φόβον, ἀλλ' ἐλάβετε πνεῦμα υἱοθεσίας, ἐν ᾧ κράζομεν, Ἀβὸα ὁ πατήρ.
- 16 Αὐτὸ τὸ πνεῦμα συμμαρτυρεῖ τῷ πνεύματι ἡμῶν ὅτι ἐσ μὲν τέκνα Θεοῦ.
- 17 Εἰ ἢ τέκνα, καὶ κληρονόμοι· κληρονόμοι μὲν Θεοῦ, συγκληρονόμοι δὲ Χριστοῦ· εἰσὶν συμπίχομεν, ἵνα καὶ σωδοξασθῶμεν.
- 18 Λογίζομαι γὰρ ὅτι ἔσκα ἄξια τὰ παθήματα ἔνω κατὰ τὸ πνεῦμα ἕως τὸ μέλλεσθαι δοξαζομένους ἀποκαλυφθῆναι εἰς ἡμᾶς.
- 19 Ἡ γὰρ ἀποκαρδοκία τῆ κτίσεως καὶ ἀποκαλύψιν τῶν ἡμῶν Θεοῦ ἀπικδέχεται.

Ζ

20 Γῆ

- 20 Τῆ γὰρ ματαιότητι ἡ κτίσις ὑπερέβη,
ὅτι ἐκῆσα, ἀλλὰ διὰ τὸ ὑποτάξασθαι.
- 21 Ἐπ' ἐλπίδι, ὅτι καὶ αὐτὴ ἡ κτίσις ἐλευ-
θερωθήσεται διὰ τὸ δούλειαν τῆς φθορᾶς εἰς τὴν
ἐλευθερίαν τῆς δόξης τῆς τιμῆς τοῦ Θεοῦ.
- 22 Οἶδαμεν γὰρ ὅτι πάνσαι ἡ κτίσις συσενάξεται
καὶ συναδικηθήσεται ὑπὸν.
- 23 Οὐ μόνον ἡ, ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ τὸ ἀπαρχαίω-
μα τῆς πύμνης ἔχοντες, καὶ ἡμεῖς αὐτοὶ ἐν ἑαυ-
τοῖς σενάξομεν, ὑποφασίαν ἀπεκδεχόμενοι, καὶ
ἀπολύτρωσιν τοῦ σώματος ἡμῶν.
- 24 Τῆ γὰρ ἐλπίδι ἐσώθημεν. ἐλπίς ἡ βλέπο-
μενη, ὅτι ἐστι ἐλπίς· ὁ γὰρ βλέπων ἴσως, τί καὶ
ἐλπίζει;
- 25 Εἰ ἡ ὁ ὁ βλέπων, ἐλπίζομεν, διὰ ὑπο-
μνήσεως ἀπεκδεχόμεθα.
- 26 Ὡσαύτως ἡ καὶ τὸ πνεῦμα συναντιλαμ-
βάνεται τῆς ἀσθενείας ἡμῶν· τὸ γὰρ τί ἄπο-
σώμακα καὶ δεῖ, ὅτι οἶδαμεν, ἀλλ' αὐτὸ
τὸ πνεῦμα ὑπερεντυγχάνει ὑπὲρ ἡμῶν σε-
ναξοῖς ἀλαλήτοις.
- 27 Ὁ ἡ ἐρουνῶν ἴσως καρδίας, οἶδε τί τὸ φρό-
νημα τοῦ πνεύματος, ὅτι καὶ Θεὸν ἐντυγχάνει
ὑπὲρ ἡμῶν.
- 28 Οἶδαμεν ἡ ὅτι τοῖς ἀγαπῶσι τὸν Θεόν,
πάντα συνεργεῖ εἰς ἀγαθόν, τοῖς καὶ ἁρτίστοις
κλητοῖς ἔσιν.
- 29 Ὅτι ἐς ἁρτίστον, ἐς ἁρτίστον συμμέρφως
τῆς

τῆς ἐκλήσεως ἡμῶν αὐτῶν, εἰς τὸ εἶναι αὐτὸν
 ἀποστόλον ἐν πολλοῖς ἀδελφοῖς.

30 Οὐς ἡ ἀποστολή, τέτυκται καὶ ἐκάλυψε καὶ
 ἕως ἐκάλυψε, τέτυκται καὶ ἐδικαίωσεν ἕως ἡ ἐδι-
 καίωσε, τέτυκται καὶ ἐδύξασε.

31 Τί ἐν ἐρεμῶνι πρὸς ταῦτα; εἰ ὁ Θεὸς ὑπὲρ
 ἡμῶν, πῶς καὶ ἡμῶν;

32 Ὅς γε ἡ ἰδέα ἡμῶν ἐκ ἐφείσασθε, ἀλλ' ὑπὲρ
 ἡμῶν πάντων παρέδωκεν αὐτὸν, πῶς ἐχέ-
 καὶ σὺ αὐτῷ τὰ πάντα ἡμῶν χάριστε;

33 Τίς ἐγγηγάρισεν ἡμῶν ἐκλεκτῶν Θεῶν; Θεὸς
 ὁ δικαίων.

34 Τίς ὁ κατακρίνων; Χριστὸς ὁ ἀποσταλὸν,
 μακρόν ἡ ἐγεθῆς, ὅς καὶ ἔστιν ἐν δεξιᾷ τοῦ
 Θεοῦ, ὅς καὶ ἐκτυχεῖν ὑπὲρ ἡμῶν.

35 Τίς ἡμῶν χάριστε ἀπὸ τῆς ἀγάπης τοῦ
 Χριστοῦ; Θλίψις, ἡ στενοχωρία, ἡ διω-
 μὸς, ἡ λιμὸς, ἡ γυμνότης, ἡ κίνδυνος, ἡ
 μάχη;

36 (Καθὼς γέγραπται), Ὅτι ἐνεκά (κατανα-
 τήματα ὅλων τῶν ἡμερῶν ἐλογίσθημεν ὡς
 ἀποβάντα σφαγῆς)

37 Ἀλλ' ἐν τέτοις πάνσιν ὑπερνικῶμεν διὰ
 τοῦ ἀγαπήσαντός ἡμῶν.

38 Πέπεσμεν γὰρ ὅτι ἔτε θάνατος, ἔτε ζωὴ,
 ἔτε ἄγγελοι, ἔτε ἀρχαί, ἔτε δυνάμεις,
 ἔτε ἐνεσῶτα, ἔτε μέλλοντα,

39 Οὔτε ὑψώμεθα, ἔτε βάθρος, ἔτε πῖς
 Ζ 2 κήσις

κλίσις ἐτέρωθι διωθήσε) ἡμῶς χωρίσθη δὲ τὸ
ἀγάπης ἔστι Θεὸς, τὸ ἐν Χερσαῖ Ἰησοῦ τῆς Κυ-
ρίου ἡμῶν.

Κεφ. 9. 9.

- 1 **Α** Λήθησαν λέγω ἐν Χερσαῖ, ἔστι ψεύδομαι,
(συμμαρτυρήσεως μοι τὸ σωφρονησῶς με
ἐν πνεύματι ἁγίῳ.)
- 2 Ὅτι λύπη μοι ἐστὶ μεγάλη, καὶ ἀδιάλεπτος
ὁδυνη τῆς καρδίας μου.
- 3 Ἡ ἐλπίς μου γὰρ αὐτὸς ἐγὼ ἀνάστημα εἶναι δὲ τὸ
ἔστι Χερσαῖ ὑπὲρ τῶν ἀδελφῶν μου τὸ συχνοῦ
μου καὶ σάρκα.
- 4 Οἱ πῖνες εἰσιν Ἰσραηλιταί, ὧν ἡ ἰσοθε-
σία καὶ ἡ δόξα καὶ αἱ ἀγαθότητες καὶ ἡ νομοθε-
σία ἔστι ἡ λατρεία ἔστι παρὰ Χερσαῖ.
- 5 Ὡν οἱ πατέρες, καὶ ἐξ ὧν ὁ Χερσαῖ τὸ καὶ
σάρκα, ὁ ὧν ἐπὶ πάντων Θεὸς δύλογητος εἰς
τὰς αἰῶνας. ἀμήν.
- 6 Οὐχ οἶον εἶπε ὅτι ἐκπέπλωκεν ὁ λόγος ἔστι
Θεὸς ἔστι γὰρ πάντες οἱ ἐξ Ἰσραὴλ, ἔστι Ἰσραὴλ.
- 7 Οὐδὲ ὅτι εἰσὶ σάρκα Ἀβραάμ, πάν-
τες τέκνα· ἀλλ' ἐν Ἰσαὰκ κληθήσεται σοὶ
σάρκα.
- 8 Τετάρτη, ἔστι τὰ τέκνα τῆς σαρκός, ταῦτα
τέκνα ἔστι Θεὸς· ἀλλὰ τὰ τέκνα τῆς παρὰ Χερσαῖ,
λογίζε) εἰς σάρκα.
- 9 Ἐπαρὰ Χερσαῖ γὰρ ὁ λόγος ἔστι Καὶ τὸ
καίρον τῶν ἐλευσῶν, ἔστι τῆς Σάρρα ἡσ.

10 Οὐ

- 10 Οὐ μόνον ἤ, ἀλλὰ καὶ Ρεβέκκα, ἐξ ἐνὸς κρη-
τιώ ἔχουσα, Ἰσαὰκ δὲ πατὴρ ἡμῶν.
- 11 Μήπω γὰρ ἠγνοῦντων, μηδὲ περ ἀξάντων
πὲρ ἀγαθὸν ἢ κακόν, ἵνα ἢ κατ' ἐκλογὴν δὲ
Θεῶν παρ' ἑστίς μὲν, ὅσα ἐξ ἔργων, ἀλλ' ἐν δὲ
καλεῖσθαι,
- 12 Ἐρρήθη αὐτῇ· Ὅτι ὁ μείζων δευλόγη τῶν
ἐλασσόνων.
- 13 Καθὼς γάρ γεραπ^τ· Τὸν Ἰακώβ ἠγάπησα,
τὸ δὲ Ἰσαὰκ ἐμίσησα.
- 14 Τί ἔστι ἐρῶ μὲν; μὴ ἀδικία ὡς τῶν Θεῶν;
Μὴ ἠγνοῦσθε.
- 15 Τῶν γὰρ Μωσῆ λέγει· Ἐλεύσω ὃν αὐτὸς ἐλεῶ,
καὶ οὐκ ἐκρήσω ὃν αὐτὸς οὐκ ἐλείρω.
- 16 Ἄρα ἔν ἐστὶ θελοῦσθαι, ἔστι δὲ τρεῖς τοῦ
ἀλλὰ δὲ ἐλεῶντ^ε Θεῶν.
- 17 Λέγει γὰρ ἡ γραφὴ τῶν Φαραῶν· Ὅτι εἰς αὐτὸ
τῆτο ἐξήχησάτε, ὅπως ἐνδείξωμαι ἐν σοὶ τὸ
δυνάμειν μου, καὶ ὅπως ἀφ' ἑμαυτοῦ τὸ ὄνομα
μου ἐν πάτη τῆ γῆ.
- 18 Ἄρα ἔν ὃν θελῶ ἐλεῶ, ὃν δὲ θελῶ σκλη-
ρευῶ.
- 19 Ἐρεῖς ἔν μοι· Τί ἐπι μίμφε^τ; τῶν βαλῆ-
ματι αὐτῶ πῶς ἀνέστηκε;
- 20 Μενέωντα, ὡς ἄνθρωπε, σὺ πῶς εἶ ὁ ἀντα-
ποκρινόμενος τῶν Θεῶν; Μὴ ἔρεῖ τὸ πλά-
σμα τῶν πλάστων; Τί με ἐποίησας ἔτι;
- 21 Ἡ ὅσα ἐχθρὰ ἐξέστειαν ὁ κροταμύς δὲ πηλῆ,

ἐκ τῆ αὐτῆ Φυράμαλθ ποιήσαι. ὁ μὲν εἰς
πικρὸν σκεῦθ, ὁ δὲ εἰς ἀπμίαν;

22 Εἰ ἢ θέλων ὁ Θεὸς ἐνδείξασθ τὴν ὀργὴν,
καὶ γνωρίσαι τὸ δυνάτον αὐτοῦ, ἵνα ἐκείναι ἐν
πολλῇ μακροθυμίᾳ σκεδύη ὀργῆς καταπρα-
σινῶν εἰς ἀπώλειαν;

23 Καὶ ἵνα γνωρίση τὸ πλεονεξῆσαι τὴν δόξαν αὐτῆ
ἐπὶ σκεδύη ἐλέος ἀποθηταίμαζεν εἰς δόξαν;

24 Οὐς καὶ ἐκάλεισεν ἡμας, ἢ μόνον ἐξ Ἰσ-
ραήλων, ἀλλὰ καὶ ἐξ ἔθνων·

25 Ὡς καὶ ἐν τῷ βιβλίῳ λέγει· Καλέσω τὸ ἔθνος
μα, λαὸν μου· καὶ τὸ σκεδύη ἡγαπηθῆναι, ἡγα-
πηθῆναι.

26 Καὶ ἔσται, ἐν τῷ τόπῳ ἃ ἐρήθη αὐτοῖς·
Οὐ λαὸς μου ὑμεῖς, ἐκεῖ κληθήσονται ὑποὶ
Θεοῦ ζῶντος.

27 Ἡσοῦας ἢ κρῆσις ὑπὲρ τῆ Ἰσραήλ· Εἰ αὐτῆ
ὁ δριφθμὸς τῆ ὑπὸν Ἰσραήλ ὡς ἡ ἀμμοθ τῆ
θαλάσσης, τὸ κατὰ λῆμμα σωθήσεται.

28 Λόγον γὰρ σωτελῶν καὶ σωτέμων ἐν δι-
καιοσυνῇ, ὅτι λόγον σωτέμων ποιήσας
Κύριος ἐπὶ τῆς γῆς.

29 Καὶ κατὰ τὴν ἀπειρήκεν Ἡσοῦας· Εἰ μὴ
Κύριος Σαβαὼθ ἐγκατέλιπεν ἡμῶν σπέρ-
μα, ὡς Σόδομα αὐτὸ ἐρημώθη, καὶ ὡς Γό-
μορρα αὐτὸ ἀμειώθη.

30 Τί ἐν ἐρεθισμῷ; Ὅτι ἔθνη τὰ μὴ δυνάμενα
δικαιοσύνην, κατέλαβον δικαιοσύνην, δι-
καιοσύνην ἢ τὸ ἐκ πίστεως· 31 Ἰσ-

- 31 Ἰσραὴλ ἢ διὰ τῶν νόμων δικαιοσύνης, εἰς νόμον δικαιοσύνης οὐκ ἔφθασε.
- 32 Διατί; Ὅτι ἐκ ἐκ πίστεως, ἀλλ' ὡς ἐξ ἔργων νόμος. προσέκοψαν γὰρ τὰ λίθα ἔπροσκόμματον.
- 33 Καθὼς γέγραπεν Ἰδὲ, πέτημι ἐν Σιών λίθον προσκόμματος, καὶ πέτραν σκανδάλου. Ἐπὶ αὐτῆς ὁ πιστεύων ἐπ' αὐτῆς, ἐκκαίεται καὶ κλινοθήσεται).

Κεφ. ι'. 10.

- 1 Ἀδελφοί, ἡ μὲν δόξα τῆς ἐμεῖς καρδίας, ἢ ἡ δέησις ἢ πρὸς τὸ Θεόν, ὑπὲρ ἔσται Ἰσραὴλ εἰς εἰς σωτηρίαν.
- 2 Μαρτυροῦν γὰρ αὐτοῖς ὅτι ζῆλον Θεοῦ ἔχουσιν, ἀλλ' ἐκ ἐπιγνώσει.
- 3 Ἀγνοῶντες γὰρ τὸ Θεοῦ δικαιοσύνην, καὶ τὴν ἰδίαν δικαιοσύνην ζητούντες ἡσυχίαν, τῆ δικαιοσύνη Θεοῦ ἐκκαίθησαν.
- 4 Τέλει γὰρ νόμος Χριστός, εἰς δικαιοσύνην παντὶ τῶ πιστεύοντι.
- 5 Μωσῆς γὰρ γράφηται τὴν δικαιοσύνην ἐκ τῆ νόμος, ὅτι ὁ ποιήσας αὐτὰ ἀνθρώπων, ζήσεται ἐν αὐτοῖς.
- 6 Ἡ δὲ ἐκ πίστεως δικαιοσύνη ἐπὶ λέγει· Μὴ εἴπῃς ἐν καρδίᾳ (καὶ τίς ἀναθήσεται εἰς τὸ ἔρανον; Τὸ ἐστὶ Χριστὸν κατὰ ζαχαρίαν.
- 7 Ἡ· τίς κατὰθήσεται εἰς τὴν ἄβυσσον; Τὸ ἐστὶ Χριστὸν ἐκ νεκρῶν ἀναζαχαρίαν.
- 8 Ἀλλὰ τί λέγει; Ἐχθρός (καὶ τὸ ῥῆμα ἐστὶν ἐν

Z 4. τῶ

τῶ στόματι (καὶ ἐν τῇ καρδίᾳ σου. τὸ ἔσται
τὸ ῥῆμα τῆς πίστεως ὁ κηρύσσοντι·

9. Ὅτι εἰάν ὁμολογήσῃς ἐν τῶ στόματι (καὶ Κύ-
ριοι Ἰησοῦν, καὶ πισύσῃς ἐν τῇ καρδίᾳ (καὶ
ὅτι ὁ Θεὸς αὐτὸν ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν, σωθήσῃ.
10. Καρδία γὰρ πισύεται εἰς δικαιοσύνην·
στόματι δὲ ὁμολογεῖται εἰς σωτηρίαν.
11. Λέξις γὰρ ἡ γραφή· Πᾶς ὁ πισύων ἐπὶ
αὐτῶ, ἐκλείψεται (καὶ σωθήσεται).
12. Οὐ γὰρ ἐστὶ διαστολή Ἰουδαίῃς τε καὶ Ἑλ-
λήσι· ὁ γὰρ αὐτὸς Κύριος πάντων, πλῆ-
των εἰς πάντας τὰς ἐπισημασμένους αὐτοῖ.
13. Πᾶς γὰρ ὁς αὐτὸν ἐπισημασθήσεται τὸ ὄνομα
Κυρίου, σωθήσεται.
14. Πῶς οὖν ἐπισημασθήσονται εἰς ὃν σὺ ἐπί-
στυσας; Πῶς ἢ πισύσῃς (καὶ ἔσται ἡ πίστις σου);
Πῶς ἢ ἀκούσῃς (καὶ χωρὶς κηρύσσοντος);
15. Πῶς ἢ κηρύξῃς εἰάν μὴ ἀποσταλάσῃς;
Καθὼς γέγραπται· Ὡς ἄραῖοι οἱ πόδες τῆς
ἀγγελιοφόρων ἐπιπέδων, τῆς ἀγγελιοφό-
ρων τῶ ἀγαθῶ.
16. Ἀλλ' ἐ πάντες ἐπέηκον τῶ ἀγγελίῳ.
Ἡσυχίας γὰρ λέξις· Κύριε, τίς ἐπίστυσε τῇ
ἀκροῇ ἡμῶν;
17. Ἄρα ἡ πίστις ἐξ ἀκροῆς· ἢ ἢ ἀκροῇ ἀπὸ
ῥήματος Θεοῦ.
18. Ἀλλὰ λέγω· Μὴ σὺ ἐπέηκον; Μειῦν γὰρ
εἰς πάντων τῶν γινώσκοντων ἐξῆλθεν ὁ φθῆσις
αὐτῶν,

αὐτῶν, καὶ εἰς τὰ πέρατα τῆς οἰκουμένης τὰ
ρήματα αὐτῶν.

19 Ἀλλὰ λέγω Μὴ ἐκ ἔθνω Ἰσραήλ; Πρῶτος
Μωσῆς λέγει· Ἐγὼ ὡς ζῆλωσάμι ὑμᾶς ἐπὶ
ἐκ ἔθνεθ, ἐπὶ ἔθνεθ ἀσυνέτω παροργισάμι ὑμᾶς.

20 Ἡσέβας ἢ ἀποθλασάμι, καὶ λέγει, Εὐρέθλι
τοῖς ἐμὲ μὴ ζητῶσι, ἐμφανῆς ἐξηυθμίω
τοῖς ἐμὲ μὴ ἐπεραιτῶσι.

21 Πρὸς ἢ τὸ Ἰσραήλ λέγει· Ὅλιον τὴν ἡμέραν
ἐξεπέτασα τὰς χεῖρας μου πρὸς λαὸν ἀπὸ-
θῆντα καὶ ἀνικλήθοντα.

Κεφ. ια'. II.

1 Ἐγὼ εἶν· Μὴ ἀπίστατε ὁ Θεὸς τὸν λαὸν
αὐτῶν; Μὴ χυθίτε. καὶ γὰρ ἐγὼ Ἰσραηλί-
της εἶμι, ἐκ ἀπέριμαθου Ἀβραάμ, φυλῆς
Βενιαμίν.

2 Οὐκ ἀπίστατε ὁ Θεὸς τὸν λαὸν αὐτῶν ὡς
εἶπω. Ἢ ἐκ οἴδατε ἐν Ἡλίᾳ πὶ λέγει ἡ γραφή,
ὡς ἐντυχθῆναι τῷ Θεῷ καὶ τῷ Ἰσραήλ, λέγων·

3 Κύριε, τὸς ἀσφῆθες (ε ἀπέκλιθον, καὶ τὲ
θυσιασθῆναι (ε κατέσκαψαν· κἀγὼ ἰω-
ελείθθλι μοιθ, καὶ ζητῶσι τὴν ψυχλῶ μου.

4 Ἀλλὰ πὶ λέγει αὐτῶν ὁ χρημαθισθός; Καθί-
έλιπον ἐμαυτῶν ἐπὶ τὰ κρηθλῆς ἀνθῶρας οἴπ-
νες ἐκ ἐκαμψαν θῆν τῇ Βααλ.

5 Οὕτως εἶν καὶ ἐν τῶν νῦν κρηθῶν λῆθιμα κρητῶ
ἐκλογθῶν χυθίθου γέθθεται.

6 Εἰ ἢ χυθίθ, ὅση ἐπὶ ἐξ ἔργων ἐπεὶ ἡ χυθίθ

ὅτι ἐπιγίνεται χάρις, εἰ ἢ ἐξ ἔργων, ὅτι ἐπι
ἐστὶ χάρις· ἐπεὶ τὸ ἔργον ὅτι ἐπὶ ἐστὶν ἔργον.

- 7 Τί ἔν; Ὁ ἐπιζητεῖ Ἰσραὴλ, τύττα ὅτι
ἐπέτυχεν· ἢ ἢ ἐκλογὴ ἐπέτυχεν, οἱ ἢ λοιποὶ
ἐπωρώησεν,
- 8 (Κατὼς γάρ γε καὶ)· Ἐδῶκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς
πνεῦμα καὶ ἀνύξσεως, ὀφθαλμοὺς ἔ μὴ βλί-
πην, καὶ ὠτοὺς ἔ μὴ ἀκέφην) ἕως τῆ σήμερον
ἡμέρας.
- 9 Καὶ Δαβὶδ λέγει· Γενηθήτω ἡ τράπεζα
αὐτῶν εἰς πυλῶνα, ἔ εἰς θύραν, καὶ εἰς σκάν-
δαλον, ἔ εἰς ἀναιπόδομα αὐτοῖς.
- 10 Σηλοκλήτωσι οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν ἔ
μὴ βλέπην· καὶ τῆ νῶτον αὐτῶν ἀλαπαύτω
σύγκραψον.
- 11 Λέγω οὖν, μὴ ἐπλαισται ἵνα πίσωσι; Μὴ
γυνοῖτο. ἀλλὰ τῶ αὐτῶν ὡραπίωμα καὶ ἡ
σωτηρία τοῖς ἔθνεσιν, εἰς τὸ ὡραζηλώσασθαι
αὐτοῦς.
- 12 Εἰ ἢ τὸ ὡραπίωμα αὐτῶν πλεῖστον
κῆσμεν, καὶ τὸ ἡτήμα αὐτῶν πλεῖστον ἔθνεων,
πόσον μάλλον τὸ πλήρωμα αὐτῶν;
- 13 Ὑμῖν γὰρ λέγω τοῖς ἔθνεσιν, ἐφ' ὅσον μὲν εἶμι
ἐγὼ ἔθνεων ἀπόστολος, τῆ ἀλακονίαν με δοξάζει.
- 14 Εἶπωσ ὡραζηλώσω με τῆ σάρκα, καὶ
σώσω πινὰς ἐξ αὐτῶν.
- 15 Εἰ γὰρ ἡ ἀποδολὴ αὐτῶν, καὶ ἀλλαγὴ κῆσ-
μεν· ἢς ἡ ἀποδολὴ, εἰ μὴ ζωὴ ἐκ νεκρῶν;

- 16 Εἰ ἢ ἡ ἀπαρχὴ ἀγία, καὶ τὸ φύραμα καὶ
 εἰ ἢ ἡ ῥίζα ἀγία, ἔσονται καὶ οἱ κλάδοι.
- 17 Εἰ δὲ πινυτοὶ κλάδων ἐξεκλάσθησαν, σὺ
 ἢ ἀγριέλαιος ὧν ἐνεκεντρίσθησιν ἐν αὐτοῖς, ἔσονται
 συγχρινωνὸς τῆ ῥίζης καὶ τῆς πότητος τῆς
 ἐλαίας ἐρήθεις,
- 18 Μὴ καὶ κατακωχῶ τῶν κλάδων. εἰ οὐκ ἐκατα-
 κωχῶσαι, ἔσονται πάλιν ῥίζαν βασιλεύσης, ἀλλ' ἢ
 ῥίζα σέ.
- 19 Ἐρεῖς εἶν' ἐξεκλάσθησαν οἱ κλάδοι, ἵνα
 ἐργῶ ἐνεκεντρίσθω.
- 20 Καλῶς τῇ ἀπιστίᾳ ἐξεκλάσθησαν, σὺ
 οὐκ ἐτῆ πίστιν ἔστηκας· μὴ ὑψηλοφρονῆς, ἀλλὰ
 φοβῶς.
- 21 Εἰ γὰρ ὁ Θεὸς τῶν καὶ φύσιν κλάδων ὅσοι
 ἐφείσατο, μὴ πως ἔδωκεν σὺ φείσῃ).
- 22 Ἴδὲ οὐκ ἐχρηστέτηται ἔσονται ἀποθνήσκουσι Θεοῦ·
 ἐπὶ ἡμῶν τὰς πεποιθῆσιν, ἀποθνήσκουσι· ἐπὶ δὲ σε
 ἐχρηστέτηται, ἐὰν ἐπιμείνησιν τῇ ἐχρηστέτηται· ἐπὶ
 καὶ σὺ ἐκκοπήσῃ.
- 23 Καὶ ἐκείνοι ἢ, ἐὰν μὴ ἐπιμείνωσι τῇ ἀπι-
 στίᾳ, ἐνεκεντρίσθησιν). δυνατὸν γὰρ ἐστὶν ὁ Θεὸς
 πάλιν ἐνεκεντρίσαι αὐτούς.
- 24 Εἰ γὰρ σὺ ἐκ τῆ καὶ φύσιν ἐξεκλήθησιν ἀγρι-
 ἐλαίας, καὶ ὡς φύσιν ἐνεκεντρίσθησιν εἰς
 καὶ ἐλαίας, ποτὴ μὴ κλονεῖται, ἔσονται οἱ καὶ φύ-
 σιν, ἐνεκεντρίσθησιν τῇ ἰδίᾳ ἐλαίας;
- 25 Οὐ γὰρ θέλω ὑμῶν ἀγνωεῖν, ἀδελφοί, τὸ
 μυστήριον

- μυσήριον τῆτο, (ἵνα μὴ ᾗτε παρ' ἐαυτοῖς
 φρόνιμοι ἵσχυροὶ ἀπὸ μέρους τοῦ Ἰσραὴλ
 γέγονεν, ἀχρὶς ἔθ' ὁ πληρωμα τῶν ἐθνῶν εἰσέλθη.
 26 Καὶ ἔτω πᾶς Ἰσραὴλ σωθήσεται, καὶ τὸς
 γέγραπται· Ἡξίον Σιών οὐρούμενον, ἔδοξεν
 ἐπὶ τὴν ἀσεβείαν ἀπὸ Ἰακώβ.
 27 Καὶ αὐτὴ αὐτοῖς ἡ παρ' ἡμῶν ἀφ' ἧς
 ὅταν ἀφέλωμαι τὰς ἀμαρτίας αὐτῶν.
 28 Καὶ μὴ τὸ διαγέλιον, ἐχθροὶ δὲ ὑμῶν ἡ
 ἡ τῶν ἐκλογῶν, ἀγαπήσει ἀφ' ἧς τὰς παύσας.
 29 Ἀμειβόμεθα γὰρ τὰ κρίματα καὶ ἡ
 κλήσις τῶν Θεῶν.
 30 Ὅπως γὰρ ἔυμεις ποτε ἠπεθήσατε τοῖς
 Θεοῖς, νῦν ἡ ἐλεήθη τῆ τῆτι ἀπεθεία.
 31 Οὕτω καὶ ἔτοι νῦν ἠπεθήσαν τοῖς ὑμετέροις
 ἐλέει, ἵνα ἔαυτοὶ ἐλεηθῶσι.
 32 Σωκέλησε γὰρ ὁ Θεὸς τὰς πάντας εἰς
 ἀπίθειαν, ἵνα τὰς πάντας ἐλεήσῃ.
 33 Ὡς βάλθη τὸ πνεῦμα καὶ σοφίας καὶ γνώσεως
 Θεῶν ὡς ἀνεξήγητα πνεύματα αὐτῶν, καὶ
 ἀνεξιχνίαστοι αἱ ὁδοὶ αὐτῶν.
 34 Τίς γὰρ ἔγνω νῦν Κυρίου; ἢ τίς σύμ-
 βολῆσεν αὐτῶν ἐχθροῖς;
 35 ἢ τίς περιέδωκεν αὐτῶν, καὶ αὐτὰ ποδοθή-
 σεται αὐτῶν;
 36 Ὅτι ἐξ αὐτῶν, καὶ δι' αὐτῶν, καὶ εἰς αὐτῶν
 τὰ πάντα. αὐτῶν ἡ δόξα εἰς τὰς αἰῶνας.
 ἀμήν.

Κιφ.

Κεφ. ιβ'. ιλ.

1 ΠΑΡΑΚΑΛΩ ἔν ὑμῶς, ἀδελφοί, Διὰ πάντων οἰκτιρμῶν τοῦ Θεοῦ, ᾧ ᾤθησάμεθα τὰ σώματα ὑμῶν θυσίαν ζῶσαν, ἁγίαν, ὑπόστατον τῷ Θεῷ, πλὴν λογικῆς λατρείας ὑμῶν.

2 Καὶ μὴ συχημαλίζεσθε τῷ αἰῶνι τούτῳ· ἀλλὰ μεταμορφώσθε τῇ ἀνακρινώσῃ τοῦ νοῦς ὑμῶν, εἰς τὸ δοκιμάζειν ὑμᾶς τί τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ τὸ ἀγαθόν καὶ ὑπόστατον καὶ τέλειον.

3 Λέγω γὰρ Διὰ τὴν χάριν τοῦ δουλείου μοι, πάντι τῷ ὄντι ἐν ὑμῖν, μὴ ὑπερφρονεῖν παρ' ὃ δὲ φρονεῖν· ἀλλὰ φρονεῖν εἰς τὸ σωφρονεῖν, ἐκείτω ὡς ὁ Θεὸς ἐμέρισε μέτρον πίστεως.

4 Κατὰ περὶ γὰρ ἐνὶ σώματι μέλη πολλὰ ἔχοντα, τὰ ἢ μέλη πάντα ἐστὶν αὐτῷ ἔχοντα ἄξιον.

5 Οὕτως οἱ πολλοὶ ἐν σώματι εἰσὶν ἐν Χριστῷ, ὃ ἢ καθ' εἷς, ἀλλήλων μέλη.

6 ἔχοντες ἢ χάρισμα καὶ τὴν χάριν πλὴν δουλείου ἡμῖν Διὰ ῥοῦ, εἴτε πορνείαν, καὶ τὴν ἀναλογίαν τῆς πίστεως·

7 εἴτε ἀσχημίαν, ἐν τῇ ἀσχημίᾳ· εἴτε ὁ διδάσκων, ἐν τῇ διδασκαλίᾳ·

8 εἴτε ὁ ᾤθησάμενος, ἐν τῇ ᾤθησῃ· ὁ μετὰ διδόν, ἐν ἀπολύτῃ· ὁ παρρησιάζων, ἐν παρρησίᾳ· ὁ ἐλεῶν, ἐν ἰλαρότητι.

9 Ἡ ἀγάπη, ἀνυπόκριτος. Ἀποσυγνέτες τὸ πονηρὸν, κακῶν ἔργων τῶν ἀγαθῶν.

10 Τῇ

- 10 Τῇ φιλαδελφίᾳ εἰς ἀλλήλους φιλόστοργοι.
Τῇ πικρῇ ἀλλήλους ἀσθηγέμενοι.
- 11 Τῇ ἀσπιδῇ μὴ ὀκνηροί. Τῷ πλούματι
ζήοιτες. Τῷ Κυρίῳ δαδούοιτες.
- 12 Τῇ ἐλπίδι χαίροντες. Τῇ θλίψει ὑπο-
μείνοντες. Τῇ ἀσπιδὶ ἀσπικαρτερεῦντες.
- 13 Ταῖς χρεῖαις τῶν ἀγίων κρησινῶντες. Τῷ
φιλοξενίᾳ διακονοῦτες.
- 14 Εὐλογεῖτε τὰς διώκοντας ὑμᾶς· εὐλο-
γεῖτε, καὶ μὴ κολοῦσθε.
- 15 Χαίρετε μὲν χαίροντων, καὶ κλαίετε μὲν
κλαίοντων.
- 16 Τὸ αὐτὸ εἰς ἀλλήλους φρονεῖντες. Μὴ τὰ
ὑψηλὰ φρονεῖντες, ἀλλὰ τοῖς ταπεινοῖς
συναπαγόμενοι. Μὴ γίνεσθε φρόνιμοι παρ'
ἑαυτοῖς.
- 17 Μηδενὶ κακὸν ἀντι κακῶ ἀποδοῦντες. Προ-
νοεῖμενοι καὶ ἀνάπιον πάντων ἀνθρώπων.
- 18 Εἰ δυνατὸν τὸ ἐξ ὑμῶν, μὲν πάντων ἀν-
θρώπων εἰρήνοῦοιτες.
- 19 Μὴ ἐαυτοῖς ἐνδικεῖντες, ἀγαπητοί· ἀλλὰ
δοτε τόπον τῇ ὀργῇ· γέγραπεν γάρ· Ἐμοὶ
ἐνδικησας· ἐγὼ ἀνταποδώσω, λέγει Κύριος.
- 20 Ἐὰν οὖν πένανθ' ἔχησθε (καὶ ψάμιζε αὐτόν·
εἰ δὲ ψᾶ, πάπιζε αὐτόν· τὸ γὰρ ποιῶν, ἀν-
θρακας πυρὸς σωρούτης ἐπὶ τῇ κεφαλῇ αὐτοῦ).
- 21 Μὴ νικῶ ὑπὸ τῷ κακῶ· ἀλλὰ νίκα ἐν τῷ
ἀγαθῷ τὸ κακόν.

Κεφ.

Κεφ. ιγ'. 13.

- 1 Πᾶσα ψυχὴ ἐξουσίας ὑπερεχούσης ὑποτασσέσθω. ἔτι γὰρ ἐστὶν ἐξουσία εἰ μὴ ἀπὸ Θεῶν, ἀλλ' ἡ ἐξουσία ἐξουσία, ὑπὸ Θεῶν τεταγμένη εἰσὶν.
- 2 Ὡστε ὁ ἀνὴρ ὑποτάσσεται τῇ ἐξουσίᾳ, τῇ Θεῶν ἀγαθῶν ἀντιθέσθαι· οἳ δὲ ἀντιθέσθαι, ἑαυτοῖς κρῖμα λήψονται.
- 3 Οἱ γὰρ ἄρχοντες οὐκ εἰσὶ φόβου ἢ ἀγαθῶν ἔργων, ἀλλὰ τῶν κακῶν. Θέλεις δὲ μὴ φοβείσθαι τὴν ἐξουσίαν; τὸ ἀγαθὸν ποίησον. Ἐξέως ἐπιταγῶν ἐξ αὐτῆς.
- 4 Θεῶν γὰρ ἀρέσκεινός ἐστὶ σοι εἰς τὸ ἀγαθόν. Ἐάν τις τὸ κακὸν ποιῆσῃ, φόβος· ἔτι γὰρ εἰκὴ τὸ μάχαιραν φορεῖ. Θεῶν γὰρ ἀρέσκεινός ἐστιν, ἕκδικε εἰς ὀργὴν τῶν τὸ κακὸν πράσσοντων.
- 5 Διὸ ἀνάγκη ὑποτασσέσθαι· ἔτι μόνον ἀπὸ τῶν ὀργῶν, ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τῶν σιωπῶν.
- 6 Διὰ τῆτο γὰρ καὶ φόβος τελεῖτε· λήττερον γὰρ Θεῶν εἰσὶν εἰς αὐτὸ τῆτο ὑποτασσέσθαι.
- 7 Ἀπόδοτε οὖν πᾶσι τὰς ὀφείλας τῶν τῶν φόρον, τῶν φόρον τῶν τῶν τέλων, τῶν τέλων τῶν τῶν φόβον, τῶν φόβον τῶν τῶν τιμῶν, τῶν τιμῶν.
- 8 Μηδενὶ μηδὲν ὀφείλετε, εἰ μὴ τὸ ἀγαπᾶν ἀλλήλους. ὁ γὰρ ἀγαπᾶν τῶν ἑτέρον, νόμον πεπλήρωκε.
- 9 Τὸ γὰρ· Οὐ μοιχούσης· Οὐ φονεύσης· Οὐ κλέψης· Οὐ ψευδομαρτυρήσης· Οὐκ ἐπιθυμήσης·

μήτης, καὶ εἶπε ἐτέρα ἐνθλή, ἐν τέτρω τῷ λόγῳ ἀνακεφαλαίῃς), ἐν τῷ Ἀγαπήτης τῷ πλησίον (καὶ ὡς ἐαυτοῖς).

10 Ἡ ἀγάπη τῷ πλησίον κακὸν ὄσκι ἐργάζει). πλῆρωμα ἐν νόμῳ ἡ ἀγάπη.

11 Καὶ τῶν, εἰδότες τὸ κακὸν, ὅτι ὄρα ἡμεῖς ἤδη ἐξ ὑπνῶν ἐγερθῶμεν. νῦν γὰρ ἐργότεροι ἡμῶν ἢ σωτηρία ἢ ὅτε ἐπισύταμεν.

12 Ἡ νῦν προέκοψεν, ἡ οὐκ ἡμέρα ἤχηκεν. ἀποθνήσκου ἐν ταῖς ἐργασίαις, καὶ ἐνδυσάμεθα τὰ ὄπλα τοῦ φωτός.

13 Ὡς ἐν ἡμέρᾳ, σύχη μῆτις πειπατήσωμεν μὴ κάμναις, μὴ μίλαις, μὴ κριταῖς καὶ ἀσελγείαις, μὴ ἐριδί καὶ ζήλω.

14 Ἀλλ' ἐνδύσαθε τὸ κύριον ἰησοῦν Χριστόν, καὶ τὸ σαρκὸς ὡς οἰοῖσθε μὴ ποιῆτε εἰς ἐπιθυμίας.

Κεφ. ιδ'. 14.

1 Τὸν ἰησοῦν ἐν τῇ πίστι, προσλαμβάνετε, μὴ εἰς ἀκρίτους ἀγαλοισμῶν.

2 Ὅς μὴ πιδύσθε φαγεῖν παῖτα, ὅ ἰησοῦν λαχάνα ἐσθίει.

3 Ὁ ἐσθίων, τὸ μὴ ἐσθίειν μὴ ἐξαρτεῖται, καὶ ὁ μὴ ἐσθίων, τὸ ἐσθίειν μὴ κριτεῖται. ὁ Θεὸς γὰρ αὐτὸν προτελάσει.

4 Σὺ πῶς εἰ ὁ κριτὴν ἀλλότριον οἰκέτω; Τῷ ἰησοῦ κρυβήσῃ ἢ πιδύσῃ. σαθήσει δὲ δυνατὸς γὰρ εἶναι ὁ Θεὸς σῆσθαι αὐτόν.

5 Ὁ

- 5 Ὅς κείνη κείνη ἡμέραν παρ' ἡμερῶν, ὅς ᾧ κείνη πάντα ἡμέραν. ἕκαστος ἐν τῷ ἰδίῳ νοί πληροφορησάτω.
- 6 Ὁ φρονῶν τὴν ἡμέραν, Κυρίῳ φρονεῖ· καὶ ὁ μὴ φρονῶν τὴν ἡμέραν, Κυρίῳ ἔφρονεῖ. ὁ ἰδιῶν, Κυρίῳ ἰδιῶν· οὐχαρισεῖ γὰρ τῷ Θεῷ. καὶ ὁ μὴ ἰδιῶν, Κυρίῳ ἕκαστος ἰδιῶν, καὶ οὐχαρισεῖ τῷ Θεῷ.
- 7 Οὐδεὶς γὰρ ἡμῶν ἑαυτῷ ζῆ, ἔκδεις ἑαυτῷ ἀποθήσκεις.
- 8 Ἐάν τε γὰρ ζῶμεν, τῷ Κυρίῳ ζῶμεν· ἔάν τε ἀποθνήσκωμεν, τῷ Κυρίῳ ἀποθνήσκωμεν. ἔάν τε οὖν ζῶμεν, ἔάν τε ἀποθνήσκωμεν, ἔσται Κυρίῳ ἵσμεν.
- 9 Εἰς τὸ ἐπεὶ Χριστὸς καὶ ἀπέθανε ἕνεκα καὶ ἀνέστη καὶ ἀνέζησεν, ἵνα καὶ νεκρῶν καὶ ζώντων κυριεύσῃ.
- 10 Σὺ ᾧ τί κείνης, τὴν ἀδελφὸν (καὶ ἢ καὶ σὺ τί ἐξελθῆς τὴν ἀδελφὸν (καὶ πάντες γὰρ ὡρῶμεθα τῷ βήματι τοῦ Χριστοῦ.
- 11 Γέγραπται γὰρ· Ζῶ ἐγὼ, λέγει Κύριος· ὅτι ἐμοὶ κενύσθη πᾶν γένος, καὶ πᾶσα γλῶσσα ἐξομολογήσεται τῷ Θεῷ.
- 12 Ἀγαπᾶται ἕκαστος ἡμῶν ὡς ἑαυτὸν λόγον δώσει τῷ Θεῷ.
- 13 Μηκέτι ἐν ἀλλήλοις κείνωμεν· ἀλλὰ τὸ ἐπεὶ κείνωμεν μάλλον, τὸ μὴ πείνηται ὁ ἕκαστος τῷ ἀδελφῷ, ἢ σκάνδαλον.
- 14 Οἶδα καὶ πέπυσμα ἐν Κυρίῳ Ἰησοῦ, ὅτι
ἔστιν

ἐδὲν κρινόν δι' ἑαυτῶν· εἰ μὴ τῷ λογιζομένῳ πῶς κρινόν εἶναι, ἐκείνῳ κρινόν.

15 Εἰ δὲ ἀγαθὸν βρώμα ὁ ἀδελφός σου λυπεῖται, σὺν ἑπὶ καὶ ἀγαθῶν διαποιεῖς. μὴ τῷ βρώματι σου ἐκείνον ἀπόλλυε ὑπερὶ τῶν Χριστῶν ἀπέβηκεν.

16 Μὴ βλασφημῆσθαι οὐκ ὑμῶν τὸ ἀγαθόν.

17 Οὐ γὰρ ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ βρώσις ἢ πόσις, ἀλλὰ δικαιοσύνη, καὶ εἰρήνη, καὶ χαρὰ ἐν πνεύματι ἁγίῳ.

18 Ὁ γὰρ ἐν τέτοις δαλούων τῷ Χριστῷ, σὺ-ἀρετῶν τῷ Θεῷ καὶ δοκιμῶν τοῖς ἀνθρώποις.

19 Ἄρα οὐκ εἶναι τὴν εἰρήνην διώκοντων, καὶ περὶ τὴν οἰκονομίαν τὴν εἰς ἀκλήλυσιν.

20 Μὴ ἐνεκεν βρώματι καθάλυε τὸ ἔργον τοῦ Θεοῦ. πάντα μὲν καθαρά· ἀλλὰ κληρονομήτω τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ἀγαθῷ προσθημῶν ἑαυτοῦ.

21 Καλοὶ τὸ μὴ φαγεῖν κρέα, μηδὲ πιεῖν οἶνον, μηδὲ ἐν ᾧ ὁ ἀδελφός σου προσκόπιθῃ ἢ σκανδαλίξῃ ἢ ἀσθενῇ.

22 Σὺ πιστὸν ἔχεις· καὶ σωθῆναι ἔχεις ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ. Μακάριος ὁ μὴ κρίνων ἑαυτὸν ἐν ᾧ δοκιμάσῃ.

23 Ὁ δὲ ἀκρινόμων, εἰάν φάγη, καθαρίσθαι, ὅτι σὺν ἐκ πίστεως. πάντες δὲ ὅσοι ἐκ πίστεως, ἁμαρτῶν ἐσίν.

Κεφ. ιε'. 15.

1 **Ο** Φείλομαι ἢ ἡμεῖς οἱ διωαζὶ τὰ ἀδελ-
νήμαζα τῶ ἀδυνάτων βασιζίν, καὶ μὴ
ἐαυτοῖς δρέσκην.

2 Ἐκαστος γὰρ ἡμῶν τὰ πλησίον δρέσκειτω
εἰς τὸ ἀγαθὸν ὡς οἰκοδομίῳ.

3 Καὶ γὰρ ὁ Χριστὸς ἔχ' ἐαυτῷ ἠρεσιν, ἀλλὰ,
καθὼς γέγραπ'· Οἱ ὀνειδισμοὶ τῶ ὀνειδίζον-
των σι, ἐπέπτεν ἐπ' ἐμέ.

4 Ὅσα γὰρ πνευμάτη, εἰς τῆ ἡμετέραν
διδασκαλίαν πνευμάτη ἵνα ἀφ' τῆ ὑπο-
μονῆς καὶ τῆ ᾠδῆ κλήσεως τῶ γραφῶν, τῆ
ἐλπίδα ἔχωμεν.

5 Ὁ ἢ Θεὸς τῆ ὑπομονῆς καὶ τῆ ᾠδῆ κλήσεως
δάη ὑμῖν τὸ αὐτὸ φρονεῖν ἐν ἀλλήλοις, καὶ
Χριστὸν Ἰησοῦν·

6 Ἴνα ὁμοθυμαδὸν ἐν ἐνὶ σώματι δοξάζητε τῆ
Θεὸν καὶ πατέρα τῆ Κυρίῃς ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

7 Διὰ πνευμάτων ἀλλήλων, καθὼς καὶ
ὁ Χριστὸς πνευμάτω ἡμῶν εἰς δόξαν Θεοῦ.

8 Λέγω ἢ Ἰησοῦν Χριστὸν ἀφ' ἑαυτοῦ
πνευμάτω ὑπὲρ ἀληθείας Θεοῦ, εἰς τὸ βε-
βαιῶσαι ἡμῶν ἐπιγγελίας τῶ πατέρων·

9 Τὰ ἢ ἔθνη ὑπὲρ ἐλπίος δοξάσαι τῆ Θεόν·
καθὼς γέγραπ'· Διὰ τῆτο ἔξομολογήσασθε
σι ἐν ἔθνεσι, καὶ τὰ ὀνόματι τῆ ψαλῶ.

10 Καὶ πάλιν λέγ'· Εὐφρανθήτε ἔθνη μετῶ
τῆ λαοῦ αὐτοῦ.

11 Καὶ

- 11 Καὶ πάλιν· Αἰνεῖτε τὸ Κύριον πάντοτε
 τὰ ἔθνη, ἔκπαυσάτε αὐτὸν πάντες οἱ λαοί.
- 12 Καὶ πάλιν Ἰσοάκας λέγει· Ἐσαὶ ἡ εἰζα ἔ
 Ἰεσαὶ, καὶ ὁ ἀντιστάμιον ἀρχὴν ἔθνων, ἐπὶ
 αὐτὰ ἔθνη ἐλπίζουσιν.
- 13 Ὁ ὃ Θεὸς τῆς ἐλπίδος πληρώσατε ὑμᾶς
 πίστεως χαρῆς καὶ εἰρήνης ἐν τῷ πισθεῖν,
 εἰς τὸ πνευματικῶν ὑμᾶς ἐν τῇ ἐλπίδι, ἐν
 δυνάμει πνευματικῶν ἁγίων.
- 14 Πέπετμαι ὃ, ἀδελφοί μου, ἔ αὐτὸς ἐργὸν
 πνευματικῶν, ὅτι καὶ αὐτοὶ μέσοι ἐσε ἀγαθω-
 σωμένης, πεπληρωμένοι πίστεως γνώσεως,
 δυνάμει καὶ ἀκλήλων νεφέλων.
- 15 Τολμηρότερον ὃ ἐργασθε ὑμῖν ἀδελφοί,
 ἀπὸ μέρους, ὡς ἐπαναμνηστικῶν ὑμῶν διὰ
 τὸ χάριν τὴν δοθεῖσαν ὑμῖν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ,
- 16 Εἰς τὸ εἶναί με λήττορον Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς
 τὰ ἔθνη, ἱερουργεῖν τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Θεοῦ,
 ἵνα γλύψῃ ἢ πνευματικῶν τῶν ἔθνων ὑπὸς δεκ-
 τῶν, ἡγιασμένη ἐν πνευματικῶν ἁγίων.
- 17 Ἐχὼ ἐν καύχησιν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ πᾶσι
 πρὸς Θεόν.
- 18 Οὐ γὰρ πολμήσω λαλεῖν ἡμῖν ἐκκατῆ-
 γάσασθε Χριστὸς δι' ἐμᾶς, εἰς ὑπακομὴν ἔθνων,
 λόγῳ ἔ ἔργῳ,
- 19 Ἐν δυνάμει σημείων ἔ τεράτων, ἐν δυνάμει
 πνευματικῶν Θεοῦ· ὡς με ἀπὸ Ἱερουσαλήμ ἔ
 πύκλω μέρει τοῦ Ἰουδαίου πεπληρωμένη τὸ
 εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ. 20 Οὕτω

- 20 Οὕτω ἡ φιλοτιμίαν σου ἀνεκγέλιζε· ἔχ' ὅπως ἀνομάσθῃ Χριστός, ἵνα μὴ ἐπ' ἀλλότριον θεμέλιον οἰκοδομῶ.
- 21 Ἀλλὰ, καθὼς γέγραπ'· Οἷς σὺ ἀνεκγέλιε· πρὸς αὐτὸν, ὅσον· καὶ οἱ σὺ ἀκηχθάσαι, σιωπήσῃς.
- 22 Διὸ καὶ ἐνεκροπήμιον τὰ πολλὰ ἔβλεψεν πρὸς ὑμᾶς.
- 23 Νυνὶ ἡ μηκέτι τόποι ἔχον ἐν τοῖς κλίμασι τῆσιν, ἐπιποδίων ἡ ἔχον ἔβλεψεν πρὸς ὑμᾶς διὰ πολλῶν ἐτῶν.
- 24 Ὡς ἐὰν πορεύωμαι εἰς τὴν Σπανίαν, ἐλεύσομαι πρὸς ὑμᾶς· ἐλπίζω γὰρ ἄρα πορεύομεν ἅμα θεῖα ὑμᾶς, καὶ ὑφ' ὑμῶν περιεμφθῆναι ἐκεῖ· ἐὰν ὑμῶν πρῶτον διὰ μέρας ἐμπλησθῶ.
- 25 Νυνὶ ἡ πορεύομαι εἰς Ἱερουσαλήμ, ἄφ' ἡμερῶν τοῖς ἁγίοις.
- 26 Εὐδόκησαν γὰρ Μακεδονία καὶ Ἀχαΐα κρινωνίαν πρὸς ποιήσασθαι εἰς τὰς πτωχὰς τῶν ἁγίων τῶν ἐν Ἱερουσαλήμ.
- 27 Εὐδόκησαν γὰρ, καὶ ὀφείλεται αὐτῶν εἶσιν· εἰ γὰρ τοῖς πλούμα ἡμερῶν αὐτῶν ἐκοινώνησαν τὰ ἔθνη, ὀφείλουσι καὶ ἐν τοῖς σαρκικῶν λήττεργῆσαι αὐτοῖς.
- 28 Τὸ ἔν ἐπιπέλας, ἡ σφραγισμῶν αὐτοῖς τὸ καρπὸν τῆτον, ἀπελεύσομαι δὲ ὑμῶν εἰς τὴν Σπανίαν.

- 29 Οἶδα ὅτι ὅτι ἐρχόμεθα πρὸς ὑμᾶς, ἐν πληρώματι λόγου καὶ χάριτος καὶ Χριστοῦ ἐκδοσόμεθα.
- 30 Παρεκκαλώ οὖν ὑμᾶς, ἀδελφοί, διὰ τὸ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐκδοσόμεθα τὴν ἀγάπην καὶ πρὸς ὑμᾶς, συναγωνισαμεθαί μοι ἐν ταῖς προσευχαῖς ὑπὲρ ἡμῶν πρὸς τὸ Θεόν·
- 31 ἵνα ῥυθῶ ἀπὸ τῶν ἀπειθήντων ἐν τῇ Ἰερουσαλῆμ· εἶνα ἡ ἀγαθὴ μετὰ ἡμῶν εἰς Ἱερουσαλήμ ἀποδοθῆται ὑμῖν τοῖς ἁγίοις·
- 32 ἵνα ἐν χαρᾷ ἔλθω πρὸς ὑμᾶς διὰ τὴν ἐλεησέμεν Θεῶν, ἐσυναπαύσωμαι ὑμῖν.
- 33 Ὁ ὅτι Θεὸς τὴν ἐπιείκειάν μοι πάντα ὑμῶν ἀμείν.

Κεφ. 15. 16.

- 1 Σωίστημι ὅτι ὑμῖν Φοίβην καὶ ἀδελφὸν ἡμῶν, ἕσαν ἀγαθοὶ καὶ ἐκκλησίας τὴν ἐκδοσόμεθα.
- 2 ἵνα αὐτῶν προσδέξησθε ἐν Κυρίῳ ἀξίως καὶ ἁγίως, καὶ ὡρασητέ αὐτῇ ἐν ᾗ ἂν ὑμῶν χρεία περὶ ἡμῶν· ἐπεὶ αὐτὴ πρὸς ἡμᾶς πολλῶν ἐχρήσατο, καὶ αὐτῶν ἡμῶν.
- 3 Ἀσπασαθε Περίσκιππον ἐκ Ἀκύλου τὸς συνεργὸς μετὰ Χριστοῦ Ἰησοῦ.
- 4 Οἵπνες ὑπὲρ τῆς ψυχῆς μετὰ τὴν ἑαυτῶν πρὸς ἀγγέλους ὑπέστησαν· οἷς ἐκ ἐγὼ μόνος ὄφρα εἴπω, ἀλλὰ ἐπὶ πᾶσι ἐκκλησίαις τῶν ἱερῶν.
- 5 Καὶ πᾶσι καὶ οἴχοι αὐτῶν ἐκκλησίαις.
- Ἀσπασα-

Ἀσπάσαθε Ἐπάνεθον τὸ ἀγαπητὸν μου, ὅς
ἐστὶν ἀπαρχὴ τῆς Ἀχαιῆας εἰς Χερσόν.

6 Ἀσπάσαθε Μαριάμη, ἣ τις πολλὰ ἐκο-
πίασεν εἰς ἡμᾶς.

7 Ἀσπάσαθε Ἀνδρόνικον καὶ Ἰγνίαν τὰς
συγγενεῖς μου, καὶ σωμαχμαλάτους μου. οἵτινες
εἰσὶν ἐπίσημοι ἐν τοῖς ἀποστόλοις, οἱ καὶ μετ᾽
ἡμᾶς γέγονασιν ἐν Χριστῷ.

8 Ἀσπάσαθε Ἀμπλίαν τὸ ἀγαπητὸν μου
ἐν Κυρίῳ.

9 Ἀσπάσαθε Οὐρσανὸν τὸ σωμαχμὸν ἡμῶν
ἐν Χριστῷ, καὶ Σάχου τὸ ἀγαπητὸν μου.

10 Ἀσπάσαθε Ἀπελλῶν, τὸ δοκιμὸν ἐν Χρι-
στῷ. Ἀσπάσαθε τὰς ἐκ τῆς Ἀριστοβέλας.

11 Ἀσπάσαθε Ἡροδίανα τὸ συγγενῆ μου.
Ἀσπάσαθε τὰς ἐκ τῆς Ναρκίσσης, τὰς ὄντας
ἐν Κυρίῳ.

12 Ἀσπάσαθε Τρύφαιναν ἐκ Τρυφῶσιν τοῖς
καθησώσας ἐν Κυρίῳ. Ἀσπάσαθε Περσίδα τὴν
ἀγαπητὴν, ἣ τις πολλὰ ἐκοπίασεν ἐν Κυρίῳ.

13 Ἀσπάσαθε Γῆφον τὸ ἐκλεκτὸν ἐν Κυρίῳ,
καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ καὶ ἑμοῦ.

14 Ἀσπάσαθε Ἀσύγκριτον, Φλέγητον, Ἐρ-
μῆν, Πατρόβαν, Ἐρμιῶν, καὶ τὰς σὺν αὐτοῖς
ἀδελφούς.

15 Ἀσπάσαθε Φιλόλογον ἐκ Ἰσλίου, Νηρέα
καὶ τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ Ὀλυμπῆν, καὶ τὰς σὺν
αὐτοῖς πάντας ἀγίους.

16 Ἀσπά-

- 16 Απτάτατε ἀλλήλους ἐν φιλήματι ἀγία.
 Απτάζον ὑμᾶς ἐν ἐκκλησίᾳ Ἐ Χριστῶ.
- 17 Παρακαλῶ ἡ ὑμᾶς, ἀδελφοί, σκοπεῖν
 τὰς ἰσὺς διχουσίας καὶ τὰ σκάνδαλα ὧν
 ἔτι διδάχθητε ὑμεῖς ἐμάθετε, ποιῆτες καὶ
 ἐκκλίνατε ἀπ' αὐτῶν.
- 18 Οἱ γὰρ τοιοῦτοι τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ
 Χριστῷ ἔδουλοῦσιν, ἀλλὰ τῇ ἐαυτῶν κρι-
 λία· καὶ διὰ τὴν ζητυλογίαν ἔδουλοῦσιν
 ἐξαπιλάσι ἰσὺς καρδίας τῶ ἀκαίων.
- 19 Ἢ γὰρ ὑμῶν ὑπακοὴ εἰς πάντας ἀφίκετο.
 Καίρω οὐκ ἐφ' ὑμῶν· θέλω ἡ ὑμᾶς σοφῶς
 μὲν εἶναι εἰς τὸ ἀγαθόν, ἀκεραῖως δὲ εἰς τὸ
 κακόν.
- 20 Οἱ ἡ Θεὸς τῶ εἰρήνης σωτηρίας τῶ Σα-
 τανῶν ὑπὸ τὰς πόδας ὑμῶν ἐν ταύτῃ. Ἢ χά-
 ρις Ἐ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μεθ' ὑμῶν.
 Ἀμήν.
- 21 Απτάζονται ὑμᾶς Τιμόθεος ὁ συνεργ-
 γός μου καὶ Λέκιος ὁ ἰάσων καὶ Σωσίπα-
 τρος, οἱ συγγενεῖς μου.
- 22 Απτάζομαι ὑμᾶς ἐγὼ Τίτιος ὁ χεί-
 ψας τῶ ἐπιστολῶν ἐν Κυρίῳ.
- 23 Απτάζει ὑμᾶς Γάιος ὁ ξένος μου ἔτι ἐκ-
 κλησίας ὅλης. Απτάζει ὑμᾶς Ἐραστός ὁ οἰ-
 κητόμος τῶ πόλεως, καὶ Κάρτος ὁ ἀδελφός.
- 24 Ἢ χάρις Ἐ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ
 μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

25 Τῷ ἃ δυνάμει ὑμᾶς ἐπέλεξα καὶ τὸ
 δοκίμασι μου καὶ τὸ κήρυγμα Ἰησοῦ Χριστοῦ,
 καὶ ἀποκάλυψεν μυστήρια χρόνοις αἰωνίοις
 σεσημημένα·

26 Πανερωθέντος ἃ νῦν ἀφ' ἃ τε γραφαὶ ἀπο-
 φηλικῶν, κατ' ἐπιταγὴν τοῦ αἰωνίου Θεοῦ, εἰς
 ὑπακομὴν πίστεως, εἰς πάντα τὰ ἔθνη γνω-
 ρισθέντι·

27 Μόνῳ σεφῶ Θεῷ, ἀφ' ἃ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ᾧ
 ἡ δόξα εἰς τὰς αἰῶνας. Ἀμήν.

Πρὸς Γαλαθῆς ἐγράφη ἀπὸ Κορίνθου
 ἀφ' ἃ Φοίβης τῆς ἀδελφῆς καὶ ἐν Κεργηραῖς
 ἐκκλησίας.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ Ἀπο-

στόλου ἢ ἀπὸς Κορινθίους ἐπιστολὴ πρώτη.

Κεφ. α'. ι.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ κλητὸς ἀποστολῆς Ἰη-
 σοῦ Χριστοῦ, ἀφ' ἃ θελήματι Θεοῦ,
 καὶ Σωθένος ὁ ἀδελφός.

2 Τῇ ἐκκλησίᾳ τοῦ Θεοῦ τῆς ἕσσης ἐν Κορίν-
 θῳ, ἡγιασμένοις ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, κλητοῖς
 ἁγίοις, συνὺ πάνσι τοῖς ἐπιτακτομένοις τὸ ὄνο-
 μα τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐν παντί
 τύπῳ, αὐτῶν τε ἃ ἡμῶν·

Αα 3 Κά-

3 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς ἡμῶν, ἔ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

4 Εὐχαριστῶ πάντῃ Θεῷ με πάντοτε ὡς ὑμῶν, ἐπὶ τῇ χάριτι ἧς Θεὸς τῇ δωρεῇ ὑμῖν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

5 Ὅτι ἐν παντὶ ἐπαληθύνθη ἐν αὐτῷ, ἐν παντὶ λόγῳ καὶ πίστει γνώσεως.

6 Καθὼς τὸ μαρτύριον ἔ Χριστὸς ἐξοσώθη ἐν ὑμῖν.

7 Ὡστε ὑμᾶς μὴ ὑπερβῆτε ἐν μηδενὶ χαρισματι, ἀπεκδηρομένοι ἢ ἀπὸ κήλυψιν ἔ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

8 Ὅς καὶ βεβαιώσε ὑμᾶς ἕως τέλους ἀνεγκλήτους ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἔ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

9 Πιστὸς ὁ Θεὸς, δι' ἧς ἐκλήθη εἰς κρηναίαν ἔ ἡς αὐτῷ Ἰησοῦ Χριστοῦ ἔ Κυρίου ἡμῶν.

10 Παρακαλῶ ἡ ὑμᾶς, ἀδελφοί, ἀπὸ ὀνόματι ἔ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἵνα τὸ αὐτὸ λέγητε πάντες, ἔ μὴ ἦ ἐν ὑμῖν ἁρισματα, ἢ τε ἡ κατηρησμένοι ἐν τῷ αὐτῷ καὶ ἐν τῇ αὐτῇ γνώμῃ.

11 Ἐδηλώθη γὰρ μοι ὡς ὑμῶν, ἀδελφοί μου, ἀπὸ ἑ Χλόης, ὅτι ἐμὲ ἐν ὑμῖν εἶσι.

12 Λέγω ἡ τῆτο, ὅτι ἔχασ ὑμῶν λέγει ἔ ἔχω μὲν εἶμι Παῦλος, ἐγὼ ἡ Ἀπολλῶν, ἐγὼ ἡ Κηφᾶ, ἐγὼ ἡ Χριστὸς.

Μεμύρισε ὁ Χριστός; μὴ Παῦλος ἔσασθε.

ράτη ὑπὲρ ὑμῶν, ἢ εἰς τὸ ὄνομα Παύλου
ἐδοκίμασθε;

14 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ ὅτι ἐδύνα ὑμῶν ἐδο-
κίμασα, εἰ μὴ Κρίσπον καὶ Γάϊον·

15 ἵνα μὴ περ εἶπη ὅτι εἰς τὸ ἐμὸν ὄνομα
ἐδοκίμασα.

16 Ἐδοκίμασα ἧ καὶ τὸ Στεφανῶ οἶκον· λοιπὸν
ὅπου οἶδα εἶπνα ἄλλον ἐδοκίμασα.

17 Οὐ γὰρ ἀπέστλε μέ Χριστὸς βαπτίζην,
ἀλλ' ἀναγγελλίζεσθε ὅτι ἐν σοφίᾳ λόγος, ἵνα
μὴ κενωθῇ ὁ σαυρὸς τοῦ Χριστοῦ.

18 Ὁ λόγος γὰρ ὁ τοῦ σαυροῦ τοῖς μὲν ἀπολ-
λυμένοις μωρία ἐστίν, τοῖς ἧ σωζομένοις ἡμῶν
δυνάμις Θεοῦ ἐστίν.

19 Γέγραπται γάρ· Ἀπολῶ τὸ σοφίαν τὸ σο-
φῶν, καὶ τὸ σωῆσιν τὸ σωείων ἀρετήσω.

20 Πῶ σοφός; Πῶ γραμματιστής, Πῶ συζη-
τήτης τοῦ αἰῶνος τῆς τέχης; Οὐχὶ ἐμώρσανεν ὁ
Θεὸς τὸ σοφίαν τοῦ κόσμου τῆς τέχης;

21 Ἐπεὶ γὰρ ἐν τῇ σοφίᾳ τοῦ Θεοῦ ὅπου ἔγνω
ὁ κόσμος διὰ τὴν σοφίας τοῦ Θεοῦ, ἀδύνακη-
σεν ὁ Θεὸς διὰ τὴν μωρίας τοῦ κηρύττειν
σωστικὰς πειθύνοντας.

22 Ἐπεὶ καὶ Ἰουδαῖοι σημεῖον αἰτῶσι, καὶ
Ἕλληνας σοφίαν ζητοῦσιν·

23 Ἡμεῖς δὲ κηρύττομεν Χριστὸν ἐσαυρω-
μένον, Ἰουδαίοις μὲν σαίνδαλον, Ἕλλησι ἧ
μωρίαν·

- 24 Αὐτοῖς ἢ τοῖς κλητοῖς Ἰσραηλίοις τε ἔτι ἄλλοις Χριστὸν Θεὸν δὴναμιν καὶ Θεὸν σοφίαν.
- 25 Ὅτι τὸ μαρτὸν ἔστι Θεὸν, σοφώτερον ἢ ἀνθρώπων ἐστὶ καὶ τὸ ἀδραστεῖς ἔστι Θεὸν, ἰχυρότερον ἢ ἀνθρώπων ἐστὶ.
- 26 Βλέπετε γὰρ ἃ κλησὶν ὑμῶν, ἀδελφοί, ὅτι ἔστι πολλοὶ σοφοὶ καὶ σάρακα, ἔστι πολλοὶ δυνατοὶ, ἔστι πολλοὶ δόλοισι.
- 27 Ἀλλὰ τὰ μαρτὸν ἔστι κήσμεν ἐξελέξατο ὁ Θεὸς ἵνα τὰς σοφὰς καὶ αἰσχύνῃ, καὶ τὰ ἀδραστεῖς ἔστι κήσμεν ἐξελέξατο ὁ Θεὸς ἵνα καὶ αἰσχύνῃ τὰ ἰχυρά.
- 28 Καὶ τὰ ἀγνοῦν ἔστι κήσμεν καὶ τὰ ἐξουθενήσασθαι ἐξελέξατο ὁ Θεὸς, ἔτι τὰ μὴ ὄντα, ἵνα τὰ ὄντα καταργήσῃ.
- 29 Ὅπως μὴ καυχῆσθαι πᾶσαι σάραξ ἐνώπιον αὐτῶν.
- 30 Ἐξ αὐτῶν ἢ ὑμεῖς ἐστε ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὃς ἐγλυήθη ἡμῖν σοφία ἀπὸ Θεοῦ, δικαιοδοσιῶν τε καὶ ἀγασμῶν ἔτι ἀπλοτέωσι.
- 31 Ἴνα, κατὰ τὴν γέγραπται Ὁ καυχόμενος ἐν Κυρίῳ καυχέσθω.

Κεφ. β. 2.

- 1 Καὶ γὰρ ἐλθὼν πρὸς ὑμᾶς, ἀδελφοί, ἦλθον ἔτι κατὰ ὑπεροχὴν λόγου ἢ σοφίας, καταργήσασθαι ὑμῖν τὸ μαρτύριον ἔστι Θεοῦ.
- 2 Οὐ γὰρ ἔκρινα ἔτι εἰδέναι ἢ ἐν ὑμῖν εἶμι Ἰησοῦν Χριστὸν, ἔτι τῶν ἰσαυρωμένων.

3 Καὶ

- 3 Καὶ ἐγὼ ἐν ἀδυναμίᾳ ἢ ἐν φόβῳ ἢ ἐν
 τρώμῳ πολλῶ ἐγκυρόμενος πρὸς ὑμᾶς.
- 4 Καὶ ὁ λόγος μου ἔστι τὸ κήρυγμα μου ὅτι
 ἐν πηλοῖς ἀνθρωπίνης σοφίας λόγοις, ἀλλ' ἐν
 ἀποδείξει πνεύματος καὶ δυνάμεως·
- 5 ἵνα ἡ πίστις ὑμῶν μὴ ᾖ ἐν σοφίᾳ ἀνθρώ-
 πων, ἀλλ' ἐν δυνάμει Θεῶν.
- 6 Σοφίαν ἢ λαλῆμεν ἐν τοῖς τελείοις· σο-
 φίαν ἢ ἐν τοῖς αἰῶσι τέσσα, ἐδὲ τὸ δόξασαν
 τοῖς αἰῶσι τέσσα τὸ κηρυχθέντων·
- 7 Ἀλλὰ λαλῆμεν σοφίαν Θεῶν ἐν μυστη-
 ρίῳ, τὸ ἀποκρυφθέν, ἃ ἠθεώρησεν ὁ
 Θεὸς πρὸ τῶν αἰώνων εἰς δόξαν ἡμῶν.
- 8 Ἦν ἐδέξαι τὸ δόξασαν τοῖς αἰῶσι τέσσα
 ἔγνωσαν· εἰ γὰρ ἔγνωσαν, ὅτι αὐτὸ Κύριον τὸ
 δόξης ἐσαύρωσαν.
- 9 Ἀλλὰ καθὼς γέγραπται· Ἄφθαλμος
 ὅτι εἶδεν, ἢ ἔσ' ὅτι ἤκουσεν, ἢ ἐπὶ καρδίᾳ
 ἀνθρώπου ὅτι ἀνέσθη, ἀ κητεύμασεν ὁ Θεὸς
 τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν·
- 10 Ἡμεῖν δὲ ὁ Θεὸς ἀπεκάλυψε τὸ
 πνεύμα αὐτῶ· τὸ γὰρ πνεῦμα πάντα
 ἐρδύνα, ἢ πᾶ βία τῶ Θεῶ.
- 11 Τίς γὰρ οἶδεν ἀνθρώπων πᾶ τῶ ἀνθρώπου,
 εἰ μὴ τὸ πνεῦμα τῶ ἀνθρώπου τὸ ἐν αὐτοῖς;
 Οὕτω ἢ πᾶ τῶ Θεῶ ἐδέξαι εἶδεν, εἰ μὴ τὸ
 πνεῦμα τῶ Θεῶ.
- 12 Ἡμεῖς ἢ ἐ τὸ πνεῦμα τῶ κῆρυμα ἐλάσο-
 μεν,

- μην, ἀλλὰ τὸ πνεῦμα τὸ ἐκ τοῦ Θεοῦ, ἵνα εἰ-
δῶμεν τὰ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ χαρισθέντα ἡμῖν·
- 14 Ἄ καὶ λαλῶμεν, ὅτι ἐν διδασκαλίαις ἀν-
θρωπίνης σοφίας λόγοις, ἀλλ' ἐν διδασκαλίαις
πνευματικῆς ἀγίας· πνευματικῆς πνευμα-
τικῆς συζητούντες.
- 15 Ψυχῆς ἡ ἀνθρώπου ἔδραται τὰ τοῦ
πνεύματος τοῦ Θεοῦ· μαρτυρία γὰρ αὐτῆς ἐστίν, ὅτι
ἔδραται γυναικί, ὅτι πνευματικῶς ἀνα-
κρίνεται.
- 16 Ὁ ἡ πνευματικῶς ἀνακρίνεται μὲν πάντες,
αὐτὸς ἡ ὑπὸ ἑδνὸς ἀνακρίνεται).
- 17 Τίς γὰρ ἔγνω ἵνα Κύριος, ὅς συμβοιδοῦσθε
αὐτὸν; Ἡμεῖς ἡ ἵνα Χριστῶ ἔχομεν.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 **Κ**αὶ ἐγὼ, ἀδελφοί, ὅτι ἠδυνήθην λαλῆ-
σαι ὑμῖν ὡς πνευματικῶς, ἀλλ' ὡς σαρκι-
κῶς, ὡς νηπίοις ἐν Χριστῶ.
- 2 Γάλα ὑμῶς ἐπόπισα, καὶ ἔβρωμα· ἔπει-
τα γὰρ ἠδυνάσθε· ἀλλ' ἔτι ἐπὶ νῦν δυνάσθε.
- 3 Ἐπὶ γὰρ σαρκικῶς ἐστε· ὅτι ἐν ὑμῖν ζῆ-
λος καὶ ἔρις ἐστὶ διχαστασία, ἐχθὴ σαρκικῶς ἐστίν,
καὶ κατὰ ἀνθρώπου διεκλιθεῖτε;
- 4 Ὅταν γὰρ λέγη τις· Ἐγὼ μὲν εἰμι Παῦλος·
ἐπερὶ δὲ Ἐγὼ Ἀπολλῶν, ἐχθὴ σαρκικῶς ἐστίν;
- 5 Τίς οὖν ἐστὶ Παῦλος, τίς ἡ Ἀπολλῶν,
ἀλλ' ἡ ἀλάστοι δὲ ἂν ἐπιστάσι, ἐκείνη
ὡς ὁ Κύριος ἔδωκεν;

6 Ἐγὼ

- 6 Ἐγὼ ἐφύττωτα, Ἀπολλῶς ἐπόπουν ἄλλ' ὁ Θεὸς ἠύξανεν.
- 7 Ὡς τε εἴτε ὁ φυτεύων ἐπί π, εἴτε ὁ ποτίζων, ἄλλ' ὁ αὐξάνων Θεός.
- 8 Ὁ φυτεύων ἢ ὁ ποτίζων εἴ ἐισιν ἕκαστος ἢ τὸ ἴδιον μισθὸν λήψεται κἢ τὸ ἴδιον κρῖον.
- 9 Θεῶς γάρ ἐσμὲν σωτηροὶ Θεῶς γάρχοιοι, Θεῶς οἰκοδομη εἴτε.
- 10 Κατὰ τὸ χάριν εἰ Θεῶς τὸ δοθεῖσάν μοι, ὡς σοφὸς δρχιτέκτων θεμέλιον τέθηκα, ἄλλο ἢ ἐποικοδομεῖ ἕκαστος ἢ βλέπειτω πῶς ἐποικοδομεῖ.
- 11 Θεμέλιον γὰρ ἄλλοι εἰδὲς δύναμις θεῖναι τῷ θεῷ τὸ κείμενον, ὅς ἐστιν Ἰησοῦς ὁ Χριστός.
- 12 Εἰ δέ τις ἐποικοδομεῖ ἐπὶ τὸ θεμέλιον τῶτον, χρυσόν, ἄργυρον, λίθους τιμίους, ξύλα, ἄσβεστον, καλάμιον.
- 13 Ἐκάστος τὸ ἔργον φανερόν γνηθήσεται. ἢ γὰρ ἡμέρα δηλώσει ὅτι ἐν πυρὶ ἀποκαλύπτεται κἢ ἕκαστος τὸ ἔργον ὁποῖόν ἐστι, τὸ πῦρ δοκιμάσει.
- 14 Εἴ πιντο τὸ ἔργον μηδὲν ὁ ἐποικοδομησέ, μισθὸν λήψει).
- 15 Εἴ πινος τὸ ἔργον κατὰκαθήσει, ζημιωθήσει) αὐτὸς ἢ σωθήσει), εἴτως ἢ ὡς ἀπὸ πυρός.
- 16 Οὐκ οἴδατε ὅτι ναὸς Θεῶς ἐστὶ, κἢ τὸ πνεῦμα εἰ Θεῶς οἰκεῖ ἐν ὑμῖν;
- 17 Εἴ τις τὸ ναὸν εἰ Θεῶς φθείρη, φηρεῖ

τῆταν ὁ Θεός· ὁ γὰρ τὰς ἑαυτοῦ αἰῶνας ἐστὶν, οἵτινες ἐστὶν ὑμεῖς.

18 Μηδεὶς ἑαυτὸν ἐξαπατάτω· εἴ τις δοκεῖ σοφὸς εἶναι ἐν ὑμῖν ἐν τῷ αἰῶνι τούτῳ, μαρὸς γινώστω, ἵνα γίνηται σοφός.

19 Ἡ γὰρ σοφία ἑστὶν κτήνη τῆτι, μαρὶα τῷ πνεύματι τοῦ Θεοῦ ἐστὶν γὰρ· ὁ δραστικὸς τὸν τῶν σαφῶν ἐν τῇ πανουργίᾳ αὐτῶν.

20 Καὶ πάλιν· Κύριος γινώσκει τὰς ἀλογισμὰς τῶν σαφῶν ὅτι εἰσὶ μαρῆταιοι.

21 Ὡστε μηδεὶς καυχάτω ἐν ἀνθρώποις· πάντα γὰρ ὑμῶν ἐστὶν·

22 Εἴτε Παῦλος, εἴτε Ἀπολλῶς, εἴτε Κηφῆς, εἴτε κτήνος, εἴτε ζωὴ, εἴτε γέννησις, εἴτε ἐκτίσθη, εἴτε μέλλοντα· πάντα ὑμῶν ἐστὶν·

23 Ὑμεῖς ὅ, Χριστῷ· Χριστὸς ὅ, Θεῷ.

Κεφ. δ. 4.

1 Ὅπως ἡμῶς λογιζέτω ἀνθρώπων, ὡς ὑπερήφανος Χριστῷ, καὶ οἰκτιρόμενος μυστηρίων Θεοῦ.

2 Ὅ ὅ λοιπὸν, ζητεῖται ἐν τοῖς οἰκτιρόμενοις, ἵνα πιστὸς ἴης ὁρθῆ.

3 Ἐμοὶ ὅ εἰς ἐλάχιστὸν ἐστὶν ἵνα ὑφ' ὑμῶν ἀνακρίνω, ἢ ὑπὸ ἀνθρωπίνης ἡμέρας· ἀλλ' ἔδὲ ἑμαυτὸν ἀνακρίνω.

4 Οὐδὲν γὰρ ἑμαυτῷ σπύοισδα· ἀλλ' ὅσον ἐν τούτῳ δεδιχημάμα· ὁ ὅ ἀνακρίνω με, Κύριός ἐστιν.

5 Ὡστε

5 Ὡστε μὴ ἀπὸ κρηρῶν κρινέτε, ἕως αὐτῶν ἔλ-
θῃ ὁ Κύριος· ὅς κὲ φωτίσῃ τοὺς κρυπτοὺς τῶν σκό-
τους, κὲ φανεράσῃ τὰς βουλὰς τῶν καρδιῶν· καὶ
τότε ὁ ἕπαυται· γινώσεται ἐκείνων ἀπὸ τοῦ Θεοῦ.

6 Ταῦτα ἦ, ἀδελφοί, μέισονημάποτα εἰς
ἐμαυτὸν κὲ Ἀπολλῶν δι' ὑμᾶς· ἵνα εὐ ἡμῶν
μάθῃτε τὸ μὴ ὑπερὸν ἄλλο τι φρονεῖν, ἵνα
μὴ εἰς ὑπερὸν Θεοῦ ἐνὸς Φυσισθεῖτε κὲ Θεοῦ ἑτέρου.

7 Τίς γάρ σε ἀλακρίης; Τί ἦ ἐχθρὸς ὁ σὺν
ἐλακρίης; Εἰ ἦ κὲ ἐλακρίης, τί κωλύσεται ὡς μὴ
λαβῶν;

8 Ἢ δὴ κεκρησμένοι ἐστέ, ἢ δὴ ἐπολυτήτατε,
χωρὶς ἡμῶν ἐδοασιλύσατε κὲ ὀφειλὸν γε ἴσο-
σιλύσατε· ἵνα καὶ ἡμεῖς ὑμῶν συμδοασι-
λόσωμεν.

9 Δοκῶ γὰρ ὅτι ὁ Θεὸς ἡμᾶς τὰς ἀποστόλους
ἐσχάτως ἀπέδειξεν ὡς ἐπιδοασίους, ὅτι θεο-
τητον ἐξηγήτημεν τὰ κήρυγμα ἐ ἀγγέλοις καὶ
ἀνθρώποις.

10 Ἢμεῖς μωροὶ ἀπὸ Χριστῶν, ὑμεῖς ἦ φρο-
νημοὶ εὐ Χριστῶν· ἡμεῖς ἀδυνεῖς, ὑμεῖς δὲ
ἰσχυροὶ· ὑμεῖς ἐνδοξοὶ, ἡμεῖς ἦ ἄπειμοι.

11 Ἀχρεῖ τὸ ἄρθε ὡρας κὲ πένωμεν, ἐ διψῶ-
μεν, καὶ γυμνήσωμεν, κὲ κολαφίζόμεθα,
ἐ ἀσάτωμεν.

12 Καὶ κρηπῶμεν, ἐργαζόμενοι ταῖς ἰδίαις
χερσίν· λοιδορούμεν, δόλογομεν· διωκόμε-
νοι, ἀνεχόμεθα.

13 Βλασφημῆμοι, ὡρακαλῆμοι ὡς
 ἀεικατέρματα ἔχοντες ἐχρησθημοι, πάν-
 τω ἀείψημοι ἕως ἄρτι.

14 Οὐκ ἐντρέπω ὑμῶς γράφω ταῦτα, ἀλλ'
 ὡς τέκνα με ἀγαπήσατε νενηταῦ.

15 Ἐάν γὰρ μυρίαις παιδαγωγῶς ἔχητε ἐν
 Χριστῷ, ἀλλ' ἔ πολλὰς πατέρας. ἐν γὰρ Χρι-
 στῷ Ἰησοῦ Δεῖ ἔ οὐαγγελίαι ἐγὼ ὑμῶς ἐχρη-
 νησατε.

16 Παρακαλῶ ἐν ὑμῶς, μιμηταί με γίνεσθε.

17 Διὰ τῆτο ἐπιμψα ὑμῶν Τιμόθεον, ὡς ἐστὶ
 τέκνον με ἀγαπήσθαι ἐ πιστὸν ἐν Κυρίῳ, ὡς ὑμῶς
 ἀναμνήσατε ἕως ἰδύς με ἕως ἐν Χριστῷ, κατὰ
 πάντοτε ἐν πίστη ἐκκλησία διδάσκω.

18 Ὡς μὴ ἐρχομῶς δέ με πρὸς ὑμῶς, ἐφυ-
 σιῶθησα ἰνῆς.

19 Ἐλπίσσομαι ἔ ταχίως πρὸς ὑμῶς, ἐάν ὁ
 Κύριος θελήτη, καὶ γνώσσομαι ἔ τ λόγον ἔ
 πτεφυστωμῶν, ἀλλὰ ἔ δυνάμιν.

20 Οὐ γὰρ ἐν λόγῳ ἢ βασιλεία ἔ Θεῷ, ἀλλ'
 ἐν δυνάμει.

21 Τί θέλετε; Ἐν ῥάβδῳ ἔλθω πρὸς ὑμῶς, ἢ
 ἐν ἀγάπῃ, πρὸς ὑμῶς ἔ τε σραότη;

Κεφ. ε'. 5.

1 Ὡς ἀκέραι ἐν ὑμῶν πορνεία, ἐ τοικῶτη
 πορνεία ἢ πρὸς ἐδὲ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ὀνομαί-
 ζε). ὡς ἐ γυναικῶν ἕνα ἔ πατρὸς ἔχον.

2 Καὶ ὑμεῖς πεφυστωμῶν ἐσθε, καὶ ἔχον
 μῶλλον

μαλλον επηθησατε, ινα εξαρθη εκ μετρω υμων ο το εργον τωτο ποιησας;

3 Εγω μη γω ως απων τα σωματα, περαν τω πνευματι, ηδη κερικω ως περαν τω ετω τωτο κατεργασεμενον,

4 Εν τα ονοματι τω Κυριω ημων Ιησω Χριστω, σωμαχθεντων υμων κη τω εμεω πνευματω, σιωτη δυναμη τω Κυριω ημων Ιησω Χριστω,

5 Παραδωκα τω τειστον τα Σαβαντα εις ολεθρον τω σαρκος, ινα το πνευματοσωτη εν τη ημερα τω Κυριω Ιησω.

6 Ου καλον το καυχασθε υμων. σικ οισατε οτι μικρα ζυμη ολον το φυραμα ζυμωις

7 Εκκαταρατε εν τω παλαιαν ζυμωι, ινα ητε νεον φυραμα, κατωσ εσε αζυμοι κη γω το παχα ημων ιωπερ ημων εθηθη, Χριστω.

8 Ωστε εορταζωμεν, μη εν ζυμη παλαια, μηδε εν ζυμη κακιας κη πονηριας, αλλ εν αζυμοις ειλικρινειας τω αληθειας.

9 Εγραψα υμιν εν τη επισολη, μη σωμαναμιγνουσθαι πορνοις.

10 Καη ε παντως τοις πορνοις τω κωσμε τωτω, η τοις πλεονεκταις, η αρπαξιν, η ειδωλολατραις, επει οφειλετε αρα εκ τω κωσμου εξελθειν.

11 Νωι δε εγραψα υμιν μη σωμαναμιγνουσθαι, εαν ης αδελφοσ ονομαζομεν, η πορνοι.

πόρνη, ἢ πλεονέκτης, ἢ εἰδωλολάτρης, ἢ
λοιδόρ, ἢ μέθυς, ἢ ἄρπαξ· τῶ τού-
τω μηδὲ σιωποῦν.

12 Τί γὰρ μοι καὶ τὸς ἕξω κρίνῃ; Οὐχὶ τὸς
ἔσω ὑμεῖς κρίνετε;

13 Τὸς ᾧ ἕξω ὁ Θεὸς κρίνῃ. Καὶ ἐξαρεῖτε
τὸ πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν.

Κεφ. 5. 6.

1 **Τ**Ο λυμῆς ὑμῶν πρᾶγμα ἔχω πρὸς τὸ
ἕτερον, κρίνετε ἐπὶ τῷ αἰσίκῳ, καὶ ἔχῃ
ἐπὶ τῷ ἀγίῳ;

2 Οὐκ οἶδατε ὅτι οἱ ἅγιοι τὸ κῆσμοι κρίνε-
σι; Καὶ εἰ ἐν ὑμῖν κρίνεται ὁ κῆσμος,
ἀνάξιοί ἐστε κρίνηριον ἐλαχίστων;

3 Οὐκ οἶδατε ὅτι ἀγγέλους κρινῶμεν; μή πο-
τε βιωμε;

4 Βιωμε μὲν οὐκ κρίνηρια εἶν ἔχῃτε, τὸς
ἕξω κρινόμεν ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ, τῆς τῶν κα-
θίστετε.

5 Πρὸς ἐντροπῶν ὑμῖν λέγω. ἕτως ὅτι ἐστὶ
ἐν ὑμῖν σοφὸς ἕδὲ εἷς, ὃς διωθήσεται Δί-
κρινε ἀνὰ μέσον τῶ ἀδελφῶ αὐτῶ;

6 Ἀλλὰ ἀδελφὸς μὲν ἀδελφῶ κρίνε), καὶ
τῶ ἐπὶ ἀπίστων;

7 Ἦδη μὲν οὐκ ὅλως ἠτήμα ἐν ὑμῖν ἐστὶν,
ὅτι κρίμα ἔχετε μεθ' ἑαυτῶν. Δίκα ἔχῃ
μᾶλλον ἀδικεῖτε; Δίκα ἔχῃ μᾶλλον ἀπο-
στρέψετε;

8 Ἀλλὰ

- 8 Ἀλλὰ ὑμεῖς ἀδικεῖτε καὶ ἀποσερεῖτε, καὶ ταῦτα ἀδελφεῖς.
- 9 Ἡ οὐκ οἶδάτε ὅτι ἀδικῶν βασιλείαν Θεῶν ἔκκληρονομῆσαι; Μὴ πλανᾶσθε, ἕτε πόρνοι, ἕτε εἰδωλολάτραι, ἕτε μοιχοί, ἕτε μολαχοί, ἕτε δόστιοχοῖται,
- 10 Οὔτε κλέπται, ἕτε πλεονέκται, ἕτε μέθυσοι, ἕτε λοιδοροί, ἕτε ἄρπαγες, βασιλείαν Θεῶν ἔκκληρονομῆσαι.
- 11 Καὶ ταῦτα πνῆς ἦτε· ἀλλὰ ἀπελέστασθε, ἀλλὰ ἠγάσθητε, ἀλλὰ ἐδοκίμασθητε ἐν τῇ ὀνόματι Ἰησοῦ Κυρίου Ἰησοῦ, καὶ ἐν τῇ πνύματι Θεοῦ ἡμῶν.
- 12 Πάντα μοι ἔξεστιν, ἀλλ' ἔ πάντα συμφέρει· πάντα μοι ἔξεστιν, ἀλλ' οὐκ ἐγὼ ἐξουσιασθῆσομαι ὑπὸ πνύ.
- 13 Τα βρώματα τῆς κηιλίας, καὶ ἡ κηιλία τοῖς βρώμασιν· ὁ δὲ Θεὸς καὶ ταῦτων ἐ ταῦτα κηιλεργήσῃ. τὸ δὲ σῶμα ἐ τῇ πορνείᾳ, ἀλλὰ τῷ Κυρίῳ, καὶ ὁ Κύριος τὰ σῶματά.
- 14 Ὁ δὲ Θεὸς ἐ τὸ Κύριον ἠγάρε, καὶ ὑμῶς ἐξεσερεῖ ἀπὸ τῆς δυνάμεως αὐτῆς.
- 15 Οὐκ οἶδατε, ὅτι τὰ σῶματά ὑμῶν, μέλη Χριστοῦ ἐσιν; Ἄρας οὐκ τὰ μέλη Θεοῦ Χριστοῦ, ποιήσω πόρνους μέλη; Μὴ γηνοίθε.
- 16 Ἡ οὐκ οἶδατε ὅτι ὁ κηκώματός τῆς πόρνῃς, ἐν σῶματι ἐσιν; Ἐσονται γὰρ, φησὶν, οἱ δύο εἰς σῶμα μίαν.

17 Ὁ δὲ

17 Ο δὲ κηχώμρω τῷ Κυρίῳ, ἐν πνεύματι ἐστίν.

18 Φύλαξε τὴν πορνείαν. πᾶν ἀμαρτήμας ὃ ἐάν ποιήσῃ ἄνθρωπος ἐκτός τῆς σώματος ἐστίν· ὃ δὲ πορνείων, εἰς τὸ ἴδιον σῶμα ἀμαρτάνει.

19 Ἡ σὺ οἴδατε, ὅτι τὸ σῶμα ὑμῶν, ναὸς ἐστὶν ἐν ὑμῖν ἅγιος πνεύματος ἐστίν, ἃ ἔχειτε ἀπὸ Θεοῦ, καὶ σὺ ἐστὲ ἐαυτῶν;

20 Ἡγοράσθητε γὰρ πμῆς· δοξάσται δὴ τὸ Θεὸν ἐν τῷ σώματι ὑμῶν, ἔν τῷ πνεύματι ὑμῶν, ἃ πνὰ ἐστὶ τῆ Θεοῦ.

Κεφ. ζ 7.

1 Περὶ τῶν ἐργασμάτων, καλὸν ἀνθρώπου γυναικὸς μὴ ἀπλεῖσθαι.

2 Διὰ τὴν ἴαυ πορνείας ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ γυναῖκα ἔχειτω, ἔκαστος τὸ ἴδιον ἄνδρα ἔχειτω.

3 Τῆ γυναικὶ ὁ ἀνὴρ τὸ φέλουδρὸν ὄνομα ἀποδίδωτω· ὁμοίως δὲ καὶ ἡ γυνὴ τῷ ἀνδρί.

4 Ἡ γυνὴ τῷ ἴδιῳ σώματι ἔσται ἑξασιάζουσα, ἀλλ' ὁ ἀνὴρ ὁμοίως δὲ ὁ ἀνὴρ τῷ ἴδιῳ σώματι ἔσται ἑξασιάζουσα, ἀλλ' ἡ γυνὴ.

5 Μὴ ἀποσερεῖτε ἀλλήλους, εἰ μὴ τι αὐτὸ ἐν συμφώνῳ πρὸς κερὸν, ἵνα χολάζητε τῆν ἡσέια ἔν τῆν πρῶσδύχῃ· καὶ πάλιν ἐπὶ τὸ αὐτὸ συνέρχεσθε, ἵνα μὴ πρῶάζη ὑμῶς ὁ Σάτανᾶς ἀπὸ τῆ ἀκρασίαν ὑμῶν.

6 Τὸ δὲ λέγω καὶ συγνώμην, ἃ κατ' ἐπιταγῆν.

7 Θίλω

- 7 Θέλω γὰρ πάντας ἀνθρώπους εἶναι ὡς καὶ ἐμαυτὸν· ἀλλ' ἕκαστος ἴδιον χάρισμα ἔχει ἐκ Θεοῦ, ὃς μὴ ἕτως, ὃς ἢ ἕτως.
- 8 Λέγω ἢ τοῖς ἀγάμοις καὶ ταῖς χήραις, κηλὸν αὐτοῖς εἶναι ἵνα μείνωσιν αἰς κατὰ.
- 9 Εἰ ἢ σὺ ἐκράβδον, γαμησάτωσαν, κρείσσον γὰρ ἐστὶ γαμήσασθαι ἢ πυρᾶσθαι.
- 10 Τοῖς ἢ γαμηθεῖσι ἀποφράξτε τὰ ἄκρα ἐκ ἐγώ, ἀλλ' ὁ Κύριος, γνωαῖκα ἀπὸ ἀνδρὸς μὴ χωροδύωμαι.
- 11 Εἴαν ἢ καὶ χωροδύῃ, μὴ μέτω ἀγαμῶ, ἢ τὰ ἀνδρὶ καὶ ἀποκλήτω· καὶ ἀνδρα γνωαῖκα μὴ ἀφίεναι.
- 12 Τοῖς ἢ λοιποῖς ἐγὼ λέγω, ἔχ' ὁ Κύριος· Εἴ τις ἀδελφὸς γνωαῖκα ἔχει ἄπιστον, καὶ αὐτὴ σωδοκεῖ οἰκεῖν μετ' αὐτῆ, μὴ ἀφίετω αὐτήν.
- 13 Καὶ γνωὴ ἢ τις ἔχει ἄνδρα ἄπιστον, καὶ αὐτὸς σωδοκεῖ οἰκεῖν μετ' αὐτῆς, μὴ ἀφίετω αὐτόν.
- 14 Ἡγάσασθαι γὰρ ὁ ἀνὴρ ὁ ἄπιστος ἐν τῇ γνωαίᾳ· καὶ ἡγάσασθαι ἢ γνωὴ ἢ ἄπιστος ἐν τῷ ἀνδρὶ. ἐπεὶ ἄρα τὰ τέκνα ὑμῶν ἀκαθάρτα ἐστὶ νῦν ἢ ἁγιάεσιν.
- 15 Εἰ ἢ ὁ ἄπιστος χωρίζεται, χωρίζεσθαι. ἔδεδόλωται ὁ ἀδελφὸς ἢ ἡ ἀδελφὴ ἐν τοῖς τοῖς τοῖς· ἐν ἢ εἰρήνῃ κέκληκεν ἡμᾶς ὁ Θεός.
- 16 Τί γὰρ οἶδας, γνωαί, εἰ τὸ ἄνδρα σώσης;
 Ἡ π

- Η' π' οἶδας, ἄνερ, εἰ τιὸ γυναιῆκα σώτῃς;
 17 Εἰ μὴ ἐκείτω ὡς ἐμέροισι ὁ Θεός, ἐκείτων
 ὡς κέκληκεν ὁ Κύριος, ἔτω παρὰ τῆς
 καὶ ἔπως ἐν ταῖς ἐκκλησίαις πάσης Δι-
 τάσομαι.
 18 Περιπέμηνόμην ἕως ἐκλήθη; Μὴ ἐπι-
 παύσῃ. ἐν ἀκροβυσσίᾳ ἕως ἐκλήθη; Μὴ
 παρὰ τῆς.
 19 Ἡ' παρὰ τῆς ἐδὲν ἐστὶ, καὶ ἡ ἀκροβυστία
 ἐδὲν ἐστὶν, ἀλλὰ τήρησις ἐν ἑσπέρῳ Θεῷ.
 20 Ἐκείτω ἐν τῇ κλήσει ἢ ἐκλήθη, ἐν ταύ-
 τη μὲν ἐστὶ.
 21 Δὲλός ἐκλήθη; Μὴ σοι μελέτω· ἀλλ'
 εἰ καὶ δυνάστη ἐλδύτηρ ἢ Χυείω, μάλλον
 χρῆται.
 22 Ὁ γὰρ ἐν Κυρίῳ κληθεὶς δὲλος, ἀπελδύ-
 τηρ ἢ Κυρίῳ ἐστὶν ὁμοίως καὶ ὁ ἐλδύτηρ ἢ
 κληθεὶς, δὲλός ἐστι Χυείω.
 23 Τιμῆς ἠγροφάθη· μὴ γίνεσθε δὲλοι ἀν-
 θρώπων.
 24 Ἐκείτω ἐν ᾧ ἐκλήθη, ἀδελφοί, ἐν τῇ-
 τα μὲν ἐστὶ παρὰ τῆς Θεῷ.
 25 Περὶ ἧς παρὰ τῆς ἐπιταγῆς Κυρίῳ
 σὺν ἔχω γνώμην ἧς δίδωμι ὡς ἠλεηρόμην
 ὑπὸ Κυρίῳ πιστὸς εἶναι.
 26 Νομίζω οὖν τῷ το καλὸν ὑπάρχον Δι-
 τῆ ἐνιστῶν ἀνάγκην, ὅτι καλὸν ἀνθρώπων τὸ
 ἔπως εἶναι.

27 Δίδε-

- 27 Δίδουσι γυναίκι; Μὴ ζήτη λύσιν. λέ-
λυσαι δὲ τὸ γυναικός; Μὴ ζήτη γυναῖκα.
- 28 Ἐὰν ᾗ ἔγγαμος, ἔχ ἡμαρτίαι· καὶ ἂν γήμη
ἢ παρθένος, ἔχ ἡμαρτίαι· θλίψιν ᾗ τῆ σαρκὶ
ἔξουσι οἱ τοῦτοι. ἐγὼ ᾗ ὑμῶν φείδομαι.
- 29 Τῆτο δὲ φημι, ἀδελφοί, ὅτι ὁ κενὸς
συνεταλμύθη τὸ λοιπὸν ἐστίν· ἵνα καὶ ἔχουσι
γυναῖκας, ὡς μὴ ἔχουσι ὄσι·
- 30 Καὶ οἱ κλαίοντες, ὡς μὴ κλαίοντες· καὶ οἱ
χαίροντες, ὡς μὴ χαίροντες· καὶ οἱ ἀγροφύζον-
τες, ὡς μὴ κεντέχοντες·
- 31 Καὶ οἱ χρώμιοι τὰ κῆσμα τέτω, ὡς
μὴ κενάχρωμοι· πῶς δὲ τὸ κῆσμα ἔ-
κῆσμα τέτω.
- 32 Θέλω ᾗ ὑμῶν ἀμερίμνας εἶναι· ὁ ἀγαθος
μεριμνᾷ τὰ ἔ Κυρία, πῶς δὲ τὸ Κυρία·
- 33 Οἱ ᾗ γαμήσας μεριμνᾷ τὰ ἔ κῆσμα,
πῶς δὲ τὸ τῆ γυναίκι.
- 34 Μεμέριται ἢ γυνὴ ἔ ἢ παρθένος· ἢ ἀγα-
μο μεριμνᾷ τὰ ἔ Κυρία, ἵνα ἢ ἀγία καὶ
σώματι καὶ πνεύματι· ἢ ᾗ γαμήσας μερι-
μνᾷ τὰ ἔ κῆσμα, πῶς δὲ τὸ τῆ ἀνδρί.
- 35 Τῆτο ᾗ πρὸς τὸ ὑμῶν αὐτῶν συμφέρον
λέγω· ἔχ ἵνα βροχὸν ὑμῶν ἐπιβάτω, ἀλλὰ
πρὸς τὸ δόξα κῆ καὶ δὲ πρόσεδρον τὰ Κυρία
ἀπεριπάτως.
- 36 Εἰ δὲ τις ἀχημνεῖν ἐπὶ τῶ παρθένον
αὐτῆ νομίζῃ, ἂν ἢ ὑπέρακμο, καὶ ἔ τως
ὀφείλη

ὀφείλει γενεᾷ· ὁ θεὸς ποιείτω, ἐκ ἁμαρ-
ταν· χαμείτωσαν.

37 Ὅς ἢ ἔσηκει ἰδραῖος ἐν τῇ καρδίᾳ, μὴ
ἔχων ἀνάγκην, ἐξουσίαν ἢ ἔχη πρὸς τὴν
θελήματι, καὶ τὴν κίερακεν ἐν τῇ καρ-
δίᾳ αὐτῆς, τὸ τηρεῖν τὴν ἑαυτῆς παρθέτον,
καλῶς ποιῆι.

38 Ὡστε καὶ ὁ ἐκχαμίζων, καλῶς ποιῆι· ὁ ἢ
μὴ ἐκχαμίζων, κρείσσον ποιῆι.

39 Γυνὴ δὲ δὲ νόμῳ ἐφ' ὅσον χρόνον ζῆ ὁ ἀνὴρ
αὐτῆς· ἂν ἢ κριμηθῆ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, ἐλάττωρα
ἔστι ἢ θεὸς χαμηθῆναι· μόνον ἐν Κυρίῳ.

40 Μακαριώτερα δὲ ἐστὶν εἶναι ἔπι μείνη,
καὶ τὴν ἐμὴν γνώμην· δοκῶ ἢ καὶ πνεύ-
μα Θεοῦ ἔχην.

Κεφ. η'. 8.

1 Περὶ δὲ τῶν εἰδωλοφύτων, οἶδα μὲν ὅτι
πάντες γινώσκον ἔχοντες. ἢ γινώσκον φυσικοῖς
ἢ ἢ ἀγάπη οἰκοδομεῖ.

2 Εἰ δὲ τις δοκεῖ εἰδέναι τι, ἐδέπω ἔδεν·
ἔγνωκε καθὼς δεῖ γινώσκαι.

3 Εἰ δὲ τις ἀγαπᾷ τὸ Θεόν, ἔτι Θεοῦ ἔγνωσται
ὑπὸ αὐτῆς.

4 Περὶ τῆς βρώσεως οὐκ οἶδα μὲν τῶν εἰδωλοφύτων,
οἶδα μὲν ὅτι ἔδεν εἰδωλον ἐν κήσῳ, καὶ ὅτι
ἔδεις Θεὸς ἔπειτα εἰ μὴ εἷς.

5 Καὶ γὰρ εἴπερ εἰσὶ λεγόμενοι θεοὶ εἴτε ἐν
ἐρασίᾳ, εἴτε ἐπὶ τῆς γῆς· (ὡσπερ εἰσὶ θεοὶ πολ-
λοὶ, ἔτι κύριοι πολλοὶ)

6 Α' Μ'

- 6 Ἀλλ' ἡμεῖν εἰς Θεὸς ὁ πατήρ, ἐξ ἧς τὰ πάντα, καὶ ἡμεῖς εἰς αὐτόν· ἔστις Κύριος Ἰησοῦς Χριστός, δι' ἧς τὰ πάντα, καὶ ἡμεῖς δι' αὐτῆς.
- 7 Ἀλλ' ὅσα ἐν παντί ἢ γινώσκεις, πῶς ἢ τῆς σωτηρίας ἔειδώς, ἕως ἄρτι, ὡς εἰδωλόθυτον ἐπίστασι, καὶ ἡ σωτηρία αὐτῶν ἀσθενῶν ἔσται μολύνει).
- 8 Βρωμα ἢ ἡμεῶς ἔπαρσητε τῷ Θεῷ· ἔτε γὰρ ἐὰν φάγωμεν, φεισόμεθα· ἔτε ἐὰν μὴ φάγωμεν, ὑπερέμεθα.
- 9 Βλέπετε ἢ μήπως ἡ ἐξουσία ὑμῶν αὐτῆς ἐξουσίας γίνονται τοῖς ἀσθενῶσι.
- 10 Ἐὰν γὰρ τις ἴδῃ σε ἔχοντα γινώσκον, ἐν εἰδωλείᾳ καὶ κείμενον, ἔχει ἡ σωτηρία αὐτῶν ἀσθενῶν ὅντι οἰκοδομηθήσεται εἰς τὸ τὰ εἰδωλόθυτα ἐπίστασι.
- 11 Καὶ ἀπολείτα ὁ ἀσθενῶν ἀδελφὸς ἐπὶ τῆς σῆς γνώσεως, δι' ὃν Χριστὸς ἀπέθανεν.
- 12 Οὕτω ἢ ἀμαρτάνοντες εἰς τὸς ἀδελφούς, καὶ τύπτοντες αὐτῶν τὴν σωτηρίαν ἀσθενῶν, εἰς Χριστὸν ἀμαρτάνετε.
- 13 Διόπερ εἰ βρωμα σκανδαλίζῃ τὸ ἀδελφόν μου, ἔμὴ φάγω κρέα εἰς τὸ αἰῶνα, ἵνα μὴ τὸ ἀδελφόν μου σκανδαλίσω.

Κεφ. θ'. 9.

- 1 Οὐκ εἰμι ἀπόστολος; Οὐκ εἰμι ἐλπίστος;
 Οὐκ Ἰησοῦν Χριστὸν τὸ Κύριον ἡμῶν ἐώρηκα;
 Οὐ τὸ ἔργον μου ὑμεῖς ἐστε ἐν Κυρίῳ;

2 Εἰ

- 2 Εἰ ἄλλοις σὺ εἶμι δότολῳ, ἄλλοις γε ὑμῖν εἶμι· ἢ γὰρ σφραγίς τῆ ἐμῆς ἐπιστολῆς ὑμεῖς ἐστε ἐν Κυρίῳ.
- 3 Ἡ ἐμὴ δότολογία τοῖς ἐμοῖς ἀνακρίνεται, αὐτῇ ἐστὶ·
- 4 Μὴ σὺ ἐχομῶν ἐξουσίαν φαγεῖν καὶ πιεῖν;
- 5 Μὴ σὺ ἐχομῶν ἐξουσίαν ἀδελφῶν γυναῖκα πειράζειν, ὡς καὶ οἱ λοιποὶ δότολοι, ἔοσι ἀδελφοὶ τῷ Κυρίῳ, καὶ Κηφᾶς;
- 6 Ἡ μόνῳ ἐγὼ καὶ Βαρνάβας σὺ ἐχομῶν ἐξουσίαν τῆ μὴ ἐργάζεσθαι;
- 7 Τίς σπείρειται ἰδίοις ὀψωνίοις ποτέ; Τίς φυλάσσει ἀμπελῶνα, καὶ ἐν τῷ καρπῷ αὐτῷ σὺ ἐσθίεις; Ἡ τίς ποιμαίνει ποιμῆν, ἔοσι τῷ γάλακτι τῆ ποιμένης σὺ ἐσθίεις;
- 8 Μὴ καὶ ἄνθρωπον ταῦτα λαλῶ; Ἡ ἔχει καὶ ὁ νόμος ταῦτα λέγει;
- 9 Ἐν γὰρ τῷ Μωσέως νόμῳ γέγραπται· Οὐ φιμώσῃς βῆν ἀλοῶντα. Μὴ τῷ βοῶν μίλη τῷ Θεῷ;
- 10 Ἡ δὲ ἡμεῖς πάντως λέγει; Διὶ ἡμεῖς γὰρ ἐγράφη, ὅτι ἐπὶ ἐλπίδι ὀφείλει ὁ ἀροτριῶν ἀροτριῶν καὶ ὁ ἀλοῶν, τῷ ἐλπίδῳ αὐτῷ μετέχειν ἐπὶ ἐλπίδι.
- 11 Εἰ ἡμεῖς ὑμῖν τὰ πνευματικὰ ἐσπέρισμα, μίσηται εἰ ἡμεῖς ὑμῶν τὰ σαρκικὰ περισομῶμεν;
- 12 Εἰ ἄλλοι τῷ ἐξουσίας ὑμῶν μετέχουσιν, ἔμολλον ἡμεῖς; Ἀλλ' σὺ ἐχρησάμεθα τῇ ἐξουσίᾳ

ἐξουσία ταύτη· ἀλλὰ πάντα ἐγὼ μὲν, ἵνα μὴ
ἐκπορώ ἵνα δώρω τὰ εὐαγγέλια Ἐ Χριστῷ.

13 Οὐκ οἴδατε ὅτι οἱ τὰ ἱερὰ ἐργαζόμενοι,
ἐκ τῶν ἱερῶν ἐδίδασκον; Οἱ τῶν θυσιαστηρίων προσ-
εδρεύοντες, τὰ θυσιαστήρια συμμερίζονται;

14 Οὕτως ἔοικε ὁ Κύριος διέταξε τοῖς τὸ εὐα-
γγέλιον κατὰ γέλωσιν, ἐκ τῶν εὐαγγελιστῶν.

15 Ἐγὼ δὲ ἕδεν ἐρησάμενος τέτων. Οὐκ
ἔγραψα δὲ ταῦτα ἵνα ἔτω γλήνη ἐν ἐμοί.
καλὸν γάρ μοι μάλλον ἀποθανεῖν ἢ τὸ καύ-
χημαί με ἵνα τις κενώσῃ.

16 Ἐὰν γὰρ εὐαγγελίζωμαι, σὸκ ἔστι μοι καύ-
χημα· ἀνάγκη γάρ μοι ἐπίκνεται. εἰ δὲ μοί
ἔστιν εἰὰν μὴ εὐαγγελίζωμαι.

17 Εἰ γὰρ ἐκὼν τῆτο πράσσω, μειῶν ἔχω· εἰ
δὲ ἀκὼν, οἰκονομίαν πεπίσθυμαι.

18 Τίς οὖν μοί ἐστιν ὁ μειῶς; ἵνα εὐαγγελι-
ζόμενος ἀδάπανον γήσω τὸ εὐαγγέλιον Ἐ
Χριστῷ, εἰς τὸ μὴ καταχρησάσθαι τῇ ἐξουσίᾳ
με ἐν τῷ εὐαγγελίῳ.

19 Ἐλεύθερος γὰρ ἂν ἐκ πάντων, πᾶσιν ἐμαυ-
τὸν ἐδέλωσα, ἵνα τὸς πλείονας κερδήσω.

20 Καὶ ἐγὼ μὲν τοῖς Ἰουδαίοις ὡς Ἰουδαῖος,
ἵνα Ἰουδαίους κερδήσω· τοῖς ὑπὸ νόμον ὡς ὑπὸ
νόμον, ἵνα τὸς ὑπὸ νόμον κερδήσω.

21 Τοῖς ἀνόμοις ὡς ἀνομος (μὴ ἂν ἀνο-
μος Θεῷ, ἀλλ' ἐνομος Χριστῷ) ἵνα κερ-
δήσω ἀνόμους.

22 Ἐγὼ δὲ

- 22 Εγγύομαι τοῖς ἀδελφεῖν ὡς ἀδελφῆς, ἵνα
τὰς ἀδελφεῖς κερδήσω. τοῖς πᾶσι γέγρανα το
πάντα, ἵνα πάντως πιάσ σῶσω.
- 23 Τὸτο δὲ ποιῶ διὰ τὸ δύσχελιον, ἵνα
συμμενωὶς αὐτῷ γένωμαι.
- 24 Οὐκ οἶδατε, ὅτι οἱ ἐν σταδίῳ τρέχοντες, πάν
τες μὲν τρέχουσιν, εἰς δὲ λαμβάνει τὸ βρα
βεῖον; Οὕτω τρέχετε, ἵνα κερταλάθητε.
- 25 Πᾶς δὲ ὁ ἀγωνιζόμενος, πάντα ἐκκρα
τάσει. ἐκείνοι μὲν οὐκ ἵνα φθαρθῶν εἴφα
νον λάβωσιν· ἡμεῖς δὲ, ἀφθαρθῶν.
- 26 Ἐγὼ τοίνυν ἔτω τρέχω, ὡς εἶπα ἀδήλων
ἔτω πυκιδῶν, ὡς εἶπα ἀέρα δέρων.
- 27 Ἀλλ' ὑποπιᾶζω με τὸ σῶμα ἐ δαλα
ζωγῶ, μήπως ἄλλοις κερύξας, αὐτὸς ἀδοκι
μηθῶ γένωμαι.

Κεφ. ε'. 10.

- 1 Οὐ γέλω δὲ ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί, ὅτι οἱ
πατέρες ἡμῶν πάντες ὑπὸ τῷ νεφέλλῳ
ἦσαν· ἐ πάντες διὰ τὴ θαλάσσης διήλθον.
- 2 Καὶ πάντες εἰς τὴ Μωσῆν ἐβαπτίσαντο ἐν
τῇ νεφέλῃ καὶ ἐν τῇ θαλάσῃ·
- 3 Καὶ πάντες τὸ αὐτὸ βρωῖμα πνευματι
κὸν ἔφαγον.
- 4 Καὶ πάντες τὸ αὐτὸ πόμα πνευματικὸν
ἔπιον. ἔπιον γὰρ ἐκ πνευματικῆς ἀκροθῆ
σης πέτρας· ἡ δὲ πέτρα ἦν ὁ Χριστός.
- 5 Ἀλλ' εἶπα ἐν τοῖς πλείοσιν αὐτῶν ἀδὲ
κησετ

κησεν ὁ Θεός. κατεσφώθησαν γὰρ ἐν τῇ ἐρήμῳ.

6 Ταῦτα ἡ τύποι ἡμῶν ἐγλυήθησαν, εἰς τὸ μὴ εἶναι ἡμᾶς ἐπιθυμητοὺς κακῶν, καθὼς καὶ κείνοι ἐπεθύμησαν.

7 Μηδὲ εἰδωλολάτρευμα γίνεσθε, καθὼς πινες αὐτῶν ὡς γέγραπται· Ἐκράτισεν ὁ λαὸς φαγεῖν ἔπιεῖν, καὶ ἀνέστησαν παίζεῖν.

8 Μηδὲ πορνείω μὴ, καθὼς ἴκτες αὐτῶν ἐπόρνευσαν, καὶ ἔπεσον ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ εἰκοσι-
τρεῖς χιλιάδες.

9 Μηδὲ ἐκπρόξω μὴ τὸ Χρυσὸν, καθὼς καὶ πινες αὐτῶν ἐπέειρασαν, ἔτι ἀπὸ τῶν ὄψεων ἀπώλοντο.

10 Μηδὲ γυμνάζετε, καθὼς καὶ πινες αὐτῶν ἐγυμνῶσαν, καὶ ἀπώλοντο ἀπὸ τῆς ὀλοθροσύνης.

11 Ταῦτα ἡ πάντα τύποι σωθεῖσθαι ἡμῶν, εἰς ἧς τὰ τέλη τῶν αἰῶνων κατελήθησαν.

12 Ὡς ὁ δοκῶν ἐσάναι, βλέπετω μὴ πέσει.

13 Πήρασμα ὑμῶν οὐκ εἴληφεν εἰ μὴ ἀνθρώπινον· πιστὸς ἡ ὁ Θεός, ὃς οὐκ ἐάσει ὑμᾶς πηραδῶσαι ὑπὲρ ὃ δυνάσθε, ἀλλὰ ποιήσει σὺ τῷ πηρασμῷ ἔτι ἕκδοσιν, ἢ δυνάσθε ὑμᾶς ὑπενεγκεῖν.

14 Διόπερ, ἀγαπήθι με, φύγετε ἀπὸ τῆς εἰδωλολατρείας.

15 Ὡς φρονίμοις λέγω κρίνατε ὑμεῖς ὁ φημι.

16 Τὸ ποτήριον τῆς δόλογίας ὁ δόλογε μὴ, ἐχέ

ἐχὲς κρινωνία ἔσσι αἵματι ἔσσι Χερσῆ ἐσι; Τὸ
ἀρῆν ὄν κλωμῆρ, ἐχὲς κρινωνία ἔσσι σώματι
ἔσσι Χερσῆ ἐσι;

17 Ὅπ εἰς ἀρῆν, ἐν σώμασι οἱ πολλοὶ ἐσσι
οἱ γὰρ πάντες ἐκ ἑνὸς ἀρῆς μετέχουσι.

18 Βλέπετε τὸ ἴσραήλ καὶ σάρκα· ἐχὲς
ἐσσι ἰσραήλ καὶ σάρκα, κρινωνοὶ ἔσσι ἰσραήλ
καὶ σάρκα;

19 Τὸ οὐ φημι; ὅπ εἰδωλον, τί ἐστι; ἢ ὅτ
εἰδωλόφυτον, τί ἐστι;

20 Ἀλλ' ὅπ ἀρῆς τὰ ἔθνη, δαιμονίοις ἔσσι
καὶ Θεοῦ· ἐχὲς ἔσσι ὑμῶν κρινωνοὶ καὶ δαι
μονίων γένεσσι.

21 Οὐ δυνάσκετε ποτήριον Κυρίου πίνην ἐκ πο
τήριον δαιμονίων· ἐχὲς δυνάσκετε τραπεζῆς Κυ
ρίου μετέχην, ἐκ τραπεζῆς δαιμονίων.

22 Ἡ ὁρῶν ἡμεῶν τὸ Κύριον; Μὴ ἰχου
ρότεροι αὐτῶν ἐσσι;

23 Πάντα μοι ἔξεσσι, ἀλλ' ἐκ πάντων συμ
φέρομαι πάντα μοι ἔξεσσι, ἀλλ' ἐκ πάντων οἱ
καδομεῖ.

24 Μηδεὶς τὸ ἐμὸν ζητείτω, ἀλλὰ τὸ ἐ
τέρον ἑκάστου.

25 Πᾶν τὸ ἐν μακρόν πωλέμενον ἐσσι
μηδὲν ἀνακρίνομεν ἀλλὰ τὸ σωείδησιν.

26 Τὸ γὰρ Κυρίου ἡ γῆ ἔσσι τὸ πᾶν μακρόν
καὶ σωείδησιν.

27 Εἰ δέ τις καλεῖ ὑμῶν καὶ ἀπίστω, κα
τέλετε πορεύεσθαι, πᾶν τὸ πωλέμενον
ὑμῶν

ὑμῖν ἐοπίετε, μηδὲν ἀνακρίνοντες ἀλλ' ἰπὼ
σωείδησιν.

28 Ἐὰν δέ τις ὑμῖν εἴπῃ· Τὸ τοῦ εἰδωλόθυτον
ἐστὶ, μὴ ἐοπίετε, δι' ἐκεῖνον ἢ μινύσασθε,
καὶ ἢ σωείδησιν. Ἦ γὰρ Κυρίως ἢ γῆ καὶ τὸ
πλήρωμα αὐτῆς.

29 Σωείδησιν ἢ λέγω, ἐχθὴ ἢ ἑαυτοῦ, ἀλλὰ ἢ
ἢ ἑτέρου. ἵνα γὰρ ἢ ἐλύθηται με κρίνεται
ὑπὸ ἄλλης σωείδησεως;

30 Εἰ ἢ ἐγὼ χεῖρα μετέχω, τί βλασφημῶ
ὑπὲρ ἢ ἐγὼ οὐραρισῶ;

31 Εἴτε ἢν ἐοπίετε, εἴτε πίνετε, εἴτε ἢ ποιῶ-
τε, πάντα εἰς δόξαν Θεῶ ποιῆτε.

32 Ἀπερσοκοποι γίνεσθε καὶ Ἰσθαίοις καὶ Ἐλλῆσι
καὶ τῇ ἐκκλησίᾳ ἢ Θεῶ.

33 Καθὼς καὶ γὰρ πάντα πᾶσιν ἄρισκω, μὴ
ζητῶν τὸ ἑμαυτῶ συμφέρον, ἀλλὰ τὸ τῶν
πολλῶν, ἵνα σωθῶσι.

Κεφ. ια'. ΙΙ.

1 **Μ**ιμηταί με γίνεσθε, καθὼς καὶ γὰρ
Χριστῶ.

2 Ἐπαμνά εἰ ὑμᾶς, ἀδελφοί, ὅτι πάντα
με μέμνησθε, καὶ καθὼς παρέδωκε ὑμῖν, ἵνα
ἢ ἄδόςος κατέχετε.

3 Θέλω δὲ ὑμᾶς εἰδέναι ὅτι παντὸς ἀνδρός
ἢ κεφαλὴ ὁ Χριστῶ ἐστὶ· κεφαλὴ ἢ γυναικὸς, ἢ
ἀνῆρ· κεφαλὴ εἰ Χριστῶ, ὁ Θεῶς.

4 Πᾶς ἀνῆρ ἢ ἑσούχου μῆρ ἢ ἑσούχου
B b κτ'

καὶ κεφαλῆς ἔχον, κηλαιχωμένη τὴν κεφαλὴν αὐτῆς.

5 Πᾶσα δὲ γυνὴ ὡς ἡ κεφαλὴ ἢ ὡς τὸ φηλόσσοι ἀκατακαλύπτω τῇ κεφαλῇ, καὶ ταιχωμένη τῇ κεφαλῇ ἑαυτῆς· ἐν γὰρ ἐστὶ ἐν αὐτῷ τῇ ἐξουρημένη.

6 Εἰ γὰρ ἀκατακαλύπτω γυνὴ, καὶ κηλαιχωμένη. εἰ δὲ αἰχρὸν γυναικὶ τὸ κηλαιχωμένη, ἀκατακαλύπτω.

7 Ἄνθρωπος γὰρ ὅσπερ ὁφείλει ἀκατακαλύπτω τῇ κεφαλῇ, εἰκὼν καὶ δόξα Θεοῦ ὑπαρχῶν γυνὴ ἡ δόξα ἀνδρός ἐστίν.

8 Οὐ γὰρ ἐστὶν ἄνθρωπος ἐκ γυναικὸς, ἀλλὰ γυνὴ ἐκ ἀνδρός.

9 Καὶ γὰρ ὅσπερ ἐκλήθη ἄνθρωπος ἄρχὴ τῆς γυναικὸς, ἀπὸ γυνὴς ἄρχὴ τὸν ἄνδρα.

10 Διὰ τῆτο ὁφείλει ἡ γυνὴ ἐξουσίαν ἔχει ἐπὶ τῇ κεφαλῇ, ὡς τὸς ἀγγέλους.

11 Πλὴν ὅτε ἄνθρωπος χωρὶς γυναικὸς, ὅτε γυνὴ χωρὶς ἀνδρός, ἐν Κυρίῳ.

12 Ὡστερ γὰρ ἡ γυνὴ ἐκ Θεοῦ ἀνδρός, ὅτε καὶ ἄνθρωπος ἄρχὴ τῆς γυναικὸς· περὶ ἡ πάντα ἐκ Θεοῦ.

13 Ἐν ὑμῖν αὐτοῖς κείνατε, πρέπον ἐπὶ γυναικὶ ἀκατακαλύπτω τῇ Θεῷ ὡς ἡ κεφαλὴ.

14 Ἡ δὲ ὁδὸς αὐτῆς ἡ φύσις διδάσκει ὑμᾶς, ὅτε ἄνθρωπος γὰρ ἐκ Θεοῦ, ἀπμμία αὐτῷ ἐστίν.

15 Γυνὴ δὲ ἐκ Θεοῦ, δόξα αὐτῷ ἐστίν, ὅτε ἡ κόμη αὐτῆς ὡς τὸ βολαῖς δέδοται αὐτῇ.

- 16 Εἰ δέ τις δοκεῖ φιλόνηκος εἶναι, ἡμεῖς τοιαύτῳ σωήθησαν ὅσα ἔχοντες, εἰδὲ αἱ ἐκκλησίαι τῆς Θεῆς.
- 17 Τῆτο ἡ ἡμετέραν ὅσα ἐπαίνα, ὅτι ὅσα εἰς τὸ κρεῖττον, ἀλλ' εἰς τὸ ἥτιον σωέρχεται.
- 18 Πρῶτον μὲν γὰρ σωερχομένων ὑμῶν ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ, ἀκόσμητα ἔσονται ἐν ὑμῖν ὑπάρχοντες καὶ μέντοι πιστοί.
- 19 Δεῖ γὰρ καὶ αἰρέσθαι ἐν ὑμῖν εἶναι, ἵνα οἱ δοκιμοὶ φανεροὶ γίνωνται ἐν ὑμῖν.
- 20 Σωερχομένων ἔν ὑμῶν ἐπὶ τὸ αὐτὸ ὅσα ἔστι Κυριακὸν δεῖπνον φαγεῖν.
- 21 Ἐκαστος γὰρ τὸ ἴδιον δεῖπνον καταλαμβάνει ἐν τῷ φαγεῖν, καὶ ὅς μὲν πτωχὸς, ὅς ἡμετέρος.
- 22 Μὴ γὰρ οἰκίας ἐκ ἔχετε εἰς τὸ ἐσθίειν καὶ πίνειν; Ἡ δὲ ἐκκλησία τῆς Θεῆς καὶ φρονεῖτε, καὶ καταχωρεῖτε τὰς μὴ ἔχοντας; Τί ὑμῖν εἶπω; ἐπαυμένω ὑμᾶς; Ἐν τῷ ὅσα ἐπαίνα.
- 23 Ἐγὼ γὰρ παρέλαβον ἀπὸ τῆς Κυρίας ὁ καὶ παρέδωκα ὑμῖν, ὅτι ὁ Κύριος Ἰησοῦς ἐν τῇ νυκτὶ ἣ παρεδίδοτο, ἔλαβεν ἄρτον.
- 24 Καὶ ὁ ἄρτος ἐκλάσσει, καὶ εἶπε· Λάβετε, φάγετε· τῆτο με εἰς τὸ σῶμα τὸ ὑπὲρ ὑμῶν κλώμενον· τῆτο ποιεῖτε εἰς τὴν ἐμὴν ἀνάμνησιν.
- 25 Ὡσώτως καὶ τὸ ποτήριον, μετὰ τὸ δεῖπνῆσαι, λέγων· Τῆτο τὸ ποτήριον, ἡ καμὴ διαθήκη ἐστὶν ἐν τῷ ἐμῷ αἵματι. τῆτο ποιεῖτε

- οσοῖσιν αὐτὸν πίνητε, εἰς τὴν ἐμεῖν ἀνάμνησιν.
- 26 Οσοῖσιν γὰρ αὐτὸν ἐσθίητε τὸ ἄρτον τῆτον, καὶ τὸ ποτήριον τῆτον πίνετε, τὸν θάνατον ἔχει Κυεῖς καὶ ἄσθενεῖτε, ἀλλ' οὐκ ἔτι αὐτὸν ἔλθῃ.
- 27 Ὡστε ὅς αὐτὸν ἐσθίῃ τὸ ἄρτον τῆτον, ἢ πίνῃ τὸ ποτήριον ἔχει Κυεῖς ἀναξίως, ἐνοχλεῖ ἑσθῆναι τὸ σῶμα καὶ αἵματι ἔχει Κυεῖς.
- 28 Δοκιμαζέτω ὁ ἄνθρωπος ἑαυτὸν, ἵνα ἴσῃ εἰ ἔχει τὸ ἄρτον ἐσθίοντα, καὶ εἰ ἔχει τὸ ποτήριον πίνοντα.
- 29 Ὁ γὰρ ἐσθίων καὶ πίνων ἀναξίως, κερμαίνει ἑαυτὸν ἐσθίοντα καὶ πίνοντα, μὴ διακρίνωσι τὸ σῶμα ἔχει Κυεῖς.
- 30 Διὰ τῆτον ἐν ὑμῖν πολλοὶ ἀδελφεοὶ καὶ ἀρρώστοι, καὶ κριμῶν ἱκανοί.
- 31 Εἰ γὰρ ἑαυτοὺς διακρίνομεν, ὅσοι αὐτὸν ἐκρινόμεθα.
- 32 Κρινόμενοι ὅμως, ὑπὸ Κυεῖς παιδευόμεθα, ἵνα μὴ σὺν τῷ ἁμαρτωλῷ καὶ ἀκατακρίτῳ ᾖμεν.
- 33 Ὡστε, ἀδελφοί μου, συνεργήθητε εἰς τὸ φαγεῖν, ἀλλήλους ἐκδέχεσθε.
- 34 Εἰ δέ τις πτωχὸς, ἐν οἴκῳ ἐσθίοντα, ἵνα μὴ ἐκέρμαται συνεργήθητε. Τὰ δὲ λοιπὰ, ὡς αὐτὸν ἔλθῃ, διατάξομαι.

Κεφ. ιβ'. 12.

- 1 Περὶ δὲ τῶν πνευματικῶν, ἀδελφοί, θέλω ὑμᾶς ἠγνοῦν.
- 2 Οἶδατε ὅτι ἔθνη ἦτε, ὡς καὶ τὰ εἰδωλο

το

τὰ ἄφωνα, ὡς αὐ ἤγαθε, ἀπαθήμοι.

3 Διὸ γνωρίζω ὑμῖν ὅτι ἔδεις ἐν πνεύματι
Θεῶ λαλῶν, λέγει ἀνάθεμα Ἰησοῦν, καὶ ἔδεις
δύναμι' εἰπεῖν Κύριον Ἰησοῦν, εἰ μὴ ἐν πνεύ-
ματι ἁγίῳ.

4 Διαιρέσις ἡ χειρισμάτων ἐστὶ, τὸ δὲ
αὐτὸ πνεῦμα·

5 Καὶ διαιρέσις ἡ ἀφρονησῶν ἐστὶ, καὶ ὁ αὐτὸς
Κύριος·

6 Καὶ διαιρέσις ἐνεργημάτων ἐστὶν, ὁ ἡ αὐ-
τὸς ἐστὶ Θεός, ὁ ἐνεργῶν τὰ πάντα ἐν πάντιν.

7 Ἐκείσε ἡ διδοὺ ἡ φανέρωσις τοῦ πνεύ-
ματι ὡς τὸ συμφέρον.

8 Ἰὴ μὲν γὰρ ἀφ' ἑ πνεύματι διδοὺ λό-
γον σοφίας, ἀλλὰ ἡ λόγον γνώσεως, καὶ τὸ
αὐτὸ πνεῦμα.

9 Ἐτέρω ἡ πίστις, ἐν τῷ αὐτῷ πνεύματι·
ἀλλὰ ἡ χειρισμῶν ἰαμάτων, ἐν τῷ αὐτῷ
πνεύματι·

10. Ἀλλὰ ἡ ἐνεργήματα δυνάμεων, ἀλλὰ ἡ
προφητεία, ἀλλὰ ἡ ἀφροσύνη πνεύματων,
ἕτερω δὲ γλῶσση γλωσσῶν, ἀλλὰ δὲ ἑρμηνεία
γλωσσῶν.

11 Πάντα δὲ ταῦτα ἐνεργεῖ τὸ ἐν ἐ τὸ αὐτὸ
πνεῦμα, διακρινῶν ἰδίᾳ ἐκείσε καθὼς βέλε·

12 Καθὰ τῶ γὰρ τὸ σῶμα ἓν ἐστὶ, καὶ μέλη
ἔχῃ πολλὰ, πάντα ἡ τὰ μέλη ἑ σώματι ἑ
ἓνός, πολλὰ ἄνθρωποι, ἓν ἐστὶ σῶμα ἕτω καὶ ὁ Χριστός.

13 Καὶ γὰρ ἐν ἐνὶ πνύματι ἡμεῖς πάντες εἰς
ἐν σῶμα ἰδομένησθημεν· εἴτε Ἰουδαῖοι, εἴτε
Ἑλλήνες, εἴτε ὀφθαλμοί, εἴτε ἐκείνηται ἢ πάν-
τες εἰς ἐν πνεῦμα ἰπομένησθημεν.

14 Καὶ γὰρ τὸ σῶμα ὅσα ἐστὶν ἐν μέλησιν, ἀλλὰ
πολλά.

15 Ἐὰν εἴπῃ ὁ πᾶς· Ὅτι ὅσα ἐμὶ χεῖρ,
ὅσα ἐμὶ ἐκ τῶ σῶμασιν· ἢ ὅσα τῶτο ὅσα
ἐστὶν ἐκ τῶ σῶμασιν;

16 Καὶ ἴαν εἴπῃ τὸ ὅσα· Ὅτι ἐκ ἐμὶ ὀφθαλ-
μὸς, ἐκ ἐμὶ ἐκ τῶ σῶμασιν· ἢ ὅσα τῶτο
ἐκ ἐστὶν ἐκ τῶ σῶμασιν;

17 Εἰ ὅλον τὸ σῶμα ὀφθαλμὸς, πῶς ἡ ἀκοή;
Εἰ ὅλον ἀκοή, πῶς ἡ ὄσφρησις;

18 Νυνὶ δὲ ὁ Θεὸς ἔθετο τὰ μέλη, ἐν ἑκάστῳ αὐ-
τῶν ἐν τῷ σώματι, καθὼς ἠθέλησεν.

19 Εἰ δὲ ἴαν τὰ πάντα ἐν μέλησιν, πῶς τὸ
σῶμα;

20 Νυνὶ δὲ πολλά μὲν μέλη, ἐν δὲ σῶμα.

21 Οὐ διώα δὲ ὀφθαλμὸς εἰπεῖν τῇ χεῖρι·
Χρειαίαν ὅσα ἔχω· ἢ πάλιν ἡ κεφαλὴ τοῖς
ποσὶ· Χρειαίαν ὑμῶν ὅσα ἔχω.

22 Ἀλλὰ πολλά μᾶλλον, τὰ δοκῶντα μέλη τῶ
σώματος ἀσθενέστερα ὑπάρχον, ἀναγκαστὰ ἐστὶ.

23 Καὶ ἂν δοκῶν ἀπαιώτερα εἶναι τῶ σῶ-
μασιν, τέτοις πικρῶ ὀφθαλμοῦ ἀπαιώ-
τερα· ἢ τὰ ἀσθενέστερα ἡμῶν ὀφθαλμοῦ ἀπαιώ-
τερα ἔχον.

24 Τὰ ἢ δὴ χήματα ἡμῶν, ἢ χρεῖαν ἔχῃ· ἀλλ' ὁ Θεὸς συνεκέρρασε τὸ σῶμα, τῷ ὑπερβῆναι ὡς οὐδὲν ἄλλο πρὸς πρῶτον.

25 Ἴνα μὴ ἡ χάρις ἐν τῷ σώματι, ἀλλὰ τὸ αὐτὸ ὑπερβῆναι ἀλλήλων μεριμνῶσι τὰ μέλη.

26 Καὶ εἴτε πᾶσι ἐν μέλῃ, συμπαίχῃ πάντες τὰ μέλη· εἴτε δοξάζεται ἐν μέλῃ, συγχαίρῃ πάντες τὰ μέλη.

27 Ὑμεῖς δὲ ἐσε σῶμα Χριστοῦ, καὶ μέλη ἐκ μέρες.

28 Καὶ ἔσ' ἡμεῖς ὁ Θεὸς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ὡς ὅταν ἀποστόλος, δεύτερον ὡς φησὶ, τρίτον διδασκάλος, ἔπειτα δυνάμεις, εἴτε χαρίσματα ἰαμάτων, ἀντιλήψεως, κυριότησεως, γλῶσσαις γλωσσῶν.

29 Μὴ πάντες, ἀπόστολοι; μὴ πάντες, ὡς φησὶ; μὴ πάντες, διδασκαλοὶ; μὴ πάντες, δυνάμεις;

30 Μὴ πάντες χαρίσματα ἔχουσιν ἰαμάτων; μὴ πάντες γλώσσαις λαλοῦσι; μὴ πάντες διερμηνεύουσιν;

31 Ζητεῖτε ἢ τὰ χαρίσματα τὰ κρείττονα, καὶ ἐπ' ἑαυτὸν ὑπερβολῶς ὁδὸν ὑμῶν δείκνυμι.

Κεφ. ιγ'. 13.

1 Ἐάν τις γλώσσαις ἢ ἀνθρώπων λαλῶν ἢ ἄγγέλων, ἀγάπην ἢ μὴ ἔχω, γέγονα χαλκὸς ἢ ἡχῶν, ἢ κύμβαλον ἀλαλάζον.

2 Καὶ ἐάν ἔχω ὡς φησὶ, καὶ εἰδῶ τὰ μυ-

σηελα πάντων ἐ πάντων τ' γινώσκω, κῆ ἐὰν ἔχω
πάντων τ' κρίσις, ὥστε ὄρη μεθυσάντων, ἀζαίπυ
θι μὴ ἔχω, ἐδὲν εἰμι.

3 Καὶ ἐὰν ψωμίζω πάντων τὰ ὑπάρχοντά
με, κῆ ἐὰν ᾤξω τὸ σῶμα μου ἵνα κω
θήσωμαι, ἀζαίπυ ἢ μὴ ἔχω, ἐδὲν ὠφελεῖ με.

4 Ἡ ἀζαίπη μακροθυμεῖ, χρηστεύει ἢ ἀζαίπ
ἐζηλοῖ. ἢ ἀζαίπη ἐ πῶς περιούει, ἐ φυσικῶς.

5 Οὐκ ἀχρημονεῖ, ἐ ζητεῖ τὰ ἑαυτοῦ, ἐ παρ
οξυνεῖ, ἐ λογίζεται τὸ κακόν.

6 Οὐ χαίρει ἐπὶ τῇ ἀδικίᾳ, συγχαίρει δὲ
τῇ ἀληθείᾳ.

7 Πάντων εὐχεται, πάντων πιστεύει, πάντων ἐλπύ
ζει, πάντων ὑπομιμνέει.

8 Ἡ ἀζαίπη ἐδὲ ποτε ἐκπίπτει· εἴτε δὲ πῶς
φησὶ καὶ ἀργηθήσεται, εἴτε γλώσσαι παύ
σονται, εἴτε γνώσεις καὶ ἀργηθήσονται.

9 Ἐκ μέρους γὰρ γνώσκωμεν, καὶ ἐκ μέρους
καὶ ἀργηθήσονται.

10 Ὅταν ἢ ἔλθῃ τὸ τέλος, τότε τὸ ἐκ μέρους
καὶ ἀργηθήσονται.

11 Ὅτε ἡμεῖς ἠπίπτομεν, ὡς ἠπίπτομεν ἐλάλῃ
ὡς ἠπίπτομεν ἐφρόνῃ, ὡς ἠπίπτομεν ἐλογιζόμεθα
ὅτι ἢ γέγονα ἀνήρ, καὶ ἠργηθήσονται τὰ ἔθνη.

12 Βλέπομεν γὰρ ἀεὶ δι' ἐσόπτρου ἐν αἰνίγ
ματι, τότε δὲ ὡς ὄψονται ὡς ὄψονται
ἀεὶ γνώσκωμεν ἐκ μέρους, τότε δὲ ἐπιγνώσομεν
καθὼς καὶ ἐπιγνώσονται.

13 Νυνὶ ἢ μὲν πίσις, ἐλπίς, ἀγάπη, ταῖς τρεῖσιν ταῦτα μείζων ἢ τέτων ἡ ἀγάπη.

Κεφ. ιδ'. 14.

1 **Δ**ιόκειε τὴν ἀγάπην, ζηλοῦτε δὲ τὰ πνευματικά· μάλλον δὲ ἵνα θεωρησώητε.

2 Ὁ γὰρ λαλῶν γλώσση, σὺν ἀνθρώποις λαλεῖ, ἀλλὰ τῷ Θεῷ. εἰδείς γὰρ ἀκέραια πνεύματι ἢ λαλεῖ μυστήρια.

3 Ὁ δὲ θεωρησώων, ἀνθρώποις λαλεῖ οἰκονομικῶς καὶ ψυχολογικῶς καὶ παραμυθίαν.

4 Ὁ λαλῶν γλώσση, ἑαυτὸν οἰκονομεῖ· οἷον θεωρησώων, ἐκκλησίαν οἰκονομεῖ.

5 Θέλω ἢ πάντας ὑμᾶς λαλεῖν γλώσσαις, μάλλον δὲ ἵνα θεωρησώητε. μείζων γὰρ ὁ θεωρησώων ἢ ὁ λαλῶν γλώσσαις, ἐκτός ἐστι μὴ διεργασώη, ἵνα ἡ ἐκκλησία οἰκονομικῶς λάβῃ.

6 Νυνὶ ἢ, ἀδελφοί, εἰάν ἐλθῶ πρὸς ὑμᾶς γλώσσαις λαλῶν, τί ὑμᾶς ἀφελήσω, εἰάν μὴ ὑμῖν λαλήσω ἢ ἐν λόγοναλύψῃ, ἢ ἐν γνώσει, ἢ ἐν θεωρησίᾳ, ἢ ἐν διδαχῇ;

7 Ὅμως τὰ ἀψυχα φωνικῶς διδόντα, εἴτε αὐλὸς, εἴτε κιθάρα, ἐὰν διδοῦναι τοῖς φθόγγοις μὴ δοῦναι, πῶς γνωσθήσεται τὸ αὐλόμενον ἢ τὸ κιθαριζόμενον;

8 Καὶ γὰρ εἰάν ἀδηλον φωνικῶς σάλπιγγος δοῦναι, τίς ᾄσασκεῖ εἰς πόλεμον;

9 Οὕτω καὶ ὑμεῖς διδοῦναι γλώσσης· εἰάν μὴ

B b 5 δόσησιν

- ὅσημι λόγον δώτε, πῶς γνωθῆσεται τὸ
λαλέμενον; ἔσεσθε γὰρ εἰς αἴρα λαλήτες.
- 10 Τοσαῦτα, εἰ τύχει, ἡγήσθητε ἐστὶν ἐν
κῆσμα, καὶ ἐδέναντων ἀφαινον.
- 11 Ἐὰν οὐκ μὴ εἰδῶ ἢ δυνάμειν ἢ φωνῆς,
ἔσομαι τῷ λαλήτῃ βάρβαρος· καὶ ὁ λαλήτης
ἐν ἐμοὶ βάρβαρος.
- 12 Οὕτω ἔστε ὑμεῖς, ἐπεὶ ζηλωταὶ ἐστε πνεύ-
ματων, πρὸς τὸν οἰκοδομῆν ἢ ἐκκλη-
σίας ζητεῖτε ἵνα ᾠκευθῆτε.
- 13 Διότι ὁ λαλῶν γλώσση, πρὸς δὲ χεῖρα
ἵνα διερευνηθῆ.
- 14 Ἐὰν γὰρ πρὸς δὲ χεῖρα γλώσση, τὸ πνεύ-
μα με πρὸς δὲ χεῖρα ὅς τις με ἀκαρπὸς ἐστὶ.
- 15 Τί ἐν ἐστὶ; Προσεύξομαι τῷ πνεύματι,
πρὸς δὲ χεῖρα καὶ τῷ νοῦ· ψαλῶν τῷ πνεύ-
ματι, ψαλῶν δὲ καὶ νοῦ.
- 16 Ἐπεὶ ἐὰν δὲ λογίσης τῷ πνεύματι, ὁ
ἀναπληρῶν ἢ τόπον ἢ ἰδιώτη, πῶς ἐρεῖ τὸ
ἀμικῶ ἐπὶ τῇ σῇ εὐχαριστίᾳ; ἐπεὶ δὲ πῶς λέγεις
ὅσα οἶδε.
- 17 Σὺ μὲν γὰρ καλῶς εὐχαριστεῖς, ἀλλ' ὁ ἔτε-
ρος ἐκ οἰκοδομεῖται.
- 18 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ με, πάντων ὑμῶν
μοῦλλον γλώσσαις λαλῶν.
- 19 Ἀλλ' ἐν ἐκκλησίᾳ θέλω πέντε λόγους εἶναι
ἢ νοός με λαλήσω, ἵνα καὶ ἄλλους κατηχήσω,
ἢ μυρεῖς λόγους ἐν γλώσση.

- 20 Ἀδελφοί, μὴ παύσατε τῆς φρεσίν· ἀλλὰ τῇ κακίᾳ νηπιάζετε, τῆς δὲ φρεσὶ τέλφοι γίνεσθε.
- 21 Ἐν τῷ νόμῳ γέγραπῆναι· Ὅτι ἐν ἑτερογλώσσοις, ἔν τε χείλεσιν ἑτέροις, λαλήσω τῷ λαῷ τὸ ἕν, ἔν δ' ἕτερος εἰσακούσονται με, λέγει Κύριος.
- 22 Ὡςτε αἱ γλώσσαι εἰς σημεῖόν εἰσιν, ἔν τοῖς πιστεύουσιν, ἀλλὰ τοῖς ἀπίστοις· ἡ δὲ θεωρητεία ἔν τοῖς ἀπίστοις, ἀλλὰ τοῖς πιστεύουσιν.
- 23 Ἐάν οὖν σωέλθῃ ἡ ἐκκλησία ὅλη ἐπὶ τὸ αὐτὸ, ἔν πάντες γλώσσαις λαλήσωσιν, εἰσέλθωσι δὲ ἰδιώται, ἢ ἀπίστοι, ὅσα ἐρῶσιν ἔπι μανήσθε;
- 24 Ἐάν δὲ πάντες θεωρητύωσιν, εἰσέλθῃ δὲ πῖς ἀπίστοι, ἢ ἰδιώται, ἔλθωσι ὑπὸ πάντων, ἀνακρίνεσθαι ὑπὸ πάντων.
- 25 Καὶ ἕτερον τὸ κρυπτόν τῆς καρδίᾳς αὐτῶν φανερόν γίνεσθαι· καὶ ἕτερον πῖσιν ἐπὶ πρῶτον, θεωρητύωσιν τῷ Θεῷ, ἀπαγγέλλων ὅτι ὁ Θεὸς ὄντως ἐν ὑμῖν ἐστίν.
- 26 Τί ἔνεστιν, ἀδελφοί; Ὅταν συνέρχησθε, ἕνα ἕνα ὑμῶν ψαλμὸν ἔχη, διδαχὴν ἔχη, γλώσσαις ἔχη, ἀποκαλύψαν ἔχη, ἕρμηνείαν ἔχη· πάντα πρὸς οἰκοδομὴν ἑαυτοῦ.
- 27 Εἴτε γλώσση πῖς λαλήσῃ, ἢ δύο, ἢ τὸ πλεῖστον τρεῖς, καὶ ἀνά μέρωσιν· καὶ εἴς διερμηνεύετω.

28 Ἐάν

- 28 Εὰν ᾗ μὴ ἢ διερμηνεύῃς, σιγάτω ἐν ἐκ-
κλησίᾳ· εἰ αὐτῷ ᾗ λαλείτω ἔτι Θεοῦ.
- 29 Προφῆται δὲ δύο ἢ τρεῖς λαλείτωσαν,
καὶ οἱ ἄλλοι ἀσκησάντων.
- 30 Εἰ δὲ ἄλλω ἀποκαλυφθῆ καὶ ἡμεῖς,
ὁ ὡς ᾗ σιγάτω.
- 31 Δύνασθε γὰρ καθ' ἓνα πάντες ωσαυτῶν, ἢ
πάντες μαθηταί, ἔτι πάντες ὡσαυτῶν.)
- 32 Καὶ πνεύματι ωσαυτῶν ωσαυτῶν
ὑποτάσσε.)
- 33 Οὐ γὰρ ἐστὶν ἀκαταστάσις ὁ Θεός, ἀλλ' εἰ-
ρήνης, ὡς ἐν πίστει ταῖς ἐκκλησίαις τῶν
ἁγίων.
- 34 Αἱ γυναῖκες ὑμῶν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις
σιγάτωσαν· ἔτι γὰρ ἐπιτέτακται αὐταῖς λα-
λεῖν, ἀλλ' ὑποτάσσεσθε, καθὼς ἔστι νόμος λέγει.
- 35 Εἰ δὲ τι μαθεῖτε ἑλθεῖν, ἐν οἴκῳ τῶν
ιδίῶν ἀνδρῶν ἐπρωτεύωσαν· αἰσχρὸν γὰρ ἐστὶ
ἡμεῖς ἐν ἐκκλησίᾳ λαλεῖν.
- 36 Ἡ ἀφ' ὑμῶν ὁ λόγος ἔτι Θεοῦ ἐξῆλθεν; ἢ εἰς
ὑμᾶς μόνους κατέβη;
- 37 Εἴ τις δοκεῖ ωσαυτῶν εἶναι ἢ πνευμα-
τικός, ἐπιγνωσκέτω ἅ ἡμεῖς ὑμῖν, ὅτι ἔτι
Κυρίου ἐστὶν ἐν ἑστέ.
- 38 Εἰ δὲ τις ἀγνοεῖ, ἀγνοεῖτω.
- 39 Ὡστε, ἀδελφοί, ζητεῖτε τὸ ὡσαυτῶν, ἔτι
τὸ λαλεῖν [λώσασαι μὴ κωλύετε.
- 40 Πάντα ὑποτασσάμενοι καὶ ἑαυτοῖς ὑποτάσσε.
Κεφ.

Κεφ. ιε'. Ιε'.

- 1 ΓΝαρίζω ὑμῖν, ἀδελφοί, τὸ εὐαγγέλιον ὃ εὐαγγελιστάμεν ὑμῖν. ὃ καὶ παρελάβετε, ἐν ᾧ καὶ ἐσήκατε·
- 2 Δι' ἧ καὶ σώζεσθε, πῆνι λόγῳ εὐαγγελιστάμεν ὑμῖν εἰ κατέχευε· εἰ μὴ εἰκὴ ἐπιστάσατε.
- 3 Παρέδωκα γὰρ ὑμῖν ἐν πρώτοις ὃ καὶ παρέλαβον, ὅτι Χριστὸς ἀπέθανεν ὑπὲρ ἡμῶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν, καὶ ἵνα ἡμεῖς ἁγιασθῶμεν·
- 4 Καὶ ὅτι ἐπέφη, καὶ ὅτι ἐγήγαυε τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ, καὶ ἵνα ἡμεῖς ἁγιασθῶμεν·
- 5 Καὶ ὅτι ᾤφθη Κηφᾶ, εἶπε τοῖς δώδεκα.
- 6 Ἐπέφη ᾤφθη ἐπάνω πεντήκοντοῖς ἀδελφοῖς ἐφάπαξ, ἐξ ὧν οἱ πλείους μένουσιν ἕως ἄρτι, τινὲς δὲ ἐκοιμήθησαν.
- 7 Ἐπέφη ᾤφθη Ἰακώβῳ· εἶπε τοῖς ἀποστόλοις πάνσιν.
- 8 Ἐλάττωσθε ἐ πάντων, ὡσπερ εἰ τι ἐκτεσάμεθα, ᾤφθη καὶ ἐμοί.
- 9 Ἐγὼ γάρ εἰμι ὁ ἐλάχιστος τῶν ἀποστόλων· ὅς σὺ εἰμι ἰκανὸς καλεῖσθαι ἀπόστολος, διότι ἐδῶξα τῆ ἐκκλησίᾳ τῆ Θεῶ.
- 10 Χάρις δὲ Θεῶ εἰμι ὁ εἰμι· καὶ ἡ χάρις αὐτῶ ἡ εἰς ἐμὲ, ἧ κενὴ ἐγλήθη, ἀλλὰ περισσότερον αὐτῶν πάντων ἐκρίνασθε· σὺ ἐγὼ γὰρ, ἀλλ' ἡ χάρις τοῦ Θεῶ ἡ σὺ ἐμοί.
- 11 Εἴτε ἐν ἐγὼ, εἴτε ἐκεῖνοι, ἔτω κηρύσσομεν, καὶ ἔτω ἐπιστάσατε. 12 Εἰ

12 Εἰ δὲ Χριστὸς κηρύσσει ὅτι ἐκ νεκρῶν ἐγή-
 γεοται, πῶς λέγασί τινες ἐν ὑμῖν, ὅτι ἀνά-
 στασις νεκρῶν οὐκ ἔστι;

13 Εἰ δὲ ἀνάστασις νεκρῶν οὐκ ἔστι, ἔδδὲ
 Χριστὸς ἐγήγερθῃ.

14 Εἰ δὲ Χριστὸς οὐκ ἐγήγερθῃ, κενὸν ἄρα τὸ
 κήρυγμα ἡμεῶν, κενὴ δὲ καὶ ἡ πίστις ὑμῶν.

15 Εὐρισκόμεθα δὲ καὶ ψευδομαρτυροὶ τοῦ
 Θεοῦ ὅτι ἐμαρτυρήσαμεν καὶ τοῦ Θεοῦ ὅτι ἤγαγε
 τὸ Χριστόν· ὃν οὐκ ἤγαγεν, εἴπωσ ἄρα νεκροὶ
 οὐκ ἐγείρονται).

16 Εἰ γὰρ νεκροὶ οὐκ ἐγείρονται, ἔδδὲ Χριστὸς
 ἐγήγερθῃ.

17 Εἰ δὲ Χριστὸς οὐκ ἐγήγερθῃ, ματαιὰ ἡ
 πίστις ὑμῶν ἐπὶ ἐσθῆν ταῖς ἀμαρτίαις ὑμῶν.

18 Ἄρα καὶ οἰκοιμηθέντες ἐν Χριστῷ, ἀπώ-
 λουτο.

19 Εἰ ἐν τῇ ζωῇ ταύτῃ ἠλπιότατοι ἐσμὲν
 ἐν Χριστῷ μόνον, ἐλεφνότεροι πάντων ἀνθρώ-
 πων ἐσμὲν.

20 Νυνὶ δὲ, Χριστὸς ἐγήγερθῃ ἐκ νεκρῶν ἀπαρ-
 χὴ τοῦ κεκοιμημένων ἐχθέρ.

21 Ἐπεὶ δὲ γὰρ δὲ ἀνθρώπου ὁ θάνατος, καὶ δὲ
 ἀνθρώπου ἀνάστασις νεκρῶν.

22 Ὡστε γὰρ ἐν τῷ Ἀδάμ πάντες ἀπο-
 θνήσκουσιν, ἕτω καὶ ἐν τῷ Χριστῷ πάντες
 ζωοποιηθήσονται).

23 Ἐκαστος ὅμως ἐν τῷ ἰδίῳ τμήματι ἀπαρ-
 χὴ
 Χριστοῦ.

Χριστός, ἔπειτα οἱ Χριστοὶ, ἐν τῇ παρυσίᾳ αὐτῶν.

24 Εἶτα τὸ τέλος, ὅταν ᾠθεῖται ἡ βασιλείαν τῷ Θεῷ καὶ πατρὶ ὅταν καθαρῶς πᾶσαν δόξαν καὶ πᾶσαν ἐξουσίαν καὶ δυνάμιν.

25 Δεῖ γὰρ αὐτὸν βασιλεύειν ἄχρις ἃ αὐτῷ πᾶν τὸ ἐξ ἡμῶν ὑπὸ τῶν ποδῶν αὐτῶν.

26 Ἐχάστω ἐχθρῶς καθαρῶς οὐ θύναται.

27 Πάντα γὰρ ὑποτάξεν ὑπὸ τῶν ποδῶν αὐτῶν. Ὅταν δὲ εἴπῃ ὅτι πάντα ὑποτάκται, δῆλον ὅτι ἐκτὸς ἔστι ὑποτάξαι αὐτῷ τὰ πάντα.

28 Ὅταν ἡ ὑποταγὴ αὐτῷ τὰ πάντα, τίτε ἐαυτοῦ ὁ υἱὸς ὑποτάξεται τῷ ὑποτάξαντι αὐτῷ τὰ πάντα, ἵνα ἡ ὁ Θεὸς τὰ πάντα ἐν πᾶσι.

29 Ἐπεὶ τί ποιήσασιν οἱ βαπτισθέντες ὑπὲρ νεκρῶν, εἰ ὅλως νεκροὶ ὄντες ἐγείρονται; τί καὶ βαπτίζοντες ὑπὲρ νεκρῶν;

30 Τί καὶ ἡμεῖς κινδυνεύομεν πᾶσαν ὥραν.

31 Καθ' ἡμέραν ἀποθνήσκω, καὶ ὑμετέραν καύχουσα, ἡ δὲ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμεῶν.

32 Εἰ καὶ ἄνθρωπον ἐθρηριομάχησα ἐν ἐφέσει, τί μοι τὸ ὄφελος, εἰ νεκροὶ ὄντες ἐγείρονται; Φάγωμεν καὶ πίωμεν· αὐτεὶον γὰρ ἀποθνήσκωμεν.

33 Μὴ πλανᾶσθε. Φθείρεσιν ἡμεῖς ἡμεῖς ὁμιλίαι κακῆς.

34 Ἐκνη-

34 Εκνήψατε δικησίως, καὶ μὴ ἀμαρτάνετε ἀγνωσίαν γὰρ Θεὸς πινες ἔχετε. ὡς ἐν τῆσὶν ἰσχυροῦσιν ὑμῖν λέγω.

35 Ἀλλ' ἐρεῖ τις· Πῶς ἐγείρονται οἱ νεκροί; ποῖον δὲ σῶμα ἐρχοῦνται;

36 Ἄρρητοι, σὺ δ' ἀσπίρησιν ἐξοποιεῖς, εἰ μὴ ἀποδείξω.

37 Καὶ ὁ ἀσπίρης, ἐπὶ τὸ σῶμα τὸ χρηστόμωμον ἀσπίρης, ἀλλὰ γυμνὸν κέκηθον, εἰ τύχοι, σίτη, ἢ πίσις ἢ λοιπῶν.

38 Οἱ δὲ Θεὸς αὐτῷ δίδωσι σῶμα καθὼς ἠθέλησεν, καὶ ἐκείνῳ τὸ ἀσπίρησιν τὸ ἴδιον σῶμα.

39 Οὐ πάντες σαρξ, ἢ αὐτὴ σαρξ· ἀλλὰ ἄλλη μὲν σαρξ ἀνθρώπων, ἄλλη δὲ σαρξ κίλων, ἄλλη δὲ ἰχθύων, ἄλλη δὲ πτεροῦν.

40 Καὶ σῶμα ἐπερραίνια, καὶ σῶμα ἐπιγῆ· ἀλλ' ἐτέρα μὲν ἢ τῶν ἐπερραίνων δοξα, ἐτέρα δὲ ἢ τῶν ἐπιγείων.

41 Ἄλλη δοξα ἡλίου, ἔτι ἄλλη δοξα σελήνης, ἔτι ἄλλη δοξα ἀστέρων· ἀστὴρ γὰρ ἀστὴρ ἑστὶν ἐν δοξῇ.

42 Οὕτω καὶ ἡ ἀνάστασις τῶν νεκρῶν. ἀσπίρησιν ἐν φθορᾷ, ἐγείρονται ἐν ἀφθαρσίᾳ·

43 ἀσπίρησιν ἐν ἀπμίᾳ, ἐγείρονται ἐν δοξῇ· ἀσπίρησιν ἐν ἀδυνείᾳ, ἐγείρονται ἐν δυνάμει·

44 ἀσπίρησιν σῶμα ψυχικόν, ἐγείρονται ἐν σῶμα πνευματικόν. ἐστὶ σῶμα ψυχικόν, καὶ ἐστὶ σῶμα πνευματικόν.

45 Οὕτω

45 Οὕτω ἔγραψεν Ἐγγίσει ὁ πρῶτος ἄν-
θρωπος Ἀδάμ εἰς ψυχικὸν ζῶσαν· ὁ ἕχθατος
Ἀδάμ εἰς πνεῦμα ζωοποιῶν.

46 Ἀλλ' ἔπαυτον τὸ πνευματικόν, ἀλλὰ τὸ
ψυχικόν, ἐπέτα τὸ πνευματικόν.

47 Ὁ πρῶτος ἄνθρωπος ἐκ γῆς, χοϊκός·
ὁ δεύτερος ἄνθρωπος, ὁ Κύριος ἐξ οὐρανό.

48 Οἱ οὐ χοϊκοὶ τοῖσσι καὶ οἱ χοϊκοὶ καὶ οἱ οἶοι
ὁ ἐπερανοί, τοῖσσι καὶ οἱ ἐπερανοί.

49 Καὶ κατὰ εἰσορέσει μὲν τὴν εἰκόνα τοῦ χοϊκοῦ,
φορέσει μὲν καὶ πάλιν εἰκόνα τοῦ ἐπερανοῦ.

50 Τῆτο δὲ φημι, ἀδελφοί, ὅτι σαρκὶ καὶ αἵ-
μα βασιλείαν Θεοῦ κληρονομήσει ἔδωσαν-
ται, ἐδὲ ἡ φθορὰ τὴν ἀφθαρσίαν κληρονομεῖ.

51 Ἰδὲ, μυστήριον ὑμῖν λέγω· Πάντες μὲν ἐ-
κτισθησόμεθα, πάντες δὲ ἀλλαγησόμεθα·

52 Ἐν ἀτόμῳ, ἐν ῥιπῇ ὀφθαλμοῦ, ἐν τῇ ἐχά-
τη σαλπίγγι, (σαλπείσσει γὰρ) ἔοι νεκροὶ ἐξε-
θήσονται ἀφθαρτοί, καὶ ἡμεῖς ἀλλαγησόμεθα.

53 Δεῖ γὰρ τὸ φθαρτὸν τῆτο ἐνδύσασθαι
ἀφθαρσίαν, καὶ τὸ θνητὸν τῆτο ἐνδύσασθαι
ἀθανασίαν.

54 Ὅταν ἡ τὸ φθαρτὸν τῆτο ἐνδύσῃ ἀφ-
θαρσίαν, καὶ τὸ θνητὸν τῆτο ἐνδύσῃ ἀθανα-
σίαν, τότε γλήσει ὁ λόγος ὁ γεγενημένος·
Καλεπήσῃ ὁ θάνατος εἰς νίκην.

55 Πᾶς (ε, θάνατος, τὸ κέντησον; Πᾶς (ε,
αἶδη, τὸ νικᾷ;

56 Τὸ ἕκιντος ἔθανά τε, ἡ ἁμαρτία· ἢ ἕ
διώαμις τ' ἁμαρτίας, ὁ νόμος.

57 Τὰ δὲ Θεῶν χάρις τῶν διδόντων ἡμῖν τὸ
νῆκ. Διὰ τὸ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

58 Ὡστε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί, ἰδράξοι γίνε-
σθε, ἀμετακίνητοι, ὡς οἱ σὺνόντες ἐν τῷ ἔργῳ
τῷ Κυρίου πάντες, ἐίδότες ὅτι ὁ κῆρ. ὁ ὑμῶν
ὅτι ἐστὶ κενὸς ἐν Κυρίῳ.

Κεφ. 15. 16.

1 Περὶ ἕ τ' λογίως τ' εἰς τὰς ἀγίας ἀσπτερ
διέταξα ταῖς ἐκκλησίαις τ' Γαλατίας,
ἔτω καὶ ὑμεῖς ποιήσατε.

2 Καθὼ μίαν σαφῶς ἀτάτων ἐκείνων ὑμῶν παρ'
ἑαυτῶν πητέτω, ἡσσωρίζων ὁ, ἡ αὐτὸν δὲ ὁδῶ
ἵνα μὴ ὅταν ἔλθω, τότε λογίως γίνων).

3 Ὅταν ἕ ὡς ἀγαθὸν ἔχω, ἔς ἑάν δοκιμασθῆτε
δι' ἐπιστολῶν, λέτες πέμψω ἀπεισεκείν τ' χά-
ριαν ὑμῶν εἰς Ἱερουσαλήμ.

4 Ἐάν δὲ ἡ ἀξιὸν ἔκαμὲ πορεύεσθαι, σὺ
ἐμοὶ πορεύσον).

5 Ἐλπίσωμαι δὲ πρὸς ὑμᾶς ὅταν Μακε-
δονίαν διέλθω. (Μακεδονίαν γὰρ διέρχομαι)

6 Πρὸς ὑμᾶς δὲ τυχὸν ὡς ἀγαθὸν, ἢ καὶ
ὡς ἀγαθὸν ἔχω, ἵνα ὑμεῖς μετὰ ἐπιμύσει
ἔς ἑάν πορεύωμαι.

7 Οὐ θέλω γὰρ ὑμᾶς ἀρεῖν ἐν περιόδῳ ἰδεῖν
ἐλπίζω δὲ χρόνον πῶς ἐπιμείνωμαι πρὸς
ὑμᾶς, ἔάν ὁ Κύριος ἐπιτρέψῃ.

8 Ἐπι-

8 Ἐπιμνήσθη ἐν Ἐφέσῳ ἕως τῆς πεντηκοστῆς.

9 Θύρα γάρ μοι ἀνέωγε μεγάλη καὶ ἐνεργής, καὶ ἀνικείμενοι πολλοί.

10 Ἐὰν δὲ ἔλθῃ Τιμόθεος, βλέπετε ἵνα ἀφόβως γλήνη πρὸς ὑμᾶς· τὸ γὰρ ἔργον Κυρίου ἐργάζεται ὡς καὶ ἐγώ.

11 Μή τις οὖν αὐτὸν ἐξουθενήσῃ· ἀρροπέμψατε δὲ αὐτὸν ἐν ἐπιλήθῃ, ἵνα ἔλθῃ πρὸς με· ἐκδέχομαι γὰρ αὐτὸν μετὰ τῶν ἀδελφῶν.

12 Περὶ δὲ Ἀπολλῶ ὁ ἀδελφός, πολλὰ παρεκάλεισα αὐτὸν ἵνα ἔλθῃ πρὸς ὑμᾶς μετὰ τῶν ἀδελφῶν· καὶ πάντως ὅτε ἰὼ θέλημῃ ἵνα νῦν ἔλθῃ· ἐλθύσεται δὲ ὅταν ὑπεκρίνη.

13 Γρηγορεῖτε, στήθετε ἐν τῇ πίστι, ἀνδρίζεσθε, κραταίθεσθε.

14 Πάντα ὑμῶν ἐν ἀγάπῃ γινέσθω.

15 Παρακαλῶ δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί· οἶδά τις πᾶν οἰκίαν Στεφανῶ, ὅτι ἐστὶν ἀπαρχὴ τῆς Ἀχαΐας, καὶ εἰς Ἀθηναίαν τοῖς ἀγίοις ἐτάξαν ἑαυτὸς.

6 Ἴνα καὶ ὑμεῖς ὑποτάσσῃσθε τοῖς ποιέτοις, καὶ παντὶ τῷ συνεργῶντι καὶ κοπιῶντι.

7 Χαίρω δὲ ἐπὶ τῇ παρυσίᾳ Στεφανῶ καὶ Φαρτενάτου καὶ Ἀχαΐκῃ, ὅτι τὸ ὑμῶν ὑπέρημα ἔτοι ἀνεπλήρωσαν.

8 Ἀνέπαυσαν γὰρ τὸ ἐμὸν πνεῦμα καὶ τὸ ὑμῶν· ἐπιγνώσκετε ἔν τῃς ποιέταις.

9 Ἀπᾶζον ὑμῶν ἀπὸ ἐκκλησίᾳ τῆς Ἀσίας.

Ἀπᾶ-

Απαύζον) ὑμᾶς ἐν Κυρίῳ πολλὰ Ἀκύλιος
κὶ Πελοκίλλα, σὺν τῇ καὶ οἴκῳ αὐτῶν ἐκ-
κλησία.

20 Απαύζονται ὑμᾶς οἱ ἀδελφοὶ πάντες.

Απαύσασθε ἀδελφές ἐν Φιλήματι ἀγία.

21 Ὁ ἀπασμὸς τῆ ἐμῆ χειρὶ Παυλοῦ.

22 Εἶπε ἔ φίλεις τὸ Κύριον Ἰησοῦν Χριστόν,
ἦτοι ἀνάστημα, μαρτὴν αὐτοῦ.

23 Ἡ χάρις ἔ Κυρίῳ Ἰησοῦ Χριστῷ μεθ' ὑμῶν.

24 Ἡ ἀγάπη μεμτῷ πάντων ὑμῶν ἐν Χριστῷ
Ἰησοῦ. Ἀμήν.

Πρὸς Κορινθίους περὶ τῆ ἐξέφυ δὲ
Φιλίππων Διὸ Στεφανῶν κὶ Φεβρι-
νάτου ἔ Ἀχαικῶν κὶ Τιμόθεου.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ἌΠΟ- στόλου ἡ πρὸς Κορινθίους ἐπιστολὴ δ' αὐτῆς.

Κεφ. α'. 1.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ ἀπόστολος Ἰησοῦ
Χριστοῦ, διὰ θελήματι Θεοῦ,
καὶ Τιμόθεου ὁ ἀδελφός, τῇ
ἐκκλησίᾳ ἔ Θεῶ τῆ ἕσθ ἐν
Κορίνθῳ, σὺν τοῖς ἀγίοις πᾶσι τοῖς ἔσθ ἐν
ὅλῃ τῇ Ἀχαΐᾳ.

2 Χάρις ὑμῖν κὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς
ἡμῶν, κὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

3 Εὐ-

3 Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς καὶ πατὴρ ὁ Θεὸς Κυρίου
 ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ πατὴρ τῶν οἰκτιρημάτων, καὶ
 Θεὸς πάσης ὑπακουσίης.

4 Ὁ ὑποκαταστάτης ἡμῶν ἐπὶ πάση τῇ θλί-
 ψῇ ἡμῶν, εἰς τὸ δωρεὰν ἡμᾶς ὑποκατα-
 στῆς ἐν πάση θλίψει ἡμῶν τῇ ὑπακουσίᾳ
 ἡς ὑποκαταστάμεθα αὐτοῖς ὑπὸ ὧν Θεῷ.

5 Ὅτι κατὰ τὴν ἀποστολὴν τῶν πατημάτων ὁ
 Χριστὸς εἰς ἡμᾶς, ἕτω ἡμεῖς ὡς ἀποστολὴν
 καὶ ἡ ὑπακουσία ἡμῶν.

6 Εἶτε ἡ θλίβόμεθα, ὑπὲρ τῶν ὑμῶν ὑποκα-
 τήσεως καὶ σωτηρίας, τὸ ἐνεργητικὸν ἐν
 ὑπομονῇ τῶν αὐτῶν πατημάτων ὧν καὶ ἡμεῖς
 πάχομεν· εἶτε ὑποκαταστάμεθα, ὑπὲρ τῆς
 ὑμῶν ὑπακουσίης καὶ σωτηρίας. καὶ ἡ ἐλπίς
 ἡμῶν βεβαία ὑπὲρ ὑμῶν.

7 Εἰδότες ὅτι ὡς περὶ κρινῶν ἐστὶ τῶν πατη-
 μάτων, ἕτω καὶ τῆς ὑπακουσίης.

8 Οὐ γὰρ θέλομεν ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί,
 ὑπὲρ τῆς θλίψεως ἡμῶν τῆς ἐνεργητικῆς ἡμῶν ἐν
 τῇ Ἀσίᾳ, ὅτι κατὰ τὴν ὑπερβολὴν ἐβαρῆθημεν
 ὑπὲρ δύαμις, ὥστε ἐξ απορηθῆναι ἡμᾶς καὶ
 τῷ Θεῷ.

9 Ἀλλὰ αὐτοὶ ἐν ἑαυτοῖς τὸ ἀποκρίμα ὁ
 θανάτου ἐχόμεθα, ἵνα μὴ πεποιθότες ὦμεν
 ἐφ' ἑαυτοῖς, ἀλλ' ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ ἐγείροντι
 τὸς νεκροὺς.

10 Ὅς ἐκ τῆς ἐνεργητικῆς θανάτου ἐρύσονται ἡμᾶς,
 καὶ

καὶ ῥύεταί· εἰς οὗτο ἠλπίσαμεν ὅτι καὶ ἐπιρῦ-
σεταί·

11 Σωυπεργέντων καὶ ὑμῶν ὑπὲρ ἡμῶν
τῆ δέησιν, ἵνα ἐκ πολλῶν προσώπων τὸ εἰς
ἡμᾶς χάρισμα διὰ πολλῶν τὸ δύχαριστῆθῆ
ὑπὲρ ἡμῶν.

12 Ἡ γὰρ καύχησις ἡμῶν αὐτῆ ἐστὶ, τὸ μαρ-
τύριον τῆ σωφροσύνης ἡμῶν, ὅτι ἐν ἀπολόγητι
καὶ ἐλικευμένα Θεῶ, ὅσα ἐν σοφίᾳ σαρκικῆ,
ἀλλ' ἐν χάριτι Θεῶ ἀνεγράφημεν ἐν τῷ κῆ-
σμα, ὑπεροσότηρας ἢ πρὸς ὑμᾶς.

13 Οὐ γὰρ ἄλλα χάρισμα ὑμῖν ἀλλ' ἢ ἡ ἀνα-
γκιῶσκετε, ἢ καὶ ἐπιγκιῶσκετε. ἐλπίζω ἢ ὅτι ἐ-
ἴως τέλους ἐπιγνώσεθε.

14 Καθὼς ἐπέγνωτε ἡμᾶς διὰ μέρους, ὅτι
καύχημα ὑμῶν ἐσμεν, καθάπερ καὶ ὑμεῖς
ἡμῶν, ἐν τῇ ἡμέρᾳ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.

15 Καὶ ταύτῃ τῇ πεποιθήσει ἐβλόμεθα πρὸς
ὑμᾶς ἐλθεῖν ὑπέροτρον, ἵνα δούτερον χάριτι
ἔχητε·

16 Καὶ δι' ὑμῶν δευθεῖν εἰς Μακεδονίαν
καὶ πάλιν διὰ Μακεδονίας ἐλθεῖν πρὸς
ὑμᾶς, καὶ ὑφ' ὑμῶν προσπεμφθῆναι εἰς τὴν
Ἰουδαίαν.

17 Τῆτο οὐκ βελοδομεῖται, μήπ' ἄρα τί
ἐλαφρῶτα ἐχρησάμεθα; ἢ ἡ βελοδομα, καὶ
σάρεκα βελοδομα, ἵνα ἡ παρ' ἐμοῦ τὸ να
ναί, καὶ τὸ εἶς;

- 18 Πιστός ἢ ὁ Θεός, ὅτι ὁ λόγος ἡμῶν ὁ αὐτὸς ὑμᾶς σὺν ἐγγύεσσι καὶ κτ'.
- 19 Ὁ γὰρ ὁ Θεὸς υἱὸς Ἰησοῦς Χριστὸς ὁ σὺν ὑμῖν δι' ἡμῶν κηρυχθεὶς, δι' ἐμῶν καὶ Σιλβανῶν καὶ Τιμοθέου σὺν ἐγγύεσσι καὶ κτ', ἀλλὰ καὶ σὺ αὐτῶν γέγονεν,
- 20 (Ὅσα γὰρ ἐπαγγελία Θεοῦ, σὺν αὐτῶν τῶν καὶ, καὶ σὺν αὐτῶν τῶν ἀμύλων) τῶν Θεῶν αὐτῶν δόξαν δι' ἡμῶν.
- 21 Ὁ γὰρ βεδοαιῶν ἡμᾶς σὺν ὑμῖν εἰς Χριστὸν, ἐχρίσταις ἡμᾶς, Θεός.
- 22 Ὁ δὲ σφραγισάμενος ἡμᾶς, καὶ δὲς τὸ ἄρραβῶνα τῆς ἐπιδοματίας σὺν ταῖς καρδίαις ἡμῶν.
- 23 Ἐγὼ γὰρ μετῴησα τὸν Θεὸν ἐπικαλεῖσθαι ἐπὶ τῷ ἐμῷ ψυχῶν, ὅτι φηδὸν ἡμῶν, σὺν ἐπιήλθον εἰς Κόρινθον.
- 24 Οὐχ ὅτι κυριεύομεν ὑμῶν τῆς πίστεως, ἀλλὰ σωεργεῖσθαι τῆς χαρᾶς ὑμῶν. τῆ γὰρ πίστις ἐστὶν ἡμεῶν.

Κεφ. β'. 2.

- 1 Ἐκείνα ἢ ἐμαυτῶν τῶν, τὸ μὴ πάλιν ἐλθεῖν σὺν λύπῃ αὐτῶν ὑμῶν.
- 2 Εἰ γὰρ ἐγὼ λυπῶ ὑμᾶς, καὶ τίς ἐστὶν ὁ δὲ φραίνων με, εἰ μὴ ὁ λυπέμενος ἐξ ἐμῶν;
- 3 Καὶ ἔγραψα ὑμῖν τῶν αὐτῶν, ἵνα μὴ ἐλθῶν λύπῃ ἔχω ἀφ' αὐτῶν ἐδὲ με χαίρειν. πεποιθῶς ἐπὶ πάντας ὑμᾶς, ὅτι ἡ ἐμὴ χαρὰ πάντων ὑμῶν ἐστίν.

4 Ἐκ

- 4 Ἐκ γὰρ πολλῆς θλίψεως καὶ σωοχῆς καρδίας ἔγραψα ὑμῖν διὰ πολλῶν δακρύων, ἵνα λυπηθῆτε, ἀλλὰ ἵνα γαίπῳ ἵνα γινώτε ἡμεῖς ἔχειν φεισοτόπως εἰς ὑμᾶς.
- 5 Εἰ δέ τις λελύπηκεν, ὅσοι ἐμὲ λελύπηκεν, ἀλλ' ἀπὸ μίρκος, ἵνα μὴ ἐπιβαρῶ, πάντας ὑμᾶς.
- 6 Ἰκανὸν τῶ τοῖσ' τῶ ἢ ἐπιθμία αὐτῆ ἢ ὑπὸ τῶ πλόνων.
- 7 Ἐπεὶ τὸν αὐτὸν μαῖλλον ὑμᾶς χαλεπὰ καὶ ὡδρακλίσει, μήπως τῆ φεισοτόπως λυπηθῆτε καὶ ποτὴ ὁ τοῖσ' τῶ.
- 8 Διὸ ὡδρακλίσει ὑμᾶς κυρῶσει εἰς αὐτὸν ἀγαπῶ.
- 9 Εἰς τῆ γὰρ καὶ ἔγραψα, ἵνα γινώτε ἔδοκίμω ὑμῶν, εἰ εἰς πάντα ὑπὸ κροί εἰτε.
- 10 Ὡς δὲ π χαλεπὸς, καὶ ἐγὼ, καὶ γὰρ ἐγὼ εἰ π χαλεπὸς, ὡ χαλεπὸς, δι' ὑμᾶς, ἐν αὐτῶ π Χειρῶ, ἵνα μὴ τολιοκλήτῳ μὲν ὑπὸ τῶ Σαῖανῶ.
- 11 Οὐ γὰρ αὐτῶ τὰ νοήματα ἀγνοῶμεν.
- 12 Ἐλθὼν ἢ εἰς τῶ Τρωάδα εἰς τὸ δὲ ἀγγέλιον τῶ Χειρῶ, καὶ θύρας μοι ἀναγνῶμεν ἐν Κυρίῳ, ὅσοι ἔχηκε ἀπίσι τῶ πρὸς ὑμᾶς, τῶ μὴ οὐρεῖν με Τίτον τῶ ἀδελφόν μου.
- 13 Ἀλλὰ ἀποταξάμεν αὐτοῖς, ἐξῆλθον εἰς Μακεδονίαν.
- 14 Τὰ ἢ Θεῶ χαίρει τῶ πάντοτε θεοαμβούονε

βούνη ἡμᾶς ἐν τῷ Χριστῷ, καὶ ἡ ὁσμὴ τῆς
 γνώσεως αὐτῆς φανεροῦν δι' ἡμῶν ἐν σωτηρίᾳ
 ὑμῶν.

- 15 Ὅτι Χριστὸς δύω δία ἐσμὴν τῷ Θεῷ ἐν τοῖς
 σωζομένοις καὶ ἐν τοῖς ἀπολλυμένοις·
 16 Οἷς μὴ, ὅσμη θανάτου εἰς θάνατον· οἷς
 ἡ, ὅσμη ζωῆς εἰς ζωὴν· καὶ πρὸς ταῦτα τίς
 ἰσχυρός;
 17 Οὐ γὰρ ἐσμὴν, ὡς οἱ πολλοὶ, κηπηλοῦον-
 τες τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ, ἀλλ' ὡς ἐξ ἐπιθυμίας,
 ἀλλ' ὡς ἐκ Θεοῦ, κατενώπιον τοῦ Θεοῦ, ἐν
 Χριστῷ λαλῶμεν.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 Ἀρχόμεθα πάλιν ἑαυτοὺς σιωπῶντες; Εἰ
 μὴ κηροῦμεν, ὡς ἕνεκεν συστατικῶν ἐπιστο-
 λῶν πρὸς ὑμᾶς, ἢ ἐξ ὑμῶν συστατικῶν;
 2 Ἡ ἐπιστολὴ ἡμῶν ὑμῖς ἐστὶ, ἐκγεγραμ-
 μένη ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν, γνωσκομέ-
 νη καὶ ἀναγνωσκομένῃ ὑπὸ πάντων ἀν-
 θρώπων·
 3 Φανεροῦμεν οὐδέποτε ἐπιστολὴν Χριστοῦ ἀφ' ἡ-
 κληθεῖσα ὑφ' ἡμῶν, ἐκγεγραμμένη ἐ μέ-
 λανι, ἀλλὰ πνεύματι Θεοῦ ζῶντος, ὅσα ἐν
 πλάξει λιθίναις, ἀλλὰ ἐν πλάξει καρδίας
 σαρκίνας.
 4 Πεποιήθησιν ἡ ποιότης ἡμῶν ἀφ' ἡ
 Χριστοῦ πρὸς τὸ Θεόν·
 5 Οὐχ ὅτι ἴκανοί ἐσμὴν ἀφ' ἑαυτῶν λογί-
 σασθαι

CC σασθαι

σπαδά π, ὡς ἐξ ἰαυλῶν, ἀλλ' ἡ ἰκαρότης
ἡμῶν ἐκ τοῦ Θεοῦ.

6 Ὅς καὶ ἰκαίωσεν ἡμᾶς Δρακόνες καὶ τῆς
Δρακόνος, ἔγραμματα, ἀλλὰ πνύμα-
τος. τὸ γὰρ γράμμα ἀποκρίνη, τὸ δὲ πνεῦ-
μα ζωοποιεῖ.

7 Εἰ δὲ ἡ Δρακονία τοῦ θανάτου ἐν γράμμα-
σι, ἐν τελευτῶν ἐν λίθοις, ἐγλυφῆται ἐν δόξῃ
ὥστε μὴ δύνασθαι ἀτενίσαι τὰς ἡγῆς Ἰσραὴλ ἐν
τὸ πρῶτον Μωσῆος, ἀλλὰ τὴν δόξαν τοῦ
πρῶτον αὐτῶν, τὸ καθαροῦ γράμματος.

8 Πῶς ἐχὲν μάλλον ἡ Δρακονία τοῦ πνύμα-
τος ἐστὶ ἐν δόξῃ.

9 Εἰ γὰρ ἡ Δρακονία τὸ καθαροῦ, δόξα
πολλὰ μάλλον πρῶτος δὲ ἡ Δρακονία τὸ δι-
καιοσύνης ἐν δόξῃ.

10 Καὶ γὰρ ἐδὲ δεδύξασθαι τὸ δεδύξατο μῦθος
ἐν τέττα τῶν μέρων, ἐπέκειν τὸ ὑπερβαλλού-
σης δόξης.

11 Εἰ γὰρ τὸ καθαροῦ γράμματος, ἀλλὰ δόξης πολ-
λὰ μάλλον τὸ μῦθος, ἐν δόξῃ.

12 Ἐχόντες οὐκ τοιαύτην ἐλπίδα, πολλὰ
πυρρῆσιν ἡρώμεθα.

13 Καὶ ἔγραψα ὡς Μωσῆος ἐπίθῃ κείλυμα
ἐπὶ τὸ πρῶτον ἰαυλῶν, ὡς τὸ μὴ ἀτεν-
ίσαι τὰς ἡγῆς Ἰσραὴλ εἰς τὸ τέλος τοῦ καθα-
ροῦ γράμματος.

14 Ἀλλ' ἐπυράθη τὰ νοήματα αὐτῶν. ἄλλο
γὰρ

ἡ δὲ σήμερον τὸ αὐτὸ κάλυμμα ἐπὶ τῇ
ἀναγνώσει τῆ παλαιᾶς Διαθήκης μὴ, μὴ
ἀνακαλυπτόμενον, ὅ, τι ἐν Χριστῷ κηρύσσεται.

15 Ἀλλ' ἕως σήμερον, ἠνίκα ἀναγιγνώσκεται
Μωσῆς, κάλυμμα ἐπὶ τῆ καρδίαν αὐτῶν
κεῖται.

16 Ἡνίκα δ' αὖ ἐπιστρέψῃ πρὸς Κύριον,
ἀφαιρεῖται τὸ κάλυμμα.

17 Ὁ δὲ Κύριος ἡ πνεῦμά ἐστιν ἡ τὸ πνεῦ-
μα Κυρίου, ἐκεῖ ἐλεύθερία.

18 Ἡμεῖς ἡ πάντες ἀνακαλυμμένοι πρὸς
ὡπ τὴ δόξαν Κυρίου καὶ περιζήτοιοι, τὴ αὐ-
τῶν εἰκόνα μετασφραγίσμεθα ἀπὸ δόξης εἰς
δόξαν, κατὰ τὴν δὲ Κυρίου πύματι.

Κεφ. δ'. 4.

1 Δὶα τῶτο ἔχοντες τὴ Διακονίαν ταύτην,
κατὰ τὴν ἡλεήτημον, ὡς ἐκκακῶμεν

2 Ἀλλ' ἀπέπαύμεθα τὰ κρυπτά τῆ αἰσχύ-
νης, μὴ παρπαίζοντες ἐν πανουργίᾳ, μηδὲ
δολῶντες τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ τῇ Φανερώσει
τῆ ἀληθείας σιωπῶντες ἑαυτοὺς πρὸς πάντων
σιωπεῖν ἀνθρώπων, ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

3 Εἰ ἡ καὶ ἐστὶ κεκαλυμμένον τὸ διαζέ-
λιον ἡμῶν, ἐν τοῖς ἀποκρυμμένοις ἐστὶ κεκα-
λυμμένον.

4 Ἐν οἷς ὁ Θεὸς τοῦ αἰῶνος τῶν ἐτύφλωσε
τὰ νοήματα τῆ ἀπίστων, εἰς τὸ μὴ ἀγάσασθαι

CC 2 αὐτοῖς

αὐτοῖς τὸ φωτισμὸν τῆς ἀγγελίας τῆς δόξης
 τῆς Χριστοῦ, ὅς ἐστιν εἰκὼν τῆς Θεοῦ.

5 Οὐ γὰρ ἐαυτοὺς κηρύσσουσιν, ἀλλὰ Χριστὸν Ἰη-
 σοῦν Κύριον ἐαυτοὺς ἡ, ὁ ἄλλος ὑμῶν διὰ Ἰησοῦ.

6 Ὅτι ὁ Θεὸς ὁ εἰπὼν ἐκ σκότους φῶς λάμ-
 ψαι, ὃς ἔλαμψεν ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν,
 πρὸς φωτισμὸν τῆς γνώσεως τῆς δόξης τῆς Θεοῦ
 ἐν ὁρατῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

7 Ἐχόμενοι ἡμεῖς τῆς ἡσυχίας τῆς ἐν ὁρακί-
 νοις σκεύουσιν, ἵνα ἡ ὑπερβολὴ τῆς δυνάμεως
 ἡ τῆς Θεοῦ, καὶ μὴ ἐξ ἡμῶν.

8 Ἐν παντὶ θλιβόμενοι, ἀλλ' ἐπινοοῦμε-
 νοὶ ἀπρόεργοι, ἀλλ' ὅσα ἐξαπορέμενοι.

9 Διωκόμενοι, ἀλλ' ὅσα ἐκκαταλείπομενοι
 καὶ βαλλόμενοι, ἀλλ' ὅσα ἀποκλύμενοι.

10 Πάντες τὸ νεκρῶσιν τῆς Κυρίας Ἰησοῦ ἐν τῷ
 σώματι ἀειφύροντες, ἵνα ἡ ζωὴ τῆς Ἰησοῦ
 ἐν τῷ σώματι ἡμῶν φανερωθῇ.

11 Αἰτιάζομεν ἡμεῖς οἱ ζῶντες, εἰς θάνατον πα-
 ραδιδόμεθα διὰ Ἰησοῦ, ἵνα ἡ ζωὴ τῆς Ἰησοῦ
 φανερωθῇ ἐν τῇ θνητῇ σαρκὶ ἡμῶν.

12 Ὡστε ὁ μὲν θάνατος ἐν ἡμῖν ἐνεργεῖται,
 ἡ δὲ ζωὴ ἐν ὑμῖν.

13 Ἐχοῦμεν ἡμεῖς τὸ αὐτὸ πνεῦμα τῆς πίστεως, καὶ
 τὸ γεγραμμένον Ἐπίστευσαι, διὸ ἐλάλησα
 καὶ ἡμεῖς πιστεύομεν, διὸ καὶ λαλοῦμεν.

14 Εἰδότες ὅτι ὁ ἐγείρας τὸν Κύριον Ἰησοῦν, ἐν ἡ-
 μέρας διὰ Ἰησοῦ ἐγείρει, ἐπιδοθήσεται καὶ ὑμῖν.

15 Τὰ γὰρ πάντα δι' ὑμᾶς, ἵνα ἡ χάρις πληρο-
τασθήσεται, διὰ τὸ πλεονάζειν τὴν εὐχαριστίαν πε-
ρασούση εἰς τὸ δοῦναι ὑμῖν Θεοῦ.

16 Διὸ σὺκ ἐγκακῶμεν, ἀλλ' εἰ καὶ ὁ ἕξω κί-
μων ἀνθρώπων (διὰ φθόνου), ἀλλ' ὁ ἕστωθεν
αἰτιακῶνται ἡμέραν καὶ ἡμέραν.

17 Τὸ γὰρ ἡμετέρον ἐλαφρὸν τὸ φλίψεναι
ἡμῶν, καθ' ὑπερβολὴν εἰς ὑπερβολὴν,
αἰώνιον βάρους δόξης καὶ κληρονομίας ἡμῶν.

18 Μὴ σπουδέντων ἡμῶν τὰ βλεπόμενα, ἀλλὰ
τὰ μὴ βλεπόμενα. τὰ γὰρ βλεπόμενα, ὡς
κρημνίζονται τὰ μὴ βλεπόμενα, αἰώνια.

Κεφ. ε'. 5.

1 **Ο**ὕτως γὰρ, ὅτι, εἰ καὶ ἡ ἐπίκλησις ἡμῶν οἰ-
κία ὑμῶν καὶ καταλυθῆ, οἰκοδομηθῆ ἐκ
Θεοῦ ἐργῶν, οἰκίαν ἀχρηστοποίητον, αἰώνιον ἐν
τοῖς ἔθνεσιν.

2 Καὶ γὰρ ἐν τέτῳ σενάριον, τὸ οἰκητήριον
ἡμῶν τὸ ἐξ ἔθνεσιν ἐπειδύσαται ἐπιποθῆντες.

3 Εἶγε καὶ ἐνδυσάμενοι, ἔργων οὐκ ἐπιπο-
θῆμεθα.

4 Καὶ γὰρ οἱ ὄντες ἐν τῷ σενάρῳ σενάριον βα-
ρῆμοι ἐφ' ᾧ ἔργων ἐκιδύσαται, ἀλλ'
ἐπειδύσαται, ἵνα καταποθῆ τὸ φθιτὸν ὑπο
τῆς ζωῆς.

5 Ὁ δὲ καταργασάμενος ἡμᾶς εἰς αὐτὸ
τῶν, Θεός, ὁ καὶ δὲς ἡμῖν τὸν ἀρραβῶνα ὑμῶν
πνύμεθα.

- 6 Θαρρῆντες οὐκ πάντα, κὲ εἰδότες ὅτι
ἐνδημῶντες ἐν τῷ σώματι, ἐνδημῶμεν ἀπὸ
τοῦ Κυρίου.
- 7 (Διὰ πίστεως γὰρ περιπατοῦμεν, ἢ ἀφ'
εἶδους)
- 8 Θαρρῶμεν ἡ, ἐκ ἑδοκῶμεν μάλλον ἐκ-
δημῶσαι ἐκ τοῦ σώματος, κὲ ἐνδημῶσαι πρὸς
τὸ Κύριον.
- 9 Διὸ κὲ φιλοκούμεθα, εἴτε ἐνδημῶντες,
εἴτε ἐκδημῶντες, διάρεται αὐτὰ εἶναι.
- 10 Τὸς γὰρ πάντας ἡμᾶς φανερωθῆναι δεῖ
ἴμπερ ὅτι ἐκ βήματος τοῦ Χριστοῦ, ἵνα κημι-
σηται ἕκαστος τὰ ἀφ' ἑσώματος, πρὸς αὐ-
τὸ ἴσχυον, εἴτε ἀγαθόν, εἴτε κακόν.
- 11 Εἰδότες οὐκ ἔχουσαν τὴν φόβον τοῦ Κυρίου, ἀνθρώ-
πος πείθομεν, Θεῷ ἡ πεφαιρωμένοι ἐλ-
πίσω δε κὲ ἐν ταῖς σωθήσεσιν ὑμῶν πε-
φαιρωθῆναι.
- 12 Οὐ γὰρ πάλιν ἑαυτὸς σιωποῦμεν ὑμῶν,
ἀλλὰ ἀφορμὴν διδόντες ὑμῶν καυχώμεθα
ὡς ὑμῶν ἵνα ἔχητε πρὸς τοὺς ἐν παρολίᾳ
καυχώμενοι, κὲ ἐκ καρδίας.
- 13 Εἴτε γὰρ ἐξέστημεν, Θεοί· εἴτε σιωπο-
ῦμεν, ὑμῶν.
- 14 Ἡ γὰρ ἀγάπη τοῦ Χριστοῦ συνεχῆ ἡμᾶς·
- 15 Κρίναντες τὸ, ὅτι εἰ εἰς ὑμῶν πάντων
ἀπέθανεν, ἄρα οἱ πάντες ἀπέθανον· κὲ ὑμῶν
πάντων ἀπέθανον, ἵνα οἱ ζῶντες μετέπι-
ῆσαν ἑαυτοῖς

ἑαυτοῖς ζῶσιν, ἀλλὰ τῷ ὑπὲρ αὐτῶν ἀπο-
θανόντι ἔεργηθέντι.

16 Ὡστε ἡμεῖς ἀπὸ τοῦ νῦν εἰδέναι οἴδαμεν καὶ
σάρκα· εἰς ἣν καὶ ἐγνωκαμεν καὶ σάρκα Χρι-
στον, ἀλλὰ νῦν ὄντι ἐπι γινώσκοντες.

17 Ὡστε εἴ τις ἐν Χριστῷ, καμὴν κλίσις, τὰ δό-
ξαῖα παρῆλθεν, ἰδὲ γένητε καμὰ τὰ πάντα.

18 Τὰ ἣ πάντα ἐκ τοῦ Θεοῦ τοῦ καὶ ἀλλάξαντος
ἡμᾶς ἑαυτῷ ἀπὸ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἔδωκε
ἡμῖν τὸ ἀφαινεῖν τὸ καὶ ἀκαθαρσίας.

19 Ὡς ὅτι Θεὸς ἡμεῖς ἐν Χριστῷ κήσμεν καὶ ἀλ-
λάσων ἑαυτῷ, μὴ λογίζομεθα αὐτοῖς τὰ
ὡραπλώματα αὐτῶν· καὶ τῆμεθα ἐν ἡμῖν
τὸ λόγον τὸ καὶ ἀκαθαρσίας.

20 Ὑπὲρ Χριστοῦ ἐν περιστάσει, ὡς ὁ Θεὸς
ὡρακαλέσθη δι' ἡμῶν· δεόμεθα ὑπὲρ
Χριστοῦ· Καὶ ἀκαθάρτε τῷ Θεῷ.

21 Τὸν γὰρ μὴ γινῶντα ἁμαρτίαν, ὑπὲρ ἡμῶν
ἁμαρτίαν ἐποίησεν, ἵνα ἡμεῖς γινώμεθα δι-
καιοσύνη Θεοῦ ἐν αὐτῷ.

Κεφ. ε'. 6.

1 Ὅσοι γεννηθέντες ἣ ἐκ ὡρακαλέμεθα μὴ εἰς
κενὸν τὸ χάρις τοῦ Θεοῦ δεόμεθα ὑμῶν.

2 Λέγει γάρ· Καὶ δεκτῷ ἐπήκεσά σοι
καὶ ἐν ἡμέρᾳ σωτηρίας ἐσοθήσά σοι. ἰδὲ
νῦν καμὸς εὑπρόσδεκτος, ἰδὲ νῦν ἡμέρα
σωτηρίας.

3 Μηδεμίαν ἐν μηδενὶ διδόντες ἀποσκο-

CC 4 πῶ,

- πῶ, ἵνα μὴ μαρῆθῃ ἡ Δόξα·
- 4 Ἀλλ' ἐν παντὶ σωιστῶντες ἑαυτοὺς ὡς Θεοὶ
Δόξοι· ἐν ὑπομονῇ πολλῇ, ἐν θλίψεσιν,
ἐν ἀνάγκῃς, ἐν στενοχωρίαις·
- 5 Ἐν πληγαῖς, ἐν φυλακῇς, ἐν ἀκαταστα-
σίαις, ἐν κήποις, ἐν ἀρεμπύλαις, ἐν νηθείαις·
- 6 Ἐν ἀγνότητι, ἐν γνώσει, ἐν μακροθυμίᾳ,
ἐν χρηστότητι, ἐν πλούθειᾳ ἀγίας, ἐν ἀγάπῃ
ἡνυποκρίτω·
- 7 Ἐν λόφῳ ἀληθείας, ἐν δυνάμει Θεοῦ, διὰ τὸ
ἔσθωσαν τὸ δικαιοσύνης τὸ δεξιῶν καὶ δεξιερῶν·
- 8 Διὰ δόξης καὶ ἀπειρίας, διὰ δυσφημίας καὶ
δύφημίας· ὡς πλάνοι, ἔαληθεῖς·
- 9 Ὡς ἀγνωστοὶ, καὶ ἐπιγνωσκόμοιοι· ὡς
ἀπαθνήσκοντες, καὶ ἰδοὺ ζῶντες· ὡς παρδού-
μοιοι, ἔα μὴ γεναιόμοιοι·
- 10 Ὡς λυπέμοιοι, αἰεὶ ἢ χαίροντες· ὡς πτωχοί,
πολλὰς δὲ πλεονάζοντες· ὡς μηδὲν ἐχρήσασθαι,
πάντα κατέχοντες.
- 11 Τὸ εἶμα ἡμῶν ἀνάγει πρὸς ὑμᾶς, Κο-
ρίνθιοι, ἡ καρδία ἡμῶν πεπλάττω·
- 12 Οὐ στενοχωρεῖσθε ἐν ἡμῖν· στενοχωρεῖσθε ἢ
ἐν τοῖς σπλάγχθοις ὑμῶν.
- 13 Τὸ ἢ αὐτῶν ἀντιμιᾶσαν ὡς τέκνοις λέ-
γω· Πλατύνθητε καὶ ὑμεῖς·
- 14 Μὴ γίνεσθε ἐπιοζυγῆντες ἀπίστους. Τίς γὰρ
μετῶχθι δικαιοσύνη καὶ ἀνομία; Τίς δὲ κριτω-
νία φωτὶ πρὸς σκότος;

15 Τίς ἢ συμφώνησις Χριστοῦ πρὸς Βελίαλ;
 Ἡ πῖς μερὶς πιστῶ μὴ ἀπίστῃ;

16 Τίς ἢ συγκατάθεσις ναοῦ Θεοῦ μὴ εἰδώλων;
 ὑμεῖς γὰρ ναὸς Θεοῦ ἐσε ζῶντες· καθὼς εἶπεν ὁ
 Θεὸς· Ὅτι ἐνοικήσω ἐν αὐτοῖς, καὶ ἐμοὶ εἰπα-
 τήσω· καὶ ἔσομαι αὐτῶν Θεός, καὶ αὐτοὶ ἔσονται
 τῷ μοι λαός.

17 Διὸ ἐξέλθετε ἐκ μέσων αὐτῶν, καὶ ἀφορί-
 σθητε, λέγα Κύριον· καὶ ἀκαθάρτα μὴ ἀπλε-
 σθε· καὶ γὰρ εἰσδέχομαι ὑμᾶς.

18 Καὶ ἔσομαι ὑμῖν εἰς πατέρα, καὶ ὑμεῖς
 ἔσεσθέ μοι εἰς υἱὸν καὶ θυγατέρας, λέγα Κύριος
 παντοκράτωρ.

Κεφ. ζ'. 7.

1 Ταύτας εἶν ἐχούτες ταῖς ἐπαγγελίαις, ἀγα-
 πηταί, καθυπερβύσατε ἑαυτοὺς ἀπὸ παντὸς
 μολυσμῶ σαρκῶς καὶ πνύμενοι, ἐπιτελούν-
 τες ἀγνωσίαν ἐν φόβῳ Θεοῦ.

2 Χωρήσατε ἡμᾶς· ἐδένα ἠδικήσαμεν, ἐδένα
 ἐφθείραμεν, ἐδένα ἐπλεονεκήσαμεν.

3 Οὐ πρὸς καθάκρυσιν λέγω· περιεργηκα γὰρ
 ὅτι ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν ἐσε εἰς τὸ σω-
 ἀποθανεῖν καὶ συζηῖν.

4 Πολλή μοι παρρησία πρὸς ὑμᾶς, πολλή
 μοι καύχησις ὑπὲρ ὑμῶν· πεπλήρωμα τῆ
 ἀγάπης, ὑπερβύσασθε τῆ χάριτος
 ἐπὶ πάση τῇ θλίψει ἡμῶν.

5 Καὶ γὰρ ἐλθόντων ἡμῶν εἰς Μακεδονίαν,
 ἔδεμίαν

ἔδειμίαν ἔρχεται ἀνεστὶν ἢ σὺρξὴ ἡμῶν, ἀλλ' ἐν παντὶ θλιούμενοι ἔξωθεν μάχαι, ἴσωνται φόβοι.

6 Ἀλλ' ὁ ᾠρακλήων τὸς παπῆδες, παρεκάλεισιν ἡμῶς, ὁ Θεὸς, ἐν τῇ περισσίᾳ Τίτῃ.

7 Οὐ μόνον ὃ ἐν τῇ περισσίᾳ αὐτῷ, ἀλλὰ καὶ ἐν τῇ ᾠρακλήσῃ ἢ παρεκλήθη ἐφ' ὑμῖν, ἀναζήλων ἡμῖν τὴν ὑμῶν ἐπιπόνησιν, τὴν ὑμῶν ὀδυρμόν, τὴν ὑμῶν ζῆλον ὑπὲρ ἐμῶν ὥστε με μάχων χαρῶμαι.

8 Ὅτι καὶ ἐλύπησα ὑμῶς ἐν τῇ ἐπιστολῇ, ὡς μετὰ μέλομαι, εἰ καὶ μετὰ μελόμην. βλέπω γὰρ ὅτι ἡ ἐπιστολὴ ἐκείνη, εἰ ἔως ἄρ' αὖ, ἐλύπησιν ὑμῶς.

9 Νῦν χαίρω, ὡς ὅτι ἐλυπήθητε, ἀλλ' ὅτι ἐλυπήθητε εἰς μετάνοιαν. ἐλυπήθητε γὰρ καὶ Θεὸν, ἵνα ἐν μηδενὶ ζημιωθῆτε ἐξ ἡμῶν.

10 Ἡ γὰρ καὶ Θεὸν λύπη μετάνοιαν εἰς σωτηρίαν ἀμετὰ μέληθεν κατεργάζεσθαι ἢ οὐκ ἔστι καὶ ἡμῶς λύπη γένεσθαι κατεργάζεσθαι.

11 Ἰδὲ γὰρ αὐτὸ τῶν τῶν καὶ Θεὸν λυπηθῶμαι ὑμῶς, πόσῳ κατεργάσασθαι ὑμῖν σωθῆναι; ἀλλὰ ἀπολογίαν, ἀλλὰ ἀγῶν ἀκίησιν, ἀλλὰ φόβον, ἀλλὰ ἐπιπόνησιν, ἀλλὰ ζῆλον, ἀλλὰ ἐκδίκησιν; Ἐν παντὶ σωσθήσασθε ἑαυτοὺς ἀγῶν εἶναι ἐν τῷ πρᾶγμα.

12 Ἄρα εἰ καὶ ἔγραψα ὑμῖν, ὡς εἵνεκεν ἔστι ἀδική-

ἀδικήσαντες, ἔδὲ εἵνεκεν τῶ ἀδικηθέν-
 τος· ἀλλ' εἵνεκεν ᾧ φανερωθῆναι τὸ σπυ-
 δῶ ἡμῶν τὸ ὑπὲρ ὑμῶν ὡς ὑμῶν, ἐν-
 ὄπιον ᾧ Θεῷ.

13 Διὰ τῆτο ᾧ κεκλήμεθα ἐπὶ τῇ πα-
 ρακλήσει ὑμῶν· ὡς εὐδοκίως ἢ μάλλον ἐχά-
 ρημεν ἐπὶ τῇ χαρᾷ Τίτου, ὅτι ἀναπέπαυται
 τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ἀπὸ πάντων ὑμῶν·

14 Ὅτι εἴ τι αὐτῷ ὑπὲρ ὑμῶν κεκαύχημα,
 ἔκατηχαύθην· ἀλλ' ὡς πάντα ἐν ἀληθείᾳ
 ἐλαλήσαμεν ὑμῖν· ἔτι καὶ ἡ καύχησις ἡμῶν
 ἢ ἐπὶ Τίτῳ, ἀλήθεια ἐγγυήθη·

15 Καὶ τὰ σπλάγχνα αὐτοῦ ὡς εὐδοκίως εἰς
 ὑμῶν εἰσιν, ἀναμιμνησκομένης τὸ πάντων
 ὑμῶν ὑπακοῆς· ὡς μὲν φόβος καὶ τρόμος ἐδέ-
 ξασθε αὐτόν.

16 Χαίρω οὖν ὅτι ἐν πρώτῳ θυρῶ ἐν ὑμῖν.
 Κεφ. η'. 8.

1 Γνωρίζομεν ἢ ὑμῖν, ἀδελφοί, τὸ χάριον ᾧ
 Θεῷ τὸ δεδομένον ἐν ταῖς ἐκκλησίαις
 τῆ Μακεδονίας·

2 Ὅτι ἐν πολλῇ δοκιμῇ θλίψεως ἢ πει-
 σείας τὸ χαρῶς αὐτῶν, καὶ ἡ κατὰ βάθος πτω-
 χεία αὐτῶν ἐπερίσσευσεν εἰς τὸ πλεονεξίαν
 ἀπολότητος αὐτῶν·

3 Ὅτι κατὰ δύναμιν (μαρτυρῶν) καὶ ὑπὲρ δύ-
 ναμιν αὐθαίρετοι·

4 Μὲντοι πολλῆς παρακλήσεως δεόμενοι
 ἡμῶν,

- ἡμῶν ἢ χάριν κὶ ἢ κρηονίαν τῷ Δαβιδίαις τῷ
 εἰς τὰς ἀγίας, δέξααχ ἡμῶς.
- 5 Καὶ ἕκαστος ἠλπίσαμεν, ἀλλ' ἑαυτὰς ἰ-
 δωκαν παρῶτον τῷ Κυρίῳ κὶ ἡμῖν, Δεῖτε
 λήματι Θεοῦ.
- 6 Εἰς τὸ ἰσχυροποιῆσαι ἡμῶς Τίτον, ἵνα
 κατὰ τὴν ἀρετὴν ἔστω καὶ ἐπιτελέσῃ εἰς
 ὑμῶς κὶ πῶς χάριν ταύτην.
- 7 Ἀλλ' ὡσπερ ἐν παντὶ ὡσεὶ οὐδέποτε, πίστις,
 κὶ λόγος, κὶ γνώσις, κὶ πίστις ἀγαθῆ, κὶ τῆ ἐξ
 ὑμῶν ἐν ἡμῖν ἀγάπη, ἵνα καὶ ἐν ταύτῃ τῇ
 χάριτι ὡσεὶ οὐδέποτε.
- 8 Οὐ κατὰ ἐπιβουλὴν λέγοι, ἀλλὰ Δεῖτε τὸ ἐπέ-
 ρων ἀγαθῆς, κὶ τὸ τῷ ἡμετέρῃ ἀγάπῃς γνή-
 σιοι δοκιμάζων.
- 9 Γινώσκете γὰρ πῶς χάριν τῷ Κυρίῳ ἡμῶν
 Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὅτι οὐδὲ ὑμῶς ἐπιώχουσε, πλε-
 σιῶν ἵνα ὑμῶς τῇ ἐκείνου πτωχείᾳ πλε-
 τήσητε.
- 10 Καὶ γνώμετε ἐν τέτῳ δίδωμι τῶν γὰρ
 ὑμῖν συμφέρει, οἵπνεσ ἐ μόνον τὸ ποιῆσαι,
 ἀλλὰ κὶ τὸ τίλφει παρῶν ἔστω δὲ πέρουσι.
- 11 Νυνὶ δὲ κὶ τὸ ποιῆσαι ἐπιτελέσασθε ὅπως
 κατὰ τὴν ἡμετέραν ἢ ἡμετέραν, ἔστω κὶ τὸ ἐπι-
 τελέσασθε ἐν τῷ ἔχθρῳ.
- 12 Εἰ γὰρ ἡ ἀρετὴ κατὰ τὴν ἡμετέραν, κατὰ τὴν ἡμετέραν
 ἡμῶν, οὐ κατὰ τὴν ἡμετέραν, ἔστω κατὰ τὴν ἡμετέραν.
- 13 Οὐ γὰρ ἵνα ἄλλοις ἀνέσται, ὑμῖν ὅτι θλίψις
 ἀλλ'

ἀλλ' ἐξ ἰσότητος, ἐν τῷ νῦν καιρῷ τὸ ὑμῶν
 πείρασμός ἐστι τὸ ἐκείνων ὑπέρημα·

14 ἵνα καὶ τὸ ἐκείνων πείρασμός γινῆται εἰς
 τὸ ὑμῶν ὑπέρημα, ὅπως γινῆται ἰσότης.

15 Καθὼς γέγραπται· Ὁ τὸ πολὺ, ὅσκι ἐπλεό-
 νησε· καὶ ὁ τὸ ὀλίγον, ὅσκι ἠλαττόνησε.

16 Χάρις ἢ τῷ Θεῷ τῷ διδόντι τὸ αὐτῶν σπε-
 δῶν ὑπὲρ ὑμῶν ἐν τῇ καρδίᾳ τίτις·

17 Ὅπως γὰρ ὡς ἀκλήσιν ἐδέξατο σπυ-
 ραίον· ἢ ὑπάρχων, αὐταίρειται ἐξῆλθε
 πρὸς ὑμᾶς.

18 Συναπέμψαμεν ἢ μετ' αὐτῶν τὸ ἀδελφὸν
 εἶ ὁ ἔπαυται ἐν τῷ διαγγελίᾳ ἀπὸ πάντων τῶν
 ἐκκλησιῶν·

19 (Οὐ μόνον δὲ, ἀλλὰ καὶ χριστιανιστοὶ ὑπὸ
 τῶν ἐκκλησιῶν σωκέδημα ἡμῶν, σὺ τῇ
 χάριτι ταύτῃ τῇ ἀφικονεμένη ὑφ' ἡμῶν
 πρὸς τὴν αὐτῶν εἶ Κυρίως δόξαν καὶ πρε-
 σβυμίαν ὑμῶν)

20 Στελλόμενοι τῶν, μή τις ἡμᾶς μαμήσῃ
 ἐν τῇ ἀδρότητι ταύτῃ τῇ ἀφικονεμένη ὑφ'
 ἡμῶν.

21 Προνοήματα καλὰ εἶ μόνον ἐν ἄπιον Κυ-
 ρίως, ἀλλὰ καὶ ἐν ἄπιον ἀνθρώπων.

22 Συναπέμψαμεν δὲ αὐτοῖς τὸ ἀδελφὸν
 ἡμῶν, ὃν ἐδεκίμασαμεν ἐν πολλαῖς παλαιαῖς
 σπυραῖον ὄντα, νῦν ἢ πολὺ σπυραῖον ἄλλοτερον,
 πεπαιθῆσθαι πολλῇ τῇ εἰς ὑμᾶς.

23 Εἴτε

23 Εἴτε ὑπερ Τίτου, κρινωτός ἐμὸς καὶ εἰς ὑμᾶς σωτηρὸς· εἴτε ἀδελφοὶ ἡμῶν, ἀπίστοι ἐκκλησιῶν, δοῦσα Χριστῷ.

24 Τὴν οὐκ ἐνδοξὴν τῆ ἀγάπης ὑμῶν, καὶ ἡμῶν καυχίσεως ὑπερ ὑμῶν, εἰς αὐτὸς ἐνδείξασθε, καὶ εἰς ὁρώσωποι τῶ ἐκκλησιῶν.

Κεφ. 9. 9.

1 Περὶ μὲν γὰρ τῆ ἀγαθίας τῆ εἰς τὰς ἀγίας πεποιθὸν μοι ἐπὶ τὸ γράφειν ὑμῖν.

2 Οἶδα γάρ τῆ περυσίαν ὑμῶν, ὡς ὑπερ ὑμῶν καυχώμεθα Μακεδόσι, ὅτι Ἀχαΐα παρασκώσασα ἀπὸ Πύρου· ἔοξεν ὑμῶν ζήλον ἠρέτισε εἰς πλεονεξίας.

3 Ἐπεμψα ἡ τῆς ἀδελφῆς ἵνα μὴ τὸ καυχίμα ἡμῶν τὸ ὑπερ ὑμῶν κενωθῆ ἐν ταῖς μέρσι τέτα· ἵνα (κατὼς ἔλεγον) παρασκώσασθαι ἡμεῖς.

4 Μὴ πως εἰαν ἔλθωσι σὺν ἐμοὶ Μακεδότες, καὶ δύνωσι ὑμᾶς ἀπαρασκώσασθαι, καὶ αἰσχυρῶμεθα ἡμεῖς (ἵνα μὴ λέγωμεθα ὑμεῖς) ἐν τῇ ὑποστάσει ταύτη τῆ καυχίσεως.

5 Ἀναγκάσιον ἐν ἡγοσάμενον ὡς ἀγαθὸν εἶσαί τῆς ἀδελφῆς, ἵνα ἀπελθῶσι εἰς ὑμᾶς, καὶ ἀποκαταρτίσωσι τῆ ἀποκαταρτίσει δόλοισιν ὑμῶν, ταύτην ἐτοίμη εἶναι ἕως ὡς δόλοισιν, ἔ μὴ ὡσπερ πλεονεξίαν.

6 Τῆτο ἡ, ὁ ἀπείρων φεδομῶν, φεδομῶν καὶ φερίσθ· καὶ ὁ ἀπείρων ἐπὶ δόλοισιν, ἐπὶ δόλοισιν ἔ φερίσθ.

7 Ἐκα-

7 Ἐκαστος καθὼς θεωρεῖται τῇ καρδίᾳ·
μὴ ἐκ λύπης, ἢ ἐξ ἀνάγκης. ἰλαρὸν γὰρ δό-
τιν ἀγαπᾷ ὁ Θεός.

8 Διωαθὸς ἢ ὁ Θεὸς πᾶσαν χάριν πει-
σεῦσαι εἰς ὑμᾶς· ἵνα ἐν παντὶ πάντοτε πᾶ-
σαν ἀντάρκταν ἔχητες, πεισοσύητε εἰς πᾶν
ἔργον ἀγαθόν·

9 (Καθὼς γέγραπᾷ)· Ἐσκόρπισεν, ἔδωκε
τοῖς πένησιν· ἡ δικαιοσύνη αὐτῆ μὲν εἰς τὸ
αἰῶνα.

10 Ὁ ἢ ἐπιχορηγῶν σπέρμα τῷ σπείροντι, ἔ-
άρθον εἰς βρώσιν χορηγήσῃ, ἔ πληθύνῃ τὸ
σπόρον ὑμῶν, καὶ αὐξήσῃ τὰ γυνήματα τῆ
δικαιοσύνης ὑμῶν)

11 Ἐν παντὶ πλεονεξόμενοι εἰς πᾶσαν ἀπολό-
την, ἢ πῆς κατεργάζεσθαι δι' ἡμῶν εὐχαριστίας
τῷ Θεῷ·

12 Ὅτι ἡ Δακρυγία τῆ λήττεργίας ταύτης ἐ-
μόνον ἐπὶ προσωνα πληρῶσαι τὰ ὑστερήματα
τῶ ἀγίων, ἀλλὰ ἔ πεισοσύησαι Διὰ πολλῶν
εὐχαριστιῶν τῷ Θεῷ,

13 (Διὰ τὴ δοκιμῆς τῆ Δακρυγίας ταύτης
δοξάζοντες τὸ Θεὸν ἐπὶ τῇ ὑποταγῇ τῆ ὀμθ-
λογίας ὑμῶν εἰς τὸ δὲ ἀγγέλιον Ἰ Χριστῆ, ἔ ἀ-
πολότην τῆ κρινωνίας εἰς αὐτὰς ἔ εἰς πάντας)

14 Καὶ αὐτῶν δεήσῃ ὑπὲρ ὑμῶν, ἐπιποθέν-
των ὑμᾶς Διὰ τὴ ὑπερβάλλουσαν χάριν Ἰ
Θεῆ ἐφ' ὑμῖν.

15 Χάρις ἡ παρὰ Θεοῦ ἐπὶ τῇ ἀνεκδιηγήτῳ αὐτῶ δωρεῶν.

Κεφ. ι'. 10.

1 Αὐτὸς ὃ ἐγὼ Παῦλος ἀφ' ἁγαθῶν ὑμῶν Διὰ τὴν περὶ τῆς ἐπιφάνειας τῆς Χειρῶν, ὅς κ' ἐπέσωπον μὲν ταπεινὸς ἐν ὑμῖν, ἀπὸν ὃ γὰρ ἄν εἰς ὑμῶν.

2 Δέομαι ὃ τὸ μὴ περὶ τῶν γὰρ ἁγῶν τῆ πεποιθήσεως ἢ λογίζομαι τολμῆσαι ἐπὶ ἡνας τὰς λογισμοὺς ἡμῶν ὡς κ' σάρκα ἀειπατένης.

3 Εἰ σαρκεὶ γὰρ ἀειπατένης, ὃ κ' σάρκα σπαιδόμενα.

4 (Τὰ γὰρ ὅπλα τῆ σπαιδίας ἡμῶν ἔσονται σαρκικὰ, ἀλλὰ δυνατὰ παρὰ Θεοῦ ὡς καὶ αἰρεσι ὀχυρωμάτων)

5 Λογισμὸς καὶ αἰρεσίς, κ' πᾶν ὑψώμα ἐπιπόρῳ κ' τῆ γνώσεως τῆ Θεοῦ, καὶ αἰχμαλωτίζοντες πᾶν ἰσχυρὸν εἰς τὴν ὑπακοὴν τῆ Χειρῶν,

7 Καὶ ἐν ἐπιπόρῳ ἰσχυρὸς ἐκδικῆσαι πᾶσαν ἀφ' ἁγαθῶν, ὅταν πληρωθῇ ὑμῶν ἡ ὑπακοή.

8 Τὰ κ' ἐπέσωπον βλέπιτε, εἰ τις ἐπιποιεῖ ἑαυτῷ Χειρῶν εἶναι, τὸ τ' λογίζεσθαι πάλιν ἀφ' ἑαυτῶ ὅτι κατὰ αὐτὸς Χειρῶν, ὃ τ' καὶ ἡμεῖς Χειρῶν.

9 Εἰ ἂν τε γὰρ ἔσονται ἀεισώτεροι ἢ καυχίωμα ἀφ' ἁγαθῶν ἡμῶν, ἢς ἰδὼκεν ὁ Κύριος ἡμεῖς

ἡμῖν εἰς οἰκοδομίαν, καὶ ὅτι εἰς κατὰ κρίσιν
 ὑμῶν, ὅτι αἰχμηθήσομαι.

9 ἵνα μὴ δόξω ὡς ἀνὲς ἐκφοβῆν ὑμῶν ἀφ' ἑ-
 τῶν ἐπιστολῶν.

10 Ὅτι αἰ μὲν ἐπιστολῆς, φησὶ, βαρεῖαι καὶ
 ἰαχυραὶ ἢ οὐκ ἐπαρσία ἔσονται ἀδελφῶν,
 καὶ ὁ λόγος ἐξεστειλημένος.

11 Τῶν λογιζέσθω ὁ ποιῶν, ὅτι οἱ οἰσμη-
 τῶν λόγῳ δι' ἐπιστολῶν ἀπὸντες, ποιῶντες καὶ
 παρόντες τῷ ἔργῳ.

12 Οὐ γὰρ πολυμῶν ἐγκρίσιαι ἢ συγκρίσιαι
 ἑαυτῶν πρὸς ἑαυτῶν στωισανόντων· ἀλλὰ
 αὐτοὶ ἐν ἑαυτοῖς ἑαυτῶν μετῴντες, καὶ
 συγκρίνοντες ἑαυτοῖς ἐς σωτηρίαν.

13 Ἡμεῖς ὅτι ἐχθροὶ τὰ ἄμετρα καυχώμεθα
 ἀλλὰ καὶ τὸ μέτρον ἔκανόνος ἐμέρισεν
 ἡμῖν ὁ Θεὸς μέτρον ἐφικέσθαι ἄχρη ἐν ὑμῶν.

14 Οὐ γὰρ ὡς μὴ ἐφικνέμενοι εἰς ὑμᾶς,
 ὑπερεκλείνομεν ἑαυτῶν. ἄχρη γὰρ καὶ ὑμῶν
 ἐφθάσαμεν ἐν τῷ δόγματι ἔχρησθαι.

15 Οὐκ εἰς τὰ ἄμετρα καυχώμενοι ἐν ἄλλο-
 τείοις κήποις, ἐλπίδα ὅτι ἔχοντες, αὐξανόμενης
 τῆς πίστεως ὑμῶν, ἐν ὑμῖν μεγαλιωθῶμεν καὶ
 τὸ κανόνα ἡμῶν εἰς ὑμῶν ἐκείων.

16 Εἰς τὰ ὑπερέκθνα ὑμῶν δόγματι ἔχρησθαι
 ὅτι ἐν ἄλλοτρίῳ κανόνι εἰς τὰ ἔτοιμα καυ-
 χήσασθαι.

17 Ὅτι καυχώμεθα, ἐν Κυρίῳ καυχώσθαι.

18 Οὐ

18 Οὐ γὰρ ὁ ἑαυτὸν σωισάων, ἐκείνός ἐστι δόκιμος, ἀλλ' οἱ ὁ Κύριος σωίσησιν.

Κεφ. ια'. II.

1 Οὐ φελοὺς ἠνείχεσθε με μικροὺς ἢ τὸ ἀφροσύνης· ἀλλὰ ἐάνεχεσθε με.

2 Ζηλώ γὰρ ὑμᾶς Θεὸς ζήλω. ἡμερομίμω γὰρ ὑμᾶς ἐνὶ ἀνδρὶ παρεγένον ἀγνώστῳ ἡρώσῃσιν, τῷ Χριστῷ.

3 Φοβῶμαι ὅ μὴ πως ὡς ὁ ὄφις Εὐανγελιστῶν ἐπάτησεν ἐν τῇ πονηρίᾳ αὐτῆς, ἔτω φθαρῆ τὰ τοῖμα ὑμῶν, ἀπὸ τῆς ἀπολότησιν εἰς τὸ Χριστόν.

4 Εἰ μὲν γὰρ ὁ ἐρχόμενος ἄλλον Ἰησοῦν κηρύσσῃ ὃν οὐκ ἐκηρύξαμεν, ἢ πνεῦμα ἕτερον λαμβάνει ὃ οὐκ ἐλάβομεν, ἢ διαγγέλιον ἕτερον ὃ οὐκ ἐδέξαμεν, καλῶς ἠνείχεσθε.

5 Λογίζομαι γὰρ μηδὲν ὑπερηκίνας τὸ ὑπερλίαν ἀποστείλαν.

6 Εἰ ὅ ἐἰδιώτης τῷ λόγῳ, ἀλλ' ἐν τῇ γνώσῃ· ἀλλ' ἐν παντὶ φανερωθέντες ἐν πάντι εἰς ὑμᾶς.

7 Ἡ ἀμαρτίαν ἐποίησαι ἑμαυτῷ πενήτων ἵνα ὑμεῖς ὑψωθῆτε· ὅτι δωρεὰν τὸ εἶ Θεὸς διαγγέλιον ἀγγελιστάμεν ὑμῖν;

8 Ἄλλας ἐκκλησίας ἐσύλησα, λαβάν ὀψώνιον, πρὸς τὴν ὑμῶν ἀσχηλίαν· ἐπαρῶν πρὸς ὑμᾶς καὶ ὑπερηθεις, ἢ κατετάραχθαι ἐδένος.

9 Τὸ

9 Τὸ γὰρ ὑπέρημά με προσανατελήρωσαν οἱ ἀδελφοὶ ἐλθόντες ἀπὸ Μακεδονίας· ἐς αὐτὴν παντὶ ἀδαρή ὑμῖν ἐμαυτὸν ἐτήρησα, καὶ τηρήσω.

10 Ἐστὶν ἀλήθεια Χριστῷ ἐν ἐμοί, ὅτι ἡ καύχησις αὐτῆ ἐφραγήσετ) εἰς ἐμὲ ἐν τοῖς κλίμασι τῆς Ἀχαΐας.

11 Διακί)ζοσι ἐκ ἀγαπῶ ὑμᾶς; Ὁ Θεὸς οἶδεν.

12 Ὁ ἵ ποιῶ, καὶ ποιήσω, ἵνα ἐκκή)ψω πλεῖον ἀφορμῶν τῶν θελούντων ἀφορμῶν, ἵνα ἐν αὐτῶν καυχῶν), δύρεθῶσι καθὼς καὶ ἡμεῖς.

13 Οἱ γὰρ τοῖ)τοι ψεύδαπόστολοι, ἐργάζονται δόλιοι, μεταχηματίζόμενοι εἰς ἀποστόλους Χριστοῦ.

14 Καὶ ἐπαιμασόν· αὐτοὺς γὰρ ὁ Σατανᾶς μεταχηματίζεται εἰς ἄγγελον φωτός.

15 Οὐ μέγα εἶναι καὶ οἱ Διάκονοι αὐτῶν μεταχηματίζονται ὡς Διάκονοι δικαιοσύνης· ἂν τὸ τέλος ἐστὶ καὶ τὰ ἔργα αὐτῶν.

16 Πάλιν λέγω, μή τις μὲ δόξη ἀφρονα εἶναι· εἰ ἵ μή γε. καὶ ὡς ἀφρονα δέξασθε με, ἵνα μικρόν τι καὶ γὰρ καυχῆσωμαι.

17 Ὁ λαλῶ, ἐλαλῶ καὶ Κύριον, ἀλλ' ὡς ἐν ἀφροσυνῇ, ἐν ταύτῃ τῇ ὑποστάσει τῆς καυχῆσεως.

18 Ἐπεὶ πολλοὶ καυχῶνται καὶ τὸ σᾶρκιν καὶ γὰρ καυχῆσωμαι.

19 Ἠδέως γὰρ ἀνέχεσθε τῶν ἀφρόνων, φρόνιμοι ὄντες.

20 Ἀνέχε-

20 Ανέχεσθε γὰρ, εἴ τις ὑμᾶς καθ' ὁδοῦ λαλοῖ, εἴ τις
καταδίη, εἴ τις λαμοῦναι, εἴ τις ἐπιπέσει, εἴ
τις ὑμᾶς εἰς ἀθέστωπον δέξει.

21 Κατὰ ἀπειρίαν λέγω, ὡς ὅτι ἡμεῖς ἠδοκίμοι
ἐσμ' ἐν τῷ ἁγίῳ πνεύματι, (ἐν ἀφροσύνῃ
λέγω) τοῦ καὶ γὰρ.

22 Ἐβραῖοί εἰσι; καὶ γὰρ. Ἰσραηλιταὶ εἰσι;
καὶ γὰρ. Ἀσσυριοὶ εἰσι; καὶ γὰρ.

23 Διάκονοι Χριστοῦ εἰσι; (ὡς τῶν φρονιῶν λα-
λοῦμαι) ὑπερῆγοι ἐν κήποις ἀεισοπέρας, εἰ
πληγαῖς ὑπερβαλλόντως, ἐν φυλακῇ
ἀεισοπέρας, ἐν ταπείνωσι πολλῶν.

24 ὑπὸ Ἰουδαίων πινυμένοι πρὸς ἀρρώστια
ὡς τῶν μίαν ἔλαβον.

25 Τεῖς ἐρατοὶ ἐν τῷ ἁγίῳ πνεύματι,
τεῖς ἐναγασσόμενοι, νυκθήμερον ἐν τῷ βυθῷ
πιπτοῦμεν.

26 Ὀδοποροῖς πολλῶν, κινδύνοις ποτα-
μῶν, κινδύνοις ληστῶν, κινδύνοις ἐκ θύρας,
κινδύνοις ἐξ ἐθνῶν, κινδύνοις ἐν πόλει, κινδύ-
νοις ἐν ἐρημίᾳ, κινδύνοις ἐν θαλάσῃ, κινδύ-
νοις ἐν ψευδαδέλφοις.

27 Ἐν κήποι καὶ μόχθῳ, ἐν ἀργυρίαις πολ-
λάκις, ἐν λιμῷ καὶ δίψει, ἐν τρεῖσι πολλῶ-
ν, ἐν ψυχῇ καὶ γυμνότητι.

28 Χωρὶς ἧ παρεκτός, ἢ ἐπισύστασις μετ' ἡ
καθ' ἡμέραν, ἢ μέριμνα πάντων τῶν ἐκ-
κλησιῶν.

29 Τίς ἀδενεί, κὶ σοκ ἀδενῶ; Τίς σκαυδα-
λίξῃ, κὶ σοκ ἐγὼ πυρῶ μω;

30 Εἰ καυχῶσθ δὲ, τὰ τ' ἀδενείας με καυ-
χίσομαι.

31 Ὁ Θεὸς καὶ πατὴρ ἔσθ Κυρίε ἡμῶν Ἰησοῦ
Χριστῷ οἶδεν, ὃ ὦν δύλογητός εἰς τὸς αἰῶνας,
ὃ πῶ ψδύδομαι.

32 Ἐν Δαμασκῷ ὁ ἐθνάρχης Ἀρέτα ἔσθ βα-
σιλέως ἐφρέξῃ τ' Δαμασκωῶν πόλιν, πιά-
σαι με θέλων.

33 Καὶ ἀλά θυρίδῃ ἐν σαργάνῃ ἐχαλάθλι
ἀλά ἔσθ τείχεσ, κὶ ἐξέφυγον τὰς χείρας αὐτῷ.

Κορ. ιβ'. 12.

1 Καυχῶσθ δὴ ἔσθ συμφέρεται μοι. ἐλδύσομαι
ἢ εἰς ὀπθασίας κὶ ἀποκαλύψῃς Κυρίε.

2 Οἶδα ἄνθρωπον ἐν Χριστῷ παρ' ἐτῶν δε-
καπεσάρων (εἴτε ἐν σώματι, σοκ οἶδα· εἴτε
ἐκτὸς ἔσθ σώματι, σοκ οἶδα· ὁ Θεὸς οἶδεν)
ἀρπαγῆτα τ' τοῦτον ἕως τρίτεσ ἔρανοῦ.

3 Καὶ οἶδα τ' τοῦτον ἄνθρωπον, (εἴτε ἐν
σώματι, εἴτε ἐκτὸς ἔσθ σώματι, σοκ οἶδα·
ὁ Θεὸς οἶδεν)

4 Ὅπῃ ἤρπαγῆε τ' ὁ ἄρπαγῆσον, ἔσθ ἡκαστε
ἀρρητα ρήματα, ἀ ἔκ ἐξὸν ἄνθρωπον λαλήσαι.

5 Ὑπὲρ ἔσθ τοῦτεσ καυχίσομαι· ὑπὲρ ἔσθ ἐμαυτῷ
ἔσθ καυχίσομαι, εἰ μὴ ἐν ταῖς ἀδενείαις με.

6 Ἐὰν γὰρ θελήσω καυχίσομαι, σοκ ἔσομαι
ἄφρων· ἀλήθειαν γὰρ ἐρεῖ. φειδομαι ἔσθ, μὴ

πρὸς εἰς ἐμὲ λογίσθη ὑπὲρ ὃ βλέπετέ με, ἢ αἰεὶ
πρὸς ἐξ ἐμοῦ.

7 Καὶ τῇ ὑπερβολῇ τῆς ἀποκαλύψεων ἵνα
μὴ ὑπεραίρωμαι, ἐδόθη μοι σκόλοψ τῆς
στεροκί, ἀγγέλου Σατανῆ, ἵνα με κολαφίσῃ,
ἵνα μὴ ὑπεραίρωμαι.

8 Ὑπὲρ πάντων τῶν Κύριον παρεκάλεισα
ἵνα ἀποσῆ ἀπ' ἐμοῦ.

9 Καὶ εἰρηκί μοι Ἀρκί σοι ἡ χάρις με·
γὰρ δυνάμεις με ἐν ἀδυνατείᾳ πλεῖστα
ἠδιστα ἐν μάχῃ καυχώσομαι ἐν ταῖς ἀδυνα-
τείαις με, ἵνα ἐπισκηνώσῃ ἐπ' ἐμὲ ἡ δύνα-
μις τοῦ Χριστοῦ.

10 Διὸ ὀδοκῶ ἐν ἀδυνατείαις, ἐν ὑβρεσιν, ἐν
ἀνάγκαις, ἐν διωγμαῖς, ἐν στενοχωρίαις ὑπὲρ
Χριστοῦ. ὅταν γὰρ ἀδυνῶ, τότε δυνάμεις εἰμι.

11 Γέγονα ἄφρων καυχώμενος· ὑμεῖς μὲν
ἠναγκάσατέ· ἐγὼ γὰρ ἄφρονον ὑφ' ὑμῶν στυ-
βισαῶν· ἐδὲν γὰρ ὑπέρησα τῆς ὑπὲρ λίαν ἀπο-
στόλων, εἰ καὶ ἐδὲν εἰμι.

12 Τὰ μυστήρια τοῦ ἀποστόλου κατεργάσθη
ἐν ὑμῖν ἐν πάσῃ ὑπομονῇ, ἐν σημείοις κα-
τέργασαι καὶ δυνάμεσι.

13 Τί γὰρ ἐστὶν ὃ ἠτήθητε ὑπὲρ τοῦ λοιποῦ
ἐκκλησίας, εἰ μὴ ὅτι αὐτὸς ἐγὼ εἰς κατενάρκησιν
ὑμῶν; Χαρίσσατέ μοι τὴν ἀδικίαν ταύτην.

14 Ἴδτε, τίτοι ἐτόλμως ἔχω ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς,
καὶ ἐκκαταρκήσω ὑμῶν, εἰ γὰρ ζητῶ τὰ ὑμῶν
ἀλλ'

ἀλλ' ὑμεῖς· ἡ γὰρ ὀφείλη τὰ τέκνα τοῖς ἡ-
γεῦσι θησασθῆναι, ἀλλ' οἱ ἡγεῖς τοῖς τέκνοις.

15 Ἐγὼ ἢ ἠδιστα δαπανήσω καὶ ἐκδαπανηθή-
σομαι ὑπὲρ τῶν ψυχῶν ὑμῶν· εἰ καὶ ὡς εἰς ο-
τέρας ὑμεῖς ἀγαπῶν, ἢ ἦτον ἀγαπῶμαι.

16 Ἔγω δὲ, ἐγὼ εἰ κατεβάρησα ὑμεῖς· ἀλλ'
ὑπαάρχων πανῆργον, δόξα ὑμεῖς ἔλαβον.

17 Μὴ πικρῶν ἀπέσταλκα πρὸς ὑμεῖς, δι'
αὐτῶν ἐπλεονέκησα ὑμεῖς;

18 Παρηγάλασσα Τίτον, ἔστω καπέσθηλα τὸν
ἀδελφόν· μὴ τι ἐπλεονέκησεν ὑμᾶς Τίτον;
εἰ τὰ αὐτῷ πνύματι ὡς ἐπαιήσασθαι;
καὶ τοῖς αὐτοῖς ἰχνεσι;

19 Πάλιν δοκέετε ὅτι ὑμῖν ἀπολογέμεθα;
κατενώπιον τοῦ Θεοῦ, ἐν χερσὶ λαλήμεθα·
τὰ δὲ πάντα, ἀγαπήθη, ὑπὲρ τῶν ὑμῶν οἰ-
κηδομένης.

20 Φοβῆμα γὰρ, μὴ πως ἐλθὼν εἴη οἷος
θέλω εὐρα ὑμᾶς, καὶ γὰρ εὐρεθῶ ὑμῖν οἷον
εἰ θέλει· μὴ πως ἔρως, ζήλοι, θυμοί, ἐρι-
θείαι, καταλαλιαί, ψιθυρισμοί, φυσιώσεις,
ἀνταγισασίαι·

21 Μὴ πάλιν ἐλθόντα με ταπεινώσει ὁ Θεός
με πρὸς ὑμᾶς, καὶ κενθήσω πολλὰς τῶν ἁμαρ-
τημαρτηγῶν, καὶ μὴ μετανοησάντων ἐπὶ τῇ
ἀκαθαρσίᾳ καὶ πορνείᾳ καὶ ἀσελγείᾳ ἣ ἐ-
πύαζαν.

Κεφ.

- 1 Τρίτον τὸ ἐρχομαι πρὸς ὑμᾶς. ἐπὶ τὸ μακάριον δύο μαρτύρων ἢ τριῶν μαρτυρῶν πάντων ῥήματα.
- 2 Προεῖρηκα ἢ παρῆλθω ὡς παρὼν τὸ δευτέρου, ἔτι πάλιν νυνὶ γράφω τοῖς ἀποσημαρτημένοις ἔτι τοῖς λοιποῖς πάνσιν, ὅτι ἐὰν ἔλθω εἰς τὸ πάλιν, ἔφείσομαι.
- 3 Ἐπεὶ δοκιμῶν ζητεῖτε ἔτι ἐν ἐμοὶ λαλῶντες Χριστῶν, ὅς εἰς ὑμᾶς ὅσον ἀδελφεῖν, ἀλλὰ δυνατὸν ἐν ὑμῖν.
- 4 Καὶ γὰρ εἰ ἐσαυράθη ἐξ ἀδελφείας, ἀλλὰ ζῆ ἐν δυνάμει Θεοῦ. ἔτι γὰρ ἢ ἡμεῖς ἀδελφῶν ἐν αὐτῷ, ἀλλὰ ζησομεθα σὺν αὐτῷ ἐν δυνάμει Θεοῦ εἰς ὑμᾶς.
- 5 Ἐαυτὸς πειράζετε εἰ ἐστε ἐν τῇ πίστει, ἑαυτὸς δοκιμάζετε. ἢ ὅσον ἐπιγνώσκετε ἑαυτὸς, ὅτι Ἰησοῦς Χριστὸς ἐν ὑμῖν ἐστίν; εἰ μὴ πᾶς ἀδοκιμοί ἐστε.
- 6 Ἐλπίζω ὅτι γνώσεθε ὅτι ἡμεῖς ἔκτιστο ἀδοκιμοί.
- 7 Εὐχόμεθα ἢ πρὸς τὸ Θεὸν μὴ ποιῆσαι ὑμᾶς κακὸν μηδὲν ἔχοντα ἡμεῖς δοκιμοί. Φανώμεθα, ἀλλ' ἵνα ὑμεῖς τὸ καλὸν ποιῆτε, ἡμεῖς δὲ ὡς ἀδοκιμοί ὄμεθα.
- 8 Οὐ γὰρ δυνάμεθα πᾶσι τὴν ἀληθείαν, ἀλλ' ὑπὲρ τὴν ἀληθείαν.
- 9 Χαίρομεθα γὰρ ὅταν ἡμεῖς ἀδελφῶν ὑμῶν, ἡμεῖς

δεδωκατοί η̄τε. τῶν ἡ καὶ δὲχόμεθα, τὴν
 ὑμῶν χαίρεισιν.

10 Διὰ τῶν ταῦτα ἀπὸν γράφω, ἵνα παι-
 ρῶν μὴ ἀποθῶμως χηρήσωμαι, καὶ τὴν ἐξου-
 σίαν ἣν ἔδωκέ μοι ὁ Κύριος εἰς οἰκοδομίαν,
 καὶ οὐκ εἰς καθάρεισιν.

11 Λοιπὸν, ἀδελφοί, χαίρετε, καρτίζε-
 σθε, ᾠδῶν καλεῖσθε, τὸ αὐτὸ φρονεῖτε, εἰ-
 ρηνύετε· καὶ ὁ Θεὸς τῆς ἀγάπης καὶ εἰρήνης
 ἔσται μεθ' ὑμῶν.

12 Ἀσπάσασθε ἀλλήλους ἐν ἀγίῳ φιλή-
 ματι· ἀπάζονται ὑμᾶς οἱ ἅγιοι πάντες.

13 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ,
 καὶ ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ, καὶ ἡ κοινωνία
 τοῦ ἁγίου πνεύματος μετὰ πάντων ὑμῶν.
 Ἀμήν.

Πρὸς Κορινθίους δεύτερα ἐγράφη ἀπὸ
 Φιλίππων τῆς Μακεδονίας,
 ἀπὸ Τίτου καὶ
 Λουκᾶ.

D d ΠΑΥ.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ἡ πρὸς Γαλάτας ἐπιστολή.

Κεφ. α'. 1.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ ἀπόστολος (ὅστις ἀπ' ἀνθρώπων, ἐδὲ δι' ἀνθρώπων, ἀλλὰ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ Θεοῦ πατρὸς Ἰεσοῦ ἐξ ἑτεροῦ αὐτῶν ἐκ νεκρῶν)

2 Καὶ οἱ σὺν ἐμοὶ πάντες ἀδελφοί, ταῖς ἐκκλησίαις τῆς Γαλατίας·

3 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς καὶ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

4 Τῷ δυνάμει αὐτοῦ ὑπερὶ τῶν ἀμαρτιῶν ἡμῶν, ὅπως ἐξέλη) ἡμᾶς ἐκ τῆς ἐνστάτης αἰῶνος πονηροῦ, καὶ τὸ θέλημα τῆς Θεοῦ καὶ πατρὸς ἡμῶν.

5 Ὡς ἡ δόξα εἰς τὸς αἰῶνας τῶν αἰώνων. ἀμήν

6 Θαυμάζω ὅτι ἔτι τοιχείως μεταπίπτετε ἀπὸ τῆς καλῆς ἀγγελίας ὑμᾶς ἐν χάριτι Χριστοῦ εἰς ἕτερον διαγγέλιον·

7 Ὅστις ἔστιν ἄλλο· εἰ μὴ πινύς ἐστιν οἱ περὶ σοφίας ὑμᾶς, καὶ θέλοντες μεταστρέψαι τὸ διαγγέλιον τῆς Χριστοῦ.

8 Ἀλλὰ καὶ ἐὰν ἡμεῖς ἢ ἄγγελος ἐξ ἔρανος διαγγελίζη) ὑμῖν παρ' ὃ διηγγελισάμεθα ὑμῖν, ἀνάθεμα ἔστω.

9 Ω

9 Ὡς παρεφρήκαυμ, καὶ ἄρτι πάλιν λέγω, εἴ τις ὑμᾶς διαγγελίξει) παρ' ὃ παρελάβετε, ἀνάθεμα ἔστω.

10 Ἄρτι γὰρ ἀνθρώπου κείτω ἢ τ' Θεόν; ἢ ζητῶ ἀνθρώποις δρέσκην; εἰ γὰρ ἐπ' ἀνθρώποις ἤρεσκον, Χριστὸς δὲ ἔλασεν αὐτὸν ἡμῶν.

11 Γνωρίζω ὑμῖν, ἀδελφοί, τὸ σύμφυτον τὸ διαγγελισθέν ὑπὸ ἐμοῦ, ὅτι σὸς ἐστὶ καὶ ἀνθρώπων.

12 Οὐδὲ γὰρ ἐγὼ ὡς ἀνθρώπου παρέλαβον αὐτὸ, ἕτε ἐδιδάχθην· ἀλλὰ δι' ἀποκαλύψεως Ἰησοῦ Χριστοῦ.

13 Ἡκίστατε γὰρ τ' ἐμὴν ἀνατροφὴν ποιεῖτε ἐν τῷ Ἰσραηλίσμῳ, ὅτι καθ' ὑπερβολὴν ἐδίωκον τ' ἐκκλησίαν τοῦ Θεοῦ, ἔπιπόρευον αὐτῷ.

14 Καὶ περιεπαύθη ἐν τῷ Ἰσραηλίσμῳ ὑπερ πολλὰς σινηλικιώτας ἐν τῷ γένει, ὡς οὐκ ἐστὶν ἐπιπόρευον τῶν πατέρων μου ὡς ἀδελφῶν.

15 Ὅτε δὲ εὐδόκησεν ὁ Θεὸς ὁ ἀφορίστας με ἐκ κοιλίας μητρὸς μου, καὶ καλέστας διὰ τῆς χάριτος αὐτοῦ,

16 Ἀποκαλύψαι τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἐν ἐμοί, ἵνα διαγγέλωμαι αὐτὸν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὕτως ὡς ὡσαυτετέμενον σαρκὶ καὶ αἵματι·

17 Οὐδὲ ἀπῆλθον εἰς Ἱεροσόλυμα ὡς τὰς ἄλλας, ὡς ἐμοῦ ἀποστόλου· ἀλλ' ἀπῆλθον εἰς Ἀραβίαν, καὶ πάλιν ὑπέστρεψα εἰς Δαμασκόν.

18 Ἐπέτα μὲ ἐτη τρία ἀνῆλθον εἰς Ἱεροσόλυμα ἰσορῆσαι Πέτρον καὶ ἐπίμενα αὐτῶν αὐτὴν ἡμέρας δεκαπέντε.

19 Ἐπερον οὖν τῶν ἀποστόλων ὅσα εἶδον εἰ μὴ Ἰάκωβον τὸ ἀδελφὸν τοῦ Κυρίου.

20 Ἀλλ' ἔγραψα ὑμῖν, ἰδὲ εὐάπιον τοῦ Θεοῦ, ὅτι ἐψύδδομα.

21 Ἐπέτα ἦλθον εἰς τὰ κλίμαθα τῆς Συρίας καὶ τῆς Κιλικίας.

22 Ἡμεῖς ἄγνωστοι τῶν αἰσώπων ταῖς ἐκκλησίαις τῆς Ἰσθαίας ταῖς ἐν Χριστῷ.

23 Μόνον ἡ ἀκρόβουλος ἦσαν. Ὅτι ὁ διάκων ἡμεῶν ποιεῖ, ἵνα οὐκ ἀφελίξῃ τὸ πῖσις ἡμεῶν ἐπὶ τῶν πόλε.

24 Καὶ ἰδοὺ ἔλαζον ἐν ἐμοὶ τὸ Θεοῦ.

Κεφ. β'. 2.

1 Ἐπέτα ἀπὸ δεκαεξάρον ἐτῶν πάλιν ἀνέβην εἰς Ἱεροσόλυμα μὲν Βαρνάβαν συμπαραλαβὼν καὶ Τίτον.

2 Ἀνέβην ἡμεῖς ἀποκρίνυσθαι. Ἐ ἀντιμέτωποι αὐτοῖς τὸ εὐαγγέλιον ὃ κηρύσσω ἐν τοῖς ἔθνεσι κατ' ἰδίαν ἡ τοῖς δοκῶσι, μή πως εἰς κενὸν τρέχω, ἢ ἰσθραμον.

3 Ἀλλ' ἔδρα Τίτος ὁ σὺν ἐμοί, Ἐκλήρωσα ἡμεῶν ἀγγεῖον ἀξιωματικῶν.

4 Διὰ τὴν τῶν παρρησιαῖς ψυδαδελφῶν οἵπνες παρρησιαῖς καὶ ἀποκατήσασθαι τὸ ἐλάθρα εἰς ἡμεῶν ἡμεῶν ἐχομεν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ἵνα ἡμεῖς καὶ ἀδελφῶσαν.

5 Οἷς ἔδεν ὡρᾶν εἰξαμῆρ τῆ ὑπο-
 ζουγῆ, ἵνα ἡ ἀλήθεια ᾖ σύμφωνὸς ἀφαιμένη
 ὡρᾶς ὑμᾶς.

6 Ἀπὸ ἧ ᾧ δοκῶντων εἶναι π, ὁποῖοί ποτε
 ἦσαν, ἔδεν μοι ἀφαιρέσθαι ὡρᾶσιν Θεὸς
 ἀνθρώπων λαμβάνει. ἐμοὶ γὰρ εἰδοκῶντες,
 ἔδεν ὡρᾶσιν ἔγεντο.

7 Ἀλλὰ του ἀντίον, ἰδόντες ὅτι πεπίσθυ-
 μαί τὸ σύμφωνον τῆ ἀκροβυστίας, κατὰ Πέ-
 τρου τῆ ὡρᾶς.

8 (Ὁ γὰρ ἐνεργήσας Πέτρος εἰς ἀποστολὴν τῆ
 ὡρᾶς, ἐνεργήσας καὶ ἐμοὶ εἰς τὰ ἔθνη)

9 Καὶ γινόντες τῆ χάριν τῆ δοθεῖσάν μοι
 Ἰάκωβος ἔ Κηφᾶς καὶ Ἰωάννης, οἱ δοκῶντες
 εὐλοὶ εἶναι, δεξιαὶ ἔδωκαν ἐμοὶ καὶ Βαρ-
 νάβα κρινωνίας ἵνα ἡμεῖς εἰς τὰ ἔθνη, αὐτοὶ
 ἦ εἰς τῆ ὡρᾶς.

10 Μόνον τῆ πλοῦτων ἵνα μνημονοῦμαι ὁ καὶ
 ἐπέδωκε αὐτὸ τῆ ποιεῖσαι.

11 Ὅτε δὲ ἦλθε Πέτρος εἰς Ἀντιόχεια, καὶ
 ὡρᾶσιν αὐτῶ ἀντίστοιχον, ὅτι κατεγνω-
 σμῶν ἦν.

12 Πρὸ τῆ γὰρ εἰσελθεῖν Ἰάκωβος, καὶ τῆ
 ἔθνων συνηθίον ὅτε ἦ ἦλθον, ὑπέσχετο καὶ ἀ-
 φαιρίζεν αὐτῶ, φοβέμενος τῆς ὡρᾶς.

13 Καὶ σὺν περὶ ἦσαν αὐτῶ καὶ οἱ λοιποὶ
 Ἰουδαῖοι ὡς καὶ Βαρνάβας συναπήχθη αὐτῶν
 τῆ ὑποκρίσει.

- 14 Ἀλλ' ὅτε εἶδον ὅτι οὐκ ὀρθοποδοῦσι πρὸς τὴν ἀλήθειαν τῆς εὐαγγελίας, εἶπον ταῖς Πίττειν ἡμπεροθεν πάντων· Εἰ σὺ Ἰσδαῖος ἰσθάρων, ἔθνηκως ζῆς, καὶ οὐκ Ἰσδαϊκῶς, τί πᾶν ἔθνη ἀναγκαζέεις Ἰσδαϊζέειν;
- 15 Ἡμεῖς φύσφι Ἰσδαῖοι, καὶ οὐκ ἐξ ἔθνων ἁμαρτωλοί·
- 16 Εἰδοῦτες ὅτι ἔδικαζέται ἀνθρώπος ἐξ ἔργων νόμος, ἰανὸν μὴ Διὰ πίστεως Ἰησοῦ Χριστοῦ· καὶ ἡμεῖς εἰς Χριστὸν Ἰησοῦν ἐπιστύσαμεν, ἵνα δικαιοσύνην ἐκ πίστεως Χριστοῦ, καὶ οὐκ ἐξ ἔργων νόμου· διότι ἔδικαζέθησιν ἐξ ἔργων νόμου πᾶσι στέρεθ·
- 17 Εἰ δὲ ζητῶντες δικαιοσύνην ἐν Χριστῷ, ἀρέθημεν ἑαυτοὶ ἁμαρτωλοί, ἄρα Χριστὸς ἁμαρτίας Διὰ κέειν; Μὴ γάρ·
- 18 Εἰ γὰρ ἀκατέλυτοι, ταῦτα πάλιν οἰκοδομεῖ, ὡς βαπτίσει ἑμαυτὸν σωθήσεται·
- 19 Ἐγὼ γὰρ Διὰ νόμου νόμοι ἀπέθανον, ἵνα Θεὸς ζήσω·
- 20 Χριστῷ συνεστώμεθα· ζῶ ἔτι, οὐκ ἐπὶ ἐγὼ ζῆ ἔτι ἐν ἐμοὶ Χριστός· ὃ ἔτι νῦν ζῶ ἐν σαρκεῖ, ἐκ πίστεως ζῶ τῆς ἡμετέρας Θεοῦ, τῆς ἀγαπήσασαί με, καὶ ὡς δούλῳ ἑαυτὴν ὑπερέμεν·
- 21 Οὐκ ἀφετῶ τινὸς χάριν Θεοῦ· εἰ γὰρ Διὰ νόμου δικαιοσύνη, ἄρα Χριστὸς δωρεὰν ἀπέθανεν·

Κεφ. γ'. 3.

1 **Ω**τ' ἀνόητοι Γαλάται, τίς ὑμᾶς ἐβάσκανε τῇ ἀληθείᾳ μὴ πείθεσθε; οἷς κατ' ὄφθαλμὸς Ἰησοῦς Χριστὸς περιεγράφη, ἐν ὑμῖν ἐσαυρωμένον.

2 Τῶ μόνον θέλω μαθεῖν ἀφ' ὑμῶν, ἐξ ἔργων νόμου τὸ πνεῦμα ἐλάβετε, ἢ ἐξ ἀκροῦς πίστεως;

3 Οὕτως ἀνόητοί ἐστε; ἐναρξάμενοι πνεύματι, νυνὶ σαρκὶ ἐπιτελεῖσθε;

4 Τοσαῦτα ἐπάθετε εἰκῆ; εἰ γε καὶ εἰκῆ.

5 Οὐκ ἐπιχορηγῶν ὑμῖν τὸ πνεῦμα, καὶ ἐνεργῶν δυνάμει ἐν ὑμῖν, ἐξ ἔργων νόμου ἢ ἐξ ἀκροῦς πίστεως;

6 Καθὼς Ἀβραάμ ἐπίστυσε τῷ Θεῷ, καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην.

7 Γινώσκετε ἄρα ὅτι οἱ ἐκ πίστεως, ἕτοίμοι εἰσιν υἱοὶ Ἀβραάμ.

8 Προιδῶσα ἡ γραφὴ ὅτι ἐκ πίστεως δικαιοσύνη τὰ ἔθνη ὁ Θεὸς, περιελάλησεν τῷ Ἀβραάμ. Ὅτι δόλογηθήσονται ἐν σοὶ πάντα τὰ ἔθνη.

9 Ὡστε οἱ ἐκ πίστεως, δόλογῶνται σοὶ τῷ πιστῷ Ἀβραάμ.

10 Ὅσοι γὰρ ἐξ ἔργων νόμου εἰσιν, ὑπὸ κατάρτην εἰσὶ. γέγραπται γάρ· Ἐπικατάρατος πᾶς ὃς ἐκ ἐμῆς ἐν πᾶσι τοῖς γεγραμμένοις ἐν τῷ βιβλίῳ ἔσται νόμος, ἔσται ποιῆσαι αὐτά.

D d 4

II Όπ

- 11 Ὅτι ἢ ἐν νόμῳ ἔδεις δικαιοσύνην καὶ τῷ Θεῷ, δῆλον· ὅτι ὁ δίκαιος ἐκ πίστεως ζήσεται·
- 12 Ὁ δὲ νόμος ὅσα ἔστιν ἐκ πίστεως· ἀλλ' ὁ ποιήσας αὐτὰ ἄνθρωπος, ζήσεται ἐν αὐτοῖς,
- 13 Χριστὸς ἡμᾶς ἐξηγόρασεν ἐκ τῆς κατάρτας τῶν νόμων, ἡμιμέριον ὑπὲρ ἡμῶν κατάρτας. γέγραπται γάρ· Ἐπικατάραται πᾶς ὁ κρεμάμενος ἐπὶ ξύλῳ.
- 14 Ἴνα εἰς τὰ ἔθνη ἡ εὐλογία τῆς Ἀβραάμ ἡμῶν γένηται ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ἵνα τῷ ἐπαγγελίαν τῆς προδομάτης λάβωμεν διὰ τῆς πίστεως.
- 15 Ἀδελφοί, καὶ ἄνθρωπον λέγω. ὁμοίως ἀφράπυ κεκυρωμένῳ διὰ τῆς κλήσεως ἔδεις ἀρετῆς ἢ ἐπιδοκίμασε·
- 16 Τῶν δὲ Ἀβραάμ ἐρρήθησαν αἱ ἐπαγγελίαι, καὶ τῷ σπέρματι αὐτῶν. καὶ λέγει· Καὶ τοῖς σπέρμασιν, ὡς ἐπὶ πολλῶν, ἀλλ' ὡς ἐφ' ἑνός· Καὶ τῷ σπέρματι (αὐτοῦ), ὅς ἐστι Χριστός.
- 17 Τὸ δὲ λέγω, διὰ τῆς κλήσεως κεκυρωμένῳ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ εἰς Χριστόν, ὁ μὲν ἔτι τετρακόσια καὶ τριάκοντα γεγονώς νόμος ἐκ ἀκυροῦ, εἰς τὸ κατεργῆσαι τὴν ἐπαγγελίαν.
- 18 Εἰ γὰρ ἐκ νόμου ἡ κληρονομία, ὅσα ἐπὶ ἐξ ἐπαγγελίας· τῷ δὲ Ἀβραάμ δι' ἐπαγγελίας κληρονομήσας ὁ Θεός.
- 19 Τί ἐστὶν ὁ νόμος; Τῶν ὑπερβάτων χάριτος προσετέθη, ἵνα ἄχρις οὗ ἔλθῃ τὸ σπέρμα ὃ ἐπιγγένηται. Διατάξεις δὲ ἀγγέλων, ἐν χειρὶ μισίτης.

20 Ο ἵ μεσίτης, ἐνὸς ὄντος ἐστίν· ὁ δὲ Θεὸς, εἷς ἐστίν.

21 Οὐκ ὡς νόμος καὶ τὸ ἐπαγγελίῳ τοῦ Θεοῦ· Μὴ γηροῖσθε· εἰ γὰρ ἐδόθη νόμος ὁ δυνάμει ζωοποιήσας, ὅπως ἀπὸ νόμου ἦν ἡ διακοσμήσις.

22 Ἀλλὰ συνέκλησεν ἡ γραφὴ τὰ πάντα ὑπὸ ἁμαρτίαν, ἵνα ἡ ἐπαγγελία ἐκ πίστεως Ἰησοῦ Χριστοῦ δοθῇ τοῖς πιστεύουσι.

23 Πρὸ τοῦ ἔλθειν τὸ πῖστιν, ὑπὸ νόμον ἐφθραρέμεθα, συσκευασμένοι εἰς τὴν μέλασταν πῖστιν ἀποκαλυφθῆναι.

24 Ὡστε ὁ νόμος παιδαγωγὸς ἡμῶν γέγονεν εἰς Χριστόν, ἵνα ἐκ πίστεως δικαιωθῶμεν.

25 Ἐλθέσης ἡ τὸ πῖστιν, ὅτι ἐπὶ ὑπὸ παιδαγωγὸν ἐσμεν.

26 Πάντες γὰρ υἱοὶ Θεοῦ ἐστε διὰ τὸ πῖστιν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

27 Ὅσοι γὰρ εἰς Χριστόν ἐβαπτίσθητε, Χριστόν ἐνεδύσαθε.

28 Οὐκ ἐν Ἰουδαίᾳ, ἐδὲ Ἑλλήν· ὅτι ἐν Ἰουδαίᾳ, ἐδὲ ἐλσούτε· ὅτι ἐν ἄρσεν καὶ θῆλυ· πάντες γὰρ ὑμεῖς εἷς ἐστε ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

29 Εἰ ἡ ὑμεῖς Χριστοῦ, ἄρα τὸ Ἀβραάμ ἀπέρμα ἐστέ, καὶ κατ' ἐπαγγελίαν κληρονόμοι.

Κεφ. δ'. 4.

1 Ἄγω ἡ, ἐφ' ὅσον χρόνον ὁ κληρονόμος νηπίος ἐστίν, ἐδὲν ἀφ' ἑρῆ δέλας, κύριος πάντων ὄν.

D d 5

2 Ἀλλὰ

- 2 Ἀλλὰ ὑπὸ ἐπιτρόπας ἐπὶ καὶ οἰκονόμους
ἄλλοι τὴν ἀποστολῆς ἔργα πατρὸς.
- 3 Οὕτω καὶ ἡμεῖς, ὅτε ἡμεῖς νέπιοι, ὑπὸ
τὰ σοιχεῖα ἔχουσιν ἡμεῖς δεδουλωμένοι.
- 4 Ὅτε ἡμεῖς ἤλθε τὸ πλήρωμα ἔχουσιν, ἐξ-
απίστηλεν ὁ Θεὸς τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἡνωμένον ἐν
συνουσίᾳ, ἡνωμένον ὑπὸ τὸν ὄνομα.
- 5 ἵνα τὸς ὑπὸ τὸν ὄνομα ἐξαγοράσῃ, ἵνα ἡμεῖς
ἡμεῖς ἀπολάβωμεν.
- 6 Ὅτι δὲ ἐστὶ ὑμεῖς, ἐξαπίστηλεν ὁ Θεὸς τὸ
πνεῦμα ἔχουσιν αὐτοῦ εἰς τὰς καρδίας ὑμῶν,
κράζον, Ἄβραῶν, ὁ πατήρ.
- 7 Ὡστε οὕτως ἐπὶ εἰς ἄλλοι, ἀλλὴ ἡμεῖς· εἰ δὲ
ἡμεῖς, καὶ κληρονόμοι Θεοῦ Διὰ Χριστοῦ.
- 8 Ἀλλὰ τότε μὲν οὕτως εἰδότες Θεὸν, ἰδου-
λάσθητε τοῖς μὴ φύσει ἔσσι θεοῖς.
- 9 Νῦν ἡμεῖς, γινώσκοντες Θεὸν, μάλλον ἡμεῖς γνωσκόντες
ὑπὸ Θεοῦ, πῶς ἐπιστρέψετε πάλιν ἐπὶ τὰ
ἀσθενῆ ἔσσι σοιχεῖα, οἷς πάλιν ἀνωθεν
δουλοῦν θέλετε;
- 10 Ἡμέρας ἀφαιρηθεὶς, καὶ μῆνας, καὶ
ἡμέρας, καὶ ἐνιαυτοῦς.
- 11 Φοβούμεθα ὑμῶν, μή πως εἰκὴ κακοπίασθαι
εἰς ὑμῶν.
- 12 Γίνεσθε ὡς ἐγὼ, ὅτι καὶ γὰρ ὡς ὑμεῖς· ἀδελ-
φοί, δέομα ὑμῶν. ἔδεν με ἠδικήσατε.
- 13 Οἶδατε ἡμεῖς ὅτι διὰ ἀσθενῆσαν τὴν σαρκὸς δι-
ημελισάμεθα ὑμῖν τὸ πρῶτον.

14 Καὶ τὸ πρῶτον μετ' ἐν τῇ σαρκί μου
 ὅσα ἐξέθενόσαί με, ἔδωκεν ἐπιύστετε, ἀλλ' ὡς
 ἀγγέλιον Θεοῦ ἐδέξασθε με, ὡς Χριστὸν Ἰησοῦν.

15 Τίς οὐκ ἰδοὺ ὁ μακαρισμὸς ὑμῶν; μαρτυροῦμαι
 ἦν ὑμῖν ὅτι, εἰδωατὸν, τὰς ὀφθαλμοῦς ὑ-
 μῶν ἐξορύξασθε αὐτὸν ἐδώκατέ μοι.

16 Ὡστε ἐχθρὸς ὑμῶν γέγονα ἀληθῶν ὑμῖν;

17 Ζηλοῦσιν ὑμᾶς ἔκαλῶς, ἀλλὰ ἐκκλείουσι
 ἡμᾶς θέλουσιν, ἵνα αὐτὰς ζηλοῦτε.

18 Καλὸν ἔστι τὸ ζηλοῦσθαι ἐν καλῷ πάντοτε,
 καὶ μὴ μόνον ἐν ταῖς παρενοχίαις με πρὸς ὑμᾶς.

19 Τεκνία μου, ἔτι πάλιν ἠδίνω, ἀγγεῖς ἔμφο-
 ρωθῆναι Χριστὸς ἐν ὑμῖν.

20 Ἦθέλον ἔστι παρενοχίαι πρὸς ὑμᾶς ἀρετῆ, ἔ-
 ἀλλάξαι τὸ φανῆναι μου ὅτι ἀπορῆμαι ἐν ὑμῖν.

21 Λέγετέ μοι οἱ ὑπὸ νόμον θέλοντες εἶναι,
 τὸν νόμον ὅσα ἀκέετε;

22 Γέγραπται ἦν ὅτι Ἀραβία με δύο ἕως ἔχεν·
 ἕνα ἐκ τῆς παιδείας, καὶ ἕνα ἐκ τῆς ἐλευθέρως.

23 Ἀλλ' ὁ μὲν ἐκ τῆς παιδείας, καὶ σάρκα
 γενήσεται; ὁ δὲ ἐκ τῆς ἐλευθέρως, διὰ τῆς ἐ-
 παγγελίας.

24 Ἀπὸ τῆς ἀλλοτρίως με; αὗται γὰρ
 εἰσιν αἱ δύο διαθήκαι· μία μὲν ἀπὸ ὅρας
 Σινᾶ, εἰς δουλείαν γενήσεται, ἡ δὲ εἰς Ἄραβ.

25 Τὸ ἦν Ἄραβ, Σινᾶ ὅρα εἰσὶν ἐν τῇ Ἀ-
 ραβία, συστοιχεῖ ἔστι τῇ νῦν Ἱερουσαλήμ, δε-
 λουμένη ἔστι μετὰ τῶν τέκνων αὐτῆς.

6 Ἐν ᾧ Χριστῷ Ἰησοῦ ἔτε ἀρετῆς καὶ ἰσχύος,
ἔτε ἀκροθυσίας, ἀλλὰ πίστεως δι' ἀγάπης ἐνεργε-
μαθῶν.

7 Ἐτρέχετε καλῶς· τίς ὑμῶν ἀνέκοψε τῇ
ἀληθείᾳ μὴ πείθεσθε;

8 Ἡ πέτρου ἡ ἐκείνου ἔτι καλεῖν ὑμᾶς.

9 Μικρὰ ζύμη ὅλον τὸ φύραμα ζυμῶι.

10 Ἐγὼ πέποιθα εἰς ὑμᾶς ἐν Κυρίῳ, ὅτι
ἐδὲν ἄλλο φρονήσεις· ὁ δὲ παρεόσων ὑμᾶς
βαστάσῃ τὸ κρέμα, ὅσκις αὐτῆ.

11 Ἐγὼ δὲ, ἀδελφοί, εἰ ἀρετῆς ἐπι κηρύσσει,
τί ἐπι διώκεται; ἄρα κατήργηται τὸ αἰν-
δαλον ἔσται.

12 Ὅφρα καὶ ἀποκόψονται οἱ ἀνασταίν-
τες ὑμᾶς.

13 Ὑμεῖς γὰρ ἐπ' ἐλευθερίᾳ ἐκλήθητε, ἀ-
δελφοί· μόνον μὴ τὴν ἐλευθερίαν εἰς ἀφορ-
μὴν τῆ σαρκί, ἀλλὰ διὰ τὴν ἀγάπης δε-
λούτε ἀλλήλοις.

14 Ὁ γὰρ πᾶς νόμος ἐν ἐνὶ λόγῳ πληρῶν, ἐστὶ
τῷ· Ἀγαπήσεις τὸ πλησίον (ὡς σεαυτὸν).

15 Εἰ δὲ ἀλλήλους δάκνεις καὶ κατεοδίεις, βλέ-
πιτε μὴ ὑπὸ ἀλλήλων ἀναλωθῆτε.

16 Λέγω δὲ πρὸς ὑμᾶς ἀπειθεῖτε, καὶ ἐπι-
θυμίας σαρκεῖς ἢ μὴ τελείητε.

17 Ἡ γὰρ σαρξ ἐπιθυμεῖ καὶ τὸ πρὸς ὑμᾶς
τὸ πνεῦμα καὶ τὴν σαρκεῖς. ταῦτα δὲ ἀντιθέτως
ἀλλήλοις, ἵνα μὴ ἀνὰ ἑλθῆτε, ταῦτα ποιῆτε.

- 18 Εἰ ἢ πνύματι ἀγεοθε, ἐκ ἐσὲ ὑπὸ νόμον.
- 19 Φανερά δέ ἐστι τὰ ἔργα τ' σαρκῆς· ἀπιά
ἐσι, μοιχεία, πορνεία, ἀκαθαρσία, ἀσέλγηα,
- 20 Εἰδωλολατρεία, Φαρμακεία, ἔχθρα,
ἔρως, ζήλοι, θυμοί, ἐριθείαι, διχουσίαι,
αἰρέσεις,
- 21 Φθόνοι, φόνοι, μίθαι, κῶμοι, καὶ τὰ
ὄμνια τέτοις, ἀπεθλέγω ὑμῖν, κατὰ καὶ
καθεῖπον, ὅτι οἱ τὰ τοιαῦτα πρῶσοιτες
βασιλείαν Θεῶ ἐκληρονομήσονται.
- 22 Οἱ ἢ καρπὸς τ' πνύματι, ἐστι ἀγά-
πη, χαρὰ, εἰρήνη, μακροθυμία, χρηστότης,
ἀγαθωσύνη, πίστις, πραότης, ἐγκρατεία.
- 23 Κατὰ τ' τοιούτων ὅσα ἐστὶ νόμος.
- 24 Οἱ δὲ τ' Χριστῶ, τ' σάρκα ἐσαύρωσαν
σὺ τοῖς πατήμασι ἐ ταῖς ἐπιθυμίαις.
- 25 Εἰ ζῶμεν πνύματι, πνύματι καὶ ποι-
χῶμεν,
- 26 Μὴ γινώμεθα κενόδοξοι, ἀλλήλους ἀπο-
καλέμενοι, ἀλλήλοις φθονῆτες.

Κεφ. 5. 6.

- 1 Ἀδελφοί, ἐὰν ἐ ἀποληφθῆ ἀνθρώπου
ἐν ἡμῖν ὡς ἀπλώματι, ὑμεῖς οἱ πνύ-
ματικοὶ καὶ ἐξέζετε τ' τοιούτοι ἐν πνύματι
πραότητι σκουπῶν σεαυτὸν, μὴ καὶ σὺ πρ-
ραοθῆς.
- 2 Ἀλλήλων τὰ βάρη βαρύνετε, καὶ ἕτως
ἀναπαληρώσατε τ' νόμον τ' Χριστοῦ.

3 Εἰ

3 Εἰ γὰρ δοκεῖ τις εἶναι τι, μηδὲν ἂν, ἑαυτὸν
φρεναπαλάσῃ.

4 Τὸ δὲ ἔργον ἑαυτῷ δοκιμαζέτω ἕκαστος, καὶ
τότε εἰς ἑαυτὸν μόνον τὸ καύχημα ἔξῃ, καὶ οὐκ
εἰς τὸ ἕτερον.

5 Ἐκαστος γὰρ τὸ ἴδιον φορτίον βασιάσθῃ.

6 Κοινωνείτω δὲ ὁ κατηχούμενος τὸ λόγον τῆς
καληχθῆντος, ἐν πάσιν ἀγαθοῖς.

7 Μὴ πλανᾶσθε· Θεὸς ἔμυκλιηρίζετῃ· ὁ
γὰρ ἐὰν σπείρῃ ἄνθρωπος, τὸ εἶδος ἐστὶ θερίου.

8 Ὅτι ὁ σπείρων εἰς τὴν σάρκα ἑαυτοῦ, ἐκ τῆς
σαρκὸς θερίου φθορῶν· ὁ δὲ σπείρων εἰς τὸ
πνεῦμα, ἐκ τῆς πνεύματος θερίου ζώου
αἰώνιον.

9 Τὸ δὲ καλὸν ποιῶντες μὴ ἐκκακῶμεθα·
καίρω γὰρ ἰδίῳ θερίου, μὴ ἐκλυόμενοι.

10 Ἄρα ἐν ἡμῶν καίρω ἐχόμεθα, ἐργαζώμεθα τὸ
ἀγαθὸν πρὸς πάντας, μάλιστα δὲ πρὸς τοὺς οἰ-
κείους τῆς πίστεως.

11 Ἴδετε πληθύνουσιν ὑμῖν γράμμασιν ἐγραψα-
τῆ ἐμῆ χειρὸς.

12 Ὅσοι θέλωσιν εὐπεσοῦσθαι ἐν σαρκί,
ἐτοιμὰ ἀναγκάζουσιν ὑμᾶς πειτέμενοι, μόνον
ἵνα μὴ τὰ σωρῶσθαι ἐκ χειρὸς διώκων.

13 Οὐδὲ γὰρ οἱ πειτέμενοι αὐτοὶ νόμον
φυλάσσουν· ἀλλὰ θέλωσιν ὑμᾶς πειτέμε-
σαι, ἵνα ἐν τῇ ὑμετέρῃ σαρκί καυχῶσθαι.

14 Ἐμοῖ δὲ μὴ γένοιτο καυχῶσθαι εἰ μὴ ἐν τῷ
σωρῶσθαι

σαυρά ἔχεις ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ δι' ἃ ἐμὴν κήσθησα ἐσαύρω), καὶ τὰ κήσθησα.

15 Ἐν γὰρ Χριστῷ Ἰησοῦ ἔτε θεωρομένη πικρὴ, ἔτε ἀκροβυστία, ἀλλὰ καμὴ κήσθησα.

16 Καὶ ὅσοι τὰ κήσθησα τέτρωτοι γίνονται, εἰρήνη ἐπ' αὐτοὺς καὶ ἐλεῶσα, καὶ ἐπὶ τῷ Ἰσραὴλ ἔστω Θεοῦ.

17 Τῷ λοιπῷ, κήσθησα μοι κήσθησα παρεχόμενος ἐγὼ γὰρ τὰ σίγματα ἔχεις Ἰησοῦ ἐν τῷ σίγματι με βασιλεύω.

18 Ἡ χάρις ἔχεις ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ καὶ τῷ πνεύματι ὑμῶν, ἀδελφοί. Αἰεὶ.

Πρὸς Γαλάτας ἐγράφη ἀπὸ Γώμη.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
ἢ πρὸς Ἐφείσους ἐπιστολή.

Κεφ. α'. 1.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ ἀπὸ θελήματος Θεοῦ, τοῖς ἁγίοις τοῖς ἔσιν ἐν Ἐφείσῳ, καὶ πιστοῖς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

3 Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς ἐπὶ πατὴρ ἔχεις ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ δὲ λογιώσας ἡμᾶς ἐν πάσῃ δόξῃ πνευματικῇ ἐν ἑσῖς ἐπετραμίους ἐν Χριστῷ.

4 Καθίς

- 14 Ὅς ἐστι ἀρραβὼν τῆς κληρονομίας ἡμῶν,
εἰς ἀπολύτῳσιν τῆς ἀειποιήσεως, εἰς ἕπαυτον
τῆς δόξης αὐτοῦ.
- 15 Διὰ τοῦτο καὶ γὰρ, ἀκέραις ἢ καθ' ὑμῶν
πίσιν ἐν τῷ Κυρίῳ Ἰησοῦ, καὶ τῆς ἀγαπίου τῆς
εἰς πάντας τὰς ἀγίας,
- 16 Οὐ παύομεθα εὐχαριστῶν ὑπὲρ ὑμῶν, μνείαν
ὑμῶν ποιῶμεθα ἐπὶ τῆς προσοχῆς μας.
- 17 Ἴνα ὁ Θεὸς ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστὸς ὁ
πατὴρ τῆς δόξης, δώῃ ὑμῖν πνεῦμα σοφίας ἐν
ἀποκαλύψεως, ἐν ἐπιγνώσει αὐτοῦ.
- 18 Περὶ φωτισμῶν τὰς ὀφθαλμοὺς τῆς ἀνο-
νοίας ὑμῶν, εἰς τὸ εἰδεῖναι ὑμῶν πῶς ἐστι ἡ
ἐλπίς τῆς κλήσεως αὐτοῦ, ἢ πῶς ὁ πλῆθος τῆς
δόξης τῆς κληρονομίας αὐτοῦ ἐν τοῖς ἀγίοις.
- 19 Καὶ τί τὸ ὑπερβάλλον μέγεθος τῆς δυνά-
μειος αὐτοῦ εἰς ἡμῶν τὰς πιστεύοντας καὶ τῆς
ἐνέργειαν τοῦ κράτους τῆς ἰσχύος αὐτοῦ,
- 20 Ἡὲ ἐνέργησεν ἐν τῷ Χριστῷ, ἐγένεας αὐ-
τὸν ἐκ νεκρῶν καὶ ἐκάθισεν ἐν δεξιᾷ αὐτοῦ
ἐν τοῖς ἐπερανοῖς,
- 21 Ὑπεράνω πάσης ἀρχῆς καὶ ἐξουσίας ἐδου-
νάμειος καὶ κυριότητος, καὶ παντὸς ὀνόμα-
τος ὀνομαζομένων ἔμνητοι ἐν τῷ αἰῶνι τέ-
τα, ἀλλὰ ἢ ἐν τῷ μέλλοντι.
- 22 Καὶ πάντα ὑπέταξεν ὑπὸ τὰς πόδας
αὐτοῦ. Ἐ αὐτὸν ἔδωκε κεφαλὴν ὑπὲρ πάντα
τῆ ἐκκλησίας,

23 Ἡ' τις ἐσὶ τὸ σῶμα αὐτῶ, τὸ πλήρωμα ἔ
πάντα ἐν πάσι πληρωθῆς.

Κεφ. β'. 2.

1 **Κ**αὶ ὑμεῖς ὄντας νεκροὺς τοῖς ᾠραπιά-
μασι καὶ ταῖς ἀμαρτίαις.

2 Ἐν αἷς ποτε ᾤσειπαλήσατε καὶ τὸ αἰῶνα
ἔ κόσμος τέτυκ, καὶ τὸ ἄρχοντα τὸ ἐξουσίας ἔ
ἀέρθη, ἔ πνύματι ἔ νῦν ἐνεργῶντι ἐν
τοῖς ἡοῖς τὸ ἀπῆθείας,

3 Ἐν οἷς καὶ ἡμεῖς πάντες ἀνεσφάφημῶ πο-
τε ἐν ταῖς ἐπιθυμίαις τὸ σαρκῶς ἡμῶν, ποιῶν-
τες τὰ θελήματα τὸ σαρκῶς ἔ τὸ ἀφρονοῦν καὶ
ἡμῶν τέκνα φύσει ὀργῆς, ὡς ἔ οἱ λοιποὶ.

4 Ὁ ὁ Θεὸς, πλάσει ἡμῶν ἐν ἐλέει, ἀφ' ἡμῶν
πολλῶν ἀγάπῃ αὐτῶ ἡμῶν ἀγάπησεν ἡμῶς,

5 Καὶ ὄντας ἡμῶς νεκροὺς τοῖς ᾠραπιά-
μασι, συνεζωοποίησε τὰ Χριστῶ· χεῖρῃ
ἔσε σεσωσμένοι.

6 Καὶ σωήσῃ, καὶ συνεκτίθει ἐν τοῖς
ἐπερανίοις ἐν Χριστῶ Ἰησοῦ.

7 Ἴνα ἐνδείξηται ἐν τοῖς αἰῶσι τοῖς ἐπερ-
χημῶσι τὸ ὑπερβάλλοντα πλεον τὸ χεῖρ-
ῖ αὐτῶ, ἐν χρηστότητι ἐφ' ἡμῶς ἐν Χριστῶ
Ἰησοῦ.

8 Τῇ ἡ χεῖρῃ ἔσε σεσωσμένοι ἀφ' ἡμῶν τὸ πί-
σεως· καὶ τῶτο ὅσα ἐξ ὑμῶν· Θεὸς τὸ δῶρον·

9 Οὐκ ἐξ ἔργων, ἵνα μή τις καυχῆσθῃται.

10 Αὐτῶ γὰρ ἐσμῶν ποίημα, κτισθέντες ἐν
Χριστῶ

Χριστῷ Ἰησοῦ ἐπὶ ἔργοις ἀγαθοῖς, οἷς ἀπο-
 ηθέμισεν ὁ Θεὸς ἵνα ἐν αὐτοῖς ἀειπα-
 τήσωμεν.

11 Διὸ μνημονύετε ὅτι ὑμεῖς ποτε τὰ ἔθνη
 ἐν σαρκί, οἱ λεηλόμοι ἀκροβυστία ὑπὸ τῷ λε-
 γομῆς ἀειθεμῆς ἐν σαρκὶ χρηποιήτε·

12 Ὅπῃ τε ἐν τῷ καιρῷ ἐκέλευε Χρι-
 στῷ, ἀπηλλοτριωμένοι τῆ πολιείας τῆ Ἰσραήλ,
 καὶ ξένοι τῶν ἀγαθῶν τῆ πατριάρχιας, ἐλπίδα
 μὴ ἔχοντες, καὶ ἄθεοι ἐν τῷ κόσμῳ·

13 Νυνὶ δὲ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὑμεῖς οἱ ποτε
 ὄντες μακροὶ, ἐγγὺς ἐγγυήθητε ἐν τῷ αἵματι
 τοῦ Χριστοῦ.

14 Αὐτὸς γὰρ ἐστιν ἡ εἰρήνη ἡμῶν, ὁ ποιήσας
 τὰ ἀμφοτέρωθεν, καὶ τὸ μεσοπέταλον τῆ φραγμῆς
 λύσας·

15 Τὴν ἔχθραν ἐν τῇ σαρκὶ αὐτῷ, τὸ νόμον
 τῶν ἐντολῶν ἐν δόγματι καθάρσεως ἵνα τὰς
 δύο κλίτη ἐν ἑαυτῷ εἰς ἓνα καιρὸν ἄνθρωποι,
 παιῶν εἰρυνώσω.

16 Καὶ ἀποκαταστάσῃ τὰς ἀμφοτέρωθεν ἐν
 ἐνὶ σώματι τῷ Θεῷ διὰ τῆς σαρκῆς, ἀποκλεί-
 νουσ τὴν ἔχθραν ἐν αὐτῷ.

17 Καὶ ἐλθὼν διηγάρισεν εἰρυνώσω ὑμῶν
 τοῖς μακροῖς, ἐ τοῖς ἐγγύς·

18 Ὅπου αὐτῷ ἐγγυήθη τὸ ἀποσταγωγῆν οἱ ἀμ-
 φότεροι ἐν ἐνὶ πνεύματι πρὸς τὸ πατέρα.

19 Ἄρα ἔν ἐκεῖ ἐστὶ ξένοι ἐ πατριάρχια, ἀλλὰ
 συμπο-

συμπολίται τῷ ἁγίῳ καὶ οἰκείοι τῷ Θεῷ.
 20 Ἐποικροδομηθέντες ἐπὶ τῷ θεμελίῳ τῶν
 ἀποστόλων καὶ προφητῶν, ὅντιν' ἀκρογωνιαίος
 αὐτῶν Ἰησοῦς Χριστὸς.

21 Ἐν ᾧ πᾶσα ἡ οἰκοδομὴ σωματικῶς
 ἀμύνη αὐτῶν εἰς ναὸν ἅγιον ἐν Κυρίῳ.

22 Ἐν ᾧ καὶ ὑμεῖς σωικοδομεῖσθε εἰς καθι-
 κητήριον τῷ Θεῷ ἐν πνύματι.

Κεφ. γ'. 3.

1 Τούτῃ χάριτι ἐγὼ Παῦλος ὁ δέσμιος τῷ
 Χριστῷ Ἰησοῦ ὑπὲρ ὑμῶν τῶν ἐθνῶν.

2 Εἶπε ἡ χάρις τῆς οἰκονομίας τῆς χάριτος
 τῷ Θεῷ τῆς δωθείσης μοι εἰς ὑμᾶς.

3 Ὅτι καὶ ἀποκάλυψιν ἐγνώρισέ μοι τὸ μυσ-
 τήριον, (κατὰ τὴν ἀποκάλυψιν ἐν ὀλίγῳ).

4 Πρὸς ὃ δυνάσθε ἀναγιγνώσκοντες νοῆσαι τὴν
 συνέσιν μου ἐν τῷ μυστηρίῳ τῷ Χριστῷ).

5 Ὅ ἐν ἑτέροις γυνεαῖς ἐκ ἐγνωρίσθη τοῖς
 ἰσχυροῖς τῶν ἀνθρώπων, ὡς νυνὶ ἀπεκαλύφθη τοῖς
 ἁγίοις ἀποστόλοις αὐτῶν καὶ προφήταις ἐν
 πνύματι.

6 Εἶναι τὰ ἔθνη συγκληρονόμοι καὶ σύσσω-
 μα, καὶ συμμετέτοχα τῆς ἐπαγγελίας αὐτῶν ἐν
 τῷ Χριστῷ, διὰ τῆς δωθείσης.

7 Οὐ ἐξ ἡθροῦ διὰ τὴν χάριν καὶ τὴν δωρεάν τῆς
 χάριτος τῷ Θεῷ τῆς δωθείσης μοι καὶ τῆς ἐνεργείας
 τῆς δυνάμεως αὐτῶν.

8 Ἐμοὶ τῷ ἐλαχιστέρῳ πάντων τῶν ἁγίων
 ἐδόθη

- ἰδοῦν ἢ χάρις αὐτῆ, ἐν τοῖς ἔθνεσιν διαγελί-
 σαι· ἃ ἄνεξιχνίαστον πλῆστον ἔχεις,
 9 Καὶ φώτισαι πάντας τίς ἡ κρινονία ἔ-
 μυστηρίων ἃ ἀποκεκρυμμένα εἰσι ἀπὸ τῶν αἰώνων
 ἐν τῷ Θεῷ τῷ πατρὶ κἀκεῖνη ἀφ' Ἰησοῦ
 Χριστοῦ.
 10 Ἴνα γνωριῶν καὶ ταῖς δόξαις καὶ ταῖς
 ἐξουσίαις ἐν τοῖς ἐπερανοῖς, ἀφ' ἧς ἐκκλη-
 σίας, ἡ πολυποίκιλος σοφία ἔστι Θεοῦ.
 11 Κατὰ ἀρέθου τῶν αἰώνων, ἃ ἐποίησεν ἐν
 Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.
 12 Ἐν ᾧ ἔχρησεν τὴν παρρησίαν ἐν τῷ ἀποστα-
 γῆν ἐν πεποιθήσει, ἀφ' ἧς πίστεως αὐτῆ.
 13 Διὸ αἰτῶμαι μὴ ἐκκηκεῖν ἐν ταῖς θλί-
 ψεσί μου ὑπερὸν ὑμῶν, ἥτις εἰσι δόξα ὑμῶν.
 14 Τάττε χάριν καὶ ἰσχυρὰ τὰ ἰσχυρὰ μου ὡς
 τὸν πατέρα ἔχεις ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ,
 15 Ἐξ ἧς πάντα ποιησιὰ ἐν ἐργασίαις καὶ ἐπὶ γῆς
 ὀνομάζεται.
 16 Ἴνα δῶν ὑμῖν καὶ τὸ πλῆστον τῆς δόξης αὐ-
 τῆ, δωάμεν κραλασθῆναι ἀφ' ἧς πνύμε-
 ται αὐτῆ εἰς τὸ ἴσως ἀνθρώπων.
 17 Καθικῆσαι τὸν Χριστὸν ἀφ' ἧς πίστεως ἐν
 ταῖς καρδίαις ὑμῶν.
 18 Ἐν ἀγάπῃ ἱρριζωμένοι καὶ στεμελιωμέ-
 νοι· ἵνα ἐξιχύσῃτε καθάλαδοῖς σου πᾶσι
 τοῖς ἁγίοις, πὸ τὸ πλάττειν ἐμῆς, καὶ
 βάθρον ἐν ὑψοῦ,

19 Γνώται

19 Γνωῖνά τε ἃ ὑπερβάλλουσιν τῆς γνώσεως ἀγάπῃ ἔχεις· ἵνα πληρωθῆτε εἰς πάν τὸ πλήρωμα ἔχεις Θεοῦ.

20 Τὰ ἃ διωαμύρω ὑπερ πάντα ποιῆσαι ὑπερ ἐκ πειρασῶν αἰτέμεθα ἢ νοσημῶν, καὶ ἃ διώαμιν ἃ ἐνεργεμύρω ἐν ἡμῖν,

21 Αὐτῶ ἡ δόξα ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, εἰς πάσας τὰς γενεὰς ἔχει αἰῶν ἔχει αἰῶνων. Ἀμήν.

Κεφ. δ'. 4.

1 ΠΑΡΑΚΑΛῶ οὖν ὑμᾶς ἐγὼ ὁ δεσμιος ἐν Κυρίῳ, ἀξίως περιπαίησαι τῆ κλήσεως ἣς ἐκλήθητε,

2 Μετὰ πάσης ταπεινοφροσύνης ἔχει πραότητι, καὶ μακροθυμίας, ἀνεχόμενοι ἀλλήλων ἐν ἀγάπῃ·

3 Σπυδαζόντες τηρεῖν ἃ ἐνόησα ἔχει πίσυμφί, ἐν τῷ σωδέσματι τῆς εἰρήνης.

4 Ἐν σῶματι ἔχει ἐν πνεύματι, καθὼς καὶ ἐκλήθητε ἐν μιᾷ ἐλπίδι τῆς κλήσεως ὑμῶν·

5 Εἰς Κύριον, μία πίστις, ἐν βάπτισματι·

6 Εἰς Θεὸς ἔχει πατὴρ πάντων, ὁ ἐπὶ πάντων ἔχει ἀφ' πάντων, καὶ ἐν πάνσιν ὑμῖν.

7 Ἐνὶ ἃ ἐχάρισα ἡμῶν ἐδόθη ἡ χάρις καὶ τὸ μέτρον τῆς δωρεῆς ἔχει Χριστοῦ.

8 Διὸ λέγει· Ἀναβάς εἰς ὑψί, ἡχημαλάτωσεν ἀχημαλωσίαν, ἔχει ἔδωκε δόματι τῶ τοῖς ἀνθρώποις.

- 9 Τὸ ἥ, ἀνέστη, πῖ ἴσιν εἰ μὴ ὅτι καὶ κατέβη
 ἠερῶτον εἰς τὰ κατώτερα μέρη τῆς γῆς·
- 10 Ὁ κελεύθας, αὐτὸς ἐπὶ καὶ ὁ ἀναβάς ἕρω-
 εργῶν πάντων τῶν ἔργων, ἵνα πληρώσῃ τὰ
 πάντα.
- 11 Καὶ αὐτὸς ἔδωκε, τὰς μὲν, δόξαίλας,
 τὰς ἥ, ἠεροφύλας, τὰς ἥ, δὲ ἀρχιεπισκῶν, τὰς
 ἥ, ποιμνίας ἔδιδασκάλους,
- 12 Πρὸς τὸν κληρονομῶν τῶν ἁγίων, εἰς ἔργον
 ἀγαθίας, εἰς οἰκοδομὴν τοῦ σώματος τοῦ
 Χριστοῦ·
- 13 Μέχρι κληρονομητῶν οἱ πάντες εἰς τὴν
 ἐνότητά τῆς πίστεως, καὶ τὴν ἐπιγνώσεως τοῦ ἡ
 τοῦ Θεοῦ, εἰς ἀνδρα τέλειον, εἰς μέτρον ἡλι-
 κίας τοῦ πληρώματος τοῦ Χριστοῦ·
- 14 Ἴνα μηκέτι ὦμεν νήπιοι, κλυδωνιζόμενοι
 καὶ ἠεροφύλατοι παντὶ ἀνέμῳ τῶν διδασκα-
 λίας, ἐν τῇ κυθείᾳ τῶν ἀνθρώπων, ἐν παινε-
 ρίᾳ πρὸς τὸ μεθοδεῖαν τῆς τελείας·
- 15 Ἀληθεύοντες ἥ ἐν ἀγάπῃ, αὐξήσωμεν
 εἰς αὐτὸν τὰ πάντα, ὅς ἐστι ἡ κεφαλὴ, ὁ
 Χριστός·
- 16 Ἐξ ἧς πᾶν τὸ σῶμα συναρμολογούμενον ἔ-
 συμβιβασόμενον ἀπὸ πάσης ἀφῆς τῆς ἐπιτη-
 ρησίας, κατ' ἐνέργειαν ἐν μέτρῳ ἐνὸς ἑκάσ-
 τῃ μέρους τῆς αὐξήσεως τοῦ σώματος ποιῆται, εἰς
 οἰκοδομὴν ἑαυτοῦ ἐν ἀγάπῃ.
- 17 Τὸ το οὐκ λέγω, καὶ μαρτύρομαι ἐν Κυρίῳ,
 μηκέτι

μηκέτι ὑμᾶς *ωειπαίειν*, καθὼς καὶ τὰ λοι-
πὰ ἔθνη *ωειπαίει*, ἐν ματαιότητι τῶν νοῶν
αὐτῶν,

18 Ἐσκολισμένοι τῇ *ἀγνοίᾳ*, ὄντες ἀπηλ-
λοτριωμένοι τῆς ζωῆς τοῦ Θεοῦ, ἀφ' οὗ τὴν
ἀγνοίαν ἔσχον ἐν αὐτοῖς, ἀφ' οὗ ἔπλωσαν
τῆς καρδίας αὐτῶν·

19 Οἵτινες ἀπηλγησθέντες ἐαυτοὺς παρέδωκαν
τῇ ἀσελγείᾳ, εἰς ἐργασίαν ἀκαταρσίας πά-
σης ἐν πλεονεξίᾳ.

20 Ὑμεῖς ὅμως ἔχετε ἔτι τὸ *Χριστόν*·

21 εἴγε αὐτὸν ἠκούςατε, καὶ ἐν αὐτῷ ἐδιδά-
χθητε, καθὼς ἐσιν ἀλήθεια ἐν τῷ Ἰησοῦ·

22 Ἀποθέσθε ὑμᾶς καὶ τὸ *πρωτόγονον ἀνασρο-
φίον*, τὸ παλαιὸν ἄνθρωπον τὸ φθρόμενον
καὶ τὸ ἐπιθυμίας τῆς ἀπάτης·

23 Ἀνανεῶσθε ὅμως τὸ *πρόσωπον* τοῦ νοῦ ὑμῶν,

24 καὶ ἐνδυσάσθε τὸ *καμνὸν ἄνθρωπον*, τὸ
καὶ Θεὸν κληθέντα ἐν δικαιοσύνῃ καὶ ὁσιότητι
τῆς ἀληθείας.

25 Διὸ ἀποθέμενοι τὸ *ψεῦδος*, λαλεῖτε
ἀλήθειαν, ἕκαστος μὲν τὸ πλησίον αὐτοῦ· ὅτι
ἐσμὲν ἀλλήλων μέλη.

26 Ὁργίζεσθε, καὶ μὴ ἀμαρτάνετε· ὁ ἥλιος μὴ
ἐπιδύεται ἐπὶ τῷ *πυρορρισμῷ ὑμῶν*·

27 Μήτε δίδετε τόπον τῷ *ἀγαθῷ*.

28 Ὁ κλέπτης μὴκέτι κλεπτεύτω, μάλλον
ὅτι κηπιάτω, ἐργαζόμενος τὸ ἀγαθὸν ταῖς

Εε χερσίν,

χερσίν, ἵνα ἔχη μετὰ δίδωται τῷ χρεῖαν ἔχοντι.

29 Πᾶς λόγος σαπρὸς ἐν ἑστέματις ὑμῶν μὴ ἐκπορεύεσθαι ἀλλ' εἴτις ἀγαθὸς ὡς οἰκονομικῶ τῆς χρεῖας, ἵνα δαὲ χάριν τοῖς ἀκέραισι.

30 Καὶ μὴ λυπεῖτε τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον ἑστέ Θεῶ, ἐν ᾧ ἐσφραγίσθητε εἰς ἡμέραν ἀπολυτρώσεως.

31 Πᾶσα πικρία, καὶ θυμὸς, ἔδωξη, καὶ κραυγή, καὶ βλασφημία, δόξηται ἀφ' ὑμῶν, σὺ πάση κακία.

32 Γίνεσθε ἕ εἰς ἀλλήλους χρηστοί, ὁσπταγχοί, χαριζόμενοι ἑαυτοῖς, καθὼς καὶ ὁ Θεὸς εἰς Χριστῷ ἐχαρίσατο ὑμῖν.

Κεφ. εἰ. 5.

1 Γίνεσθε οὐκ μιμηταὶ ἑστέ Θεῶ, ὡς τέκνοι ἀγαπητῶ.

2 Καὶ ὡσεὶ πατεῖτε ἐν ἀγάπῃ, καθὼς καὶ Χριστὸς ἠγάπησεν ἡμᾶς, ἔ παρέδωκεν ἑαυτὸν ὑπὲρ ἡμῶν ὡς θυσίαν π Θεῷ, εἰς ὁσμικῶ δώσεως.

3 Πορνεία δὲ ἔ πάσα ἀκαθαρσία ἢ πλεονεξία μηδὲ ὀνομαζέσθαι ἐν ὑμῖν, καθὼς πρέπει ἁγίοις.

4 Καὶ αἰσχρότης, ἔ μαρολογία, ἢ ὁσπταπλία, τὰ ὅσα ἀνήθηται ἀλλὰ μάλλον ἔ χαρισία.

5 Τὸτο γάρ ἐσε γινώσκοντες, ὅτι πᾶς πό

10

ΠΡΟΣ ΕΦΕΣ. 651

ἢ ἀγάπῃ, ἢ ὡλεονέκτης, ὅς ἐστιν εἰδωλολάτρης, ὅτι ἔχει κληρονομίαν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Χριστοῦ καὶ τοῦ Θεοῦ.

6 Μηδεὶς ὑμῶς ἀπατάτω κενοῖς λόγοις. Διὰ ταῦτα γὰρ ἔρχεται ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῆς ἀπειθείας.

7 Μὴ οὖν γίνεσθε συμμετοχοὶ αὐτῶν.

8 Ἦτε γὰρ ποτε σκοτεινοί, νῦν δὲ φῶς ἐν Κυρίῳ ὡς τέκνα φωτὸς φειπαίετε·

9 (Ὅ γὰρ καρπὸς τοῦ πνόςματός ἐστιν ἐν πάσῃ ἀγαθωσύνῃ καὶ δικαιοσύνῃ καὶ ἀληθείᾳ)

10 Δοκιμάζοντες τί ἐστιν δόξα τοῦ Κυρίου.

11 Καὶ μὴ συζητῶντες τοῖς ἔργοις τοῖς ἀκαίροις τοῦ σκοτεινοῦ, μάλλον δὲ καὶ ἐλέγχετε·

12 Τὰ γὰρ κρυφῆ γνώμῃ ὑπὸ αὐτῶν, ἀχρόν ἐστι καὶ λέγειν.

13 Τὰ δὲ πάντα, ἐλεγχόμενα ὑπὸ τοῦ φωτὸς φανερῶν. πᾶν γὰρ τὸ φανερόν, φῶς ἐστὶ·

14 Διὸ λέγει Ἐξήραμ ὁ καθύδαν, καὶ ἀνάστα ἐκ τῶ νεκρῶν, καὶ ἐπιφάνησιν ὁ Χριστός·

15 Βλέπετε οὖν πῶς ἀκαίρως φειπαίετε· μὴ ὡς ἄσοφοι, ἀλλ' ὡς σοφοί·

16 Ἐξαγροζόμενοι τὸ κρυφόν, ὅτι αἱ ἡμέραι πονηραὶ εἰσι.

17 Διὰ τῆτο μὴ γίνεσθε ἄφρονες, ἀλλὰ σιωπῶντες ἐν τῷ λόγῳ τοῦ Κυρίου.

18 Καὶ μὴ μεθύσκεσθε οἴνω, ἐν ᾧ ἐστιν ἀσυνία, ἀλλὰ πληροῦσθε ἐν πνόςματι·

- 19 Λαλέντες ἑαυτοῖς ψαλμοῖς ἔθμοις, καὶ ᾠδαῖς πνευματικαῖς· ἀδόντες καὶ ψάλλοντες ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν τῷ Κυρίῳ·
- 20 Εὐχαριστοῦντες πάντοτε ὑπὲρ πάντων, ἐν ὀνόματι τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, τοῦ Θεοῦ καὶ πατρὸς·
- 21 Ὑποτασσόμενοι ἀγγέλοις ἐν φόβῳ Θεοῦ.
- 22 Αἰγυῶναικες τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν ὑποτάσσεσθε, ὡς τῷ Κυρίῳ·
- 23 Ὁ ὁ ἀνὴρ ἐστὶ κεφαλὴ τῆς γυναικὸς, ὡς ἔστι ὁ Χριστὸς κεφαλὴ τῆς ἐκκλησίας· καὶ αὐτὸς ἐστὶ σωτὴρ τοῦ σώματος·
- 24 Ἀλλ' ὡσπερ ἡ ἐκκλησία ὑποτάσσεται τῷ Χριστῷ, ἔτω καὶ αἱ γυναῖκες τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν ἐν παντί.
- 25 Οἱ ἄνδρες ἀγαπάτε ὡς γυναῖκας ἑαυτῶν, καθὼς ἔστι ὁ Χριστὸς ἠγάπησεν τὴν ἐκκλησίαν, καὶ ἑαυτὴν παρέδωκεν ὑπὲρ αὐτῆς·
- 26 ἵνα αὐτὴν ἁγιάσῃ, καθαρίζων τὴν λυπηρὰν ἐν ὕδατι ἐν ῥήματι·
- 27 ἵνα καθαρίσῃ αὐτὴν ἑαυτῷ ἐνδόξῳ τὴν ἐκκλησίαν μὴ ἔχουσαν στίλον, ἢ ρυτίδα, ἢ τι τοιοῦτον, ἀλλ' ἵνα ἡ ἁγία καθαρισθῇ.
- 28 Οὕτως ὀφείλουσιν οἱ ἄνδρες ἀγαπᾶν ὡς ἑαυτῶν γυναῖκας ὡς τὰ ἑαυτῶν σώματα· ὁ ἀγαπῶν τὴν ἑαυτοῦ γυναῖκα, ἑαυτὸν ἀγαπᾷ.

29 Οὐδεὶς

29 Οὐδείς γάρ ποτε τὴν ἑαυτοῦ σάρκα ἐμίσησεν, ἀλλ' ἐκτρέφει καὶ θάλπει αὐτήν, καθὼς ἔοικεν τῷ Κύριῳ τῷ ἐκκλησίαν·

30 Ὅτι μέλη ἐσμὲν τοῦ σώματος αὐτοῦ, ἐκ τῆς σαρκὸς αὐτοῦ, ἔκ τῶν ὀστέων αὐτοῦ.

31 Ἀντὶ τούτου καταλείψει ὁ ἄνθρωπος τὸ πατέρα αὐτοῦ καὶ τὴν μητέρα, καὶ προσκολληθήσεται πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ ἕσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν.

32 Τὸ μυστήριον τοῦτο μέγα ἐστίν, ἐγὼ ἡ λέγω εἰς Χριστὸν, ἔστι τὸ ἐκκλησίαν.

33 Πλὴν καὶ ὑμεῖς οἱ καθ' ἓνα, ἑῷ ἑαυτῶν ἑαυτῶν γυναῖκα ἕτως ἁγαπάτω ὡς ἑαυτὸν ἢ ἡ γυνὴ ἵνα φθοῖται τὸ ἄνδρα.

Κεφ. 5. 6.

1 **Τ**ὰ τέκνα ὑπακούετε τοῖς κυρίῳ ὡς ἐστὶν δεσπότης ἐν τῷ κυρίῳ, ὅτι ἐστὶν δεσπότης ἐν τῷ κυρίῳ, ὅτι ἐστὶν δεσπότης ἐν τῷ κυρίῳ.

2 Τίμα τὸν πατέρα καὶ τὴν μητέρα (ἥτις ἐστὶν ἐνθλή πρὸς τὴν ἐπαγγελίαν)

3 ἵνα οὐ σοὶ χυθῆται, ἔστι ἐξ ἡ μακροχρονίου ἐπὶ τῆ γῆς.

4 Καὶ οἱ πατέρες μὴ παροργίζετε τὰ τέκνα ὑμῶν, ἀλλ' ἐκτρέφετε αὐτὰ ἐν κυρίῳ καὶ ἐν ψαλμοῖς Κυρίου.

5 Οἱ δούλοι ὑπακούετε τοῖς κυρίοις ὡς ἐστὶν σάρκα, μὴ φόβος ἐκ τῆς ἐπιείκειας τῆς καρδίας ὑμῶν, ὡς τῷ Χριστῷ·

6 Μὴ κατ' ὀφθαλμοδουλείαν ὡς ἄνθρωποι

Εε 3 ἀρεσκοί,

ἀρεσκοί, ἀλλ' ὡς ὄφλοϊ ἔχεις, ποιῆν-
τες τὸ θέλημα ἔθει ἐν ψυχῆς,

7 Μετ' ὀνοίας δελοῦντες τῷ Κυρίῳ, καὶ
ἐν ἀνθρώποις·

8 Εἰδότες ὅτι ὁ ἐὰν ἕκαστος ποιῆσῃ ἀγα-
θόν, τὸτο κημιῆται ὡς ἔχεις ἔχεις, εἴτε
ὄφλοϊ, εἴτε ἐλούτῃ.

9 Καὶ οἱ κύριοι τὰ αὐτὰ ποιῆτε πρὸς αὐ-
τῆς, ἀνιέντες ἔκ ἀπλήρω· εἰδότες ὅτι ἐν ὑμῶν
αὐτῶν ὁ Κύριός ἐστι ἐν ἐρανοῖς, καὶ πρῶτω-
πολησία ἐν ἐπι παρ' αὐτῶν.

10 Τὸ λοιπὸν, ἀδελφοί μου, ἐνδυναμῶσθε
ἐν Κυρίῳ, ἐν τῷ κρείττῳ ἔχεις αὐτῶν.

11 Ἐνδύσασθε ἔκ πανοπλίαν ἔθει, πρὸς
τὸ δυνάσασθαι ὑμῶν ἐν ἑαυτῶν πρὸς τὰς μετῃ-
δείας ἔθει ἀφ' ὀφλοῦς.

12 Ὅτι ἐν ἐπι ἡμῶν ἡ πάλῃ πρὸς αἶμα καὶ
σάρκα, ἀλλὰ πρὸς τὰς ἀρετῆς, πρὸς τὰς ἐξ-
ουσίας, πρὸς τῆς κρηκράτορας ἔθει σκότῆς
ἔθει αἰῶν ἔθει τῆς, πρὸς τὰ πνύματικὰ ἔθει
πονηρίας ἐν τοῖς ἐκ ἐρανοῖς.

13 Διὰ τὸτο ἀναλάβετε τὴν πανοπλίαν
ἔθει ἔθει, ἵνα δυνηθῆτε ἀντικεῖσθαι ἐν τῇ ἡμέ-
ρῃ τῇ πονηρῆς, καὶ ἀπαστὰ κρηκράτορας ἀμφοῖς
ἐπι.

14 Στῆτε οὐκ ἀμφοῖς ἀμφοῖς τὴν ὄφλοῦν
ὑμῶν ἐν ἀληθείῃ, καὶ ἐνδυσάμενοι ἔθει τῷ
ὄφλοῦν ἔθει δικαιοσύνης,

15 Καὶ

- 15 Καὶ ὑποδησάμενοι τὰς πόδας ἐν ἰσχυροσύνῃ καὶ ἀγάπῃ τῆς εἰρήνης,
- 16 Ἐπὶ πάντων ἀναλαβόντες τὴν θώρακα τῆς πίστεως, ἐν ᾗ δουρήσεσθε πάντα τὰ βέλη τῆς πονηρίας καὶ πεπρωμένα σοφίας·
- 17 Καὶ τὴν ὤμοκαταστάσιν τῆς σωτηρίας δεξασθε, καὶ πάλιν μάχισθαι τὴν πύργον, ὃ ἐστὶν ῥῆμα Θεοῦ·
- 18 Διὰ πάσης προσευχῆς καὶ δεήσεως, προσκυνοῦντες ἐν πνεύματι, καὶ εἰς αὐτὸ τῆτο ἀγρυπνεῖτες ἐν πάσῃ προσκαρτερήσει καὶ δεήσει πρὸς πάντων τῶν ἀγίων,
- 19 Καὶ ὑπερῶν ἐμῶν, ἵνα μοι δοθῆι λόγος ἐν ἀνοίξει τῆς χάριτός μου ἐν παρρησίᾳ, γνωρίσθη τὸ μυστήριον τῆς διαθήκης,
- 20 ὑπερῶν ἐπεσφύω ἐν ἀλύσει, ἵνα ἐν αὐτῇ παρρησιάσωμαι, ὡς δεῖ με λαλῆσαι.
- 21 Ἴνα οἷε εἰδῆτε καὶ ὑμεῖς τὰ κατ' ἐμὲ, τί πρέσβω, πάντα ὑμῖν γνωρίσει Τυχικός ὁ ἀγαπητὸς ἀδελφὸς καὶ πιστὸς ἀφικησὼν ἐν Κυρίῳ·
- 22 Ὅτι ἐπεμψα πρὸς ὑμᾶς εἰς αὐτὸ τῆτο, ἵνα γῶτε τὰ πρὸς ἡμῶν, καὶ πνευματικῆς ζωῆς καρδίας ὑμῶν.
- 23 Εἰρήνη τοῖς ἀδελφοῖς, καὶ ἀγάπη μετὰ πίστεως ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 24 Ἡ χάρις μετὰ πάντων τῶν ἀγαπώντων τὸ

Κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν ἀφθαρσίᾳ.
 Ἀμὲν.

Πρὸς Ἐφείσις ἐγράφη ἀπὸ Γάμου
 Δ' Τυχικῶ.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ
 ἡ πρὸς Πιλιππησίους ἐπιστολή.

Κεφ. α'. 1.

- 1 **Π**ΑΥΛΟΣ καὶ Τιμόθεος δὲ-
 λοὶ Ἰησοῦ Χριστοῦ, πᾶσι τοῖς ἁ-
 γίοις ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, τοῖς ὄντι
 ἐν Φιλίπποις, σὺν ἐπισκόποις
 καὶ Διοκνήτοις·
- 2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς
 ἡμῶν καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 3 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μετὰ πάντων τῶν
 ἀγγέλων ὑμῶν,
- 4 (Πάντοτε ἐν πάσῃ δέησά με ὑπὲρ πάντων
 ὑμῶν, μετὰ χαρῆς καὶ δέησιν ποιέμενοι)
- 5 Ἐπὶ τῇ κτηνωσίᾳ ὑμῶν εἰς τὸ διαζέλιον,
 ἀπὸ παρότης ἡμέρας ἄχρι ἔτι νῦν.
- 6 Πεποιθώς αὐτὸ τέτοιο, ὅτι ὁ ἐναρξάμενος
 ἐν ὑμῖν ἔργον ἀγαθόν, ἐπιτελέσῃ ἄχρις ἡμέ-
 ρας Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 7 Καθὼς ἐστὶ δικαίωμα ἐμοὶ τέτοιο φρονεῖν ὑπὲρ
 πάντων

πάντων ὑμῶν, Διὰ τὸ ἔχην με ἐν τῇ καρ-
 δια ὑμῶν, ἐν τε τοῖς δεσμοῖς με, ἔ τῇ ἀπο-
 λογίᾳ, καὶ βεβαιώσῃ τῷ διαγγελίᾳ, συγκατα-
 νέες με τῷ χάριτι πάντας ὑμῶν ὄντας·

8 Μάρτυς γάρ με ἐστὶν ὁ Θεὸς ὡς ἐπιποθῶ
 πάντας ὑμῶν ἐν ἀπλάχνοις Ἰησοῦ Χριστοῦ·

9 Καὶ τῆτο προσεύχομαι, ἵνα ἡ ἀγάπη
 ὑμῶν ἐπὶ μάλλον ἔ μάλλον περισσούῃ ἐν
 ἐπιγνώσῃ καὶ πάσῃ αἰδοσίᾳ·

10 Εἰς τὸ δοκιμαζέσθαι ὑμῶν πρὸς Διὰ φέροντα,
 ἵνα ἦτε ἐλικρινεῖς ἔ ἀπερόσκοποι εἰς ἡμέ-
 ραν Χριστοῦ·

11 Πεπληρωμένοι καρπῶν δικαιοσύνης τῷ
 Διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, εἰς δόξαν καὶ ἔπαυτον Θεοῦ·

12 Γινώσκον ἡ ὑμῶν βέλομαι, ἀδελφοί, ὅτι
 τὰ κατ' ἐμὲ μάλλον εἰς περισσώτερον τῷ δια-
 γελίᾳ ἐλήλυθεν·

13 Ὡστε τὰς δεσμὰς με φανερὰς ἐν Χριστῷ
 γινέσθαι ἐν ὅλῳ τῷ πραιτωρίῳ, καὶ τοῖς λοι-
 ποῖς πάνσι·

14 Καὶ τὰς πλείονας τῶ ἀδελφῶν ἐν Κυρίῳ,
 πεποιθότας τοῖς δεσμοῖς με, περισσοτέρως
 τολμᾶν ἀφόβως τῷ λόγον λαλεῖν·

15 Τινὲς μὲν ἔ Διὰ φθόνον καὶ ἔριν· πινὲς δὲ
 ἔ δι' εὐδοκίαν τῷ Χριστὸν κηρύσσουσιν·

16 Οἱ μὲν ἐξ ἐριθείας τῷ Χριστὸν καταγγέλλου-
 σιν ἐκ ἀγνοίας, οἱ δὲ μὲν θλίψιν ἐπιφέρν τοῖς
 δεσμοῖς με·

- 17 Οἱ ᾧ, ἐξ ἀγάπης, εἰδότες ὅτι εἰς δόλο-
γίαν ἔδουαγγελίε κείμην.
- 18 Τί γάρ; πλὴν παντὶ τρέπω, εἴτε πρε-
φάσθ, εἴτε ἀληθεία, Χριστὸς καὶ [γάλλε].
κὴ ἐν τέτῳ χαίρω, ἀλλὰ κὴ χαρήσομαι.
- 19 Οἶδα γὰρ ὅτι τῆτό μοι δόδοθήσεται εἰς σω-
τηρίαν ἀπὸ τῶν ὑμῶν δεήσεως, κὴ ἐπιχρη-
ζίας ἔπιδύματι Ἰησοῦ Χριστοῦ,
- 20 Καὶ τὸ δόδοκαρδοκίαν ἔελπίδα μὲν,
ὅτι ἐν ἐδενὶ αἰχλωτήσομαι, ἀλλ' ἐν πάσῃ
παρρησίᾳ, ὡς πάντοτε, κὴ τῶν μεγαλωτή-
σεται Χριστὸς ἐν τῷ σώματι μου, εἴτε ἀπὸ
ζωῆς, εἴτε ἀπὸ θανάτου.
- 21 Ἐμοὶ γὰρ τὸ ζῆν, Χριστὸς, ἔτὸ δόδοθηνεῖν,
κέρδο.
- 22 Εἰ ᾧ τὸ ζῆν ἐν σαρκί, τῆτό μοι καρπὸς
ἔργου, κὴ πῆ αἰρήσομαι ἔγνωρίζω.
- 23 Σωτήριον γὰρ ἐκ τῶν δύο, πλὴν ἐπιθυμίας
ἔχων εἰς τὸ ἀναλῦσθαι, ἔσιν Χριστὸς εἶναι
πολλὰ γὰρ μάλλον κρείσσον.
- 24 Τὸ ᾧ ἐπιθυμῆν ἐν τῇ σαρκί, ἀναγκαστότερον
δι' ὑμῶν.
- 25 Καὶ τῆτο πεποιθὼς οἶδα, ὅτι μηρῶν ἔσιν συμ-
πρωτὸν μηρῶν πᾶσιν ὑμῶν, εἰς τὸ ὑμῶν πρεφά-
πλὴν κὴ χαρῶν τῆ πίστεως,
- 26 Ἰνα τὸ καύχημα ὑμῶν πρεφάσθ ἐν Χρι-
στῷ Ἰησοῦ ἐν ἐμοὶ, ἀπὸ τῶν ἐμῆς παρουσίας
πάλιν πρεφάσθ ὑμῶν.

27 Μόνον

- 27 Μόνον ἀξίως ἔδουχαλίς ἔχεις πο-
λιτεύεσθαι εἴτε ἐλθὼν καὶ ἰδὼν ὑμᾶς, εἴτε
ἀπὼν, ἀκέσω τὰ πρὸς ὑμῶν, ὅτι σήκετε ἐν
ἐνὶ πνεύματι, μιᾷ ψυχῇ σωμαθλῶντες τῇ
πίσει ἔδουχαλίς.
- 28 Καὶ μὴ πτυρόμενοι ἐν μηδενὶ ὑπὸ τῶ ἀν-
τιφροσύνῃ ἢ πρὸς αὐτοῖς μὴ εἰσὶν ἐνδοξίαι ἀπω-
λείας, ὑμῖν ἢ σωτηρίας, καὶ τὸ ἀπὸ Θεοῦ.
- 29 Ὅτι ὑμῖν ἐκαθάθη τὸ ὑπὲρ Χριστοῦ, ἔ-
μόνον τὸ εἰς αὐτὸν πιστεύειν, ἀλλὰ καὶ τὸ ὑπὲρ
αὐτοῦ πάσχειν.
- 30 Τὸν αὐτὸν ἀγῶνα ἔχοντες οἷον ἴδετε ἐν
ἐμοί, καὶ νῦν ἀκέετε ἐν ἐμοί.

Κεφ. β'. 2.

- 1 **Ε**ἴπερ οὖν ὁ ἀγάπης ἐν Χριστῷ, εἴ-
περ ὁ ἀγάπης, εἴ τις κρινω-
νία πνεύματι, εἴ τινα σπλάγχνα καὶ οἰ-
κτιροῦσι,
- 2 Πληρώσατέ με τῆ χάριτι, ἵνα τὸ αὐτὸ
φρονῆτε, τῆ αὐτῆ ἀγάπῃ ἔχοντες, σύμ-
ψυχοι, τὸ ἐν φρονεῖντες.
- 3 Μηδὲν κατ' ἐρίθην, ἢ κενοδοξίαν, ἀλλὰ
τῇ ταπεινοφροσύνῃ ἀλλήλους ἡγούμενοι ὑπο-
ερέχοντες ἑαυτῶν.
- 4 Μὴ τὰ ἑαυτῶν ἕκαστος σκοπεῖτε, ἀλλὰ
καὶ τὰ ἑτέρων ἕκαστος.
- 5 Τὸ ἀπὸ τοῦ φρονεῖσθαι ἐν ὑμῖν ὁ καὶ ἐν Χρι-
στῷ Ἰησοῦ.

6 Ὃς ἐν μορφῇ Θεοῦ ὑπάρχων, ἕχ' ἄρπα-
γμὸν ἠγάπησεν τὸ εἶναι ἴσα Θεοῖς.

7 Ἀλλ' ἑαυτὸν ἐκένωσε, μορφῶν δούλα λα-
βὼν, ἐν ὁμοιώματι ἀνθρώπων γηούμην,

8 Καὶ χήματι δύνεθεις ὡς ἀνθρώπων, ἐτα-
πέινωσεν ἑαυτὸν, γηούμην ὑπήκοον μέ-
γρι θανάτου, θανάτου ἧ σαρῶ.

9 Διὸ ὁ Θεὸς αὐτὸν ὑπερέψωσε, καὶ ἐχα-
ρίσατο αὐτῷ ὄνομα τὸ ὑπὲρ πάντων ὀνομα.

10 Ἴνα ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ πάντων γένου καὶ μύση
ἐπερρανίων ἔπιγείων καὶ καὶ χητονίων.

11 Καὶ πάντα γλώσσα ἐξομολογήσῃ ὅτι Κύ-
ριον Ἰησοῦν Χριστὸν, εἰς δόξαν Θεοῦ πατρὸς.

12 Ὡστε, ἀγαπήτεί μεν, καθὼς πάντες ὑπηκό-
σατε, μὴ ὡς ἐν τῇ παρεσσίᾳ μεν μόνον, ἀλλὰ καὶ τῷ
πολλῷ μάλλον ἐν τῇ ἀπασίᾳ μεν, μετ' φόβου
ἔτρομος ἑαυτῶν σωτηρίαν κατεργάζεσθε.

13 Ὁ Θεὸς γάρ ἐστιν ὁ ἐνεργῶν ἐν ὑμῖν ἔ τὸ
θέλην ἔ τὸ ἐνεργεῖν, ὑπὲρ τ' ὀδοκίας.

14 Πάντα ποιῆτε χωρὶς γήυσμων ἔ ἀλο-
λοχισμῶν.

15 Ἴνα γήυσθε ἀμεμπτοι καὶ ἀκέραιοι, τέ-
κνα Θεοῦ ἀμώμητα ἐν μέσῳ γήυσας σκολιᾶς
καὶ διεσραμμένης· ἐν οἷς φαίνεσθε ὡς φωστῆ-
ρες ἐν κόσμῳ.

16 Λόγον ζωῆς ἐπέροητες· εἰς καύχημα ἡμῶν
εἰς ἡμέραν Χριστοῦ, ὅτι ὄσα εἰς κενὸν ἔδρα-
μην, ἔδδ' εἰς κενὸν ἐκοπίασα.

17 Ἀλλ'

17 Ἀλλ' εἰ καὶ ἀπένδομαι ἐπὶ τῇ θυσίᾳ ἔλ-
ττεργίᾳ τῆς πίστεως ὑμῶν, χαίρω καὶ συγχαίρω
πᾶσι ὑμῖν·

18 Τὸ δὲ αὐτὸ καὶ ὑμεῖς χαίρετε, καὶ συχαί-
ρετέ μοι.

19 Ἐλπίζω ἧ ἐν Κυρίῳ Ἰησοῦ, Τιμόθεον
ταχέως πέμψαι ὑμῖν, ἵνα κατὰ δύσυχῶν,
γῆρας τὰ πρὸς ὑμῶν·

20 Οὐδένα γὰρ ἔχω ἰσόψυχον, ὅστις γνησίως
τὰ πρὸς ὑμῶν μεριμνήσῃ·

21 Οἱ πάντες γὰρ τὰ ἑαυτῶν ζητοῦσιν, ἔτι τὰ
Ἰησοῦ Χριστοῦ Ἰησοῦ.

22 Τὴν ἧ δοκιμῶν αὐτῶν γινώσκεις, ὅπως
πατρὶ τέκνον, σὺ ἐμοὶ ἐδύλοσεν εἰς τὸ
εὐαγγέλιον.

23 Τῶτον μὲν οὐκ ἐλπίζω πέμψαι, ὡς αὐ-
τίδω τὰ πρὸς ἐμὲ ἐξ αὐτῆς.

24 Πέποιθα ἧ ἐν Κυρίῳ, ὅτι ἔτι αὐτὸς τα-
χέως ἐλεύσομαι·

25 Ἀναγκάσιον ἧ ἠγοράμην Ἐπιφροδίτην τῆ
ἀδελφὸν καὶ σωεργὸν ἔτι συρακώτιν με,
ὑμῶν ἧ ἀπόστολον, καὶ λῆττεργὸν τῆς χρείας
με, πέμψαι πρὸς ὑμᾶς.

26 Ἐπίδη ἐπιποθῶν ἡμῶν πάντας ὑμᾶς, καὶ
ἀδελφῶν, διότι ἠκέσατε ὅτι ἠθένησε.

27 Καὶ γὰρ ἠθένησε πρὸς ἀπλήσιον θανάτῳ·
ἀλλ' ὁ Θεὸς αὐτὸν ἠλέησεν ἔκ αὐτὸν ἧ μόνον,
ἀλλὰ καὶ ἐμὲ, ἵνα μὴ λύπην ἐπὶ λύπῃ ἔχω.

28 Σπ8-

- 28 Σπευδασιόεως ἐν ἔπεμψα αὐτοῖς, ἵνα ἰδοῖτες αὐτὸν πάλιν, χαρῆτε, καὶ γὰρ ἄλυπότερος εἶμι.
- 29 Προσδέχεσθε ἐν αὐτὸν ἐν Κυρίῳ μετὰ πάσης χαρᾶς, καὶ τὰς τοιαύτας ἐνλήψεις ἔχετε.
- 30 Ὅτι ἂν τὸ ἔργον τοῦ Χριστοῦ μέχρι θανάτου ἤχητε, ὡς ἠδουσαί μὲν τῇ ψυχῇ, ἵνα ἀναπληρώσῃ τὸ ὑμῶν ὑστέρημα τοῦ σώματος λειτουργίας.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 **Τ**Ο λοιπὸν, ἀδελφοί μου, χαίρειτε ἐν Κυρίῳ. τὰ αὐτὰ γράφει ὑμῖν ἐμοὶ μὲν ὅσον ὀκνηρὸν, ὑμῖν ἧ ἄσφαλός.
- 2 Βλέπετε τὰς κωϊάς, βλέπετε τὰς κακὰς ἐργασίας, βλέπετε τὴν κατὰ τομὴν.
- 3 Ἡμεῖς γὰρ ἴσμεν ἡ ἀπειθεῖα, οἱ πνεύματα Θεοῦ λατρεύοντες, ἔκαστοι καὶ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, καὶ ὅσον ἐν σαρκὶ πεποιθότες.
- 4 Καίπερ ἐγὼ ἔχων πεποιθήσιν ἐν σαρκί. εἴ τις δοκεῖ ἄλλῳ πεποιθέναι ἐν σαρκί, ἐγὼ μάλλον.
- 5 Περιθερμὸν ὀκταήμερος, ἐκ γένους Ἰσραὴλ, φυλῆς Βενιαμὴν, Ἑβραῖος ἐξ Ἑβραίων, καὶ νόμον Φαρισσαῖος,
- 6 Κατὰ ζήλον διώκων τὴν ἐκκλησίαν, καὶ διηγοσύνων τὴν ἐν νόμῳ ἡρώδου ἀμεμπτότητα.
- 7 Ἀλλ' ἅπαντα ἴω μοι κέρδη, ταῦτα ἡγήμην ἂν τὸν Χριστὸν ζημίαν.

8 Ἀλλὰ

- 8 Ἀλλὰ μὲν γε ἡ γένησι πάντων ζημίαν εἶναι διὰ τὸ ὑπερέχον τῆς γνώσεως Χριστοῦ Ἰησοῦ τοῦ Κυρίου μας, δι' ὃν τὰ πάντα ἐζημιώθη, καὶ ἡ γένησι σκύδαλα εἶναι, ἵνα Χριστὸν κερδήσω,
- 9 Καὶ δὲρθεῖν ἐν αὐτῷ, μὴ ἔχων ἐμὴν δικαιοσύνην πλὴν ἐκ νόμου, ἀλλὰ τὸ διὰ πίστεως Χριστοῦ, πλὴν ἐκ Θεοῦ δικαιοσύνην ἐπὶ τῇ πίστει·
- 10 Τὸ γινώσκαι αὐτὸν, ἔτι δὲ δύνάμειν τῶν ἀναστάντων αὐτοῦ, ἔτι τὴν κριναντίαν τῶν παθημάτων αὐτοῦ, συμμετρεσθέντων τῷ θανάτῳ αὐτοῦ·
- 11 Εἰ πως καίανθήσω εἰς πλὴν ἐξανάστασιν τῶν νεκρῶν.
- 12 Οὐχ ὅτι ἤδη ἔλαβον, καὶ ἤδη τετελείωμαι· διώκω ἵνα εἰς χάριτάω, ἐφ' ᾧ καὶ καίεληφθῶ ὑπὸ τοῦ Χριστοῦ Ἰησοῦ.
- 13 Ἀδελφοί, ἐγὼ ἐμαυτὸν οὐ λογίζομαι κατελέηφέναι·
- 14 Ἐν ᾧ, τὰ μὲν ὀπίσω ἐπιλανθανόμενος, τοῖς ἵνα ἐμπροσθεν ἐπεκίφνομαι, καὶ σκοπὸν διώκω ἐπὶ τὸ βραβεῖον τῆς ἁγίας κλήσεως τοῦ Θεοῦ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.
- 15 Ὅσοι οὖν τέλει, τὸ φρονῶμεν· ἔτι πεῖτέρως φρονεῖτε, καὶ τὸ ὁ Θεὸς ὑμῖν ἀποκαλύψει.
- 16 Πλὴν εἰς ὁ ἐφθάσαμεν, τὰ αὐτὰ σοιχεῖν κανόνι, τὸ αὐτὸ φρονεῖν·

17 Συμ-

- 17 Συμμιμηταί με γίνεσθε, ἀδελφοί, καὶ σκοπεῖτε τὰς ἕτω ψευδαἰεῖνας, καὶ ὡς ἔχετε τύπον ἡμῶν·
- 18 Πολλοὶ γὰρ ψευδαἰεῖσι, ἕως πολλὰκις ἔλεγον ὑμῖν, νῦν ἤ καὶ κλαίαν λέγω, τὰς ἐχθρὰς τοῦ σωτῆρος Ἰησοῦ.
- 19 Ὡς τὸ τέλος ἀπώλεσα, ὡς ὁ θεὸς ἡ κηλίαι, καὶ ἡ δόξα ἐν τῇ αἰχμῇ αὐτῶν, οἱ τὰ ἐπίστα φρονεῖντες.
- 20 Ἡμῶν γὰρ τὸ πολίτευμα ἐν οὐρανοῖς ὑπαρχῆς, ἐξ ἧς καὶ σωτῆρος ἀπεκδεχόμεθα Κύριον Ἰησοῦν Χριστόν·
- 21 Ὃς μετασχηματίσθη τὸ σῶμα τοῦ ταπεινώσεως ἡμῶν, εἰς τὸ ὁμοιωθῆναι αὐτὸν τῷ σῶμα καὶ τῇ δόξῃ αὐτοῦ, καὶ τὸ ἐνεργῆσαι ἕνεκα αὐτῶν καὶ ὑποταξάμενος ἑαυτὸν τὰ πάντα.

Κεφ. δ. 4.

- 1 **Ἐ**στε, ἀδελφοί με ἀγαπήθῃ καὶ ἐπιποθήθῃ, καὶ ἐστὶν ὁ φανὸς με, ἕτω σήκει ἐν Κυρίῳ, ἀγαπήθῃ.
- 2 Εὐδοκίαν ἠγαθὰ καὶ Σωτήριον παρακαλῶ τὸ αὐτὸ φρονεῖν ἐν Κυρίῳ·
- 3 Καὶ ἐρωτῶ καὶ σε σύζυγε γήσῃ, συλλαμβάνε αὐταῖς, αἵτινες ἐν τῇ διαγγελίᾳ σωθῆθησάν μοι, καὶ καὶ Κλήμησι καὶ τοῖς λοιπῶν σωτηριῶν με, ὡς τὰ ἀνόμοισα ἐν βίβλῳ ζωῆς.
- 4 Χαίρετε ἐν Κυρίῳ πάντοτε· πάλιν ἐρῶ, χαίρετε.

5 Τὸ

5 Τὸ ἐπιφκῆς ὑμῶν γνωσθήτω πᾶσιν ἀνθρώποις· ὁ Κύριος ἐγγύς.

6 Μηδὲν μεριμνᾶτε· ἀλλ' ἐν παντὶ τῇ προσοχῇ καὶ τῇ δεήσει μετ' εὐχαριστίας τὰ αἰτήματα ὑμῶν γνωρίζεσθε πρὸς τὸ Θεόν,

7 Καὶ ἡ εἰρήνη ἃ Θεὸς ἡ ὑπερέχουσα πάντα ἡμῶν, φερεθήτω ἰσὺς καρδίας ὑμῶν καὶ τὰ νοήματα ὑμῶν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

8 Τὸ λοιπὸν, ἀδελφοί, ὅσα ἐστὶν ἀληθῆ, ὅσα σεμνὰ, ὅσα δίκαια, ὅσα ἀγαθὰ, ὅσα προσφιλῆ, ὅσα εὐφημα, εἴ τις δόξα καὶ εἴ τις ἐπαγγελία, ταῦτα λογίζεσθε.

9 Ἄ ἔμεσθετε ἔ παρελάβετε καὶ ἠγάπησατε καὶ εἶδετε ἐν ἐμοί, ταῦτα πράσσετε, ἔ ὁ Θεὸς τῆς εἰρήνης ἔσται μεθ' ὑμῶν.

10 Ἐχάρην ἃ ἐν Κυρίῳ μεγάλως, ὅτι ἤδη ποτὲ ἀνεθάλατε τὸ ὑπὲρ ἐμοῦ φρονεῖν· ἐφ' ᾧ καὶ ἐφρονεῖτε, ἠγαπήσατε δέ.

11 Οὐχ ὅτι καθ' ὑσέρησιν λέγω· ἐγὼ γὰρ ἔμαθον, ἐν οἷς εἶμι, αὐτάρκης εἶναι.

12 Οἶδα ἃ πενήθει, οἶδα καὶ πτωχείαν. ἐν παντὶ ἔ ἐν πᾶσι μεμύημαι καὶ χροτάζομαι ἔ πέναν, καὶ πτωχείαν καὶ ὑστερείαν·

13 Πάντα ἰχύω ἐν τῷ ἐνδυναμῆντί με Χριστῷ.

14 Πλὴν καλαῖς ἐποίησατε, συζητιωνήσαστέ με τῇ θλίψει.

Οἶδατε ἃ καὶ ὑμεῖς, Φιλιππήσιοι, ὅτι ἐν δό-

ἐν ἀρχῇ τῆς διαγγελίας, ὅτε ἐξῆλθον ἀπὸ Μακεδονίας, ἐδεμίαι μοι ἐκκλησία ἐκοινώνησεν εἰς λόγον δόσεως καὶ λήψεως, εἰ μὴ ὑμεῖς μόνοι.

16 Ὅτι καὶ ἐν Θεσσαλονίκη καὶ ἅπαξ καὶ οἱ εἰς τὴν χρείαν μοι ἐπέμψατε.

17 Οὐχ ὅτι ἐπιζητῶ τὸ δόμα, ἀλλ' ἐπιζητῶ τὸν καρπὸν τῆς πλεονάζοντος εἰς λόγον ὑμῶν.

18 Ἀπέχω δὲ πάντα, ἕως οὗ δεῖσθαι πεπληρώμα, δεξάμενος ὡς εἰς Ἐπαφροδίτη παρ' ὑμῶν, ὅς μιν δυνάσθαι, ἰσχύει δεκτικῶς, διακρίσει τὰ Θεῶν.

19 Ὁ δὲ Θεὸς με πληρώσει πάντων χρείαν ὑμῶν καὶ τὸν πλεονεκτήσει, ἐν δόξῃ, ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

20 Τὰ δὲ Θεῶν καὶ πατρὶ ἡμῶν ἡ δόξα εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων. ἀμήν.

21 Ἀσπάσασθε πάντα ἅγιον ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ. ἀσπάζοντες ὑμᾶς οἱ σὺν ἐμοὶ ἀδελφοί.

22 Ἀσπάζοντες ὑμᾶς πάντες οἱ ἅγιοι, μάλιστα δὲ οἱ ἐκ τῆς Καίσαρος οἰκίας.

23 Ἡ χάρις τῆς Κυρίας ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Φιλιππησίους ἐγράφη ἀπὸ
Ρώμης δι' Ἐπαφροδίτη.

ΠΑΥΛΟΥ

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ἢ πρὸς Κολοσσαῖς ἐπιστολή.

Κεφ. α'. Ι.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ διὰ θελήματος Θεοῦ, καὶ Τιμόθεο ὁ ἀδελφός,

2 Τοῖς ἐν Κολοσσαῖς ἀγίοις καὶ πιστοῖς ἀδελφοῖς ἐν Χριστῷ χάρις ὑμῖν ἐ ἐιρήνῃ ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

3 Εὐχαριστῶμεν τῷ Θεῷ καὶ πατρὶ ἔ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, πάντοτε ὑπὲρ ὑμῶν πρῶτον δουλοῦμενοι.

4 Ἀκόσμητες ἔ πίστεν ὑμῶν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, καὶ ἔ ἀγάπῃ ἔ εἰς πάντας τὰς ἀγίας,

5 Διὰ ἔ ἐλπίδα τῆν ἀποκρυμμένην ὑμῖν ἐν τοῖς ἔθρονοις, ἡν ὑποκρύψατε ἐν τῷ λόγῳ τῆ ἀληθείας ἔ διαγγελίας,

6 Ἐ παρόντος εἰς ὑμᾶς, καθὼς καὶ ἐν παντὶ τῷ κόσμῳ· καὶ ἐστὶ καθ' ὑποφορέμῳ, καθὼς καὶ ἐν ὑμῖν, ἀφ' ἧς ἡμέρας ἠκράσατε ἐ ἐπέγνωτε τῆν χάριν ἔ Θεοῦ ἐν ἀληθείᾳ,

7 Καθὼς καὶ ἐμαρτήτε ἀπὸ ἔ παφραῖ ἔ ἀνομιῶν σιωδ' ἔλας ἡμῶν, ὅς ἐστὶ πιστὸς ὑπὲρ ἡμῶν ἀφ' ἡμῶν ἔ Χριστοῦ.

8 Ὁ καὶ δηλώσας ἡμῖν ἔ ὑμῶν ἀγάπῃ ἐν πνύματι.

9 Διὰ τῶν καὶ ἡμεῖς, ἀφ' ἧς ἡμέρας ἠκράσαμεν,

σα μὲν, ἔ παυόμεθα ὑπὲρ ὑμῶν αἰσθ' ἀχό-
 μδροι, καὶ αἰτέρομοι ἵνα πληρωθῆτε τ' ἐπί-
 γνωσιν τ' θελήματι αὐτῶ ἐν πάσῃ σοφίᾳ
 καὶ σωίσει πνύματι κη·

10 Περιπατήσω ὑμῶς ἀξίως τ' Κυρίως εἰς
 πάντων δρέσκων, ἐν παντὶ ἔργῳ ἀγαθῷ
 καρποφορῶντες καὶ αὐξανόμενοι εἰς τὴν ἐπί-
 γνωσιν τ' Θεῶ,

11 Ἐν πάσῃ δυνάμει δυναμέδροι καὶ τὸ
 κράτι τ' δόξης αὐτῶ, εἰς πάντων ὑπομω-
 νίῳ ἐ μακροθυμίαν μετ' χαρῆς·

12 Εὐχαριστῶντες τῷ πατρὶ τῷ ἱκανώσαντε
 ἡμῶς εἰς τ' μερίδα τ' κλήρα τ' ἀγίων ἐν
 τῷ Φωτί·

13 Ὅς ἐρρύσατο ἡμῶς ἐν τ' ἐξουσίᾳ τ' σκό-
 τος, καὶ μετέστησεν εἰς τ' βασιλείαν τ' ἡῶ
 τῆς ἀγάπης αὐτοῦ,

14 Ἐν ᾧ ἔχομεν τ' ἀπολύτρωσιν ἀπὸ τ' αἰ-
 ματι αὐτῶ, τ' ἄφροσιν τ' ἀμαρτιῶν·

15 Ὅς ἐσιν εἰκὼν τ' Θεῶ τ' ἀοράτου, ἀσφα-
 τοκ τ' πάσης κτισσεως·

16 Ὅτι ἐν αὐτῷ ἐκτίσθη τὰ πάντα τὰ ἐν τοῖς
 οὐρανοῖς καὶ τὰ ἐπὶ τ' γῆς, τὰ ὄρατα καὶ τὰ
 ἀόρατα, εἴ τε θρόνοι, εἴ τε κυριότητες, εἴ τε
 δεχαί, εἴ τε ἐξουσίαι· τὰ πάντα δι' αὐτῶ καὶ
 εἰς αὐτὸν ἐκτίσθη·

17 Καὶ αὐτὸς ἐστὶ πρὸ πάντων, ἐ τὰ πάντα
 ἐν αὐτῷ σωίσηκε·

18 Καὶ

18 Καὶ αὐτὸς ἐστὶν ἡ κεφαλὴ τῆς σώματος τῆς ἐκκλησίας, ὅς ἐστιν ἡ ἄρχὴ ἡ πρωτότοκος ἐν πᾶσι νεκρῶν, ἵνα ἡγήται ἐν πᾶσιν αὐτὸς ἡρωσῶν.

19 Ὅτι ἐν αὐτῷ συνέθηκε πᾶν τὸ πλήρωμα καθεκλήσατο.

20 Καὶ δι' αὐτοῦ ἀποκαταλλάξατο πάντα εἰς αὐτὸν, ἐρλωποιήσας διὰ τῆς αἱμάτων τῆς σαρκὸς αὐτοῦ, δι' αὐτοῦ, εἴτε τὰ ἐπὶ τῆς γῆς, εἴτε τὰ ἐν τοῖς ἔρανοῖς.

21 Καὶ ὑμεῖς ποτε ὄντας ἀπηλοτισιωμένους καὶ ἐχθρὸς τῆς διανοίας ἐν τοῖς ἔργοις τοῖς πονηροῖς, νυνὶ δὲ ἀποκατήλλαξεν,

22 Ἐν τῷ σώματι τῆς σαρκὸς αὐτοῦ, διὰ τῆς θανάτου, ᾧ ἡρώσασα ὑμᾶς ἀγίας καὶ ἀμώμας ἔσμεν κλητὸς κατενώπιον αὐτοῦ.

23 Εἴ γε ἐπιμύριτε τῇ πίστι πεθεμελιωμένοι καὶ ἑδραῖοι, ἔμὴ μετὰ κινέμενοι διὰ τὴν ἐλπίδα τῆς εὐαγγελίας ἧς ἠκέσασθε, τῆς κηρυχθέντος ἐν πάσῃ τῇ κτίσει τῇ ὑπὸ τῶν ἔρανον· ἧς ἐγγύομι ἐγὼ Παῦλος διὰ τὸν Χριστόν.

24 Νῦν χαίρω ἐν τοῖς πενήμασί μου ὑμῶν, καὶ ἀνταναπαρῶ τὰ ὑπερήματα τῆς θλίψεως τῆς Χριστοῦ ἐν τῇ σαρκί μου, ὑπὲρ τῆς σώματος αὐτοῦ, ὅς ἐστιν ἡ ἐκκλησία.

25 Ἡς ἐγγύομι ἐγὼ διὰ τὸν Χριστόν καὶ τὴν οἰκονομίαν τῆς Θεοῦ, τῆς δοθείσάν μοι εἰς ὑμᾶς, πληρῶσαι τὸ λόγον τῆς Θεοῦ.

26 Τὸ μυστήριον τὸ ἀποκεκρυμμένον ἀπὸ τῶν αἰώνων ἔστι ἀπὸ τῶν ἁγίων, καὶ ἡ ἐφανερώθη τοῖς ἁγίοις αὐτῶν,

27 Οἷς ἠέληξεν ὁ Θεὸς γνωρίσαι ἡμῶν τῆς δόξης τὸ μυστήριον τούτων ἐν τοῖς ἡμέτεροις, ὅς ἐστι Χριστὸς ἐν ὑμῖν, ἡ ἐλπίς τῆς δόξης.

28 Ὅτι ἡμεῖς καὶ ἡμεῖς πάντες ἀνθρώποι, ἔσονται πάντες ἀνθρώποι ἐν πάσῃ σοφίᾳ, ἵνα ἐφανερωθῶμεν πάντες ἀνθρώποι τὸ τέλος ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

29 Εἰς ὃ καὶ καὶ ἡμεῖς, ἀγωνιζόμεθα καὶ τὴν ἐνέργειαν αὐτῶν τὴν ἐνεργουμένην ἐν ἐμοὶ ἐν δουλείᾳ.

Κεφ. β'. 2.

1 (—) Ἐλω γὰρ ὑμᾶς εἰδέναι ἠέληξεν ἀγωνία ἔχει ἀπὸ ὑμῶν, ἔστι ἐν Λαοδικείᾳ, καὶ ὅσοι ἐχέω φράσαι τὸ πρὸς ὑμᾶς ἐν σαρκί.

2 Ἴνα ἐφανερωθῶσιν αἱ καρδίαι αὐτῶν, συμβιβασθῶσιν ἐν ἀγάπῃ, καὶ εἰς πάντα πλῆθον τῆς πληροφροσύνης τῆς συνείσεως εἰς ἐπίγνωσιν τοῦ μυστηρίου τοῦ Θεοῦ καὶ πατρὸς καὶ τοῦ Χριστοῦ.

3 Ἐν ᾧ εἰσι πάντες οἱ ἡσιωμένοι τῆς σοφίας καὶ τῆς γνώσεως ἀποκρυφοί.

4 Τὸ ἔστι λέγω ἵνα μή τις ὑμῶν ἐφανερωθῆ ἐν πειρασμολογίᾳ.

5 Εἰ γὰρ ἐν τῇ σαρκὶ ἀπέμει, ἀλλὰ τὰ πνεύματα συνὸ ὑμῖν εἰμι, χαίρων ἔβλεπον ὑμῶν τὴν

τὴν πίστιν, ἔ τὸ σερῶμα τῆς εἰς Χριστὸν πί-
στεως ὑμῶν.

6 Ὡς ἔν παρελάβετε τὸ Χριστὸν Ἰησοῦν τὸν
Κύριον, ἐν αὐτῷ περιπατεῖτε·

7 Ἐρριζωμένοι ἔ ἐποιθοδομέμοι ἐν αὐτῷ,
ἔ βεβαιέμοι ἐν τῇ πίστι, καθὼς ἐδιδάχθητε,
πεποιθότες ἐν αὐτῇ ἐν ὑχαρισίᾳ.

8 Βλέπετε μή τις ὑμᾶς ἔσται ὁ συλαγωγῶν
διὰ τῆς φιλοσοφίας καὶ κενῆς ἀπάτης, καὶ τὸ
ὑψόδοσιν τῶ ἀνθρώπων, καὶ τὰ σοιχεῖα τῶ
κῆσμου, καὶ ἔ καὶ Χριστὸν.

9 Ὅτι ἐν αὐτῷ καθεκεῖ πᾶν τὸ πλήρωμα
τῆς θεότητος σωματικῶς·

10 Καὶ ἔσε ἐν αὐτῷ πεπληρωμένοι, ὅς ἐστιν
ἡ κεφαλὴ πάσης ἐκκλησίας καὶ ἐξουσίας·

11 Ἐν ᾧ καὶ περιεμήθητε περιθεμῇ ἀχρηστοποιή-
ται, ἐν τῇ ἀπεκδύσει τῶ σώματος τῶ ἀμαρτιῶν
τῆς σαρκός, ἐν τῇ περιθεμῇ τῶ Χριστοῦ·

12 Σωθῆφέντες αὐτῷ ἐν τῷ βαπτίσματι,
ἐν ᾧ καὶ σωτηρέθητε διὰ τῆς πίστεως τῆς ἐνεργείας
τῶ Θεοῦ τῶ ἐξείραντος αὐτὸν ἐκ τῶ νεκρῶν.

13 Καὶ ὑμᾶς νεκρὸς ὄντας ἐν τοῖς ὑψόδοσι-
μασι καὶ τῇ ἀκροβυσίᾳ τῶ σαρκός ὑμῶν, συν-
εζωοποίησε σὺν αὐτῷ, χαρισάμενος ὑμῖν
πάντα τὰ ὑψόδοσιμα·

14 Ἐξάλειψας τὸ καθ' ἡμῶν χροῖσταφον τοῖς
δόγμασιν, ὃ καὶ ὑπεναντίον ἡμῖν, ἔ αὐτὸ ἤρκεν
ἐκ τῶ μέλου, ὑπεσηλώσας αὐτὸ τῷ σαυραῖ,

15 Ἀπεκ-

- 15 Ἀπεκδυταίμεθα τὰς δόξαις καὶ τὰς ἐξουσίας ἰδέσθαι πρὸς ἐν παύρησιν, ἡγιασμένους αὐτοὺς ἐν αὐτοῖς.
- 16 Μὴ οὐκ τις ὑμᾶς κενύτω ἐν βρώσῃ ἢ ἐν πόσῃ, ἢ ἐν μέρῃ ἑορτῆς ἢ ἰαμβουλίας, ἢ σαββάτων·
- 17 Ἄ ἐστι σκιά τῶν μελλόντων, τὸ ἢ σώμα τῶν Χριστῶν.
- 18 Μηδεὶς ὑμᾶς καταβουβουλεύτω φέλων ἐν πεπνυροφροσυνῇ καὶ ἡρησείᾳ τῶν ἀγγέλων, ἀλλὰ μὴ εἰσέλθῃ ἐμβολίσαν, εἰκὴ φυσίμεθα ὑπὸ τῆς ἰσχύος τῆς σαρκὸς αὐτοῦ,
- 19 Καὶ ἐ κερατῶν τῶν κεφαλῶν, ἐξ ἧς πάντῃ τὸ σῶμα ἁπλῶς τῶν ἀφῶν καὶ σινδύσματων ἐπιχορηγούμενον καὶ συμκοιταζόμενον, αὐξήσῃ τὴν αὐξήσιν τῶν Θεῶν.
- 20 Εἰ οὐκ ἀπειθαίεθαι σὺ τὰ Χριστῶν λῆπὶ τῶν στοιχείων τῶν κόσμου, τί ὡς ζῶντες ἐν κόσμῳ δουλεύετε;
- 21 Μὴ ἀψῆ, μηδὲ γούρη, μηδὲ δίγης·
- 22 Ἄ ἐστι πάντα εἰς φθορὰν τῆ ἀποχρησῆς, καὶ τὴ ἐνθάλασσα καὶ διδασκαλίας τῶν ἀνθρώπων·
- 23 Ἄ πινά ἐστι λόγον μὲν ἔχοντα σοφίας ἐν ἐπιλοφρησείᾳ καὶ πεπνυροφροσυνῇ καὶ ἀφείδῃ σώματι, ὅσα ἐν πρῆνῃ ἵκει πρὸς πληρομαθῆναι τῆς σαρκὸς.

Κιφ.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Ε**ἰ οὖν σινηγήθητε τῷ Χριστῷ, τὰ ἄνω
ζητεῖτε, ὃ ὁ Χριστὸς ἐπὶ ἐν δεξιᾷ τοῦ Θεοῦ
καθήμενος.

2 Τὰ ἄνω φρονεῖτε, μὴ τὰ ἐπὶ τῆ γῆς.

3 Ἀπεικρίνετε γὰρ, καὶ ἡ ζωὴ ὑμῶν κέκρυπται
σὺν τῷ Χριστῷ ἐν τῷ Θεῷ.

4 Ὅταν ὁ Χριστὸς φανερωθῇ, ἡ ζωὴ ὑμῶν,
τότε καὶ ὑμεῖς σὺν αὐτῷ φανερωθήσεσθε ἐν
δόξῃ.

5 Νεκρώσατε οὖν τὰ μέλη ὑμῶν τὰ ἐπὶ
τῆ γῆς, πορνείαν, ἀκαθαρσίαν, πάθος, ἐπι-
θυμίαν κακὴν, καὶ τὴν πλεονεξίαν, ἧτις ἐστὶν
εἰδωλολατρεία.

6 Δι' αὐτῶν ἐρχεται ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τοὺς
ἄνθρωποις ὡς ἀποθέτας.

7 Ἐν οἷς καὶ ὑμεῖς ὡσεὶ πατήσατέ ποτε, ὅτε
ἐζητεῖτε ἐν αὐτοῖς.

8 Νυνὶ δὲ ἀπόθεσθε καὶ ὑμεῖς τὰ πάντα,
ὀργὴν, θυμὸν, κακίαν, βλασφημίαν,
αἰσχρολογίαν, ὡς ἔσμενος ὑμῶν.

9 Μὴ ψεύδεσθε εἰς ἀλλήλους, ἀπεκδυσά-
μενοι τὸ παλαιὸν ἄνθρωπον σὺν ταῖς πρά-
ξεσιν αὐτοῦ.

10 Καὶ ἐκδυσάμενοι τὸ νέον, τὸ ἀνακαινί-
σμενον εἰς ἐπίγνωσιν κατ' εἰκόνα τοῦ κλισαν-
τος αὐτόν.

11 Ὅπως οὖν ἐν Ἑλλάδι καὶ Ἰερουσαλῆμ, ὡσε-
ν

F f Θμή

ὀμὴ καὶ ἀκροουσία· βάροςⓄ, Σκύθης·
δῆλⓄ, ἐλδύτηρⓄ· ἀλλὰ τὰ πάντα καὶ ἐν
πᾶσι Χριστός.

12 Εἰδύσαοθε οὐδ', ὡς ἐκλεκτοὶ τοῦ Θεοῦ
ἄγιοι καὶ ἠγαπημένοι, σπλάγχνα οἰκτιρ-
μῶν, χρηστότητα, ταπεινοφροσύνην, πραΰ-
τητα, μακροθυμίαν·

13 Αἰτεῖσθε ἀλλήλων, καὶ χαριζόμενοι
ἑαυτοῖς, ἕως ἵνα πᾶσι ἔχη μαρτυρία·
καθὼς καὶ ὁ Χριστὸς ἠγαπήσατο ὑμῖν, ἑπὶ
καὶ ὑμεῖς.

14 Ἐπὶ πᾶσι ἡ τέτοις ἡ ἀγάπην, ἣς ἐστὶ
συμμόρφωσις τῆς τελειότητος·

15 Καὶ ἡ εἰρήνη τοῦ Θεοῦ βραβεύεται ἐν ταῖς
καρδίαις ὑμῶν, εἰς ἡμῶν καὶ ἐκλήθητε ἐν εἰ-
σώματι, καὶ δὴ χάριται γίνεσθε.

16 Ὁ λόγος τοῦ Χριστοῦ ἐνοικεῖτω ἐν ὑμῖν
πλοσίως, ἐν πίστει σοφίᾳ· διδάσκατοι καὶ
νεφελεῖς ἑαυτῶν, ψαλμοὶ καὶ ὕμνοι καὶ
ὄδαῖς πνευματικαῖς ἐν χάριτι ᾄδοντες ἐν
τῇ καρδίᾳ ὑμῶν τῷ Κυρίῳ.

17 Καὶ πᾶν ὅ, ἢ αὐτῷ ποιῆτε, ἐν λόγῳ, ἢ ἐν
ἔργῳ, πάντα ἐν ὀνόματι Κυρίου Ἰησοῦ, δι-
χαρισθεῖτες τῷ Θεῷ καὶ πατρὶ δι' αὐτῆς.

18 Αἱ γυναῖκες, ὑποτάσθε τοῖς ἰδοῖς
ἀνδράσιν, ὡς ἀτήκεν ἐν Κυρίῳ.

19 Οἱ ἄνδρες, ἀγαπάτε τὰς γυναῖκας, κα-
θὼς καὶ ὁ Χριστὸς ἠγάπησεν αὐτὰς,

20 Τὰ τέκνα, ὑπακούετε τοῖς ἡγεῖσι καὶ
πάντα· τὸτο γὰρ ἐστὶν δέουσαν τῶ Κυρίου.

21 Οἱ πατέρες, μὴ ἐρεθίζετε τὰ τέκνα ὑμῶν,
ἵνα μὴ ἀθυμῶσιν.

22 Οἱ δέσποται, ὑπακούετε καὶ πάντα τοῖς καὶ
σέρκω κυρίοις, μὴ ἐν ὀφθαλμοδουλείαις ὡς
ἀνθρώποι, ἀλλ' ἐν ἀπολόγη καρδίας,
φοβούμενοι τὸν Θεόν.

23 Καὶ πᾶν ὅ, τι ἐὰν ποιῆτε, ἐν ψυχῆς ἐργ-
άζεσθε, ὡς τῶ Κυρίῳ καὶ ὡς ἀνθρώποις·

24 Εἰδότες ὅτι ἀπὸ Κυρίου ἀπολήψεσθε τὴν
ἀναπόδοσιν τῆ κληρονομίας· τῶ γὰρ Κυρίῳ
Χριστῶ δουλεύετε.

25 Ὁ ὅ ἀδικῶν κημιέται ὁ ἠδίκησε· καὶ ὡς
ἐστὶ πρὸς τὴν ποληψία.

Κεφ. δ'. 4.

1 Οἱ κύριοι, τὸ δέουσαν καὶ τὴν ἰσότητά τοῖς
δέσποταις παρέχετε, εἰδότες ὅτι καὶ ὑμεῖς
ἔχετε Κύριον ἐν ἔρανοῖς.

2 Τῆ πρὸς οὐχὴ πρὸς καρτερεῖτε, ἡρη-
ρῆντες ἐν αὐτῇ ἐν δουλείᾳ.

3 Προσδουχόμενοι ἄμα καὶ πρὸς ἡμῶν, ἵνα ὁ
Θεὸς ἀνοίξῃ ἡμῖν θύραν τῆς λόγου, λαλήσῃ τὸ
μυστήριον τῆ Χριστοῦ, δι' ὃ ἐδέδεμεθα·

4 ἵνα φανερώσω αὐτὸ, ὡς δεῖ με λαλήσῃ.

5 Ἐν σοφίᾳ πρὸς παλῖτε πρὸς τὸς ἔξω, τὸ
καρὸν ἐξαγαθραζόμενοι.

6 Ὁ λόγος ὑμῶν πάντοτε ἐν χάριτι, ἀλλὰ

ἡγουμένῳ, εἰδέναι πῶς δεῖ ὑμᾶς ἐπὶ ἐκεί-
 σω ἀποκρίνεσθαι.

7 Τὰ κατ' ἐμὲ πάντα γνωρίσθη ἡμῖν Τυ-
 χιῶς ὁ ἀγαπητὸς ἀδελφὸς, καὶ πιστὸς Διό-
 κριῶς, καὶ σιωπῶν ἐν Κυρίῳ.

8 Ὅτι ἐπιμύσα πρὸς ὑμᾶς εἰς αὐτὸ τῆρ,
 ἵνα γνῶ τὰ πρὸς ὑμῶν, ἐπὶ ἡρακαλίσει τὰς
 καρδίας ὑμῶν.

9 Σὺν Ὀνησίμῳ τῷ πιστῷ καὶ ἀγαπητῷ
 ἀδελφῷ, ὅς ἐστιν ἐξ ὑμῶν· πάντα ὑμῶν γνω-
 ρίσαι τὰ ὧδε.

10 Ἀπτάξεται ὑμᾶς Αἰλίταρχῳ ὁ συν-
 αιχμαλώτης μῶν, ἐ Μάρκῳ ὁ ἀνεπίδους
 Βαρνάβα πρὸς ἃ ἐλάβετε ἐπιβολάς· ἐὰν ἔλθῃ
 πρὸς ὑμᾶς, δεξάσθε αὐτὸν.

11 Καὶ Ἰησοῦς ὁ λεγόμενος Ἰῦς, οἱ ὄντες
 ἐκ ἀειθροῦς· ἔτι μοῖνοι σωτηροὶ εἰς τὴν
 βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, οἵτινες ἐχρησθήσαν μοι
 παρερηθεία.

12 Ἀπτάξεται ὑμᾶς Ἐπιφροῦς ὁ ἐξ ὑμῶν
 δὲλῶ Χριστῷ, πάντοτε ἀγωνιζόμενος
 ὑπὲρ ὑμῶν ἐν ταῖς πρὸς ὁμοίαις, ἵνα εἴητε
 πέλφοι καὶ πεπωληρωμένοι ἐν παντὶ θελήματι
 τοῦ Θεοῦ.

13 Μαρτυροῦν δὲ αὐτῷ ὅτι ἐχρησθῆλον πολλοὶ ὑπὲρ
 ὑμῶν, καὶ τὸ ἐν Λαοδικείᾳ, καὶ τὸ ἐν Γεραπόλει.

14 Ἀπτάξεται ὑμᾶς Λυκίῳ ὁ ἰατρὸς ὁ ἀγα-
 πητὸς, καὶ Δημάριος.

15 Ἀπτά-

15 Απάσπετε τὸς ἐν Λαοδικείᾳ ἀδελ-
φὸς, ἔ Νυμφῶν καὶ τῶ κατ' οἶκον αὐτῶ
ἐκκλησίαν.

16 Καὶ ὅταν ἀναγνωθῆ παρ' ὑμῶν ἡ ἐπιτο-
λὴ, ποιήσατε ἵνα καὶ ἐν τῇ Λαοδικέων ἐκ-
κλησίᾳ ἀναγνωθῆ· καὶ τῶ ἐκ Λαοδικείας
ἵνα καὶ ὑμεῖς ἀναγνώπ.

17 Καὶ εἰπάτε Ἀρχίπῳ· Βλέπε, ἡ Δία-
κονίαν ἡ παρέλαβες ἐν Κυρίᾳ ἵνα αὐτῶ
πληροῖς.

18 Ὁ ἀσπασμὸς τῇ ἐμῇ χερὶ Παύλου. Μνη-
μονεύετε με τῶ δετμῶν. Ἡ χίρις μεθ'
ὑμῶν. Ἀμὲν.

Πρὸς Κολοσσαεῖς ἐγγράφη ἀπὸ Γάμου
Διά Τυχικῶ καὶ Οἰησίμου.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
ἡ πρὸς Θεσσαλονικεῖς ἐπιτολὴ πρώτη.

Κεφ. α'. Ι.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ ἡ Σιλβανὸς καὶ
Τιμόθεος τῇ ἐκκλησίᾳ Θεσ-
σαλονικίαν, ἐν Θεῷ πατρὶ,
καὶ Κυρίῳ Ἰησοῦ Χριστῶ, χάρις
ὑμῶν καὶ ἐρῶν ἀπὸ Θεῶ πατρὸς ἡμῶν
καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

F f 3

2 Εὐχα-

2 Εὐχαριστῶμεν τῷ Θεῷ πάντοτε ὡς πάντων ὑμῶν, μετὰ ὑμῶν ποιῆμενοι ἐπὶ τῷ ὡς δούλων ἡμῶν.

3 Ἀδιαλείπτως μνημονεύοντες ὑμῶν τῷ ἔργῳ τῆς πίστεως, καὶ τῷ ἔργῳ τῆς ἀγάπης, ἔτι ὑπομονῆς τῆς ἐλπίδος τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ ἔμπροσθεν τῷ Θεῷ καὶ πατρὸς ἡμῶν.

4 Εἰδότες, ἀδελφοὶ ἡγαπημένοι, ὑπὸ Θεοῦ τῆς ἐκλογῆς ὑμῶν.

5 Ὅτι τὸ διαγγέλιον ἡμῶν ὅσα ἐξηγήθη εἰς ὑμῶν ἐν λόγῳ μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐν διουσίᾳ, καὶ ἐν πνύματι ἀγίῳ, καὶ ἐν πληροφορίᾳ πολλῇ· καθὼς οἴδατε οἱ ἐξηγήτημεν ἐν ὑμῖν οἱ ὑμῶν.

6 Καὶ ὑμεῖς μιμηταὶ ἡμῶν ἐξηγήθητε ἐτὶ Κυρίῳ, δεξάμενοι τὸν λόγον ἐν εὐφροσύνῃ πολλῇ, καὶ χαρῆς πνύματος ἀγίου.

7 Ὡςτε γινώσκαι ὑμῶν τύπος πᾶσι τοῖς πιστεύουσιν ἐν τῇ Μακεδονίᾳ καὶ τῇ Ἀχαΐᾳ.

8 Ἀφ' ὑμῶν γὰρ ἐξήχηται ὁ λόγος τῷ Κυρίῳ ἐ μόνον ἐν τῇ Μακεδονίᾳ καὶ Ἀχαΐᾳ, ἀλλὰ ἐ ἐν παντὶ τόπῳ ἡ πίστις ὑμῶν ἡ ὡς τὸν Θεόν, ἐξελέλυθεν, ὥστε μὴ χρεῖαν ἡμεῖς εἶναι λαλεῖν ἡ.

9 Αὐτοὶ γὰρ ὡς ἡμῶν ἀπαγγέλλουσιν ὅποιαν εἰσοδὸν ἔχομεν ὡς ὑμῶν, καὶ πῶς ἐπερίψαιτε ὡς τὸν Θεόν ἀπὸ τῶν εἰδώλων, δαλύειν Θεῷ ζῶντι καὶ ἀληθινῷ.

10 Καὶ

10 Καὶ ἀναμνήν τ' ἕον αὐτῶ ἐκ τῶ ἔρειων,
ὃν ἤχρηεν ἐκ νεκρῶν, Ἰησοῦν τ' ἑυόμνον ἡμῶς
ἀπὸ τῆ ὀργῆς τῆ ἐρχομένης.

Κεφ. β'. 2.

1 Αὐτοὶ γὰρ οἴδατε, ἀδελφοί, πῶς εἰσοδοῦν
ἡμῶν τ' ἀπὸς ὑμῶς, ὅτι ἐκινήθησαν

2 Ἀλλὰ καὶ παρὰ τὸν καὶ ὑβριδίετε,
καθὼς οἴδατε, ἐν Φιλίπποις, ἐπιπύρησι καὶ
μετὰ ἐν τῷ Θεῷ ἡμῶν λαλήσασθαι ἀπὸς ὑμῶς
τὸ εὐαγγέλιον τῷ Θεῷ ἐν πολλῷ ἀγῶνι.

3 Ἡ γὰρ πύρησι καὶ ἡμῶν ὅτι ἐκ πλά-
νης, ἐδὲ ἐξ ἀκαταρσίας, ἔτε ἐν δόλῳ

4 Ἀλλὰ καθὼς δοκιμάσθημεν ὑπὸ τῷ
Θεῷ πισυῆσαι τὸ εὐαγγέλιον, ἔτε λαλῶ-
μεν, ἔχ ὡς ἀνθρώποις δοῖσκοντες, ἀλλὰ τῷ
Θεῷ τῷ δοκιμάζοντι τὴν καρδίαν ἡμῶν.

5 Οὔτε γὰρ ποιεῖν λόγῳ καλακείας ἐχρη-
σημεν, καθὼς οἴδατε, ἔτε ἐν παρὰ τῆς πλεονε-
ξίας· Θεὸς μαρτυρῶν.

6 Οὔτε ζητῶντες ἐξ ἀνθρώπων δόξαν, ἔτε
ἀπ' ὑμῶν, ἔτε ἀπ' ἄλλων· διωκόμενοι ἐν
βάρῃ εἶναι, ὡς Χριστοῦ ἀπόστολοι·

7 Ἀλλ' ἐχρησημεν ἡπτοὶ ἐν μέτρῳ ὑμῶν,
ὡς αὐτὸς προσφῶν τῇ τῆ ἐαυτῆς τέκνῳ,

8 Οὕτως, ἡμετέροι ὑμῶν, εὐδοκῶμεν με-
ταδῆναι ὑμῖν ἔ μόνον τὸ εὐαγγέλιον τῷ Θεῷ,
ἀλλὰ καὶ τὴν ἐαυτῶν ψυχῶν, διότι ἀγαπητοὶ
ἡμῖν γενήθητε.

F f 4 9 Μνη-

- 9 Μνημονεύετε γὰρ ἀδελφοί, τὸ κῆπον ἡμῶν
καὶ τὸ μῆλον· οὐκ ἔστι γὰρ ἡμεῖς ἐργαζόμε-
νοι, ὡς τὸ μὴ ἐπιβαρῆσαι τίνα ὑμῶν,
ἐκκηρύξαμεν εἰς ὑμᾶς τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Θεοῦ.
- 10 Ὑμεῖς μὲν οὖν καὶ ὁ Θεός, ὡς αἰσίως ἐ-
δικαίως καὶ ἀμέμεπλως ὑμῖν τοῖς πιστοῖς ἐπι-
ἐγγηθήμεν.
- 11 Κατὰ ὅσον οἴδατε ὡς ἕνα ἕκαστον ὑμῶν, ὡς
πατὴρ τέκνα ἑαυτοῦ, ὡς ἀγαπητοὺς ὑμᾶς
καὶ ὡς ἀγαπητοὺς υἱοὺς,
- 12 Καὶ μαρτυροῦμεν, εἰς τὸ ἀποκαταστήσαι
ὑμᾶς ἀξίως τοῦ Θεοῦ τοῦ καλεῖσθαι ὑμᾶς εἰς
τὴν αἰώνιον βασιλείαν καὶ δόξαν.
- 13 Διὰ τοῦτο ἡμεῖς ὑποχαρισθῆμεν τῷ Θεῷ ἀ-
διαλείπτως, ὅτι ὡς ἀγαπῶντες λόγον ἀληθείας
παρ' ἡμῶν, ὁ Θεὸς εἰδέξατο εἰς λόγον ἀνθρώ-
πων, ἀλλὰ (καθὼς ἐστὶν ἀληθῆς) λόγον Θεοῦ,
ὃς ἐνεργεῖται ἐν ὑμῖν τοῖς πιστοῖς.
- 14 Ὑμεῖς γὰρ μιμηταὶ ἐγγηθήτε, ἀδελφοί,
τοῦ ἐκκλησιαῶν τοῦ Θεοῦ τοῦ ὄντος ἐν τῇ Ἰερουσαλῆμ,
ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὅτι ταῦτα ἐπέθετε ἡμεῖς
ὑπὸ τοῖς ἰδίωσιν συμφουλατῶν, καθὼς καὶ αὐτοὶ
ὑπὸ τοῖς Ἰερουσαλιμίων.
- 15 Ταῦτα ἐστὶν τὸ Κύριον διποκρίναντων Ἰησοῦν καὶ
τὰς ἰδίους ἀποφύτας, καὶ ἡμᾶς ἐκδιωξάντων,
καὶ Θεῷ μὴ ἀρεσκόντων, ἐν παντί ἀνθρώποις
ἐναντίων.
- 16 Καλυδόνων ἡμᾶς τοῖς ἔθνεσι λαλήσασθαι εἰς
σωτῆσιν,

παύσιν, εἰς τὸ ἀναπληρῶσαι αὐτῶν τὰς
ἀμαρτίας πάντες· ἔφρασε ᾧ ἐπ' αὐτὸς ἡ
ὄργη εἰς τέλος.

17 Ἡμεῖς ᾧ, ἀδελφοί, ἀπορροφῶντες ἀφ'
ὑμῶν πρὸς καρὸν ἄρας, πρὸς ὄψιν, ἐκ καρ-
δίας, πρὸς ἐπιθυμίαν ἐπαυδάμενοι τὸ πρὸς-
ωπον ὑμῶν ἰδεῖν ἐν πολλῇ ἐπιθυμίᾳ.

18 Διὸ ἠτελήσαμεν ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς (ἐγὼ
μὲν Παῦλος) ἐκ ἀπαξ καὶ δις, καὶ ἐπέκρουσε
ἡμᾶς ὁ Σατανᾶς.

19 Τίς γὰρ ἡμῶν ἐλπίς, ἡ χαρὰ, ἡ σέφανος
καυχήσεως; ἡ ἐξὲ καὶ ὑμεῖς ἐμπροσθεν
τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐν τῇ αὐτῇ
παρουσίᾳ;

20 Ὑμεῖς γάρ ἐστε ἡ δόξα ἡμῶν καὶ ἡ χαρὰ.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Δ**ιὸ μηκέτι στήθεις, διδασκάλου κα-
ταλιφθῶσαι ἐν Ἀθῶναις μόνοι,

2 Καὶ ἐπέμψαμεν Τιμόθεον τὸν ἀδελφὸν
ἡμῶν ἐκ ἀφῆκτον τοῦ Θεοῦ καὶ συνεργὸν ἡμῶν
ἐν τῷ εὐαγγελίῳ τοῦ Χριστοῦ, εἰς τὸ στηρίξαι
ὑμᾶς καὶ κατακαλεῖσθαι ὑμᾶς πρὸς τὴν πί-
στειν ὑμῶν.

3 Ταῦτα μηδένα σήμερον ἐν ταῖς θλίψεσι ταύ-
ταις· αὐτοὶ γὰρ οἴδατε ὅτι εἰς ταῦτα κείμεθα.

4 Καὶ γὰρ ὅτε πρὸς ὑμᾶς ἦμεν, παρελέθ-
μεν ὑμῖν ὅτι κέκκομεν θλίψεσιν, κατὰ καὶ
ἐγγύς, ἐκ οἴδατε.

F f 5

5 Διδ.

- 5 Διὰ τῆτο καὶ γὰρ μηκέτι εἶχαν, ἔπεμψα εἰς τὸ γράψαι ἃ πίστεν ὑμῶν· μήπως ἐπειρασειν ὑμᾶς ὁ πειράζων, καὶ εἰς κείον γήνηται ὁ κόπος ἡμῶν.
- 6 Ἄρα ἢ ἐλθόντες Τιμοθέεωσθε ἡμᾶς ἀφ' ὑμῶν, καὶ διαχειλισθηδύνασθε ἡμῖν ἃ πίστεν ἔχετε ἀγάπην ὑμῶν, καὶ ὅτι ἔχετε μείναν ἡμῶν ἀγαθῶν πάντες, ἐπιποθεῖτες ἡμᾶς ἰδεῖν, κατὰπερ καὶ ἡμεῖς ὑμᾶς·
- 7 Διὰ τῆτο παρεκλήθημεν, ἀδελφοί, ἐφ' ὑμῖν, ἐπὶ πάσῃ τῇ θλίψει καὶ ἀνάγκῃ ἡμῶν, Διὰ τῆ ὑμῶν πίστεως·
- 8 Ὅπως νῦν ζῶμεν, ἵαν ὑμεῖς εἴκητε ἐν Κυρίῳ.
- 9 Τίνα γὰρ διαχειρίαν δυνάμεθα τῷ Θεῷ ἀναποδένασθε ὑμῶν, ἐπὶ πάσῃ τῇ χαρᾷ ἢ χαίρομεν δι' ὑμᾶς ἔμπροσθεν τοῦ Θεοῦ ἡμῶν,
- 10 Νυκτὸς καὶ ἡμέρας ὑπερεκπερασθε δειρόμενοι εἰς τοῖδεῖν ὑμῶν τὸ πρῶτον, ἔκαστην πίσσιν καὶ ὑστερήματα ἃ πίστεως ὑμῶν;
- 11 Αὐτὸς ἢ ὁ Θεὸς ἔστι πατὴρ ἡμῶν, καὶ ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς καὶ ὁμοῦται πᾶσι ὁδὸν ἡμῶν πρὸς ὑμᾶς.
- 12 Ὑμᾶς ἢ ὁ Κύριος πλεονάσαι ἔστι φεικτοσύνη τῇ ἀγάπῃ εἰς ἀλλήλους καὶ εἰς πάντας· κατὰπερ ἔστι ἡμεῖς εἰς ὑμᾶς·
- 13 Εἰς τὸ σημεῖον ὑμῶν τῆς καρδίας ἀμέμπτως

πίς ἐν ἀγιοσύῃ, ἐμπροσθεν ᾧ Θεῷ καὶ πα-
τρὸς ἡμῶν, ἐν τῇ παρουσίᾳ ᾧ Κυρίου ἡμῶν
Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ πάντων τῶν ἁγίων αὐτοῦ.

Κεφ. δ'. 4.

- 1 **Τ**ὸ λοιπὸν ἔν, ἀδελφοί, ἐρωτῶμεν ὑμᾶς
καὶ παρακαλῶμεν ἐν Κυρίῳ Ἰησοῦ, κα-
θὼς παρελάβετε παρ' ἡμῶν τὸ πῶς δεῖ ὑμᾶς
θεραπεύειν καὶ δρῆσαι Θεῷ, ἵνα σωσθήη-
τε μάλλον·
- 2 Οἶδατε γὰρ πῶς παρακαλεῖται ἐδάξασθαι
ὑμῶν Δαδ' ᾧ Κυρίῳ Ἰησοῦ.
- 3 Τὸ γὰρ ἐπιθέλημα ᾧ Θεῷ, ὁ ἁγιασμός
ὑμῶν, ἀπέχεται ὑμᾶς ἀπὸ τῆς πορνείας·
- 4 Εἰδέναι ἕκαστον ὑμῶν τὸ ἐαυτοῦ σκεῦθαι
καταστάει ἐν ἁγιασμῷ καὶ πνεύματι·
- 5 Μὴ ἐν πάθει ἐπιθυμίας, καθάπερ καὶ τὰ
ἔθνη τὰ μὴ εἰδότα τὸ Θεόν.
- 6 Τὸ μὴ ὑπερβαίνειν ἐπιθυμῶν ἐν τῷ
πράγματι τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ· διότι ἐκδικεῖ ὁ
Κύριος θεὸς πάντων τέτων, καθὼς καὶ
θεραπεύει ὑμῶν, καὶ διεμαρτυροῦμεθα.
- 7 Οὐ γὰρ ἐκάλεσεν ἡμᾶς ὁ Θεὸς ἐπὶ ἀκα-
ταρσίας, ἀλλ' ἐν ἁγιασμῷ.
- 8 Τοιγαρὲν ὁ ἀρετῶν, ὅτι ἄνθρωπον ἀρε-
τεῖ, ἀλλὰ τὸ Θεὸν τὸ καὶ δύναιτο τὸ πνεῦμα αὐ-
τοῦ τὸ ἁγιοποιεῖ ἡμᾶς.
- 9 Περὶ δὲ τῆς φιλαδελφίας ἔχετε ἡμῶν
ἔχετε γράφει ὑμῶν· αὐτοὶ γὰρ ὑμεῖς θεο-
διδασκῶν

διδακθῆτε εἰς τὸ ἀγαπᾶν ἀλλήλους.

10 Καὶ γὰρ ποιεῖτε αὐτὸ εἰς πάντας τὰς ἀδελφούς τὰς ἐν ὅλῃ τῇ Μακεδοσίᾳ· ὧσα καλῶν εἰς ὑμᾶς, ἀδελφοί, ὡς ἰσχυροὶ μᾶλλον·

11 Καὶ φιλοκμεῖσθαι ἡσυχάζειν, ἢ πρῶτον τὰ ἴδια, καὶ ἐργάζεσθαι ταῖς ἰδίαις χρείαις ὑμῶν, καθὼς ὑμῖν παρεγγέλαμεν·

12 Ἴνα ὀνειπατῆτε ὀλιγημῶς ὡς τὰς ἕξω, καὶ μηδενὸς χρείαν ἔχητε.

13 Οὐ θέλω ἵ ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί, ὡς ἔκχεριμενημένων, ἵνα μὴ λυπηθῆτε, καθὼς καὶ οἱ λοιποὶ οἱ μὴ ἔχοντες ἐλπίδα.

14 Εἰ γὰρ πιστεύομεν ὅτι Ἰησοῦς ἀπέθανε καὶ ἀνήγει, ἔπειτα ἔστι ὁ Θεὸς τὰς κριμηθέντων ἀπὸ Ἰησοῦ, ἀξίωσιν αὐτῶν.

15 Τετο γὰρ ὑμῖν λέγομεν ἐν λόγῳ Κυρίου, ὅτι ἡμεῖς οἱ ζῶντες οἱ ὀλιγοήμεροι εἰς τὴν παρουσίαν τοῦ Κυρίου, ἢ μὴ φθίσωμεν τὰς κριμηθέντων.

16 Ὅτι αὐτὸς ὁ Κύριος ἐν κελύσματι, ἐν φωτὶ ὀραθήσεται, καὶ ἐν σαλπικῇ Θεὸς λαμβήσεται ἀπ' ἐραυῶν, καὶ οἱ νεκροὶ ἐν Χριστῷ ἀναστήσονται ὡς οἱ ἄλλοι.

17 Ἐπεὶ ἡμεῖς οἱ ζῶντες οἱ ὀλιγοήμεροι, ἄμεσιν αὐτοῖς ἀρπαγησόμεθα ἐν νεφέλαις εἰς ἀπάντησιν τοῦ Κυρίου εἰς αἴρα· καὶ ἔπειτα πάντες σὺν Κυρίῳ ἐσόμεθα.

18 Ὡστε ὡς καλεῖτε ἀλλήλους ἐν τοῖς λό-
γοις τέτοις.

Κιφ. ε. 5.

1 Περὶ ἧς ἡμετέρας καὶ ἡμετέρας, ἀδελφοί,
ἡμετέρας ἔχει ὑμῖν γραφεῖσθαι·

2 Αὐτοὶ γὰρ ἀκριβοῦς οἶδατε ὅτι ἡμετέρας Κυ-
ρεῖς ὡς κλέπτης ἐν νυκτὶ, ὅπως ἔρχεται·

3 Ὅταν γὰρ λέγωσιν· Εἰρήνῃ καὶ ἀσφάλειᾳ,
τότε αἰφνιδίως αὐτοῖς ἐφίσηται ὁ ληστὴς.
ὡππερ ἡ αἰὶν τῆ ἐν γραφῇ ἐχέσθαι· καὶ ἡ μὴ
ἐκφύγασιν.

4 Ὑμεῖς ἦ, ἀδελφοί, ὅσα ἐστὶ ἐν σκοτίᾳ, ἵνα
ἡμετέρας ὑμῶς ὡς κλέπτης καὶ λαῖσθη.

5 Πάντες ὑμεῖς ὑοὶ φωτός ἐστε καὶ ὑοὶ ἡμέ-
ρας· ὅσα ἐστὶ μὴ νυκτός, ἢ δὲ σκοτός.

6 Ἄρα οὐ μὴ καθύδαμν ὡς ἔοι λοιποῖς,
ἀλλὰ ζρηγρῶμν καὶ νήφωμν.

7 Οἱ γὰρ καθύδοντες, νυκτός καθύδασι· ἔ-
οι μετυσκόμνοι, νυκτός μετύσθιν.

8 Ἡμεῖς ἦ ἡμέρας ὄντες, νήφωμν, ἐσθ-
νάμνοι ἡμετέρας πίστεως καὶ ἀγαπῆς, καὶ
ἀεικεφαλίας, ἐλπίδα σωτηρίας.

9 Ὅτι ὅσα ἔθε ἡμετέρας ὁ Θεός ἐστι ὁργίω,
ἀλλ' ἐστι σωτηρίας Διὸς ἡ Κυρία
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ·

10 Τῆ δὲ ἀποστολῆς ὑπὲρ ἡμῶν, ἵνα εἴτε
ζρηγρῶμν, εἴτε καθύδαμν, ἄμφοσιν
αὐτῶν ζήσωμν.

II Δι

- 11 Διὸ παρακαλεῖτε ἀδελφεοὺς, καὶ οἰκοδομεῖτε εἰς τὸ εἶναι, κατὰ τὴν ἀγάπην καὶ ποιεῖτε.
- 12 Ερωτῶμεν ἡμεῖς, ἀδελφοί, εἰδέναι τὰς κοπιῶντας ἐν ὑμῖν, καὶ περιεπαθεῖν ὑμῶν ἐν Κυρίῳ, ὡς καὶ ἐπαθεῖν ὑμῶν.
- 13 Καὶ ἠγάπησθε αὐτὰς ὑπερεκπερισσῶς ἐν ἀγάπῃ, διὰ τὸ ἔργον αὐτῶν. εἰρυνεύετε ἐν ἑαυτοῖς.
- 14 Παρακαλεῖμεν ἡμεῖς, ἀδελφοί, ναθεταῖτε τὰς ἀπίκτας, παρακαλεῖτε τὰς ὀλιγοψύχους, ἀντήρατε τὸ ἀδυνατῶν, μακροθυμεῖτε ὡς πᾶντες.
- 15 Ὅρατε μή τις κακὸν ἀπὸ κακῶν τι δόξῃ· ἀλλὰ πάντοτε τὸ ἀγαθὸν διώκετε καὶ εἰς ἀδελφεοὺς ὡς εἰς πάντας.
- 16 Πάντοτε χαίρετε.
- 17 Ἀδιαλείπτως προσεύχεσθε.
- 18 Ἐν παντὶ εὐχαριστεῖτε τῷ κυρίῳ Ἰησοῦ Θεῷ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ εἰς ὑμῶν.
- 19 Τὸ πνεῦμα μὴ σβέννυτε.
- 20 Προφητείας μὴ ἐξουθενεῖτε.
- 21 Πάντα δοκιμάζειτε· τὸ καλὸν κρατεῖτε.
- 22 Ἀπὸ παντὸς εἴδους πονηρῶν ἀπέχεσθε.
- 23 Αὐτὸς ὁ Θεὸς τὴν εἰρήνης ἀγάπην ὑμῶν ὀλοτελεῖς καὶ ὀλοκληροῖ ὑμῶν τὸ πνεῦμα, καὶ ἡ ψυχὴ, καὶ τὸ σῶμα ἀμέμπτως ἐν τῇ παρουσίᾳ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ τηρηθῆναι.

- 24 Πιστός ὁ κηλῶν ὑμᾶς, ὅς ἐγὼ ποιήσῃ.
 25 Ἀδελφοί, προσεύξατε ὑπὲρ ἡμῶν.
 26 Ἀσπασαθε τὰς ἀδελφὰς πάντας ἐν φι-
 λήματι ἀγίῳ.
 27 Ὁρκίζω ὑμᾶς τὸ Κύριον, ἀναγνωθῆναι
 τὴν ἐπιστολὴν πᾶσι τοῖς ἀγίοις ἀδελφοῖς.
 28 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ
 μεθ' ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Θεσσαλονικεῖς πρώτη ἐπιστολή
 Ἀπὸ Ἀθηνῶν.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
 ἡ πρὸς Θεσσαλονικεῖς ἐπιστολὴ δευτέρα.

Κεφ. α'. Ι.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ καὶ Σιλβανὸς καὶ
 Τιμόθεος τῇ ἐκκλησίᾳ Θεσ-
 σαλονικέων ἐν Θεῷ πατρὶ ἡμῶν
 καὶ Κυρίῳ Ἰησοῦ Χριστῷ.

2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνῃ ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς
 ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

3 Εὐχαρισεῖν ὀφείλομεν τῷ Θεῷ πάντοτε
 ὑπὲρ ὑμῶν, ἀδελφοί, καθὼς ἄξιόν ἐστιν, ὅτι
 ὑπεραιξάνει ἡ πίστις ὑμῶν, καὶ παροικεῖτε ἢ
 ἀγαπᾶτε ἐνός ἐκείνου πάντων ὑμῶν εἰς ἀλ-
 λήλους.

4 Ὡς

- 4 Ὡστε ἡμᾶς αὐτὰς ἐν ὑμῖν κωχῶμεθα ἐν ταῖς ἐκκλησίαις τοῦ Θεοῦ, ὑπὲρ τῆ ὑπομονῆς ὑμῶν καὶ πίστεως ἐν πᾶσι τοῖς διωγμοῖς ὑμῶν, καὶ ταῖς θλίψεσιν αἷς ἀνέχεσθε.
- 5 Ἐνδύματα τῆ δικαιοσύνης καὶ βασιλείας τοῦ Θεοῦ, ὑπὲρ ἧς καὶ πάχιστε.
- 6 Εἰσὶν δὲ ἰσχυροὶ ὡς ἡ Θεοῦ ἀνταποδῶναι τοῖς θλίψεσιν ὑμῶν θλίψιν.
- 7 Καὶ ὑμῖν τοῖς θλιβομένοις ἀνεστὶ μετ' ἡμῶν, ἐν τῇ ἀποκαλύψει τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ ἀπ' ἕρσενος μετ' ἀγγέλων δυνάμεως αὐτοῦ,
- 8 Ἐν πυρὶ φλογῶν, διδοῦντες ἐκδίκησιν τοῖς μὴ εἰδῶσι Θεόν, καὶ τοῖς μὴ ὑπακούουσιν τῇ εὐαγγελίῳ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 9 Οἵτινες δίκην ἴσχυουσιν, ὄλεθρον αἰώνιον, ἀπὸ προσώπου τοῦ Κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆ δόξης τῆ ἰσχύος αὐτοῦ.
- 10 Ὅταν ἔλθῃ ἐκδοξασθῶμεθα ἐν τοῖς ἁγίοις αὐτοῦ, καὶ σωθῶμεθα ἐν πᾶσι τοῖς πιστεύουσιν, (ὅτι ἐπισύνη τὸ μαρτύριον ἡμῶν ἐφ' ὑμᾶς) ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ.
- 11 Εἰς ὃ ἐπεσφύμεθα πάντοτε ἀεὶ ὑμῶν, ἵνα ὑμᾶς ἀξιώσῃ τῆ κλήσεως τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ πληρώσῃ πάντας εὐδοκίαν ἀγαθωσύνης, καὶ ἔργον πίστεως ἐν δυνάμει.
- 12 Ὅπως ἐκδοξασθῇ τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐν ὑμῖν, καὶ ὑμεῖς ἐν αὐτῷ,

αὐτῶν, καὶ τὸ χάρις Ἐ Θεῶ ἡμῶν, καὶ Κυρίῃ
 Ἰησοῦ Χριστῶ.

Κεφ. β'. 2.

1 Ἐρωτῶ μὲν ὑμᾶς, ἀδελφοί, ὑπὲρ τῆς
 παρουσίας Ἐ Κυρίῃ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῶ, καὶ
 ἡμῶν ἐπισυναγωγῆς ἐπ' αὐτόν,

2 Εἰς τὸ μὴ ταχέως σαλευθῆναι ὑμᾶς διὰ
 Ἐ τοὺς, μήτε ἡρεσίᾶς, μήτε δι' ἀπὸ ψύματι, καὶ
 μήτε δι' ἀλόγου, μήτε δι' ἐπιστολῆς ὡς δι' ἡ-
 μῶν, ὡς ὅτι συνέστηκεν ἡ ἡμέρα Ἐ Χριστῶ.

3 Μή τις ὑμᾶς ἐξαπατήσῃ καὶ μηδένα τρέ-
 πον ὅτι ἐὰν μὴ ἔλθῃ ἡ ἀποστασία πρῶτον,
 καὶ ἀποκαλυφθῇ ὁ ἀνθρώπος τῆ ἀμαρτίας,
 ὁ υἱὸς τῆ ἀπωλείας,

4 Ὁ ἀντικείμενος καὶ ὑπεραιρόμενος ἐπὶ
 πάντας λεγόμενος Θεὸν ἢ σέβασμα, ὡς αὐ-
 τὸν εἰς τὸ ναὸν Ἐ Θεῶ ὡς Θεὸν καλεῖσθαι, διὰ
 δεικνύμενος ἑαυτὸν ὅτι ἐστὶ Θεός.

5 Οὐ μνημονεύετε ὅτι ἐπὶ ὧν παρὸς ὑμᾶς,
 ταῦτα ἔλεγον ὑμῖν;

6 Καὶ νῦν τὸ κατέχον οἶδάτε, εἰς τὸ ἀποκα-
 λυφθῆναι αὐτὸν ἐν τῷ ἐσθλῷ καιρῷ.

7 Τὸ γὰρ μυστήριον ἤδη ἐνεργεῖ τῆ ἀνομίας,
 μόνον ὁ κατέχων ἄρτι ἕως ἐκ μέ(εχ γλήη).

8 Καὶ τότε ἀποκαλυφθήσεται ὁ ἀνόμος,
 ὃν ὁ Κύριος ἀναλώσει τῷ πνύματι Ἐ σό-
 ματι αὐτῶ, καὶ καταργήσει τῆ ἐπιφάνεια
 τῆ παρουσίας αὐτῶ.

- 9 Οὕτως ἡ πικρὰ καὶ ἐνέργουσα Σατανᾶ ἐν πείσῃ δυνάμει, καὶ σημείοις, ἐτίρασι ψεύδους,
- 10 Καὶ ἐν πάσῃ ἀπίστῃ καὶ ἀδικίᾳ ἐν τοῖς ἀποκαυθμοῖς ἀνθ' ὧν καὶ ἀγαπᾷ τὴν ἀληθείαν ὅσα ἐδέξαντο εἰς τὸ σωθῆναι αὐτούς.
- 11 Καὶ διὰ τῆτο πέμψεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς ἐνέργουσαν πλάνης, εἰς τὸ πειθεῖσθαι αὐτούς τῷ ψεύδει.
- 12 ἵνα κερθῶσι πάντες οἱ μὴ πιστεύοντες τῇ ἀληθείᾳ, ἀλλ' ὑποκρίσονται ἐν τῇ ἀδικίᾳ.
- 13 Ἡμεῖς ἡ ὀφείλομεν εὐχαρισεῖν τῷ Θεῷ πάντοτε ὑπὲρ ὑμῶν, ἀδελφοὶ ἡγαπημένοι ὑπὸ Κυρίου, ὅτι εἰς ὑμᾶς ὁ Θεὸς ἀπ' ἀρχῆς εἰς σωτηρίαν ἐν ἀγασμοῖς πνεύματι καὶ πίστι ἀληθείας.
- 14 Εἰς ὃ ἐκάλεσεν ὑμᾶς διὰ τῆς δωρεᾶς ἡμῶν, εἰς ὅπως ποιήσιν ὁδὸς τῆς Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 15 Ἄρα οὖν, ἀδελφοὶ, σῆκετε, καὶ κρατεῖτε τὰς ἐπιταγὰς αἷς ἐδιδάχθητε εἴτε διὰ λόγου, εἴτε δι' ἐπιτολῆς ἡμῶν.
- 16 Αὐτὸς ἡ ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστός, καὶ ὁ Θεὸς ὁ πατὴρ ἡμῶν ὁ ἀγαπήσας ἡμᾶς, καὶ δὲς ἡμᾶς ἀγάπην αἰωνίαν καὶ ἐλπίδα ἀγαθὴν ἐν χάριτι.
- 17 Παρακαλέσθαι ὑμῶν τὰς καρδίας, ἐστηρίξαι ὑμᾶς ἐν παντὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ ἀγαθῷ.

Κεφ.

Κεφ. γ'. 3.

1 Τὸ λοιπὸν προσέχετε, ἀδελφοί, πρὸς ἡμῶν, ἵνα ὁ λόγος τοῦ Κυρίου τρέχη, καὶ δοξάζεται καθὼς ἐστὶν πρὸς ὑμᾶς·

2 Καὶ ἵνα ῥυθῶμεν ἀπὸ τῶν ἀτόπων καὶ πονηρῶν ἀνθρώπων· ἔστι γὰρ πάντων ἡ πίστις.

3 Πιστὸς δὲ ἐστὶν ὁ Κύριος, ὃς σηρίξεν ὑμᾶς καὶ φυλάξεν ἀπὸ τοῦ πονηροῦ.

4 Πεποιθήμεν ἃ ἐν Κυρίῳ ἐφ' ὑμᾶς, ὅτι αἱ ἀγαθὰ ἔργα ὑμῶν, καὶ παιεῖτε ἐπιποιήσετε.

5 Ὅτι ὁ Κύριος καλοῦσθαι ὑμῶν ἐν καρδίᾳ εἰς τὴν ἀγάπην τοῦ Θεοῦ, καὶ εἰς ὑπομονὴν τοῦ Χριστοῦ.

6 Παραγγέλλομεν ἃ ὑμῖν, ἀδελφοί, ἐν ὀνόματι τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, σέλιξτε ὑμᾶς ἀπὸ παντὸς ἀδελφοῦ ἀτάκτως περιπαλῆντος, καὶ μὴ κατὰ τὸ ἀγαθὸν ἡμῶν παραλάβετε πῦρ ἡμῶν.

7 Αὐτοὶ γὰρ οἶδατε πῶς δεῖ μιμεῖσθαι ἡμᾶς ὅτι ὅσα ἠτεκλήσαμεν ἐν ὑμῖν.

8 Οὐδὲ δουρεὶν ἄρτον ἐφάγομεν ἀργύρου· ἀλλ' ἐν κόπῳ καὶ μόχθῳ, νύκτα καὶ ἡμέραν ἐργαζόμενοι, πρὸς τὸ μὴ ἐπιδοαρῆσαι τινα ὑμῶν.

9 Οὐχ ὅτι ὅσα ἔχομεν ἐξουσίαν, ἀλλ' ἵνα ἑαυτῆς τύπον δώμεν ὑμῖν εἰς τὸ μιμεῖσθαι ἡμᾶς.

10 Καὶ γὰρ ὅτε ἦμεν πρὸς ὑμᾶς, τῆτο παρεγγέλλο-

ἡ γέλοισι ὑμῖν, ὅτι εἰ τις ἔχει ἐργάζεσθαι,
μηδὲ ἐοδῆεν.

11 Ἀκόσμη γὰρ ἵνασ ἀειπαῖσις ἐν ὑμῖν
ἀτάκτως, μηδὲν ἐργαζομένης, ἀλλὰ ἀειεργ-
αζομένης.

12 Τοῖς ἃ ποιήτοις ἀφ' ἡμῶν γέλοισι, καὶ πα-
ρακαλῶμεν διὰ τῆς Κυρίας ἡμῶν Ἰησοῦ Χρι-
στοῦ, ἵνα μετ' ἰσυχίας ἐργαζομένη, τὴν ἑαυτῶν
ἀρετὴν ἐοδίωσι.

13 Ὑμεῖς ἃ, ἀδελφοί, μὴ ἐκκακήσητε κα-
λοποιῶντες.

14 Εἰ δέ τις ἔχει ὑπακὴν τῷ λόγῳ ἡμῶν διὰ
τῆς ἐπιστολῆς, τῆτοι σημειῶσθε· καὶ μὴ σιωπῶσα-
μίγησθε αὐτῷ, ἵνα ἐντραπῆ.

15 Καὶ μὴ ὡς ἐχθροὶ ἠγείσθε, ἀλλὰ ὡς ἀδελφοί.

16 Αὐτὸς ἃ ὁ Κύριος τῆς εἰρήνης δάη ὑμῖν τὴν
εἰρήνην διὰ πάντων ἐν παντὶ χρόνῳ. ὁ
Κύριος μετ' πάντων ὑμῶν.

17 Ὁ ἀσπασμὸς τῆς ἐμῆς χειρὸς Παύλου, ὃ ἵσθι
σημῆιοι ἐν πάσῃ ἐπιστολῇ· ἔτω χάρις·

18 Ἡ χάρις ἃ Κυρίας ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μετ'
πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Θεσσαλονικεῖς, δεύτερη ἐπιγραφή
ἀπὸ Ἀθηνῶν.

ΠΑΥΛΟΥ

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ἢ πρὸς Τιμόθεον ἐπιστολὴ πρώτη.

Κεφ. α'. ι.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ καὶ ἐπιταγὴν Θεοῦ σωτῆρος ἡμῶν καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ, τῆς ἐλπίδος ἡμῶν,

2 Τιμοθέω γνησίῳ τέκνῳ ἐν πίστι, χάρις, εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς ἡμῶν, καὶ Χριστοῦ Ἰησοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.

3 Καθὼς παρεκάλεισά σε πρὸς μένειν ἐν Ἐφέσῳ, προσύδρῳ εἰς Μακεδονίαν, ἵνα ὡς ἀγγελίης πιστὴ μὴ ἐτροδιδασκαλεῖν·

4 Μὴ δὲ ὡς σέχην μύθοις καὶ ἡσοκαλοῦσιν ἀπεράντοις, αἵτινες ζητήσεις παρέχουσι μάλλον ἢ οἰκονομίαν Θεοῦ τὴν ἐν πίστι.

5 Τὸ τὸ τέλος τῆς ἀγγελίας ἐστὶν ἀγάπη ἐκ καθαρῆς καρδίας, καὶ συνειδήσεως ἀζαήτης, ἐ πίστεως ἀνυποκρίτου·

6 Ὡς ἴνες ἀσοχήσαιτες, ἐξετέθησαν εἰς μάταιον λόγιον·

7 Θέλοντες εἶναι νομοδιδάσκαλοι, μὴ νοῦντες μήτε ἀ λέγουσι, μήτε ὡς πῶν διὰ βεδοαίνονται.

8 Οἶδα μὲν ὅτι καλὸς ὁ τόμος, εἰάν τις αὐτῷ νομίμως χρῆται.

9 Εἰδώς

- 9 Ειδώς τῆτο, ὅπ' διηγήω ἰομῶ εἰ κῆται,
 ἀνόμοις ἢ κῆ ἀνυποτάκτοις, ἀσεβέσι, ἔ αμαρ-
 τωλοῖς, ἀνοσίοις κῆ βεβήλοισ, πατρικαλώαις
 ἔ μητρικαλώαις, ἀνδραφόνοις,
- 10 Πόρνοις, δρσενονογίταις, ἀνδραποδιστάς,
 ψδύταις, ἐπιόρησις, ἔ εἰ πῆτερον τῆ ὕλαι-
 νύση οἰδασκαλία ἀνέκῆται
- 11 Κατὰ τὸ διάγγλιον τῆ δόξης τῆ μακα-
 ρία Θεῶ, ὃ ἐπισθῆλυ ἐγώ.
- 12 Καί χάρην ἔχω τῆ ἐνδυναμώσαντί με
 Χριστῷ Ἰησοῦ τῆ Κυρία ἡμῶν, ὅπ' πιστῶν με
 ἠγάπησῃ, ἡμῶν εἰς Δρακονία.
- 13 Τὸν πρῶτον ὄνα βλάσφημον κῆ διά-
 κτῆν ἔ ὕορις λῶ ἀλλ' ἠλεήθῆν, ὅπ' ἀγνοῶν
 ἐποίησα ἐν ἀπιστία
- 14 Ὑπερωλεόνασε δὲ ἡ χάρη τῆ Κυρία
 ἡμῶν μετ' πίστεως κῆ ἀγάπης τῆ ἐν Χριστῷ
 Ἰησοῦ.
- 15 Πιστὸς ὁ λόγος, ἔ πείσης ἀποδοχῆς ἀξίος,
 ὅπ' Χριστὸς Ἰησοῦς ἦλθεν εἰς τῆ κῆσμον ἀμαρ-
 τάλῃς σῶσαι, ὡν πρῶτῆς εἰμι ἐγώ
- 16 Ἀλλὰ Δεῖ τῆτο ἠλεήθῆν, ἵνα ἐν ἐμοῖ
 πρῶτῶ ἐνδείξῆται Ἰησοῦς Χριστὸς τῆ πῶσαν
 μακροθυμίαν, πρὸς ὑποτύπωσιν τῆ μιλλόν-
 των πιστῶν ἐπ' αὐτῶ εἰς ζωὴν αἰώνιον.
- 17 Τῶ ἢ βασιλεῖ τῆ αἰώνων ἀφθάρτα, ἀο-
 ρῶτα, μόνῳ σοφῷ Θεῷ πρῆ ἔ δόξα εἰς τῆς
 αἰῶνας τῆ αἰώνων. Ἀμήν.

18 Ταύτην τ' ἀρχιερίαν ἀρχιερέμαί
 σοι, τέκνον Τιμόθεε, καὶ τὰς παραγέσας ἐπί
 σε περιφησίας, ἵνα ἐρασίῃ ἐν αὐταῖς τῶν
 καλῶν ἐρασίαν.

19 Ἐχόν πίσιν ἐ ἀγαθῶν σωείδησιν, λυγροὺς
 ἀπώσαμφοι, ἀεὶ τ' πίσιν ἐνωάγησαν.

20 Ὡν ἐσιν Ὑμνραῖος καὶ Ἀλέξανδρος· ἃς
 παρέδωκα τῷ Σαταναῖ, ἵνα παυδύτωσι μὴ
 βλασφημεῖν.

Κεφ. β'. 2.

1 ΠΑΡΑΚΑΛΩ ἔν περιπτον πάντων ποιείω
 δεήσας, προσεύχας, ἐνδύξας, δὺχαρι-
 σίας ὑπὲρ πάντων ἀνθρώπων.

2 Ὑπὲρ βασιλέων καὶ πάντων τ' ἐν ὑπερο-
 χῇ ὄντων· ἵνα ἡρέμων καὶ ἡσύχων βίον ἀφ-
 ζωμῶν ἐν πάσει δὺσεβείᾳ ἐσεμνότη.

3 Τῆτο γὰ καλὸν ἐ ἀπόδεκτον ἐνώπιον τ'
 σωτῆρος ἡμῶν Θεῶ.

4 Ὅς πάντας ἀνθρώπους θέλει σωθῆναι, καὶ
 εἰς ἐπίγνωσιν ἀληθείας ἐλθεῖν.

5 Εἰς γὰ Θεὸς, εἰς καὶ μεσίτης Θεῶ καὶ ἀν-
 θρώπων, ἀνθρώπος Χριστὸς Ἰησοῦς.

6 Ὁ δὲς ἐαυτὸν ἀνέκλυτον ὑπὲρ πάντων,
 τὸ μαρτύριον καρτοῖς ἰδοῖς.

7 Εἰς ὃ ἐτέθην ἐγὼ κήρυξ καὶ ἀπόστολος,
 (ἀλήθειαν λέγω ἐν Χριστῷ, ἐψύδομα) δι-
 δασκαλὸς ἐθνῶν ἐν πίσει καὶ ἀληθείᾳ.

8 Βέλομα οὐκ προσεύχεσθαι τὸς ἀνδρας
 ἐν

ἐν παντὶ πέπρω, ἐπαίρειται ὅστις χεῖρας χω-
ρεῖς ἔργῃς καὶ ἀγαλογομεῖ.

9 Ὡπιώτως καὶ ταῖς γυναῖκας ἐν καθαροτῇ
κρομίῳ, μὴ αἰδῆς ἔστω φροσιῶν κρομίῳ
ἑαυταῖς, μὴ ἐν πλεῖσμασι, ἢ χρυσῶ, ἢ μαρ-
μαρίταις, ἢ ἰματισμοῖς πολυτελεῖ.

10 Ἀλλ' (ὁ πρέπῃς γυναιξὶν ἐπαγγελμασίαις
θεοσεύσαι) δι' ἔργων ἀγαθῶν.

11 Γυνὴ ἐν ἡσυχίᾳ μαθητεύτω ἐν κυρίῳ
ὑποταγῇ.

12 Γυναικὶ ἡ διδασκίαν ἔστω ἐπιτρέπω, ἡ δὲ
αὐτῆσιν ἀνδρῶς, ἡ καὶ εἶναι ἐν ἡσυχίᾳ.

13 Ἀδάμ ἡ πρώτη ἐπλάσθη, εἶτα Εὐα.

14 Καὶ Ἀδάμ ἔστω ἡ πατήρ· ἡ δὲ γυνὴ
ἀπακτεῖται, ἐν ὑποταγῇ ἡσυχίᾳ.

15 Σωθήσεται ἡ ἀγάπη τῆς κεκοσμίαις, ἵνα
μένωσιν ἐν πίστι καὶ ἀγάπῃ ἔστω ἀγαλογομεῖ
σφροσιῶν.

Κεφ. γ'. 3.

1 Πίστες ὁ λόγος· εἴ τις ἐπισκοπῆς ὀρέξε-
ται, καλῶς ἔργα ἐπιθυμεῖ.

2 Δεῖ ἔν τῳ ἐπίσκοπον ἀνεπίληπτον εἶναι·
μίας γυναικὸς ἀνδρῶς, τηφάλιον, σφροσιῶν
κρομίον, φιλόξενον, διδασκικόν·

3 Μὴ πάρονον, μὴ πλεῖστον, μὴ αἰχρο-
κερδῆ· ἀλλ' ἐπίκῃ, ἀμαχαν, ἀφιλάργυρον·

4 Τῶ ἰδίῳ οἴκῳ καλῶς περιεταμίωται, τέκνα
ἔχοντα ἐν ὑποταγῇ καὶ πάσης σεμνότητι·

5 (Εἰ

ΠΡΟΣ ΤΙΜΟΘ. Α. 697

5 (Εἰ δὲ τις τῶν ἰδίων οἴκων ᾤκησεν ἢ κληρονομήσῃ, ἢ ἐκ οἴκου ἢ ἐκ κληρονομίας Θεοῦ ἐπιμελήσεται)

6 Μὴ νεόφυτον ἵνα μὴ τυφωθεῖς, εἰς κληρονομίαν ἐμπόρου ἢ ἀφροδισίων.

7 Δεῖ δὲ αὐτὸν καὶ μαρτυρίαν καλὰν ἔχειν, ἵνα μὴ εἰς ἀνομιάν ἐμπίσῃ καὶ παγίδα ἢ ἀφροδισίων.

8 Διακόνους ὡσπύτως σεμένους, μὴ διλόγους, μὴ οἴνω παλαιῶν ᾤκησεν, μὴ αἰσχροκερδεῖς.

9 ἔχοντας τὸ μυστήριον τῆς πίστεως ἐν καρτερῶν σιωπῇ.

10 Καὶ οἱ δὲ δοκιμαζέσθωσαν ἑαυτοὺς, εἴτε ἀφροδισίων, ἀνέκλητοι ὄντες.

11 Γυναικάς ὡσπύτως σεμένους, μὴ ἀφροδισίων, νηφαλίους, πιστὰς ἐν παντί.

12 Διάκονοι ἔστωσαν μιᾶς γυναικὸς ἄνδρες, τέκνων καλῶν ᾤκησεν ἀμφότεροι καὶ τῶν ἰδίων οἴκων.

13 Οἱ γὰρ καλῶς ἀφροδισίων, βαθμὸν ἑαυτοῖς καλὸν ᾤκησεν, καὶ πολλὴν παρρησίαν ἐν πίστει τῇ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

14 Ταῦτά σοι γράφω, ἐλπίζων ἐλθεῖν πρὸς σε πρῶτον.

15 Ἐάν τις βραδύνα, ἵνα εἰδῆς πῶς δεῖ ἐν οἴκῳ Θεοῦ ἀναστέφασθαι, ἢ πῶς ἐστὶν ἐκκλησία Θεοῦ ζώντος, σὺλθε ἐδραίωμα τῆς ἀληθείας.

16 Καὶ ὁ μολοσθῆναις μέγα ἐστὶ τὸ τῆς ἀπιστίας

Gg βείκας

βείας μυσήριον· Θεὸς ἐφανερώθη ἐν σαρκί,
ἐδοκίμάθη ἐν πνύματι, ὤφθη ἀγγέλοις,
ἐκηρύχθη ἐν ἔθνεσιν, ἐπιστάθη ἐν κῆρυγι,
αἰνελήθη ἐν δόξῃ.

Κεφ. δ'. 4.

- 1 **Τ**ὸ ἅ πνεῦμα ῥητῶς λέγει ὅτι ἐν ὑτέροις
καιροῖς διποσήσονται ἱκανοὶ τῆς πίστεως,
πρωτεύοντες πνύμασι πλάνοισι, καὶ διδασκα-
λίαις δαιμονίων,
- 2 Ἐν ὑποκρίσει ψευδολόγων, κεκαυτηρια-
σμένων ἢ ἰδίᾳ σιωπῆσιν,
- 3 Κωλυόσιν γαμῖν, ἀπίχεσθ βρωμάτων
ἃ ὁ Θεὸς ἐκίστην εἰς μετέληψιν μετ' εὐχαρι-
στίας τοῖς πιστοῖς καὶ ἐπιγνωθῆσι ἢ ἀλήθειαν·
- 4 Ὅτι πᾶν κῆρυγμα Θεῶ καλόν, καὶ ἔδεν
ἀπόβλητον, μετ' εὐχαριστίας λαμβανόμενον·
- 5 Ἀγαζέται γὰρ ἀπὸ λόγου Θεῶ καὶ ἐν-
τὸύξιος.
- 6 Ταῦτα ὑποκρίμενοι τοῖς ἀδελφοῖς,
καλὸς εἶση ἀπὸ κῆρυγμα Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐν τρεφό-
μενοι τοῖς λόγοις τῆς πίστεως, ἔτ' καλῆς δι-
δασκαλίας, ἢ παρεκτροπῆς.
- 7 Τὸς ἅ βεβήλους ἔγραυδὲς μύθος παραι-
τῆ· γυμναζεῖ ἅ σεαυτὸν πρὸς εὐσεβίαν·
- 8 Ἡ γὰρ σωματικὴ γυμνασία πρὸς ὀλίγον
ἐστὶν ὠφέλιμος· ἡ δὲ εὐσεβία πρὸς πάντα
ὠφέλιμος ἐστὶν, ἐπαγγελίαν ἔχουσα ζωῆς τῆς
αἰῶ καὶ τ' μελλούσης.

9 Πιστὸς

- 9 Πιστός ὁ λόγος καὶ πάσης ἀποδοχῆς ἀξιόσπουδος.
- 10 Εἰς τὸ γὰρ καὶ κοπιῶντες ἐσὶν διζόμενοι, ὅτι ἠλπίζομεν ἐπὶ Θεῷ ζῆναι, ὅς ἐστι σωτὴς πάντων ἀνθρώπων, μάλιστα πιστῶν.
- 11 Παραγγίλλω ταῦτα καὶ διδάσκω.
- 12 Μηδεὶς σε τ' νεότητος καὶ ἀφροσύνης, ἀλλὰ τύπος γένηται πιστῶν ἐν λόγῳ, ἐν ἀναστροφῇ, ἐν ἀγάπῃ, ἐν ἐπιθυμίᾳ, ἐν πίστει, ἐν ἀγνείᾳ.
- 13 Ἔως ἔρχομαι πρὸς σε τῆ ἀναγνωσῆς, τῆ ᾠδακλήσεως, τῆ διδασκαλίας.
- 14 Μὴ ἀμελήσῃς ἐν σοὶ χειρίσμασιν, ὅ ἐστιν σοὶ διὰ σωτηρίας, μὴ ἐπιθέσεως τ' χρεῶν ἢ πρεσβυτερίας.
- 15 Ταῦτα μελέτω, ἐν ταῖς ἰατρικαῖς ἵνα σοὶ ἡ σωτηρία φανερά ᾖ ἐν πάντιν.
- 16 Ἐπιχεύω ταῦτα, καὶ τῆ διδασκαλίας ἐπιμαρτυροῦμαι αὐτοῖς. τὸ γὰρ ποιῶν, ἐσται τὸν σώσει καὶ τὸς ἀκούσας αὐτοῦ.

Κεφ. ε'. 5.

- 1 Πρεσβυτέρων μὴ ἐπιωλήθης, ἀλλὰ ᾠδακλήσῃς ὡς πατέρα νεωτέρων, ὡς ἀδελφούς.
- 2 Πρεσβυτέρων, ὡς μητέρων νεωτέρων, ὡς ἀδελφούς, ἐν πάσῃ ἀγνείᾳ.
- 3 Χήρας ἡμᾶς ὡς ὄντως χήρας.
- 4 Εἰ δέ τις χήρα τέκνα ἢ ἐκθρῆνα ἔχει, μαρτυρήτωσαν πρῶτον τ' ἴδιον εἶχον ὅτι βεβῆται, καὶ ἀμειβασὶ ἀποδοῖναι τοῖς ἀγαθοῖς. τὸ γὰρ

G 5 2 γὰρ

- γάρ ἐσι καλὸν ἔλπομεν ἐνώπιον Ἐ. Θεῶ.
 5 Ἡ δὲ ὄντως χήρα κ' μεμνημένη ἠλπίκει
 ἐπὶ τῷ Θεῷ, ἔσπευε μὲν ταῖς δεήσεσιν, κ' ταῖς
 προσεύχαῖς νυκτὸς ἔημέρας.
 6 Ἡ δὲ παλαιῶσα, ζῶσα τέθηκε.
 7 Καὶ ταῦτα ᾠδὴν ᾄδουσα, ἵνα ἀεπίλη-
 πτοι ᾦσιν.
 8 Εἰ δέ τις τῷ ἰδίῳ κ' μαρίστῳ τῷ οἰκίῳ ἔ-
 προνοεῖ, τῷ πίστι ἤρη), ἔ ἐστι ἀπίστ' χήραν.
 9 Χήρα καὶ λεγέσθω μὴ ἔλαττον ἐτῶν ἐξή-
 κοντα, γηρῆνα ἐνὸς ἀνδρὸς γυνή.
 10 Ἐν ἔργοις καλοῖς μαρτυρεμένη, εἰ ἐτεκο-
 τσόφησεν, εἰ ἐξενοδύχησεν, εἰ ἀγίων πόδας
 ἐνύψεν, εἰ θλίβομένοις ἐπήρηκεσεν, εἰ παντὶ
 ἔργῳ ἀγαθῷ ἐπικηλόθησεν.
 11 Νεωτέρας δὲ χήρας παραίτῃ· ὅταν γὰρ κα-
 ταστρώσι ἀσπασί Ἐ. Χριστῷ, γαμεῖν θέλωσιν.
 12 Ἐχουσα κριμα, ὅτι τινὲς ἀσπίστῳ πίστι
 ἠέτησιν.
 13 Ἄμα δὲ ἔ δόξα μανθάνουσι ἀεινήματα
 τῆς οἰκίας· ἔ μόνον δὲ δόξα, ἀλλὰ ἔ φλό-
 αροι κ' ἀείεργαι, λαλέσουσι τὰ μὴ δέοντα.
 14 Βέλομα ἐν νεωτέρας γαμεῖν, τεκνογο-
 νεῖν, οἰκοδομοῦσιν, μηδ' αἰμῶν ἀφορμῶν δι-
 δόναι τῶ ἀντικείμενῳ λοιδορίας χείρ.
 15 Ἡδὴ γάρ τις ἐξέτασάπησαν ὀπίσω Ἐ.
 Σαταναῖ.
 16 Εἰ τις πιστὸς ἢ πιστὴ ἔχ' χήρας, ἐπαρκείτω
 αὐταῖς,

ΠΡΟΣ ΤΙΜΟΘ. Α. 701

αὐταῖς, κὴ μὴ βαρέσθω ἡ ἐκκλησία, ἵνα
ταῖς ὄντως χήραις ἐπιρρέσῃ.

17 Οἱ καλῶς περυσῶτες πρεσβύτεροι δι-
πλῆς ἡμῆς ἀξιόθωσαν· μάλιστα οἱ κηπιῶ-
τες ἐν λόγῳ κὴ διδασκαλίᾳ·

18 Λέξω γὰρ ἡ γραφή· Βῆν ἀλοῶντα ἔφιμώσης.
Καί· Ἀξιόθω ὁ ἐργάτης ὅμιον αὐτῶ.

19 Κατὰ πρεσβυτέρων κατηγόριαν μὴ πλάθε-
σθε, ἐκτός ἐστι μὴ ἐπὶ δύο ἢ τριῶν μαρτύρων.

20 Τὰς ἀμαρτανίας, ἐνώπιον πάντων ἔλεψ-
θε, ἵνα κὴ οἱ λοιποὶ φόβον ἔχωσι.

21 Διαμαρτύρομαι ἐνώπιον ὧ Θεῶ, ἐ Κυ-
εῖς Ἰησοῦ Χριστοῦ, κὴ τῶ ἐκλεκτῶν ἀγγέλων,
ἵνα ταῦτα φυλάξῃς χερεῖς περικείμεθω,
μηδὲν ποιῶν κτὲ πρὸς κλισίαν.

22 Χεῖρας ταχέως μηδὲν ἐπιτίθει, μηδὲ κχι-
νῶν ἀμαρτανίας ἀλλοτριῖαις. σταυτὸν ἀγνὸν
τήρηθι.

23 Μηκέτι ὑδροπότι, ἀλλ' οἶνον ὀλίγον χρῶσθαι
τὸ σῶμα χόνδρος, κὴ τὰς πυκνάς (καὶ ἀσθενείας).

24 Τινῶν ἀνθρώπων αἱ ἀμαρτανίαι πρὸς ἄλλοι
εἰσι, πρὸς ἀγασσιν εἰς κρίσιν· ποῖ ἢ ἐπιπαρ-
λαθῶσιν·

25 Ὡσαύτως κὴ τὰ καλὰ ἔργα πρὸς ἄλλοι εἰσι·
ἐπὶ ἄλλως ἔχοντα, κρυβύτωσιν ἔδωκα·

Κεφ. 5. 6.

1 Ὅσοι εἰσὶν ὑπὸ ζυγὸν δεῖλαι, τὰς ἰδίους δε-
σπόταις πίστεως πρὸς ἄλλοις ἀξιόθωσαν·

Gg 3 ἵνα

ἵνα μὴ τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ καὶ ἡ διδασκαλία
βλασφημηῖται.

2 Οἱ ὃ πιστὰς ἔχοντες διασώζεις, μὴ κατὰ-
φρονείτωσαν, ὅτι ἀδελφοί εἰσιν· ἀλλὰ μᾶλλον
δαλούετωσαν, ὅτι πιστοὶ εἰσι καὶ ἀγαπήτοι, οἱ
τῆ δουλοκρατίας ἀντιλαμβάνοντες. Ταῦτα δι-
δάσκει, καὶ τὸ ἔρα καλῶς.

3 Εἴ τις ἐτεροδιδασκαλεῖ, καὶ μὴ προσέρχῃ
ὑγιαίνουσι λόγοις τοῖς τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ
Χριστοῦ, καὶ τῆ κατὰ δύσεβειαν διδασκαλία,

4 Τετύφω), μηδὲν ἐπιστάμενος, ἀλλὰ νο-
σῶν κατὰ ζητήσεως ἐλογρηματίας· ἐξ ὧν γίνε-
ται φθόνος, ἔρις, βλασφημία, ὑπότοιμα ποτηρα,

5 Παραδιατρέψαι διαφθαρμένων ἀνθρώπων
τὸν νοῦν, καὶ ἀπεισερημένων τῆ ἀληθείας,
νομιζόντων πορισμὸν εἶναι τῆ δύσεβειαν,
ἀφίστασο ἀπὸ τῶν τοιούτων.

6 Ἐπὶ ὃ πορισμὸς μέγας ἡ δύσεβεια καὶ
αὐτοπαρκείας.

7 Οὐδὲν γὰρ εἰσιωτέγκωμεν εἰς τὸ κῆσμον.
δῆλον ὅτι ἐδὲ ἐξενεσκεῖν καὶ διωάμεθα.

8 Ἐχθρὸς ὃ διατρεφῆς καὶ σκεπίσματῶν,
τῶν τοιούτων δουλοκρασίωμεθα.

9 Οἱ ὃ βυλόμοιοι πλάττειν, ἐμπίπτεσιν εἰς
πῆρσμον καὶ παγίδα, καὶ ἐπιθυμίας
πολλὰς ἀποήτες καὶ βλαβερούς, αἵπτες
βυθίζουσι τὸς ἀνθρώπους εἰς ὄλεθρον καὶ ἀ-
πόλψαν.

- 10 Ρίζα γάρ πάντων τῶν κακῶν ἐστὶν ἡ φιλαρ-
 γυρία· ἣς πινες ὀρεγόμενοι ἀπεπλανήθησαν
 ἀπὸ τῆς πίστεως, ἔειπτες ὡς ἐπέφρασαν ὁδοῦναις
 παλαιαῖς.
- 11 Σὺ δέ, ὦ ἄνθρωπε τῷ Θεῷ, ταῦτα φεδγε-
 δίωκε δὲ δικαιοσύνην, δόσεβαν, πίστιν, ἀγά-
 πην, ὑπομονὴν, πραότητά.
- 12 Αγνίζε τὸ καλὸν ἀγῶνα τῆς πίστεως, ἐπι-
 λαθεῖς τῆς αἰωνίης ζωῆς, εἰς ἣν καὶ ἐκλήθης, καὶ
 ὡμολόγησας τὸ καλὸν ὁμολογίαν ἐνώπιον
 πολλῶν μαρτύρων.
- 13 Παραγγέλλω σοι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ τοῦ ζωο-
 ποιῆντος τὰ πάντα, καὶ Χριστοῦ Ἰησοῦ τοῦ μαρ-
 τυρησάτου ἐπὶ Ποντίου Πιλάτου τὸ καλὸν ὁ-
 μολογίαν.
- 14 Τηρησάτω σε τὸ ἐντολὴν ἀσπιλον, ἀνεπί-
 ληπτον, μέχρι τῆς ἐπιφανείας τοῦ Κυρίου ἡμῶν
 Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 15 Ἦν καμροῖς ἰδίους δέξου ὁ μακαρίου καὶ
 μόνου δουλάσης, ἀ βασιλεύς τῶν βασιλεύον-
 των, καὶ Κύριου τῶν κυριούωντων,
- 16 Ὁ μόνου ἔχων ἀθανασίαν, φῶς οἰκῶν ἀ-
 φρόσιτον, ὃν εἶδεν ἕδεις ἀνθρώπων, ἕδὲ ἰδεῖν
 δουάτω. ὧ ἡμῆ καὶ κράτῳ αἰώνιον. ἀμὲν.
- 17 Τοῖς πλεσίοις ἐν τῷ νῦν αἰῶνι, ὡς ἔραξε καὶ
 μὴ ὑψηλοφρονεῖν, μηδὲ ἠλπικέναι ἐπὶ πλε-
 τῶ ἀδηλότητι, ἀλλ' ἐν τῷ Θεῷ τῷ ζῶντι, τῷ
 παρέχοντι ἡμῖν πλεσίως πάντα εἰς δόξαυ-
 σιν.

18 Ἀγαπεργεῖν, παλαιοὶ ἐν ἔργοις καλοῖς,
ὁμοειδέες εἶσθε, κρινωνικῆς·

19 Ἀποθησαυρίζοντες ἑαυτοῖς θεμέλιον κα-
λὸν εἰς τὸ μέλλον, ἵνα ἐπιλάβωνται τῆς αἰ-
ωνίᾳ ζωῆς.

20 Ὡς Τιμόθεε, τὸ πρῶτον ἐπιτήρησον φύλα-
ξον, ἵνα μὴ ἀποστήσῃς ἀπὸ τῆς βεβήλης κενοφανείας,
καὶ ἀνυπόστατος τῆς ψευδοδόξης γινώσκῃς·

21 Ἦν ἄνθρωπος ἐπαγγελιοφόρος, ἀπὸ τῆς πίστεως
ἠσώχθησαν. Ἡ χάρις μετὰ σοῦ. Ἀμην.

Πρὸς Τιμόθεον ἀποστολὴ ἐγγραφὴ ἀπὸ Λαο-
δικείας, ἧς ἐστὶ μητροπόλις Φρυ-
γίας τῆς Παγκυβανῆς.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
ἡ πρὸς Τιμόθεον ἐπιστολὴ δεύτερη.

Κεφ. α'. 1.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ ἀπόστολος Ἰησοῦ
Χριστοῦ ἀπὸ θελήματος Θεοῦ,
κατ' ἐπαγγελίαν ζωῆς τῆς ἐν
Χριστῷ Ἰησοῦ,

2 Τιμόθεε ἀγαπήσει τέκνον, χάρις, ἔλεος,
εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς, ἔν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ
Κυρίῳ ἡμῶν.

3 Χάριν ἔχω τῷ Θεῷ, ὃ λατρεύω ἀπὸ
ἀπαι-

- 12 Δι' ἡν αἰτίαν καὶ ταῦτα πάχω· ἀλλ' εὐκ
ἐπαρξάμεθα. οἶδα γὰρ ὡς πίπισόντα, καὶ
πίπισται ὅτι δυνάστης ἐστὶ τὸ ᾠθεκαβαθί-
κλω με φυλάξαι εἰς ἐκείνῳ τῇ ἡμέρῃ.
- 13 Ὑποτύπωζω ἔχει ὑμῶν λόγων, ὡς
παρ' ἐμοῦ ἤκουσας ἐν πίστι καὶ ἀγαπήτῃ ἐν
Χριστῷ Ἰησοῦ.
- 14 Τίω καλῶ ᾠθεκαβαθίκλω Φύλαξον
Διὰ πολλῶν ἀγίων ἐνοικῶν ἐν ἡμῖν.
- 15 Οἶδας τῆτο, ὅτι ἀπιστῶσάν με πάντες
οἱ ἐν τῇ Ἀσίᾳ, ὡς ἐστὶ Φύλαξον καὶ Εὐ-
μεγέλης.
- 16 Δάη ἔλει· ὁ Κύριος τῶ Ὀνησιφόρος οἶκα·
ὅτι πολλοὶ με ἀνέψυξε, καὶ τίω ἀλυσίω με
εὐκ ἐπαρξάμεθα.
- 17 Ἀλλὰ ἠγάπησεν ἐν Γῶμῃ, ἀπεδαιόπρον
ἐζήτησέ με, καὶ εὐρε.
- 18 Δάη αὐτῶ ὁ Κύριος· ὁρεῖν ἔλει· ᾠθεκα
Κυρίω ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ· καὶ ὅσοι ἐν Ἐφίση
δικήθησε, βέλπιον σὺ γενώσκεις.

Κιφ. β'. 2.

- 1 Σὺ οὖν, πέκτοι με, ἐνδυναμῶ ἐν τῇ χά-
ριτι τῇ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.
- 2 Καὶ ἂν ἤκουσας παρ' ἐμῶ Διὰ πολλῶν
μαρτύρων, ταῦτα ᾠθεκα πιστοῖς ἀνθρώ-
ποις, οἵτινες ἰκανοὶ ἴσονται καὶ ἑτέροις διδάξαι.
- 3 Σὺ οὖν κακῶ κήθησον ὡς καλὸς στρατιώ-
της Ἰησοῦ Χριστοῦ.

4 Οὐδεὶς

- 4 Οὐδείς σπαιδύομιθ' ἐμπλέκει τῆς βίβρα πρᾶγμαίαισι, ἵνα τῷ σπαιθολογήσῃ δόξῃ.
- 5 Ἐὰν ᾗ ἐ ἀθλήτῃσι, ἔσφραῦται ἑαυτὸν μὴ νομίμως ἀθλήσει.
- 6 Τὸν κροπιῶντα γεωργὸν δεῖ σφραῦτον τὸ καρπῶν μετὰ λαμβάνειν.
- 7 Νόξ ἀλέγω· δῶη γάρ σσι ὁ Κύριος σύνεσιν ἐν πᾶσι.
- 8 Μνημόνους Ἰησοῦν Χριστὸν ἐγχερμῶν ἐκ νεκρῶν, ἐκ ἀπέρμαίτου Δαβίδ, καὶ τὸ δίαγγέλιόν με·
- 9 Ἐν ᾧ κροπατῶ μέγρι δεσμῶν, ὡς κροκῆργος. ἀλλ' ὁ λόγος ἔθεξ' ἔδεδε).
- 10 Διὰ τῆτο πάντα ὑπομῶν Διὰ τῆς ἐκλεκίαι, ἵνα καὶ αὐτοὶ σωτηρίας τύχῃσι ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, μετ' ἀόξῃς αἰωνίαι.
- 11 Πιστὸς ὁ λόγος· εἰ γὰρ σωαπετάνομιθ, καὶ συζήσομιθ.
- 12 Εἰ ὑπομῶμιθ, καὶ συμβασιλύσομιθ· εἰ δόξῃμεθα, καὶ κείνους δόξῃσι ἡμᾶς.
- 13 Εἰ ἀπισθῶμιθ, ἐκείνους πιστὸς μὲν δόξῃσα ἑαυτὸν ἔδιώα).
- 14 Ταῦτα ὑπομίνησαι, Διὰ μαρτυρόμιθ ἐνώπιον τοῦ Κυρίου μὴ λοζομαχεῖν· εἰς ἕδεν χρήσιμον, ἐπὶ κροτασροφῇ τὸ ἀκρόντων.
- 15 Σπέδασον σεαυτὸν δόξιμον ὡς ἀσῆσαι τῷ Θεῷ, ἐργάτῃ ἀνεπαύχῃ, ὁρθομῆντα τὸ λόγον τὸ ἀληθείας.

- 16 Τὰς ἧ βεβήλας κενοφωνίας παύσασο·
ἐπὶ πλεῖον γὰρ παροψασιν ἀσεβείας·
- 17 Καὶ ὁ λόγος αὐτῶν ὡς γάρ γε αἰνα νομιλῶ
ἔξῃ· ὧν ἔστιν Ὑμῖνοι· Ἐ Φιλῆτος·
- 18 Οἵπνες παρὰ τὴν ἀλήθειαν ἠσώχησαν, λέ-
γουσιν τὴν ἀνάστασιν ἤδη γεγενῆσθαι· Ἐ ἀνα-
τρέψασι τὴν ἰνῶν πρίσιν.
- 19 Οἱ μῦθοι σερπὸς θεμέλι· Ἐ Θεὸς ἔση-
κεν, ἔχων τὴν σφραγίδα ταύτην· Ἐγὼ Κύ-
ριος τὸς ἄνθρωπος αὐτῶ· καὶ Ἀποστήτω ἀπὸ ἀδι-
κίας πᾶς ὀνομαζῶν τὸ ὄνομα Χριστοῦ.
- 20 Ἐν μεγάλῃ ἡ οἰκία σοκῆσι μόνον σκευῆ
χρυσῆ καὶ ἀργυρῆ, ἀλλὰ Ἐ ξύλινα καὶ ὀστράκι-
να· Ἐ ἀ μὲν εἰς πηλῶ, ἀ ἡ εἰς ἀπρίαν.
- 21 Ἐὰν οὖν τις ἐκκατέρη ἑαυτὸν ἀπὸ τέ-
των, ἔσται σκευῶ εἰς πηλῶ, ἡγιασμένον καὶ
δύσχησον τῷ δεσπότη, εἰς πᾶν ἔργον ἀγαθὸν
ἡτοιμασμένον.
- 22 Τὰς ἡ νεωτερικῶς ἐπιθυμίας φεύγε· δίω-
κε ἡ δικαιοσύνην, πίστιν, ἀγάπην, ἐπιφύλιον
μετὰ τὴν ἐπικαλεσμένων τὸ Κύριον ἐκ καρτερῶς
καρδίας.
- 23 Τὰς ἡ μωρὰς καὶ ἀπαυδύτους ζητήσας
παραλιθῶ, εἰδὼς ὅτι γηνοῦσι μάχας·
- 24 Δεῖλον ἡ Κυρίως εἰ δεῖ μάχεσθαι, ἀλλὰ
ἡπτιον εἶναι πρὸς πάντας, διδουκλήθον, ἀνε-
ξίκαθον·
- 25 Ἐν πρῶτῃ παυδύοντα τὸς ἀνιδίακ-
θεμῶνες·

θεμηδύς μήποτε δῶ αὐτοῖς ὁ Θεὸς μετάνοιαν
εἰς ἐπίγνωσιν ἀληθείας·

26 Καὶ ἀνανήψωσιν ἐκ τῆς διαβολῆς πα-
γίδου, ἐξωρηθηδύοι ὑπὸ αὐτῶ εἰς τὸ ἐκείναι
τέλημα.

Κεφ. γ'. 3.

1 Τοῦτο ἃ γίνωσκε, ὅτι ἐν ἐσχάταις ἡμέ-
ραις ἐνήσονται κρηροὶ χαλεποί·

2 Ἔσονται γὰρ οἱ ἄνθρωποι φίλαυτοι, φιλάρ-
γυροι, ἀλαζόνες, ὑπερήφανοι, βλάσφημοι,
ρηγνεῦσιν ἀπῆθεῖς, ἀχάριστοι, ἀνόσιοι,

3 Ἄσπεργοι, ἀσπονδοὶ, διάβολοι, ἀκρατεῖς,
ἀνήμεροι, ἀφιλάγαθοι,

4 Προδόται, περπελῆες, τεύφωμοὶ, φι-
λήδανοι μάλλον ἢ φιλόθεοι·

5 Ἐχρήεις μάρψωσιν δύσεθείας, ἢ ἃ δυνά-
μιν αὐτῆς ἡρημηδύοι. καὶ τέττες ἀποτρέψα.

6 Ἐκ τέτων γάρ εἰσιν οἱ ἐνδύνοντες εἰς τοῖς
οικίας, καὶ ἀχρηλαλώδοντες τὰ γυναικί-
εια σισωρομηδύα ἀμαρτίαις, ἀγῆμηδύα ἐπι-
θυμίας ποικίλαις·

7 Πάντοτε μαυθάνοντα, καὶ μηδέποτε εἰς ἐπί-
γνωσιν ἀληθείας ἐλθεῖν δυνάμημα.

8 Ὅν τρόπον ἃ Ἰανῆς ἐ Ἰαμβρῆς ἀντέση-
σαν Μωϋσεῖ, ἕτως καὶ ἔτοι ἀνδίζονται τῇ
ἀληθείᾳ, ἄνθρωποι κρατεφθαρηδύοι τῶ νῶν,
ἀδόκιμοι πᾶσι τῶ πῖσιν.

9 Ἀλλ' ἔ παρκαψωσιν ἐπὶ πλεῖον ἢ γὰρ
ἀνοίκα

αἴτια αὐτῶν ἐκδηλοῦμαι πᾶσιν, ὡς καὶ ἡ ἐκείων ἐχθέρ.

10 Σὺ δὲ παρηκολούθηκας μετὰ τῆ διδασκαλίας, τῆ ἀγωγῆ, τῆ πενήσις, τῆ πίστευ, τῆ μακροθυμίας, τῆ ἀγάπῃ, τῆ ὑπομονῆ.

11 Τοῖς διωγμοῖς, τοῖς παθήμασιν, οἷά μοι ἐχθέρ ἐν Αντιοχείᾳ, ἐν Ἰκονίᾳ, ἐν Λύτροις· οἷς διωμὸς ὑπολύθηκα, καὶ ἐν παντί με ἐβρόύσατο ὁ Κύριος.

12 Καὶ πάντες δὲ οἱ θέλοντες δύσισθῶς ζῆν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, διωχθήσονται.

13 Ποιοὶ δὲ ἀνθρώποι καὶ γένητες προσέβησαν ἐπὶ τὸ χεῖρον, τλανῶντες καὶ τλανώμενοι.

14 Σὺ δὲ μέγιστος ἐν οἷς ἔμαθες ἐπιστάτης, εἰδὼς ὡς ἀπὸ πίνου ἔμαθες.

15 Καὶ ὅτι ἀπὸ βρέφους τὰ ἱερὰ γράμματα οἶδας, τὰ διδάσκει σε σοφίαν εἰς σωτηρίαν, ἀπὸ πίστεως τῆ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

16 Πᾶσα γραφή, θεόπνευστος, ἐπιφίλιμος πρὸς διδασκαλίαν, πρὸς ἐλεγχον, πρὸς ἐπιτιμωρίαν, πρὸς παιδείαν τῆ ἐν δικαιοσυνῇ.

17 ἵνα ἀρεθῆ ἡ ὁ θεὸς ἀνθρώπων, πρὸς πᾶν ἔργον ἀγαθὸν ἐξηρισμῶ.

Κεφ. δ. 4.

1 **Δ**ιαμαρτύρομαι ἐν ἐγὼ ἐνώπιον τοῦ θεοῦ, καὶ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ μέγιστου κερύοντος ζῶντος καὶ νεκρῶς καὶ ἐπιφάνσαν αὐτῶ καὶ τῆ βασιλείαν αὐτοῦ.

2 Κήρυξος

ΠΡΟΣ ΤΙΜΟΘ. Β. 7Η

- 2 Κήρυξον τὸ λόγον, ἐπίσημι δὲ κηρύξωσι ἀκέρως· ἐλεγξον, ἐπιτίμησον, ὡς Ἰσραηλῆισιν ἐν πάσῃ μακροθυμίᾳ καὶ διδαχῇ.
- 3 Ἔστι γὰρ κηρὸς ὅτε τὸ ὑμῶν διδασκαλίας ὅσα ἀνέξοι· ἀλλὰ καὶ τὰς ἐπιθυμίας τὰς ἰδίας ἐαυτοῖς ἐπισωρεύουσι διδασκάλως, κνηφόμοι τὸ ἀκρόω.
- 4 Καὶ ἀπὸ μὲν τῆ ἀληθείας τὸ ἀκρόω ἀπεπρέψασιν, ἐπὶ ἧ τὰς μύθους ἐκτραπήσονται.
- 5 Σὺ ἡνέφε ἐν πᾶσι, κηρὸς ἀθήσων, ἔργων ποίησον διαγγελίης, τὸ ἀκρόω τὸ ἀκρόω τὸ ἀκρόω.
- 6 Ἐγὼ γὰρ ἤδη ἀπένδομα, καὶ ὁ κηρὸς τὸ ἐμῆς ἀναλύσεως ἐφέσηκε.
- 7 Τὸν ἀγῶνα τὸ καλὸν ἠγῶνισμα, τὸ δρόμον τετέλεκα, τὸ πίσι τετύρηκα.
- 8 Λοιπὸν, ἀπὸ κείνου μοι ὁ τὸ δικαιοσύνης σέφανται, ὃν ἀποδώσει μοι ὁ Κύριος ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, ὁ δικαιοσύνης κηρὸς· ἔμῃον ἡ ἐμῇ, ἀλλὰ καὶ πᾶσι τοῖς ἠγαπητοῖσι τὸ ἐπιφανέω αὐτοῦ.
- 9 Σπέδασον ἐλθεῖν πρὸς με ταχέως.
- 10 Δημῶς γὰρ με ἐγκατέλιπον, ἀγαπήσας τὸ νῦν αἰῶνα, ἔπορεύθη εἰς Θεσσαλονίκην· Κρήσκη εἰς Γαλατίαν, Τίτῳ εἰς Δαλματίαν.
- 11 Λεκάς ἐπιμῶν μεῖν ἐμῆ. Μάρκον ἀναλαβὼν, ἄγε μετὰ σεαυτοῦ· ἐπι γὰρ μοι σύχρητες εἰς ἀκρόω.
- 12 Τυ-

- 12 Τυχικὸν ἢ ἀπέστλα εἰς Ἐφέσον.
- 13 Τὸν Φελόνικον ὃν ἀπέλιπον ἐν Τρωάδι
ὡδὲ Κάρπῳ, ἐχομένῳ Φέρε, ἔτα βιβλία,
μάλιστα τὰς μεμεράνας.
- 14 Ἀλέξανδρον ὁ χαλκὸς ποδῶν μου καὶ
ἐνεδείξατο, ἀποδῶν αὐτῷ ὁ Κύριος καὶ τὰ
ἔργα αὐτῶ.
- 15 Ὅτι καὶ σὺ φυλάσσε· λίαν γὰρ ἀνέστηκε τοῖς
ἡμετέροις λόγοις.
- 16 Ἐν τῇ παρόρῳ μου ἀπολογία εἰδὲς μου
συμπαρεχόμενος, ἀλλὰ πάντες με εἴχατέλιπον
(μὴ αὐτοῖς λογισθεῖν)
- 17 Ὁ ἢ Κύριός μου πύριση, καὶ ἐνεδιωά-
μαισέ με, ἵνα δὲ ἐμὲ τὸ κήρυγμα πληροφο-
ρηθῆ, ἔτα ἐκέλευ πάντα τὰ ἔθνη· καὶ ἐρρύσθη
ἐκ σώματι λέοντι.
- 18 Καὶ ῥύσεται με ὁ Κύριος ἀπὸ πάντων
ἔργων πονηρῶν, καὶ σὺ τῆ εἰς τὴ βασιλείαν αὐτῶ
πῶν ἐπερραίνον ἢ ἡ δόξα εἰς τὸς αἰῶνας τῶ
αἰῶνων. Ἀμήν.
- 19 Ἀσπασιν Πρίσκων καὶ Ἀκύλων, καὶ τῶ
Οἰησιφόρου οἴχου.
- 20 Ἐρασμὸν ἐμένει ἐν Κορίνθῳ. Τρόφιμος
ἢ ἀπέλιπον ἐν Μιλήτῳ ἀδελφεῖνα.
- 21 Σπέδασιν παρὲς χιμῶν ἐλθεῖν. Ἀ-
σπάζεται σε Εὐδοκίῳ, καὶ Πάδης, καὶ
Λῆ, καὶ Κλαυδία, καὶ οἱ ἀδελφοὶ
πάντες.

22 Ο Κύριος Ἰησοῦς Χριστός μετ' ἑπὶ πνεύ-
ματός σου ἡ χάρις μετ' ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Τιμόθεον δούτου τῆς Ἐφεσίων ἐκκλη-
σίας πρὸς τὸν ἐπίσκοπον χροβιτηνῆα, ἐγρά-
φη ἀπὸ Γάμασιότι καὶ δούτου παρέστη
Παῦλος τῷ Καίσαρι Νέρωνι.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
ἡ πρὸς Τίτον ἐπιστολή.

Κεφ. α'. Γ.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ δούλος Θεοῦ, ἀπέστ-
λας ἡ Ἰησοῦ Χριστοῦ καὶ πρίν ἐκλε-
κτῶν Θεῶν, καὶ ἐπίγνωσις ἀληθείας
τῆς κατ' ἐπίδοξον.

2 Ἐπ' ἐλπίδι ζωῆς αἰωνίας, ἧς ἐπηγγέλατο
ὁ ἀψύδης Θεός, πρὸ χρόνων αἰωνίων,

3 Ἐφανερώσει ἡ καλοῖς ἰδοῖς τῆς λόγου αὐ-
τοῦ, ἐν κηρύγματι δὲ ἐπιστήθω ἐγὼ κατ' ἐπι-
ταγὴν τοῦ σωτῆρος ἡμῶν Θεοῦ,

4 Τίτω γνησίᾳ τέκνῳ καὶ καλῶ πρίν χά-
ρις, εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς, καὶ Κυ-
ρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ σωτῆρος ἡμῶν.

5 Τάχα χάριν κατέλιπόν σε ἐν Κρήτῃ,
ἵνα τὰ λείποντα ἐπιδορθώῃς, καὶ καταστά-
σης καὶ πόλιν πρεσβυτέρους, ὡς ἐγὼ σοι δι-
εταξάμην.

6 Εἰ

- 6 Εἴ τις ἐστὶ ἀνέκκλητος, μιᾶς γυναικὸς ἀιῆρ, τέκνα ἔχων πιστὰ, μὴ ἐν κατηγορίᾳ ἀσωτίας, ἢ ἀνυπότακτα.
- 7 Δεῖ γὰρ τὸν ἐπίσκοπον ἀνέκκλητον εἶναι, ὡς Θεὸς οἰκονόμος, μὴ αὐθάδης, μὴ ὀργίλος, μὴ πάροικος, μὴ πωλήκτης, μὴ αἰχρεοκερδῆ.
- 8 Ἀλλὰ φιλόξενος, φιλάγαθος, σώφρωνος, δίκαιος, ὅσιος, ἐγκρατῆς.
- 9 Ἀντεχόμενος τῆς διδασκαλίας πρὸς λόγους, ἵνα δυνατὸς ἦ καὶ πεινακαλεῖν ἐν τῇ διδασκαλίᾳ τῆς ὑγιαίνουσας, ἔτι τὰς ἀνιέτρους ἐλέγχειν.
- 10 Εἰσὶ γὰρ πολλοὶ καὶ ἀνυπότακτοι, μαλακολόγοι ἔτι φρεναπάται, μάστιγα οἱ ἐκ αἰσιοτομῆς.
- 11 Οὓς δεῖ ἐπισημίζειν· οἷονες ὅλας οἴκους ἀνατρέψουσιν, διδάσκαλοις αὐτῶν μὴ δεῖ, αἰχρεῶς κέρδους χάρην.
- 12 Εἴπε τις ἐξ αὐτῶν ἰδοὺ αὐτῶν πρὸς φητις· Κρηῖτες αἰεὶ ψεύσασθε, κακὰ φησίτε, γαστέρες ἀργαί.
- 13 Ἡ μαρτυρία αὕτη ἐστὶν ἀληθής· διὸ καὶ αὐτίαν ἐλέγχε αὐτὸς ἀποστόμος, ἵνα ὑγιαίνουσιν ἐν τῇ πίστει.
- 14 Μὴ πρὸς ἄλλους ἰσθαιεῖς μύθοις, ἔτι ἐπιβλασῆς ἀνθρώπων ἀποστροφόμενων τὸ ἀληθῆς.
- 15 Πάντα μὲν κατὰ τοὺς κατὰ τοὺς τοῖς ἡμεμισμοῖς καὶ ἀπίστοις ἔδεν κατὰ τὸν, ἀλλὰ

ἀλλὰ μερίωνται αὐτῶν κὶ ὁ νῆς εἴη σιω-
είδησις.

16 Θεὸν ὀμολογεῖσιν εἰδέναί, τοῖς ᾗ ἔργαίς
δὲνῶνται, βδελυκτοὶ ὄντες κὶ ἀπεθεῖς, καὶ
πρὸς πᾶν ἔργον ἀγαθὸν ἀδύκιμοι.

Κεφ. β'. 2.

1 ΣΥ' ᾗ λάλη ἀ πρέπει τῇ ὑμικαίνοση διδασ-
καλία.

2 Πρεσβύτας νηφαλίους εἶναί, σεμνῆς, σώ-
φρονας, ὑμικαίνοντες τῇ πίστι, τῇ ἀγάπῃ, τῇ
ὑπομονῇ.

3 Πρεσβύτους ὡσαύτως ἐν κατὰσήμερι
ιεροπρεπεῖς, μὴ Διδόλους, μὴ οἶνω πολλαῖ
δεδουλωμένους, καλοδιδασκάλους,

4 ἵνα σωφρονίζωσι τοὺς νέους, φιλόανδρους
εἶναί, φιλοτεκνους,

5 Σώφρονας, ἀγνῆς, οἰκτρῆς, ἀγαθῆς,
ὑποτασσομένους τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν, ἵνα μὴ
ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ βλασφημηῖται.

6 Τῆς νεωτέρους ὡσαύτως ὡς καὶ καλῆς σω-
φρονεῖν,

7 Περὶ πάντα σεαυτὸν παρεχόμενος τύ-
ποι καλῶν ἔργων, ἐν τῇ διδασκαλίᾳ ἀδια-
φορίαν, σεμνότητά,

8 Λόγον ὑγιῆ, ἀκατάγνωστον, ἵνα ὁ εἶς ἐναπ-
τίας ἐντραπῆ, μηδὲν ἔχων πρὸς ὑμῶν λίγαν
φῶλον.

9 Δέλους ἰδίοις διαπότισις ὑποτασσομένους,
ἐν

- ἐν πᾶσιν διαρίστας εἶναι, μὴ ἀνυπερήφους·
- 10 Μὴ κοφίζομενους, ἀλλὰ πάντων πᾶσαν
εὐδόκην ἡμῶν ἀγαθῶν· ἵνα τὸ διδασκαλίαν
Ἐ σωτῆρος ἡμῶν Θεοῦ κησμεῶσιν ἐν πᾶσιν.
- 11 Ἐπιφάνη γὰρ ἡ χάρις Ἐ Θεοῦ ἡ σωτῆρος
πᾶσιν ἀνθρώποις·
- 12 Παιδοδύσσει ἡμεῖς, ἵνα δόνησάμενοι τῶν
ἀσεβῶν καὶ τῶν κησμικῶν ἐπιθυμίας, σωφρο-
νως Ἐ δικηῶν καὶ δόσεως ζήσωμεν ἐν τῷ
νῦν αἰῶνι·
- 13 Προσδεχόμενοι τὴν μακαρίαν ἐλπίδα, καὶ
ἐπιφάνειαν τῆς δόξης Ἐ μεγάλης Θεοῦ Ἐ σω-
τῆρος ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ·
- 14 Ὃς ἔδωκεν ἑαυτὸν ὑπὲρ ἡμῶν, ἵνα λυ-
τρώσῃται ἡμεῖς ἀπὸ πάσης ἀνομίας, καὶ
καθαρίσῃ ἑαυτὴν λαὸν ἑαυτοῦ, ζήλωτῶν
καλῶν ἔργων.
- 15 Ταῦτα λάλησθε, καὶ ὑπομνησάμενοι, καὶ ἔλεγ-
χε μὴ πάσης ἐπιθυμίας. μηδεὶς Ἐ περι-
φρονέτω.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 Ὑπομίμησθε αὐτὰς ἀρχαῖς καὶ ἰξασίας
ὑποτάσσεσθαι, ὡς πάντων ἔρ-
γων ἀγαθῶν ἐτοιμὰς εἶναι·
- 2 Μηδένα βλασφημεῖν, ἀμάχους εἶναι,
ἐπίκειναι, πάντων εὐδόκην ἡμῶν
ὡς πάντες ἀνθρώποις.
- 3 Ἡμεῖς γὰρ ποτε καὶ ἡμεῖς ἀνόητοι, ἀπίστοι,
πληροὶ

πλανώμενοι, δολοφόνες ἐπιθυμίας κὶ πόδων
καὶ ποικίλων, ἐν κακίᾳ ἔφθονοι ἀλόγη-
τοι, τυγῆτοι, μισῶντες ἀλλήλους·

4 Ὅτε ἢ ἡ χρηστότης καὶ ἡ φιλαληθεία
ἐπιφάνη ἔσωτήρη ἡμῶν Θεῷ,

5 Οὐκ ἐξ ἔργων ἔσονται δικαιοσύνη ἢ ἐπιή-
στευον ἡμεῖς, ἀλλὰ κτὲρ αὐτοῦ ἔσται ἡ σωτηρία
ἡμῶν, ἀπὸ λυγρῶν παλιγγενεσίας, κὶ ἀνα-
καμνώσεως πλούτου ἀγίου·

6 Οὐδέ ἐξέχευεν ἐφ' ἡμῶν πλοσίως, ἀπὸ Ἰη-
σοῦ Χριστοῦ ἔσωτήρη ἡμῶν·

7 Ἴνα δικαιοφύτοι τῆ ἐκείνου χάριτι,
κληρονόμοι γινώμεθα κατ' ἐλπίδα ζωῆς
αἰωνίας,

8 Πιστὸς ὁ λόγος· κὶ περὶ τούτων βέλομεθα
σε ἀπὸ θεοῦ οἰδοῦμαι, ἵνα φρονίζωσι καρτῶν
ἔργων περὶ ταῦτα οἱ πιστοὶ καὶ τῶ Θεοῦ·
ταῦτά ἐστι τὰ καλὰ κὶ ὠφέλιμα τοῖς ἀν-
θρώποις.

9 Μωροὶς ἢ ζητήσις, ἢ φιλοσοφίας, καὶ
ἔρις, κὶ μάχαις νομικαῖς ἀπέχεσθαι· εἰσὶ γὰρ
ἀνωφελεῖς, ἢ μάταιοι.

10 Αἰρετικὸν ἄνθρωπον μὴ μίαν κὶ δευτέ-
ραν νεχρῶσαν παραίτησθαι·

11 Εἰδώς ὅτι, ἐξέστραπται ὁ ποιῶν, κὶ ἀ-
μαρτανῆς, ὡς αὐτοκατακρίθη.

12 Ὅταν πέμψω Ἀρτεμῶν πρὸς σε ἢ Τυ-
ρχῶν, ἀπόδοσον ἐλθεῖν πρὸς με εἰς Νικό-
πολιν·

πολι· ἐκεῖ γὰρ κέκευθα ὡφελήμασι·
13 συμ.

Ζητοῦν τὸ νομικόν καὶ Ἀποκλῆσιν ἀσυνείδητος
14 ἀπέπεμψον, ἵνα μηδὲν αὐτοῖς λείπη.

Μαυταιέτωσαν ἡ καὶ οἱ ἡμέτεροι καλῶν
ἔργων ἀεὶ ἐπιμενομεθα εἰς τὴν ἀναγκάσας χρείας,
15 ἵνα μὴ ὦσιν ἀκαρποὶ.

Ἀσπάζονται σε οἱ μετ' ἐμῶ πάντες. ἀ-
σπασαση τὰς Φιλιππησίας ἡμῶς ἐν πίστι. ἡ χάρις
μετ' πάντων ὑμῶν. Ἀμὲν.

Πρὸς Τίτον τὸν Κρητῶν ἐκκλησίας ἀποστόλου
ἐπίσκοπον χιροβηθέντα, ἐγράφη διὰ
Νικοπόλεως τὴν Μακεδονίας.

ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ

ἡ πρὸς Φιλήμονα ἐπιστολή.

ΠΑΥΛΟΣ δέσμιος Χριστοῦ
Ἰησοῦ, καὶ Τιμόθεος ὁ ἀδελφός,
Φιλήμονι τῷ ἀγαπητῷ καὶ σω-
εργῷ ἡμῶν,

2 Καὶ Ἀφίκα τῇ ἀγαπητῇ, καὶ Ἀρχίππῳ
τῷ συσπράκτῃ ἡμῶν, καὶ τῇ κατ' οἶκόν σου
ἐκκλησίᾳ·

3 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη διὰ Θεοῦ πατρὸς
ἡμῶν καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

4 Εὐ-

- 4 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μου, πάντοτε μνείαν
 ἔχων ποιήματα ἐπὶ τῷ σωτηριῶν μου,
 5 ἁγίων ἔχων ἀγάπην, καὶ τὴν πίστιν ἣν
 ἔχετε πρὸς τὸν Κύριον Ἰησοῦν ἕως πάντας
 τὰς ἀγίας·
 6 Ὅπως ἡ κρινωμία τῆς πίστεώς σου ἐνεργῆς
 γνήσιμα ἐν ἐπιγνώσει παντὸς ἀγαθῆς ἧς ἐν
 ὑμῖν εἰς Χριστὸν Ἰησοῦν.
 7 Χαρὰν γὰρ ἔχομεν πολλὴν καὶ ἠδυστάτην
 ἐπὶ τῇ ἀγάπῃ σου, ὅτι τὰ σπλάγχνα τῶν ἁγίων
 ἀναπέπρωται διὰ σοῦ, ἀδελφέ.
 8 Διὸ πολλὴν ἐν Χριστῷ παρρησίαν ἔχων
 ἐπιβάσθην σοι τὸ ἀνῆκον·
 9 Διὰ τὴν ἀγάπην μακρὸν παρεκαλῶ,
 τοιοῦτος ὡς Παῦλος πρεσβύτης, νικῶν
 καὶ δεσμοῖς Ἰησοῦ Χριστοῦ.
 10 Παρακαλῶ σε πάλιν ἵνα ἐμὲ τέκνον, ὃν ἐχού-
 νησαι ἐν τοῖς δεσμοῖς μου, Οἰήσιμον·
 11 Τὸν ποτέ σοι ἄχρηστον, νικῶν δέ σοι καὶ ἐμοὶ
 δύσρηστον, ὃν ἀνέπεμψα·
 12 Σὺ δὲ αὐτὸν, ὅσοτον, τὰ ἐμὰ σπλάγχνα,
 προσλαβῶς·
 13 Ὅν ἐγὼ ἐδοκίμησα πρὸς ἐμαυτὸν κατέχην,
 ἵνα ὑπὲρ σοῦ διακονῆμι σοι ἐν τοῖς δεσμοῖς
 τῆς διαγγελίας·
 14 Χωρὶς οὐδὲ τῆς γνώμης ἐδὲν ἠθέλησά
 ποιῆσαι· ἵνα μὴ ὡς καὶ ἀνάγκη τὸ ἀγαθόν
 ἔσῃ, ἀλλὰ καὶ ἐκέσιον.

- 15 Τέχα γὰρ διὰ τῆτο ἐχαρίσθη πρὸς ὦραν,
ἵνα αἰώνιον αὐτὸν ἀπίχης·
- 16 Οὐκέτι ὡς δούλον, ἀλλ' ὑπερδούλον, ἀδελ-
φὸν ἀγαπητὸν, μάλιστα ἐμοί, πόσω ἢ μάλ-
λον σοι καὶ ἐν σαρκί ἔν ἐν Κυρίῳ;
- 17 Εἰ οὖν ἐμὲ ἔχης κοινωνόν, πρὸς λαοῦ αὐ-
τὸν ὡς ἐμέ.
- 18 Εἰ δὲ πῆδίκησέ σε, ἢ ὀφείλῃ, τῆτο ἐμοί
ἐλλείψῃ.
- 19 Ἐγὼ Παῦλος ἔγραψα τῇ ἐμῇ χερί, ἐγὼ
ἀποτίσω ἵνα μὴ λέγῃ σοι ὅτι καὶ σταυρῶν μοι
πρὸς οφείλῃς.
- 20 Ναί, ἀδελφεί, ἐγὼ σε ἐναίμην ἐν Κυρίῳ·
ἀνάπαυσόν με τὰ ἀσάχητα ἐν Κυρίῳ.
- 21 Πεποιθὼς τῇ ὑπακοῇ σου ἔγραψά σοι,
εἰδὼς ὅτι καὶ ὑπερδούλον ὁ λέγω ποιήσῃς.
- 22 Ἄμα ἢ ἔτοιμαζέ μοι ξενίαν· ἐλπίζω
γὰρ ὅτι διὰ τῆ πρὸς οὐχὴν ὑμῶν χαριστήσο-
μαι ὑμῖν.
- 23 Ἀσπάζονται σε, Ἐπαφροῆς, (ὁ στωι-
χιάλωτος με ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ) Μάρκος,
- 24 Ἀρίσταρχος, Δημάς, Λαρκῆς, οἱ στωι-
εργαί με.
- 25 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ
τοῦ πνεύματος ὑμῶν. Ἀμῆν.

Πρὸς Φιλήμονα ἔγραψα διὰ Γώμητος
διὰ Οἰκίμου οἰκίτου.

Ἡ ΠΡΟΣ

Η ΠΡΟΣ ΕΒΡΑΙΟΥΣ
ἐπιτολή.

Κεφ. α'. 1.

1 **Π**ΟΛΥΜΕΡΩΣ καὶ πολυ-
τρόπως πάλας ὁ Θεὸς λαλή-
σας τοῖς πατέρας ἐν τοῖς προ-
φήταις, ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν
τῶν ἐλάλησεν ἡμῖν ἐν υἱῷ,

2 Ὃν ἔθηκε κληρονόμην πάντων, δι' ἧς καὶ
τῶν αἰῶνας ἐποίησεν.

3 Ὃς ὦν ἀπαύλασμα τῆς δόξης, καὶ χωρίς
κτῆρ τῆς ὑποστάσεως αὐτοῦ, φέρων τε τὰ πά-
τα τῶν ῥημάτων τῆς δυνάμεως αὐτοῦ, δι' ἑα-
τῆς κατὰ εἰσομὴν ποιησάμενος τῶν ἀμαρτιῶν
ἡμῶν, ἐκάθισεν ἐν δεξιᾷ τῆς μεγαλωσύνης
ἐν ὑψηλοῖς·

4 Τοσούτω κρείττων χυόμενος τῶν ἀγγέ-
λων, ὅσα διαφορώτερον παρ' αὐτοὺς κεκλη-
ρονόμηκεν ὄνομα.

5 Τίνι γὰρ εἶπέ ποτε τῶν ἀγγέλων· Υἱὸς με εἶ
σύ, ἐγὼ σήμερον γενήνηκά σε; Καὶ πάλιν·
Ἐγὼ ἔσομαι αὐτῷ εἰς πατέρα, καὶ αὐτὸς
ἔσται μοι εἰς υἱόν;

6 Ὅταν ἡ πάλιν ἐισταγάγη τῶν πνευματικῶν
εἰς τὸ οἰκηθῆναι, λέγει· Καὶ πνευματικῶν
αὐτῷ πάντες ἄγγελοι Θεοῦ.

Hh

7 Καὶ

- 7 Καὶ πρὸς μὲν τὰς ἀγγέλους λέγει· Ὁ παῖων
τὰς ἀγγέλους αὐτῷ πνύματα, καὶ τὰς λήττε-
ρας αὐτῷ πυρὸς φλόγα·
- 8 Πρὸς ἃ τὸ υἱόν· Ὁ θρόνος σου, ὁ Θεός, εἰς
τὸ αἰῶνα ἔαἰων· ῥάβδος σου ἰσχύς ἢ
ῥάβδος σου βασιλείας σου.
- 9 Ἡ χάρις σου διηγοροῦμαι, ἔκστασις σου
ἀνομίαν. Διὰ τὸ τοῦτο ἔχρισέ σε ὁ Θεός, ὁ Θεός
σου ἑλεῖον ἀγαπῆσεως ὡς καὶ τὰς μετέ-
χους σου.
- 10 Καὶ· Σὺ κατ' ἀρχαίς, Κύριε, τὸ γινῶ ἡμε-
μελίωσας, καὶ ἔργα σου χροῖν σου εἰσὶν αἱ
ἔρανοί·
- 11 Αὐτοὶ δὲ πλῆνται, σὺ ἃ ἀμείψῃς καὶ πῦν-
τες ὡς ἰμάτιον παλαιωθήσονται·
- 12 Καὶ ὡς εἰ θεοδόλαιον ἐλίξῃς αὐτὰς, καὶ
ἀλλαγήσονται· σὺ ἃ ὁ αὐτὸς εἶ, ἔτι ἔτι σου
ὡς ἐκλείψουσι.
- 13 Πρὸς πᾶσα ἃ τὰ ἀγγέλων εἰρηκὲς ποτε· Κά-
θ' ἑκ δεξιῶν μου, ἕως αὐτῶ τὰς ἐχθρὰς σου
ὑποπόδιον σου ποδῶν σου·
- 14 Οὐχὶ πάντες εἰσὶ λήττερα καὶ πνύματα,
εἰς ἀρκονίαν δόσε καὶ ἄλλα διὰ τὰς μέλ-
λους κληρονομεῖν πτωχείαν;

Κεφ. β'. 2.

- 1 Διὰ τὸ τοῦτο δεῖ θεοσκέπης ἡμῶν ἀποσέχιν
τοῖς ἀκχεθεῖσι, μὴ ποτε ὡς ἀρροῦσιν ἄρρον·
- 2 Εἰ γὰρ ὁ δὲ ἀγγέλων λαληθεῖς λόγος ἐχθρὸς
βίβου σου·

βίδοιαι, καὶ πάντα ὡς ἠέδοισις ἐ παρ-
ακηὴ ἔλασεν ἐνδὸν μιῶτα ποδὸσίαν·

3 Πῶς ἡμεῖς ἐκφύξομεθα τηλικαύτης
ἀμελήσαντες σωτηρίας; ἢ τις δόξῃ λαοῦσας
καλέσθαι Διὸς Ἐκκεῖ, ὑπὸ τῷ ἀκυσίν-
των εἰς ἡμᾶς ἐβεβαιώθη·

4 Συναπιμαρτυρήσῃ τῷ Θεῷ σημείοις τε
καὶ τέρασιν, καὶ ποιήσας δυνάμεις, ἐ
πιδύμοις ἀγῆς μεριτμοῖς, καὶ τῶν αὐ-
τῶν ἡλῆσιν.

5 Οὐ γὰρ ἀγγέλοις ὑπέταξε τὸ οἰκηθῆναι
τῶν μέδουσιν, ὡς ἡς λαλῶμεν.

6 Διεμαρτύρατο δὲ πρὸς πᾶσι, λέγων· Τί ἐστιν
ἄνθρωπος, ὅτι μνησθήσεται αὐτῷ· ἢ ἡὸς ἀν-
θρώπου, ὅτι ἐπισκέπη αὐτόν;

7 Ἡλατῶσας αὐτὸν βραχύ τι παρ' ἀγγέ-
λος· δόξῃ καὶ πμῇ ἐσεφάνωσας αὐτόν, ἐ κατ-
έστησας αὐτόν ἐπὶ τὰ ἔργα τῶν χερῶν σου.

8 Πάντα ὑπέταξας ὑποκρίτω τῷ ποδῶν αὐ-
τῶν. Ἐν γὰρ τῷ ὑποκρίτω αὐτῶν πᾶντα,
ἐδὲν ἀφῆκεν αὐτῶν ἀνυπότακτον· νῦν δ' ἔπει-
σῶμεν αὐτῶν πᾶντα ὑποκρίτω.

9 Τὸν δ' βραχύ τι παρ' ἀγγέλος ἡλατῶ-
σῶν βλέπομεν Ἰησοῦν, Διὸς τὸ πάθημα τῷ
θανάτῳ, δόξῃ καὶ πμῇ ἐσεφάνωσῶν·
ὅπως χάρις Θεῷ ὑπὲρ πάντων γένηται
θανάτῳ·

10 Ἐπεπε γὰρ αὐτῶν δι' ὃν πᾶντα καὶ δι' ἃ
Hh 2 πᾶν

τὰ πάντα, πολλὰς ἡμέρας εἰς δόξαν ἀγαθῶν
 τῶν δόξα τῆς σατηρίας αὐτῶν Δὲ πικρῆ-
 μείτην τελῶσαι.

11 Ὅ, περὶ ἀγαθῶν εἰ οἱ ἀγαθῶν, ἐξ
 ἐνὸς πάντες· δι' αὐτῶν αἰτίαν σὺν ἐπιμαχίῃ
 ἀδελφὸς αὐτῶν καλεῖν,

12 Λίγων· Ἀπαγγελῶ τὸ ὄνομα (καὶ τοῖς ἀ-
 δελφοῖς με, ἐν μέσῳ ἐκκλησίας ὑμῶν
 σου.

13 Καὶ πάλιν· Ἐγὼ ἔσομαι πεποιθὴς ἐπὶ
 αὐτῶν. Καὶ πάλιν· Ἰδὲ ἐγὼ καὶ τὰ ποιῶντα
 ἅ μοι ἔδωκεν ὁ Θεός.

14 Ἐπεὶ οὖν τὰ ποιῶντα κεκοιμήθηκε σατη-
 ρίᾳ εἰς αἰματῶν, καὶ αὐτὸς ἀγαθῶν
 μετῴχετ' αὐτῶν, ἵνα Δὲ εἰς θανάτου κα-
 ταργῆται τὸ κράτος ἔχουσα εἰς θανάτου
 τῆς τῆς Δὲ δόλοι.

15 Καὶ ἀπαλλάξῃ τέτρες ὅσοι φόβου θανά-
 του Δὲ πάντες εἰς ζῆν ἐνοχί ἡσυχίας.

16 Οὐ γὰρ δὴ περὶ ἀγγέλων ἐπιλαμβάνει, ἀλλὰ
 ἀπὸ αἰματῶν ἀπορῶν ἐπιλαμβάνει.

17 Ὅθεν ἀφῆκε καὶ πάντες τοῖς ἀδελφοῖς
 ὁμοιωθῆται, ἵνα ἐλεήμων γένηται εἰς πᾶσι
 δόξα τῆς σατηρίας τῆς Θεῶν, εἰς τὸ ἰλάσασθαι
 τὰς ἀμαρτίας εἰς λαῶν.

18 Εἰ γὰρ πεποιθὴν αὐτὸς περὶ αὐτῶν, δύ-
 ναται τοῖς περὶ αὐτῶν βοηθῆσαι.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 **Ο** Θεοῦ, ἀδελφοὶ ἅγιοι, κλήσεως ἐπερα-
νίας μέτοχοι, κατανόησατε τὸ δόγμα
καὶ δεξιερῆα τῆ ὁμολογίας ἡμῶν Χριστὸν
Ἰησοῦν.
- 2 Πιστὸν ὄντα τῷ ποιήσαντι αὐτόν, ὡς ἔ-
Μω-
σῆς ἐν ὅλοι τῷ οἴκῳ αὐτοῦ.
- 3 Πλείονα γὰρ δόξης ἔτθη τῷ Θεῷ Μωσίου
ἡξίωται, καθ' ὅσον πλείονα τιμῶν ἔχθη οἴ-
κῳ ὁ κατεσκεύασας αὐτόν.
- 4 Πᾶς γὰρ οἴκος κατεσκεύασθη ὑπὸ τοῦ
ὁ ἦ τὸ πᾶν κατεσκεύασας, Θεός.
- 5 Καὶ Μωσῆς μὴ πιστὸς ἐν ὅλοι τῷ οἴκῳ
αὐτοῦ, ὡς θεράπων, εἰς μαρτύριον τῆ λαλη-
θησομένων.
- 6 Χριστὸς ἦ, ὡς υἱὸς ἐπὶ τὸ οἶκον αὐτοῦ ἢ
οἴκος ἐστὶν ἡμεῖς, ἐάν τις τῆ παύρησιαν καὶ
τὸ καύχημα τῆ ἐλπίδος μέχρι τέλους βι-
βαίαν κατέσχωμεν.
- 7 Διὸ, καθὼς λέγει τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον Σή-
μερον, εἰάν τις φανῆς αὐτοῦ ἀκέρητος,
- 8 Μὴ πληρωθῆτε ἐν καρδίᾳ ὑμῶν, ὡς ἐν
τῷ ᾧ πικρασμοῖ, καὶ τῆ ἡμέραν ἔπι-
ρασμοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ.
- 9 Οὐδέποτε σάν με οἱ πατέρες ὑμῶν, ἐδο-
κίμασάν με, ἔ ειδόν τὰ ἔργα μου προσεφί-
κοντα ἔτη.
- 10 Διὸ προσώχθησα τῇ γλυκῆ ἐκείνη, καὶ
Hh 3 εἶπον

- εἶπον· Ἀὐτὸν ἀπολαύονται τῇ καρδίᾳ· αὐτοὶ ᾗ
 ὅσα ἐγνώσαντες οὐκ ἴδόντες ἡμᾶς.
- 11 Ὡς ὄμματα ἐν τῇ ὀργῇ μου· εἰ εἰσελεύ-
 σονται εἰς τὴν καρδίαν μου.
- 12 Βλέπετε, ἀδελφοί, μήποτε ἔσται ἐν ὑμῶν
 καρδία πονηρὰ ἀπιστίας, ἐν τῷ δόξα-
 σάτω ἀπὸ Θεοῦ ζῶντος·
- 13 Ἀλλὰ ὡφρακαλεῖτε ἑαυτοὺς καθ' ἑκά-
 στὴν ἡμέραν, ἄχρις ἢ τὸ σήμερον καλεῖται·
 ἵνα μὴ σκληρωθῇ τις ἐξ ὑμῶν ἀπάτη τῆς
 ἀμαρτίας·
- 14 Μέτοχοι γὰρ γέγοναμεν τοῦ Χριστοῦ, ἵνα περὶ
 τῆς δόξης τῆς ὑποστάσεως μέχρι τέλους βε-
 βαίωμεν κατὰ χάριν·
- 15 Ἐν τῷ λόγῳ· Σήμερον εἰάν τις φωνῆς αὐ-
 τῆς ἀκούσῃ, μὴ σκληρωθῆτε ἐν καρδίᾳ
 ὑμῶν, ὡς ἐν τῷ ὡφραπικροσμάτι.
- 16 Τίτις γὰρ ἀκύνειες παρητήσαντες, ἀλλ'
 ἐπάτιες οἱ ἐξερχόμενοι ἐξ Αἰγύπτου Διὰ
 Μωσέως.
- 17 Τίτις ᾗ προσώχθισε τὸν ἀγαθόν· ἔτι·
 Οὐκ ἐπὶ τοῖς ἀμαρτήματι· τὴν αὐτὴν καὶ ἔπειτα
 ἐν τῇ ἐρήμῳ;
- 18 Τίτις ᾗ ὄμματα μὴ εἰσελεύσονται εἰς τὴν
 καρδίαν αὐτῆς, εἰ μὴ τοῖς ἀπεθήσει;
- 19 Καὶ βλέπομεν ὅτι ὅσα ἠδυνήθησαν εἰ-
 ελθεῖν δι' ἀπιστίαν.

Κεφ. δ'. 4.

- 1 **Φ**οβηθῶμεν οὖν μή ποτε κατὰ λήθη παρήμερος ἐπαγγελίας εἰσελθεῖν εἰς τὴν κατὰ πάυσιν αὐτῶν, δοκῆ τις ἐξ ὑμῶν ὑστερηκέναι.
- 2 Καὶ γὰρ ἐσμὲν διηγγελισμένοι, κατὰ περ καὶ κείνοι· ἀλλ' ὅτι ἀφέλησεν ὁ λόγος τῆς ἀκροῦς ἐκείνης, μὴ συσκευραμῶσθε τῇ πίστει τοῖς ἀκρότεροι.
- 3 Εἰσερχόμεθα γὰρ εἰς τὴν κατὰ πάυσιν οἱ πιστεύουσι, κατὰ εἰρήκει· ὡς ἄμωσαι ἐν τῇ ὀργῇ μας, εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν κατὰ πάυσιν μας καὶ τοῖς ἔργοις ἀπὸ κατὰβολῆς κήσμε γλυκῆντων.
- 4 Εἰρήκει γὰρ πρὸς αὐτοὺς τῆς ἐδόμησ ἔτα· Καὶ κατέπαυσεν ὁ Θεὸς ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐδόμησ ἀπὸ πάντων τῶν ἔργων αὐτῶν.
- 5 Καὶ ἐν τῷτά πάλιν· Εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν κατὰ πάυσιν μας.
- 6 Ἐπεὶ οὖν ἀπολείπεται Ἰνασ εἰσελθεῖν εἰς αὐτῶν, καὶ οἱ ἀσῆτερον διαγγελισθέντες ὅτι εἰσήλθον δι' ἀπέειθαι.
- 7 Πάλιν Ἰνασ ὀρίζε ἡμέραν, σήμερον, ἐν Δαβιδ λέγων, μὴ τοσῶτον γέρον· (κατὰ εἰρηται) Σήμερον ἴαν τῆς Φωνῆς αὐτῶν ἀκρόσητε, μὴ σκληρωθῆτε τῆς καρδίας ὑμῶν.
- 8 Εἰ γὰρ αὐτῶν Ἰησῶς κατέπαυσεν, ὅτι αὐτῶν ἀλλῆς ἐλάλη μὴ τῶν ταῦται ἡμέρας.
- 9 Ἄρα ἀπολείπεται σκεῖσθαι σμῶς τῆς λαοῦ τῆς Θεῶ.

H h 4 10 O γδ

- 10 Ο γδ̄ ἐσελθὼν εἰς τ̄ κελύπτουσι αὐτῷ,
 κ̄ αὐτὸς κελύπτουσι· ἀπὸ τ̄ ἔργου αὐτῷ,
 ὡσπερ ἀπὸ τ̄ ἰδίου ὁ Θεός.
- 11 Σπευδόντων οὐκ̄ ἐσελθεῖν εἰς ἐκέντω
 τῶν κελύπτουσι· ἵνα μὴ ἐν τῷ αὐτῷ πῆς
 ὑποδείγματι πίση τ̄ ἀπίθειας.
- 12 Ζῶν γδ̄ ὁ λόγος τ̄ Θεῶ, ἔ ενεργήσ, κ̄ το-
 μώτερος ὑπὲρ πάντων κρείττερον δίστατον,
 κ̄ δίκαιότερος ἄχρημεροσ μὲ ψυχῆς τε κ̄
 πνύματι, ἀρμῶν τε ἔ μυελῶν, κ̄ κελύ-
 κῶς ἐνθυμήσεων ἔ ἐννοιῶν καρδίας.
- 13 Καὶ ὅσα ἔσι κήσις ἀφανῆς ἐνώπιον αὐ-
 τῷ· πάντα δὲ γινῶν κ̄ τετραχελισμέ-
 να τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτῷ ὡσὺς ὅν ἡμῖν ὁ
 λόγος.
- 14 Ἐχόντες οὐκ̄ δόχερέα μέγαν, διεληλυ-
 θότα τῶς ἐργῶν, Ἰησοῦν τ̄ ἕον τ̄ Θεῶ, κρα-
 τῶν τ̄ ὁμολογίας·
- 15 Οὐ γδ̄ ἔχομεν δόχερέα μὴ δυνατῶν
 συμπαθῆσαι ταῖς ἀσθενείαις ἡμῶν, πεπῆ-
 ρασμῶν ἢ κ̄ πάντα καθ' ὁμοιότητα, χα-
 εῖς ἀμαρτίας.
- 16 Προσερχόμεθα ἐν μὲ παρρησίας τῷ θρό-
 νῳ τ̄ χάριτος, ἵνα λάθωμεν ἔλεον, κ̄ χάριν
 δύναμιν εἰς δύναντον βοήθειαν.

Κεφ. ε'. 5-

1 Πᾶς γδ̄ δόχερός ἐξ ἀνθρώπων λαμβάνου-
 μενος, ὑπὲρ ἀνθρώπων κελύπτουται τῷ
 ὡσὺς

πρὸς τὸ Θεόν, ἵνα προσφέρῃ δῶρόν τε καὶ θυ-
σίας ὑπὲρ ἀμαρτιῶν.

2 Μετειοπαθεῖν δυνάμει τοῖς ἀγνοῦσι
ἐπιπλωμαίοις· ἐπεὶ καὶ αὐτοὶ ἀδικεῖται
ἀσθενῶν.

3 Καὶ διὰ ταῦτις ὀφείλει, κατὰ τὸν
ἔργον λαῶν, ἵνα καὶ αὐτοὶ προσφέρῃ ὑπὲρ
ἀμαρτιῶν.

4 Καὶ ἔχοντες ἐαυτοὺς λαμβάνει τὴν τιμὴν,
ἀλλὰ ὁ καλὸς μὲν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, κατὰ τὸν
ἐν ὁ Αἰσίου.

5 Οὐ γὰρ καὶ ὁ Χριστὸς ἔχοντες ἐδύνασθε γνη-
στῆναι ἀρχιερεῖς, ἀλλὰ ὁ λαλήσας πρὸς αὐτὸν
Υἱὸς μετ' ἐμοῦ, ἐγὼ σήμερον γενήνηκα σε.

6 Κατὰ τὸ ἐν ἑτέρῳ λόγῳ· Σὺ ἱερεὺς εἶς τὸ
αἰῶνα κατὰ τὸ τάξις Μελχισεδέκ.

7 Ὅτι ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς σινοῦ αὐτῶν, δεή-
σας τε καὶ ἰκετηρίας πρὸς τὸ δυνάμιον σώ-
ξιν αὐτὸν ἐκ ταναίας, καὶ κραυγῆς ἰσχυρῆς
ἐν δακρύων προσενέγκας, καὶ ἰστοκροτοῖς
ἀπὸ τῆς δουλείας,

8 Καὶ περὶ ὧν ἡμεῖς, ἔμαθον ἀπὸ ὧν ἔπαυσε τὸ
ὑπακοῦν.

9 Καὶ τελειωθεὶς ἐχρῆστο τοῖς ὑπακούουσιν
αὐτῷ πᾶσιν ἀπὸ σωτηρίας αἰώνιας.

10 Προσαγγρούθεὶς ὑπὸ τοῦ Θεοῦ ἀρχιερεὺς
κατὰ τὸ τάξις Μελχισεδέκ.

11 Περὶ τοῦ πολλοῦ ἡμῖν ὁ λόγος καὶ δύπερ-
H h 5 μὲν δὲ-

μὴ ὀφίλων λέγειν· ἐπεὶ ναῦροι γεγῶνατε ταῖς ἀγκύραις.

12 Καὶ γὰρ ὀφείλοτες εἶναι διδασκαλοὶ ἄλλὰ τὸ χρονον, πάλιν χρεῖαν ἔχετε τῆς διδασκίαν ὑμῶν· πῶς τὰ σοιχεῖα τῆς διδασκίαν τῆς λογίαν τῆς Θεῶν καὶ γεγῶνατε χρεῖαν ἔχοντες γάλακτι, ἔσ' ἑραίας τροφῆς.

13 Πᾶς γὰρ ὁ μετέχων γάλακτι, ὡς ἔστι λόγος διηρησίου (νήπιον γὰρ ἐστὶ)

14 Τελείων δὲ ἐστὶν ἡ ἑραία τροφή, ἣ ἄλλὰ ἔξιν τὰ αἰσθητῆρα γεγυμνασμένοι ἐχόντων πρὸς ἄλλήλων καλεῖτε καὶ κακῶς.

Κεφ. 5. 6.

1 Δὶ ἀφίντες τῆς διδασκίαν τῆς Χριστοῦ λόγος, ἐπὶ τῆς τελειότητος φερόμεθα· μὴ πάλιν θεμέλιον καὶ βακχάριοι μετενοίας ἀπὸ νεκρῶν ἔργων, καὶ πίστεως ἐπὶ Θεόν,

2 Βαπτισμῶν διδασκίαν, ἐπιθέσεως τε χριστῶν, ἀναστασεως τε νεκρῶν, καὶ κριματίαν αἰώνιος.

3 Καὶ τῶτα ποιήσομεν, ἵνα ὡς ἐπιτρέπη ὁ Θεός.

4 Ἀδωμάτων γὰρ τὰς ἀπαξ φηλοθύντας, γυμνασμένους τε τῆς δωρεῆς τῆς ἐπιθετικῆς, καὶ μετόχους γρηθύντας πνεύματι ἁγίῳ,

5 Καὶ καλὸν γυμνασμένους Θεῶν ῥήματι, δικαιοσύνης τε μέλλοσι αἰώνιος,

6 Καὶ ὡς ἀποστόλους, πάλιν ἀνακαθίστην
εἰς

εἰς μέγαναιαν, ἀνασχωρῶντας ἑαυτοῖς τὸ ἴδιον
 τῷ Θεῷ καὶ τῷ Ἰησοῦ Χριστῷ μαρτυροῦντας.

7 Γῆ γὰρ ἡ πίστις τὸ ἐπ' αὐτῆς πολλὰ κίς ἐρ-
 γήματα ὑπέστη, καὶ τίχισσα βοῶντων δύστηνον
 εὐαγγέλιον δι' ἧς ἐγεωργεῖται, μετὰ λαμπρῆς
 δόξης ἀπὸ τοῦ Θεοῦ.

8 Ἐκφέρουσα ἡ ἀκρότης καὶ τριβοῦλας, ἀδ-
 κίμη καὶ κατάρτας ἐργῶν, ἧς τὸ τέλος εἰς
 καὶ τὴν.

9 Πεπέισμεθα ἡμεῖς οὖν, ἀγαπητοί, τὰ
 κρείττονα καὶ ἐχόμενα σωτηρίας, εἰ ἐς ἔτι
 λαλοῦμεν.

10 Οὐ γὰρ ἀδικεῖ ὁ Θεός, ἐπιλατῶν τῶν
 ἔργων ὑμῶν, καὶ τῶν κήρυκων τῆς ἀγάπης ἧς ἐνιδεί-
 ξασθε εἰς τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ἀφρονήτων
 τοῖς ἀγίοις καὶ ἀφρονήτων.

11 Ἐπιθυμοῦμεν ἡμεῖς ἕκαστον ὑμῶν τὸ αὐτίκῃ
 ἐνδείκνυσθαι ἀσφάλειαν πρὸς τὴν πληροφάνειαν
 τῆς ἐλπίδος ἡμῶν τέλους.

12 Ἴνα μὴ ναῦροι γένησθε, μιμηταὶ ἡμῶν
 ἀφ' πίστεως ἐ μακροθυμίας κληρονομή-
 των τῆς ἐπαγγελίας.

13 Ταῦτα γὰρ ἄβραάμ ἐπαγγέλλεται ὁ Θεός,
 ἔπειτα κατ' ἐδενὸς εἶχε μείζονα ὁμῶσα,
 ὡμοσε κατ' ἑαυτοῦ,

14 Λέγων· Ἡμεῖς μὲν δόλοισιν δόλοισί σε, ἐ
 πληθυνῶν πληθυνῶ σε.

15 Καὶ ἔτι μακροθυμήσας ἐπέτυχε τῆς ἐπ-
 αγγελίας. 16 Ἄν-

- 16 Ἄνθρωποι μὲν γὰρ τὸ μείζον ὁμνύουσι, καὶ πάσης αὐτοῖς ἀνιλοχίας πέρας εἰς βεδοαίωσιν ὁ ὄρκος.
- 17 Ἐν ᾧ ὑποτιμωτέρον βελόμενος ὁ Θεὸς ἐπιδείξει τοῖς κληρονόμοις τὴν ἐπιταγῆς τὸ ἀμεταίτητον τῆς βελῆς αὐτοῦ, ἐμειψόμενοι ὄρκω.
- 18 ἵνα ἀπὸ δύο πραγμάτων ἀμεταίτητον, ἐν οἷς ἀδύνατον ψεύσασθαι Θεόν, ἰχυρὰν ἀφ' ἀκλήσει ἔχωμεν οἱ καθ' ἡμᾶς φρονήτες κρατήσομεν τὴν ἀποκρίσιν ἐλπίδος.
- 19 Ἢν ὡς ἀγκυραν ἔχωμεν τὴν ψυχῆς ἀσφαλῆ τε καὶ βεδοαίαν, ἔεισερχόμενοι εἰς τὸ ἐσώτερον τὸ καθ' ἡμᾶς σμαίνομαι.
- 20 Ὅπως ἀπόδρομος ὑπὲρ ἡμῶν εἰσηλθὼν Ἰησοῦς, καὶ τὸ πᾶν Μελχισεδέκ, ἀρχιερεὺς ἡρώμενος εἰς τὸ αἰῶνα.

Κεφ. ζ. 7.

- 1 Ὅτι γὰρ ὁ Μελχισεδέκ, βασιλεὺς Σαλήμ, ἱερεὺς τῶν Θεῶν ὑψίστων, ὁ σωαντήσας Ἀβραάμ ὑποσέφοντα ἀπὸ τῆς κτηνῆς τῶν βασιλέων, καὶ ὀλογήσας αὐτόν.
- 2 Ὡς καὶ δευτέρω ἀπὸ πάντων ἐμείψον Ἀβραάμ ἀπὸ τὸν μὲν ἐρμηνεύμενος βασιλεὺς δικαιοσύνης, ἐπέταξεν ἔτι βασιλεὺς Σαλήμ ὁ ἑστὶ βασιλεὺς εἰρήνης.
- 3 Ἀπάτωρ, ἀμήτωρ, ἀγχεαλόγητος ἡμῶν ἀρχαῖς ἡμερῶν, μήτε ζωῆς τέλος ἔχων ἀφω-

ἀφωμοιωμήθη ἡ τὰ ἡμέτερον Θεῷ, μὴ εἰ-
 ρύς εἰς τὸ δίκαιος.

4 Θεωρεῖτε ἡ πηλικῶν ἔτη, ἃ καὶ δεκά-
 τω Ἀβραάμ ἔδωκεν ἐν τῷ ἀκροδινίῳ ὁ
 πατριάρχης.

5 Καὶ οἱ μὲν ἐν τῷ ἡμῶν Λοὺί τῷ ἱερφαίῳ
 λαμβάνοντες, ἐνθλίω ἔχουσιν ἀποδεκταῖν
 τὸ λαὸν καὶ τὸ νόμον, τῆσι τὰς ἀδελφὰς
 αὐτῶν, καὶ τῶν ἐξεληλυθότων ἐν τῷ ὄσφύῳ
 Ἀβραάμ.

6 Οἱ μὴ ἡγελογέμενοι ἐξ αὐτῶν, δε-
 δεκτάτωκε τὸ Ἀβραάμ, καὶ τὸ ἔχοντα τὰς ἐπ-
 αγγελίας δὲ λόγηκε.

7 Χωρὶς ἡ πάσης ἀντιλογίας, τὸ ἕλαττον
 ὑπὸ τῷ κρείττονι δὲ λογέται.

8 Καὶ ὡς μὲν δεκτάτω ἀποθήσκουσιν ἀν-
 θρωποι λαμβάνουσιν ἐκεῖ ἡ, μαρτυρέμε-
 νον ὅτι ζῆ.

9 Καὶ (ὡς ἐπεὶ εἶπεν) Δὲ Ἀβραάμ καὶ
 Λοὺί ὁ δεκτάτω λαμβάνων δεδεκτάτω).

10 Ἐπὶ γὰρ ἐν τῇ ὄσφύϊ τῷ πατρὸς ἡ ὅτε
 συνώτησεν αὐτῷ ὁ Μελχισεδέκ.

11 Εἰ μὲν οὖν τελείωσι Δὲ τῷ Λοὺίτικῆς
 ἱερωσύνης ἡ. (ὁ λαὸς γὰρ ἐπὶ αὐτῇ νεομο-
 θέτη) τίς ἐπὶ χρεία, καὶ τὸ τῶν Μελχισε-
 δέκ ἔτερον ἀνίσταται ἱερέα, καὶ ἔκ τῶν τῶν
 Αἰαράν λέγουσι

12 Μεταπεμμένης γὰρ τῆς ἱερωσύνης, ἐξ
 ἀνάγκη

ανάγκης καὶ νόμου μετέθεσις γίνεται.

13 Ἐφ' οὗ γὰρ λέγεται ταῦτα, Φυλῆς ἑτέρας μετέχῃκει, ἀφ' ἧς εἰς αὐτὴν μετέχῃκει τῆς συ-
σιασθείω.

14 Πρόδηλον γὰρ ὅτι ἐξ Ἰσραὴ ἀνατέταλκεν ὁ
Κύριος ἡμῶν εἰς τὴν φυλὴν εὐδὲν ποτε ἰσ-
ραουώης Μωσῆς ἐλάλησε.

15 Καὶ περὶ σφόδρα ἐπι κατὰ δὴλόν ἐστιν, ἐπὶ
καὶ τὴν ὁμοιότητά. Μελχισεδέκ ἀνίσταται
ἱερός ἑτέρου,

16 Ὅς ἔστι καὶ νόμου ἐντολῆς σαρκικῆς γένη-
ται, ἀλλὰ καὶ διὰ μιν ζωῆς ἀκατάλυτα.

17 Μαρτυρεῖ γάρ· Ὅτι σὺ ἱερός εἰς τὴν αἰῶ-
να καὶ τὴν ταῖς Μελχισεδέκ.

18 Ἀγέτησις μὲν γὰρ γίνεσθαι ἀναγωγῆς ἐν-
λήσ, ἀλλὰ τὸ αὐτῆς ἀδυνάτους καὶ ἀνωφελές·

19 Οὐδὲν γὰρ ἐτελείωσεν ὁ νόμος, ἐπίστα γ-
γὴ ἢ κρείττονος ἐλπίδος, δι' ἧς ἐγίζομεν
τῷ Θεῷ.

20 Καὶ καθ' ὅσον ἔχω εἰς ὀρκωμοσίας.

21 (Οἱ μὲν γὰρ, ἔχω εἰς ὀρκωμοσίας εἰσὶν ἰε-
ρεῖς γεννότες ὅτι, καὶ ὀρκωμοσίας, ἀλλὰ ἔ-
λέγει ὁ Θεὸς αὐτῶν· Ὁμοσε Κύριος, καὶ ἔ-
μεταμελήθησε· Σὺ ἱερός εἰς τὴν αἰῶνα καὶ
τὴν ταῖς Μελχισεδέκ)

22 Κατὰ τοσούτον κρείττονος ἀγαθῆς γ-
γεννέσθαι Ἰησοῦς.

23 Καὶ οἱ μὲν, πλείονες εἰσὶ γεννότες ἱερεῖς,
ἀλλὰ

- Διὰ τὸ θανάτῳ καλύεσθαι ᾧ ἄμαρτῳ·
- 24 Ὁ ᾧ, Διὰ τὸ μὲν αὐτὸν εἰς τὸν αἰῶνα,
ἀπαράδοτον ἔχει τὸ ἱερωσιῶν·
- 25 Ὅθεν ἐ σώζειν εἰς τὸ σωτηρίας δύναται
τὰς περὶ ἄμαρτίας δι' αὐτῶ τῷ Θεῷ, πάντο-
τε ζῶν εἰς τὸ εὐτυχεῖν ὑπὲρ αὐτῶν.
- 26 Τοῖσδε γὰρ ἡμῖν ἐπέειπεν δούλους,
ὅσοι, ἀκακοί, ἀμίαντοι, κεχωρισμένοι
ἀπὸ τῶ ἀμαρτωλῶν, ἐ ὑψηλότεροι τῶ ἐρα-
νῶν γλυκόμυ·
- 27 Ὅς ἐκ ἔχει καὶ ἡμέραν ἀνάγκη, ὡσπερ οἱ
δούλοι, ἄλλοτερον ὑπὲρ τῶ ἰδίων ἀμαρτιῶν
θυσίας ἀναφέρειν, ἐπέειπε τῶ ἔλας· τῷτο γὰρ
ἐποίησεν ἐφάπαξ, ἑαυτὸν ἀνεγκας.
- 28 Ὁ νόμος γὰρ ἀνθρώπους κατέστησεν δού-
λους, ἔχοντας ἀσθένειαν· ὁ λόγος ᾧ τῶ ὁρκω-
μοσίας τῶ μὲν τῶ νόμον, ἡδὲν εἰς τῶ αἰῶνα τε-
τελεσμένον.

Κεφ. η'. 8.

- 1 Κεφάλαιον ᾧ ἐπὶ τοῖς λεγομένοις, τοῖσ-
τον ἔχοντων δούλους, ὅς ἐκάθισεν ἐν δε-
ξιᾷ τῶ θρόνου τῶ μεγαλωσιῶς ἐν τοῖς ἔρανοις,
- 2 Τῶν ἀγίων λέξεως, καὶ τῶ σκηνῆς τῆς
ἀληθείης, καὶ ἐπέειπεν ὁ Κύριος, ἐ σὺν ἀν-
θρώποι·
- 3 Πᾶς γὰρ δούλος εἰς τὸ παρῆρθε δώρο-
τε καὶ θυσίας κατέστησεν· ὅθεν ἀναγκασθὲν ἔχον
πᾶς τῷτο ὁ παρῆρθε.

- 4 Εἰ μὲν γὰρ ἡμεῖς ἐπὶ γῆς, ἐδ' αὖτ' ἡμεῖς ἰσραήλ
 ὄντων τ' ἰσραήλ τ' ἀποσφαιρόντων καὶ τ' ἰσραήλ
 τὰ δώρα.
- 5 Οἵπινες ὑποδείματι καὶ οὐκ ἔλαττο δὲ
 τ' ἐπερασίαν, καὶ ὡς κερσημύπται Μωσῆς,
 μέλλων ἐπιελεῖν τ' σκίβω. Ὁμοίως γὰρ, φησὶ,
 ποιήσης πάλιν καὶ τ' τύπον τ' ἀρχαῖον σοι
 ἐν τῷ ὄρει.
- 6 Νυνὶ δὲ Διαφοραλίνας τέττονε λήττα
 γίας, ὅσα καὶ κρείττονος ἐστὶ Διαθήκης μεσι-
 τής, ἥτις ἐπὶ κρείττοσιν ἐπαγγελίας γενο-
 μεστήτηται.
- 7 Εἰ γὰρ ἡ ἀρετή ἐκείνη ἡμεῖς ἀμεμπῶς,
 ὅσα αὖτ' ὁσέως ἐζηῖται τὸ πᾶν.
- 8 Μεμφόμενοι γὰρ αὐτοῖς λέγει· Ἰδὲ, ἡμέ-
 ρα ἔρχομαι, λέγει Κύριος, καὶ συνελίσσω ἐπὶ
 τ' οἶκον Ἰσραήλ καὶ ἐπὶ τ' οἶκον Ἰσραήλ Δια-
 θήκην καὶ ἡμεῖς.
- 9 Οὐ καὶ τ' Διαθήκην ἡμεῖς ἐποίησε τοῖς πε-
 τράσιν αὐτῶν, ἐν ἡμέρᾳ ἐπιλασσομένης μετ'
 χερσὶ αὐτῶν, ἐξαγαγεῖν αὐτὰς ἐκ γῆς Αἰγύ-
 πτου ὅτι αὐτοὶ ὅσα ἐπέμειναν ἐν τῇ Διαθήκῃ
 με, καὶ ἡμέλησαι αὐτῶν, λέγει Κύριος.
- 10 Ὅτι αὐτὴ ἡ Διαθήκη ἡμεῖς Διαθήσομαι
 τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ καὶ εἰς ἡμέρας ἐκείνας,
 λέγει Κύριος, διδὼς νόμους με εἰς πᾶν
 Δείκον αὐτῶν, καὶ ἐπὶ καρδίας αὐτῶν
 ἐπιγράψω αὐτὰς· καὶ ἴσσομαι αὐτοῖς εἰς
 Θεὸν,

Θεόν, καὶ αὐτοὶ ἔσονται μοι εἰς λαόν.

11 Καὶ ἔμὴ διδάξωσιν ἕκαστος τὸ πλοῦσιον αὐτῶν, καὶ ἕκαστος τὸ ἀδελφὸν αὐτῶν, λέγων· Γινώσκει τὸ Κύριον· ὅτι πάντες εἰδὴ ἔσσι με, ἀπὸ μικρῶν αὐτῶν ἕως μεγάλων αὐτῶν·

12 Ὅτι ἴλιως ἴσομαι ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν, καὶ τὰ ἁμαρτιῶν αὐτῶν ἔστ' ἀνομιῶν αὐτῶν· ἔμὴ μνησθῶ ἔπι.

13 Ἐν τῷ λόγῳ κηρῶν, πεπαλαίωσε τὴν καρδίαν· τὸ ἦ παλαιῶμενον καὶ γηράσκον, ἐργὸς ἀφανισμοῦ.

Κεφ. 9. 9.

1 Ἐἶχε μὲν ἔν ἐν τῇ καρδίᾳ σκλήν διηρημένον λατρείας, τὸ, τε ἄγιον κρημινόν.

2 Σκλήν γὰρ κατεσκευάσθη ἡ καρδία, ἐν ἣ ἦτε λυχνία καὶ ἡ τράπεζα, ἔν τῇ καρδίᾳ τῶν ἁγίων, ἥτις λέγεται ἄγια.

3 Μετὰ τὸ δέύτερον κατεπέτασε σκλήν ἡ λευκὴ ἄγια ἁγίων·

4 Χρυσὸν ἔχουσα θυμιάθρον, καὶ τὸ κιβωτὸν τῆς Διαθήκης κατεσκευάσθη παρὰ τὸν χρυσόν, ἐν ἣ σάμνθη χρυσὴ ἔχουσα τὸ μάννα, ἔν τῇ ῥάσθη Ἀαρὼν ἡ βλαστήματα, καὶ αἱ πλάκες τῆς Διαθήκης.

5 Ὑπερένω ἡ αὐτῆς Χερουβίμ δόξης, κατεσκευάσθη τὸ ἱλαστήριον· ὡς ἂν εἴη ἡνὶ λέξην καὶ μέρθη.

6 Τῶν τῶν ἔπι κατεσκευάσθη ῥων, εἰς μέρθη
τῶν

τινὸν πρῶτον σκηνικὸν ἀγαπαντὶς εἰσίασιν
οἱ ἱερεῖς τῆς λατρείας ἐπιτελέσιν·

7 Εἰς ἣ τ' ἑξῆς ἀπὸ τῆς ἐνικαλῆς μέγας
ὁ δὲ χειρὸς, ἐ χειρὶς αἵματι, ὁ πρῶτος φέρει
ὑπερβαλὺς ἐ τ' ἑξῆς ἀγνωμάται.

8 Τῆτο δηλένθου τ' πνύματι τ' ἀγία,
μήπω πεφανερῶσαι τ' τ' ἀγίων ὁδόν, ἐπὶ τ'
πρῶτης σκηνῆς ἐχέσης γάσιν·

9 Ἡπὶς ἀφῆσθαι εἰς τ' κερῶν τ' ἐνεσι-
κόται, καθ' ὃν δῶρα τε κὶ ψυσίαι πρῶτος φέρον-
ται, μὴ δυνάμει κὶ συνείδησιν τελέσασθαι
τ' λατρεύοντα,

10 Μόνον ἐπὶ βρώμασι κὶ πόμασι, ἐ ἀγα-
φόροις βαπτισμοῖς, κὶ δικασίμοις σαρκῶς,
μέχρι κερῶς διορθώσεως ἐπικείμενα·

11 Χειρὸς ἣ ἀφῆσθαι δὲ χειρὸς τ'
μελλόντων ἀγαθῶν, ἀφῆ τ' μέλλον κὶ τε-
λεσιότατος σκηνῆς, ἐ χροποιήτε, τρεῖς, ἐ
πρώτης τ' κησέως,

12 Οὐδὲ δὲ αἵματι τρεῶν ἐ μόχων, ἀφῆ
ἣ τ' ἰδίᾳ αἵματι εἰσηλθεν ἐφάπαξ εἰς τὰ
αἶμα, αἰωνίαν λύτρωσιν δυνάμει.

13 Εἰ γὰρ τὸ αἶμα τῶν κὶ τρεῶν, ἐ ποδοῦς
δαμάσειας ἐνδύσασα τρεῖς κερῶν, ἐ
ἀγάθει πρὸς τ' σαρκῶς κερῶν,

14 Πόσαι μέλλον τὸ αἶμα τ' Χειρῶν, ὅς ἀφῆ
πνύματι αἰωνίᾳ ἐαυτὸν πρῶτος ἐγγεν
ἀμαρῶν τῆς Θεῶν, καθυλεῖ τ' συνείδησιν
ὑμῶν

ὁμῶν δὲ τῶν νεκρῶν ἔργων, εἰς τὸ λατρεύειν
Θεῷ ζῶντι;

15 Καὶ διὰ τῆτο Διαθήκης καμῖνης μεσίτης
εἰσὶν, ὅπως θανάτω γλυμοῦμα, εἰς ἀπολύτρω-
σιν ἔπι τῇ πρῶτῃ Διαθήκῃ ἀρῶσῶσεων,
ἔπι παγγελίαν λάσῶσιν οἱ κεκλημηῶμοι τῆς
αἰωνίης κληρονομίας.

16 Ὅπως γῶ Διαθήκῃ, θάνατον ἀνάγκῃ φέρε-
σθαι ἔπι Διαθεμῶμα.

17 Διαθήκῃ γῶ ἐπὶ νεκροῖς βεδοαία· ἐπεὶ μή
ποτε ἰχυρὸν ὅτε ζῆ ὁ Διαθεμῶμα.

18 Ὅθεν ἐδὲ ἡ πρῶτῃ χωρὶς αἵματι ἔσκε-
καμῖνισται·

19 Λαληθείσης γῶ πάσης ἐνθελῆς κῆ νόμον
ὑπὸ Μωϋσῆως πᾶσι τῷ λαῷ, λαβῶν τὸ
αἷμα ἔπι μόχων κῆ τεράγων μετὶ ὕδατι καὶ
ἐρῆς κροκίνης ἔπι ὑσώπῃ, αὐτότε τὸ βιβλίον
κῆ πάντα τὸ λαὸν ἐρράντισε,

20 Λέγων· Τῆτο τὸ αἷμα ἔπι Διαθήκης, ἧς
ἐνείλατο πρὸς ὑμῶς ὁ Θεός.

21 Καὶ ἔπι σκῶλω ἔπι ἔπι πάντα τὰ σκῶλη ἔπι
ἀφτεργίας τῷ αἵματι ὁμοίως ἐρράντισε.

22 Καὶ σχεδὸν ἐν αἵματι πάντα κατηρέζεσθαι
κῆ τὸ νόμον, κῆ χωρὶς αἱματεκχυσίας ἔπι γέ-
νεται ἄφροσις.

23 Ἀνάγκῃ ἔπι τὰ μὲν ὑποδείματα ἔπι ἐν τοῖς
ἐρανοῖς, τέτοις κατηρέζεσθαι· αὐτὰ ἔπι τὰ
ἐπὶ ἐράνια κρείττοσι θυσίαις ἀρῶσῶταις.

24 Οὐ

24 Οὐ γὰρ εἰς χροποῖσθα ἀγία εἰσῆλθεν ὁ Χριστός, ἀνέκτυπα τῶν ἀληθινῶν, ἀλλ' εἰς αὐτὴν τὴν ἑραυὸν, τὴν ἐμφανισθῆναι τῆς σωστικῆς ὁδοῦ τοῦ Θεοῦ ὑπὲρ ἡμῶν.

25 Οὐδ' ἵνα πολλὰ κίς παροφείρη ἑαυτὸν, ἅπασις ὁ δόξα κερδὸς εἰσέρχεται εἰς τὰ ἀγία κατ' εὐαγγελίον ἐν αἰματι ἀποδοξίᾳ.

26 (Ἐπεὶ ἔδωκε αὐτὸν πολλὰ κίς παιθεῖν διὰ κατὰ θεοῦ λόγῳ καὶ ἔσθ' ἐπὶ σωτηρίᾳ αἰώνιαν, εἰς ἀφέτησιν ἀμαρτίας, διὰ τῆς ἡσυχίας αὐτῆς πεφανέρωται).

27 Καὶ κατὰ ὅσον ἀπέκείσθαι τοῖς ἀνθρώποις ἅπαξ ἀποθανεῖν, μετὰ τὴν κείσθαι.

28 Οὕτως ὁ Χριστός ἅπαξ παροφείρη εἰς τὸ πολλῶν ἀντιθέσθαι ἀμαρτίας, ἐκ δὲ ἄλλοις κίς ἀμαρτίας ὀφείσθαι τοῖς αὐτὸν ἀποδοξίᾳ εἰς σωτηρίαν.

Κεφ. ι. 10.

1 Σκίαν γὰρ ἔχων ὀνόματι τῶν μελλόντων ἀγαθῶν, ἐκ αὐτῶν τῶν εἰρηνικῶν τῶν παλαιῶν, καὶ εὐαγγελίῳ ταῖς αὐταῖς ἡσυχίας ἀποφείρησιν εἰς τὸ διδασκῆσαι, οὐδέ ποτε διδάσκει τὰς παροφείρησιν τελειώσθαι.

2 Ἐπεὶ αὐτὸν ἐπαύσαντο παροφείρησιν, διὰ τὸ μηδεμίαν ἔχειν ἐπὶ σωτηρίᾳ ἀμαρτίας τὰς λατρεῖσιν, ἅπαξ κεισθῆναι.

3 Ἀλλ' ἐν αὐταῖς ἀνάμνησις ἀμαρτιῶν καὶ εὐαγγελίον.

4 Ἀδύ-

- 4 Ἀδύνατον γὰρ αἵματι ταύρων καὶ τράγων
ἀφαιρῆν ἁμαρτίας·
- 5 Διὸ εἰσπράξασθε εἰς τὸ νόσμον, λέγει·
Θυσίαν ἐπεσφοράν ὡς ἡτέλησας, σῶ-
μα ἢ κατηρίσω μοι.
- 6 Ὁλοκαυτώματα καὶ περὶ ἁμαρτίας ὡς
δύδουκας.
- 7 Τότε εἶπον· Ἰδὲ ἤκω (ἐν κεφαλίδι βι-
βλίου γέγραπται περὶ ἐμῶ) Ἔ ποιῆσαι, ὁ
Θεὸς, τὸ θέλημα (8·
- 8 Ἀνώτερον λέγει· Ὅτι θυσίαν ἐπεσφο-
ράν καὶ ὀλοκαυτώματα ἐπερὶ ἁμαρτίας ὡς
ἡτέλησας, ἐδὲ δύδουκας· (αἵτινες καὶ τὸ
νόμον πεσφύρονται)
- 9 Τότε εἶρηκεν· Ἰδὲ ἤκω Ἔ ποιῆσαι, ὁ Θεὸς,
τὸ θέλημα (8· Ἀναίρει τὸ περῆτον, ἵνα τὸ
δύπτερον σήκη.
- 10 Ἐν ᾧ θελήματι ἡγιασμένοι ἐσμὲν διὰ τὸ
πεσφύρας τοῦ σώματος Ἔ Ἰησοῦ Χριστοῦ
ἰφάπαξ.
- 11 Καὶ πᾶς μὲν ἱερός ἐποίησε καθ' ἡμέραν
λόγουσιν, καὶ ὡς αὐτὰς πολλάκις πεσφύ-
ραν θυσίας, αἵτινες ἐδέποτε διώκοντες ἀπει-
λεῖν ἁμαρτίας.
- 12 Αὐτὸς ἢ μίαν ὑπὲρ ἁμαρτιῶν πεσφύ-
ρας θυσίαν, εἰς τὸ διάνεικός οὐκ ἔστιν ἐν δε-
ξιά Ἔ Θεῶ.
- 13 Τὸ λοιπὸν ἐκδέχασθε ἕως τεθῶσιν οἱ
ἐχθροὶ

- ἰχθῆροι αὐτῆ ὑποπόδιον τῶν ποδῶν αὐτῆ.
 14 Μία γὰρ ὡροσφορῆ τετελείωκεν εἰς τὸ
 δικαιοκῆς τῆς ἀγαζομῆς.
 15 Μαρτυρεῖ ἡμῖν καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον
 μὲν γὰρ τὸ ὡροσφῆκεναι.
 16 Αὕτη ἡ Διαθήκη ἐν Διαθήσει ὡροσ
 αὐτῆς μὲν ἡμέρας ἐκείνας, λέγει Κύριον,
 διδῶν νόμους με ἐπὶ καρδίᾳ αὐτῶν, καὶ ἐπὶ
 τῆ Διανοίᾳ αὐτῶν ἐπιγράψω αὐτῆς.
 17 Καὶ τῆ ἀμαρτῶν αὐτῶν ἐ τῆ ἀνομίᾳ
 αὐτῶν ἐ μὴ μνηστῶ ἐπι.
 18 Ὅπως ἡ ἀφῆσις τέτων, ὅτι ἐπὶ ὡροσφο-
 ρῆ ὡροσ ἀμαρτίας.
 19 Ἐχόντες αὐτῶν, ἀδελφοί, παρρησία εἰς τὸ
 εἰσῆδον τῆ ἁγίων ἐν τῶ αἵματι Ἰησοῦ,
 20 Ἦν ἐνεγκῆνισεν ἡμῖν ὁδοὶ ὡροσφῆκεν καὶ
 ζωσαν, Δια τῆ κατὰ πίστιν, τῆ ἐπι τῆ
 σαρκῆς αὐτῆ.
 21 Καὶ ἰσῆα μέγα ἐπὶ τῆ οἴον τῆ Θεῶν.
 22 Προσπερῆμεθα μὲν ἀληθινῆς καρδίᾳ ἐν
 ὡροσφορῆ πῆσεως, ἐρῆαντισμῆροι ἐς
 καρδίᾳ ἀπὸ σιωπῆσεως πονηρῆς.
 23 Καὶ λελαμῆροι τὸ σῶμα ὑδαλι κατὰρα,
 κατῆχωμῆ τῆ ὁμολογίαν τῆ ἐλπίδῆ ἀκλι-
 νῆ (πιστῆς γὰρ ὁ ἐπαχῆλάμῆροι).
 24 Καὶ κατὰνοῶμῆ ἀλλήλους εἰς παροξυ-
 σμῆν ἀγάπης καὶ καλῶν ἔργων.
 25 Μὴ ἐκατὰλείποντες τῆ ἐπισυναγωγῆ
 ἐαυτῶν,

ἑαυτῶν, καθὼς ἔθετόπισιν, ἀλλὰ ὡς ἄδικα-
λῆτες· καὶ τοσούτοι μάλλον ὅταν βλέπετε ἐγ-
γίζεσθαι τὴν ἡμέραν.

26 Ἐκείνης γὰρ ἀμαρτανόντων ἡμῶν μὴ τὸ
λαθεῖν τὴν ἐπίγνωσιν τῆς ἀληθείας, ὅτι ἐπὶ τοῖς
ἀμαρτηῶν ἀπολείπει τὴν ἡυσία·

27 Φοβεσθε δὲ ἵνα ἐκδοχὴ κρίσεως, καὶ πυρὸς
ζήλου, ἐσθίειν μέλιον ἵνα τὰς ὑπερκαυθίας.

28 Ἀφελήσας τις νόμον Μωσέως, χωρὶς οἰκτρ-
μῶν ἐπὶ θυσιν ἢ τρισὶ μάρτυσιν ἀποθνήσκει·

29 Πόσω (δοκεῖτε) χείρον ἂν ἀξιοθήσεται
πρωτότης ὁ τὸν υἱὸν τοῦ Θεοῦ καὶ παλιήσας, καὶ
τὸ αἷμα τῆς ἀδικήσεως κρινόν ἡμιστάμεν
ἐν ᾧ ἠγάπη, καὶ τὸ πνεῦμα τῆς χάριτος
ἐνυπόθετος;

30 Οἶδα μὲν γὰρ τὴν ἐπίνοιαν· Ἐμοὶ ἐκδίκησις,
ἐγὼ ἀνὰ ποδώσω, λέγει Κύριος. Καὶ πάλιν·
Κύριος κρινεῖ τὸ λαὸν αὐτῶν.

31 Φοβερόν τὸ ἐμπεσεῖν εἰς χεῖρας Θεοῦ
ζώντων.

32 Ἀναμιμνήσκεσθε ἵνα ἀσπρότερον ἡμέρας,
ἐν αἷσι φωλοθύνεις, πολλὰ ἀθλήσιν ὑπε-
ρμεῖνατε παισημάτων·

33 Τῆτο μὲν, ἐν δόξῳ τῆς ἐθλίψεσι θεα-
τριζόμενοι· τῆτο ἵ, κρινωνοὶ τῆς ἔτιως ἀνα-
ερεφορμῶν γλυπθέντες·

34 Καὶ γὰρ τοῖς δεσμοῖς μεσσωεπαθήσατε,
καὶ τὴν ἀρπαγὴν τῆς ὑπερχόντων ὑμῶν μὴ
χαραῖς

χαρῶς προσεδέξασθε, γινώσκοντες ἔχειν ἐν
ἐαυτοῖς κρείττονα ὑπερῆεν ἐν ἕρασσι, καὶ
ῥήματι.

35 Μὴ ἀποδόλητε οὐκ ἔπαροχίαν ὑμεῖσι
ἧς ἔχει μισθολογία μεγάλην.

36 Ὑπομνήτης γὰρ ἔχετε χρείαν· ἵνα τὸ θέλη-
μα τοῦ Θεοῦ ποιήσασθε, κηρύσσοντες τὴν ἐπι-
αγγελίαν.

37 Ἐπὶ γὰρ μικρὸν ὅσον ὅσον, ὁ ἐργάτης ἔξει,
καὶ ἔσθραι.

38 Ὁ δὲ δίκαιος ἐκ πίστεως ζήσεται· καὶ
ἐὰν ὑποσείληται, ὅσα δίδοκει ἡ ψυχὴ μετ'
ἐν αὐτῷ.

39 Ἡμεῖς δὲ ἐκ ἐσθρῶν ὑποσολῆς εἰς ἀπώλησιν,
ἀλλὰ πίστεως εἰς σωτηρίαν ψυχῆς.

Κεφ. ια'. II.

1 Ἐσπὶς ἡ πίστις, ἐλπίζοντων ὑπόστασις,
πραγματικῶν ἐλεγχῶν ἔβλεποντων.

2 Ἐν ταύτῃ γὰρ ἐμαρτυρήθησαν οἱ σθενοῦ-
στοι.

3 Πίστις τοῦ ἁγίου κατηγόρησεν τὰς αἰῶνας ῥή-
ματα Θεοῦ, εἰς τὸ μὴ ἐκ φαινομένων τὰ βλε-
πόμενα γινώσκοντες.

4 Πίστις πλείονα θυσίαν Ἄβελ ὡς καὶ Κάιν
προσέφερε τῷ Θεῷ, δι' ἧς ἐμαρτυρήθη
εἶναι δίκαιον, μαρτυροῦντες ἐπὶ τοῖς δώ-
ροις αὐτῶν τοῦ Θεοῦ· καὶ δι' αὐτῆς ἀποστατῶν ἐπι-
λαλεῖται.

5 Πίστις

5 Πίστις Ἐνώχ μετετέθη ἵνα μὴ ἰδεῖν θάνατον· καὶ ἔχουσι δόξαν, διότι μετέθηκεν αὐτὸν ὁ Θεός· ὡς γὰρ τὸ μετετέθησεως αὐτῆς μεμαρτύρηται ἀνεπίσημα παρὰ Θεῶν.

6 Χωρὶς ἧς πίστεως ἀδύνατον διακριθῆσαι πιστεῦσαι γὰρ δεῖ τὸν ἀποστόλῳ παρὰ Θεῶν ὅτι ἐστὶν, καὶ τοῖς ἐκζητήσιν αὐτὸν μισθωποδότης γίνεσθαι).

7 Πίστις χρηματικῶς Νῶε πρὸς τὸ μηδέπω βλεπομένων, φύλακῆς καὶ σωσῆσθε κινωτὸν εἰς σωτηρίαν ἵνα οἴκῃ αὐτῆς, δι᾽ ἧς κατέκρινε τὸν κόσμον, ἔτι καὶ πίστις δικαιοσύνης ἐγγύς κληρονομία.

8 Πίστις κατέκλυσε Ἀβραάμ ἵνα ἔκτισε ἐξελθεῖν εἰς τὸν τόπον ὃν ἡμεῖς λαμβάνομεν εἰς κληρονομίαν, καὶ ἐξῆλθε, μὴ ἐπιστάμενος πρὸς ἔρχεσθαι).

9 Πίστις παρῶκεν εἰς τὸ γινῶσθαι τῆς ἐπαγγελίας ὡς ἀποδείξιον, ἐν σκηνῶν καὶ θεικῆσαι μετὰ Ἰσαὰκ ἐν Ἰακώβ τὸν συκληρονομῶν τῆς ἐπαγγελίας τῆς αὐτῆς.

10 Ἐξεδέχετο γὰρ πᾶσι τὰς θεικῆσαι πόλιν, ἧς τεχνίτης καὶ δημιουργὸς ὁ Θεός.

11 Πίστις ἔτι αὐτῆ Σάρρα δώαμιν εἰς καρπολλῶ ἀπέμαθες ἔλαβε, καὶ ὡς ἡμερῶν ἡλικίας ἔτεκεν, ἐπεὶ πιστὸν ἠγάσθη τὸ ἐπαγγελία κληρονομῶν.

12 Διὸ καὶ ἀφ' ἐνὸς ἐχρημάτισται, καὶ ταῦτα

νεκρωμάτων, κατὰ τὰ ἄλλα ἔβραν ἔτι πάλιν, ἕως ἄμμου ἢ ὡς τὸ χεῖλος τῆς θαλάσσης ἢ ἀναείθμησεν.

13 Κατὰ πίσιν ἀπίθαιον ἔτι πάντες, μὴ λαδοίτες τὰς ἐπαγγελίας, ἀλλὰ πόρωθεν αὐτὰς ἰδόντες, ἕως πρῶτες, καὶ ἀσπασάμενοι, καὶ ὁμολογήσαντες ὅτι ξέτοι καὶ περιπέδησι εἰσιν ἐπὶ τῆς γῆς.

14 Οἱ γὰρ τοιαῦτα λέγοντες, ἐμφανίζουσι ὅτι πατεῖδα ἐπιζητῶσι.

15 Καὶ εἰ μὲν ἐκείνης ἐμνημόνευον ἀφ' ἧς ἐξῆλθον, εἶχον αὐτὸν ἀνακρίμεψαι.

16 Νυνὶ δὲ κρείττονος ὀρέγονται, τῆστιν ἐπεροκνίε· διὸ οὐκ ἐποιχμίσται αὐτὸς ὁ Θεὸς, Θεὸς ἐπιχειλεῖσται αὐτῶν ἠτοίμασε γὰρ αὐτοῖς πόλιν.

17 Πίστι προσενήνοχεν Ἀδοχάμ τὸν Ἰσαὰκ πρῶτος ἄμμου, καὶ τὸ μονοχρῆ προσέφερε ὁ τὰς ἐπαγγελίας ἀναδέξάμμου.

18 Πρὸς ὃν ἐλαλήθη· Ὅτι εὐ Ἰσαὰκ κληθήσεται σοι σπέρμα.

19 Λοιπόμενος οὖν ἕκ νεκρῶν ἐφείρεν δυνατὸς ὁ Θεὸς ὅθεν αὐτὸς εἰν ὡς βολῆ ἐκομίσαι.

20 Πίστι, ὡς μελλόντων εὐλόγησεν Ἰσαὰκ τὸν Ἰακώβ ἕως τῆς Ἡσῶ.

21 Πίστι, Ἰακώβ εὐλογησάντων ἔκαστον τῶν υἱῶν Ἰωσήφ εὐλόγησε· καὶ προσεκυῖωσεν ἐπὶ τὸ ἄκρον τῆς ῥάβδος αὐτῆς.

22 Πίστι.

- 22 Πίστη, Ἰωσήφ πλοῦτων ἀπὸ τῆς ἐξόδου
 τῆς γῆς Ἰσραὴλ ἐμνημόνευσεν, καὶ ἀπὸ τῆς
 ὁσίων αὐτοῦ ἐπέλεξε.
- 23 Πίστη, Μωσῆς γεννηθεὶς ἐκρύβη τέτ-
 τρωτον ὑπὸ τῆς πατρὸς αὐτοῦ, διότι εἶδον
 ἄσέβητον τὸ παιδίον· καὶ ὅτε ἐφοδοῆσεν τὸ
 ἀνάστημα τῆς βασιλείας.
- 24 Πίστη, Μωσῆς μέγας ἡγούμενος ἠρνήσατο
 λέγειν ἑαυτὸν υἱὸν Φαραῶ.
- 25 Μᾶλλον ἐλόμηνος συγκακῆσαι τῷ λαῷ τῆς
 Θεοῦ ἢ ἀσεβεῖν ἔχον ἀμερλίαν διπλάουσι.
- 26 Μείζονα πλῆθυν ἠγασάμην τῆς ἐν Αἴ-
 γύπτῳ θουρωῶν τῆς ὀνειδισμὸν τῆς Χριστοῦ
 ἀπέβλεπε ὅτι εἰς τὴν μισθολογίαν.
- 27 Πίστη κατέλιπεν Αἴγυπτον, μὴ φοβηθεὶς
 τὴν θυμὸν τῆς βασιλείας· τὴν γὰρ ἀόρατον ὡς ὄραν
 ἐκαρτέρησε.
- 28 Πίστη πεποίηκε τὸ πάχος καὶ τὴν πύξιν
 χρυσοῦ τῆς αἰματιῆς, ἵνα μὴ ὁ ὀλοφροσύνην τῶν
 ἀσεβῶν, θίγη αὐτὸν.
- 29 Πίστη διέδοσαν τῆς ἐρυθρῆς θάλασσαν ὡς
 ἀξίως ἢ πείραν λαβόντες οἱ Αἰγύπτιοι
 κατέποθησαν.
- 30 Πίστη τὴν τείχη Ἱερμαῶν ἐπισε, κυκλωθέντα
 ἐπὶ ἐπὶ ἡμέρας.
- 31 Πίστη Γαὰρ ἡ πόρτη ἔσυναπόλετο τοῖς
 ἀπεθνήσκουσιν δεξιαμνή τὰς καὶ σκοπὸν μετ'
 εἰρήνης.

- 32 Καὶ πᾶσι λέγω, Ἐπιλείψατε γάρ με δι-
 κημόνους ὁ χρόνος πρὸς Γεδεὼν, Βαράκ τε ἔ-
 Σαμψών, καὶ Ἰεφθάι, Δαβὶδ τε ἔ- Σαμεὴλ,
 καὶ τῶν αἰθιοπῶν·
- 33 Οἱ δὲ πίστεως κατηγωνίσαντο βασι-
 λείας, ἐργάσαντο δικαιοσύνην, ἐπέτυχον
 ἐπαγγελιών, ἔφραζαν τόματα λεόντων·
- 34 Ἐσθεῖσαν δύναμιν πυρός, ἔφυγον τόματα
 μαχαίρας, ἐνεδυναμώθησαν ἀπὸ ἀδινείας,
 ἐγλήθησαν ἰσχυροὶ ἐν πολέμῳ, παρεμβολὰς
 ἐκλίναν ἀλλοτρίων·
- 35 Ἐλάβον γυναικίνας ἐξ ἀναστάσεως τὰς νε-
 κρῆς αὐτῶν ἄλλοι δὲ ἐτυμπανίσθησαν, ἔ-
 αἰσθησάμενοι τὸ ἀπολύτῳσιν, ἵνα κρείττο-
 ν ᾖ ἀναστάσεως τύχῳσιν·
- 36 Ἐπεροὶ δὲ ἐμπαιγμῶν καὶ μαρτύρων πᾶσαν
 ἔλαβον, ἐπὶ δὲ δεσμῶν καὶ φυλακῆς·
- 37 Ἐλιθιάθησαν, ἐπρίσθησαν, ἐπρῆσθησαν,
 ἐν φόνῳ μαχαίρας ἀπέθανον· ὡσεὶ ἄλγον ἐν
 μελωταῖς, ἐν αἰγείοις δέρμασιν· ὑπερέ-
 μμοι, θλιβόμενοι, κακῶς ἐμμοι·
- 38 (Ὡς ὅτε ἐν ἁγίοις ὁ κρόσμος) ἐν ἱρη-
 μείαις πλεονώμμοι καὶ ὄρεσι ἔ- σπηλαίοις καὶ
 ταῖς ὀπαῖς τῆς γῆς.
- 39 Καὶ ἔτοι πάντες μαρτυρησίτες ἀπὸ τῆς
 πίστεως, ὅσα ἐκομίσαντο τὸ ἐπαγγέλιον·
- 40 Τῶν Θεῶν ὡσεὶ ἡμῶν κρείττον ἔ- αἰσθησάμενοι
 ψαμμίς, ἵνα μὴ χωρὶς ἡμῶν τελευτήσωσι.

Κεφ.

Κεφ. ιβ'. 12.

1 **Τ**οιζαρῶν κῆ ἡμεῖς τοσῶτον ἔχοντες ἀει-
κείμηνον ἢ εἶν νέφθ μαρτύρων, ὄγκον
ἀπεθέμνοι πάντα, ἔ τ' ὀπερίτατον ἀμαρ-
τίαν, δι' ὑπομνήης τρέχωμεν τ' ἀσεκείμηνον
ἡμῖν ἀγῶνα·

2 Ἀφορῶντες εἰς τ' τ' πίστεως δόξηγῶν ἔ τελεί-
ωτῶν Ἰησοῦν, ὅς ἀντὶ τ' ἀσεκείμηνος αὐτῶν ἡσα-
ραῶς, ὑπέμνε σαυρόν, αἰσχύνῃς καὶ ἀφρονή-
σας, εὐ δεξιᾶ τε ἔ τ' ὄνους ἔ Θεῶς ἐκάθισεν.

3 Ἀναλογίσασθε γῶ τ' τοιαύτην ὑπομε-
μνηγῶτα ὑπὸ τ' ἀμαρτωλῶν εἰς αὐτόν ἀντι-
λογία, ἵνα μὴ κήμητε, ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν
ἐκλυόμενοι.

4 Οὐπω μέγεις αἰμαίθ' ἀνίκητέστητε,
ἀπὸς τῶν ἀμαρτωλῶν ἀνταγωνίζόμενοι·

5 Καὶ ἐκλέηθε τ' ἀρκακλήσεως, ἥτις
ὑμῖν ὡς υἱοῖς ἀφλέγε). Ἰέμεν, μὴ ὀλιγῶρῶ
παιδείας Κυρίου, μηδὲ ἐκλύε ὑπ' αὐτῶ
ἐλεγχόμεθ'.

6 Ὅν γῶ ἀγαπᾶ Κύριθ', παιδύδ' ματι-
γῶ τ' ἅν' ὄν ὄν ἀρκαδέγε).

7 Εἰ παιδείαν ὑπομνετε, ὡς υἱοῖς ὑμῖν
ἀρεσφέρεται ὁ Θεός· τίς γάρ ἐστιν υἱὸς ὄν ἔ
παιδύδ' πατῆρ;

8 Εἰ ἔ χωρὶς ἐσε παιδείας, ἥς μέτοχοι γε-
γῶνασι πάντες, ἄρα νόθοι ἐσε κῆ ἔχ υἱοί.

9 Εἴτα τῶς μὲν τ' σαρκῶς ἡμῶν πατέρας

είχομεν παυδούρας, & εντριπόμεθα· & πολλὰ
 μάλλον ὑποταγασόμεθα τῇ παύρῃ ἢ πινύ-
 μώται, καὶ ζήσομεν;

10 Οἱ μὲν γὰρ πρὸς ὀλίγας ἡμέρας, καὶ τὸ
 δοκῶν αὐτοῖς, ἐπαυδούον· ὃ δὲ ἐπὶ τὸ συμφέ-
 ρον, εἰς τὸ μετὰ λαθεῖν τὴν ἀχρότητον αὐτῶν.

11 Πᾶσι δὲ παυδεία πρὸς μὴ τὸ παρὸν & δο-
 κῆι χαρῆς εἶναι, ἀλλὰ λύπης· ὑπερον δὲ καρ-
 πὸν εἰρηλικὸν τοῖς δὲ αὐτῆς γεγυμνασμένοις
 ἀποδοῦσι δικαιοσύνης.

12 Διὸ τοῖς παρφυδρίας χεῖρας καὶ τὰ ὄφθα-
 λμαυδρία θύματα ἀπορρίψατε·

13 Καὶ τροχίας ὀρθῶς ποιήσατε τοῖς ποσὶν
 ὑμῶν, ἵνα μὴ τὸ χυλὸν ἐκτραπῆ, ἰαθῆ δὲ
 μάλλον.

14 Εἰρηλίαν διώκετε μὴ πάντων, καὶ τὴν ἀγία-
 σμὸν, ἢ χωρὶς ἐδὲις ὄψεται τὸ Κύριον·

15 Ἐπισκοπεῖντες μὴ ἴτε ὑπερῶν διὰ τὴν χα-
 ρίτην τῆς Θεοῦ· μή τις ῥίζα πικρίας ἀνω φύβ-
 σα ἐνοχλή, & ἀπὸ ταύτης μιανθῶσι πολλοί.

16 Μὴ τις πόρνη, ἢ βέβηλη, ὡς Ἡσαῦ,
 ὃς ἀντὶ βρώσεως μιᾶς ἀπέδωκε τὰ ἑσπερὰ τό-
 κια αὐτῶν.

17 Ἴστε γὰρ ὅτι καὶ μετέπειτα θέλων κληρονομή-
 σαι τὴν δολογίαν, ἀπέδοκε μισθὸν· μεθαιρίας
 γὰρ τόπον ἔχουσα, καὶ περὶ μὴ διακρύων
 ἐκζητήσας αὐτίκῃ.

18 Οὐ γὰρ ἀποσεληλύθητε ψηλαφωμένοι
 ὄφθ.

ὄρφ, κὶ κεκαυμμένα πυρὶ, ἐ γνόφω, κὶ σκό-
τω, ἐ θυέλλῃ,

19 Καὶ σάλπιγγ' ἤχων, κὶ φωνῇ ῥημάτων,
ἧς οἱ ἀκέστωτες παρητήσαντο μὴ ἀρροτε-
θῶναι αὐτοῖς λόγον.

20 (Οὐκ ἔφερον γὰρ τὸ ἀλασεκκόμημον· Καὶ
θηρίον θύγῃ ἔ' ὄρως, λιθοβοληθήσε'), ἢ βο-
λίδι καὶ τὸ ἐξουθήσε').

21 Καὶ, ἔγωφοβερὸν ἰὼ τὸ φανταζόμενον,
Μωσῆς εἶπεν· Ἐκφοβός εἰμι ἐ' ἐντρομ')

22 Ἀλλὰ ἀρροτεληλύθαι Σιών ὄρφ, κὶ πόλι
Θεῶ ζῶντ', ἱερουσαλήμ ἐπ' ἐραναίω, ἐ μυ-
ελάσιν ἀγγέλων,

23 Πανηγύρι κὶ ἐκκλησίᾳ ἀρροτεθῶν ἐν
ἐρανοῖς ἀπογεγραμμένων, καὶ κελίῃ Θεῶ
πάντων, καὶ πνύμασι δικαίων τελελε-
μένων,

24 Καὶ ἀλαθήκης νέας μεσίτη Ἰησοῦ, κὶ αἰ-
ματι ῥαντισμοῦ, κρείττονα λαλέντι ὡς
τ' Ἀβέλ.

25 Βλέπετε μὴ παραιλήσηθε τ' λαλέντι. ἐς
γὰρ ἐκείνοι σὺκ ἐφυγον, τ' ἐπὶ τ' γῆς παραι-
πιστέμμοι χρηματίζοντα, πολλὰ μάλλον
ἡμεῖς οἱ τ' ἀπ' ἐραναῶν ἀπογεφόμεμοι,

26 Οὐδ' ἡ φωνὴ τ' γλωῦ ἐστέλεσε τότε· γῶν
ἐ ἐπὶ ἤλεται, λέγων· Ἐπ' ἀπαξ ἐγὼ σείω
ἐ μόνον τ' γλωῦ, ἀλλὰ κὶ τ' ἐρανον.

27 Τὸ δ', ἐπ' ἀπαξ, δηλοῖ τ' σαλεύομένων

τινὲς μὲν ἄριστοι, ὡς πεποιημένων, ἵνα μὴ ἐπι-
ταὶ μὴ σαλεύομεθα.

28 Διὸ βασιλείαν ἀσπίδου ἔχοντες λαμβάνου-
νοίτες, ἔχωμεν χάριν δι' ἧς λατρεύωμεν δύ-
αρέως τῷ Θεῷ, καὶ αἰδῶς καὶ δούλαθείας.

29 Καὶ γὰρ ὁ Θεὸς ἡμῶν πῦρ κολιβαλίσκον.

Κεφ. ιγ'. 13.

1 **Η** φιλαδελφία μὲν ἐστίν.

2 Τῆς φιλοξενίας μὴ ἐπιλασθῆναι ἑα-
σθῆναι γὰρ ἔλαττον ἢ ξενιστῶν ἀγέ-
λας.

3 Μιμησάμενοι τῶν δεσμίων, ὡς συνδεδε-
μένοι τῶν κακῶν καὶ ἁμαρτιῶν, ὡς καὶ αὐτοὶ ὄντες ἐν
σώματι.

4 Τίμιος ὁ γὰρ ἐστὶν ἐν παντί, καὶ ἡ κατὰ
ἀμείναιον πόρεως ἢ καὶ μοιχῶν κερταὶ ὁ
Θεός.

5 Ἀφιλάργυρος ὁ πλοῦτος ἄρχεμενοι τοῖς
παισίν· αὐτὸς γὰρ εἶρηκεν· Οὐ μὴ σε ἀνῶ,
ἐδ' ἔμὴ σε ἐκκαλίπω.

6 Ὡς τε παρρησίας ἡμῶν λέγει· Κύριε ἐμοὶ
βοηθός, καὶ ἐφοβηθήσομαι τί ποιήσῃ μοι ἀν-
θρώπου.

7 Μνημονεύετε τῶν ἡγαθῶν ὑμῶν, οἵτινες
ἐλάλησαν ὑμῖν τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ ἅν' ἀναστρωφῆ-
τες τ' ἐκδοσιν τ' ἀναστροφῆς, μιμησάμενοι τῶν πῶν.

8 Ἰησοῦς Χριστὸς χεῖρας καὶ σήμερον ὁ αὐτός, ἐ-
κ τῶν αἰῶνας.

9 Δι-

- 9 Διδαχαῖς ποικίλαις κὴ ξέναῖς μὴ περι-
φέρεσθε. καλὸν γὰρ χαίρειν βεβαιῶσθαι τὴν
καρδίαν, ἔβρωμασιν, ἐν οἷς σὸκ ἀφελή-
θησαν οἱ περιπαλήταιες.
- 10 Ἐχρῶμεν θυσιασθῆλον, ἐξ ἧς φαγεῖν σὸκ
ἔχουσιν ἐξουσίαν οἱ τῆ σκίωῃ λατρεύοντες.
- 11 Ὡν γὰρ εἰσφέρεται ζώων (τὸ αἷμα περι-
ἀμαρτίας εἰς τὸ ἄγαθόν διὰ τῆς ἁγίας, τέ-
των τὰ σώματα καθαγιασθέντα) ἔξω τῆ περιε-
βολῆς.
- 12 Διὸ ἐ ἰησῦς, ἵνα ἀγάγη διὰ τῆς ἰδίας
αἱματιᾶς τὸ λαὸν, ἔξω τῆς πύλης ἔπαγε.
- 13 Τοίνυν ἐξερχώμεθα πρὸς αὐτὸν ἔξω τῆς
περιεβολῆς, τὸ ἠνδρῖσμον αὐτῆς φέροντες.
- 14 Οὐ γὰρ ἐχρῶμεν αἰδοῦν πόλιν, ἀλλὰ τῆ
μέλλουσαν ἐπιζητῶμεν.
- 15 Διὸ αὐτῆς ἐν ἀναφέρωμεν θυσίαν ἀγέσεως
διὰ παντός τῆς Θεοῦ, τῆς τέτι καρπὸν ἀλλέων
ὀμολογούντων τῆ ὀνόματι αὐτῆς.
- 16 Τῆς ἰδίας οὐποιίας ἐ κρινονίας μὴ ἐπιλαν-
θάνεσθε· τοιαύταις γὰρ θυσίαις διαρεσῆται
ὁ Θεός.
- 17 Πείθεσθε τοῖς ἡγεμόνοις ὑμῶν, κὴ ὑπαί-
κεις· αὐτοὶ γὰρ ἀρεπνῶσιν ὑπὲρ τῆς ψυχῶν ὑ-
μῶν, ὡς λόγον ἀποδώτοντες· ἵνα μὴ χαρῶς
τῆτο ποιῶσι, κὴ μὴ σενάζοντες· ἀλυσιτελεῖς
γὰρ ὑμῖν τῆτο.
- 18 Προσδίχεσθε περι ἡμῶν πεποίητα μὲν γὰρ

ὅτι καλῶ συνείδησιν ἔχημι, ἐν πᾶσι καλῶς
 θελοῦντες ἀνασρέφειν.

19 Περισσότερας ἢ ὡς καλῶ τῆτο ποιῆ-
 σαι, ἵνα τάχιον δὲ παρὰ τὰς ἡμῶν.

20 Ὁ ὃ Θεὸς τῆ εἰρήνης, ὁ ἀναζωοῦν ἐκ νε-
 κρῶν τῆ ποιμήνα τῆ παρὰ τῆ μέγαν ἐν
 αἵματι Διδάχης αἰώνικ, τῆ Κύριον ἡμῶν
 Ἰησοῦν,

21 Καθάρσιν ὑμῶς ἐν πιντῆ ἔργα ἀγα-
 θῶ, εἰς τὸ ποιῆσαι τὸ θελημα αὐτῆ· ποιῶν
 ἐν ὑμῶν τὸ δὲ ἀρεστον ἐνώπιον αὐτῆ, Διδάχῃ Ἰησοῦ
 Χριστῆ· ὃ ἡ δόξα εἰς τὰς αἰῶνας τῆ αἰῶ-
 νων. Ἀμὲν.

22 Παρὰ καλῶ ἢ ὑμῶς, ἀδελφοί, ἀνέχοτε
 τῆ λόγος τῆ ὡς καλήσεως· κἢ γὰρ Διδάχῃ βρα-
 χίων ἐπίσηλα ὑμῶν.

23 Γινώσκετε τῆ ἀδελφὸν Τιμόθεον δὲ πλε-
 λυμῶν, μεθ' ὃ (ἐὰν τάχιον ἔρχηται) ὄψο-
 μαί ὑμῶς.

24 Απατάσθε πάντας τὰς ἡγεμένους ὑμῶν
 ἐ πάντας τὰς ἀγίας. Απατάζονται ὑμῶς οἱ
 δὲ τῆ Ἰταλίας.

25 Ἡ χάρις μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμὲν.

Πρὸς Ἑβραίους ἐγράφη δὲ τῆ Ἰταλίας
 Διδάχῃ Τιμόθεος.

ΙΑΚΩΒΟΥ

ΙΑΚΩΒΟΥ Ἐ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ἐπιστολὴ καθολικὴ.

Κεφ. α'. Ι.

Ι **ΙΑ**ΚΩΒΟΣ Θεῷ καὶ Κυ-
ρίῳ Ἰησοῦ Χριστῷ δούλῳ, ταῖς
δώδεκα φυλααῖς ταῖς ἐν τῇ Δια-
σπορᾷ, χαίρειν.

2 Πᾶσιν χαρὰν ἠγάπησατε, ἀδελφοί μου,
ὅταν πηρασθεῖς ὡσεπέσητε ποικίλοις.

3 Γινώσκοντες ὅτι τὸ δοκίμιον ὑμῶν τῆ πί-
στεως κατεργάζετ' ὑπομονήν.

4 Ἡ δὲ ὑπομονὴ ἔργον τέλειον ἐχέτω, ἵνα ἦτε
τέλειοι καὶ ἀλόκληροι, ἐν μηδενὶ ληπόμηναι.

5 Εἰ δὲ τις ὑμῶν λείπεται σοφίας, αἰτεί-
τω ὡς ἡμεῖς τὸ δίδόναι Θεῷ πᾶσιν ἀπολαῖς,
καὶ μὴ ὀφθαλμοῖς, καὶ δοθήσεται αὐτῷ.

6 Αἰτείτω δὲ ἐν πίστει, μηδὲν Διακρινόμενος·
ὅθεν Διακρινόμενος ἔοικε κλύδωνι θαλάσσης
ἀνεμιζομένῳ ἔριπιζομένῳ.

7 Μὴ γὰρ οἰεῖσθε ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος ὅτι
λήψεται τι ὡς ἡμεῖς τὸ Κυρίῳ.

8 Ἀνὴρ διψυχοῦς, ἀκαταστάτος ἐν πάσαις
ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ.

9 Καυχώσθε δὲ ὁ ἀδελφὸς ὁ ταπεινὸς ἐν τῷ
ὑψέ αὐτοῦ.

10 Ὁ δὲ πλάσιος, ἐν τῇ ταπεινώσει αὐτοῦ, ὅτι
ὡς ἄνθος χόρτου παρελεύσετ'.

ΙΙ Αἰτίη

- 11 Ατίτλε γδ ὁ ἥλιος σὺ τῷ καύσανι, ἔξήρανε τ' ἕρπει, καὶ τὸ ἄνθος αὐτῆ ἐξέπιπτε, καὶ ἡ δύπερπια τ' αὐτῆ ἀπώλετο ἕτω καὶ ὁ πλάσιος ἐν ταῖς πορείαις αὐτῆ μεμρανθήσε).
- 12 Μακρίεσθ' ἀνὴρ ὅς ὑπομῆρὸς πύρασμαθ' ὅπ' δόκιμος χυρόμηνος λήψε) τ' σέφανον τῆς ζωῆς, ὃν ἐπηχέιλατο ὁ Κύριος τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν.
- 13 Μηδεὶς πύραζομνος λεγέτω· ὅτι δὴ τ' Θεὸς πύραζομα· ὁ γδ Θεὸς ἀπείραστος ἐστὶ κακῶν, πύραζος δ' αὐτὸς ἕδνεα.
- 14 Ἐχθὸς δ' ἡ πύραζεται, ὑπὸ τῆς ἰδίας ἐπιθυμίας ἐξεληρόμηνος ἔδελιαζομνος.
- 15 Εἴπα ἡ ἐπιθυμία συλλαβῆσαι πικτὴ ἀμφορέαν· ἡ δ' ἀμφορέα δὴποτελεσθεῖσα δὴπικυθίνατο.
- 16 Μὴ πλανᾶσθε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί.
- 17 Πᾶσα δάσις ἀγαθὴ, καὶ πᾶν δῶρημα τίλθον ἀνωθέν ἐστὶ, καὶ βαῖνον δὴ τ' πατρὸς τ' φώτων, παρ' ὧσθε ἐν τῷ ἑρακαγῆ, ἡ σροπῆς δὴπροκίασμα.
- 18 Βεληθεῖς ἀπικύησιν ἡμῶς λόγῳ ἀληθείας, εἰς τὸ εἶναι ἡμῶς ἀπαρχλιώπια τῶν αὐτῶ κλισμάτων.
- 19 Ὡστε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί, ἔτω πᾶς ἀνθρώπος πυχὸς εἰς τὸ ἀκῆσαι, βραδὺς εἰς τὸ λαλήσαι, βραδὺς εἰς ὀργλῶ.

- 20 Ὁργή γὰρ ἀνδρὸς, δικαιοσύνη Θεῶν ἔκατεργάζετο).
- 21 Διὸ ἀποθέμενοι πᾶσαν ῥυπαρίαν καὶ καλοσείαν κακίας, ἐν πραύτητι δέξασθε τὸ ἔμφυτον λόγον, τὸ δυνάμειον σῶσαι ὑμᾶς ψυχῆς ὑμῶν.
- 22 Γίνεσθε ὅ ποιηταὶ λόγου, καὶ μὴ μόνον ἀκροαταί, ἀλλὰ λογιζόμενοι ἑαυτοὺς·
- 23 Ὅτι εἴ τις ἀκροατὴς λόγου ἐστὶ καὶ ἔποιητής, ἕτερον ἔοικεν ἀνδρὶ καὶ ἀνοῦντι τὸ πρῶτον τῆς γλυίσσεως αὐτοῦ ἐν ἐσώπρω·
- 24 Κατενόησε γὰρ ἑαυτὸν, καὶ ἀπελήλυθε, καὶ οὐδέως ἐπελάθετο ὅποιόν τι ἦν.
- 25 Ὁ ὅτι ἀδρακύψας εἰς νόμον τέλειον τὸ τῆς ἐλευθερίας, καὶ ἀδραμείνας, ἕτερον ὅτι ἀκροατὴς ἐπιλησμονῆς γλυόμενοι, ἀλλὰ ποιητὴς ἔργου, ἕτερον μακάριον ἐν τῇ ποιήσει αὐτοῦ ἔσται.
- 26 Εἴ τις δοκεῖ ἡρησκος εἶναι ἐν ὑμῖν, μὴ χολιναγωγῶν γλώσσαν αὐτοῦ, ἀλλ' ἀπατῶν καρδίαν αὐτοῦ, τέττα μάταιον ἢ ἡρησκεία.
- 27 Θρησκεία καθαρά καὶ ἀμίαντος ἀδρα τῷ Θεῷ ὁ πατὴρ, αὗτη ἐστίν, ἐπισκέπεισθε ὀρθροῦς καὶ χήρας ἐν τῇ θλίψει αὐτῶν, ἄσπιλον ἑαυτὸν τηρεῖν ἀπὸ τῆς κήσεως.

Κεφ. β'. 2.

1 **Α** Δελφοί μου, μὴ ἐν πρῶτωπολησίαις ἔχητε τὸ πῖπιν τῆς Κυρίας ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ τὸ δόξης·

2 Ἐὰν

- 2 Ἐὰν γὰρ εἰσέλθῃ εἰς τὸ συναγωγὴν ὑμῶν
ἀνὴρ χρυσοδακτύλιος ἐν ἰδοῦν λαμπρῶν,
εἰσέλθῃ ἢ καὶ πτωχὸς ἐν ῥυπαρῶν ἰδοῦν,
- 3 Καὶ ἐπιβλέψῃ ἢ ἐπὶ τὸ φορέντα τὸ ἰδοῦν
τῶν λαμπρῶν, καὶ εἴπητε αὐτῷ· Σὺ καθὼς
ᾧδε καθῶς· καὶ τῷ πτωχῷ εἴπητε· Σὺ σῆτι
ἐκεῖ, ἢ καθὼς ᾧδε ὑπὸ τὸ ὑποπόδιόν μου·
- 4 Καὶ ἔδικρίθη ἐν ἑαυτοῖς, καὶ ἐγένετο
κεῖται Διαλογισμῶν πονηρῶν;
- 5 Ἀκούετε ἀδελφοί μου ἀγαπητοί, ἔχῃ ὁ
Θεὸς ἐξελέξατο τὰς πτωχὰς ἢ ἡσυχίας τῶν
πλουσίων ἐν πίστει, καὶ κληρονόμος τῆς
βασιλείας ἧς ἐπηγγείλατο τοῖς ἀγαπῶσιν
αὐτόν;
- 6 Ὑμεῖς ἢ ἠπαύσατε τὸ πτωχόν. ἔχῃ οἱ πλού-
σιοι καταδυναστεύσιν ὑμῶν, καὶ αὐτοὶ
ἔλκυσιν ὑμᾶς εἰς κελύθειαν;
- 7 Οὐκ αὐτοὶ βλασφημῶσι τὸ καλὸν ὀνο-
μα τὸ ἐπικληθὲν ἐφ' ὑμᾶς;
- 8 Εἰ μὲντοι νόμοι τελεῖτε βασιλικόν, καὶ
τὸ γραφίον· Ἀγαπήσατε τὸ πτωχόν ὡς
σεαυτὸν, καθῶς ποιεῖτε.
- 9 Εἰ ἢ προσωποληπτεῖτε, ἀμαρτῶν ἐρ-
γαζέσθε, ἐλεγχόμενοι ὑπὸ τῶν νόμων ὡς ᾧδε
ᾧδε·
- 10 Ὅστις γὰρ ὅλον τὸ νόμον τηρήσῃ, πλάισθῃ ἢ
ἐν ἐνὶ, γέγονε πάντων ἑνοχος·
- 11 Ὁ γὰρ εἰπὼν· Μὴ μοιχδέσης, εἶπε καὶ·
Μὴ

Μὴ φονδύσης. εἰ ἢ ἐμοιχδύσης, φονδύσης
 ἢ, γέθνας πωδραδάτης νόμω.

12 Οὕτω λαλεῖτε καὶ ἔτω ποιῆτε ὡς ἀφ'
 νόμω ἐλευθερίας μέλλοντες κρινεσθαι·

13 Ἡ γὰρ κρίσις ἀνίλεως τῶ μὴ ποιήσαντι
 ἔλεος· καὶ κατακαυχᾶται ἔλεος κρίσεως.

14 Τί τὸ ὄφελος, ἀδελφοί μου, εἰάν τις
 λέγει πὶς ἔχῃ, ἔργα ἢ μὴ ἔχῃ, μὴ διώαται
 ἢ πίσις σωσῆ αὐτόν;

15 Εἰάν ἢ ἀδελφὸς ἢ ἀδελφὴ γυμνοὶ ὑπάρ-
 χωσι, καὶ ληπόμυμοι ὡσι τ' ἐφημέρω τροφῆς,

16 Εἶπη δὲ πὶς αὐτοῖς ἐξ ὑμῶν· Ὑπάγετε εὖ
 εἰρωή, θερμαίνεσθε καὶ χορταίζεσθε· μὴ δώτε
 ἢ αὐτοῖς τὰ ἐπιτήδεια τ' σώματι, τί τὸ
 ὄφελος;

17 Οὕτω ἔη πίσις, εἰὰ μὴ ἔργα ἔχῃ, νεκρὸ
 ἐστὶ καθ' ἑαυτῷ.

18 Ἀλλ' ἐρεῖ πὶς· Σὺ πὶσιν ἔχῃς, καὶ γὰρ ἔργα
 ἔχω· δεῖξόν μοι τ' πὶσιν σου καὶ τ' ἔργων σου,
 καὶ γὰρ δεῖξω σοι εὖ τ' ἔργων μου τ' πὶσιν μου.

19 Σὺ πιστεύεις ὅτι ὁ Θεὸς εἰς ἐστὶ καλῶς
 ποιῆς· καὶ τὰ δαιμόνια πιστεύεις, καὶ
 φελοσθῆ.

20 Θέλῃς ἢ γνῶναι, ὡ ἄνθρωπε κενε, ὅτι ἢ
 πὶσις χωρὶς τ' ἔργων νεκρὸ ἐστίν;

21 Ἀβραάμ ὁ πατὴρ ἡμῶν σὺν ἐξ ἔργων
 ἐδικημάθη, ἀνενέκας Ἰσαὰκ τὸν υἱὸν αὐτοῦ
 ἐπὶ τὸ ἴστυασηρα;

22 Βλέπετε

- 22 Βλέπετε ὅτι ἡ πίστις σωθήσεται τοῖς ἔργοις αὐτῶν, καὶ ἐκ τῶν ἔργων ἡ πίστις ἐτελειώθη;
- 23 Καὶ ἐτελειώθη ἡ γραφή ἡ λέγουσα· Ἐπίστανται ἡ Ἀβραάμ πρὸ Θεοῦ, ἐτελειώθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην, ἐφίλησεν Θεὸς ἐκλήθη.
- 24 Ὁρᾶτε τοίνυν ὅτι ἐξ ἔργων δικαιοσύνη ἀνθρώπου, καὶ ἅπαρ ἐκ πίστεως μόνον;
- 25 Ὁμοίως ἡ καὶ Ραββὶ ἡ πόρνη ἅπαρ ἐξ ἔργων ἐδικαιώθη, ὑποδέξατο μὲν τὰς ἀγγέλους, καὶ ἐπέρα ἰδοὺ ἐμβαλεῖσα;
- 26 Ὡστε γὰρ τὸ σῶμα χωρὶς πνεύματος ἁγίου ἐκρὸν ἐστίν, ἕτω καὶ ἡ πίστις χωρὶς τῶν ἔργων νεκρὰ ἐστίν.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 Μὴ πολλοὶ διδάσκαλοι γίνεσθε, ἀδελφοί μου, εἰδότες ὅτι μείζον κριμὰ ληψόμεθα·
- 2 Πολλὰ γὰρ πλάκωσεν ἡπαῖτες· εἴτις ἐν λόγῳ ἐπλάκωσεν, ἕτερος τετέλεσται ἀνὴρ, δυνατὸς χαλιναγωγῆσαι καὶ ὅλον τὸ σῶμα.
- 3 Ἰδοὺ τῶν ἰσχυρῶν τὰς χαλινὰς εἰς τὰ σώματα βάλλουσιν ὡς τὸ πείθεσθαι αὐτὰς ἡμῖν, καὶ ὅλον τὸ σῶμα αὐτῶν μείζον κριμὰ.
- 4 Ἰδοὺ, ἐπὶ τὰ πλοῖα τηλικαῦτα ὄντα, καὶ ὑπὸ σκληρῶν ἀνέμων ἐλαυνόμενα, μετατρέχει ὑπὸ ἐλαχίστων πηδαλίων ὅπως αὐτὸ ἡ ὄρμηξ ἢ οὐχὶ ἄνεμος βέληξ.
- 5 Οὕτω καὶ ἡ γλῶσσα μικροὶ μέρη ἐστίν, καὶ

καὶ μεμελωχεῖ. ἰδὲ, ὀλίγον πῦρ ἠλίκτω
ὑλῶν ἀνάπτε.

6 Καὶ ἡ γλῶσσα πῦρ, ὁ κέσμεθ τῆς ἀδικίας· ὅπως ἡ γλῶσσα καδίσα ἐν τοῖς μέλεσιν ἡμῶν, ἡ σπιλῆσαι ὅλον τὸ σῶμα, καὶ φλογίζουσι τὸ τροχὸν τῆς χυέσεως, καὶ φλογίζομένη ὑπὸ τῆς γέεννης.

7 Πᾶσα γὰρ φύσις θηρίων τε καὶ πετεινῶν, ἐρπιτῶν τε καὶ ἐναλίων, δαμάζει ἐν δέδαιμασιν τῆ φύσιν τῆ ἀνθρωπίνην.

8 Τὴν ἡ γλῶσσαν ὑδεῖς διώα ἀνθρώπων δαμάσαι, ἀκαταμάχθαι κακόν· μετὴ ἰὸ θανατηφόρον.

9 Ἐν αὐτῇ δὲ λογέμεθ τὸ Θεὸν ἐ πατέρα, καὶ ἐν αὐτῇ κατάρματα τὸς ἀνθρώπους τὸς καὶ ὁμοίωσιν Θεῶν γεγενότας.

10 Ἐκ τῆ αὐτῆς στόματος ἐξέρχεται δὲ λογία καὶ κατάρμα. Οὐ γὰρ, ἀδελφοί μου, ταῦτα ἕτω γίνεσθαι.

11 Μήπι ἡ πηγὴ ἐκ τῆ αὐτῆς ὁπῆς βροῦν τὸ γλυκὺ καὶ τὸ πικρὸν;

12 Μὴ διώαται, ἀδελφοί μου, συκῆ ἐλαίας ποιῆσαι, ἢ ἄμπελθ σῦκα; Οὕτως ὑδεμία πηγὴ ἀλυκὸν ἐ γλυκὺ ποιῆσαι ὑδωρ.

13 Τίς σοφὸς καὶ ἐπιστήμων ἐν ὑμῖν; διδάσκει ἐκ τῆ καλῆς ἀνατροφῆς τὰ ἔργα αὐτῆ ἐν πραύτητι σοφίας.

14 Εἰ ἡ ζῆλον πικρὸν ἔχετε καὶ ἐρίθαι ἐν τῇ

τῆ καρδία ὑμῶν, μὴ καρτερικαυχῶσθε καὶ ψυ-
δοῦσθε καὶ τῆς ἀληθείας.

15 Οὐκ ἔστιν αὐτὴ ἡ σοφία ἀνωθεν κατεργασμέ-
νη, ἀλλ' ἐπίγασθη, ψυχικὴ, δαιμονιάδης·

16 Ὅπερ γὰρ ζῆλος καὶ ἐρίδιαι, ἐκείνη ἀκατα-
στασία καὶ πᾶν φάυλον πρᾶξιμα.

17 Ἡ δ' ἀνωθεν σοφία παρῶτον μὴ ἀγνή
ἔστιν, ἐπέταξ ἐιρηνικὴ, ἐπιγίγνηται, ἀπείρητος, με-
τῆ ἐλέως καὶ καρπῶν ἀγαθῶν, ἀδιάκριτος ἐ-
κ ἀνυπόκριτος.

18 Καρπὸς δ' τῆς δικαιοσύνης ἐν εἰρήνῃ αἰε-
ρεῖται τοῖς ποιῶσιν ἐιρηνίω.

Κεφ. δ'. 4.

1 ΠΟῦθεν πόλεμοι καὶ μάχαι ἐν ὑμῖν; Οὐκ
ἐντεῦθεν, ἐκ τῆς ἡδονῶν ὑμῶν τῆς σπᾶσι δυο-
μῶν ἐν τοῖς μέλεσιν ὑμῶν;

2 Ἐπιθυμεῖτε, ἐπεὶ ἔχετε· φοβούεστε καὶ
ζηλοῦτε, ἐπεὶ δυνάσθε ἐπιτυχεῖν· μάχεσθε καὶ
πολεμεῖτε, ἐπεὶ ἔχετε ἡδονήν, ἀλλὰ τὸ μὴ αἰτεῖ-
σθαι ὑμῶν.

3 Αἰτεῖτε, καὶ ἔλαμβάνετε, διότι κακῶς
αἰτεῖσθε, ἵνα ἐν ταῖς ἡδοναῖς ὑμῶν διαπαι-
νήσητε.

4 Μοιχοὶ καὶ μοιχαλίδες, ἔσθ' οἵδατε ὅτι ἡ
φιλία τῆς κρέμας ἐχθρὰ τῆς Θεοῦ ἔστι; ὅς αὐ-
τῶν βεληθῆ φιλῶ εἶναι τῆς κρέμας, ἐχθρὸς
τῆς Θεοῦ κατὰ τὴν.

5 Ἡ δοκεῖτε ὅτι κενῶς ἡ γραφὴ λέγει· Πρὸς
φθόρον

φθόνον ἐπιποθεῖ τὸ πνεῦμα ὃ κατοικήσεν ἐν
ἡμῖν ;

6 Μείζονα ἢ δίδωσι χάριν, διὸ λέγει· Ὁ
Θεὸς ὑπερηφάνοις ἀνιήσεται, ταπεινοῖς ἢ
δίδωσι χάριν.

7 Ὑποτάγητε οὐκ τῷ Θεῷ, ἀνίστητε τῷ
Δαυὶδ, ἔφραζε) ἀφ' ὑμῶν.

8 Ἐπίστατε τῷ Θεῷ, καὶ ἐχθρεῖ ὑμῖν· κατε-
ρίσατε χεῖρας ἀμαρτωλοῖ, καὶ ἀγνίστατε
καρδίας διψυχοῖ.

9 Ταλαιπωρήσατε ἔπειθήσατε καὶ κλαύ-
σατε. ὁ γέλως ὑμῶν εἰς πένθος μετ' εὐφροσύνην,
καὶ ἡ χαρὰ εἰς κατήφειαν.

10 Ταπεινώθητε ἐνώπιον τοῦ Κυρίου, ἐνψώ-
σατε ὑμᾶς.

11 Μὴ καταλαλεῖτε ἀλλήλων, ἀδελφοί· ὁ
καταλαλῶν ἀδελφῶ, ἔκρινεν τὸ ἀδελφὸν
αὐτοῦ, καταλαλεῖ νόμος, καὶ κρίνει νόμον· εἰ ἢ
νόμον κρίνεις, σὺκ εἶ ποιητὴς νόμου, ἀλλὰ
κριτής.

12 Εἷς ἐστὶν ὁ νομοθέτης ὁ δυνάμην ἑστῶσα
καὶ ἀπολέσασθαι· σὺ τίς εἶ ὃς κρίνεις τὸ ἕτερον;

13 Ἄγε νῦν οἱ λέγοντες· Σήμερον ἢ αὔριον
προδύσομεθα εἰς τήνδε τὴν πόλιν, καὶ ποιήσο-
μεν ἐκεῖ ἐν αὐτῷ ἑνα, καὶ ἐμπροδύσομεθα,
καὶ κερδήσομεν.

14 Οἵπνες σὺκ ἐπίστατε τὸ τὸ αὔριον· ποῖα
γὰρ ἡ ζωὴ ὑμῶν; ἀτμίς γὰρ ἐστὶν ἢ πρὸς
ὀλίγον

- ὀλίγη φαινομένη, ἔπειτα δὲ ἀφανίζομένη.
 15 Ἀπὸ τῆς λίξης ὑμῶν· Ἐὰν ὁ Κύριος θε-
 λήσῃ, καὶ ζήσωμεν, καὶ ποιήσωμεν τότε ἢ
 ἐκείνο.
 16 Νῦν δὲ καυχᾶσθε ἐν ταῖς ἀλαζοθείαις
 ὑμῶν· πῶστε καύχησης τοιαύτη, ποιεῖσθε.
 17 Εἰδότε οὐκ κεκλόν ποιεῖν καὶ μὴ κτιθῆναι,
 ἀμαρτία αὐτῶ ἐστι.

Κεφ. ε'. 5.

- 1 Ἄγε νῦν οἱ πλεῖστοι, κλαύσατε ὀλολύ-
 ζοντες ἐπὶ ταῖς λαμπυρίαις ὑμῶν ταῖς
 ἐπερχομέναις.
 2 Ὁ πλεῖτος ὑμῶν σέσηπε, καὶ τὰ ἰμάτια
 ὑμῶν σπένδροντα γίνονται·
 3 Ὁ χρυσὸς ὑμῶν καὶ ὁ ἀργυρὸς κεκλιῶνται,
 ἔο ἰὸς αὐτῶν εἰς μαρτύριον ὑμῶν ἔσται, καὶ
 φάγηται τὰς σείρκας ὑμῶν ὡς πῦρ· ἐρησά-
 ρισαίτε ἐν ἑσχάταις ἡμέραις.
 4 Ἰδὲ, ὁ μισθὸς τῶν ἐργατῶν τῶν ἀμνηστῶντων
 τὰς χώρας ὑμῶν, ὁ ἀπετραημένος ἀφ' ὑμῶν,
 κροῖζέ· ἔαι βοαὴ τῶν θεροσίντων εἰς τὰ ὄπλα
 Κυρίου σαδαιῶθ εἰσεληλύθησιν.
 5 Ἐπευφῆσαίτε ἐπὶ τῇ γῆσι, καὶ ἐσπασθήσαίτε·
 ἐφρέψατε τὰς καρδίαις ὑμῶν ὡς ἐν ἡμέραις
 σφαγῆς·
 6 Κατεδικάσαίτε, ἰφοιδύσαίτε τὸ δίκαιον·
 σὺν ἀνυψίαις ὑμῶν.
 7 Μακροθυμήσαίτε οὐκ, ἀδελφοί, ἕως τῆς
 πύρας-

παρεσβίας ἔ Κυρίε. ἰδὲ, ὁ γεωργὸς ἐκδέ-
χεται τὸ πρῶτον καρπὸν τῆ γῆς μακροθυμῶν
ἐπ' αὐτῷ, ἕως αὐτὸ λάβῃ ὑετὸν πρῶτον καὶ
ὄψιμον.

8 Μακροθυμήσατε καὶ ὑμεῖς, σιγήσατε
ἐν καρδίᾳ ὑμῶν, ὅτι ἡ παρεσβία ἔ Κυρίε
ἤγγικε.

9 Μὴ στενάζετε κατ' ἀλλήλων, ἀδελφοί, ἵνα
μὴ κατακρηθῆτε· ἰδὲ, κρητὴς ὡρὸς τῶ θυρῶν
ἔσηκεν.

10 Ὑπόδηγμα λάβετε τὸ κακοπαθείας, ἀ-
δελφοί μου, ἔ τὸ μακροθυμίας, τὰς παροφεί-
κτας οἱ ἐλάλησαν τῷ ὀνόματι Κυρίε.

11 Ἰδὲ, μακαρίζομεν τὰς ὑπομνήσκας. ἔ
ὑπομονὴν ἰάω ἡκίστατε, ἔ τὸ τέλος Κυ-
ρίε εἶδετε, ὅτι πολὺσπλαχνὸς ἐστὶν ὁ Κύ-
ριε καὶ οἰκτίρων.

12 Πρὸ πάντων ἡ, ἀδελφοί μου, μὴ ὀμνύετε
μήτε τὸ ἔρανον, μήτε τὸ γλῶ, μήτε ἄλλον
πινά ὄρκον· ἢ τῶ ἡμῶν τὸ ναί, ναί, καὶ τὸ ἔ, ἔ·
ἵνα μὴ ὑπὸ κρείσιν πέσητε.

13 Κακοπαθεῖ τις ἐν ὑμῖν; παροσυχέτω
δύθυμεις, ψαλλέτω.

14 Ἀδενεῖ τις ἐν ὑμῖν; παροκαλεσάτω τὰς
πρεσβυτέρους τῆ ἐκκλησίας, καὶ παροσυχά-
στωσαν ἐπ' αὐτὸν, ἀλείψαντες αὐτὸν ἐλαίῳ
ἐν τῷ ὀνόματι ἔ Κυρίε.

15 Καὶ ἡ δύχῃ τῆ πίστεως σώσῃ τὸ κήμονον,
καὶ ἔγε-

καὶ ἐγερῆσθαι αὐτὸν ὁ Κύριος καὶ ἀμαρτίας ἡ
πεποιηκώς, ἀφειρήσεται αὐτῷ.

16 Ἐξομολογείσθε ἀλλήλοις τὰ ἁμαρτή-
ματά, ἃ ἔχετε ἕως ἀλλήλων, ὅπως ἰαθῆ-
τε. πολὺ ἰσχύς ἐστὶν δικαίᾳ ἐνεργεσίᾳ.

17 Ἡλίαν ἀνθρώπου ἡμῶν ὁμοιοπαθῆς ἡμῖν,
καὶ πνεύματι πνευματικῷ ἵνα μὴ βρέξαι καὶ
ὅσα ἔβριξεν ἐπὶ τῆς γῆς ἐνιαυτὸς τρεῖς ἔ-
μηνας ἕξ.

18 Καὶ πάλιν πνευματικῷ καὶ ὄρατος ὑετὸν
ἔδωκε, καὶ ἡ γῆ ἐβλάστησε τὸν καρπὸν αὐτῆς.

19 Ἀδελφοί, εἴαν τις ἐν ὑμῖν πλανηθῆ ὑπὸ
τῆ ἀληθείας, καὶ ἐπιστρέψῃ ἰς αὐτὸν,

20 Γινώσκέτω ὅτι ὁ ἐπιστρέψας ἀμαρτωλὸν
ἐκ πλάνης ὁδῆ αὐτῆ, σώσει ψυχὴν ἐκ θά-
νάτου, καὶ καλύψῃ πολλὰ ἁμαρτημάτων.

ΠΕΤΡΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ἐπιστολὴ καθολικὴ πρώτη.

Κεφ. α'. I.

1 **Π**ΕΤΡΟΣ ἀπόστολος Ἰησοῦ
Χριστοῦ, ἐκλεκτοῦ παρεπιδή-
μοις διαπορευθῆς Πόντου, Γα-
λατίας, Καππαδοκίας, Ἀσίας,
καὶ Βιθυνίας.

2 Κατὰ ἐξέγνωσιν Θεοῦ πατρὸς ἐν ἀγα-
σμαί

σμοῦ πνύματι, εἰς ὑπακοὴν καὶ ῥαυ-
σμον αἵματι Ἰησοῦ Χριστοῦ· χάρις ὑμῖν ἔ
εἰρήνη πολλὴ συνθέη.

3 Εὐλογητός ὁ Θεὸς καὶ πατὴρ τοῦ Κυρίου
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ καὶ τὸ πολὺ αὐτοῦ ἔλεος
ἀναγκυνήσας ὑμᾶς εἰς ἐλπίδα ζωῆς δι'
ἀναστάσεως Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐκ νεκρῶν,

4 Εἰς κληρονομίαν ἀφθαρτὴν καὶ ἀμίαν-
τον ἔ ἀμάρταν, τετηρημένην ἐν ἔρανοῖς
εἰς ἡμᾶς.

5 Τὴς ἐν δυνάμει Θεοῦ φερεμενέας διὰ
πίστεως, εἰς σωτηρίαν ἐπιμέλι ἀποκαλυ-
φθῆναι ἐν καρδίᾳ ἑκάτω.

6 Ἐν ᾧ ἀγαλλιᾶσθε, ὁλίγην ἀρετὴν (εἰ δέον ἐστὶ)
λυπηθῆντες ἐν ποικίλοις πρασμοῖς·

7 Ἴνα τὸ δοκίμιον ὑμῶν τῆ πίστεως πολὺ π-
μιώτερον χρυσίς, ἔ ἀποκαυμένη, διὰ πυ-
ρὸς ἢ δοκιμαζομένη, δύρεθῆ εἰς ἔπαμιον καὶ π-
μῶν ἔ δόξαν, ἐν ἀποκαλύψει Ἰησοῦ Χριστοῦ·

8 Ὅν ὅσιν εἰδότες ἀγαπᾶτε, εἰς ὃν ἀρετὴ μὴ
ὄρῶντες, πιστεύοντες ἢ, ἀγαλλιᾶσθε καρδίᾳ ἀν-
εκλαλήτῳ καὶ δεδοξασμένη·

9 Κομιζόμενοι τὸ τέλος τῆ πίστεως ὑμῶν,
σωτηρίαν ψυχῶν·

10 Περὶ ἧς σωτηρίας ἐξεζήτησαν καὶ ἐξηρώ-
νησαν ἀεφῆται οἱ ἀεὶ τῆς εἰς ὑμᾶς χάρι-
τι ἀεφῆσάντες·

11 Ἐρδυνῶντες εἰς ἴνα ἡ ποῖον καρπὸν ἐδήλα
τὸ ἐν

τὸ ἐν αὐτοῖς πνεῦμα Χριστοῦ, ὡς μαρτυροῦ-
μενοι τὰ εἰς Χριστὸν παθήματα, καὶ ἐκ μὲν
ταῦτα δοξάζει·

12 Οἷς ἀπεκαλύφθη ὅτι ἐχ' ἑαυτοῖς, ἡμῖν δὲ
διηγήσαν αὐτὰ, ἀ νῦν ἀνηγάγη ὑμῖν διὰ τῆς
βλαφημίας ὑμῶν ἐν πνεύματι ἁγίῳ
δοξαλένῃ ἀπ' οὐρανοῦ, εἰς ἃ ἐπιθυμεῖτε
ἄγγελοι πνευματικῶν.

13 Διὸ ἀναζωσαμένοι ἐκ ὀσφύας τῆς διφρα-
νοίας ὑμῶν, νήφουτες, τελείως ἐλπίζετε ἐπὶ
τῷ φερομένῳ ὑμῖν χάριτι ἐν ἀπεκαλύψει
Ἰησοῦ Χριστοῦ.

14 Ὡς τέκνα ὑπακούετε, μὴ συχηματιζό-
μενοι ταῖς ὡσέτερον ἐν τῇ ἀγνοίᾳ ὑμῶν ἐπι-
θυμίαις·

15 Ἀλλὰ καὶ τὸ καλίπαυτα ὑμῶν ἄγιον, καὶ
αὐτοὶ ἄγιοι ἐν πάσῃ ἀναστροφῇ ἡσυχίας.

16 Διὸ πνευματικῶν ἄγιοι ἡσυχάζετε, ὅτι ἐγὼ
ἅγιός εἰμι.

17 Καὶ εἰ πατέρες ἐπικαλεῖσθε τὸ ἀπροσω-
πολήτως κείνοτα καὶ τὸ ἐκείσε ἔργον, ἐν
φόβῳ τῆς παροικίας ὑμῶν χρόνον ἀνα-
στροφῆς·

18 Εἰδότες ὅτι ἐφθαρτοῖς, δουλεύω ἢ χυ-
σίῳ ἐλυτρώθητε ἐκ τῆς ματαιότητος ὑμῶν ἀνα-
στροφῆς πατρὸς παραδοθέντες·

19 Ἀλλὰ πρῶτα αἰματικῶς ὡς ἀμετῶ ἀμώμω καὶ
ἀσπίλω Χριστοῦ·

20 Προεγνωσμένοι μὴ πρὸς καταβολῆς ἡ-
σμευ, φανερωθέντες ἵ ἐπ' ἐσχάτων τῶν χρό-
νων δι' ὑμῶν,

21 Τὰς δι' αὐτῶν πιστεύοντας εἰς Θεὸν τὸν
ἐγείραντα αὐτὸν ἐκ νεκρῶν, καὶ δόξαν αὐτῷ
δόντα, ὥστε πάλιν πίστιν ὑμῶν εἰς ἐλπίδα εἶναι
εἰς Θεόν.

22 Τὰς ψυχὰς ὑμῶν ἠγωνίζεσθε ἐν τῇ ὑπα-
κοῇ τῆς ἀληθείας διὰ πνύματι, εἰς φιλα-
δελφίαν ἀνυπόκριτον, ἐν καρτερῶς καρ-
δίας ἀλλήλους ἀγαπήσατε ἐκτενῶς·

23 Ἀναγεληνημένοι ὅσοι ἐκ ἀπορροῆς φθαρ-
τῆς, ἀλλὰ ἀφθάρτου, διὰ λόγου ζωῆς Θεοῦ
καὶ μένοντες εἰς τὸ αἰῶνα.

24 Διότι πᾶσαι σαρεῖς ὡς χόρτοι, καὶ πᾶσαι
δόξαι ἀνθρώπων ὡς αἶθρ' ἄχροντες, ἐξνοσήθη ὁ
χόρτος, καὶ τὸ αἶθρ' αὐτῶν ἐξέπτε·

25 Τὸ ἵ ῥῆμα Κυρίου μὴ εἰς τὸ αἰῶνα· τῷ
δὲ ἐπὶ τὸ ῥῆμα τὸ εὐαγγελισθῆναι εἰς ὑμῶν.

Κεφ. β'. 2.

1 Ἀποθέμενοι οὐκ ἅπαν κακίαν καὶ πάντα
δόλον εἰς ὑποκρισίας καὶ φθόνους εἰς πείρασ
καταλαλιάς,

2 Ὡς δὲ κληθῆνῆτα βρέφη, τὸ λογικὸν ἄδο-
λον γάλα ἐπιποθήσατε, ἵνα ἐν αὐτῷ ἀ-
νηθῆτε.

3 Εἴπατε ἰσχύσατε ὅτι χρηστὸς ὁ Κύριος·

4 Πρὸς ὃν προσερχόμενοι, λίθον ζῶντα, ὑπὸ
Κκ ἀνθρώ-

ἀνθρώπων μὴ ἀποδοκιμασίμων, ὧν
 ἡ Θεὸς ἐκλεκτὸν, ἐνίμεν·

5 Καὶ αὐτοὶ ὡς λίθοι ζῶντες οἰκοδομεῖσθε,
 οἰκοδομηθέντες ἐν ἁγίῳ, ἰερατὸν ἅγιον, ἀνε-
 νέκμητον πνευματικῆς φύσεως, ὡς ἡ οὐρανὸς
 τῆς Θεοῦ Διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

6 Διὸ καὶ ἀπειλή ἐν τῇ γραφῇ· Ἰδοὺ πῆγμα
 ἐν Σιών λίθοι ἀκρογωνίαῖον, ἐκλεκτὸν, ἐν-
 πνεμον καὶ ὁπισθίων ἐπ' αὐτῶν, ἃ μὴ κλη-
 αιχμηθῆ.

7 Ὑμῖν οὖν ἢ πρὶν τοῖς πιστεύουσιν· ἀπέ-
 θῆσι ἡ, λίθον ὃν ἀποδοκιμασθήτω οἱ οἰκοδο-
 μεῖντες, ἕτερον ἐκλήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας,
 ἡ λίθος ἀποσκοπόμενος, καὶ πέτρα σω-
 δάτης·

8 Οἱ ἀποσκοποῦσι τῷ λόγῳ, ἀπέθῃντες,
 εἰς ὃ ἐπέστησαν.

9 Ὑμεῖς ἡ, ἡ Θεὸς ἐκλεκτὸν, βασιλεῖον ἰε-
 ρατὸν ἅγιον, λαὸς εἰς ἀποποίη-
 σιν· ὡς ἡ εἰς ἀρετῆς ἐξαχθείητε ἡ ἐκ σκο-
 τῆς ὑμῶν καλέσασθαι εἰς τὸ φῶς αὐ-
 τῆ φῶς.

10 Οἱ ποτὲ ἡ λαὸς, νῦν ἡ λαὸς Θεοῦ· οἱ οὖν
 ἡλεηρόμοι, νῦν ἡ ἐλεηθέντες.

11 Ἀγαπήθητε, ὡς ἡ καλῶς παροίκετε καὶ
 περιουσίαν, ἀπέχεσθαι τῆ σαρκικῶν ἐπιθυ-
 μιῶν, αἵτινες ἐπαύονται καὶ τῆ ψυχῆς·

12 Τὴν ἀναστροφὴν ὑμῶν ἐν τοῖς ἡθελουσιν
 ἔχον-

ἐχούτες καλῶ· ἵνα ἐν ᾧ καὶ λαλῆσιν ὑμῶν
ὡς καητοποιῶν, ἐκ τῶν καλῶν ἔργων ἐποπιδύ-
σαντες, δοξάσωσι τὸ Θεὸν ἐν ἡμέρᾳ ἐπι-
σκοπῆς.

13 Ὑποτάγητε ἐν πάσῃ ἀνθρωπίνῃ κτίσει Χρισ-
τῷ Κυρίῳ, εἴτε βασιλεῖ, ὡς ὑπερέχοντι·

14 εἴτε ἡγεμόσιν, ὡς δι' αὐτῶν πεμπημένοις
εἰς ἐκδίκησιν μὴ καητοποιῶν, ἑταίμον ἢ ἀ-
γαθοποιῶν·

15 Ὅτι ἕτως ἐστὶ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, ἀγαθο-
ποιῆσαις φιμῶν τὰ τῶν ἀφρόνων ἀνθρώπων
ἀγνωσίαν·

16 Ὡς ἐλδύθηροι, καὶ μὴ ὡς ἐπιειλίμμοι
ἔχοντες τὴν κακίαν πρὸς ἐλδύθηριον, ἀλλ' ὡς
δούλοι Θεοῦ.

17 Πάντας τηρέσατε τὴν ἀδελφότητα ἀγα-
πῆς τὸ Θεὸν φοβήσθε τὴν βασιλείαν τηρεῖτε.

18 Οἱ οἰκέταί, ὑποτασσάμενοι ἐν κυνὶ φό-
βῳ τοῖς δεσπόταις, ὅτι μόνον τοῖς ἀγαθοῖς καὶ
ἐπιεικέσιν, ἀλλὰ ἔτι τοῖς σκολιοῖς.

19 Τῆτο γὰρ χάρις, εἰ Χριστὸς σιωπήσῃ Θεοῦ
ὑποφέρῃ τις λύπας, πάχων ἀδικίας.

20 Ποῖον γὰρ κλέθ, εἰ ἀμαρτάνοντες καὶ κα-
λαφιζόμενοι ὑπομνεῖτε; ἀλλ' εἰ ἀγαθο-
ποιῶντες καὶ πάχοντες ὑπομνεῖτε, τῆτο χά-
ρις ὡς τῶ Θεῷ.

21 Εἰς τῆτο γὰρ ἐκλήθητε, ὅτι καὶ Χριστὸς
ἔπαθεν ὑπὲρ ὑμῶν, ὑμῖν ὑπολιμπάνων

- ὑπογραμμῶν, ἵνα ἐπακηροθήσῃτε τοῖς ἰσχυροῖσιν αὐτῶ·
- 22 Ὅς ἀμαρτίαν ὅσα ἐποίησεν, ἐδὲ δούρηθῃ δόλῳ ἐν τῷ σώματι αὐτῶ·
- 23 Ὅς λοιδορέμῳ ὅσα αὐτελοιδορέ, πάσχων ὅσα ὑπέειψ· παρεδίδασ ἢ τῷ κείνου διηγήως·
- 24 Ὅς τοῖς ἀμαρτίαις ἡμῶν αὐτοὺς ἀνένεγκεν ἐν τῷ σώματι αὐτῶ ἐπὶ τὸ ξύλον· ἵνα τοῖς ἀμαρτίαις ἀποχρόμοι, τῇ διηγοσυνῇ ζήσωμεν· ἔ τῷ μάλωπι αὐτῶ ἰάθητε.
- 25 Ἦτε γὰρ ὡς ἀπέσταλα πλανώμενα· ἀλλ' ἐπιστρέψατε ἵν' ἐπὶ τῷ ποιμένῳ ἔ ἐπίσκοπον τῶ ψυχῶν ὑμῶν.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 Ὅμοίως αἱ γυναῖκες, ὑποτασσόμεναι τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν, ἵνα ἔ εἴ πινες ἀπεθῶσι τῷ λόγῳ, ἀλλ' ἔ τῶ γυναικῶν ἀναστροφῆς ἀνδρῶν λόγῳ κερδηθήσων·
- 2 Ἐποπιδύσαντες ἔ ἐν φόβῳ ἀγνῶ ἀναστροφῶν ὑμῶν.
- 3 Ὡς ἔστω ἔχ ὁ ἔξωθεν ἐμταλοκῆς τευχῶν, κῆ ὡσεύσεως χρυσίῳν, ἢ ἐνδύσεως ἰματίων κῆσμο·
- 4 Ἀλλ' ὁ κρυπτός τῆ καρδίας αἰθραιπῶ, ἐν τῷ ἀφθάρτω ἔ πεισῶ κῆ ἡσυχίᾳ πιδύμετα, ὁ ἐσὶν ἐνώπιον ἔ Θεῶ πολυτελής.
- 5 Οὕτω γάρ ποτε ἔ αἱ ἀγαθῆ γυναικῆς αἱ ἐλπί-

ἐλπίζουσι ἐπὶ τῷ Θεῷ, ἐκόσμεν ἑαυτοὺς,
ὑποτασσόμεθα τοῖς ἰδοῖσι ἀνδράσιν·

6 Ὡς Σάρρα ὑπήκουσε τῷ Ἀβραάμ, κύ-
ριον αὐτὸν καλεῖσαι, ἧς ἐγέννηθη τέκνα,
ἀγαθοποιῶσα, καὶ μὴ φοβέμεθα μηδεμίαν
πίστιν.

7 Οἱ ἄνδρες ὁμοίως, στωικῶντες καὶ γνώ-
σιν, ὡς ἀδυνεσέρω σκεύη τῶν γυναικείων
ἀποτέμνητες τιμῶν, ὡς καὶ συγκληρονόμοι χαί-
ρει· ζῶησ, εἰς τὸ μὴ ἐκκλήθητε ὡς πρεσ-
βυτάς ὑμῶν.

8 Τὸ ἔ τέλος, πάντες ὁμόφρονες, συμπαθεῖς,
φιλάδελφοι, ὑποτακτικοί, φιλόφρονες·

9 Μὴ ἀποδιδόντες κακὸν ἀντὶ κακοῦ, ἢ λοιδο-
ρίαν ἀντὶ λοιδορίας· ἐναντίον δὲ, ὑλογεῖ-
τες· εἰδότες ὅτι εἰς τὸ ἐκλήθητε, ἵνα ὑλο-
γίαν κληρονομήσητε.

10 Ὅτι ἡμεῖς ζῶντες ἀγαπᾶν, εἰδεῖν ἡμέρας
ἀγαθῆς, παυσάτω τὸ γλῶσσαν αὐτῶν ἀπὸ
κακοῦ, ἐχέτω αὐτῶν τὸ μὴ λαλήσαι δόλον.

11 Ἐκκλινάτω ἀπὸ κακοῦ, ἐποιησάτω ἀγα-
θόν· ζητησάτω εἰρήνην, καὶ διώξάτω αὐτήν.

12 Ὅτι οἱ ὀφθαλμοὶ Κυρίου ἐπὶ δικαίους, καὶ
ὡπτε αὐτῶν εἰς δέησιν αὐτῶν· ὡς ὁ πονεῖ δὲ
Κυρίου ἐπὶ ποιῶντας κακὰ.

13 Καὶ τίς ὁ κακώσων ὑμῶν, ἐὰν τὸ ἀγαθὸν
μιμηταὶ γένησθε;

14 Ἀλλ' εἰ καὶ πάχοιτε ἀπὸ δικαιοσύνης,
Κκ 3 μακαρί-

μακρότεροι τῷ φόβῳ αὐτῶν μὴ φοβηθῆτε,
μηδὲ παρεχθῆτε.

15 Κύριον ὃ τὸ Θεὸν ἀγάσασθε ἐν ταῖς καρ-
δίαις ὑμῶν ἕτοιμοι ὅτι αἰεὶ ὡς ἀπολογίαν
παντὶ τῷ αἰτῆσθαι ὑμῶν λόγον ὡς ἐστὶ ἐν ὑμῖν
ἐλπιδῶ, μετὰ πρᾶξιν αὐτῆς ἐ φόβῳ.

16 Σιωπῶσιν ἔχοντες ἀγαθῶν· ἵνα ἐν ᾧ
καταλαλώσιν ὑμῶν ὡς κακοποιῶν, κηλαι-
σμηθῶσιν οἱ ἐπιηράζοντες ὑμῶν τὸ ἀγαθῶν
ἐν Χριστῷ ἀναστροφῶν.

17 Κρείττον γὰρ ἀγαθοποιεῖν εἰς θελή-
λημα τοῦ Θεοῦ, παρά τὴν ἢ κακοποιεῖν.

18 Ὅτι καὶ Χριστὸς ἅπασι ὡς ἐν ἀμαρτηῶν
ἔπαθε, δίκην ὑπὲρ ἀδίκων ἵνα ἡμῶς
ὡς συζῶν τῷ Θεῷ, γεναιωθεῖς μηδὲ σαρ-
κί, ζωοποιηθεῖς ὅτι τῷ πνύματι.

19 Εἰ ᾧ καὶ τοῖς ἐν φυλακῇ πνύμασι πορ-
θεῖς ἐκήρυξεν,

20 Ἀπεγγασάσθε, ὅτι ἅπασι ἐξεδέχθη
ἢ ὁ Θεὸς μακροθυμία ἐν ἡμέραις Νῶε,
καὶ σκεδασαζομένης κιβωτῆ, εἰς τὴν ὀλί-
γον (τετάρτη ὀκτώ) ψυχῶν διεσώθησαν δι'
ὑδάτων.

21 Ὡς καὶ ἡμῶς ἀντίτυπον τὴν σὺν βάπτι-
σμα, (ὅτι σαρκεῶς ἀπέθεσιν ῥύπαν, ἀλλὰ συνή-
δέσεως ἀγαθῆς ἐπιρώτημα εἰς Θεόν) δι'
ἀναστάσεως Ἰησοῦ Χριστοῦ,

22 Ὅς ἐστὶν ἐν δεξιᾷ τοῦ Θεοῦ, πορθεῖς εἰς
ἐξουσίαν,

ἐργασίαν, ὑποταγόντων αὐτῷ ἀγγέλων καὶ
ἑξουσιῶν ἐδουλάμεων.

Κεφ. δ'. 4.

- 1 **Χ**ριστῷ οὐκ παθόντι ἐν σαρκί,
καὶ ὑμεῖς τὸ αὐτῷ ἐννοιασάμενοι
ὅτι ὁ παθὼν ἐν σαρκί, πέποιθε ἁμαρτίας,
- 2 Εἰς τὸ μηκέτι ἀνθρώπων ἐπιθυμίας, ἀλλ-
ὰ θελήματι Θεοῦ τὸ ἐπίλοιπον ἐν σαρκί
βιώσασθαι χρόνον.
- 3 Ἀρκετὸς γὰρ ἡμῖν ὁ παρεληλυθὼς χρόνος
ἔβρισε τὸ θελημα τῶν ἐθνῶν κατεργασάμεθα,
πεποροδύμεθα ἐν ἀσελγείαις, ἐπιθυμίας,
οἰνοφλυγίαις, κώμοις, πότοις, ἐαθεμί-
τοις ἐιδωλολατρείαις·
- 4 Ἐν ᾧ ξενίζονται μὴ σωτηρησάντων ὑμῶν
εἰς τὸ αὐτῷ τὸ ἀσώτως ἀνάχουσαν, βλα-
σφημεῖντες·
- 5 Οἱ ἀποδώσει λόγον τῷ εἰταίμως ἔχοντι
κεῖναι ζώντας καὶ νεκρῶς·
- 6 Εἰς τῷτο γὰρ ἐνεκροῖς δὴν ἡλείσθη, ἵνα
κεῖνῶσι μὲν καὶ ἀνθρώποις σαρκί, ζῶσι δὲ καὶ
Θεὸν προσέμενοι.
- 7 Πάντων δὲ τὸ τέλος ἤγγικε. σωφρονήσεται
οὐκ καὶ νήψατε εἰς τὰς πρῶτας αἰχάς.
- 8 Πρὸ πάντων δὲ τὸν εἰς ἑαυτὸς ἀγάπην
ἐκείνην ἐργάσασθε· ὅτι ἡ ἀγάπη καλύπτει τὸ πλῆθος
ἁμαρτιῶν.
- 9 Φιλόξενοι εἰς ἀλλήλους, ἀνδύσασθε τῶν
ῥημάτων.

Κκ 4 10 Ἐκα-

- 10 Ἐκείνους καθὼς ἔλαττε χαίρισμα, εἰς
 ἑαυτὸς αὐτὸ ἀφρονεῖντες, ὡς κηλοὶ οἰκονόμοι
 ποικίλης χάριτος Θεοῦ.
- 11 Εἰ περ λαλεῖ, ὡς λόγια Θεοῦ· εἴ περ ἀφρο-
 κονεῖ, ὡς ἐξ ἰαχύου ἧς κρηγεῖ ὁ Θεός· ἵνα ἐν
 πᾶσι δοξάζεται ὁ Θεὸς διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ,
 ᾧ ἐσιν ἡ δόξα καὶ τὸ κράτος εἰς τὰς αἰῶνας
 τῶν αἰώνων. Ἀμήν.
- 12 Ἀγαπήθει, μὴ ξενίζεσθε τῇ ἐν ὑμῖν πυρώ-
 σι πρὸς πρᾶσμον ὑμῖν γινομμένη, ὡς ξένος
 ὑμῖν συμβαίνοι.
- 13 Ἀλλὰ καθὼς κρινωνεῖτε τοῖς ἔχριστο πα-
 θήμασι, χαίρετε, ἵνα καὶ ἐν τῇ ἀποκαλύψει τῆς
 δόξης αὐτοῦ χαρῆτε ἀγαλλιώμενοι.
- 14 Εἰ ὀνειδίθετε ἐν ὀνόματι Χριστοῦ, μακά-
 ριοι· ὅτι τῆς δόξης ἐστὶ τὸ ἅγιον πνεῦμα ἐφ'
 ὑμᾶς ἀναπαύει· καὶ μὴ αὐτὸς βλασφη-
 μεῖται, καὶ ἡ ὑμῶν δοξάζεται.
- 15 Μὴ γάρ τις ὑμῶν παχέτω ὡς φονδύς,
 ἢ κλέπτης, ἢ κτηροποιός, ἢ ὡς ἀλλοτριο-
 ἐπίσκοπος.
- 16 Εἰ ἢ ὡς Χριστιανός, μὴ ἀγχινέσθω, δο-
 ξάζετω ἢ τὸ Θεὸν ἐν τῷ μέρει τέτω.
- 17 Ὅτι ὁ κτηρὸς ἔαρεξαστὸ κέρμα διπλῶς
 οἴκῃ Θεοῦ. εἰ ἢ πρῶτον ἀφ' ἡμῶν, πὶ τὸ
 τέλος τῶν ἀπεθέντων τῷ Θεῷ διαγγελίᾳ;
- 18 Καὶ εἰ ὁ δίκαιος μόλις σώζεται, ὁ ἀσε-
 βὴς ἐσὶ ἀμαρτωλὸς πᾶσι φανεῖται;

19 Ὡστε

19 Ὡς κὶ οἱ πάροχιες κτὲ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ,
ὡς πιστῶ κλήσει τὸ ἄσπληνέωσιν τὴν ψυχῶν
ἐαυτῶν ἐν ἀγαθοποιίᾳ.

Κεφ. ε'. 5.

1 Πρεσβυτέρους τὰς ἐν ὑμῖν ἀνακαλῶ ὁ
συμπρεσβύτερον κὶ μαρτυρῶ τὸν Χρι-
στὸν παθημάτων, ὁ ἐστὶ μελλέσης ἀποκαλύ-
πτεσθαι δόξης κρινανός,

2 Ποιμαίνετε τὸ ἐν ὑμῖν ποίμνιον τοῦ Θεοῦ,
ἐπισκοποῦντες μὴ ἀνάγκαστως, ἀλλ' ἐκστίας
μηδὲ ἀίχροκερδῶς, ἀλλὰ παρηγμῶς·

3 Μηδ' ὡς κείρακυρλόοιες τὴν κλήραν,
ἀλλὰ τύποι γνόμμοι τοῦ ποιμνίου.

4 Καὶ φανερωθήτω τὸ ἄσπληνέωσιν, κα-
μειῖθε τὸ ἀμαρτανῶν τὴν δόξης σέφανον.

5 Ὁμοίως νεώτεροι ὑποτάγητε πρεσβυτέ-
ροις πάντες ἢ ἀλλήλοις ὑποτασσόμενοι, τὴν
ταπεινοφροσύνῃ ἐγκομώσαθε, ὅτι ὁ Θεὸς
ὑπερηφάνοις ἀντιτίσεται, ταπεινοῖς ἢ δέ-
δωσι χάριν.

6 Ταπεινώθητε οὖν ὑπο τὴν κρείταιν χεῖρα
τοῦ Θεοῦ, ἵνα ὑμῶν ὑψώσῃ ἐν καρδίᾳ.

7 Πᾶσαν τὴν μέριμναν ὑμῶν ἐπιρρίψατε
ἐπ' αὐτὸν, ὅτι αὐτῷ μέλη εἰσὶ ὑμῶν.

8 Νήψατε, γρηγορήσατε, ὅτι ὁ ἀντίδικος
ὑμῶν ἀφ' ὅλου, ὡς λέων ἀρυόμενος, περι-
πατεῖ, ζητῶν τίνα καταπίη.

9 Ὡς ἀνήγητε στεροὶ τῇ πίστι, εἰδότες τὰ
Κκ 5 αὐτὰ

αὐτὰ τῶν παθημάτων τῆ ἐν κήσμα ὑμῶν ἀδελφότητι ἐπιτελεῖσθαι.

10 Ὁ ὅ Θεὸς πάσης χάριτος, ὁ καλέσας ἡμᾶς εἰς τὸ αἰώνιον αὐτῆ δόξαν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὀλίγον παθόντας, αὐτὸς καθαρίσας ὑμᾶς, σπείξας, στενώσας, θεμελιώσας.

11 Αὐτῷ ἡ δόξα, καὶ τὸ κράτος εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

12 Διὰ Σιλβανῶν ὑμῖν ἔπιστῶ ἀδελφῶν (ὡς λογιζομαι) δι' ὀλίγον ἔγραψα, ὡς ἰσχυροῦ καλῶν καὶ ἐπιμαρτυρῶν ταύτης εἶναι ἀληθῆ χάριτος ἔ Θεὸς εἰς ὑμᾶς ἐσημαίε.

13 Ἀσπάζεσθε ὑμᾶς ἡ ἐν Βαβυλῶνι σω-εκλεκτῆ, Ἐ Μάρκῳ ὁ υἱός μου.

14 Ἀσπάζεσθε ἀλλήλους ἐν φιλήσει ἀγά-πης. Εἰρήνῃ ὑμῖν πᾶσι τοῖς ἐν Χριστῷ Ἰη-σοῦ. Ἀμήν.

ΠΕΤΡΟΥ ΤΟΥ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
ἐπιστολὴ καθολικὴ δεύτερα.

Κεφ. α'. I.

1 **Σ**ΥΜΒΩΝ Πέτρῳ, δῆλῳ καὶ ἀπίστολῳ Ἰησοῦ Χριστοῦ, τοῖς ἰσότημα ἡμῖν λαχῶσι πίστι ἐν δικαιοσυνῇ ἔ Θεὸς ἡμῶν καὶ πατῆρ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

2 Χά-

- 2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη πατρὸς καὶ υἱοῦ τοῦ θεοῦ πατρὸς ἡμῶν.
- 3 Ὡς πάντοτε ὑμῖν τῆς θείας δυνάμεως αὐτῆς
 τὰ πρὸς ζωὴν καὶ σωτηρίαν δεδωρημένης,
 διὰ τῆς ἐπιγνώσεως τοῦ καλέσαντός ὑμᾶς
 διὰ δόξης ἐ δόξης.
- 4 Διὸ ἂν τὰ μέγιστα ὑμῖν καὶ τίμια ἐπαγγέλ-
 ματα δεδωρηται, ἵνα διὰ τῶν ἁγίων
 θείας κριναντο φύσεως, ἀποφυγόντες τὸ ἐν
 κόσμῳ ἐπιθυμία φθορᾶς.
- 5 Καὶ αὐτὸ τῆς ἰσχυρῆς πατρὸς παρῆσ-
 ενέκωντες, ἐπιχρησάτε ἐν τῇ πίστι ὑμῶν
 τῆ δόξης, ἐν τῇ δόξῃ τῆς γνῶσις,
- 6 Ἐν τῇ τῆς γνῶσις τῆς ἐγκρατείας, ἐν τῇ τῆς
 ἐγκρατείας τῆς ὑπομονῆς, ἐν τῇ τῆς ὑπομονῆς
 τῆς σωτηρίας,
- 7 Ἐν τῇ τῆς σωτηρίας τῆς φιλαδελφίας, ἐν τῇ
 τῆς φιλαδελφίας τῆς ἀγάπης.
- 8 Ταῦτα γὰρ ὑμῖν ἀπὸ ἀρχῆς, καὶ πλεονά-
 ζοντα, ὅτι ἄνευ αὐτῶν οὐ δύνασθε
 εἶναι εἰς τὴν εὐχάριον ἡμῶν ἰσοῦ Χριστοῦ
 ἐπίγνωσιν.
- 9 Ὡς γὰρ μὴ πάρεσι ταῦτα, τυφλὸς ἐστὶ, μυω-
 πάζων, λίθινος λατῶν τῆς κατασκευῆς τῶν
 πάλαι αὐτῶν ἀμαρτιῶν.
- 10 Διὸ μάλιστα, ἀδελφοί, ἀποδοῦτε βε-
 βαίαν ὑμῶν τῆ κλήσιν ἐκλογῆς ποιῆσαι
 ταῦτα γὰρ ποιῶντες ἂ μὴ πλάισθητέ ποτε.

11 Οὕτω

- 11 Οὕτω γὰρ πολλοῖς ἐπιχρηγήσει ὑμῖν
 ἢ εἰσοδῶσι εἰς τὴν αἰώνιον βασιλείαν τοῦ Κυρίου
 ἡμῶν καὶ σωτῆρος Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 12 Διὸ σὺ ἀμελήσω ὑμᾶς ἀεὶ ὑπομιμνή-
 σκων τοῖς τέτοις, καὶ ὡς εἰδούσας, καὶ ἐσηελ-
 γμύνας ἐν τῇ παρῆς αἰσθηθείαι.
- 13 Δίναμον ἢ ἡγῶμαι, ἐφ' ὅσον εἰμι ἐν τέ-
 τω τῶν σκηνώματι, διηγείρων ὑμᾶς ἐν ὑπο-
 μνήσει.
- 14 Εἰδὼς ὅτι ταχυνήσιν ἢ δόξαις τοῦ σκηνώ-
 ματος μου, καὶ ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς
 Χριστὸς ἐδήλωσέ μοι.
- 15 Σπευδαίω δὲ καὶ ἐκτίστε ἔχει ὑμᾶς
 μετὰ τὴν ἐμὴν ἕξοδον, τὴν τέτοιαν μνήμην
 ποιῆσαι.
- 16 Οὐ γὰρ σοφοῖς μύθοις ἐξαγγελ-
 ήσασθε ἐγνωρίσαμεν ὑμῖν τὴν τοῦ Κυρίου
 ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ δυνάμιν καὶ παρουσίαν,
 ἀλλ' ἐπόπταις γνηθῆντες τῆς ἐκείνου μεγα-
 λυτοῦτος.
- 17 Λαβὼν γὰρ ὡς πατὴρ πικρὴν καὶ
 δόξαν, φωνῆς ἐνεχθείσης αὐτῶν τοιαῦτα ὑπὸ
 τῆς μεγαλοπρεπῆς δόξης. Οὐτίς ἐστιν ὁ υἱὸς
 μου ὁ ἀγαπητός, εἰς ὃν ἐγὼ εὐδόκησα.
- 18 Καὶ ταύτῃ τῇ φωνῇ ἡμεῖς ἠκούσαμεν
 ἐξ ἔραντος ἐνεχθείσαν, σὺ αὐτῶν ὄντες ἐν τῇ
 ὄρει τῇ ἁγίᾳ.
- 19 Καὶ ἔχοντες βεβαιότερον τὸ ἀσφηκτικὸν
 λόγον,

λόγον, ὡς καλῶς ποιεῖτε παροσχολήεις, ὡς λύ-
χνα φαίνοντες ἐν αὐχμηρῶ τόπῳ, ἕως ἕξι ἡμέ-
ρα διαυγάσει, καὶ φωσφόρος ἀνατείλη ἐν
ταῖς καρδίαις ὑμῶν.

20 Τῆτο παρῶτον γινώσκοντες, ὅτι πάντα
παροφητεία γραφῆς, ἰδίας ἐπιλύσεως ἔ-
γίνεται.

21 Οὐ γὰρ θελήματι ἀνθρώπου ἠνέχθη ποτὲ
παροφητεία, ἀλλ' ὑπὸ πνεύματος ἁγίου φερό-
μενοι ἐλάλησαν οἱ ἄγιοι Θεοῦ ἄνθρωποι.

Κεφ. β'. 2.

1 **Ε**γένοντο ἡ ἐψεύδοπαροφητῆ) ἐν τῷ λαῷ,
ὡς καὶ ἐν ὑμῖν ἔσονται ψεύδοδιδάσκαλοι,
οἵτινες περιψάξουσιν αἰρέσεως ἀπωλείας, ἐπὶ
ἀγροσύνας αὐτοῖς δεσπότιν δυνάμειοι,
ἐπιγνήεις ἐαυτοῖς ταχινὴ ἀπώληαν.

2 Καὶ πολλοὶ ἐξακροατήσεσιν αὐτῶν ταῖς
ἀπωλείαις, δι' ἧς ἡ ὁδὸς τῆ ἀληθείας βλα-
σφημηθήσεται.

3 Καὶ ἐν πλεονεξία πλαστοῖς λόγοις ὑμῶς
ἐμπορεύσονται· οἷς τὸ κρέμα ἐκπαλασοῦ
δραγῆ, ἐπὶ ἀπώληα αὐτῶν ἐνυστάζει.

4 Εἰ γὰρ ὁ Θεὸς ἀγγέλων ἀμαρτησάντων ἐκ
ἐφείσατο, ἀλλὰ σφραῖς ζόφου ταρταρώσεως,
πεπέδωκεν εἰς κρίσιν τετηρημένους·

5 Καὶ δραγαῖς κήσμεσ σοκ ἐφείσατο, ἀλλ'
ὄγγδοον Νῶε δικαιοσύνης κήρυκα ἐφύλαξε,
κατακλυσμένη κήσμεσ ἀσεβῶν ἐπάξας·

6 Καὶ

6 Καὶ πόλις Σοδόμων καὶ Γομόρρας τεφρώ-
σας καὶ ἀσπροφῆ κατέκρινε, ὑποδύμα μελ-
λόντων ἀσεθεῖν πεθικώς·

7 Καὶ δίκημον Λώτ καὶ ἀποπέμματα ὑπὸ
τῶν ἀγγέλων ἐν ἀσελγείᾳ ἀναστροφῆς ἐφ-
ρύσατο·

8 (Βλέμματι γὰρ ἐ ἀκηθὸν δίκημον, ἐκαλι-
οικῶν ἐν αὐτοῖς, ἡμέραν ἐξ ἡμέρας ψυχρῶ
δικαίαν ἀνομίᾳ ἐργαῖς ἰδοσάντιζεν)

9 Οἶδε Κύριος ἀσεθεῖς ἐκ προασμῶ
ρύσασθαι, ἀδικεῖς ἢ εἰς ἡμέραν κείσεως κη-
λαζομύρας τηρεῖν·

10 Μάλιστα ἢ τὰς ὀπίσω σαρκὸς ἐν ἐπιθυ-
μία μίας μίας πορνομύρας, καὶ κυριότητι
καὶ φρονέουσιν· τολμηταί, αὐτῶν δὲ, δόξας
ἢ τρέμεισι βλασφημῶντες·

11 Ὅπερ ἄγγελοι ἰσχυροὶ καὶ δυνάμει μείζονες
όντες, ἢ φέρονσι κατ' αὐτῶν ὡς Κύριον
βλάσφημον κείσιν.

12 Οὗτοι ἢ, ὡς ἄλογα ζῶα φυσικῶν, γεννη-
νημῶν εἰς ἄλωσιν ἐ φθορᾶν, ἐν οἷς ἀγνοοῦσι
βλασφημῶντες, ἐν τῇ φθορᾷ αὐτῶν καὶ
φθαρήσονται·

13 Κοιμέμενοι μισθὸν ἀδικίας, ἠδὲν ἠγέ-
μενοι τ' ἐν ἡμέρᾳ τρυφῶν, ἀπῆλοι καὶ μῶμνοι
ἐν τρυφῶντες ἐν ταῖς ἀπίταις αὐτῶν,
σωδωχόμενοι ὑμῖν,

14 Ὁφθαλμοὺς ἐχούτες μετ' ἑσβεσθησάντων, καὶ
ἀκατα-

ἀκαταπίστευτος ἀμαρτίας, δελεάζοντες ψυ-
χαίς ἀσηκίετες, καρδίαν γεγυμνασμένην
πλεονεξίαις ἔχοντες, καὶ ἄρας τέκνα·

15 Καταλιπόντες τὸ εὐθεῖον ὁδόν, ἐπλανή-
θησαν, ἐξαγγελήσαντες τῇ ὁδῷ τῆ Βαλαάμ
τῆ Βασόρ, ὅς μισθὸν ἀδικίας ἠγάπησιν·

16 Ἐλεγξεν ἡ ἔχεν ἰδίας ὠφρανομίας· ὑπο-
ζύχον ἀφανόν, ἐν ἀνθρώπῳ φωνῇ φτεγ-
ξάμενον, ἐκάλυψε τὸ ἔσπερφήτε ὠφρα-
φρονίαν.

17 Οὐτοὶ εἰσι πηγαὶ ἀνδρῶν, νεφέλαι ὑπὸ
λαίλαπτος· ἐλαυνόμενοι, οἷς ὁ ζόφος τῆ
σκοτίας εἰς αἰῶνα τετήρη].

18 Ὑπέρογκα γὰρ μαλασιότητος φτεγόμενοι
δελεάζουσιν ἐπιθυμίαις σαρκὸς, ἐν ἀσελ-
γείαις, τὰς ὄντως ἀποφυγόντας τὰς ἐν πλά-
νῃ ἀναστροφόμενος.

19 Ἐλύθησαν αὐτοῖς ἐπαγγελόμενοι, αὐ-
τοὶ δὲ λῶι ὑπάρχοντες τῆ φθορᾶς· ὡ γὰρ ἡς
ἠπλήται, τὰτα κὶ δεδέλω].

20 Εἰ γὰρ ἀποφυγόντες τὰ μιάσματα τῆ νόσ-
μας ἐπιγνώσῃ τῆ Κυρίου κὶ σωτῆρος Ἰη-
σοῦ Χριστοῦ, τὰτοις ἡ πάλιν ἐμωλακέντες
ἠπλώνται, γέρονεν αὐτοῖς τὰ ἔχαστα χείρονα
τῆ πωρότων.

21 Κρεῖττον γὰρ ἡ αὐτοῖς μὴ ἐπιγνωκέναι τὸ
ὁδόν τῆ δικαιοσύνης, ἢ ἐπιγνώσιν ἐπιστρέψαι
ἐκ τῆ ὠφραδοθείσης αὐτοῖς ἀγίας ἐπιβολῆς.

22 Συμ-

22 Συμβέβηκε ἢ αὐτοῖς τὸ τ' ἀληθῆς παροι-
μίας· Κύων ἐπιπρέψας ἐπὶ τὸ ἴδιον ἐξέρχεται
καὶ ὕς λασαμύνη, εἰς κύλισμα βορβορέα·

Κεφ. γ'. 3.

1 **Τ**αύτην ἤδη, ἀγαπητοί, δευτέραν ὑμῖν
γράφω ἐπιστολῶν, ἐν αἷς διεγείρω ὑμῶν
ἐν ὑπομονῇ τ' εἰλικρινῇ Διάνοιαν·

2 Μνησθῆναι τ' ἀποφρημῶν ῥημάτων ὑπὸ
τ' ἀγίων ἀποφρητῶν καὶ τ' ἀποστόλων ἡμῶν
ἐντολῆς, Ἐ Κυρίῳ καὶ σωτηρῶ·

3 Τῶν ἀποστόλων γνώσκοντες, ὅτι ἐλδύσαν
ἐπ' ἑκάστῃ τ' ἡμερῶν ἐμπαικῶν, καὶ εἰς ἴδιαις
αὐτῶν ἐπιθυμίας πορεύομενοι·

4 Καὶ λέγοντες· Πῶς εἰσιν ἡ ἐπιταξίαι τῆς
παρουσίας αὐτῶν; ἀφ' ἧς γὰρ οἱ πατέρες ἐκτι-
μήθησαν, πάντες ἕτω Διὰ μὲν ἀπ' ἀρχῆς
κλίσεως.

5 Λαυταῖν γὰρ αὐτῆς τῶν θελοντας, ὅτι ἔ-
ρανοὶ ἦσαν ἐκ παιλαί, Ἐ γῆ ἐξ ὑδαίῳ καὶ δι'
ὑδαίῳ σωσῶσα, τῶν Ἐ Θεῶν λόγῳ.

6 Δι' ὧν ὁ τότε κῆρυγμα ὑδαίῳ καὶ κλυ-
θῆς ἀπώλετο.

7 Οἱ ἢ νῦν ἔρανοὶ καὶ ἡ γῆ τῶν αὐτῶν λόγῳ
πένηται κλυθῆς εἰσι, πνεύματι τρεῖς μῆροι εἰς
ἡμέραν κλίσεως καὶ ἀπωλείας τ' ἀσεβῶν ἀν-
θρώπων·

8 Ἐν δὲ τῶν μὴ λαοφαιέτω ὑμῶν, ἀγα-
πητοί, ὅτι μία ἡμέρα ὡς καὶ Κυρίῳ ὡς
χίλια

- χίλια ἔτη, καὶ χίλιος ἔτη ὡς ἡμέρα μία.
 9 Οὐ βραδυῶς ὁ Κύριος ἔπαγγελίας,
 (ὡς ἴνες βραδυτῆτα ἠγῶν) ἀλλὰ μακρο-
 θυμῆς εἰς ἡμᾶς, μὴ βελομήτος ἴνας ἀπολέ-
 σται, ἀλλὰ πάντα εἰς μετένοια χωρήσται.
 10 Ἡξέ ἡ ἡμέρα Κυρίου ὡς κλέπτης ἐν
 τυκτῆ, ἐν ἣ οἱ ἔρανοὶ ροιζηδὸν παρελεύσοντῃ,
 σοιχεῖα ἡ κω(έμματα λυθήσοντῃ), καὶ γῆ ἐπὶ
 ἐν αὐτῇ ἔργα κατεκρήσεται.
 11 Τῶτων ἔν πάντων λυομένων, ποταπὸς
 δεῖ ὑπάρχῃν ὑμᾶς ἐν ἀγίαις ἀναστροφαῖς καὶ
 δόσεβείαις.
 12 Προσδοκῶντες ἐσπύδοντες ἡ παρυσίαν
 τοῦ Θεοῦ ἡμέρας, διὲν ἔρανοὶ πυρέμμοι
 λυθήσονται, καὶ σοιχεῖα κω(έμματα τή-
 κεται).
 13 Καινὸς ἡ ἔρανος ἐ γλῶ καὶ γλῶ καὶ τὸ
 ἐπάγγελμα αὐτῶ ἀποδοκῶνται, ἐν οἷς δι-
 κημοσιῶ κατεκρή.
 14 Διὲν, ἀγαπητοί, ταῦτα ἀποδοκῶντες,
 ἀποδοκῶντες ἀσπιλοι καὶ ἀμώμητοι αὐτῶ δι-
 κημῶ ἐν εἰρήνῃ.
 15 Καὶ πλὴν τοῦ Κυρίου ἡμῶν μακροθυμίαν,
 σωτηρίαν ἠγῶσθε κατῶς καὶ ὁ ἀγαπητὸς
 ἡμῶν ἀδελφὸς Παῦλος καὶ πλὴν αὐτῶ δο-
 δεῖσαν σοφίαν ἔγραψεν ὑμῖν,
 16 Διὲν καὶ ἐν πάσης ταῖς ἐπιστολαῖς, λαλῶν
 ἐν αὐταῖς ἀπὸ τῶτων, ἐν οἷς ἐπὶ δυσνόητα
 πινά,

πια, αὐτοὶ ἀμαθεῖς ἔαθήρικτοι ἐβέβησαν
ὡς καὶ τὰ λοιπὰς γραφῶν, ὡς τὴν ἰδίαν
αὐτῶν ἀπώλεσαν.

17 Ὑμεῖς οὖν, ἀγαπητοὶ, περιγνώσκοντες,
φυλάσσετε, ἵνα μὴ τῆ ἁθέσμων πλάνη
συναπαχθέντες, ἐκπίσητε τὴν ἰδίαν ἐπιπέμω.

18 Αὐξάνετε ἡ ἐν χείρῳ ἔγνωσθε τὴν Κυρίαν
ἡμῶν καὶ σωτῆρα Ἰησοῦ Χριστοῦ. αὐτῷ ἡ δόξα
ἔστιν καὶ εἰς ἡμέραν αἰῶν. Ἀμήν.

ἸΩΑΝΝΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ ἐπιτολή καθολικὴ πρώτη.

Κεφ. α'. I.

1 **Ο**ὕτως ἀπ' ἀρχῆς, ὁ ἀκηθῶν, ὁ
ἰωραθῶν τοῖς ὀφθαλμοῖς ἡ-
μῶν, ὁ ἐστασάμεθα, καὶ αἱ χεῖρες
ἡμῶν ἐψηλάφησαν πρὸς τὸ λό-
γον τῆς ζωῆς.

2 (Καὶ ἡ ζωὴ ἐφανερώθη, καὶ ἰωραθῶν,
ἔμαρτυρῶν, καὶ ἀπαγγέλλομεν ὑμῖν τὴν
ζωὴν τῆς αἰῶνος, ἥτις ἔστιν ἡ πατέρα,
καὶ ἐφανερώθη ἡμῖν)

3 Ὁ ἰωραθῶν καὶ ἀκηθῶν, ἀπαγγέ-
λλομεν ὑμῖν, ἵνα ἔμεῖς κοινωνίαν ἔχητε μετ'
ἡμῶν καὶ ἡ κοινωνία ἡ ἡμετέρα μετ' ἡ πα-
τρὸς ἔστιν ἡ αὐτῆς Ἰησοῦ Χριστοῦ.

4 Καὶ

- 4 Καὶ ταῦτα γράφομαι ὑμῖν, ἵνα ἡ χαρὰ ὑμῶν ἢ πεπληρωμένη.
- 5 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπαγγελία ἧς ἀκηκόαμεν ἀπ' αὐτοῦ, ἕ ἀναγγέλλομεν ὑμῖν, ὅτι ὁ Θεὸς φῶς ἐστὶ, καὶ σκοτία ἐν αὐτῷ οὐκ ἐστὶ ἕδεξις.
- 6 Ἐὰν εἴπωμεν ὅτι κρινωσίαν ἔχομεν μετ' αὐτοῦ, καὶ ἐν τῷ σκοτῆ ψευδοῦμεθα, ἕ εἰ ποῖομεν τὸ ἀλήθειαν.
- 7 Ἐὰν δὲ ἐν τῷ φωτὶ ψευδοῦμεν, ὡς αὐτός ἐστιν ἐν τῷ φωτὶ, κρινωσίαν ἔχομεν μετ' ἀλλήλων, καὶ τὸ αἷμα Ἰησοῦ Χριστοῦ ἕ ἕ αὐτῶ καταλείψει ἡμᾶς διὰ πάσης ἁμαρτίας.
- 8 Ἐὰν εἴπωμεν ὅτι ἁμαρτίαν οὐκ ἔχομεν, ἑαυτοὺς πλανῶμεν, καὶ ἡ ἀλήθεια οὐκ ἐστὶν ἐν ἡμῖν.
- 9 Ἐὰν ὁμολογῶμεν τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν, πιστός ἐστι καὶ δίκαιος, ἵνα ἀφῆ ἡμῖν τὰς ἁμαρτίας, καὶ καθαρίσῃ ἡμᾶς διὰ πάσης ἀδικίας.
- 10 Ἐὰν εἴπωμεν ὅτι ἔχ ἡμαρτήκαμεν, ψεύσω ποῖομεν αὐτὸν, καὶ ὁ λόγος αὐτοῦ οὐκ ἐστὶν ἐν ἡμῖν.

Κεφ. β'. 2.

1 **Τ**εκνία μου, ταῦτα γράφω ὑμῖν, ἵνα μὴ ἀμαρτήσῃτε· καὶ εἰάν τις ἀμαρτήσῃ, ἕ ἀδικησάτω ἕχομεν πρὸς τὸν πατέρα, Ἰησοῦν Χριστὸν δίκαιον.

2 Καὶ

- 2 Καὶ αὐτὸς ἰλασμοῦ ἐστὶ παρὰ τῶν ἁμαρτηῶν ἡμῶν· ἔστι παρὰ τῶν ἡμετέρων ἢ μόνον, ἀλλὰ καὶ παρὰ ὅλων τῶν ἁμαρτηῶν.
- 3 Καὶ ἐν τούτοις γνώσκουμεν ὅτι ἐγνωκέναι αὐτὸν, ἐάν τις ἐντολαὶς αὐτοῦ τηρῶμεν.
- 4 Ὁ λέγων, ἐγνωκέναι αὐτὸν, καὶ τις ἐντολαὶς αὐτοῦ μὴ τηρῶν, ψεύστης ἐστὶ, καὶ ἐν τούτοις ἡ ἀλήθεια ὅσα ἐστίν·
- 5 Ὅς οὐκ αὐτὴν τηρῶν αὐτοῦ τὸ λόγον, ἀληθῶς ἐν τούτοις ἡ ἀγάπη τῆς Θεοῦ τετελείωται. ἐν τούτοις γνώσκουμεν ὅτι ἐν αὐτῷ ἐσμὲν.
- 6 Ὁ λέγων ἐν αὐτῷ μένειν, ὁφείλει, καθὼς ἐκείνου παρὰ τῆς ἀπειθήσεως, ἐ αὐτὸς ὅπως παρὰ τῆς ἀπειθήσεως.
- 7 Ἀδελφοί, ὅσα ἐντολαὶς καὶ ἐν τούτοις γράφω ὑμῖν, ἀλλ' ἐντολαὶς παλαιαῖς, ἃ εἴχετε ἀπὸ δόξης. ἡ ἐντολὴ ἡ παλαιὰ ἐστὶν ὁ λόγος ὃν ἠκούσατε ἀπὸ δόξης.
- 8 Πάλιν ἐν τούτοις καὶ ἐν τούτοις γράφω ὑμῖν, ὅ ἐστιν ἀληθὲς ἐν αὐτῷ, καὶ ἐν ὑμῖν ὅτι ἡ σκοτία παρὰ τῆς ἀγάπης, καὶ τὸ φῶς τὸ ἀληθινὸν ἔδη φαινήσεται.
- 9 Ὁ λέγων ἐν τούτοις φωτίζεσθαι, καὶ τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ μισῶν, ἐν τῇ σκοτίᾳ ἐστὶν ἕως ἄρα.
- 10 Ὁ ἀγαπῶν τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τούτοις φωτίζεσθαι, καὶ σκάνδαλον ἐν αὐτῷ ὅσα ἐστίν.
- 11 Ὁ μισῶν τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τῇ σκοτίᾳ ἐστὶ, ἐ ἐν τῇ σκοτίᾳ παρὰ τῆς ἀπειθήσεως, καὶ ὅσα οἶδ'.

οἶδε πᾶς ὑπόλη, ὅτι ἡ σκοτία ἐτύφλωσε τὰς
ὀφθαλμούς αὐτῶν.

12 Γράφω ὑμῖν, τέκνια, ὅτι ἀφείωνται ὑμῖν
αἱ ἀμαρτίαι διὰ τὸ ὄνομα αὐτῶν.

13 Γράφω ὑμῖν, πατέρες, ὅτι ἐγνώκατε τὸ
ἀπὸ ἀρχῆς· γράφω ὑμῖν, νεανίσκοι, ὅτι νει-
κήκατε τὸ πονηρὸν· γράφω ὑμῖν, παιδία, ὅτι
ἐγνώκατε τὸ πατέρας.

14 Ἐγραψα ὑμῖν, πατέρες, ὅτι ἐγνώκατε τὸ
ἀπὸ ἀρχῆς· ἔγραψα ὑμῖν, νεανίσκοι, ὅτι
ἰχυροὶ ἐσε, ἔο λόγος τοῦ Θεοῦ ἐν ὑμῖν μέγας,
καὶ νεικήκατε τὸ πονηρὸν.

15 Μὴ ἀγαπᾶτε τὸ κῶσμον, μηδὲ τὰ ἐν τῷ
κῶσμῳ. εἰάν τις ἀγαπᾶ τὸ κῶσμον, ὅσα ἐστὶν
ἡ ἀγάπη τοῦ πατρὸς ἐν αὐτῷ.

16 Ὅτι πᾶν τὸ ἐν τῷ κῶσμῳ, ἡ ἐπιθυμία τῆς
σαρκὸς, καὶ ἡ ἐπιθυμία τῶν ὀφθαλμῶν, καὶ
ἡ ἀλαζονεία τοῦ βίβ, ὅσα ἐστὶν ἐκ τοῦ πατρὸς,
ἀλλ' ἐκ τοῦ κῶσμου ἐστὶ.

17 Καὶ ὁ κῶσμος ὠρᾶται, καὶ ἡ ἐπιθυ-
μία αὐτῶν· ὁ ὅς ποιῶν τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ,
μέγας εἰς τὸ αἰῶνα.

18 Παιδία, ἐσχάτη ὥρα ἐστὶ καὶ καθὼς ἠκέ-
σατε ὅτι ὁ ἀντίχριστος ἔρχεται, καὶ ἴνυ ἀντί-
χριστοὶ πολλοὶ γενήσονται ὅθεν γενώσκομεν ὅτι
ἐσχάτη ὥρα ἐστὶν.

19 Ἐξ ἡμῶν ἐξῆλθον, ἀλλ' ὅσα ἦσαν ἐξ ἡμῶν
εἰ γὰρ ἦσαν ἐξ ἡμῶν, μεμνήκασαν αὐτῶν
ἡμῶν.

ἡμῶν· ἀλλ' ἵνα φανερωθῶσι ὅτι ἅπασι
πάντες ἐξ ἡμῶν.

20 Καὶ ὑμεῖς χρίσμα ἔχετε ἀπὸ τοῦ ἁγίου, καὶ
οἴδατε πάντα.

21 Οὐκ ἔγραψα ὑμῖν ὅτι ἅπασι οἴδατε πάντα
ἀλήθειαν, ἀλλ' ὅτι οἴδατε αὐτῶν, καὶ ὅτι πᾶν
ψεῦδος ἐκ τῆς ἀληθείας ἅπασι ἐστίν.

22 Τίς ἐστὶν ὁ ψεύστης, εἰ μὴ ὁ ἀρνέμεται ὅτι
Ἰησοῦς ἅπασι ἐστὶν ὁ Χριστός; ἕτερος ἐστὶν ὁ ἀντιχρί-
στος, ὁ ἀρνέμεται τὴν πατέρα καὶ τὸ υἱόν.

23 Πᾶς ὁ ἀρνέμεται τὸ υἱόν, ἕδὲ τὴν πατέ-
ρα ἔχει.

24 Ὑμεῖς οὖν ὁ ἠκούσατε ἀπὸ δόξης, ἐν ὑμῖν
μνηστέτω. ἔστιν ἐν ὑμῖν μένη ὁ ἀπὸ δόξης ἠκού-
σατε, καὶ ὑμεῖς ἐν τῷ ἡμῶν καὶ ἐν τῷ πατρὶ
μνηστέτω.

25 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπαγγελία, ἧν αὐτὸς
ἐπηγγέλατο ἡμῖν, πάντα ζωὴν καὶ αἰώνιον.

26 Ταῦτα ἔγραψα ὑμῖν ᾧ ἵνα ἴσῃτε ἅπασι
πάντων ὑμῶν.

27 Καὶ ὑμεῖς τὸ χρίσμα ὃ ἐλάμβανεν ἀπὸ
αὐτοῦ, ἐν ὑμῖν μνηστέτω, καὶ ἵνα ἴσῃτε ἅπασι
ἐπίδοσκα ὑμῶν· ἀλλ' ὡς τὸ αὐτὸ χρίσμα δι-
δάσκει ὑμῶν ᾧ ἵνα ἴσῃτε πάντα, καὶ ἀληθὴς ἐστίν, καὶ
ἅπασι ἐστὶν ψεῦδος· καὶ ἡμεῖς ἐπίδοσκα ὑμῶν,
μνηστέτω ἐν αὐτοῖς.

28 Καὶ νῦν, τέκνα, μνηστέτω ἐν αὐτοῖς· ἵνα
ὅταν φανερωθῇ, ἔχωμεν παύρησιαν, καὶ μὴ
αἰσχυν-

αἰχμητῶν ἀπ' αὐτῶ, ἐν τῇ παρεσίᾳ αὐτῶ.

- 29 Ἐὰν εἰδῆτε ὅτι δίκαιός ἐστι, γινώσκετε ὅτι πᾶς ὁ ποιῶν πλὴν δικαιοσύνης, ἐξ αὐτῶ γινώσκειται.

Κεφ. γ'. 3.

1 Ἰδέτε ποῦ πλὴν ἀγαπῶν δέδωκεν ἡμῖν ὁ πατήρ, ἵνα τέκνα Θεῶ κληθῶμεν. Ἀλλὰ τῶτο ὁ κόσμος ἔγνωσεν ἡμᾶς, ὅτι ὅσοι ἔγνω αὐτοί.

2 Ἀγαπήθη, νῦν τέκνα Θεῶ ἐσμῶν, καὶ ἔγω ἐφανερώθη τί ἐσόμεθα. οἶδα μὲν δὲ ὅτι ἐὰν φανερωθῆ, ὄμνητοι αὐτῶ ἐσόμεθα ὅτι ὁψόμεθα αὐτὸν καθὼς ἐστι.

3 Καὶ πᾶς ὁ ἔχων τὴν ἐλπίδα ταύτῃ ἐπ' αὐτῶ, ἀγνίσει ἑαυτὸν, καθὼς ἐκείνος ἀγνός ἐστι.

4 Πᾶς ὁ ποιῶν τὴν ἀμαρτίαν, καὶ τὴν ἀνομίαν ποιεῖ. Ἐἢ ἡ ἀμαρτία ἐστὶν ἢ ἀνομία.

5 Καὶ οἶδατε ὅτι ἐκείνῳ ἐφανερώθη, ἵνα τῶς ἀμαρτίας ἡμῶν ἄρῃ καὶ ἀμαρτία ἐν αὐτῶ ὅσοι ἐστὶ.

6 Πᾶς ὁ ἐν αὐτῶ μόνων, ἔχει ἀμαρτίαν· πᾶς ὁ ἀμαρτάνων, ἔχει ἰώρακεν αὐτὸν, ἐδὲ ἔγνωκεν αὐτόν.

7 Τεκνία, μηδεὶς πλανᾷτω ὑμᾶς ὁ ποιῶν τὴν δικαιοσύνην, δίκαιός ἐστι, καθὼς ἐκείνῳ δίκαιός ἐστιν.

8 Ὁ ποιῶν τὴν ἀμαρτίαν, ἐκ τῶ Διαβόλου ἐστὶν·

ἔστιν ὅτι ἀπ' ἀρχῆς ὁ Θεὸς ἀμαρτάνει·
εἰς τὸ ἐφανερώσθαι ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ἵνα λύσῃ
τὰ ἔργα τοῦ Θεοῦ.

9 Πᾶς ὁ γεννηθεὶς ἐκ τοῦ Θεοῦ, ἀμαρ-
τίαν ἔποιε, ὅτι σπέρμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ
ἔστι· καὶ ἔδύναται ἀμαρτάνειν, ὅτι ἐκ τοῦ
Θεοῦ γεννήθη.

10 Ἐν τῷ φανερωθῆναι τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ καὶ
τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ. πᾶς ὁ μὴ ποιῶν δι-
καιοσύνην, οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ Θεοῦ, ὁ μὴ ἀγα-
πῶν τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ.

11 Ὅτι αὐτὴ ἐστὶν ἡ ἀγάπη ἡ ἡκούσα ἀπ'
ἀρχῆς, ἵνα ἀγαπῶμεν ἀλλήλους·

12 Οὐ κατὰ Κρίστος ἐκ τοῦ πονηροῦ ἔσφα-
ξε τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ. καὶ χάρις ἵνα ἐσφα-
ξεν αὐτὸν, ὅτι τὰ ἔργα αὐτοῦ πονηρὰ ἦν, τὰ
ἔργα τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, δίκαια.

13 Μὴ θαυμάζετε, ἀδελφοί μου, εἰ μιτεῖ
ὑμεῖς ὁ κόσμος.

14 Ἡμεῖς οἴδαμεν ὅτι μετὰ βίβηκαμεν ἐκ τοῦ
θανάτου εἰς τὴν ζωὴν, ὅτι ἀγαπῶμεν τὸν
ἀδελφόν· ὁ μὴ ἀγαπῶν τὸ ἀδελφόν, ἔστι
ἐν τῷ θανάτῳ.

15 Πᾶς ὁ μισῶν τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἀνθρω-
ποκτόνος ἐστὶ· καὶ οἴδατε ὅτι πᾶς ἀνθρω-
ποκτόνος οὐκ ἔχει ζωὴν αἰώνιον ἐν αὐτῷ
ἔστι.

16 Ἐν τῷ ἐγνώσθαι τὴν ἀγάπην, ὅτι
ἐκεῖ-

ἐπεὶ ὁ ὑπὲρ ἡμῶν τὸ ψυχλὸν αὐτῷ ἔθηκε·
 Ἐν ἡμεῖς ὀφείλομεν ὑπὲρ τοῦ ἀδελφῶν ἡμῶν ψυ-
 χαῖς πνεύματι.

17 Ὅς δ' αὐτὸν ἔχη τὸ βίον τῶν κόσμων, καὶ θεωρῆ
 τὸ ἀδελφὸν αὐτῷ χρεῖαν ἔχοντα, ἐκλείσθη τὸ
 σπλάγχνα αὐτῷ ἀπ' αὐτῷ, πῶς ἡ ἀγάπη τῶν
 Θεῶν μὲν ἐν αὐτῷ;

18 Τεκνία μου, μὴ ἀγαπῶμεν λόγῳ μηδὲ
 γλώσσῃ, ἀλλ' ἔργῳ ἐ ἀληθείας.

19 Καὶ ἐν τέτῳ γνώσκομεν ὅτι ἐν τῷ ἀλη-
 θείας ἐσμὲν, καὶ ἐμπαροῦμεν αὐτῷ πείσομεν
 ἡμῶν καρδίας ἡμῶν.

20 Ὅτι ἐὰν κατὰ γνώσῃ ἡμῶν ἡ καρδία, ὅτι
 μείζων ἐστὶν ὁ Θεὸς τῆ καρδίας ἡμῶν, καὶ γι-
 νώσκῃ πάντα.

21 Ἀγαπήθει, ἐὰν ἡ καρδία ἡμῶν μὴ κατὰ γι-
 νώσκῃ ἡμῶν, πειρήσειαν ἔργῳ πρὸς τὸ Θεόν·

22 Καὶ ὁ ἐὰν αὐτῶμεν, λαμβάνομεν παρ'
 αὐτῷ, ὅτι ἡ ἐν ἐπιθυμίᾳ αὐτῷ τρεῖς μὲν, ἐπὶ
 χρεῖσιν ἐνώπιον αὐτῷ ποιῶμεν.

23 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπιθυμία αὐτῷ, ἵνα πισύ-
 σωμεν τῷ ὀνόματι τῷ ἡμῶν αὐτῷ Ἰησοῦ Χριστῷ,
 καὶ ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, καθὼς ἔδωκεν ἐν-
 θλῶν ἡμῖν.

24 Καὶ ὁ τρεῖς ἡμῶν ἐν ἐπιθυμίᾳ αὐτῷ, ἐν αὐτῷ
 μὲν, ἐ ἀὐτῷ ἐν αὐτῷ καὶ ἐν τέτῳ γνώσκο-
 μεν ὅτι μὲν ἐν ἡμῖν, ἐκ τῶν πνεύματι Θεῶν
 ἡμῖν ἔδωκεν.

1 **Α**γαπήθῃ, μὴ παντὶ πνεύματι πιστεύετε, ἀλλὰ δοκιμάζετε τὰ πνεύματα εἰ ἐκ Θεοῦ ἐσιν· ὅτι πολλοὶ ψευδοπροφήται ἐξεληλύθησαν εἰς τὸ κόσμον.

2 Ἐν τῷτα γνώσκετε τὸ πνεῦμα Θεοῦ· πᾶν πνεῦμα ὃ ὁμολογεῖ Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν σαρκὶ ἐληλυθότα, ἐκ Θεοῦ ἐστίν.

3 Καὶ πᾶν πνεῦμα ὃ μὴ ὁμολογεῖ τὸ Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν σαρκὶ ἐληλυθότα, ἐκ Θεοῦ οὐκ ἐστίν· καὶ τὸτό ἐστὶ τὸ πνεῦμα ἀντιχρίστου, ὃ ἀκηκόησατε ὅτι ἔρχεται, καὶ ἴδιον ἐν τῷ κόσμῳ ἐστὶν ἤδη.

4 Ὑμεῖς ἐκ Θεοῦ ἐστε, τέκνια, καὶ νικηθήκατε αὐτὸς· ὅτι μείζων ἐστὶν ὁ ἐν ὑμῖν, ἢ ὁ ἐν τῷ κόσμῳ.

5 Αὐτοὶ ἐκ Θεοῦ οὐκ ἐσὶν, ἀλλὰ τῷτα ἐκ Θεοῦ οὐκ ἐσὶν λαλοῦσι, καὶ ὁ κόσμος αὐτῶν ἀκέφ.

6 Ἡμεῖς ἐκ Θεοῦ ἐσμὲν· ὁ γνώσκων τὸ Θεόν, ἀκέφ ἡμῶν· ὅς οὐκ ἐστὶν ἐκ Θεοῦ, ἐκ ἀκέφ ἡμῶν. ἐκ τῷτα γνώσκομεν τὸ πνεῦμα τῆ ἀληθείας καὶ τὸ πνεῦμα τῆ πλάνης.

7 Ἀγαπήθῃ, ἀγαπήτωμεν ἀλλήλους, ὅτι ἡ ἀγάπη ἐκ Θεοῦ ἐστίν· καὶ πᾶς ὁ ἀγαπῶν, ἐκ Θεοῦ γεγέννηται, καὶ γνώσκει τὸ Θεόν.

8 Ὁ μὴ ἀγαπῶν, οὐκ ἔγνω τὸ Θεόν· ὅτι ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐστίν.

9 Ἐν τῷτα ἐφανερώθη ἡ ἀγάπη Θεοῦ ἐν ἡμῖν, ὅτι τὸ ἴδιον αὐτῷ τὸ μνησθῆναι ἀπίσταλ-

κειν ὁ Θεὸς εἰς τὸν κόσμον, ἵνα ζήσωμεν δι' αὐτῶν.

- Ι 0 Ἐν τῷ ἐνὶ ἡ ἀγάπῃ, ἔχ' ὅτι ἡμεῖς ἠγάπησαμεν τὸν Θεόν, ἀλλ' ὅτι αὐτὸς ἠγάπησεν ἡμῶς, ἔ ἀπέστειλε τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἰλασθῆναι ἡμῶν τὰ ἁμαρτιῶν ἡμῶν.
- Ι 1 Ἀγαπηθῆναι, εἰ ἕτως ὁ Θεὸς ἠγάπησεν ἡμῶς, ἔ ἡμεῖς ὀφείλομεν ἀλλήλους ἀγαπᾶν.
- Ι 2 Θεὸν ἔδειξεν πῶποτε τετέλεται ἂν ἀγαπᾶμεν ἀλλήλους, ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν μένει, καὶ ἡ ἀγάπη αὐτοῦ τετελεσμένη ἐστὶν ἐν ἡμῖν.
- Ι 3 Ἐν τῷ γνώσκομεν ὅτι ἐν αὐτῷ μένομεν, ἔ αὐτὸς ἐν ἡμῖν, ὅτι ἐκ τῆς πίστεως αὐτοῦ δέδωκεν ἡμῖν.
- Ι 4 Καὶ ἡμεῖς τετεύμεθα, καὶ μαρτυροῦμεν ὅτι ὁ πατὴρ ἀπέστειλε τὸν υἱὸν σωτῆρα τοῦ κόσμου.
- Ι 5 Ὅς αὐτὸ ὁμολογήσῃ ὅτι Ἰησοῦς ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ μένει, καὶ αὐτὸς ἐν τῷ Θεῷ.
- Ι 6 Καὶ ἡμεῖς ἐγνώκαμεν ἔ πεπιστώκαμεν τὴν ἀγάπην ἣν ἔχει ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν. ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐστὶ καὶ ὁ μένων ἐν τῇ ἀγάπῃ, ἐν τῷ Θεῷ μένει, καὶ ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ.
- Ι 7 Ἐν τῷ τετελείω ἡ ἀγάπη μεθ' ἡμῶν, ἵνα παρρησίαν ἔχωμεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς κρίσεως, ὅτι καθὼς ἐκεῖνος ἐστὶ, καὶ ἡμεῖς ἐσμὲν ἐν τῷ κόσμῳ τῷ τῷ.

- 18 Φόβος ὅτι ἐστὶν ἐν τῇ ἀγάπῃ, ἀλλ' ἡ τε-
λεία ἀγάπη ἐξωβάλλει τὸ φόβον· ὅτι ὁ φόβος
κόλασιν ἔχει· ὁ δὲ φόβος μὴ ἐτελείωται
ἐν τῇ ἀγάπῃ.
- 19 Ἡμεῖς ἀγαπήμεν αὐτὸν, ὅτι αὐτὸς πρῶ-
τος ἠγάπησεν ἡμᾶς.
- 20 Ἐάν τις εἴπῃ· Ὅτι ἀγαπῶ τὸ Θεόν, καὶ τὸ
ἀδελφὸν αὐτοῦ μισῶ, ψεύστης ἐστίν· ὁ γὰρ μὴ
ἀγαπῶν τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ ὃν ἐώρακε, τὸ
Θεὸν ὃν ἔχει ἐώρακε, πῶς δύναται ἀγα-
πᾶν;
- 21 Καὶ ταῦτί ἐστιν τὸ ἐπιτολιῶν ἐχρήμα ἀπ' αὐ-
τοῦ, ἵνα ὁ ἀγαπῶν τὸ Θεόν, ἀγαπᾷ καὶ τὸ ἀ-
δελφὸν αὐτοῦ.

Κεφ. ε'. 5.

- 1 Πᾶς ὁ πιστεύων ὅτι Ἰησοῦς ἐστὶν ὁ Χριστός,
ἐκ τοῦ Θεοῦ γεννητός· καὶ πᾶς ὁ ἀγαπῶν
τὸ γεννηθέντα, ἀγαπᾷ καὶ τὸ γεννηθέντος
ἐξ αὐτοῦ.
- 2 Ἐν τούτῳ γνώσκομεν ὅτι ἀγαπήμεν τὰ
τέκνα τοῦ Θεοῦ, ὅταν τὸ Θεὸν ἀγαπήμεν, καὶ
ταῖς ἐπιτολαῖς αὐτοῦ τηρήμεν.
- 3 Αὕτη γὰρ ἐστὶν ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ, ἵνα ταῖς
ἐπιτολαῖς αὐτοῦ τηρήμεν· καὶ αἱ ἐπιτολαὶ αὐτοῦ
βαρεῖαι ὅτι ἐσὶν.
- 4 Ὅτι πᾶν τὸ γεννηθέντος ἐκ τοῦ Θεοῦ νικᾷ
τὸ κόσμον· καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ νίκη ἡ νικήσασα τὸ
κόσμον, ἡ πίστις ἡμῶν.

5 Τίς

- 5 Τίς ἐστὶν ὁ νικῶν τὸ κόσμον, εἰ μὴ ὁ πιστεύων ὅτι Ἰησοῦς ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ;
- 6 Οὗτός ἐστιν ὁ ἐλθὼν δι' ὕδατος καὶ αἵματος, Ἰησοῦς ὁ Χριστός· οὐκ ἐν τῷ ὕδατι μένον, ἀλλ' ἐν τῷ ὕδατι καὶ τῷ αἵματι· καὶ τὸ πνεῦμά ἐστι τὸ μαρτυροῦν, ὅτι τὸ πνεῦμά ἐστιν ἡ ἀλήθεια.
- 7 Ὅτι τρεῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες ἐν τῷ ἔργῳ, ὁ Πατήρ, ὁ Λόγος, καὶ τὸ ἅγιον Πνεῦμα· ἕκαστοι οἱ τρεῖς ἐν εἰσι.
- 8 Καὶ τρεῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες ἐν τῇ γῆ, τὸ πνεῦμα, καὶ τὸ ὕδωρ, καὶ τὸ αἷμα· καὶ οἱ τρεῖς εἰς τὸ ἓν εἰσιν.
- 9 Εἰ τὸ μαρτυρεῖν τὸ ἀνθρώπων λαμβάνομαρ, ἡ μαρτυρία τοῦ Θεοῦ μείζων ἐστίν· ὅτι αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία τοῦ Θεοῦ ὡς μεμαρτύρηκε πρὸς τὸν υἱόν αὐτοῦ.
- 10 Ὁ πιστεύων εἰς τὸν υἱόν τοῦ Θεοῦ, ἔχει τὸ μαρτυρεῖν ἐν ἑαυτῷ· ὁ μὴ πιστεύων τῷ Θεῷ, ψόσει ὡς πεποίηκεν αὐτὸν, ὅτι ὁ πιστεύων εἰς τὸ μαρτυρεῖν ὡς μεμαρτύρηκεν ὁ Θεὸς πρὸς τὸν υἱόν αὐτοῦ.
- 11 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία, ὅτι ζωὴ αἰώνιον ἔδωκεν ἡμῖν ὁ Θεός· καὶ αὕτη ἡ ζωὴ ἐν τῷ υἱῷ αὐτοῦ ἐστίν.
- 12 Ὁ ἔχων τὸν υἱόν, ἔχει τὴν ζωὴν· ὁ μὴ ἔχων τὸν υἱόν τοῦ Θεοῦ, τὴν ζωὴν οὐκ ἔχει.
- 13 Ταῦτα ἔγραψα ὑμῖν ἵνα πιστεύσῃτε εἰς τὸ

τὸ ὄνομα Ἰησοῦ Θεοῦ ἵνα εἰδῆτε ὅτι ζωὴν
ἔχεται αἰώνιον, ἕ ἵνα πιστεύητε εἰς τὸ ὄνομα
Ἰησοῦ Θεοῦ.

14 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ παρρησία ἧ ἔχομεν πρὸς
αὐτὸν, ὅτι εἰάν τις αἰτήμεθα καὶ τὸ θέλημα
αὐτοῦ, ἀκέραια ἡμῶν.

15 Καὶ εἰάν τις οἴδαμεν ὅτι ἀκέραια ἡμῶν, ὁ αὐτὸς αἰ-
τήμεθα, οἴδαμεν ὅτι ἔχομεν τὰ αἰτήματα ἃ
ἠτήκαμεν παρ' αὐτοῦ.

16 Εἰάν τις ἴδῃ τὸ ἀδελφὸν αὐτοῦ ἁμαρτάνοντα
ἁμαρτίαν μὴ πρὸς θάνατον, αἰτήσθαι
καὶ δώσθαι αὐτῷ ζωὴν, τοῖς ἁμαρτάνουσι, μὴ
πρὸς θάνατον. ἔστιν ἁμαρτία πρὸς θάνατον·
ἕ πρὸς ἐκείνης λέγω ἵνα ἐρωτήσῃ.

17 Πᾶσα ἀδικία ἁμαρτία ἐστὶ καὶ ἔστιν ἁ-
μαρτία ἕ πρὸς θάνατον.

18 Οἴδαμεν ὅτι πᾶς ὁ γεννημένος ἐκ τοῦ Θεοῦ,
ἕχ ἁμαρτίαν· ἀλλ' ὁ ἠνοήτους ἐκ τοῦ Θεοῦ,
τηρεῖ ἑαυτὸν, καὶ ὁ πονηρὸς ἕχ ἀπίστῳ αὐτοῦ.

19 Οἴδαμεν ὅτι ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐσμῆν, καὶ ὁ κόσ-
μος ὅλος ἐν τῷ πονηρῷ κεῖται.

20 Οἴδαμεν καὶ ὅτι ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ ἦκε, καὶ δέδω-
κεν ἡμῖν ἀγάπην ἵνα γνώσωμεν τὸ ἀληθι-
νόν, καὶ ἐσμῆν ἐν τῷ ἀληθινῷ, ἐν τῷ υἱῷ αὐ-
τοῦ Ἰησοῦ Χριστῷ· ἕτός ἐστιν ὁ ἀληθινὸς Θεὸς
καὶ ἡ ζωὴ αἰώνιος.

21 Τεκνία, φυλάξατε ἑαυτοὺς ἀπὸ τοῦ εἰδω-
λων. Ἀμὴν.

ΙΩ ΑΝ-

ΙΩΑΝΝΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟ-
 ΛΗΣ ΕΠΙΣΤΟΛΗ ΚΑΘΟΛΙΚΗ ΔΕΥΤΕΡΑ.

- 1 **Ο** Πρεσβύτερ^{ος} ἐκλεκτῆ κυ-
 ρεία, καὶ τοῖς τέκνοις αὐτῆς, ἔσ
 ἐγὼ ἀγαπῶ σὺ ἀληθεία. καὶ ἔκ
 ἐγὼ μόν^{ος}, ἀλλὰ καὶ πάντες οἱ
 ἐγνωκότες τὴν ἀλήθειαν.
- 2 Διὰ τὴν ἀλήθειαν τὴν μέσσαν σὺ ἡμῶν,
 καὶ μεθ' ἡμῶν ἔσαι εἰς τὸν αἰῶνα.
- 3 Ἐσαι μεθ' ὑμῶν χάρις, ἔλε^{ος}, εἰρήνη
 καὶ ἀγάπη πατρὸς, καὶ καὶ κυρίου Ἰη-
 σοῦ Χριστοῦ τοῦ υἱοῦ τοῦ πατρὸς, σὺ ἀληθεία καὶ
 ἀγάπη.
- 4 Ἐχάρην λίαν ὅτι εὗρηκα ἐκ τῶν τέκνων
 σε περὶ παλιν ἐστὶν ἀληθεία, κατὰ τὴν ἐπιτο-
 λὴν ἐλάδομαι καὶ τὸν πατέρα.
- 5 Καὶ νῦν ἐρωτῶ σε, κυρία, ἔχ ὡς ἐπι-
 τολὴν γράφων σοι καμνίω, ἀλλὰ μὴ εἴχοντα
 ἀπ' ἀρχῆς, ἵνα ἀγαπῶμαι ἀλλήλους.
- 6 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἀγάπη, ἵνα περὶ πατῶ-
 ρου καὶ κυρίου ἐνθλάς αὐτῶν. αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπιτο-
 λή, κατὰ τὴν ἡκούστικὴ ἀπ' ἀρχῆς, ἵνα σὺ αὐτῇ
 περὶ παλῆτε.
- 7 Ὅτι πολλοὶ πλάνοι εἰσῆλθον εἰς τὴν κή-
 σμον, οἱ μὴ ὁμολογεῖντες Ἰησοῦν Χριστὸν ἐρ-
 χόμενον ἐν σαρκί. ἔπος ἐστὶν ὁ πλάνος καὶ ὁ
 ἀνέχρως.

- 8 Βλέπτε εαυτοὺς, ἵνα μὴ ἀπολίσωμεν
αὐτὰ ἐργασάμεθα, ἀλλὰ μισθὸν πλήρη ἀπο-
λάβωμεν.
- 9 Πᾶς ὁ Ἰουδαίων, καὶ μὴ μόνον ἐν τῇ
διδασκίᾳ τῆς Χριστοῦ, Θεὸν ἔκ ἐχθ' ὁ μόνον ἐν
τῇ διδασκίᾳ τῆς Χριστοῦ, ἔτ' καὶ τὸ πατέρα
καὶ τὸ υἱὸν ἔχθ'.
- 10 Εἴ τις ἔρχεται πρὸς ὑμᾶς, καὶ ταῦτά
τιν' διδάσκῃ ἢ φέρῃ, μὴ λαμβάνετε αὐ-
τὸν εἰς οἰκίαν καὶ χαίρειν αὐτῷ μὴ λέγετε.
- 11 Ὁ γὰρ λέγων αὐτῷ χαίρειν, κοινωνεῖ τοῖς
ἔργοις αὐτοῦ τοῖς ποιητοῖς.
- 12 Πολλὰ ἔχω ὑμῖν γράφειν, σὺν ἡβελήθῳ
ἀλλὰ χάρτε καὶ μέλαν' ἀλλὰ ἐλπίζω ἐλ-
θεῖν πρὸς ὑμᾶς, καὶ τόμα πρὸς τόμα λαλή-
σαι, ἵνα ἡ χάρις ἡμῶν ἢ πεπληρωμένη.
- 13 Ἀσπάζεται σε τὰ τέκνα τῆ ἀδελφῆς καὶ
τῆ ἐκλεκτῆς. Ἀμὲν.

ἸΩΑΝΝΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ
ἐπιστολὴ καθολικὴ γνήτη.

- 1 **Κ**αὶ Πρεσβύτερον Γαίω τῷ
ἀγαπητῷ, ὃν ἐγὼ ἀγαπῶ ἐν
ἀληθείᾳ.
- 2 Ἀγαπητέ, πρὸ πάντων
ἄρχομαι σε δοξάζειν καὶ
ὑμναῖν, καθὼς δοξάζεται καὶ ἡ ψυχή.
- 3 Ἐχάρ-

ΙΩΑΝΝΟΥ Γ. ΒΟΙ

- 3 Εξάρτων γὰρ λίαν ἐργουμένων ἀδελφῶν,
 Ἐμαρτύρουντων ὡς τῇ ἀληθείᾳ, κατῶς σὺ ἐν
 ἀληθείᾳ ἀειπατεῖς.
- 4 Μιζοτέραυ τῶτων ὅσα ἔχω χαρᾶν, ἵνα
 ἀκούω πᾶ ἐμοὶ τέκνα ἐν ἀληθείᾳ ἀει-
 πατεῖντα.
- 5 Ἀγαπητέ, πισὸν ποιεῖς ὁ ἐὰν ἐργάσῃ εἰς
 τὰς ἀδελφὰς καὶ εἰς τὰς ξένους,
- 6 Οἱ ἐμαρτύρησαν ὡς τῇ ἀγάπῃ ἐνώ-
 πιον ἐκκλησίας· ὅς κατῶς ποιήσῃς ἀσπόμε-
 ψας ἀξίως τῶ Θεῶ.
- 7 Ὑπὲρ γὰρ τῶ ὀνόματι αὐτῶ ἐξῆλθον,
 μηδὲν λαμβάνοντες ἀπὸ τῶν ἐθνῶν.
- 8 Ἡμεῖς οὐδ' ὀφείλομεν ἀπὸ λαμβάνειν τὰς
 ποῖστεις, ἵνα σωεργαί γινώμεθα τῇ ἀληθείᾳ.
- 9 Ἐγραψα τῇ ἐκκλησίᾳ· ἀλλ' ὁ φιλο-
 πσιδύων αὐτῶν Διοτρεφῆς ἐκ ἐπιδέχεται
 ἡμᾶς.
- 10 Διὰ τῶτο, ἐὰν ἔλθω, ὑπομνήσω αὐτῶ
 πᾶ ἔργα ἃ ποιεῖ, λόγους πανηροῖς φλυαρῶν
 ἡμᾶς· καὶ μὴ δεκτέμμος ἐπὶ τῶτοις, ἕτε αὐ-
 τὸς ἐπιδέχεται τὰς ἀδελφὰς, καὶ τὰς βυλο-
 μύρας κωλύει, Ἐ ἐκ τῆ ἐκκλησίας ἐκβάλλει.
- 11 Ἀγαπητέ, μὴ μιμῆ τὸ κακοῖ, ἀλλὰ τὸ
 ἀγαθόν. ὁ ἀγαθοποιῶν, ἐκ τῶ Θεῶ ἐστὶν ὁ ὃ
 κακοποιῶν, ἐκ εἰσρακε τῶ Θεόν.
- 12 Δημητρίῳ μεμαρτύρη) ὑπὸ πάντων,
 καὶ ὑπὸ αὐτῆς τῆ ἀληθείας· Ἐ ἡμεῖς ὃ μαρ-
 τυροῦμεν,

τυρέμην, καὶ οἴδατε ὅτι ἡ μαρτυρία ἡμῶν ἀληθής ἐστι.

13 Πολλὰ εἶχον γράφειν, ἀλλ' ἐθέλω διὰ μέλαν καὶ χαλάμα σοι γράψαι.

14 Ἐλπίζω δὲ σύνθεως ἰδεῖν σε, καὶ σῶμα πρὸς σῶμα λαλήσομεν.

15 Εἰρήνῃ σοι. ἀσπάζονται σε οἱ φίλοι. Ἀσπάζε τὰς φίλους κατ' ὄνομα.

ΙΟΥΔΑ ΤΟΥ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
ἐπιστολὴ καθολικὴ.

1 **Ι**ΟΥΔΑΣ Ἰησοῦ Χριστοῦ δούλος, ἀδελφὸς δεῖ Ἰακώβου, τοῖς ἐν Θεῷ πατρὶ ἡγιασμένοις, καὶ Ἰησοῦ Χριστοῦ τετηρημένοις κλητοῖς.

2 Ἐλεῖ ὑμῖν καὶ εἰρήνῃ ἐ ἀγάπῃ πλῆθυνθείη.

3 Ἀγαπήθει, πᾶσαν σπεδὺν ποιέμεν γράφειν ὑμῖν πρὸς τῆς κτηνῆς σωτηρίας, ἀνάγκην ἔχον γράψαι ὑμῖν, ὡς χαλαρῶν ἐπαγωνίζεσθαι τῇ ἀπαξ ὡς δαδοθείση τοῖς ἀγίοις πίστι.

4 Παρθεύουσαν γὰρ ἦνες ἀνθρώποι οἱ πάλαι ὡς γεγραμμένοι εἰς τὸ κείμενον, ἀσεβεῖς, καὶ θεοῦ ἡμῶν χάριν μετὰ πῆντες εἰς ἀσελίαν, καὶ τὸ μόνον δεσποτικῶν Θεῶν καὶ

καὶ Κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστὸν ἀνέμφοι.

5 Ὑπομνήσασθε ὑμᾶς βέλομα, εἰδότες ὑμᾶς ἅπασι τὸ ὅτι ὁ Κύριος λαὸν ἐκ γῆς Αἰγύπτου σώσας, τὸ δεύτερον τὴν μὴ πισύσαντας ἀπώλεσεν.

6 Ἄγγελοι τε τὴν μὴ τηρήσαντας τῶν ἐαυτῶν ἀρχῶν, ἀλλὰ ἀπολιπόντας τὸ ἴδιον οἰκητήριον, εἰς κρίσιν μεγάλης ἡμέρας, δεσμῶν αἰσίοις ὑπὸ ζόφου τετήρηκεν.

7 Ὡς Σόδομα καὶ Γόμορρα, καὶ αἱ περὶ αὐτὰς πόλεις τῶν ὄργιων τέτοις τρόπον ἐκπορεύσασα, ἔαπελθῶσιν ὀπίσω σαρκῶς ἑτέρας, παρέχονται δεῖγμα, πρὸς αἰωνίαν δίκην ὑπέχουσα.

8 Ὁμοίως μύθοι καὶ ἔτι ἐνυπνιαζόμενοι, σάρκα μὴ μιάνουσι, κυριότητά ἢ ἀρετῆσι, δόξας ἢ βλασφημίαις.

9 Ὁ δὲ Μιχαὴλ ὁ ἀρχάγγελος ὅτε τῷ Διαβόλῳ Διακρινόμενος διελέγετο περὶ τῆς Μωσέως σώματος, ὅτι ἐτόλμησε κρίσιν ἐπενεγκεῖν βλασφημίας, ἀλλ' εἶπεν· Ἐπιλήμῃσθε σοι Κύριος.

10 Οὗτοι δὲ ὅσα μὴ ὅσα οἶδασιν βλασφημῶσιν ὅσα δὲ φυσικῶς, ὡς τὰ ἄλογα ζῶα, ἐπίσανται, ἐν τέτοις φθείρονται.

11 Οὐαὶ αὐτοῖς ὅτι τῇ ὁδῷ τῆς Καὶν ἐπορεύθησαν, καὶ τῇ πλάνῃ τῆς Βαλαάμ μοιθεῖ ἐξεχύθησαν, καὶ τῇ ἀνίλογίᾳ τῆς Κορὴ ἀπώλοντο.

12 Οὗτοι

- 12 Οὗτοί εἰσιν ἐν ταῖς ἀγάπαις ὑμῶν σπι-
λάδες, στυδωχέμβροι, ἀφόβως ἑαυτὸς
ποιμαίνοντες· νεφέλαι ἄνδρσι, ὑπὸ ἀνέμων
πῶς φερόμεθα, δένδρα φθινοπωρινὰ, ἀκχε-
ρα, οἷς ἀποθανόντα, ἐκελζωθέντα·
- 13 Κύματα ἀγρία θαλάσσης, ἐπαφρίζοντα
ἐπὶ ἑαυτῶν αἰχμῶας· ἀστέρες πηλαυήται, οἷς
ὁ ζόφου σκότος εἰς τὸ αἰῶνα τετήρηται·
- 14 Προσφῆτὸς ἦ ἕτεροις ἑοδομεθ' ἀπὸ
Ἀδάμ Ἐνώχ, λέγων· Ἰδὲ, ἦλθε Κύριος ἐν
μυριάσιν ἀγίαις αὐτῶν,
- 15 Ποιῆσαι κείσιν καὶ πάντων, καὶ ἐξελέγξαται
πάντας τοὺς ἀσεβεῖς αὐτῶν πᾶσι πάντων τῶν
ἔργων ἀσεθείας αὐτῶν ὧν ἠσέθησαν, καὶ πᾶσι
πάντων τῶν σιληρῶν ὧν ἐλάλησαν κατ' αὐτῶν
ἀμαρτωλοὶ ἀσεβεῖς.
- 16 Οὗτοί εἰσι γρηγοροί, μεμφίμοιροι, καὶ
ταῖς ἐπιθυμίαις αὐτῶν πορδύομενοι· καὶ τὸ εὖ-
μα αὐτῶν λαλεῖ ὑπέροχη, θαυμαζόντες
πᾶσι πᾶσι, ἀφελείας χάριν.
- 17 Ὑμεῖς ἡ ἀγαπητοὶ μνησθητε τῶν ῥημάτων
τῶν πνευματικῶν ὑπὸ τῶν ἀποστόλων τῶν Κυρίων
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ·
- 18 Ὅτι ἔλεγον ὑμῖν, ὅτι ἐν ἐσχάτῳ χρόνῳ
ἔσονται ἐμπηκίαι, καὶ ταῖς ἑαυτῶν ἐπιθυ-
μίας πορδύομενοι τῶν ἀσεβῶν.
- 19 Οὗτοί εἰσιν οἱ ἀποδιορίζοντες ἑαυτοὺς,
ψυχιστοὶ, πνεῦμα μὴ ἔχοντες.

- 20 Ὑμεῖς ᾗ, ἀγαπητοί, τῇ ἀγιαζάτῃ ὑμῶν
πίστῃ ἐποικοδομῶντες ἑαυτοὺς, ἐν πιδύματι
ἀγίῳ πνευστοσύχομοι,
21 Ἐπιπέτε ἐν ἀγάπῃ Θεῶ τῆρησατε, πνευστοδύ-
χομοι τὸ ἔλεϑ ἔ Κυρίε ἡμῶν Ἰησοῦ Χρι-
στῶ εἰς ζωὴν αἰώνιον.
22 Καὶ εἰς μὴ ἐλεῖτε Διφρονομοι.
23 Οὐς ᾗ ἐν φόβῳ σώζετε, ἐν ἔ πυρὸς ἀε-
πίζοντες, μισῶντες κῆ τὸ δὲ τὸ σαρκὸς ἐπι-
λωμόνον χιτῶνα.
24 Τῶ ᾗ δυναμῶ φυλάξα ὑμᾶς ἀπὸ αἰ-
ετος, ἔ σῆσα κατενώπιον τὸ δόξης αὐτοῦ ἀμῶ-
μος ἐν ἀγαλλιάσῃ,
25 Μόνῳ σοφῶ Θεῶ σωτῆρι ἡμῶν δόξα καὶ
μεγαλωσιῇ, κράτῳ κῆ ἐξουσία, ἔ νῦν κῆ
εἰς πάντας τὸς αἰῶνας. Ἀμήν.

ἈΠΟΚΑΛΥΨΙΣ ἸΩΑΝ-
ΝΗ ἔ Θεολόγῃ.

Κεφ. α'. Ι.

Ἰ **Α**ΠΟΚΑΛΥΨΙΣ Ἰησοῦ
Χριστοῦ, ἡ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ
Θεὸς, δεῖξαι τοῖς δούλοις αὐ-
τοῦ ἃ δεῖ γενέσθαι ἐν ταῖς κῆ
ἐσημῶνεν διποσίλας Διφρο-
νομοῖ αὐτῶ τῶ δέλα αὐτῶ Ἰωάννη.

2 Ος

- 2 Ὃς ἐμαρτύρησε τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ, καὶ τὸ μαρτυρεῖν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὅσα τε εἶδε.
- 3 Μακάριοι οἱ ἀναγνώσκων, καὶ οἱ ἀκούοντες τὰς λόγους τοῦ βιβλίου τούτου, ἔτι κερδαῖντες ἐν αὐτῇ γεγραμμένον· ὅτι ἡ καρπὸς ἐγγύς.
- 4 Ἰωάννης ταῦς ἐπέειπε ἐκκλησίαις ταῦς ἐν τῇ Ἀσίᾳ· χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ τοῦ Θεοῦ τοῦ ὄντος ὁ ὢν καὶ ὁ ἐρχόμενος· ἔτι ἀπὸ τοῦ ἐπιτελεσθέντων αἱ εἰσι ἐνώπιον τοῦ θρόνου αὐτοῦ.
- 5 Καὶ ἀπὸ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ μάρτυς ὁ πιστός, ὁ μαρτυροῦν ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ, καὶ οἱ ἀρχαὶ τῶν βασιλείων τῆς γῆς· τῶν ἀγαπήσαντων ἡμᾶς, καὶ λέσαντων ἡμᾶς ἀπὸ τῶν μαρτυριῶν ἡμῶν ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ.
- 6 Καὶ ἐποίησεν ἡμᾶς βασιλεῖς καὶ ἱερεῖς ἐπὶ τοῦ βιβλίου καὶ πατρὸς αὐτοῦ· αὐτῶν ἡ δόξα ἐν τῷ κράτει τοῦ Θεοῦ εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.
- 7 Ἰδοὺ, ἔρχεται μετὰ τῶν νεφελῶν, καὶ ὄψεται αὐτὸν πᾶς ὀφθαλμὸς, καὶ οἵπνες αὐτὸν ἐξεκέντησαν· καὶ κόψονται ἐπ' αὐτὸν πᾶσαι αἱ φυλαὲ τῆς γῆς. ναὶ, Ἀμήν.
- 8 Ἐγὼ εἰμι τὸ Α καὶ τὸ Ω, ἀρχὴ καὶ τέλος, ἄλφα καὶ ὰ, ὁ ὢν καὶ ὁ ἐρχόμενος, ὁ παντοκράτωρ.
- 9 Ἐγὼ Ἰωάννης ὁ ἐστὶν ἀδελφὸς ὑμῶν, καὶ συγγενιστὸς ἐν τῇ θλίψει καὶ ἐν τῇ βασιλείᾳ καὶ ὑπομονῇ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐγγύς ἐστιν ἐν τῇ νύκτι τῇ καλεσμένη Πάτρω, ἀπὸ τοῦ λόγου
λόγου

λόγον ἔθ' Θεῶν καὶ ἀφ' ἑνὸς μαρτυρίαν Ἰησοῦ
Χριστοῦ.

- 10 Ἐγὼ μὲν ἐν πνύμφῃ ἐν τῇ κυριακῇ
ἡμέρᾳ· καὶ ἤκαστα ὀπίσω με φωνῶ μεγά-
λῃ ὡς σάλπιγγος,
- 11 Λεγέσης· Ἐγὼ εἰμι τὸ Α καὶ τὸ Ω, ὁ πρῶ-
τος ἔσ' ὁ ἔσχατος· καὶ ὁ βλέψας βιβλίον εἰς
βιβλίον, καὶ πέμψον ταῖς ἐκκλησίαις ταῖς
ἐν Ἀσίᾳ, εἰς Ἐφέσον, ἔτι εἰς Σμύρναν, καὶ εἰς
Πέργαμον, ἔτι εἰς Θυάττρα, καὶ εἰς Σάρδεις,
καὶ εἰς Φιλαδέλφειαν, ἔτι εἰς Λαοδικεῖαν.
- 12 Καὶ ἐπέστρεψα βλέπειν τὸ φωνῶν ἡπίς ἐλά-
λησε μετ' ἐμοῦ· καὶ ἐπιστρέψας εἶδον ἐπ' αὐτῷ λυ-
χνίας χρυσοῦς·
- 13 Καὶ ἐν μέσῳ τῶν ἐπ' αὐτῷ λυχνιῶν ὄμοιον ἡμῶν
ἀνθρώπου, ἐν δένδρῳ ποδῆρη, καὶ ὡσεὶ ζω-
σάνθρωπον πρὸς τοῖς μαρτύροις ζώντων χρυσοῦν.
- 14 Ἡ δὲ κεφαλὴ αὐτοῦ ἔσ' αἵ τρεῖς λουκῆ
ὡσεὶ ἔριον λευκόν, ὡς χιών· καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ
αὐτοῦ ὡς φλόξ πυρός·
- 15 Καὶ οἱ πόδες αὐτοῦ ὄμοιοι χαλκολιθῶνα,
ὡς ἐν καμίνῳ πεπυρωμένοι· καὶ ἡ φωνὴ αὐτοῦ
ὡς φωνὴ ὑδάτων πολλῶν·
- 16 Καὶ ἔχων ἐν τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ χεῖρ ἄστρας
ἐπ' αὐτόν· καὶ ἐκ τῶν ὀμῶν αὐτοῦ ῥομφαία δί-
στομος ὀξεῖα ἐκπορεύομένη· καὶ ἡ ὄψις αὐτοῦ
ὡς ὁ ἥλιος φαίνει ἐν τῇ δυνάμει αὐτοῦ.
- 17 Καὶ ὅτε εἶδον αὐτὸν, ἔπεσα πρὸς τοὺς πό-
δας

δας αὐτῷ ὡς νεκρός· καὶ ἐπέθηκε τὴ δεξιὰν αὐ-
τῷ χεῖρα ἐπ' ἐμέ, λέγων μοι· Μὴ φοβῶ. ἐγώ
εἰμι ὁ παρῶν καὶ ὁ ἔρχομαι·

18 Καὶ ὁ ζῶν, καὶ ἐγγύμενον νεκρός, ἐίδὲς ζῶν
εἰμι εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων· ἀμὲν· καὶ ἔχω
τὰς κλεῖς τοῦ ᾧδου καὶ τοῦ θανάτου·

19 Γράψον ἃ εἶδες, καὶ ἃ εἰσι, καὶ ἃ μέλλου
γίνεσθαι μετὰ ταῦτα·

20 Τὸ μυστήριον τοῦ ἐπιτὰ ἀστέρων ὧν εἶδες ἐπὶ
τῆ δεξιᾶς μου, καὶ τὰς ἐπιτὰ λυχνίας καὶ χρο-
σῆας· οἱ ἐπιτὰ ἀστέρες, ἄγγελοι τῶν ἐπιτὰ ἐκκλη-
σιῶν εἰσι· καὶ αἱ ἐπιτὰ λυχνίας αἵ εἶδες, ἐπιτὰ
ἐκκλησίαι εἰσι·

Κεφ. β'. 2.

1 **Τ**ῷ ἀγγέλω τῆ Ἐφεσίνης ἐκκλησίας γρά-
ψον· Τὰδε λέγει ὁ κρατῶν τὰς ἐπιτὰ ἀστέ-
ρας ἐν τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ, ὁ παρῶν καὶ ὁ μέ-
λλων τῶν ἐπιτὰ λυχνιῶν καὶ χροσῆων·

2 Οἶδα τὰ ἔργα σου, καὶ τὸ κῆπον σου, καὶ τὸ
ὑπομνημῆός σου, ἐὸς ὅτι ἐδωθή βασιλεία κακῆς·
καὶ ἐπιδράσω τὰς φάσκονας εἶναι ἀποστόλους,
καὶ ὅσοι εἰσι· καὶ ὄφρα αὐτὰς ψυδῶ·

3 Καὶ ἐδάσασαι, καὶ ὑπομνημῆός σου ἔχῃς, καὶ
ἀλλὰ τὸ ὄνομά μου κειθπίσκας, καὶ ἐ κει-
μηκας·

4 Ἀλλ' ἔχω καὶ σοῦ, ὅτι τὸ ἀγάπῃ σου τὴν
παρῶν ἀφῆκας·

5 Μνημόνευε οὖν πόθεν ἐκπέπλωκας, καὶ
μέλα-

μελανόησον, & τὰ πρῶτα ἔργα ποιήσον· εἰ δὲ
μὴ, ἔρχομαί σοι ταχὺ, καὶ κινήσω τὴν λυχνίαν
ἐκ ἐκείνου τόπου αὐτῆς, εἰ μὴ μελανοήσης.

6 Ἀλλὰ τὸ εἶπε, ὅτι μισεῖς τὰ ἔργα πάντων
Νικηλαϊτῶν, ἀ καὶ γὰρ μισῶ.

7 Ὁ ἔχων ἕως, ἀκροάτω πρὸς τὸ πνεῦμα λέγοντα
ταῖς ἐκκλησίαις· Τὸν νικῶντι δώσω αὐτῷ
φαγεῖν ἐκ τοῦ ξύλου τῆς ζωῆς, ὃ ἐστὶν ἐν μέσσοις
τοῦ ὕδατος & τοῦ ὕδατος.

8 Καὶ τὸ ἀγγέλω τῆς ἐκκλησίας Σμυρναίων
γράψον· Τὰδε λέγει ὁ πρῶτος καὶ ὁ ἔχων ἕως,
ὅς ἐβλήθη νεκρὸς & ἐζήσεν.

9 Οἶδά ἐγὼ τὰ ἔργα καὶ τὴν θλίψιν καὶ πέναν
πλωθείαν, (πλῆσι θεῶν εἰ) & τὴν βλασφημίαν
τῶν λεγόντων Ἰσδαίους εἶναι ἐαυτοὺς, καὶ
ὅσα εἰσὶν, ἀλλὰ συναγωγὴν ἔσταιν.

10 Μηδὲν φοβῶμαι ἐμὴν ἐξουσίαν· ἰδὲ, μέγα
βαλεῖν ἐξ ὑμῶν ὁ ἀγγέλω εἰς φυλακὴν,
ἵνα προεδοῦντε καὶ ἔξετε θλίψιν ἡμερῶν δέκα·
γίνεσθε πιστοὶ ἄχρι θανάτου, & δώσω σοι τὴν
στέφανον τῆς ζωῆς.

11 Ὁ ἔχων ἕως, ἀκροάτω πρὸς τὸ πνεῦμα λέγοντα
ταῖς ἐκκλησίαις· Οἱ νικῶντες μὴ ἀδικηθῶν ἐκ
τοῦ θανάτου ἔσταιν.

12 Καὶ τὸ ἀγγέλω τῆς ἐκκλησίας Περσάμων
γράψον· Τὰδε λέγει ὁ ἔχων τὴν ῥομφαίαν
καὶ τὸν θρόνον καὶ τὸ ἔξαιον.

13 Οἶδα τὰ ἔργα ἐγὼ, & πῶς καθίσκεις, ὅπως
ὁ θρόνος

ὁ θρόνος τῆς σαββάτου· καὶ κρατεῖς τὸ ὄνομα μου,
καὶ οὐκ ἠρνήσω τὴν πίστιν μου, καὶ ἐν ταῖς
ἡμέραις ἐν αἷς Ἀνθίπας ὁ μαρτυρῶν μου ὁ πι-
στὸς, ὃς ἀπεκρίθη παρ' ὑμῶν, ὅπως κρατεῖ
ὁ σαββάτος·

- 14 Ἀλλ' ἔχω καὶ ἓξ ὀλίγα, ὅτι ἔχῃς ἐκεῖ
κρατεῖς τὴν διδασχὴν Βαλαάμ, ὃς ἐδί-
δασκεν τῷ Βαλακ βαλεῖν σκάνδαλον ἐν-
ώπιον τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, φαγεῖν εἰδωλόθυτα,
καὶ πορνεῦσαι.
- 15 Οὕτως ἔχῃς ἐσὺ κρατεῖς τῆς διδασχῆς
τῶν Νικηλαϊτῶν ὁ μισθῶν.
- 16 Μεινῶνσον· εἰ γὰρ μὴ, ἔρχομαι σοὶ ταχὺ,
καὶ πολεμήσω μετ' αὐτῶν ἐν τῇ ῥομφαίᾳ τῆς
στόματός μου.
- 17 Ὁ ἔχων ἕως ἀκροῦται πρὸς τὸ πνεῦμα λέγει
ταῖς ἐκκλησίαις· Ταῖς νικῶντι δώσω αὐτῶν
φαγεῖν ἀπὸ τῆς μέντης τῆς κεκρυμμένης, καὶ
δώσω αὐτῶν ψῆφον λευκὴν, καὶ ἐπὶ τῆς ψῆφου
ὄνομα κλητῶν γεγραμμένον, ὃ οὐδεὶς ἔγνω εἰ-
μὴ ὁ λαμβάνων.
- 18 Καὶ ταῖς ἀγγέλοις τῶν θυματέρων ἐκκλη-
σίας γράψον· Ταῦτάδε λέγει ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ὁ ἔχων
τὰς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν ὡς φλόγα πυρός. Ἐοὶ
πόδες αὐτῶν ὄμοιοι χαλκῶν λιθῶν.
- 19 Οἶδάς τας ἔργα, καὶ τὴν ἀγάπην, ἔτι Ἀλε-
κηνίαν, καὶ τὴν πίστιν, ἔτι Ἐπομηνίαν τας, καὶ τὰ
ἔργα τας, καὶ τὰ ἔχαθ' ὑπερίονα τῶν ἁγίων.

- 20 Ἀλλ' ἔγω καὶ σὺ ὀλίγα, ὅτι εἶς τῶν γυναι-
κα Ἰεζαβὴλ, τῆς λέγουσας ἑαυτῇ ὡσεὶ φῆτιν,
διδάσκου καὶ πλανᾷσαι ἡμᾶς δόλους, παρε-
νεύου καὶ εἰδωλόθυτα φαγεῖν.
- 21 Καὶ ἔδωκε αὐτῇ χρόνον ἵνα μελανοῦσῃ
ἐκ τῆς πορνείας αὐτῆς, ἧς ἔμετενόησεν.
- 22 Ἰδὲ, ἐγὼ βάλλω αὐτῇ εἰς κλίνην, καὶ
τὰς μοιχοδύοντας μετ' αὐτῆς, εἰς θλίψιν με-
γαλάνην, ἵνα μὴ μελανοῦσῃ ἐκ τῶν ἔργων
αὐτῆς.
- 23 Καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς ἀποκτενῶ ἐν θανά-
τῳ, καὶ γνώσον ἡ πᾶσα ἐκκλησία ὅτι ἐγὼ
εἰμι ὁ ἐρῶν ἄν νεφρὸς ἔκ καρδίας· καὶ δώσω
ὑμῖν ἐκάστα καὶ τὰ ἔργα ὑμῶν.
- 24 Ὑμῖν δὲ λέγω, καὶ λοιποῖς τοῖς ἐν Θουσί-
ροις, ὅσοι σὺν ἔχουσιν τὴν διδαχὴν ταύτην, καὶ
οἵτινες σὺν ἔγνωσαν τὰ βῆθη τῆς σαλιανῆς, ὡς
λέγουσιν· ἔβαλῶ ἐφ' ὑμᾶς ἄλλο βάρος.
- 25 Πλὴν ὁ ἐχέει κρατῆσαι ἄχρῃς ἔτι ἀν' ἡζῶ.
- 26 Καὶ ὁ νεκρῶν, ἧς ὁ τηρῶν ἄχρῃς τέλος τὰ ἔρ-
γα με, δώσω αὐτῷ ἐξουσίαν ἐπὶ τῶν ἔθνων.
- 27 Καὶ ποιμανεῖ αὐτὸς ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ· ὡς
τὰ σκόλη τὰ κεραμικὰ σωτρίδος, ὡς καὶ
ἔγω εἴληφα ὡς πατὴρ τῶν πατέρων μου.
- 28 Καὶ δώσω αὐτῷ τὸ ἄσπερον τῶν ὡσεὶ φῆτιν.
- 29 Ὁ ἔχων ἔς, ἀκυσάτω πρὸς τὸ πνεῦμα λέγον-
τῆς ἐκκλησίας.

Κεφ.

Κεφ. γ'. 3.

- 1 **Κ**αὶ τῷ ἀγγέλῳ τῷ ἐν Σάρδεσιν ἐκκλησίας
 γράψον· Τάδε λέγει ὁ ἔχων τὰ ἐπτὰ
 πνύματα ἃ Θεῶν, καὶ τὰς ἐπτὰ ἀστέρας· Οἶ-
 δά σου τὰ ἔργα, ὅτι τὸ ὄνομα ἔχεις ὅτι ζῆς,
 καὶ νεκρὸς εἶ.
- 2 Γίνεο ζητηρῶν, καὶ σήριξον τὰ λοιπὰ ἀ-
 μέλει δάποθανεῖν· καὶ γὰρ δύρηκά σου τὰ ἔργα
 πεπληρωμένα ἐνώπιον ἃ Θεῶν.
- 3 Μη μόνου οὕτω πῶς εἴληφας καὶ ἤκουσας,
 καὶ τήρησθαι, καὶ μετανόησον. Ἐὰν οὕτω μὴ ζητηρή-
 σης, ἤξω ἐπὶ σε ὡς κλέπτης, καὶ ἔμὴ γνώσῃς
 ποῖαν ὥραν ἤξω ἐπὶ σε.
- 4 ἔχεις ὀλίγα ὀνόματα καὶ ἐν Σάρδεσιν, ἃ
 ὅσα ἐμόγησαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ περι-
 πατήσουσιν μετ' ἐμῶν ἐν λούκοις· ὅτι ἄξιοί
 εἰσιν.
- 5 Οἱ νικῶν, ἐπιπέσει αὐτῷ ἐν ἱματίοις
 λούκοις· καὶ ἔμὴ ἐξαλείψω τὸ ὄνομα αὐτῶν
 ἐκ τῆς βίβλου τῆς ζωῆς, καὶ ἐξομολογήσομαι τὸ
 ὄνομα αὐτῶν ἐνώπιον ἃ πατρὸς μου, καὶ ἐν-
 ὄπιον τῷ ἀγγέλῳ αὐτῶν.
- 6 Ὁ ἔχων ἔσ, ἀκουσάτω τί τὸ πνεῦμα λέγει
 πρὸς ἐκκλησίας.
- 7 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῷ ἐν Φιλαδέλφειᾳ ἐκ-
 κλησίας γράψον· Τάδε λέγει ὁ ἅγιος, ὁ ἀ-
 ληθινὸς, ὁ ἔχων τὴν κλεῖδα ἃ Δαβὶδ· ὁ ἀνοίγων,
 καὶ ὁ δέξας κλεῖδι· ἐκλείει, καὶ ὁ δέξας ἀνοίγει·

8 Οἶδά

- 8 Οἶδά σε τὰ ἔργα· ἰδὲ δέδωκα ἐνώπιόν
 σε θύραν ἀνεῳγμένην, καὶ εἰς δυνάμειν κλει-
 σται αὐτήν· ὅτι μικρὰν ἔχεις δυνάμειν, καὶ
 ἐτήρησάς με τὸ λόγον, καὶ ὅτι ἠρνήσω τὸ ὄνο-
 μά μου.
- 9 Ἰδὲ, δίδωμι ἐκ τῆς συναγωγῆς τῆς σαββα-
 τῆς λεγόντων ἑαυτοὺς Ἰουδαίους εἶναι, καὶ ὅτι
 εἰσὶν ἄλλὰ ψεύδων· ἰδὲ, ποιήσω αὐτοὺς ἵνα
 ἤξωσι ἐκ τῆς συναγωγῆς ἐκ ἐνώπιον τῆς πό-
 ρων, καὶ γνώσιν ὅτι ἐγὼ ἠγάπησά σε.
- 10 Ὅτι ἐτήρησας τὸ λόγον τῆς ὑπομοχθῆς μου,
 καὶ γὰρ σε τηρήσω ἐκ τῆς ὥρας τῆς πέντε μὲς τῆς
 μελλούσης ἔρχεσθαι ἐπὶ τὴν οἰκωμένην ὅλην, πε-
 ράσει τὰς καθεκδόντας ἐπὶ τῆς γῆς.
- 11 Ἰδὲ, ἔρχομαι ταχύ· κρατὶ ὀφείλεις ἵνα μη-
 δεὶς λάθῃ τὸ σέφανόν σε.
- 12 Οἱ νικῶν, ποιήσω αὐτὸν σύλον ἐν τῷ λαῷ
 τῆς Θεῶν μου, καὶ ἔξω εἰ μὴ ἐξέλθῃ ἐπὶ ἐξ ἔραψω
 ἐπὶ αὐτὸν τὸ ὄνομα τῆς Θεῶν μου, καὶ τὸ ὄνομα
 τῆς πόλεως τῆς Θεῶν μου τῆς καμίνης Ἰερουσαλήμ,
 ἢ καθεκδόντας ἐκ τῆς ἔραψω ἀπὸ τῆς Θεῶν μου, καὶ
 τὸ ὄνομα μου τὸ καμινόν.
- 13 Οἱ ἔχοντες εἶς, ἀκροάτω τί τὸ πνεῦμα λέγει
 ταῖς ἐκκλησίαις.
- 14 Καὶ τῶν ἀγγέλων τῆς ἐκκλησίας Λαοδι-
 κέων γράψον· Τάδε λέγει ὁ Ἄγγελος, ὁ μαρ-
 τυρὸς ὁ πιστὸς καὶ ἀληθινὸς, ἡ ἀρχὴ τῆς κτίσεως
 τῆς Θεῶν.

15 Οἶδά

- 15 Οἶδά σε τὰ ἔργα, ὅτι ἔτι ψυχρὸς εἶ, ἔτι ζεσὸς· ὀφείλου ψυχρὸς εἶης ἢ ζεσὸς.
- 16 Οὕτως, ὅτι χλιαρὸς εἶ, καὶ ἔτι ψυχρὸς ἔτι ζεσὸς, μέλω σε ἐμίσση ἐν τῷ στόματός μου·
- 17 Ὅτι λέγεις· Ὅτι πτωχὸς εἶμι, καὶ πεπλησθῆκα, καὶ ἐδειὸς χρεῖαν ἔχω. Καὶ σὺ οἶδας ὅτι σὺ εἶ ὁ πτωχὸς καὶ ἐδειὸς, καὶ ἐλεεινὸς, καὶ πτωχὸς, καὶ τυφλὸς, καὶ γυμνός.
- 18 Συμβουλεύω σοι ἀγοράσθαι παρ' ἐμοῦ χρυσοὺν πεπυρωμένον ἐκ πυρός, ἵνα πωτήσης· καὶ ἱμάτια λευκά, ἵνα περιβάλη, καὶ μὴ φανερωθῇ ἡ αἰσχρὴ τῆς γυμνότητός σου· καὶ κροκόθρανον ἕγχριστον τοῦ ὀφθαλμοῦ σου, ἵνα βλέπῃς.
- 19 Ἐγὼ ὅσους ἐὰν φιλήω, ἐλέγχω καὶ παιδεύω· ζήλωσον οὖν καὶ μετάνοήσον.
- 20 Ἴδὲ, ἔστηκα ἐπὶ τὸ θύρασμα, καὶ κρούω· ἐάν τις ἀκούσῃ τῆς φωνῆς μου, καὶ ἀνοίξῃ τὸ θύρασμα, εἰσελεύσομαι πρὸς αὐτόν, καὶ δεύσω μετ' αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς μετ' ἐμοῦ.
- 21 Οἱ κλητοὶ, δώσω αὐτοῖς καὶ ἰσχύω μετ' ἐμοῦ ἐν τῷ θρόνῳ μου, ὡς καὶ ἐνίκησα, καὶ ἐκάθισα μετ' ἐμοῦ πατρός μου ἐν τῷ θρόνῳ αὐτοῦ.
- 22 Ὁ ἔχων ἄσος, ἀκουσάτω τί τὸ πνεῦμα λέγει ταῖς ἐκκλησίαις.

Κεφ. δ'. 4.

1 ΜΕτὰ ταῦτα εἶδον καὶ ἰδὲ, θύρασμα ἠνεῳγμένον ἐν τῷ ἔρειπῳ, καὶ ἡ φωνὴ ἡ ἀπὸ τοῦ ἑσπέρου λέγουσα

ἤκουσαι ὡς σάλπιγγος λαλήσῃς μετ' ἐμῶν,
λέγεται· Ἀνάθεα αὐτῶν, καὶ δείξω σοι ἃ δεῖ γενέσθαι μὲν ταῦτα.

2 Καὶ δὴ τέως ἐν ἠρόμενι ἐν πύσματι· καὶ
ἰδὼν, ἦροντο ἐκείτω ἐν τῷ ἔρειπῳ, καὶ ἐπὶ τῷ
ἦρονι κατήμενον.

3 Καὶ ὁ κατήμενον ἰὼ ὄμειον ὀρθῶς λίθῳ
ἰάσσοιτι καὶ σαροδίῳ· καὶ ἴσως κυκλόθεν τῷ
ἦρονι ὄμειον ὀρθῶς σμαραγδίνῳ.

4 Καὶ κυκλόθεν τῷ ἦρονι ἦρονοι εἴησι καὶ
τέσσαρες· καὶ ἐπὶ τὸν ἦρον εἶδον τὸν εἴησι
καὶ τέσσαρας πρεσβυτέρους κατήμερους, ὡς
βεδλημήμους ἐν ἰμαθίοις λούκῃσι· καὶ ἔχον ἐπὶ
τῶν κεφαλῶν αὐτῶν στεφάνους χρυσοῦς.

5 Καὶ ἐκ τῷ ἦρονι ἐκπορεύονται ἀστραπαὶ
καὶ βρονταὶ ἐφ' αὐτῶν· καὶ ἐπὶ αὐτῶν λαμπάδες
πυρὸς καὶ ὄμειον ἐνώπιον τῷ ἦρονι, αἳ εἰσι τὰ
ἐπὶ πύσματι τῷ Θεῷ.

6 Καὶ ἐνώπιον τῷ ἦρονι θάλασσα ὑαλίνη,
ὄμειον κρυστάλλῳ· καὶ ἐν μέσῳ τῷ ἦρονι καὶ κύ-
κλῳ τῷ ἦρονι τέσσαρα ζῶα γέμεντα ὀφθαλ-
μῶν ἔμπροσθεν καὶ ὀπίσθεν.

7 Καὶ τὸ ζῶον τὸ πρῶτον ὄμειον λίθῳ, καὶ
τὸ δεύτερον ζῶον ὄμειον μέλιτι, καὶ τὸ τρίτον
ζῶον ἔχον τὸ πρόσωπον ὡς ἀνθρώπου, καὶ τὸ
τέταρτον ζῶον ὄμειον ἀετῶ πεταγμένῳ.

8 Καὶ τέσσαρα ζῶα, ἐν καθ' ἑαυτὸ, εἶχον
ἀνὰ πτέρυγας ἐξ κυκλόθεν, καὶ ἔσωθεν γέμεντα
ὀφθαλ-

ὀφθαλμῶν· καὶ ἀνάπαισι ὅσα ἔχουσιν ἡμέρας καὶ νυκτὸς, λέγουσιν· Ἄξιον, ἄξιον, ἄξιον· Κύριον ὁ Θεὸς ὁ παιζευκράτωρ, ὁ βίω καὶ ὁ ὢν καὶ ὁ ἐρχόμενος.

9 Καὶ ὅταν δώσῃ τὰ ζῶα δόξαν καὶ τιμὴν καὶ δόξα εὐαγγέλιον τῷ καθήμενῷ ἐπὶ τῷ θρόνῳ, τὰ ζῶα ἐκείνη εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων,

10 Πέσονται οἱ ἑξήκοντι καὶ τέσσαρες πρὸς οὐπεροὶ ἐνώπιον τοῦ καθήμενου ἐπὶ τῷ θρόνῳ, καὶ προσκυνήσουσιν τὸ ζῶον ἐκείνη εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων, καὶ βαλῶσι τὰς σφραγίδας αὐτῶν ἐνώπιον τοῦ θρόνου, λέγουσιν·

11 Ἄξιον εἰ Κύριον λαοῦσιν τιμὴν δόξαν καὶ τιμὴν καὶ τιμὴν δυνάμιν· ὅτι σὺ ἐκτίσας τὰ πάντα, καὶ ἀπὸ τοῦ θάλαττονος ἐκτίσας ἐκτίσθησιν.

Κεφ. ε'. 5.

1 Καὶ εἶδον ἐπὶ τὴν δεξιάν τοῦ καθήμενου ἐπὶ τῷ θρόνῳ βιβλίον γραμμῶν ἑσῶθεν καὶ ὅποθεν, καὶ ἑσφραγισμένον σφραγίσιν ἑπτὰ.

2 Καὶ εἶδον ἄγγελον ἰσχυρὸν κηρύσσοντα φωνῇ μεγάλῃ· Τίς ἐστὶν ἄξιον ἀνοῖξαι τὸ βιβλίον, καὶ λύσαι τὰς σφραγίδας αὐτοῦ;

3 Καὶ εἶδον ἡδύνατα ἐν τῷ οὐρανῷ, εἶδον ἐπὶ τῆς γῆς, εἶδον ὑπεκρίτω τῆς γῆς, ἀνοῖξαι τὸ βιβλίον, εἶδον βλέπειν αὐτό.

4 Καὶ ἐγὼ ἔκλαιον πολλά, ὅτι εἶδον ἄξιον ἀνοῖξαι καὶ ἀναγνῶναι τὸ βιβλίον, ἕτε βλέπειν αὐτό.

5 Καὶ

- 5 Καὶ εἶς ἐκ τῶν πρεσβυτέρων λέγει Μὴ
 κλαῖτε· ἰδοὺ εὐέκησεν ὁ λέων ὁ ὢν ἐκ τῆς φυλῆς
 Ἰσθα, ἡ ῥίζα Δαβὶδ, ἀνοίξαι τὸ βιβλίον, καὶ
 λῦσαι ταῖς ἐπιτοφραγίδας αὐτῶ.
- 6 Καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ ἐν μέσῳ τῶν θρόνων καὶ τῶν
 τεσσαρῶν ζώων, ἔεν μέζω τῶν πρεσβυτέρων,
 δρόνιον ἑστηκός ὡς ἐσφαμμένον, ἔχον κέρατα
 ἐπέα, καὶ ὀφθαλμοὺς ἐπέα· οἱ εἰσι πέντε ἐπέα
 τῷ Θεῷ πνεύματός τε ἀπεσταλμένα εἰς πᾶ-
 σαν πλὴν γῆν.
- 7 Καὶ ἦλθε καὶ εἴληφε τὸ βιβλίον ἐκ τῶν δε-
 ξιῶν τῶν καθήμενῶν ἐπὶ τοῦ θρόνου.
- 8 Καὶ ὅτε ἔλαβεν τὸ βιβλίον, πέντε τέσσαρες
 ζῶα καὶ οἱ εὐθυστέσσαρες πρεσβύτεροι ἔπεσον
 εὐώπιον τῷ δρόνι, ἔχοντες ἑκάστῳ κητέρας καὶ
 φιάλας χρυσῆς, γεμέσας θυμιαμάτων,
 αἵ εἰσιν αἱ πνεύματα καὶ τῶν ἁγίων.
- 9 Καὶ ᾄδουσιν ᾠδὴν καινὴν, λέγοντες· Ἄξιός
 εἶ λαβεῖν τὸ βιβλίον, καὶ ἀνοίξαι ταῖς σφρα-
 γίδας αὐτῶ, ὅτι ἐσφάγης, καὶ ἠγάπησας πρὸς
 Θεῷ ἡμᾶς ἐν τῷ αἵματι σου, ἐκ πίστεως φυ-
 λῆς καὶ γλώσσης καὶ λαῶν ἔθνους·
- 10 Καὶ ἐπαίνοσας ἡμᾶς πρὸς Θεῷ ἡμῶν βασι-
 λεῖς καὶ ἱερεῖς· καὶ βασιλοῦσμένον ἐπὶ τῆς γῆς.
- 11 Καὶ εἶδον, ἔεν ἦκαστα φωνῶν ἀγγέλων πολ-
 λαῖν κυκλόθεν τῶν θρόνων καὶ τῶν ζώων ἔεν πρε-
 σβυτέρων· καὶ λαὸς ὁ δρόνιός αὐτῶν μυριά-
 δες μυριάδων, καὶ χιλιάδες χιλιάδων·

- 12 Λέγουσιν Φωνὴ μεγάλη· Ἄξιόν ἐστι τὸ δόξαι
 τὸ ἐσφραγισμένον λαθεῖν τὸ διωξάμεν καὶ
 πωλεῖτον καὶ σοφίαν καὶ ἰσχυρὸν καὶ πνεύμα καὶ δό-
 ξαν καὶ δύλογίαν·
- 13 Καὶ πᾶν κλισμα ὅ ἐστι ἐν ταῖς ἔραισι, καὶ
 ἐν τῇ γῆ, καὶ ὑποκόσμῳ τῆς γῆς, καὶ ἐπὶ τῆς πε-
 λιάσεως αἱ ἐπι, καὶ τὰ ἐν αὐταῖς πάντα, ἤκαστοι
 λέγουσιν· Ταῖς κατηγήμασι ἐπὶ τῶν ἡνίων καὶ τὰ
 δόξαι καὶ δύλογια καὶ ἡ πνεύμα καὶ ἡ δόξα καὶ τὸ
 κράτος οἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων.
- 14 Καὶ τὰ τέσσαρα ζῶα ἔλεγον· Ἀμὲν· καὶ οἱ
 ἐκτισθέντες αἰετοὶ ἐπὶ τῶν ἡνίων ἐπὶ τῶν
 ἐκτισθέντων ζῶων οἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων.

Κεφ. 5. 6.

- 1 Καὶ εἶδον ὅτε ἠνοιξε τὸ δόξαι μίαν ἐκ τῶν
 σφραγίδων, καὶ ἤκαστοι ἐνὸς ἐκ τῶν τεσσάρων
 ζῶων λέγουσιν, ὡς Φωνῆς βροντῆς· Ἔρχε-
 ται καὶ βλέπε.
- 2 Καὶ εἶδον, καὶ ἰδὲ ἵππῳ λευκῷ· καὶ ὁ
 κατήγημα ἐπὶ αὐτῷ, ἔχων τόξον· καὶ ἐδόθη
 αὐτῷ σέφαιρα, καὶ ἐξῆλθε νικῶν, καὶ
 ἵνα νικήσῃ.
- 3 Καὶ ὅτε ἠνοιξε τὴν δευτέραν σφραγίδα,
 ἤκαστοι τῶν δευτέρων ζῶων λέγουσιν· Ἔρχε-
 ται καὶ βλέπε.
- 4 Καὶ ἐξῆλθεν ἄλλῳ ἵππῳ πυρρός· καὶ
 τὰ κατηγήμα ἐπὶ αὐτῷ ἐδόθη αὐτῷ λαθεῖν τὸ
 ἐπιλύσει δὲ τὴν γῆν, καὶ ἵνα ἀλλήλους σφάξω-
 σι·

- σι· καὶ ἰδὼν αὐτὰ μέγαρα μεγάλα.
- 5 Καὶ ὅτε ἤνοιξε τὸ τρίτον σφραγίδα, ἤκουσε τὸ τρίτον ζῶν λέγειν· Ἔρχε καὶ βλέπε. Καὶ εἶδον, καὶ ἰδὼν, ἵππος μέλας, ὃ κατήμενεν ἐπ' αὐτὰ, ἔχων ζυγὸν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ.
- 6 Καὶ ἤκουσε φωνὴν ἐν μέσῳ τῶν τεσσάρων ζῶων λέγουσαν· Κοιμῆσθε σίτες δυνάεις· καὶ τρεῖς χεῖρες κροῖνης δυνάεις· καὶ τὸ ἔλαιον καὶ τὸ οἶνον μὴ ἀδικήσης.
- 7 Καὶ ὅτε ἤνοιξε τὸ σφραγίδα τὴν τέταρτον, ἤκουσε φωνὴν τῶν τεσσάρων ζῶων λέγουσαν· Ἔρχε καὶ βλέπε.
- 8 Καὶ εἶδον, ὃ ἰδὼν ἵππος χλωρὸς, καὶ ὃ κατήμενεν ἐπάνω αὐτοῦ ὄνομα αὐτοῦ ὁ Θάταλος· καὶ ὁ Ἄδης ἀπολαθεῖ μετ' αὐτοῦ· ὃ ἰδὼν αὐτοῖς ἐξέσπασε δόρυ κληῖον ἐπὶ τὸ τέταρτον τῆς γῆς, ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ καὶ ἐν ξηραδίᾳ, ὃ ὑπὸ τῶν θηρίων τῆς γῆς.
- 9 Καὶ ὅτε ἤνοιξε τὸ πέμπτον σφραγίδα, εἶδον ὑποκόπτω τὸν ἵππον καὶ τὰ ψυχρὰ τὰ ἐσφραγισμένα διὰ τὸ λόγον τῶν Θεῶν, καὶ διὰ τὸ μαρτυρεῖν ἡμῶν εἶχον·
- 10 Καὶ ἔκραζον φωνὴν μεγάλην, λέγοντες· Ἔως πάτε ὁ δεσπότης ὁ ἄγιος καὶ ὁ ἀληθινὸς ἔκρανός καὶ ἐκδικεῖς τὸ αἷμα ἡμῶν διὰ τὸν κροῖον ἐπὶ τῆς γῆς·
- 11 Καὶ ἰδὼν αὐτοῖς ἵνα ἀναπαύσονται ἐπὶ χρόνον

μικρὸν, ἕως ἂν πληρώσονται καὶ οἱ σινοδ-
λοι αὐτῶν ἔοι ἀδελφοὶ αὐτῶν, οἱ μέλλον-
τες ἀποκλείνεσθαι ὡς καὶ αὐτοί.

12 Καὶ εἶδον ὅτι ἤνοιξε τὸ σφραγίδα πρῶ-
τον, καὶ ἶδεν σφοδρὸς μέγας ἑλκυσθῆναι, ἔο
ἥλιος ἑλκυσθῆναι μέγας ὡς σάκκος τριχῶν,
καὶ ἡ σελήνη ἑλκυσθῆναι ὡς αἷμα.

13 Καὶ οἱ ἀστέρες τῆς οὐρανοῦ ἐπίσταν εἰς πρῶ-
τον, ὡς συκὴ βάλλει τὰς ὀλιώθους αὐτῆς,
καὶ τὰ μεγάλα ἀνέμους σφοδρῆς.

14 Καὶ οὐρανὸς ἀπεχωρίσθη ὡς βιβλίον ἐι-
λισσόμενον, καὶ πᾶν ὄρος καὶ νῆσος ἐκ τῶν
τόπων αὐτῶν ἐκινήθησαν.

15 Καὶ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, καὶ οἱ μεγιστᾶνες,
καὶ οἱ πλέστοι, καὶ οἱ χαλιάρχαι, ἔο οἱ δυνα-
στεῖ, καὶ πᾶς δούλος καὶ πᾶς ἐλεύθερος ἐκρυ-
ψαν ἑαυτοὺς εἰς τὰ σπήλαια καὶ εἰς τὰς πέ-
τρας τῶν ὄρεων.

16 Καὶ λέγουσι τοῖς ὄρεσι καὶ ταῖς πέτραις·
Πέσειτε ἐφ' ἡμᾶς, καὶ κρύψατε ἡμᾶς ἀπὸ
προσώπου τοῦ καθήμενος ἐπὶ τῆς θρόνου, ἔο ἀπὸ
τῆς ὀργῆς τῆς θρόνου.

17 Ὅτι ἦλθεν ἡ ἡμέρα ἡ μεγάλη τῆς ὀργῆς
αὐτῆς, καὶ πῶς δύναται σταθῆναι;

Κεφ. ζ'. 7.

1 Καὶ μετὰ ταῦτα εἶδον τέσσαρας ἀγγέλους
ἐστῶτας ἐπὶ τῆς τέσσαρας γωνίας τῆς γῆς,
καὶ ἔβησαν τὰς τέσσαρας ἀνέμους τῆς γῆς, ἵνα
μὴ

μη πνέη άνεμοσ επί τ' γης, μήτε επί τ' θαλάσσης, μήτε επί πάν δένδρον.

2 Καί εἶδον άλλον άλλειλον άναβάντα δάπυ άναβλήης ήλίας, έχοντα σφραγίδα Θεσ ζών-
τθ· κη έκραξε φωνή μεγάλη τοῖς τέσσαρ-
σιν άλλείοις οἷς εἰδόνη αὐτοῖς άδικήσαι τιω'
γλω κη τ' θαλάσσαν,

3 Λέγων· Μη άδικήσητε τιω γλω, μήτε τ' θαλάσσαν, μήτε τά δένδρα, άλλεις εσφρα-
γισμῶν τες δύλες τθ Θεσ ήμαν επί τ' με-
τώπων αὐτών.

4 Καί ήκιστα τ' δριθμῶν τ' εσφραγισμέ-
νων· ρυδ' χιλιάδες εσφραγισμῶν εκ πάτης
φυλῆς ήων Ισραήλ.

5 Εκ φυλῆς Ιούδα, ιβ' χιλιάδες εσφρα-
γισμῶν· εκ φυλῆς Ραββών, ιβ' χιλιάδες
εσφραγισμῶν· εκ φυλῆς Γαδ, ιβ' χιλιά-
δες εσφραγισμῶν·

6 Εκ φυλῆς Ασήρ, ιβ' χιλιάδες εσφρα-
γισμῶν· εκ φυλῆς Νεφταλείμ, ιβ' χιλιά-
δες εσφραγισμῶν· εκ φυλῆς Μανασή,
ιβ' χιλιάδες εσφραγισμῶν·

7 Εκ φυλῆς Συμειών, ιβ' χιλιάδες εσφρα-
γισμῶν· εκ φυλῆς Λούι, ιβ' χιλιάδες
εσφραγισμῶν· εκ φυλῆς Ισσαχαρ, ιβ' χι-
λιάδες εσφραγισμῶν·

8 Εκ φυλῆς Ζαβουλών, ιβ' χιλιάδες εσφρα-
γισμῶν· εκ φυλῆς Ιασηρ, ιβ' χιλιάδες

Mm 3

εσφρα-

ἑσφραγισμένοι ἐκ φυλῆς Βενιαμίν, ἑβ' χιλιάδες ἑσφραγισμένοι.

9 Μετὰ ταῦτα εἶδον καὶ ἰδὲ ὄχλον πολὺν, ὃν ἠριθμῆσαν αὐτὸν ἑδείς ἠδυνάτω, ἐκ παντὸς ἔθνους ἔκ φυλῶν καὶ λαῶν καὶ γλωσσῶν, ἑσώτες ἐνώπιον τοῦ θρόνου καὶ ἐνώπιον τοῦ θρόνου, ὡσεὶ βιβληθροὶ σοφίας λούκας· καὶ φέροντες ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν·

10 Καὶ κράζοντες φωνῇ μεγάλῃ, λέγοντες· Ἡ σωτηρία τῶ Θεοῦ ἡμῶν τῶ καθήμενῷ ἐπὶ τοῦ θρόνου, καὶ τῶ θρόνου.

11 Καὶ πάντες οἱ ἄγγελοι ἐστήκεισαν κύκλῳ τοῦ θρόνου ἔκ τῶ πρῶτον καὶ τῶ δευτέρῳ καὶ τῶ τρίτῳ καὶ τῶ τέταρτῳ καὶ ἔπεσον ἐνώπιον τοῦ θρόνου ἐπὶ προσώπον αὐτῶν, καὶ ὡσεὶ κύνησαν τῶ Θεῷ,

12 Λέγοντες· Ἀμὴν· ἡ δύλογία καὶ ἡ δόξα καὶ ἡ σοφία ἔκ ἡ δὺχαριστία καὶ ἡ πικρὴ καὶ ἡ δύναμις καὶ ἡ ἰσχὺς τῶ Θεοῦ ἡμῶν εἰς τὸς αἰῶνας τῶ αἰῶνων. Ἀμὴν.

13 Καὶ ἀπεκρίθη εἰς ἐκ τῶ πρῶτον καὶ δευτέρῳ, λέγων μοι· Οὗτοι οἱ ὡσεὶ βιβληθροὶ σοφίας εἰς λούκας, πίνετε ἐσθί, καὶ πόθεν ἦλθον·

14 Καὶ εἶρηκα αὐτῶ· Κύριε, σὺ εἶδας. Καὶ εἶπέ μοι· Οὗτοι εἰσιν οἱ ἐρχόμενοι ἐκ τῶ θλίψεως τῶ μεγάλης· καὶ ἔπαυσαν εἰς σοφίας αὐτῶν, καὶ ἔλυσαν σοφίας αὐτῶν ἐν τῶ

15 αἵματι τοῦ θρόνου.

Διὰ τῶτό εἰσιν ἐνώπιον τοῦ θρόνου τοῦ Θεοῦ,
καὶ

καὶ λατρεύουσιν αὐτῷ ἡμέρας ἔνυκτες ἐν
 τῶναι αὐτῷ· καὶ ὁ κηθήριμⓄ ἐπὶ τῷ θρόνῳ,
 σκηνώσῃ ἐπ' αὐτῆς.

16 Οὐ πηνάσουσιν ἐπὶ, ἐδὲ διψήσουσιν ἐπὶ,
 ἐδὲ μὴ πέσῃ ἐπ' αὐτῆς ὁ ἥλιος, ἐδὲ πᾶν
 καῶμα·

17 Ὅτι τὸ δρόνιον τὸ ἀνά μέσον τῷ θρόνῳ παι-
 μανῆι αὐτῆς, καὶ ὁδηγήσῃ αὐτῆς ἐπὶ ζώσας
 πηγὰς ὑδάτων· καὶ ἐξαλείψῃ ὁ Θεὸς πᾶν
 δάκρυον ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν.

Κεφ. η'. 8.

1 **Κ**αὶ ὅτε ἠνοιξε τὴ σφραγίδα τὴ ἐβδόμην,
 ἐγένετο σιγή ἐν τῷ ἔρειμῳ ὡς ἡμῶν ἔρον.

2 Καὶ εἶδον τέσσερα ἄγγελοι, οἱ ἐνώπιον
 τοῦ Θεοῦ ἐσήκασιν· καὶ ἐδόθησαν αὐτοῖς ἐπὶ
 σάλπικτες.

3 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἦλθε, καὶ ἐστάθη ἐπὶ
 τὸ θυσιαστήριον, ἔχων λιβανωτὴν χρυσεῖν· καὶ
 ἐδόθη αὐτῷ θυμιάματα πολλὰ, ἵνα δώσῃ
 ταῖς πνευματικαῖς τῶν ἁγίων πάντων, ἐπὶ τὸ
 θυσιαστήριον τὸ χρυσεῖν τὸ ἐνώπιον τοῦ θρόνου.

4 Καὶ ἀνέβη ὁ καπνὸς τῶν θυμιαμάτων ταῖς
 πνευματικαῖς τῶν ἁγίων, ἐκ χηρῶν τοῦ ἄγγελου,
 ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

5 Καὶ εἴληφεν ὁ ἄγγελος τὴν λιβανωτὴν, καὶ
 ἐγένευσεν αὐτὸν ἐκ τοῦ πυρὸς τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ
 ἐβαλετ εἰς τὴν γῆν· καὶ ἐγένοντο φωναὶ καὶ
 βρονταὶ ἔσφραπι καὶ σεισμός.

M m 4

6 Καὶ

- 6 Καὶ οἱ ἐπ' αὐτοὺς ἄγγελοι ἔχουσιν ζεῖ ἐπ' αὐτοὺς σιλιπιδνας, ἵνα ἰσχυροῦν αὐτοὺς ἵνα σιλιπιδνωσι.
- 7 Καὶ ὁ πρῶτος ἄγγελος ἐσάλπισε, ἔθηκε χάλαζα καὶ πῦρ μεμιγμένα αἵματι, καὶ ἔβλήθη εἰς τὸ γῆν καὶ τὸ τρίτον τῶν δένδρων κατεκίθη, καὶ πῆς χέρση χλωρὸς κατεκίθη.
- 8 Καὶ ὁ δεύτερος ἄγγελος ἐσάλπισε, καὶ ὡς ὄρη μέγα πηρὶ κομόρημον ἔβλήθη εἰς τὸ θαλάσσαν, καὶ ἐχύθη τὸ τρίτον τῶν θαλάσσης, αἵματι.
- 9 Καὶ ἀπέθανε τὸ τρίτον τῶν κτισμάτων τῶν ἐν τῇ θαλάσῃ, τὰ ἔχοντα ψυχὰς καὶ τὸ τρίτον τῶν πλοίων διεφθάρη.
- 10 Καὶ ὁ τρίτος ἄγγελος ἐσάλπισε, ἔπεσεν ἐκ τοῦ θρανῶ ἀστὴρ μέγας κομόρημος ὡς λαμπρὸς, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ τὸ τρίτον τῶν ποταμῶν, καὶ ἐπὶ ζεῖς πηγαῖς ὑδάτων.
- 11 Καὶ τὸ ὄνομα τοῦ ἀστῆρος λέγεται Ἀψινθος, καὶ γίνεται τὸ τρίτον τῶν ὑδάτων εἰς ἄψινθον, καὶ πολλοὶ ἀνθρώπων ἀπέθανον ἐκ τῶν ὑδάτων, ὅτι ἐπικράνησαν.
- 12 Καὶ ὁ τέταρτος ἄγγελος ἐσάλπισε, καὶ ἐπλήγη τὸ τρίτον τῶν ἡλίων, καὶ τὸ τρίτον τῶν σελήνης καὶ τὸ τρίτον τῶν ἀστέρων ἵνα σκοιωθῆ τὸ τρίτον αὐτῶν, καὶ ἡ ἡμέρα μὴ φαίνῃ τὸ τρίτον αὐτῆς, καὶ ἡ νύξ ὁμοίως.
- 13 Καὶ εἶδον, καὶ ἤκουσα ἑνὸς ἀγγέλου πτωχῶν ἐν μεσοκρανήματι, λέγοντος Φωνὴ
μεγα-

μεγάλη· Οὐαὶ ἕαυ ἕαυ τοῖς καρδικῶσιν ἐπὶ
 τῆ γῆς, ἐκ τῶ λοιπῶν φωνῶν τῆ σάλπιγγος τῆ
 σφειῶν ἀγγέλων τῆ μελλόντων σαλπίζειν.

Κεφ. 9. 9.

- 1 **Κ**αὶ ὁ πέμπτος ἀγγελος ἐσάλπισε, καὶ
 εἶδον ἄστρα ἐκ τοῦ θρανῶ πιπιωκῶται εἰς
 πλὴν γλῶ, καὶ ἐδόθη αὐτῷ ἡ κλεῖς τοῦ φρέατος
 τοῦ ἀβύσσου.
- 2 Καὶ ἤνοιξε τὸ φρέαρ τοῦ ἀβύσσου· καὶ ἀν-
 ἔβη καπνὸς ἐκ τοῦ φρέατος ὡς καπνὸς καμί-
 νου μεγάλης· καὶ ἐσκοτίσθη ὁ ἥλιος· καὶ ὁ μῆς
 ἐκ τοῦ καπνῶ τοῦ φρέατος.
- 3 Καὶ ἐκ τοῦ καπνῶ ἐξῆλθον ἀκροίδες εἰς τὴν
 γλῶ, καὶ ἐδόθη αὐταῖς ἐξουσία ὡς ἔχουσι ἐξ-
 ουσίαν οἱ σκορπίοι τῆ γῆς.
- 4 Καὶ ἐβλήθη αὐταῖς ἵνα μὴ ἀδικήσιν· καὶ τὸ
 ῥόζον τῆ γῆς, καὶ πᾶν χλωρὸν, καὶ πᾶν δέν-
 δρον· εἰ μὴ τὰς ἀνθρώπους μόνους οἵπνες
 ὅσα ἔχουσι πλὴν σφραγίδα τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τῶν
 μετώπων αὐτῶν.
- 5 Καὶ ἐδόθη αὐταῖς ἵνα μὴ ἀποκλείωσιν
 αὐτὰς, ἀλλ' ἵνα βασανισθῶσι μῶνας πέντε·
 καὶ ὁ βασανισμὸς αὐτῶν ὡς βασανισμὸς
 σκορπίου, ὅταν πύση ἀνθρώπων.
- 6 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ζητήσονται
 οἱ ἀνθρώποι τὸ θάνατον, καὶ ἔχουσι οὐρανὸν
 αὐτῶν· καὶ ἐπιθυμήσονται ἀποθανεῖν, καὶ φύ-
 ξεται ὁ θάνατος ἀπ' αὐτῶν.

M m 5 7 Καὶ

- 7 Καὶ τὰ ὄμοιάμαζα τῶν ἀκρίδων ὄμοια ἵπποις ἡτοιμασμένοις εἰς πόλεμον· καὶ ἐπὶ τοῖς κεφαλῶσι αὐτῶν ὡς σέφανοι ὄμοιοι χρυσοῖ, καὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν ὡς πρόσωπα ἀνθρώπων.
- 8 Καὶ εἶχαν τρίχας ὡς τρίχας γυναικῶν, καὶ οἱ ὀδόντες αὐτῶν ὡς λέοντων ἦσαν.
- 9 Καὶ εἶχαν θώρακας ὡς θώρακας σιδηρῆς· ἐν ἡ φωνῇ τῶν περιούγων αὐτῶν ὡς φωνὴ ἄρματων, ἵππων πολλῶν τρεχόντων εἰς πόλεμον.
- 10 Καὶ ἔχουσιν ἕρως ὄμοιας σκορπίοις, καὶ κέντρα ὡς ἐν τοῖς ἕρως αὐτῶν· καὶ ἡ ἐξουσία αὐτῶν ἀδικῆσαι τὰς ἀνθρώπους μὴ ὡς πίνε.
- 11 Καὶ ἔχουσιν ἐφ' αὐτῶν βασιλέα τὸν ἄγγελον τῆς ἀδύσεως· ὄνομα αὐτοῦ Ἐβραΐτι Ἀβαδδὼν, καὶ ἐν τῇ Ἑλληνικῇ ὄνομα ἔχει Ἀπολλύων.
- 12 Ἡ ἕα ἡ μία ἀπῆλθεν, ἰδὲ ἔρχονται ἐπὶ δύο ἕα μὲν ταῦτα.
- 13 Καὶ ὁ ἐκ τῶν ἀγγέλων ἐσάλπισε, καὶ ἔκασσε φωνὴν ῥίαν ἐν τῶν πικρῶν κερμάτων τῶν θυσιαστικῶν τῶν χρυσοῦ τῶν σιδήρων τῶν θείων,
- 14 Λέγουσαν τῶν ἑκτῶ ἀγγέλων ὅς εἶχε τὴν σαλπῆρα· Λύσον τὰς τέσσαρας ἀγγέλους τὰς δεξιὰς ἐπὶ τῶν ποταμῶν τῶν μεγάλων Ἐυφράτη.
- 15 Καὶ ἐλύθησαν οἱ τέσσαρες ἀγγελοὶ οἱ ἡτοιμασμένοι εἰς τὴν ἄρην καὶ ἡμέραν καὶ μὴ ὡς καὶ

καὶ ἐναιωτὸν, ἵνα δὲσπικλείωσι τὸ τρίτον τῶν ἀνθρώπων.

16 Καὶ ὁ δριμυτὸς φρασίματων τῶν ἵππων, δύο μυριάδες μυριάδων· καὶ ἤκαστος τῶν δριμυτῶν αὐτῶν.

17 Καὶ ἔτι εἶδον τὰς ἵππους ἐν τῇ ὄρασι καὶ τὰς κρημνίνας ἐπ' αὐτῶν, ἔχοντες θώρακας πυρίνας καὶ ὑακινθίνους ἔθωδες· καὶ αἰ κεφαλὰς τῶν ἵππων αἰς κεφαλὰς λεόντων, καὶ ἐκ τῶν σωματῶν αὐτῶν ἐκπορεύεται πῦρ καὶ καπνὸς ἔθειον.

18 Ὑπὸ τῶν τριῶν τέτων ἀπεκράνθησαν τὸ τρίτον τῶν ἀνθρώπων, ἐκ τῶν πυρὸς καὶ ἐκ τῶν καπνῶν ἔκ τῶν θείων τῶν ἐκπορευομένων ἐκ τῶν σωματῶν αὐτῶν.

19 Αἱ γὰρ ἐξέστια αὐτῶν ἐν ταῖς σωματικαῖς αὐτῶν εἰσιν· αἱ γὰρ ἐρεῖα αὐτῶν ὀμνίαι ὄφεισιν, ἔχουσι κεφαλὰς· ἔν αὐταῖς ἀδικῶσι.

20 Καὶ οἱ λοιποὶ τῶν ἀνθρώπων οἱ ὅσοι ἀπεκράνθησαν ἐν ταῖς πλῆγαις ταύταις, ἔτε μελενόνησαν ἐκ τῶν ἔργων τῶν χειρῶν αὐτῶν, ἵνα μὴ παροσκυθήσονται τὰ δαιμόνια, καὶ εἰδῶλα τὰ χρυσᾶ καὶ τὰ ἀργυρᾶ καὶ τὰ χαλκᾶ ἔτι λίθινα καὶ τὰ ξύλινα, ἃ ἔτε βλέπει δυνάμει, ἔτε ἀκρίν, ἔτε περὶ πάλειν.

21 Καὶ ἔτε μελενόνησαν ἐκ τῶν φόνων αὐτῶν, ἔτε ἐκ τῶν φαρμακῶν αὐτῶν, ἔτε ἐκ τῶν πορνείας αὐτῶν, ἔτε ἐκ τῶν κλεμμάτων αὐτῶν.

Κεφ.

Κεφ. ι'. 10.

- 1 **Κ**αὶ εἶδον ἄλλον ἄγγελον ἰσχυρὸν καθ' ἑαυ-
τοῦ ἐν τῷ ἔργῳ, ἀπειροδμητὸν νεφέ-
λαι· καὶ ἦεν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς καὶ τὸ προσ-
ωπον αὐτοῦ ὡς ὁ ἥλιος, καὶ αἱ πόδες αὐτοῦ
ὡς σῦλοι πυρός.
- 2 Καὶ εἶχεν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ βιβλαρί-
διον ἀνεργητὸν· καὶ ἔθηκε τὸ πόδα αὐτοῦ τὸ
δεξιὸν ἐπὶ τὴν θάλασσαν, τὸ ἄριστερον ἐπὶ
τὴν γῆν.
- 3 Καὶ ἔκραξε φωνῇ μεγάλῃ ὡς περὶ λίαν
μυθῶται· καὶ ὅτε ἔκραξεν, ἐλάλησαν αἱ
ἐπιτὰ βρονταὶ καὶ ἑαυτῶν φωνάς.
- 4 Καὶ ὅτε ἐλάλησαν αἱ ἐπιτὰ βρονταὶ τὰς
φωνὰς ἑαυτῶν, ἔμελλον γράφειν καὶ ἤκουσα
φωνῆν ἐν τῷ ἔργῳ λέγουσάν μοι· Σφρα-
γιστοὶ αἱ ἐλάλησαν αἱ ἐπιτὰ βρονταὶ, καὶ μὴ
ταῦτα γράψης.
- 5 Καὶ ὁ ἄγγελος ὃν εἶδον ἐστῶται ἐπὶ τὴν θά-
λασσαν καὶ ἐπὶ τῆς γῆς, ἦρα τὴν χειρὰ αὐτοῦ
εἰς τὸ κρηθῆναι,
- 6 Καὶ ἄμυσεν ἐν ταῖς ζώνῃαις εἰς τὰς αἰῶνας τῶν
αἰῶνων, ὅς ἐκλυσε τὸ ἔργον ἐν ταῖς ἐν αὐτῷ, καὶ
τὴν γῆν καὶ τὰ ἐν αὐτῇ, καὶ τὴν θάλασσαν καὶ
τὰ ἐν αὐτῇ, ὅτι χεῖρ ἡ ἐστὶν ἐπὶ
- 7 Ἀλλὰ ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς φωνῆς τῆς ἐβ-
δόμου ἀγγέλου, ὅταν μέλλῃ συναρπάζειν, καὶ
πλειοῦ τὸ μυθῆλον τῆς θείας, ὡς εὐηγά-
λισε

λιση τοῖς ἑαυτῶν δόλοισι τοῖς ἀποφύτοις.

8 Καὶ ἡ Φωνὴ ἡ ἥκουσα ἐν τῷ ἔργῳ, πάλιν λαλῶσα μετ' ἐμοῦ, καὶ λέγουσα· Ἰ παραλάβε τὸ βιβλαρίδιον τὸ ἠνεῳγμένον ἐν τῇ χειρὶ ἀγγέλου τῷ ἐστῶτος ἐπὶ τῆς θαλάσσης καὶ ἐπὶ τῆς γῆς.

9 Καὶ ἀπῆλθον πρὸς τὸ ἀγγέλον, λέγων αὐτῷ· Δός μοι τὸ βιβλαρίδιον. Καὶ λέγει μοι· Δάβε καὶ κατέφαγε αὐτό· καὶ πικρανεῖ ἡ στήθος σου, ἀλλ' ἐν τῷ στόματί σου ἔσται γλυκὺ ὡς μέλι.

10 Καὶ ἔλαβον τὸ βιβλαρίδιον ἐκ τῆς χειρὸς τοῦ ἀγγέλου, καὶ κατέφαγον αὐτό· καὶ ἡ ζωὴ ἐν τῷ στόματί μου ὡς μέλι γλυκὺ· καὶ ὅτε ἔφαγον αὐτό, ἐπικράνθη ἡ στήθος μου.

11 Καὶ λέγει μοι· Δεῖ σε πάλιν ἀποφύτῃσαι ἐπὶ λαοῖς καὶ ἔθνεσι ἐν γλώσσαις καὶ βασιλεύσει πολλοῖς.

Κεφ. ια'. II.

1 Καὶ ἰδὼν μοι κράματος ὄμιλου· ῥάβδον καὶ ὁ ἀγγέλος εἰσήκεν, λέγων· Ἐξάρα, ἔμετρησον τὸ ναὸν τοῦ Θεοῦ, καὶ τὸ θυσιαστήριον καὶ τὰς ἀποσκευὰς ἐν αὐτῷ.

2 Καὶ τὸ αὐτῷ πῶς ἔξωθεν τῷ ναῷ ἔκβαλε ἔξω, καὶ μὴ αὐτῷ μετρήσῃς, ὅτι ἰδὼν τοῖς ἔθνεσι· καὶ τὸ πόλιν πῶς ἀγίαν πατήσῃς μῆνας τεσσαράκοντα δύο.

3 Καὶ δώσω τοῖς θυσιῶν μοῖρα ἑκάστην, καὶ ἀποφύτῃσαι·

Φησὺν τὰς ἡμέρας χιλίας διακοσίας ἐξ-
ήκοντα, πέντε βεβλημένοι σαύκκας.

- 4 Οὗτοί ἐσιν αἱ δύο ἐλαῖαι, καὶ δύο λυ-
χία αἱ ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ τῆς γῆς ἐστῶσαι.
- 5 Καὶ εἴ τις αὐτὰς θέλη ἀδικῆσαι, πῦρ ἐκ-
πορεύεται ἐκ τοῦ στόματός αὐτῶν, καὶ κα-
εαθί τὰς ἐχθρὰς αὐτῶν· καὶ εἴ τις αὐτὰς θέλη
ἀδικῆσαι, ἔτι δεῖ αὐτὸν ἀποκλιθεῖν.
- 6 Οὗτοι ἔχουσι ἐξουσίαν κλείσαι τὸ ἔρπον, ἵνα
μὴ βρέχη ὑστὸς ἐν ἡμέραις αὐτῶν τὸ πνεῦ-
μα τῆς φιλίας· καὶ ἐξουσίαν ἔχουσι ἐπὶ τὸ ὕδαιον,
σπρίψαν αὐτὰ εἰς αἷμα, καὶ παύξαι τὸ γλυ-
κύνη πικρῆν, ὅσακις ἐὰν θελήσωσι.
- 7 Καὶ ὅταν τελέσωσι τὸ μαρτυρεῖν αὐ-
τῶν, τὸ θηροῖν τὸ ἀναδοῦνον ἐκ τῆς ἀβύσσου
ποιήσεται πόλεμον μετ' αὐτῶν, καὶ νικήσεται αὐ-
τὰς, καὶ ἀποκτενεῖ αὐτὰς.
- 8 Καὶ τὰ πτόμαθα αὐτῶν ἐπὶ τὴν πόλιν
πόλιν τὴν μεγάλην, ἣτις καλεῖται πύσμα-
πκῶς Σόδομα καὶ Αἴγυπτος, ἔπει καὶ ὁ Κύ-
ριος ἡμῶν ἐσαυρώσει.
- 9 Καὶ βλέψουσιν ἐκ τῶν λαῶν καὶ φυλῶν καὶ
γλωσσῶν ἐθνῶν τὰ πτόμαθα αὐτῶν ἡμέ-
ρας τρεῖς καὶ ἡμισυ, καὶ τὰ πτόμαθα αὐτῶν
ὅσα ἀφίσσονται τεθῆναι εἰς μνήματα.
- 10 Καὶ οἱ καθ' ἑαυτοὺς ἐπὶ τῆς γῆς χαρῶσιν ἐπ'
αὐτοῖς, καὶ οὐ φραγήσονται· καὶ δώρα πέμ-
ψουσιν ἀλλήλοις, ὅτι ἔτι οἱ δύο πνεύματα
ἔβου-

- ἔβασάνισαν τὰς καρτικῆνας ἐπὶ τῆς γῆς.
- 11 Καὶ μὲν τρεῖς ἡμέρας ἔῃμισυ, πνεύμα ζῶης ἐκ τοῦ Θεοῦ εἰσηλθεν ἐπ' αὐτάς· καὶ ἔστησαν ἐπὶ τὰς πόδας αὐτῶν, καὶ φόβος μέγας ἔπεσεν ἐπὶ τὰς θερῶνας αὐτάς.
- 12 Καὶ ἤκουσαν φωνὴν μεγάλην ἐκ τοῦ ἔρανός, λέγασθαι αὐτοῖς· Ἀνάστητε ἄθε. Καὶ ἀνέστησαν εἰς τὸ ἔρανόν ἐν τῇ νεφέλῃ· καὶ ἐθεώρησαν αὐτάς οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν.
- 13 Καὶ ἐνέκεινεν τῇ ὥρῃ ἐχθρότης σφισμὸς μέγας, καὶ τὸ δέκατον τῆ πόλεως ἔπεσε, καὶ ἀπεκρίθησαν ἐν τῷ σφισμῷ ἀνόμοιτοι ἀνθρώπων χιλιάδες ἐπί τῷ· καὶ οἱ λοιποὶ ἐμφοδοὶ ἐγένοντο, καὶ ἔδωκαν δόξαν τῷ Θεῷ τῷ ἔρανός.
- 14 Ἡ ἕκτῃ ἡ δυνάτερος ἀπῆλθεν, ἰδὲ ἡ ἕκτῃ ἡ τρίτῃ ἐρχεται ταχέ.
- 15 Καὶ ὁ ἑβδόμος ἀγγελὸς ἐσάλπισε, καὶ ἐχθρότης φωνὴ μεγάλη ἐν τῷ ἔρανός, λέγουσιν· Ἐχθρότης αἰ βασιλείας τοῦ κόσμου, τοῦ Κυρίου ἡμῶν, καὶ τοῦ Χριστοῦ αὐτοῦ, καὶ βασιλοσύνη εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰῶνων.
- 16 Καὶ οἱ εἴκοσι καὶ τέσσαρες πρεσβύτεροι οἱ ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ καθήμενοι ἐπὶ τὰς θρόνους αὐτῶν, ἔπεσαν ἐπὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν τῷ Θεῷ,
- 17 Λέγοντες· Εὐχαριστοῦμεν Κύριε ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὁ ὢν, καὶ ὁ ἦν, καὶ ὁ ἐρχόμενος·

μνησθε· ὅτι εἴληφας τὸ δυνάμειν σου τὴν μεγάλην, καὶ ἐδοκίμασάς·

18 Καὶ τὰ ἔθνη ἠρχίσθησαν, καὶ ἤλθεν ἡ ἄρ-
γη σου· ἐὼς ὁ καιρὸς τῶν νεκρῶν, κερθῶμαι, καὶ
δοῦμαι τὸ μισθόν τοῖς δούλοις σου τοῖς περὶ φη-
ταις, καὶ τοῖς ἁγίοις ἐπὶ τοῖς φοβεμένοις τὸ ὄνο-
μά σου, τοῖς μικροῖς καὶ τοῖς μεγάλοις· καὶ
ἀλαφθείρα τὰς ἀλαφθείροντας τὴν γῆν.

19 Καὶ ἠνοίγη ὁ ναὸς τοῦ Θεοῦ ἐν τῷ ἔρειπῳ, ἐ-
ώρα ἡ κίβωτος τῆς ἀληθείας αὐτῆς ἐν τῷ
ταβυ· καὶ ἐξῆλθον ἐξ αὐτῆς καὶ φοινῆς ἐ-
βρονταὶ καὶ σέσμηξ ἐξάλαισα μεγάλη.

Κεφ. 13. 12.

1 Καὶ σημεῖον μέγα ὡρα ἐν τῷ ἔρειπῳ· γυ-
νὴ περιεβόλη μὴ τὸ ἥλιον, καὶ ἡ σελή-
νη ὑποκατά τῶν ποδῶν αὐτῆς, καὶ ἐπὶ τῆ κε-
φαλῆς αὐτῆς στέφανον ἀστέρων δώδεκα·

2 Καὶ ἐν καρδίᾳ ἔχουσα, κροτάφῳ ὠδίνουσα,
καὶ βασανίζουμένη τεκεῖν.

3 Καὶ ὡρα ἄλλο σημεῖον ἐν τῷ ἔρειπῳ, καὶ
ἰδὲ δράκων μέγας πυρρὸς, ἔχων κεφαλὰς
ἐπτὰ καὶ κέρατα δέκα· καὶ ἐπὶ τὰς κεφαλὰς
αὐτῆς ἀλάθηματα ἐπτὰ.

4 Καὶ ἡ ἄρρη αὐτῆς σύρξ τὸ τρίτον τῶν ἀστέ-
ρων τοῦ ἔρειπῳ, καὶ ἔβαλεν αὐτὰς εἰς τὴν γῆν·
καὶ ὁ δράκων ἔσηκεν ἐνώπιον τῆς γυναικὸς
τῆς μελλούσης τεκεῖν, ἵνα ὅταν τέκῃ, τὸ τέ-
κνον αὐτῆς καταφάγῃ.

5 Καὶ

5 Καὶ ἔτεκεν υἱὸν ἀρρῆνα, ὃς μέλλει ποιμαίνε-
ν ἐν πάντα τὰ ἔθνη ἐν ράβδῳ σιδηρᾷ· καὶ ἔρ-
πάσθη τὸ τέκνον αὐτῆς ὡς τὸ Θεὸν καὶ τὸ
Θρόνον αὐτῆς.

6 Καὶ ἡ γυνὴ ἔφυγε εἰς τινὲν ἔρημον, ὅπου
ἔχει τόποι ἠτοιμασμένον ἀπὸ τοῦ Θεοῦ, ἵνα
εἰσὶ περὶ φασιν αὐτῇ ἡμέρας χιλίας Δις-
κησίας ἐξήκοντα.

7 Καὶ ἐχούσθ πόλεμοι ἐν τῷ ἔρεινῳ· ὁ
Μιχαὴλ καὶ οἱ ἄγγελοι αὐτῶν ἐπολεμήσαν
καὶ τὸ δράκοντα, ἔο δὲ δράκων ἐπολέμησε,
καὶ οἱ ἄγγελοι αὐτῶν·

8 Καὶ ἔσκη ἰχυται, ἔτε τὸ πᾶν ἀύρη αὐ-
τῶν ἐπὶ ἐν τῷ ἔρεινῳ.

9 Καὶ ἐβλήθη ὁ δράκων ὁ μέγας, ὁ ὄφις ὁ
δράκων, ὁ καλέωμεν Διάβολον, καὶ ὁ
σατανᾶς, ὁ πλανῶν τινὲν οἰκιστῶν ὄλων,
ἐβλήθη εἰς τὴν γῆν· ἔο οἱ ἄγγελοι αὐτῶν μετ'
αὐτῶν ἐβλήθησαν.

10 Καὶ ἔκυσσε Φωνὴν μεγάλην λέγουσαν
ἐν τῷ ἔρεινῳ· Ἄρα ἐχούσθ ἡ σωτηρία καὶ
ἡ δυνάμις καὶ ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ ἡμῶν
καὶ ἡ ἐξουσία τοῦ Χριστοῦ αὐτῶν· ὅτι κατέσθη-
θη ὁ κατήρα τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν, ὁ κατ-
ηρησῶν αὐτῶν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἡμέρας
εἰς ἑκατὸς.

11 Καὶ αὐτοὶ οὐκ ἔκυσσαν αὐτὴν διὰ τὸ αἶμα
τοῦ δράκοντος, καὶ διὰ τὸ λόγον τῆς μαρτυρίας
αὐτῶν·

αὐτῶν· καὶ ὅσα ἠγάπησας ἔψυχλῶ αὐτῶν
ἄχρι θανάτου.

- 12 Διὰ τῆτο βύφραίνεσθε οἱ ἔρανοὶ καὶ οἱ ἐν
αὐτοῖς σκλῶντες· Οὐαὶ τοῖς καθοικῆσι τῆν
γῆν καὶ τῆ θάλασσαν, ὅτι κατέβη ὁ Διάδο-
λθῶ πρὸς ὑμᾶς ἔχων θυμὸν μέγαν, εἰδὼς
ὅτι ὀλίγον ἡμερῶν ἔσθ.
- 13 Καὶ ὅτε εἶδεν ὁ δράκων ὅτι ἐβλήθη εἰς τῆ
γῆν, ἐδίωξε τῆ γυναῖκα ἣτις ἔτεκε τῆ ἄρρενα.
- 14 Καὶ ἐδόθησεν τῆ γυναικὶ δύο πτέρυγες
ἕνα ἑκάστη μεγάλη, ἵνα πέτηται εἰς τῆ ἔρημον
εἰς τῆ τόπον αὐτῆς, ὅπου τρέφεται ἐκεῖ ἡμερῶν
ἕκαστος, καὶ ἡμισυ ἡμερῶν, ἀπὸ πρῶτον
ἕξ ὄφρα.
- 15 Καὶ ἔβαλεν ὁ ὄφεις ὀπίσω τῆ γυναικῆς ἐκ
ἕξ σῶμα ἕνα αὐτῆς ὕδωρ ὡς ποταμὸν· ἵνα
ταύτην ποταμοφόρηθον ποιήσῃ.
- 16 Καὶ ἐβοήθησεν ἡ γῆ τῆ γυναικὶ, καὶ
ἠνοιξεν ἡ γῆ τὸ σῶμα αὐτῆς, καὶ κατέπεσε τῆ
ποταμὸν ὃν ἔβαλεν ὁ δράκων ἐκ ἕξ σῶμα-
τῆ αὐτῆς.
- 17 Καὶ ὠργίσθη ὁ δράκων ἐπὶ τῆ γυναικὶ,
καὶ ἀπῆλθε ποιῆσαι πόλεμον μετῆ τῆ λοιπῶν
ἕξ σπέρματῆ αὐτῆς, τῆ τερῶντων τῆς ἐντο-
λάς ἕξ Θεῶ, καὶ ἐχόντων τῆ μαρτυρίαν ἕξ Ἰη-
σοῦ Χριστοῦ.
- 18 Καὶ ἐστάθην ἐπὶ τῆ ἄμμου τῆ θαλάσσης.

Κιφ.

Κεφ. ιγ'. 13.

- 1 Καὶ εἶδεν ἐκ τῆς θαλάσσης θηρίον ἀναβαῖνον, ἔχον κεφαλὰς ἐπὶ τῆς κεφαλῆς δέκα· καὶ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτῆς δέκα ἀσπίδες, καὶ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτῆς ὄνομα βλασφημίας.
- 2 Καὶ τὸ θηρίον ὃ εἶδον ὡς ὄμιον παρδαλὴν, καὶ οἱ πόδες αὐτῆς ὡς ἀρκίως, καὶ τὸ σῶμα αὐτῆς ὡς σῶμα λέοντος, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ὄδρακον τῆς δυνάμει αὐτῆς, ἔτι θρόνον αὐτῆς, καὶ ἐξουσίαν μεγάλην.
- 3 Καὶ εἶδον μίαν τῶν κεφαλῶν αὐτῆς ὡς ἐσφαγμένην εἰς θάνατον· καὶ ἡ πληγὴ τῆς θανάτου αὐτῆς ἔφερον ἑσθίη, ἔτι ἐπαύματι ὅλη ἡ γῆ ὀπίσω τῆς θηρίας.
- 4 Καὶ προσεκύνησαν τῷ δράκοντι ὃς ἔδωκεν ἐξουσίαν τῷ θηρίῳ, καὶ προσεκύνησαν τῷ θηρίῳ, λέγοντες· Τίς ὄμιον τῷ θηρίῳ; πῶς δυνάσκει πολεμῆσαι μετ' αὐτῆς;
- 5 Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ σῶμα λαλῶν μεγάλη καὶ βλασφημίας, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ἐξουσίαν πολεμῶν ποιῆσαι μύσας πικρὰς καὶ πόνησας.
- 6 Καὶ ἤνοιξε τὸ σῶμα αὐτῆς εἰς βλασφημίαν πρὸς τὸ θεῖον, βλασφημῶσα τὸ ὄνομα αὐτῆς, καὶ τὸ σκῆνωμα αὐτῆς, ἔτις ἐν τῷ ἔρειπῳ σκηνῶνται.
- 7 Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ πόλεμον ποιῆσαι μετὰ τοῦ ἁγίου, καὶ νικῆσαι αὐτῆς· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ἐξουσίαν

ἔξοσια ἐπὶ πᾶσιν φυλίαις καὶ γλώσσαις καὶ ἰδιόμοις.

- 8 Καὶ ὡσεὶ κωμῆσαι αὐτὰ πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς, ὧν ἡ γέγραπται ἐν τῇ βίβλῳ τῆς ζωῆς ὅτι οὐκ ἔφαθον ἀπὸ καρτῆρος ἁγίου.
- 9 Εἴ τις ἐχθρὸς, ἀκασάτω.
- 10 Εἴ τις αἰχμαλωτίαν συνάξῃ, εἰς αἰχμαλωσίαν ὑπάξῃ· εἴ τις ἐν μαχαίρᾳ δόκλεινῆι, δεῖ αὐτὸν ἐν μαχαίρᾳ δόκλειανθῶσαι. ὧδὲ ἔστιν ἡ ὑπομνήνη καὶ ἡ πίστις τῆς ἀγίας.
- 11 Καὶ εἶδον ἄλλο θηρίον ἀναβαίνον ἐκ τῆς γῆς, καὶ εἶχε κεφάλαια δύο ὅμοια δρόμοι· καὶ ἐλάλη ὡς δράκων.
- 12 Καὶ τὸ ἔξοσιον ὅτι ὡσεὶς θηρίον πῦσον ποιεῖ ἐνάπιον αὐτῷ, καὶ ποιεῖ τὸ γλῶσσοις καὶ τῆς καρτικῆς ἐν τῇ αὐτῇ ἵνα ὡσεὶ κωμῆσαι τὸ θηρίον τὸ ὡσεὶτον, ὅτι ἔφερα πύθη ἢ πλῆγη ὅτι θανάτω αὐτῆ.
- 13 Καὶ ποιεῖ σημεῖα μεγάλα, ἵνα καὶ πῦρ ποιῇ καρτῆρος ἐκ τῆς ἔρανης εἰς πᾶσι γλώσσαις, ἐνάπιον τῶν ἀνθρώπων.
- 14 Καὶ πλῆγη τῆς καρτικῆς ἐπὶ τῆς γῆς, ἀλλὰ τὰ σημεῖα ἃ ἔδωκε αὐτῷ ποιῆσαι ἐνάπιον ὅτι θηρίον· λέγων τοῖς κατοικοῦσιν ἐπὶ τῆς γῆς, ποιῆσαι εἰκόνα τῷ θηρίῳ ὃ ἐχθρὸς τῆς πλῆγῆς τῆς μαχαίρας, καὶ ἐζησε.
- 15 Καὶ ἔδωκε αὐτῷ δῆναϊ πνεῦμα τῆς εἰκόνης ὅτι θη-

Ἐθελίς, ἵνα κῆ λαλήσῃ ἡ εἰκὼν Ἐθελίς,
καὶ ποιήσῃ, ὅσοι αὐτὴ μὴ προσκυνοῦσι τὴν
εἰκόνα Ἐθελίς, ἵνα ἀπακλιμαθῶσι.

16 Καὶ ποιῆι πάντας, τὰς μικρὰς καὶ τὰς
μεγάλαις, καὶ τὰς πλοσίους καὶ τὰς πτωχάς,
καὶ τὰς ἐλεύθερας καὶ τὰς δούλους, ἵνα δώτῃ
αὐτοῖς χάραγμα ἐπὶ τῆς χεῖρός αὐτῶν τῆς
δεξιᾶς, ἢ ἐπὶ τῆς μετώπῃ αὐτῶν.

17 Καὶ ἵνα μή τις διώῃ ἀγαράσῃ ἢ πωλή-
σῃ, εἰ μὴ ὅτι ἔχει τὸ χάραγμα, ἢ τὸ ὄνομα Ἐ-
θελίς, ἢ τὸν ὄνομα Ἐθελίς αὐτῆς.

18 Ὡς ἡ σοφία ἐστίν, ὅτι ἔχει τὴν ψηφισά-
τω τὸν ὄνομα Ἐθελίς, ὄνομα δὲ τῶν ἀνθρώ-
πων ἐστίν, καὶ ὁ ὄνομα αὐτῆς χεῖρ. 666.

Κεφ. ιδ'. 14.

1 Καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ δύνειοι ἐσηκῶς ἐπὶ τὸ
ὄρος Σιών, καὶ μετ' αὐτῶν ἑκατὸν τεσσα-
ρακκοῦσα χιλιάδες, ἔχουσαι τὸ ὄνο-
μα Ἐθελίς αὐτῆς γεγραμμένον ἐπὶ τῶν
μετώπων αὐτῶν.

2 Καὶ ἤκουσα φωνῶν ἐκ τῶν ὄντων ὡς φωνῶν
ὕδατος πολλῶν, καὶ ὡς φωνῶν βροχῆς
μεγάλης, καὶ φωνῶν ἠκροῦ καὶ κίθαρων κι-
ταριζούτων ἐν ταῖς κίθάραις αὐτῶν.

3 Καὶ ἄδουσιν ὡς ᾠδὴν καμὴν ἐνώπιον Ἐθελί-
ου, καὶ ἐνώπιον τῶν τεσσαρῶν ζώων, καὶ τῶν πνε-
υσμάτων καὶ ἑδῆς ἡδύνατο μαθεῖν τὴν ᾠδὴν
εἰ μὴ αἱ ἑκατὸν τεσσαρακκοῦσα χιλιά-
δες

χιλιάδες, οἱ ἠρρασμῶμοι ἀπὸ τῆς γῆς·

4 Οὗτοί εἰσι οἱ μὲν γυναικῶν σὺν ἐμβλύ-
θησαν· περθενοὶ γὰρ εἰσι· ἔτι εἰσι οἱ ἀκθ-
λαθῆντες τῷ θρόνῳ ὅπως αὐτῶν ὑπάγη. ἔτι
ἠρρασθησαν ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων, ἀπαρχὴ τῶν
Θεῶν καὶ τῶν θρόνων·

5 Καὶ ἐν τῷ σώματι αὐτῶν ἔχουσι δόξα
λαοῦ· ἅμα μὲν γὰρ εἰσι ἐνώπιον τοῦ θρόνου
τοῦ Θεοῦ.

6 Καὶ εἶδον ἄλλον ἄγγελον πετώμενον ἐν
μεσσηρανῆματι, ἔχοντα βιβλίον αἰώνιον,
ἀναγελίσει τὰς καρδιακῶνας ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ
πάντα ἔθνη· ἐφυλλώθη καὶ γλώσσαν καὶ λαόν·

7 Λέγοντα ἐν φωνῇ μεγάλῃ· Φοβήθητε τὸ
Θεῖον, καὶ δότε αὐτῷ δόξαν, ὅτι ἦλθεν ἡ ὥρα
τῆς κρίσεως αὐτῆς· καὶ προσκυνησατέ τῷ
ποιήσαντι τὸ ἔρανον ἐπὶ τῆς γῆς καὶ θάλασσαν
καὶ πηγὰς ὑδάτων.

8 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἠκολούθησε, λέγων·
Ἐπίσει ἔπεισε Βαβυλῶν ἡ πόλις ἡ μεγάλη,
ὅτι ἐν τῷ οἴνῳ τῶν θυμῶν τῆς πορνείας αὐτῆς
πεπόηκε πάντα ἔθνη.

9 Καὶ τρίτος ἄγγελος ἠκολούθησεν αὐτοῖς,
λέγων ἐν φωνῇ μεγάλῃ· Εἰ τις τὸ θεῖον
προσκυνοῖ καὶ τὸ εἰκόνα αὐτῆς, καὶ λαμβά-
νη χάραγμα ἐπὶ τοῦ μετώπου αὐτῆς ἢ ἐπὶ τῆς
χειρὸς αὐτῆς,

10 Καὶ αὐτὸς πίπτει ἐν τῷ οἴνῳ τῶν θυμῶν τοῦ
Θεοῦ,

Θεῶ, τῷ κικρισμῶν ἀκροῦτα ἐν τῷ πόλη-
 εῖω τῷ ὀργῆς αὐτῶ· καὶ βασιυιοθήσεται ἐν
 πνεύλ κῷ θεῶ ἐνώπιον τῷ ἀγίω ἀγγέλων καὶ
 ἐνώπιον τῷ δυνῆς.

11 Καὶ ὁ κροπὸς τῷ βασιυιομῶ αὐτῶν ἀνα-
 βαίνῃ εἰς αἰῶνας αἰῶνων· καὶ ὅση ἔχουσιν ἀνά-
 πτωσιν ἡμέρας καὶ νυκτὸς οἱ ἀποσκινῶντες
 τὸ θεῖον ἐτῷ εἰκόνα αὐτῶ, καὶ εἴ τις λαμ-
 βάνῃ τὸ χάρισμα τῷ ὀνόματι αὐτῶ.

12 Ὡδέ ὑπομονὴ τῷ ἀγίω ἐσίν· ὡδέ οἱ τη-
 ρῶντες ἐπὶ ἐνθλῶς τῷ Θεῷ, καὶ τῷ πίπῃ
 Ἰησῶ.

13 Καὶ ἡκαστα φωνῆς ἐκ τῷ ἔραυθ, λεγῶσης
 μοι, θεῶσον· Μακάριοι οἱ νεκροὶ οἱ ἐν Κυ-
 ρίῳ ἀποθνήσκοντες ἀπίστε. Καὶ, λίξῃ τὸ πνεῦ-
 μα, ἵνα ἀναπαύσωνται ἐκ τῷ κῶπῃ αὐτῶν·
 καὶ ἡ ἔργα αὐτῶν ἀκροῦθῃ μετ' αὐτῶ.

14 Καὶ εἶδον, καὶ ἰδῶ νεφέλη λευκή, καὶ ἐπὶ
 τῷ νεφέλῃ καθήμενος ὄμοι· καὶ ἀνθρώπος,
 ἔχων ἐπὶ τῷ κεφαλῆς αὐτῶ στέφανοι χρυσοῖ,
 καὶ ἐν τῷ χεῖ αὐτῶ δρέπανον ὀξύ.

15 Καὶ ἀλλοῦ ἀγγελῶ ἐξῆλθεν ἐκ τῷ ναῶ,
 καὶ ῥῶν ἐν μεγάλῃ φωνῇ τῷ καθήμενῷ ἐπὶ
 τῷ νεφέλης· Πέμψον τὸ δρέπανόν σου, καὶ θέ-
 ρισον· ὅτι ἤλθῃ σοι ἡ ὥρα τῷ θεῖσται· ὅτι
 ἐξηράνθη ὁ θερισμὸς τῷ γῆς.

16 Καὶ ἔοικλεν ὁ καθήμενος ἐπὶ τῷ νεφέλῃ τὸ
 δρέπανον αὐτῶ ἐπὶ τῷ γῆ· ἐ ἰθερίσθη ἡ γῆ.

17 Καὶ

- 17 Καὶ ἄλλο ἄγγελος ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ θύσου ἐν τῷ ὕδατι, ἔχων ἐν αὐτῷ δρέπανον ὄξυ.
- 18 Καὶ ἄλλο ἄγγελος ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ θυσιαστηρίου, ἔχων ἕξασίαν ἐπὶ τοῦ πυρός· καὶ ἐφώνησε κραυγὴ μεγάλη πρὸς ἔχοντα τὸ δρέπανον τὸ ὄξυ, λέγων· Πέμψον ἕξ τὸ δρέπανον τὸ ὄξυ, καὶ τεύξουσιν τὰς βότρυας τῆς ἀμπέλου τῆς γῆς, ὅτι ἤκμασαν αἱ σταφυλαὶ αὐτῆς.
- 19 Καὶ ἔβαλεν ὁ ἄγγελος τὸ δρέπανον αὐτῷ εἰς τὴν γῆν, καὶ ἐτεύχθη τὸ ἀμπέλον τῆς γῆς, καὶ ἔθαλεν εἰς τὴν λίαν τοῦ θύσου τοῦ Θεοῦ τὸ μέγαν.
- 20 Καὶ ἐπατήθη ἡ λίαν ἐξω τῆς πόλεως, καὶ ἐξῆλθε αἷμα ἐκ τῆς λίαν ἄχρι τῶν χαλινῶν τῶν ἵππων, ἀπὸ σταδίων χιλίων ἑξακοσίων.

Κεφ. ιε'. 15.

- 1 Καὶ εἶδον ἄλλο σημεῖον ἐν τῷ ἔρασι μέγα καὶ θαυμαστὸν, ἀγγέλους ἑπτὰ, ἔχοντας πηληγὰς ἐπὶ τοῖς ἰσχυαῖς, ὅτι ἐν αὐταῖς ἐτελείθη ὁ θυμὸς τοῦ Θεοῦ.
- 2 Καὶ εἶδον ὡς θάλασσαν ὑαλίνην μεμιγμένην πυρὶ· καὶ τὰς νικῶντας ἐκ τοῦ θύσου καὶ ἐκ τῆς εἰκόνος αὐτῆς καὶ ἐκ τοῦ χαλασμάτου αὐτῆς, ἐκ τοῦ δριθμῆ τῆς ὀνόματι αὐτῆς, ἐστῶτας ἐπὶ τῆς θάλασσαν τῆς ὑαλίνης, ἔχοντας κηθάρας τῆς Θεοῦ.
- 3 Καὶ ᾄδουσι τῷ ᾠδῶν Μωσίου δούλου τοῦ Θεοῦ,

Θεῶ, καὶ πλὴν ὧδὴν τῶν δρόνις, λέηθῆτες, Με-
γαλά καὶ θαυμαστὰ τὰ ἔργα σου, Κύριε ὁ
Θεὸς ὁ παντοκράτωρ· δίκαιον καὶ ἀληθι-
νὸν αἰ ὁδοί σου, ὁ βασιλεὺς τῶν ἀγίων·

4 Τίς ἔμὴ φοβηθῆσε, Κύριε, καὶ δόξασ-
σῃ τὸ ὄνομά σου; ὅτι μόνος ὁ σὺ· ὅτι πᾶν-
τα τὰ ἔθνη ἤξεσσι εὐσεβήσασιν ἐνώπιόν
σου· ὅτι τὰ δίκαιώματά σου ἐφανερώθησαν.

5 Καὶ μετὰ ταῦτα εἶδον, καὶ ἰδὲ ἠνοίγη ὁ ναὸς
καὶ σκηνῆς σου μαρτυρίας ἐν πύλαις αὐτοῦ.

6 Καὶ ἐξῆλθον οἱ ἐπὶ τὰ ἀγγέλοι ἐχούτες τὰς
ἐπὶ τὰ πτελέας, ἐκ τοῦ ναοῦ, ἐνδεδυμένοι λί-
θον καθαρόν καὶ λαμπρὸν, καὶ ὄρει ζωσμήιοι
ὡσεὶ τὰ στήθη ζώνας χρυσῆς·

7 Καὶ ἔν ἐκ τῶν πτελέων ζώων ἔδωκε τοῖς
ἐπὶ τὰ ἀγγέλοις ἐπὶ τὰ Φιάλας χρυσῆς, γε-
μέσας τῶν θυμῶν τῶν Θεῶν τῶν ζῶντων εἰς τὰς
αἰῶνας τῶν αἰώνων.

8 Καὶ ἐγεμίθη ὁ ναὸς καπνῶν ἐκ τῆς δόξης
τῶν Θεῶν, καὶ ἐκ τῆς δυνάμεως αὐτῶν· καὶ
ἔδεις ἠδύνατο εἰσελθεῖν εἰς τὸν ναόν, ἄλλοι τε-
λεοθῶσιν αἱ ἐπὶ τὰ πτελέαι τῶν ἐπὶ τὰ ἀγγέλων.

Κεφ. ιε'. 16.

1 Καὶ ἤκουσα φωνῆς μεγάλης ἐκ τοῦ ναοῦ,
λεγούσης τοῖς ἐπὶ τὰ ἀγγέλοις· Ὑπάγετε
καὶ ἐκχεάτε τὰς Φιάλας τοῦ θυμῶν τῶν Θεῶν
εἰς τὴν γῆν.

2 Καὶ ἀπῆλθεν ὁ πρῶτος, καὶ ἐξέχεε πλὴν
Nn Φιάλλω

Φιάλλῳ αὐτῷ ἐπὶ τὴν γῆν· καὶ ἐχύετο ἕλκος καὶ θάνατος καὶ πόνος ἐπὶ τὰς ἀνθρώπους τὰς ἔχοντας τὸ χάραγμα τῶν θηρίων, καὶ τὰς τῆς εἰκῆς αὐτῆς προσκυνοῦσας.

3 Καὶ ὁ δεύτερος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν Φιάλλῳ αὐτῷ εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ ἐχύετο αἷμα ὡς νεκρῶν· καὶ πᾶσα ψυχὴ ζῶσα ἀπέθανεν ἐν τῇ θαλάσσῃ.

4 Καὶ ὁ τρίτος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν Φιάλλῳ αὐτῷ εἰς τὰς ποταμούς, καὶ εἰς τὰς πηγὰς τῶν ὑδάτων· καὶ ἐχύετο αἷμα.

5 Καὶ ἤκουσα τῶν ἀγγέλων τῶν ὑδάτων λέγοντας· Δίκαιον, Κύριε, εἶ, ὁ ὢν, καὶ ὁ βῶν, καὶ ὁ ἐσόμενος, ὅτι ταῦτα ἐκρίνας·

6 Ὅτι αἷμα ἁγίων καὶ προφητῶν ἐξέχεαν, καὶ αἷμα αὐτοῖς ἔδωκας πίνειν· ἀξιοὶ γὰρ εἰσι.

7 Καὶ ἤκουσα ἄλλων ἐκ τῶν θυσιῶν λέγοντων· Ναὶ Κύριε ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ἀληθινὰ καὶ δίκαια αἱ κρίσεις σου.

8 Καὶ ὁ τέταρτος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν Φιάλλῳ αὐτῷ ἐπὶ τὸ ἥλιον· καὶ ἐδόθη αὐτῷ κωμῆσαι τὰς ἀνθρώπους ἐν πυρὶ.

9 Καὶ ἐκωμῆθησαν οἱ ἄνθρωποι καὶ ἔμαζαν, καὶ ἐβλασφήμησαν τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ τοῦ ἔχοντος ἐξουσίαν ἐπὶ τὰς πληγὰς ταύτας· καὶ ἔμελεινόνησαν δέναν αὐτῶν δοξαῖαν.

10 Καὶ ὁ πέμπτος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν Φιάλλῳ αὐτῷ ἐπὶ τὸ θρόνον τοῦ θηρίου· καὶ ἐχύετο ἡ βασι-

ἡ βασιλεία αὐτῆ ἰσχυρωμένη· καὶ ἐμασ-
σῶντο εἰς γλώσσας αὐτῶν ἐκ τῶ πόντος·

11 Καὶ ἐβλασφήμησαν τὸ Θεὸν τῶ ἔθνος
ἐκ τῶ πόντων αὐτῶν καὶ ἐκ τῶ ἰλκῶν αὐτῶν·
καὶ ἔμετενόησαν ἐκ τῶν ἔργων αὐτῶν.

12 Καὶ ὁ ἐκ τῶ ἀγγελῶ ἐξέχευε τὸ Φιάλιον
αὐτῆ ἐπὶ τὸ ποταμὸν τὸ μέγαν τὸ Εὐφρά-
τιν· καὶ ἐξηράνθη τὸ ὕδωρ αὐτῆ, ἵνα ἐτοι-
μασθῆ ἡ ὁδὸς τῶ βασιλείων τῶν ἀπὸ ἀνατο-
λῶν ἡλίου.

13 Καὶ εἶδον ἐκ τῶ τόμαϊ τῶ δράκοντι
καὶ ἐκ τῆ τόμαϊ τῶ θηρίου καὶ ἐκ τῆ τό-
μαϊ τῆ ψύδαπροφήτου πνύματι πείας
ἀκάρτα ὄμοια βασιλέως.

14 Εἰσι γὰρ πνύματα δαιμόνια πιεῖν ἡ ση-
μεῖα αὐτῶ ἐκπορεύεται ἐπὶ τῆς βασιλείς τῆ
γῆς καὶ τῆς οὐρανῶν ὅλης, σιωπαγεῖν αὐ-
τῆς εἰς πόλεμον τῆς ἡμέρας ἐκείνης τῆ με-
γάλης τῆ Θεῶ τῆ παντοκράτορι.

15 Ἰδοὺ, ἔρχομαι ὡς κλέπτης. Μακάρι οὖ
οἱ τηρῶν τὰ ἱμάτια αὐτῆ, ἵνα
μὴ γυμνὸς ᾖ παρὰ τῆ, καὶ βλέπωσι τὸ ἀχρη-
μοσύνη αὐτῆ.

16 Καὶ σιωπαγεῖ αὐτῆς εἰς τὸ τόπον τὸν
καλέμαρον Εβραϊστὶ Ἀρμαγεδδόν.

17 Καὶ ὁ ἑσδομῶ ἀγγελος ἐξέχευε τὸ Φιάλιον
αὐτῆ εἰς τὸ ἀέρα· καὶ ἐξῆλθε φωνὴ μεγάλη ἀπὸ
τῆ κατὰ τῶ ἔθνος, ἀπὸ τῶ θρόνου, λέγουσα· Γέγονε.

N n 2

18 Καὶ

18 Καὶ ἐχλύοντο φωναὶ καὶ βρονταὶ καὶ ἀστραπαί· καὶ σέσμησεν ἐχλύετο μέγας, εἶπεν ὅσα ἐχλύετο ἀφ' ἑοῖ ἀνθρώπων ἐχλύοντο ἐπὶ τῆ γῆς, τηλικῶς τῶ σέσμησεν ἔπει μέγας.

19 Καὶ ἐχλύετο ἡ πόλις ἡ μεγάλη εἰς τρεῖς μέρη, καὶ αἱ πόλεις τῶ ἐθνῶν ἔπεσον· Ἡ Βαβυλωνὴ ἡ μεγάλη ἐμνήσθη ἐνάπιον τῶ Θεοῦ, ὁ ἔναυ αὐτῆ τὸ πόλιον τῶ οἴνου τῶ θυμῶ τῶ ὀργῆς αὐτῆ.

20 Καὶ πᾶσαι νῆες ἐφυγον, καὶ ὄρη ἔχ ὄρεθησαν.

21 Καὶ χαλάζα μεγάλη ὡς ταλαιπωρία καὶ βαίνε ἐκ τῶ ἔρανος ἐπὶ τὸς ἀνθρώπους· καὶ ἐβλασφήμησαν οἱ ἀνθρώποι τῶ θεοῦ ἐκ τῆς πληγῆς τῶ χαλάζης· ὅτι μεγάλη ἐστὶ ἡ πληγὴ αὐτῆς σφόδρα.

Κεφ. 17. 17.

1 Καὶ ἦλθεν εἰς ἐκ τῶ ἐπὶ ἀγγέλων τῶ ἐχόντων βίβλιν ἐπὶ φιάλας, Ἡ ἐλάλησε μετ' ἐμοῦ, λέγων μοι· Δεῦρο, δείξω σοι τὸ κελίον τῆς πόρνης τῶ μεγάλης, τῆς κατηνύτης, ἐπὶ τῶν ὑδάτων τῶν πολλῶν.

2 Μεθ' ἧς ἐπόρυσαν οἱ βασιλεῖς τῶ γῆς, καὶ ἐμεθύσθησαν ἐκ τῶ οἴνου τῆς πορνείας αὐτῆς οἱ κατὰ κῆνες τῶ γῆς.

3 Καὶ ἀπήνεγκέ με εἰς ἔρημον ἐν πνύματι· καὶ εἶδον γυναῖκα κατηνύτην ἐπὶ θρόνον κόκκινον, γέμει ὀνομάτων βλασφημίας·

- μίας, ἔχον κεφαλὰς ἐπ' αὐτὴν καὶ κέρατα δέκα.
- 4 Καὶ ἡ γυνὴ ἡ ἀδελφεὶσθημένη πορφύρα
καὶ κροκίνῳ, καὶ κηρυττωμένη χρυσῷ καὶ
λίθῳ πηλοῖ καὶ μαρμαρίταις, ἔχουσα χρυ-
σῶν ποτήριον ἐν τῇ χειρὶ αὐτῆς, γέμου βδε-
λυγμαίων καὶ ἀναθήρητος πορνείας αὐτῆς.
- 5 Καὶ ἐπὶ τὸ μέτωπον αὐτῆς ὄνομα γεγραμ-
μένον· Μυσήριον· Βαβυλῶν ἡ μεγάλη, ἡ
μήτηρ τῶν πορνῶν καὶ τῶν βδελυγμαίων τῆς γῆς.
- 6 Καὶ εἶδον τὴν γυναικῆ μεθύσαν ἐκ τοῦ
αἵματος τῶν ἀγίων, καὶ ἐκ τοῦ αἵματος τῶν
μαρτύρων Ἰησοῦ· καὶ ἑτάματα, ἰδὼν αὐ-
τήν, θῶμα μέγα.
- 7 Καὶ εἶπέ μοι ὁ ἄγγελος· Διὰ τί ἑτάμα-
σας; ἐγὼ σοὶ ἐρῶ τὸ μυστήριον τῆς γυναικῆς
καὶ τὸ θηρίον τὸ βασιλεύον αὐτήν, τὸ ἔχον-
τ' αὐτὴν ἐπ' αὐτὴν κεφαλὰς καὶ τὰ δέκα κέρατα.
- 8 Θηρίον οὐκ εἶδες, ὡ, καὶ σὰν ἐστὶ καὶ μέγα
ἀναβαίνειν ἐκ τῆς ἀβύσσου, καὶ εἰς ἀπώλειαν
ὑπάγει· καὶ θωμάζονται οἱ κατοικοῦντες
ἐπὶ τῆς γῆς, (ὧν τὸ γέγραπται τὸ ὄνομα
ἐπὶ τὸ βιβλίον τῆς ζωῆς διὰ τοῦ καθ' ἑαυτοῦ κή-
σμου) βλέποντες τὸ θηρίον ὅτι, ὡ, καὶ σὰν
ἐστὶ, καὶ πέρα ἐστίν.
- 9 Ὡς οὖν οὗτος ὁ ἔχων σφίδα. Αἱ ἐπ' αὐτὴν κε-
φαλαί, ὅρη ἐσὶν ἐπ' αὐτῆς, ὅπως ἡ γυνὴ κείνη
ταῖς ἐπ' αὐτῶν.
- 10 Καὶ βασιλεῖς ἐπ' αὐτῆς ἐσὶν· οἱ πέντε ἔπεσαν,

- καὶ ὁ εἷς ἐστίν, ὁ ἄλλος ἔπαυ ἦλθε· καὶ ὅταν ἔλθῃ, ὀλίγον αὐτὸν δεῖ μένειν.
- 11 Καὶ τὸ θηρίον ὁ λόγος, καὶ σὺκ' ἐστὶ, ἔσται πὺς ὄγδοός ἐστι, καὶ ἐκ τῶν ἐκτὰ ἐστὶ, καὶ εἰς ἀπώλησαν ἰσχύει.
- 12 Καὶ τὰ δέκα κέρατα αὐτοῦ εἶδες, δέκα βασιλεῖς ἐσὶν, οἵτινες βασιλεύουσιν ὑπὸ ἑλαβόν, ἀλλ' ἐξουσίαν ὡς βασιλεῖς μίαν ὥραν λαμβάνουσι μετ' τοῦ θηρίου.
- 13 Οὗτοι μίαν γνώμην ἔχουσι, καὶ τὸ δυνάμειν καὶ τὸ ἐξουσίαν ἑαυτῶν τῷ θηρίῳ διδώσασιν.
- 14 Οὗτοι μετ' τοῦ θηρίου πολεμήσουσι, καὶ τὸ θηρίον νικήσεται αὐτούς, ὅτι Κύριος κυρίων ἐστὶ καὶ βασιλεὺς βασιλείων· καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ, κληθεὶς καὶ ἐκλεκτοὶ καὶ πιστοί.
- 15 Καὶ λέγει μοι, τὰ ὕδατα αὐτοῦ εἶδες, ἔτι ἢ πόρνη καλεῖται, λαοὶ καὶ ὄχλοι ἐσὶν, καὶ ἔθνη καὶ γλώσσαι.
- 16 Καὶ τὰ δέκα κέρατα αὐτοῦ εἶδες ἐπὶ τὸ θηρίον, ἔτι μισήσουσι τὸ πόρνον, καὶ ἠρημωθήσονται αὐτὸν ἕως γυμνῶν, καὶ τὰς σάρκας αὐτῆς φάγηται, καὶ αὐτὴν καθαυθήσονται ἐν πυρὶ.
- 17 Ὁ γὰρ Θεὸς ἔδωκεν εἰς ταύτην καρδίαν αὐτῶν ποιῆσαι τὸ πόρνον αὐτῶν, καὶ ποιῆσαι μίαν γνώμην, καὶ δύναιμι τὴν βασιλείαν αὐτῶν τῷ θηρίῳ ἄχρι πελεσθῆναι τὰ ῥήματα τοῦ Θεοῦ.

18 Καὶ

18 Καὶ ἡ γυνὴ ἡ εἶδες, ἔστιν ἡ πόλις ἡ μεγάλη ἡ ἔχουσα βασιλείαν ἐπὶ τῶν βασιλείων τῆς γῆς.

Κεφ. ιη'. 18.

1 Καὶ μετὰ ταῦτα εἶδον ἄγγελον καθ' ἑαυταίνοντα ἐκ τοῦ θρανίου, ἔχοντα ἐξουσίαν μεγάλην· καὶ ἡ γῆ ἐφωτίσθη ἐκ τῆς δόξης αὐτοῦ.

2 Καὶ ἔκραξεν ἐν ἰσχύϊ, φωνῇ μεγάλῃ, λέγων· Ἐπίπεσε ἔπεσε Βαβυλὼν ἡ μεγάλη, καὶ ἐχλύθη καθ' ἑκαστὴν δαμόνιον, καὶ φυλακὴ παντὸς πνύματι ἀκαθάρτου, καὶ φυλακὴ παντὸς ὀρνέου ἀκαθάρτου καὶ μεμισημένου·

3 Ὅτι ἐκ τῶν οἴων τῶν πορνείας αὐτῆς πέπωκε πίνοντα τὰ ἔθνη. Ἐοὶ βασιλεῖς τῆς γῆς μετ' αὐτῆς ἐπόρευον, καὶ οἱ ἔμποροι τῆς γῆς ἐκ τῆς δυνάμεως τῆς ἐπλώσεως αὐτῆς ἐπλήθησαν.

4 Καὶ ἤκουσα ἄλλου φωνῆν ἐκ τοῦ θρανίου λέγουσαν· Ἐξέλθετε ἐξ αὐτῆς ὁ λαὸς μου, ἵνα μὴ συγκοινωνήσῃτε ταῖς ἀμαρτίαις αὐτῆς, ἵνα μὴ λάβητε ἐκ τῶν πληγῶν αὐτῆς·

5 Ὅτι ἠκολούθησαν αὐτῆς αἱ ἀμαρτίαι αἰσθηταὶ τῶν θρανίων, καὶ ἐμνημόνευσεν ὁ Θεὸς τὰ ἀδικήματα αὐτῆς.

6 Ἀπόδοτε αὐτῇ ὡς καὶ αὐτὴ ἀπέδωκεν ὑμῖν, καὶ διώσατε αὐτὴν διὰ τὰ ἔργα αὐτῆς· ἐν τῷ ποτηρίῳ ᾧ ἐκίρασε, κενώσατε αὐτὴν διώσαντες.

Nn 4

7 Ὅσα

- 7 Ὅσοι ἐδόξασεν ἐαυτῶν ἐ ἐπρωιάτε, ἴσθη-
τον ὅτε αὐτῇ βασιτισμὸν ἐ πένθῃ· ὅτι ἐν
τῇ καρδίᾳ αὐτῆς λέγει· Κάθημα βασιλισ-
σα, καὶ χροῖα σὺν ἐμοί, καὶ πένθῃ ἔμὴ ἴδω.
- 8 Διὰ τῆτο ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ ἤξασιν αἰ ὠλη-
γὰ αὐτῆς, θάνατῃ καὶ πένθῃ ἔ λιμός·
καὶ ἐν πυρὶ καὶ καυθήσεται, ὅτι ἰχυρὸς
Κύριος ὁ Θεὸς ὁ κρῖνων αὐτῶν.
- 9 Καὶ κλαύσονται αὐτῶν καὶ κήψονται
ἐπ' αὐτῇ οἱ βασιλεῖς τῆ γῆς, οἱ μετ' αὐτῆς
πορεύσαντες καὶ ἐπρωιάσαντες, ὅταν βλέ-
πωσι τὸ καπνὸν τῆ πυρώσεως αὐτῆς·
- 10 Ἀπὸ μακρόθεν ἐσηκότες, ἀπὸ τῆ φόβον
τῆ βασιτισμῆς αὐτῆς, λέγοντες· Οὐαί, εἰαί, ἡ
πόλις ἡ μεγάλη, Βαβυλὼν, ἡ πόλις ἡ ἰχυ-
ρὰ, ὅτι ἐν μιᾷ ὥρᾳ ἤλθεν ἡ κρείσις σου.
- 11 Καὶ οἱ ἔμποροι τῆ γῆς κλάσσι ἐ πένθῃ-
σιν ἐπ' αὐτῇ, ὅτι τὸ γόμον αὐτῶν ἔδεις ἀγ-
ράζῃ σὺ ἐπι.
- 12 Γόμον χρυσοῦ ἔ ἀργύρου ἔ λίθου τιμῆς, καὶ
μαρμαρίτου, ἔ βύσσου, ἔ πορφύρας, ἔ σιρι-
κῆς, καὶ κροκίνου, καὶ πᾶν ξύλον θύϊνον, ἔ πᾶν
σκεῦῃ ἐλεφάντινον, καὶ πᾶν σκεῦῃ ἐν ξύλου
τιμιωθέντες, ἔ χαλκῆς, ἔ σιδήρου, ἔ μαρμαρίτου,
- 13 Καὶ κινάμωμον, καὶ θυμιάματα, καὶ μύρον·
καὶ λίβανον, ἔ εἶνον, καὶ ἔλαγον, ἔ σεμίδαλιν,
καὶ σῖτον, καὶ κτήνη, καὶ πρῶβατα, καὶ ἵππων,
καὶ ῥεθῶν, ἔ σωματίων, καὶ ψυχῶς ἀνθρώπων.

14 Καὶ

- 14 Καὶ ἡ ὀπίρρα τῆς ἐπιθυμίας τῆς ψυχῆς ἔκ-
 ἀπῆλθεν ἀπὸ σῶ, καὶ πάντα τὰ λιπαρὰ καὶ
 τὰ λαμπρὰ ἀπῆλθεν ἀπὸ σῶ, καὶ οὐκ ἔτι ἔ-
 μὴ δόξης αὐτά.
- 15 Οἱ ἔμποροι τῶν οὐρανῶν οἱ πλεονεκτήσαντες ἀπὸ
 αὐτῆς, ἀπὸ μακρόθεν ἤσονται, διὰ τὸ φό-
 βον τοῦ βασανισμοῦ αὐτῆς, κλαίοντες καὶ
 πενθῶντες·
- 16 Καὶ λέγοντες· Οὐαὶ, εὐαὶ, ἡ πόλις ἡ μεγάλη,
 ἡ πρὸς ἐὼλημὸν βασίτιον καὶ πορφυροῦν
 καὶ κόκκινον, ἡ κεχρυσωμένη ἐν χρυσῷ καὶ
 λίθῳ πρῖμα καὶ μαργαρίταις· ὅτι μίαν ἥραν
 ἠρημώθη ὁ πλοῦτος·
- 17 Καὶ πᾶς κυδοετήτης, ἔτις ἐπὶ τῶν πλοίων
 ὁ ὀμιλῶν, ἐναύται, καὶ ὅσοι τὴν θαλάσσαν
 ἐργάζονται, ἀπὸ μακρόθεν ἔστησαν,
- 18 Καὶ ἔκραζον, ὁρῶντες τὸ καπνὸν τῆς πυ-
 ρώσεως αὐτῆς, λέγοντες· Τίς ὁμοία τῆ πόλι
 τῆς μεγάλης;
- 19 Καὶ ἔβαλον χεῖν ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐ-
 τῶν, καὶ ἔκραζον κλαίοντες καὶ πενθῶντες,
 λέγοντες· Οὐαὶ, εὐαὶ, ἡ πόλις ἡ μεγάλη, ἐν
 ἣ ἐπλότησαν πάντες οἱ ἔχοντες πλοῖα ἐν τῇ
 θαλάσῃ ἐκ τῆς πρῖμότητος αὐτῆς, ὅτι μίαν
 ἥραν ἠρημώθη.
- 20 Εὐφραίνετ' αὐτῶν ἕργον, καὶ οἱ ἅγιοι
 ἀπόστολοι καὶ οἱ προφῆται, ὅτι ἔκλειν ὁ Θεὸς
 τὸ κρίμα ὑμῶν ἐξ αὐτῆς.

Νη 5

21 Καὶ

- 21 Καὶ ἦρεν εἰς ἄγγελος ἰσχυρὸς λίθον ὡς μύλον μέγαν, καὶ ἔβαλεν εἰς τὴν θάλασσαν, λέγων· Οὕτως ὀρμήματα βληθήσεται Βαβυλῶν ἡ μεγάλη πόλις, καὶ οὐ μὴ δύρεθῆ ἔτι.
- 22 Καὶ φωνὴ κιθαρῶδων καὶ μουσικῶν καὶ αὐλητῶν, καὶ σαλπιστῶν, καὶ οὐ μὴ ἀκροθῆ ἐν σοὶ ἔπι· καὶ πᾶς τεχνίτης πύσης τέχνης καὶ οὐ μὴ δύρεθῆ ἐν σοὶ ἔπι· καὶ φωνὴ μύλας καὶ οὐ μὴ ἀκροθῆ ἐν σοὶ ἔπι.
- 23 Καὶ φῶς λύχνος καὶ οὐ μὴ φωνὴ ἐν σοὶ ἔπι· καὶ φωνὴ νυμφίος ἐνύμφης καὶ οὐ μὴ ἀκροθῆ ἐν σοὶ ἔπι· ὅτι οἱ ἔμποροὶ οὐκ ἔσονται οἱ μεγιστάνες τῆς γῆς, ὅτι ἐν τῇ φαρμακείᾳ σὺ ἐπωλανήθησαν πάντα τὰ ἔθνη.
- 24 Καὶ ἐν αὐτῇ αἷμα περφητῶν καὶ ἁγίων δρέθη, ἐ πάντων τῶν ἐσφαγμένων ἐπὶ τῆς γῆς.

Κεφ. ιθ'. 19.

- 1 Καὶ μὲν ταῦτα ἔκαστα ὡς φωνὴ ὄχλος πολλῶν μεγάλων ἐν τῷ ἔρανω, λέγοντες· Ἀλληλῆῖα· ἡ σωτηρία, καὶ ἡ δόξα, καὶ ἡ τιμὴ, καὶ ἡ δυνάμις Κυρίου τῷ Θεῷ ἡμῶν.
- 2 Ὅτι ἀληθινὰ καὶ δικαίᾳ αἰκρίσει αὐτῶν· ὅτι ἔκρινε τὸ πόρνον τὸ μέγαλον, ἧτις ἐφθρε τὸ γένος ἐν τῇ πορνείᾳ αὐτῆς, καὶ ἐξεδίκησε τὸ αἷμα τῶν δούλων αὐτῆς ἐκ τῶν χείρων αὐτῆς.
- 3 Καὶ δεύτερον εἶρηκαν· Ἀλληλῆῖα. Καὶ ὁ καπνὸς αὐτῆς ἀναβαίνει εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων.
- 4 Καὶ

- 4 Καὶ ἔπεσον οἱ πρεσβύτεροι οἱ εἴκοσι καὶ τέσσαρες, καὶ τὰ τέσσαρα ζῶα, ἔσθεσκύνησαν τῷ Θεῷ τῷ καθήμενῷ ἐπὶ τῷ θρόνῳ, λέγοντες· Ἀμὲν· Ἀλληλούια.
- 5 Καὶ φωνὴ ἐκ τῷ θρόνου ἐξῆλθε, λέγουσα· Αἰνεῖτε τὸ Θεὸν ἡμῶν πάντες οἱ ὄντες αὐτοῦ, καὶ οἱ φοβούμενοι αὐτὸν καὶ οἱ μικροὶ ἔοι μεγάλοι.
- 6 Καὶ ἤκουσα ὡς φωνὴν ὄχλου πολλῆς, καὶ ὡς φωνὴν ὑδάτων πολλῶν, καὶ ὡς φωνὴν βροντῶν ἰσχυρῶν, λεγόντων· Ἀλληλούια· ὅτι ἔδοξεν λάβετε Κύριε ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ.
- 7 Χαίρωμεν καὶ ἀγαλλιάμεθα, καὶ δῶμεν τὸ δοῦν αὐτῷ· ὅτι ἦλθεν ὁ γάμος τῷ θρόνῳ, καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ ἠτοίμασεν ἑαυτῇ.
- 8 Καὶ ἐδόθη αὐτῇ ἵνα φεραζάλη βύσσινον καθαρὸν καὶ λαμπρὸν τὸ γυνὴ βύσσινον, τὰ δικαιοματὰ ἐστὶ τῆς ἁγίας.
- 9 Καὶ λέγει μοι· Γράψον· Μακάριοι οἱ εἰς τὸ δεῖπνον τῷ γάμῳ τῷ θρόνῳ κεκλημένοι. Καὶ λέγει μοι· Οὗτοι οἱ λόγοι ἀληθινοὶ εἰσι τῷ Θεῷ.
- 10 Καὶ ἔπεσαν ἔμπροσθεν τῶν ποδῶν αὐτοῦ προσκυνοῦσιν αὐτῷ· καὶ λέγει μοι· Ὅσα μή σιωδελός (καὶ ἐγὼ καὶ τὰ ἀδελφῶν (καὶ τὰ ἔχοντων τὴν μαρτυρίαν τῷ Ἰησοῦ. τῷ Θεῷ προσκυνοῦσιν· ἡ γὰρ μαρτυρία τῷ Ἰησοῦ ἐστὶ τὸ πνεῦμα καὶ ἡ ψοφήλας.

11 Καὶ

χελιάρχων, καὶ σάρκας ἰχυρῶν, καὶ σάρ-
 κας ἵππων καὶ τῶν κρομμύων ἐπ' αὐτῶν, καὶ
 σάρκας πάντων ἐλσύτερων καὶ δύλων, ἑμι-
 κρῶν καὶ μεζάλων.

19 Καὶ εἶδεν τὸ θηρίον, καὶ τὰς βασιλεῖς τῆς
 γῆς, καὶ πᾶσι ἐφατόματα αὐτῶν σιωπήματα
 ποιῆσαι πόλεμον μετ' ἑαυτῶν ἐπὶ τῷ ἵπ-
 πῳ καὶ μετ' ἑαυτῶν ἐκλιθεῖσθαι αὐτῶν.

20 Καὶ ἐπάσθη τὸ θηρίον, καὶ μετ' ἑαυτοῦ ὁ
 ψυδρὸς οφῆτης ὁ ποιήσας τὰ σημεῖα ἐν-
 ὄπιον αὐτῶν, ἐν οἷς ἐπλάγητε τὰς λαοὺς ἕως
 χεῖρασμα ἑαυτοῦ, ἔτι τὰς ἀποκρινόμενας τῇ
 εἰκόνι αὐτῶν· ζῶντες ἐδόκησαν οἱ δύο εἰς τὸ
 λίμεν ἑαυτοῦ πύρος τὸ κρομμύον ἐν τῷ θείῳ.

21 Καὶ οἱ λοιποὶ ἀπεκρίθησαν ἐν τῇ βομ-
 φαίᾳ ἑαυτοῦ ἐπὶ τῷ ἵππῳ, τῇ ἐκπο-
 ρουμένη ἐκ τῶν χεῖρων αὐτῶν· καὶ πάντα τὰ
 ὄργανα ἐχρησάθησαν ἐκ τῶν σαρκῶν αὐτῶν.

Κεφ. κ'. 20.

1 Καὶ εἶδεν ἄγγελον κρατῶντα ἐκ τῶν ὄρα-
 τῶν, ἔχοντα τὴν κλεῖδα τῆς ἀβύσσου, ἡ ἀλυ-
 σιν μεζάλων ἐπὶ τῷ χεῖρῳ αὐτῶν.

2 Καὶ ἐκράτησε τὸ δράκοντα, τὸ ὄφιν τὸν
 δεξιῶν, ὃς ἐστὶ διάβολος καὶ σατανᾶς· καὶ
 ἔδησεν αὐτὸν χέλιον ἑστη.

3 Καὶ ἔθαλεν αὐτὸν εἰς τὸ ἄβυσσόν, ἔκλει-
 σεν αὐτὸν, καὶ ἐσφραγίσεν ἑπάνω αὐτῶν, ἵνα
 μὴ πλανήσῃ πᾶς ἐθνη ἐπὶ, ἄχρι τελευτῆς τοῦ
 χέλιου

χίλια ἔτη· καὶ μετὰ ταῦτα δεῖ αὐτὸν λυθῶσαι
μικρὸν χρόνον.

4 Καὶ εἶδον θρόνους, καὶ ἐκάθισαν ἐπ' αὐτοὺς,
καὶ κρεῖμα ἐδόθη αὐτοῖς· καὶ τὰς ψυχὰς τῶν πε-
πελεκισμένων διὰ τὴν μαρτυρίαν Ἰησοῦ, καὶ
διὰ τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, καὶ οἵτινες ἔωρθεκωή-
σαν πρὸ θανάτου, ἔτε τῆς εἰκόνι αὐτῶν· καὶ ἔσκη-
ἐλαβον τὸ χάρογμα ἐπὶ τὸ μέτωπον αὐτῶν,
καὶ ἐπὶ τὸ χεῖρα αὐτῶν· καὶ ἔζησαν, ἔ βα-
σίλευσαν μετὰ τοῦ Χριστοῦ τὰ χίλια ἔτη.

5 Οἱ ἄλλοι οὖν νεκρῶν ἔσκη ἀνέζησαν ἕως
τελεσθῆναι τὰ χίλια ἔτη. Αὕτη ἡ ἀνάστασις ἡ
ἑρῶτη.

6 Μακάριος καὶ ἅγιος ὁ ἔχων μέρος ἐν
τῇ ἀναστάσει τῆς ἑρῶτης· ἐπὶ τῶν ὁ θάνα-
τος ὁ δεύτερος ἔσκη ἔχει ἐξουσίαν, ἀλλ' ἔσκη
ἱερεῖς τοῦ Θεοῦ καὶ τοῦ Χριστοῦ, καὶ βασιλεύουσιν
μετὰ αὐτῶν χίλια ἔτη.

7 Καὶ ὅταν τελεσθῆναι τὰ χίλια ἔτη, λυθήσεται
ὁ σατανᾶς ἐκ τοῦ φυλακῆς αὐτοῦ·

8 Καὶ ἐξελεύσεται πλανῆσαι τὰ ἔθνη τὰ
ἐν ταῖς τέσσαρσι γωνίαις τῆς γῆς, τὴν Γαγγὴ καὶ
τὴν Μαγὴν, συναγαγεῖν αὐτοὺς εἰς πόλεμον,
ὧν ὁ ἀριθμὸς ὡς ἡ ἄμμος τῆς θαλάσσης.

9 Καὶ ἀνέβησαν ἐπὶ τὸ πλάτος τῆς γῆς, καὶ
ἐκύκλωσαν τὴν παρεμβολὴν τῶν ἁγίων, ἔ τὴν
πόλιν τὴν ἡραπηρόν· καὶ κατέβη πῦρ ἀπὸ
τοῦ Θεοῦ ἐκ τοῦ θρόνου, καὶ κατέφαγεν αὐτούς·

10 Καὶ

10 Καὶ ὁ Διάβολος ὁ πλανῶν αὐτὸς ἐβλήθη εἰς τὸ λίμνην τῆς πυρὸς καὶ θείας, ὅπερ τὸ θημεῖον καὶ ὁ ψεύδοπροφήτης· καὶ βασανιθήσονται ἡμέρας ἕνδεκάτῃς εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων.

11 Καὶ εἶδον θρόνον λευκὸν μέγαν, καὶ τὸ καθήμενον ἐπ' αὐτῷ, καὶ ἀπὸ προσώπου ἐφυγχοῦν ἡ γῆ καὶ ὁ οὐρανός· καὶ τὸ πᾶν ἔχουσαν αὐτοῖς.

12 Καὶ εἶδον τὰς νεκρὰς, μικρὰς καὶ μεγάλας, ἐστῶτας ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, καὶ βιβλία ἠνεώχθησαν· καὶ βιβλίον ἄλλο ἠνεώχθη, ὃ ἐστὶ τῆς ζωῆς· καὶ ἐκρίθησαν οἱ νεκροὶ ἐκ τῶν γεγραμμένων ἐν τοῖς βιβλίοις, καὶ τὰ ἔργα αὐτῶν.

13 Καὶ ἔδωκεν ἡ θάλασσα τὰς ἐν αὐτῇ νεκρὰς, καὶ ὁ θάνατος καὶ ὁ ἄδης ἔδωκαν τὰς ἐν αὐτοῖς νεκρὰς· καὶ ἐκρίθησαν ἕκαστος καὶ τὰ ἔργα αὐτῶν.

14 Καὶ ὁ θάνατος καὶ ὁ ἄδης ἐβλήθησαν εἰς τὸ λίμνην τῆς πυρὸς. ἕτερός ἐστιν ὁ δεύτερος θάνατος·

15 Καὶ εἴ τις ἔχουσαν αὐτῇ βίβλον τῆς ζωῆς γεγραμμένης, ἐβλήθη εἰς τὸ λίμνην τῆς πυρὸς.

Κεφ. κα'. 21.

1 Καὶ εἶδον οὐρανὸν καμινὸν καὶ γῆν καμινῶν· ὁ γὰρ πᾶσι τοῖς οὐρανοῖς καὶ ἡ πᾶσι τῇ γῆ περιήλθε· καὶ ἡ θάλασσα ὅσα ἐστὶν ἐπὶ.

2 Καὶ ἐγὼ Ἰωάννης εἶδον τὴν πόλιν τὴν ἁγίαν, Ἰερουσαλὴμ καμινῶν, καὶ ἐβαδίσθησαν ἀπὸ τοῦ Θεοῦ

Θεός

Θεὸς ἐκ τῆς ἔρανῆς, ἠτοιμασθηδύλω ὡς νύμφῳ κρησμηδύλω τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς.

3 Καὶ ἤκουσα φωνῆς μεγάλης ἐκ τῆς ἔρανῆς, λεγούσης· Ἰδὲ ἡ σκηνὴ τοῦ Θεοῦ μετ' ἡμῶν, καὶ σκηνώσεται μετ' αὐτῶν, καὶ αὐτοὶ λαοὶ αὐτῆς ἔσονται, καὶ αὐτὸς ὁ Θεὸς ἔσται μετ' αὐτῶν, Θεὸς αὐτῶν.

4 Καὶ ἐξελίψεται ὁ Θεὸς πᾶν δάκρυον ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν, καὶ ὁ θάνατος οὐκ ἔσται ἐπ' αὐτοὺς πῖθος, ἔτι κραυγὴ, ἔτι πόνος οὐκ ἔσται ἐπ' αὐτοὺς, ὅτι τὰ ὄψοι ἀπῆλθον.

5 Καὶ εἶπεν ὁ κλητὸς ἐπὶ τῆς θρόνου· Ἰδὲ, κρησὰ πάντα ποιῶ. Καὶ λέγει μοι· Γράψον· ὅτι ἔτι οἱ λόγοι ἀληθινοὶ καὶ πιστοὶ εἰσι.

6 Καὶ εἶπέ μοι· Γέγρανε, ἐγὼ εἰμι τὸ Α καὶ τὸ Ω, ἡ ἀρχὴ καὶ τὸ τέλος. ἐγὼ τῷ διψῶντι δώσω ἐκ τῆς πηγῆς τοῦ ὕδατος τοῦ ζῶντος δωρεάν.

7 Οἱ νικῶν κληρονομήσει πάντα, καὶ ἔσται αὐτῷ Θεός, ὁ αὐτὸς ἔσται μοι ὁ ὕψος.

8 Διψοῖς καὶ ἀπίστοις ἔδοδελοσθηδύμοις καὶ φονεῦσι καὶ πορνοῖς καὶ φαρμακεῦσι καὶ εἰδωλολάτραις, καὶ πᾶσι τοῖς ψεύδεσι, τὸ μέρους αὐτῶν ἐν τῇ λίμνῃ τῇ κρησμηδύμῃ πυρὸς καὶ θείω, ὃ ἐπὶ ὄψοι θάνατος.

9 Καὶ ἦλθε πρὸς με εἰς τὸ ἐπὶ τὰ ἀγάλων τῶν ἐχόντων ζωὴν ἐπὶ φιάλας ζωὴς γεμίσσας τῶν ἐπὶ τὰ πηλῶν τῶν ἐχόντων· καὶ ἐλάλητε μετ' ἐμοῦ,

ἡμεῖς, λέγον· Δεῦρο, δείξω σοι τὸ νόμφλον τῶν δρόμων τῶν γυναικῶν.

- 10 Καὶ ἀπένεικέ με εἰς πύργον ἐπὶ ὄρθομείζον καὶ ὑψηλόν, καὶ ἐδήξέ μοι τὸ πόλιον πύργον μεζάλλιον, τὸ ἄγιον ἱερουσαλήμ, καὶ ἔβαινασαν ἐκ τῶν ἑβραίων ἀπὸ τοῦ Θεοῦ.
- 11 Ἐχουσιν τὸ δόξαν τοῦ Θεοῦ, καὶ ὁ Φωστὴρ αὐτῆς ὄμοιον λίθῳ πριωζώτῳ, ὡς λίθῳ ἰάσπιδι κρυφεικλίζοντι.
- 12 Ἐχουσὶν τετάρτος μείζον ἐϋψηλόν, ἔχουσιν πυλῶνας δώδεκα, καὶ ἐπὶ τοῖς πυλῶσιν ἰσχυράς δώδεκα, καὶ ὀνόμαζα ἰπιγαρχαμάρια, αἱ εἰσι τῶν δώδεκα φυλῶν τῶν υἱῶν Ἰσραήλ.
- 13 Ἀπὸ ἀναβλήτης, πυλῶνες τρεῖς ἀπὸ βορρῶν, πυλῶνες τρεῖς ἀπὸ νότου, πυλῶνες τρεῖς ἀπὸ δυσμῶν, πυλῶνες τρεῖς.
- 14 Καὶ τὸ τεῖχος τῆς πόλεως ἔχον ἡμελίους δώδεκα, καὶ ἐν αὐτοῖς ὀνόμαζα τῶν δώδεκα ἀποστόλων τοῦ δρόμου.
- 15 Καὶ ὁ λαλῶν μετ' ἡμεῖς, εἶχε κράμαον χρυσῶν, ἵνα μετρήσῃ τὸ πόλιον καὶ τὰς πυλῶνας αὐτῆς, ἐν τῷ τείχῳ αὐτῆς.
- 16 Καὶ ἡ πόλις τετράγωνον κείται, καὶ τὸ μῆκος αὐτῆς τοσούτον ἐστὶν ὅσον καὶ τὸ πλάτος, καὶ ἐμέτρησε τὸ πόλιον τῷ κράματι ἐπὶ σταδίους δώδεκα χιλιάδων· τὸ μῆκος ἐν τῷ πλάτῳ καὶ τὸ ὑψὺς αὐτῆς ἴσται ἐπὶ.
- 17 Καὶ ἐμέτρησε τὸ τεῖχος αὐτῆς ἑκατόν

πεντα-

τεσσαρακονταεισαρων πηχῶν, μέτρον ἀνθρώπου, ὃ ἐστὶν ἀγγέλου.

18 Καὶ ἡ πόλις ἐκδομησὶς ἔσται τείχεος αὐτῆς, ἰαασπις· καὶ ἡ πόλις χρυσοῖον καθαρόν, ὁμοίαν ὑάλῳ καθαρῷ.

19 Καὶ οἱ θεμέλιοι ἔσται τείχεος τῆς πόλεως παντὶ λίθῳ πρῶτον κειροσμηθῆναι· ὁ θεμέλιος ὁ πρῶτος, ἰαασπις· ὁ δεύτερος, σάπφειρος· ὁ τρίτος, χαλκηδών· ὁ τέταρτος, σμάραγδος.

20 Ὁ πέμπτος, σαρδόνιξ· ὁ ἕκτος, σιδήριος· ὁ ἕβδομος, χρυσόλιθος· ὁ ὄγδοος, βήρυλλος· ὁ ἔνατος, τοπάζιον· ὁ δέκατος, χρυσόπρασος· ὁ ἑνδέκατος, ὑάκινθος· ὁ δωδέκατος, ἀμέθυστος.

21 Καὶ οἱ δώδεκα πυλώνες, δώδεκα μαργαρίται, ἀνὰ εἰς ἕκαστον τῶν πυλῶνων ἡ πόλις ἐκδομησὶς· καὶ ἡ πλάτεια τῆς πόλεως, χρυσοῖον καθαρόν, ὡς ὑάλῳ διαφανές.

22 Καὶ ναὸν ὄσκει εἶδεν ἐν αὐτῇ· ὁ γὰρ Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ναὸς αὐτῆς ἐστὶν, καὶ τὸ θρόνον.

23 Καὶ ἡ πόλις οὐ χρείαν ἔχει ἑλισσῆς καὶ ὄρεος καὶ ἰσθμοῦ, ἵνα φαίνωσιν ἐν αὐτῇ· ἡ γὰρ δόξα τοῦ Θεοῦ ἐφώτισεν αὐτήν, καὶ ὁ λύχνος αὐτῆς τὸ θρόνον.

24 Καὶ τὰ ἔθνη τῶν σωζομένων ἐν τῇ φωτὶ αὐτῆς περιπατήσουσι· καὶ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς φέρουσι τὰ δόξα ἐν τῇ πρῶτῃ αὐτῶν εἰς αὐτήν.

25 Καὶ

25 Καὶ οἱ πωλῶνες αὐτῆς ἔμην κληρονομοῦσιν
ἡμέρας· ἡμεῖς γὰρ οὐκ ἔσμεν ἐκεῖ.

26 Καὶ εἴσασι τὸ δόξαν καὶ τὸ πρῶτον τῶν ἰθνηῶν
εἰς αὐτῶν.

27 Καὶ ἔμην εἰσέλθη εἰς αὐτῶν πᾶν κρηθῆν,
καὶ ποιῆν βδέλυγμα, ἐν ψεύδος· εἰ μὴ οἱ γε-
γραμμῆνοι ἐν ταῖς βίβλοις τῆς ζωῆς ἔσονται.

Κεφ. κβ'. 22.

1 Καὶ εἰδὼς ἐμοὶ καθαρόν ποταμὸν ὕδατος
ζωῆς, λαμπρὸν ὡς κρύσταλλον, ἐκπο-
ρεύομενον ἐκ τοῦ θρόνου τοῦ Θεοῦ, καὶ τῆς θρόνου.

2 Ἐν μέσῳ τῆς πλάτειας αὐτῆς, καὶ ἔσμεν πο-
ταμοῦ, ἐν τεύχῳ καὶ ἐν τεύχῳ, ξύλον ζωῆς,
ποιῆν καρπὸς δώδεκα, καὶ ἑκάστη μῆνα ἕνα ἕκαστον
ἀποδίδῃν τὸ καρπὸν αὐτῆς· καὶ τὰ φύλλα τῆς
ξύλου εἰς θεραπείαν τῶν ἰθνηῶν.

3 Καὶ πᾶν καθαρότητα οὐκ ἔσμεν ἐπὶ καὶ ὁ
θρόνος τοῦ Θεοῦ ἔσμεν ἐν αὐτῇ ἔσμεν· καὶ οἱ
ἄγγελοι αὐτῆς λατρεύουσιν αὐτῇ.

4 Καὶ ὄψονται τὸ πρόσωπον αὐτῆς, ἐν τῷ
ὄνομα αὐτῆς ἐπὶ τῶν μετώπων αὐτῶν.

5 Καὶ ἡμεῖς οὐκ ἔσμεν ἐκεῖ· καὶ χρείαν οὐκ
ἔχουσι λόγου καὶ φωτὸς ἡλίου, ὅτι Κύριος ὁ
Θεὸς φωτίζει αὐτὰς· καὶ βασιλεύουσιν εἰς
τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων.

6 Καὶ εἶπέ μοι· Οὗτοι οἱ λόγοι πιστοὶ ἐσ-
τηνοὶ· καὶ Κύριος ὁ Θεὸς τῶν ἁγίων περὶ
τῶν ἀπέστρεψε τὸ ἄγγελον αὐτῆς δεῖξαι τοῖς
ἄγγελοις

- δέλοις αὐτῆ ἀ δει γηϊόταυ ἐν πέτῃ.
 7 Ἰδὲ, ἔρχομαι ταχύ· μακάριοι οἱ τηροῦν-
 τες λόγους τῆ βιβλίου τούτου.
 8 Καὶ ἐγὼ Ἰωάννης ὁ βλέπων ταῦτα καὶ ἀ-
 κέων· καὶ ὅτε ἤκουσα καὶ ἑώρακα, ἔπεσον
 προσκυνοῦσα ἔμπροσθεν τοῦ ποδῶν τοῦ ἀγγέ-
 λου τοῦ δεξιούτου μου ταῦτα.
 9 Καὶ λέγει μοι· Ὁρα μὴ· συνδουλός σου
 γάρ εἰμι, καὶ τῶ ἀδελφῶν σου τῶν θεοφορητῶν καὶ
 τῶν τηρούντων τὰς λόγους τῆ βιβλίου τούτου.
 τῷ θεῷ προσκυνοῦσιν.
 10 Καὶ λέγει μοι· Μὴ σφραγίσῃς τὰς λό-
 γους τῆ βιβλίου τούτου· ὅτι ὁ καιρὸς ἐγγύς ἐστιν.
 11 Ὁ ἀδικῶν, ἀδικησάτω ἔτι· καὶ ὁ ῥυπαρῶν,
 ῥυπαρῶν ἔτι· καὶ ὁ δίκαιος, δικαιοσύνην
 ἔτι· καὶ ὁ ἅγιος, ἁγιασθήτω ἔτι.
 12 Καὶ ἰδὲ, ἔρχομαι ταχύ· καὶ ὁ μισθός μου μετ’
 ἐμοῦ, ἀποδοῦναι ἕκαστῷ ὡς τὸ ἔργον αὐτοῦ ἔσται.
 13 Ἐγὼ εἰμι τὸ Α καὶ τὸ Ω, ἀρχὴ καὶ τέλος,
 ὁ πρῶτος καὶ ὁ ἔσχατος.
 14 Μακάριοι οἱ ποιοῦντες τὰς ἐντολάς αὐ-
 τῆ, ἵνα ἔσται ἡ ἐξουσία αὐτῶν ἐπὶ τὸ ξύλον τῆ
 ζωῆς, καὶ τοῖς πυλῶσιν εἰσέλθωσιν εἰς τὴ πόλιν.
 15 Ἐξω δὲ οἱ κύνες καὶ οἱ φαρμακοὶ καὶ οἱ
 πόρνοι καὶ οἱ φονεῖς καὶ οἱ εἰδωλολάτραι, καὶ
 πᾶς ὁ φιλῶν καὶ ποιῶν ψεῦδος.
 16 Ἐγὼ Ἰησοῦς ἔπεμψα τὸν ἀγγέλον μου μαρ-
 τυρῆσαι

τυρῆσαι

πυρῆσαι ὑμῖν ταῦτα ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας.
ἐγὼ εἰμι ἡ ῥίζα καὶ τὸ γένος τοῦ Δαβὶδ, ὁ ἀστὴρ
ὁ λαμπρὸς καὶ ὀρθρινός.

17 Καὶ τὸ πνεῦμα καὶ ἡ νύμφη λέγουσιν· Ἐλ-
θέ. καὶ ὁ ἀκούων εἰπάτω· Ἐλθέ. καὶ ὁ διψῶν
ἐλθέτω, καὶ ὁ θέλων λαμβανέτω τὸ ὕδωρ
ζωῆς δωρεάν.

18 Συμμεμαρτυρήσαμε ἡμεῖς παντὶ ἀκούοντι τὰς
λόγους τῆς προφητείας τοῦ βιβλίου τούτου, ἐάν
τις ἐπιθεῖ ἄλλο πρὸς ταῦτα, ἐπιθήσει ὁ Θεὸς ἐπ'
αὐτὸν τὰς πληγὰς τὰς γεγραμμένας ἐν βι-
βλίῳ τούτῳ·

19 Καὶ ἐάν τις ἀφαιρῇ ἀπὸ τῶν λόγων βίβλου
τῆς προφητείας ταύτης, ἀφαιρήσει ὁ Θεὸς τὸ
μέρος αὐτοῦ ἀπὸ βίβλου τῆς ζωῆς, καὶ ἐκ τῆς πό-
λεως τῆς ἁγίας, καὶ τῶν γεγραμμένων ἐν βι-
βλίῳ τούτῳ.

20 Λέγει ὁ μαρτυρῶν ταῦτα· Ναὶ ἔρχομαι
πρὸς Ἀμείν· Ναὶ ἔρχεσθε Κύριοι Ἰησοῦ.

21 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ
μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

Τ Ε Λ Ο Σ.

ΤΟΥΤ

ΤΟΥ ΚΑΤΑ ΜΑΤΘΑΙΟΝ

Εὐαγγέλιον πρὸς κεφάλαια.

- α Περὶ τῶν μαθῶν.
β Περὶ τῶν ἀναρεθέντων παιδίων.
γ Πρῶτον Ἰωάννης ἐκήρυξε βασιλείαν ἐ-
σθνῶν.
δ Περὶ τῆς διδασκαλίας τοῦ Χριστοῦ.
ε Περὶ τῶν μακαρισμῶν.
ς Περὶ τοῦ λεπτοῦ.
ζ Περὶ τοῦ ἐκθρονιστοῦ.
η Περὶ τῆς πενήτητος Πέτρας.
θ Περὶ τῶν ἰαθέντων ἀπὸ ποικίλων νόσων.
ι Περὶ τοῦ μὴ ἐπιτερομενὸς ἀκροαθῆναι.
ια Περὶ τῆς ἐπιλήσεως τοῦ ὕδατος.
ιβ Περὶ τῶν δύο δαιμονιζομένων.
ιγ Περὶ τοῦ ὄρατου.
ιδ Περὶ τοῦ Ματθαίου.
ιε Περὶ τοῦ θυγατρὸς τοῦ ἄρχισυναγωγῆ.
ισ Περὶ τῆς αἰμερροῦσης.
ιζ Περὶ τῶν δύο τυφλῶν.
ιη Περὶ τοῦ δαιμονιζομένου κωφοῦ.
ιθ Περὶ τῆς τῆς ἀποστόλων ἀφίστατης.
κα Περὶ τῶν ἀποσταλέντων ὄρατο Ἰωάννη.
κβ Περὶ τοῦ ξηρὰν ἔχοντος τῆς χεῖρος.
κγ Περὶ τοῦ δαιμονιζομένου τυφλοῦ καὶ κωφοῦ.
κδ Περὶ τῶν ὄρατου.
κε Περὶ

- κε Περὶ Ἰωάννου καὶ Ἰηρώδους.
 κς Περὶ τῶν πέντε ἄρτων ἔτι δύο ἰχθύων.
 κζ Περὶ τῆς ἐν θαλάσῃ περὶπαΐτης.
 κη Περὶ τῆς Ὠρθόδοξου τῆς ἐν Ἑλλάδι τῆς Θεοῦ.
 κθ Περὶ τῆς Χαναναίας.
 λ Περὶ τῆς θεραπευθέντων ὄχλων.
 λα Περὶ τῶν ἐπὶ ἄρτων.
 λβ Περὶ τῆς ζύμης τῆς φαρισαίων.
 λγ Περὶ τῆς ἐν Καισαρείᾳ ἐπερωλήσεως.
 λδ Περὶ τῆς μετὰ μνημόνευσης τῆς Χερσῆ.
 λε Περὶ τῆς σελιωιαζομένης.
 λς Περὶ τῶν αἰτάντων τὰ δίδραχμα.
 λζ Περὶ τῶν λεγόντων, τίς μείζων.
 λη Περὶ τῆς ἑκατὸν ὠρθόδοξου τῆς Ὠρθόδοξου.
 λθ Περὶ τῆς ὀφείλοντι μύρια τέσσαρα.
 μ Περὶ τῶν ἐπερωτησάντων, εἰ ἔξεστιν ἀπολυ-
 σαι τὴν γυναῖκα.
 μα Περὶ τῆς ἐπερωτήσαντι τὴν πλῆθος τῆς Ἰησοῦ.
 μβ Περὶ τῶν μισθολογῶν ἐργατῶν.
 μγ Περὶ τῶν ἡῶν Ζεβεδαίου.
 μδ Περὶ τῶν δύο τυφλῶν.
 με Περὶ τῶν οἰκῶν καὶ τῆς πώλης.
 μς Περὶ τῶν τυφλῶν καὶ χωλῶν.
 μζ Περὶ τῆς ξηραθείσης συκῆς.
 μη Περὶ τῶν ἐπερωτησάντων τὸ Κύριον ἄρχιε-
 ρέων ἔτι πρεσβυτέρων.
 μθ Περὶ τῶν δύο ἡῶν τῆς Ὠρθόδοξου.
 ν Περὶ τῆς ἀμπελῶν.

να Περὶ

- να Περὶ τῶν κικληρμένων εἰς τὸ γάμον.
 νβ Περὶ τῆς ἐπιρωλήσεως τῶν Διδυμῶν καὶ τῆς κήστου.
 νγ Περὶ τῶν Σαδδουκαίων.
 νδ Περὶ τῆς ἐπιρωλήσεως τομικῶν.
 νε Περὶ τῆς Κυρίας ἐπιρωλήσεως.
 νς Περὶ τῆς πελαγισμῶν γραμματέων καὶ Φα-
 ροποιῶν.
 νζ Περὶ τῆς σωτελείας.
 νη Περὶ τῆς ἡμέρας καὶ ὥρας.
 νθ Περὶ τῶν δέκα παρθένων.
 ξ Περὶ τῶν τὰ τάλαντα λαβόντων.
 ξα Περὶ τῆς ἐλεύσεως τοῦ Χριστοῦ.
 ξβ Περὶ τῆς ἀληθείας τοῦ Κυρίου μύρου.
 ξγ Περὶ τῆς πίστεως.
 ξδ Περὶ τῆς μουσικῆς δείπνου.
 ξε Περὶ τῆς ὁμοδοσίας τοῦ Ἰησοῦ.
 ξς Περὶ τῆς ἀνέστησεως τοῦ Πέτρου.
 ξζ Περὶ τῆς ἰσθμῶν μετὰ μελείας.
 ξη Περὶ τῆς αἰτήσεως τοῦ σώματος τοῦ Κυρίου.

ΤΑ ΚΕΦΑΛΑΙΑ ΤΟΥ
 ΚΑΙ ΜΑΡΚΟΥ ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΥ.

- α Περὶ τῆς δαιμονιοζουμῶν.
 β Περὶ τῆς πενήτητος τοῦ Πέτρου.
 γ Περὶ τῶν ἰαφείτων ἀπὸ ποικίλων νόσων.
 δ Περὶ τῆς λεπτεῶν.
 ε Περὶ τῆς ὁμοδοσίας.
 ς Περὶ τῆς ἀδελφότητος τῶν τελόντων.

ζ Περὶ

- ζ Περὶ τῆς ἐκείνου ἐκείνου τῆς χείρου.
 η Περὶ τῶν ἀποστόλων ἐκείνου.
 θ Περὶ τῆς ἀπορίας τῆς ἀπορίας.
 ι Περὶ τῆς ἐπιλημῆσεως τῶν ὑδάτων.
 ια Περὶ τῆς λεγεῶν.
 ιβ Περὶ τῆς θυγατρὸς τῆς ἀρχιπρωτομάχου.
 ιγ Περὶ τῆς αἰμορροῦσεως.
 ιδ Περὶ τῆς ἀποστόλων ἀπορίας.
 ιε Περὶ Ἰωάννου καὶ Ἡρακλῆος.
 ις Περὶ τῶν πέντε ἀρτίων καὶ τῶν δύο ἰχθύων.
 ιζ Περὶ τῆς ἐν θαλάσῃ ἀπορίας.
 ιη Περὶ τῆς ἀπορίας τῆς ἐντολῆς τῆς Θείας.
 ιθ Περὶ τῆς Συροφονίσεως.
 κ Περὶ τῆς μαγιάλας.
 κα Περὶ τῶν ἐπὶ ἀρτίων.
 κβ Περὶ τῆς ζύμης τῆς φαρισαίων.
 κγ Περὶ τῆς τυφλῆς.
 κδ Περὶ τῆς ἐν Καισαρείᾳ ἐπερωτήσεως.
 κε Περὶ τῆς μετὰ μωροφώσεως τῆς Ἰησοῦ.
 κς Περὶ τῆς σελήνιαζομένης.
 κζ Περὶ τῶν ἀπολογισμοῦν ἰς μέζων.
 κη Περὶ τῶν ἐπερωτησάντων τῆς Κύριον εἰ ἔξειεν
 ἀπολύσει τῆς γυναικός.
 κθ Περὶ τῆς ἐπερωτήσαντι τῆς ἀπορίας τῆς Ἰησοῦ.
 λ Περὶ τῶν ἑσθίων Ζεβεδαίου.
 λα Περὶ τῆς Βαρθολομαίου.
 λβ Περὶ τῆς πώλης.
 λγ Περὶ τῆς ἐκείνου ἐκείνου ἐκείνου.

Ο Ο

λδ Περὶ

- λδ Περὶ ἀμνηστεικίας.
 λε Περὶ τῶν ἐπερωτησάτων τὸ Κύριον δόξης-
 ρέων καὶ προσκυτέρων.
 λς Περὶ τῶ ἀμπελῶν.
 λζ Περὶ τῶ ἐπερωτησάτων τὸ Κύριον ἀπὸ τὸν
 κῆνσον.
 λη Περὶ τῶ Σαδδουκαίων.
 λθ Περὶ τῶ γραμματέως.
 μα Περὶ τῶ Κυρίου ἐπερωτήσεως.
 μαβ Περὶ τῆς ταῖ δύο λεπταῖ βαλέσης.
 μαγ Περὶ σωτηλείας.
 μαδ Περὶ τῆς ἀληθείας τὸ Κύριον μύρω.
 μαε Περὶ τῶ πάχα.
 μας Περὶ τῶ ἀφάδσεως ἀποφηλεία.
 μαζ Περὶ δόνησεως Πέτρου.
 μαη Περὶ τῶ αἰτήσεως τῶ σώματι τῶ Κυρίου.

ΤΑ ΚΕΦΑΛΑΙΑ ΤΟΥ
 καὶ Λόγου Εὐαγγελίου.

- α Περὶ τῶ ἀπογραφῆς.
 β Περὶ τῶ ἀγραμμένων ποιμένων.
 γ Περὶ τῶ Συμεῶν.
 δ Περὶ Ἄνης τῶ ἀποφῆπθ.
 ε Περὶ τῶ γλυκοῦς ῥήματι τῶ ἰωάννου.
 ς Περὶ τῶ ἐπερωτησάντων τὸ ἰωάννου.
 ζ Περὶ τῶ πρῶτος τῶ Χριστοῦ.
 η Περὶ τῶ ἐχθρῶ πνεύματι δαιμονίου.

θ Περὶ

- θ Περὶ τῆς πικροῦς ἔπι Πέτρῳ.
 ι Περὶ τῶν ἐκέντων δὲ ποικίλων νότων.
 ια Περὶ τῆς ἀρχῆς τῶν ἰχθύων.
 ιβ Περὶ ἑλασπῶν.
 ιγ Περὶ τῆς ὀφθαλμικῆς.
 ιδ Περὶ Λοῦι ἔπι τελοῦς.
 ιε Περὶ ἑξήκων ἐξήκων ἔπι χείρας.
 ις Περὶ τῆς τῶν δόσολων ἐκλογῆς.
 ιζ Περὶ τῆς μεμελεσμένων.
 ιη Περὶ ἑκατοντάρας.
 ιθ Περὶ τῆς ἕξ τῆς χηρας.
 κ Περὶ τῆς ἀποσαλέντων ὀφθαλμικῆς.
 κα Περὶ τῆς ἀλέψιας ἔπι Κύριον μύρον.
 κβ Περὶ τῆς ὀφθαλμικῆς ἔπι σπειρονίον.
 κγ Περὶ τῆς ἐπιμήσεως τῶν ὑδάτων.
 κδ Περὶ ἑλασπῶν.
 κε Περὶ τῆς θυρατῆδος ἔπι ἀρχιτετακῆς.
 κς Περὶ τῆς αἱμορροῦσης.
 κζ Περὶ τῆς δόσολῆς τῶν δώδεκα.
 κη Περὶ τῆς πέντε ἀρτων καὶ τῶν δύο ἰχθύων.
 κθ Περὶ τῆς ἑκκυρίας ἐπιρωλήσεως.
 λ Περὶ τῆς μελαμορφώσεως ἑκκυρίας.
 λα Περὶ ἑσπλωμαζομῆς.
 λβ Περὶ τῶν ἀλογοζομῆων ἕως μείζων.
 λγ Περὶ ἑμὴ ἐπιτεπομῆς ἀπολαθῆν.
 λδ Περὶ τῶν ἀναδελφέντων ἐξδομήθη.
 λε Περὶ ἑπιρωλήσειονομικῆς.
 λς Περὶ ἑμπισόνιον εἰς τῆς ληταῖς.

- λζ Περὶ Μάρτυρας ἔ Μαρτύρας.
 λη Περὶ αἰσθητικῆς.
 λθ Περὶ τῆς ἐχθροῦ δαιμονίου καὶ φόν.
 μα Περὶ τῆς οὐκ ἔχοντος ἐπιπέρας Φανίου.
 μα Περὶ τῆς αἰτέντων σημείων.
 μαβ Περὶ τῆς Φαρισσαίων καὶ καλέσων τῆς Κυρίου.
 μυ Περὶ τῆς πάλαιου καὶ τῆς νεωτέρων.
 μδ Περὶ τῆς ζύμης τῆς Φαρισσαίων.
 με Περὶ τῆς ἑλόντος μερίσας καὶ τῆς κληρονομίαν.
 μες Περὶ τῆς ἀφόρητον ἢ χύμα πλεονεξίας.
 μεζ Περὶ τῆς Γαλιλαίων ἐ τῶν ἐν τῷ Σιλωάμ.
 μη Περὶ τῆς ἐχέσης πνεύματος ἀδελφείας.
 μηθ Περὶ τῶν ὀφθαλμῶν.
 ν Περὶ τῆς ἐπιπέρας τῶν εἰς ἀλίαν οἰσιν ὀφθαλμοί.
 να Περὶ τῆς ἐπιπέρας τῶν Ἰησοῦ καὶ Ἡρακλίου.
 νβ Περὶ τῆς ὀφθαλμῶν.
 νγ Περὶ τῆς μὴ ἐξαπῶν τῶν ἀποστολικῆς.
 νδ Περὶ τῆς καλεσμένων εἰς τὸ δεῖπνον.
 νε Περὶ οἰκονομίας πύργου ὀφθαλμῶν.
 νς Περὶ τῆς ἐκατὸν ἀποστόλων ὀφθαλμῶν.
 νζ Περὶ τῆς ἀποδημῆσαι εἰς χώραν μακρὰν.
 νη Περὶ τῆς οἰκονομίας τῆς ἀδικίας.
 νθ Περὶ τῆς πλεονεξίας καὶ τῆς λαζάρου.
 ξ Περὶ τῆς δέκα λεπτῶν.
 ξα Περὶ τῆς κελῶν τῆς ἀδικίας.
 ξβ Περὶ τῆς Φαρισσαίων καὶ τῆς πλεονεξίας.
 ξγ Περὶ τῆς ἐπιπέρας τῶν πλεονεξίας τῆς Ἰησοῦ.
 ξδ Περὶ τῆς τυφλῶν.
 ξε Περὶ τῆς Ζακχαίου.

ζς Περὶ

- ξεσ Περι τ̄ ποροθέντες λαθῶν ἐκκλησίᾳ βασιλείαν.
 ξεζ Περι τ̄ λαθῶν των τὰς μίας.
 ξη Περι τ̄ πύλων.
 ξεθ Περι τ̄ ἐπερωτησάντων τ̄ Κύριον ἀρχιε-
 ρείων καὶ γραμματέων.
 ο Περι τ̄ ἀρεπελών τ̄ ἐκδοχολή.
 οα Περι τῶν ἐκκαθέτων ἀφ̄ τ̄ κλύσον.
 οβ Περι τ̄ Σαδδουκαίων.
 ογ Περι τ̄, πῶς υἱὸς Δαβὶδ ἐστὶν ὁ Χριστός.
 οδ Περι τ̄ τὰ δύο λεπτὰ βαλύσης.
 οε Περι τ̄ στυτελείας ἐρώτησις.
 ος Περι τ̄ πύλων.
 οζ Περι τ̄ φιλονεικισάντων πὺς μείζων.
 οη Περι τ̄ ἐξαιτήσεως τ̄ σάβανᾶ, καὶ ἀντή-
 σεως Πέτρῳ.
 οθ Περι τῆς πατρ̄ ἐρώσε ἐξυτηνήσεως.
 π Περι τ̄ κρημνῶν γυναικῶν.
 πα Περι τ̄ μαθονοήσαι τ̄ λησι.
 πβ Περι τ̄ αἰτήσεως τ̄ σάβανᾶ τῆ Κυρίου.
 πγ Περι τῆ Κλεόπαι.

ΤΑ ΚΕΦΑΛΑΙΑ ΤΟΥ
 καὶ Ἰωάννου Εὐαγγελίου.

- α ΠΕΡΙ τ̄ ἐν Κανᾶ γάμου.
 β Περι τ̄ ἐκκληθέντων ἐκ τ̄ ἱερῶ.
 γ Περι τῆ Νικηδήμου καὶ Ἰησοῦ.
 δ Περι καθαρισμῶ ζήτησις.
 ε Περι τ̄ Σαμαρείτου.

- ς Περὶ τῆς ἡμῶν βασιλικῆς.
 ζ Περὶ τῆς τριάκοντα ἑξακτῶ ἱερῆς ἔκθεως ἐν τῇ ἀσθενείᾳ.
 η Περὶ τῶν πέντε ἄρτων καὶ τῶν δύο ἰχθύων.
 θ Περὶ τῆς ἐν θαλάσῃ σεισάτης.
 ι Περὶ τῆς ἐκ γλυκῆς τυφλῆς.
 ια Περὶ τῆς ἐξέρσεως τῆς Λαζάρου.
 ιβ Περὶ τῆς ἀλψύσεως τῆς Κύριον μύρου.
 ιγ Περὶ ὧν εἶπεν Ἰησοῦς.
 ιδ Περὶ τῶν ὄντων.
 ιε Περὶ τῶν περὶ τὸν Ἰησοῦν ἐκλιπῶν, καὶ ἐρωτησίων τῶν τῆς Φιλίππου.
 ις Περὶ τῆς νεκρῶν.
 ιζ Περὶ τῆς ὁρακλήσεως.
 ιη Περὶ τῆς αἰτίσεως τῆς Κυριακῆς σώματι.

ΕΚΘΕΣΙΣ ΚΕΦΑΛΑΙΩΝ
 τῶν Πράξεων Ἀποστόλων.

α Περὶ τῆς ἐξ ἀναστάσεως διδασκαλίας τῆς Χριστοῦ, καὶ ὁρακλήσεως πρὸς τοὺς μαθητάς, καὶ πρὸς ἐπαγγελίας τῆς ἐκείνου πνεύματος ἁγίου, ἧς τε καὶ τὸ πνεῦμα τῆς ἀναλήψεως τῆς Χριστοῦ, καὶ πρὸς τῆς ἐνδόξης δούτερας αὐτοῦ παρρησίας.

β Περὶ τῆς ἀφελουσίας πρὸς τοὺς μαθητάς, ἧς τε θανάτου ἐκδοτικῆς Ἰησοῦ τοῦ σωτῆρος. ἐν ᾧ, πρὸς ἀντιπροσωπίας Ματθαίου, κληρωθέντων καὶ τῶν ἀποστόλων.

γ Περὶ

γ Περὶ θείας ἔργου πλούτου ἐπιφοι-
τήσεως, ἐν ἡμέραις τῆς πεντηκστής ἡγουμένης εἰς
τὴν πιστοσύνην. ἐν ᾧ, Πέτρος καὶ ἰσχυροὶ ἀπὸ
τέσσα, ἐκ τῶν ἀποστόλων. ἀπὸ πάθους καὶ ἀναστά-
σεως καὶ ἀναλήψεως Χριστοῦ, δωρεῶν τε ἔργου
πλούτου. ἀπὸ πίστεως τῶν παρόντων, καὶ τῆς
ἀπὸ τῆς βαπτισματικῆς αὐτῶν σωτηρίας. ἀπὸ
ὁμοιοῦς κρινωφελῶν, καὶ ἀποστόλης τῶν πι-
στούωντων.

δ Περὶ τῆς ἐν Χριστῷ θεοπροπίας ἔργου
νεότητος χαλῶν, Πέτρος τε κατηχήσεως ἐλεγκτικῆς,
συμπαθητικῆς, καὶ συμβουλικῆς, ἀπὸ σπῆ-
ραίων αὐτῶν. ἐν ᾧ ἀπὸ ἐπιστάσις τῶν ἄρχιερέων
Ζήλων ἔργου ἰσχυροῦ. ἐκ κρίσεως ἔργου Πέ-
τρος τε ὁμολογία τῆς Χριστοῦ δωρεῶν τε καὶ
ἰσχυροῦ. ἀπὸ ἀπλήθους τῶν ἄρχιερέων, ὡς ἐδὲ
παρρησιαζόμενοι ἐπὶ τῷ ὀνόματι τῆς Χριστοῦ καὶ
ἀνέσεως τῶν ἀποστόλων ὁμολογία ἀπὸ τῆς ἐκ-
κλησίας ὑπὲρ τῶν ἀποστόλων πίστεως καρτερίας.

ε Περὶ ὁμοψόχου καὶ καθολικῆς κρινωφελῶν
ἔργου πιστοσύνην. ἐν ᾧ, ἀπὸ Ἀνανίας καὶ Σαπ-
φείρης, ἐκ πικρῶν αὐτῶν τελοῦντες.

ς Ὅτι τὰς ἀποστόλους ἐμολογηθέντας ἐν τῷ δε-
σμοτηρίῳ, ἀπὸ Κυρίου νύκτωρ ἐξέωσεν, ἐπι-
τρέψας ἀκωλύτως κηρύσσειν τὸ Ἰησοῦν. ἐν ᾧ, ὅτι
τῆ ἐξῆς αὐτοὶ οἱ ἄρχιερεῖς πάλιν συλλαβόμε-
νοι, ἐφ' ᾧ μηκέτι διδάσκουν, μαρτυροῦντες ἀπέ-
λυσαν. Γαμαλιήλ γνάμη πιστὴ ἀπὸ τῶν ἀπο-
στόλων.

πῶ σωτηρίαν, δῆλον ἐκ τῆς κτ' ἢ Εὐνῶχου
ὑποθέσεως.

17 Περὶ τῆς ἐρανοῦσιν θείας κλήσεως Παύ-
λου, εἰς ἀποστόλων Χριστῶ. ἐν αἷ, περὶ ἰαύσεως καὶ
βαπτίσματι Παύλου Διδ. Ἀνανίας κτ' ἀποστο-
λῶν Θεῶν παρρησίας τε αὐτῶ καὶ σπουδῆς
τῆς Διδ. Βαρνάβου πρὸς τὰς ἀποστόλους.

18 Περὶ Λίβου ἀφ' ἀλυκῆ ἰαθέντος ἐν Λύδ-
δῃ Διδ. Πέτρος. ἐν αἷ, περὶ Ταβιθά τῆς φιλο-
χόου, καὶ ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν ὁ Πέτρος Διδ. ἀποστο-
λῶν ἐν Ἰσπανίᾳ.

19 Περὶ Κορινθίους, ὅσα τε πρὸς αὐτὸν ὁ ἀγ-
γελῶ, ἔ' ὅσα πάλιν πρὸς Πέτρον ἐρανοῦσιν περὶ
κλήσεως ἰδιῶν ἰστέθη. ἐν αἷ, ὅτι μὴ καταλείψῃς ὁ
Πέτρος ἦλθε πρὸς Κορινθίους ἰπανέληφες αὐ-
τῶ ἀγγελῶ ἐπιμαρτύρησε καὶ ὑφηγήσατο Κορινθ-
λίῳ. Πέτρος κατήχησε εἰς Χριστὸν, τῶτε ἀγί-
στῶ καὶ ἐπὶ τὰς ἀκρόνους δωρεῶν. καὶ ὅπως
ἰσοπέδησεν τότε αἱ εἰς ἰδιῶν πῆσι Διδ. Πέτρος.

20 Ὡς Πέτρος πῆ κατὰ τῆς καὶ πῆ ἰαύσεως τῶν
γεγονότων διηγέται τοῖς ἀποστόλοις Διδ. κριθείσῃ
πρὸς αὐτὸν, τῶτε καὶ Βαρνάβου ἐκπρι-
ψασί πρὸς τὰς ἐν Ἀντιοχείᾳ ἀδελφούς.

21 Προφητεία Ἀγαθῶν περὶ λιμῶν οἰκονομικ-
κῆς καὶ καρποφορίας, πρὸς τὰς ἐν Ἀντιοχείᾳ
ἀδελφούς.

22 Ἰακώβου πῆ ἀποστόλου καὶ σφραγῆ. ἐν
αἷ, Πέτρος συλλήψῃς πρὸς Ἡρακλίῳ, ὅπως τε
αὐτὸν

αὐτὸν ὁ ἀγγελοῦ θείου κελύτματι ἐξείλετο
πάν δεσμῶν· καὶ ὁ Πέτρος ἐμφανὴς ἡμῶν
ἐκτεταρ τοῖς ἀδελφοῖς, ὑπαυχοῦρσεν· ἐν ᾧ,
ὡς τῆς τῆ φυλάκων κηλάσεως· καὶ μετέπειτα
ὡς τῆ τῆ ἀπόδος Ἡρώδης πικρῶς τε καὶ ὀλεθρῶς
καίλασροφῆς.

ιδ Αποστολή Βαρνάβα καὶ Παύλου πρὸς τῆ
θείου πιδίματι εἰς Κύπρον· ὡς τε εἰργάσαντο
ἐν ὀνόματι Χριστοῦ εἰς Εὐλύμαν τῆ μαθήρι

κα Παύλου δὲ λαοῦ διδασκαλία εἰς Χριστόν,
ἔκτε τῆ νόμου καὶ κατεξῆς τῶν πρῶτων, ἰστορικῆ
καὶ διαγγελικῆ· ἐν ᾧ, ὅπ ἐ ἐλεγκτικῆ καὶ συλ-
λογιστικῆ. ὡς μετὰ τῆσεως τῆ κηρύτματι εἰς
παῖ ἔθνη. διωγμῶ τε ἐκτῶν ἐκείθεν, καὶ ἀφίξεως
εἰς Ἰχόνιον.

κα Ὅπως ἐν Ἰχόνιῳ κηρύξαντες τὸν Χρι-
στόν, πολλῶν τε πισύσαντων, ἐδιώχθησαν οἱ
ἀπίστολοι.

κβ Περὶ τῆ ἐν Λύτροις ἐκ ημεῖς καὶ ἰα-
θῆναι· ἀπὸ τῆ ἀποστόλων. διόπερ εἶναι τε ἔδοξαν
Θεοὶ καὶ παρῆναι τοῖς ἐγγυρῶις. ἔνθα δὴ καὶ
μετέπειτα λιπέζεται ὁ Παῦλο· ὡς τῆ ἰσ-
θαίων τῶν ἀσυρῆτόνων.

κγ Ὅτι ἐ δεῖ πειτέμνεομα τὰς ἐξ ἔθνων
πισύοντες δόγματι καὶ κρείσθ τῶν ἀποστόλων.
ἐν ᾧ, ἐπιστολή αὐτῶν πρὸς τὰς ἐξ ἔθνων, ὡς τῆ
φυλακίλων. ἀνπῆρησις Παῦλο πρὸς Βαρνά-
βαν, ὡς Μάρκε.

κδ Περὶ

καὶ Περὶ τῆς καταχρήσεως Τιμωρίας, καὶ τῆς
καὶ ἀποκαλύψεως ἀφίξεως Παύλου εἰς Μακεδο-
νίαν. ἐν ᾧ, ὡς πείσεως καὶ σωτηρίας τινὸς γυ-
ναικὸς Λυδίας. καὶ ὡς ἰάσεως τῆς πνεύμα
πύθωνος ἐχέσης παιδίσκης, δι' ἧν τὸ Παῦλον
κατέβησαν οἱ δαίμονες. ὡς δὲ συμβαίνει
ἐκείσε σφραγίσαι τὸν ἥλιον, καὶ ὅπως πιστεύσας
ὁ εὐαγγελιστὴς, ἐν αὐτῇ τῇ νυκτὶ ἐβαπτίσθη
πανέναντον. ὅτι ὡς ἀκλήβητες ἐξήλθον τότε ἐκ
τῆς δεσμοφυλῆς οἱ ἀπόστολοι.

κε Περὶ πάσεως χρομῆς ἐν Θεσσαλονί-
κῃ, ὡς κηρύγματι ἕνεκα τῆς φυγῆς τῆς Παύλου εἰς
Βέροιαν, καὶ ἐξῆς εἰς Ἀθῆνας.

κς Περὶ τῆς ἐν Ἀθῆναις ἐπισημίας γραφῆς
Φιλοσόφου τε κηρύγματι, καὶ ὑπεθείας τῆς
Παύλου.

κζ Περὶ Ἀκύλα καὶ Πρακίλλης, καὶ τῆς Κο-
ρινθίων ἀπεθείας, τῆς τε καὶ ἀπογνώστης ἐπὶ
αὐτοῖς δόδοκίας τῆς Θεῶν ἀποκαλύψεως τῆς
Παύλου. ἐν ᾧ, ὡς Κρίστος ἀρχισυναγωγὸς,
πιστεύσας τὸν ἥλιον ἐπὶ τῆς πίστεως, καὶ βαπτί-
σθῆναι. ὅτι πάσεως κινήσεως ἐν Κορίνθῳ,
ὁ Παῦλος ὑπεχώρησεν· ἐλθὼν τε εἰς Ἐφέσον
καὶ διαλεχθεὶς, ἐξῆλθεν. ὡς Ἀπολλὸν ἀνδρὸς
λογίῃς τε καὶ πίστι.

κη Περὶ βαπτίσματος, καὶ τῆς τοῦ ἁγίου
πνεύματος δωρεῆς, δοθείσης ἀπὸ τῆς βαπτί-
σεως Παύλου τοῖς ἐν Ἐφέσῳ πιστεύσασιν. καὶ
ὡς

πρὸς ἰάσους ἔλασ. ἐν ᾧ, πρὸς τὸ ἦν Σκὺλᾶ·
ὅπως ἔδει ἐγχειρεῖν ἀπίστοις καὶ ἀναξίοις
τῆς πίστεως ἄνομόμοις, καὶ πρὸς ἰσομολογή-
σιως πῶν πιστόντων. πρὸς τῆς ἐν Ἐφέσῳ κί-
νησεως γένεως ὑπὸ Δημητρίους ἔδ' ἄγροκόπη
καὶ τῶν ἀποστόλων.

κθ Περίσθ Παύλου, ἐν ᾗ πρὸς θανάτου καὶ
ἀνακλήσεως Εὐτύχου ἀφ' ἁποστόλης ἐν Τρωά-
δι. πρὸς ἰνείσας τε αὐτῶ ποιμαντικῆ πρὸς τὸς ἐν
Ἐφέσῳ πρεσβυτέρους. ἐν ᾧ, πρὸς ἁπλῶς Παύλου
ἀπὸ Ἐφέσου ἀφ' ἑρὶ Καισαρείας καὶ Παλαιστίνης.

λ Αἰχμῶν πρὸς ἰνεία πρὸς τῶν συμποση-
μῶν τῶ Παύλου ἐν Ἱερουσαλήμ.

λα Παραίτησις ἰακώου πρὸς Παύλον, πρὸς
ἔρη δακεῖν κωλύειν Ἐβραῖους πρὸς ἰνεία.

λβ Περί τῆς ἐν Ἱερουσαλήμ καὶ Παύλου κί-
νησεως ἀπειρίας· ὅπως τε αὐτὸν ὁ χιλιάρχος
ἔπληθους ἐξαίρειται. ἐν ᾧ, Παύλου καὶ ἰακώου
πρὸς ἰακώου, καὶ τῆς εἰς ἀπόστολον αὐτῶ κλή-
σεως. πρὸς ἦν ὁ Ἀνανίας πρὸς τὸ Παύλον ἐν
Δαμασκῶ εἶπεν, ὅπως ἰακώου τε ἐφωτῆς Θεοῦ
ἄνομόμοις ποτὲ πρὸς αὐτὸν ἐν τῶ ἱερῶ. ὅτι
μέλλων ἐπὶ τέτοις ὁ Παύλος τυπῆσαι, εἶπὼς
ὅτι ἰακώου εἰσιν, ἀνείρη.

λγ Ὅσα Παύλου καὶ ἰακώου εἰς τὸ σινδριον,
ἐπιπέτε ἐεῖπε, καὶ ὁ ἄγροκόπως ἐπρᾶξε.

λδ Περί ἐπιπέτης μελετωμῆς ὑπὸ ἰα-
κώου καὶ Παύλου, καὶ μελετωμῆς αὐτῆς πρὸς
Ἰουσίαν.

Λυσίαν. ἐν ᾧ, ὅτι παρεπέμφθη ὁ Παῦλος πρὸς
ἡγεμόνι εἰς τὴν Καισαρείαν μετὰ φραγκωτῶν καὶ
γραμματέων.

λε Τερτύλλου πρὸς Παύλου κατηγορία, καὶ
αὐτοῦ ἀπολογία ἐπὶ τῷ ἡγεμόνι.

λς Περί τῆς Φήλικης ἀφαιρέσεως, καὶ τῆς
Φήσης παραγωγῆς· τῆς τε ἐπ' αὐτῆς ἀνακρί-
σεως Παύλου καὶ ἐφέσεως.

λζ Ἀρείωπι καὶ Βερνίκης παρασία καὶ
πεῦσις τῷ καὶ Παύλον. ἐν ᾧ, ἀπολογία Παύλου
ἐπ' αὐτῶν, πρὸς τῆς ἐν νόμῳ ἡρησκείας αὐτοῦ,
καὶ κλήσεως εἰς τὸ σύγκλητον. οἷς ἐδὲν ἀδικεῖ
Ἰσθαίης ὁ Παῦλος, Ἀρείωπι εἶφη τῷ Φήσῳ.

λη Πλῆθος Παύλου ἐπὶ Γόμῳ, κινδυνῶν τε
πλείεων καὶ μεγίστων πείρασθαι. ἐν ᾧ, παραί-
νεσις Παύλου πρὸς τοὺς σὺν αὐτῷ, πρὸς ἐλπί-
δοσπιρίας. ναύαρχον Παύλου, ὅπως τε δι-
εσώθησαν εἰς Μελίτην νῆσον· καὶ ὅσα ἐν αὐτῇ
ὁ Παῦλος ἐθαύμαζε γένηται.

λθ Ὅπως ἀπὸ Μελίτης εἰς Γόμῳ μετακινή-
τησεν ὁ Παῦλος.

μ Περί διαλέξεως Παύλου, τῷ πρὸς τοὺς ἐν
Γόμῳ Ἰσθαίης.

Τῆς πρὸς Ῥωμαίους ἐπιστολῆς.

Εὐαγγελικὴ διδασκαλία, πρὸς τὴν ἔξω χεί-
ρα Χριστοῦ καὶ τὴν ἐν χάριτι καὶ πρὸς ἐλπί-
δοσπιρίας καὶ πολιτείας πρὸς μεγαλειότης.

α Πρὸς

α Πρῶτον μὲν τὸ θεοείμιον, ὡς ἐκ κρίσεως τῆς
καὶ ἐθνῶν τῶν ἐφυλασσόντων τὰ φυσικά.

β Περὶ κρίσεως τῆς καὶ Ἰσραὴλ ἔμὴ φυ-
λάσσειν τὰ νομικά.

γ Περὶ ὑπερυψίως Ἰσραὴλ ἔμὴ τυγχάνουσι
ἐπαγγελίας.

δ Περὶ χάριτος δι' ἣς μόνον ἀνθρώποι δι-
καζοῦν, ἔμὴ χάριτος ἀπακεκλειμμένης ἀλλὰ καὶ
Θεοῦ δόσιν ἰσοπέτως, καὶ τὸν Ἀβραάμ τύ-
πον.

ε Περὶ τῆς ἀποκρίσεως ἐλπίδος.

ς Περὶ εἰσαγωγῆς ἔως σωτηρίας ἡμῶν
ἀνθρώπων Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἀπὸ τῆς πίστης ἔξαρ-
της γηλυῦς Ἀδάμ.

ζ Περὶ τῆς ὀφειλομένης ἐπὶ τῇ πίστι προ-
ξείας ἀγάθης.

η Ἐπανάληψις ὡς τῆς ἐν χάριτι ζωῆς.

θ Περὶ τῆς ὑπὸ νόμον καθ' ἑαυτοῦ κρίσεως ἀφ' ἧς
ἀμαρτίαν.

ι Περὶ τῶν ἐν ἀνθρωπίνῃ φύσει παπτῶν, ἀ-
δύνατον ποιούτων τὴν ὡς νόμον συμφω-
νίαν.

ια Περὶ τῆς ἀποδόσεως τῆς φυσικῶν παθη-
μάτων ἀφ' ἧς ὡς τὸ πνεῦμα σωφείας.

ιβ Ἐπανάληψις ὡς τῆς ἀποκρίσεως τοῖς
ἀγίοις δόξης.

ιγ Περὶ τῆς ὀφειλομένης ἀγάπης Χριστοῦ.

ιδ Περὶ ἐκπίπτουσης Ἰσραὴλ ἔμὴ ἀποβλητέ-
ν.

τϞ, καὶ κλήσεως τ̃ ἀληθῆς τ̃ ἐκλεχθέντϞ
μϞ τῶν ἐθνῶν.

ιε Ὅτι καὶ ἀπιστίαν ἢ ἐκπίωσιν ἀφ' τῆς εἰς
ἀγνοίαν ἐγκαταλείψεως, καὶ τ̃ μὴ ἀρμόζοντϞ
αὐτοῖς κηρύμωτϞ.

ισ Περὶ τ̃ σκοπεῖ κατ' ἀνέξεβλήθησαν, ὡς
δύπερον ἐπανελεθεῖν, ζηλοῦ τ̃ ἀθελημένων
ἐθνῶν σωζαθέντων τῷ πιστῷ Ἰσραήλ.

ιζ Παραίνεσις πρὸς τῆς πρὸς Θεὸν
καὶ ἀνθρώπους ἐν ᾧ, πρὸς τῆς εἰς ἀλλήλους
ὁμολοίας. πρὸς τῆς πρὸς Θεὸν λατρείας. πρὸς
τῆς πρὸς ἀνικητῆρας ἀνεξικακίας. πρὸς τῆς
πρὸς ἀρχοντας ὑποταγῆς. πρὸς σωφροσύνης καὶ
πραότητϞ. πρὸς τῆς ἐν βρώμασι καὶ ἡμέραις
ἀμάχως ἀγνοίας.

ιη Περὶ μιμήσεως τ̃ Χριστοῦ ἀνεξικακίας.

ιθ Περὶ τῆς λήττεργίας αὐτῆς τῆς ἐν ἀνα-
τολῇ καὶ δύσει.

Τῆς πρὸς Κορινθίους πρώτης.

Περὶ πλεόνων καὶ διαφορῶν ἢ ἐπιτολῆ διόρ-
θωσιν ἐχθ' τ̃ Κορινθίοις ἡμαρτημένων.

α Μετὰ τὸ πρησόμενον, πρὸς τ̃ μὴ διχνοεῖν
πρὸς ἀλλήλους ἐκ φιλοδοξίας τῆς ἐπὶ σοφίας
ἀνθρωπίνης. ἐν ᾧ, πρὸς θείας σοφίας. πρὸς λή-
ττεργῶν. πρὸς τ̃ μὴ κρινεῖν διδασκάλους. πρὸς
τ̃ μὴ ἐπαύεσθαι.

β Κατὰ

β Κατὰ πύργων κὶ πορείας, καὶ τῶν τῆς
κρηνομένων.

γ Περί τῃ μὴ δεῖσθαι δικῶν, κὶ ταῦτα ἐπι ἀ-
πίστω, ἐν ᾧ, καὶ τῇ μὴ περιούρῳ.

δ Περί γάμου κὶ χηρείας κὶ ἀγαμίας. ἐν ᾧ,
καὶ τῇ μὴ χωρίζεσθαι ἀνδρας τῶν γυναικῶν, μη-
δὲ εἰ ἀπίστω εἶεν οἱ ἕτεροι. καὶ ἀγρίας καὶ
διγαμίας.

ε Περί Διαφορῶν ἐδῶσμάτων, καὶ ἀπὸ τῆς
δαιμονικῆς ἐμβάσματος. ἐν ᾧ, καὶ τῆς ἐαυτῶν
πολυπλοκῆς συμφορῶν. καὶ τῇ μὴ κρηνο-
νῆν δαίμοσι. καὶ τῶν ἀδιαφορῶν ἐν δείπνοις
καὶ κλήσειν.

ς Περί γήμαθ' ἀνδρῶν καὶ γυναικῶν ἐν
ἀρχαῖς καὶ ἀσφηλείαις.

ζ Περί κρηνομένης θεοσεπῆς ἐπὶ τῆς πολυπλοκῆς.

η Περί Διαφορῶν χειρῶν καὶ οἰκονο-
μίας αὐτῶν. ἐν ᾧ, καὶ ἀγαπῆς αἰς μεγίστην χαρί-
σματος. καὶ ἀσφηλείας, αἰς μέγιστον γλώσσας.

θ Περί ἀναστάσεως σωματικῆς καὶ θολικῆς. ἐν
ᾧ, καὶ τῆς ἐν Χριστῷ διορθώσεως, κὶ δόξα καὶ
ἐπίσεως. ὁμοίως τῶν ἀνισαμῶν ἀπὸ τῆς ἀνα-
φυόμενα ἀπὸ μαρτύρων. καὶ τῶν εἰς δόξαν κὶ δυνά-
μει ἀλλαγῆς.

Τῆς ἀπὸ Κορινθίων δόξεως.

α Ἐγχαριστία ἀπὸ Θεοῦ βοηθείας, ἢ πιστι-
μένης φησί.

β Περί

β Περι τ' ἀγάπης πρὸς αὐτὸς, καὶ φιλίας ἰς
τὸ μὴ λυπῆναι καὶ λυπῶν ἀφιλεί, ὡς ἐπὶ τ' ἀφ'
πορείαν ἐπιμνηστέον, καὶ ἐσυχνοῦται.

γ Περι τῆς δι' αὐτὸς θείας ἀφιλείας τοῖς
ἐπιπλάστοις, δι' ἧς καὶ σωίσταται φησι.

δ Περι τ' καὶ πνεύμα λόγου, καὶ δόξης
θεοτέρας τ' καὶ τ' νόμου.

ε Περι τ' θείας δόξης, καὶ τ' ἀκροάθη βίαι,
ὅτι τοῖς ἀγίοις γινώσκονται.

ς Περι τ' καὶ σώμα ἀθανείας, ἐ τῆς τ' σώ-
ματι δ' ἀποτέλει (ὡς ἐ ἐπιναλήψως).

ζ Περι τῆς ἐαυτὸς φιλοθεότητος καὶ φιλα-
δοφίας τῆς καὶ Χριστοῦ.

η Ἀποδοχὴ τ' Κορινθίαν ὑπακοῆς καὶ ἀγά-
πης ἀφ' ἀνεύσεως αὐτῶν.

θ Προτροπὴ πρὸς ἐπίδοσιν χροιάται τοῖς
ἀγίοις, καὶ ἡμῶν τ' ἀφ' τῆς ἐργασίμων. πρὸς
τῆς Τίτου ἀποστολῆς, καὶ τῶν ἄλλων πρὸς
αὐτὸς.

ι Διήγησις τῶν ἰδίαν πόται, ἐ πρὸς ἕστω, καὶ
καὶ τῆς ἐπ' αὐτὸς χάριτος, πρὸς τὸ μὴ τοῖς
ἐπιπλάστοις πρὸς ἕστω Κορινθίαις. ἐν ᾧ, ἀν-
τιθέμενοις ἐαυτὸς πρὸς ἐκείνους. ἐλεγχοῦ ἐκεί-
νων.

ια Περι ἐαυτοῦ, τὸ ἐπίποιον, τὸ πρὸς
Θεῶν ἴμιον, τὸ ἀφιλείως αὐτὸς τσοφον. πρὸς
σκύη πρὸς πλὴν μίλλισον ἐαυτοῦ παρευ-
σίαν.

Τῆς

Τῆς πρὸς Γαλάτας.

α Μὲτὰ τὸ θεοίμιον, διήγησις τῆς ἰαυ-
τῆ μείζαντος ἀπὸ ἰσθαῖσμι καὶ ἀπο-
καλύψαν.

β Παρὶ τῆς ἑλπίδος ἀποστόλων ἐπιμαρτυρήσεως εἰς
τιὸ ἐν πίστι ζωὴ.

γ Παρὶ τῆς πρὸς Κηφᾶν ἀντιρρήσεως, ὑπὲρ
ἑ ἐν πίστι καὶ ἔσθι ἐν νόμῳ σωτηρίας.

δ Ὅτι ἀφ' ἰσθαῖσμι οὐκ ἀγαθὸς, ἔστι ἀφ' ἰσθαῖσμι
νόμος.

ε Ὅτι καὶ ὁ Ἀβραάμ ἐκ πίστεως ἰδικωμένη
εἰς τύποι ἡμῶν.

ς Ὅτι ὁ νόμος ἔστι δικαιοσύνη, ἀλλ' ἐλέγχος, καὶ
κατάρτισις ἐπιλήθησι, καὶ λύσις ὁ Χριστός.

ζ Ὅτι ἔσθι ἐν νόμῳ ἀλλ' ἐξ ἐπαγγελίας τὴν
ἀγαθὴν ὅτι ἡ νόμος ἀφ' ἰσθαῖσμι δι' ἐλέγχου.

η Ὅτι ὑπὸ κρίσει ἦσαν οἱ ἐν νόμῳ.

θ Ὅτι ἐν τῇ ἐλευθερίᾳ γυναικὶ ἡ Ἀβραάμ
καὶ τῶν γνησίων πατρὶ ὑποδουλεύσεις, ἔστι καὶ ἡ δε-
λευθερία νόμος.

ι Ὅτι ἡ κλήσις ἡμῶν ἔχει ὑποκρίσει ἀφ' ἰσθαῖσμι
καὶ νόμος, ἀλλ' τὸ Χριστὸς παῖθ.

ια Ὑπογραφή τῆς καὶ πνεύματι ἐλευθερίας.

ιβ Ἀποδοχή ἀπὸ τῶν ἐλεγκτῶν ἐπὶ τῷ ἀφ' ἰσθαῖσμι
μὴ, καὶ ἀποδοχή πρὸς νέον ζωὴν τὴν ἐν
πνεύματι.

Τῆς

Τῆς πρὸς Ἐφεσίους.

α Περὶ τῆς ἐν Χριστῷ ἐκλογῆς ἡμῶν καὶ
ἑισαγωγῆς, καὶ τελώσεως.

β Εὐχὴ πρὸς γνώσεως, ἧ ἐν Χριστῷ ἑισα-
χθέντων ἀγαθῶν εἰς ἡμᾶς.

γ Περὶ τῆς ἐθνῶν καὶ Ἰουδαίων οἰκώσεως πρὸς
Θεὸν διὰ Χριστοῦ ἐπ' ἐλπίδι καὶ χάριτι.

δ Περὶ τῆς δωθέσεως αὐτῷ Θεῷ σοφίας, εἰς
φωτισμὸν ἐθνῶν, καὶ ἔλεγχον δαιμονίων.

ε Εὐχὴ ὑπὲρ τῆς ἐκκλησίας εἰς διώαμιν ἐν
ἀγάπῃ Θεοῦ.

ς Παρορτήσεις πρὸς ἀγάπης ἐνωτικῆς, ἧ καὶ
πρὸς χάρισμα καὶ διήρησιν πρὸς ὠφέλιμον κινῆσιν.

ζ Περὶ σωφροσύνης καὶ δικαιοσύνης ποιήσεως
ἡμᾶς θεοειδέως.

η Περὶ τοῦ ζῆλον ἐπιζήσεως τοῦ ἁγιασμοῦ, ἔργῳ
καὶ κακίᾳ ἐλέγχοντες, μὴ λόγῳ· πνεύματι δὲ
πληρηθῆναι διὰ ψαλμῶν, καὶ οἴναι.

θ Διάταξις οἰκελικῶν καὶ κτηνῶν δόξαμέ-
νοις καὶ ἀρχασι καὶ Χριστῷ.

ι Ἐν χάριτι καὶ ὀπιλίσει πρὸς τῆς καὶ Χρι-
στοῦ διωάμειας.

Τῆς πρὸς Φιλιππησίους.

α Εὐχαριστία ὑπὲρ τῆς Φιλιππησίων δόξα-
σεως, καὶ εὐχὴ τελώσεως.

β Διή-

β Διήγησις τῆς ἐαυτῆς Διόσκουρης ἀγωνιστικῆς,
καὶ τῆς περὶ τῆς αἰωνιότητος.

γ Παραίνεσις τῆς κατὰ Θεὸν ὁμοιοῦσας, καὶ
τῆς ἐν Θεῷ ζωῆς.

δ Περί Τιμοθέου καὶ Ἐπαφροδίτου, ἕως ἀπ-
έλπει πρὸς αὐτούς.

ε Περί τῆς πνευματικῆς βίης τῆς μὴ ἐν σαρκί, ὅς
ἐστὶ μίμησις τοῦ θανάτου τῆς Χριστοῦ.

ς Παραίνεσις ἰδίας πινῶν, καὶ κριτικῆς πάντων.

ζ Ἀποδοχὴ τῆς ἀποσταλείσης αὐτῆς Διόσκουρης.

Τῆς πρὸς Κολαοσαίους.

α Ἐυχαιρία ὑπὲρ Κολαοσαίων οἰκωθέντων
πρὸς Θεῷ ἐπ' ἐλπίδι.

β Εὐχὴ περὶ αὐτῶν εἰς σοφίαν πρακτικῶν,
εἰς δυνάμειν υπομονῆς, σιωπῆς καὶ τῆς οἰ-
κωσύνης τῆς ἐν καρτερῆς.

γ Περί τῆς ἐν Χριστῷ κτίσεως ἑ ἀνακτίσεως
τῆς κατὰ Θεὸν σωάφειαν Θεῶν.

δ Περί ἐθνῶν περὶ τῆς ἐν σώματι
Χριστοῦ καὶ πάσης Διόσκουρης πίστεως.

ε Περί τῆς Διόσκουρης πόνων αὐτῆς διδασκῆς ἀ-
νακτικῆς εἰς ὁρμήσασιν Θεῶν.

ς Περί τῆς μὴ ὑπάμελλεν τῆ ἀνθρωπίνῃ φιλο-
σοφίᾳ ἀπατηλῆ τὸς ἐν Χριστῷ πρὸς σοφίαν
ἔχουσαν.

ζ Ὅτι πρὸς Θεὸν σωάφεια καὶ πρὸς νόμους
θεῶν πνευματικῶς, εἰς τὸ συζῆναι Χριστοῦ.

η Ὅτι

η Ὅτι οἱ τῶν στερικῶν νόμοι τύποι τοῖς στερικῶν
καίς χρήσιμοι, καὶ ἔκ πινύμωρ καίς τοῖς ἐν δυνά-
μει Θεῶν ζῶσιν.

θ Παραίνεσις περὶ καρτερίας, ἀγαθῶν, Φι-
λοφροσύνης, φιλοθεότητος, φιλομαθείας, ψαλ-
μωδίας, δόξης εἰς Θεὸν ἀφραγῆς, εὐχαριστίας.

ι Τὰ πρὸς τὰς εἰκείνας ὁμνητικῶς ἐν ᾧ,
τὰ πρὸς τὰς ἀλλοτρίους δόξοντως, οἰκονομικῶς.

Τῆς πρὸς Θεσσαλονικεῖς πρώτης.

α Εὐχαριστοῦ τῶν Θεσσαλονικέων ἐπὶ τοῖς
ἀξίοις τῶν ἀποστόλων ἀγῶσι.

β Πόνος αὐτῶν, καὶ χαρὰ ἐπ' αὐτοῖς, καὶ
μέριμνα ἕως ἀν' τελευτῶσιν.

γ Εὐχὴ πρὸς Θεὸν πρὸς τῆς ἀφίξεως αὐτῶν,
καὶ πρὸς αὐξήσεως καὶ βεβαιώσεως Θεσσαλο-
νικέων, ἕως τῆς Χριστοῦ παρουσίας.

δ Παραίνεσις σωφροσύνης ἔκ διανοουμένης
αἰς ἐπὶ κρίσει φιλαδελφίας, ἐργασίας ἰδιο-
πραγμενῶν.

ε Διδασκαλία πρὸς τῆς τῶν θανάτου καὶ ἀλύ-
στας ἐπὶ ζώντων ἔκ νεκρῶν, ἐν ἐπιφανείᾳ Χριστοῦ.

ς Περὶ τῶν αἰφνιδίως ἤξεν Χριστὸν, ὥστε δεῖν
ὡς ἐπίξασθαι σπουδῆ, πίστι, ἐλπίδι, ἀγάπῃ,
πρῆ, ἐπιλήθῃ, μακροθυμίᾳ, φιλομαθείᾳ.

ζ Εὐχὴ πρὸς ἀγαθῶν πινύμωρ, καὶ
ψυχῆς, καὶ σώματι.

Τῆς

Τῆς πρὸς Θεσσαλονικεῖς δ' α' π' ε' ς.

α Εὐχαριστία ὑπὲρ τῆς ἱερῆς Θεσσαλονικείων πίστεως, καὶ ἀγάπης, καὶ ὑπομονῆς, ἐπὶ τῆ ἀντιλήψεως τῶν θλιβομένων. καὶ εὐχὴ ὑπὲρ τελείωσης αὐτῶν ἐν δόξῃ Χριστοῦ.

β Περὶ τέλους, ὅτι μὴ ἀνέλθῃσι τὸ πνεῦμα ἐπὶ ἐλίγγω ἰσχυρῶν τῶν ἀπιστησάντων Χριστοῦ.

γ Εὐχαριστία ὑπὲρ τῆς κλήσεως, ὡς προσηύχθη ἐπιμένοντες εὐχῆς πρὸς Χριστὸν τὸ Θεὸν ἐπὶ τηρηματῶν αὐτῶν.

δ Παρακλήσεις εὐχῆς ὑπὲρ αὐτῶν καὶ ἱερῶν ἔργων. εὐχὴ ὑπὲρ αὐτῶν εἰς ἀγάπην Θεοῦ.

ε Προτροπὴ ἐργασίας καὶ παρακλήσεως ἱερῶν ἔργων καὶ ὁδοῦ.

ς Εὐχὴ ὑπὲρ εἰρήμης τῆς οὐρανόθεν Θεοῦ.

Τῆς πρὸς Τιμόθεον πρώτης.

α Περὶ τῆς εἰς ἀγάπην Θεοῦ ὁδοῦ, τὴν ἀπροσδεῖν νομικῆς ἀνάγκης.

β Περὶ τῆς ἑαυτοῦ ἐκλογῆς εἰς βασιλείαν ἐκ διακρίσεως, καὶ χάριτος Θεοῦ.

γ Παραγγελία πρὸς πίστης καὶ σωφροσύνης διακονίας, ἧς ἀνδρὸς κίνδυνος.

δ Περὶ εὐχῆς, ὅτι ὑπὲρ πάντων παισὶν ἀκακίας, ἀπαρτήσεως, σεμνῶς.

ε Περὶ διδασκάλων, ὅτι ἀνδρὸς ἡσυχίας καὶ ἐπισημῶν.

γυναικας εἶται, ἀφ' ἧν φύσιν εἰ τὸ παθόν
τὸ ἐξ ἀπίστης, ὃ λέγεται ἡ Ἐκείνη, καὶ
πίστις αὐτῶν εἰ βίβλ.

ε Περὶ τῆς δρετῆς ἐπισκόπων. ἐν ᾧ, ἀφ' ἧν
ἀφροδιτων ἀνδρῶν τε καὶ γυναικῶν.

ζ Περὶ θείας σαρκώσεως. ἐν ᾧ, ἀφ' ἧν ἴσο-
μετρῶν ἀρέσων δαιμονικῶν.

η Περὶ ἀγῶν ὀσιβείας ἐπ' ἐλπίδι.

θ Περὶ ἐπιμελείας αὐτῆς εἰς τῆς ἐκκλησίας.

ι Περὶ τῆς ἀρμοζόντως ἐκείνη ἀποσφύραξ.

ια Περὶ χερῶν ἡλικίας, καὶ τρέψα, καὶ διοική-
σιως αὐτῶν.

ιβ Περὶ πρεσβυτέρων ἡμεῶν.

ιγ Περὶ χροθίας ἀσφαλῆς.

ιδ Ὅτι ἐδὲν ἔργον λαομαθῆ.

ιε Περὶ δέλων ὑπακοῆς.

ισ Κατὰ φιλοκερδῶν, καὶ ψευδοδιδασκά-
λων.

ιζ Παραβολία φοβερά ἀφ' ἧν κατὰ
ὑπακοῆς ἄλλο τέλος.

ιη Πλασίων ὁδηγία ἐπὶ τῶν ὄντων ζωῶν.

Τῆς πρὸς Τιμόθεον δὲ τέρας.

α Ἐπαινος τῆς Τιμοθέου πίστεως, καὶ ἀποστοπῆ
ὑπομονῆς καὶ τὸ πρέπον τῆς χάριτος, ἐν ᾧ καὶ
αὐτὸς, φησὶ, ἀφροδιτερεῖ πάχων.

β Περὶ τῆς ἀρμοζόντως μετὰ δόσεως τῶν θείων
δογματῶν.

γ Περὶ

γ Περί τῆς ἀφρόνιδου ἐν τῷ νῦ βίῳ πολι-
τείας ἐπὶ ταῖς δόξαισι τεοφαῖς.

δ Περί τῆς ἐν Χριστῷ πίστεως καὶ ὑπομενῆς
ἐπ' ἐλπίδι ζωῆς.

ε Περί ὁρθῆς διδασκαλίας, ἔβια κατὰ μαρ-
τυρικῆ, καὶ κατὰ ἐναντίων.

ς Προόρησις περὶ κακίας ἀνθρώπων πολεο-
ναζέσης, ἀπειτηλῆς ἐλεγχουμένης.

ζ Προτροπή τῆς ἑαυτῷ μιμήσεως ἐξεναντίας
ταῖς φαύλοις ἐν ὑπακοῇ Θεῷ.

η Περί τῆς κακοδομησάντων, οἷς ἀντιτάττει τὴν
Τιμῶν.

θ Περί τῆς ἑαυτῷ μελέσεως ἀναλύσεως, ἐπὶ
δοξῇ αἰωνίῳ.

Τῆς πρὸς Τίτον.

α Περί διδασκάλων ἐπιτηδείων εἰς Μακα-
ρίαν, ἔλεγχον ἀπέθαν.

β Κατὰ τῆς σαρκενικῆς κατὰρσεως πρὸς ὁσούν-
των, καὶ ὑπὸ πνύματικῆς δόξεως.

γ Παραμύσεις, αἷς δεῖ ὡφραίνεῖν κατὰ ἡλι-
κίαν ἐκάστω.

δ Περί δόλων, ὡς αὐτῶν καὶ αὐτῶν τῆς Χριστῷ χά-
ριδι ἀξίως δελοῦσιεν.

ε Περί δόχοντων ὑπομενῆς πρὸς τῆς
ἐπιθέσεια τῆς Χριστοῦ.

ς Παραμύσεις περὶ τῆς ἐκλήφιν τῆς ἐλεστικῆς
ζητησεῖς.

Τῆς

Τῆς πρὸς Φιλήμονα.

α Εὐπαινετο Φιλήμονε, καὶ εὐχαριστία
ὑπὲρ αὐτῶ.

β Σύστασις Οἰησίμου φυγαδέου οἰκέτου, καὶ
ᾠδὴ ἀκλήσις ὑπὲρ αὐτῶ σωθέντου διὰ πίστεως.

Τῆς πρὸς Ἐβραίους.

α Θεολογία Χριστοῦ ἐν δόξῃ πατρὸς ἐξ-
εστία τῶ πάντων, καὶ τῆ κηδεύσεως τῶ
ἐπὶ γῆς, ἀφ' ἧς ἀνέβη εἰς τὸ ἐπεσθάνιον δόξαν.

β Ὅτι ἐ λέττεργικὴ ἡ δόξα Χριστοῦ, ἀλλὰ
θεϊκὴ καὶ ποιητικὴ. διὸ σὺκ ἐπὶ τῶ παρόντι
αἰῶνι, ἐν ᾧ οἱ λεττεργί, ἀλλ' ἐπὶ τῶ μελλέ-
σης οἰκονομίας.

γ Ὅτι ἐσαρκώθη καὶ διὰ τῶσιν καὶ συμπα-
θήσαν καὶ οἰκονομῶν τῶ πρὸς ἡμῶς, ἐπὶ σωτη-
ρίᾳ ἀνθρώπων τῆ ἐκ θανάτου, διὰ τῶ πρὸς αὐ-
τὸν οἰκονομίας.

δ Ὅτι πισυτέον Χριστῶ ὡς καὶ Μωϋσῆ ἐπί-
σδυσαν, καθ' ὑπεροχὴν ἢ Θεῶ πρὸς ἀνθρώπων
ἐν ᾧ, ὅτι φοβητέον τῶ πάλαι τῶ ἐκπλωσιν.

ε Προτροπὴ ἀπεδάσκει εἰς τῶ πρὸς θεολο-
γίᾳ καὶ ἰσχυροσιν.

ς Τὸ φοβερὸν τῶ κρείσεως ᾠδὴ τῶ λόγῳ
τῶ διὰ πάντων, καὶ τὸ κρησὸν τῆς καίριου
τῶ ἱεραλικῆς, ᾠδὴ τῶ ὁμοιοπαθήσαντε ἡμῶν
ἀνθρωπίνως.

Ρ Ρ

Ζ Ε π ι -

ζ Ἐπίμητις ὡς ἐπὶ διορθώσεως ἐισαγωγῆς. ἐν
ᾧ, ἀποτροπὴ εἰς ἐπίδοσιν ὡς ἐστὶ ἕσης δούτερας
δύτης. ἐν ᾧ, ἀφάκλις σὺ ἐπιμῆτις.

η Ὅτι βεβαία ἡ ἐπιμητις τῷ Θεῷ, καὶ
ταῦτα σὺ ὄρκω.

θ Περὶ Μελητεδὲκ τῷ εἰς Χριστὸν τύπος
τὸ ἄνομα, καὶ τὸ πᾶν, εἰς τὴν ζωὴν, καὶ τὴν ἱερωσύ-
νην. ἐν ᾧ, ὅτι καὶ τῷ Ἀποστόλῳ ἀποδομήθη.

ι Ὅτι πίπτω ἢ τῷ Ἀαρὼν ἱερωσύνη ἢ ἐπίσκοπος
ἕσται, ἵσταται ἢ ἡ ἐξουσία ἢ Χριστῷ, ἐξ ἑτέρας
χρῆστας, ἢ καὶ σάρα, ἐξ ἑτέρας σαρκικῆς.

ια Ἰπποχρήτης τῆς δούτερας Διφθέρης ἀφάκ-
τῷ ἀποτέρων, ἐν ἰλασμοῦ καὶ ἀγιασμοῦ.

ιβ Περὶ τῷ αἵματι τῷ Χριστῷ, ἐν ᾧ ἡ νέα
Διφθέρη ὅτι τῷ ἀληθῆς κατὰ τὴν ἐξουσίαν, ἐπὶ τὴν
αἵματι ζῶντων τοῖς πολλοῖς ἀποσταθμῶν.

ιγ Μαρτυρία ἀπὸ τῆς μήτης κατὰ τὴν ἐξουσίαν,
καὶ ἀποσταθμῶν ἀπὸ τῷ Θεῷ. ἐν ᾧ, ἀποτροπὴ
τῆς ἐν πίστι ἀποδοξ.

ιδ Προτροπὴ ἀπὸ τῆς καὶ φόβον τῆς ἐκζητή-
σεως κρείσεως.

ιε Περὶ τῷ καλῶν δόχλων εἰς καλὴν τέλη
ἀποσταθμῶν.

ις Περὶ πίστεως τῷ ἐπὶ τὴν πελαγὸς δόξασις.

ιζ Περὶ ὑπομονῆς τῆς ἐν ἀγγελίᾳ τῷ Χριστῷ.

ιη Περὶ σωφροσύνης ἕως κατὰ τὴν ἀποσταθμῶν,
μὴ δόποτοχῶν αὐτῆς, ὡς ἱστοῦ μὴ δό-
ρῶν τὸ πᾶν μετριοσύνης.

ιθ Ὅτι

ιδ Ὅτι φοβερώτερον ἔστι ἐπὶ Μωϋσέως τὰ μέλλοντα, καὶ πλείονον ἄξια σπουδῆς τὰ νῦν.

κ Περί Φιλαδελφίας ἔστι Φιλοξενίας. ἐν ᾧ, πρὸς σωφροσύνης. πρὸς αὐταρκείας. πρὸς μιμήσεως πατέρων.

κα Περί Ἐμνηστικῶς ζῆλου καὶ νόμου, ἀλλὰ πνευματικῶς καὶ Χριστοῦ ἐν δόξῃ.

κβ Εὐχή πρὸς τὸ Θεὸν πρὸς τῆς εἰς δόξαν ἀγωγῆς καὶ οἰκονομίας.

Τῆς καθολικῆς Ἰακώβου.

α Περὶ ὑπομονῆς καὶ πίστεως ἀδιακρίτου, καὶ πρὸς πενήνοφροσύνης πρὸς τὰς πλυσίους. ἐν ᾧ, πρὸς τῆς ἐν ἡμῖν πορώσεως, καὶ ἔξ αὐτῆς παιδῶν. ὅτι ἔστι Θεὸς τὸ αἶπον εἰπερὶ ἀγαθὸν ἡμῖν, παρ' αὐτοῦ.

β Περί πραότητος καὶ ἀγνείας, καὶ πρὸς ἀξίως ἀγαθῆς μετὰ δουρικῆς ἐπὶ μακαρισμοῦ. καὶ πρὸς ἐπιστήμης ἔστι συμμετερείας λόγος.

γ Περί τῆς πρὸς ἕνατον ἀγάπης. ἀπροσωπολήπια, καὶ τὸ νόμον.

δ Ὅτι οὐκ ἐκ πίστεως μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐξ ἔργων, καὶ οὐκ ἐκ πατέρων ἰδικῶς, ἀλλ' ἐξ ἀμφοῖν ἅμα δικαιοῦται ὁ ἄνθρωπος.

ε Ὅτι ἡ πρὸς πενήτης καὶ ἀπακλῆς γλώσσα θανατοῖ τὸν κερτηρῆμον, ἧς κρατεῖν ἀνάγκη εἰς εὐφημίαν καὶ δόξαν τοῦ Θεοῦ. ἐν ᾧ, πρὸς ἀνατροφῆς ἀγαθῆς καὶ ἀμείχρα πρὸς ἀλλήλους καὶ

φιλοδοξίας τῆς ἐπὶ σοφίᾳ ἀνθρωπίνῃ. ἐν ᾧ,
ὡς θείας σοφίας. ὅτι ἐκ ῥαθυμίας ἔστι φιλοδο-
ξίας ἕως ἄκρασιας, καὶ ἡ πρὸς Θεὸν ἔχτρα
γίνεται. ὡς μετριοῦς πρὸς σωτηρίαν, ἔστι
ἢ μὴ κέρειν τὸ πλεονέχον.

ε Ὅτι οὐκ ἐν ἀνθρώπῳ ἀλλ' ἐν τῷ Θεῷ πα-
ραστήματα ἀνδρῶν κηρύσσονται. ἐν ᾧ, ὡς
πλεονεξίας πλεονείων, καὶ τὸ ἐν κήσματι τρυφῆς αὐ-
τῶν, ἔστι ὡς διανομοκροσίας Θεῶν, ὡς μακρο-
θυμίας, καὶ ὑπομονῆς παθημάτων, ἔστι ὡς
ἀληθείας. ὡς ἰδιότητος ἰδικῆς ἐκείνου πρὸς ἕνα
συνεπίστεως. ὅτι Διακονηθῆναι τῷ Θεῷ πλεονέχον
σωτηρία.

Τῆς Πέτρας καθολικῆς πρῶτης.

α Περὶ τῆς ἐν Χριστῷ ἀναληθῆσεως καὶ περὶ
ὑπομονῆς πειρασμῶν ἔστι ὡς σωτηριώ-
δους πίστεως πρὸς κληρονομίαν ὑπὸ τῷ Θεῷ.

β Περὶ ἐλπίδος ἔστι ἀμασμεῖ τῆς τε ὀφελου-
μένης ἐπὶ τῇ ὑποστάσει ἀσφαλῆς ἀναστροφῆς.

γ Περὶ τῆς ἐπιθυμίας τῆς ὑποστάσεως ζῆλον ἐν Χριστῷ,
πρὸς ὠφελίαν καὶ τὸ ἔξωθεν, εἰς δόξαν Θεῶν.

δ Περὶ τῆς πρὸς ἀρχαίους ὑποταγῆς καὶ φιλα-
δελφίας καὶ θεοσεβείας. ἐν ᾧ, ὡς δόξαν ὑπο-
ταγῆς, καὶ ἀνεξικακῆς ὑπομονῆς Διακονηθῆναι.
ὡς ὑπακοῆς γυναικῶν, ἔστι ὁμοιοῦς τῆς πρὸς
τὸν ἄνδρα, καὶ σωτηρίας τῆς ἐν πνύματι εἰς
τύπον Σαύρα. ὡς τῆς ἀνδρῶν πρὸς γυναῖκα
συμ-

συμπεριφορῶς. ὡς δὲ πρὸς ἅπαντας ἐπι-
κῆς ἀνεξικακίας, ἧς τύπος ἔστι ἐν τῷ ἠὲ ἐπὶ Νῶε ἔστι Θεῶ
Φιλανθρωπία, ἐφ' ἡμᾶς ἡ δὲ Ἄφ' ἔστι βαπτί-
σματι ἔστι Χριστῶ συμπαίδηα.

ε Περὶ ἀποθέσεως φάτων πρᾶξεων, καὶ
ἐπιναλήψεως τῶ ἐν πνύματι καρπῶν, καὶ τῶ
ἀφ' ἑαυτοῦ τῶ χειρισμάτων.

ς Ὅτι κρινώμεθα τῇ πρὸς τὸ Χριστὸν, κρατεῖν
καὶ τῶ φυσικῶν παθῶν ἐλπίδι τε τῇ εἰς αὐτὸν,
φέρειν ἕως παρ' ἑτέρων παίδας.

ζ Παραίνεσις πρεσβυτέρων ὡς ἐπισκοπῆς
ἔστι ποιμνίας. ἐν ᾧ, περὶ κρινῆς πάντων πρὸς ἕνατον
κατανοήσεως εἰς νίκην τῶ καὶ ἔστι ἀφ' ἑαυτοῦ.

η Εὐχὴ ὑπὲρ τελώσεως τῶ πισυόντων.

Τῆς Πέτρας καθολικῆς δόξεως.

α Περὶ κλήσεως τῆς ἐν πίστι ἔργου βεβαιώ-
ματι τοῖς τῆς δόξεως, καὶ ἐλπίδι τῶ μελ-
λόντων ἀγαθῶν.

β Παραγγελία εἰς ὑπόμνησιν τῆς διδασκα-
λίας καὶ τῶ ἀνάλυσιν αὐτῶ καὶ ὅπως ἐν ὄρι Θεο-
βῶν τῆς ἔστι Θεῶ ὡς ἔστι ἐπήκουσε φωνῆς.

γ Προῖρησις ἀπαληθῆς ἐπιναστάσεως αἰρετι-
κῶν, ἀσεβείας τε αὐτῶν, καὶ μελίχθους κολάσεως.

δ Ἐπιναλήψις ὡς ἐπὶ κακίας ἀνθρώπων αἰ-
ρετικῶν. ἐν ᾧ, ὅτι αἰφνιδίως ἤξει ὁ Χριστὸς ἐπὶ
σωτελείᾳ τῶδε τῶ αἰῶνι. ὡς δὲ εἶναι δὲ τρε-
πίσεισθαι πάση δόξεϊ.

Τῆς Ἰωάννου καθολικῆς πρῶτης.

α Ἐὐαγγελικὴ θεολογία πρὸς Χριστῶν. ἐν ᾧ,
πρὸς ἐξομολογήσεως καὶ πειρασμῶν εἰς τὸ
μὴ ἀμαρτάνειν. ὅτι ἡ τήρησις ἐν ἐλευθέρω Θεῷ τῶν
γινώσκοντων βεβαιοῖ.

β Περὶ ἀγάπης, ἧς ἀνδρῶν ἀσέβεια. ἐν ᾧ, πα-
ραίνεσις πρὸς χάριτον ἐκείνου καὶ ἡλικίαν. καὶ
πρὸς ἀποτροφῆς τῆς πρὸς τὸ κήσμον ἀγάπης.

γ Περὶ ψυδαδέλφων ὁμοιωμάτων, καὶ ὅτι
ἢ εἰς Χριστὸν ἀσέβεια πατρὸς ὁμοιοῦσα. ἢ γὰρ
πατρὸς ὁμοιοῦσα, τῆς ἡμῶν ἐπιθεολογία. ἐν ᾧ,
πρὸς θεῶν καὶ πνευματικῆς χάριτος ἐκείνου ἐν
ἀγιασμῷ, ἐπὶ ἐλπίδι εἰς γινώσκοντων Θεῶν. ὅτι πᾶς
ὁ ἐν Χριστῷ, ἐκτὸς ἀμαρτίας· ὁ δὲ ἀμαρτάνων,
εἶναι ἐν τῷ ἀβύσσῳ.

δ Περὶ ἀγάπης τῆς εἰς τὸ πνεῦμα καὶ ἀγα-
πῆς μετὰ ἀδελφῶν. ἐν ᾧ, πρὸς σωτηρίαν ἀγα-
θῆς τῆς ἐν πίστι Ἰησοῦ Χριστοῦ. πρὸς ἀγαθῆς
πνευματικῆς, ἐφ' ὁμοιοῦσα τῆς ἐν Χριστῷ ἐν-
αφρωπῆσεως.

ε Περὶ φιλαδελφίας εἰς θεοσεβίαν.

ς Περὶ θεολογίας ἡμῶν ἐν δόξῃ πατρὸς· καὶ
πρὸς νίκης τῆς κατὰ τὸν πονηρὸν ἀπὸ πίστεως Ἰησοῦ
Χριστοῦ εἰς ζωὴν.

ζ Περὶ ἀντιλήψεως τῆς ἀμαρτάνοντων ἀδελ-
φῶν ἀπὸ πειρασμῶν, ἢ πρὸς τὸ μὴ ἀμαρτάνειν.
ἐν ᾧ, πρὸς ἀποχρῆσιν δαιμονικῆς σεβασμῶν.

Τῆς

Τῆς Γ' ἰωάννου καθολικῆς δ' α' τέρας.

Μετὰ τὸ προοίμιον πρὸς ὁρθῶς βίον ἐν ἀγά-
πῃ Θεῶν, ἀφ' ἧς πίστεως οὐπέσθαι, ἀμεταθέ-
τα. ἐν ᾧ, ὅτι εἰς αἰρέτην ἐισικίσει ἢ χαλελί-
ζην ἐφ' ἀμαρτίας· ἐπαγγελία παρουσίας αὐτῶ
ἐπ' ἐλπίδι πρὸς ὠφέλειαν.

Τῆς Γ' ἰωάννου καθολικῆς τρίτης.

Εὐχὴ ὑπὲρ τελειώσεως καὶ σύζαυρίας ἐφ' ὁ-
μολογίας φιλοξενίας τῶν ἀδελφῶν ἀφ' ἧς Χρι-
στὸν. ἐν ᾧ, πρὸς τῆς Διοτρεφῆος φαιλότητι καὶ
μιπαδελφίας. πρὸς Δημητρίου, ᾧ μαρτυρεῖται
πρὸς χάριτος. πρὸς ἀφίξεως αὐτῶ πρὸς αὐτῶς
ἐπ' ὠφελεία ἐν ἑσθίῃ.

Τῆς Γ' ἰωάννου καθολικῆς.

α Περὶ προσοχῆς τῆς εἰς Χριστὸν πίστεως ἀφ' ἧς
ἐπανάστασιν τῶν ἀσθεῶν καὶ ἀσελγῶν ἀν-
δρῶν. ἐν ᾧ, πρὸς μελέτης αὐτῶν κηλίσεως καὶ
ὁμολογίας τῶν πάλαι ἀμαρτηλῶν τε καὶ πονηρῶν.

β Ταλαντομὸς αὐτῶν ἐπὶ τῇ πλάνῃ καὶ δυσ-
σεβεία καὶ ἀσελγεία, καὶ βλασφημίᾳ καὶ ἐπιπλά-
σῃ ὑπεκρίσει τῆς εἰς ἀπάτην δωροδοκίας.

γ Περὶ ἀσφαλείας αὐτῶν ἐν τῇ πίστι, συμ-
παθείας τε καὶ φιλίας εἰς τὸ πλοσιόν ἐπὶ σωτη-
ρίᾳ καὶ ἀγιασμῷ.

δ Εὐχὴ ὑπὲρ αὐτῶν εἰς ἀγιασμὸν καὶ παρ-
ρησίαν καὶ τρεφὴν σωδοξολογίας Θεῶν.

Τ Ε Λ Ο Σ.

